

१-४-

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़रहसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल

जुलाई व अगस्त १९४९

क्या किस से

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने इस अंक का दाम सवा रुपया

मैनेजर
'नया हिन्द'

१८, बाई का बाग़—इलाहाबाद

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچہ

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال

جولائی و اگست ۱۹۴۹

کیا کس سے

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال باہر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے —اس انک کا دام سوا روپیہ

منیجر
'نیا ہند'

नया हिन्द

जिल्द ७   जुलाई, अगस्त '४६   नम्बर १

जात, आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

हिन्द माता से

(डाक्टर मसऊद हुसेन ख़ाँ)

(बुलबुले हिन्द सरोजिनी देवी के अँग्रेज़ी गीत का तरजुमा)

जाग माता, जाग !
बालक तेरे, तुझको घेरे, खड़े हैं सीस नवाये,
तेरी पूजा, तेरी सेवा करने यह सब आये.
हे माँ ! तू सोती है अब तक हाथ अपने बँधवाये,
उठ और देख ! कि अँधियारी में है सीनों की आग,
जाग माता जाग !

نیا ہند

جلد ۷   جولائی، اگست ۴۶   نمبر ۱

ذات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
نیا ہند پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

ہند ماتا سے

(ڈاکٹر مسعود حسین خاں)

(بلبل ہند سروجنی دیوی کے انگریزی گیت کا ترجمہ)

جاگ ماتا جاگ!
بالک تیرے، تجھکو گھیرے، کھڑے ہیں سیس نوائے،
تیری پوجا، تیری سیوا کرنے یہ سب آئے۔
اے ماں! تو سوتی ہے اب تک ہاتھ اپنے بندھوائے،
اٹھ اور دیکھ! کہ اندھیاری میں ہے سینوں کی آگ
جاگ ماتا جاگ

उठ और तोड़ भी दुख के बंधन, दुखी हैं उन से सब जन,
कर आज़ाद तू इन हाथों को जीत इन्हें है बुलाये.
ऐ माँ! क्या हम तेरे नहीं हैं, कौन तुझे समझाये,
तेरी आत्मा ही का बल और त्याग है अपना भाग.
जाग माता जाग!

तू ही बता, यह हम से होगा, तुझको भूलें भुलायें,
मन मन्दिर जब तेरा घर है घर में क्यों न बुलायें.
छातियाँ तारों की धड़का दें, गायें वह हुस्न के राग,
आज सोहाग लहर आई है खुलेंगे तेरे भाग.
जाग माता जाग!

हिन्दू—माता! पूजा के फूलों से हमने तुझको सजाया,
पारसी—आशा के शोलों का माता! हमने हार पिन्हाया.
मुसलमान—ए माँ! प्रेम की तलवारों से हमने तुझे बचाया.
ईसाई—धर्म का मीठा बोल तो माता हमने तुझे सुनाया.
सब मिलकर—हम सब ही के प्रेम के फूलों से है तेरा सुहाग.
सुन ओ रानी! सुन ओ देवी!! गाते हैं तेरे राग
जाग माता जाग!

اٹھ اور توڑ بھی دُکھ کے بندھن، دکھی ہیں اُن سے سب جن،
کر آزاد تو ان ہاتھوں کو جیت انھیں ہے بلائے.
اے ماں! کیا ہم تیرے نہیں ہیں، کون تجھے سمجھائے،
تیری آتما ہی کا بل اور تیاگ ہے اپنا بھاگ.
جاگ ماتا جاگ!

تو ہی بتا، یہ ہم سے ہوگا، تجھکو بھولیں بھلائیں،
من مندر جب تیرا گھر ہے گھر میں کیوں نہ بلائیں.
چھاتیاں تاروں کی دھڑکا دیں، گائیں وہ حسن کے راگ،
آج سہاگ لہر آئی ہے کھلیں گے تیرے بھاگ.
جاگ ماتا جاگ!

ہندو— ماتا! پوجا کے پھولوں سے ہم نے تجھکو سجایا،
پارسی— آشا کے شعلوں کا ماتا! ہم نے ہار بنایا.
مسلمان— اے ماں! پریم کی تلواروں سے ہم نے تجھے بچایا.
عیسائی— دھرم کا میٹھا بول تو ماتا ہم نے تجھے سنایا.
سب ملکر— ہم سب ہی کے پریم کے پھولوں سے ہے تیرا سہاگ.
سن او رانی! سن او دیوی!! گاتے ہیں تیرے راگ
جاگ ماتا جاگ!

देश के नाम

महात्मा गांधी की आख़िरी वसीयत

२९ जनवरी सन् १९४८ को महात्मा गांधी ने आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने एक सुझाव के रूप में 'लोक सेवकसंघ' का एक नया विधान तैयार किया था. इस विधान में उन्होंने सलाह दी है कि कॉंग्रेस का सारा संगठन तोड़ दिया जावे और कॉंग्रेस वाले हकूमत से बाहर निकल कर एक "लोक सेवक संघ" बनाकर काम करें. ३० जनवरी को अपने देहान्त से कुछ घंटे पहले महात्मा जी ने कॉंग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को बुला कर यह विधान उसे दिया इसलिये कि यह गांधी जी की तरफ़ से आल इंडिया कॉंग्रेस कमेटी के सामने पेश किया जावे. यह छोटा सा विधान देश के नाम गांधी जी की आख़िरी वसीयत है. १५ फ़रवरी सन् ४८ के 'हरिजन' में यह छपा है. पर इसकी तरफ़ देश का ध्यान बहुत ही कम गया है. हम इस विधान को इतनी क़ीमती और काम की चीज़ समझते हैं कि इसे और इसके ऊपर गांधी जी के असूलों के खास जानकार और उनके परम भक्त श्री मन्ज़ूरअली सोख़्ता की पूरी पूरी व्याख्या 'नया हिन्द' के पाठकों को भेंट कर रहे हैं. हमें भरोसा है कि देश की आज कल की नाज़ुक हालत में यह सारा लेख बड़े ध्यान व शौक़ के साथ पढ़ा जावेगा और देश को अपना आगे का रास्ता तय करने में बड़ी मदद देगा.

एडीटर 'नया हिन्द'

دیش کے نام

مہاتما گاندھی کی آخری وصیت

۲۹ جنوری ۱۹۴۸ء کو مہاتما گاندھی نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ایک سجھاؤ کے روپ میں 'لوک سیوک سنگھ' کا ایک نیا ودھان تیار کیا تھا۔ اس ودھان میں انہوں نے صلاح دی ہے کہ کانگریس کا سارا سنگٹھن توڑ دیا جائے اور کانگریس والے حکومت سے باہر نکل کر ایک 'لوک سیوک سنگھ' بنا کر کام کریں۔ ۳۰ جنوری کو اپنے دیہانت سے کچھ گھنٹے پہلے مہاتما جی نے کانگریس کے جنرل سکریٹری کو بلا کر یہ ودھان اُسے دیا اس لئے کہ یہ گاندھی جی کی طرف سے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے پیش کیا جائے۔ یہ چھوٹا سا ودھان دیش کے نام گاندھی جی کی آخری وصیت ہے۔ ۱۵ فروری ۴۸ء کے 'ہریجن' میں یہ چھپا ہے۔ پر اس کی طرف دیش کا دھیان بہت ہی کم گیا ہے۔ ہم اس ودھان کو اتنی قیمتی اور کام کی چیز سمجھتے ہیں کہ اسے اور اس کے اوپر گاندھی جی کے اصولوں کے خاص جانکار اور ان کے پرم بھگت شری منظور علی سوختہ کی پوری پوری ویاکھیا 'نیا ہند' کے پاٹھکوں کو بھینٹ کر رہے ہیں۔ ہمیں بھروسہ ہے کہ دیش کی آج کل کی نازک حالت میں یہ سارا لیکھ بڑے دھیان و شوق کے ساتھ پڑھا جائے گا اور دیش کو اپنا آگے کا راستہ طے کرنے میں بڑی مدد دے گا۔

ایڈیٹر 'نیا ہند'

बापू के बुनियादी सिद्धान्त

महात्मा गांधी के "लोक सेवक संघ" के इस नये विधान को पूरी तरह समझने के लिये यह जरूरी है कि पहले हम उन बुनियादी सिद्धान्तों को समझ लें जिन पर बापू इन्सानी समाज को ढालना चाहते थे. हम यहाँ उनके गहरे आध्यात्मिक या रूहानी विचारों और आदर्शों में नहीं पड़ना चाहते. हम सिर्फ यह देखना चाहते हैं कि बापू इस दुनिया में हमारे समाज को क्या रूप देना चाहते थे. बापू का लोक सेवक संघ इसी दुनिया के लिये है और इसी दुनिया में लोगों के सच्चे सुख और सच्ची शान्ति से उसका सम्बन्ध है. थोड़े से शब्दों में बापू का मतलब यह था कि पच्छिमी सभ्यता और पच्छिमी साम्राजवाद के जुल्मों और अनर्थों से अपने देश को और दुनिया को कैसे बचाया जावे. वह समझते थे कि सत्य और अहिंसा के हथियारों से ही पच्छिमी सभ्यता को जीता जा सकता है. इसी लिये इन हथियारों से काम लेना अपने देश वालों को सिखाना ही उन्होंने अपने जीवन का ख़ास मक़सद बना लिया था. अगर हम बापू के जीवन के इस पहलू को अच्छी तरह समझ लें तो उनका यह विधान भी हमारी समझ में आ जावेगा. इसीलिये विधान को देने से पहले हम गांधी जी के मोटे मोटे असूलों, उनके धर्म यानी सत्य और अहिंसा और पच्छिमी सभ्यता के बारे में उनके विचार, यह सब बयान कर देना चाहते हैं. सबसे पहले हम उनके धर्म को ही लेते हैं.

باپو کے بنیادی سدّھانت

مہاتما گاندھی کے "لوک سیوک سنگھ" کے اس نئے ودھان کو پوری طرح سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ پہلے ہم اُن بنیادی سدھانتوں کو سمجھ لیں جن پر باپو انسانی سماج کو ڈھالنا چاہتے تھے. ہم یہاں اُن کے گہرے آدھیاتمک یا روحانی وچاروں اور آدرشوں میں نہیں پڑنا چاہتے. ہم صرف یہ دیکھنا چاہتے ہیں کہ باپو اس دنیا میں ہمارے سماج کو کیا روپ دینا چاہتے تھے. باپو کا لوک سیوک سنگھ اسی دنیا کے لئے ہے اور اسی دنیا میں لوگوں کے سچے سُکھ اور سچی شانتی سے اس کا سمبندھ ہے. تھوڑے سے شبدوں میں باپو کا مطلب یہ تھا کہ پچھمی سبھیتا اور پچھمی سامراج واد کے ظلموں اور انرتھوں سے اپنے دیش کو اور دنیا کو کیسے بچایا جاوے. وہ سمجھتے تھے کہ ستیہ اور اہنسا کے ہتھیاروں سے ہی پچھمی سبھیتا کو جیتا جا سکتا ہے. اسی لئے ان ہتھیاروں سے کام لینا اپنے دیش والوں کو سکھانا ہی انہوں نے اپنے جیون کا خاص مقصد بنا لیا تھا. اگر ہم باپو کے جیون کے اس پہلو کو اچھی طرح سمجھ لیں تو ان کا یہ ودھان بھی ہماری سمجھ میں آ جاوے گا. اسی لئے ودھان کو دینے سے پہلے ہم گاندھی جی کے موٹے موٹے اصولوں، ان کے دھرم یعنی ستیہ اور اہنسا اور پچھمی سبھیتا کے بارے میں ان کے وچار یہ سب بیان کر دینا چاہتے ہیں. سب سے پہلے ہم ان کے دھرم کو ہی لیتے ہیں.

हजारों बरस पहले पूरब की सभ्यता ने दुनिया को दीन धर्म की ठोस बुनियादों पर क़ायम किया था और आदमी की ज़िन्दगी को दीन धर्म के साँचे में ही ढालना चाहा था. आज कल की पच्छिमी सभ्यता ने इन्सानी समाज की उन पुरानी बुनियादों को जड़से हिला दिया है. आज दुनिया के ९५ फ़ीसदी पढ़े लिखे लोग धर्म के उन सीधे सादे असूलों को भी, जिनका नेकी बदी से सम्बन्ध है, जैसे सच बोलना, चोरी न करना, दूसरों के साथ ईमानदारी बरतना, जिन्हें पुरानी दुनिया के लोग अटल मानते थे, फ़ज़ूल और निकम्मा समझते हैं और इन पर अमल करने वालों को पागल और दक़ियानूसी कहते हैं. वह समझ ही नहीं सकते कि आध्यात्मिक या रूहानी बातों को समझने के लिये और नेकी बदी के असूलों की असलियत जानने के लिये भी किसी तरह की तालीम या तजरबे की ज़रूरत है. यह सब समय का फेर है. इसका कोई झटपट इलाज हो भी नहीं सकता. बड़े-बड़े इन्क़लाबों के दिनों में इस तरह की कठिनाइयाँ पैदा होती रहती हैं. यह कठिनाइयाँ ही बढ़ कर इन्सानी समाज की बड़ी बड़ी मुसीबतों का कारन बन जाती हैं.

बापू इसी तरह के एक बहुत बड़े उलट फेर के ज़माने में पैदा हुए. पुरानी सभ्यताओं के धर्म और नेकी बदी के विचार मिटते जा रहे थे. योरप के बढ़ते हुए तिजारती और राजकाजी तूफ़ान और पच्छिमी साम्राज ने इन पुरानी सभ्यताओं के इस तरह के विचारों और आदर्शों को निकम्मा, फीका और बे जान कर दिया था. गांधी जी की आत्मा इस देश की पुरानी सभ्यता के रंग में

ہزاروں برس پہلے پورب کی سبھیتا نے دنیا کو دین دھرم کی ٹھوس بنیادوں پر قائم کیا تھا اور آدمی کی زندگی کو دین دھرم کے سانچے میں ہی ڈھالنا چاہا تھا. آج کل کی پچھمی سبھیتا نے انسانی سماج کی ان پرانی بنیادوں کو جڑ سے ہلا دیا ہے. آج دنیا کے ۹۵ فی صدی پڑھے لکھے لوگ دھرم کے ان سیدھے سادے اصولوں کو بھی، جن کا نیکی بدی سے سمبندھ ہے، جیسے سچ بولنا، چوری نہ کرنا، دوسروں کے ساتھ ایمانداری برتنا، جنھیں پرانی دنیا کے لوگ اٹل مانتے تھے، فضول اور نکما سمجھتے ہیں اور ان پر عمل کرنے والوں کو پاگل اور دقیانوسی کہتے ہیں۔ وہ سمجھ ہی نہیں سکتے کہ آدھیاتمک یا روحانی باتوں کو سمجھنے کے لئے اور نیکی بدی کے اصولوں کی اصلیت جاننے کے لئے بھی کسی طرح کی تعلیم یا تجربے کی ضرورت ہے. یہ سب سمے کا پھیر ہے. اس کا کوئی جھٹ پٹ علاج ہو بھی نہیں سکتا. بڑے بڑے انقلابوں کے دنوں میں اس طرح کی کٹھنائیاں پیدا ہوتی رہتی ہیں. یہ کٹھنائیاں ہی بڑھ کر انسانی سماج کی بڑی بڑی مصیبتوں کا کارن بن جاتی ہیں۔

باپو اسی طرح کے ایک بہت بڑے الٹ پھیر کے زمانے میں پیدا ہوئے۔ پرانی سبھیتاؤں کے دھرم اور نیکی بدی کے وچار مٹتے جا رہے تھے۔ یورپ کے بڑھتے ہوئے تجارتی اور راج کاجی طوفان اور پچھمی سامراج نے ان پرانی سبھیتاؤں کے اس طرح کے وچاروں اور آدرشوں کو نکما، پھیکا اور بے جان کر دیا تھا. گاندھی جی کا آتما اس دیش کی پرانی سبھیتا کے رنگ میں

गहरी रंगी हुई थी. दुनिया भर के अन्दर एक तरफ़ दीन और दूसरी तरफ़ दुनिया का मोह जाल था या एक तरफ़ नेकी और बदी का ख़याल और दूसरी तरफ़ दुनिया परस्ती, इनके बीच खींचातानी जारी थी. ज़माने ने ज़बरदस्ती महात्मा गांधी को इस महासंग्राम के मैदान में धर्म और नेकी की तरफ़ एक महारथी के रूप में लाकर खड़ा कर दिया. देवताओं और असुरों या धर्म और अधर्म के बीच का यह संग्राम अभी तक जारी है.

गांधी जी अपने साथ दो बुनियादी ख़याल दुनिया में लाये. उस समय की दुनिया के लिये यह दोनों बिल्कुल अनोखे थे. एक यह कि आत्मबल यानी रूहानी ताक़त एक बहुत बड़ी ताक़त है और दुनिया की और सब ताक़तें मिलकर भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकतीं. दूसरा यह कि यह आत्मबल आम लोगों में भी पैदा किया जा सकता है और इसकी मदद से दुनिया की बड़ी से बड़ी ताक़तों, उनके ज़ुल्मों और हकूमतों का अहिंसा के असूल पर चल कर मुक़ाबला किया जा सकता है. यह ताक़तें चाहे देश के अन्दर की हों चाहे बाहर की, चाहे राजकाजी हों चाहे साम्प्रदायिक.

धर्म का असली रूप

गांधी जी के सामने एक बड़ी कठिनाई यह भी थी कि धर्म का जो रूप उनके सामने था और जो दुनिया की सब धर्म पुस्तकों में असली धर्म बताया गया है वह बहुत कुछ बिगड़ चुका था. दीन धर्म अपनी पुरानी जगह खो चुका था. धर्म पुस्तकों का वह मान न रह गया था. खोखली रीत रिवाजों और प्रपंचों को ही लोग

گہری رنگی ہوئی تھی۔ دنیا بھر کے اندر ایک طرف دین اور دوسری طرف دنیا کا موہ جال یا ایک طرف نیکی اور بدی کا خیال اور دوسری طرف دنیا پرستی، ان کے بیچ کھینچا تانی جاری تھی۔ زمانے نے زبردستی مہاتما گاندھی کو اس مہاسنگرام کے میدان میں دھرم اور نیکی کی طرف ایک مہارتھی کے روپ میں لاکر کھڑا کر دیا۔ دیوتاؤں اور اسوروں یا دھرم اور ادھرم کے بیچ کا یہ سنگرام ابھی تک جاری ہے۔

گاندھی جی اپنے ساتھ دو بنیادی خیال دنیا میں لائے۔ اس سمے کی دنیا کے لئے یہ دونوں بالکل انوکھے تھے۔ ایک یہ کہ آتم بل یعنی روحانی طاقت ایک بہت بڑی طاقت ہے اور دنیا کی اور سب طاقتیں مل کر بھی اس کا مقابلہ نہیں کر سکتیں۔ دوسرا یہ کہ یہ آتم بل عام لوگوں میں بھی پیدا کیا جا سکتا ہے اور اس کی مدد سے دنیا کی بڑی سے بڑی طاقتوں، ان کے ظلموں اور حکومتوں کا اہنسا کے اصول پر چل کر مقابلہ کیا جا سکتا ہے۔ یہ طاقتیں چاہے دیش کے اندر کی ہوں چاہے باہر کی، چاہے راج کاجی ہوں چاہے سامپردایک۔

دھرم کا اصلی روپ

گاندھی جی کے سامنے ایک بڑی کٹھنائی یہ بھی تھی کہ دھرم کا جو روپ ان کے سامنے تھا اور جو دنیا کی سب دھرم پستکوں میں اصلی دھرم بتایا گیا ہے وہ بہت کچھ بگڑ چکا تھا۔ دین دھرم اپنی پرانی جگہ کھو چکا تھا۔ دھرم پستکوں کا وہ مان نہ رہ گیا تھا۔ کھوکھلے ریت رواجوں اور پرپنچوں کو ہی لوگ

फैल कर बैठे थे. इसी लिये बहुत से समझदार लोग धर्म से दूर भागते थे. गांधी जी धर्म का साम्राज उसके असली रूप में राज काज के ऊपर और इन्सानी जिन्दगी के सब पहलुओं पर जमाना चाहते थे.

धर्म के इस असली रूप की जो व्याख्या महाभारत में की गई है उसे हम नीचे देते हैं.

जाजलि ने ऋषि से पूछा "धर्म क्या चीज है?" ऋषि ने जवाब दिया. "धर्म" शब्द "धृ" धातु से निकला है जिसका मतलब सँभाले रखना या मिलाये रखना है. धर्म से सारा इन्सानी समाज सँभला हुआ है. जो चीज सब को सँभाले और मिलाये रक्खे उसी को पक्की तरह धर्म समझो. किसी जानदार को दुख न पहुंचे इसके लिये धर्म का बखान किया गया है. जिस चीज से किसी को भी दुख न पहुँचे उसी को धर्म जानो. सब जानदारों के भले के लिये धर्म का बखान किया गया है, जिस चीज से सबका भला हो उसी को पक्का धर्म जानो. हे जाजलि! जो आदमी हमेशा दिल से सबका भला चाहता हो और अपने कामों से मन से, और वचन से सदा सबका भला करने में लगा रहता है वही धर्म का जानने वाला है.

मनुस्मृति में मनु महाराज ने सब आदमियों के लिये, चाहे वह किसी भी देश, जाति या वर्ण के हों, धर्म की दस पहचानें बताई हैं. धर्म की वह दस पहचानें यह हैं.—

"धीरज रखना यानी सब्र करना, क्षमा यानी सबको माफ कर देना, दम यानी अपनी आत्मा पर काबू, चोरी न करना, सफाई, अपनी इन्द्रियों यानी नफ्स पर काबू, बुद्धि यानी अक्ल से काम

دیں دھرم سمجھ بیٹھے تھے۔ اسی لئے بہت سے سمجھ دار لوگ دھرم سے دور بھاگتے تھے۔ گاندھی جی دھرم کا سامراج اس کے اصلی روپ میں راج کاج کے اوپر اور انسانی زندگی کے سب پہلوؤں پر جمانا چاہتے تھے۔

دھرم کے اس اصلی روپ کی جو ویاکھیا مہابھارت میں کی گئی ہے اسے ہم نیچے دیتے ہیں۔

جاجلی نے رشی سے پوچھا "دھرم کیا چیز ہے؟" رشی نے جواب دیا۔ "دھرم" شبد "دھر" دھاتو سے نکلا ہے جس کا مطلب سنبھالے رکھنا یا ملائے رکھنا ہے۔ دھرم سے سارا انسانی سماج سنبھلا ہوا ہے۔ جو چیز سب کو سنبھالے اور ملائے رکھے اسی کو پکی طرح دھرم سمجھو۔ کسی جاندار کو دکھ نہ پہنچے اس کے لئے دھرم کا بکھان کیا گیا ہے۔ جس چیز سے کسی کو بھی دکھ نہ پہنچے اسی کو دھرم جانو۔ سب جانداروں کے بھلے کے لئے دھرم کا بکھان کیا گیا ہے، جس چیز سے سب کا بھلا ہو اسی کو پکا دھرم جانو۔ ہے جاجلی! جو آدمی ہمیشہ دل سے سب کا بھلا چاہتا ہو اور اپنے کاموں سے من سے، اور وچن سے سدا سب کا بھلا کرنے میں لگا رہتا ہو وہی دھرم کا جاننے والا ہے۔

منوسمرتی میں منو مہاراج نے سب آدمیوں کے لئے، چاہے وہ کسی بھی دیش، جاتی یا ورن کے ہوں، دھرم کی دس پہچانیں بتائی ہیں۔ دھرم کی وہ دس پہچانیں یہ ہیں:-

"دھیرج رکھنا یعنی صبر کرنا، کشما یعنی سب کو معاف کر دینا، دم یعنی اپنی آتما پر قابو، چوری نہ کرنا، صفائی، اپنی اندریاں یعنی نفس پر قابو، بدھی یعنی عقل سے کام

होना, विद्या हासिल करना; सच्चाई और गुस्सा न करना.

धर्म के बारे मे अपनी शंका को दूर करने के लिये जब महाराज युधिष्ठिर ने महर्षि व्यास से पूछा कि असली धर्म क्या है तो महर्षि व्यास ने बताया—

"हे युधिष्ठिर! धीरज, क्षमा, अहिंसा, चोरी न करना, सफ़ाई, इन्द्रियों को बस मे रखना, बुद्धि को ठीक रखना, विद्या हासिल करना, सच बोलना और गुस्सा न करना यही धर्म के लच्छन हैं."

बापू इसी सच्चे धर्म को दुनिया में फिर से जगाना और फैलाना चाहते थे. उन्होंने सभी मजहबों की किताबों को जी भर के और प्रेम के साथ पढ़ा था. सब धर्मों और सब धर्मों की किताबों में उन्हें एक ही सच्चाई देखने को मिली. सब मजहबों का एक सा आदर और मान उनके दिल में पैदा हो गया. वह सब मजहबों में एक ही रोशनी और एक ही असलियत को देखते थे. सब धर्म पुस्तकों को मथ कर उन्होंने इन्सानी जिन्दगी के दो बुनियादी नियम निकाले. यह दोनों नियम थे, सत्य और अहिंसा. इन्हीं को सच्चाई और प्रेम भी कहा जा सकता है.

बापू के लिये धर्म केवल पढ़ लेने या कोई रीत रिवाज पूरी कर लेने की चीज़ नहीं था. उनके लिये धर्म जिन्दगी में ढालने की चीज़ थी. रहने सहने, खाने पीने, दूसरों से बर्ताव करने, सब कामों को वह धर्म की कसौटी पर कसते थे और अपनी जिन्दगी में धर्म के उसी तरह तजरबे या प्रयोग करते थे जिस तरह एक साइंस वाला साइन्स के तजरबे करता है. इसीलिये उन्हें आध्यात्मिक विज्ञानी या रूहानी साइन्स वाला कहा जा सकता

لینا، ودیا حاصل کرنا؛ سچائی اور غصہ نہ کرنا۔

دھرم کے بارے میں اپنی شنکا کو دور کرنے کے لئے جب مہاراج یدھشٹر نے مہارشی ویاس سے پوچھا کہ اصلی دھرم کیا ہے تو مہارشی ویاس نے بتایا—

"ہے یدھشٹر! دھیرج، کشما، اہنسا، چوری نہ کرنا، صفائی، اندریوں کو بس میں رکھنا، بدھی کو ٹھیک رکھنا، ودیا حاصل کرنا، سچ بولنا اور غصہ نہ کرنا یہی دھرم کے لچھن ہیں۔"

باپو اسی سچے دھرم کو دنیا میں پھر سے جگانا اور پھیلانا چاہتے تھے۔ انھوں نے سبھی مذہبوں کی کتابوں کو جی بھر کے اور پریم کے ساتھ پڑھا تھا۔ سب دھرموں اور سب دھرموں کی کتابوں میں انھیں ایک ہی سچائی دیکھنے کو ملی۔ سب مذہبوں کا ایک سا آدر اور مان ان کے دل میں پیدا ہو گیا۔ وہ سب مذہبوں میں ایک ہی روشنی اور ایک ہی اصلیت کو دیکھتے تھے۔ سب دھرم پستکوں کو متھ کر انھوں نے انسانی زندگی کے دو بنیادی نیم نکالے۔ یہ دونوں نیم تھے، ستیہ اور اہنسا۔ انھیں کو سچائی اور پریم بھی کہا جا سکتا ہے۔

باپو کے لئے دھرم کیول پڑھ لینے یا کوئی ریت رواج پوری کر لینے کی چیز نہیں تھی۔ ان کے لئے دھرم زندگی میں ڈھالنے کی چیز تھی۔ رہنے سہنے، کھانے پینے، دوسروں سے برتاؤ کرنے، سب کاموں کو وہ دھرم کی کسوٹی پر کستے تھے اور اپنی زندگی میں دھرم کے اسی طرح تجربے یا پریوگ کرتے تھے جس طرح ایک سائنس والا سائنس کے تجربے کرتا ہے۔ اسی لئے انھیں آدھیاتمک گیانی یا روحانی سائنس والا کہا جا سکتا

[illegible] की हर धर्म पुस्तक बताती है कि धर्म केवल जानने की [illegible] नहीं है बल्कि जिन्दगी के हर काम में, हर समय और हर हालत में बरतने की चीज़ है. बापू ने इसी को अपने जीवन का बुनियादी उसूल बना रक्खा था. इस रास्ते पर चलने में उन्हें [illegible] तरह के अनुभव होते रहते थे, जिनसे वह आप भी फ़ायदा उठाते थे और दूसरों को भी फ़ायदा पहुँचाते थे. यही उनकी जिन्दगी का निचोड़ था. दक्खिन अफ़्रीक़ा में सत्य और अहिंसा के तजरबों का उन पर बहुत गहरा असर पड़ा. उन्होंने धर्म पुस्तकों में पढ़ा था कि सच्चाई और अहिंसा में वह ताक़त है जिससे हिंसा या मारकाट की बड़ी से बड़ी ताक़तों को जीता जा सकता है. बापू ने पहले तो अपने निजी जीवन में इसके तजरबे करके देखे. उन्हें इन तजरबों में पूरी कामयाबी मिली. फिर उन्होंने बहुत से लोगों को साथ लेकर इसी तरह के तजरबे शुरू किये. उन्होंने समाज के दुख दूर कराने में और राज काज के मैदान में भी सचाई और अहिंसा के तजरबे किये. थोड़े दिनों में उन्हें विश्वास हो गया कि सचाई और अहिंसा ऐसे हथियार हैं जो कभी नाकाम नहीं हो सकते और जिनसे हर तरह के ज़ुल्मों, अन्यायों और अनर्थों को दूर किया जा सकता है.

दक्खिन अफ़्रीक़ा की सरकार वहाँ के हिन्दुस्तानियों के साथ बड़े बड़े ज़ुल्म कर रही थी. बापू ने उन ज़ुल्मों का मुक़ाबला करने के लिये सत्य और अहिंसा पर चलते हुए लड़ने का एक नया ढंग निकाला जिसका नाम उन्होंने "सत्याग्रह" रक्खा. इस अनोखी लड़ाई में उन्हें वहाँ की सरकार के खिलाफ़ अनसुनी कामयाबी मिली.

[illegible]

[illegible] ہے کہ مذہب [illegible] جانے ہی [illegible] ہر حالت [illegible] بنیادی [illegible] ان راستے پر چلنے میں انھیں طرح طرح [illegible] جن سے وہ آپ بھی فائدہ اٹھاتے [illegible] پہنچاتے تھے۔ یہی ان کی زندگی کا نچوڑ تھا۔ [illegible] اہنسا کے تجربوں کا ان پر بہت گہرا اثر پڑا۔ انھوں [illegible] پڑھا تھا کہ سچائی اور اہنسا میں وہ طاقت ہے جس [illegible] بڑی سے بڑی طاقتوں کو جیتا جا سکتا ہے۔ باپو [illegible] اس کے تجربے کر کے دیکھے۔ انھیں ان [illegible] انھوں نے بہت سے لوگوں کو ساتھ لیکر [illegible] انھوں نے سماج کے دکھ دور کرانے [illegible] میدان میں بھی سچائی اور اہنسا کے تجربے کئے۔ تھوڑے [illegible] سچائی اور اہنسا ایسے ہتھیار [illegible] اور جن سے ہر طرح کے ظلموں، انیایوں [illegible]

[illegible] کی سرکار وہاں کے ہندستانیوں کے ساتھ [illegible] ظلم کر رہی تھی۔ باپو نے ان ظلموں کا مقابلہ کرنے کے [illegible] لڑنے کا ایک نیا ڈھنگ [illegible] انھوں نے "ستیاگرہ" رکھا۔ اس انوکھی لڑائی [illegible] سرکار کے خلاف [illegible] کامیابی ملی۔

और बहुत बड़े पैमाने पर उन्होंने अपने देश भाइयों के दुखों को दूर कर दिया.

दक्खिन अफ्रीका के तजरबों से बापू को यह भी पता चल गया कि जब तक हिन्दुस्तान आप आज़ाद नहीं होता तब तक बाहर के मुल्कों के हिन्दुस्तानियों के दुखों की जड़ नहीं कट सकती. इस लिये अब वह सत्याग्रह का सुदर्शन चक्र लिये हुए हिन्दुस्तान लौट आये; इस विचार से कि यहाँ की जनता को इस हथियार का इस्तेमाल सिखाकर उसी के ज़रिये उसे अँग्रेज़ी राज से आज़ाद करें.

हिन्दुस्तान पहुँचकर जब उन्होंने यह एलान किया कि मैं अहिंसा से अँग्रेज़ी राज को हटा दूँगा तो सारा देश और ख़ास कर यहाँ के राजकाजी नेता दंग रह गये. पढ़े लिखे हिन्दुस्तानी गांधी जी की इस बात को समझ ही नहीं सकते थे कि सरकार की बड़ी से बड़ी फ़ौजें, पुलीस और सारी ताक़तें अहिंसा और आत्म बल का मुक़ाबला नहीं कर सकतीं. किसी को विश्वास न होता था. बात यह थी कि यह लोग अपने धर्म की कथाओं को कभी का भूल चुके थे और हिन्दुस्तानी सभ्यता की वह ऊँची, आत्मिक और रूहानी चोटियाँ जिन पर यह देश किसी समय पहुँच चुका था, सदियों से इन लोगों की आँखों से ओझल हो चुकी थीं, नहीं तो हिन्दू शास्त्र इन हथियारों की तारीफ़ों से भरे पड़े हैं. मिसाल के लिये हम गोस्वामी तुलसी दास जी की रामायन से वह बातचीत नीचे देते हैं जो लंका की लड़ाई के पहले रामचन्द्र जी और विभीषन में हुई थी. इस बातचीत में रथ का एक चित्र खींचा

اور بہت بڑے پیمانے پر انھوں نے اپنے دیش بھائیوں کے دکھوں کو دور کر دیا۔

دکھن افریقہ کے تجربوں سے باپو کو یہ بھی پتہ چل گیا کہ جب تک ہندستان آپ آزاد نہیں ہوتا تب تک باہر کے ملکوں کے ہندستانیوں کے دکھوں کی جڑ نہیں کٹ سکتی۔ اس لئے اب وہ ستیاگرہ کا سدرشن چکر لئے ہوئے ہندستان لوٹ آئے؛ اس وچار سے کہ یہاں کی جنتا کو اس ہتھیار کا استعمال سکھا کر اسی کے ذریعے اسے انگریزی راج سے آزاد کریں۔

ہندستان پہنچکر جب انھوں نے یہ اعلان کیا کہ میں اہنسا سے انگریزی راج کو ہٹا دونگا تو سارا دیش اور خاص کر یہاں کے راج کاجی نیتا دنگ رہ گئے۔ پڑھے لکھے ہندستانی گاندھی جی کی اس بات کو سمجھ ہی نہیں سکتے تھے کہ سرکار کی بڑی سے بڑی فوجیں، پولیس اور ساری طاقتیں اہنسا اور آتم بل کا مقابلہ نہیں کر سکتیں۔ کسی کو وشواس نہ ہوتا تھا۔ بات یہ تھی کہ یہ لوگ اپنے دھرم کی کتھاؤں کو کبھی کا بھول چکے تھے اور ہندستانی سبھیتا کی وہ اونچی آتمک اور روحانی چوٹیاں جن پر یہ دیش کسی سمے پہونچ چکا تھا، صدیوں سے ان لوگوں کی آنکھوں سے اوجھل ہو چکی تھیں، نہیں تو ہندو شاستر ان ہتھیاروں کی تعریفوں سے بھرے پڑے ہیں۔ مثال کے لئے ہم گوسوامی تلسی داس جی کی رامائن سے وہ بات چیت نیچے دیتے ہیں جو لنکا کی لڑائی کے پہلے رام چندر جی اور وبھیشن میں ہوئی تھی۔ اس بات چیت میں رتھ کا ایک چتر کھینچا

[illegible] और कुछ [illegible] मिलाये गये हैं. यह सब तुलसीदास जी [illegible] नहीं थी. [illegible] यह सब पुरानी धर्म की किताबों [illegible] लिया था. फिर भी तुलसीदास जी का यह चित्र इतना सुन्दर और [illegible] है और गांधी जी के सत्याग्रह का रूप इसमें इतनी अच्छी [illegible] उठता है कि वैसा और कहीं नहीं मिलता.

विभीषण [illegible] रावण को छोड़ कर रामचन्द्र जी के पास आये [illegible] सिर नंगे पैर रीछ बन्दरों से घिरा हुआ देख कर घबरा कर रामचन्द्र जी से कहने लगे—

रावन रथी बिरथ रघुबीरा,
देखि बिभीषन भयेउ अधीरा।
अधिक प्रीति मन भा सन्देहा,
बन्दि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तनु पद त्राना,
केहि बिधि जीतब बीर बलवाना॥

रामचन्द्र जी ने इस सवालका विभीषन को यों जवाब दिया—

सुनहु सखा कह कृपा निधाना,
जेहि जय होई सो स्यन्दन आना॥
सौरज, धीरज, तेहि रथ चाका,
सत्य सील, दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे,
छमा, कृपा समता रजु जोरे॥
[illegible] भजन सारथी सुजाना,
बिरति चर्म सन्तोष कृपाना॥

رام چندر جی نے اس سوال کا ببھیشن کو یوں جواب دیا—

दान, परसु बुधि, शक्ति प्रचंडा,
वर विज्ञान कठिन को दंडा ॥
अमल अचल मन त्रोन समाना,
सम, जम, नियम, शिली मुखनाना ॥
कवच अभेद विप्र गुरु पूजा,
येहि सम विजय उपाय न दूजा ॥
सखा धर्ममय अस रथ जाके,
जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताके ॥
दोहा—महा अजय संसार रिपु, जीति सकै सो वीर ।
जाके असरथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥

हम रामचन्द्र जी के इन शब्दों की और व्याख्या करना नहीं चाहते. हम केवल इतना कहना चाहते हैं कि इन्हीं हथियारों को रामायन ने, इन्हीं को गीता ने, इन्हीं को 'महात्मा' गांधी ने उस राम रावन या देव असुर संग्राम में जीतने का अमोघ हथियार माना है जो संग्राम दुनिया में सदा होता रहता है. हमारी बाहर की लड़ाइयाँ इसी अन्दर की लड़ाई की छाया होती हैं. इसलिये जिन हथियारों से अन्दर की लड़ाई जीती जा सकती है वही असली और सच्चे हथियार हैं और उन्हीं से बाहर की लड़ाई भी जीती जा सकती है.

जिन अच्छाइयों को रामचन्द्र जी ने ऊपर शक्तियों के रूप में गिनाया है, उनमें से कोई ऐसी नहीं जिसे हर आदमी अपने अन्दर पैदा न कर सके. इन्हें अपने अन्दर पैदा करने का तरीक़ा उन पांच सात व्रतों को पालना और साधना है जिन्हें सब मज़हबों की

دان، پرسو بدھی، شکتی پرچنڈا،
ور وگیان کٹھن کو ڈنڈا ۔
امل اچل من ترون سمانا،
سم، جم، نیم، شلی مکھنا نا
کوچ ابھید وپر گرو پوجا،
ایہی سم وجے اُپائے نہ دوجا
سکھا دھرم مے اس رتھ جاکے
جیتن کہنہ نہ کتہوں رپو تاکے
دوہا— مہا اجے سنسار رپو، جیتی سکے سو ویر
جاکے اسرتھ ہوئی دڑھ، سنہو سکھا مت دھیر

ہم رام چندر جی کے ان شبدوں کی اور ویاکھیا کرنا نہیں چاہتے. ہم کیول اتنا کہنا چاہتے ہیں کہ انھیں ہتھیاروں کو رامائن نے، انھیں کو گیتا نے، انھیں کو مہاتما گاندھی نے اس رام راون یا دیو اسر سنگرام میں جیتنے کا اموگھ ہتھیار مانا ہے جو سنگرام دنیا میں ہوتا رہتا ہے. ہماری باہر کی لڑائیاں اسی اندر کی لڑائی کی چھایا ہوتی ہیں. اسی لئے جن ہتھیاروں سے اندر کی لڑائی جیتی جا سکتی ہے وہی اصلی اور سچے ہتھیار ہیں اور انھیں سے باہر کی لڑائی بھی جیتی جا سکتی ہے.

جن اچھائیوں کو رام چندر جی نے شکتیوں کے روپ میں گنایا ہے، ان میں سے کوئی ایسی نہیں جسے ہر آدمی اپنے اندر پیدا نہ کر سکے. انھیں اپنے اندر پیدا کرنے کا طریقہ ان پانچ سات برتوں کو پالنا اور سادھنا ہے جنھیں سب مذہبوں کی

पुस्तकों में आत्म बल पैदा करने का ज़रिया बताया गया है. हिन्दू शास्त्रों में इसके लिये यह पांच 'महाव्रत' गिनाये गये हैं—सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, और अपरिग्रह, यानी सच बोलना किसी को दुख न देना, नेक चलन रहना, चोरी न करना और माल जमा न करना.

इन पाँच को ही और आसानी के लिये गांधी जी ने अपनी किताब 'मंगल प्रभात' में ग्यारह व्रत बना दिया है. इनमें कोई अनोखी बात नहीं है. जिस तरह दंड, बैठक, मुगदर जिस्मानी बल पैदा करने के साधन हैं वैसे ही यह व्रत आत्म बल पैदा करने के साधन हैं. बहुत से लोग समझते हैं कि शरीर को बलवान बनाने के तरीक़ों से आत्मा को बलवान बनाने के तरीक़े बहुत ज़्यादा कठिन हैं.पर ऐसा है नहीं.बात यह है कि अब तक हमने अपनी निजी ज़िन्दगी, घरेलू ज़िन्दगी और समाजी ज़िन्दगी तीनों को बड़े दर्जे तक हिंसा और अधर्म के साँचों में ढाल रक्खा है. इनमें से हर एक की जड़ हमारी छोटी छोटी खुद ग़रज़ियों पर है. अगर हम दूसरे सब मनुष्यों के साथ एक कुटुम्ब के आदमियों का सा बर्ताव करने लगें तो यह साँचे भी बदल जावें और हम सबके लिये आत्म बल पैदा करने के तरीक़े भी आसान हो जावें. हम चाहें तो यह सब कुछ कर सकते हैं.

आत्म बल।

आत्मबल पैदा करने के यह सारे साधन बहुत पुराने हैं. पुराने ज़माने से दुनिया के रूहानी साइंस वाले यानी सन्त, महात्मा और अल्लाह वाले, इन साधनों की छान बीन करते रहे हैं और इनके असली रूप को समझकर इनसे सब इन्सानों को बहुत से बहुत लाभ

پستکوں میں آتم بل پیدا کرنے کا ذریعہ بتایا گیا ہے۔ ہندو شاستروں میں اس کے لئے یہ پانچ 'مہابرت' گنائے گئے ہیں — ستیہ، اہنسا، برہمچریہ، استیے، اور اپرگرہ یعنی سچ بولنا، کسی کو دکھ نہ دینا، نیک چلن رہنا، چوری نہ کرنا اور مال جمع نہ کرنا۔

ان پانچ کو ہی اور آسانی کے لئے گاندھی جی نے اپنی کتاب 'منگل پربھات' میں گیارہ برت بنا دیا ہے۔ ان میں کوئی انوکھی بات نہیں ہے۔ جس طرح ڈنڈ، بیٹھک، مگدر جسمانی بل پیدا کرنے کے سادھن ہیں ویسے ہی یہ برت آتم بل پیدا کرنے کے سادھن ہیں۔ بہت سے لوگ سمجھتے ہیں کہ شریر کو بلوان بنانے کے طریقوں سے آتما کو بلوان بنانے کے طریقے بہت زیادہ کٹھن ہیں۔ پر ایسا ہے نہیں۔ بات یہ ہے کہ اب تک ہم نے اپنی نجی زندگی، گھریلو زندگی اور سماجی زندگی تینوں کو بڑے درجے تک ہنسا اور ادھرم کے سانچوں میں ڈھال رکھا ہے۔ ان میں سے ہر ایک کی جڑ ہماری چھوٹی چھوٹی خود غرضیوں پر ہے۔ اگر ہم دوسرے سب منشیوں کے ساتھ ایک کٹمب کے آدمیوں کا سا برتاؤ کرنے لگیں تو یہ سانچے بھی بدل جاویں اور ہم سب کے لئے آتم بل پیدا کرنے کے طریقے بھی آسان ہو جاویں۔ ہم چاہیں تو یہ سب کچھ کر سکتے ہیں۔

آتم بل

آتم بل پیدا کرنے کے یہ سارے سادھن بہت پرانے ہیں۔ پرانے زمانے سے دنیا کے روحانی سائنس والے یعنی سنت، مہاتما اور اللہ والے، ان سادھنوں کی چھان بین کرتے رہے ہیں اور ان کے اصلی روپ کو سمجھ کر ان سے سب انسانوں کو …

पहुँचाने के तरीके निकालते रहे हैं. पर महात्मा गांधी ने जो रूप इन साधनों को दिया है और सारे देश को इनकी तालीम देने के जो ढंग निकाले हैं, जिनसे इतने बड़े पैमाने पर उन्होंने राजकाज की लड़ाइयाँ भी लड़ी हैं और उनमें कामयाबी पाई है, इस सब की मिसाल पूरब की पुरानी सभ्यता और हमारी धर्म कथाओं में भी नहीं मिलती. यही बापू का बड़ा पन और अनोखा पन था. उन्होंने अपने देश को सत्याग्रह की तालीम देकर इन्सानी जिन्दगी में एक ऐसे नये युग की बुनियाद डाली है जिसे इतिहास हजारों साल तक भी नहीं भुला सकता.

गांधी जी ने असली धर्म को फिर से जिन्दा ही नहीं किया, उन्होंने धर्म के और नेकी के खास-खास सिद्धान्तों को पहले से कहीं ज्यादा ऊँचा ले जाकर उनके फैलाव को भी बहुत बढ़ा दिया. उन्होंने कहा कि अगर कोई तुम्हारे दाहिने गाल पर चाँटा मारे तो इतना ही काफी नहीं कि तुम अपना बायाँ गाल भी उसके सामने कर दो, बल्कि तुम्हारा यह भी धर्म है कि मारने वाले की आदत को भी, खुद अहिंसा पर कायम रहते हुए छुड़ा दो. इसी तरह उन्होंने बताया कि चोरी के मामले में यही काफी नहीं है कि चोर को सज़ा न दी जाय, या उसे चोरी का सामान ले जाने दिया जाय या बाकी का माल भी उसको नजर कर दिया जाय, बल्कि उसकी इस बुराई को दूर करने की भी हर आदमी को कोशिश करते रहना चाहिये.

इससे भी बढ़कर बापू की एक खास बात यह है कि उन्होंने सत्याग्रह को केवल एक एक आदमियों के ही सुधार का जरिया न

پہنچانے کے طریقے نکالتے رہے ہیں۔ پر مہاتما گاندھی نے جو روپ ان سادھنوں کو دیا ہے اور سارے دیش کو ان کی تعلیم دینے کے جو ڈھنگ نکالے ہیں، جن سے اتنے بڑے پیمانے پر انھوں نے راج کاج کی لڑائیاں بھی لڑی ہیں اور ان میں کامیابی پائی ہے، اس سب کی مثال پورب کی پرانی سبھیتا اور ہماری دھرم کتھاؤں میں بھی نہیں ملتی۔ یہی باپو کا بڑا پن اور انوکھا پن تھا۔ انھوں نے اپنے دیش کو ستیاگرہ کی تعلیم دے کر انسانی زندگی میں ایک ایسے نئے یگ کی بنیاد ڈالی ہے جسے اتہاس ہزاروں سال تک بھی نہیں بھلا سکتا۔

گاندھی جی نے اصلی دھرم کو پھر سے زندہ ہی نہیں کیا، انھوں نے دھرم کے اور نیکی کے خاص خاص سدھانتوں کو پہلے سے کہیں زیادہ اونچا لے جا کر ان کے پھیلاؤ کو بھی بڑھا دیا۔ انھوں نے کہا کہ اگر کوئی تمہارے داہنے گال پر چانٹا مارے تو اتنا ہی کافی نہیں کہ تم اپنا بایاں گال بھی اس کے سامنے کر دو، بلکہ تمہارا یہ بھی دھرم ہے کہ مارنے والے کی عادت کو بھی خود اہنسا پر قائم رہتے ہوئے چھڑا دو۔ اسی طرح انھوں نے بتایا کہ چوری کے معاملے میں یہی کافی نہیں ہے کہ چور کو سزا نہ دی جائے، یا اسے چوری کا سامان لے جانے دیا جائے یا باقی کا مال بھی اس کی نظر کر دیا جائے، بلکہ اس کی اس برائی کو دور کرنے کی بھی ہر آدمی کو کوشش کرتے رہنا چاہیے۔

اس سے بھی بڑھ کر باپو کی ایک خاص بات یہ ہے کہ انھوں نے ستیاگرہ کو کیول ایک ایک آدمیوں کے ہی سدھار کا ذریعہ نہ

... सारे समाज के सुधार का भी साधन बना दिया और उसके लिये लड़ने और काम करने के ऐसे ढंग निकाले जो बड़ी से बड़ी हुकूमतों के खिलाफ़ काम में लाये जा सकते हैं और जिनसे बड़े बड़े पैमाने पर लोगों की भलाई, बढ़ोती उनकी रक्षा और समाज सुधार सब काम किया जा सकता है. अपने इन्हीं तरीक़ों के तजरबे गांधी जी बराबर अपनी अहिंसा की लड़ाई में करते रहे.

स्वराज

हमने गांधी जी के धर्म के बारे में विचार और उनके सत्य, अहिंसा और सत्याग्रह का असली रूप ऊपर दिखाने की कोशिश की है. आगे हम उनके उस स्वराज का रूप दर्शाना चाहते हैं जिसे वह अहिंसा के तरीक़ों से हासिल करना चाहते थे. बापू सच्चा स्वराज इसे मानते थे कि समाज के अन्दर सच्ची आत्मिकता यानी सच्ची रूहानियत और धर्म की सच्ची भावना का ही राज हो और उसी का बोलबाला हो. यानी यह कि समाज के सारे सम्बन्धों में एक दूसरे के साथ सच्चाई और अहिंसा के असूलों पर ही अमल किया जावे. अगर हमारे आपस के सब सम्बन्ध सच्चाई और अहिंसा के असूलों पर ही क़ायम हो जावें तो हममें से एक दूसरे की नफ़रत, डाह, दुश्मनी, खुद ग़रज़ी जैसी बुराइयाँ सब मिट जावें. इन बुराइयों के मिट जाने पर इन्सानी समाज का जो रूप बनेगा उसी को हमारे शास्त्रों में "वसुधैव कुटुम्बकम्" यानी यह कि इस धरती के रहने वाले सब लोग एक कुटुम्ब हैं, कह कर बयान किया गया है, यही इन्सानी समाज के विकास की आखिरी मंज़िल है इस आदर्श को साफ़ साफ़ रूप देकर बापू इन्सानी समाज को

... سارے سماج کے سدھار کا بھی سادھن بنا دیا اور اس کے لئے لڑنے اور کام کرنے کے ایسے ڈھنگ نکالے جو بڑی سے بڑی حکومتوں کے خلاف کام میں لائے جا سکتے ہیں اور جن سے بڑے بڑے پیمانے پر لوگوں کی بھلائی، بڑھوتی ان کی رکشا اور سماج سدھار سب کام کیا جا سکتا ہے. اپنے انہیں طریقوں کے تجربے گاندھی جی برابر اپنی اہنسا کی لڑائی میں کرتے رہے.

سوراج

ہم نے گاندھی جی کے دھرم کے بارے میں وچار اور ان کے ستیہ، اہنسا اور ستیاگرہ کا اصلی روپ اوپر دکھانے کی کوشش کی ہے. آگے ہم ان کے اس سوراج کا روپ درشانا چاہتے ہیں جسے وہ اہنسا کے طریقوں سے حاصل کرنا چاہتے تھے. باپو سچا سوراج اسے مانتے تھے کہ سماج کے اندر سچی آتمکتا یعنی سچی روحانیت اور دھرم کی سچی بھاونا کا ہی راج ہو اور اسی کا بول بالا ہو. یعنی یہ کہ سماج کے سارے سمبندھوں میں ایک دوسرے کے ساتھ سچائی اور اہنسا کے اصولوں پر ہی عمل کیا جائے. اگر ہمارے آپس کے سب سمبندھ سچائی اور اہنسا کے اصولوں پر ہی قائم ہو جاویں تو ہم میں سے ایک دوسرے کی نفرت، ڈاہ، دشمنی، خود غرضی جیسی برائیاں سب مٹ جاویں. ان برائیوں کے مٹ جانے پر انسانی سماج کا جو روپ بنے اسی کو ہمارے شاستروں میں "وسودھیو کٹمب کم" یعنی یہ کہ اس دھرتی کے رہنے والے سب لوگ ایک کٹمب ہیں، کہہ کر بیان کیا گیا ہے. یہی انسانی سماج کے وکاس کی آخری منزل ہے. اس آدرش کو صاف صاف روپ دے کر باپو انسانی سماج کو

एक कुटुम्ब के साँचे में ढाल देना चाहते थे. यही उनके स्वराज का असली रूप था.

जिस तरह बापू के हथियारों और साधनों का असली रूप दर्शाने के लिये हमने गोस्वामी तुलसी दास जी की मदद ली है उसी तरह गांधी जी के स्वराज का सच्चा रूप दर्शाने के लिये भी हम तुलसी दास जी से ही मदद लेना चाहते हैं. रावन को जीतने के बाद रामचन्द्र जी ने जो राज क़ायम किया उसका चित्र गोस्वामी जी ने नीचे के शब्दों में खींचा है--

दोहा—बरनाश्रम निज निज धरम, निरत वेद पथलोग।
चलहिं सदा पावहिं सुख नहिं भय शोक न रोग।
चौपाई—दैहिक, दैविक, भौतिक तापा
राम राज नहिं काहुहिं व्यापा।
सब नर करहिं परसपर प्रीती,
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति रीती।
चरिहु चरन धरमजग माहीं,
पूरि रहा सपनेहुँ अघ नाहीं।
राम भगति रत नर अरु नारी,
सकल परम गति के अधिकारी।
अल्प मृत्यु नहिं कवनिउ पीरा,
सब सुन्दर सब निरज शरीरा।
नहिं दरिद्र कोउ दु:खी न दीना,
नहिं कोऊ अबुध न लच्छन हीना।

ایک کٹمب کے سانچے میں ڈھال دینا چاہتے تھے۔ یہی ان کے سوراج کا اصلی روپ تھا۔

جس طرح باپو کے ہتھیاروں اور سادھنوں کا اصلی روپ درشانے کے لئے ہم نے گوسوامی تلسی داس جی کی مدد لی ہے اسی طرح گاندھی جی کے سوراج کا سچا روپ درشانے کے لئے بھی ہم تلسی داس جی سے ہی مدد لینا چاہتے ہیں۔ راون کو جیتنے کے بعد رام چندر جی نے جو راج قائم کیا اس کا چتر گوسوامی جی نے نیچے کے شبدوں میں کھینچا ہے —

دوہا — ورناشرم نج نج دھرم، نرت وید پتھ لوگ،
چلہیں سدا پاویں سکھ نہیں بھے شوک نہ روگ،
چوپائی — دیہک، دَیوک، بھوتک تاپا
رام راج نہیں کاہوہیں ویاپا
سب نر کریں پرسپر پریتی،
چلہیں سودھرم نرت شرتی ریتی
چریہو چرن دھرم جگ ماہیں،
پوری رہا سپنیہوں اگھ ناہیں
رام بھگتی رت نر ارو ناری،
سکل پرم گتی کے ادھیکاری
الپ مرتیو نہیں کونیو پیرا،
سب سندر سب نرج شریرا
نہیں درِدر کوؤ دکھی نہ دینا،
نہیں کوؤ ابدھ نہ لچھن ہینا

सब निर्दम्भ, धर्म रत पूनी,
नर अरु नारि चतुर सब गूनी।
सब गुणज्ञ पण्डित सब ज्ञानी,
सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।
सब उदार सब पर उपकारी,
बिप्र चरन सेवक नर नारी।
एक नारि व्रतरत सब झारी,
ते मन-बच क्रम पति हितकारी।
दोहा—दंड जतिन्ह कर भेद जहँ, नर्तक नृत्य समाज ॥
जितहुँ मनहि अस सुनियजग, रामचन्द्र के राज ॥

बापू राम राज का नाम बहुत लिया करते थे. रामायन से उन्हें अथाह प्रेम था. वह उसे बार बार सुना करते थे. इसलिये बहुत मुमकिन है कि जिस स्वराज को बापू रामराज बताते थे उस पर तुलसीदास जी के इस चित्र की गहरी छाप हो.

इसमें कोई अजीब बात भी नहीं है, क्योंकि अगर हम इस चित्र में से कविता के अलंकारों को अलग कर दें तो इस चित्र में और दुनिया के दूसरे आदर्श राज के अच्छे से अच्छे चित्रों में जो आज कल चालू हैं कोई बुनियादी फ़र्क़ नहीं है. प्रजातंत्र यानी जमहूरियत का नाम रटने वाले, ऐसे ही समाजवादी यानी सोशलिस्ट और साम्यवादी या कम्युनिस्ट सबके सब स्वराज को अपने अपने ढंग से जो आख़िरी और सबसे ऊँचा रूप देते हैं, वह तुलसीदास जी के इस

سب نردمبھ، دھرم رت پونی،
نر ارو ناری چتر سب گونی
سب گنگیہ پنڈت سب گیانی،
سب کرتگیہ نہیں کپٹ سیانی
سب اُدار سب پر اُپکاری،
وپر چرن سیوک نر ناری
ایک ناری برت رت سب جھاری،
تے من وچ کرم پتی ہتکاری
دوہا- ڈنڈ جتنہہ کر بھید جہنہ، نرتک نرتیہ سماج
جتہوں منہی اس سنیئیہ جگ رام چندر کے راج

باپو رام راج کا نام بہت لیا کرتے تھے۔ رامائن سے انھیں اتھاہ پریم تھا۔ وہ اسے بار بار سنا کرتے تھے۔ اس لئے بہت ممکن ہے کہ جس سوراج کو باپو رام راج بتاتے تھے اس پر تلسی داس جی کے اس چتر کی گہری چھاپ ہو۔

اس میں کوئی عجیب بات بھی نہیں ہے، کیوں کہ اگر ہم اس چتر میں سے کویتا کے النکاروں کو الگ کر دیں تو اس چتر میں اور دنیا کے دوسرے آدرش راج کے اچھے سے اچھے چتروں میں جو آج کل چالو ہیں کوئی بنیادی فرق نہیں ہے۔ پرجاتنتر یعنی جمہوریت کا نام رٹنے والے، ایسے ہی سماج وادی یعنی سوشلسٹ اور سامیہ وادی یا کمیونسٹ سب کے سب سوراج کو اپنے اپنے ڈھنگ سے جو آخری اور سب سے اونچا روپ دیتے ہیں، وہ تلسی داس جی کے اس

चित्र से बहुत अलग नहीं है. यह सब चित्र एक दूसरे से मिलते हैं.

इसी के साथ साथ इन दोनों तरह के चित्रों में एक बड़ा फ़र्क़ भी है. पच्छिमी नेता स्वराज के अपने सब चित्रों में भौतिकता यानी मद्दा परस्ती को और बाहु बल को सबसे बड़ी जगह देते हैं. वह बाहु बल को ही यानी हाथियारों और जिस्मानी ताक़त को ही समाज की रच्छा, उसके सुधार और उसकी तरक़्क़ी का सबसे बड़ा साधन बताते हैं. दीन धर्म या नेकी बदी और ईमानदारी की इनके यहाँ कोई जगह नहीं. इसके ख़िलाफ़ बापू दीन धर्म और नेकी बदी पर ही सारा ज़ोर देते हैं. रामराज का जो चित्र हमने ऊपर दिया है जिसे हमने बापू का सप्ना बतलाया है उसे अगर हम ध्यान से देखें तो उसमें यही बात दिखाई देगी. हमने जो दस बारह चौपाइयाँ चुनी हैं उनमें धर्म का असली रूप ही तरह तरह से दिखाया गया है—जैसे—

निज निज धर्म निरत..................

चलहिं स्वधर्म निरत..............

चारिहुँ चरन धर्म जग माहीं,

सकल परमगति के अधिकारी.

.............न लच्छन हीना.

.................सर्वनिर्भय धर्मरत पुनि,

सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी.............सब पर उपकारी.

एक नारि ब्रत रत.................

धर्म के चार चरन जिनकी ऊपर बात आई है यह हैं—दान, तप-स्या, ज्ञान और दया. बापू ने इन्हीं पर वह सारे तामीरी काम चलाये

چتر سے بہت الگ نہیں ہے. یہ سب چتر ایک دوسرے سے ملتے ہیں.

اسی کے ساتھ ساتھ ان دونوں طرح کے چتروں میں ایک بڑا فرق بھی ہے. پچھمی نیتا سوراج کے اپنے سب چتروں میں بھوتکتا یعنی مادہ پرستی کو اور باہو بل کو سب سے بڑی جگہ دیتے ہیں. وہ باہو بل کو ہی یعنی ہتھیاروں اور جسمانی طاقت کو ہی سماج کی رکشا، اس کے سدھار اور اس کی ترقی کا سب سے بڑا سادھن بتاتے ہیں. دین دھرم یا نیکی بدی اور ایمانداری کی ان کے یہاں کوئی جگہ نہیں. اس کے خلاف باپو دین دھرم اور نیکی بدی پر ہی سارا زور دیتے ہیں. رام راج کا جو چتر ہم نے اوپر دیا جسے ہم نے باپو کا سپنا بتلایا ہے اسے اگر ہم دھیان سے دیکھیں تو اس میں یہی بات دکھائی دے گی. ہم نے جو دس بارہ چوپائیاں چنی ہیں ان میں دھرم کا اصلی روپ ہی طرح طرح سے دکھایا گیا ہے — جیسے —

نج نج دھرم نرت.........

چلہیں سودھرم نرت.........

چاریہوں چرن دھرم جگ ماہیں،

سکل پرم گتی کے ادھیکاری.

.........نہ لچھن ہینا.

.........سرو نربھے دھرم رت پنی،

سب کرتگیہ نہیں کپٹ سیانی.........سب پر اپکاری،

ایک ناری برت رت.........

دھرم کے چار چرن جن کی اوپر بات آئی ہے یہ ہیں۔ دان، تپسیا، گیان اور دیا. باپو نے انہیں پر وہ سارے تعمیری کام چلائے

हैं जो वह समय समय पर स्वराज लेने के लिये जरूरी बताते थे. अर्से में बापू ने एक बहुत बड़ी और साफ की चीज और बढ़ाई है. वह कहते हैं कि नेकी के लिये इतना ही काफी नहीं है कि हमारी नियत ठीक हो और जिस मक़सद तक हम पहुँचना चाहते हैं वह पाक और अच्छा हो. यह भी उतना ही जरूरी है कि जिन तरीक़ों और साधनों से हम उस लक्ष्य तक पहुँचने की कोशिश करें वह तरीक़े और साधन भी शुद्ध और पाक हों. बापू का कहना था कि नापाक साधन आदमी की नियत और लक्ष्य दोनों को नापाक बना देते हैं. इसलिये कोई नापाक या गिरा हुआ साधन जल्दी में या अमली निगाह से कितना ही काम का क्यों न मालूम होता हो अन्त में वह हमें नुक़सान ही पहुँचावेगा.

सत्य और अहिंसा

बापू ने सच्चाई और अहिंसा को सदाचार का बुनियादी असूल मान लिया था. इसलिये उन्होंने इस पर ज़ोर दिया कि हमारे काम करने के सब ढंग और साधन भी सत्य और अहिंसा की कसौटी पर खरे उतरने चाहियें. बापू इसे बहुत ज़रूरी समझते थे. कहीं किसी सूरत और किसी हालत में भी वह इन बातों में कभी कच्चे-पन को गवारा नहीं कर सकते थे. हम इसे नामुमकिन कह दें या व्यवहार और असलियत के विरुद्ध मानें, पर बापू का यही अटल विश्वास था और दुनिया में यही उनकी सबसे बड़ी विशेषता थी. जिस शान और हिम्मत के साथ इस बात को उन्होंने अपने जीवन और अपनी सब योजनाओं में अमली जामा पहनाया और निभाया उसकी मिसाल दुनिया के बड़े से बड़े लोगों की जिन्दगियों में

ہیں جو وہ سمے سمے پر سوراج لینے کے لئے ضروری بتلاتے تھے۔ اس عرصہ میں باپو نے ایک بہت بڑی اور صفائی کی چیز اور بڑھائی ہے۔ وہ کہتے ہیں کہ نیکی کے لئے اتنا ہی کافی نہیں ہے کہ ہماری نیت ٹھیک ہو اور جس مقصد تک ہم پہنچنا چاہتے ہیں وہ پاک اور اچھا ہو۔ یہ بھی اتنا ہی ضروری ہے کہ جن طریقوں اور سادھنوں سے ہم اس لکش تک پہنچنے کی کوشش کریں وہ طریقے اور سادھن بھی شدھ اور پاک ہوں۔ باپو کا کہنا تھا کہ ناپاک سادھن آدمی کی نیت اور لکش دونوں کو ناپاک بنا دیتے ہیں۔ اس لئے کوئی ناپاک یا گرا ہوا سادھن جلدی میں یا عملی نگاہ سے کتنا ہی کام کا کیوں نہ معلوم ہوتا ہو انت میں وہ ہمیں نقصان ہی پہنچا دے گا۔

ستیہ اور اہنسا

باپو نے سچائی اور اہنسا کو سداچار کا بنیادی اصول مان لیا تھا۔ اس لئے انہوں نے اس پر زور دیا کہ ہمارے کام کرنے کے سب ڈھنگ اور سادھن بھی ستیہ اور اہنسا کی کسوٹی پر کھرے اترنے چاہئیں۔ باپو اسے بہت ضروری سمجھتے تھے۔ کہیں کسی صورت اور کسی حالت میں بھی وہ ان باتوں میں کچے پن کو گوارا نہیں کر سکتے تھے۔ ہم اسے ناممکن کہہ دیں یا ویوہار اور اصلیت کے ورودھ مانیں، پر باپو کا یہی اٹل وشواس تھا اور دنیا میں یہی ان کی سب سے بڑی وشیشتا تھی۔ جس شان اور ہمت کے ساتھ اس بات کو انہوں نے اپنے جیون اور اپنی سب یوجناؤں میں عملی جامہ پہنایا اور نبھایا اس کی مثال دنیا کے بڑے سے بڑے لوگوں کی زندگیوں میں

मिलना कठिन है. इससे भी बढ़ कर ३० साल तक ४० करोड़ लोगों की लगातार अगुवाई करते हुए हिमालय की तरह अनोखे असूल पर खुद अटल रूप से जमे रहना और अपने सारे देश को और संसार को साफ़ शब्दों मे इसी पर जमें रहने के लिये कहते और बढ़ावा देते रहना, इतिहास की एक ऐसी नई घटना है जिसने सारी दुनिया के माथे को अथाह प्रेम और आदर के साथ उनके सामने झुका दिया. माना कि अमली रूप में उनके देश ने या संसार ने इस ऊँचे सिद्धान्त को नहीं अपनाया, पर इसमें भी शक नहीं कि यह सिद्धान्त अटल और अमर है और बापू में जो कुछ आत्म बल था वह इसी सिद्धान्त को अपने जीवन का मूल आधार बना लेने की वजह से था. जहाँ तक उनके हाड़ मांस का सम्बन्ध है उनमें कोई अनोखा पन नहीं था. उनके जीवन में अगर कोई अनोखा पन था तो यही था कि वह इन सिद्धान्तों पर अटल रूप से जमे रहते थे, और छोटा बड़ा कोई काम इनके खिलाफ़ न करते थे. इसलिये उनके सिद्धान्तों की क़द्र न करना और उनके हाड़ मांस को पूजना ऐसा ही है जैसा ईश्वर को छोड़ कर मिट्टी को पूजना.

बापू के सामने स्वराज का जो रूप था और जो जगह सत्य और अहिंसा के असूलों को इंसानी ज़िन्दगी में वह देना चाहते थे, वह दुनिया की आजकल की हवा के बिलकुल खिलाफ़ थी. हम ऊपर कह चुके हैं कि बापू एक बड़े इन्क़लाब के ज़माने में पैदा हुए थे. सो आँख खोलते ही उन्हों ने देखा कि दुनिया के इतिहास में पहली बार एक ऐसी नई सभ्यता ने योरप के देशों में जन्म लेकर पूरी दुनिया पर क़ाबू पा लिया था जो अपने आदर्शों, असूलों

ملنا کٹھن ہے. اس سے بھی بڑھ کر ۳۰ سال تک ۴۰ کروڑ لوگوں کی لگاتار اگوائی کرتے ہوئے ہمالیہ کی طرح انوکھے اصول پر خود اٹل روپ سے جمے رہنا اور اپنے سارے دیش کو اور سنسار کو صاف شبدوں میں اسی پر جمے رہنے کے لئے کہتے اور بڑھاوا دیتے رہنا، اتہاس کی ایک ایسی نئی گھٹنا ہے جس نے ساری دنیا کے ماتھے کو اتھاہ پریم اور آدر کے ساتھ ان کے سامنے جھکا دیا. مانا کہ عملی روپ میں ان کے دیش نے یا سنسار نے اس اونچے سدھانت کو نہیں اپنایا، پر اس میں بھی شک نہیں کہ یہ سدھانت اٹل اور امر ہیں اور باپو میں جو کچھ آتم بل تھا وہ اسی سدھانت کو اپنے جیون کا مول آدھار بنا لینے کی وجہ سے تھا. جہاں تک ان کے ہاڑ ماس کا سمبندھ ہے ان میں کوئی انوکھا پن نہیں تھا. ان کے جیون میں اگر کوئی انوکھا پن تھا تو یہی تھا کہ وہ ان سدھانتوں پر اٹل روپ سے جمے رہتے تھے، اور چھوٹا بڑا کوئی کام ان کے خلاف نہ کرتے تھے. اس لئے ان کے سدھانتوں کی قدر نہ کرنا اور ان کے ہاڑ ماس کو پوجنا ایسا ہی ہے جیسے ایشور کو چھوڑ کر مٹی کو پوجنا.

باپو کے سامنے سوراج کا جو روپ تھا اور جو جگہ ستیہ اور اہنسا کے اصولوں کو انسانی زندگی میں وہ دینا چاہتے تھے، وہ دنیا کی آج کل کی ہوا کے بالکل خلاف تھی. ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ باپو ایک بڑے انقلاب کے زمانے میں پیدا ہوئے تھے. سو آنکھ کھولتے ہی انھوں نے دیکھا کہ دنیا کے اتہاس میں پہلی بار ایک ایسی نئی سبھیتا نے یورپ کے دیشوں میں جنم لے کر ساری دنیا پر قابو پا لیا تھا جو اپنے آدرشوں، اصولوں

और योजनाओं में पुरानी एशियाई सभ्यताओं से बिल्कुल उलटी थी. पुरानी सभ्यतायें दीन धर्म और इन्सानियत के आदर्शों को सामने रख कर चलती थीं और नेकी बदी, दूसरों का भला, त्याग, सेवा, सच्चाई, ईमानदारी और अहिंसा जैसे असूलों को इन्सानी ज़िन्दगी के सबसे अनमोल रत्न मानती थीं. उन सभ्यताओं का एक ही लक्ष्य या मक़सद रहता था और वह यह कि जिस तरह भी हो सके इन्सानी ज़िन्दगी में इन अच्छाइयों को बढ़ाया और अमली रूप दिया जावे ! समाज सुधार और समाज की रचना का सारा काम उन्होंने अपने ऋषियों, मुनियों, नबियों, वलियों, अल्लाह वालों और ईश्वर भक्तों के हाथों में सौंप रखा था. ऐसे लोगों की ही वह संस्थायें होती थीं और उन्हीं के वह इदारे होते थे जो इन्सानी समाज को धर्म और नेकी के ठीक रास्ते पर रखने का काम करते थे. राज काज को और राज काज में लगे हुए लोगों को वह एक तरह से वैसा ही समझते थे—जैसा क़साई, चमार, हथियार बनाने वाले या इसी तरह के पेशों के लोगों को. इसी लिये दीन धर्म की बातों में या समाज रचना या समाज सुधार के कामों में राजा को या राज काज वालों को दख़ल देने का कोई हक़ नहीं था. इनका काम केवल देश की रक्षा करना और समाज की जो बन पड़े सेवा करना ही था.

पच्छिमी सभ्यता

पच्छिमी सभ्यता अपने यहाँ के धर्म-मज़हबों से घोर युद्ध करके और उनको मिटा कर अपने सिंहासन पर बैठी थी. इस सभ्यता में

اور یوجناؤں میں پرانی ایشیائی سبھیتاؤں سے بالکل الٹی تھی. پرانی سبھیتائیں دین دھرم اور انسانیت کے آدرشوں کو سامنے رکھ کر چلتی تھیں اور نیکی بدی، دوسروں کا بھلا، تیاگ، سیوا، سچائی، ایمانداری اور اہنسا جیسے اصولوں کو انسانی زندگی کے سب سے انمول رتن مانتی تھیں. ان سبھیتاؤں کا ایک ہی لکش یا مقصد رہتا تھا اور وہ یہ کہ جس طرح بھی ہو سکے انسانی زندگی میں ان اچھائیوں کو بڑھایا اور عملی روپ دیا جاوے! سماج سدھار اور سماج کی رچنا کا سارا کام انھوں نے اپنے رشیوں، منیوں، نبیوں، ولیوں، اللہ والوں اور ایشور بھکتوں کے ہاتھوں میں سونپ رکھا تھا. ایسے لوگوں کی ہی وہ سنستھائیں ہوتی تھیں اور انھیں کے وہ ادارے ہوتے تھے جو انسانی سماج کو دھرم اور نیکی کے ٹھیک راستے پر رکھنے کا کام کرتے تھے. راج کاج کو اور راج کاج میں لگے ہوئے لوگوں کو وہ ایک طرح سے ویسا ہی سمجھتے تھے — جیسا قصائی، چمار، ہتھیار بنانے والے یا اسی طرح کے پیشوں کے لوگوں کو. اسی لئے دین دھرم کی باتوں میں یا سماج رچنا یا سماج سدھار کے کاموں میں راجا کو یا راج کاج والوں کو دخل دینے کا کوئی حق نہیں تھا. ان کا کام کیول دیش کی رکشا کرنا اور سماج کی جو بن پڑے سیوا کرنا ہی تھی.

پچھمی سبھیتا

پچھمی سبھیتا اپنے یہاں کے دھرم مذہبوں سے گھور یدھ کر کے اور ان کو مٹا کر اپنے سنگھاسن پر بیٹھی تھی. اس سبھیتا میں

राज काज ही सबसे बड़ी चीज़ थी. इसलिये पच्छिमी सभ्यता में धर्म के इन चार चरनों यानी दान, ज्ञान, दया और तप को, जिन पर पुरानी सभ्यताओं ने अपनी सारी इमारत खड़ी की थी, काट कर फेंक दिया और उनकी जगह चार ऐसी चीज़ों को दी जिन्हें पुरानी सभ्यता ने केवल राज काज तक ही रहने दिया था, यानी साम, दाम, दंड और भेद. पुरानी सभ्यताओं ने इन चारों को राज काज में भी आधे मन से ही रहने की इजाज़त दी थी. यह चारों असूल सत्य और अहिंसा से ठीक उल्टे थे इसलिये धर्म के मैदान में राज काज नीचा समझा जाता था.

पच्छिमी सभ्यता ने इंसानी समाज के इस पुराने तरीक़े को उलट दिया. नतीजा यह हुआ कि सारे समाज की काया पलट गई. समाजी ज़िन्दगी के हर पहलू में गिरावट, बेचैनी, एक दूसरे से डाह, दुश्मनी और तरह तरह के सत्यानाशी उलट फेर होने लगे. पच्छिम के बेदीन साइंस वालों ने प्रकृति यानी क़ुदरत की नये सिरे से छान बीन की और इंसानी ज़िन्दगी को मथकर वह इस नतीजे पर पहुँचे कि क़ुदरत का सबसे अटल क़ानून यही है कि जिसमें ताक़त या पुरुषार्थ है वही ज़िन्दा रह सकता है. इसी असूल को "सर वाईवल आफ दी फ़िटेस्ट" कहते हैं. पुरानी सभ्यतायें धर्म, सदाचार, सत्य, अहिंसा, दूसरों का भला करना, सेवा, प्रेम, नम्रता, क्षमा, धीरज जैसी चीज़ों को ही सच्चे पुरुषार्थ की बुनियाद समझती थीं. पच्छिम ने इसके ख़िलाफ़ बाहुबल, बेदर्दी, ख़ुदग़रज़ी आपाधापी और एक दूसरे से डाह को इन्सानी स्वभाव के बुनियादी असूल मान कर इन्हीं पर सारे समाज को क़ायम करना चाहा.

راج کاج ہی سب سے بڑی چیز تھی۔ اس لئے پچھمی سبھیتا میں دھرم کے ان چار چرنوں یعنی دان، گیان، دیا اور تپ کو، جن پر پرانی سبھیتاؤں نے اپنی ساری عمارت کھڑی کی تھی، کاٹ کر پھینک دیا اور ان کی جگہ چار ایسی چیزوں کو دی جنھیں پرانی سبھیتا نے کیول راج کاج تک ہی رہنے دیا تھا، یعنی سام، دام، ڈنڈ اور بھید۔ پرانی سبھیتاؤں نے ان چاروں کو راج کاج میں بھی آدھے من سے ہی رہنے کی اجازت دی تھی۔ یہ چاروں اصول ستیہ اور اہنسا سے ٹھیک الٹے تھے اس لئے دھرم کے میدان میں راج کاج نیچا سمجھا جاتا تھا۔

پچھمی سبھیتا نے انسانی سماج کے ان پرانے طریقے کو الٹ دیا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ سارے سماج کی کایا پلٹ گئی۔ سماجی زندگی کے ہر پہلو میں گراوٹ، بے چینی، ایک دوسرے سے ڈاہ، دشمنی اور طرح طرح کے ستیاناشی الٹ پھیر ہونے لگے۔ پچھم کے بے دین سائنس والوں نے پرکرتی یعنی قدرت کی نئے سرے سے چھان بین کی اور انسانی زندگی کو متھ کر وہ اس نتیجے پر پہنچے کہ قدرت کا سب سے اٹل قانون یہی ہے کہ جس میں طاقت یا پرشارتھ ہے وہی زندہ رہ سکتا ہے۔ اسی اصول کو "سروائیول آف دی فِٹیسٹ" کہتے ہیں۔ پرانی سبھیتائیں دھرم، سداچار، ستیہ، اہنسا، دوسروں کا بھلا کرنا، سیوا، پریم، نمرتا، کشما، دھیرج، جیسی چیزوں کو ہی سچے پرشارتھ کی بنیاد سمجھتی تھیں۔ پچھم نے اس کے خلاف باہوبل، بیدردی، خودغرضی آپادھاپی اور ایک دوسرے سے ڈاہ کو انسانی سوبھاؤ کے بنیادی اصول مان کر انھیں پر سارے سماج کو قائم کرنا چاہا۔

नतीजा यह हुआ कि जिसकी लाठी उसकी भैंस का असूल, जिसे जंगल का क़ानून कहते हैं, सभ्य इन्सानों की जिन्दगी का असूल बन गया.

पच्छिमी सभ्यता का यह सारा ढंग और यह व्यवहार इन्सानियत से गिरा हुआ और इन्सानी समाज को मिटा देने वाला है. इसी के साथ साथ पच्छिम के नये दार्शनिकों और फ़लसफ़ियों ने "वसुधैव कुटुम्बकम्" की जगह एक और नया असूल गढ़ डाला. उसका नाम रखा "दी ग्रेटेस्ट गुड आफ दी ग्रेटेस्ट नम्बर" (यानी ज्यादा से ज्यादा आदमियों का ज्यादा से ज्यादा भला). इस नये असूल ने इन्सानी समाज के टुकड़े टुकड़े कर दिये और सबके
२२ भले की जगह, क़ौमों, मुल्कों, फ़िरक़ों, सम्प्रदायों, जातियों, पार्टियों और अपने अपने वर्गों की भलाई पर ज़ोर दिये जाने की बुनियाद डाली. स्वार्थ और ख़ुदग़रज़ी एक क़ुदरती और जायज़ चीज़ समझी जाने लगी. इस तरह पच्छिमी राजनीति ने दुनिया में इस तरह की सैकड़ों अलग अलग शक्तियों का एक सिलसिला जारी कर दिया जो एक दूसरे को काटने और सारी दुनिया को विनाश और बरबादी की तरफ़ ले जाने लगीं. पुरानी सभ्यता ने अपनी समझ में इस तरह की ताक़तों को हमेशा के लिये ख़तम कर दिया था. अब इस मुर्दे में एकबारगी फिर से जान पड़ गई. पुरानी सभ्यता अपने को बेबस समझने लगी. यह नई शैतानी बीमारी महामारी की तरह सारी दुनिया में फैलने लगी. पच्छिमी सभ्यता के रूप में इसने सारी दुनिया पर सिक्का जमा लिया. यह महामारी अमरीका, आस्ट्रेलिया, अफ़्रीका, जिस देश में भी पहुँची वहाँ के पुराने रहने

نتیجہ یہ ہوا کہ جس کی لاٹھی اس کی بھینس کا اصول، جسے جنگل کا قانون کہتے ہیں، سبھیہ انسانوں کی زندگی کا اصول بن گیا۔

پچھمی سبھیتا کا یہ سارا ڈھنگ اور یہ ویوہار انسانیت سے گرا ہوا اور انسانی سماج کو مٹا دینے والا ہے۔ اسی کے ساتھ ساتھ پچھم کے نئے درشنکوں اور فلسفیوں نے "وسودھیو کٹمبکم" کی جگہ ایک اور نیا اصول گڑھ ڈالا۔ اس کا نام رکھا "دی گریٹیسٹ گڈ آف دی گریٹیسٹ نمبر" (یعنی زیادہ سے زیادہ آدمیوں کا زیادہ سے زیادہ بھلا)۔ اس نئے اصول نے انسانی سماج کے ٹکڑے ٹکڑے کر دئے اور سب کے بھلے کی جگہ، قوموں، ملکوں، فرقوں، سمپردایوں، جاتیوں، پارٹیوں اور اپنے اپنے ورگوں کی بھلائی پر زور دئے جانے کی بنیاد ڈالی۔ سوارتھ اور خودغرضی (٥٥)
ایک قدرتی اور جائز چیز سمجھی جانے لگی۔ اس طرح پچھمی راج نیتی نے دنیا میں اس طرح کی سیکڑوں الگ الگ شکتیوں کا ایک سلسلہ جاری کر دیا جو ایک دوسرے کو کاٹنے اور ساری دنیا کو ناش اور بربادی کی طرف لے جانے لگیں۔ پرانی سبھیتا نے اپنی سمجھ میں اس طرح کی طاقتوں کو ہمیشہ کے لئے ختم کر دیا تھا۔ اب اس مردے میں ایکبارگی پھر سے جان پڑ گئی۔ پرانی سبھیتا اپنے کو بے بس سمجھنے لگی۔ یہ نئی شیطانی بیماری مہاماری کی طرح ساری دنیا میں پھیلنے لگی۔ پچھمی سبھیتا کے روپ میں اس نے ساری دنیا پر سکہ جما لیا۔ یہ مہاماری امریکہ، آسٹریلیا، افریقہ جس دیش میں بھی پہنچی وہاں کے پرانے رہنے

वालों की नस्लों की नस्लें इसने मिटा डालीं. जो थोड़े से अधमरे बच गये उन्हें न्यू वर्कींगरेशोज़ के बचे खुचे अजायब घरी नमूने बना दिया. करोड़ों इन्सान अपने घरों और अपने देश में अमन से रहते हुए भी नापैद कर दिये गये. कुछ की बाबत जो ज्यादा सख्त जान साबित हुए जैसे अफ्रीक़ा के काफिर, यह शिकायत की गई कि वह "अभी तक मिटने से इन्कार कर रहे हैं !" नई सभ्यता के बड़े बड़े विद्वानों और जानकारों ने इनके मिटते जाने का कारन यह बताया कि "उनमें सभ्यता की टक्कर को बर्दाश्त करने की शक्ति ही नहीं रह गई थी—इसलिये उन्हें कोई मिटने से बचा नहीं सकता था."

इस नई शैतानी सभ्यता ने तिजारत को जीवन का सब से बड़ा लक्ष्य बताया. पुरानी सभ्यताओं ने तिजारत को तीसरे दर्जे पर रखा था. पहले ब्राह्मण दूसरे राजा और तीसरे वैश्य. इस उलटे पन का नतीजा यह हुआ कि राजा से लेकर दरबान तक और जनता का हर आदमी व्योपारी बन गया. गाँवों के लोग सिमट सिमट कर शहरों में ६० फ़ीसदी और ८० फ़ीसद तक आ बसे. गाँवों की सारी ज़िन्दगी मटियामेट हो गई. बड़े बड़े डरावने कारखानों और कोयला खाने और धुआं उगलने वाली चिमनियों ने जन्म लिया. मशीन राज की बुनियादें गहरी और मज़बूत पड़ गईं. इन बड़े बड़े कारखानों की पैदावार को खपाने के लिये नये नये बाज़ारों और मण्डियों की ज़रूरत हुई. दुनिया भर के बाज़ारों पर क़ब्ज़ा जमाने के लिये बन्दूक़ों, तोपों, गोलों, ज़हरीली गैसों और ऐटमबमों की ज़रूरत पड़ी. बड़ी बड़ी जंगी सेनायें बनीं जिनकी मदद से

والوں کی نسلوں کی نسلیں اس نے مٹا ڈالیں. جو تھوڑے سے ادھ مرے بچ گئے انھیں وِنڈنگ ریسز کے بچے کھچے عجائب گھری نمونے بنا دیا. کروڑوں انسان اپنے گھروں اور اپنے دیش میں امن سے رہتے ہوئے بھی ناپید کر دئیے گئے. کچھ کی بابت جو زیادہ سخت جان ثابت ہوئے جیسے افریقہ کے کافر، یہ شکایت کی گئی کہ وہ "ابھی تک مٹنے سے انکار کر رہے ہیں !" نئی سبھیتا کے بڑے بڑے ودوانوں اور جانکاروں نے ان کے مٹتے جانے کا کارن یہ بتایا کہ "ان میں سبھیتا کی ٹکر کو برداشت کرنے کی شکتی ہی نہیں رہ گئی تھی ــــ اس لئے انھیں کوئی مٹنے سے بچا نہیں سکتا تھا."

اس نئی شیطانی سبھیتا نے تجارت کو جیون کا سب سے بڑا لکش بتایا. پرانی سبھیتاؤں نے تجارت کو تیسرے درجے پر رکھا تھا. پہلے برہمن دوسرے راجہ اور تیسرے ویشیہ. اس اُلٹے پن کا نتیجہ یہ ہوا کہ راجہ سے لے کر دربان تک اور جنتا کا ہر آدمی بیوپاری بن گیا. گاؤں کے لوگ سمٹ سمٹ کر شہروں میں ۶۰ فی صدی اور ۸۰ فی صدی تک آ بسے. گاؤں کی ساری زندگی ملیامیٹ ہو گئی. بڑے بڑے ڈراؤنے کارخانوں اور کوئلہ کھانے اور دھواں اُگلنے والی چمنیوں نے جنم لیا. مشین راج کی بنیادیں گہری اور مضبوط پڑ گئیں. ان بڑے بڑے کارخانوں کی پیداوار کو کھپانے کے لئے نئے نئے بازاروں اور منڈیوں کی ضرورت ہوئی. دنیا بھر کے بازاروں پر قبضہ جمانے کے لئے بندوقوں، توپوں، گولوں، زہریلی گیسوں اور ایٹم بموں کی ضرورت پڑی. بڑی بڑی جنگی سینائیں بنیں جن کی مدد سے

पश्चिमी साम्राज्य शाही ने दुनिया भर पर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया.

इस बढ़ते हुए व्योपार, बढ़ती हुई तिजारत और फैलते हुए साम्राज को बनाये रखने के लिये भलाई बुराई के भी नये नियम गढ़ने पड़े. पच्छिम के पण्डितों ने इसके लिये एक और नया असूल, एक नया ऐटमबम तैयार किया, यह नया ऐटमबम यह है—All is fair in love and war यानी प्रेम में और लड़ाई में, इन दोनों में जो कुछ भी कर लिया जाय, जायज़ है. इस नये देवता की पूजा के लिये नये मन्दिरों की जरूरत पड़ी. पच्छिमी सभ्यता के इन पण्डितों ने व्यवहारिकता (प्रेक्टिकल इज़्म) और वास्तविकता (रियल इज़्म) के बड़े बड़े, और सुनहरे नये मन्दिर बनाना और इन मन्दिरों की विकराल वेदी पर धर्म के चारों चरनों दान, ज्ञान, दया और तप की क़ुर्बानी देना शुरू कर दिया. इस तरह पुरानी सभ्यता के ऊँचे से ऊँचे सिद्धान्तों को थोथे प्रपंच कह कर उन्हें मिटा दिया और अपने शैतानी नाच के लिये दुनियां का मैदान साफ़ कर लिया.

इस नई सभ्यता ने अपने से बाहर के सब देशों को दो हिस्सों में बाँटा. एक असभ्य और दूसरे अर्द्ध सभ्य यानी एक जंगली और दूसरे नीम जंगली. नीम जंगली देशों में उन्होंने चीन और हिन्दुस्तान को शामिल किया. जंगली देशों के लोगों को मिटा कर उनकी ज़मीनों, खानों और जंगलों पर इन्होंने क़ब्ज़ा किया और नीम जंगली क़ौमों को पूरी तरह सभ्य बनाने के लिये उनको अपने आधीन किया.

پچھمی سامراج شاہی نے دنیا بھر پر اپنا قبضہ جما لیا۔

اس بڑھتے ہوئے بیوپار، بڑھتی ہوئی تجارت اور پھیلتے ہوئے سامراج کو بنائے رکھنے کے لئے بھلائی برائی کے بھی نئے نیم گڑھنے پڑے۔ پچھم کے پنڈتوں نے اس کے لئے ایک اور نیا اصول، ایک نیا ایٹم بم تیار کیا، یہ نیا ایٹم بم یہ ہے — All is fair in love and war یعنی پریم میں اور لڑائی میں، ان دونوں میں جو کچھ بھی کر لیا جائے، جائز ہے۔ اس نئے دیوتا کی پوجا کے لئے نئے مندروں کی ضرورت پڑی۔ پچھمی سبھیتا کے ان پنڈتوں نے ویوہارکتا (پریکٹیکلزم) اور واستوکتا (ریلزم) کے بڑے بڑے، اور سنہرے نئے مندر بنانا اور ان مندروں کی وکرال ویدی پر دھرم کے چاروں چرنوں دان، گیان، دیا اور تپ کی قربانی دینا شروع کر دیا۔ اس طرح پرانی سبھیتا کے اونچے سے اونچے سدھانتوں کو تھوتے پرپنچ کہہ کر انہیں مٹا دیا اور اپنے شیطانی ناچ کے لئے دنیا کا میدان صاف کر لیا۔

اس نئی سبھیتا نے اپنے سے باہر کے سب دیشوں کو دو حصوں میں بانٹا۔ ایک اسبھیہ اور دوسرے ادھ سبھیہ یعنی ایک جنگلی اور دوسرے نیم جنگلی۔ نیم جنگلی دیشوں میں انہوں نے چین اور ہندوستان کو شامل کیا۔ جنگلی دیشوں کے لوگوں کو مٹا کر ان کی زمینوں، کانوں اور جنگلوں پر انہوں نے قبضہ کیا اور نیم جنگلی قوموں کو پوری طرح سبھیہ بنانے کے لئے ان کو اپنے آدھین کیا۔

हिन्दुस्तानी सभ्यता इतिहास के शुरू से लेकर हमेशा बाहर के लोगों राजाओं, क़ौमों, मज़हबों और सभ्यताओं का दिल से स्वागत करती रहती थी. हर परदेशी हमारे यहाँ दया और प्रेम का हक़दार समझा जाता था. यह देश दुनिया भर के दुखियों का, चाहे वह किसी देश धर्म या सम्प्रदाय के हों, मेहमान घर बना हुआ था. अन्दर या बाहर किसी को दुख पहुँचाना यह अपने धर्म के ख़िलाफ़ समझता था. इस देश ने सदा सब के साथ मां का सा प्रेम रखा. इसी प्रेम के बल पर उसने करोड़ों को अपनी सभ्यता के गहरे रंग में रंग कर हैवानों को इन्सान, ज़ालिमों को दयावान और अर्द्ध सभ्यों को सुसभ्य बना दिया. पर पच्छिम के मेहमानों पर अपना सब कुछ न्योछावर करके भी हमारा देश उन्हें अपना न बना सका. उनका शिकारियों और जोंकों का सा रूप आख़ीर तक जैसे का तैसा बना रहा.

इस देश के राजाओं ने अपने बाहुबल से पच्छिम के हमले का मुक़ाबला किया. बाहुबल हिन्दुस्तानी सभ्यता नहीं थी. महात्मा बुद्ध के बाद हमारी सभ्यता ने बाहुबल को राज काज से भी बाहर निकाल देने की कोशिश की थी. हमारी सभ्यता अपनी अनोखी धर्मी और रूहानी लहरों से सदा सारे संसार को सींचती और लहलहाती रही थी. अगर इस देश की सभ्यता पच्छिम से भी बढ़कर डरावनी ज़हरीली गैसों और ऐटमबम बना कर उनके ज़रिये पच्छिम को जीत लेती तो इससे योरप का नाश तो होता या न होता इतना ज़रूर होता कि हमारी सभ्यता दुनिया के लिये योरप की सभ्यता से भी ज़्यादा ख़तरनाक बन जाती. इसका दूसरा कोई

ہندستانی سبھیتا اتہاس کے شروع سے لے کر ہمیشہ باہر کے لوگوں راجاؤں، قوموں، مذہبوں اور سبھیتاؤں کا دل سے سواگت کرتی رہتی تھی۔ ہر پردیسی ہمارے یہاں دیا اور پریم کا حق دار سمجھا جاتا تھا۔ یہ دیش دنیا بھر کے دکھیوں کا، چاہے وہ کسی دیش دھرم یا سمپردائے کے ہوں، مہمان گھر بنا ہوا تھا۔ اندر یا باہر کسی کو دکھ پہنچانا یہ اپنے دھرم کے خلاف سمجھتا تھا۔ اس دیش نے سدا سب کے ساتھ ماں کا سا پریم رکھا۔ اسی پریم کے بل پر اس نے کروڑوں کو اپنی سبھیتا کے گہرے رنگ میں رنگ کر حیوانوں کو انسان، ظالموں کو دیاوان اور اردھ سبھیوں کو سسبھیہ بنا دیا۔ پر پچھم کے مہمانوں پر اپنا سب کچھ نچھاور کر کے بھی ہمارا دیش انھیں اپنا نہ بنا سکا۔ ان کا شکاریوں اور جونکوں کا روپ آخر تک جیسے کا ویسا بنا رہا۔

اس دیش کے راجاؤں نے اپنے باہو بل سے پچھم کے حملے کا مقابلہ کیا۔ باہو بل ہندستانی سبھیتا نہیں تھی۔ مہاتما بدھ کے بعد ہماری سبھیتا نے باہو بل کو راج کاج سے بھی باہر نکال دینے کی کوشش کی تھی۔ ہماری سبھیتا اپنی انوکھی دھرمی اور روحانی لہروں سے سدا سارے سنسار کو سینچتی اور لہلہاتی رہی تھی۔ اگر اس دیش کی سبھیتا پچھم سے بھی بڑھ کر ڈراونی زہریلی گیسوں اور ایٹم بم بنا کر ان کے ذریعے پچھم کو جیت لیتی تو اس سے یورپ کا ناش تو ہوتا یا نہ ہوتا اتنا ضرور ہوتا کہ ہماری سبھیتا دنیا کے لئے یورپ کی سبھیتا سے بھی زیادہ خطرناک بن جاتی۔ اس کا دوسرا کوئی

असीका हो ही नहीं सकता था. हमारा देश इस रास्ते पर पड़ जाता तो हमारी सभ्यता का पाक मिशन, उसका अनोखा और ऊँचा आदर्श सदा के लिये ख़त्म हो जाता. पच्छिम की ग़ुलामी से आज़ाद होने की जगह वह अनन्त समय के लिये उसकी ग़ुलाम और बाँदी बन जाती. हमारी सभ्यता की आत्मा इसे नहीं सह सकती थी. इसलिये इसे पच्छिम के मायावी जाल, वहाँ की माद्दा परस्ती को छोड़कर, फ़ौजों, तोपों, गैसों और बमों की मदद न लेकर, अपनी आध्यात्मिक और नैतिक यानी रूहानी और एख़लाक़ी गहराइयों में ग़ोता लगाना पड़ा. हमारी सभ्यता ने दो सौ बरस तक इन गहराइयों का मंथन किया. उसने अपनी उन पुरानी शक्तियों को जगाया जिनका रामचन्द्र जी ने विभीषण को ब्यौरा दिया था. इन शक्तियों को वह रूप देकर जिससे वह सारी दुनिया को इन नई आफ़तों से बचा सकें, हमारी सभ्यता ने और हमारे देश ने महात्मा गांधी को जन्म दिया और उन्हें इन शक्तियों के तजरबे करना सिखलाया. बापू हिन्दुस्तानी सभ्यता के धर्म प्रेम और उसकी रूहानियत के साक्षात् अवतार थे. वह उनका जीता जागता नमूना थे. संसार की सेवा करना इस देश का सदा से पाक मिशन रहा. इस मिशन को पूरा करना ही महात्मा गांधी का काम था.

पच्छिमी सभ्यता और बापू

बापू को पच्छिमी सभ्यता के इस बेदीनीपन और उसकी हैवानियत से बड़ी नफ़रत थी. उन्हें डर था कि अगर अंग्रेज़ी राज चला गया और पच्छिमी सभ्यता इस देश में रह गई तो अनन्त

نہیں ہو ہی نہیں سکتا تھا. ہمارا دیش اس راستے پر پڑ جاتا تو ہماری سبھیتا کا پاک مشن، اس کا انوکھا اور اونچا آدرش سدا کے لئے ختم ہو جاتا. پچھم کی غلامی سے آزاد ہونے کی جگہ وہ اننت سمے کے لئے اس کی غلام اور باندی بن جاتی. ہماری سبھیتا کی آتما اسے نہیں سہہ سکتی تھی. اس لئے اسے پچھم کے مایا وی جال، وہاں کی مادہ پرستی کو چھوڑ کر، فوجوں، توپوں، گیسوں اور بموں کی مدد نہ لے کر، اپنی آدھیاتمک اور نیتک یعنی روحانی اور اخلاقی گہرائیوں میں غوطہ لگانا پڑا. ہماری سبھیتا نے دو سو برس تک ان گہرائیوں کا منتھن کیا. اس نے اپنی ان پرانی شکتیوں کو جگایا جن کا رام چندر جی نے وبھیشن کو بیورا دیا تھا. ان شکتیوں کو وہ روپ دے کر جس سے وہ ساری دنیا کو ان نئی آفتوں سے بچا سکیں، ہماری سبھیتا نے اور ہمارے دیش نے مہاتما گاندھی کو جنم دیا اور انہیں ان شکتیوں کے تجربے کرنا سکھلایا. باپو ہندوستانی سبھیتا کے دھرم پریم اور اس کی روحانیت کے ساکشات اوتار تھے. وہ ان کا جیتا جاگتا نمونہ تھے. سنسار کی سیوا کرنا اس دیش کا سدا سے پاک مشن رہا. اس مشن کو پورا کرنا ہی مہاتما گاندھی کا کام تھا.

پچھمی سبھیتا اور باپو

باپو کو پچھمی سبھیتا کے اس بے دینی پن اور اس کی حیوانیت سے بڑی نفرت تھی. انہیں ڈر تھا کہ اگر انگریزی راج چلا گیا اور پچھمی سبھیتا اس دیش میں رہ گئی تو اننت

काल के लिये देश को इस सभ्यता की ग़ुलामी में रहना पड़ेगा. क्यों कि पच्छिमी सभ्यता के रंग में रंगा हुआ देशी राज अगर एक बार देश में जम गया तो उसकी जड़ें विदेशी राज की जड़ों से कहीं ज्यादा गहरी पड़ जायँगी. इसलिये गांधी जी को हाकिमों के काले या गोरे होने की इतनी चिन्ता नहीं थी जितनी इस बात की कि जो राज भी हो वह देश के पुराने सच्चे धर्मीपन और नेकी की बुनियादों पर क़ायम हो.

पच्छिमी सभ्यता के इस असूल को कि "पहले अपनी इच्छाओं और जरूरतों को बढ़ाओ और फिर उन्हें पूरा करने में अपनी सारी शक्ति लगा दो" बापू सह नहीं सकते थे. वह यह देखते थे कि इसी तालीम ने पच्छिम में भोगविलास और ऐश परस्ती का वह तूफ़ान खड़ा कर दिया है जिसके रहते आदमी अपना असली भला बुरा समझ ही नहीं सकता. जब तक यह तूफ़ान शान्त न हो दुनिया की मुसीबतें दूर नहीं हो सकतीं और न दुनिया को टिकाऊ शान्ति मिल सकती है. वह समझते थे कि दिल दिमाग़ और आचार विचार की ग़ुलामी तन की और धन की ग़ुलामी से कहीं ज्यादा बुरी और ख़तरनाक है. सच यह है कि मन की ग़ुलामी में ही तन की ग़ुलामी की जड़ें गहरी जाती हैं और अधिक पक्की हो जाती हैं. किसी ने एक बार बापू से पूछा कि आपके और पंडित नेहरू के राजकाजी विचारों में क्या अन्तर है. उन्होंने जवाब दिया कि "बहुत थोड़ा सा अन्तर है; पं० जवाहरलाल जी चाहते हैं कि अंग्रेज देश से चले जायँ और अंग्रेज़ियत रह जाये. मैं चाहता हूँ कि अंग्रेज़ियत चली जाय अंग्रेज रह जाय." इससे बापू के ठीक ठीक विचारों का पता चलता है.

کال کے لئے دیش کو اس سبھیتا کی غلامی میں رہنا پڑے گا۔ کیوں کہ پچھمی سبھیتا کے رنگ میں رنگا ہوا دیشی راج اگر ایک بار دیش میں جم گیا تو اس کی جڑیں ودیشی راج کی جڑوں سے کہیں زیادہ گہری پڑ جائیں گی۔ اس لئے گاندھی جی کو حاکموں کے کالے یا گورے ہونے کی اتنی چنتا نہیں تھی جتنی اس بات کی کہ جو راج بھی ہو وہ دیش کے پرانے سچے دھرمی پن اور نیکی کی بنیادوں پر قائم ہو۔

پچھمی سبھیتا کے اس اصول کو کہ "پہلے اپنی اچھاؤں اور ضرورتوں کو بڑھاؤ اور پھر انہیں پورا کرنے میں اپنی ساری شکتی لگا دو" باپو سہہ نہیں سکتے تھے۔ وہ یہ دیکھتے تھے کہ اسی تعلیم نے پچھم میں بھوگ ولاس اور عیش پرستی کا وہ طوفان کھڑا کر دیا ہے جس کے رہتے آدمی اپنا اصلی بھلا برا سمجھ ہی نہیں سکتا۔ جب تک یہ طوفان شانت نہ ہو دنیا کی مصیبتیں دور نہیں ہو سکتیں اور نہ دنیا کو ٹکاؤ شانتی مل سکتی ہے۔ وہ سمجھتے تھے کہ دل دماغ اور آچار وچار کی غلامی تن کی اور دھن کی غلامی سے کہیں زیادہ بری اور خطرناک ہے۔ سچ یہ ہے کہ من کی غلامی میں ہی تن کی غلامی کی جڑیں گہری جاتی ہیں اور ادھک پکی ہو جاتی ہیں۔ کسی نے ایک بار باپو سے پوچھا کہ آپ کے اور پنڈت نہرو کے راج کاجی وچاروں میں کیا انتر ہے۔ انھوں نے جواب دیا کہ "بہت تھوڑا سا انتر ہے؛ پنڈت جواہر لال جی چاہتے ہیں کہ انگریز دیش سے چلے جائیں اور انگریزیت رہ جائے۔ میں چاہتا ہوں کہ انگریزیت چلی جائے انگریز رہ جائیں۔" اس سے باپو کے ٹھیک ٹھیک وچاروں کا پتہ چلتا ہے۔

अपने "हिन्द स्वराज" में उन्होंने पच्छिमी सभ्यता के बारे में अपने विचार साफ़ साफ़ दिये हैं. हम इन्हें उन्हीं के शब्दों में नीचे देते हैं. वह लिखते हैं—

"आज कल की सभ्यता के मोह जाल में फँसे हुए लोग भला उसके खिलाफ़ क्यों लिखेंगे? वह तो उल्टे ऐसी बातें और दलीलें खोजने की कोशिश करेंगे जिनसे उनकी बातों का समर्थन हो. पहले तो हमें इस पर विचार करना चाहिये कि इस सभ्यता की खास पहिचानें क्या है.

"एक सच्ची पहिचान तो इसकी यह है कि आज कल सभ्य कहलाने वाले लोग तन के सुख को ही अपनी जिन्दगी का सबसे बड़ा मक़सद मानते हैं.

"किसी देश के लोग अगर पहले बहुत कपड़े और कोट बूट पहनने के आदी नहीं थे और फिर अंग्रेजी कपड़े पहनने लगे तो समझा जाता है कि यह जंगली पन से निकल कर अब सभ्य होने लगे.

"योरप के लोग पहले हाथ से काम करते थे और मामूली हल से अपने काम के लायक़ खेत जोत लेते थे. अब भाप की मशीनों के सहारे हल चला कर एक ही आदमी सैकड़ों बीघे जमीन जोत डालता है और बहुत सा अन्न पैदा कर सकता है. यह बढ़ी हुई सभ्यता की पहचान समझी जाती है.

"पहले बैलगाड़ियों पर दिन भर में १२ कोस की मंज़िल तय होती थी अब रेल गाड़ियों में दिन भर में लोग ४०० कोस की मंज़िल मारते हैं. यह सभ्यता का बड़ा ऊँचा दरजा माना जाता है.

اپنے "ہند سوراج" میں انھوں نے پچھمی سبھیتا کے بارے میں اپنے وچار صاف صاف دیے ہیں. ہم انھیں انھیں کے شبدوں میں نیچے دیتے ہیں. وہ لکھتے ہیں ــــ

"آج کل کی سبھیتا کے موہ جال میں پھنسے ہوئے لوگ بھلا اس کے خلاف کیوں لکھیں گے؟ وہ تو الٹے ایسی باتیں اور دلیلیں کھوجنے کی کوشش کریں گے جن سے ان کی باتوں کا سمرتھن ہو. پہلے تو ہمیں اس پر وچار کرنا چاہیے کہ اس سبھیتا کی خاص پہچانیں کیا ہیں.

"ایک سچی پہچان تو اس کی یہ ہے کہ آج کل سبھیہ کہلانے والے لوگ تن کے سکھ کو ہی اپنی زندگی کا سب سے بڑا مقصد مانتے ہیں.

"کسی دیش کے لوگ اگر پہلے بہت کپڑے اور کوٹ بوٹ پہننے کے عادی نہیں تھے اور پھر انگریزی کپڑے پہننے لگے تو سمجھا جاتا ہے کہ یہ جنگلی پن سے نکل کر اب سبھیہ ہونے لگے.

"یورپ کے لوگ پہلے ہاتھ سے کام کرتے تھے اور معمولی ہل سے اپنے کام کے لائق کھیت جوت لیتے تھے. اب بھاپ کی مشینوں کے سہارے ہل چلا کر ایک ہی آدمی سیکڑوں بیگھے زمین جوت ڈالتا ہے اور بہت سا اناج پیدا کر سکتا ہے. یہ بڑھی ہوئی سبھیتا کی پہچان سمجھی جاتی ہے.

"پہلے بیل گاڑیوں پر دن بھر میں ۱۲ کوس کی منزل طے ہوتی تھی اب ریل گاڑیوں میں دن بھر میں لوگ ۴۰۰ کوس کی منزل مارتے ہیں. یہ سبھیتا کا بڑا اونچا درجہ مانا جاتا ہے.

"कहते हैं कि बढ़ते बढ़ते जल्दी ही वह दिन आवेगा, जब लोग हवाई जहाजों पर सवार होकर दो चार घड़ी में ही जिस देश में चाहे पहुँच जावेंगे.

"बटन दबाते ही पहनने के कपड़े सामने आ जायँगे, दूसरा बटन दबाते ही ताजा अखबार सामने आ जायगा, तीसरा बटन दबाते ही हवा खाने के लिये मोटर आ खड़ी होगी, इशारा करते ही तरह तरह के खाने परोसे हुए सामने आ जायँगे. मतलब यह कि मशीन के बल पर छोटे बड़े सारे काम सहज ही में अपने आप होने लगेंगे.

"पहले लोग जानवरों की खाल पहनते थे और भाले बर्छी से लड़ते थे, आज लोग भाले बर्छी की जगह एक पर एक छ: गोलियाँ चलाने वाले पिस्तौल रखते हैं.

"पहले लोग जब लड़ते थे तो गुत्थमगुत्था हो जाते थे. अब पहाड़ की आड़ में मशीनगन के पीछे खड़ा हुआ एक आदमी पलक मारते मारते हजारों की जान ले सकता है. यही सभ्यता है.

"पहले लोग आजादी के साथ जब जी चाहा खुली जगहों में काम धन्धे करते थे. अब हजारों आदमी जमा होकर अपना पेट पालने के लिये बड़े बड़े कारखानों और खानों में काम करते हैं. उनकी हालत जानवरों से भी गई बीती है. अपनी जान हथेली पर रख कर बड़े जोखम के कामों में उन्हें पिलना पड़ता है और वह भी करोड़ पति साहूकारों की जेबें भरने के लिये.

"पहले लोगों को मार मार कर जबरदस्ती गुलाम बनाया जाता था आज उन्हें धन और धन से मिलने वाले ऐश आराम का लालच

"کہتے ہیں کہ بڑھتے بڑھتے جلدی ہی وہ دن آوے گا، جب لوگ ہوائی جہازوں پر سوار ہو کر دو چار گھڑی میں ہی جس دیش میں چاہے پہنچ جاوینگے۔

"بٹن دباتے ہی پہننے کے کپڑے سامنے آجائیں گے، دوسرا بٹن دباتے ہی تازہ اخبار سامنے آجائے گا، تیسرا بٹن دباتے ہی ہوا کھانے کے لئے موٹر آکھڑی ہوگی، اشارا کرتے ہی طرح طرح کے کھانے پروسے ہوئے سامنے آجائیں گے۔ مطلب یہ کہ مشین کے بل پر چھوٹے بڑے سارے کام سہج ہی میں اپنے آپ ہونے لگیں گے۔

"پہلے لوگ جانوروں کی کھال پہنتے تھے اور بھالے برچھی سے لڑتے تھے، آج لوگ بھالے برچھی کی جگہ ایک پر ایک چھ گولیاں چلانے والے پستول رکھتے ہیں۔

"پہلے جب لوگ لڑتے تھے تو گتھم گتھا ہو جاتے تھے۔ اب پہاڑ کی آڑ میں مشین گن کے پیچھے کھڑا ہوا ایک آدمی پلک مارتے مارتے ہزاروں کی جان لے سکتا ہے۔ یہی سبھیتا ہے۔

"پہلے لوگ آزادی کے ساتھ جب جی چاہا کھلی جگہوں میں کام دھندے کرتے تھے۔ اب ہزاروں آدمی جمع ہو کر اپنا پیٹ پالنے کے لئے بڑے بڑے کارخانوں اور کھانوں میں کام کرتے ہیں۔ ان کی حالت جانوروں سے بھی گئی بیتی ہے۔ اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر بڑے جوکھم کے کاموں میں انھیں پلنا پڑتا ہے اور وہ بھی کروڑپتی ساہوکاروں کی جیبیں بھرنے کے لئے۔

"پہلے لوگوں کو مار مار کر زبردستی غلام بنایا جاتا تھا آج انھیں دھن اور دھن سے ملنے والے عیش آرام کا لالچ

देकर मुलायम बनाया जाता है...............अधिक क्या कहूँ................

यही सभ्यता की पहिचाने हैं और अगर कोई इन बातों को सभ्यता की पहिचान न माने तो उसे निरा अनाड़ी माना जाता है.

"यह सभ्यता न तो दीन धर्म का विचार करती है और न नेकी बदी पर ध्यान देती है. इस सभ्यता के हिमायती बड़ी गंभीरता के साथ कह डालते हैं कि दीन धर्म सिखाना हमारा काम नहीं है!

"हिन्दुस्तान में जहाँ यह पागल सभ्यता नहीं पहुँची है वहाँ अपनी वैसी ही हालत है जैसी कभी पहले थी. जिन लोगों को देश की लगन हो उन्हें मैं यह सलाह दूँगा कि आप पहले अपने देश के उस हिस्से में जाइये जहाँ अभी तक रेल की पहुँच नहीं हुई है और छः महीने तक वहीं घूम फिर कर सच्ची देश भक्ति अपने अन्दर पैदा करिये, उसके बाद स्वराज की बातें करियेगा.

"यह सभ्यता ऐसी है कि अगर हम धीरज रखें तो अन्त में इस सभ्यता की आग सुलगाने वाले खुद ही इसमें जल मरेंगे.

'इस्लाम की निगाह से इस सभ्यता को शैतानी सभ्यता कहना होगा, और हिन्दू धर्म ने इसे घोर कलियुग कहकर बयान किया है."

पच्छिमी सभ्यता का इतना सुन्दर चित्र बापू के लेखों में हमने और कहीं नहीं देखा. जो पेशीनगोई बापू ने इसमें की है कि इस सभ्यता की आग सुलगाने वाले आप ही इसमें जल मरेंगे, इसे कहे अभी ४० बरस ही हुए हैं. पर इतने थोड़े समय में उन्होंने और हमने इस इतनी बड़ी सभ्यता को खुद अपनी आग में जलते हुए अपनी आँखों से देख लिया. बापू कोई ज्योतिषी नहीं थे. उन्होंने

دے کر ملائم بنایا جاتا ہے......... ادھک کیا کہوں........

یہی سبھیتا کی پہچانیں ہیں اور اگر کوئی ان باتوں کو سبھیتا کی پہچان نہ مانے تو اسے نرا اناڑی مانا جاتا ہے.

"یہ سبھیتا نہ تو دین دھرم کا وچار کرتی ہے اور نہ نیکی بدی پر دھیان دیتی ہے. اس سبھیتا کے حمایتی بڑی گمبھیرتا کے ساتھ کہہ ڈالتے ہیں کہ دین دھرم سکھانا ہمارا کام نہیں ہے!

"ہندستان میں جہاں یہ پاگل سبھیتا نہیں پہنچی ہے وہاں اپنی ویسی ہی حالت ہے جیسی کبھی پہلے تھی. جن لوگوں کو دیش کی لگن ہو انھیں میں یہ صلاح دوں گا کہ آپ پہلے اپنے دیش کے اس حصے میں جائیے جہاں ابھی تک ریل کی پہنچ نہیں ہوئی ہے اور چھ مہینے تک وہیں گھوم پھر کر سچی دیش بھکتی اپنے اندر پیدا کریے. اس کے بعد سوراج کی باتیں کریے گا.

"یہ سبھیتا ایسی ہے کہ اگر ہم دھیرج رکھیں تو انت میں اس سبھیتا کی آگ سلگانے والے خود ہی اس میں جل مریں گے.

"اسلام کی نگاہ سے اس سبھیتا کو شیطانی سبھیتا کہنا ہوگا، اور ہندو دھرم نے اسے گھور کل یگ کہہ کر بیان کیا ہے."

پچھمی سبھیتا کا اتنا سندر چتر باپو کے لیکھوں میں ہم نے اور کہیں نہیں دیکھا. جو پیشین گوئی باپو نے اس میں کی ہے کہ اس سبھیتا کی آگ سلگانے والے آپ ہی اس میں جل مریں گے، اسے کہے ابھی ۴۰ برس ہی ہوئے ہیں. پر اتنے تھوڑے سمے میں انھوں نے اور ہم نے اس اتنی بڑی سبھیتا کو خود اپنی آگ میں جلتے ہوئے اپنی آنکھوں سے دیکھ لیا. باپو کوئی جیوتشی نہیں تھے.

यह भविष्य वानी नेकी और बदी के बढ़ने घटने और एक दूसरे पर इनके असर को देखकर और उनके नतीजों को सामने रखकर बिल्कुल एक विज्ञानी की तरह हिसाब लगा कर की थी. हमें माद्दी साइंस में यानी ऊपर के जड़जगत और उसकी खोज करने वाले लोगों के बताये हुए नियमों और क़ानूनों में श्रद्धा है, इसलिये कि इन नियमों के नतीजे साफ़ और उसी समय दिखाई दे जाते हैं. पर अध्यात्म यानी रूहानी विद्या के जानने वालों ने नेकी बदी की ताक़तों के तजरबे करके और उनके असर और नतीजों को दुनिया में देख कर जो नियम और क़ानून बना दिये हैं उन पर हमें इतना भरोसा नहीं होता. क्योंकि इनके नतीजे जरा देर में निकलते हैं और इनका सम्बन्ध बाहर की चीजों से कम और हमारे अन्दर के जीवन से अधिक है. विज्ञान या साइंस की निगाह से इससे बड़ी भूल हम नहीं कर सकते. फिर भी हमें अपने साइंसदाँ होने का अभिमान है ! जब तक हम इन नियमों की असलियत को और उनके अटल होने को नहीं मानेंगे और अपने सब कामों, व्योपार व्यवहार और राज काज को इन्हीं नियमों पर और इनका ध्यान रखते हुए नहीं ढालेंगे तब तक दुनिया की कोई ताक़त हमें दुखों और बरबादी से नहीं बचा सकती.

पार्लिमेण्टरी राज

हम बापू के खास खास असूलों को बयान कर चुके. इस हिस्से को खत्म करने से पहले अब हम पार्लमेन्टी राज के सम्बन्ध में बापू की राय और दे देना चाहते हैं, क्योंकि पच्छिमी सभ्यता से उसका गहरा सम्बन्ध है, और गांधी जी ने अपने विधान में इस

یہ بھوشیہ بانی نیکی اور بدی کے بڑھنے گھٹنے اور ایک دوسرے پر ان کے اثر کو دیکھ کر اور ان کے نتیجوں کو سامنے رکھ کر بالکل ایک وگیانی کی طرح حساب لگا کر کی تھی۔ ہمیں مادّی سائنس یعنی اوپر کے جڑ جگت اور اس کی کھوج کرنے والے لوگوں کے بتائے ہوئے نیموں اور قانونوں میں شردھا ہے، اس لئے کہ ان نیموں کے نتیجے صاف اور اسی سمے دکھائی دے جاتے ہیں۔ پر ادھیاتم یعنی روحانی ودیا کے جاننے والوں نے نیکی بدی کی طاقتوں کے تجربے کر کے اور ان کے اثر اور نتیجوں کو دنیا میں دیکھ کر جو نیم اور قانون بنا دئے ہیں ان پر ہمیں اتنا بھروسہ نہیں ہوتا۔ کیونکہ ان کے نتیجے ذرا دیر میں نکلتے ہیں اور ان کا سمبندھ باہر کی چیزوں سے کم اور ہمارے اندر کے جیون سے ادھک ہے۔ وگیان یا سائنس کی نگاہ سے اس سے بڑی بھول ہم نہیں کر سکتے۔ پھر بھی ہمیں اپنے سائنس داں ہونے کا ابھیمان ہے! جب تک ہم ان نیموں کی اصلیت کو اور ان کے اٹل ہونے کو نہیں مانیں گے اور اپنے سب کاموں، بیوپار، ویوہار اور راج کاج کو انہیں نیموں پر اور ان کا دھیان رکھتے ہوئے نہیں ڈھالیں گے تب تک دنیا کی کوئی طاقت ہمیں دکھوں اور بربادی سے نہیں بچا سکتی۔

پارلیمنٹی راج

ہم باپو کے خاص اصولوں کو بیان کر چکے۔ اس حصے کو ختم کرنے سے پہلے اب ہم پارلیمنٹی راج کے سمبندھ میں باپو کی رائے اور دے دینا چاہتے ہیں، کیونکہ پچھمی سبھیتا سے اس کا گہرا سمبندھ ہے، اور گاندھی جی نے اپنے ودھان میں اس

पार्लीमेन्टी राज का खास तौर से ज़िक्र किया है. पच्छिम की इस सभ्यता ने ही आजकल के पार्लीमेन्टी राज को जन्म दिया है, इसलिये इस पार्लीमेन्टी राज में अपनी जन्म देने वाली मां के सारे ऐब कूट कूट कर भरे हुए हैं.

अब हमें देखना चाहिये कि यह पार्लीमेन्टी राज कब से और कैसे चला. इसका जन्म इङ्गलिस्तान में हुआ था. इङ्गलिस्तान के राजा ने जनता पर अपना अधिकार जमाये रखने और जनता से अधिक से अधिक टैक्स वसूल करने के लिये उस देश में पार्लीमेन्टी राज चलाया था. धीरे धीरे पार्लीमेन्ट का बल बढ़ता गया, यहाँ तक कि उसने देश के राजा का गला काट कर उसकी गद्दी लेली. इंगलिस्तान की देखा देखी इस तरह के उलट फेर थोड़े से समय के अन्दर लगभग सारे योरप में होने लगे और पार्लीमेन्टी राज का सिक्का सारी दुनिया पर जम गया और आज भी जमा हुआ है.

दुनिया के आम लोगों में पार्लीमेन्टी राज की इतनी चाह क्यों है इसका कारन यह है कि यह राज आम जनता का राज समझा जाता है. इसी लिये हर देश की जनता पागलों की तरह इसके पीछे दौड़ती है और ख़ुशी ख़ुशी इसे अपने राजा की जगह दे देती है. इसमें जनता इस तरह राजा बनाई जाती है कि लाखों आदमी अपना एक प्रतिनिधि या नुमाइन्दा या ओटिया चुनते हैं इसलिये कि वह इनकी ओर से राज करे. इन लाखों आदमियों में से १०० पीछे ९५ न उसे जानते हैं न पहिचानते हैं. फिर भी वह उनका नुमाइन्दा माना जाता है. चुने जाने के बाद यह नुमाइन्दा

پارلیمنٹی راج کا خاص طور سے ذکر کیا ہے. پچھم کی اس سبھیتا نے ہی آج کل کے پارلیمنٹی راج کو جنم دیا ہے، اس لئے اس پارلیمنٹی راج میں اپنی جنم دینے والی ماں کے سارے عیب کوٹ کوٹ کر بھرے ہوئے ہیں.

اب ہمیں دیکھنا چاہیئے کہ یہ پارلیمنٹی راج کب سے اور کیسے چلا. اس کا جنم انگلستان میں ہوا تھا. انگلستان کے راجہ نے جنتا پر اپنا ادھیکار جمائے رکھنے اور جنتا سے ادھک سے ادھک ٹیکس وصول کرنے کے لئے اس دیش میں پارلیمنٹی راج چلایا تھا. دھیرے دھیرے پارلیمنٹ کا بل بڑھتا گیا، یہاں تک کہ اس نے دیش کے راجہ کا گلا کاٹ کر اس کی گدی لے لی. انگلستان کی دیکھا دیکھی اس طرح کے الٹ پھیر تھوڑے سے سمے کے اندر لگ بھگ سارے یورپ میں ہونے لگے اور پارلیمنٹی راج کا سکہ ساری دنیا پر جم گیا اور آج بھی جما ہوا ہے.

دنیا کے عام لوگوں میں پارلیمنٹی راج کی اتنی چاہ کیوں ہے اس کا کارن یہ ہے کہ یہ راج عام جنتا کا راج سمجھا جاتا ہے. اسی لئے ہر دیش کی جنتا پاگلوں کی طرح اس کے پیچھے دوڑتی ہے اور خوشی خوشی اسے اپنے راجہ کی جگہ دے دیتی ہے. اس میں جنتا اس طرح راجہ بنائی جاتی ہے کہ لاکھوں آدمی اپنا ایک پرتینیدھی یا نمائندہ یا اوٹیا چنتے ہیں اس لئے کہ وہ ان کی اور سے راج کرے. ان لاکھوں آدمیوں میں سے ۱۰۰ پیچھے ۹۵ نہ اسے جانتے ہیں نہ پہچانتے ہیں. پھر بھی وہ ان کا نمائندہ مانا جاتا ہے. چنے جانے کے بعد یہ نمائندہ

उनकी बात भी नहीं पूछता, न उन्हें कोई असली फ़ायदा पहुँचा सकता है. क्योंकि वह तो इसी तरह के तीन चार सौ नुमाइन्दों में से एक होता है. इस तरह एक राजा की जगह तीन चार सौ राजा और मन्त्रियों या वज़ीरों की शकल में दस बीस महाराजा या सम्राट बन जाते हैं और जनता बेचारी वैसी की वैसी "चेरी" ही रह जाती है. राज काज चलाने का ख़र्चा पहले से सैकड़ों गुना बढ़ जाता है. सरकारी नौकरों की गिनती, तनख़्वाहें और भत्ते अलग बढ़ जाते हैं. इन नौकरों और अफ़सरों की तानाशाही में फ़र्क़ नहीं आता, शान शौकत के आडम्बर पुराने सम्राटों को भी शर्माते हैं और यह कहलाता है जनता का राज !

पार्लिमेन्टी राज और बापू

बापू इस सारे मायावी प्रपन्च को जो भोली जनता को राजा बनने का लोभ दे देकर उसके बे हिसाब चूसे जाने का रास्ता खोल देता है, जड़से बदल देना चाहते थे. बापू अपने को सच्चा डेमोक्रेट यानी सच्चा लोकतन्त्री कहते थे. डेमोक्रेसी यानी लोक राज का उनके सामने एक ही रूप था और वह यह था कि जनता नाम के लिये नहीं बल्कि सचमुच आप अपनी राजा हो और अपना सारा कारबार ख़ुद करे. बापू के सामने इसका एक ही तरीक़ा था, वह था डी सेन्टर लाइज़ेशन यानी विकेन्द्री करन या ग़ैर मरकज़ीयत, जिसका मतलब यह है कि हुकूमत की सारी ताक़त को एक जगह जमा न करके चारों तरफ़ दूर दूर तक बाँट दिया जावे. देश को इतने छोटे छोटे हलक़ों में बाँट दिया जावे कि जिनमें जनता अपने जाने

ان کی بات بھی نہیں پوچھتا، نہ انھیں کوئی اصلی فائدہ پہونچا سکتا ہے۔ کیوں کہ وہ تو اسی طرح کے تین چار سو نمائندوں میں سے ایک ہوتا ہے۔ اس طرح ایک راجہ کی جگہ تین چار سو راجہ اور منتریوں یا وزیروں کی شکل میں دس بیس مہاراجہ یا سمراٹ بن جاتے ہیں اور جنتا بے چاری ویسی کی ویسی "چیری" ہی رہ جاتی ہے۔ راج کاج چلانے کا خرچہ پہلے سے سیکڑوں گنا بڑھ جاتا ہے۔ سرکاری نوکروں کی گنتی، تنخواہیں اور بھتے الگ بڑھ جاتے ہیں۔ ان نوکروں اور افسروں کی تاناشاہی میں فرق نہیں آتا، شان شوکت کے آڈمبر پرانے سمراٹوں کو بھی شرماتے ہیں اور یہ کہلاتا ہی جنتا کا راج!

پارلیمنٹی راج اور باپو

باپو اس سارے مایاوی پرپنچ کو جو بھولی جنتا کو راجہ بننے کا لوبھ دے دیکر اس کے بے حساب چوسے جانے کا راستہ کھول دیتا ہے، جڑ سے بدل دینا چاہتے تھے۔ باپو اپنے کو سچے ڈیموکریٹ یعنی سچا لوک تنتری کہتے تھے۔ ڈیموکریسی یعنی لوک راج کا ان کے سامنے ایک ہی روپ تھا اور وہ یہ تھا کہ جنتا نام کے لئے نہیں بلکہ سچ مچ آپ اپنی راجہ ہو اور اپنا سارا کاروبار خود کرے۔ باپو کے سامنے اس کا ایک ہی طریقہ تھا، وہ تھا ڈی سنٹر لائزیشن یعنی وکیندری کرن یا غیر مرکزیت، جس کا مطلب یہ ہے کہ حکومت کی ساری طاقت کو ایک جگہ جمع نہ کرکے چاروں طرف دور دور تک بانٹ دیا جاوے۔ دیش کو اتنے چھوٹے چھوٹے حلقوں میں بانٹ دیا جاوے کہ جنہیں جنتا اپنے جانے

बूझे लोगों को अपना ओटिया या राजा बना सके, वह ओटिया या पंच अपने हल्के की सभी राज काजी और दूसरी जरूरतों को जनता की मदद से पूरा कर सके और झगड़ा फिसाद करने वालों से अपने हल्क़े की रक्षा कर सके.

पार्लीमेन्टी राज में नुमाइन्दगी का ढोंग तो है ही, इस ढोंग से बढ़कर चुनाव का ढंग है. यह चुनाव का ढंग जनता को चारों तरफ़ से मिटाने और बरबाद करने वाला है. इसमें हर तरह की बेईमानी, धोका, फ़रेब, जुर्म ज़्यादती अन्याय, फ़ज़ूल ख़र्ची और दुश्मनी का एक सोता खुल जाता है. इस चुनाव ने देश के देश बरबाद कर दिये. इसकी बुराइयाँ दिनों दिन बढ़ती जा रही हैं, पर इसके सुधार की कोई सूरत ही पैदा नहीं होती. बापू इसके सुधार का एक ही ढंग बताते थे. यह कि वोटरों की जानकारी को और उनके चलन को, उनमें नेकी और बदी, भले और बुरे के विचार को इतना ऊँचा कर दिया जावे और इन गुणों को अपने अन्दर बनाये रखने की जनता में इतनी शक्ति आ जावे कि वह हमेशा ऐसे लोगों को ही वोट दे जो नेक हों, त्यागी हों, दूसरों की सेवा और उनका भला करने वाले हों और जिनमें, ईमानदारी सादगी और नम्रता हो. जब तक जनता में यह शक्ति पैदा नहीं होती, तब तक पार्लीमेंटी राज जनता के लिये राजाओं के राज से ज्यादा बुरा साबित होगा !

जहाँ तक देश के मरकज़ी राज को मज़बूत रखने का सवाल है, वहाँ तक बापू तीन बातें चाहते थे. एक यह कि जनता के

بوجھے لوگوں کو اپنا اوٹیا یا راجہ بنا سکے، وہ اوٹیا یا پنچ اپنے حلقے کی سبھی راج کاجی اور دوسری ضرورتوں کو جنتا کی مدد سے پورا کر سکے اور جھگڑا فساد کرنے والوں سے اپنے حلقے کی رکشا کر سکے۔

پارلیمنٹی راج میں نمائندگی کا ڈھونگ تو ہے ہی، اس ڈھونگ سے بڑھ کر چناؤ کا ڈھنگ ہے۔ یہ چناؤ کا ڈھنگ جنتا کو چاروں طرف سے مٹانے اور برباد کرنے والا ہے۔ اس میں ہر طرح کی بے ایمانی، دھوکا، فریب، جرم، زیادتی، انیائے، فضول خرچی اور دشمنی کا ایک سوتا کھل جاتا ہے۔ اس چناؤ نے دیش کے دیش برباد کر دیئے۔ اس کی برائیاں دنوں دن بڑھتی جا رہی ہیں۔ پر اس کے سدھار کی کوئی صورت ہی پیدا نہیں ہوتی۔ باپو اس کے سدھار کا ایک ہی ڈھنگ بتاتے تھے۔ یہ کہ ووٹروں کی جانکاری کو اور ان کے چلن کو، ان میں نیکی اور بدی، بھلے اور برے کے وچار کو اتنا اونچا کر دیا جاوے اور ان گنوں کو اپنے اندر بنائے رکھنے کی جنتا میں اتنی شکتی آ جاوے کہ وہ ہمیشہ ایسے لوگوں کو ہی ووٹ دے جو نیک ہوں، تیاگی ہوں، دوسروں کی سیوا اور ان کا بھلا کرنے والے ہوں اور جنمیں، ایمانداری سادگی اور نمرتا ہو۔ جب تک جنتا میں یہ شکتی پیدا نہیں ہوتی، تب تک پارلیمنٹی راج جنتا کے لئے راجاؤں کے راج سے زیادہ برا ثابت ہوگا!

جہاں تک دیش کے مرکزی راج کو مضبوط رکھنے کا سوال ہے، وہاں تک باپو تین باتیں چاہتے تھے۔ ایک یہ کہ جنتا کے

नुमाइन्दे सदाचारी और त्यागी हों. दूसरी यह कि इन नुमाइन्दों से सच्ची सेवा ले सकने की जनता में शक्ति हो. तीसरी यह कि इन्हें जब चाहे बदल सकने का भी जनता को अधिकार हो. पर आज कल की हालत में इन तीनों बातों का हो सकना नामुमकिन है इसलिये बापू राज के ऊपरी रूप को इतनी बड़ी चीज़ नहीं मानते थे. वह किसी भी राज के अच्छे बुरे होने की सबसे बड़ी कसौटी यह मानते थे कि वह राज धर्म और नेकी के रास्ते पर चलता है या नहीं, जनता का सच्चा सेवक है या नहीं, सचमुच उसमें जनता ही राजा है या नहीं.

पार्लीमेंटी राज में चुनाव से भी बुरी चीज़ इसकी वह दलबन्दी है, जिसे पार्टी सिस्टम कहा जाता है. इस राज में दो पार्टियों का होना देश के फ़ायदे के लिये ज़रूरी माना जाता है. इसके बिना पार्लीमेंटी राज चल ही नहीं सकता. कम से कम दो पार्टियाँ तो होनी ही चाहियें जिनका यह जन्मसिद्ध और क़ुदरती हक़ हो कि वह एक दूसरे को गिराने और मिटाने की कोशिश करती रहें. इस तरीक़े ने मार काट और ख़ूनी इन्क़लाबों को ज़रूरी बना दिया है. इस पार्टी बाज़ी से सारे देश के सदाचार को और देश के असली फ़ायदे को जो धक्का पहुँचता है उसका कोई अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता. पार्टीबाज़ी देश भर में अमर होकर गाँव गाँव और कोने कोने में फैल जाती है. हर आदमी का यह क़ानूनी फ़र्ज़ और धर्म हो जाता है कि वह न्याय अन्याय, सच झूट या ख़ुद अपने ईमान तक का ख़याल न करते हुए अपनी पार्टी वाले को ही वोट दे.

نمائندے سداچاری اور تیاگی ہوں۔ دوسری یہ کہ ان نمائندوں سے سچی سیوا لے سکنے کی جنتا میں شکتی ہو۔ تیسری یہ کہ انھیں جب چاہے بدل سکنے کا بھی جنتا کو ادھیکار ہو۔ پر آج کل کی حالت میں ان تینوں باتوں کا ہو سکنا ناممکن ہے اس لئے باپو راج کے اُوپری روپ کو اتنی بڑی چیز نہیں مانتے تھے۔ وہ کسی بھی راج کے اچھے بُرے ہونے کی سب سے بڑی کسوٹی یہ مانتے تھے کہ وہ راج دھرم اور نیکی کے راستے پر چلتا ہے یا نہیں، جنتا کا سچا سیوک ہے یا نہیں، سچ مچ اس میں جنتا ہی راجہ ہے یا نہیں۔

پارلیمنٹی راج میں چناؤ سے بھی بری چیز اس کی وہ دل بندی ہے، جسے پارٹی سسٹم کہا جاتا ہے۔ اس راج میں دو پارٹیوں کا ہونا دیش کے فائدے کے لئے ضروری مانا جاتا ہے۔ اس کے بنا پارلیمنٹی راج چل ہی نہیں سکتا۔ کم سے کم دو پارٹیاں تو ہونی ہی چاہئیں جن کا یہ جنم سدھ اور قدرتی حق ہو کہ وہ ایک دوسرے کو گرانے اور مٹانے کی کوشش کرتی رہیں۔ اس طریقے نے مار کاٹ اور خونی انقلابوں کو ضروری بنا دیا ہے۔ اس پارٹی بازی سے سارے دیش کے سداچار کو اور دیش کے اصلی فائدے کو جو دھکا پہنچتا ہے اس کا کوئی اندازہ نہیں کیا جا سکتا۔ پارٹی بازی دیش بھر میں امر ہو کر گاؤں گاؤں اور کونے کونے میں پھیل جاتی ہے۔ ہر آدمی کا یہ قانونی فرض اور دھرم ہو جاتا ہے کہ وہ نیائے انیائے، سچ جھوٹ یا خود اپنے ایمان تک کا خیال نہ کرتے ہوئے اپنی پارٹی والے کو ہی ووٹ دے۔

इन बुराइयों के अलावा पार्लामेन्टी राज में पच्छिमी सभ्यता की तरह बनावट, झूठ और फ़रेब भरा हुआ है. इस तरह का राज सिर से पाँव तक बुराई और हैवानियत में डूबा रहता है. इसीलिये बापू को जितनी नफ़रत पच्छिमी सभ्यता से थी उतनी ही पार्लामेंटी राज से थी. उन्होंने इसके सम्बन्ध में भी अपनी किताब "हिन्द स्वराज्य" में नीचे लिखे शब्दों में अपने विचार जाहिर किये हैं. वह लिखते हैं—

"इङ्गलैंड की इस समय जो हालत है उसे देखकर तो सचमुच दया आती है, और मैं तो ईश्वर से मनाता हूँ कि वैसी हालत भारत की कभी न हो. जिसे आप पार्लामेंटों की मां कहते हैं वह इङ्गलैंड की पार्लामेंट तो बाँझ और वेश्या है. यह दोनों शब्द कड़े हैं पर उसपर पूरी तरह लागू होते हैं." (२४, २१)

"..................पर आज इतना तो सभी स्वीकार करते हैं कि पार्लामेंट के मेम्बर ढोंगी और स्वार्थी होते हैं..................जिस दल का जो मेम्बर होता है, वह उसी दल को आँख बन्द करके अपना वोट देता है, क्योंकि "डिसिप्लिन" यानी क़ायदेदारी के खयाल से वह ऐसा करने के लिये मजबूर है. कोई इससे अपवाद रूप निकल आवे तो उसे बाग़ी और उसके काम को बग़ावत समझा जाता है.................. (पन्ना ३६)

पार्लामेंटी राज के लिये मरते दम तक बापू की यही राय रही. इसके संबन्ध में भी उन्होंने जो भविष्यवानी की थी यानी यह कि अगर पार्लामेंटी राज इस देश में क़ायम हो गया, तो इस देश

ان برائیوں کے علاوہ پارلیمنٹی راج میں پچھمی سبھیتا کی طرح بناوٹ، جھوٹ اور فریب بھرا ہوا ہے۔ اس طرح کا راج سر سے پاؤں تک برائی اور حیوانیت میں ڈوبا رہتا ہے۔ اسی لئے باپو کو جتنی نفرت پچھمی سبھیتا سے تھی اتنی ہی پارلیمنٹی راج سے تھی۔ انھوں نے اس کے سمبندھ میں بھی اپنی کتاب "ہند سوراجیہ" میں نیچے لکھے شبدوں میں اپنے وچار ظاہر کئے ہیں۔ وہ لکھتے ہیں—

"انگلینڈ کی اس سمے جو حالت ہے اُسے دیکھ کر تو سچ مچ دیا آتی ہے، اور میں تو ایشور سے مناتا ہوں کہ ویسی حالت بھارت کی کبھی نہ ہو۔ جسے آپ پارلیمنٹوں کی ماں کہتے ہیں وہ انگلینڈ کی پارلیمنٹ تو بانجھ اور ویشیا ہے۔ یہ دونوں شبد کڑے ہیں پر اس پر پوری طرح لاگو ہوتے ہیں۔" (۲۴، ۲۱)

"..................پر آج اتنا تو سبھی سویکار کرتے ہیں کہ پارلیمنٹ کے ممبر ڈھونگی اور سوارتھی ہوتے ہیں..................جس دل کا جو ممبر ہوتا ہے، وہ اسی دل کو آنکھ بند کرکے اپنا ووٹ دیتا ہے، کیونکہ "ڈسپلن" یعنی قاعدے داری کے خیال سے وہ ایسا کرنے کے لئے مجبور ہے۔ کوئی اس سے اپواد روپ نکل جائے تو اسے باغی اور اس کے کام کو بغاوت سمجھا جاتا ہے.....
......(پنا ۳۶)

پارلیمنٹی راج کے لئے مرتے دم تک باپو کی یہی رائے رہی۔ اس کے سمبندھ میں بھی انھوں نے جو بھوشیہ بانی کی تھی یعنی یہ کہ اگر پارلیمنٹی راج اس دیش میں قائم ہوگیا، تو اس دیش

का नाश हो जायगा, यह भविष्यवानी उनकी पच्छिमी सभ्यता वाली भविष्यवानी से भी ज्यादा जल्दी सच्ची साबित हो रही है.

बापू पार्लीमेंटी हुकूमत के खिलाफ़ थे. फिर भी पच्छिमी सभ्यता की चका चौंध ने इस देश के पढ़े लिखे लोगों को उसके लिये ऐसा बावला कर दिया था कि बापू इन्हें उसकी तरफ़ जाने से किसी तरह भी न रोक सके. देश के नेताओं ने अपनी सारी शक्ति इस बात पर लगा दी कि बापू अपने स्वराज की तहरीक का मक़सद साफ़ शब्दों में पार्लीमेन्टी राज को मान लें. इन नेताओं का खयाल था कि अगर स्वराज का रूप इस तरह साफ़ कर दिया गया तो अंग्रेजों की तरफ़ से भी विरोध कम हो जावेगा और दूसरे देशों को भी हिन्दुस्तान की तरफ़ से इतमीनान हो जावेगा. श्री महादेव देसाई ने "हिन्द स्वराज" के अक्तूबर सन् १९३८ के, एडीशन की प्रस्तावना में बापू के नीचे लिखे शब्द नक़ल किये हैं :—

"इस किताब में आज कल की सभ्यता की बड़ी निन्दा की गई है. यह सन् १९०८ में लिखी गई थी. पर आज तो इस बारे में मेरा विश्वास और भी पक्का है."

"पर मैं अपने पाठक का इस तरफ़ खास ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि आज मेरा लक्ष्य (मक़सद) वह स्वराज नहीं है जिसका बयान इस पुस्तक में हुआ है. मैं मानता हूँ कि हिन्दुस्तान उसके लिए पूरे तौर से तैयार नहीं है. ऐसा कहना ढिटाई तो मालूम होगी पर मुझे पक्का विश्वास यही है कि मैं खुद तो उसी स्वराज के लिये काम करता हूँ जिसका चित्र इस किताब में खींचा गया

کا ناش ہو جائے گا، یہ بھوشیہ بانی ان کی پچھمی سبھیتا والی بھوشیہ بانی سے بھی زیادہ جلدی سچی ثابت ہو رہی ہے۔

باپو پارلیمنٹری حکومت کے خلاف تھے۔ پھر بھی پچھمی سبھیتا کی چکا چوندھ نے اس دیش کے پڑھے لکھے لوگوں کو اس کے لئے ایسا باؤلا کر دیا تھا کہ باپو انھیں اس کی طرف جانے سے کسی طرح بھی نہ روک سکے۔ دیش کے نیتاؤں نے اپنی ساری شکتی اس بات پر لگا دی کہ باپو اپنے سوراج کی تحریک کا مقصد صاف شبدوں میں پارلیمنٹری راج کو مان لیں۔ ان نیتاؤں کا خیال تھا کہ اگر سوراج کا روپ اس طرح صاف کر دیا گیا تو انگریزوں کی طرف سے بھی ورودھ کم ہو جاوے گا اور دوسرے دیشوں کو بھی ہندستان کی طرف سے اطمینان ہو جاوے گا۔ شری مہادیو دیسائی نے "ہند سوراج" کے اکتوبر ۱۹۳۸ء کے ایڈیشن کی پرستاونا میں باپو کے نیچے لکھے شبد نقل کئے ہیں :-

"اس کتاب میں آج کل کی سبھیتا کی بڑی نندا کی گئی ہے۔ ۱۹۰۸ء میں لکھی گئی تھی۔ پر آج تو اس بارے میں میرا وشواس اور بھی پکا ہے۔"

"پر میں اپنے پاٹھک کا اس طرف خاص دھیان دلانا چاہتا ہوں کہ آج میرا لکش (مقصد) وہ سوراج نہیں ہے جس کا بیان اس پستک میں ہوا ہے۔ میں مانتا ہوں کہ ہندستان اس کے لئے پورے طور سے تیار نہیں ہے۔ ایسا کہنا ڈھٹائی تو معلوم ہوگی پر مجھے پکا وشواس یہی ہے کہ میں خود تو اسی سوراج کے لئے کام کرتا ہوں جس کا چتر اس کتاب میں کھینچا گیا

है. पर हम सब लोग मिल कर जो काम कर रहे हैं वह हिन्दुस्तान के लोगों की इच्छाओं के अनुसार पार्लीमेन्टी स्वराज पाना है."

बापू का यह बयान उनके स्वभाव की एक खास बात को बड़े अजीब ढंग से दर्शाता है. यह बात समय समय पर प्रगट होती रहती थी. इसके कारन जनता में और काम करने वालों में तरह तरह की ग़लत फ़हमियाँ भी पैदा होती रहती थीं. बात यह थी कि किसी दूसरे के काम और तरीक़े चाहे बापू के अपने तरीक़ों के कितने भी ख़िलाफ़ क्यों न हों, खुद अपने सिद्धान्तों के अन्दर रहते हुए बापू जहाँ तक हो सके दूसरों के कामों में सलाह और मदद देते रहते थे. यह बात उनकी उदारता, उनके बड़े दिल और उनके प्रेम की चरम सीमा थी. वह मानते थे कि हर आदमी या हर गिरोह का असली भला इसी में है कि वह जिस बात को ठीक समझता है उसे पूरा करने की कोशिश करे. वह जानते थे कि सत्य की कल्पनाएँ अनेक हैं, और जितना उनका सत्य उनको प्यारा है उतना दूसरों को भी अपना सत्य प्यारा है. इस मदद देने में वह इतना ज़रूर देख लेते थे कि इसमें उनका कोई बुनियादी असूल तो नहीं टूटता और वह खुद अपने असूल या अपने सत्य से तो नहीं अलग हो रहे हैं.

बापू ने अपने इस बयान में कहा है कि "मैं तो अपने ख़याल में अपने ही स्वराज के लिये काम कर रहा हूँ." मामूली तरह से हमें उनके जीवन के उस पहलू को समझ सकना बहुत कठिन है. पार्लीमेंटी राज क़ायम करने के लिये जिससे उनको नफ़रत थी और जिसे

ہے۔ پر ہم سب لوگ مل کر جو کام کر رہے ہیں وہ ہندستان کے لوگوں کی اچھاؤں کے انوسار پارلیمنٹی سوراج پانا ہے۔"

باپو کا یہ بیان ان کے سوبھاؤ کی ایک خاص بات کو بڑے عجیب ڈھنگ سے درشاتا ہے۔ یہ بات سمے سمے پر پرگٹ ہوتی رہتی تھی۔ اس کے کارن جنتا میں اور کام کرنے والوں میں طرح طرح کی غلط فہمیاں بھی پیدا ہوتی رہتی تھیں۔ بات یہ تھی کہ کسی دوسرے کے کام اور طریقے چاہے باپو کے اپنے طریقوں کے کتنے بھی خلاف کیوں نہ ہوں، خود اپنے سدھانتوں کے اندر رہتے ہوئے باپو جہاں تک ہو سکے دوسرے کے کاموں میں صلاح اور مدد دیتے رہتے تھے۔ یہ بات ان کی اُداریتا، ان کے بڑے دل اور ان کے پریم کی چرم سیما تھی۔ وہ مانتے تھے کہ ہر آدمی یا ہر گروہ کا اصلی بھلا اسی میں ہے کہ وہ جس بات کو ٹھیک سمجھتا ہے اسے پورا کرنے کی کوشش کرے۔ وہ جانتے تھے کہ ستیہ کی کلپنائیں انیک ہیں، اور جتنا ان کا ستیہ ان کو پیارا ہے اتنا دوسروں کو بھی اپنا ستیہ پیارا ہے۔ اس مدد دینے میں وہ اتنا ضرور دیکھ لیتے تھے کہ اس میں ان کا کوئی بنیادی اصول تو نہیں ٹوٹتا اور وہ خود اپنے اصول یا اپنے ستیہ سے تو نہیں الگ ہو رہے ہیں۔

باپو نے اپنے اس بیان میں کہا ہے کہ "میں تو اپنے خیال میں اپنے ہی سوراج کے لئے کام کر رہا ہوں۔" معمولی طرح سے ہمیں ان کے جیون کے اس پہلو کو سمجھ سکنا بہت کٹھن ہے۔ پارلیمنٹی راج قائم کرنے کے لئے جس سے ان کو نفرت تھی اور جسے

वह देश को बरबाद करने वाला समझते थे, खुले तौर पर कांग्रेस की अगुवाई करना और फिर इस विचार में डूबे रहना कि मैं इस तरह अपने ही ढंग के स्वराज के लिये कोशिश कर रहा हूँ, बापू जैसा आदमी ही कर सकता था. यह काम बड़ा कठिन है. लेकिन अगर हम बापू की सारी जिन्दगी पर गहरी नजर डालें तो हम पग पग पर उन्हें इसी रास्ते पर चलता पाते हैं. दुनिया में अच्छाई बुराई, नेकी बदी, इस तरह एक दूसरे में मिली जुली है कि कोई कर्म योगी इनमें से एक को दूसरे से बिलकुल अलग नहीं कर सकता. इससे भी गहरी बात यह है कि बुराई को भलाई में बदलने के लिये हमें बड़े दिल, बड़ी उदारता, बड़े धीरज, बड़ी हिम्मत और श्रद्धा से काम लेना पड़ता है. जब कभी कोई बापू की बात न मान कर उनकी मर्जी के खिलाफ जाता था तो उसके साथ बापू की हमदर्दी और सहयोग में कोई कमी न आती थी. कांग्रेस ने उनकी एक बात भी कभी दिल से नहीं मानी. यहाँ तक कि उन्हें कांग्रेस की मेम्बरी छोड़ने पर भी मजबूर होना पड़ा. फिर भी बापू कांग्रेस की बराबर सेवा करते रहे. क्रान्तिकारी दल के लोगों के लिये, कम्यूनिस्टों, सोशलिस्टों और सबके लिये उनके दिल में जगह थी. और अपने सिद्धान्तों के भीतर रहते हुए वह इनमें से हर एक की सलाह मशविरे से और जिस तरह भी हो सकता था बराबर मदद करते रहते थे. श्री राजा जी, सरदार पटेल, पंडित जवाहर लाल नेहरू, आखीर के दिनों में बाबू राजेन्द्र प्रसाद तक गांधी जी की सलाहें मानने से इन्कार करते रहते थे और जी खोल कर उन

وہ دیش کو برباد کرنے والا سمجھتے تھے، کھلے طور پر کانگریس کی اگوائی کرنا اور پھر اس وچار میں ڈوبے رہنا کہ میں اس طرح اپنے ہی ڈھنگ کے سوراج کے لئے کوشش کر رہا ہوں، باپو جیسا آدمی ہی کر سکتا تھا۔ یہ کام بڑا کٹھن ہے لیکن اگر ہم باپو کی ساری زندگی پر گہری نظر ڈالیں تو ہم پگ پگ پر انھیں اسی راستے پر چلتا پاتے ہیں۔ دنیا میں اچھائی برائی، نیکی بدی، اس طرح ایک دوسرے میں ملی جلی ہے کہ کوئی کرم یوگی ان میں سے ایک کو دوسرے سے بالکل الگ نہیں کر سکتا۔ اس سے بھی گہری بات یہ ہے کہ برائی کو بھلائی میں بدلنے کے لئے ہمیں بڑے سے دل، بڑی اُدارتا، بڑے دھیرج، بڑی ہمت اور شردھا سے کام لینا پڑتا ہے۔ جب کبھی کوئی باپو کی بات نہ مان کر ان کی مرضی کے خلاف جاتا تھا تو اس کے ساتھ باپو کی ہمدردی اور سہیوگ میں کوئی کمی نہ آتی تھی۔ کانگریس نے ان کی ایک بات بھی کبھی دل سے نہیں مانی۔ یہاں تک کہ انھیں کانگریس کی ممبری چھوڑنے پر بھی مجبور ہونا پڑا۔ پھر بھی باپو کانگریس کی برابر سیوا کرتے رہے۔ کرانتکاری دل کے لوگوں کے لئے، کمیونسٹوں، سوشلسٹوں اور سب کے لئے ان کے دل میں جگہ تھی۔ اور اپنے سدھانتوں کے بھیتر رہتے ہوئے وہ ان میں سے ہر ایک کی صلاح مشورے سے اور جس طرح بھی ہو سکتا تھا برابر مدد کرتے رہتے تھے۔ شری راجا جی، سردار پٹیل، پنڈت جواہر لال نہرو، آخیر کے دنوں میں باپو راجندر پرساد تک گاندھی جی کی صلاحیں ماننے سے انکار کرتے رہتے تھے اور جی کھول کر ان

सलाहों से बेपरवाही दिखाते रहते थे. पर अपने इन प्यारे शिष्यों की तरफ़ बापू के प्रेम और व्यवहार में तिल बराबर भी फ़र्क़ नहीं होने पाता था. बापू जानते थे कि उनके इस ढंग से जनता में बड़ी ग़लतफ़हमी पैदा होती है. दिन रात इसकी शिकायतें उनके पास पहुँचती रहती थीं. पर वह कभी एक क़दम भी अपने रास्ते से नहीं हटे. वह हट सकते भी नहीं थे. सत्य और अहिंसा का यही अजीब रास्ता था जिसपर चलते रहना वह अपना धर्म मानते थे.

इसी तरह पार्लीमेंटरी राज के ख़िलाफ़ होते हुए भी उन्होंने कांग्रेस को पार्लीमेंटरी राज हासिल करने में मदद दी. वह कांग्रेस के प्रोग्राम में से असहयोग आन्दोलन को निकाल देने के ख़िलाफ़ थे फिर भी देश वालों की इच्छा के अनुसार उन्होंने इसे निकाल दिया. कौंसिलों में जाने के वह दिल से ख़िलाफ़ थे, फिर भी उन्होंने कौंसिलों में जाने का सुझाव ख़ुद पेश किया था. स्वराज पार्टी से बुनियादी फ़र्क़ होते हुए भी उन्होंने उसकी ऐसी मदद की कि पं० मोती लाल नेहरू और श्री चित्तरंजन दास फिर से उनके भक्त बन गये. बापू का जीवन इस तरह की मिसालों से भरा पड़ा है.

अब हम बापू के उन सब विचारों को मोटे तौरे पर बयान कर चुके जिनको जान लेना हमारी राय में बापू के नये विधान को समझने में मदद देगा. हम इन विचारों को मानें या न मानें, हम इन्हें नेक समझें या ग़लत, हम इन्हें गये बीते ज़माने की तरफ़ दुनिया को पीछे घसीटने की कोशिश कहें या नई दुनिया को लाने का जतन कहें, हम इन्हें सच्चे ज्ञान और व्यवहार दोनों का इत्र

صلاحوں سے بے پرواہی دکھاتے رہتے تھے۔ پر اپنے ان پیارے شِشیوں کی طرف باپو کے پریم اور بیوہار میں تل برابر بھی فرق نہیں ہونے پاتا تھا۔ باپو جانتے تھے کہ ان کے اس ڈھنگ سے جنتا میں بڑی غلط فہمی پیدا ہوتی ہے۔ دن رات اس کی شکایتیں ان کے پاس پہنچتی رہتی تھیں۔ پر وہ کبھی ایک قدم بھی اپنے راستے سے نہیں ہٹے۔ وہ ہٹ سکتے بھی نہیں تھے۔ ستیہ اور اہنسا کا یہی عجیب راستہ تھا جس پر چلتے رہنا وہ اپنا دھرم مانتے تھے۔

اسی طرح پارلیمنٹری راج کے خلاف ہوتے ہوئے بھی انھوں نے کانگریس کو پارلیمنٹری راج حاصل کرنے میں مدد دی۔ وہ کانگریس کے پروگرام میں سے اسہیوگ آندولن کو نکال دینے کے خلاف تھے پھر بھی دیش والوں کی اِچھا کے انوسار انھوں نے اسے نکال دیا۔ کونسلوں میں جانے کے وہ دل سے خلاف تھے، پھر بھی انھوں نے کونسلوں میں جانے کا سجھاؤ خود پیش کیا تھا۔ سوراج پارٹی سے بنیادی فرق ہوتے ہوئے بھی انھوں نے اس کی ایسی مدد کی کہ پنڈت موتی لال نہرو اور شری چترنجن داس پھر سے ان کے بھگت بن گئے۔ باپو کا جیون اس طرح کی مثالوں سے بھرا پڑا ہے۔

اب ہم باپو کے ان سب وچاروں کو موٹے طور پر بیان کر چکے جن کو جان لینا ہماری رائے میں باپو کے نئے ودھان کو سمجھنے میں مدد دے گا۔ ہم ان وچاروں کو مانیں یا نہ مانیں، ہم انھیں نیک سمجھیں یا غلط، ہم انھیں گئے بیتے زمانے کی طرف دنیا کو پیچھے گھسیٹنے کی کوشش کہیں یا نئی دنیا کو لانے کا جتن کہیں، ہم انھیں سچے گیان اور بیوہار دونوں کا عطر

और निचोड़ समझें या नासमझी की और अनहोनी बातें मानें, हमें यह मानना ही पड़ेगा कि बापू के मरते दम तक इस सम्बन्ध में यही विचार रहे.

हम अगर आगे के लिये देश की तामीर के काम में बापू के विचारों और तरीक़ों से मदद लेना चाहते हैं तो इन विचारों के शुद्ध रूप को समझ लेना हमारा फ़र्ज़ है, ताकि इनसे जो शक्ति देश में पैदा हो सके उसे हम अपने देश और अपने समाज की तामीर में पूरी तरह काम में ला सकें.

राज काज की शक्ति से और दुनिया की दूसरी बाहरी शक्तियों से ठीक ठीक काम लेने के लिये आत्मबल और सदाचार की ज़रूरत होती है, नहीं तो यह शक्तियाँ हमें ऊँचा ले जाने की जगह गिरावट की तरफ़ ले जाती हैं. बापू के तरीक़ों को हमने शुद्ध रूप में नहीं बरता. फिर भी हमने जिस दरजे तक उन पर अमल किया उससे भी देश में एक अनोखी ताक़त, जागृति, निडरता और इतनी बड़ी सरकार से टक्कर लेने और नुक़सान सहने की शक्ति हममें पैदा हो गई, पर सच्चा सदाचार, सच्चा त्याग और आत्मबल पैदा न हो सके. नतीजा यह हुआ कि आज़ादी तो मिल गई, पर उसकी क़ीमत हमें मुल्क के बँटवारे और बापू की जान ले लेने की सूरत में भरनी पड़ी. इससे ज़्यादा बदनसीबी हमारे लिये और क्या हो सकती थी. अगर अब भी हमारी आंखें न खुलीं तो हमें इससे भी ज़्यादा क़ीमतें अदा करनी पड़ेंगी. इन आफ़तों से बचने और सच्ची उन्नति के रास्ते पर पैर जमा कर चलने का एक ही तरीक़ा है. वह यह है

اور نچوڑ سمجھیں یا ناسمجھی کی اور ان ہونی باتیں مانیں، ہمیں یہ ماننا ہی پڑیگا کہ باپو کے مرتے دم تک اس سمبندھ میں یہی وچار رہے۔

ہم اگر آگے کے لئے دیش کی تعمیر کے کام میں باپو کے وچاروں اور طریقوں سے مدد لینا چاہتے ہیں تو ان وچاروں کے شدھ روپ کو سمجھ لینا ہمارا فرض ہے، تاکہ ان سے جو شکتی دیش میں پیدا ہو سکے اسے ہم اپنے دیش اور اپنے سماج کی تعمیر میں پوری طرح کام میں لا سکیں۔

راج کاج کی شکتی سے اور دنیا کی دوسری باہری شکتیوں سے ٹھیک ٹھیک کام لینے کے لئے آتم بل اور سداچار کی ضرورت ہوتی ہے۔ نہیں تو یہ شکتیاں ہمیں اونچا لے جانے کی جگہ گراوٹ کی طرف لے جاتی ہیں۔ باپو کے طریقوں کو ہم نے شدھ روپ میں نہیں برتا۔ پھر بھی ہم نے جس درجے تک ان پر عمل کیا اس سے بھی دیش میں ایک انوکھی طاقت، جاگرتی، نڈرتا اور اتنی بڑی سرکار سے ٹکر لینے اور نقصان سہنے کی شکتی ہم میں پیدا ہو گئی، پر سچا سداچار، سچا تیاگ اور آتم بل پیدا نہ ہو سکے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ آزادی تو مل گئی، پر اس کی قیمت ہمیں ملک کے بٹوارے اور باپو کی جان لے لینے کی صورت میں بھرنی پڑی۔ اس سے زیادہ بدنصیبی ہمارے لئے اور کیا ہو سکتی تھی۔ اگر اب بھی ہماری آنکھیں نہ کھلیں تو ہمیں اس سے بھی زیادہ قیمتیں ادا کرنی پڑیں گی۔ ان آفتوں سے بچنے اور سچی اُنتی کے راستے پر پیر جما کر چلنے کا ایک ہی طریقہ ہے۔ وہ یہ ہے

कि नेकी और बदी के असूलों में, नेक कामों के नेक नतीजों और बुरे कामों के बुरे नतीजों में हमें पक्का विश्वास हो. हम इन असूलों को अटल असूल मानें, और दुनिया की बड़ी से बड़ी ताक़तों के सामने, या यह सोचकर कि इन असूलों पर अमल करना कठिन है हम किसी भी संसारी या राजकाजी मतलब को पूरा करने के लिये नेकी बदी के ऊँचे असूलों को क़ुरबान करने के लिये तैयार न हों.

विधान क्यों बना ?

लोक सेवक संघ के विधान का मसौदा बापू ने ३० जनवरी सन् १९४८ के तीसरे पहर को अपनी मौत के चार घन्टे पहले इंडियन नेशनल कांग्रेस के जनरल सेक्रेटरी को इस हिदायत के साथ दिया था कि वह आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के सामने मन्ज़ूरी के लिये पेश किया जावे. उन्होंने अपना यह इरादा भी ज़ाहिर किया था कि मैं इस विधान पर पांच छै लेख 'हरिजन' में लिख कर इसके अलग-अलग पहलुओं को समझाने की कोशिश करूँगा. इससे पता चलता है कि बापू के सामने यह विधान कितनी बड़ी चीज़ थी. सच यह है कि महीनों ही नहीं मुद्दतों के सोच विचार के बाद वह उस नतीजे पर पहुँचे थे जो इस विधान के रूप में उन्होंने देश के सामने रखा.

इस विधान में उन्होंने कांग्रेस को यह सलाह दी है कि वह अपना आजकल का संगठन तोड़ कर 'लोक सेवक संघ' का रूप ले ले. कांग्रेस जैसी पुरानी शक्तिशाली और इतनी बड़ी संस्था

نیکی اور بدی کے اصولوں میں، نیک کاموں کے نیک نتیجوں اور برے کاموں کے برے نتیجوں میں ہمیں پکا وشواس ہو۔ ہم ان اصولوں کو اٹل اصول مانیں، اور دنیا کی بڑی سے بڑی طاقتوں کے سامنے، یا یہ سوچ کر کہ ان اصولوں پر عمل کرنا کٹھن ہے ہم کسی بھی سنساری یا راج کاجی مطلب کو پورا کرنے کے لئے نیکی بدی کے اونچے اصولوں کو قربان کرنے کے لئے تیار نہ ہوں۔

ودھان کیوں بنا؟

لوک سیوک سنگھ کے ودھان کا مسودہ باپو نے ۳۰ جنوری ۱۹۴۸ء کے تیسرے پہر کو اپنی موت کے چار گھنٹے پہلے انڈین نیشنل کانگریس کے جنرل سکریٹری کو اس ہدایت کے ساتھ دیا تھا کہ وہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے منظوری کے لئے پیش کیا جاوے۔ انھوں نے اپنا یہ ارادہ بھی ظاہر کیا تھا کہ میں اس ودھان پر پانچ چھ لیکھ 'ہریجن' میں لکھ کر اس کے الگ الگ پہلوؤں کو سمجھانے کی کوشش کروں گا۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ باپو کے سامنے یہ ودھان کتنی بڑی چیز تھی۔ سچ یہ ہے کہ مہینوں ہی نہیں مدتوں کے سوچ وچار کے بعد وہ اس نتیجے پر پہنچے تھے جو اس ودھان کے روپ میں انھوں نے دیش کے سامنے رکھا۔

اس ودھان میں انھوں نے کانگریس کو یہ صلاح دی ہے کہ وہ اپنا آج کل کا سنگٹھن توڑ کر 'لوک سیوک سنگھ' کا روپ لے لے۔ کانگریس جیسی پرانی شکتی شالی اور اتنی بڑی سنستھا

को इस तरह की सलाह देना बहुत अजीब सा दिखाई देता है. और जब हम यह जानते हैं कि बापू हर क़दम कितने सोच कर और जिम्मेदारी के साथ उठाया करते थे तो इसकी गहराई और भी बढ़ जाती है.

यह गहरा क़दम बापू ने क्यों उठाया ?

इस फ़ैसले के संबन्ध में बापू से और कांग्रेस और हुकूमत के सभी बड़े बड़े नेताओं से मुद्दतों बात चीत होती रही. आम तौर से यह लोग गांधी जी के इस विचार के बिल्कुल विरुद्ध थे. वह कांग्रेस को तोड़ देना देश के लिये बहुत बुरा समझते थे. इससे ज़्यादा बुरा और ख़तरनाक उन्हें यह दिखाई देता था कि वह देश का राज किसी दूसरी पार्टी के हाथों में दे दें. उन्हें डर था कि दूसरी पार्टियाँ राज पर क़ब्ज़ा पाकर इसे ठीक ठीक न चला सकेंगी. पंडित जवाहर लाल नेहरू ने वर्धा की रचनात्मक कानफ्रेन्स (मार्च सन् १९४८) में कहा था कि "अपने नये विधान से बापू हमें राजगद्दी से ही नहीं बल्कि राजनीति के मैदान से ही बाहर ले जाना चाहते हैं. लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी हम यह न समझ सके कि आख़िर हम इसको किसे सौंपें."

इसमें शक नहीं कि यह एक बड़ा गहरा सवाल है. इससे पहले भी यह सवाल कांग्रेस के नेताओं को कई बार परेशान कर चुका था. असेम्बलियों और कौंसिलों के अन्दर रह कर अंग्रेज़ी राज का मुक़ाबला ज़्यादा कामयाबी से किया जा सकता है या इनसे बाहर रह कर, अन्दर जाने के बाद इनसे बाहर आकर लड़ाई ज़्यादा कामयाब होगी,

کو اس طرح کی صلاح دینا بہت عجیب سا دکھائی دیتا ہے۔ اور جب ہم یہ جانتے ہیں کہ باپو ہر قدم کتنے سوچ کر اور ذمہ داری کے ساتھ اٹھایا کرتے تھے تو اس کی گہرائی اور بھی بڑھ جاتی ہے۔

یہ گہرا قدم باپو نے کیوں اٹھایا؟

اس فیصلے کے سمبندھ میں باپو سے اور کانگریس اور حکومت کے سبھی بڑے بڑے نیتاؤں سے مدتوں بات چیت ہوتی رہی۔ عام طور سے یہ لوگ گاندھی جی کے اس وچار کے بالکل ورُدھ تھے۔ وہ کانگریس کو توڑ دینا ملک کے لئے بہت برا سمجھتے تھے۔ اس سے زیادہ برا اور خطرناک انھیں یہ دکھائی دیتا تھا کہ وہ دیش کا راج کسی دوسری پارٹی کے ہاتھوں میں دے دیں۔ انھیں ڈر تھا کہ دوسری پارٹیاں راج پر قبضہ پاکر اسے ٹھیک ٹھیک نہ چلا سکیں گی۔ پنڈت جواہر لال نہرو نے وردھا رچناتمک کانفرنس (مارچ ۱۹۴۸ء) میں کہا تھا کہ "اپنے نئے ودھان سے باپو ہمیں راج گدی سے ہی نہیں بلکہ راج نیتی کے میدان سے ہی باہر لے جانا چاہتے ہیں۔ لیکن بہت کوشش کرنے پر بھی ہم یہ نہ سمجھ سکے کہ آخر ہم اسے کسے سونپیں۔"

اس میں کوئی شک نہیں کہ یہ ایک بڑا گہرا سوال ہے۔ اس سے پہلے بھی یہ سوال کانگریس کے نیتاؤں کو کئی بار پریشان کر چکا تھا۔ اسمبلیوں اور کونسلوں کے اندر رہ کر انگریزی راج کا مقابلہ زیادہ کامیابی سے کیا جا سکتا ہے یا ان سے باہر رہ کر، اندر جانے کے بعد ان سے باہر آکر لڑائی زیادہ کامیاب ہوگی،

या इन्हें अपने हाथों में रखते हुए, इस तरह बहुत से सवाल समय-समय पर देश के सामने पहले भी आ चुके थे. इन मौक़ों पर बापू की सदा एक ही सी राय होती थी, वह यह कि कांग्रेस का इनसे बाहर रहने में ही ज़्यादा भला है. फिर भी इस सम्बन्ध में बापू को कई बार दूसरों की राय के सामने झुकना पड़ा. ऐसे मौक़े पर बापू ने यह साफ़ कह दिया कि वह अपनी मंज़ूरी खुशी से नहीं मजबूरी से दे रहे हैं. जब अंग्रेज़ों के समय में कांग्रेस के लिये कौंसिलों और असेम्बलियों से बाहर रहना इतना कठिन था तो अंग्रेज़ी राज के चले जाने पर, देश के पूरी आज़ादी हासिल होने के बाद कांग्रेस के नेताओं की समझ में राजगद्दी को छोड़ देना कैसे आ सकता था. कांग्रेस के इस गहरे झुकाव को जानते हुए भी और उस जोश को सामने रखते हुए भी जो राजनैतिक आज़ादी मिल जाने से देश में पैदा हो गया था बापू ने फिर भी राजगद्दी को छोड़ देने का सवाल कांग्रेस के सामने रख देने का फ़ैसला किया, और आख़ीर समय तक इस फ़ैसले पर जमे रहे.

सच यह है कि जिस दिन से बापू राज काज के मैदान में आये तब से लेकर आख़ीर तक उनके विचारों और आदर्शों और कांग्रेस के विचारों और आदर्शों में ज़मीन आसमान का फ़र्क़ रहा है. हम ऊपर कह चुके हैं कि कांग्रेस के साथ बुनियादी मतभेद होते हुए भी बापू लगभग तीस साल तक अंग्रेज़ी हुकूमत से लड़ने में कांग्रेस की अगुवाई करते रहे. इस सारे समय में कांग्रेस के बहुत से विचार, रंग ढंग और योजनाएँ बापू के असूलों, विचारों और

یا انہیں اپنے ہاتھوں میں رکھتے ہوئے، اس طرح بہت سے سوال سمے سمے پر دیش کے سامنے پہلے بھی آ چکے تھے. ان موقعوں پر باپو کی سدا ایک ہی سی رائے ہوتی تھی، وہ یہ کہ کانگریس کا ان سے باہر رہنے میں ہی زیادہ بھلا ہے. پھر بھی اس سمبندھ میں باپو کو کئی بار دوسروں کی رائے کے سامنے جھکنا پڑا. ایسے موقعے پر باپو نے یہ صاف کہہ دیا کہ وہ اپنی منظوری خوشی سے نہیں مجبوری سے دے رہے ہیں. جب انگریزوں کے سمے میں کانگریس کے لئے کونسلوں اور اسمبلیوں سے باہر رہنا اتنا کٹھن تھا تو انگریزی راج کے چلے جانے پر، دیش کے پوری آزادی حاصل ہونے کے بعد کانگریس کے نیتاؤں کی سمجھ میں راج گدی کو چھوڑ دینا کیسے آ سکتا تھا. کانگریس کے اس گہرے جھکاؤ کو جانتے ہوئے بھی اور اس جوش کو سامنے رکھتے ہوئے بھی جو راج نیتک آزادی مل جانے سے دیش میں پیدا ہو گیا تھا باپو نے پھر بھی راج گدی کو چھوڑ دینے کا سوال کانگریس کے سامنے رکھ دینے کا فیصلہ کیا، اور آخیر سمے تک اس فیصلے پر جمے رہے.

سچ یہ ہے کہ جس دن سے باپو راج کاج کے میدان میں آئے تب سے لے کر آخیر تک ان کے وچاروں اور آدرشوں اور کانگریس کے وچاروں اور آدرشوں میں زمین آسمان کا فرق رہا ہے. ہم اوپر کہہ چکے ہیں کہ کانگریس کے ساتھ بنیادی مت بھید ہوتے ہوئے بھی باپو لگ بھگ تیس سال تک انگریزی حکومت سے لڑنے میں کانگریس کی اگوائی کرتے رہے. اس سارے سمے میں کانگریس کے بہت سے وچار، رنگ ڈھنگ اور یوجنائیں باپو کے اصولوں، وچاروں اور

योजनाओं से उलटी थीं फिर भी जहाँ तक हो सका काँग्रेस बापू के असूलों पर चलने की कोशिश करती रही. गो कि यह कोशिश खोखली और ऊपरी होती थी. इस की वजह यह थी कि बापू के मुक़ाबले का काँग्रेस के पास दूसरा नेता न था और न ऐसी कोई योजना थी जिससे काँग्रेस जनता को, और संगठित करके अंग्रेज़ी राज से टक्कर ले सकती. इसी लिये खुशी या नाखुशी बापू के बताए हुए साधनों को ही वह इस्तेमाल कर सकती थी. इस इस्तेमाल में यह उन्हें इतना अदल बदल और तोड़ मरोड़ डालती थी कि उनका सारा रंग सा बिगड़ जाता था और इन साधनों की आत्मिक और नैतिक शक्ति नष्ट हो जाती थी. कहने को यह योजनायें बापू की होती थीं मगर असलियत में उनकी सलाहों और सिद्धान्तों का उन में बहुत कम अंश रह जाता था.

अजीब बात यह है कि ज्यों ज्यों बापू की ताक़त का असर बढ़ा और उनकी कामयाबियों के नक़्शे हमारे सामने आते गये त्यों त्यों देश के नेताओं और सिपाहियों की श्रद्धा बापू की अहिंसा की योजनाओं और हथियारों में घटती गई. सन् १९३० और ३२ के आन्दोलनों के बाद बापू और काँग्रेस के असूली मतभेद ने एक विकट रूप ले लिया. इन आन्दोलनों में बहुत सी बातें ऐसी हुईं जिन्हें बापू नाजायज़ समझते थे. जैसे पिकेटिंग में टाँगें पकड़ लेना, लेटकर लोगों को रोकना, तरह तरह के हिंसा के नारे लगाना, हर तरह के आदमियों से जेल भरने की कोशिश करना, पकड़ जाने के डर से अपनी जायदादें दूसरों के नाम कर देना, काँग्रेस तक को बिल्कुल नंगा कर देना, मुक़द्दमों में नाम और पते झूटे बताना,

یوجناؤں سے اُلٹی تھیں پھر بھی جہاں تک ہو سکا کانگریس باپو کے اصولوں پر چلنے کی کوشش کرتی رہی۔ گو کہ یہ کوشش کھوکھلی اور اوپری ہوتی تھی۔ اس کی وجہ یہ ہوتی تھی کہ باپو کے مقابلے کا کانگریس کے پاس دوسرا نیتا نہ تھا اور نہ ایسی کوئی یوجنا تھی جس سے کانگریس جنتا کو، اور سنگٹھن کر کے انگریزی راج سے ٹکر لے سکتی۔ اسی لئے خوشی یا ناخوشی باپو کے بتائے ہوئے سادھنوں کو ہی وہ استعمال کر سکتی تھی۔ اس استعمال میں یہ انھیں اتنا ادل بدل اور توڑ مروڑ ڈالتی تھی کہ ان کا سارا رنگ سا بگڑ جاتا تھا اور ان سادھنوں کی آتمک اور نیتک شکتی نشٹ ہو جاتی تھی۔ کہنے کو یہ یوجنائیں باپو کی ہوتی تھیں مگر اصلیت میں ان کی صلاحوں اور سدّھانتوں کا ان میں بہت کم انش رہ جاتا تھا۔

عجیب بات ہے کہ جیوں جیوں باپو کی طاقت کا اثر بڑھا اور ان کی کامیابیوں کے نقشے ہمارے سامنے آتے گئے تیوں تیوں دیش کے نیتاؤں اور سپاہیوں کی شردھا باپو کی اہنسا کی یوجناؤں اور ہتھیاروں میں گھٹتی گئی۔ سنہ ۱۹۳۰ اور ۳۲ کے آندولنوں کے بعد باپو اور کانگریس کے اصولی مت بھید نے ایک وکٹ روپ لے لیا۔ ان آندولنوں میں بہت سی باتیں ایسی ہوئیں جنھیں باپو ناجائز سمجھتے تھے۔ جیسے پکیٹنگ میں ٹانگیں پکڑ لینا، لیٹ کر لوگوں کو روکنا، طرح طرح کے ہنسا کے نعرے لگانا، ہر طرح کے آدمیوں سے جیل بھرنے کی کوشش کرنا، پکڑ جانے کے ڈر سے اپنی جائدادیں دوسروں کے نام کر دینا، کانگریس تک کو بالکل ننگا کر دینا، مقدموں میں نام اور پتے جھوٹے بتانا،

पुलिस की ज़्यादतियों में "लाल पगड़ी हाय हाय !" "रोटी का कुत्ता हाय ! हाय !!" चिल्लाना. जेलों के अन्दर आकर हमने जो कारनामे किये, उनकी सच्ची कहानी अगर दुनिया सुन पाये, तो हैरान हो जाय. जेल आने वालों की गिनती बढ़ाने के लिये हम जो जो जायज़ या नाजायज़ तरकीबें करते थे उन पर किसी को भी अभिमान नहीं हो सकता. छिपकर अखबारों और बुलेटीन निकालने का और अन्डर-ग्राउन्ड हो जाने का आज भी हमें घमन्ड है. ऐसी ही बहुत बातें थीं जिन्हें बापू सत्य और अहिंसा के खिलाफ़ समझते थे और दिल से चाहते थे कि हम इन्हें छोड़ दें. इतना ही नहीं कि हमने उनकी सलाह न मानी, हमने इस असूल ही से इन्कार किया कि यह सत्य और अहिंसा के खिलाफ़ या काँग्रेस की क्रीड के खिलाफ़ हैं.

काँग्रेस की क्रीड में केवल जायज़ और शान्तिमय साधनों के काम में लाने की इजाज़त दी गई है. काँग्रेस की इस क्रीड को कि जायज़ और शान्तिमय साधनों से पूरा स्वराज हासिल किया जाय, बापू ने ही बना कर काँग्रेस से मन्ज़ूर करवाया था. इस क्रीड (मक़सद) के असूल का बदल जाना बापू नहीं सह सकते थे. हमने दावा यह किया कि ऊपर दी हुई यह सारी बातें जायज़ और शान्तिमय हैं. बापू का कहना था कि यह क्रीड मेरी बनाई हुई है और इस लिये इन शब्दों के जो मानी मैं समझता हूँ वह ही ठीक समझे जाने चाहियें, और मैंने क्रीड में जायज़ और शान्तिमय शब्द "सत्य" और "अहिंसात्मक" शब्दों के लिये इस्तेमाल किये हैं. लोगों ने उनकी बात नहीं मानी. आखिरकार यह मामला आल इन्डिया काँग्रेस

پولیس کی زیادتیوں میں "لال پگڑی ہائے ہائے!" "روٹی کا کتا ہائے! ہائے!!" چلّانا. جیلوں کے اندر جاکر ہم نے جو کارنامے کئے، ان کی سچی کہانی اگر دنیا سن پائے، تو حیران ہو جائے. جیل جانے والوں کی گنتی بڑھانے کے لئے ہم جو جو جائز یا ناجائز ترکیبیں کرتے تھے ان پر کسی کو بھی ابھمان نہیں ہو سکتا. چھپ کر اخباروں اور بولیٹن نکالنے کا اور انڈرگراؤنڈ ہو جانے کا آج بھی ہمیں گھمنڈ ہے. ایسی ہی بہت باتیں تھیں جنھیں باپو ستیہ اور اہنسا کے خلاف سمجھتے تھے اور دل سے چاہتے تھے کہ ہم انھیں چھوڑ دیں. اتنا ہی نہیں کہ ہم نے ان کی صلاح نہ مانی، ہم نے اس اصول ہی سے انکار کیا کہ یہ ستیہ اور اہنسا کے خلاف یا کانگریس کی کریڈ کے خلاف ہیں.

کانگریس کی کریڈ میں کیول جائز اور شانتی مے سادھنوں کے کام میں لانے کی اجازت دی گئی ہے. کانگریس کی اس کریڈ کو کہ جائز اور شانتی مے سادھنوں سے پورا سوراج حاصل کیا جائے، باپو نے ہی بنا کر کانگریس سے منظور کروایا تھا. اس کریڈ (مقصد) کے اصول کا بدل جانا باپو نہیں سہہ سکتے تھے. ہم نے دعوا یہ کیا کہ اوپر دی ہوئی یہ ساری باتیں جائز اور شانتی مے ہیں. باپو کا کہنا تھا کہ یہ کریڈ میری بنائی ہوئی ہے اور اس لئے ان شبدوں کے جو معنی میں سمجھتا ہوں وہ ہی ٹھیک سمجھے جانے چاہئیں، اور میں نے کریڈ میں جائز اور شانتی مے شبد "ستیہ" اور "اہنسا تمک" شبدوں کے لئے استعمال کئے ہیں. لوگوں نے ان کی بات نہیں مانی. آخرکار یہ معاملہ آل انڈیا کانگریس

कमेटी के सामने बम्बई में पेश हुआ. आल इण्डिया कॉंग्रेस कमेटी ने भी बापू की यह बात नहीं मानी. इसी पर बापू को कॉंग्रेस की मेम्बरी से इस्तीफ़ा देना पड़ा. वह किसी ऐसी राजनैतिक संस्था में रहना, जिसका रास्ता साफ़ तरीक़े पर सत्य और अहिंसा का न हो, ठीक नहीं समझते थे.

बापू के अलग हो जाने के बाद कॉंग्रेस उनके असर से और भी आज़ाद हो गई. उसने बापू की योजनाओं की तरफ़ ध्यान देना और भी कम कर दिया. बापू के राजनैतिक चेले यह महसूस करने लगे कि अब हम बालिग़ हो गये हैं और देश की ज़िम्मेदारी हमें अपनी समझ और अपने सिद्धान्तों के अनुसार निभानी चाहिये. कठिन से कठिन और गम्भीर से गम्भीर मौक़ों पर इन्होंने बापू की इच्छाओं और सलाहों का नेकनियती और हिम्मत के साथ ख़ुद विरोध किया, इस सबके होते हुए भी बापू कॉंग्रेस की वैसी ही दिल से सेवा करते रहे.

जो लोग बापू के सिद्धान्तों और आदर्शों के प्रेमी थे वह उनके इस तरीक़े से परेशान रहते थे. नहीं मालूम कितनी बार उन्होंने बापू पर यह ज़ोर डाला कि वह अपने सिद्धान्तों में सच्चे दिल से विश्वास रखने वालों की पार्टी अलग बनायें और उसको साथ लेकर देश में अपने विचार के अनुसार स्वराज क़ायम होने की बुनियादें डालें. बापू जानते थे कि ऐसी संस्था और ऐसे लोगों का साथ देना जिनके उसूल इनके ख़िलाफ़ हों, जनता के लिये बापू

کمیٹی کے سامنے بمبئی میں پیش ہوا۔ آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے بھی باپو کی یہ بات نہیں مانی۔ اسی پر باپو کو کانگریس کی ممبری سے استعفا دینا پڑا۔ وہ کسی ایسی راج نیتک سنستھا میں رہنا، جس کا راستہ صاف طریقے پر ستیہ اور اہنسا کا نہ ہو، ٹھیک نہیں سمجھتے تھے۔

باپو کے الگ ہو جانے کے بعد کانگریس ان کے اثر سے اور بھی آزاد ہو گئی۔ اس نے باپو کی یوجناؤں کی طرف دھیان دینا اور بھی کم کر دیا۔ باپو کے راج نیتک چیلے یہ محسوس کرنے لگے کہ اب ہم بالغ ہو گئے ہیں اور دیش کی ذمہ داری ہمیں اپنی سمجھ اور اپنے سدھانتوں کے انوسار نبھانی چاہیئے۔ کٹھن سے کٹھن اور گمبھیر سے گمبھیر موقعوں پر انھوں نے باپو کی اچھاؤں اور صلاحوں کا نیک نیتی اور ہمت کے ساتھ خود ورودھ کیا، اس سب کے ہوتے ہوئے بھی باپو کانگریس کی ویسی ہی دل سے سیوا کرتے رہے۔

جو لوگ باپو کے سدھانتوں اور آدرشوں کے پریمی تھے وہ ان کے اس طریقے سے پریشان رہتے تھے۔ نہیں معلوم کتنی بار انھوں نے باپو پر زور ڈالا کہ وہ اپنے سدھانتوں میں سچے دل سے وشواس رکھنے والوں کی پارٹی الگ بنائیں اور اس کو ساتھ لے کر دیش میں اپنے وچار کے انوسار سوراج قائم ہونے کی بنیادیں ڈالیں۔ باپو جانتے تھے کہ ایسی سنستھا اور ایسے لوگوں کا ساتھ دینا جن کے اصول ان کے خلاف ہوں، جنتا کیلئے باپو

के सिद्धान्तों और योजनाओं को पूरी तरह समझना नामुमकिन बना रहा है. फिर भी वह सदा अपनी इसी नीति पर चलते रहे और कभी कांग्रेस से अलग हो कर इन्होंने अपना दल अलग नहीं बनाया. यही उनका स्वभाव था. यही सत्य, अहिंसा का रास्ता था और इसी को वह अपना धर्म समझते थे.

इसी के साथ साथ अगर उन्हें एक बार यह यक़ीन आ जाता था कि कोई संस्था जनता के भले के खिलाफ़ काम करती है या जनता के भले के लिये उसकी ज़रूरत नहीं रही तो बापू उससे अलग हो जाते थे और कोई दूसरी संस्था बना कर या किसी बनी बनाई संस्था को बढ़ा कर अपना काम चलाते थे. होमरूल लीग को उन्होंने खतम करके कांग्रेस के लिये मैदान साफ़ कर दिया था. हिन्दी साहित्य सम्मेलन से अलग होकर उन्होंने दूसरी संस्था (हिन्दुस्तानी प्रचार सभा) से अपना काम चलाया था. साबरमती के सत्याग्रह आश्रम को उन्होंने अपने ही हाथों से तोड़ दिया. गांधी सेवा संघ को, जो केवल उनके भक्तों का संघ समझा जाता था, और ज़रूरी न समझ कर खतम कर दिया. उनका दिल जितना नरम था उतनी ही उसमें कड़ाई भी थी. यही कारण था कि वह सत्य पर अटल रूप में जमे रहते थे. कांग्रेस पर से उनकी श्रद्धा दिनों दिन घटती जा रही थी. जब तक कांग्रेस देश की आज़ादी के लिये अंग्रेज़ी सरकार से लड़ रही थी, देश के लिये उसकी बहुत बड़ी ज़रूरत थी. अंग्रेज़ी राज के देश से उठ जाने और देश को आज़ादी मिल जाने ने इस सारी हालत को बिलकुल बदल दिया. सबसे

کے سدھانتوں اور یوجناؤں کو پوری طرح سمجھنا ناممکن بنا رہا ہے۔ پھر بھی وہ سدا اپنی اسی نیتی پر چلتے رہے اور کبھی کانگریس سے الگ ہو کر انھوں نے اپنا دل الگ نہیں بنایا۔ یہی ان کا سوبھاؤ تھا۔ یہی ستیہ، اہنسا کا راستہ تھا اور اسی کو وہ اپنا دھرم سمجھتے تھے۔

اسی کے ساتھ ساتھ اگر انھیں ایک بار یہ یقین آ جاتا تھا کہ کوئی سنستھا جنتا کے بھلے کے خلاف کام کرتی ہے یا جنتا کے بھلے کے لئے اس کی ضرورت نہیں رہی تو باپو اس سے الگ ہو جاتے تھے اور کوئی دوسری سنستھا بنا کر یا کسی بنی بنائی سنستھا کو بڑھا کر اپنا کام چلاتے تھے۔ ہوم رول لیگ کو انھوں نے ختم کر کے کانگریس کے لئے میدان صاف کر دیا تھا۔ ہندی ساہتیہ سمیلن سے الگ ہو کر انھوں نے دوسری سنستھا (ہندستانی پرچار سبھا) سے اپنا کام چلایا تھا۔ سابرمتی کے ستیاگرہ آشرم کو انھوں نے اپنے ہی ہاتھوں سے توڑ دیا۔ گاندھی سیوا سنگھ کو، جو کیول ان کے بھگتوں کا سنگھ سمجھا جاتا تھا، اور ضروری نہ سمجھ کر ختم کر دیا۔ ان کا دل جتنا نرم تھا اتنی ہی اس میں کڑائی بھی تھی۔ یہی کارن تھا کہ وہ ستیہ پر اٹل روپ میں جمے رہتے تھے۔ کانگریس پر سے ان کی شردھا دنوں دن گھٹتی جا رہی تھی۔ جب تک کانگریس دیش کی آزادی کے لئے انگریزی سرکار سے لڑ رہی تھی، دیش کے لئے اس کی بہت بڑی ضرورت تھی۔ انگریزی راج کے دیش سے اٹھ جانے اور دیش کو آزادی مل جانے نے اس ساری حالت کو بالکل بدل دیا۔ سب سے

बड़ा असर इसका यह पड़ा कि सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग जैसी चीज़ों की काँग्रेस और उसकी हुकूमत को कोई ज़रूरत ही बाक़ी न रही. यह चीज़ें काँग्रेस के लिये उतनी ही ख़तरनाक हो गई जितनी यह अँग्रेज़ी सरकार के लिये थीं. बापू के सारे मिशन का, जहाँ तक उसका राजकाज से सम्बन्ध था, काँग्रेस के लिये ख़ात्मा हो गया. आज़ादी मिलते ही देश की सरकार के सामने दूसरे देशों के साथ सम्बन्ध का सवाल सबसे बड़ा सवाल हो गया और पुलिस और फ़ौजों का इस राज के लिये वही बड़प्पन हो गया जो पच्छिमी देशों में है. अहिंसा के असूल, विचार, साधन और योजनायें देश के जीवन से ऐसी मिट गई जैसे यह कहीं थी ही नहीं. इसके साथ बापू के असर का कांग्रेस और उसकी हुकूमत पर से बिल्कुल मिट जाना लाज़िमी था. आज़ादी, मिल जाने के बाद कॉंग्रेस के ज़िम्मेदार नेता बापू की सलाहों को बेकार और अपने लिये एक रुकावट महसूस करने लगे. बड़े से बड़े मौक़ों पर उन्होंने सलाह लेना तक बन्द कर दिया और जब लेते भी थे तब अगर वह उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होती थी तो वह उसकी परवाह नहीं करते थे. बापू पर इन बातों का गहरा असर था. वह इसकी चर्चा बराबर किया करते थे. उनकी प्रार्थना के प्रवचनों में भी यह शिकायतें मौजूद हैं.

बापू ने पच्छिमी सभ्यता के लिये सन् १९०९ में भविष्यवानी की थी कि यह अपने दुराचार की आग में आपही भस्म हो जायगी. उनकी इस भविष्यवानी को पच्छिम की दो बड़ी लड़ाइयों

بڑا اثر اس کا یہ پڑا کہ ستیہ، اہنسا، ستیاگرہ، اسہیوگ جیسی چیزوں کی کانگریس اور اس کی حکومت کو کوئی ضرورت ہی باقی نہ رہی۔ یہ چیزیں کانگریس کے لئے اتنی ہی خطرناک ہو گئیں جتنی یہ انگریزی سرکار کے لئے تھیں۔ باپو کے سارے مشن کا، جہاں تک اس کا راج کاج سے سمبندھ تھا، کانگریس کیلئے خاتمہ ہوگیا۔ آزادی ملتے ہی دیش کی سرکار کے سامنے دوسرے دیشوں کے ساتھ سمبندھ کا سوال سب سے بڑا سوال ہوگیا اور پولس اور فوجوں کا اس راج کے لئے وہی بڑپن ہوگیا جو پچھمی دیشوں میں ہے۔ اہنسا کے اصول، وچار، سادھن اور یوجنائیں دیش کے جیون سے ایسی مٹ گئیں جیسے یہ کہیں تھی ہی نہیں۔ اس کے ساتھ باپو کے اثر کا کانگریس اور اس کی حکومت پر سے بالکل مٹ جانا لازمی تھا۔ آزادی مل جانے کے بعد کانگریس کے ذمے دار نیتا باپو کی صلاحوں کو بے کار اور اپنے لئے ایک روکاوٹ محسوس کرنے لگے۔ بڑے سے بڑے موقعوں پر انھوں نے صلاح لینا تک بند کردیا اور جب لیتے بھی تھے تب اگر وہ ان کی مرضی کے خلاف ہوتی تھی تو وہ اس کی پرواہ نہیں کرتے تھے۔ باپو پر ان باتوں کا گہرا اثر تھا۔ وہ اس کی چرچا برابر کیا کرتے تھے۔ ان کی پرارتھنا کے پروچنوں میں بھی یہ شکایتیں موجود ہیں۔

باپو نے پچھمی سبھیتا کے لئے سنہ ۱۹۰۹ میں بھوشیہ بانی کی تھی کہ یہ اپنے دراچار کی آگ میں آپ ہی بھسم ہو جائے گی۔ ان کی اس بھوشیہ بانی کو پچھم کی دو بڑی لڑائیوں

ने क़रीब क़रीब पूरा करा दिया. जो कुछ रह गया है उसके लिये तीसरी की तैयारी बड़े ज़ोर शोर से हो रही है. इसी तरह उन्होंने इस देश के लिये यह भविष्यवानी की थी कि अगर पार्लामेंटी राज यहाँ जम गया तो यह देश बिलकुल बरबाद हो जायगा. पच्छिमी सभ्यता से भी कहीं ज़्यादा उनका यह ख़याल सच्चा साबित हुआ. आज़ादी पाने और पार्लामेंटी राज जमाने की आशा ने हमारे ऊँचे से ऊँचे, नेक से नेक, त्यागी और तजरबेकार नेताओं को इतना मोह लिया कि उन्होंने इस आज़ादी और हुकूमत को ऐसी क़ीमत पर ख़रीदा जो आज तक किसी देश को देनी नहीं पड़ी थी. देश के टुकड़े करके आज़ादी मिली, नतीजा यह हुआ कि देश की जीती जागती जनता भी टुकड़े टुकड़े हो गई. ख़याल यह था कि इस बँटवारे से हिन्दू और मुसलमानों की दुश्मनी ख़तम हो जायगी. नतीजा यह हुआ कि एक देश और एक राज की जगह दो देश और दो राज एक दूसरे के दुश्मन खड़े हो गये. जहाँ तक अपने देश के अन्दर के हिन्दू और मुस्लिम सम्बंधों का सवाल था वहाँ तक फूट की सारी पुरानी बुनियादें अपनी जगह पर बनी रह गईं. इससे बड़ी मुसीबत आज तक संसार में किसी देश पर नहीं आई थी. यह हमारे पार्लामेंटी राज पाने और जमाने की शुरुआत थी.

इस घटना ने बापू की सारी पुरानी कोशिशों और जीतों को ही नहीं बल्कि उनके जीवन के मिशन ही को जलाकर ख़ाक कर दिया. उनके जीवन की गहरी से गहरी बुनियादें हिल गईं. मगर लोगों में यह ख़याल आम तौर पर फैला हुआ है कि इस बँटवारे में बापू का भी हाथ था. इस ख़याल की बुनियाद इस विश्वास पर है कि अगर

نے قریب قریب پورا کرا دیا. جو کچھ رہ گیا ہے اس کے لئے تیسری کی تیاری بڑے زور شور سے ہو رہی ہے. اسی طرح انھوں نے اس دیش کے لئے یہ بھوشیہ بانی کی تھی کہ اگر پارلیمنٹی راج یہاں جم گیا تو یہ دیش بالکل برباد ہو جائے گا. پچھمی سبھیتا سے بھی کہیں زیادہ ان کا یہ خیال سچا ثابت ہوا. آزادی پانے اور پارلیمنٹی راج جمانے کی آشا نے ہمارے اونچے سے اونچے، نیک سے نیک، تیاگی اور تجربے کار نیتاؤں کو اتنا موہ لیا کہ انھوں نے اس آزادی اور حکومت کو ایسی قیمت پر خریدا جو آج تک کسی دیش کو دینی نہیں پڑی تھی. دیش کے ٹکڑے کر کے آزادی ملی، نتیجہ یہ ہوا کہ دیش کی جیتی جاگتی جنتا بھی ٹکڑے ٹکڑے ہو گئی. خیال یہ تھا کہ اس بٹوارے سے ہندو اور مسلمانوں کی دشمنی ختم ہو جائے گی. نتیجہ یہ ہوا کہ ایک دیش اور ایک راج کی جگہ دو دیش اور دو راج ایک دوسرے کے دشمن کھڑے ہو گئے. جہاں تک اپنے دیش کے اندر کے ہندو اور مسلم سمبندھوں کا سوال تھا وہاں تک پھوٹ کی ساری پرانی بنیادیں اپنی جگہ پر بنی رہ گئیں. اس سے بڑی مصیبت آج تک سنسار میں کسی دیش پر نہیں آئی تھی. یہ ہمارے پارلیمنٹی راج پانے اور جمانے کی شروعات تھی.

اس گھٹنا نے باپو کی ساری پرانی کوششوں اور جیتوں کو ہی نہیں بلکہ ان کے جیون کے مشن ہی کو جلا کر خاک کر دیا. ان کے جیون کی گہری سے گہری بنیادیں ہل گئیں مگر لوگوں میں یہ خیال عام طور پر پھیلا ہوا ہے کہ اس بٹوارے میں باپو کا بھی ہاتھ تھا. اس خیال کی بنیاد اس وشواس پر ہے کہ اگر

बापू सचमुच रोकना चाहते तो इस तरह की घटना उनकी मर्ज़ी के खिलाफ़ इस देश में हो ही नहीं सकती थी. यह ख़याल बिलकुल ग़लत है. बापू ने आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी की बैठक में लोगों को जो सलाह दी थी उससे यह ख़याल और भी बढ़ गया. बापू ने साफ़ कहा था कि मैं हमेशा से बँटवारे के ख़िलाफ़ था और आज भी हूँ, पर तुम अगर इस बँटवारे को रद्द करना चाहते हो तो तुम्हें पहले पंडित जवाहर लाल, सरदार पटेल और इनके साथियों से ज़्यादा त्यागी, ईमानदार और तजरबेकार नेता उनकी जगह लेने के लिये ढूंढ लेने चाहिये. क्योंकि तुम्हारे इस बँटवारे को रद्द कर देने के बाद यह लोग वर्किंग कमेटी या राज की कुर्सियों पर नहीं रह सकेंगे. उन लोगों ने बापू से कह दिया था कि लोगों ने हमारा कहना न माना तो हम वर्किंग कमेटी या सरकार में नहीं रहेंगे.

यह उस समय की सच्ची सच्ची हालत थी. आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी बँटवारे को रद्द कर सकती थी, पर उसके सामने सवाल यह था कि इसका देश पर क्या असर पड़ेगा. देश के बँटवारे ने एक बड़ा ख़तरा खड़ा कर दिया था. इस ख़तरे से बचने के लिये वह अगर वर्किंग कमेटी को और मंत्री मण्डल को तोड़ कर नई कमेटी बनाती जिसमें पंडित नेहरू, सरदार पटेल और उनके साथी न होते तो देश का इतना बड़ा संगठन और शक्ति जो इसकी सारी विरोधी शक्तियों का ४० साल से मुक़ाबला कर रही थी, टुकड़े-टुकड़े हो जाती. उस समय इनकी ख़ाली जगह को ठीक ठीक भर सकना कोई आसान बात न थी. अगर यह जगह ठीक न भर सकती तो हो सकता था कि देश में अराजकता का ऐसा तूफ़ान आ जाता जो

باپو سچ مچ روکنا چاہتے تو اس طرح کی گھٹنا ان کی مرضی کے خلاف اس دیش میں ہو ہی نہیں سکتی تھی. یہ خیال بالکل غلط ہے. باپو نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی بیٹھک میں لوگوں کو جو صلاح دی تھی اس سے یہ خیال اور بھی بڑھ گیا. باپو نے صاف کہا تھا کہ میں ہمیشہ سے بٹوارے کے خلاف تھا اور آج بھی ہوں، پر تم اگر اس بٹوارے کو رد کرنا چاہتے ہو تو تمہیں پہلے پنڈت جواہر لال، سردار پٹیل اور ان کے ساتھیوں سے زیادہ تیاگی، ایماندار اور تجربے کار نیتا ان کی جگہ لینے کے لئے ڈھونڈھ لینے چاہیئے. کیونکہ تمہارے اس بٹوارے کو رد کر دینے کے بعد یہ لوگ ورکنگ کمیٹی یا راج کی کرسیوں پر نہیں رہ سکیں گے. ان لوگوں نے باپو سے کہہ دیا تھا کہ لوگوں نے ہمارا کہنا نہ مانا تو ہم ورکنگ کمیٹی یا سرکار میں نہیں رہیں گے.

یہ اس سمے کی سچی سچی حالت تھی. آل انڈیا کانگریس کمیٹی بٹوارے کو رد کر سکتی تھی، پر اس کے سامنے سوال یہ تھا کہ اس کا دیش پر کیا اثر پڑے گا. دیش کے بٹوارے نے ایک بڑا خطرہ کھڑا کر دیا تھا. اس خطرے سے بچنے کے لئے وہ اگر ورکنگ کمیٹی کو اور منتری منڈل کو توڑ کر نئی کمیٹی بناتی جس میں پنڈت نہرو، سردار پٹیل اور ان کے ساتھی نہ ہوتے تو دیش کا اتنا بڑا سنگٹھن اور شکتی جو اس کی ساری ورودھی شکتیوں کا ۴۰ سال سے مقابلہ کر رہی تھی، ٹکڑے ٹکڑے ہو جاتی. اس سمے ان کی خالی جگہ کو ٹھیک ٹھیک بھر سکنا کوئی آسان بات نہ تھی. اگر یہ جگہ ٹھیک نہ بھر سکتی تو ہو سکتا تھا کہ دیش میں اراجکتا کا ایسا طوفان آ جاتا جو

मुद्दतों के लिये देश की आजादी और टिकाऊ राज की उम्मीदों का खात्मा करके फिर से विदेशियों का अधिकार जमा देता. इस हालत में बापू आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी को कोई भी दूसरी सलाह देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं ले सकते थे. उनकी इस सलाह की इस बिना पर बँटवारे की जिम्मेदारी उन पर डालना बिलकुल बेजा है. सच यह है कि उस समय बापू राजनीति में बिलकुल बेबस हो रहे थे. सन् १९४२ के आन्दोलन के बाद से उनका असर कांग्रेस पर बड़ी तेजी के साथ घट रहा था क्योंकि कांग्रेस के बहुत से नेता और कार्यकर्ता अब बापू के असूलों और प्रोग्रामों का खुला विरोध करने लगे थे. इन हालतों को देख कर बापू ने कांग्रेस को यह सलाह भी दी थी कि वह अपने क्रीड (मक़सद) को बदल ले और उसमें से "जायज़" और "शान्तिमय" शब्दों को निकाल दे. बापू ने यह भी सलाह दी थी कि कांग्रेस अपने मेम्बरों और अधिकारियों के लिये खादी पहनना जरूरी न रक्खे. जहाँ तक हुकूमत का सम्बन्ध था उसके सब काम खुले तौर पर हर बात में बापू के आदर्शों और असूलों के खिलाफ़ जा रहे थे. फ़ौजों और पुलिस पर खर्चा अन्धाधुन्ध बढ़ रहा था. देश के भीतरी इन्तज़ाम में बृटिश सरकार से ज़्यादा बड़े पैमाने पर गोलियों और डंडों का प्रयोग हो रहा था. बापू कहते थे कि अगर तुम बिना पुलिस और फ़ौज को इस तरह इस्तेमाल किये अमन अमान क़ायम नहीं रख सकते तो तुम्हें हुकूमत से इस्तीफ़ा दे देना चाहिये. पर उनका यह कहना "नक़्क़ार खाने में तूती की आवाज़" के समान था. फ़ौजी राज के साथ साथ मशीन

مدتوں کے لئے دیش کی آزادی اور ٹکاؤ راج کی امیدوں کا خاتمہ کر کے پھر سے ودیشیوں کا ادھیکار جما دیتا۔ اس حالت میں باپو آل انڈیا کانگریس کمیٹی کو کوئی بھی دوسری صلاح دینے کی ذمہ داری اپنے اوپر نہیں لے سکتے تھے۔ ان کی اس صلاح کی اس بنا پر بٹوارے کی ذمہ داری ان پر ڈالنا بالکل بے جا ہے۔ سچ یہ ہے کہ اس سمے باپو راج نیتی میں بالکل بے بس ہو رہے تھے۔ سن ۱۹۴۲ کے آندولن کے بعد سے ان کا اثر کانگریس پر بڑی تیزی کے ساتھ گھٹ رہا تھا کیوں کہ کانگریس کے بہت سے نیتا اور کاریہ کرتا اب باپو کے اصولوں اور پروگراموں کا کھلا ورودھ کرنے لگے تھے۔ ان حالتوں کو دیکھ کر باپو نے کانگریس کو یہ صلاح بھی دی تھی کہ وہ اپنے کریڈ (مقصد) کو بدل لے اور اس میں سے "جائز" اور "شانتی مے" شبدوں کو نکال دے۔ باپو نے یہ بھی صلاح دی تھی کہ کانگریس اپنے ممبروں اور ادھیکاریوں کے لئے کھادی پہننا ضروری نہ رکھے۔ جہاں تک حکومت کا سمبندھ تھا اس کے سب کام کھلے طور پر ہر بات میں باپو کے آدرشوں اور اصولوں کے خلاف جا رہے تھے۔ فوجوں اور پولیس پر خرچ اندھا دھند بڑھ رہا تھا۔ دیش کے بھیتری انتظام میں برٹش سرکار سے زیادہ بڑے پیمانے پر گولیوں اور ڈنڈوں کا پریوگ ہو رہا تھا۔ باپو کہتے تھے کہ اگر تم بنا پولیس اور فوج کو اس طرح استعمال کئے امن امان قائم نہیں رکھ سکتے تو تمہیں حکومت سے استعفا دے دینا چاہئیے۔ پر ان کا یہ کہنا "نقار خانے میں طوطی کی آواز" کے سمان تھا۔ فوجی راج کے ساتھ ساتھ مشین

युग जल्दी से जल्दी देश में लाने की चारों तरफ़ धूम मची हुई थी. हुकूमत अपने सारे साधन और शक्ति इसमें लगा रही थी. 'नेशनलाइज़ेशन' का मतलब होता है देश के बड़े बड़े धन्धों पर सरमाया दारों का क़ब्ज़ा होने की जगह उन्हें नेशन के यानी राष्ट्र के हाथों में सौंप दिया जावे. इसमें राष्ट्र का मतलब लिया गया सरकार और इस 'नेशनलाइज़ेशन' ने देश की हर ज़रूरत की चीज़ को कन्ट्रोल कर लेने का रूप ले लिया था. इसका असर देश के सुख चैन और सदाचार को ताऊन और प्लेग की तरह खाये जा रहा था. बापू देश में आत्म-बल और स्वावलम्बन (अपने पैरों पर खड़ा होना) की शक्ति पैदा करने के लिये हर गांव को एक आज़ाद रिपब्लिक बना देना चाहते थे. इसके ख़िलाफ़ हुकूमत हिटलर और मुसोलिनी की तरह सभी शक्तियों और साधनों को अपनी मुट्ठी में कर लेने पर तुली हुई थी. बृटिश राज की फ़ज़ूल ख़र्ची और शान शौकत, कांग्रेसी सरकार को विरसे में मिली थी, और वह इस चक्कर से किसी तरह बाहर निकलने को तैयार न थी. सरकार का असर सारे कांग्रेस संगठन पर पड़े बिना नहीं रह सकता था और कांग्रेस का असर सारे देश पर पड़ना लाज़िमी था. इसलिये जिसे देखो वह दौलत और ताक़त की खोज में उचित और अनुचित सभी तरीक़ों से अपना मतलब पूरा कर लेने की धुन में डूबा हुआ था. ताक़त और दौलत तो मुल्क में नपी तुली होती है और इसके उम्मीदवार अनगिनत. इसलिये कांग्रेस बल्कि सारा देश गन्दी से गन्दी पार्टी बाज़ियों का अखाड़ा बन गया था. देश में बेईमानी, दग़ा फ़रेब, रिशवत और तरह तरह की लूट का बाज़ार गरम था.

یگ جلدی سے جلدی دیش میں لانے کی چاروں طرف دھوم مچی ہوئی تھی. حکومت اپنے سارے سادھن اور شکتی اس میں لگا رہی تھی 'نیشنلائیزیشن' کا مطلب ہوتا ہے دیش کے بڑے بڑے دھندوں پر سرمایہ داروں کا قبضہ ہونے کی جگہ انھیں نیشن کے یعنی راشٹر کے ہاتھوں میں سونپ دیا جاوے. اس میں راشٹر کا مطلب لیا گیا سرکار اور اس نیشنلائیزیشن نے دیش کی ہر ضرورت کی چیز کو کنٹرول کر لینے کا روپ لے لیا تھا. اس کا اثر دیش کے سکھ چین اور سداچار کو طاعون اور پلیگ کی طرح کھائے جا رہا تھا. باپو دیش میں آتم بل اور سواولمبن (اپنے پیروں پر کھڑا ہونا) کی شکتی پیدا کرنے کے لئے ہر گاؤں کو ایک آزاد ریپبلک بنا دینا چاہتے تھے. اس کے خلاف حکومت ہٹلر اور مسولینی کی طرح سبھی شکتیوں اور سادھنوں کو اپنی مٹھی میں کر لینے پر تلی ہوئی تھی. برٹش راج کی فضول خرچی اور شان شوکت کانگریسی سرکار کو ورثے میں ملی تھی، اور وہ اس چکر سے کسی طرح باہر نکلنے کو تیار نہ تھی. سرکار کا اثر سارے کانگریس سنگٹھن پر پڑے بنا نہیں رہ سکتا تھا اور کانگریس کا اثر سارے دیش پر پڑنا لازمی تھا. اس لئے جسے دیکھو وہ دولت اور طاقت کی کھوج میں اُچت اور انوچت سبھی طریقوں سے اپنا مطلب پورا کر لینے کی دھن میں ڈوبا ہوا تھا. طاقت اور دولت تو ملک میں نپی تلی ہوتی ہے اور اس کے امیدوار ان گنت. اس لئے کانگریس بلکہ سارا دیش گندی سے گندی پارٹی بازیوں کا اکھاڑا بن گیا تھا. دیش میں بے ایمانی، دغا فریب، رشوت اور طرح طرح کی لوٹ کا بازار گرم تھا.

यह सारा घर फूँक तमाशा बापू की आँखों के सामने बराबर चलता रहता था. जब तक बृटिश राज क़ायम था उन्हें इस हालत से खुली और सीधी टक्कर लेने का मौक़ा नहीं था. आज़ादी मिलते ही मुल्क के बँटवारे ने वह भयंकर हालत पैदा कर दी कि जिससे बापू के लिये किसी दूसरी तरफ़ ध्यान देना बिल्कुल नामुमकिन हो गया. इस हालत से सीधी और आख़िरी टक्कर लेने का ख़याल उनके दिल से कभी दूर नहीं होता था. धीरे धीरे इसी ख़याल ने उनके लोक सेवक संघ का रूप लिया और इसे जन्म देने के लिये उन्होंने अपना आख़िरी विधान बनाया.

इस विधान को ग़ौर से देखने से पता चलता है कि बापू इसके बनाने के समय तय कर चुके थे कि या तो काँग्रेस और उसकी हुकूमत पूरी तरह अपने ग़लत रास्तों को छोड़ कर देश और देश की सभ्यता की सच्ची रक्षा के मार्ग पर चले, अधर्म छोड़ कर सच्चे धर्म का पथ पकड़े और नहीं तो बापू इससे अलग होकर अपनी सारी शक्ति इनको ग़लत रास्ते पर चलने से रोकने में उसी तरह लगा देंगे जिस तरह उन्होंने अंग्रेज़ी सरकार के आतंक और अन्यायों को मिटाने में लगाई थी. लोक सेवक संघ की योजना कांग्रेस और उसकी हुकूमत के लिये बापू की आख़िरी नेक सलाह थी. इसके एक एक शब्द से बापू के अपने दिली इरादों की झलक साफ़ नज़र आती है.

इस विधान को इन्डियन नेशनल कांग्रेस के जनरल सिक्रेटरी को देने के चार घण्टे बाद ही बापू का देहान्त हो गया. ईश्वर को यह मन्ज़ूर न था कि वह आप अपने इस प्रण को पूरा करें. लेकिन

یہ سارا گھر پھونک تماشہ باپو کی آنکھوں کے سامنے برابر ناچتا رہتا تھا. جب تک برٹش راج قائم تھا انھیں اس حالت سے کھلی اور سیدھی ٹکر لینے کا موقعہ نہیں تھا. آزادی ملتے ہی ملک کے بٹوارے نے وہ بھینکر حالت پیدا کر دی کہ جس سے باپو کے لئے کسی دوسری طرف دھیان دینا بالکل ناممکن ہوگیا. اس حالت سے سیدھی اور آخری ٹکر لینے کا خیال ان کے دل سے کبھی دور نہیں ہٹتا تھا. دھیرے دھیرے اسی خیال نے ان کے لوک سیوک سنگھ کا روپ لیا اور اسے جنم دینے کے لئے انھوں نے اپنا آخری ودھان بنایا.

اس ودھان کو غور سے دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ باپو اس کے بنانے کے سمے طے کر چکے تھے کہ یا تو کانگریس اور اسکی حکومت پوری طرح اپنے غلط راستوں کو چھوڑ کر دیش اور دیش کی سبھیتا کی سچی رکشا کے مارگ پر چلے، ادھرم چھوڑ کر سچے دھرم کا پتھ پکڑے اور نہیں تو باپو اس سے الگ ہو کر اپنی ساری شکتی ان کو غلط راستے پر چلنے سے روکنے میں اسی طرح لگا دیں گے جس طرح انھوں نے انگریزی سرکار کے آتنک اور انیایوں کو مٹانے میں لگائی تھی. لوک سیوک سنگھ کی یوجنا کانگریس اور اس کی حکومت کے لئے باپو کی آخری نیک صلاح تھی. اس کے ایک ایک شبد سے باپو کے اپنے دلی ارادوں کی جھلک صاف نظر آتی ہے.

اس ودھان کو انڈین نیشنل کانگریس کے جنرل سکریٹری کو دینے کے چار گھنٹے بعد ہی باپو کا دیہانت ہوگیا. ایشور کو یہ منظور نہ تھا کہ وہ آپ اپنے اس پرن کو پورا کریں. لیکن

इस विधान के इस तरह जीते रहने का प्रबन्ध हो जाना, यह भी जाहिर करता है कि ईश्वर इसे बापू के साथ मारना नहीं चाहते थे. देश में ऐसी जहरीली हवा पैदा हो गई थी कि जिसे बापू की क़ुर्बानी के सिवा और दुनिया की कोई शक्ति बदल नहीं सकती थी. यह हालत न बदलती तो बापू के विधान के लिये देश में मुद्दतों तक कोई जगह ही नहीं हो सकती थी. बापू ने अपना फ़र्ज़ अदा करके इस विधान को अमली जामा पहनाने के लिये जमीन तैयार कर दी थी. अब इसे समझने, चलाने और कामयाब बनाने की जिम्मेवारी उन लोगों पर है जो बापू से प्रेम रखते थे और जो उनके आदर्शों, सिद्धान्तों और योजनाओं को अपने देश और संसार के लिये बरकत समझते हैं.

विधान का मसविदा

यहाँ पर हम बापू के लोक सेवक संघ के विधान का लफ़ज़ी तरजुमा, जिस रूप में उन्होंने इसे आल इंडिया कॉंग्रेस कमेटी के सामने रखना चाहा था और जिसमें यह १५ फ़रवरी १९४८ के 'हरिजन' में छपा, है नीचे देरहे है.

विधान का तरजुमा

हिन्दुस्तान के दो टुकड़े तो हो गये, फिर भी इन्डियन नेशनल कांग्रेस ने राजकाजी आजादी हासिल करने के जो साधन निकाले थे उन साधनों से हिन्दुस्तान ने राजकाजी आजादी ले ली है, इसलिये कांग्रेस की आज कल की शक्ल सूरत का यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक जरिया और पार्लीमेन्टी मशीन बन

اس ودھان کے اس طرح جیتے رہنے کا پربندھ ہو جانا، یہ بھی ظاہر کرتا ہے کہ ایشور اسے باپو کے ساتھ مارنا نہیں چاہتے تھے۔ دیش میں ایسی زہریلی ہوا پیدا ہو گئی تھی کہ جسے باپو کی قربانی کے سوا اور دنیا کی کوئی شکتی بدل نہیں سکتی تھی۔ یہ حالت نہ بدلتی تو باپو کے ودھان کے لئے دیش میں مدتوں تک کوئی جگہ ہی نہیں ہو سکتی تھی۔ باپو نے اپنا فرض ادا کر کے اس ودھان کو عملی جامہ پہنانے کے لئے زمین تیار کر دی تھی۔ اب اسے سمجھنے، چلانے اور کامیاب بنانے کی ذمہ داری ان لوگوں پر ہے جو باپو سے پریم رکھتے تھے اور جو ان کے آدرشوں، سدھانتوں اور یوجناؤں کو اپنے دیش اور سنسار کے لئے برکت سمجھتے ہیں۔

ودھان کا مسودہ

یہاں پر ہم باپو کے لوک سیوک سنگھ کے ودھان کا لفظی ترجمہ، جس روپ میں انھوں نے اسے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے رکھنا چاہا تھا اور جس میں یہ ۱۵ فروری ۱۹۴۸ کے 'ہریجن' میں چھپا ہے، نیچے دے رہے ہیں۔

ودھان کا ترجمہ

ہندستان کے دو ٹکڑے تو ہو گئے، پھر بھی انڈین نیشنل کانگریس نے راج کاجی آزادی حاصل کرنے کے جو سادھن نکالے تھے ان سادھنوں سے ہندستان نے راج کاجی آزادی لے لی ہے، اس لئے کانگریس کی آج کل کی شکل صورت کا یعنی اس صورت کا جس میں وہ پرچار کا ایک ذریعہ اور پارلیمنٹری مشین بن

गई है. अब कोई काम नहीं रह गया है. हिन्दुस्तान को अब शहरों और क़स्बों का सवाल हटाकर सात लाख गाँव के लिये समाजी (सोशल), सदाचारी (मोरल) और माली (इकोनामिक) आज़ादी हासिल करनी है. हिन्दुस्तान जैसे जैसे अपने इस जनराज के लक्ष्य की तरफ़ बढ़ेगा वैसे वैसे सिविल यानी शहरी ताक़त फ़ौजी ताक़त के ऊपर क़ाबू पाने के लिये ज़रूर पूरी पूरी टक्कर लेगी. राजकाजी पार्टियों और फ़िरक़ेवाराना संस्थाओं की लाग डाँट हिन्दुस्तान को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती. इनसे देश को बचा कर रखना ही होगा. इन कारनों से और इसी तरह के दूसरे कारनों से आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी मौजूदा काँग्रेस संगठन को तोड़ देने और नीचे लिखे क़ायदों के अनुसार 'लोक सेवक संघ' का सुन्दर रूप लेने का फ़ैसला करती है. मौक़े की ज़रूरत के मुताबिक़ इन नियमों में अदल बदल किया जा सकेगा.

हर ऐसे पाँच बालिग़ मरदों या औरतों की एक पंचायत, जो या तो गाँव के होंगे या जिनके मन में गाँव की लगन होगी, एक इकाई मानी जायगी.

इस तरह की दो पास पास की पंचायतें मिलकर अपने में से ही चुने हुए एक नेता के अधीन एक काम करने वाला जत्था बनायेंगी.

जब इस तरह की सौ पंचायतें हो जायँगी तो उनके पचास पहले दरजे के नेता अपने में से एक को दूसरे दरजे का नेता चुनेंगे. इसी तरह होता रहेगा, इस बीच पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के

گئی ہے۔ اب کوئی کام نہیں رہ گیا ہے۔ ہندستان کو اب شہروں اور قصبوں کا خیال ہٹا کر سات لاکھ گاؤں کے لئے سماجی (سوشل)، سداچاری (مورل) اور مالی (اکونامک) آزادی حاصل کرنی ہے۔ ہندستان جیسے جیسے اپنے اس جن راج کے لکشیہ کی طرف بڑھے گا ویسے ویسے سول یعنی شہری طاقت فوجی طاقت کے اوپر قابو پانے کے لئے ضرور پوری پوری ٹکر لے گی۔ راج کاجی پارٹیوں اور فرقہ وارانہ سنستھاؤں کی لاگ ڈانٹ ہندستان کو تندرست نہیں رہنے دے سکتی۔ ان سے دیش کو بچا کر رکھنا ہی ہوگا۔ ان کارنوں سے اور اسی طرح کے دوسرے کارنوں سے آل انڈیا کانگریس کمیٹی موجودہ کانگریس سنگٹھن کو توڑ دینے اور نیچے لکھے قاعدوں کے انوسار 'لوک سیوک سنگھ' کا سندر روپ لینے کا فیصلہ کرتی ہے۔ موقعے کی ضرورت کے مطابق ان نیموں میں ادل بدل کیا جا سکے گا۔

ہر ایسے پانچ بالغ مردوں یا عورتوں کی ایک پنچایت، جو یا تو گاؤں کے ہوں گے یا جن کے من میں گاؤں کی لگن ہوگی، ایک اکائی مانی جائے گی۔

اس طرح کی دو پاس پاس کی پنچائتیں مل کر اپنے میں سے ہی چنے ہوئے ایک نیتا کے ادھین ایک کام کرنے والا جتھا بنائیں گی۔

جب اس طرح کی سو پنچائتیں ہو جائیں گی تو ان کے پچاس پہلے درجے کے نیتا اپنے میں سے ایک کو دوسرے درجے کا نیتا چنیں گے۔ اسی طرح ہوتا رہے گا، اس بیچ پہلے درجے کے نیتا دوسرے درجے کے

नेता के अधीन काम करेंगे. दो दो सौ पंचायतों के पास पास काम करने वाले गिरोह बनते रहेंगे, जब तक कि यह सारे हिन्दुस्तान में न फैल जायँ. बाद की पचायतों का हर गिरोह पहले गिरोह की तरह अपने में से दूसरे दरजे का एक नेता चुन लेगा. दूसरे दरजे के सब नेता मिल कर सारे हिन्दुस्तान के लिये सेवा करेंगे और अलग अलग अपने अपने इलाक़ों के लिये सेवा करेंगे. दूसरे दरजे के नेता जब कभी जरूरत समझेंगे अपने में से एक को 'सरदार' चुन सकेंगे जो जब तक चाहेगा सब गिरोहों की क़ायदे बन्दी करेगा और उनकी अगुवाई करेगा.

(चूँकि सूबे या ज़िले अभी आख़िरी तौर पर नहीं बने हैं और अभी अदल बदल रहे हैं, इसलिये सेवकों के इस गिरोह को सूबा या ज़िला कौंसिलों में बाँटने की कोशिश नहीं की गई, और सारे हिन्दुस्तान के ऊपर अधिकार उस गिरोह या उन गिरोहों को दिया गया है जो उस समय तक बन चुके हों. यह बात ध्यान में आ जानी चाहिये कि सेवकों के इस दल को जो कुछ अधिकार या ताक़त मिलेगी वह उस सेवा से मिलेगी जो वह ख़ुशी और समझदारी के साथ अपने मालिक की करेंगे. उनका मालिक सारा हिन्दुस्तान है.)

१—हर काम करने वाले को अपने हाथ के कते सूत की या आल इन्डिया चर्खा संघ की तसदीक़ की हुई खादी पहनने की आदत होनी चाहिये और यह जरूरी है कि वह नशे की चीज़ों से बिल्कुल परहेज़ करता हो. अगर वह हिन्दू है तो यह जरूरी होगा कि उसने अपनी निजी ज़िन्दगी में या अपने कुटुम्ब में हर सूरत और हर

نیتا کے ادھین کام کریں گے. دو دو سو پنچائتوں کے پاس پاس کام کرنے والے گروہ بنتے رہیں گے، جب تک کہ یہ سارے ہندستان میں نہ پھیل جائیں. بعد کی پنچائتوں کا ہر گروہ پہلے گروہ کی طرح اپنے میں سے دوسرے درجے کا ایک نیتا چن لیگا. دوسرے درجے کے سب نیتا مل کر سارے ہندستان کے لئے سیوا کریں گے اور الگ الگ اپنے اپنے علاقوں کے لئے سیوا کریں گے. دوسرے درجے کے نیتا جب کبھی ضرورت سمجھیں گے اپنے میں سے ایک کو 'سردار' چن سکیں گے جو جب تک چاہے گا سب گروہوں کی قاعدے بندی کریگا اور ان کی اگوائی کرے گا.

(چوں کہ صوبے یا ضلعے ابھی آخری طور پر نہیں بنے ہیں اور ابھی ادل بدل رہے ہیں، اس لئے سیوکوں کے اس گروہ کو صوبہ یا ضلع کونسلوں میں بانٹنے کی کوشش نہیں کی گئی، اور سارے ہندستان کے اوپر ادھیکار اس گروہ یا ان گروہوں کو دیا گیا ہے جو اس سمے تک بن چکے ہوں. یہ بات دھیان میں آ جانی چاہیئے کہ سیوکوں کے اس دل کو جو کچھ ادھیکار یا طاقت ملے گی وہ اس سیوا سے ملے گی جو وہ خوشی اور سمجھداری کے ساتھ اپنے مالک کی کریں گے. ان کا مالک سارا ہندستان ہے.)

۱- ہر کام کے کرنے والے کو اپنے ہاتھ کے کتے سوت کی یا آل انڈیا چرخہ سنگھ کی تصدیق کی ہوئی کھادی پہننے کی عادت ہونی چاہیئے اور یہ ضروری ہے کہ وہ نشے کی چیزوں سے بالکل پرہیز کرتا ہو. اگر وہ ہندو ہے تو یہ ضروری ہوگا کہ اس نے اپنی نجی زندگی میں یا اپنے کٹمب میں ہر صورت اور ہر

शक्ल में छुआछूत को छोड़ दिया हो, यह भी जरूरी होगा कि उसे साम्प्रदायिक एकता (फ़िरक़ेवाराना इत्तहाद) के आदर्श में विश्वास हो, सब धर्मों के लिये उसमें बराबर का आदर और मान हो और नस्ल, धर्म या मर्द औरत के फ़र्क़ का ख़याल न करते हुए सबको बराबर के मौक़े मिलने और सबका बराबर का दरजा समझे जाने में भी उसे विश्वास हो.

२.—वह अपने अधिकार के अंदर के हर गाँव वाले से मिले जुलेगा.

३.—वह गाँव वालों में से काम करने वाले भरती करेगा, उन्हें काम करना सिखाएगा और उन सबका रजिस्टर रखेगा.

४.—वह अपने रोज रोज के काम का रोजनामचा लिखकर रखेगा.

५.—वह गाँव का इस तरह से संगठन करेगा कि हर गाँव अपनी खेती और दस्तकारी के ज़रिये अपने पैरों पर ख़ुद खड़ा हो सके और अपना काम अपने आप चला सके.

६—वह गाँव के लोगों को सफ़ाई रखने और तन्दुरुस्त रहने की तालीम देगा और गाँव वालों में तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने को रोकने के लिये सब तदबीरें करेगा.

७.—वह हिंदुस्तानी तालीमी संघ की तय की हुई नीति के अनुसार "नई तालीम" के ढंग पर जन्म से लेकर मौत तक गाँव वालों की तालीम का इन्तज़ाम करेगा.

८.—वह इस बात को देखेगा कि जिन लोगों के नाम क़ानूनी

شکل میں چھوا چھوت کو چھوڑ دیا ہو، یہ بھی ضروری ہوگا کہ اسے سامپر دائک ایکتا (فرقہ وارانہ اتحاد) کے آدرش میں وشواس ہو، سب دھرموں کے لئے اس میں برابر کا آدر اور مان ہو اور نسل، دھرم یا مرد عورت کے فرق کا خیال نہ کرتے ہوئے سب کو برابر کے موقعے ملنے اور سب کا برابر کا درجہ سمجھے جانے میں بھی اسے وشواس ہو۔

۲۔۔۔ وہ اپنے ادھیکار کے اندر کے ہر گاؤں والے سے ملے جُلے گا۔

۳۔۔۔ وہ گاؤں والوں میں سے کام کرنے والے بھرتی کرے گا، انھیں کام کرنا سکھائیگا اور ان سب کا رجسٹر رکھیگا۔

۴۔۔۔ وہ اپنے روز روز کے کام کا روزنامچہ لکھ کر رکھے گا۔

۵۔۔۔ وہ گاؤں کا اس طرح سنگٹھن کرے گا کہ ہر گاؤں اپنی کھیتی اور دستکاری کے ذریعے اپنے پیروں پر خود کھڑا ہو سکے اور اپنا کام اپنے آپ چلا سکے۔

۶۔۔۔ وہ گاؤں کے لوگوں کو صفائی رکھنے اور تندرست رہنے کی تعلیم دیگا اور گاؤں والوں میں تندرستی کے بگڑنے اور بیماری پیدا ہونے کو روکنے کے لئے سب تدبیریں کرے گا۔

۷۔۔۔ وہ ہندستانی تعلیمی سنگھ کی طے کی ہوئی نیتی کے انوسار "نئی تعلیم" کے ڈھنگ پر جنم سے لے کر موت تک گاؤں والوں کی تعلیم کا انتظام کرے گا۔

۸۔۔۔ وہ اس بات کو دیکھے گا کہ جن لوگوں کے نام قانونی

वोटरों के रजिस्टर में दर्ज होने से रह गये हैं वह उस रजिस्टर में ठीक ठीक दर्ज कर लिये जावें.

९.—जिन लोगों में अभी तक वोटर बनने की क़ानूनी योग्यता नहीं है उन्हें वह इस बात के लिये बढ़ावा देगा कि वह उस योग्यता को हासिल करें ताकि उन्हें वोट का अधिकार मिल जावे.

१०.—ऊपर के कामों के लिये और दूसरे ऐसे कामों के लिये जो समय समय पर इनमें बढ़ा दिये जावें, संघ के बनाये हुए क़ायदों के मुताबिक़ वह अपना फ़र्ज़ ठीक ठीक अदा करने के लिये अपने को खुद साधेगा और योग्य बनायेगा.

संघ नीचे लिखी स्वाधीन संस्थाओं को अपने साथ मिलायेगा.

(१) आल इण्डिया चर्खा संघ
(२) आल इण्डिया ग्राम उद्योग संघ
(३) हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
(४) हरिजन सेवक संघ
(५) गो सेवा संघ

धन

अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये संघ गांव वालों से और दूसरे लोगों से धन जमा करेगा जिसमें खास जोर इस पर रहेगा कि ग़रीब लोगों से पैसा पैसा जमा किया जावे.

मो० क० गांधी

नई दिल्ली २९-१-४८

ووٹروں کے رجسٹر میں درج ہونے سے رہ گئے ہیں، وہ اس رجسٹر میں ٹھیک ٹھیک درج کر لئے جاویں۔

۹۔ جن لوگوں میں ابھی تک ووٹر بننے کی قانونی یوگیتا نہیں ہے انھیں وہ اس بات کے لئے بڑھاوا دے گا کہ وہ اس یوگیتا کو حاصل کریں تاکہ انھیں ووٹ کا ادھیکار مل جاوے۔

۱۰۔ اوپر کے کاموں کے لئے اور دوسرے ایسے کاموں کے لئے جو سمے سمے پر ان میں بڑھا دئے جاویں، سنگھ کے بنائے ہوئے قاعدوں کے مطابق وہ اپنا فرض ٹھیک ٹھیک ادا کرنے کے لئے اپنے کو خود سادھے گا اور یوگیہ بنائے گا۔

سنگھ نیچے لکھی سوادھین سنستھاؤں کو اپنے ساتھ ملائے گا۔

(۱) آل انڈیا چرخہ سنگھ
(۲) آل انڈیا گرام اُدیوگ سنگھ
(۳) ہندستانی تعلیمی سنگھ
(۴) ہریجن سیوک سنگھ
(۵) گو سیوا سنگھ

دھن

اپنے اُدیش کو پورا کرنے کے لئے سنگھ گاؤں والوں سے اور دوسرے لوگوں سے دھن جمع کرے گا جس میں خاص زور اس پر رہے گا کہ غریب لوگوں سے پیسہ پیسہ جمع کیا جاوے۔

مو. ک. گاندھی

نئی دلی ۲۹-۱-۴۸

विधान की प्रस्तावना (तमहीद)

यह प्रस्तावना इन दर्द भरे शब्दों से शुरू होती है—"मुल्क के दो टुकड़े हो गये" इससे बड़ा हादसा बापू के जीवन में कोई दूसरा नहीं हुआ था. लाज़मी था कि उनके दिल और दिमाग़ पर गहरे से गहरा असर डाले. यह भी लाज़मी था कि उन्हें इस बँटवारे में अपने सारे आदर्शों, असूलों और काम करने के तरीक़ों का ख़ात्मा दिखाई देता हो. अगर तीस साल की सत्य और अहिन्सा की लड़ाई से यह नतीजे पैदा हो सकते हैं तो उनके वह सारे दावे जो वह आत्मबल और सत्याग्रह के बारे में दुनिया के सामने पेश करते रहे थे, बिलकुल बे बुनियाद थे. अगर वह बे बुनियाद नहीं थे तो यह सूरत क्यों पेश आई ? बापू के सामने यह सवाल सबसे अहम सवाल था और उन्होंने इस विधान के पहले जुमले में इसका पूरा जवाब दे दिया हैं. उनके शब्दों से यह साफ़ टपकता है कि आज़ादी की क़ीमत या रिश्वत के रूप में हमने देश के दो टुकड़े किये हैं. सत्य और अहिंसा के लिहाज़ से इससे बड़ी बदएख़लाक़ी (दुराचार) नहीं हो सकती और जब हम यह सोचें कि कांग्रेस के बड़े से बड़े नेता आख़ीर वक़्त तक बराबर मुल्क को यह विश्वास दिलाते रहे थे कि किसी सूरत में भी वह देश का बँटवारा नहीं सह सकेंगे तो इस बदएख़लाक़ी की सियाही और भी बढ़ जाती है. लेकिन दरअसल इस दुराचार, इस सत्य और अहिंसा की जान बूझ कर पामाली करने का ज़िम्मेदार कौन है ? इसका जवाब एक ही सकता है कि यह ज़िम्मेदारी पूरी पूरी बापू की है

ودھان کی پرستاؤنا (تمہید)

یہ پرستاؤنا ان درد بھرے شبدوں سے شروع ہوتی ہے۔ "ملک کے دو ٹکڑے ہو گئے" اس سے بڑا حادثہ باپو کے جیون میں کوئی دوسرا نہیں ہوا تھا۔ لازمی تھا کہ ان کے دل اور دماغ پر گہرے سے گہرا اثر ڈالے۔ یہ بھی لازمی تھا کہ انھیں اس بٹوارے میں اپنے سارے آدرشوں، اصولوں اور کام کرنے کے طریقوں کا خاتمہ دکھائی دیتا ہو۔ اگر تیس سال کی ستیہ اور اہنسا کی لڑائی سے یہ نتیجے پیدا ہو سکتے ہیں تو ان کے وہ سارے دعوے جو وہ آتم بل اور ستیاگرہ کے بارے میں دنیا کے سامنے پیش کرتے رہے تھے، بالکل بے بنیاد تھے۔ اگر وہ بے بنیاد نہیں تھے تو یہ صورت کیوں پیش آئی؟ باپو کے سامنے یہ سوال سب سے اہم سوال تھا اور انھوں نے اس ودھان کے پہلے جملے میں اس کا پورا جواب دیدیا ہے۔ ان کے شبدوں سے یہ صاف ٹپکتا ہے کہ آزادی کی قیمت یا رشوت کے روپ میں ہم نے دیش کے دو ٹکڑے کیے ہیں۔ ستیہ اور اہنسا کے لحاظ سے اس سے بڑی بداخلاقی (دُراچار) نہیں ہو سکتی اور جب ہم یہ سوچیں کہ کانگریس کے بڑے سے بڑے نیتا آخیر وقت تک برابر ملک کو یہ وشواس دلاتے رہے تھے کہ کسی صورت میں بھی وہ دیش کا بٹوارہ نہیں سہہ سکیں گے تو اس بداخلاقی کی سیاہی اور بھی بڑھ جاتی ہے۔ لیکن دراصل یہ دُراچار، اس ستیہ اور اہنسا کی جان بوجھ کر پامالی کرنے کا ذمہ دار کون ہے؟ اس کا جواب ایک ہو سکتا ہے کہ یہ ذمہ داری پوری باپو کی ہے

जिनके असूलों और तरीक़ों पर कांग्रेस काम कर रही थी और जो उसके असली और सच्चे रहनुमा थे. जैसा हम ने कहा है, इस ग़लत फ़हमी का जवाब बापू ने अपने इस विधान के शुरू के फ़िक़रे में दे दिया है—

"देश के दो टुकड़े तो हो गये, फिर भी इंडियन नेशनल कांग्रेस ने राजकाजी आज़ादी हासिल करने के जो साधन निकाले थे उन साधनों से हिन्दुस्तान ने आज़ादी हासिल कर ली है."

इतने साफ़ शब्दों में हिन्दुस्तान की तीस साल की सियासी कशाकश और लड़ाई में जो असूल और तरीक़े इस्तेमाल किये गये उनकी पूरी ज़िम्मेदारी से बापू ने इससे पहले कभी इतने साफ़ और खुले शब्दों में अपने आप को अलग नहीं किया. बापू किसी मामले में अपनी ज़िम्मेदारी क़बूल करने से डरने वाले इन्सान नहीं थे. ज़िम्मेदारियाँ क़बूल करने की जो शानदार मिसालें उन्होंने दुनिया के सामने पेश की हैं उन्हें इन्सानी दुनिया आसानी से भुला न सकेगी. इसलिये इस ज़िम्मेदारी से बापू को अपने को अलग करने पर हमें और भी गहरी निगाह डालने की कोशिश करनी चाहिये. हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि सारी दुनिया के दिल पर यह ख़याल जमा हुआ है कि कांग्रेस बापू के असूलों और तरीक़ों पर चलती थी और उन्हीं से उसे इतनी शानदार जीत हुई कि बिना ख़ून ख़राबी के और अपनी मरज़ी से अंग्रेज़ी सरकार देश से चली गई. बापू की इससे ज़्यादा कामयाबी और क्या

جن کے اصولوں اور طریقوں پر کانگریس کام کر رہی تھی اور جو اس کے اصلی اور سچے رہنما تھے۔ جیسا ہم نے کہا ہے، اس غلط فہمی کا جواب باپو نے اپنے اس ودھان کے شروع کے فقرے میں دیدیا ہے —

"دیش کے دو ٹکڑے تو ہو گئے، پھر بھی انڈین نیشنل کانگریس نے راج کاجی آزادی حاصل کرنے کے جو سادھن نکالے تھے ان سادھنوں سے ہندستان نے آزادی حاصل کر لی ہے۔"

اتنے صاف شبدوں میں ہندستان کی تیس سال کی سیاسی کشمکش اور لڑائی میں جو اصول اور طریقے استعمال کئے گئے اُن کی پوری ذمہ داری سے باپو نے اس سے پہلے کبھی اتنے صاف اور کھلے شبدوں میں اپنے آپ کو الگ نہیں کیا۔ باپو کسی معاملے میں اپنی ذمہ داری قبول کرنے والے انسان نہیں تھے۔ ذمہ داریاں قبول کرنے کی جو شاندار مثالیں انھوں نے دنیا کے سامنے پیش کی ہیں انھیں انسانی دنیا آسانی سے بھلا نہ سکے گی۔ اس لئے اس ذمہ داری سے باپو کو اپنے کو الگ کرنے پر ہمیں اور بھی گہری نگاہ ڈالنے کی کوشش کرنی چاہئے۔ ہمیں یہ دھیان رکھنا چاہئے کہ ساری دنیا کے دل پر یہ خیال جما ہوا ہے کہ کانگریس باپو کے اصولوں اور طریقوں پر چلتی تھی اور انھیں سے اُسے اتنی شاندار جیت ہوئی کہ بنا خون خرابی کے اور اپنی مرضی سے انگریزی سرکار دیش سے چلی گئی۔ باپو کی اس سے زیادہ کامیابی اور کیا

हो सकती है. लेकिन बापू इसको अपनी सबसे बड़ी हार समझते हैं और कहते हैं कि उनका इसमें कोई हाथ न था. जो कुछ किया है कांग्रेस ने अपनी पालिसी और अपने तरीक़ों से किया है और इस वास्ते इस सारी बुराई भलाई की वही जिम्मेदार है.

हम पहले दिखा चुके हैं कि कांग्रेस और बापू के बीच हमेशा कितने गहरे मतभेद रहे और कैसे कांग्रेस उनकी सलाहों और असूलों को त्याग कर वह रास्ते अपनाती रही जिसे बापू असत्य और हिंसा के रास्ते कहते थे. लेकिन कांग्रेस के नेताओं के दिल में बापू के लिये इतना गहरा प्रेम और इतनी श्रद्धा थी और वह उन्हें इसी प्रेम और श्रद्धा के साथ इस तरह अपना रहनुमा बनाया करते थे और साथ ही साथ अपने असूल और अमल में उनके खिलाफ चलने पर इतने खूबसूरत और गहरे परदे डालते रहते थे कि दुनिया यह महसूस नहीं कर सकती थी कि वह किस हद तक बापू के सारे अहिंसात्मक असूलों और साधनों के खिलाफ काम कर रहे हैं. इसीलिये हिन्दुस्तान और दुनिया के लोगों को सदा इस बारे में गहरी से गहरी ग़लत फ़हमियाँ होती रहती थीं. लेकिन इस बुनियादी बेअसूली और ग़लत तरीक़ों का आखिरी नतीजा इतना भयानक और शर्मनाक हुआ कि बापू को इस सारे राज़ की असली हक़ीक़त को खोल कर दुनिया के सामने रख देने की सख्त ज़रूरत महसूस हुई. बापू को यह खतरा पैदा हो गया कि ऐसा न हो कि आने वाली दुनिया की पीड़ित और मज़लूम क़ौमें कांग्रेस के रास्ते को सत्य और अहिंसा का रास्ता समझ कर अपनी आज़ादी और मुक्ती के लिये जो राह अपनाएँ उनसे उनके

ہو سکتی ہے. لیکن باپو اس کو اپنی سب سے بڑی ہار سمجھتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ان کا اس میں کوئی ہاتھ نہ تھا. جو کچھ کیا ہے کانگریس نے اپنی پالیسی اور اپنے طریقوں سے کیا ہے اور اسی واسطے اس ساری برائی بھلائی کی وہی ذمہ دار ہے.

ہم پہلے دکھا چکے ہیں کہ کانگریس اور باپو کے بیچ ہمیشہ کتنے گہرے مت بھید رہے اور کیسے کانگریس ان کی صلاحوں اور اصولوں کو تیاگ کر وہ راستے اپناتی رہی جسے باپو استیہ اور ہنسا کے راستے کہتے تھے. لیکن کانگریس کے نیتاؤں کے دل میں باپو کے لئے اتنا گہرا پریم اور اتنی شردھا تھی اور وہ انھیں اسی پریم اور شردھا کے ساتھ اس طرح اپنا رہنما بنایا کرتے تھے اور ساتھ ہی ساتھ اپنے اصول اور عمل میں ان کے خلاف چلنے پر اتنے خوبصورت اور گہرے پردے ڈالتے رہتے تھے کہ دنیا یہ محسوس نہیں کر سکتی تھی کہ وہ کس حد تک باپو کے سارے اہنسا تمک اصولوں اور سادھنوں کے خلاف کام کر رہے ہیں. اسی لئے ہندستان اور دنیا کے لوگوں کو سدا اس بارے میں گہری سے گہری غلط فہمیاں ہوتی رہتی تھیں. لیکن اس بنیادی بے اصولی اور غلط طریقوں کا آخری نتیجہ اتنا بھیانک اور شرمناک ہوا کہ باپو کو اس سارے راز کی اصلی حقیقت کو کھول کر دنیا کے سامنے رکھ دینے کی سخت ضرورت محسوس ہوئی. باپو کو یہ خطرہ پیدا ہو گیا کہ ایسا نہ ہو کہ آنے والی دنیا کی پیڑت اور مظلوم قومیں کانگریس کے راستے کو ستیہ اور اہنسا کا راستہ سمجھ کر اپنی آزادی اور مکتی کے لئے جو راہ اپنائیں ان سے ان کے

लिये ऐसे ही भयानक खतरे और बरबादियाँ पैदा हो जायँ. इसी लिये अपनी इस आख़िरी वसीयत में बापू ने इस मसले को हमेशा के लिये साफ़ कर दिया है. इसके बाद भी अगर कोई उनकी इस शिक्षा की तरफ़ से आँखें चुराता है या बेपरवाही बरतता है तो इसकी ज़िम्मेदारी खुद उसी पर है.

बापू हमेशा अपने इस ख़याल को हर मौक़े पर अपने तरीक़े पर ज़ाहिर करते रहते थे. बदक़िस्मती से कांग्रेस ने कभी बापू की शिक्षा के इस पहलू पर ध्यान नहीं दिया. इसका आख़िरकार नतीजा यह निकला कि दुनिया की सबसे बड़ी जीत उसके लिये भयानक बरबादियों का एक न ख़तम होने वाला सिलसिला अपने साथ लाई. इसका जितना दुख और जितना दर्द बापू को था, किसी दूसरे को नहीं हो सकता था. उसी ने उन्हें इस विधान के बनाने पर मजबूर किया जिसमें उन्होंने कांग्रेस का उसकी ग़लतियों पर आख़िरी बार चेतावनी दी है और कांग्रेस और देश को वह रास्ता दिखाया है जिस पर चलकर अपने गुनाहों का बहुत कुछ प्रायश्चित्त हो सकता है.

कांग्रेस के काम के तरीक़ों से अपने आपको बरी करके बापू ने उसके सामने वह नतीजे पेश किये हैं जो उसके ग़लत कामों से पैदा हुए हैं. सब से पहले उन्हों ने यह दिखाया है कि इनसे खुद उसका बुरा हाल हो गया है. उनके शब्द यह हैं—

"कांग्रेस की आज की शक्ल व सूरत का, यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लीमेन्टी मशीन बन गई है."

لئے ایسے ہی بھیانک خطرے اور بربادیاں پیدا ہو جائیں۔ اسی لئے اپنی اس آخری وصیت میں باپو نے اس مسئلے کو ہمیشہ کے لئے صاف کر دیا ہے۔ اس کے بعد بھی اگر کوئی ان کی اس شکشا کی طرف سے آنکھیں چراتا ہے یا بے پروائی برتتا ہے تو اس کی ذمہ داری خود اسی پر ہے۔

باپو ہمیشہ اپنے اس خیال کو ہر موقعے پر اپنے طریقے پر ظاہر کرتے رہتے تھے۔ بدقسمتی سے کانگریس نے کبھی باپو کی شکشا کے اس پہلو پر دھیان نہیں دیا۔ اس کا آخرکار نتیجہ یہ نکلا کہ دنیا کی سب سے بڑی جیت اس کے لئے بھیانک بربادیوں کا ایک نہ ختم ہونے والا سلسلہ اپنے ساتھ لائی۔ اس کا جتنا دکھ اور جتنا درد باپو کو تھا کسی دوسرے کو نہیں ہو سکتا تھا۔ اسی نے انھیں اس ودھان کے بنانے پر مجبور کیا جس میں انھوں نے کانگریس کا اس کی غلطیوں پر آخری بار چتاؤنی دی ہے اور کانگریس اور دیش کو وہ راستہ دکھایا ہے جس پر چل کر اپنے گناہوں کا بہت کچھ پرائشچت ہو سکتا ہے۔

کانگریس کے کام کے طریقوں سے اپنے آپ کو بری کر کے باپو نے اس کے سامنے وہ نتیجے پیش کئے ہیں جو اس کے غلط کاموں سے پیدا ہوئے ہیں۔ سب سے پہلے انھوں نے یہ دکھایا ہے کہ ان سے خود اس کا برا حال ہو گیا ہے۔ ان کے شبد یہ ہیں —

"کانگریس کی آج کی شکل و صورت کا، یعنی اس صورت کا جس میں وہ پرچار کا ایک ذریعہ اور پارلیمنٹی مشین بن گئی ہے۔"

बापू का कहना है कि राजकाजी आजादी पाने के बाद, जो दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त समझी जाती है, कांग्रेस देश की सच्ची सेवक और सुधारक बनने की जगह पार्लामेन्टी हुकूमत चलाने की मुर्दा मशीन और उसका गुन गान करने का साधन बन कर रह गई है. आखिर यह दर्दनाक तबदीली उसमें क्यों पैदा हो गई. इसका कारन यह है कि राजकाजी आजादी का सही इस्तेमाल करना उसके बस से बाहर हो गया है. आजादी एक शक्ति है जिससे अपनी क़ाबलियत के अनुसार अच्छे और बुरे दोनों काम लिये जा सकते हैं. यह खुद कोई नेमत नहीं है. इसका सही इस्तेमाल अच्छे से अच्छे नतीजे पैदा कर सकता है. इसका ग़लत इस्तेमाल इसे दुनिया का सबसे बड़ा खतरा बना सकता है. इसलिये अगर कांग्रेस का आदर्श एखलाक़ और सदाचार होता और उसने बापू के सन्देश को सही तौर पर समझने की और उस पर अमल करने की कोशिश की होती तो वह इस ताक़त को पाने के बाद इसका सही इस्तेमाल कर सकती थी. उसने अपनी इस जबरदस्त शक्ति को और उन सारे जरियों और साधनों को जो उसने इसको भेंट कर दिये, योरप की शैतानी सभ्यता की अंधी पैरवी में खर्च करना अपना पेशा बना लिया और इस राह में पहला विनाशकारी (हिलाकात आमेज़) क़दम यह उठाया कि बिना जरूरी सुधार और तबदीलियों के पार्लामेन्टी हुकूमत क़ायम करके उसे एक बेजान मशीन की तरह चलाने लगी. बापू की तीस साल की इस शिक्षा को कि हमारे देश के लिये अंग्रेजी सरकार उतना बड़ा खतरा नहीं है बल्कि हमारी अंग्रेजियत है, हमारी राजकाजी गुलामी नहीं है बल्कि हमारी सदाचारी, आर्थिक और नैतिक गुलामी है, उसने भी

باپو کا کہنا ہے کہ راج کاجی آزادی پانے کے بعد، جو دنیا کی سب سے بڑی طاقت سمجھی جاتی ہے، کانگریس دیش کی سچی سیوک اور سدھارک بننے کی جگہ پارلیمنٹری حکومت چلانے کی مردہ مشین اور اس کا گن گان کرنے کا سادھن بن کر رہ گئی ہے۔ آخر یہ دردناک تبدیلی اس میں کیوں پیدا ہو گئی۔ اس کا کارن یہ ہے کہ راج کاجی آزادی کا صحیح استعمال کرنا اس کے بس سے باہر ہو گیا ہے۔ آزادی ایک شکتی ہے جس سے اپنی قابلیت کے انوسار اچھے اور برے دونوں کام لئے جا سکتے ہیں۔ یہ خود کوئی نعمت نہیں ہے۔ اس کا صحیح استعمال اچھے سے اچھے نتیجے پیدا کر سکتا ہے۔ اس کا غلط استعمال اسے دنیا کا سب سے بڑا خطرہ بنا سکتا ہے۔ اس لئے اگر کانگریس کا آدرش اخلاق اور سداچار ہوتا اور اس نے باپو کے سندیش کو صحیح طور پر سمجھنے کا اور اس پر عمل کرنے کی کوشش کی ہوتی تو وہ اس طاقت کو پانے کے بعد اس کا صحیح استعمال کر سکتی تھی۔ اس نے اپنی اس زبردست شکتی کو اور ان سارے ذریعوں اور سادھنوں کو جو اس نے اس کی بھینٹ کر دئے، یورپ کی شیطانی سبھیتا کی اندھی پیروی میں خرچ کرنا اپنا پیشہ بنا لیا اور اس راہ میں پہلا وناشکاری (ہلاکت آمیز) قدم یہ اٹھایا کہ بنا ضروری سدھار اور تبدیلیوں کے پارلیمنٹری حکومت قائم کر کے اسے ایک بے جان مشین کی طرح چلانے لگی۔ باپو کی تیس سال کی اس شکشا کو کہ ہمارے دیش کے لئے انگریزی سرکار اتنا بڑا خطرہ نہیں ہے بلکہ ہماری انگریزیت ہے، ہماری راج کاجی غلامی نہیں ہے بلکہ ہماری سداچاری، آرتھک اور نیتک غلامی ہے، اس نے

ठीक उस मौक़े पर जब कि उससे पूरा फ़ायदा उठाने का समय आया, इस तरह भुला दिया जैसे इस देश में यह ख़याल कभी पैदा ही नहीं हुआ था. इसी का नतीजा है कि देश के दो टुकड़े हो गये, इसी का नतीजा है कि दो टुकड़े हो जाने के बाद वह सारी मुसीबतें और ख़तरे जिन को दूर करने के लिये यह टुकड़े किये गये थे. उसी जगह पर आज भी पहले की तरह बल्कि और भी ख़राब रूप में बाक़ी हैं. उनके साथ-साथ देश में वह नई हालतें पैदा हो रही हैं कि अगर अब भी इस पच्छिमी पार्लीमेन्टी हुकूमत के तरीक़ों में सुधार न किया और पच्छिमी सभ्यता के असूलों, तरीक़ों और पालिसी को न छोड़ा तो पच्छिमी ग़ुलामी का जुआ दोबारा देश के कंधे पर आजायेगा और जनता, कांग्रेस और कांग्रेसी सरकार सब उन मुसीबतों में पड़ जायँगी जिनके मुक़ाबले में उनकी पिछली बरबादी माँद पड़ जायगी. पच्छिमी सभ्यता की अंधी पैरवी से देश में वही नतीजे पैदा होंगे जो आज योरप में पैदा हो रहे हैं. बदकारी, दग़ा फ़रेब, नफ़रत, ख़ुदग़रज़ी, लूट मार और हर तरह के घरेलू झगड़े जो योरप की तहज़ीब की ख़ासियत हैं, देश में अपना घर बनालेंगी.

चीन और बरमा वग़ैरहा की सी हालत इस देश में भी पैदा हो सकती है इस लिये कांग्रेस को इस रास्ते को छोड़ देना चाहिये. उसे यह महसूस करना चाहिये कि वह अपने पुराने रास्ते से बिलकुल हट गई है और इस लिये अपने मौजूदा रूप में किसी हालत में भी देश के लिये कारआमद नहीं रही.

ٹھیک اس موقعے پر جب کہ اس سے پورا فائدہ اٹھانے کا سمے آیا، اس طرح بھلا دیا جیسے اس دیش میں یہ خیال کبھی پیدا ہی نہیں ہوا تھا۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ دیش کے دو ٹکڑے ہو گئے، اسی کا نتیجہ ہے کہ دو ٹکڑے ہو جانے کے بعد وہ ساری مصیبتیں اور خطرے جن کو دور کرنے کے لئے یہ ٹکڑے کئے گئے تھے۔ اسی جگہ پر آج بھی پہلے کی طرح بلکہ اور بھی خراب روپ میں باقی ہیں۔ ان کے ساتھ ساتھ دیش میں وہ نئی حالتیں پیدا ہو رہی ہیں کہ اگر اب بھی اس پچھمی پارلیمنٹی حکومت کے طریقوں میں سدھار نہ کیا اور پچھمی سبھیتا کے اصولوں، طریقوں اور پالیسی کو نہ چھوڑا تو پچھمی غلامی کا جوا دوبارہ دیش کے کندھے پر آجائے گا اور جنتا، کانگریس اور کانگریسی سرکار سب ان مصیبتوں میں پڑ جائیں گی جن کے مقابلے میں ان کی پچھلی بربادی ماند پڑ جائے گی۔ پچھمی سبھیتا کی اندھی پیروی سے دیش میں وہی نتیجے پیدا ہوں گے جو آج یورپ میں پیدا ہو رہے ہیں۔ بدکاری، دغا فریب، نفرت، خودغرضی، لوٹ مار اور ہر طرح کے گھریلو جھگڑے جو یورپ کی تہذیب کی خاصیت ہیں، دیش میں اپنا گھر بنا لیں گی۔

چین اور برما وغیرہ کی سی حالت اس دیش میں بھی پیدا ہو سکتی ہے اس لئے کانگریس کو اس رستے کو چھوڑ دینا چاہئے۔ اسے یہ محسوس کرنا چاہئے کہ وہ اپنے پرانے راستے سے بالکل ہٹ گئی ہے اور اس لئے اپنے موجودہ روپ میں کسی حالت میں بھی دیش کے لئے کارآمد نہیں رہی۔

बापू के शब्द यह हैं—

"कांग्रेस की आजकल की शक्ल सूरत का, यानी इस सूरत का जिसमें वह प्रचार का एक ज़रिया और पार्लीमेन्टरी मशीन बन गई है, अब कोई काम नहीं रह गया."

सवाल यह है कि बापू की निगाह में कांग्रेस का पुराना उपयोग या काम क्या था और अब वह क्यों और कैसे ख़त्म हो गया. बापू की निगाह में कांग्रेस का पुराना उपयोग यह था कि चाहे कितने ही ग़लत तरीक़े से क्यों न हो, उसने अहिंसात्मक ढंग पर बापू के सत्याग्रह के प्रोग्राम को बड़ी ही बहादुरी, बेग़रज़ी और सरफ़रोशी के साथ चलाया. उस बृटिश सरकार की ग़लतियों, ना इन्साफ़ियों और अत्याचारों से जनता को बचाने में कड़ी मुसीबतें झेलीं और नुक़सान उठाये और अपने इस बे मिसाल त्याग से लोगों में इतनी बेदारी, इतनी शक्ति और इतना एका पैदा कर दिया जिसने विदेशी राज की बुनियादें देश से उखाड़ डालीं. उसके जीवन का सब से अहम और ख़ास पहलू यह था कि वह हुकूमत के सुधार का सब से बड़ा ज़रिया थी और हुकूमत के अत्याचारों और अन्यायों से देश वासियों को बचाने का सब से बड़ा साधन थी. उसमें त्याग था, उसमें जनता की सेवा का भाव था, उसमें हिम्मत थी और जनता को उभारने और उसे ऊँचे मक़सदों के लिये संगठित करने की ताक़त थी. इन्हीं ख़ूबियों के कारन सत्य और अहिंसा के रास्तों से भटकते हुए भी जब कभी वह बापू से किसी क़िस्म की भी मदद चाहती थी तो वह हमेशा उसकी ज़्यादा

"کانگریس کی آج کل کی شکل صورت کا، یعنی اس صورت کا جس میں وہ پرچار کا ایک ذریعہ اور پارلیمنٹری مشین بن گئی ہے، اب کوئی کام نہیں رہ گیا۔"

سوال یہ ہے کہ باپو کی نگاہ میں کانگریس کا پرانا اپیوگ یا کام کیا تھا اور اب وہ کیوں اور کیسے ختم ہو گیا. باپو کی نگاہ میں کانگریس کا پرانا اپیوگ یہ تھا کہ چاہے کتنے ہی غلط طریقے سے کیوں نہ ہو، اس نے اہنسا تمک ڈھنگ پر باپو کے ستیاگرہ کے پروگرام کو بڑی ہی بہادری، بے غرضی اور سرفروشی کے ساتھ چلایا۔ اس نے برٹش سرکار کی غلطیوں، ناانصافیوں اور اتیاچاروں سے جنتا کو بچانے میں کڑی مصیبتیں جھیلیں اور نقصان اٹھائے اور اپنے اس بے مثال تیاگ سے لوگوں میں اتنی بیداری، اتنی شکتی اور اتنا ایکا پیدا کر دیا جس نے ودیشی راج کی بنیادیں دیش سے اکھاڑ ڈالیں۔ اس کے جیون کا سب سے اہم اور خاص پہلو یہ تھا کہ وہ حکومت کے سدھار کا سب سے بڑا ذریعہ تھی اور حکومت کے اتیاچاروں اور انیایوں سے دیش واسیوں کو بچانے کا سب سے بڑا سادھن تھی۔ اس میں تیاگ تھا، اس میں جنتا کی سیوا کا بھاؤ تھا، اس میں ہمت تھی اور جنتا کو ابھارنے اور اسے اونچے مقصدوں کے لیے سنگٹھت کرنے کی طاقت تھی۔ انھیں خوبیوں کے کارن ستیہ اور اہنسا کے راستوں سے بھٹکتے ہوئے بھی جب کبھی وہ باپو سے کسی قسم کی مدد چاہتی تھی تو وہ ہمیشہ اس کی زیادہ

से ज़्यादा मदद करते थे. फिर सवाल यह है कि आखिर अब क्या हो गया. बापू क्यों कहते हैं कि कांग्रेस का देश की भलाई के लिये अब कोई काम नहीं रह गया. इस का कारन यह है कि आजादी मिल जाने से कांग्रेस की हालत में एक जबरदस्त इन्क़लाब हो गया. उसने सर से पाँव तक अपना चोला ही बदल डाला. वह सारे गुन और सारी ख़ूबियाँ, जिन्होंने उसे एक ख़ास जगह दे रक्खी थी, उसकी ज़िन्दगी में से बिलकुल ख़तम हो गई. वह पहले देश की सेवक थी अब उसकी मालिक बन गई. भिखारी की जगह वह राजा बन गई. त्यागी की जगह वह भोगी बन गई. जनता को राज के अन्यायों से बचाने की जो एक ज़बरदस्त ढाल थी वह अब खुद जनता पर लाठियों और गोलियों की बौछारों को जगह जगह जरूरी बताने लगी. वह जिस तरज़े हुकूमत या शासन पद्धति को दुनिया की बदतरीन पद्धति कहती थी, जिसे वह बिल्कुल नाकारा, हिमाक़त और जिहालत से भरी, बेईमान और बदनियत कहती थी, आजादी पाते ही वह उसी अंग्रेजी शहन्शाहियत की मरी हुई लाश में इस तरह समा गई जैसे वह उसी का जिस्म हो और उन्हीं अंग्रेजी अफ़सरों और नौकरों से जिनका दिल व दिमाग़, शरीर और आत्मा पच्छिमी राज की गुलामी के साँचों में ढले हुए थे, देश की सेवा और रक्षा के लिये लगा दिया. इसी के साथ साथ पुरानी हुकूमत की फ़ज़ूल ख़र्चियों, रोबदाब, शान शौकत, और आडम्बरों को उसी तरह अपना लिया जैसे कोई जीता हुआ राजा किसी हारे हुए राजा की सारी चीज़ों को अपनी मिलकियत बनाता है. जिन सारी बातों को मिटाना उसने अपना मक़सद बनाया था उसे

سے زیادہ مدد کرتے تھے. پھر سوال یہ ہے کہ آخر اب کیا ہو گیا. باپو کیوں کہتے ہیں کہ کانگریس کا دیش کی بھلائی کے لئے اب کوئی کام نہیں رہ گیا۔ اس کا کارن یہ ہے کہ آزادی مل جانے سے کانگریس کی حالت میں ایک زبردست انقلاب ہوگیا۔ اُس نے سر سے پاؤں تک اپنا چولا ہی بدل ڈالا۔ وہ سارے گن اور ساری خوبیاں، جنھوں نے اُسے ایک خاص جگہ دے رکھی تھی، اس کی زندگی میں سے بالکل ختم ہو گئیں۔ وہ پہلے دیش کی سیوک تھی اب اس کی مالک بن گئی. بھکاری کی جگہ وہ راجہ بن گئی. تیاگی کی جگہ وہ بھوگی بن گئی. جنتا کو راج کے انیایوں سے بچانے کی جو ایک زبردست ڈھال تھی وہ اب خود جنتا پر لاٹھیوں اور گولیوں کی بوچھاروں کو جگہ جگہ ضروری بتلانے لگی. وہ جس طرز حکومت یا شاسن پددھتی کو دنیا کی بدترین پددھتی کہتی تھی، جسے وہ بالکل ناکارہ، حماقت اور جہالت سے بھری، بے ایمان اور بدنیت کہتی تھی، آزادی پاتے ہی وہ اُسی انگریزی شہنشاہیت کی مری ہوئی لاش میں اس طرح سما گئی جیسے وہ اُسی کا جسم ہو اور انھیں انگریزی افسروں اور نوکروں سے جن کا دل و دماغ، شریر اور آتما پچھمی راج کی غلامی کے سانچوں میں ڈھلے ہوئے تھے، دیش کی سیوا اور رکشا کے لئے لگا دیا۔ اسی کے ساتھ ساتھ پرانی حکومت کی فضول خرچیوں، رعب داب، شان شوکت، اور آڈمبروں کو اسی طرح اپنا لیا جیسے کوئی جیتا ہوا راجہ کسی ہارے ہوئے راجہ کی ساری چیزوں کو اپنی ملکیت بناتا ہے. جن ساری باتوں کو مٹانا اُس نے اپنا مقصد بنایا تھا اُسے

सत्ताका काम अपनी ज़िन्दगी का मक़सद बना लिया है. इस ज़बरदस्त और विनाशकारी तबदीली के बाद उसमें अपनी पुरानी खूबियाँ कैसे बाक़ी रह सकती थीं. बापू उसकी नैतिक और रूहानी गिरावट को बरदाश्त न कर सकते थे. उनकी दिली ख़्वाहिश थी कि कांग्रेस के पुराने जज़्बे को फिर किसी तरह जगा सकें और उसे अपने पुराने त्याग और सेवा के रास्ते पर ला सकें. इसीलिये अपने इस प्रस्ताव में उन्होंने उसे अपने पुराने रास्ते को छोड़ने की सलाह दी है और आने वाले ख़तरों से उसे आगाह किया है.

बापू ने उसे याद दिलाया है कि वह अपने असली मक़सद से बहक गई है. उसका असली मक़सद सिर्फ़ राजकाजी आज़ादी हासिल करना नहीं था बल्कि उसके आगे की कई मंज़िलें तय करनी थीं. उनकी तरफ़ बढ़ने के बजाय आज वह उनसे अपना मुँह मोड़ कर बिलकुल उल्टी तरफ़ को दौड़ी जा रही है.

बापू के शब्द हैं—

"हिन्दुस्तान को अब शहरों और क़सबों का ख़याल हटा कर सात लाख गाँव के लिये समाजी, सदाचारी और माली आज़ादी हासिल करनी है."

बापू ने ऊपर के जुमले में मुल्क की राजकाजी आज़ादी और उसकी ज़िन्दगी के दूसरे पहलुओं की आज़ादी में फ़र्क़ किया है और यह इशारा किया है कि अगर यह दूसरी आज़ादियाँ हासिल नहीं होतीं तो सिर्फ़ राजकाजी आज़ादी बिलकुल बेसूद और बेकार है, क्योंकि यह तो सिर्फ़ इन दूसरी आज़ादियों के हासिल करने का ज़रिया होती है लेकिन सवाल यह पैदा होता है कि अब बृटिश

اپنا کاج اپنی زندگی کا مقصد بنا لیا ہے۔ اس زبردست اور وناشکاری تبدیلی کے بعد اس میں اپنی پرانی خوبیاں کیسے باقی رہ سکتی تھیں۔ باپو اس کی نیتک اور روحانی گراوٹ کو برداشت نہ کر سکتے تھے۔ اُن کی دلی خواہش تھی کہ کانگریس کے پرانے جذبے کو پھر کسی طرح جگا سکیں۔ اسی لئے اپنے اس پرستاؤ میں انھوں نے اُسے اپنے پرانے راستے کو چھوڑنے کی صلاح دی ہے اور آنے والے خطروں سے اُسے آگاہ کیا ہے۔

باپو نے اُسے یاد دلایا ہے کہ وہ اپنے اصلی مقصد سے بہک گئی ہے۔ اُن کا اصلی مقصد صرف راج کاجی آزادی حاصل کرنا نہیں تھا بلکہ اس کے آگے کی کئی منزلیں طے کرنی تھیں۔ اُن کی طرف بڑھنے کے بجائے آج وہ اُن سے اپنا منہ موڑ کر بالکل اُلٹی طرف کو دوڑی جا رہی ہے۔

باپو کے شبد ہیں—

"ہندستان کو اب شہروں اور قصبوں کا خیال ہٹا کر سات لاکھ گاؤں کے لئے سماجی، سداچاری اور مالی آزادی حاصل کرنی ہے۔"

باپو نے اوپر کے جملے میں ملک کی راج کاجی آزادی اور اس کی زندگی کے دوسرے پہلوؤں کی آزادی میں فرق کیا ہے اور یہ اشارہ کیا ہے کہ اگر یہ دوسری آزادیاں حاصل نہیں ہوتیں تو صرف راج کاجی آزادی بالکل بے سود اور بے کار ہے، کیونکہ یہ تو صرف ان دوسری آزادیوں کے حاصل کرنے کا ذریعہ ہوتی ہے۔ لیکن سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ جب برٹش

सरकार चली गई तो फिर हमारी इन दूसरी आज़ादियों को कौन छीन रहा है. हम किसका मुक़ाबला कर के इसको महफ़ूज़ या सुरक्षित कर सकते हैं. जवाब यह है कि अंग्रेज गये लेकिन अंग्रेज़ियत बाक़ी है, योरप गया लेकिन योरपी सभ्यता बाक़ी है. और जैसा हम कह चुके हैं, बापू पच्छिमी सभ्यता को पच्छिमी राज से ज़्यादा ज़हरीली और ख़तरनाक समझते थे. पर जब ख़ुद देश की पार्लीमेन्टी हुकूमत इस सभ्यता को फैलाने का ज़रिया बन गई तब इससे बचने का उसके सामने कौन सा ज़रिया बाक़ी रह गया. बापू गोरी और काली हुकूमत में फ़र्क़ नहीं करते थे. उनका इस बारे में एक ही मेयार या माप दंड था कि यह हुकूमत जनता की सेवक है या नहीं, इसमें दया धरम है या नहीं, इसकी बुनियाद हुक्मरानी और हिंसा पर है या सत्य और अहिंसा पर. मौजूदा हुकूमत इसमें से एक मेयार पर भी पूरी नहीं उतरती. फिर इसके ख़तरों से देश कैसे बच सकता है. जब कांग्रेस देश की सेवक थी, तब यह फ़र्ज़ वह ख़ुद अदा करती थी, अब जब वह मालिक है तो यह सेवा कौन करे. बापू उसे अपने पुराने ज़माने की याद दिलाते और कहते हैं कि जो जगह उसने ख़ाली की है, वह जब तक भर न जाय देश में सुख, शान्ति तरक़्क़ी और ख़ुशहाली का दौर पैदा नहीं हो सकता.

यह ख़याल या आशा कि हुकूमत ख़ुद अपने आप को और देश को कामयाबी के साथ सुधार सकेगी, बिलकुल ग़लत है. पार्लीमेन्टी राज अगर अपने आप को सुधार सकता होता तो योरप का यह हाल न होता जो आज हम देख रहे हैं, अगर इस पार्लीमेन्टी

سرکار چلی گئی تو پھر ہماری ان دوسری آزادیوں کو کون چھین رہا ہے۔ ہم کس کا مقابلہ کر کے اس کو محفوظ یا سورکشت کر سکتے ہیں۔ جواب یہ ہے کہ انگریز گئے لیکن انگریزیت باقی ہے، یورپ گیا لیکن یورپی سبھیتا باقی ہے۔ اور جیسا ہم کہہ چکے ہیں، باپو پچھمی سبھیتا کو پچھمی راج سے زیادہ زہریلی اور خطرناک سمجھتے تھے۔ پر جب خود دیش کی پارلیمنٹی حکومت اس سبھیتا کو پھیلانے کا ذریعہ بن گئی تب اس سے بچنے کا اس کے سامنے کون سا ذریعہ باقی رہ گیا۔ باپو گوری اور کالی حکومت میں فرق نہیں کرتے تھے۔ ان کا اس بارے میں ایک ہی میار یا ماپ دنڈ تھا کہ یہ حکومت جنتا کی سیوک ہے یا نہیں، اس میں دیا دھرم ہے یا نہیں، اس کی بنیاد حکمرانی اور ہنسا پر ہے یا ستیہ اور اہنسا پر۔ موجودہ حکومت اس میں ایک میار پر بھی پوری نہیں اترتی۔ پھر اس کے خطروں سے دیش کیسے بچ سکتا ہے۔ جب کانگریس دیش کی سیوک تھی، تب یہ فرض وہ خود ادا کرتی تھی، اب جب وہ مالک ہے تو یہ سیوا کون کرے۔ باپو اسے اپنے پرانے زمانے کی یاد دلاتے اور کہتے ہیں کہ جو جگہ اس نے خالی کی ہے، وہ جب تک بھر نہ جائے دیش میں سکھ، شانتی ترقی اور خوشحالی کا دور پیدا نہیں ہو سکتا۔

یہ خیال یا آشا کہ حکومت خود اپنے آپ کو اور دیش کو کامیابی کے ساتھ سدھار سکے گی، بالکل غلط ہے۔ پارلیمنٹی راج اگر اپنے آپ کو سدھار سکتا ہوتا تو یورپ [illegible] نہ ہوتا جو آج ہم دیکھ رہے ہیں، اگر اس پارلیمنٹی

देश में कुछ सुधार होते भी हैं तो वह हिंसात्मक इन्क़लाब के ज़रिये होते हैं जो इन्सानी दुनिया के लिये उसके ख़तरों को और भी बढ़ा देते हैं. इस लिये ऐसी हुकूमत में असली सुधार करने के लिये किसी ऐसी ही संस्था की ज़रूरत है जैसी काँग्रेस पहले थी. जब यह सूरत हाल है तब देश की भलाई के लिये दो बातों में से एक का होना लाज़िमी है—या तो काँग्रेस हुकूमत से बाहर अपने पुराने फ़र्ज़ अदा करने का काम अपने हाथ में ले या कोई दूसरा संगठन क़ायम हो जो अहिन्सा को अपना ध्येय (ध्येय) बनाकर काँग्रेस और उसकी सरकार को उनकी आज कल की पच्छिमी समाजी, सदाचारी, माली गुलामी से बचा सके.

पार्लिमेन्टी राज अपने आपको उन दोषों से पाक नहीं कर सकता, जो उसके जन्म के दिन से ही उसकी फ़ितरत (प्रकृति) और ख़मीर में शामिल हैं. सच्चा देश सुधार उस वक़्त तक नहीं हो सकता जब तक उसके सारे पच्छिमी तरीक़े न बदल दिये जायँ. पच्छिम के इन दुराचारी तरीक़ों को बदले बिना इस देश के सात लाख बदनसीब गाँव शहरी और पच्छिमी सभ्यता के विनाश कारी असर से न बच सकेंगे. पच्छिमी सभ्यता गाँव को शहर बनाना चाहती है. वह गाँव की सारी दौलत और साधनों को समेट कर हिन्दुस्तान के कारख़ानों और उनके करोड़पति मालिकों की मदद करना चाहती है. लेकिन जब तक पच्छिमी हुकूमतें छोटी मशीनें बनाने वाली बड़ी मशीनें इतने बड़े पैमाने पर न दें, यह मक़सद पूरा नहीं हो सकता और पच्छिमी हुकूमतें इस तरह ख़ुद अपनी आत्म हत्या करने पर राज़ी नहीं हो सकतीं इसी लिये वह अपनी

ملک میں کچھ سدھار ہوتے بھی ہیں تو وہ ہنسا تمک انقلاب کے ذریعے ہوتے ہیں جو انسانی دنیا کے لئے اس کے خطروں کو اور بھی بڑھا دیتے ہیں. اس لئے ایسی حکومت میں اصلی سدھار کرنے کے لئے کسی ایسی ہی سنستھا کی ضرورت ہے جیسی کانگریس پہلے تھی. جب یہ صورت حال ہے تب دیش کی بھلائی کے لئے دو باتوں میں سے ایک کا ہونا لازمی ہے—یا تو کانگریس حکومت سے باہر اپنے پرانے فرض ادا کرنے کا کام اپنے ہاتھ میں لے یا کوئی دوسرا سنگٹھن قائم ہو جو اہنسا کو اپنا کریڈ (دھییہ) بنا کر کانگریس اور اس کی سرکار کو ان کی آج کل کی پچھمی سماجی، سداچاری، مالی غلامی سے بچا سکے.

پارلیمنٹی راج اپنے آپ کو ان دوشوں سے پاک نہیں کر سکتا، جو اس کے جنم کے دن سے ہی اس کی فطرت (پرکرتی) اور خمیر میں شامل ہیں. سچا دیش سدھار اس وقت تک نہیں ہو سکتا جب تک اس کے سارے پچھمی طریقے نہ بدل دیئے جائیں. پچھم کے ان دراچاری طریقوں کو بدلے بنا اس دیش کے سات لاکھ بدنصیب گاؤں شہری اور پچھمی سبھیتا کے وناشکاری اثر سے نہ بچ سکیں گے. پچھمی سبھیتا گاؤں کو شہر بنانا چاہتی ہے. وہ گاؤں کی ساری دولت اور سادھنوں کو سمیٹ کر ہندستان کے کارخانوں اور ان کے کروڑپتی مالکوں کی مدد کرنا چاہتی ہے. لیکن جب تک پچھمی حکومتیں چھوٹی مشینیں بنانے والی بڑی مشینیں اتنے بڑے پیمانے پر نہ دیں، یہ مقصد پورا نہیں ہو سکتا اور پچھمی حکومتیں اس طرح خود اپنی آتم ہتیا کرنے پر راضی نہیں ہو سکتیں. اسی لئے وہ اپنی

इस विनाश कारी कोशिश में 'माया' और 'राम' दोनों को खोना पड़ेगा. हाँ यह हो सकता है कि अगर हिन्दुस्तान की पार्लिमेन्टी हुकूमत के पास फ़ौजें और ऐटमबमों की ताक़त होती तो यह दूसरे देशों से अपनी जरूरत की चीज़ें जबरदस्ती ले सकती या उन्हें अपनी चीजें दे सकती थी. लेकिन बदनसिबी से हथियारों के मामले में यह मशीनों से भी ज्यादा पच्छिम की महुताज है और यह समझना कि पच्छिम इसे अपने मुकाबले के लिये हथियारबन्द करदेगा, एक पागल पन की बात होगी.

पच्छिम की हिन्सात्मक और विनाशकारी पालिसी और तरीक़ों को छोड़ देने से ज्यादा एक और अहम पहलू अपने काम करने के मौजूदा तरीक़ों को छोड़ देने के लिये बापू ने काँग्रेस के सामने रखा है. उनके शब्द यह हैं—

"हिन्दुस्तान जैसे जैसे अपने इस जन-राज के लक्ष्य की तरफ़ बढ़ेगा वैसे वैसे सिविल यानी शहरी ताक़त फ़ौजी ताक़त के ऊपर क़ाबू पाने के लिये जरूर पूरी पूरी टक्कर लेगी. राज काजी पार्टियाँ और फ़िरक़ेवाराना संस्थाओं की लाग डाट हिन्दुस्तन को तन्दुरुस्त नहीं रहने दे सकती. इनसे देश को बचा कर रखना ही होगा।"

पच्छिमी सभ्यता योरप की तरह हमेशा के लिये इस देश को भी एक न खत्म होने वाली कशमकश, बेचैनी और बरबादी के दायरे में घेरे रखेगी और इसमें और बाहरी ताक़तों में एक अनमिट टक्कर क़ायम रखेगी, लेकिन इससे ज्यादा विनाशकारी पहलू यह है कि पार्लिमेन्टी हुकूमत के दो पार्टी सिस्टम का क़ुदरती नतीजा यह है कि इस मुल्क के अन्दर यह तरीक़ा हिन्सात्मक राज काजी

اس وناش کاری کوشش میں 'مایا' اور 'رام' دونوں کو کھونا پڑے گا۔ ہاں یہ ہو سکتا ہے کہ اگر ہندستان کی پارلیمنٹی حکومت کے پاس فوجیں اور ایٹم بموں کی طاقت ہوتی تو یہ دوسرے دیشوں سے اپنی ضرورت کی چیزیں زبردستی لے سکتی یا انہیں اپنی چیزیں دے سکتی تھی. لیکن بدنصیبی سے ہتھیاروں کے معاملے میں یہ مشینوں سے بھی زیادہ پچھم کی محتاج ہے اور یہ سمجھنا کہ پچھم اسے اپنے مقابلے کے لئے ہتھیار بند کر دے گا، ایک پاگل پن کی بات ہوگی.

پچھم کی ہنساتمک اور وناش کاری پالیسی اور طریقوں کو چھوڑ دینے سے زیادہ ایک اور اہم پہلو اپنے کام کرنے کے موجودہ طریقوں کو چھوڑ دینے کے لئے باپو نے کانگریس کے سامنے رکھا ہے. ان کے شبد یہ ہیں —

"ہندستان جیسے جیسے اپنے اس جن راج کے لکشیہ کی طرف بڑھے گا ویسے ویسے سول یعنی شہری طاقت فوجی طاقت کے اوپر قابو پانے کے لئے ضرور پوری پوری ٹکر لے گی. راج کاجی پارٹیاں اور فرقے وارانہ سنستھاؤں کی لاگ ڈاٹ ہندستان کو تندرست نہیں رہنے دے سکتی. ان سے دیش کو بچا کر رکھنا ہی ہوگا!"

پچھمی سبھیتا یورپ کی طرح ہمیشہ کے لئے اس دیش کو بھی ایک نہ ختم ہونے والی کشمکش، بے چینی اور بربادی کے دائرے میں گھیرے رکھے گی اور اس میں اور باہری طاقتوں میں ایک ان مٹ ٹکر قائم رکھے گی. لیکن اس سے زیادہ وناش کاری پہلو یہ ہے کہ پارلیمنٹی حکومت کے دو پارٹی سسٹم کا قدرتی نتیجہ یہ ہے کہ اس ملک کے اندر یہ طریقہ ہنساتمک راج کاجی

इनक़लाबों के बीज बराबर बोता रहता है. आये दिन राज काजी दूसरा करते हैं और हुकूमतों को ताक़त के ज़ोर से बदलने की कोशिशें होती रहती हैं. इन कोशिशों में देश का हर गिरोह और हर तबक़ा हिस्सा लेता रहता है और इस तरह बारी बारी से कभी यह कभी वह एक दूसरे के हाथों से ज़ख़्मी और बरबाद होते रहते हैं. योरप का आख़िरी चार साल का तजरबा इस बात का सबूत है और उसके हर देश के घरेलू झगड़ों की एक सी कहानी और उसकी ठंडी और गरम लड़ाइयों की कहानियों से इतिहास के पन्ने रँगे हुए हैं.

पार्लिमेन्टी हुकूमत की यह ख़ासियत योरप से कहीं ज़्यादा इस देश के लिये ख़तरनाक और नाशकारी साबित होगी. राजकाजी पार्टियों के साथ साथ यहाँ फ़िरक़ेवाराना जज़्बात और दलबन्दियाँ बड़े से बड़े पैमाने पर मौजूद हैं और पुरानी संस्थाओं के अलावा इस क़िस्म की नई नई ख़तरनाक पार्टियाँ रोज़ाना जन्म ले रही हैं. राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ अभी हमें एक दूर की बेरंग धुंधली तसवीर की तरह नज़र आ रहा है, मगर आज भी महाराष्ट्र में ब्राह्मण अब्राह्मण या आदि वासी तहरीकों के कारन सैकड़ों ब्राह्मण गाँव छोड़ छोड़ कर शहरों में आकर रहने पर मजबूर हो रहे हैं. और जहाँ तक हमारा ख़याल है शोषित संघ के आन्दोलन ने यू० पी० में आख़िरी पंचायतों के चुनावों से यह साबित कर दिया है कि अगले चुनाव तक ही यह ख़तरनाक तहरीक एक इन्क़लाबी रूप ले लेगी. इधर तो यह जज़्बाती तूफ़ान पैदा हो रहे हैं, उधर से कम्युनिस्ट आन्दोलन की इन्क़लाबी घटायें इन तूफ़ानों को सारी

انقلابوں کے بیج برابر بوتا رہتا ہے. آئے دن راج کاجی طوفان آتے ہیں اور حکومتوں کو طاقت کے زور سے بدلنے کی کوششیں ہوتی رہتی ہیں. ان کوششوں میں دیش کا ہر گروہ اور ہر طبقہ حصہ لیتا رہتا ہے اور اس طرح باری باری سے کبھی یہ کبھی وہ ایک دوسرے کے ہاتھوں سے زخمی اور برباد ہوتے رہتے ہیں. یورپ کا آخری چار سال کا تجربہ اس بات کا ثبوت ہے اور اس کے ہر دیش کے گھریلو جھگڑوں کی ایک سی کہانی اور اس کی ٹھنڈی اور گرم لڑائیوں کی کہانیوں سے اتہاس کے پنے رنگے ہوئے ہیں.

پارلیمنٹی حکومت کی یہ خاصیت یورپ سے کہیں زیادہ اس دیش کے لئے خطرناک اور ناش کاری ثابت ہوگی. راج کاجی پارٹیوں کے ساتھ ساتھ یہاں فرقہ وارانہ جذبات اور دل بندیاں بڑے سے بڑے پیمانے پر موجود ہیں اور پرانی سنستھاؤں کے علاوہ اس قسم کی نئی نئی خطرناک پارٹیاں روزانہ جنم لے رہی ہیں. راشٹریہ سویم سیوک سنگھ ابھی ہمیں ایک دور کی بے رنگ دھندھلی تصویر کی طرح نظر آ رہی ہے، مگر آج بھی مہاراشٹر میں برہمن ابراہمن یا آدی واسی تحریکوں کے کارن سیکڑوں برہمن گاؤں چھوڑ چھوڑ کر شہروں میں آکر رہنے پر مجبور ہو رہے ہیں. اور جہاں تک ہمارا خیال ہے شوشت سنگھ کے آندولن نے یو. پی میں آخری پنچایتوں کے چناؤں سے یہ ثابت کر دیا ہے کہ اگلے چناؤ تک ہی یہ خطرناک تحریک ایک انقلابی روپ لے لے گی. ادھر تو یہ جذباتی طوفان پیدا ہو رہے ہیں، ادھر سے کمیونسٹ آندولن کی انقلابی گھٹائیں ان طوفانوں کو ساری

दुनिया में फैला देने की भयानक आवाज़ें सुना रही हैं और इस सबसे ज़्यादा दुख की बात यह है कि हम जो सदियों से निहत्थे और बेहथियार थे आज अपनी इस भूक और हवस को मिटाना अपना पहला क़ौमी फ़र्ज़ समझ रहे हैं और जैसे कोई अपनी चिता के लिये आप लकड़ियाँ जुटाता हो, हम आँखें बन्द कर करके चारों तरफ़ हथियार जमा करने और बाँटने, और फ़ौजी और अधफ़ौजी घेरे बनाकर अपनी मौत का ख़ुद इन्तज़ाम कर रहे हैं. बापू ने इन भयानक हालतों से कांग्रेस को आगाह किया है कि आज की हालतों में मुल्क की सिविल और फ़ौजी ताक़तों का आपस में टक्करें लेना ज़रूरी है और सियासी व फ़िरक़ेवाराना पार्टी बाज़ियाँ इन टक्करों में वह ख़ूँख़्वारी और बरबादी पैदा करेंगी जिससे देश के जीवन की बुनियादें हिल जायँगी. इसलिये कांग्रेस को इस नाशकारी माहौल (वातावरण) से बाहर आकर इसके बचाव का सामान करना चाहिये.

बापू का कहना है कि जैसे-जैसे हिन्दुस्तान अपने इस जन-राज की मंज़िल की तरफ़ बढ़ेगा वैसे-वैसे उसकी सिविल ताक़तें लाज़िमी तौर पर उसकी फ़ौजी ताक़तों पर क़ाबू पाने के लिये उनसे टकरायेंगी. कांग्रेस के लिये अच्छा यह है कि वह राजकाजी पार्टी बन्दियों और फ़िरक़ेवाराना दल बन्दियों की गन्दी खींचा-तानी से बिलकुल अलग रहे.

इन सारे तूफ़ानों से बचने के लिये, जिनका हमने ऊपर ज़िक्र किया है, और इनसे देश को बचाने के लिये बापू ने कांग्रेस को लोक सेवक संघ बन जाने की सलाह दी है. उनके शब्द यह हैं—

دنیا میں پھیلا دینے کی بھیانک آوازیں سنا رہی ہیں اور اس سب سے زیادہ دکھ کی بات یہ ہے کہ ہم جو صدیوں سے نہتھے اور بے ہتھیار تھے آج اپنی اس بھوک اور ہوس کو مٹانا اپنا پہلا قومی فرض سمجھ رہے ہیں اور جیسے کوئی اپنی چتا کے لئے آپ لکڑیاں جٹاتا ہو، ہم آنکھیں بند کر کر کے چاروں طرف ہتھیار جمع کرنے اور بانٹنے اور فوجی اور ادھ فوجی گھیرے بنا کر اپنی موت کا خود انتظام کر رہے ہیں. باپو نے ان بھیانک حالتوں سے کانگریس کو آگاہ کیا ہے کہ آج کی حالتوں میں ملک کی سول اور فوجی طاقتوں کا آپس میں ٹکریں لینا ضروری ہے اور سیاسی و فرقہ وارانہ پارٹی بازیاں ان ٹکروں میں وہ خونخواری اور بربادی پیدا کریں گی جس سے دیش کے جیون کی بنیادیں ہل جائیں گی. اس لئے کانگریس کو اس ناش کاری ماحول (واتاورن) سے باہر آکر اس کے بچاؤ کا سامان کرنا چاہئیے۔

باپو کا کہنا ہے کہ جیسے جیسے ہندستان اپنے اس جن راج کی منزل کی طرف بڑھے گا ویسے ویسے اس کی سول طاقتیں لازمی طور پر اس کی فوجی طاقتوں پر قابو پانے کے لئے ان سے ٹکرائیں گی. کانگریس کے لئے اچھا یہ ہے کہ وہ راج کاجی پارٹی بندیوں اور فرقہ وارانہ دل بندیوں کی گندی کھینچا تانی سے بالکل الگ رہے۔

ان سارے طوفانوں سے بچنے کے لئے، جن کا ہم نے اوپر ذکر کیا ہے، اور ان سے دیش کو بچانے کے لئے باپو نے کانگریس کو لوک سیوک سنگھ بن جانے کی صلاح دی ہے. ان کے شبد یہ ہیں—

"इन कारनों से और इसी के तरह दूसरे कारनों से आल इंडिया कांग्रेस कमेटी मौजूदा कांग्रेस संगठन को तोड़ देने और नीचे लिखे क़ायदे के अनुसार लोक सेवक संघ का सुन्दर रूप लेने का फ़ैसला करती है."

इसमें शक नहीं कि इससे ज्यादा इन्क़लाबी सलाह कांग्रेस के लिये दूसरी नहीं हो सकती थी. कांग्रेस जैसे महान और शानदार संगठन को यह सलाह देना कि वह खुद अपने हाथों से अपना गला घोंट दे, बापू का ही काम था. बापू को खुद इसपर मुश्किल से ही यक़ीन रहा होगा कि वह उनकी इस सलाह पर अमल भी करेगी. लेकिन अगर हम बापू के जीवन पर गहरी निगाह डालें, और कांग्रेस से उनका जो संबन्ध था, उसे सामने रखें तो हमें मानना पड़ेगा कि कांग्रेस मानती या न मानती, बापू उसको कोई दूसरी सलाह नहीं दे सकते थे.

हम कह चुके हैं कि बापू के राज काजी जीवन के शुरू से उनकी मौत के दिन तक उनके और कांग्रेस के विचारों और तरीक़ों में हमेशा जमीन आसमान का फ़र्क़ रहा है. यही कारन था कि वह उनकी सलाहों और तरीक़ों से पूरा फ़ायदा न उठा सकी. यह फ़र्क़ बहुत गहरा, असूली और सच्चा था. इसको समझने के लिये बापू के काम करने के तरीक़ों पर गहरी नजर डालनी चाहिये.

क़ौमी जीवन के नाजुक से नाजुक मौक़ों पर बापू ने बार-बार कांग्रेस और देश को यह सलाह दी है कि वह राज से कोई संबंध न रखे और सरकारी दायरों से बिलकुल अलग रहे, वह कौंसिलों और असेम्बलियों में बिलकुल न जाय, वह चुनाव में हिस्सा न ले, वग़ैरा वग़ैरा. कांग्रेस ने कभी इन सलाहों को माना कभी न माना पर

"ان کارنوں سے اور اسی کے طرح دوسرے کارنوں سے آل انڈیا کانگریس کمیٹی موجودہ کانگریس سنگٹھن کو توڑ دینے اور نیچے لکھے قاعدے کے انوسار لوک سیوک سنگھ کا سندر روپ لینے کا فیصلہ کرتی ہے۔"

اس میں شک نہیں کہ اس سے زیادہ انقلابی صلاح کانگریس کے لئے دوسری نہیں ہو سکتی تھی۔ کانگریس جیسے مہان اور شاندار سنگٹھن کو یہ صلاح دینا کہ وہ خود اپنے ہاتھوں سے اپنا گلا گھونٹ دے، باپو کا ہی کام تھا۔ باپو کو خود اس پر مشکل سے ہی یقین رہا ہوگا کہ وہ ان کی اس صلاح پر عمل بھی کرے گی۔ لیکن اگر ہم باپو کے جیون پر گہری نگاہ ڈالیں، اور کانگریس سے ان کا جو سمبندھ تھا، اسے سامنے رکھیں تو ہمیں ماننا پڑے گا کہ کانگریس مانتی یا نہ مانتی، باپو اس کو کوئی دوسری صلاح نہیں دے سکتے تھے۔

ہم کہہ چکے ہیں کہ باپو کے راج کاجی جیون کے شروع سے ان کی موت کے دن تک ان کے اور کانگریس کے وچاروں اور طریقوں میں ہمیشہ زمین آسمان کا فرق رہا ہے۔ یہی کارن تھا کہ وہ ان کی صلاحوں اور طریقوں سے پورا فائدہ نہ اٹھا سکی۔ یہ فرق بہت گہرا، اصلی اور سچا تھا۔ اس کو سمجھنے کے لئے باپو کے کام کرنے کے طریقوں پر گہری نظر ڈالنی چاہیئے۔

قومی جیون کے نازک سے نازک موقعوں پر باپو نے بار بار کانگریس اور دیش کو یہ صلاح دی ہے کہ وہ راج سے کوئی سمبندھ نہ رکھے اور سرکاری دائروں سے بالکل الگ رہے، وہ کونسلوں اور اسمبلیوں میں بالکل نہ جائے، وہ چناؤ میں حصہ نہ لے، وغیرہ وغیرہ۔ کانگریس نے کبھی ان صلاحوں کو مانا کبھی نہ مانا پر

बापू अपने इस खयाल को हमेशा उसके सामने रखते रहे. इसके पीछे बापू का एक बुनियादी असूल था, जिसे अंग्रेजी हुकूमत के समय एक हद तक कांग्रेस ने मंजूर कर लिया था. वह यह कि सरकार से अलग रहना, सरकार का मुक़ाबला करने के लिये जनता की ताक़त को बढ़ाना है. और जो जमात हुकूमत को काबू में करके उसे बदलना, सुधारना और सीधे रास्ते पर लाना चाहती है वह जब तक आप हुकूमत के दायरों से दूर और बाहर न रहेगी वह कभी जनता की सच्ची अगवाई न कर सकेगी और न उसमें हिम्मत के साथ सरकार का मुक़ाबला करने की शक्ति पैदा कर सकेगी.

कांग्रेस बापू की इस बुनियादी हिदायत को कि पार्लामेंटी हुकूमत का सुधार उसके अन्दर रहकर नहीं हो सकता, उसका सुधार उसके बाहर रहकर ही हो सकता है, नहीं समझ सकी. बापू दरअसल कांग्रेस को अंग्रेजी सरकार को निकालने का साधन नहीं बनाना चाहते थे. वह अपने तौर पर उसके लिये इससे बहुत ऊँची जगह चुन चुके थे और उन्हें आशा थी कि अंग्रेजी सरकार से जीतने के वक्त तक कांग्रेस में इतनी नैतिक बुलन्दी और दूर अन्देशी पैदा हो जायगी कि वह उनके असली मक़सद को समझ सके और उनपर अमल कर सके. वह यह चाहते थे कि कांग्रेस जनता की रक्षा और तरक़्क़ी का और देश की सरकार को जनता का सच्चा सेवक और जनता को देश का राजा और मालिक बनाये रखने का एक टिकाऊ साधन और साहस बन जाये, बापू के लिये सच्चे स्वराज का यही पहला क़दम था.

कांग्रेस दुनिया की अकेली और महान संस्था थी जिसने थोड़ी

باپو اپنے اس خیال کو ہمیشہ اس کے سامنے رکھتے رہے۔ اس کے پیچھے باپو کا ایک بنیادی اصول تھا، جسے انگریزی حکومت کے سمے ایک حد تک کانگریس نے منظور کر لیا تھا۔ وہ یہ کہ سرکار سے الگ رہنا، سرکار کا مقابلہ کرنے کے لئے جنتا کی طاقت کو بڑھانا ہے۔ اور جو جماعت حکومت کو قابو میں کر کے اسے بدلنا، سدھارنا اور سیدھے راستے پر لانا چاہتی ہے وہ جب تک آپ حکومت کے دائروں سے دور اور باہر نہ رہے گی وہ کبھی جنتا کی سچی اگوائی نہ کر سکے گی اور نہ اس میں ہمت کے ساتھ سرکار کا مقابلہ کرنے کی شکتی پیدا کر سکے گی۔

کانگریس باپو کی اس بنیادی ہدایت کو کہ پارلیمنٹی حکومت کا سدھار اس کے اندر رہ کر نہیں ہو سکتا، اس کا سدھار اس کے باہر رہ کر ہی ہو سکتا ہے، نہیں سمجھ سکی۔ باپو دراصل کانگریس کو انگریزی سرکار کو نکالنے کا سادھن نہیں بنانا چاہتے تھے۔ وہ اپنے طور پر اس کے لئے اس سے بہت اونچی جگہ چن چکے تھے اور انھیں آشا تھی کہ انگریزی سرکار سے جیتنے کے وقت تک کانگریس میں اتنی نیتک بلندی اور دور اندیشی پیدا ہو جائے گی کہ وہ اُن کے اصلی مقصد کو سمجھ سکے اور اُن پر عمل کر سکے۔ وہ یہ چاہتے تھے کہ کانگریس جنتا کی رکشا اور ترقی کا اور دیش کی سرکار کو جنتا کا سچا سیوک اور جنتا کو دیش کا راجہ اور مالک بنائے رکھنے کا ایک ٹکاؤ سادھن اور طاقت بن جائے، باپو کے لئے سچے سوراج کا یہی پہلا قدم تھا۔

کانگریس دنیا کی اکیلی اور مہان سنستھا تھی جس نے تھوڑی

बहुत बापू की रहनुमाई में नैतिक प्रोग्राम अपना कर दुनिया के सब से बड़े साम्राज्य का बिना फ़ौज और हथियारों के मुक़ाबला किया था. उसने बेमिसाल त्याग और बेग़रज़ सेवा से अपने देश भाइयों के दिल पर क़ाबू पालिया था. बापू इस महान संस्था में उसके पुराने भाव फिर से जगाना चाहते थे. सेवा संघ बन जाने की सलाह देने से उनका यह मतलब न था कि उसकी सरकार के मंत्री और नेता गाँव में बैठकर चरखा कातने को अपना काम बना लें. वह यह भी नहीं चाहते थे कि उसके सरकार से हट जाने के बाद उसकी जगह कोई तानाशाही या फ़िरक़ेवाराना सरकार क़ायम हो जाय, बल्कि वह काँग्रेस को राज गद्दी से हटा कर देश रक्षा और देश सुधार के काम उसके सुपुर्द करके तानाशाही या देश द्रोही सरकार के क़ायम होने की सम्भावना को ही सदा के लिये मिटा देना चाहते थे. उनका ख़याल था कि काँग्रेस अगर राज काज को तज कर देश सेवा के मैदान में फिर से आजाय तो देश की कोई भी पार्टी अकेले या मिलकर सरकार का काम काँग्रेस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कुछ दिनों के लिये भी नहीं चला सकती. उसके बाहर आजाने से उसका त्याग देश में एक एख़लाक़ी या नैतिक हलचल मचा देता, वह फिर एक बार जाग उठता. काँग्रेस की ग़ैर मामूली संगठन शक्ति थोड़े ही अरसे में जनता के जज़्बों, विचारों और संगठनों में ऐसा ज़बरदस्त इनक़लाब पैदा करती कि दुनिया की कोई भी हुकूमत, चाहे वह कितनी ही ख़ुद ग़रज़, दुनिया परस्त और देश की दुश्मन क्यों न होती, काँग्रेस के असर और क़ाबू के बाहर देर तक नहीं रह सकती थी, उसके लिये इसके सहयोग और मदद

(३)

بہت باپو کی رہنمائی میں نیتک پروگرام اپنا کر دنیا کے سب سے بڑے سامراج کا بنا فوج اور ہتھیاروں کے مقابلہ کیا تھا. اس نے بے مثال تیاگ اور بے غرض سیوا سے اپنے دیش بھائیوں کے دل پر قابو پا لیا تھا. باپو اس مہان سنستھا میں اس کے پرانے بھاؤ پھر سے جگانا چاہتے تھے. سیوا سنگھ بن جانے کی صلاح دینے سے ان کا یہ مطلب نہ تھا کہ اس کی سرکار کے منتری اور نیتا گاؤں میں بیٹھ کر چرخہ کاتنے کو اپنا کام بنا لیں. وہ یہ بھی نہیں چاہتے تھے کہ اس کے سرکار سے ہٹ جانے کے بعد اس کی جگہ کوئی تاناشاہی یا فرقہ وارانہ سرکار قائم ہو جائے، بلکہ وہ کانگریس کو راج گدی سے ہٹا کر دیش رکشا اور دیش سدھار کے کام اس کے سپرد کر کے تاناشاہی یا دیش دروہی سرکار کے قائم ہونے کی سمبھاونا کو ہی سدا کے لئے مٹا دینا چاہتے تھے. ان کا خیال تھا کہ کانگریس اگر راج کاج کو تج کر دیش سیوا کے میدان میں پھر سے آ جائے تو دیش کی کوئی بھی پارٹی اکیلے یا مل کر سرکار کا کام کانگریس کی مرضی کے خلاف کچھ دنوں کے لئے بھی نہیں چلا سکتی. اس کے باہر آ جانے سے اس کا تیاگ دیش میں ایک اخلاقی یا نیتک ہل چل مچا دیتا، وہ پھر ایک بار جاگ اٹھتا. کانگریس کی غیر معمولی سنگٹھن شکتی تھوڑے ہی عرصے میں جنتا کے جذبوں، وچاروں اور سنگٹھنوں میں ایسا زبردست انقلاب پیدا کرتی کہ دنیا کی کوئی بھی حکومت چاہے وہ کتنی ہی خود غرض، دنیا پرست اور دیش کی دشمن کیوں نہ ہوتی، کانگریس کے اثر اور قابو کے باہر دیر تک نہیں رہ سکتی تھی، اس کے لئے اس کے سہیوگ اور مدد

(۲۲)

के बिना सरकार चलाना बिलकुल नामुमकिन हो जाता. दर असल इस तरह देश में एक ऐसी एखलाक़ी या सदाचारी हुकूमत क़ायम हो जाती जो यहाँ की राजकाजी हुकूमत से ऊँची होती और हमेशा उसके सुधार और रहनुमाई का फ़र्ज़ अदा कर सकती. इस लिये जो सूरत पंडित जवाहर लाल नेहरू को ऐसी डरावनी नज़र आती थी वही बापू की राय में देश को उसके सारे मौजूदा ख़तरों और झगड़ों से हमेशा के लिये बचा लेने का अकेला ज़रिया थी.

बापू काँग्रेस को तख्त से उतारना नहीं चाहते थे बल्कि उसको देश का सच्चा नुमाइन्दा और असली राजा बनाना चाहते थे. और इस तरह उन हिन्सात्मक राजकाजी इन्क़लाबों का सदा के लिये ख़ात्मा कर देना चाहते थे जिन्हें पार्लीमेन्टी हुकूमत क़ुदरती तौर पर पैदा करती है. और इस तरह वह इस हुकूमत का पच्छिमी जामा उतारकर उसे अपने देश की पोशाक पहिना देना चाहते थे. लेकिन आल इंडिया काँग्रेस कमेटी के रहनुमा उनके इन जज़्बात और विचारों को समझने से लाचार थे क्योंकि पच्छिमी सभ्यता उनमें से बहुत सों पर अपना गहरा रंग जमाये हुए थी और पच्छिमी पंडितों ने उन्हें यह तालीम दी है कि राजकाजी इन्क़लाब क़ुदरत और इन्सानी फ़ितरत या मानव प्राकृति के लाज़िमी करशमे हैं—और बापू के सत्य और अहिन्सा का सबक़ क़ुदरत के क़ानूनों और इन्सानी स्वभाव दोनों के ख़िलाफ़ है. इन्हीं विचारों के कारन आल इंडिया काँग्रेस कमेटी ने बापू की आख़िरी वसीयत—उनके लोक सेवक संघ के विधान—को जब वह प्रस्ताव के रूप में उसके सामने पेश हुआ तो नामंज़ूर कर दिया.

کے بنا سرکار چلانا بالکل ناممکن ہو جاتا. در اصل اس طرح دیش میں ایک ایسی اخلاقی یا سداچاری حکومت قائم ہو جاتی جو یہاں کی راج کاجی حکومت سے اونچی ہوتی اور ہمیشہ اس کے سدھار اور رہنمائی کا فرض ادا کر سکتی. اس لئے جو صورت پنڈت جواہر لال نہرو کو ایسی ڈراونی نظر آتی تھی وہی باپو کی رائے میں دیش کو اس کے سارے موجودہ خطروں اور جھگڑوں سے ہمیشہ کے لئے بچا لینے کا اکیلا ذریعہ تھی.

باپو کانگریس کو تخت سے اتارنا نہیں چاہتے تھے بلکہ اس کو دیش کا سچا نمائندہ اور اصلی راجہ بنانا چاہتے تھے. اور اس طرح ان ہنساتمک راج کاجی انقلابوں کا سدا کے لئے خاتمہ کر دینا چاہتے تھے جنھیں پارلیمنٹی حکومت قدرتی طور پر پیدا کرتی ہے. اور اس طرح وہ اس حکومت کا پچھمی جامہ اتار کر اسے اپنے دیش کی پوشاک پہنا دینا چاہتے تھے لیکن آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے رہنما ان کے ان جذبات اور وچاروں کو سمجھنے سے لاچار تھے کیوں کہ پچھمی سبھیتا ان میں سے بہت سوں پر اپنا گہرا رنگ جمائے ہوئے تھی اور پچھمی پنڈتوں نے انھیں یہ تعلیم دی ہے کہ راج کاجی انقلاب قدرت اور انسانی فطرت یا مانو پرکرتی کے لازمی کرشمے ہیں — اور باپو کے ستیہ اور اہنسا کا سبق قدرت کے قانونوں اور انسانی سوبھاؤ دونوں کے خلاف ہے. انھیں وچاروں کے کارن آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے باپو کی آخری وصیت — ان کے لوک سیوک سنگھ کے ودھان — کو جب وہ پرستاؤ کے روپ میں اس کے سامنے پیش ہوا تو نامنظور کر دیا.

सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम

विधान की प्रस्तावना के बाद बापू ने अपने लोक सेवक संघ का संगठन बताया है. मसविदे से पता चलता है कि बापू इस विधान की मदद से राजकाजी दायरे के बाहर एक ऐसा गिरोह पैदा कर देना चाहते थे जो जनता का सच्चा सेवक हो और जनता का इस तरह और इस पैमाने पर संगठन कर दे कि जनता हर विरोधी ताक़त से, चाहे वह देशी हो या विदेशी, अपना बचाव कर सके. इससे पहले कि हम इस विधान की दफ़ाओं को एक एक करके बयान करें, हम कुछ ऐसी बातें कहना चाहते हैं जिनसे इसके समझने और इस पर अमल करने में आसानी होगी.

इस विधान को समझने की कोशिश में हमें इस बात का खास ध्यान रखना चाहिये कि यह विधान बापू की ५० साल की जिन्दगी की आखिरी कड़ी है. यह उनके उस मक़सद को हासिल करने का आखिरी प्रोग्राम है जिसकी तरफ़ बढ़ने की वह ५० साल से कोशिश कर रहे थे, और जिसकी बहुत सी मंज़िलें वह तय कर चुके थे. इसलिये अगर हम इस प्रोग्राम को बापू के आदर्शों, उसूलों और आन्दोलनों से अलग करके देखना चाहें तो हम इसके असली मतलब को नहीं समझ सकेंगे. इसके समझने के लिये यह ज़रूरी है कि हम बापू के जीवन की पूरी तस्वीर अपने सामने रखें.

हमने ऊपर बापू के जीवन के कई मक़सदों की चर्चा की है पर दरअसल यह कौन कह सकता है कि बापू की जिन्दगी का

ستیاگرہ اور رچناتمک پروگرام

ودھان کی پرستاونا کے بعد باپو نے اپنے لوک سیوک سنگھ کا سنگٹھن بتایا ہے۔ مسودے سے پتہ چلتا ہے کہ باپو اس ودھان کی مدد سے راج کاجی دائرے سے باہر ایک ایسا گروہ پیدا کر دینا چاہتے تھے جو جنتا کا سچا سیوک ہو اور جنتا کا اس طرح اور اس پیمانے پر سنگٹھن کر دے کہ جنتا ہر ورودھی طاقت سے، چاہے وہ دیشی ہو یا ودیشی، اپنا بچاؤ کر سکے۔ اس سے پہلے کہ ہم اس ودھان کی دفعاؤں کو ایک ایک کر کے بیان کریں، ہم کچھ ایسی باتیں کہنا چاہتے ہیں جن سے اس کے سمجھنے اور اس پر عمل کرنے میں آسانی ہوگی۔

اس ودھان کو سمجھنے کی کوشش میں ہمیں اس بات کا خاص دھیان رکھنا چاہیے کہ یہ ودھان باپو کی ۵۰ سال کی زندگی کی آخری کڑی ہے۔ یہ ان کے اس مقصد کو حاصل کرنے کا آخری پروگرام ہے جس کی طرف بڑھنے کی وہ ۵۰ سال سے کوشش کر رہے تھے، اور جس کی بہت سی منزلیں وہ طے کر چکے تھے۔ اس لئے اگر ہم اس پروگرام کو باپو کے آدرشوں، اصولوں اور آندولنوں سے الگ کر کے دیکھنا چاہیں تو ہم اس کے اصلی مطلب کو نہیں سمجھ سکیں گے۔ اس کے سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ ہم باپو کے جیون کی پوری تصویر اپنے سامنے رکھیں۔

ہم نے اوپر باپو کے جیون کے کئی مقصدوں کی چرچا کی ہے پر دراصل یہ کون کہہ سکتا ہے کہ باپو کی زندگی کا

असली मक़सद क्या था. कोई कहेगा कि ईश्वर को साक्षात करना यानी उसका दीदार हासिल करना था. कोई कहेगा कि आत्मदर्शन या "सेल्फ़ रियलाइ ज़ेशन" था. कोई कहेगा कि इन्सान की ख़िदमत करना था. कोई कहेगा कि मुल्क को आज़ाद करना था. कोई कहेगा कि पच्छिमी सभ्यता के नाशक और शैतानी पहलुओं से हिन्दुस्तान को और इसके ज़रिये से इन्सानी दुनिया को बचाना था. सच यह है कि यह सारे मक़सद उनके सामने थे. और यह सब एक ही सचाई के अलग अलग पहलू हैं, इनमें कोई एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं. एक ही आदमी इन सब मक़सदों को हासिल करने की एक साथ कोशिश कर सकता है.

पर जहाँ तक हमारा सवाल है हम इस विधान में बापू को दुनिया के एक सेवक की तरह देखेंगे, और इसमें भी उनकी ज़िन्दगी के उस हिस्से को सामने रखेंगे जो ख़ास तौर से राज काज से सम्बन्ध रखता है. बापू का यह विधान इस सारे सिलसिले की आख़िरी कड़ी है. यह सिलसिला दक्खिन अफ़रीक़ा से शुरू हो चुका था. वहीं बापू के सामने वह सूरतें आईं और वह उन नतीजों पर पहुँचे जिनसे उनकी आगे की ज़िन्दगी का सारा प्रोग्राम तय हो गया. हम इन नतीजों में से कुछ, जो हमारी इस समय की चर्चा से सम्बन्ध रखते हैं, नीचे देते हैं—

१. पच्छिमी सभ्यता एक शैतानी सभ्यता है.

२. पार्लिमेन्टी राज का आजकल का ढांचा और रंग ढंग इन्सानी दुनिया को मिटा देने वाला है.

३. [illegible] सभ्यता और इस तरह के राज में एक [illegible]

اصلی مقصد کیا تھا. کوئی کہے گا کہ ایشور کو ساکشات کرنا یعنی اس کا دیدار حاصل کرنا تھا. کوئی کہے گا کہ آتم درشن یا "سلف ریلائزیشن" تھا. کوئی کہے گا کہ انسان کی خدمت کرنا تھا. کوئی کہے گا کہ ملک کو آزاد کرنا تھا. کوئی کہے گا کہ پچھمی سبھیتا کے ناشک اور شیطانی پہلوؤں سے ہندستان کو اور اس کے ذریعے سے انسانی دنیا کو بچانا تھا. سچ یہ ہے کہ یہ سارے مقصد اُن کے سامنے تھے. اور یہ سب ایک ہی سچائی کے الگ الگ پہلو ہیں، ان میں کوئی ایک دوسرے کے خلاف نہیں. ایک ہی آدمی ان سب مقصدوں کو حاصل کرنے کی ایک ساتھ کوشش کر سکتا ہے.

پر جہاں تک ہمارا سوال ہے ہم اس ودھان میں باپو کو دنیا کے ایک سیوک کی طرح دیکھیں گے، اور اس میں بھی ان کی زندگی کے اس حصے کو سامنے رکھیں گے جو خاص طور سے راج کاج سے سمبندھ رکھتا ہے. باپو کا یہ ودھان اس سارے سلسلے کی آخری کڑی ہے. یہ سلسلہ دکھن افریقہ سے شروع ہو چکا تھا. وہیں باپو کے سامنے وہ صورتیں آئیں اور وہ ان نتیجوں پر پہنچے جن سے ان کی آگے کی زندگی کا سارا پروگرام طے ہو گیا. ہم ان نتیجوں میں سے کچھ، جو ہماری اس سمے کی چرچا سے سمبندھ رکھتے ہیں، نیچے دیتے ہیں—

۱. پچھمی سبھیتا ایک شیطانی سبھیتا ہے.

۲. پارلیمنٹی راج کا آج کل کا ڈھانچہ اور رنگ ڈھنگ انسانی دنیا کو مٹا دینے والا ہے.

۳. [illegible] سبھیتا اور اس طرح کے راج میں ایک [illegible]

इन्क़लाब यानी नैतिक क्रांति होना इन्सान की भलाई के लिये ज़रूरी है.

४. यह इन्क़लाब तलवार से या किसी भी हिन्सा के तरीक़े से पैदा नहीं किया जा सकता है. इस तरह की इन्क़लाबी कोशिशें इन्सान की तबाही और बरबादी को और भी बढ़ा देंगी.

५. किसी शैतानी ताक़त को उससे बड़ी शैतानी या हैवानी ताक़त खड़ी करके उसके ज़रिये से मिटाना ग़लत है, क्योंकि इससे शैतानियत बढ़ेगी, कम नहीं हो सकती.

६. हैवानियत का मुक़ाबला सिर्फ़ इन्सानियत से हो सकता है, क्योंकि मानव प्रेम की शक्ति तलवार की शक्ति से ज़्यादा बलवान और ज़्यादा असर वाली है.

७. अगर मानव प्रेम को सत्याग्रह का रूप दिया जावे और सत्याग्रह से एक बड़े पैमाने पर सदाचार की शक्ति पैदा कर दी जावे तो दुनिया की कोई हिन्सा की शक्ति इसके सामने खड़ी नहीं रह सकती.

८. दुनिया में एख़लाक़ी यानी नैतिक इन्क़लाब दो ही तरीक़ों से पैदा हो सकता है.

एक तो खुद हुकूमत का दिल बदल जाने से दूसरे जनता में इतनी जागृति, शक्ति और संगठन पैदा हो जाने से कि वह हुकूमत की सच्ची मालिक बन सके और हुकूमत को एक सच्चा सेवक बने रहने पर मजबूर कर सके.

९. ऊपर की दोनों बातें सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम की

انقلاب یعنی نیتک کرانتی ہونا انسان کی بھلائی کیلئے ضروری ہے۔

۴- یہ انقلاب تلوار سے یا کسی بھی ہنسا کے طریقے سے پیدا نہیں کیا جاسکتا ہے۔ اس طرح کی انقلابی کوششیں انسان کی تباہی اور بربادی کو اور بھی بڑھادیں گی۔

۵- کسی شیطانی طاقت کو اس سے بڑی شیطانی یا حیوانی طاقت کھڑی کرکے اس کے ذریعہ سے مٹانا غلط ہے، کیونکہ اس سے شیطانیت بڑھے گی، کم نہیں ہوسکتی۔

۶- حیوانیت کا مقابلہ صرف انسانیت سے ہوسکتا ہے۔ کیونکہ مانو پریم کی شکتی تلوار کی شکتی سے زیادہ بلوان اور زیادہ اثر والی ہے۔

۷- اگر مانو پریم کو ستیاگرہ کا روپ دیا جاوے اور ستیاگرہ سے ایک بڑے پیمانے پر سداچار کی شکتی پیدا کردی جاوے تو دنیا کی کوئی ہنسا کی شکتی اس کے سامنے کھڑی نہیں رہ سکتی۔

۸- دنیا میں اخلاقی یعنی نیتک انقلاب دو ہی طریقوں سے پیدا ہوسکتا ہے۔

ایک تو حکومت کا دل بدل جانے سے دوسرے جنتا میں اتنی جاگرتی، شکتی اور سنگٹھن پیدا ہوجانے سے کہ وہ حکومت کی سچی مالک بن سکے اور حکومت کو ایک سچا سیوک بنے رہنے پر مجبور کرسکے۔

۹- اوپر کی دونوں باتیں ستیاگرہ اور رچناتمک پروگرام کی

मदद से पूरी हो सकती हैं. हिन्दुस्तान की हवा इस प्रोग्राम के लिये बड़ी मददगार है. अगर हिन्दुस्तान में एक गिरोह त्यागी सेवकों यानी सत्याग्रहियों का तैयार हो जावे तो इन दोनों बातों में एक न एक अच्छी तरह पूरी हो सकती है.

इन बुनियादी विचारों को बापू दक्खिन अफ़रीक़ा से अपने साथ लाये थे. सत्याग्रही तैयार करने की बुनियाद दक्खिन अफ़रीक़ा में फ़िनिक्स आश्रम की शक्ल में पड़ चुकी थी. हिन्दुस्तान में आते ही बापू ने सत्याग्रह आश्रम खोला और भारत को सत्याग्रह की मदद से आज़ाद करने के लिये जो दूसरी तैयारियाँ ज़रूरी थीं, शुरू कर दीं. पर जब बापू रौलट ऐक्ट वाले आन्दोलन के सिलसिले में पहली बार राजकाजी मैदान में उतरे तो एक नई कठिनाई उनके सामने आई जिसे उन्होंने दक्खिन अफ़रीक़ा में महसूस न किया था.

रौलट ऐक्ट वाले आन्दोलन के शुरू होते ही पंजाब और कई दूसरी जगहों पर बलवे हो गये. लोगों ने सरकार की हिंसा का हिंसा से जवाब दिया. इसी पर बापू ने अपने आन्दोलन को रोक दिया. इस सम्बन्ध में उन्होंने बम्बई में अपने दुख और अपनी कठिनाइयों को इन शब्दों में ज़ाहिर किया—"मुझसे एक हिमालय पहाड़ के बराबर ग़लती हो गई है." बापू ने अपनी ग़लती यह बतलाई कि मैंने एक नैतिक हथियार को बिना उसे काम में लाने की तालीम दिये मुल्क के हाथों में दे दिया.

अगर हम इस बुनियादी बात को ध्यान में रखें, तो हमें सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम में क्या सम्बन्ध है, यह अच्छी तरह समझ

مدد سے پوری ہوسکتی ہیں۔ ہندستان کی ہوا اس پروگرام کے لئے بڑی مددگار ہے۔ اگر ہندستان میں ایک گروہ تیاگی سیوکوں یعنی ستیاگرہیوں کا تیار ہوجاوے تو ان دونوں باتوں میں ایک نہ ایک اچھی طرح پوری ہوسکتی ہے۔

ان بنیادی وچاروں کو باپو دکھن افریقہ سے اپنے ساتھ لائے تھے۔ ستیاگرہی تیار کرنے کی بنیاد دکھن افریقہ میں فینکس آشرم کی شکل میں پڑ چکی تھی۔ ہندستان میں آتے ہی باپو نے ستیاگرہ آشرم کھولا اور بھارت کو ستیاگرہ کی مدد سے آزاد کرنے کے لئے جو دوسری تیاریاں ضروری تھیں، شروع کردیں۔ پر جب باپو رولٹ ایکٹ والے آندولن کے سلسلے میں پہلی بار راج کاجی میدان میں اترے تو ایک نئی کٹھنائی انکے سامنے آئی جسے انھوں نے دکھن افریقہ میں محسوس نہ کیا تھا۔

رولٹ ایکٹ والے آندولن کے شروع ہوتے ہی پنجاب اور کئی دوسری جگہوں پر بلوے ہوگئے۔ لوگوں نے سرکار کی ہنسا کا ہنسا سے جواب دیا۔ اسی پر باپو نے اپنے آندولن کو روک دیا۔ اس سمبندھ میں انھوں نے بمبئی میں اپنے دکھ اور اپنی کٹھنائیوں کو ان شبدوں میں ظاہر کیا "مجھ سے ایک ہمالہ پہاڑ کے برابر غلطی ہوگئی ہے۔" باپو نے اپنی غلطی یہ بتلائی کہ میں نے ایک نیتک ہتھیار کو بنا اسے کام میں لانے کی تعلیم دیئے ملک کے ہاتھوں میں دے دیا۔

اگر ہم اس بنیادی بات کو دھیان میں رکھیں، تو ہمیں ستیاگرہ اور رچناتمک پروگرام میں کیا سمبندھ ہے۔ یہ اچھی طرح سمجھ

में आ सकता है. बापू कहते हैं कि सत्याग्रह नैतिक और रूहानी हथियार है, इसलिये जितना यह हिंसा के मिलाव से पाक और साफ़ रखा जाये, उतनी ही इसकी ताक़त बढ़ती है और उसी पैमाने पर यह भलाई का सोता बन जाता है. हिंसा का मिलाव इसकी एख़लाक़ी और तामीरी ताक़त को नष्ट करके इसमें उलटे नाश और बरबादी के बीज पैदा कर देता है.

ज़ाहिर है कि बापू के तामीरी प्रोग्राम का मतलब यह था कि वह मुल्क को जगाकर उसमें ऐसा सदाचार और ऐसा संगठन पैदा कर दे कि जिससे इसके रहने वालों में सत्याग्रह का हथियार काम में लाने की ताक़त पैदा हो सके. बापू की इस बात को मुल्क और कांग्रेस न समझ सके. बापू को इसी बात पर ख़िलाफ़त और स्वराज के ज़ोरदार आन्दोलनों को सब बड़े बड़े कांग्रेसी लीडरों की इच्छा के ख़िलाफ़ अहमदाबाद में दुबारा रोकना पड़ा. चौरी चौरा की हिन्सा के इलाज की सूरत में बापू ने वह तामीरी प्रोग्राम मुल्क के सामने रखा जो बारदोली प्रोग्राम के नाम से मशहूर हुआ और जिसे मरते दम तक बापू अपना बुनियादी और असली तामीरी प्रोग्राम कहते थे.

उनके इस प्रोग्राम को अगर हम ध्यान से देखें तो हमें उनके इस आख़िरी विधान के समझने में बहुत मदद मिल सकती है. यह प्रोग्राम हमारी सोई हुई सदाचार की ताक़तों को फिर से जगाने के लिये वैसा ही था जैसा लक़वे के मारे हुए हाथ पैरों के लिये दवा की मालिश. यह मुल्क में आत्मबल पैदा करने का एक ज़बरदस्त और सबसे अच्छा तरीक़ा था. बापू ने इसमें वही ढंग बरता

میں آسکتا ہے۔ باپو کہتے ہیں کہ ستیاگرہ نیتک اور روحانی ہتھیار ہے، اس لئے جتنا یہ ہنسا کے لگاؤ سے پاک اور صاف رکھا جاسکے، اتنی ہی اس کی طاقت بڑھتی ہے اور اسی پیمانے پر یہ بھلائی کا سوتا بن جاتا ہے۔ ہنسا کا لگاؤ اس کی اخلاقی اور تعمیری طاقت کو نشٹ کر کے اس میں الٹے ناش اور بربادی کے بیج پیدا کر دیتا ہے۔

ظاہر ہے کہ باپو کے تعمیری پروگرام کا مطلب یہ تھا کہ وہ ملک کو جگا کر اس میں ایسا سداچار اور ایسا سنگٹھن پیدا کر دے کہ جس سے اس کے رہنے والوں میں ستیاگرہ کا ہتھیار کام میں لانے کی طاقت پیدا ہو سکے۔ باپو کی اس بات کو ملک اور کانگریس نہ سمجھ سکے۔ باپو کو اسی بات پر خلافت اور سوراج کے زوردار آندولنوں کو سب بڑے بڑے کانگریسی لیڈروں کی اچھا کے خلاف احمد آباد میں دوبارہ روکنا پڑا۔ چوری چورا کی ہنسا کے علاج کی صورت میں باپو نے وہ تعمیری پروگرام ملک کے سامنے رکھا جو باردولی پروگرام کے نام سے مشہور ہوا اور جسے مرتے دم تک باپو اپنا بنیادی اور اصلی تعمیری پروگرام کہتے تھے۔

ان کے اس پروگرام کو اگر ہم دھیان سے دیکھیں تو ہمیں ان کے اس آخری ودھان کو سمجھنے میں بہت مدد مل سکتی ہے۔ یہ پروگرام ہماری سوئی ہوئی سداچار کی طاقتوں کو پھر سے جگانے کے لئے ویسا ہی تھا جیسا لقوے کے مارے ہوئے ہاتھ پیروں کے لئے دوا کی مالش۔ یہ ملک میں آتم بل پیدا کرنے کا ایک زبردست اور سب سے اچھا طریقہ تھا۔ باپو نے اس میں وہی ڈھنگ برتا

है जो किसी एक आदमी के सदाचार को ठीक और ऊँचा करने के लिये बरता जाता है. यानी अपनी कुछ नैतिक कमजोरियों को जो सबसे ज़्यादा दिखाई देने वाली और बुनियादी हों उन्हें सामने रख कर उनके दूर करने पर अपनी सारी शक्ति लगा देना. अपने बारदोली प्रोग्राम के बनाने में बापू ने देश की ज़िन्दगी के एक एक पहलू से एक एक चीज चुन ली है. आर्थिक से चरखा, मजहबी से हरिजन उद्धार, राष्ट्री से हिन्दू, मुस्लिम एकता, एखलाक़ी से शराबबन्दी और दिमाग़ी सुधार के लिये तालीम. जिस तरह धर्म के चार चरण कहे जाते हैं उसी तरह यह पाँच बातें क़ौमी ज़िन्दगी के पाँच तामीरी पहलू हैं.

बापू का ख़याल था कि अगर मुल्क इनमें से एक पर भी अपनी सारी शक्ति लगा कर उसे पूरा कर लेगा तो इसमें इतनी जागृति, संगठन और आत्मबल पैदा हो जायगा कि फिर इसके सत्याग्रह यानी इच्छा शक्ति का कोई हुकूमत मुक़ाबला नहीं कर सकेगी. पर जैसा हमने कहा कांग्रेस बापू की तहरीकों के इस पहलू को न समझ सकी. न तो उसको बापू के सत्य और अहिंसा में विश्वास था और न वह किसी नैतिक जीवन की ज़रूरत महसूस करती थी. इसलिये उसने बापू के सत्याग्रह के केवल राजकाजी पहलुओं से मदद ली और उसके एख़लाक़ी पहलुओं को बेदर्दी से टालती रही. कांग्रेस की आजकल की गिरी हुई नैतिक हालत इसी ग़लती का नतीजा है जिसे दुनिया देखकर हैरान है. इसी का यह भी नतीजा है कि मुल्क के दो टुकड़े हो गये और हमने बापू को भी हाथ से खो दिया.

ہے جو کسی ایک آدمی کے سداچار کو ٹھیک اور اونچا کرنے کے لئے برتا جاتا ہے۔ یعنی اپنی کچھ نیتک کمزوریوں کو جو سب سے زیادہ دکھائی دینے والی اور بنیادی ہوں انھیں سامنے رکھ کر اُن کو دور کرنے پر اپنی ساری شکتی لگا دینا۔ اپنے باردولی پروگرام کو بنانے میں باپو نے دیش کی زندگی کے ایک ایک پہلو سے ایک ایک چیز چن لی ہے۔ آرتھک سے چرخہ، مذہبی سے ہریجن اُدھار، راشٹری سے ہندو مسلم ایکتا، اخلاقی سے شراب بندی اور دماغی سدھار کے لئے تعلیم۔ جس طرح دھرم کے چار چرن کہے جاتے ہیں اسی طرح یہ پانچ باتیں قومی زندگی کے پانچ تعمیری پہلو ہیں۔

باپو کا خیال تھا کہ اگر ملک ان میں سے ایک پر بھی اپنی ساری شکتی لگا کر اسے پورا کرلے گا تو اس میں اتنی جاگرتی سنگٹھن اور آتم بل پیدا ہوجائے گا کہ پھر اس کے ستیاگرہ یعنی اچھا شکتی کا کوئی حکومت مقابلہ نہیں کرسکے گی۔ پر جیسا ہم نے کہا کانگریس باپو کی تحریکوں کے اس پہلو کو نہ سمجھ سکی۔ نہ تو اس کو باپو کے ستیہ اور اہنسا میں وشواس تھا اور نہ وہ کسی نیتک جیون کی ضرورت محسوس کرتی تھی۔ اس لئے اس نے باپو کے ستیاگرہ کے کیول راج کاجی پہلوؤں سے مدد لی اور اس کے اخلاقی پہلوؤں کو بے دردی سے ٹالتی رہی۔ کانگریس کی آجکل کی گری ہوئی نیتک حالت اسی غلطی کا نتیجہ ہے جسے دنیا دیکھ کر حیران ہے۔ اسی کا یہ بھی نتیجہ ہے کہ ملک کے دو ٹکڑے ہوگئے اور ہم نے باپو کو بھی ہاتھ سے کھو دیا۔

यह खतरे शुरू से ही बापू के सामने थे. कांग्रेस और मुल्क को अपने रचनात्मक प्रोग्रामों की तरफ से बेपरवाह देख कर उनके दिल को दुख होता था. एक बार उन्होंने अपने इस दुख को इन शब्दों में जाहिर किया था.

"मैं हजारवीं बार दोहरा रहा हूँ कि अगर हम रचनात्मक प्रोग्राम को एक अच्छे पैमाने पर पूरा न कर सकेंगे तो हमें स्वराज नहीं मिल सकता. अगर मिल भी जाय तो हम उसे रख नहीं सकेंगे. अगर रख भी सकेंगे तो उसका वह रूप न होगा जिसका हम सपना देख रहे हैं."

बापू की इस तड़प का कोई असर मुल्क पर न पड़ा. मुश्किल यह थी कि सत्य और अहिंसा का जो रूप और उससे जो आशाएँ वह मुल्क के सामने रख रहे थे, उन पर मुल्क को किसी तरह भरोसा न होता था. पच्छिमी सभ्यता देश के सब लोगों पर गहरा असर डाले हुए थी. यह असर लोगों की तबीयतों को एखलाकी और रूहानी बातों की तरफ जाने ही न देता था. इधर बापू के लिये सत्य और अहिंसा की शक्ति ऐसी साफ थी कि जैसी हमारे हाथ पाँव की शक्ति. वह इसके हर पहलू और इसकी पूरी ताक़त को जानते थे. यही कारन था कि वह बेचैन थे कि मानव जाति इससे जल्दी से जल्दी पूरा फायदा उठा सके. इसीलिये बापू सत्याग्रह और तामीरी प्रोग्राम दोनों पर एक सा ध्यान और एक सा जोर देते थे और उन्होंने कांग्रेस या मुल्क की लापरवाही की जरा भी परवाह न की. हम दिखा चुके हैं कि कांग्रेस बापू से कैसे बराबर दूर ही होती गई. इसी के साथ बापू की सारी रचनात्मक कोशिशें कमजोर

یہ خطرے شروع سے ہی باپو کے سامنے تھے۔ کانگریس اور ملک کو اپنے رچناتمک پروگرام کی طرف سے بے پرواہ دیکھ کر اُن کے دل کو دُکھ ہوتا تھا۔ ایک بار اُنھوں نے اپنے اس دُکھ کو ان شبدوں میں ظاہر کیا تھا۔

"میں ہزارویں بار دُہرا رہا ہوں کہ اگر ہم رچناتمک پروگرام کو ایک اچھے پیمانے پر پورا نہ کر سکیں گے تو ہمیں سوراج نہیں مل سکتا۔ اگر مل بھی جائے تو ہم اُسے رکھ نہیں سکیں گے۔ اگر رکھ بھی سکیں گے تو اس کا وہ روپ نہ ہوگا جس کا ہم سپنا دیکھ رہے ہیں۔"

باپو کی اس تڑپ کا کوئی اثر ملک پر نہ پڑا۔ مشکل یہ تھی کہ ستیہ اور اہنسا کا جو روپ اور اس سے جو آشائیں وہ ملک کے سامنے رکھ رہے تھے۔ اُن پر ملک کو کسی طرح بھروسہ نہ ہوتا تھا۔ پچھمی سبھیتا دیش کے سب لوگوں پر گہرا اثر ڈالے ہوئے تھی۔ یہ اثر لوگوں کی طبیعتوں کو اخلاقی اور روحانی باتوں کی طرف جانے ہی نہ دیتا تھا۔ اِدھر باپو کے لئے ستیہ اور اہنسا کی شکتی ایسی صاف تھی کہ جیسی ہمارے ہاتھ پاؤں کی شکتی۔ وہ اس کے ہر پہلو اور اس کی پوری طاقت کو جانتے تھے۔ یہی کارن تھا کہ وہ بےچین تھے کہ مانو جاتی اس سے جلدی سے جلدی پورا فائدہ اٹھا سکے۔ اسی لئے باپو ستیاگرہ اور تعمیری پروگرام دونوں پر ایک سا دھیان اور ایک سا زور دیتے تھے اور اُنھوں نے کانگریس یا ملک کی لاپرواہی کی ذرا بھی پرواہ نہ کی۔ ہم دکھا چکے ہیں کہ کانگریس باپو سے کیسے برابر دور ہی ہوتی گئی۔ اسی کے ساتھ باپو کی ساری رچناتمک کوششیں کمزور

होती गई क्योंकि यह कोशिशें भी अँगरेजी राज से लड़ाई के दिनों में कॉंग्रेस के ही काम पर शुरू की गई थीं. बापू की कठिनाई यह थी कि वह न तो कॉंग्रेस को पूरी पूरी मदद देने से रुक सकते थे क्योंकि इससे कॉंग्रेस अँग्रेजी राज के मुक़ाबले में कमज़ोर पड़ जाती, न उसके सुधार के लिये कोई सख्त क़दम उठा सकते थे क्योंकि इसमें दोरुखी लड़ाई शुरु हो जाती और मुल्क की ताक़त और ध्यान दोनों बँट जाते. रचनात्मक कामों को पूरी ताक़त के साथ चलाने के लिये उनमें सत्याग्रह के पहलू का होना जरूरी था. क्योंकि बापू के यह दोनों प्रोग्राम एक जान और दो क़ालिब और एकही ढाल के दो पहलू थे. नतीजा यह हुआ कि बापू के सारे रचनात्मक प्रोग्राम आहिस्ता आहिस्ता मुरझाने और बेजान होने लगे.

रचनात्मक काम करने वाले भी इस असर से न बच सके. यह लोग बापू की तहरीकों के जानकारों की सूरत में चारों तरफ़ फैले हुए थे. बापू आम तौर से इनको राजकाज की बुराइयों और खेंचा तानी से अलग रखने की कोशिश करते थे. पर समय समय पर इन्हें अपनी रिज़र्व सेना की तरह राजकाजी सत्याग्रहों में ले लिया करते थे. इसलिये एक तो इन्हें सत्याग्रह से कोई सीधा सम्बन्ध न रहता था, दूसरे अगर यह कांग्रेस के साथ सत्याग्रह में हिस्सा लेते थे तो इनके और कांग्रेस वालों के तरीक़ों में बहुत कम फ़र्क़ होता था. तीसरे जो बातें इनका सब से ज़्यादा दिल तोड़ देती थीं वह यह थीं कि बापू कांग्रेस और उसके उन नेताओं का, जो रचनात्मक काम को फ़ज़ूल और बुढ़ियों का काम समझते थे, हमेशा साथ देते रहते थे. उनकी ताक़त को तरह तरह से

ہوتی گئیں کیونکہ یہ کوششیں بھی انگریزی راج سے لڑائی کے دنوں میں کانگریس کے ہی کام پر شروع کی گئی تھیں. باپو کی کٹھنائی یہ تھی کہ وہ نہ تو کانگریس کو پوری پوری مدد دینے سے روک سکتے تھے کیونکہ اس سے کانگریس انگریزی راج کے مقابلے میں کمزور پڑ جاتی، نہ اس کے سدھار کے لئے کوئی سخت قدم اٹھا سکتے تھے کیونکہ اس میں دورُخی لڑائی شروع ہو جاتی اور ملک کی طاقت اور دھیان دونوں بنٹ جاتے. رچناتمک کاموں کو پوری طاقت کے ساتھ چلانے کے لئے ان میں ستیاگرہ کے پہلو کا ہونا ضروری تھا. کیونکہ باپو کے یہ دونوں پروگرام ایک جان اور دو قالب اور ایک ہی ڈھال کے دو پہلو تھے. نتیجہ یہ ہوا کہ باپو کے سارے رچناتمک پروگرام آہستہ آہستہ مرجھانے اور بے جان ہونے لگے.

رچناتمک کام کرنے والے بھی اس اثر سے نہ بچ سکے. یہ لوگ باپو کی تحریکوں کے جانکاروں کی صورت میں چاروں طرف پھیلے ہوئے تھے. باپو عام طور سے ان کو راج کاج کی برائیوں اور کھینچا تانی سے الگ رکھنے کی کوشش کرتے تھے. پر سمے سمے پر انھیں اپنی رزرو سینا کی طرح راج کاجی ستیہ گرہوں میں لے لیا کرتے تھے. اس لئے ایک تو انھیں ستیاگرہ سے کوئی سیدھا سمبندھ نہ رہتا تھا، دوسرے اگر یہ کانگریس کے ساتھ ستیاگرہ میں حصہ لیتے تھے تو ان کے اور کانگریس والوں کے طریقوں میں بہت کم فرق ہوتا تھا. تیسرے جو باتیں ان کا سب سے زیادہ دل توڑ دیتی تھیں وہ یہ تھیں کہ باپو کانگریس اور اس کے ان نیتاؤں کا، جو رچناتمک کام کو فضول اور بڑھیوں کا کام سمجھتے تھے، ہمیشہ ساتھ دیتے رہتے تھے. ان کی طاقت کو طرح طرح سے

बढ़ाते रहते थे और जहाँ कहीं रचनात्मक काम करने वालों और इन कांग्रेसी नेताओं में कोई टक्कर हो जाती थी, बापू बहुत करके कांग्रेसी नेताओं की ही तरफ़दारी करते थे. अँग्रेज़ी सरकार इनके रचनात्मक काम में सीधे बहुत कम दख़ल देती थी, इसलिये रचनात्मक काम के मैदान में वह हालत ही न पैदा होती थी जिसमें सत्याग्रह करने की ज़रूरत हो, और हुकूमत के हमलों के मुक़ाबले में उनमें संगठन और आत्मबल पैदा हो.

बेग़रज़ सेवा से आत्मबल पैदा होता है पर उसी हालत में जब सत्याग्रह और तामीर का प्रोग्राम दोनों हमारे सामने एक साथ हों. एक से हम तामीर यानी रचना करें और दूसरे से इस अपनी तामीर को उन शक्तियों से बचा कर रखें जो उसे बिगाड़ना चाहती हैं और नई ज़मीनें साफ़ करें और रास्तों की रुकावटों को हटाते रहें. यह सब बातें बराबर जारी रहना ज़रूरी हैं. आत्मबल अपने आप पैदा नहीं होता, इसे पैदा करने के लिये दिल की सफ़ाई और अपने ऊपर क़ाबू इन दोनों की ज़रूरत होती है. केवल चरख़ा कातना या कोई बात भी केवल रसम पूरी करने के लिये करना एक बेजान रिवाज या रूढ़ि की सूरत ले लेता है, जब तक इनके पीछे किसी ऊँचे मक़सद को पूरा करने का विचार न हो. अगर हम चरख़े को पच्छिमी सभ्यता पर विजय पाने और अपने मुल्क को ग़ुलामी से आज़ाद कराने के मक़सद को दिल में लेकर कातते हैं और अपने आर्थिक जीवन से हर ऐसी रुकावट को दूर करने की कोशिश करते हैं, और इस कोशिश की कामयाबी के लिये अपना सब कुछ क़ुरबान करने के लिये तैयार

بڑھاتے رہتے تھے اور جہاں کہیں رچناتمک کام کرنے والوں اور ان کانگریسی نیتاؤں میں کوئی ٹکر ہو جاتی تھی، باپو بہت کر کے کانگریسی نیتاؤں کی ہی طرفداری کرتے تھے۔ انگریزی سرکار ان کے رچناتمک کام میں سیدھے بہت کم دخل دیتی تھی، اسلئے رچناتمک کام کے میدان میں وہ حالت ہی نہ پیدا ہوتی تھی جس میں ستیاگرہ کرنے کی ضرورت ہو، اور حکومت کے حملوں کے مقابلے میں اُن میں سنگٹھن اور آتمبل پیدا ہو۔

بے غرض سیوا سے آتمبل پیدا ہوتا ہے پر اُسی حالت میں جب ستیاگرہ اور تعمیر کا پروگرام دونوں ہمارے سامنے ایک ساتھ ہوں۔ ایک سے ہم تعمیر یعنی رچنا کریں اور دوسرے سے اس اپنی تعمیر کو اُن شکتیوں سے بچا کر رکھیں جو اُسے بگاڑنا چاہتی ہیں اور نئی زمینیں صاف کریں اور راستوں کی رُکاوٹوں کو ہٹاتے رہیں۔ یہ سب باتیں برابر جاری رہنا ضروری ہیں۔ آتمبل اپنے آپ پیدا نہیں ہوتا، اسے پیدا کرنے کے لئے دل کی صفائی اور اپنے اوپر قابو دونوں کی ضرورت ہوتی ہے۔ کیول چرخہ کاتنا یا کوئی بات بھی کیول رسم پوری کرنے کے لئے کرنا ایک بےجان رواج یا روڑھی کی صورت لے لیتا ہے، جب تک ان کے پیچھے کسی اونچے مقصد کو پورا کرنے کا وچار نہ ہو۔ اگر ہم چرخے کی پچھمی سبھیتا پر وجے پانے اور اپنے ملک کو غلامی سے آزاد کرانے کے مقصد کو دل میں لے کر کاتتے ہیں اور اپنے آرتھک جیون سے ہر ایسی رُکاوٹ کو دُور کرنے کی کوشش کرتے ہیں، اور اس کوشش کی کامیابی کے لئے اپنا سب کچھ قربان کرنے کے لئے تیار

हैं तब हममें आत्मबल और संगठन शक्ति पैदा होगी. लेकिन अगर हम केवल चरखा संघ के मेम्बर के फ़र्ज की तरह या बापू की ख़ुशी के लिये या लोगों पर साबित करने के लिये कि हम गांधी वादी हैं, कातते हैं. तो इससे आत्म बल पैदा होने की जगह हमारी अख़लाक़ी ताक़त और भी कमजोर और बरबाद हो जाती है. केवल रचनात्मक काम करने से उस काम के अच्छे से अच्छे नतीजों को विरोधियों से बचा कर रखने की ताक़त हममें पैदा नहीं हो सकती. यह ताक़त तब पैदा होती है जब रचनात्मक काम के साथ-साथ हम में यह ख़याल भी बना रहे कि हमें अपनी जान देकर भी उसे बचाकर रखना है यानी रचनात्मक काम के साथ-साथ सत्याग्रह की शक्ति अपने अन्दर पैदा करना भी जरूरी है.

बाहरी विरोधी शक्ति से कामयाबी के साथ टक्कर लेने की ताक़त हममें तभी पैदा हो सकती है जब उसके मिटाने का ख़याल हरसमय हमारे सामने रहता है. और इस ख़याल को हम नेकनीयती के साथ हर वक़्त अपनी ज़िन्दगी में असली रूप देने की कोशिश करते रहते हैं. अगर यह पहलू हमारी रचनात्मक सेवा में नहीं है तो हम अपने आस पास कोई अच्छा इन्क़लाब पैदा नहीं कर सकते. हमारे रचनात्मक आन्दोलन यह सूरत न ले सके. अगर यह सूरत पैदा हो गई होती तो हमारी राष्ट्री ज़िन्दगी के हर पहलू में एक बड़ा इन्क़लाब पैदा हो गया होता.

कुछ समय से और ख़ास कर आख़िरी दिनों में बापू ज़ोरों से महसूस कर रहे थे कि उनके सारे रचनात्मक काम बे जान और फीके हो रहे हैं. उनमें वह नैतिक शक्ति बाक़ी नहीं रही जो उनकी

ہیں تب ہم میں آتم بل اور سنگٹھن شکتی پیدا ہوگی۔ لیکن اگر ہم کیول چرخہ سنگھ کے ممبر کو فرض کی طرح یا باپو کی خوشی کے لئے یا لوگوں پر ثابت کرنے کے لئے کہ ہم گاندھی وادی ہیں، کاتتے ہیں۔ تو اس سے آتم بل پیدا ہونے کی جگہ ہماری اخلاقی طاقت اور بھی کمزور اور برباد ہو جاتی ہے۔ کیول رچناتمک کام کرنے سے اس کام کو اچھے سے اچھے نتیجوں کے ورودھیوں سے بچاکر رکھنے کی طاقت ہم میں پیدا نہیں ہوسکتی۔ یہ طاقت تب پیدا ہوتی ہے جب رچناتمک کام کے ساتھ ساتھ ہم میں یہ خیال بھی بنا رہے کہ ہمیں اپنی جان دے کر بھی اسے بچاکر رکھنا ہے یعنی رچناتمک کام کے ساتھ ساتھ ستیہ گرہ کی شکتی اپنے اندر پیدا کرنا بھی ضروری ہے۔

باہری ورودھی شکتی سے کامیابی کے ساتھ ٹکر لینے کی طاقت ہم میں تبھی پیدا ہوسکتی ہے جب اس کو مٹانے کا خیال ہر سمے ہمارے سامنے رہتا ہے۔ اور اس خیال کو ہم نیک نیتی کے ساتھ ہر وقت اپنی زندگی میں اصلی روپ دینے کی کوشش کرتے رہتے ہیں۔ اگر یہ پہلو ہماری رچناتمک سیوا میں نہیں ہے تو ہم اپنے آس پاس کوئی اچھا انقلاب پیدا نہیں کرسکتے۔ ہمارے رچناتمک آندولن یہ صورت نہ لے سکے۔ اگر یہ صورت پیدا ہو گئی ہوتی تو ہماری راشٹریہ زندگی کے ہر پہلو میں ایک بڑا انقلاب پیدا ہوگیا ہوتا۔

کچھ سمے سے اور خاص کر آخری دنوں میں باپو زوروں سے محسوس کر رہے تھے کہ ان کے سارے رچناتمک کام بےجان اور پھیکے ہو رہے ہیں، ان میں وہ نیتک شکتی باقی نہیں رہی جو ان کی

असली आन और रूह हैं. मिसाल के तौर पर खादी के आन्दोलन ने कोई इन्क़लाबी सूरत लेने के बजाय केवल घटिया दरजे के व्योपार और व्योपारी की शकल लेली थी. लोगों को अपनी तरफ़ खींचने के बजाय खादी से उन्हें और भी नफ़रत होती जाती थी. खादी की बड़ी-बड़ी संस्थाओं को लोग खुले बन्दों ईस्ट इण्डिया कम्पनी कहते थे. हरिजन सेवा की तहरीक हरिजनों को कुछ आसानियाँ और हक़ दिलवाने तक रह गई. उसने हिन्दू समाज और धर्म पर वह असर न डाला जिसकी बापू को उम्मीद थी. बापू कहा करते थे कि अगर हिन्दुओं ने हरिजन आन्दोलन के असली मतलब को समझ लिया और इसे अपनी ज़िन्दगी में सच्चे दिल से जगह दे दी तो हिन्दू समाज एक नया जन्म ले लेगा. वह कहते थे कि जब तक हिन्दू समाज के माथे से यह कलंक का टीका न मिटेगा तब तक हिन्दू समाज नफ़रत व खुद ग़रज़ी का सोता बना रहेगा और सच्चे हिन्दू मुस्लिम इत्तहाद की गहरी बुनियादें किसी सूरत में क़ायम न हो सकेंगी.

हिन्दू मुस्लिम एकता के आन्दोलन में भी बापू अपने दिल का मतलब लोगों को न समझा सके. इसमें उनका इतना क़सूर न था. मुल्क इतना ऊँचा उठ ही नहीं सकता था कि उनकी सलाहों और उनके आन्दोलनों से पूरा फ़ायदा उठा सके. पच्छिम के असर ने इसे निकम्मा और अन्धा कर दिया था.

बापू शान्ति सेना के संगठन को हिन्दू मुस्लिम दंगों के ख़त्म कर देने का असली और आख़िरी इलाज मानते थे. पर इस प्रोग्राम

اصلی جان اور روح ہیں. مثال کے طور پر کھادی کے آندولن نے کوئی انقلابی صورت لینے کے بجائے کیول گھٹیا درجے کے بیوپار اور بیوپاری کی شکل لے لی تھی. لوگوں کو اپنی طرف کھینچنے کے بجائے کھادی سے انھیں اور بھی نفرت ہوتی جاتی تھی. کھادی کی بڑی بڑی سنستھاؤں کو لوگ کھلے بندوں ایسٹ انڈیا کمپنی کہتے تھے. ہریجن سیوا کی تحریک ہریجنوں کو کچھ آسانیاں اور حق دلوانے تک رہ گئی. اس نے ہندو سماج اور دھرم پر وہ اثر نہ ڈالا جس کی باپو کو امید تھی. باپو کہا کرتے تھے کہ اگر ہندوؤں نے ہریجن آندولن کے اصلی مطلب کو سمجھ لیا اور اسے اپنی زندگی میں سچے دل سے جگہ دے دی تو ہندو سماج ایک نیا جنم لے لیگا. وہ کہتے تھے کہ جب تک ہندو سماج کے ماتھے سے یہ کلنک کا ٹیکہ نہ مٹیگا تب تک ہندو سماج نفرت و خود غرضی کا سوتا بنا رہے گا اور سچے ہندو مسلم اتحاد کی گہری بنیادیں کسی صورت میں قائم نہ ہو سکیں گی.

ہندو مسلم ایکتا کے آندولن میں بھی باپو اپنے دل کا مطلب لوگوں کو نہ سمجھا سکے. اس میں ان کا اتنا قصور نہ تھا. ملک اتنا اونچا اٹھ ہی نہیں سکتا تھا کہ ان کی صلاحوں اور ان کے آندولنوں سے پورا فائدہ اٹھا سکے. پچھم کے اثر نے اسے نکما اور اندھا کر دیا تھا.

باپو شانت سینا کے سنگٹھن کو ہندو مسلم دنگوں کے ختم کر دینے کا اصلی اور آخری علاج مانتے تھے. پر اس پروگرام

को अमली रूप देने के लिये वह अपने प्यारे से प्यारे शागिर्दों को भी राज़ी न कर सके. मुद्दतों पहले उन्होंने शान्ति सेना के ख़याल को "गांधी सेवा संघ" के सालाना जलसे (राम गढ़) में रखा था. पर गांधी सेवा संघ के मेम्बरों ने इसे अमली बात न समझ कर उस पर काम करने से इन्कार कर दिया था. हो सकता है कि और बातों के साथ-साथ इस बात ने भी गांधी सेवा संघ के क़रीब-क़रीब तोड़ दिये जाने में बड़ा हिस्सा लिया हो. आख़िरी दिनों में जब हिन्दू मुस्लिम दंगे इतनी बुरी सूरतें ले रहे थे, बापू ने शान्ति सेना का चरचा फिर से शुरू किया था. उस ज़माने में उनके एक चेले ने उन्हें लिखा कि "बापू ! हिन्दू मुस्लिम दंगों में निहत्थे घुस कर जान देने की सलाह आप हमें मुद्दतों से दे रहे हैं. पर आज तक आप ने यह हमें ख़ुद करके नहीं दिखाया. गो कि आप अपनी सलाहों पर सब से पहले ख़ुद अमल करते हैं." बापू ने इसका जवाब दिया था कि "मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि वह मुझे इसका मौक़ा और तौफ़ीक़ (सौभाग्य) दे."

इसी तरह गाँव की दस्तकारियों को फिर से जिलाने के आन्दोलन ने भी कभी कोई अमली सूरत ही न ली क्योंकि रचनात्मक काम करने वालों में से जो जिस काम में लगा हुआ था वह उसी को अपनी हद और इति श्री समझता था. उसकी किसी दूसरी तरफ़ निगाह ही न जाती थी.

खादी के काम में बापू के सबसे ज़्यादा काम करने वाले लगे हुए थे. बापू ने इनको खादी के व्योपारी रूप को तोड़ देने की सलाह दी और यह कहा कि खादी की पैदावार को बढ़ाने की चिन्ता

کو عملی روپ دینے کے لئے وہ اپنے پیارے سے پیارے شاگردوں کو بھی راضی نہ کر سکے۔ مُدتوں پہلے اُنھوں نے شانتی سینا کے خیال کو "گاندھی سیوا سنگھ" کے سالانہ جلسے (رام گڑھ) میں رکھا تھا۔ پر گاندھی سیوا سنگھ کے ممبروں نے اسے عملی بات نہ سمجھ کر اس پر کام کرنے سے انکار کر دیا تھا۔ ہو سکتا ہے کہ اور باتوں کے ساتھ ساتھ اِس بات نے بھی گاندھی سیوا سنگھ کے قریب قریب توڑ دیئے جانے میں بڑا حصّہ لیا ہو۔ آخری دنوں میں جب ہندو مسلم دنگے اتنی بُری صورتیں لے رہے تھے، باپو نے شانتی سینا کا چرچا پھر سے شروع کیا تھا۔ اُس زمانے میں اُن کے ایک چیلے نے اُنھیں لکھا کہ "باپو! ہندو مسلم دنگوں میں نہتّھے گھُس کر جان دینے کی صلاح آپ ہمیں مُدّتوں سے دے رہے ہیں۔ پر آج تک آپ نے یہ ہمیں خود کر کے نہیں دکھایا۔ گو کہ آپ اپنی صلاحوں پر سب سے پہلے خود عمل کرتے ہیں۔" باپو نے اس کا جواب دیا تھا کہ "میں ایشور سے پرارتھنا کرتا ہوں کہ وہ مجھے اس کا موقع اور توفیق (سوبھاگیہ) دے۔"

اسی طرح گاؤں کی دستکاریوں کو پھر سے جلانے کے آندولن نے بھی کبھی کوئی عملی صورت ہی نہ لی کیونکہ رچناتمک کام کرنے والوں میں سے جو جس کام میں لگا ہوا تھا وہ اُسی کو اپنی حد اور اِتی شری سمجھتا تھا۔ اُس کی کسی دوسری طرف نگاہ ہی نہ جاتی تھی۔

کھادی کے کام میں باپو کے سب سے زیادہ کام کرنے والے لگے ہوئے تھے۔ باپو نے اِن کو کھادی کے بیوپاری روپ کو توڑ دینے کی صلاح دی اور یہ کہا کہ کھادی کی پیداوار کو بڑھانے کی چنتا

न कर के इसे सिर्फ़ स्वावलम्बन तक महदूद कर दें, यानी हर गाँव अपनी ज़रूरत का कपड़ा खुद बना ले. इन काम करने वालों ने बापू की इस सलाह को अमली नहीं समझा और अपने-अपने कामों से इस्तीफ़ा देने के लिये तैयार हो गये. बापू ने उनसे कहा कि तुम अपना काम करो मैं अपने लिये दूसरे काम करने वाले ढूँढ लूँगा.

यह सारे पहलू बापू के सामने थे. जहाँ मुल्क की मिटाने वाली ताक़तें दिन दिन ज़ोर पकड़ती जाती थीं वहाँ तामीरी प्रोग्रामों की यह कमज़ोरियाँ बापू की सबसे बड़ी परेशानी थी. बापू बराबर अपनी कठिनाइयों पर क़ाबू पाने के ख़याल में डूबे रहते थे. अपने पुराने नक़्शों में अदल बदल करते थे और फिर उन्हें तजरबे की कसौटी पर कसते रहते थे. हर तरह कोशिश करके वह किसी आख़िरी नतीजे पर पहुँचना चाहते थे. काँग्रेस बिलकुल उनके असर से बाहर हो गई थी. इससे उनके सारे पुराने सम्बन्ध टूटते जा रहे थे और बापू के सामने यह सवाल था कि काँग्रेस के साथ नये सम्बन्ध किन बुनियादों पर क़ायम करें. मुद्दतों से उनका दिमाग़ और ध्यान किसी ऐसे प्रोग्राम की खोज में था जिसमें उनकी इन सारी कठिनाइयों का कोई हल निकले और वह अपनी सारी शक्तियों को एक जगह करके और अपने सम्बन्ध को उनमें से हर गिरोह के साथ और साफ़ करके अपने मक़सद को पूरा करने की एक ज़बरदस्त और आख़िरी कोशिश करें.

अन्त को बापू की इन सब कोशिशों का नतीजा दिखाई दिया. बापू के सामने एक नये मिले जुले आन्दोलन का ढाँचा आ गया. जिसका बुनियादी असूल यह था कि देश के सारे रचनात्मक

ن کر کے اسے صرف سوا ولمبن تک محدود کر دیں، یعنی ہر گاؤں اپنی ضرورت کا کپڑا خود بنا لے۔ ان کام کرنے والوں نے باپو کی اس صلاح کو عملی نہیں سمجھا اور اپنے اپنے کاموں سے استعفا دینے کے لئے تیار ہو گئے۔ باپو نے اُن سے کہا کہ تم اپنا کام کرو میں اپنے لئے دوسرے کام کرنے والے ڈھونڈھ لوں گا۔

یہ سارے پہلو باپو کے سامنے تھے۔ جہاں ملک کی مٹانے والی طاقتیں دن دن زور پکڑتی جاتی تھیں وہاں تعمیری پروگراموں کی یہ کمزوریاں باپو کی سب میں بڑی پریشانی تھی۔ باپو برابر اپنی کٹھنائیوں پر قابو پانے کے خیال میں ڈوبے رہتے تھے۔ اپنے پرانے نقشوں میں اَدل بَدل کرتے تھے اور پھر انھیں تجربے کی کسوٹی پر کستے رہتے تھے۔ ہر طرح کوشش کر کے وہ کسی آخری نتیجے پر پہنچنا چاہتے تھے۔ کانگریس بالکل اُن کے اثر سے باہر ہو گئی تھی۔ اِس سے اُن کے سارے پرانے سمبندھ ٹوٹتے جا رہے تھے اور باپو کے سامنے یہ سوال تھا کہ کانگریس کے ساتھ نئے سمبندھ کن بنیادوں پر قائم کریں۔ مدتوں سے اُن کا دماغ اور دھیان کسی ایسے پروگرام کی کھوج میں تھا جس میں اُن کی ان ساری کٹھنائیوں کا کوئی حل نکلے اور وہ اپنی ساری شکتیوں کو ایک جگہ کر کے اور اپنے سمبندھ کو اُن میں سے ہر گروہ کے ساتھ اور صاف کر کے اپنے مقصد کو پورا کرنے کی ایک زبردست اور آخری کوشش کریں۔

انت کو باپو کی اِن سب کوششوں کا نتیجہ دکھائی دیا۔ باپو کے سامنے ایک نئے ملے جلے آندولن کا ڈھانچہ آ گیا۔ جس کا بنیادی اصول یہ تھا کہ دیش کے سارے رچناتمک

संगठनों और आन्दोलनों को तोड़ कर एक अकेला संगठन क़ायम हो, गाँव की ज़िन्दगी के हर पहलू को अलग अलग न लेकर गाँव की पूरी ज़िन्दगी में एक सदाचारी, माली और समाजी इन्क़लाब पैदा करने की कोशिश की जाय.

इस नई तहरीक का ढाँचा मुद्दतों से बापू के सामने बन चुका था और इस ढाँचे की चरचा वह अक्सर समग्र ग्राम सेवा के रूप में किया करते थे. इसके बाद उनके सामने केवल यह सवाल बाक़ी रह गया था कि वह इस नये आन्दोलन को देश के सामने किस रूप में रखें. पर मुल्क की हालत उन्हें दम भर भी मुहलत नहीं लेने देती थी. फिर भी बापू ने यह विधान तैयार कर ही लिया, इसका मसविदा बनाने और आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी के सिक्रेटरी को देने के कुछ दिन पहले उन्होंने वर्धा में एक रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं की कान्फ्रेंस बुलाने का इन्तज़ाम किया था. इस विधान से साफ़ ज़ाहिर है कि काँग्रेस इसे मन्ज़ूर करती या न करती, इसके चलाने और कामयाब बनाने की ज़िम्मेदारी इसी कान्फ्रेन्स के कार्यकर्त्ताओं को उठानी पड़ती. क्योंकि मामूली राज काज में डूबे हुए काँग्रेस वालों के लिये कोई जगह इसकी कमेटियों में नहीं रखी गई थी. पर बापू के मर जाने ने यह सारा क़िस्सा ही ख़त्म कर दिया. उनके मरने के बाद काँग्रेस के लिये इस विधान की तरफ़ कोई ध्यान देना बिलकुल नामुमकिन था. रचनात्मक काम करने वालों के लिये अपनी मौजूदा शक्ल में यह विधान केवल आल इण्डिया काँग्रेस कमेटी के लिये एक सुझाव था जिससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं था. बापू के मरने के

سنگٹھنوں اور آندولنوں کو توڑکر ایک اکیلا سنگٹھن قائم ہو۔ گاؤں کی زندگی کے ہر پہلو کو الگ الگ نہ لے کر گاؤں کی پوری زندگی میں ایک سدا چاری، مالی اور سماجی انقلاب پیدا کرنے کی کوشش کی جائے۔

اس نئی تحریک کا ڈھانچہ مدتوں سے باپو کے سامنے بن چکا تھا اور اِس ڈھانچے کی چرچا وہ اکثر سمگر گرام سیوا کے روپ میں کیا کرتے تھے۔ اس کے بعد اُن کے سامنے کیول یہ سوال باقی رہ گیا تھا کہ وہ اِس نئے آندولن کو دیش کے سامنے کس روپ میں رکھیں۔ پر ملک کی حالت انھیں دم بھر بھی مُہلت نہیں لینے دیتی تھی۔ پھر بھی باپو نے یہ وِدھان تیار کر ہی لیا، اِس کا مسودہ بنانے اور آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سکریٹری کو دینے کے کچھ دن پہلے اُنھوں نے وَردھا میں ایک رچناتمک کاریہ کرتاؤں کی کانفرنس بُلانے کا انتظام کیا تھا۔ اس ودھان سے صاف ظاہر ہے کہ کانگریس اِسے منظور کرتی یا نہ کرتی، اس کے چلانے اور کامیاب بنانے کی ذمہ داری اسی کانفرنس کے کاریہ کرتاؤں کو اُٹھانی پڑتی۔ کیونکہ معمولی راج کاج میں ڈوبے ہوئے کانگریس والوں کے لئے کوئی جگہ اس کی کمیٹیوں میں نہیں رکھی گئی تھی۔ پر باپو کے مرجانے نے یہ سارا قصہ ہی ختم کردیا۔ اُن کے مرنے کے بعد کانگریس کے لئے اس وِدھان کی طرف کوئی دھیان دینا بالکل ناممکن تھا۔ رچناتمک کام کرنے والوں کے لئے اپنی موجودہ شکل میں یہ وِدھان کیول آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے لئے ایک سجھاؤ تھا جس سے اُن کا کوئی سمبندھ نہیں تھا۔ باپو کے مرنے کے

बाद वर्धा में रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं की कानफ्रेन्स हुई. हो सकता था कि उसके सामने यह सवाल आता. पर उस कान्फ्रेन्स की बागडोर कॉंग्रेस और हुकूमत के बड़े बड़े लोगों के हाथों में रही. इसलिये उस कान्फ्रेन्स का इधर ध्यान जाने की कोई सूरत ही नहीं रही.

समग्र ग्राम सेवा और स्वावलम्बन

हमने ऊपर यह दिखाने की कोशिश की है कि बापू के सत्याग्रह और रचनात्मक प्रोग्राम का असली रूप क्या है और इनमें क्या सम्बन्ध है और बापू ने अपना यह आखिरी विधान क्यों बनाया. इस विधान में इन दोनों का विचार क्यों और किस तरह रखा गया है. हमारी सुधार की कोशिशें अगर सत्य और अहिंसा पर क़ायम हैं तो उसमें यह दोनों पहलू यानी रचनात्मक काम और सत्याग्रह अलग-अलग किये ही नहीं जा सकते. हमने यह भी कहा है कि बापू ने बहुत दिन सोचने के बाद अपने नये आन्दोलन को समग्र सेवा का रूप दिया था. अपने और आन्दोलनों की तरह इस आन्दोलन को चलाने के लिये भी बापू ने गाँव ही को केन्द्र या मरकज़ बनाया.

यहाँ आगे बढ़ने से पहले हम दो शब्दों को साफ़ करदेना चाहते हैं जो आज कल के राज-काज और विधानों में बहुत बरते जा रहे हैं एक सेन्टरेलाइज़ेशन जिसे केन्द्रीयकरण या मरकज़ीयत कहते हैं. दूसरा डीसेन्टरेलाइज़ेशन जिसे विकेन्द्रीकरण या ग़ैर मरकज़ीयत कहते हैं. पहले का मतलब यह है कि किसी देश या राज में राज

بعد وردھا میں رچناتمک کاریہ کرتاؤں کی کانفرنس ہوئی. ہو سکتا تھا کہ اس کے سامنے یہ سوال آتا. پر اس کانفرنس کی باگ ڈور کانگریس اور حکومت کے بڑے بڑے لوگوں کے ہاتھوں میں رہی. اس لئے اس کانفرنس کا ادھر دھیان جانے کی کوئی صورت ہی نہیں رہی.

سمگر گرام سیوا اور سوا ولمبن

ہم نے اوپر یہ دکھانے کی کوشش کی ہے کہ باپو کے ستیاگرہ اور رچناتمک پروگرام کا اصلی روپ کیا ہے اور اُن میں کیا سمبندھ ہے اور باپو نے اپنا یہ آخری ودھان کیوں بنایا. اس ودھان میں ان دونوں کا وچار کیوں اور کس طرح رکھا گیا ہے. ہماری سُدھار کی کوششیں اگر ستیہ اور اہنسا پر قائم ہیں تو اُن میں یہ دونوں پہلو یعنی رچناتمک کام اور ستیاگرہ الگ الگ کئے ہی نہیں جا سکتے. ہم نے یہ بھی کہا ہے کہ باپو نے بہت دن سوچنے کے بعد اپنے نئے آندولن کو سمگر سیوا کا روپ دیا تھا. اپنے اور آندولنوں کی طرح اس آندولن کو چلانے کے لئے بھی باپو نے گاؤں ہی کو کیندر یا مرکز بنایا.

یہاں آگے بڑھنے سے پہلے ہم دو شبدوں کو صاف کر دینا چاہتے ہیں. جو آج کل کے راج کاج اور ودھانوں میں بہت برتے جا رہے ہیں. ایک سنٹرلائزیشن جسے کیندری کرن یا مرکزیت کہتے ہیں. دوسرا ڈی سنٹرلائزیشن جسے وکیندری کرن، یا غیر مرکزیت کہتے ہیں. پہلے کا مطلب یہ ہے کہ کسی دیش یا راج میں راج

की सारी शक्तियों और अधिकारों को जहाँ तक हो सके एक सेन्टर, केन्द्र या मरकज़ में जमा कर दिया जावे जिसमें देश की मरकज़ी सरकार खूब बलवान हो. दूसरे का मतलब यह है कि राज की ताक़त और अधिकारों को दूर दूर तक अलग अलग इलाक़ों में बाँट दिया जावे, जिसमें हर इलाक़े वालों को अपने यहाँ के सब कामों में ज़्यादा से ज़्यादा आज़ादी हो.

बापू का यह अटल विश्वास था कि जमहूरियत यानी लोकराज में मरकज़ीयत की कोई जगह नहीं हो सकती. मरकज़ीयत देश की दौलत, ताक़त और वसीलों को थोड़े से आदमियों के हाथों में जमा कर देती है. लोकराज का मतलब यह है कि यह सब चीज़ें अधिक से अधिक के ही नहीं बल्कि जहाँ तक हो सके सब आदमियों के हाथों में बराबर-बराबर पहुँच सकें. इतिहास के शुरू से आज तक आदमी की सारी समाजी और राजकाजी ज़िन्दगी का झुकाव मरकज़ीयत से जमहूरियत यानी ग़ैरमरकज़ीयत की तरफ़ रहा है. तानाशाही (आटोक्रेसी), मुल्लाशाही (थीओक्रेसी), रईसशाही (ऐरिसटोक्रेसी), धनवानशाही (प्लूटोक्रेसी), नौकरशाही (बूरोक्रेसी), समाजवाद (सोशलिज़्म) और साम्यवाद (कम्यूनिज़्म) रहते हुए दौलत और ताक़त के हिस्सेदारों की गिनती बराबर बढ़ती रहती है.

सच यह है कि यह सारा झुकाव इन्सानी बराबरी यानी सच्चे भाई चारे की तरफ़ तेज़ी के साथ जा रहा है. लोकराज और इन्सानी भाईचारा दोनों एक ही सचाई के दो नाम हैं. लोकराज का मक़सद दुनिया की दौलत, ताक़त और वसीलों को सब

کی ساری شکتیاں اور ادھیکاروں کو جہاں تک ہو سکے ایک سنٹر، کیندر یا مرکز میں جمع کر دیا جاوے جس میں دیش کی مرکزی سرکار خوب بلوان ہو۔ دوسرے کا مطلب یہ ہے کہ راج کی طاقت اور ادھیکاروں کو دُور دور تک الگ الگ علاقوں میں بانٹ دیا جاوے، جس میں ہر علاقے والوں کو اپنے یہاں کے سب کاموں میں زیادہ سے زیادہ آزادی ہو۔

باپو کا یہ اٹل وشواس تھا کہ جمہوریت یعنی لوک راج میں مرکزیت کی کوئی جگہ نہیں ہو سکتی۔ مرکزیت دیش کی دولت، طاقت اور وسیلوں کو تھوڑے سے آدمیوں کے ہاتھوں میں جمع کر دیتی ہے۔ لوک راج کا مطلب یہ ہے کہ یہ سب چیزیں ادھک سے ادھک کو ہی نہیں بلکہ جہاں تک ہو سکے سب آدمیوں کے ہاتھوں میں برابر پہنچ سکیں۔ اتہاس کے شروع سے آج تک آدمی کی ساری سماجی اور راج کاجی زندگی کا جھکاؤ مرکزیت سے جمہوریت یعنی غیر مرکزیت کی طرف رہا ہے۔ تاناشاہی (آٹوکریسی)، ملا شاہی (تھیوکریسی)، رئیس شاہی (ارسٹوکریسی)، دھنوان شاہی (پلوٹوکریسی)، نوکر شاہی (بیوروکریسی) سماج واد (سوشلزم) اور سامیہ واد (کمیونزم) رہتے ہوئے دولت اور طاقت کے حصے داروں کی گنتی برابر بڑھتی رہتی ہے۔

سچ یہ ہے کہ یہ سارا جھکاؤ انسانی برابری یعنی سچے بھائی چارے کی طرف تیزی کے ساتھ جا رہا ہے۔ لوک راج اور انسانی بھائی چارا دونوں ایک ہی سچائی کے دو نام ہیں۔ لوک راج کا مقصد دنیا کی دولت، طاقت اور وسیلوں کو سب

इन्सानों में बराबर-बराबर बाँट देना है. हजारों साल का तजरबा हमें यह बताता है कि अगर दौलत, ताक़त और वसीले किसी ख़ास गिरोह के हाथ में जमा हो जाते हैं तो वह गिरोह उन्हें इन्साफ़ के साथ और निस्वार्थ होकर सब हक़दारों तक कभी नहीं पहुँचा सकता. फिर यह हक़दार अपना; संगठन करके अपना हक़ उस मरकज़ी ताक़त से छीन लेने के लिये हद दरजे की कोशिश करते हैं. यही उन सब खूँख़ार राजकाजी इन्क़लाबों और तूफ़ानों का कारन है जिनसे इन्सानी दुनिया कपकपा रही है और यह तूफ़ान किसी तरह ख़त्म नहीं हो सकते जब तक यह बँटवारा इन्साफ़ और इन्सानियत की बुनियादों पर पूरा नहीं हो जाता.

इसे पूरा करने की दो ही सूरतें हैं. एक तो यह है कि वह गिरोह जो दौलत, ताक़त और वसीले अपने हाथ में लिये है अपने अन्दर इतना ऊँचा सदाचार पैदा करले कि वह जनता का निस्वार्थ और विनीत सेवक बन जावे और अपने लिये किसी तरह का कोई निजी फ़ायदा न रखकर, और न अपने ज़रिये किसी दूसरे को नाजायज़ फ़ायदा पहुँचा कर सारी ताक़त और वसीलों को हक़दार जनता में बराबर-बराबर इन्साफ़ के साथ बांट दे. पर हमने देख लिया कि कांग्रेस जैसी त्यागी जमात भी जिसने ३० साल तक ऊँचे से ऊँचे सदाचार की तालीम पाई थी, हुकूमत और ताक़त मिलने के बाद इस ऊँचे आदर्श को न निभा सकी. इससे हमें यह आख़िरी सबक़ मिलता है कि यह रास्ता कठिन और लगभग नामुमकिन है और दुनिया की यह मुसीबत मरकज़ीयत के रहते हुए किसी तरह दूर नहीं हो सकती.

...

انسانوں میں برابر برابر بانٹ دینا ہے۔ ہزاروں سال کا تجربہ ہمیں یہ بتاتا ہے کہ اگر دولت، طاقت اور وسیلے کسی خاص گروہ کے ہاتھ میں جمع ہو جاتے ہیں تو وہ گروہ انہیں انصاف کے ساتھ اور نسوارتھ ہو کر سب حقداروں تک کبھی نہیں پہنچا سکتا۔ پھر یہ حقدار اپنا سنگٹھن کرکے اپنا حق اس مرکزی طاقت سے چھین لینے کے لئے حد درجے کی کوشش کرتے ہیں۔ یہی اُن سب خونخوار راج کاجی انقلابوں اور طوفانوں کا کارن ہے جن سے انسانی دُنیا کپکپا رہی ہے اور یہ طوفان کسی طرح ختم نہیں ہو سکتے جب تک یہ بٹوارہ انصاف اور انسانیت کی بنیادوں پر پورا نہیں ہو جاتا۔

اسے پورا کرنے کی دو ہی صورتیں ہیں۔ ایک تو یہ ہے کہ وہ گروہ جو دولت، طاقت اور وسیلے اپنے ہاتھ میں لئے ہے اپنے اندر اتنا اونچا سداچار پیدا کرلے کہ وہ جنتا کا نسوارتھ اور ونیت سیوک بن جاوے اور اپنے لئے کسی طرح کا کوئی نجی فائدہ نہ رکھ کر، اور نہ اپنے ذریعے کسی دوسرے کو ناجائز فائدہ پہنچا کر ساری طاقت اور وسیلوں کو حقدار جنتا میں برابر برابر انصاف کے ساتھ بانٹ دے۔ پر ہم نے دیکھ لیا کہ کانگریس جیسی تیاگی جماعت بھی جس نے ۳۰ سال تک اونچے سے اونچے سداچار کی تعلیم پائی تھی، حکومت اور طاقت ملنے کے بعد اس اونچے آدرش کو نہ نبھا سکی۔ اس سے ہمیں یہ آخری سبق ملتا ہے کہ یہ راستہ کٹھن اور لگ بھگ ناممکن ہے اور دُنیا کی یہ مصیبت مرکزیت کے رہتے ہوئے کسی طرح دور نہیں ہو سکتی۔

दूसरा रास्ता यह है कि विकेन्द्रीकरण यानी ग़ैरमरकज़ीयत इस तरह आख़िरी दरजे तक पहुँचा दी जाय कि मरकज़ी हुकूमत के हाथों में कम से कम ताक़त, कम से कम दौलत और कम से कम वसीले रह जावें. इसके साथ-साथ जनता में इतनी जागृति, इतना संगठन, इतना सदाचार और इतना आत्म-बल पैदा हो जावे कि वह हुकूमत को पूरी तरह सदाचार के असूलों पर चलने के लिये मजबूर कर सके. इसके लिये जनता का अहिंसा और सत्य के रास्ते पर चलना ज़रूरी है क्योंकि हिंसा का रास्ता न्याय और इन्सानियत की हदों के अन्दर नहीं रह सकता.

जनता के अन्दर यह ऊँचा सदाचार एक ही हालत में पैदा हो सकता है. वह यह है कि हम जनता के दिलों में लोकराज का सच्चा मतलब जमा दें. हम जनता में यह पक्का विश्वास और भाव पैदा कर दें कि दुनिया की दौलत, ताक़त और वसीलों में सब आदमियों का बराबर का हिस्सा हो, और इन चीज़ों का इन्साफ़ के साथ बँटवारा किसी सूरत में भी अपनी ज़रूरतों को बढ़ाने और अपने पड़ोसियों से बढ़कर आरामतलबी की तरफ़ जाने से पूरा नहीं हो सकता. यह बँटवारा हमारा सब का धरम है. यह हमारे दीन का एक हिस्सा है. इस धर्म को पूरा करने में हमें हर इन्सान को अपना सगा भाई केवल शब्दों में नहीं बल्कि अमल में भी मानना पड़ेगा. दूसरा ख़ास पहलू यह है कि इस समय दुनिया में दौलत और वसीले यानी धनधान्य कम हैं और ज़रूरतमन्दों की गिनती हज़ारों गुना ज़्यादा है. इसलिये हमें केवल न्याय का ही नहीं बल्कि न्याय से बढ़कर त्याग का भी रास्ता पकड़ना

دوسرا راستہ یہ ہے کہ وکیندری کرن یعنی غیر مرکزیت اس طرح آخری درجے تک پہنچا دی جائے کہ مرکزی حکومت کے ہاتھوں میں کم سے کم طاقت، کم سے کم دولت اور کم سے کم وسیلے رہ جاویں۔ اس کے ساتھ ساتھ جنتا میں اتنی جاگرتی، اتنا سنگٹھن، اتنا سداچار اور اتنا آتم بل پیدا ہو جاوے کہ وہ حکومت کو پوری طرح سداچار کے اصولوں پر چلنے کے لئے مجبور کر سکے۔ اس کے لئے جنتا کا اہنسا اور ستیہ کے راستے پر چلنا ضروری ہے کیونکہ ہنسا کا راستہ نیائے اور انسانیت کی حدوں کے اندر نہیں رہ سکتا۔

جنتا کے اندر یہ اونچا سداچار ایک ہی حالت میں پیدا ہو سکتا ہے۔ وہ یہ ہے کہ ہم جنتا کے دلوں میں لوک راج کا سچا مطلب جما دیں۔ ہم جنتا میں یہ پکا وشواس اور بھاؤ پیدا کر دیں کہ دنیا کی دولت، طاقت اور وسیلوں میں سب آدمیوں کا برابر کا حصہ ہے، اور ان چیزوں کا انصاف کے ساتھ بٹوارہ کسی صورت میں بھی اپنی ضرورتوں کو بڑھانے اور اپنے پڑوسیوں سے بڑھ کر آرام طلبی کی طرف جانے سے پورا نہیں ہو سکتا۔ یہ بٹوارہ ہمارا سب کا دھرم ہے۔ یہ ہمارے دین کا ایک حصہ ہے۔ اس دھرم کو پورا کرنے میں ہمیں ہر انسان کو اپنا سگا بھائی کیول شبدوں میں نہیں بلکہ عمل میں بھی ماننا پڑے گا۔ دوسرا خاص پہلو یہ ہے کہ اس سمے دنیا میں دولت اور وسیلے یعنی دھن دھانیہ کم ہیں اور ضرورت مندوں کی گنتی ہزاروں گنا زیادہ ہے۔ اس لئے ہمیں کیول نیائے کا ہی نہیں بلکہ نیائے سے بڑھ کر تیاگ کا بھی راستہ پکڑنا

चाहिये. अपने सगे भाई के भूका या नंगा रहते हुए अगर हम कोई ऐसी चीज़ अपने क़ब्ज़े में रखते हैं जो हमारी जिन्दगी के लिये उतनी ज़रूरी नहीं है तो यह न इन्सानियत है और न इन्साफ़ और न न्याय. यह अन्याय है और जुल्म. इसलिये हमें अपनी ज़रूरतों को कम से कम कर लेना चाहिये. अगर हम ऐसा नहीं करते और अपने पास दूसरों से ज़्यादा सामान रखेंगे तो हमारे उस सामान को देख-देख कर दूसरों के दिल में धीरे-धीरे हमसे गुस्सा और नफ़रत पैदा होना क़ुदरती है. फिर यह डर है कि वह हमें नुक़्सान पहुँचाने और मिटाने के जायज़ और नाजायज़ तरीक़े ढूँढ निकालें और उन्हें काम में लावें. उनकी गिनती बहुत अधिक और हमारी बहुत कम है इसलिये अन्त में हमें भी घाटे में रहना पड़ेगा. पुरानी दुनिया में यह बातें इस वास्ते चल सकीं कि उस ज़माने में इन्सानी भाईचारे और लोकराज का इतना ज़ोर शोर न था. इन आदर्शों का जो कुछ असर था वह सदाचारी और ख़याली दुनिया तक ही था, राजकाजी और आर्थिक या माली जीवन में इन आदर्शों पर अमल करने कराने का ख़याल नहीं के बराबर था. अब दुनिया बदल गई है. अब लोग इन आदर्शों पर दूसरों से ज़बरदस्ती अमल कराना अपना हक़ समझने लगे हैं. इसलिये ज़माने की हवा को देख कर हमें भी बदलना चाहिये. जो देश, राष्ट्र या गिरोह अपने आस-पास के हालत के बदलने के साथ-साथ अपने को बदलने की योग्यता अपने में से खो बैठते हैं वह दुनिया की गहरी से गहरी मुसीबतों में पड़कर आख़िर मटियामेट हो जाते हैं.

इस लोकराज के दौर में, जो हम सबको सगे भाइयों के नाते

چاہئیے۔ سگے بھائی کے بھوکا یا ننگا رہتے ہوئے اگر ہم کوئی ایسی چیز اپنے قبضے میں رکھتے ہیں جو ہماری زندگی کے لئے اتنی ضروری نہیں ہے تو یہ نہ انسانیت ہے اور نہ انصاف اور نہ نیائے۔ یہ انیائے ہے اور ظلم۔ اس لئے ہمیں اپنی ضرورتوں کو کم سے کم کر لینا چاہئیے۔ اگر ہم ایسا نہیں کرتے اور اپنے پاس دوسروں سے زیادہ سامان رکھیں گے تو ہمارے اس سامان کو دیکھ دیکھ کر دوسروں کے دل میں دھیرے دھیرے ہم سے غصہ اور نفرت پیدا ہونا قدرتی ہے۔ پھر یہ ڈر ہے کہ وہ ہمیں نقصان پہنچانے اور مٹانے کے جائز اور ناجائز طریقے ڈھونڈھ نکالیں اور انہیں کام میں لاویں۔ ان کی گنتی بہت اونچی اور ہماری بہت کم ہے اس لئے انت میں ہمیں بھی گھاٹے میں رہنا پڑے گا۔ پرانی دنیا میں یہ باتیں اس واسطے چل سکیں کہ اس زمانے میں انسانی بھائی چارے اور لوک راج کا اتنا زور شور نہ تھا۔ ان آدرشوں کا جو کچھ اثر تھا وہ سداچاری اور خیالی دنیا تک ہی تھا، راج کاجی اور آرتھک یا مالی جیون میں ان آدرشوں پر عمل کرنے کرانے کا خیال نہیں کے برابر تھا۔ اب دنیا بدل گئی ہے۔ اب لوگ ان آدرشوں پر دوسروں سے زبردستی عمل کرانا اپنا حق سمجھنے لگے ہیں۔ اس لئے زمانے کی ہوا کو دیکھ کر ہمیں بھی بدلنا چاہئیے۔ جو دیش، راشٹر یا گروہ اپنے آس پاس کی حالت کے بدلنے کے ساتھ ساتھ اپنے کو بدلنے کی یوگیتا اپنے میں سے کھو بیٹھتے ہیں وہ دنیا کی گہری سے گہری مصیبتوں میں پڑ کر آخر ملیامیٹ ہو جاتے ہیں۔ اس لوک راج کے دور میں، جو ہم سب کو سگے بھائیوں کے ناتے

में बाँधना चाहता है, शासक और शासित, हाकिम और महकूम, मालिक और नौकर, ब्राह्मन और शूद्र, ऊँच और नीच, अमीर और ग़रीब, ज़मींदार और रियाया, मिल मालिक और मजदूर, इस तरह के कोई भेद भाव क़ायम नहीं रह सकते. यह सब भेदभाव हमारे समाजी जीवन में ताक़त और दौलत की मरकज़ी सूरतें हैं. इनका मिटा देना दूसरों के भले के लिये ही नहीं दुनिया की शान्ति के लिये और हमारी अपनी सलामती के लिये भी जरूरी है. इसलिये ऊँचा सदाचार ही वह रास्ता है जिससे हर एक को दुनिया को अच्छी चीज़ों में बराबर का हिस्सा पहुँच सकता है. हम जरा गहरी निगाह से देखें तो हमें अच्छी तरह दिखाई दे जायगा कि इस मामले में परोपकार और स्वार्थ दोनों एक ही सिक्के के दो रुख हैं. हमें इस सिद्धान्त को कि हर आदमी से उसकी शक्ति के अनुसार काम लेना चाहिये और उसे उसकी जरूरतों के अनुसार दुनिया की चीज़ें देनी चाहियें, इन्सानी जिन्दगी का सुनहरा असूल और सब से बड़ा धर्म समझना चाहिये. और इसे अमली रूप देने के लिये मरकज़ीयत के रास्ते को छोड़ कर ज्यादा से ज्यादा ग़ैर मरकज़ीयत का रास्ता पकड़ना चाहिये और दुनिया की नई रचना और नई तामीर की बुनियादें ऊपर से नहीं बल्कि नीची से नीची सतहों से उठानी चाहिये.

बापू की हर सुधार योजना को समझाने के लिये हमें ऊपर के बुनियादी असूलों को सामने रखना चाहिये. अगर बापू कभी नेशनेलाइज़ेशन की तरफ़दारी करते थे या वह सलाह देते थे

میں باندھنا چاہتا ہے، شاسک اور شاسیت، حاکم اور محکوم، مالک اور نوکر، برہمن اور شودر، اونچ اور نیچ، امیر اور غریب، زمیندار اور رعایا، مل مالک اور مزدور، اس طرح کے کوئی بھید بھاؤ قائم نہیں رہ سکتے۔ یہ سب بھید بھاؤ ہمارے سماجی جیون میں طاقت اور دولت کی مرکزی صورتیں ہیں۔ ان کا مٹا دینا دوسروں کے بھلے کے لئے ہی نہیں دنیا کی شانتی کے لئے اور ہماری اپنی سلامتی کے لئے بھی ضروری ہے۔ اس لئے اونچا سداچاری وہ راستہ ہے جس سے ہر ایک کو دنیا کی اچھی چیزوں میں برابر کا حصہ پہنچ سکتا ہے۔ ہم ذرا گہری نگاہ سے دیکھیں تو ہمیں اچھی طرح دکھائی دے جائے گا کہ اس معاملے میں پروپکار اور سوارتھ دونوں ایک ہی سکے کے دو رخ ہیں۔ ہمیں اس سدھانت کو کہ ہر آدمی سے اس کی شکتی کے انوسار کام لینا چاہیے اور اسے اس کی ضرورتوں کے انوسار دنیا کی چیزیں دینی چاہییں، انسانی زندگی کا سنہرا اصول اور سب سے بڑا دھرم سمجھنا چاہیے۔ اور اسے عملی روپ دینے کے لئے مرکزیت کے راستے کو چھوڑ کر زیادہ سے زیادہ غیر مرکزیت کا راستہ پکڑنا چاہیے اور دنیا کی نئی رچنا اور نئی تعمیر کی بنیادیں اوپر سے نہیں بلکہ نیچی سے نیچی سطحوں سے اٹھانی چاہیے۔

باپو کی ہر سدھار یوجنا کو سمجھنے کے لئے ہمیں اوپر کے بنیادی اصولوں کو سامنے رکھنا چاہیے۔ اگر باپو کبھی نیشنلائزیشن کی طرف داری کرتے تھے یا یہ صلاح دیتے تھے

कि धनवानों, राजाओं और सरकारों को अपने को जनता का ट्रस्टी मानना चाहिये तो इसका यह कारण नहीं था कि वह मरकज़ीयत के खिलाफ नहीं थे, बल्कि वह समझते थे कि जब तक मरकज़ीयत किसी रूप में भी मौजूद है तब तक उससे जो नुकसान हो रहा है और होने का डर है उससे बचने के यही सब से अच्छे तरीक़े हैं. जहाँ तक नये समाज और नई दुनिया की रचना का सवाल है वहाँ तक बापू के सामने हमेशा हर दरजे की ग़ैरमरकज़ीयत रहती थी. यही कारन था कि उन्होंने अपने सब आन्दोलनों में और अपनी सब योजनाओं में गाँव को ही मरकज़ रखा और गाँव में भी हर आदमी के अपने सुधार पर सबसे ज्यादा ज़ोर दिया.

बापू पच्छिमी सभ्यता को और पार्लीमेंटी राज को मरकज़ीयत का सबसे बड़ा बुत मानते थे. उन्हें डर था कि इनसे सारे देश में और हमारे जीवन के सब पहलुओं में मरकज़ीयत का ज़हर फैल जायगा. वह देखते थे कि हिन्दुस्तान के शहरों पर इनकी ग़ुलामी का सिक्का जम चुका है, पर गाँव अभी एक दरजे तक बचे हुए हैं इसलिये वह गाँव-गाँव में ऐसा सदाचारी, माली और रूहानी सगठन पैदा कर देना चाहते थे जो उन्हें पच्छिमी सभ्यता की ग़ुलामी से बचा सके. उन्हें यह भी डर था कि जब तक हमारे गाँव का संगठन ठीक न हो जायगा तब तक राज की मरकज़ी शक्ति इन्हें अपने मतलब के लिये काम में लाती रहेगी और देश में हिंसा भरे इन्क़लाबों का सिलसिला बराबर जारी रहेगा. इसीलिये बापू गाँव की ज़िन्दगी को हर मरकज़ी असर से आज़ाद कर देना चाहते थे.

बापू के सामने गाँव के ग़ैर मरकज़ी राज काजी जीवन का

کہ دھن والوں، راجاؤں اور سرکاروں کو اپنے کو جنتا کا ٹرسٹی ماننا چاہیے تو اس کا یہ کارن نہیں تھا کہ وہ مرکزیت کے خلاف نہیں تھے، بلکہ وہ سمجھتے تھے کہ جب تک مرکزیت کسی روپ میں بھی موجود ہے تب تک اس سے جو نقصان ہو رہا ہے اور ہونے کا ڈر ہے اس سے بچنے کے یہی سب سے اچھے طریقے ہیں. جہاں تک نئے سماج اور نئی دنیا کی رچنا کا سوال ہے وہاں تک باپو کے سامنے ہمیشہ ہر درجے کی غیر مرکزیت رہتی تھی۔ یہی کارن تھا کہ انھوں نے اپنے سب آندولنوں میں اور اپنی سب یوجناؤں میں گاؤں کو ہی مرکز رکھا اور گاؤں میں بھی ہر آدمی کے اپنے سدھار پر سب سے زیادہ زور دیا۔

باپو پچھمی سبھیتا کو اور پارلیمنٹی راج کو مرکزیت کا سب سے بڑا بت مانتے تھے۔ انھیں ڈر تھا کہ ان سے سارے دیش میں اور ہمارے جیون کے سب پہلوؤں میں مرکزیت کا زہر پھیل جائے گا۔ وہ دیکھتے تھے کہ ہندستان کے شہروں پر ان کی غلامی کا سکہ جم چکا ہے، پر گاؤں ابھی ایک درجے تک بچے ہوئے ہیں اس لئے وہ گاؤں گاؤں میں ایسا سداچاری، مالی اور روحانی سنگٹھن پیدا کر دینا چاہتے تھے جو انھیں پچھمی سبھیتا کی غلامی سے بچا سکے۔ انھیں یہ بھی ڈر تھا کہ جب تک ہمارے گاؤں کا سنگٹھن ٹھیک نہ ہو جائے گا تب تک راج کی مرکزی شکتی انھیں اپنے مطلب کے لئے کام میں لاتی رہے گی اور دیش میں ہنسا بھرے انقلابوں کا سلسلہ برابر جاری رہے گا۔ اسی لئے باپو گاؤں کی زندگی کو ہر مرکزی اثر سے آزاد کر دینا چاہتے تھے۔

باپو کے سامنے گاؤں کے غیر مرکزی راج کاجی جیون کا

ढाँचा क्या था इसका हम कुछ अनुमान उन पुरानी पंचायतों से कर सकते हैं जो अँग्रेजी राज के हजारों साल पहले से इस देश में क़ायम थीं. भारत की सभ्यता ने अपनी रूहानी ऊँचाइयों और माली चकाचौंध के साथ-साथ अपने राजकाजी जीवन को भी ऐसे अजीब साँचों में ढाला था जिसकी मिसाल दुनिया के किसी भी दूसरे देश में मिलना कठिन है. उसने देश के मरकजी राज को राष्ट्र के सच्चे माली, रोजगारी, सदाचारी और राजकाजी जीवन से बिलकुल ऊँचा और अलग कर दिया था, उसने अपनी मरकजी हुकूमतों की सारी शान शौकत और आडम्बर को बनाये रखते हुए भी गाँवों की जिन्दगी में लोक राज क़ायम कर रखा था.

बापू की किताब "हिन्द-स्वाराज" से पता चलता है कि वह हिन्दुस्तानी सभ्यता के इस पहलू के पूरे जानकार थे और उनके दिल पर इसका बड़ा गहरा असर था. इसीलिये उन्होंने जितनी सुधार की योजनायें देश के सामने रखीं उन सब पर इन पुरानी गांव पंचायतों यानी आज़ाद लोकशाहियों (रिपब्लिक्स) का गहरा रंग था पर अपने इस झुकाव को बापू शायद कभी पहले इतना साफ़ साफ़ ज़ाहिर नहीं कर पाए थे जितना समग्र ग्राम सेवा और स्वावलम्बन की योजनाओं में उन्होंने दिखाया है. समग्र ग्राम सेवा का मतलब है गांव वालों की आर्थिक, नैतिक और सब तरह की एक साथ सेवा और उन्नति, स्वावलम्बन का मतलब है हर गांव वालों का हर बात में अपने पैरों पर आप खड़े होना, यानी, किसी बात में भी किसी बाहर वाले का मोहताज न होना. अपने देश के

ڈھانچہ کیا تھا اس کا ہم کچھ انومان ان پرانی پنچایتوں سے کر سکتے ہیں جو انگریزی راج کے ہزاروں سال پہلے سے اس دیش میں قائم تھیں. بھارت کی سبھیتا نے اپنی روحانی اونچائیوں اور مالی چکا چوندھ کے ساتھ ساتھ اپنے راج کاجی جیون کو بھی ایسے عجیب سانچوں میں ڈھالا تھا جس کی مثال دنیا کے کسی بھی دوسرے دیش میں ملنا کٹھن ہے. اس نے دیش کے مرکزی راج کو راشٹر کے سچے مالی، روزگاری، سداچاری اور راج کاجی جیون سے بالکل اونچا اور الگ کر دیا تھا، اس نے اپنی مرکزی حکومتوں کی ساری شان شوکت اور آڈمبر کو بنائے رکھتے ہوئے بھی گاؤں کی زندگی میں لوک راج قائم کر رکھا تھا.

باپو کی کتاب "ہند سوراج" سے پتہ چلتا ہے کہ وہ ہندستانی سبھیتا کے اس پہلو کے پورے جان کار تھے اور ان کے دل پر اس کا بڑا گہرا اثر تھا. اسی لئے انھوں نے جتنی سدھار کی یوجنائیں دیش کے سامنے رکھیں ان سب پر ان پرانی گاؤں پنچایتوں یعنی آزاد لوک شاہیوں (ریپبلکس) کا گہرا رنگ تھا پر اپنے اس جھکاؤ کو باپو شاید کبھی پہلے اتنا صاف صاف ظاہر نہیں کر پائے تھے جتنا سگر گرام سیوا اور سواولمبن کی یوجناؤں میں انھوں نے دکھایا ہے. سگر گرام سیوا کا مطلب ہے گاؤں والوں کی آرتھک، نیتک اور سب طرح کی ایک ساتھ سیوا اور اُنّتی، سواولمبن کا مطلب ہے ہر گاؤں والوں کا ہر بات میں اپنے پیروں پر آپ کھڑے ہونا، یعنی، کسی بات میں بھی کسی باہر والے کا محتاج نہ ہونا. اپنے دیش کے

इतिहास के उस पहलू को जो इस बात से सम्बन्ध रखता है हम नीचे देते हैं.

इतिहास के सब पढ़ने वाले जानते हैं कि हजारों साल तक हिन्दुस्तान के हर गांव में पंचायती राज क़ायम था. इसका रूप यह था कि गांव के लोग अपने में से किसी ऐसे एक आदमी को जो अपनी नेकी, सच्चाई, ईमानदारी और दूसरों की बेलाग सेवा के लिए गांव में मशहूर हो, उसकी खुशामद करके उसे पंच बनने पर राजी कर लेते थे. इसी तरह दूसरे चार पंच चुने जाते थे. इन पाँच-पाँच पंचों की यह पंचायतें गाँव की तालीम, अदालत, सफाई, तन्दुरुस्ती और रक्षा के सब काम करती थीं. इन सब कामों को करने के लिये बहुत पुराने जमाने से इन्हें जमीनों की माफ़ियाँ और आसामियाँ मिली हुई थीं, जिन्हें गांव के खुशहाल आदमी बराबर बढ़ाते रहते थे. अदालत की हैसियत से इन्हें अपने दायरे के अन्दर दीवानी और फ़ौजदारी के पूरे अधिकार होते थे. इन पंचायतों की सब से बड़ी सुन्दरता यह थी कि यह अपने सारे काम में किसी राजकाज या दूसरी शक्ति के अधीन न थीं. इन्हें पूरी आजादी हासिल थी और उन में इतनी शक्ति और उन के पास इतने वसीले होते थे कि वह अपने इलाक़े की सब जरूरतों को पूरा कर सकें. इसी लिये बापू के स्वावलम्बन की इन्हें जीती जागती तसवीर कहा जा सकता है.

इन पंचायतों के काम में कोई राजा या बादशाह कभी दखल न देता था. इस का कारन यह था कि हिन्दुस्तान की सभ्यता ने राजा के सब अधिकारों को केवल राजकाज तक ही महदूद कर दिया

اتہاس کے اس پہلو کو جو اس بات سے سمبندھ رکھتا ہے ہم نیچے دیتے ہیں۔

اتہاس کے سب پڑھنے والے جانتے ہیں کہ ہزاروں سال تک ہندستان کے ہر گاؤں میں پنچایتی راج قائم تھا۔ اس کا روپ یہ تھا کہ گاؤں کے لوگ اپنے میں سے کسی ایسے ایک آدمی کو جو اپنی نیکی، سچائی، ایمانداری اور دوسروں کی بے لاگ سیوا کے لئے گاؤں میں مشہور ہو، اس کی خوشامد کر کے اسے پنچ بننے پر راضی کر لیتے تھے۔ اسی طرح دوسرے چار پنچ چنے جاتے تھے۔ ان پانچ پانچ پنچوں کی یہ پنچایتیں گاؤں کی تعلیم، عدالت، صفائی، تندرستی اور رکشا کے سب کام کرتی تھیں۔ ان سب کاموں کو کرنے کے لئے بہت پرانے زمانے سے انھیں زمینوں کی معافیاں اور آسامیاں ملی ہوئی تھیں، جنھیں گاؤں کے خوشحال آدمی برابر بڑھاتے رہتے تھے۔ عدالت کی حیثیت سے انھیں اپنے دائرے کے اندر دیوانی اور فوجداری کے پورے ادھیکار ہوتے تھے۔ ان پنچایتوں کی سب سے بڑی سندرتا یہ تھی کہ یہ اپنے سارے کام میں کسی راج کاج یا دوسری شکتی کے ادھین نہ تھیں۔ انھیں پوری آزادی حاصل تھی اور ان میں اتنی شکتی اور ان کے پاس اتنے وسیلے ہوتے تھے کہ وہ اپنے علاقے کی سب ضرورتوں کو پورا کر سکیں۔ اسی لئے باپو کے سوادلمبن کی انھیں جیتی جاگتی تصویر کہا جا سکتا ہے۔

ان پنچایتوں کے کام میں کوئی راجہ یا بادشاہ کبھی دخل نہ دیتا تھا۔ اس کا کارن یہ تھا کہ ہندستان کی سبھیتا نے راجہ کے سب ادھیکاروں کو کیول راج کاج تک ہی محدود کر دیا

था. अखलाक़ी मामलों में मजहबी मामलों में, समाजी, रोजगारी और तिजारती मामलों में राजा न कोई दख़ल दे सकता था और न इन की रोक थाम के लिये कोई क़ानून बना सकता था. इन सारी बातों का प्रबन्ध और इन के असूलों और नियमों में अदल बदल करने का काम मजहबी और अखलाक़ी संस्थाओं के सुपुर्द था जो ख़ास सिद्धान्तों और आदर्शों के अन्दर रहते हुए इन में सुधार या बदलाव करती रहती थीं. राजा का केवल इतना काम होता था कि इन कामों के ठीक-ठीक और बेरोक चलने में मदद दे और इन संस्थाओं के बनाये हुए नियमों और उन की आज्ञाओं का आदर और मान रखे. इसलिए इन पंचायतों के काम काज में किसी राजा के दख़ल देने का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता था.

आज से दो तीन सौ साल पहले पच्छिमी सभ्यता के उभार का ज़माना आया. इस सभ्यता का राजकाजी अधिकार दुनिया में फैलने लगा. होते-होते उसके क़दम हिन्दुस्तान तक पहुँच गए. यह पच्छिमी सभ्यता अपने देशों की सदाचारी और दीनी धर्मी शक्तियों को मिटा कर केवल अपनी तिजारती और राजकाजी प्यास को बुझाने के लिये दुनिया में फैली थी. इसके नेताओं को अपने इसी मतलब को पूरा करने के अलावा अपने अधीन देशों की सांस्कृतिक यानी कलचरी सूरतों और ज़रूरतों से कोई वास्ता न रहता था, न इनके रीत रिवाज और धर्म कर्म का इन विदेशियों के दिल में कोई आदर होता था. वारन हेस्टिंग्स के ज़माने में जो हिन्दुस्तान का पहला अंगरेज गवरनर जनरल था, इस देश की यह लाखों पंचायतें जान बूझ कर

تھا۔ اخلاقی معاملوں میں مذہبی معاملوں میں، سماجی، روزگاری اور تجارتی معاملوں میں راجہ نہ کوئی دخل دے سکتا تھا اور نہ ان کی روک تھام کے لئے کوئی قانون بنا سکتا تھا۔ ان ساری باتوں کا پربندھ اور ان کے اصولوں اور نیموں میں ادل بدل کرنے کا کام مذہبی اور اخلاقی سنستھاؤں کے سپرد تھا جو خاص سدھانتوں اور آدرشوں کے اندر رہتے ہوئے ان میں سدھار یا بدلاؤ کرتی رہتی تھیں۔ راجہ کا کیول اتنا کام ہوتا تھا کہ ان کاموں کے ٹھیک ٹھیک اور بے روک چلنے میں مدد دے اور ان سنستھاؤں کے بنائے ہوئے نیموں اور ان کی آگیاؤں کا آدر اور مان رکھے۔ اس لئے ان پنچایتوں کے کام کاج میں کسی راجہ کے دخل دینے کا کوئی سوال ہی پیدا نہیں ہوتا تھا۔

آج سے دو تین سو سال پہلے پچھمی سبھیتا کے ابھار کا زمانہ آیا۔ اس سبھیتا کا راج کاجی ادھیکار دنیا میں پھیلنے لگا۔ ہوتے ہوتے اس کے قدم ہندستان تک پہنچ گئے۔ یہ پچھمی سبھیتا اپنے دیشوں کی سداچاری اور دینی دھرمی شکتیوں کو مٹا کر کیول اپنی تجارتی اور راج کاجی پیاس کو بجھانے کے لئے دنیا میں پھیلی تھی۔ اس کے نیتاؤں کو اپنے اسی مطلب کو پورا کرنے کے علاوہ اپنے آدھین دیشوں کی سانسکرتک یعنی کلچری صورتوں اور ضرورتوں سے کوئی واسطہ نہ رہتا تھا، نہ ان کے ریت رواج اور دھرم کرم کا ان ودیشیوں کے دل میں کوئی آدر ہوتا تھا۔ وارن ہیسٹنگز کے زمانے میں جو ہندستان کا پہلا انگریز گورنر جنرل تھا، اس دیش کی یہ لاکھوں پنچایتیں جان بوجھ کر

एक क़लम तोड़ दी गईं. वारन हेस्टिंग्ज ने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के डायरेक्टरों के नाम अपने एक खत में इन पंचायतों के बारे में लिखा था—"इन्सानी तारीख के दौर के पहले से हिन्दुस्तान के हर गांव में पंचायती राज क़ायम थे. यह पंचायतें अपने सारे राज प्रबन्ध में इतनी आज़ाद और खुदमुख्तार थीं कि इस देश के किसी राजा या बादशाह ने कभी इतनी हिम्मत नहीं की कि इनके काम में किसी तरह का दखल दे. लोकमत कभी इस तरह के दखल देने को बरदाश्त ही नहीं कर सकता था........मैंने टेढ़े या सीधे, जैसे भी बन पड़ा (बाई हुक और बाई क्रुक) इन पंचायतों की आज़ादी का खातमा कर दिया ."

अंगरेज़ इतिहास लेखकों ने इन पंचायतों को (विल्लेज रिपब्लिक्स) कहा है और इनके प्रबन्ध की सुन्दरता की बहुत बहुत तारीफ़ें की हैं. इन इतिहास लेखकों की राय है कि हिन्दुस्तान की बेमिसाल खुशहाली, दुनिया भर से बढ़ कर सुख शान्ति और अमन अमान, यहाँ का धर्म-प्रेम और इन्सानियत, बल्कि इस देश की सारी बढ़ी हुई कलचर इन्हीं पंचायतों की बुनियादों पर क़ायम थी. इन्हीं पंचायतों ने इस देश को अमर बना रखा था. इन इतिहास लेखकों की गवाही से बढ़ कर गवाही इन पंचायतों की बेलाग सेवा, इनके नैतिक बल और इनके सुन्दर प्रबन्ध की नहीं हो सकती, क्योंकि आमतौर पर यह इतिहास लेखक हिन्दुस्तान की किसी बात को भी सराहने के लिए तय्यार नहीं होते.

इन पंचायतों की इस तसवीर में हम यह देखते हैं कि यह पंचायतें लोक राज या लोकशाही का अच्छे से अच्छा रूप होते

ایک قلم توڑ دی گئیں. وارن ہیسٹنگز نے ایسٹ انڈیا کمپنی کے ڈائرکٹروں کے نام اپنے ایک خط میں ان پنچایتوں کے بارے میں لکھا تھا: "انسانی تاریخ کے دور کے پہلے سے ہندستان کے ہر گاؤں میں پنچایتی راج قائم تھے. یہ پنچایتیں اپنے سارے راج پربندھ میں اتنی آزاد اور خود مختار تھیں کہ اس دیش کے کسی راجہ یا بادشاہ نے کبھی اتنی ہمت نہیں کی کہ ان کے کام میں کسی طرح کا دخل دے. لوک مت کبھی اس طرح کے دخل دینے کو برداشت ہی نہیں کر سکتا تھا...... میں نے ٹیڑھے یا سیدھے، جیسے بھی بن پڑا (بائی ہک اور بائی کروک) ان پنچایتوں کی آزادی کا خاتمہ کر دیا."

انگریز اتہاس لیکھکوں نے ان پنچایتوں کو (ولیج ریپبلکس) کہا ہے اور ان کے پربندھ کی سندرتا کی بہت بہت تعریفیں کی ہیں. ان اتہاس لیکھکوں کی رائے ہے کہ ہندستان کی بے مثال خوشحالی، دنیا بھر سے بڑھ کر سکھ شانتی اور امن امان، یہاں کا دھرم پریم اور انسانیت، بلکہ اس دیش کی ساری بڑھی ہوئی کلچر انھیں پنچایتوں کی بنیادوں پر قائم تھی. انھیں پنچایتوں نے اس دیش کو امر بنا رکھا تھا. ان اتہاس لیکھکوں کی گواہی سے بڑھ کر گواہی ان پنچایتوں کی بے لاگ سیوا، ان کے نیتک بل اور ان کے سندر پربندھ کی نہیں ہو سکتی، کیونکہ عام طور پر یہ اتہاس لیکھک ہندستان کی کسی بات کو بھی سراہنے کے لئے تیار نہیں ہوتے.

ان پنچایتوں کی اس تصویر میں ہم یہ دیکھتے ہیں کہ یہ پنچایتیں لوک راج یا لوک شاہی کا اچھے سے اچھا روپ ہوتے

हुए भी इन सारी बुराइयों से पाकसाफ़ थीं जो पार्लिमेण्टरी राज अपने साथ दुनिया में लाया. इन पंचायतों की राजकाजी ज़िन्दगी में वह सारी बातें मौजूद हैं जिन्हें हम 'डैमोक्रेसी' यानी लोकराज के साथ जोड़ते हैं. इसलिए यह पंचायती राज मरकज़ी हुकूमत के होते हुए भी देश के ९० फ़ीसदी रहने वालों को पूरी आज़ादी के साथ अपना जीवन बिताने का मौक़ा देता था. इन पंचायतों के जीवन में उस 'स्वराज' की कुछ छाया सी दिखाई देती है जिसका बापू सपना देखते थे. यह बात कि यह पंचायतें हज़ारों साल तक इस मुल्क में क़ायम रह चुकी हैं और अभी दो सौ बरस भी इन्हें मिटे हुए नहीं हुए साबित करती है कि इस देश के मिट्टी पानी में वह सारी चीज़ें मौजूद हैं, जिनसे इस तरह की संस्थायें पैदा हो सकती हैं, बढ़ सकती हैं और फलफूल सकती हैं. इसी से इन का फिर से ज़िन्दा होना भी कोई अनोखी या अनहोनी बात मालूम नहीं होती. हमारी पुरानी गांव की ज़िन्दगी में वह सारा ढांचा मौजूद है जो बापू अपनी समग्र ग्राम सेवा और स्वावलम्बन के आंदोलनों से हिन्दुस्तान के ७ लाख गांव में फिर से चमकाना चाहते थे.

कहा जा सकता है कि बीती दुनिया के सपने देखने से कोई फ़ायदा नहीं. इतिहास अपने पैर पीछे को नहीं हटाता और जो लोग इतिहास के पैर पीछे को हटाने की कोशिश करते हैं वह कभी कामयाब नहीं होते. पर हमें भरोसा है कि बापू के समग्र सेवा और स्वावलम्बन की योजनाओं को अच्छी तरह समझ लेने के बाद आदमी के दिल में इस तरह की शंका नहीं रह सकती.

ہوتے بھی ان ساری برائیوں سے پاک صاف تھیں جو پارلیمنٹی راج اپنے ساتھ دنیا میں لایا۔ ان پنچائتوں کی راج کاجی زندگی میں وہ ساری باتیں موجود ہیں جنھیں ہم ڈیموکریسی، یعنی لوک راج کے ساتھ جوڑتے ہیں۔ اس لئے یہ پنچائتی راج مرکزی حکومت کے ہوتے ہوئے بھی دیش کے ۹۰ فی صدی رہنے والوں کو پوری آزادی کے ساتھ اپنا جیون بتانے کا موقعہ دیتا تھا۔ ان پنچائتوں کے جیون میں اس سوراج کی کچھ چھایا سی دکھائی دیتی ہے جس کا باپو سپنا دیکھتے تھے۔ یہ بات کہ یہ پنچائتیں ہزاروں سال تک اس ملک میں قائم رہ چکی ہیں اور ابھی دو سو برس بھی انھیں مٹے ہوئے نہیں ہوئے ثابت کرتی ہیں کہ اس دیش کے مٹی پانی میں وہ ساری چیزیں موجود ہیں جن سے اس طرح کی سنستھائیں پیدا ہو سکتی ہیں، بڑھ سکتی ہیں اور پھل پھول سکتی ہیں۔ اسی سے ان کا پھر سے زندہ ہونا بھی کوئی انوکھی یا ان ہونی بات معلوم نہیں ہوتی۔ ہماری پرانی گاؤں کی زندگی میں وہ سارا ڈھانچہ موجود ہے جو باپو اپنی سمگر گرام سیوا اور سواولمبن کے آندولنوں سے ہندستان کے ۷ لاکھ گاؤں میں پھر سے چمکانا چاہتے تھے۔

کہا جا سکتا ہے کہ بیتی دنیا کے سپنے دیکھنے سے کوئی فائدہ نہیں۔ اتہاس اپنے پیر پیچھے کو نہیں ہٹاتا اور جو لوگ اتہاس کے پیر پیچھے کو ہٹانے کی کوشش کرتے ہیں وہ کبھی کامیاب نہیں ہوتے۔ پر ہمیں بھروسہ ہے کہ باپو کے سمگر سیوا اور سواولمبن کی یوجناؤں کو اچھی طرح سمجھ لینے کے بعد آدمی کے دل میں اس طرح کی شنکا نہیں رہ سکتی۔

बापू की यह योजनाएँ नए विचारों, नए भावों और नए ढंग के साधनों से भरी हुई हैं. यह दुनिया को आगे बढ़ाने और आदमी को आदमी बनाने की सबसे बड़ी ताक़त हैं. हो सकता है कि दुनिया अपनी लाचारी. बेबसी और कमजोरी की वजह से इनसे पूरा फ़ायदा न उठा सके पर अन्त को दुनिया को इन्हीं से मदद लेना होगी, क्योंकि इन्सानी तरक़्क़ी और मानव विकास की यही आगे की सीढ़ी है.

हम कह चुके हैं कि जो नक़्शा बापू ने अपने नए विधान में रखा है वह हमारे गांवों के जीवन को उसी साँचे में ढालना चाहता है जिसमें यह पुरानी पंचायतें ढली हुई थीं. इतना ही नहीं, वह इससे बहुत आगे जाना चाहता है. वह केवल पुरानी ख़ुशहाली, राजकाजी आज़ादी, और सदाचारी ऊँचाई को ही फिर से लाना नहीं चाहता, बल्कि वह उस रोग की भी जड़ें काट डालना चाहता है जिसके कारन यह सब चीजें बरबाद हुईं. इन पंचायतों में पर्लिमेण्टी राज की कोई बुराई नहीं. इनकी नुमाइन्दगी सच्ची नुमाइन्दगी है. इनके चुनाव के ढंग में न किसी का पैसा लुटता है और न किसी का चलन गिरता है. इनके राज काजी जीवन में मरकज़ी सरकार के दख़ल देने का कोई डर नहीं रह जाता. सच यह है कि इनमें सच्चे लोकराज के सब गुन मौजूद हैं. इनकी बरकत से देश की नब्बे फ़ीसदी जनता मरकज़ी सरकार के होते हुए भी पूरी आज़ादी के साथ अपना जीवन बिता सकती है. यह सब बातें किसी और योजना में मिलना कठिन है.

باپو کی یہ یوجنائیں نئے وچاروں، نئے بھاؤں اور نئے ڈھنگ کے سادھنوں سے بھری ہوئی ہیں۔ یہ دنیا کو آگے بڑھانے اور آدمی کو آدمی بنانے کی سب سے بڑی طاقت ہیں۔ ہو سکتا ہے کہ دنیا اپنی لاچاری، بےبسی اور کمزوری کی وجہ سے ان سے پورا فائدہ نہ اُٹھا سکے پر انت کو دنیا کو انھیں سے مدد لینا ہوگا، کیونکہ انسانی ترقی اور مانو وکاس کی یہی آگے کی سیڑھی ہے۔

ہم کہہ چکے ہیں کہ جو نقشہ باپو نے اپنے نئے ودھان میں رکھا ہے وہ ہمارے گاؤں کے جیون کو اُسی سانچے میں ڈھالنا چاہتا ہے جس میں یہ پرانی پنچایتیں ڈھلی ہوئی تھیں۔ اتنا ہی نہیں وہ اس سے بہت آگے جانا چاہتا ہے۔ وہ کیول پرانی خوشحالی راج کاجی آزادی، اور سداچاری اونچائی کو ہی پھر سے لانا نہیں چاہتا، بلکہ وہ اُس روگ کی بھی جڑیں کاٹ ڈالنا چاہتا ہے جس کے کارن یہ سب چیزیں برباد ہوئیں۔ ان پنچایتوں میں پارلیمنٹری راج کی کوئی بُرائی نہیں۔ ان کی نمائندگی سچی نمائندگی ہے۔ ان کے چناؤ کے ڈھنگ میں نہ کسی کا پیسہ لٹتا ہے اور نہ کسی کا چلن گرتا ہے۔ ان کے راج کاجی جیون میں مرکزی سرکار کو دخل دینے کا کوئی ڈر نہیں رہ جاتا۔ سچ یہ ہے کہ ان میں سچے لوک راج کے سب گُن موجود ہیں۔ انکی برکت سے دیش کی نوے فیصدی جنتا مرکزی سرکار کے ہوتے ہوئے بھی پوری آزادی کے ساتھ اپنا جیون بتا سکتی ہے۔ یہ سب باتیں کسی اور یوجنا میں ملنا کٹھن ہے۔

पर इन पंचायतों में यह सब अच्छाइयाँ होते हुए भी हम इनकी इस बुनियादी कमज़ोरी से आँख नहीं बचा सकते कि उस समय के एक मामूली से हाकिम ने इनकी हज़ारों साल की बेलाग सेवा के बाद दम के दम में मिट्टी के एक घरोंदे की तरह इन्हें खाक में मिला दिया. इस दुख भरी घटना से हमें बहुत बड़ा सबक़ मिलता है. हम देखते हैं कि इन पञ्चायतों के साथ साथ वह चरखा जो यहाँ की लाखों बहनों के गुज़ारे की ज़िम्मेवारी अपने ऊपर लिये था, गाँव की वह सारी दस्तकारियाँ जो यहाँ के करोड़ों सीधे सादे और मेहनती किसानों और कारीगरों का जीवन में साथ देती थीं, पञ्चायतों के साथ साथ अंग्रेज़ी राज की घातक नीति का शिकार हो गईं. यह घटना मानव जीवन के उस बुनियादी सवाल को हमारे सामने लाकर खड़ा कर देती है कि रूहानी और सदाचारी शक्तियाँ दुनियावी और माद्दी शक्तियों से टक्कर ले सकती हैं या नहीं, और अगर ले सकती हैं तो कैसे ? क्या इनसानी जिन्दगी के क़ायम रहने और उन्नति करने के लिये उसका दुनियावी, धोके, फ़रेब की और लामज़हबी ताक़तों की छाया में ही पलना और बढ़ना ज़रूरी है ?

बापू के लिये यह कोई नया सवाल नहीं था. उनका जीवन साबित करता है कि हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता ने बापू को इसी सवाल का अमली हल दुनिया के सामने रखने के लिये जन्म दिया था. इसी सवाल के हल के लिये बापू ने अपनी योजनाएँ और अपने नए हथियार दुनिया के सामने रखे हैं. अंग्रेज़ी राज की उन हैवानी शक्तियों से, जिन्होंने पुरानी पंचायतों और सारे देश को बेदर्दी के

پر ان پنچایتوں میں یہ سب اچھائیاں ہوتے ہوئے بھی ہم انکی اس بنیادی کمزوری سے آنکھ نہیں بچا سکتے کہ اُس سمے کے ایک معمولی سے حاکم نے ان کی ہزاروں سال کی بے لاگ سیوا کے بعد دم کے دم میں مٹی کے ایک گھروندے کی طرح انہیں خاک میں ملا دیا۔ اس دکھ بھری گھٹنا سے ہمیں بہت بڑا سبق ملتا ہے۔ ہم دیکھتے ہیں کہ ان پنچایتوں کے ساتھ ساتھ وہ چرخا جو یہاں کی لاکھوں بہنوں کے گذارے کی ذمہ واری اپنے اوپر لئے تھا، گاؤں کی وہ ساری دستکاریاں جو یہاں کے کروڑوں سیدھے سادے اور محنتی کسانوں اور کاریگروں کا جیون میں ساتھ دیتی تھیں پنچایتوں کے ساتھ ساتھ انگریزی راج کی گھاتک نیتی کا شکار ہو گئیں۔ یہ گھٹنا مانو جیون کے اُس بنیادی سوال کو ہمارے سامنے لاکر کھڑا کر دیتی ہے کہ روحانی اور سداچاری شکتیاں دنیاوی اور مادّی شکتیوں سے ٹکر لے سکتی ہیں یا نہیں، اور اگر لے سکتی ہیں تو کیسے؟ کیا انسانی زندگی کے قائم رہنے اور اُنتی کرنے کے لئے اُس کا دنیاوی، دھوکے فریب کی اور لامذہبی طاقتوں کی چھایا میں ہی پلنا اور بڑھنا ضروری ہے؟

باپو کے لئے یہ کوئی نیا سوال نہیں تھا۔ اُن کا جیون ثابت کرتا ہے کہ ہندستان کی پرانی سبھیتا نے باپو کو اسی سوال کا عملی حل دنیا کے سامنے رکھنے کے لئے جنم دیا تھا۔ اسی سوال کے حل کے لئے باپو نے اپنی یوجنائیں اور اپنے نئے ہتھیار دنیا کے سامنے رکھے ہیں۔ انگریزی راج کی اُن حیوانی شکتیوں سے، جنہوں نے پرانی پنچایتوں اور سارے دیش کو بربادی کے

साथ मिटाया, हमने बापू की रूहानी और सदाचारी शक्तियों को टकराते अपनी आंखों से देखा है. अपने देश वासियों पर और सारी दुनिया पर इन टक्करों का नतीजा भी हमें मालूम है. उसी सत्याग्रह की शक्ति को जिसने अंग्रेजी राज की ताक़त को हिला दिया था बापू हिन्दुस्तान के गांव गांव में पैदा कर देना चाहते हैं. बापू के समग्रसेवा और स्वावलम्बन इसी शक्ति को जगाने के तरीक़े हैं. इस समग्र सेवा का जो रूप बापू ने अपने नए विधान में दिया है उसे हम नीचे देते हैं—

"५—हर काम करने वाला गांवों का इस तरह संगठन करेगा कि हर गांव अपनी खेती और दस्तकारियों के ज़रिये अपने पैरों पर आप खड़ा हो सके और अपना सारा काम ख़ुद चला सके.

"६—वह गांव के लोगों को सफ़ाई रखना और तन्दुरुस्त रहना सिखाएगा और उनमें तन्दुरुस्ती के बिगड़ने और बीमारी पैदा होने को रोकने के लिये पहले से सब तरकीबें करेगा.

"७—वह हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की तय की हुई नीति के अनुसार, 'नई तालिम' के ढंग पर, जन्म से लेकर मौत तक गांव वालों की तालिम का प्रबन्ध करेगा."

"२—अपने दायरे के अन्दर गांव के हर आदमी के साथ वह ख़ुद मेल मिलाप रखेगा."

हमने समग्र सेवा की केवल माली, तालीमी, और तन्दुरुस्ती से सम्बन्ध रखने वाली दफ़ाओं को नक़ल किया है. इसके समाजी और राजकाजी पहलू की चरचा हम बाद में करेंगे.

ऊपर की पहली तीन दफ़ाओं में से हरेक का एक इतिहास है.

ساتھ مٹایا، ہم نے باپو کی روحانی اور سداچاری شکتیوں کو ٹکراتے اپنی آنکھوں سے دیکھا ہے۔ اپنے دیش واسیوں پر اور ساری دنیا پر ان ٹکروں کا نتیجہ بھی ہمیں معلوم ہے۔ اسی ستیاگرہ کی شکتی کو جس نے انگریزی راج کی طاقت کو ہلا دیا تھا باپو ہندستان کے گاؤں گاؤں میں پیدا کر دینا چاہتے ہیں۔ باپو کے سمگر سیوا اور سوادلمبن اسی شکتی کو جگانے کے طریقے ہیں۔ اس سمگر سیوا کا جو روپ باپو نے اپنے نئے ودھان میں دیا ہے اسے ہم نیچے دیتے ہیں —

"۵— ہر کام کرنے والا گاؤں کا اس طرح سنگٹھن کرے گا کہ ہر گاؤں اپنی کھیتی اور دستکاریوں کے ذریعے اپنے پیروں پر آپ کھڑا ہو سکے اور اپنا سارا کام خود چلا سکے۔

"۶— وہ گاؤں کے لوگوں کو صفائی رکھنا اور تندرست رہنا سکھائے گا اور اس میں تندرستی کے بگڑنے اور بیماری پیدا ہونے کو روکنے کے لئے پہلے سے سب ترکیبیں کرے گا۔

"۷— وہ ہندستانی تعلیمی سنگھ کی طے کی ہوئی نیتی کے انوسار، 'نئی تعلیم' کے ڈھنگ پر، جنم سے لے کر موت تک گاؤں والوں کی تعلیم کا پربندھ کرے گا۔"

"۲— اپنے دائرے کے اندر گاؤں کے ہر آدمی کے ساتھ وہ خود میل ملاپ رکھے گا۔"

ہم نے سمگر سیوا کی کیول مالی، تعلیمی، اور تندرستی سے سمبندھ رکھنے والی دفعاؤں کو نقل کیا ہے۔ اس کے سماجی اور راج کاجی پہلو کی چرچا ہم بعد میں کریں گے۔

اوپر کی پہلی تین دفعاؤں میں سے ہر ایک کا ایک اتہاس ہے۔

बरसों से यह बातें देश के सामने हैं. बापू के बड़े से बड़े आन्दोलनों के साथ इनका सम्बन्ध रहा है. इनमें से हरेक पर बहुत सी किताबें भी लिखी जा चुकी हैं. समय समय पर देश के बड़े से बड़े नेताओं ने इनके बारे में अपने विचार भी प्रकट किये हैं. इनमें से हरेक पर इतना साहित्य जमा हो गया है कि उसकी मदद से गांव के जीवन के सारे पहलुओं और गांव वालों में काम करने के बापू के नए तरीक़ों की पूरी पूरी जानकारी हासिल की जा सकती है. इसलिये हम यहाँ उन्हें अधिक बयान करना नहीं चाहते. हम उनके असूली पहलुओं की ही चरचा करेंगे.

ऊपर की दफ़ा ५ में बापू ने गांव की खेती और दस्तकारियों को अपने पैरों पर खड़ा करने की बात कही है. यह बापू का सारे देश के लिए आर्थिक प्रोग्राम है. इसको पूरी तरह समझने के लिए हमें यह याद रखना चाहिये कि बापू राष्ट्र के जीवन में सदाचार और राजकाज को एक दूसरे से अलग न देखते थे. वह जीवन के हर पहलू को और हर काम को सदाचार की कसौटी पर कसते थे और जीवन के हर पहलू की ऊँची से ऊँची चोटियों तक सदाचार के असूलों के रास्ते ही पहुँचना चाहते थे. उनकी यह भी राय थी कि जीवन के कुछ थोड़े से सीधे सादे असूल हमारी सब ज़रूरतों को पूरा करने और हमारे आपस के सम्बन्धों को ठीक ठीक तय करने के लिए काफ़ी हैं.

एक बार किसी इकोनोमिक सोसाइटी ने बापू को अपने यहाँ इकोनोमिक्स यानी मालियात (अर्थ शास्त्र) पर अपने विचार प्रगट करने की दावत दी. इसके लिए इस विद्या के आजकल

برسوں سے یہ باتیں دیش کے سامنے ہیں۔ باپو کے بڑے سے بڑے آندولنوں کے ساتھ ان کا سمبندھ رہا ہے۔ ان میں سے ہر ایک پر بہت سی کتابیں بھی لکھی جا چکی ہیں۔ سمے سمے پر دیش کے بڑے سے بڑے نیتاؤں نے انکے بارے میں اپنے وچار بھی پرکٹ کئے ہیں۔ ان میں سے ہر ایک پر اتنا ساہتیہ جمع ہوگیا ہے کہ اس کی مدد سے گانوں کے جیون کے سارے پہلوؤں اور گانوں والوں میں کام کرنے کے باپو کے نئے طریقوں کی پوری پوری جان کاری حاصل کی جا سکتی ہے۔ اسلئے ہم یہاں انھیں ادھک بیان کرنا نہیں چاہتے۔ ہم ان کے اصولی پہلوؤں کی ہی چرچا کریں گے۔

اوپر کی دفعہ ۵ میں باپو نے گانوں کی کھیتی اور دستکاریوں کو اپنے پیروں پر کھڑا کرنے کی بات کہی ہے۔ یہ باپو کا سارے دیش کے لئے آرتھک پروگرام ہے۔ اس کو پوری طرح سمجھنے کے لئے ہمیں یہ یاد رکھنا چاہئے کہ باپو راشٹر کے جیون میں سداچار اور راج کاج کو ایک دوسرے سے الگ نہ دیکھتے تھے۔ وہ جیون کے ہر پہلو کو اور ہر کام کو سداچار کی کسوٹی پر کستے تھے اور جیون کے ہر پہلو کی اونچی سے اونچی چوٹیوں تک سداچار کے اصولوں کے راستے ہی پہنچنا چاہتے تھے۔ انکی یہ بھی رائے تھی کہ جیون کے کچھ تھوڑے سے سیدھے سادے اصول ہماری سب ضرورتوں کو پورا کرنے اور ہمارے آپس کے سمبندھوں کو ٹھیک ٹھیک طے کرنے کے لئے کافی ہیں۔

ایکبار کسی ایکونومک سوسائٹی نے باپو کو اپنے یہاں ایکونومکس یعنی مالیات (ارتھ شاستر) پر اپنے وچار پرگٹ کرنے کی دعوت دی۔ اسکے لئے اس ودیا کے آجکل

के कुछ जानकार बापू से मिलने गए. बातचीत में उन्होंने नए नए असूल और आजकल के अर्थ शास्त्र पंडितों के नए नए नाम बापू के सामने पेश किए. बापू चुप बैठे सब सुनते रहे. जब उन लोगों ने देखा कि यह कुछ जवाब ही नहीं दे रहे हैं तो उन्होंने यह सीधा सवाल बापू से किया कि आप इन अर्थ शास्त्र पंडितों और उनके अलग अलग असूलों में से किसे ठीक समझते हैं. बापू ने जवाब दिया कि 'भाई मैंने तो इन सब का कभी नाम भी नहीं सुना' वह लोग दंग रह गए. पूछा कि आखिर आप भी किसी किताब या लेखक को इस विद्या में प्रमाण मानते हैं. बापू ने कहा 'ज़रूर' उन्होंने कहा कि क्या हम वह किताब देख सकते हैं. बापू ने कहा 'ज़रूर', और अपना बस्ता खोल कर उसमें से बाइबिल निकाल कर उन के सामने रख दी.

सचमुच बापू का विचार था कि हज़रत मूसा के इस हुक्म या उन से भी थोड़े में गीता के पांच असूल जिन पर दुनिया के सब धर्म मज़हबों की मोहर लगी हुई है, जीवन के हर पहलू और आदमी के हर काम और उसकी हर बात को ठीक रखने के लिए काफ़ी हैं. दुनिया का हर आदमी इन्हें जानता है—झूट मत बोलो, चोरी न करो, किसी को मारो मत, ज़िना न करो, सब के साथ प्रेम और बराबरी का बरताव करो. यही वह थोड़े से बुनियादी असूल हैं जिन पर आदमी का सारा जीवन और दुनिया की सारी सभ्यतायें, सारा कलचर और संस्कृतियाँ क़ायम हैं. ज़रूरत केवल इस बात की है कि आदमी के अन्दर वह नैतिक शक्ति पैदा कर दी जाय कि जिन से उसका सुभाव ही ऐसा बन जाय कि वह इन ऊँचे

کے کچھ جانکار باپو سے ملنے گئے۔ بات چیت میں انھوں نے نئے نئے اصول اور آج کل کے ارتھ شاستر پنڈتوں کے نئے نئے نام باپو کے سامنے پیش کئے۔ باپو چپ بیٹھے سب سنتے رہے۔ جب اُن لوگوں نے دیکھا کہ یہ کچھ جواب ہی نہیں دے رہے ہیں تو انھوں نے یہ سیدھا سوال باپو سے کیا کہ آپ ان ارتھ شاستر پنڈتوں اور اُنکے الگ الگ اصولوں میں سے کسے ٹھیک سمجھتے ہیں۔ باپو نے جواب دیا کہ 'بھائی میں نے تو ان سب کا کبھی نام بھی نہیں سنا' وہ لوگ دنگ رہ گئے۔ پوچھا کہ آخر آپ بھی کسی کتاب یا لیکھک کو اس ودّیا میں پرمان مانتے ہیں۔ باپو نے کہا 'ضرور' انھوں نے کہا کہ کیا ہم وہ کتاب دیکھ سکتے ہیں۔ باپو نے کہا 'ضرور' اور اپنا بستہ کھول کر اس میں سے بائبل نکال کر اُن کے سامنے رکھ دی۔

سچ مچ باپو کا وچار تھا کہ حضرت موسیٰ کے اس حکم یا اُن سے بھی تھوڑے میں گیتا کے پانچ اصول جن پر دنیا کے سب دھرم مذہبوں کی مہر لگی ہوئی ہے، جیون کے ہر پہلو اور آدمی کے ہر کام اور اُسکی ہر بات کو ٹھیک رکھنے کے لئے کافی ہیں۔ دنیا کا ہر آدمی اُنھیں جانتا ہے— جھوٹ مت بولو، چوری نہ کرو، کسی کو مارو مت، زنا نہ کرو، سب کے ساتھ پریم اور برابری کا برتاؤ کرو۔ یہی وہ تھوڑے سے بُنیادی اصول ہیں جن پر آدمی کا سارا جیون اور دنیا کی ساری سبھیتائیں، ساری کلچر اور سنسکرتیاں قائم ہیں۔ ضرورت کیول اس بات کی ہے کہ آدمی کے اندر وہ نیتک شکتی پیدا کر دی جائے کہ جن سے اس کا سوبھاؤ ہی ایسا بن جائے کہ وہ ان اونچے

असूलों पर अमल करने को मजबूर हो. यह शक्ति आजकल की यूनिवर्सिटियां, कालिज या स्कूल पैदा नहीं कर सकते. कोई तालीम चाहे वह कितनी भी ऊँची से ऊँची क्यों न हो जब तक धर्म, और नेकी पर क़ायम न हो, आदमी में इस तरह का सुभाव और इस तरह के गुन पैदा नहीं कर सकती.

पच्छिमी सभ्यता ने सदाचार की एक बिलकुल नई कसौटी संसार के सामने रख दी है. उसने आदमी की ज़िन्दगी के आर्थिक पहलू को असली ज़िंदगी मान कर बाक़ी सब पहलुओं को उसपर क़ुरबान कर दिया है. टके को और अपने अपने स्वार्थ को उसने दुनिया का मज़हब बना लिया है. अधिकारों की मांग हर आदमी का दीन धर्म और ईमान हो गया है, और हर जायज़ या नाजायज़ तरीक़े से अपना मक़सद पूरा करना हर आदमी का नैतिक आदर्श हो गया है. पच्छिमी सभ्यता की इस भयंकर ग़लत कारी से सारी इन्सानी दुनिया की माली और रोज़गारी सतहों के नीचे क़यामत पैदा करने वाली आग की सुरंगें बिछ गई हैं. इन से हमारी सारी ज़िंदगी ही एक ज्वालामुखी पहाड़ बन गई है. बापू चाहते थे कि यह आग हमारी गांव की ज़िंदगी तक न पहुंच सके, क्यों कि अगर यहाँ के चालीस करोड़ आदमियों में यह आग भड़क उठी तो दुनिया के लिए इसे बुझाना बहुत कठिन हो जायगा. बापू मानते थे कि इस आग को बुझाने का केवल एक ही तरीक़ा है और वह यह है कि हम सब सादगी और स्वावलम्बन का रास्ता पकड़ें और सदाचार के बुनियादी असूलों से मदद लें. इस तरह ही हम पच्छिम की आग बरसाने वाली माली आँधियों से अपने को बचा सकते हैं.

اصولوں پر عمل کرنے کو مجبور ہو۔ یہ شکتی آج کل کی یونیورسٹیاں کالج یا اسکول پیدا نہیں کر سکتے۔ کوئی تعلیم چاہے وہ کتنی بھی اونچی سے اونچی کیوں نہ ہو جب تک دھرم، اور نیکی پر قائم نہ ہو، آدمی میں اس طرح کا سوبھاؤ اور اس طرح کے گن پیدا نہیں کر سکتی۔

پچھمی سبھیتا نے سداچار کی ایک بالکل نئی کسوٹی سنسار کے سامنے رکھ دی ہے۔ اس نے آدمی کی زندگی کے آرتھک پہلو کو اصلی زندگی مان کر باقی سب پہلوؤں کو اس پر قربان کر دیا ہے۔ ٹکے کو اور اپنے اپنے سوارتھ کو اس نے دنیا کا مذہب بنا لیا ہے۔ ادھیکاروں کی مانگ ہر آدمی کا دین دھرم اور ایمان ہو گیا ہے، اور ہر جائز یا ناجائز طریقے سے اپنا مقصد پورا کرنا ہر آدمی کا نیتک آدرش ہو گیا ہے۔ پچھمی سبھیتا کی اس بھینکر غلط کاری سے ساری انسانی دنیا کی مالی اور روزگاری سطحوں کے نیچے قیامت پیدا کرنے والی آگ کی سرنگیں بچھ گئی ہیں۔ ان سے ہماری ساری زندگی ہی ایک جوالا مکھی پہاڑ بن گئی ہے۔ باپو چاہتے تھے کہ یہ آگ ہماری گاؤں کی زندگی تک نہ پہنچ سکے۔ کیونکہ اگر یہاں کے چالیس کروڑ آدمیوں میں یہ آگ بھڑک اٹھی تو دنیا کے لئے اسے بجھانا بہت کٹھن ہو جائے گا۔ باپو مانتے تھے کہ اس آگ کو بجھانے کا کیول ایک ہی طریقہ ہے اور وہ یہ ہے کہ ہم سب سادگی اور سواولمبن کا راستہ پکڑیں اور سداچار کے بنیادی اصولوں سے مدد لیں۔ اس طرح ہی ہم پچھم کی آگ برسانے والی مالی آندھیوں سے اپنے کو بچا سکتے ہیں۔

हमने जान बूझ कर अपने समाजी जीवन को एक ऐसी लगातार खेंचातानी और जंग की शकल दे दी है जो सारी दुनिया को अपने असर में लिए हुए है और जिस में हर आदमी दूसरे का बैरी, हर एक अपना-अपना मोरचा संभाले हुए है और दूसरे की तरफ़ से उसे हर दम यह डर लगा हुआ है कि वह दूसरा इस के ख़िलाफ़ अपना मोरचा संभाले हुए है. दोनों एक दूसरे से कहते रहते हैं कि इन्साफ़ से काम लो. आपसी जंग से किसी का भला नहीं हो सकता. पर ऐसी हालत में सच्चा इन्साफ़ हो सकना बिलकुल अनहोनी बात है. इन्साफ़ प्रेम और इन्सानियत की हवा में ही पैदा हो सकता है और उसी में ही पनप सकता है. इन्साफ़ तभी हो सकता है जब हम दूसरे की भूक और उसके नंग का उतना ही ख़याल रखें जितना अपनी भूक और अपनी ज़रूरतों का. आजकल पच्छिम की सारी राजकाजी पार्टियाँ इस आदर्श को मानती हैं और इसी के आधार पर अपने क़ायदे क़ानून बनाती हैं. लोक राज यही चाहता है. पर एक तरफ़ यह सारे क़ायदे क़ानून हैं जो केवल काग़ज़ों पर लिखे रहते हैं और दूसरी तरफ़ हमारी दुनिया भर में फैली हुई माली खींचातानी और हमारी आए दिन की राज काजी जंगें हैं. इसका कारन यह है कि हम में से हर एक ने अपने आप को अपने स्वार्थ और अपनी इच्छाओं के क़िले में बन्द कर लिया है. दूसरों की इच्छाओं और उनकी ज़रूरतों से हम बिलकुल बेपरवाह हो गए हैं जैसे हमारा उनका कभी कोई सम्बन्ध ही नहीं रहा.

गीता कहती है कि यह रास्ता तुम्हें सुख शान्ति या सलामती की तरफ़ नहीं लेजा सकता. तुम सब भाई भाई हो. एक दूसरे के साथ इन्साफ़

ہم نے جان بوجھ کر اپنے سماجی جیون کو ایک ایسی لگاتار کھینچا تانی اور جنگ کی شکل دیدی ہے جو ساری دنیا کو اپنے اثر میں لئے ہوئے ہے اور جس میں ہر آدمی دوسرے کا بیری، ہر ایک اپنا اپنا مورچہ سنبھالے ہوئے ہے اور دوسرے کی طرف سے اُسے ہر دم یہ ڈر لگا ہوا ہے کہ وہ دوسرا اس کے خلاف اپنا مورچہ سنبھالے ہوئے ہے۔ دونوں ایک دوسرے سے کہتے رہتے ہیں کہ انصاف سے کام لو۔ آپسی جنگ سے کسی کا بھلا نہیں ہو سکتا۔ پر ایسی حالت میں سچا انصاف ہو سکنا بالکل ان ہونی بات ہے۔ انصاف پریم اور انسانیت کی ہوا میں ہی پیدا ہو سکتا ہے اور اسی میں ہی پنپ سکتا ہے۔ انصاف تبھی ہو سکتا ہے جب ہم دوسرے کی بھوک اور اس کے ننگ کا اتنا ہی خیال کریں جتنا اپنی بھوک اور اپنی ضرورتوں کا۔ آجکل پچھم کی ساری راج کاجی پارٹیاں اس آدرش کو مانتی ہیں اور اسی کے آدھار پر اپنے قاعدے قانون بناتی ہیں۔ لوک راج یہی چاہتا ہے۔ پر ایک طرف یہ سارے قاعدے قانون ہیں جو کیول کاغذوں پر لکھے رہتے ہیں اور دوسری طرف ہماری دنیا بھر میں پھیلی ہوئی مالی کھینچا تانی اور ہماری آئے دن کی راج کاجی جنگیں ہیں۔ اس کا کارن یہ ہے کہ ہم میں سے ہر ایک نے اپنے آپ کو اپنے سوارتھ اور اپنی اچھاؤں کے قلعے میں بند کر لیا ہے۔ دوسروں کی اچھاؤں اور اُن کی ضرورتوں سے ہم بالکل بے پرواہ ہو گئے ہیں جیسے ہمارا ان کا کبھی کوئی سمبندھ ہی نہیں رہا۔

گیتا کہتی ہے کہ یہ راستہ تمہیں سکھ شانتی یا سلامتی کی طرف نہیں لیجا سکتا۔ تم سب بھائی بھائی ہو۔ ایک دوسرے کے ساتھ انصاف

ही नहीं बल्कि एक दूसरे के लिये त्याग का रास्ता पकड़ो. वह कहती है कि जो कोई केवल अपने लिए चूल्हा जलाता है वह चोर है. अगर हम इस एक असूल के सारे पहलुओं को दिल में जमालें तो हमें सारे आर्थिक जीवन के नए संगठन के लिए बुनियाद का पत्थर मिल जाता है. सच यह है कि दुनिया में जरूरत की चीज़े कम हैं इस लिए हम किसी पैमाने पर भी दौलत और ताक़त में मरकज़ीयत पैदा करें तो वह हमारे लिए एक बहुत बड़ा ख़तरा बने बिना नहीं रह सकता. लोग हमारे इस ख़जाने को देखकर उसमें हिस्सा बँटाने के लिये बेचैन होंगे और हर उचित और अनुचित तरकीब से अपनी इच्छा को पूरी करने की कोशिश करेंगे. इसलिये अपने पास जरूरत से ज्यादा सामान रखना चोरी और बुराई है. इसी ने सब राष्ट्रों, गिरोहों और आदमियों को हथियारबंद डाकू बना दिया है. जब तक हम इस घातक रोग का पूरा इलाज नहीं करते हमें अपने दुखों से छुटकारा नहीं मिल सकता.

बापू ने साबरमती सत्याग्रह आश्रम के सब आश्रम वालों को एक बार जमा करके उनसे कहा कि, "हमें यहाँ इतने दिन हो चुके अब मेरी समझ में हम सब को अपरिग्रह का व्रत ले लेना चाहिये, जिसमें हम स्वावलम्बी हो जावें और दुनिया की किसी चीज़ के मोहताज न रहें." अपरिग्रह का मतलब है दुनिया की किसी भी छोटी बड़ी चीज़ को अपनी मिल्कियत न मानना. आश्रमवासी यह सुनकर सोचने लगे. बापू ने उन्हें एक दिन सोचने के लिये दिया. दूसरे दिन फिर सब जमा हुए. बापू के पूछने पर इनमें से एक भी अपरिग्रह का व्रत लेने को तैयार न हुआ. बापू ने

ہی نہیں بلکہ ایک دوسرے کے لئے تیاگ کا راستہ پکڑو۔ وہ کہتی ہے کہ جو کوئی کیول اپنے لئے چولھا جلاتا ہے وہ چور ہے۔ اگر ہم اس ایک اصول کے سارے پہلوؤں کو دل میں جما لیں، تو ہمیں سارے آرتھک جیون کے نئے سنگٹھن کے لئے بنیاد کا پتھر مل جاتا ہے۔ سچ یہ ہے کہ دنیا میں ضرورت کی چیزیں کم ہیں اس لئے ہم کسی پیمانے پر بھی دولت اور طاقت میں مرکزیت پیدا کریں تو وہ ہمارے لئے ایک بہت بڑا خطرہ بنے بنا نہیں رہ سکتا۔ لوگ ہمارے اس خزانے کو دیکھ کر اس میں حصہ بٹانے کے لئے بیچین ہوں گے اور ہر اُچت اور انوچت ترکیب سے اپنی اچھا کو پوری کرنے کی کوشش کریں گے۔ اسلئے اپنے پاس ضرورت سے زیادہ سامان رکھنا چوری اور برائی ہے۔ اسی نے سب راشٹروں، گروہوں اور آدمیوں کو ہتیار بند ڈاکو بنا دیا ہے۔ جب تک ہم اس گھاتک روگ کا پورا علاج نہیں کرتے ہمیں اپنے دکھوں سے چھٹکارا نہیں مل سکتا۔

باپو نے سابرمتی ستیاگرہ آشرم کے سب آشرم والوں کو ایک بار جمع کر کے ان سے کہا کہ "ہمیں یہاں اتنے دن ہو چکے اب میری سمجھ میں ہم سب کو اپری گرہ کا برت لے لینا چاہئے، جس میں ہم سواولمبی ہو جاویں اور دنیا کی کسی چیز کے محتاج نہ رہیں۔" اپری گرہ کا مطلب ہے دنیا کی کسی بھی چھوٹی بڑی چیز کو اپنی ملکیت نہ ماننا۔ آشرم واسی یہ سن کر سوچنے لگے۔ باپو نے انھیں ایک دن سوچنے کے لئے دیا۔ دوسرے دن پھر سب جمع ہوئے۔ باپو کے پوچھنے پر ان میں سے ایک بھی اپری گرہ کا برت لینے کو تیار نہ ہوا۔ باپو نے

कहा—"मैं तुम पर ज़ोर नहीं डालता, पर मैं आज से अपरिग्रह व्रत लेता हूँ." इसके कई बरस बाद बापू ने इंगलैंड के मान्चेस्टर शहर में वहाँ के मज़दूरों के सामने एक व्याख्यान दिया था जिसमें उन्होंने उनसे कहा था—"मैं अपरिग्रह का व्रत ले चुका हूँ फिर भी आप देखते हैं मैं यह चादर ओढ़े और लँगोटी पहने आपके सामने खड़ा हूँ, यह मेरी मजबूरी है. इतना ज़रूर है कि अगर आप में से किसी को मेरे यह कपड़े पसन्द आ जावें और वह इन्हें ले भागे तो मैं न उसकी रपट लिखाऊँगा और न उस पर दावा करूँगा." यही अपरिग्रह का पूरा रूप है.

सच यह है कि अपरिग्रह ग़ैर मरकज़ीयत की आख़िरी सीढ़ी है. बापू की सारी समग्र सेवा की यही जान है. यही आदर्श वह गाँव, शहर, ज़िला और देश सब के सामने रखना चाहते थे. राष्ट्र की ज़िन्दगी में भी वह यही करना चाहते थे. कोई देश जब तक सही मानी में अपरिग्रही नहीं बनेगा और अपनी ज़रूरतों के लिये दूसरों का मोहताज रहेगा तब तक उसे सच्चे अर्थों में राजकाजी या माली आज़ादी मिल ही नहीं सकती.

बापू के अपरिग्रही होते हुए भी कम्युनिस्ट जैसी कुछ पार्टियाँ उन्हें पूँजीवाद का एजेंट कहती थीं. दुख है कि यह लोग उन्हें समझ ही न सके. कम्युनिज़्म यानी साम्यवाद हिन्दू धर्म के इसी अपरिग्रह व्रत को समाजी पैमाने पर नेकनीयती के साथ अमली जामा पहनाने की कोशिश कर रहा है. पर दूसरी राजकाजी पार्टियों की तरह यह भी इस आदर्श तक जो हद दरजे का ग़ैर मरकज़ी आदर्श है, हद दरजे के मरकज़ी ढंग से पहुंचना चाहता है. उस उद्देश्य तक

کہا۔ "میں تم پر زور نہیں ڈالتا، پر میں آج سے اپری گرہ ورت لیتا ہوں" اس کے کئی برس بعد باپو نے انگلینڈ کے مانچسٹر شہر میں وہاں کے مزدوروں کے سامنے ایک ویاکھیان دیا تھا جس میں انہوں نے ان سے کہا تھا۔ "میں اپری گرہ کا برت لے چکا ہوں پھر بھی آپ دیکھتے ہیں میں یہ چادر اوڑھے اور لنگوٹی پہنے آپ کے سامنے کھڑا ہوں، یہ میری مجبوری ہے۔ اتنا ضرور ہے کہ اگر آپ میں سے کسی کو میرے یہ کپڑے پسند آجاویں اور وہ انہیں لے بھاگے تو میں نہ اس کی رپٹ لکھاؤں گا اور نہ اس پر دعویٰ کروں گا۔" یہ اپری گرہ کا پورا روپ ہے۔

سچ یہ ہے کہ اپری گرہ غیر مرکزیت کی آخری سیڑھی ہے۔ باپو کی ساری سمگر سیوا کی یہی جان ہے۔ یہی آدرش وہ گاؤں، شہر، ضلع اور دیش سب کے سامنے رکھنا چاہتے تھے۔ راشٹر کی زندگی میں بھی وہ یہی کرنا چاہتے تھے۔ کوئی دیش جب تک سہی معنوں میں اپری گرہی نہیں بنے گا اور اپنی ضرورتوں کے لیے دوسروں کا محتاج رہے گا تب تک اُسے سچے ارتھوں میں راج کاجی یا مالی آزادی مل ہی نہیں سکتی۔

باپو کے اپری گرہی ہوتے ہوئے بھی کمیونسٹ جیسی کچھ پارٹیاں انہیں پونجی واد کا ایجنٹ کہتی تھیں۔ دکھ ہے کہ یہ لوگ انہیں سمجھ ہی نہ سکے۔ کمیونزم یعنی سامیہ واد ہندو دھرم کے اسی اپری گرہ برت کو سماجی پیمانے پر نیک نیتی کے ساتھ عملی جامہ پہنانے کی کوشش کر رہا ہے۔ پر دوسری راج کاجی پارٹیوں کی طرح یہ بھی اس آدرش تک جو حد درجے کا غیر مرکزی آدرش ہے، حد درجے کے مرکزی ڈھنگ سے پہنچنا چاہتا ہے۔ اس اُدیشیہ تک

पहुँचने के लिये कम्युनिस्ट सारे राष्ट्र या क़ौम की बल्कि सारी इन्सानी क़ौम की एक मरकजी हुकूमत क़ायम करना चाहते हैं. सारी दुनिया की दौलत और ताक़त को एक मरकज़ पर जमा कर देना हद दरजे का पूँजीवाद है. आगे चल कर इन लोगों का दावा है कि वह इस सारी दौलत और ताक़त को बराबर बराबर सब आदमियों में बाँट देंगे. बापू जब ज़मींदारों, राजाओं, अमीरों, और हुकूमतों से कहते हैं कि तुम अपनी दौलत के जनता की तरफ़ से ट्रस्टी बन जाओ तो कम्युनिस्ट उन पर हँसते हैं और कहते हैं कि यह बात इन्सानी सुभाव के ख़िलाफ़ है. पर ख़ुद इसी इन्सानी स्वभाव पर इतना बड़ा ट्रस्टियों का महल बनाने की कोशिश कर रहे हैं.

इसमें शक नहीं कि ताक़त और दौलत के बल पर इस तरह का महल बनाया जा सकता है. दुनियां इसी तरह का महल बनाने की तरफ़ तेज़ी से दौड़ी जा रही है. पर बन जाने के बाद भी यह महल बराबर टूटता और फिर से बनता रहेगा. इसमें मजबूती और टिकाऊपन उसी पैमाने पर पैदा होगा जिस पैमाने पर वह हुकूमत अपरिग्रह के व्रत और स्वावलम्बन के असूल को जनता के जीवन का अमली और सच्चा हिस्सा बना सकेगी. बापू का यह नया विधान सैकड़ों बरस की ख़ूनी खेंचातानी और बरबादी से समाज को बचा ले जाने का सबसे सस्ता और सीधा रास्ता है. बापू का मंशा यह है कि उस नई दुनिया की तामीर जिसकी जान लोकराज और इन्सानी भाईचारा है, ज़मीन से शुरू करो, इसकी बुनियादें एक एक गांव के अन्दर एक एक आदमी के सदाचार को

پہنچنے کے لئے کمیونسٹ سارے راشٹر یا قوم کی بلکہ ساری انسانی قوم کی ایک مرکزی حکومت قائم کرنا چاہتے ہیں۔ ساری دنیا کی دولت اور طاقت کو ایک مرکز پر جمع کر دینا حد درجہ کا پونجی واد ہے۔ آگے چل کر ان لوگوں کا دعویٰ ہے کہ وہ اس ساری دولت اور طاقت کو برابر برابر سب آدمیوں میں بانٹ دیں گے۔ باپو جب زمینداروں راجاؤں امیروں اور حکومتوں سے کہتے ہیں کہ تم اپنی دولت کے جنتا کی طرف سے ٹرسٹی بن جاؤ تو کمیونسٹ ان پر ہنستے ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ بات انسانی سوبھاؤ کے خلاف ہے اور خود اسی انسانی سوبھاؤ پر اتنا بڑا ٹرسٹیوں کا محل بنانے کی کوشش کر رہے ہیں۔

اس میں شک نہیں کہ طاقت اور دولت کے بل پر اس طرح کا محل بنایا جا سکتا ہے۔ دنیا اسی طرح کا محل بنانے کی طرف تیزی سے دوڑی جا رہی ہے۔ پر بن جانے کے بعد بھی یہ محل برابر ڈھتا اور پھر سے بنتا رہے گا۔ اس میں مضبوطی اور ٹکاؤ پن اسی پیمانے پر پیدا ہوگا جس پیمانے پر وہ حکومت اپری گرہ کے ورت اور سواولمبن کے اصول کو جنتا کے جیون کا عملی اور سچا حصہ بنا سکے گی۔ باپو کا یہ نیا ودھان سیکڑوں برس کی خونی کھینچا تانی اور بربادی سے سماج کو بچا لے جانے کا سب سے سستا اور سیدھا راستہ ہے۔ باپو کا منشا یہ ہے کہ اس نئی دنیا کی تعمیر جس کی جان لوک راج اور انسانی بھائی چارہ ہے، زمین سے شروع کرو، اس کی بنیادیں ایک ایک گاؤں کے اندر ایک ایک آدمی کے سداچار

ठीक करने और ऊँचे से ऊँचे ले आने पर क़ायम करो. बापू का कहना है कि जब तक तुम इस महल को नीचे से मज़बूत बुनियादों पर नहीं उठाओगे यह बराबर तुम पर गिर गिर कर तुम्हें कुचलता और बरबाद करता रहेगा.

बापू ने इस विधान की दफ़ा ७ में इस महल की गहरी से गहरी बुनियादें डालने की दागबेल रखी है. जिस तरह समग्र सेवा और स्वावलम्बन दुनिया की नई तामीर की सच्ची बुनियादें हैं उसी तरह बापू की 'नई तालीम' समग्र सेवा और स्वावलम्बन की बुनियाद है. जब तक हम समग्र सेवा के तरीक़े और प्रोग्राम और स्वालम्बन के असूल अपने बच्चों को उनकी घुट्टी के साथ नहीं पिलाते तब तक दुनिया की कोई भी नई तामीर नहीं हो सकती. दुनिया ने मां और बच्चे की सच्ची तालीम की तरफ़ अभी तक बहुत कम ध्यान दिया है और उसके ठीक ठीक महत्व को भी नहीं समझी है. उसी का नतीजा है कि आज दुनिया इतने अधिक वसीले, इतना अधिक सामान और इतने ऊँचे आदर्श रखते हुए भी इतनी दुखी और बरबाद है. एक तरफ़ तो दुनिया का आदर्श इस समय लोक-राज और इन्सानी भाईचारा है और दूसरी तरफ़ दुनिया भर के सब स्कूल और कालेजों में वह फ़ौजी तालीम दी जाती है जो एक दूसरे की मारकाट, लूटपाट और हर तरह की "एख़लाक़ी बुराइयों की जड़ है. दुनिया भर के बच्चों को इसी मारकाट की ओर जीवन के हर पहलू में एक दूसरे के साथ बुरी से बुरी लागडाट और खेंचा-तानी की तालीम दी जाती है. जब तक यह सारी यूनिवर्सिटियाँ स्कूल और कालेज तोड़ कर ख़त्म नहीं किये जाते और इनकी जगह नई

ٹھیک کرنے اور اونچے سے اونچے لے جانے پر قائم کرو۔ باپو کا کہنا ہے کہ جب تک تم اس محل کو نیچے سے مضبوط بنیادوں پر نہیں اٹھاؤ گے یہ برابر تم پر گر گر کر تمہیں کچلتا اور برباد کرتا رہے گا۔

باپو نے اس ودھان کی دفعہ ۷ میں اس محل کی گہری سے گہری بنیادیں ڈالنے کی داغ بیل رکھی ہے۔ جس طرح سمگر سیوا اور سواولمبن دنیا کی نئی تعمیر کی سچی بنیادیں ہیں اسی طرح باپو کی 'نئی تعلیم' سمگر سیوا اور سواولمبن کی بنیاد ہے۔ جب تک ہم سمگر سیوا کے طریقے اور پروگرام اور سواولمبن کے اصول اپنے بچوں کو انکی گھٹی کے ساتھ نہیں پلاتے تب تک دنیا کی کوئی بھی نئی تعمیر نہیں ہو سکتی۔ دنیا نے ماں اور بچے کی سچی تعلیم کی طرف ابھی تک بہت کم دھیان دیا ہے اور اس کے ٹھیک ٹھیک مہتو کو بھی نہیں سمجھی ہے۔ اسی کا نتیجہ ہے کہ آج دنیا اتنے ادھک وسیلے، اتنا ادھک سامان اور اتنے اونچے آدرش رکھتے ہوئے بھی اتنی دکھی اور برباد ہے۔ ایک طرف تو دنیا کا آدرش اس سمے لوک راج اور انسانی بھائی چارہ ہے اور دوسری طرف دنیا بھر کے سب اسکول اور کالجوں میں وہ فوجی تعلیم دی جاتی ہے جو ایک دوسرے کو مارکاٹ، لوٹ پاٹ اور ہر طرح کی اخلاقی برائیوں کی جڑ ہے۔ دنیا بھر کے بچوں کو اسی مارکاٹ کی اور جیون کے ہر پہلو میں ایک دوسرے کے ساتھ بری سے بری لاگ ڈاٹ اور کھینچا تانی کی تعلیم دی جاتی ہے۔ جب تک یہ ساری یونیورسٹیاں اسکول اور کالج توڑ کر ختم نہیں کیے جاتے اور ان کی جگہ نئی

तालीम और नई तरबियत का प्रबन्ध नहीं होता तब तक दुनिया अपना आजकल का रंग ढंग नहीं बदल सकती और न सच्चा लोकराज या भाई चारा क़ायम कर सकती है.

बापू ने तालीम की बुनियाद स्वावलम्बन पर रख कर उस अथाह धन, समय, और शक्ति को बरबादी से बचाने का प्रोग्राम दुनिया के सामने रखा है जिसे हमारे आजकल के स्कूल, कालेज, अस्पताल और राज के सारे मुहकमे इस बेदर्दी के साथ बरबाद कर रहे हैं. बच्चों को केवल दिमाग़ी तालीम देना और साहित्य पढ़ाना जब तक कि उनकी बुनियाद इन्सानियत और सदाचार पर क़ायम न हो, उन्हें अनपढ़ रखने से ज्यादा बुरा और ख़तरनाक है. विद्या और बुद्धि दोनों जबरदस्त शक्तियाँ हैं. ठीक उसी तरह जिस तरह शरीर का बल एक शक्ति है. हर शक्ति का ठीक और ग़लत दोनों तरह का इस्तेमाल हो सकता है. विद्या और बुद्धि की शक्ति अगर किसी के हाथ में दे दी जावे और उसके सदाचार को ठीक करके इन शक्तियों के ठीक-ठीक इस्तेमाल का ढंग उसे न बताया जावे तो इस में लगभग वैसा ही ख़तरा है जैसा बापू को सत्याग्रह का हथियार हिन्दुस्तान के हाथ में देकर बिना उसका ठीक-ठीक इस्तेमाल सिखाये चौरी चौरा के समय तजरबा हुआ था. यह अमली तालीम अगर अधूरी भी रह जाय तब भी उससे वही ग़लत नतीजे पैदा होंगे जो सत्याग्रह के ग़लत इस्तेमाल से हिन्दुस्तान में हुए. जिस तरह बापू ने सत्याग्रह के ठीक इस्तेमाल के लिये रचनात्मक प्रोग्राम तैयार किया था उसी तरह समग्रसेवा और स्वावलम्बन के ठीक इस्तेमाल और उनकी कामयाबी के लिये नई

تعلیم اور نئی تربیت کا پربندھ نہیں ہوتا تب تک دنیا اپنا آجکل رنگ ڈھنگ نہیں بدل سکتی اور نہ سچا لوک راج یا بھائی چارہ قائم کر سکتی ہے۔

باپو نے تعلیم کی بنیاد سواولمبن پر رکھ کر اس اتھاہ دھن، سمے، اور شکتی کو بربادی سے بچانے کا پروگرام دنیا کے سامنے رکھا ہے جسے آج کل کے ہمارے اسکول، کالج، اسپتال اور راج کے سارے محکمے اس بیدردی کے ساتھ برباد کر رہے ہیں۔ بچوں کو کیول دماغی تعلیم دینا اور ساہتیہ پڑھانا جب تک کہ اُن کی بنیاد انسانیت اور سداچار پر قائم نہ ہو، انھیں ان پڑھ رکھنے سے زیادہ بُرا اور خطرناک ہے۔ ودّیا اور بدّھی دونوں زبردست شکتیاں ہیں۔ ٹھیک اُسی طرح جس طرح شریر کا بل ایک شکتی ہے۔ ہر شکتی کا ٹھیک اور غلط دونوں طرح کا استعمال ہو سکتا ہے۔ ودّیا اور بدّھی کی شکتی اگر کسی کے ہاتھ میں دے دی جاوے اور اس کے سداچار کو ٹھیک کرکے ان شکتیوں کے ٹھیک ٹھیک استعمال کا ڈھنگ اُسے نہ بتایا جاوے تو اس میں لگ بھگ ویسا ہی خطرہ ہے جیسا باپو کو ستیاگرہ کا ہتھیار ہندستان کے ہاتھ میں دیکر بنا اس کا ٹھیک ٹھیک استعمال سکھلائے چوری چورا کے سمے تجربہ ہوا تھا۔ یہ عملی تعلیم اگر ادھوری بھی رہ جائے تب بھی اُس سے وہی غلط نتیجے پیدا ہوں گے جو ستیاگرہ کے غلط استعمال سے ہندستان میں ہوئے۔ جس طرح باپو نے ستیاگرہ کے ٹھیک استعمال کے لئے رچناتمک پروگرام تیار کیا تھا اُسی طرح سمگر سیوا اور سواولمبن کے ٹھیک استعمال اور اُن کی کامیابی کے لئے نئی

तालीम जरूरी है. इस नई तालीम को बापू ने पूरा-पूरा अपने नये विधान में शामिल कर लिया है.

हमारी आजकल की तालीम के बुरे नतीजों का सबसे अच्छा सबूत इस तालीम के बड़े से बड़े पंडितों और जानकारों के अमली करनामे हैं. जो बड़ी-बड़ी जंगें आए दिन दुनिया में हो रही हैं और जिनके लिये दुनिया अब भी इतने जोश के साथ तैयारी करती रहती है उनका हो सकना बिना आजकल के कालिजों और यूनीवर्सिटियों के बड़े-बड़े पंडितों और साइंसदानों की दिली मदद के नामुमकिन था. प्राइमरी स्कूलों से लेकर बड़ी से बड़ी यूनीवर्सिटियों तक सब में फौजी तालीम के चरचे हैं. इसी हवा में नये लोकराज की रचना की उम्मीदें की जा रही हैं. इससे बढ़कर बदनसीबी दुनिया की जनता के लिये और क्या हो सकती है.

बापू ने इसी खतरे को मिटाने के लिये अपनी नई तालीम का आन्दोलन शुरू किया है. बच्चों के स्कूलों को इस तरह का रूप देना कि बच्चों की बुनियादी जरूरतें सब वहीं पर उन्हीं के हाथों पूरी हो सकें और बच्चों में अपनी तालीम का बोझ दूसरों पर न डाल कर सब खर्चा खुद निकालना और उनमें शुरू से ही यह विचार पैदा करना कि हम खुद अपने पैरों पर खड़े होंगे. इसी तरह से उनके दिल से ऊँच नीच, अमीर ग़रीब, नौकर मालिक के वह सब भेद भाव निकाल देना जो लोकराज और इन्सानी भाई चारे के लिये सबसे बड़े कलंक हैं. यही बापू की नई तालीम का असली मकसद और उसका असली रूप है. जब तक बच्चा इस तरह के विचारों को मां के पेट से लेकर पैदा नहीं होता, और जबतक जीवन के हर पहलू में

تعلیم ضروری ہے۔ اس نئی تعلیم کو باپو نے پورا پورا اپنے نئے ودھان میں شامل کر لیا ہے۔

ہماری آج کل کی تعلیم کے بُرے نتیجوں کا سب سے اچھا ثبوت اس تعلیم کے بڑے سے بڑے پنڈتوں اور جانکاروں کے عملی کارنامے ہیں۔ جو بڑی بڑی جنگیں آئے دن دنیا میں ہو رہی ہیں اور جن کے لئے دنیا اب بھی اتنے جوش کے ساتھ تیاری کرتی رہتی ہے اُن کا ہو سکنا بنا آج کل کے کالجوں اور یونیورسٹیوں کے بڑے بڑے پنڈتوں اور سائنسدانوں کی دلی مدد کے ناممکن تھا۔ پرائمری اسکولوں سے لے کر بڑی سے بڑی یونیورسٹیوں تک سب میں فوجی تعلیم کے چرچے ہیں۔ اسی ہوا میں نئے لوک راج کی رچنا کی امیدیں کی جا رہی ہیں۔ اس سے بڑھ کر بدنصیبی دنیا کی جنتا کے لئے اور کیا ہو سکتی ہے۔

باپو نے اسی خطرے کو مٹانے کے لئے اپنی نئی تعلیم کا اندولن شروع کیا ہے۔ بچوں کے اسکولوں کو اس طرح کا روپ دینا کہ بچوں کی بنیادی ضرورتیں سب وہیں پر انھیں کے ہاتھوں پوری ہو سکیں اور بچوں میں اپنی تعلیم کا بوجھ دوسروں پر نہ ڈال کر سب خرچ خود نکالنا اور اُن میں شروع ہی سے یہ وچار پیدا کرنا کہ ہم خود اپنے پیروں پر کھڑے ہونگے۔ اسی طرح سے اُنکے دل سے اونچ نیچ، امیر غریب، نوکر مالک کے وہ سب بھید بھاؤ نکال دینا جو لوک راج اور انسانی بھائی چارے کے لئے سب سے بڑے کلنک ہیں۔ یہی باپو کی نئی تعلیم کا اصلی مقصد اور اس کا اصلی روپ ہے۔ جب تک بچے اس طرح کے وچاروں کو ماں کے پیٹ سے لے کر پیدا نہیں ہوتا، اور جب تک جیون کے ہر پہلو میں

किसी न किसी रूप में उसे इन्हीं चीजों की तालीम नहीं दी जाती तब तक दुनिया की आजकल की हवा नहीं बदल सकती.

बापू की नई तालीम को हमारे पढ़े लिखे लोग कुछ अनोखे ढंग से देखते हैं. वह कहते हैं कि बच्चों की तालीम खर्च की निगाह से .खुद अपने पैरों पर खड़ी हो ही नहीं सकती. वह यह नहीं देखते कि बच्चों में इस विचार का पैदा करना और इसे सामने रख कर तालीम का दिया जाना ही इस मक़सद को हासिल कर लेना है. और तालीम का जितना खर्च भी इस तरह से निकल आवे वह ब्याज की तरह है. इस तरह के मक़सद को पूरा करने के लिये आदमी का ईमानदारी और लगन के साथ चिपट जाना ऐसे-ऐसे नतीजे पैदा कर देता है जिनकी दुनिया को कभी उम्मीद न होती थी. किसी ऊंचे मक़सद की, अगर वह मक़सद ठीक है तो, कोशिश से हट जाना कमज़ोरी और कम हिम्मती है.

बापू ने अपने विधान में नई तालीम से पहिले ही दफ़ा ६ में तन्दुरुस्ती और सफ़ाई की चरचा की है. सब जानते हैं कि बापू क़ुदरती इलाज में विश्वास रखते थे. दवाओं में उन्हें बिलकुल विश्वास न था. सफ़ाई के मामले में वह कहते थे कि हर आदमी को अपनी हर तरह की साफ़ाई .खुद करनी चाहिये. इसमें किसी दूसरे का मोहताज होना उस दूसरे पर ज़ुल्म करना है और नेकी और भाई-चारे के असूलों के खिलाफ़ है. बीमारों, बच्चों और कमज़ोरों की बात अलग है हम यहाँ इन पहलुओं की अधिक व्याख्या नहीं करना चाहते. यहाँ हम इतना कह देना चाहते हैं कि क़ुदरती इलाज और सफ़ाई दोनों तरीक़े बापू के स्वावलम्बन की जीती जागती तस्वीर हैं.

کسی نہ کسی روپ میں اُسے انھیں چیزوں کی تعلیم نہیں دی جاتی تب تک دنیا کی آج کل کی ہوا نہیں بدل سکتی۔

باپو کی نئی تعلیم کو ہمارے پڑھے لکھے لوگ کچھ انوکھے ڈھنگ سے دیکھتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ بچوں کی تعلیم خرچ کی نگاہ سے خود اپنے پیروں پر کھڑی ہو ہی نہیں سکتی۔ وہ یہ نہیں دیکھتے کہ بچوں میں اس وچار کا پیدا کرنا اور اسے سامنے رکھ کر تعلیم کا دیا جانا ہی اس مقصد کو حاصل کر لینا ہے۔ اور تعلیم کا جتنا خرچ بھی اس طرح سے نکل آوے وہ بیاج کی طرح ہے۔ اس طرح کے مقصد کو پورا کرنے کے لئے آدمی کا ایمانداری اور لگن کے ساتھ چپٹ جانا ایسے ایسے نتیجے پیدا کر دیتا ہے جن کی دنیا کو کبھی امید نہ ہوتی تھی۔ کسی اونچے مقصد کو، اگر وہ مقصد ٹھیک ہے تو، کوشش سے ہٹ جانا کمزوری اور کم ہمتی ہے۔

باپو نے اپنے ودھان میں نئی تعلیم میں پہلے ہی دفعہ ۶ میں تندرستی اور صفائی کی چرچا کی ہے۔ سب جانتے ہیں کہ باپو قدرتی علاج میں وشواس رکھتے تھے۔ دواؤں میں انہیں بالکل وشواس نہ تھا۔ صفائی کے معاملے میں وہ کہتے تھے کہ ہر آدمی کو اپنی ہر طرح کی صفائی خود کرنی چاہئے۔ اس میں کسی دوسرے کا محتاج ہونا اس دوسرے پر ظلم کرنا ہے اور نیکی اور بھائی چارے کے اصولوں کے خلاف ہے۔ بیماروں، بچوں اور کمزوروں کی بات الگ ہے ہم یہاں ان پہلوؤں کی ادھک ویاکھیا نہیں کرنا چاہتے۔ یہاں ہم اتنا کہہ دینا چاہتے ہیں کہ قدرتی علاج اور صفائی دونوں طریقے باپو کے سوالمبن کی جیتی جاگتی تصویر ہیں۔

जहाँ तक इस विधान के समाजी पहलू का सवाल है बापू ने इसके लिये कोई अलग दफ़ा नहीं रखी. और पहलुओं में तो बहुत सी बाहर की चीज़ों के जानने की ज़रूरत होती भी है पर समाजी जीवन को तो ऊँचे से ऊँचा ले जाने के लिये सिवाय उन पाँच असूलों के और किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है—चोरी न करो, किसी को मारो मत, ज़िना न करो, सच बोलो और एक दूसरे के साथ भाई चारे का बर्ताव करो, इसके लिये और किसी नई जानकारी या नई तालीम की ज़रूरत नहीं है. हमारी समाजी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि इन असूलों को जानते हुए भी हम इनके अमल से बचते और भागते रहते हैं. इसीलिये बापू ने इन्हें अपने विधान की किसी दफ़ा में शामिल न करके इन्हें सेवकों या काम करने वालों के अमली जीवन में जगह दी है.

विधान में काम करने वालों के लिये जो बातें ज़रूरी बताई गई हैं उन्हें देखने से पता चलता है कि बापू उन सब दीवारों और रुकावटों को मिटाकर जो एक आदमी को दूसरे आदमी से और एक गिरोह को दूसरे गिरोह से अलग करती हैं सारी इन्सानी दुनिया को एक कुटुम्ब में ढाल देना चाहते हैं. यही बापू का समाजी प्रोग्राम है. हिन्दू धर्म का असूल है. "वसुधैव कुटुम्बकम" यानी सारी दुनिया एक छोटा सा कुटुम्ब है. क़ुरान में लिखा है कि "सब मख़लूक़ यानी प्राणीमात्र अल्लाह का कुनबा है और इनमें अल्लाह को सब से ज़्यादा प्यारा वह है जो अल्लाह के इस कुनबे की सेवा करता है." मुहम्मद साहब अपनी नमाज़ों में रोज़ दुहराया करते थे "मैं गवाही देता हूँ कि दुनियाके सब आदमी आपस में भाई भाई हैं."

جہاں تک اس ودھان کے سماجی پہلو کا سوال ہے باپو نے اس کے لئے کوئی الگ دفعہ نہیں رکھی ۔ اور پہلوؤں میں تو بہت سی باہر کی چیزوں کے جاننے کی ضرورت ہوتی بھی ہے پر سماجی جیون کو تو اونچے سے اونچے لے جانے کے لئے سوائے ان پانچ اصولوں کے اور کسی چیز کی ضرورت نہیں ہے— چوری نہ کرو، کسی کو مارو مت، زنا نہ کرو، سچ بولو اور ایک دوسرے کے ساتھ بھائی چارے کا برتاؤ کرو، اس کے لئے اور کسی نئی جانکاری یا نئی تعلیم کی ضرورت نہیں ہے۔ ہماری سماجی زندگی کی سب سے بڑی کٹھنائی یہ ہے کہ ان اصولوں کو جانتے ہوئے بھی ہم ان کے عمل سے بچتے اور بھاگتے رہتے ہیں ۔ اس لئے باپو نے انھیں اپنے ودھان کی کسی دفعہ میں شامل نہ کر کے انھیں سیوکوں یا کام کرنے والوں کے عملی جیون میں جگہ دی ہے۔

ودھان میں کام کرنے والوں کے لئے جو باتیں ضروری بتائی گئی ہیں انھیں دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ باپو ان سب دیواروں اور رکاوٹوں کو مٹا کر جو ایک آدمی کو دوسرے آدمی سے اور ایک گروہ کو دوسرے گروہ سے الگ کرتی ہیں ساری انسانی دنیا کو ایک کٹمب میں ڈھال دینا چاہتے ہیں ۔ یہی باپو کا سماجی پروگرام ہے۔ ہندو دھرم کا اصول ہے "وسودھیو کٹمبکم"۔ یعنی ساری دنیا ایک چھوٹا سا کٹمب ہے۔ قرآن میں لکھا ہے کہ "سب مخلوق یعنی پرانی ماتر اللہ کا کنبہ ہے اور ان میں اللہ کو سب سے زیادہ پیارا وہ ہے جو اللہ کے اس کنبے کی سیوا کرتا ہے۔" محمد صاحب اپنی نمازوں میں روز دُہرایا کرتے تھے "میں گواہی دیتا ہوں کہ دنیا کے سب آدمی آپس میں بھائی بھائی ہیں"

हजरत ईसा, बुद्ध, जरतश्त और सब धर्मों के चलाने वालों ने सब मनुष्यों को एक इन्सानी भाईचारे के साँचे में ढाल देना अपने मजहब और अपने मिशन का असली मक़सद बताया है. उन्हीं उपदेशों का नतीजा है कि पूरब में और पच्छिम में सब जीवित राजकाजी पार्टियाँ इस भाई चारे और इन्सानी बराबरी को कम से कम अपने दायरे में नेकनीयती के साथ अमली रूप देना चाहती हैं. यही उन सबका दावा भी है. लोकराज इसी विचार का राजकाजी रूप है. समाजवाद या सोशलिज्म इसी का समाजी रूप है. साम्य वाद या कम्युनिज्म इसी का आर्थिक रूप है. यह सब बड़े से बड़े पैमाने या इसी इन्सानी भाई चारे को क़ायम करने की शोशिशें हैं.

पर इस सच्चे भाई चारे के क़ायम होने के रास्ते में दो जबरदस्त कठिनाइयाँ हैं जिनपर हम अभी तक क़ाबू नहीं पा 'रहे हैं. पहिली कठिनाई तो यह है कि आजकल की इन्सानी दुनिया के मजहबी, समाजी. माली और रोजगारी साँचे बन जाने और उनमें इन्सानी दुनिया के ढल जाने के लाखों साल बाद आदमी ने पुरी तरह मानव प्रेम और इन्सानी भाई चारे की ताक़त और जरूरत को समझ पाया. इन्सानी समाज के यह साँचे लोहे के साँचों से भी ज्यादा कड़े हैं इन्हें बदलना या तोड़ना आसान काम नहीं है. पर हमें यह काम करना ही है. दूसरी इससे भी बड़ी कठिनाई यह है कि आम तौर पर दुनिया के वह मजहबी आन्दोलन जो इन्सानी भाई चारा क़ायम करना चाहते हैं और ख़ास तौर पर वह राजकाजी आन्दोलन जिनकी हम ऊपर चरचा कर आये हैं इस मानव आन्दोलन यानी इस इन्सानी तहरीक को तलवार और हिंसा के बल पर

حضرت عیسیٰ، بُدھ، زرتشت اور سب دھرموں کے چلانے والوں نے سب منشیوں کو ایک انسانی بھائی چارے کے سانچے میں ڈھال دینا اپنے مذہب اور اپنے مشن کا اصلی مقصد بتایا ہے۔ انھیں اپدیشوں کا نتیجہ ہے کہ پورب میں اور پچھم میں سب جیوت راج کاجی پارٹیاں اس بھائی چارے اور انسانی برابری کو کم سے کم اپنے دائرے میں نیک نیتی کے ساتھ عملی رُوپ دینا چاہتی ہیں۔ یہی اُن سب کا دعویٰ بھی ہے۔ لوک راج اسی وچار کا راج کاجی رُوپ ہے۔ سماج واد یا سوشلزم اسی کا سماجی رُوپ ہے۔ سامیہ واد یا کمیونزم اسی کا آرتھک رُوپ ہے۔ یہ سب بڑے سے بڑے پیمانے یا اسی انسانی بھائی چارے کو قائم کرنے کی کوششیں ہیں۔

(۱۵۰)

پر اس سچے بھائی چارے کے قائم ہونے کے راستے میں دو زبردست کٹھنائیاں ہیں جن پر ہم ابھی تک قابو نہیں پا رہے ہیں۔ پہلی کٹھنائی تو یہ ہے کہ آج کل کی انسانی دنیا کے مذہبی، سماجی، مالی اور روزگاری سانچے بن جانے اور اُن میں انسانی دنیا کے ڈھل جانے کے لاکھوں سال بعد آدمی نے پوری طرح مانو پریم اور انسانی بھائی چارے کی طاقت اور ضرورت کو سمجھ پایا۔ انسانی سماج کے یہ سانچے لوہے کے سانچوں سے بھی زیادہ کڑے ہیں انھیں بدلنا یا توڑنا آسان کام نہیں ہے۔ پر ہمیں یہ کام کرنا ہی ہے۔ دوسری اس سے بھی بڑی کٹھنائی یہ ہے کہ عام طور پر دنیا کے وہ مذہبی اندولن جو انسانی بھائی چارا قائم کرنا چاہتے ہیں اور خاص طور پر وہ راج کاجی اندولن جن کی ہم اوپر چرچا کر آئے ہیں اس مانو اندولن یعنی اس انسانی تحریک کو تلوار اور ہنسا کے بل پر

कामयाब करना चाहते हैं. वह यह नहीं देख पाते कि आदमी एक जानदार चीज़ है, उसके दिल भी है. उसे इस दुनिया के हावनदस्ते में तोपों और ऐटमबमों से कूट पीस कर इन्सानी भाई चारे के साँचे में नहीं ढाला जा सकता. यह ग़लत तरीक़े आपस की नफ़रतों, गुस्सों और चिढ़ा चिढ़ी की आगों को और भी भड़का देते हैं. जहाँ तक इस कठिनाई का सवाल है वहाँ तक बापू ने जिस पैमाने पर आदमी की इस ग़लत चाल का मुक़ाबला किया है उतना शायद किसी दूसरे आदमी ने नहीं किया.

हम जिन आदर्शों को ठीक मानते हैं उन पर अमल नहीं करते न उनको अपनी जिन्दगी में कोई जगह देते हैं. बापू ने इसका हल यह निकाला कि अपने विधान में केवल ऐसे सेवकों को ही ज़िम्मेदारी सुपुर्द की है जो अपने असूलों पर पूरी तरह अमल करते हों. विधान के उस हिस्से को जिसमें सेवकों के गुन बताए गये हैं हम नीचे देते हैं:—

"हर काम करने वाले को अपने हाथ के कते सूत की या आल इंडिया चरखा संघ को तसदीक़ की हुई खादी पहनने की आदत होनी ज़रूरी है. यह भी ज़रूरी है कि वह शराब व सब नशे की चीज़ों से परहेज़ करता हो. अगर वह हिन्दू है तो यह ज़रूरी है कि उसने अपने निजी जीवन में और अपने कुटुम्ब के जीवन में, हर शक्ल सूरत में छुआ छूत को बिलकुल छोड़ दिया हो और वह साम्प्रदायिक एकता के आदर्श में विश्वास रखता हो, और सब धर्म मज़हबों के लिये उसके दिल में बराबर का आदर और मान हो और नस्ल, धर्म या मर्द औरत के फ़र्क़ का ख़याल न करते हुए सबको बराबर

کامیاب کرنا چاہتے ہیں ۔ وہ یہ نہیں دیکھ پاتے کہ آدمی ایک جاندار چیز ہے اُس کے دل بھی ہے ۔ اُسے اس دنیا کے ہاون دستے میں توپوں اور ایٹم بموں سے کوٹ پیس کر انسانی بھائی چارے کے سانچے میں نہیں ڈھالا جاسکتا ۔ یہ غلط طریقے آپس کی نفرتوں، غصّوں اور ضد اضدی کی آگوں کو اور بھی بھڑکا دیتے ہیں ۔ جہاں تک اس کٹھنائی کا سوال ہے وہاں تک باپو نے جس پیمانے پر آدمی کی اس غلط چال کا مقابلہ کیا ہے اتنا شاید کسی دوسرے آدمی نے نہیں کیا ۔

ہم جن آدرشوں کو ٹھیک مانتے ہیں ان پر عمل نہیں کرتے نہ ان کو اپنی زندگی میں کوئی جگہ دیتے ہیں ۔ باپو نے اس کا حل یہ نکالا کہ اپنے ودھان میں کیول ایسے سیوکوں کو ہی ذمہ داری سپرد کی ہے جو اپنے اصولوں پر پوری طرح عمل کرتے ہوں ۔ ودھان کے اس حصّے کو جس میں سیوکوں کے گُن بتائے گئے ہیں ہم نیچے دیتے ہیں :—

"ہر کام کرنے والے کو اپنے ہاتھ کے کتے سوت کی یا آل انڈیا چرخہ سنگھ کی تصدیق کی ہوئی کھادی پہننے کی عادت ہونی ضروری ہے ۔ یہ بھی ضروری ہے کہ وہ شراب و سب نشے کی چیزوں سے پرہیز کرتا ہو ۔ اگر وہ ہندو ہے تو یہ ضروری ہے کہ اس نے اپنے نجی جیون میں اور اپنے کٹمب کے جیون میں، ہر شکل صورت میں چھوا چھوت کو بالکل چھوڑ دیا ہو اور وہ سامپردائک ایکتا کے آدرش میں وشواس رکھتا ہو، اور سب دھرم مذہبوں کے لئے اس کے دل میں برابر کا آدر اور مان ہو اور نسل، دھرم یا مرد عورت کے فرق کا خیال نہ کرتے ہوئے سب کو برابر

के मौक़े दिये जाने और सबका बराबर का दरजा माने जाने में उसे विश्वास हो."

बापू ने इतने ही को काफ़ी नहीं समझा कि इन सेवकों में ख़ुद यह गुन हों. उन्होंने सेवकों के कुटुम्बों तक में इन गुनों को ज़रूरी माना है. जब तक आदमी सुधार की कोशिशों में अपने कुटुम्ब वालों और अपने पड़ोसियों के सुधार पर ज़ोर नहीं देता तब तक वह दुनिया के सुधार की तरफ़ उतनी कामयाबी के साथ नहीं लग सकता. कांग्रेस का सारा सुधार आन्दोलन इसी सच्चाई की ज़िन्दा मिसाल है. सौ कांग्रेस वालों में से शायद तीस ख़ुद खादी पहनते हैं. उन तीस में भी शायद पंचानबे फ़ीसदी अपने बीबी बच्चों को खादी पहनाना ज़रूरी नहीं समझते. हम मिल के कपड़े बेचने वालों की पिकेटिंग करते थे और उन्हें हज़ारों और लाखों का नुक़सान पहुंचाते थे पर हमने कभी अपने घर और मुहल्ले वालों के खादी पहनने पर ज़ोर नहीं दिया, नतीजा यह है कि हमारे सारे सुधार आन्दोलन बेजान हो गये. बापू ने अपने इस विधान में इस कमी को पूरा करने की कोशिश की है. अगर हम इन्सानी भाईचारे को सचमुच जीता जागता रूप देना चाहते हैं तो हमें यही रास्ता पकड़ना होगा.

हम कह चुके हैं कि जहाँतक खेती, दस्तकारी और क़ुदरती इलाज के प्रोग्रामों का सवाल है हम यहाँ उनकी तफ़सील में जाना नहीं चाहते. क्योंकि इन सब बातों पर बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं और मौजूद हैं. इसलिये इस विधान के जहाँ तक अमल का सवाल है वहाँ तक इसमें कोई ख़ास कठिनाई हमें दिखाई नहीं देती.

کے موقعے دیئے جانے اور سب کا برابر کا درجہ مانے جانے میں اُسے وشواس ہو."

باپو نے اتنے ہی کو کافی نہیں سمجھا کہ ان سیوکوں میں خود یہ گن ہوں. انھوں نے سیوکوں کے کٹمبوں تک میں ان گنوں کو ضروری مانا ہے۔ جب تک آدمی سدھار کی کوششوں میں اپنے کٹمب والوں اور اپنے پڑوسیوں کے سدھار پر زور نہیں دیتا تب تک وہ دنیا کے سدھار کی طرف اتنی کامیابی کے ساتھ نہیں لگ سکتا. کانگریس کا سارا سدھار آندولن اسی سچائی کی زندہ مثال ہے. سو کانگریس والوں میں سے شاید تیس خود کھادی پہنتے ہیں. ان تیس میں بھی شاید پچانبے فی صدی اپنے بی بی بچوں کو کھادی پہنانا ضروری نہیں سمجھتے. ہم مل کے کپڑے بیچنے والوں کی پکیٹنگ کرتے تھے اور انھیں ہزاروں اور لاکھوں کا نقصان پہنچاتے تھے پر ہم نے کبھی اپنے گھر اور محلے والوں کے کھادی پہننے پر زور نہیں دیا، نتیجہ یہ ہے کہ ہمارے سارے سدھار آندولن بے جان ہو گئے۔ باپو نے اپنے اس ودھان میں اس کمی کو پورا کرنے کی کوشش کی ہے۔ اگر ہم انسانی بھائی چارے کو سچ مچ جیتا جاگتا روپ دینا چاہتے ہیں تو ہمیں یہی راستہ پکڑنا ہوگا۔

ہم کہہ چکے ہیں کہ جہاں تک کھیتی، دستکاری اور قدرتی علاج کے پروگراموں کا سوال ہے ہم یہاں ان کی تفصیل میں جانا نہیں چاہتے۔ کیوں کہ ان سب باتوں پر بہت سی کتابیں لکھی جا چکی ہیں اور موجود ہیں۔ اس لئے اس ودھان کے جہاں تک عمل کا سوال ہے وہاں تک اس میں کوئی خاص کٹھنائی ہمیں دکھائی نہیں دیتی۔

समग्र सेवा के इस पहलू को हम यहीं खतम करते हैं पर इस तामीर को स्वावलम्बी बनाने के रास्ते में बहुत सी बाहरी और राज काजी कठिनाइयाँ हैं. हम देख चुके हैं कि हमारी पुरानी गाँव पँचायतें अपने जीवन के हर पहलू में स्वावलम्बी थीं पर अब दुनिया बदल गई है और इन पंचायतों को पूरी आज़ादी मिलना आज बहुत कठिन है इस कठिनाई को दूर करने के बापू ने जो जो तरीक़े इस विधान में बताए हैं उन्हें हम अगले हिस्से में देंगे.

स्वावलम्बन और असहयोग

पिछले हिस्से में हमने समग्र सेवा का तामीरी पहलू दिखाने की कोशिश की थी. इस हिस्से में हम समग्र सेवा के दूसरे पहलू और स्वावलम्बन को बयान करेंगे.

स्वावलम्बन यानी अपने पैरों पर ख़ुद खड़े होना बापू की सारी तालीम में सब से बुनियादी चीज़ है. बापू 'नई तालीम' तक को स्वावलम्बन पर चलाना चाहते हैं जो दुनिया के लिये एक नई बात है. जब हम आदमी की सारी ज़िंदगी को स्वावलम्बी बनाना चाहते हैं तो बच्चे के पैदा होने से आख़िरी दम तक इस असूल को अगर अमली रूप देने की कोशिश न की गई तो जैसा हम कह चुके हैं, मानव जीवन में कोई असली इन्क़लाब नहीं हो सकता.

सारी दुनिया, मज़हब और राजकाज दोनों में, तेज़ी के साथ इन्सानी भाई चारे की तरफ़ बढ़ना चाहती है. फिर भी उसे

سمگر سیوا کے اس پہلو کو ہم یہیں ختم کرتے ہیں پر اس تعمیر کو سواولمبی بنانے کے راستے میں بہت سی باہری اور راج کاجی کٹھنائیاں ہیں۔ ہم دیکھ چکے ہیں کہ ہماری پرانی گاؤں پنچائتیں اپنے جیون کے ہر پہلو میں سواولمبی تھیں اور اب دنیا بدل گئی ہے اور ان پنچائتوں کو پوری آزادی ملنا آج بہت کٹھن ہے اس کٹھنائی کو دور کرنے کے باپو نے جو جو طریقے اس ودھان میں بتائے ہیں انھیں ہم اگلے حصے میں دیں گے۔

سواولمبن اور اسہیوگ

پچھلے حصے میں ہم نے سمگر سیوا کا تعمیری پہلو دکھانے کی کوشش کی تھی۔ اس حصے میں ہم سمگر سیوا کے دوسرے پہلو اور سواولمبن کو بیان کریں گے۔

سواولمبن یعنی اپنے پیروں پر خود کھڑے ہونا باپو کی ساری تعلیم میں سب سے بنیادی چیز ہے۔ باپو نئی تعلیم تک کو سواولمبن پر چلانا چاہتے ہیں جو دنیا کے لئے ایک نئی بات ہے۔ جب ہم آدمی کی ساری زندگی کو سواولمبی بنانا چاہتے ہیں تو بچے کے پیدا ہونے سے آخری دم تک اس اصول کو اگر عملی روپ دینے کی کوشش نہ کی گئی تو جیسا ہم کہہ چکے ہیں، مانو جیون میں کوئی اصلی انقلاب نہیں ہو سکتا۔

ساری دنیا، مذہب اور راج کاج دونوں میں، تیزی کے ساتھ انسانی بھائی چارے کی طرف بڑھنا چاہتی ہے۔ پھر بھی اسے

कामयाबी नहीं मिल रही है. बापू कहते हैं कि इसका कारन यह है कि लोगों के आपसी सम्बन्ध और नाते आमतौर से अपना बोझ दूसरे पर डालने और दूसरे का बोझ खुद न उठाने की बुनियाद पर बने हुए हैं. यह अन्याय है. अगर यह अन्याय हमारे समाज से दूर हो जाय और हर आदमी अपना बोझ खुद उठाना अपना धर्म समझने लगे और इसका आदी हो जाय, तो दुनिया को सच्चे लोकराज और भाई चारे की तरफ बढ़ने में बहुत आसानी हो.

हम कुछ मिसालें देते हैं. मालिक मजदूर, जमींदार किसान, हाकिम महकूम, कुली मुसाफ़िर, भगी जजमान जैसे सब सम्बन्ध ऐसे हैं जिनमें एक गिरोह का बोझ दूसरे के लिये उठाना उसका फ़र्ज़ और पेशा बना दिया गया है. दूसरे की मदद करना और उसका हर तरह का बोझ उठाना भी आदमी का सबसे ऊंचा सदाचार है. यह बात नेकी में शामिल है. इसे हम जितना बरतें उतना ही हमारा सबका भला है. पर यह सेवा प्रेम और त्याग की नींव पर होनी चाहिये, किसी रिवाज या क़ानून के बल नहीं. यह सेवा वैसी ही होनी चाहिये जैसे बच्चे की सेवा मां बाप करते हैं या दो भाई एक दूसरे की सेवा करते हैं. ऐसी किसी सेवा में कोई पहलू अन्याय या ज़बरदस्ती का नहीं होना चाहिये. लोकराज के इस दौर में हाकिम महकूम, मालिक मजदूर, ऊंच नीच, छूत अछूत के भेद नहीं चल सकते. जितनी जल्दी यह भेद भाव दूर हो सकें उतनी ही जल्दी सच्ची लोकशाही और भाई चारे का राज क़ायम होगा.

کامیابی نہیں مل رہی ہے۔ باپو کہتے ہیں کہ اس کا کارن یہ ہے کہ لوگوں کے آپسی سمبندھ اور ناتے عام طور سے اپنا بوجھ دوسرے پر ڈالنے اور دوسرے کا بوجھ خود نہ اٹھانے کی بنیاد پر بنے ہوئے ہیں۔ یہ انیائے ہے۔ اگر یہ انیائے ہمارے سماج سے دور ہو جائے اور ہر آدمی اپنا بوجھ خود اٹھانا اپنا دھرم سمجھنے لگے اور اس کا عادی ہو جائے تو دنیا کو سچے لوک راج اور بھائی چارے کی طرف بڑھنے میں بہت آسانی ہو۔

ہم کچھ مثالیں دیتے ہیں۔ مالک مزدور، زمیندار کسان، حاکم محکوم، قلی مسافر، بھنگی ججمان جیسے سب سمبندھ ایسے ہیں جن میں ایک گروہ کا بوجھ دوسرے کیلئے اٹھانا اس کا فرض اور پیشہ بنا دیا گیا ہے۔ دوسرے کی مدد کرنا اور اس کا ہر طرح کا بوجھ اٹھانا بھی آدمی کا سب سے اونچا سداچار ہے۔ یہ بات نیکی میں شامل ہے۔ اسے ہم جتنا برتیں اتنا ہی ہمارا سب کا بھلا ہے۔ پر یہ سیوا پریم اور تیاگ کی نیو پر ہونی چاہیے، کسی رواج یا قانون کے بل نہیں۔ یہ سیوا ویسی ہی ہونی چاہیے جیسے بچے کی سیوا ماں باپ کرتے ہیں یا دو بھائی ایک دوسرے کی سیوا کرتے ہیں۔ ایسی کسی سیوا میں کوئی پہلو انیائے یا زبردستی کا نہیں ہونا چاہیے۔ لوک راج کے اس دور میں حاکم محکوم، مالک مزدور، اونچ نیچ، چھوت اچھوت کے بھید نہیں چل سکتے۔ جتنی جلدی یہ بھید بھاؤ دور ہو سکیں اتنی ہی جلدی سچی لوک شاہی اور بھائی چارے [illegible]

स्वावलम्बन का पूरा रूप यह है कि हम अपना सारा बोझ ख़ुद उठाना अपना धर्म समझें और कोई दूसरा अपना बोझ जबरदस्ती हम पर न लाद सके. स्वावलम्बन में यह दोनों पहलू जरूरी हैं. बापू ने अपने विधान में यह दोनों पहलू शामिल किये हैं. इस विधान की पंचायतों का फ़र्ज़ है कि वह अपने इलाक़े के लोगों को अपने निजी और समाजी जीवन की सब जरूरतों को पूरा करने में ख़ुद अपने पैरों पर खड़ा होना सिखावें और उनमें वह शक्ति पैदा करें कि इनके असली भले या सदाचार के असूलों के ख़िलाफ़ किसी पुरानी बात के जारी रखने या नई बात के जारी करने पर कोई भी इन्हें मजबूर न कर सके. बापू के स्वावलम्बन का यह रूप जीवन के नैतिक, समाजी और आर्थिक पहलुओं के लिये वैसा ही जरूरी है जैसा राजकाजी पहलू के लिये आजादी.

बापू देश के हर गाँव में यही सच्ची आजादी क़ायम करना चाहते हैं. इस आजादी को हासिल करने के लिये तीन बातों की जरूरत है. एक यह कि हर गाँव में गाँव के इस समय के साधनों के अनुसार अपनी खेती, दस्तकारियाँ, तालीम, तन्दुरुस्ती सबका प्रबंध ठीक ठीक और उन तरीक़ों से किया जावे जो बापू ने बताये हैं. दूसरी यह कि हर गाँव में इस तरह के साधन पैदा किये जावें जो गाँव की भलाई और तरक़्क़ी के लिये जरूरी हैं, तीसरी यह कि गाँव को उन सब बातों से पाक साफ़ किया जावे जो गाँव की आजादी या तरक़्क़ी में रुकावट हों. इनमें

سوا ولمبن کا پورا روپ یہ ہے کہ ہم اپنا سارا بوجھ خود اٹھانا اپنا دھرم سمجھیں اور کوئی دوسرا اپنا بوجھ زبردستی ہم پر نہ لاد سکے۔ سوا ولمبن میں یہ دونوں پہلو ضروری ہیں۔ باپو نے اپنے ودھان میں یہ دونوں پہلو شامل کئے ہیں۔ اس ودھان کی پنچایتوں کا فرض ہے کہ وہ اپنے علاقے کے لوگوں کو اپنے نجی اور سماجی جیون کی سب ضرورتوں کو پورا کرنے میں خود اپنے پیروں پر کھڑا ہونا سکھاویں اور ان میں وہ شکتی پیدا کریں کہ ان کے اصلی بھلے یا سداچار کے اصولوں کے خلاف کسی پرانی بات کے جاری رکھنے یا نئی بات کے جاری کرنے پر کوئی بھی انھیں مجبور نہ کر سکے۔ باپو کے سوا ولمبن کا یہ روپ جیون کے نیتک، سماجی اور آرتھک پہلوؤں کے لئے ویسا ہی ضروری ہے جیسا راج کاجی پہلو کے لئے آزادی۔

باپو دیش کے ہر گاؤں میں یہی سچی آزادی قائم کرنا چاہتے ہیں۔ اس آزادی کو حاصل کرنے کے لئے تین باتوں کی ضرورت ہے۔ ایک یہ کہ ہر گاؤں میں گاؤں کے اس سمے کے سادھنوں کے انوسار اپنی کھیتی، دستکاریاں، تعلیم، تندرستی سب کا پربندھ ٹھیک ٹھیک اور ان طریقوں سے کیا جاوے جو باپو نے بتائے ہیں۔ دوسری یہ کہ ہر گاؤں میں اس طرح کے سادھن پیدا کئے جاویں جو گاؤں کی بھلائی اور ترقی کے لئے ضروری ہیں، تیسری یہ کہ گاؤں کو ان سب باتوں سے پاک صاف کیا جاوے جو گاؤں کی آزادی یا ترقی میں رکاوٹ ہیں۔ انہیں

पहली बात की चरचा हम पिछले हिस्से में कर चुके हैं. बाक़ी दोनों बातें हम यहाँ देते हैं

हम कह चुके हैं कि हमें देश के नये जीवन की रचना में पुरानी पंचायतों को सामने रखने से बहुत मदद मिल सकती है. इन गाँव पंचायतों को स्वावलम्बी बनाने के लिये आजकल जिन जिन बातों की कमी और जरूरत है वह यह हैं—

(१) जो माफ़ियाँ गाँव की तालीम, तन्दुरुस्ती और रक्षा के लिये इन्हें पहिले मिली हुई थीं और जिनसे इनका सब खर्च चलता था उन्हें फिर से दिलाना.

(२) गाँव के गोरुओं के लिये चरागाहों का और दूसरा ठीक ठीक प्रबंध करना

(३) बच्चों की नई तालीम के लिये मकान, सामान और पढ़ाने वाले मुक़र्रर करना और तैयार करना.

(४) पीने और सींचने के पानी के लिये अच्छे कुँए और तालाब बनवाना.

(५) गाँव वालों को अपने अपने खेतों को सींचने और जोतने की आसानी की निगाह से अदल बदल करने या नये सिरे से हदबंदी करने की पूरी आज़ादी देना.

(६) उन्हें अपने सारे झगड़ों और मामलों का ख़ुद फ़ैसला कर लेने की आज़ादी देना.

(७) उन्हें गाँव की रक्षा और अपने सदाचार को ठीक रखने के प्रबंध में पूरी आज़ादी देना.

(८) जो लोग गाँव के अन्दर सदाचार के बुनियादी नियमों

پہلی بات کی چرچا ہم پچھلے حصے میں کر چکے ہیں۔ باقی دونوں باتیں ہم یہاں دیتے ہیں۔

ہم کہہ چکے ہیں کہ ہمیں دیش کے نئے جیون کی رچنا میں پرانی پنچایتوں کو سامنے رکھنے سے بہت مدد مل سکتی ہے۔ ان گاؤں پنچایتوں کو سواولمبی بنانے کے لئے آج کل جن جن باتوں کی کمی اور ضرورت ہے وہ یہ ہیں—

(۱) جو معافیاں گاؤں کی تعلیم، تندرستی اور رکشا کے لئے انہیں پہلے ملی ہوئی تھیں اور جن سے ان کا سب خرچ چلتا تھا انہیں پھر سے دلانا۔

(۲) گاؤں کے گوروؤں کے لئے چراگاہوں کا اور دوسرا ٹھیک ٹھیک پربندھ کرنا۔

(۳) بچوں کی نئی تعلیم کے لئے مکان، سامان اور پڑھانے والے مقرر کرنا اور تیار کرنا۔

(۴) پینے اور سینچنے کے پانی کے لئے اچھے کنوئیں اور تالاب بنوانا۔

(۵) گاؤں والوں کو اپنے اپنے کھیتوں کے سینچنے اور جوتنے کی آسانی کی نگاہ سے ادل بدل کرنے یا نئے سرے سے حد بندی کرنے کی پوری آزادی دینا۔

(۶) انہیں اپنے سارے جھگڑوں اور معاملوں کا خود فیصلہ کر لینے کی آزادی دینا۔

(۷) انہیں گاؤں کی رکشا اور اپنے سداچار کو ٹھیک رکھنے کے پربندھ میں پوری آزادی دینا۔

(۸) جو لوگ گاؤں کے اندر سداچار کے بنیادی نیموں

को (जैसे सच बोलना बेईमानी न करना) तोड़ते हैं उनको रोकना और सुधारना.

(९) मुक़ामी ज़रूरतों के लिये जो कुछ करना होकर सकना.

बापू की पंचायतों का यही आज़ादी का एलान है, यही उनका 'मैगना चार्टा' है. हम यहाँ इसकी तफ़सील में जाना नहीं चाहते. ज़ाहिर है कि गाँव गाँव और हलक़े हलक़े की अलग अलग ज़रूरतें होंगी और हर गाँव के मर्दों औरतों और बच्चों की गिनती को सामने रखकर अलग अलग चिट्ठे तैयार करने होंगे और कभी कभी अलग अलग जगहों के लिये काम के अलग अलग ढंग भी निकालने और बरतने होंगे

अब हम स्वावलम्बन की तीसरी बात लेते हैं. यानी गाँव को उन सब बातों से पाक साफ़ करना जो गाँव की आज़ादी और भलाई में रुकावट हों. यही स्वावलम्बन का सबसे नाज़ुक पहलू है. हम जानते हैं कि दुनिया में बनाना और बिगाड़ना, गढ़ना और तोड़ना दोनों साथ साथ चलते हैं. दोनों का चोली दामन का साथ है. ख़ास कर जब कि हमें नई रचना सुधार के रूप में करनी पड़ती है, अगर हमारा जीवन चारों तरफ़ से हमें बिगाड़ने वाली शक्तियों से घिर गया है तो सुधार की रचनात्मक कोशिशों से पहले या उनके साथ साथ हमें उन बिगाड़ने वाली शक्तियों को हटाना और साफ़ करना पड़ेगा. बदनसीबी से हमारे गाँव का आज कल का जीवन इस तरह की बिगाड़ने वाली शक्तियों से भरा पड़ा है. हमारे गाँवों में कई संगठन ऐसे हैं जो ऊपर से देखने में रचनात्मक मालूम होते हैं पर जो इन की

کو (جیسے سچ بولنا بے ایمانی نہ کرنا) توڑتے ہیں ان کو روکنا اور سدھارنا.

(۹) مقامی ضرورتوں کے لئے جو کچھ کرنا ہو کر سکنا.

باپو کی پنچائتوں کا یہی آزادی کا اعلان ہے، یہی ان کا میگنا چارٹا ہے. ہم یہاں اس کی تفصیل میں جانا نہیں چاہتے. ظاہر ہے کہ گاؤں گاؤں اور حلقے حلقے کی الگ الگ ضرورتیں ہوں گی اور ہر گاؤں کے مردوں عورتوں اور بچوں کی گنتی کو سامنے رکھ کر الگ الگ چٹھے تیار کرنے ہوں گے اور کبھی کبھی الگ الگ جگہوں کے لئے کام کے الگ الگ ڈھنگ بھی نکالنے اور برتنے ہوں گے.

اب ہم سواولمبن کی تیسری بات لیتے ہیں. یعنی گاؤں کو ان سب باتوں سے پاک صاف کرنا جو گاؤں کی آزادی اور بھلائی میں رکاوٹ ہوں. یہی سواولمبن کا سب سے نازک پہلو ہے. ہم جانتے ہیں کہ دنیا میں بنانا اور بگاڑنا، گڑھنا اور توڑنا دونوں ساتھ ساتھ چلتے ہیں. دونوں کا چولی دامن کا ساتھ ہے. خاص کر جب کہ ہمیں نئی رچنا سدھار کے روپ میں کرنی پڑتی ہے، اگر ہمارا جیون چاروں طرف سے ہمیں بگاڑنے والی شکتیوں سے گھر گیا ہے تو سدھار کی رچناتمک کوششوں سے پہلے یا اُن کے ساتھ ساتھ ہمیں اُن بگاڑنے والی شکتیوں کو ہٹانا اور صاف کرنا پڑے گا. بدنصیبی سے ہمارے گاؤں کا آج کل کا جیون اس طرح کی بگاڑنے والی شکتیوں سے بھرا پڑا ہے. ہمارے گاؤں میں کئی سنگٹھن ایسے ہیں جو اوپر سے دیکھنے میں رچناتمک معلوم ہوتے ہیں پر جو اُن کی

बिगाड़ने वाली शक्तियों को क़ायम रखते हैं और बढ़ाते रहते हैं. इस तरह के संगठन अँगरेज़ी राज ने हमारे भले के लिये नहीं अपने राजकाजी स्वार्थ को पूरा करने के लिये पैदा किये थे. पुरानी सभ्यता में धर्म के चार चरण थे. अँगरेज़ी राजा ने अधर्म के चार चरण क़ायम किये. यह चार पुलिस राज, अदालतराज, पटवारीराज और अधिकारी राज हैं. अधर्म के इन चारों चरणों ने जो नुक़सान गाँव के जीवन को पहुँचाया है उस पर किताबें लिखी जा सकती हैं. गाँव के सदाचार को और गाँव के माली जीवन दोनों को इन्होंने मटियामेट कर डाला.

बापू इन्हीं चार चरणों के आधार पर अँगरेज़ी राज को रावण राज या शैतानी राज कहा करते थे. ख़ुद कांग्रेस भी पिछले तीस साल तक इन चारों के ज़रिये हिन्दुस्तान की बरबादी की दर्द भरी कहानी दुनिया को सुनाती रही. लोगों को आशा थी कि अँगरेज़ यहाँ से जाते समय अपने इन चारों चरणों को भी अपने साथ ले जावेंगे. पर वह इन्हें विरसे में कांग्रेस को दे गये और आज कांग्रेस ख़ुद इन चारों राजों की महाराजा बनी हुई है.

हमारे गाँव की बदक़िस्मती यहीं पर ख़तम नहीं होती. हमारी मरकज़ी और सूबाई हुकूमतें गाँव की खेती को तरह तरह की पच्छिमी मशीनों और बिजली घरों के सुपुर्द करने और गाँव के लोगों को फ़ौजी तालीम देकर और हथियार बंद करके गाँव में फ़ौजी राज और मशीन राज जमा देने पर भी तुली हुई हैं. हमारी भूमि पर आजकल इन छै प्रेत राजों का चक्र चल रहा है. एक तरफ़ लोक राज का ज़माना और दूसरी तरफ़ यह प्रेत राज का दौरे, यह दोनों

بگاڑنے والی شکتیوں کو قائم رکھتے ہیں اور بڑھاتے رہتے ہیں۔ اس طرح کے سنگٹھن انگریزی راج نے ہمارے بھلے کے لئے نہیں اپنے راج کاجی سوارتھ کو پورا کرنے کے لئے پیدا کئے تھے۔ پرانی سبھیتا میں دھرم کے چار چرن تھے۔ انگریزی راجہ نے ادھرم کے چار چرن قائم کئے۔ یہ چار پولیس راج، عدالت راج، پٹواری راج اور ادھیکاری راج ہیں۔ ادھرم کے ان چاروں چرنوں نے جو نقصان گاؤں کے جیون کو پہنچایا ہے اس پر کتابیں لکھی جا سکتی ہیں۔ گاؤں کے سداچار کو اور گاؤں کے مالی جیون دونوں کو انھوں نے ملیامیٹ کر ڈالا۔

باپو انھیں چار چرنوں کے آدھار پر انگریزی راج کو راون راج یا شیطانی راج کہا کرتے تھے۔ خود کانگریس بھی پچھلے تیس سال تک ان چاروں کے ذریعے ہندستان کی بربادی کی دردبھری کہانی دنیا کو سناتی رہی۔ لوگوں کو آشا تھی کہ انگریز یہاں سے جاتے سمے اپنے ان چاروں چرنوں کو بھی اپنے ساتھ لے جاویں گے۔ پر وہ انھیں ورثے میں کانگریس کو دے گئے اور آج کانگریس خود ان چاروں راجوں کی مہاراجہ بنی ہوئی ہے۔

ہمارے گاؤں کی بدقسمتی یہیں پر ختم نہیں ہوتی۔ ہماری مرکزی اور صوبائی حکومتیں گاؤں کی کھیتی کو طرح طرح کی پچھمی مشینوں اور بجلی گھروں کے سپرد کرنے اور گاؤں کے لوگوں کو فوجی تعلیم دے کر اور ہتھیار بند کرکے گاؤں میں فوجی راج اور مشین راج جما دینے پر بھی تلی ہوئی ہیں۔ ہماری بھومی پر آج کل ان چھ پریت راجوں کا چکر چل رہا ہے۔ ایک طرف لوک راج کا زمانہ اور دوسری طرف یہ پریت راج کے دورے، یہ دونوں

साथ साथ नहीं रह सकते. अगर हमें गाँवों को ज़िन्दा रखना है और इन्हें फलने फूलने का मौक़ा देना है तो हमें पच्छिमी सभ्यता के इन प्रेतराजों को अपने गाँव से भगाना होगा.

सवाल यह है कि गाँव में इन घातक शक्तियों का राज होते हुए कोई सच्ची रचना या भलाई का काम कैसे हो सकता है. बापू ने अपने विधान में इन विरोधी शक्तियों से लड़ने की पूरी दाग़बेल डाली है. हम कह चुके हैं कि रचनात्मक काम और सत्याग्रह एक ही सिक्के के दो रुख़ हैं. रचना करना और विरोधी शक्तियों से, अगर वह रुकावट डालें, टक्कर लेना दोनों साथ साथ ज़रूरी हैं. बापू के स्वावलम्बन में सत्याग्रह शामिल है. गाँव अपनी सच्ची आज़ादी फ़ौजों, तोपों और गोलों के बल हासिल नहीं कर सकता. पर अगर गाँव वालों में आत्मबल और सत्याग्रह की शक्ति है तो दुनिया की तोपें और बम इसकी आज़ादी को नहीं छीन सकते. गाँव में तो हज़ार पाँच सौ आदमी होते हैं. पर सत्याग्रह की मदद से तो एक आदमी भी अकेला अपनी आज़ादी क़ायम रख सकता है. अब सवाल है कि यह कैसे? बापू ने ख़ुद हमें अपनी तालीम तरबियत और अपने जीवन से यही ख़ास सबक़ सिखाया है. हर विरोधी शक्ति के पास किसी को क़ाबू में लाने और अपनी मर्ज़ी पर चलाने के लिये तीन हथियार होते हैं. वह हमें तीन तरह के नुक़सानों का डर दिखाती है—एक तन का नुक़सान जैसे मारपीट या चोट पहुँचाना या जेल, दूसरा माल का नुक़सान जैसे जुरमाना ज़ब्ती, लूट और तीसरा जान का नुक़सान. इन्हीं नुक़सानों का डर हमें ग़ुलाम बनाता और ग़ुलाम रखता है. अगर हम इन नुक़सानों

ساتھ ساتھ نہیں رہ سکتے۔ اگر ہمیں گاؤں کو زندہ رکھنا ہے اور انھیں پھلنے پھولنے کا موقعہ دینا ہے تو ہمیں پچھمی سبھیتا کے ان پریت راجوں کو اپنے گاؤں سے بھگانا ہوگا۔

سوال یہ ہے کہ گاؤں میں ان گھاتک شکتیوں کا راج ہوتے ہوئے کوئی سچی رچنا یا بھلائی کا کام کیسے ہو سکتا ہے۔ باپو نے اپنے ودھان میں ان ورودھی شکتیوں سے لڑنے کی پوری داغ بیل ڈالی ہے۔ ہم کہہ چکے ہیں کہ رچناتمک کام اور ستیاگرہ ایک ہی سکے کے دو رخ ہیں۔ رچنا کرنا اور ورودھی شکتیوں سے، اگر وہ رکاوٹ ڈالیں، ٹکر لینا دونوں ساتھ ساتھ ضروری ہیں۔ باپو کے سواولمبن میں ستیاگرہ شامل ہے۔ گاؤں اپنی سچی آزادی فوجوں، توپوں اور گولوں کے بل حاصل نہیں کر سکتا۔ پر اگر گاؤں والوں میں آتم بل اور ستیاگرہ کی شکتی ہے تو دنیا کی توپیں اور بم اس کی آزادی کو نہیں چھین سکتے۔ گاؤں میں تو ہزار پانچ سو آدمی ہوتے ہیں۔ پر ستیاگرہ کی مدد سے تو ایک آدمی بھی اکیلا اپنی آزادی قائم رکھ سکتا ہے۔ اب سوال ہے کہ یہ کیسے؟ باپو نے خود ہمیں اپنی تعلیم تربیت اور اپنے جیون سے یہی خاص سبق سکھایا ہے۔ ہر ورودھی شکتی کے پاس کسی کو قابو میں لانے اور اپنی مرضی پر چلانے کے لئے تین ہتھیار ہوتے ہیں۔ وہ ہمیں تین طرح کے نقصانوں کا ڈر دکھاتی ہے — ایک تن کا نقصان جیسے مارپیٹ یا چوٹ پہنچانا یا جیل، دوسرا مال کا نقصان جیسے جرمانہ ضبطی، لوٹ اور تیسرا جان کا نقصان۔ انھیں نقصانوں کا ڈر ہمیں غلام بناتا اور غلام رکھتا ہے۔ اگر ہم ان نقصانوں

से न डरें तो कोई हमें ग़ुलाम नहीं बना सकता और न कोई जबरदस्ती हमें अपनी मर्ज़ी पर चला सकता है. इन्हीं तीन डरों से आज़ाद हो जाना और दूसरों के भले के लिये इन नुक़्सानों को ख़ुशी से सह लेना सच्चा त्याग है. जिस पैमाने पर हम इन्हें सहने को तैयार हो जाते हैं उतना ही ऊँचा हमारा त्याग होता है. इस दुनिया में जो इस तरह के त्याग के लिये तैयार नहीं होता उसका दुखों में फँसे रहना और ग़ुलाम बने रहना क़ुदरती है. और जो जिस दरजे तक इस त्याग की शक्ति अपने में पैदा कर लेता है उसके जीवन से उसी दरजे तक अन्यायों और दुखों का मिट जाना ज़रूरी है. सच पूछिये तो इस त्याग की शक्ति का नाम ही सत्याग्रह है.

यह सत्याग्रह की शक्ति अगर तलवार की शक्ति की तरह कुछ आदमियों में भी पैदा हो जावे तो वह अपना मक़सद हासिल कर सकती है. बड़े से बड़े शहरों को जिनमें लाखों आदमी रहते हैं डरा कर क़ाबू में रखने के लिये कुछ हज़ार फ़ौजी ही काफ़ी होते हैं. इसी तरह लोगों के दिलों से डर को निकाल देने के लिये थोड़े से ही सच्चे सत्याग्रही काफ़ी हो सकते हैं. बापू कहते हैं कि एक सत्याग्रही सारे संसार पर अपना असर डाल सकता है, और बड़ी से बड़ी विरोधी शक्ति से टक्कर ले सकता है. बापू ने अँग्रेज़ी राज से टक्कर ली. उनके असर से छोटे बड़े और भी सत्याग्रही देश में पैदा हो गये. बापू के आन्दोलनों में जिन लोगों ने खुले हिस्सा लिया उनकी गिनती कभी पचास हज़ार या एक लाख से अधिक नहीं हुई. पर उनका असर चालीस करोड़ आदमियों पर ऐसा और इतना पड़ा कि अंगरेज़ी राज के पाँव उखड़ गये. इसलिये अगर

سے نہ ڈریں تو کوئی ہمیں غلام نہیں بنا سکتا اور نہ کوئی زبردستی ہمیں اپنی مرضی پر چلا سکتا ہے۔ انھیں تین ڈروں سے آزاد ہو جانا اور دوسروں کے بھلے کے لئے ان نقصانوں کو خوشی سے سہہ لینا سچا تیاگ ہے۔ جس پیمانے پر ہم انھیں سہنے کو تیار ہو جاتے ہیں اتنا ہی اونچا ہمارا تیاگ ہوتا ہے۔ اس دنیا میں جو اس طرح کے تیاگ کے لئے تیار نہیں ہوتا اس کا دکھوں میں پھنسے رہنا اور غلام بنے رہنا قدرتی ہے۔ اور جو جس درجے تک اس تیاگ کی شکتی اپنے میں پیدا کر لیتا ہے اس کے جیون سے اسی درجے تک انیایوں اور دکھوں کا مٹ جانا ضروری ہے۔ سچ پوچھئے تو اس تیاگ کی شکتی کا نام ہی ستیاگرہ ہے۔

یہ ستیاگرہ کی شکتی اگر تلوار کی شکتی کی طرح کچھ آدمیوں میں بھی پیدا ہو جاوے تو وہ اپنا مقصد حاصل کر سکتی ہے۔ بڑے سے بڑے شہروں کو جن میں لاکھوں آدمی رہتے ہیں ڈرا کر قابو میں رکھنے کے لئے کچھ ہزار فوجی ہی کافی ہوتے ہیں۔ اسی طرح لوگوں کے دلوں سے ڈر کو نکال دینے کے لئے تھوڑے سے ہی سچے ستیاگرہی کافی ہو سکتے ہیں۔ باپو کہتے ہیں کہ ایک ستیاگرہی سارے سنسار پر اپنا اثر ڈال سکتا ہے، باپو نے انگریزی راج سے ٹکر لی۔ ان کے اثر سے چھوٹے بڑے اور بھی ستیاگرہی دیش میں پیدا ہوگئے۔ باپو کے آندولنوں میں جن لوگوں نے کھلے حصہ لیا ان کی گنتی کبھی پچاس ہزار یا ایک لاکھ سے ادھک نہیں ہوئی۔ پر ان کا اثر چالیس کروڑ آدمیوں پر ایسا اور اتنا پڑا کہ انگریزی راج کے پیر اکھڑ گئے۔ اس لئے اگر

किसी गाँव में कुछ ही सत्याग्रही पैदा हो जायँ तो वह गाँव के गाँव को विरोधी शक्तियों के डर से आजाद करके उनमें वह त्याग पैदा कर देंगे कि जिसके सामने तलवार और अन्याय अपने दांत पीस कर रह जायँगे, या सर झुका देने पर मजबूर हो जायगे.

बापू ने अपने विधान में स्वावलम्बन के अन्दर सत्याग्रह को शामिल कर लिया है. हम दिखा चुके हैं कि रचनात्मक काम बिना सत्याग्रह की शक्ति के अधूरा है और सत्याग्रह की शक्ति रचनात्मक काम से बढ़ती है. अगर हमें अपने गाँव को पुलिस राज से आज़ाद करना है तो इसका रचनात्मक ढङ्ग यह नहीं है कि हम थानों और अदालतों के सरकारी नौकरों से डरा धमका कर या फुसला कर इस्तीफ़े ले लें. इस तरह की बातें हमारी कठिनाइयों को बहुत बढ़ा देंगी और आख़ार में हमें हार खानी पड़ेगी. कारन यह है कि आजकल की पुलिस और अदालतें हमारी कुछ जरूरतों को पूरा करती हैं और हम इनसे झूटी सच्ची मदद लेने के मोहताज होगये हैं. मोहताजा हा सचमुच सारी गुलामा की जड़ है और उसी पैमाने पर स्वावलम्बन गुलामी से आज़ाद करने का ज़रिया है. क्योंकि यह मोहताजी को मिटाता है. फिर अगर हम पुलिस राज और अदालत राज को खतम करना चाहते हैं तो उसका सीधा तरीक़ा यह है कि जो काम हम पुलिस और अदालतों से लेते हैं उसे पूरा करने के लिये हम आप अपना संगठन और प्रबन्ध कर लें. अगर हम अपने आपस के मामलों और झगड़ों को खुद तय करने का प्रबन्ध करलें और पुलिस की मदद के बिना अपने इलाक़ों में अमन बनाए रखने की सूरतें पैदा करलें तो यह दोनों महकमे अपने आप बेजान

کسی گاؤں میں کچھ ہی ستیاگرہی پیدا ہو جائیں تو وہ گاؤں کے گاؤں کو ورودھی شکتیوں کے ڈر سے آزاد کر کے ان میں وہ تیاگ پیدا کریں گے کہ جس کے سامنے تلوار اور انیائے اپنے دانت پیس کر رہ جائیں گے، یا سر جھکا دینے پر مجبور ہو جائیں گے۔

باپو نے اپنے ودھان میں سواولمبن کے اندر ستیاگرہ کو شامل کر لیا ہے۔ ہم دکھا چکے ہیں کہ رچناتمک کام بنا ستیاگرہ کی شکتی کے ادھورا ہے اور ستیاگرہ کی شکتی رچناتمک کام سے بڑھتی ہے۔ اگر ہمیں اپنے گاؤں کو پولیس راج سے آزاد کرنا ہے تو اس کا رچناتمک ڈھنگ یہ نہیں ہے کہ ہم تھانوں اور عدالتوں کے سرکاری نوکروں سے ڈرا دھمکا کر یا پھسلا کر استعفے لے لیں۔ اس طرح کی باتیں ہماری کٹھنائیوں کو بہت بڑھا دیں گی اور آخر میں ہار کھانی پڑے گی۔ کارن یہ ہے کہ آج کل کی پولیس اور عدالتیں ہماری کچھ ضرورتوں کو پورا کرتی ہیں اور ہم ان سے جھوٹی سچی مدد لینے کے محتاج ہو گئے ہیں۔ محتاجی ہی سچ مچ ساری غلامی کی جڑ ہے اور اسی پیمانے پر سواولمبن غلامی سے آزاد کرنے کا ذریعہ ہے۔ کیوں کہ یہ محتاجی کو مٹاتا ہے۔ پھر اگر ہم پولیس راج اور عدالت راج کو ختم کرنا چاہتے ہیں تو اس کا سیدھا طریقہ یہ ہے کہ جو کام ہم پولیس اور عدالتوں سے لیتے ہیں اسے پورا کرنے کے لئے ہم آپ اپنا سنگٹھن اور پربندھ کریں۔ اگر ہم اپنے آپس کے معاملوں اور جھگڑوں کو خود طے کرنے کا پربندھ کریں اور پولیس کی مدد کے بنا اپنے علاقوں میں امن بنائے رکھنے کی صورتیں پیدا کر لیں تو یہ دونوں محکمے اپنے آپ بیجان

और निकम्मे हो जायँगे, और अगर हमारा प्रबन्ध पूरा और पक्का है तो इन्हें बिलकुल ही बन्द होना पड़ेगा.

इन प्रेतराजों या इन महकमों की ग़िज़ा या आहार वह काम है जो हम इनसे लेते हैं, वह सहयोग है जो हम इन्हें देते हैं. अगर हम इनका यह खाना रोक दें तो संसार की कोई शक्ति इन्हें ज़िन्दा नहीं रख सकती. असहयोग यानी सहयोग (मदद) न देना सत्याग्रह का ही एक रूप है. पर हमें यह समझ लेना चाहिये कि केवल हिंसा से या केवल असहयोग से इन्हें ख़तम कर देने की आशा करना बेकार साबित होगा और हमारी कठिनाइयों को बढ़ा देगा. इससे हमारी सत्याग्रह की शक्ति भी कम होगी. सच यह है कि हर असहयोग का रूप रचनात्मक होना चाहिये. यानी यह कि हम एक के बाद एक अपनी सब ज़रूरतों को पूरा करने की अपने में शक्ति और साधन पैदा और जमा करते रहें. जितनी हमारी यह कोशिश कामयाब होगी उतना ही वह महकमा या राज, जिसे हम मिटाना चाहते हैं, ख़तम होता जायगा. अगर हम हिंसा, क्रोध, बदनीयती या जल्दबाज़ी से काम न लें तो हमें कामयाबी ज़रूर और जल्द मिलेगी. जल्दबाज़ी काम को ख़राब करती है और इस रास्ते का सबसे बड़ा ख़तरा है.

हमें इस बात को अच्छी तरह दिल में जमा लेना चाहिये कि हमारा असली मक़सद उन पुरानी पंचायतों और उस पुरानी सभ्यता को, जिसने उन पंचायतों को जन्म दिया था, उनमें एक नई जान और नई रूह डाल कर फिर से क़ायम करना है. हमने ऊपर दिखाया है कि बापू के विधान की पंचायतें सत्याग्रह और असहयोग

اور نکمّے ہو جائیں گے، اور اگر ہمارا پربندھ پورا اور پکّا ہے تو انھیں بالکل ہی بند ہونا پڑے گا۔

ان پریت راجوں یا ان محکموں کی غذا یا آہار وہ کام ہے جو ہم ان سے لیتے ہیں، وہ سہیوگ ہے جو ہم انھیں دیتے ہیں۔ اگر ہم ان کا یہ کھانا روک دیں تو سنسار کی کوئی شکتی انھیں زندہ نہیں رکھ سکتی۔ اسہیوگ یعنی سہیوگ (مدد) نہ دینا ستیاگرہ کا ہی ایک روپ ہے۔ پر ہمیں یہ سمجھ لینا چاہیئے کہ کیول ہنسا سے یا کیول اسہیوگ سے انھیں ختم کر دینے کی آشا کرنا بیکار ثابت ہوگا اور ہماری کٹھنائیوں کو بڑھا دے گا۔ اس سے ہماری ستیاگرہ کی شکتی بھی کم ہوگی۔ سچ یہ ہے کہ ہر اسہیوگ کا روپ رچناتمک ہونا چاہیئے۔ یعنی یہ کہ ہم ایک کے بعد ایک اپنی سب ضرورتوں کو پورا کرنے کی اپنے میں شکتی اور سادھن پیدا اور جمع کرتے رہیں۔ جتنی ہماری یہ کوشش کامیاب ہوگی اتنا ہی وہ محکمہ یا راج، جسے ہم مٹانا چاہتے ہیں، ختم ہوتا جائے گا۔ اگر ہم ہنسا، کرودھ، بدنیتی یا جلد بازی سے کام نہ لیں تو ہمیں کامیابی ضرور اور جلد ملے گی۔ جلد بازی کام کو خراب کرتی ہے اور اس راستے کا سب سے بڑا خطرہ ہے۔

ہمیں اس بات کو اچھی طرح دل میں جما لینا چاہیئے کہ ہمارا اصلی مقصد ان پرانی پنچایتوں اور اس پرانی سبھیتا کو، جس نے ان پنچایتوں کو جنم دیا تھا، ان میں ایک نئی جان اور نئی روح ڈال کر پھر سے قائم کرنا ہے۔ ہم نے اوپر دکھایا ہے کہ باپو کے ودھان کی پنچایتیں ستیاگرہ اور اسہیوگ

की मदद से किस तरह पूरी राजकाजी और माली आजादी हासिल कर सकती हैं. बिलकुल इसी तरह यह पंचायतें पच्छिमी सभ्यता की नैतिक गुलामी से देश को आजाद कर सकती हैं. पच्छिमी सभ्यता की इस गुलामी पर ही हमारी और सब गुलामियों के महल बने हैं. पच्छिमी सभ्यता हमें यह सिखाती है कि हम अपने लाभ के लिये ईमानदारी, बेईमानी, सच झूठ सबसे एक सा काम ले सकते हैं. यही सबक़ हमारे बहुत से नेता हुकूमत की पालिसी चलाने में और कांग्रेस की पार्टीबाजियों के करिश्मों में बड़े से बड़े पैमानों पर सिखा रहे हैं. अँगरेजी अदालतों ने हमें झूट बोलने और झूटा हलफ़ उठाने की तालीम ऐसी दी कि दुनिया की किसी बुरी से बुरी संस्था या बुरे से बुरे संगठन ने शायद ही कभी किसी को दी हो. पर हमारी हुकूमत की कंट्रोल की पालिसियों ने तो उन पालिसियों के चलाने वालों की अच्छी से अच्छी नीयत होते हुए भी, झूट फरेब और बेईमानी फैलाने में कुछ बरसों के अन्दर इतना काम कर दिया कि जितना इन अदालतों ने सदियों में भी नहीं कर पाया था. नतीजा यह है कि जो नफ़रत और गुस्सा अँगरेजी राज के खिलाफ़ सदियों में पैदा हो पाया था वह अपनी हुकूमत के खिलाफ़ बरसों में पैदा हो गया है. पर हमारे आज कल के नेता बेबस हैं. वह हुकूमत और कांग्रेस दोनों को पच्छिमी सभ्यता की शैतानी चालों और बुराइयों से अलग नहीं कर सकते. कारन यह है कि उनके सामने कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं. बापू के रास्ते को वह हवाई और अनहोनी चीज समझते हैं.

गाँव के लोगों ने अभी तक अधर्म को धर्म मान लेना शुरू नहीं

کی مدد سے کس طرح پوری راج کاجی اور مالی آزادی حاصل کر سکتی ہیں۔ بالکل اسی طرح یہ پنچایتیں پچھمی سبھیتا کی نیتک غلامی سے دیش کو آزاد کر سکتی ہیں۔ پچھمی سبھیتا کی اس غلامی پر ہی ہماری اور سب غلامیوں کے محل بنے ہیں۔ پچھمی سبھیتا ہمیں یہ سکھاتی ہے کہ ہم اپنے لابھ کے لئے ایمانداری، بے ایمانی، سچ جھوٹ سب سے ایک سا کام لے سکتے ہیں۔ یہی سبق ہمارے بہت سے نیتا حکومت کی پالیسی چلانے میں اور کانگریس کی پارٹی بازیوں کے کرشموں میں بڑے سے بڑے پیمانوں پر سکھا رہے ہیں۔ انگریزی عدالتوں نے ہمیں جھوٹ بولنے اور جھوٹا حلف اٹھانے کی تعلیم ایسی دی کہ دنیا کی کسی بری سے بری سنستھا یا برے سے برے سنگٹھن نے شاید ہی کبھی کسی کو دی ہو۔ پر ہماری حکومت کی کنٹرول کی پالیسیوں نے تو ان پالیسیوں کے چلانے والوں کی اچھی سے اچھی نیت ہوتے ہوئے بھی، جھوٹ فریب اور بے ایمانی پھیلانے میں کچھ برسوں کے اندر اتنا کام کر دیا کہ جتنا ان عدالتوں نے صدیوں میں بھی نہیں کر پایا تھا۔ نتیجہ یہ ہے کہ جو نفرت اور غصہ انگریزی راج کے خلاف صدیوں میں پیدا ہو پایا تھا وہ اپنی حکومت کے خلاف برسوں میں پیدا ہو گیا ہے۔ پر ہمارے آج کل کے نیتا بے بس ہیں۔ وہ حکومت اور کانگریس دونوں کو پچھمی سبھیتا کی شیطانی چالوں اور برائیوں سے الگ نہیں کر سکتے۔ کارن یہ ہے کہ ان کے سامنے کوئی دوسرا راستہ ہے ہی نہیں۔ باپو کے راستے کو وہ ہوائی اور انہونی چیز سمجھتے ہیں۔

گاؤں کے لوگوں نے ابھی تک ادھرم کو دھرم مان لینا شروع نہیں

किया है. इसलिये अगर इनके सामने पच्छिमी सभ्यता की डरावनी सूरत अपने पूरे खूनी रंगों के साथ रखी जावे और हुकूमत और काँग्रेस पर उसके घातक असरों का नतीजा दिखाया जावे तो नामुमकिन है कि उनके दिलों में भगवान का डर फिर से पैदा न हो, और वह खुली बद कारियों के नतीजों से अपने को बचाने की जरूरत महसूस न करें. हमें इन्हें समझाना चाहिये कि बापू इन्हें पच्छिमी सभ्यता की ग़ुलामी से बचाना चाहते थे. किसी की भी ग़ुलामी से बचने का सबसे अच्छा तरीक़ा यह है कि हम उसे सहयोग देना बंद कर दें. हमने कहा है कि हमारा सहयोग ही वह भोजन है जो हमारी विरोधी शक्ति या संस्था को जीवित रखता है. पच्छिमी सभ्यता को अगर हमें देश निकाला देना है तो हम इससे अपना सहयोग तोड़ दें. इससे इसका आप ही आप खातमा हो जायगा. सहयोग तोड़ने का सबसे सीधा रास्ता यह है कि हम अपनी पुरानी सभ्यता के उन प्यारे असूलों को जैसे सच बोलो, चोरी न करो, मार पीट न करो वग़ैरा इन बुनियादी असूलों को अपने गाँव के भाइयों के आपसी व्यवहार का अटल नियम बनालें. जिस तरह किसी मंत्र से भूत भागता है उसी तरह इन सादे नियमों पर ईमानदारी के साथ जम जाने से पच्छिमी सभ्यता और उससे पैदा हुए सारे दुख दूर हो जावेंगे.

दुनिया की कोई ऊँची मजहबी किताब ऐसी नहीं है जो हमारे इस दावे की ताईद न करती हो. अभी सौ साल भी नहीं हुए कि हमारे सारे गाँव का जीवन इन्हीं असूलों पर चल रहा था. सारी दुनिया के इतिहास लेखक हमारे देश की इस खूबी और इस

کیا ہے. اس لئے اگر ان کے سامنے پچھمی سبھیتا کی ڈراؤنی صورت اپنے پورے خونی رنگوں کے ساتھ رکھی جاوے اور حکومت اور کانگریس پر اس کے گھاتک اثروں کا نتیجہ دکھایا جاوے تو ناممکن ہے کہ ان کے دلوں میں بھگوان کا ڈر پھر سے پیدا نہ ہو، اور وہ کھلی بدکاریوں کے ڈر سے اپنے کو بچانے کی ضرورت محسوس نہ کریں. ہمیں انھیں سمجھانا چاہیئے کہ باپو انھیں پچھمی سبھیتا کی غلامی سے بچانا چاہتے تھے. کسی کی بھی غلامی سے بچنے کا سب سے اچھا طریقہ یہ ہے کہ ہم اسے سہیوگ دینا بند کر دیں. ہم نے کہا ہے کہ ہمارا سہیوگ ہی وہ بھوجن ہے جو ہماری ورودھی شکتی یا سنستھا کو جیوت رکھتا ہے. پچھمی سبھیتا کو اگر ہمیں دیش نکالا دینا ہے تو ہم اس سے اپنا سہیوگ توڑ دیں. اس سے اس کا آپ ہی آپ خاتمہ ہو جائیگا. سہیوگ توڑنے کا سب سے سیدھا راستہ یہ ہے کہ ہم اپنی پرانی سبھیتا کے ان پیارے اصولوں کو جیسے سچ بولو، چوری نہ کرو، مار پیٹ نہ کرو وغیرہ ان بنیادی اصولوں کو اپنے گاؤں کے بھائیوں کے آپسی ویوہار کا اٹل نیم بنا لیں. جس طرح کسی منتر سے بھوت بھاگتا ہے اسی طرح ان سادے نیموں پر ایمانداری کے ساتھ جم جانے سے پچھمی سبھیتا اور اس سے پیدا ہوئے سارے دکھ دور ہو جاوینگے.

دنیا کی کوئی اونچی مذہبی کتاب ایسی نہیں ہے جو ہمارے اس دعوے کی تائید نہ کرتی ہو. ابھی سو سال بھی نہیں ہوئے کہ ہمارے سارے گاؤں کا جیون انھیں اصولوں پر چل رہا تھا. ساری دنیا کے اتہاس لیکھک ہمارے دیش کی اس خوبی اور اس

विशेषता की दिल से तारीफें करते हैं. इसलिये उस जीवन का वापस लाना हमारी सच्ची कोशिशों के सामने कोई अनहोनी बात नहीं है. अगर हम एक बार अपने उस खोये हुए जीवन को वापस ले आवें तो पुरानी पंचायतें, पुरानी सभ्यता, पुरानी शक्ति और पुरानी खुशहाली सब अपने आप वापस आजावेंगे.

अगर हम अपने में सत्याग्रह की शक्ति पैदा करना चाहते हैं तो हमारे लिये इन असूलों पर कारबन्द होने के सिवा कोई दूसरा रास्ता नहीं है. गाँव की बिरादरियाँ अभी जिन्दा हैं, हुक्का पानी इन्हें बनाये रखने का सबसे बड़ा हाथियार है. इससे बढ़ कर इन्सानी हथियार कोई दूसरा पैदा नहीं हुआ और हजारों साल से यह बराबर अपना काम कर रहा है. बापू के सहयोग और असहयोग का यह हुक्का पानी और उसका बन्द कर देना एक सुन्दर नमूना है. अगर किसी गाँव के नेक लोग आपस में एक दिल होकर और संगठन करके गाँव को बुराइयों और बदकारों से पाक साफ़ रखने का इरादा करलें तो केवल इन नेक लोगों का प्रेम भरा असहयोग ही सब बुराई करने वालों को बुराई छोड़ देने या गाँव छोड़ देने पर मजबूर कर देगा.

पच्छिमी सभ्यता का एक जबरदस्त बहाव आया. हमारे पाँव उखड़ गये. मगर हमने फिर पाँव जमा लिये और अपनी पुरानी सभ्यता के असूलों और ताक़तों की मदद लेकर उस विदेशी हुकूमत को मिटा दिया जो यह तूफ़ान अपने साथ लाई थी. वह हुकूमत अपना घातक असर हमारी देशी हुकूमत और देश पर छोड़ गई है. हमारी जिस सभ्यता ने दो सौ साल तक कुचले जाने के बाद दुनिया की सबसे

وشیشتا کی دل سے تعریفیں کرتے ہیں. اس لئے اس جیون کا واپس لانا ہماری سچی کوششوں کے سامنے کوئی ان ہونی بات نہیں ہے. اگر ہم ایک بار اپنے اس کھوئے ہوئے جیون کو واپس لے آویں تو پرانی پنچایتیں، پرانی سبھیتا، پرانی شکتی اور پرانی خوشحالی سب اپنے آپ واپس آجاویں گے.

اگر ہم اپنے میں ستیاگرہ کی شکتی پیدا کرنا چاہتے ہیں تو ہمارے لئے ان اصولوں پر کاربند ہونے کے سوا کوئی دوسرا راستہ نہیں ہے. گاؤں کی برادریاں ابھی زندہ ہیں. حقہ پانی انہیں بنائے رکھنے کا سب سے بڑا ہتھیار ہے. اس سے بڑھ کر انسانی ہتھیار کوئی دوسرا پیدا نہیں ہوا اور ہزاروں سال سے یہ برابر اپنا کام کر رہا ہے. باپو کے سہیوگ اور اسہیوگ کا یہ حقہ پانی اور اس کا بند کر دینا ایک سندر نمونہ ہے. اگر کسی گاؤں کے نیک لوگ آپس میں ایک دل ہو کر اور سنگٹھن کر کے گاؤں کو برائیوں اور بدکاریوں سے پاک صاف رکھنے کا ارادہ کر لیں تو کیول ان نیک لوگوں کا پریم بھرا اسہیوگ ہی سب برائی کرنے والوں کو برائی چھوڑ دینے یا گاؤں چھوڑ دینے پر مجبور کر دیگا.

پچھمی سبھیتا کا ایک زبردست بہاؤ آیا. ہمارے پاؤں اکھڑ گئے. مگر ہم نے پھر پاؤں جما لئے اور اپنی پرانی سبھیتا کے اصولوں اور طاقتوں کی مدد لے کر اس ودیشی حکومت کو مٹا دیا جو یہ طوفان اپنے ساتھ لائی تھی. وہ حکومت اپنا گھاتک اثر ہماری دیشی حکومت اور دیش پر چھوڑ گئی ہے. ہماری جس سبھیتا نے دو سو سال تک کچلے جانے کے بعد دنیا کی سب سے

बड़ी मादी ताक़त को अपनी रूहानी और एखलाक़ी तक़तों की मदद से मिटा दिया, यह नामुमकिन है कि वह कुछ दिनों में अपनी नई देशी हुकूमत पर क़ाबू न पा सके. हमारी आज कल की देशी हुकूमत की तलवारें और पुलिस, इसे बचा कर नहीं रख सकतीं. ठीक जैसे यह अँगरेजी राज को न बचा सकीं. हमारी देशी हुकूमत सत्य और अहिंसा, इंसाफ़ और इंसानियत, नम्रता और सेवा के रास्ते पर चल कर ही बच सकती है. इसकी दौलत, ताक़त, हिम्मत और संगठन बिना नैतिक बल के और बिना इंसानियत के बालू के महल हैं. इन्हें लोहे के क़िले समझ लेना हुकूमतों के लिये सबसे बड़ी बदनसीबी और ख़तरा हैं. जर्मनी और जापान दुनिया की वह दो ताक़तें थीं जिनकी तलवारों का दुनिया पर सिक्का जमा हुआ था और जिनके दुनिया पर क़ब्ज़ा पा लेने के सपने बिलकुल बेबुनियाद नहीं थे. लेकिन आज उनकी तलवारें टूटी पड़ी हैं, वह घायलों की तरह ज़मीन पर पड़े तड़प रहे हैं. और अमरीका, इंगलिस्तान और दूसरे मित्र राष्ट्र उन्हें जी भर कर पैरों तले कुचल रहे हैं. यह वही अमरीका और इंगलिस्तान हैं जो निहत्थे हिन्दुस्तान पर अपना क़ब्ज़ा क़ायम न रख सके. अँगरेज़ यहाँ से गये हैं तो हमारी फ़ौजों, हवाई और समुन्दरी जहाज़ों, ज़हरीली गैसों या ऐटम बमों के डर से नहीं गये. वह गये हैं जनता के असहयोग और सत्याग्रह के डर से. और अगर आज भी वह हमारे चारों तरफ़ मंडला रहे हैं और अपनी चालों से हमें अपने जाल में फिर से फँसाने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन हम पर सीधा क़ब्ज़ा जमा लेने की हिम्मत नहीं करते, तो इसमें इन्हें, हमारी "खिलौना" फ़ौजों और अंगरेजी

بڑی مادی طاقت کو اپنی روحانی اور اخلاقی طاقتوں کی مدد سے مٹا دیا، یہ ناممکن ہے کہ وہ کچھ دنوں میں اپنی نئی دیشی حکومت پر قابو نہ پا سکے۔ ہماری آج کل کی دیشی حکومت کی تلواریں اور پولیس اسے بچا کر نہیں رکھ سکیں۔ ٹھیک جیسے یہ انگریزی راج کو نہ بچا سکیں۔ ہماری دیشی حکومت ستیہ اور اہنسا، انصاف اور انسانیت، نمرتا اور سیوا کے راستے پر چل کر ہی بچ سکتی ہے۔ اس کی دولت، طاقت، ہمت، سنگٹھن بنا نیتک بل کے اور بنا انسانیت کے بالو کے محل ہیں۔ انھیں لوہے کے قلعے سمجھ لینا حکومتوں کے لئے سب سے بڑی بدنصیبی اور خطرہ ہیں۔ جرمنی اور جاپان دنیا کی وہ دو طاقتیں تھیں جن کی تلواروں کا دنیا پر سکہ جما ہوا تھا اور جن کے دنیا پر قبضہ پا لینے کے سپنے بالکل بے بنیاد نہیں تھے۔ لیکن آج ان کی تلواریں ٹوٹی پڑی ہیں، وہ گھائلوں کی طرح زمین پر پڑے تڑپ رہے ہیں۔ اور امریکہ، انگلستان اور دوسرے متر راشٹر انھیں جی بھر کر پیروں تلے کچل رہے ہیں۔ یہ وہی امریکہ اور انگلستان ہیں جو نہتے ہندستان پر اپنا قبضہ قائم نہ رکھ سکے۔ انگریز یہاں سے گئے ہیں تو ہماری فوجوں، ہوائی اور سمندری جہازوں، زہریلی گیسوں یا ایٹم بموں کے ڈر سے نہیں گئے۔ وہ گئے ہیں جنتا کے اسہیوگ اور ستیہ گرہ کے ڈر سے۔ اور اگر آج بھی وہ ہمارے چاروں طرف منڈلا رہے ہیں اور اپنی چالوں سے ہمیں اپنے جال میں پھر سے پھنسانے کی کوشش کر رہے ہیں، لیکن ہم پر سیدھا قبضہ جما لینے کی ہمت نہیں کرتے، تو اس میں انھیں ہماری "کھلونا" فوجوں اور انگریزی

जलसेना के टूटे फूटे जहाज़ों का डर नहीं है. न उन्हें रूस का डर है. उन्हें बस एक ही डर है, और वह हिन्दुस्तान की जनता के असहयोग का. इस पहलू पर हमें ध्यान रखना चाहिये. अगर देश की हुकूमत और जनता दोनों इस पहलू पर ग़ौर करके इससे फ़ायदा उठाने की कोशिश करें तो देश के सारे दुख दर्द बहुत जल्दी दूर हो जा सकते हैं और हमारा देश हमेशा के लिये दूसरे देशों की आर्थिक गुलामी और उनकी फ़ौजों के डर से आज़ाद रह सकता है.

'हुकूमत बापू के स्वावलम्बन के संदेश को सुने या न सुने, जनता को इधर ध्यान देना ही चाहिये. क्योंकि इसके सुनने या न सुनने में हुकूमत का कोई ख़ास नुक़सान नहीं. नुक़सान केवल जनता का ही है. जनता को यह समझना चाहिये कि लाखों बरस की कोशिशों और बरबादियों के बाद आज वह युग आया है कि जब दुनिया ने इसे देश का सच्चा बादशाह मान लिया है. पर अभी तक यह केवल असूली और काग़ज़ी मानना है. दुनिया में राजा नहीं रहे पर रक्तबीर राक्षस की तरह उनके ख़ून की हज़ारों बूँदें दुनिया पर गिरी हैं और इन बूँदों में से एक राजा की जगह सैकड़ों नये राजाओं ने जनता के नुमाइंदों के रूप में राज गद्दियाँ लेली हैं और बेचारी जनता पहले की तरह वैसी ही 'चेरी की चेरी' बनी हुई है. अगर जनता पार्लीमेंटी हुकूमत की असलियत को पूरी तरह समझ न लेगी तो उसे इसके जाल में फँसे रहकर मछली की तरह सदा तड़पना होगा. उसका इस जाल को जल्दी से जल्दी तोड़ना उसके जीवन और आज़ादी दोनों के लिये ज़रूरी है.

جل سینا کے ٹوٹے پھوٹے جہازوں کا ڈر نہیں ہے۔ نہ انھیں روس کا ڈر ہے۔ انھیں بس ایک ہی ڈر ہے، اور وہ ہندستان کی جنتا کے اسہیوگ کا۔ اس پہلو پر ہمیں دھیان رکھنا چاہیے۔ اگر دیش کی حکومت اور جنتا دونوں اس پہلو پر غور کرکے اس سے فائدہ اٹھانے کی کوشش کریں تو دیش کے سارے دکھ درد بہت جلدی دور ہو جا سکتے ہیں اور ہمارا دیش ہمیشہ کے لئے دوسرے دیشوں کی آرتھک غلامی اور اُن کی فوجوں کے ڈر سے آزاد رہ سکتا ہے۔

حکومت باپو کے سوالمبن کے سندیش کو سُنے یا نہ سُنے، جنتا کو ادھر دھیان دینا ہی چاہیے۔ کیونکہ اس کے سُننے یا نہ سُننے میں حکومت کا کوئی خاص نقصان نہیں۔ نقصان کیول جنتا کا ہی ہے۔ جنتا کو یہ سمجھنا چاہیے کہ لاکھوں برس کی کوششوں اور بربادیوں کے بعد آج وہ یُگ آیا ہے کہ جب دنیا نے اسے دیش کا سچا بادشاہ مان لیا ہے۔ پر ابھی تک یہ کیول اصولی اور کاغذی ماننا ہے۔ دنیا میں راجہ نہیں رہے پر رکت ویر راکشس کی طرح اُن کے خون کی ہزاروں بوندیں دنیا پر گری ہیں اور بوندوں میں سے ایک راجہ کی جگہ سیکڑوں نئے راجاؤں نے جنتا کے نمائندوں کے روپ میں راج گدیاں لے لی ہیں اور بیچاری جنتا پہلے کی طرح ویسی ہی 'چیری کی چیری' بنی ہوئی ہے۔ اگر جنتا پارلیمنٹی حکومت کی اصلیت کو پوری طرح سمجھ نہ لے گی تو اسے اس کے جال میں پھنسے رہ کر مچھلی کی طرح سدا تڑپنا ہوگا۔ اس کا اس جال کو جلدی سے جلدی توڑنا اس کے جیون اور آزادی دونوں کے لئے ضروری ہے۔

इस जाल को तोड़ने के लिये सिवा [illegible] दिखाये हुए रास्ते के और कोई रास्ता नहीं है. [illegible] पुरानी सभ्यता और बापू के स्वावलम्बन का सहारा लेकर जनता को अपने देश का सच्चा राजा बनना होगा. पार्लीमेन्टी राज के ज़रिये जनता कभी सच्ची राजा नहीं बन सकती. हमेशा ग़ुलाम ही बनी रहेगी. दुनिया की जो हुकूमत भी फ़ौजों, बन्दूक़ों, पुलिस और लाठियों पर क़ायम होगी उसकी जनता हमेशा ग़ुलाम रहेगी और वह हुकूमत जनता की बादशाह और उसे चूसने वाली रहेगी. जनता को यह देखना चाहिये कि वह ज़माना जब फ़ौजें और पुलिस डाकुओं, चोरों, ठगों और दूसरे मुजरिमों को गिरफ़्तार करने का काम करती थीं, अब नहीं रहा. अब पुलिस और फ़ौजों का असली काम राजकाजी पार्टियों को दबाना है. यह पार्टियाँ जनता के जिस्म को छोटे बड़े टुकड़ों में काट कर इन्हें अपनी सेना बनालेती हैं और इन्हीं सेनाओं को अपनी बिरोधी पार्टियों के या हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ा लड़ा कर मिटाती रहती हैं. इन पार्टियों का कुछ नहीं जाता. हर तरफ़ से ख़ून और बरबादी जनता ही की होती है. हुकूमत चौमुखी लड़ाई लड़ती है और इनमें से जनता के जिस्म के हर टुकड़े पर उसकी गोलियाँ और लाठियाँ बरसती हैं और ग़ज़ब यह है कि इस सारे ख़ून ख़राबे की असली ग़रज़ जनता का फ़ायदा बताया जाता है. यह सब पार्टियाँ और इन सबसे बढ़ कर हुकूमत इन ज़ुल्मों में अपने आप को जनता का रक्षक और सच्चा सेवक बताती है. जनता बेचारी अपनी ना समझी और भोले पन से इन सब की चालों और झूटे वायदों को न समझ कर इनके लिये

اس جال کو توڑنے کے لئے سوائے باپو کے دکھائے ہوئے راستے کے اور کوئی راستہ نہیں ہے. اپنی پرانی سبھیتا اور باپو کے سواولمبن کا سہارا لے کر جنتا کو اپنے دیش کا سچا راجہ بننا ہوگا. پارلیمنٹی راج کے ذریعے جنتا کبھی سچی راجہ نہیں بن سکتی. ہمیشہ غلام ہی بنی رہے گی. دنیا کی جو حکومت بھی فوجوں، بندوقوں، پولیس اور لاٹھیوں پر قائم ہوگی اُس کی جنتا ہمیشہ غلام رہے گی اور وہ حکومت جنتا کی بادشاہ اور اُسے چوسنے والی رہے گی. جنتا کو یہ دیکھنا چاہیئے کہ وہ زمانہ جب فوجیں اور پولیس ڈاکوؤں، چوروں، ٹھگوں اور دوسرے مجرموں کو گرفتار کرنے کا کام کرتی تھیں، اب نہیں رہا. اب پولیس اور فوجوں کا اصلی کام راج کاجی پارٹیوں کو دبانا ہے. یہ پارٹیاں جنتا کے جسم کو چھوٹے بڑے ٹکڑوں میں کاٹ کر انھیں اپنی سینا بنا لیتی ہیں اور انھیں سیناؤں کو اپنی ورودھی پارٹیوں یا حکومت کے خلاف لڑا لڑا کر مٹاتی رہتی ہیں. ان پارٹیوں کا کچھ نہیں جاتا. ہر طرف سے خون اور بربادی جنتا ہی کی ہوتی ہے. حکومت چوکھی لڑائی لڑتی ہے اور ان میں سے جنتا کے جسم کے ہر ٹکڑے پر اُس کی گولیاں اور لاٹھیاں برستی ہیں اور غضب یہ ہے کہ اس سارے خون خرابے کی اصلی غرض جنتا کا فائدہ بتایا جاتا ہے. یہ سب پارٹیاں اور ان سب سے بڑھ کر حکومت ان ظلموں میں اپنے آپ کو جنتا کا رکھشک اور سچا سیوک بتاتی ہے. جنتا بیچاری اپنی ناسمجھی اور بھولے پن سے ان سب کی چالوں اور جھوٹے وعدوں کو نہ سمجھ کر ان کے لئے

अपना ख़ून बहाती और माल लुटाती रहती है. इससे बढ़ कर अंधेर और क्या हो सकता है. और तमाशा यह है कि पार्लीमेंटी राज पार्टी बंदी को ही अपनी जान और अपना ईमान मानता है. बिना दो विरोधी पार्टियों के पार्लीमेंटी राज चल ही नहीं सकता. पच्छिमी पंडितों का कहना यह है कि बिना दो विरोधी पार्टियों के हुकूमत पार्लीमेंन्टी ख़ूबी के साथ चल ही नहीं सकती. इसकी यह दो पार्टियाँ तादाद में मछली के अंडों की तरह अनगिनत बढ़ती हैं. यहाँ तक कि देश का कोना कोना इन पार्टियों से भर जाता है. जब तक दुनिया की जनता इस पार्लीमेंटी राज और इसके इन बच्चों का ख़ातमा न करेगी तब तक इसके इसी तरह टुकड़े होते रहेंगे. यह मिटती रहेगी और इसके ख़ून के दरिया बहते रहेंगे. यह सब पार्टियाँ जनता को मुल्क का असली बादशाह बताती हैं. दुनिया में किसी बादशाह के इस तरह टुकड़े टुकड़े न किये गये होंगे, जैसे बेचारी जनता बादशाह के. हर हुकूमत के बड़े बड़े नेता भी हर मौक़े पर अपने ऐलानों, व्याख्यानों और क़ानूनों में और तरह तरह से जनता को उसके बादशाह होने का एतबार दिलाते रहते हैं और इनका हमेशा यह दावा रहता है कि यह जो कुछ करते हैं जनता के सुधार और भले के लिये ही करते हैं. आज तक दुनिया में किसी ने अपने बादशाह या मालिक का सुधार और उसका भला बन्दूक़ों, लाठियों, जुरमानों और जेलों से न किया होगा. यह सारा अंधेर [illegible] राज और उसकी पैदा [illegible] पार्टियों का है जो एक [illegible] एक जनता की [illegible] पर बैठती हैं और जनता पर बारी बारी यही अंधेर [illegible]

اپنا خون بہاتی اور مال لُٹاتی رہتی ہے۔ اِس سے بڑھ کر اندھیر اور کیا ہو سکتا ہے۔ اور تماشہ یہ ہے کہ پارلیمنٹی راج پارٹی بندی کو ہی اپنی جان اور اپنا ایمان مانتا ہے۔ بنا دو وردھی پارٹیوں کے پارلیمنٹی راج چل ہی نہیں سکتا۔ پچھمی پنڈتوں کا کہنا یہ ہے کہ بنا دو وردھی پارٹیوں کے حکومت پارلیمنٹی خوبی کے ساتھ چل ہی نہیں سکتی۔ اِس کی یہ دو پارٹیاں تعداد میں مچھلی کے انڈوں کی طرح اَن گنت بڑھتی ہیں۔ یہاں تک کہ دیش کا کونہ کونہ ان پارٹیوں سے بھر جاتا ہے۔ جب تک دنیا کی جنتا اس پارلیمنٹی راج اور اس کے ان بچوں کا خاتمہ نہ کریگی تب تک اس کے اسی طرح ٹکڑے ہوتے رہیں گے۔ یہ مٹتی رہے گی اور اُس کے خون کے دریا بہتے رہیں گے۔ یہ سب پارٹیاں جنتا کو ملک کا اصلی بادشاہ بتاتی ہیں۔ دنیا میں کسی بادشاہ کے اس طرح ٹکڑے ٹکڑے نہ کئے گئے ہوں گے۔ جیسے بیچاری جنتا بادشاہ کے۔ ہر حکومت کے بڑے بڑے نیتا بھی ہر موقع پر اپنے اعلانوں، ویاکھیانوں اور قانونوں میں اور طرح طرح سے جنتا کو اُس کے بادشاہ ہونے کا اعتبار دلاتے رہتے ہیں اور ان کا ہمیشہ یہ دعویٰ رہتا ہے کہ یہ جو کچھ کرتے ہیں جنتا کے سُدھار اور بھلے کے لئے ہی کرتے ہیں۔ آجتک دُنیا میں کسی نے اپنے بادشاہ یا مالک کا سُدھار اور اُس کا بھلا بندوقوں، لاٹھیوں، جرمانوں اور جیلوں سے نہ کیا ہوگا۔ یہ سارا اندھیر پارلیمنٹی [illegible] اور اُس کی پیدا کی ہوئی پارٹیوں کا ہے جو ایک [illegible] جنتا کی نمائندہ بن کر تخت پر بیٹھتی [illegible]

जनता इसे केवल इसीलिये बरदाश्त कर लेती है क्योंकि वह अभी तक सचमुच की बादशाह नहीं बनी है. अभी तो यह दुनिया से केवल अपना बादशाह बनने का अधिकार मनवा पाई है. अभी यह तख्त पर बैठी नहीं. अभी इसमें बादशाह होने का सच्चा भाव और सरकारी कर्मचारियों को अपना नौकर मानने का सच्चा सच्चा ख़याल भी पैदा नहीं हुआ. नहीं तो यह हो नहीं सकता था कि इसके साथ इस तरह का बरताव हो और यह उसे सह सके. जब तक जनता में इतनी समझ, इतना संगठन और इतनी शक्ति पैदा न होगी कि वह अपने को सचमुच मालिक और हुकूमत चलाने वालों को अपना सेवक माने और बना सके तब तक लोकराज का नाम लेना बेमानी है.

सच्चे लोकराज का पहला क़दम उस समय जमेगा जब जनता अपने राज चलाने वालों से फ़ौज और पुलिस रखने की ताक़त छीन लेगी और दुनिया के राजकाजी जीवन से इन महकमों ही को मिटा देगी. जब तक हुकूमतों का दारमदार और आधार फ़ौजों और पुलिस पर है तब तक जनता को कोई ताक़त ग़ुलामी से नहीं बचा सकती. इसमें हुकूमत का इतना क़सूर नहीं है जितना जनता की बेपरवाही और बेख़बरी का. पुरानी शहंशाहियों का रोब अभी तक जनता के दिलों पर छाया हुआ है. जनता की ग़ुलामी की वह हवा जिसमें यह कहावत बन गई थी—यथा राजा तथा प्रजा—यानी जैसा राजा होगा वैसी ही जनता होगी, आज तक जनता के दिल और दिमाग़ पर अपना असर जमाये हुए है. लोकराज के ज़माने में यह सारी हालत जड़ से बदलनी चाहिये. अब

جنتا اسے کیول اسی لئے برداشت کرلیتی ہے کیونکہ وہ ابھی تک سچ مچ کی بادشاہ نہیں بنی ہے۔ ابھی تک یہ دنیا سے کیول اپنا بادشاہ بننے کا ادھیکار منوا پائی ہے۔ ابھی یہ تخت پر بیٹھی نہیں۔ ابھی اس میں بادشاہ ہونے کا سچا بھاؤ اور سرکاری کرمچاریوں کو اپنا نوکر ماننے کا سچا سچا خیال بھی پیدا نہیں ہوا۔ نہیں تو یہ ہو نہیں سکتا تھا کہ اس کے ساتھ اس طرح کا برتاؤ ہو اور یہ اسے سہہ سکے۔ جب تک جنتا میں اتنی سمجھ، اتنا سنگٹھن اور اتنی شکتی پیدا نہ ہوگی کہ وہ اپنے کو سچ مچ مالک اور حکومت چلانے والوں کو اپنا سیوک مانے اور بنا سکے تب تک لوک راج کا نام لینا بے ایمانی ہے۔

سچے لوک راج کا پہلا قدم اس سمے جمے گا جب جنتا اپنے راج چلانے والوں سے فوج اور پولیس رکھنے کی طاقت چھین لے گی اور دنیا کے راج کاجی جیون سے ان محکموں ہی کو مٹا دے گی۔ جب تک حکومتوں کا دار مدار اور آدھار فوجوں اور پولس پر ہے تب تک جنتا کو کوئی طاقت غلامی سے نہیں بچا سکتی۔ اس میں حکومت کا اتنا قصور نہیں ہے جتنا جنتا کی بے پرواہی اور بے خبری کا۔ پرانی شہنشاہیوں کا رعب ابھی تک جنتا کے دلوں پر چھایا ہوا ہے۔ جنتا کی غلامی کی وہ ہوا جس میں یہ کہاوت بن گئی تھی — یتھا راجہ تتھا پرجا — یعنی جیسا راجہ ہوگا ویسی ہی جنتا ہوگی، آج تک جنتا کے دل اور دماغ پر اپنا اثر جمائے ہوئے ہے۔ لوک راج کے زمانے میں یہ ساری حالت جڑ سے بدلنی چاہئے۔ اب

जनता राजा है. अब कहना चाहिये 'यथा प्रजा तथा राजा' यानी जैसी जनता होगी वैसी ही हुकूमत होगी. दुनिया में कोई बिना निस्वार्थ और बेलाग खिदमत (सेवा) के सेव्य यानी मखदूम नहीं बन सकता. अगर जनता यह चाहती है कि वह राज चलाने वालों को अपना सेवक और खादिम बनाले तो वह अपना यह मक़सद फ़ौजों, पुलिस या तलवारों से हासिल नहीं कर सकती क्योंकि यह फ़ौजें और पुलिस तो एक बार इनका संगठन हो जाने के बाद हुकूमत की सारी दौलत और ताक़त को अपने ही, हाथों में ले लेंगे और पहले राजाओं की जगह यह जनता के दूसरे राजा बन बैठेंगे.

जनता के असली राजा बनने का तरीक़ा सिवाय उसके जो बापू ने बताया है कोई दूसरा हो ही नहीं सकता. वह तरीक़ा स्वावलम्बन और असहयोग का तरीक़ा है. जनता का असहयोग चाहे किसी देशी हुकूमत से हो या विदेशी हुकूमत से, इतनी ज़बरदस्त शक्ति है कि जिससे कोई हुकूमत टक्कर नहीं ले सकती. पर, इस असहयोग का रूप रचनात्मक होना चाहिये, हिंसात्मक नहीं. पुलिस और फ़ौजों से मारकाट की टक्करें लेकर या केवल उन्हें अपने असहयोग से भूका मार कर हम उन्हें या हुकूमत को कोई असली नुक़सान नहीं पहुँचा सकते. इससे तो हम को ही बड़े से बड़े पैमाने पर नुक़सान पहुँचेगा. असहयोग का रचनात्मक रूप स्वावलम्बन है यानी यह कि अपने इलाक़ों का संगठन इस तरह कर लिया जाय कि वह अपने झगड़ों को आप निपटा लें और अपनी रक्षा आप कर सकें. अगर हम यह संगठन कर लें तो कोई हुकूमत न हम पर पुलिस राज क़ायम कर सकती है और न इसकी कोशिश ही कर

جنتا راجہ ہے۔ اب کہنا چاہیے 'یتھا پرجا تتھا راجہ' یعنی جیسی جنتا ہوگی ویسی ہی حکومت ہوگی۔ دنیا میں کوئی بنا نِسوارتھ اور بے لاگ خدمت (سیوا) کے سویہ یعنی مخدوم نہیں بن سکتا۔ اگر جنتا یہ چاہتی ہے کہ وہ راج چلانے والوں کو اپنا سیوک اور خادم بنا لے تو وہ اپنا یہ مقصد فوجوں، پولیس یا تلواروں سے حاصل نہیں کر سکتی کیونکہ یہ فوجیں اور پولیس تو ایک بار ان کا سنگٹھن ہو جانے کے بعد حکومت کی ساری دولت اور طاقت کو اپنے ہی، ہاتھوں میں لے لیں گے اور پہلے راجاؤں کی جگہ یہ جنتا کے دوسرے راجہ بن بیٹھیں گے۔

جنتا کے اصلی راجہ بننے کا طریقہ سوائے اس کے جو باپو نے بتایا ہے کوئی دوسرا ہو ہی نہیں سکتا۔ وہ طریقہ سوادلمبن اور اسہیوگ کا طریقہ ہے۔ جنتا کا اسہیوگ چاہے کسی دیشی حکومت سے ہو یا ودیشی حکومت سے، اتنی زبردست شکتی ہے کہ جس سے کوئی حکومت ٹکر نہیں لے سکتی۔ پر اس اسہیوگ کا روپ رچناتمک ہونا چاہیے ہنساتمک نہیں۔ پولیس اور فوجوں سے مارکاٹ کی ٹکریں لے کر یا کیول انہیں اپنے اسہیوگ سے بھوکا مار کر ہم انہیں یا حکومت کو کوئی اصلی نقصان نہیں پہنچا سکتے۔ اس سے تو ہم کو ہی بڑے سے بڑے پیمانے پر نقصان پہونچے گا۔ اسہیوگ کا رچناتمک روپ سوادلمبن ہے یعنی یہ کہ اپنے علاقوں کا سنگٹھن اس طرح کر لیا جائے کہ وہ اپنے جھگڑوں کو آپ نپٹا لیں اور اپنی رکھشا آپ کر سکیں۔ اگر ہم یہ سنگٹھن کر لیں تو کوئی حکومت نہ ہم پر پولیس راج قائم کر سکتی ہے اور نہ اس کی کوشش ہی کر

सकती है. अगर हमारे देश में अमन अमान बनाये रखने की जिम्मेदारी जनता अपने हाथों में ले ले तो देश में इतना बड़ा संगठन पैदा हो जाय और जनता में असहयोग करने की इतनी शक्ति आ जाय और उसके पास इतने साधन जमा हो जायँ कि इसके बाद दुनिया की कोई हुकूमत इस पर फ़ौजों और पुलिस की मदद से अपना राज नहीं जमा सकती. जहाँ तक अपनी देशी हुकूमत का सम्बन्ध है वहाँ तक उस पर इस संगठन का वैसा ही असर पड़ेगा जैसा जहर का दांत निकाल लेने का काले नाग पर पड़ता है. वह फिर जनता का कुछ बिगाड़ ही न सकेगी.

आज से सौ बरस पहले हमारे गाँव खुद अपनी रक्षा का प्रबंध करते थे और यह प्रबंध इतना अच्छा और पूरा था कि हर इतिहास लेखक ने इस की तारीफ़ की है. सिवाय पच्छिमी सभ्यता की मरकज़ीयत के और गाँवों को उजाड़ कर उनकी जगह बड़े बड़े शहर आबाद करने की तरफ़ झुकाव के और कोई कठिनाई इस संगठन को फिर से क़ायम कर देने में हमारे सामने नहीं आसकती. बापू कहते थे कि अगर हुकूमत मेरे हाथ में आजाय तो मैं बिना पुलिस और फ़ौज के उसे चलाने की जिम्मेदारी ले सकता हूँ. उनके सामने इस बात को पूरा करने का यही सीधा सादा रास्ता था.

जनता अगर इस राजकाजी पहलू के अलावा इस योजना के समाजी, माली और रोजगारी पहलुओं पर ध्यान दे तो उसे इस योजना के समझने और उससे अपने और देश के लाभ को जानने में और भी बड़ी मदद मिल सकती है. दुनिया की कोई हुकूमत बिना जनता के सहयोग, उसके संगठन और उसकी पूरी पूरी मदद

سکتی ہے۔ اگر ہمارے دیش میں امن امان بنائے رکھنے کی ذمہ داری جنتا اپنے ہاتھوں میں لے لے تو دیش میں اتنا بڑا سنگٹھن پیدا ہو جائے اور جنتا میں اسہیوگ کرنے کی اتنی شکتی ہو جائے اور اس کے پاس اتنے سادھن جمع ہو جائیں کہ اس کے بعد دنیا کی کوئی حکومت اس پر فوجوں اور پولیس کی مدد سے اپنا راج نہیں جما سکتی۔ جہاں تک اپنی دیشی حکومت کا سمبندھ ہے وہاں تک اس پر اس سنگٹھن کا ویسا ہی اثر پڑے گا جیسا زہر کا دانت نکال لینے کا کالے ناگ پر پڑتا ہے۔ وہ پھر جنتا کا کچھ بگاڑ ہی نہ سکے گی۔

آج سے سو برس پہلے ہمارے گاؤں خود اپنی رکشا کا پربندھ کرتے تھے اور یہ پربندھ اتنا اچھا اور پورا تھا کہ ہر اتہاس لیکھک نے اس کی تعریف کی ہے۔ سوائے پچھمی سبھیتا کی مرکزیت کے اور گاؤں کو اجاڑ کر ان کی جگہ بڑے بڑے شہر آباد کرنے کی طرف جھکاؤ کے اور کوئی کٹھنائی اس سنگٹھن کو پھر سے قائم کر دینے میں ہمارے سامنے نہیں آسکتی۔ باپو کہتے تھے کہ اگر حکومت میرے ہاتھ میں آجائے تو میں بنا پولیس اور فوج کے اسے چلانے کی ذمہ داری لے سکتا ہوں۔ انکے سامنے اس بات کو پورا کرنے کا یہی سیدھا سادا راستہ تھا۔

جنتا اگر اس راج کاجی پہلو کے علاوہ اس یوجنا کے سماجی، مالی اور روزگاری پہلوؤں پر دھیان دے تو اسے اس یوجنا کے سمجھنے اور اس سے اپنے اور دیش کے لابھ کو جاننے میں اور بھی بڑی مدد مل سکتی ہے۔ دنیا کی کوئی حکومت بنا جنتا کے سہیوگ، اس کے سنگٹھن اور اسکی پوری پوری مدد

के आजकल के ज़माने में न अमन क़ायम रख सकती है और न अन्यायों और दुराचारों के तूफ़ानों को बढ़ने से रोक सकती है. हमारी हुकूमत के नेताओं से बढ़कर नेकनीयत आदमी दूसरी हुकूमतों में मिलना कठिन है. यह लोग नेकनीयती के साथ अपनी सारी ताक़त रिश्वत को रोकने में लगा रहे हैं पर रिश्वत रुकने की जगह दिन दिन शैतान की आंत की तरह बढ़ती ही जा रही है. अगर जनता अपने आप संगठन करके इस तूफ़ान को नहीं रोकती तो दुनिया की कोई शक्ति इसे नहीं रोक सकती. इसी तरह साम्प्रदायिकता के तूफ़ान को रोकने में इन नेताओं ने अपनी सारी शक्ति लगा दी थी फिर भी इसकी बाढ़ बढ़ती ही जाती थी. अगर बापू अपनी जान देकर इसे ठंडा न करते तो हुकूमत, कांग्रेस और देश सभी इसकी बाढ़ में बह कर ख़तम हो गये होते. देश के सदाचार को ठीक करना और अमन क़ायम रखना पूरी तरह जनता के हाथ की चीज़ें हैं. जनता के सिवाय न कोई इस ज़िम्मेदारी को ले सकता है और न कामयाबी के साथ निबाह सकता है. जनता अगर इन कामों की ज़रूरत को समझ ले और इन्हें कामयाब बनाने में लग जावे तो सदियों में नहीं बरसों और महीनों में इसे मन चाही कामयाबी मिल सकती है. यह कामयाबी और बातों के साथ साथ इसे राजकाजी पार्टियों की खेंचातानी और उससे पैदा होने वाली बरबादी से हमेशा के लिये बचा लेगी.

अगर जनता अपनी रक्षा की ज़िम्मेवारी अपने हाथ में ले ले तो एक तरफ़ तो यह अपने अपने इलाक़े के नासमझ और बहके हुए लोगों पर क़ाबू हासिल कर लेगी और दूसरी तरफ़ उसमें इतनी

کے آج کل کے زمانے میں نہ امن قائم رکھ سکتی ہے اور نہ انیائے اور دُراچاروں کے طوفانوں کو بڑھنے سے روک سکتی ہے۔ ہماری حکومت کے نیتاؤں سے بڑھ کر نیک نیت آدمی دوسری حکومتوں میں ملنا کٹھن ہے۔ یہ لوگ نیک نیتی کے ساتھ اپنی ساری طاقت رشوت کو روکنے میں لگا رہے ہیں پر رشوت رکنے کی جگہ دن دن شیطان کی آنت کی طرح بڑھتی ہی جا رہی ہے۔ اگر جنتا اپنے آپ سنگٹھن کرکے اس طوفان کو نہیں روکتی تو دنیا کی کوئی شکتی اسے نہیں روک سکتی۔ اسی طرح سامپردائکتا کے طوفان کو روکنے میں ان نیتاؤں نے اپنی ساری شکتی لگا دی تھی پھر بھی اس کی باڑھ بڑھتی ہی جاتی تھی۔ اگر باپو اپنی جان دے کر اسے ٹھنڈا نہ کرتے تو حکومت، کانگریس، دیش سبھی اس کی باڑھ میں بہہ کر ختم ہو گئے ہوتے۔ دیش کے سداچار کو ٹھیک کرنا اور امن قائم رکھنا پوری طرح جنتا کے ہاتھ کی چیزیں ہیں۔ جنتا کے سوائے نہ کوئی اس ذمہ داری کو لے سکتا ہے اور نہ کامیابی کے ساتھ نباہ سکتا ہے۔ جنتا اگر ان کاموں کی ضرورت کو سمجھ لے اور انھیں کامیاب بنانے میں لگ جاوے تو صدیوں میں نہیں برسوں اور مہینوں میں اسے من چاہی کامیابی مل سکتی ہے۔ یہ کامیابی اور باتوں کے ساتھ ساتھ اسے راج کاجی پارٹیوں کی کھینچا تانی اور اس سے پیدا ہونے والی بربادی سے ہمیشہ کے لئے بچا لے گی۔

اگر جنتا اپنی رکشا کی ذمہ داری اپنے ہاتھ میں لے لے تو ایک طرف تو یہ اپنے اپنے علاقے کے نا سمجھ اور بہکے ہوئے لوگوں پر قابو حاصل کر لے گی اور دوسری طرف اس میں اتنی

शक्ति पैदा हो जायगी कि राजकाजी पार्टियाँ और फ़िरक़ेवाराना गिरोह फिर उसे या देश को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगे.

समग्र सेवा और स्वावलम्बन दोनों बापू के रामबान हैं. उनका इस्तेमाल सीख कर कोई जनता कमज़ोर और बेबस रह ही नहीं सकती.

हमने जो कुछ ऊपर दिया है वह बापू के विधान का एक आम ढाँचा है. पार्लीमेंटी राज को सुधारने और उस पर क़ाबू पाने के जो तरीक़े बापू ने इस विधान में दिये हैं उनपर हम अगले हिस्से में लिखेंगे.

बराबर की गवरमेन्ट

बापू के विधान को पूरी तरह समझने के लिये हमें इस बात को नहीं भूलना चाहिये कि वह जनता को देश का असली राजा और हुकूमत को जनता का सच्चा सेवक बनाना चाहते थे. हमारे समाज में जब तक यह इन्क़लाब, असली मानी में पैदा नहीं होता तब तक सच्चा लोकराज या इन्सानी भाईचारा क़ायम नहीं हो सकता.

पर जनता के असली राजा होने के मानी क्या हैं और वह किस तरह असली राजा बन सकती है ?

संसार के इतिहास में यहूदी क़ौम का यह दावा था कि उनकी किताब तौरेत में ख़ुदा ने उन्हें दुनिया में एक हुकूमत देने का वायदा

شکتی پیدا ہو جائے گی کہ راج کاجی پارٹیاں اور فرقہ دارانہ گروہ پھر اُسے یا دیش کو کوئی نقصان نہیں پہنچا سکیں گی۔

سمگر سیوا اور سواولمبن دونوں باپو کے رام بان ہیں۔ اُن کا استعمال سیکھ کر کوئی جنتا کمزور اور بے بس رہ ہی نہیں سکتی۔

ہم نے جو کچھ اوپر دیا ہے وہ باپو کے وِدّھان کا ایک عام ڈھانچہ ہے۔ پارلیمنٹی راج کو سدھارنے اور اُن پر قابو پانے کے جو طریقے باپو نے اس وِدّھان میں دیئے ہیں اُن پر ہم اگلے حصے میں لکھیں گے۔

برابر کی گورنمنٹ

باپو کے وِدّھان کو پوری طرح سمجھنے کے لئے ہمیں اس بات کو نہیں بھلانا چاہیئے کہ وہ جنتا کو دیش کا اصلی راجہ اور حکومت کو جنتا کا سچا سیوک بنانا چاہتے تھے۔ ہمارے سماج میں جب تک یہ انقلاب اصلی معنی میں پیدا نہیں ہوتا تب تک سچا لوک راج یا انسانی بھائی چارہ قائم نہیں ہو سکتا۔

پر جنتا کے اصلی راجہ ہونے کے معنی کیا ہیں اور وہ کس طرح اصلی راجہ بن سکتی ہے؟

سنسار کے اتہاس میں یہودی قوم کا یہ دعویٰ تھا کہ اُن کی کتاب توریت میں خدا نے انھیں دنیا میں ایک حکومت دینے کا وعدہ

किया है. इतिहास के शुरू से वह इस हुकूमत को ढूँढने की धुन में लगे हुए हैं. इसीलिये यहूदियों को 'इतिहास के बाग़ी' (the rebels of history) कहा गया है. हज़रत ईसा ने तौरेत की इस भविष्य बानी को दूसरी तरह समझाया. उन्होंने बताया कि ख़ुदा किसी से इस दुनिया की हुकूमत का वायदा नहीं करता, वह लोगों को परलोक यानी बहिश्त की हुकूमत हासिल करने की दावत देता है, और वही असली और सच्ची हुकूमत है. पर यहूदियों पर इसका कुछ असर न हुआ. यहूदी आज भी वही अपनी पुरानी हुकूमत फ़िलस्तीन में जमाने की कोशिश कर रहे हैं. उनका शुरू से यह भी ख़याल है कि जो निशान और हवाले इस हुकूमत के उन्हें दिये गये हैं वह फ़िलस्तीन में और उसके आसपास बहुत कुछ मिलते हैं. जहाँ तक ईसाइयों का सम्बन्ध है उन्होंने हज़रत ईसा की इस बात को तो मान लिया कि सच्ची हुकूमत बहिश्त की ही हुकूमत है. पर उन्होंने इसमें यह और जोड़ा कि बहिश्त की हुकूमत हासिल करने के लिये दुनिया की हुकूमत का भी चर्च यानी ईसाई पादरियों के हाथों में होना ज़रूरी है. इसके लिये उन्होंने अपने राजाओं की गवरमेंट के बराबर बराबर अपनी एक अलग पैरेलल गवरमेंट खड़ी करने की कोशिश की. इस पर राजाओं से इनकी टक्कर हुई. राजाओं ने इन्हें हरा दिया और इसके साथ ही साथ अपनी दुनिया की हुकूमत को मज़हब और सदाचार तक से पूरी तरह आज़ाद कर लिया. इस तरह योरप में लामज़हबी और बेदीनी का वह दौर शुरू हुआ जिसने थोड़े ही दिनों में सारी दुनिया पर अपना असर डाल दिया. बापू इसी बेदीनी को दुनिया से मिटाना चाहते हैं. और

کیا ہے۔ اتہاس کے شروع سے وہ اس حکومت کو ڈھونڈھنے کی دُھن میں لگے ہوئے ہیں۔ اِس لئے یہودیوں کو "اتہاس کے باغی" کہا گیا ہے (the rebels of history)۔ حضرت عیسیٰؑ نے توریت کی اِس بھوشیہ بانی کو دوسری طرح سمجھایا۔ اُنھوں نے بتایا کہ خدا کسی سے اِس دُنیا کی حکومت کا وعدہ نہیں کرتا، وہ لوگوں کو پرلوک یعنی بہشت کی حکومت حاصل کرنے کی دعوت دیتا ہے، اور وہی اصلی اور سچی حکومت ہے۔ پر یہودیوں پر اِس کا کچھ اثر نہ ہوا۔ یہودی آج بھی وہی اپنی پُرانی حکومت فلسطین میں جمانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ اُن کا شروع سے یہ بھی خیال ہے کہ جو نشان اور حوالے اِس حکومت کے اُنھیں دیئے گئے ہیں وہ فلسطین میں اور اُس کے آس پاس بہت کچھ ملتے ہیں۔ جہاں تک عیسائیوں کا سمبندھ ہے اُنھوں نے حضرت عیسیٰؑ کی اِس بات کو تو مان لیا کہ سچی حکومت بہشت کی ہی حکومت ہے۔ پر اُنھوں نے اس میں یہ اور جوڑا کہ بہشت کی حکومت حاصل کرنے کے لئے دنیا کی حکومت کا بھی چرچ یعنی عیسائی پادریوں کے ہاتھوں میں ہونا ضروری ہے۔ اِس کے لئے اُنھوں نے اپنے راجاؤں کی گورنمنٹ کے برابر برابر اپنی ایک الگ پیریلل گورنمنٹ کھڑی کرنے کی کوشش کی۔ اِس پر راجاؤں سے اِن کی ٹکر ہوئی۔ راجاؤں نے اِنھیں ہرا دیا اور اِس کے ساتھ ہی ساتھ اپنی دُنیا کی حکومت کو مذہب اور سداچار تک سے پوری طرح آزاد کر لیا۔ اِس طرح یورپ میں لامذہبی اور بے دینی کا وہ دور شروع ہوا جس نے تھوڑے ہی دنوں میں ساری دُنیا پر اپنا اثر ڈال دیا۔ باپو اِسی بے دینی کو اِس دنیا سے مٹانا چاہتے تھے۔ اور

इसकी जगह परलोक में नहीं इसी दुनिया में वह नैतिक राज क़ायम करना चाहते हैं जिसका रूप वही होगा जो हजरत मूसा, हजरत ईसा, भगवत गीता, मुहम्मद साहब और दुनिया के हर बड़े धर्म ने बताया है यानी सच्चा लोकराज और इन्सानी भाईचारा.

नागपुर में कांग्रेस के लिये बापू ने एक नया विधान बनाया था. देशबन्धु चित्तरंजन दास ने उस समय बापू के विधान को देख कर कहा था कि इसमें बापू ने अंगरेजी राज के बराबर बराबर एक पैरेलल राज क़ायम करने की दाग़बेल डाली है. यह राय एक हद तक ठीक थी. पर कांग्रेस बापू का या उस विधान का असली मतलब न समझी. कांग्रेस ने एक ऐसा नैतिक संगठन खड़ा करने के बजाय, जो हुकूमत से ऊँचा और उसके ऊपर हो और जो फ़ौज या पुलिस की ताक़त पर नहीं बल्कि निस्वार्थ सेवा और सदाचार पर क़ायम हो, अंगरेजों से राज छीन लेने को ही अपना मक़सद बना लिया.

कांग्रेस ने यह मक़सद हासिल तो कर लिया पर कांग्रेस के राजा बन जाने से वही ख़ूनी और घातक नतीजे पैदा हुए जिनका पैदा होना उस नैतिक संगठन के न बन सकने के कारन स्वाभाविक था. हम कह चुके हैं कि बापू हमेशा कांग्रेस को हुकूमत से बाहर रखने और अपने आप को और मुल्क को इन बुरे नतीजों से बचाने की सलाह देते रहे. इस विधान में उन्होंने आख़िरी बार कांग्रेस को हुकूमत से बाहर आने और इस हुकूमत से ऊपर और इसके बराबर बराबर एक ऐसा पैरेलल राज क़ायम करने की सलाह दी है जो जनता का सच्चा सेवक और रक्षक हो और जो देश की

اس کی جگہ پرلوک میں نہیں اسی دُنیا میں وہ نیتک راج قائم کرنا چاہتے ہیں جس کا روپ وہی ہوگا جو حضرت موسیٰ، حضرت عیسیٰ، بھگوت گیتا، محمدؐ صاحب اور دُنیا کے ہر بڑے دھرم نے بتایا ہے یعنی سچا لوک راج اور انسانی بھائی چارا۔

ناگپور میں کانگریس کے لئے باپو نے ایک نیا ودھان بنایا تھا۔ دیش بندھو چترنجن داس نے اُس سمے باپو کے ودھان کو دیکھ کر کہا تھا کہ اس میں باپو نے انگریزی راج کے برابر برابر ایک پیریلل راج قائم کرنے کی داغ بیل ڈالی ہے۔ یہ رائے ایک حد تک ٹھیک تھی۔ پر کانگریس باپو کا یا اُس ودھان کا اصلی مطلب نہ سمجھی۔ کانگریس نے ایک ایسا نیتک سنگٹھن کھڑا کرنے کے بجائے، جو حکومت سے اونچا اور اس کے اوپر ہو اور جو فوج یا پولیس کی طاقت پر نہیں بلکہ نِسوارتھ سیوا اور سداچار پر قائم ہو، انگریزوں سے راج چھین لینے کو ہی اپنا مقصد بنا لیا۔

کانگریس نے یہ مقصد حاصل تو کر لیا پر کانگریس کے راجا بن جانے سے وہی خونی اور گھاتک نتیجے پیدا ہوئے جن کا پیدا ہونا اُس نیتک سنگٹھن کے نہ بن سکنے کے کارن سوابھاوک تھا۔ ہم کہہ چکے ہیں کہ باپو ہمیشہ کانگریس کو حکومت سے باہر رکھنے اور اپنے آپ کو اور ملک کو ان بُرے نتیجوں سے بچنے کی صلاح دیتے رہے۔ اِس ودھان میں اُنہوں نے آخری بار کانگریس کو حکومت سے باہر آنے اور اس حکومت سے اوپر اور اس کے برابر برابر ایک ایسا پیریلل راج قائم کرنے کی صلاح دی ہے جو جنتا کا سچا سیوک اور رکھشک ہو اور جو دیش کی

हुकूमत को भी जनता का सच्चा सेवक बना सके. हुकूमत के लिये इस सलाह का मानना आसान नहीं है. पर जनता इस विधान को इस तरह भूल नहीं सकती. जनता के लिये सचमुच राजा बनने का और कोई दूसरा रास्ता है भी नहीं, सिवाय इसके कि वह अपने राजकाज की देख रेख और निगरानी के लिये इस विधान के अनुसार एक नैतिक संगठन खड़ा कर ले.

बापू ने अपने इस विधान में इसी तरह का एक पैरेलल राज क़ायम करने की दाग़बेल डाली है, जो पार्लिमेंटी राज की बुराइयों से पाक हो और जो देश की हुकूमत को इन बुराइयों से बचा सके.

हम दिखा चुके हैं कि बापू ने अपने इस संगठन को हद दरजे का ग़ैरमरकज़ी रखा है और हमारे पुराने इतिहास के आधार पर हर गांव को एक पूरी और आज़ाद रिपब्लिक की सूरत दी है. अगर इस तरह की एक भी रिपब्लिक क़ायम हो जावे तो दूसरी क़ायम होने में देर नहीं लग सकती. कठिनाइयाँ जो कुछ पड़ेंगी शुरू ही में पड़ सकती हैं. इस संगठन की बापू ने जो सबसे छोटी बुनियादी इकाई अपने विधान में रखी है वह हम उन्हीं के शब्दों में नीचे देते हैं —

"पांच ऐसे बालिग़ मर्दों या औरतों की हर पंचायत जो या तो गाँव के रहने वाले हों या जिनके मन में गाँव की लगन हो, इस संघ की इकाई होगी."

बापू की इस इकाई पर निगाह डालते ही हम यह देख सकते हैं कि यह इकाई पार्लिमेंटी राज की उन सब बुराइयों से पाक है

حکومت کو بھی جنتا کا سچا سیوک بنا سکے. حکومت کے لئے اس صلاح کا ماننا آسان نہیں ہے. پر جنتا اس ودھان کو اس طرح بھول نہیں سکتی. جنتا کے لئے سچ مچ راجہ بننے کا اور کوئی دوسرا راستہ ہے بھی نہیں، سوائے اس کے کہ وہ اپنے راج کاج کی دیکھ ریکھ اور نگرانی کے لئے اس ودھان کے انوسار ایک نیتک سنگٹھن کھڑا کر لے.

باپو نے اپنے اس ودھان میں اسی طرح کا ایک پیرلل راج قائم کرنے کی داغ بیل ڈالی ہے، جو پارلیمنٹری راج کی برائیوں سے پاک ہو اور جو دیش کی حکومت کو ان برائیوں سے بچا سکے.

ہم دکھا چکے ہیں کہ باپو نے اپنے اس سنگٹھن کو حد درجے کا غیر مرکزی رکھا ہے اور ہمارے پرانے اتہاس کے آدھار پر ہر گاؤں کو ایک پوری اور آزاد ریپبلک کی صورت دی ہے. اگر اس طرح کی ایک بھی ریپبلک قائم ہو جاوے تو دوسری قائم ہونے میں دیر نہیں لگ سکتی. کٹھنائیاں جو کچھ پڑیں گی شروع ہی میں پڑ سکتی ہیں. اس سنگٹھن کی باپو نے جو سب سے چھوٹی بنیادی اکائی اپنے ودھان میں رکھی ہے وہ ہم انہیں کے شبدوں میں نیچے دیتے ہیں —

"پانچ ایسے بالغ مردوں یا عورتوں کی ہر پنچایت جو یا تو گاؤں کے رہنے والے ہوں یا جن کے من میں گاؤں کی لگن ہو، اس سنگھ کی اکائی ہوگی."

باپو کی اس اکائی پر نگاہ ڈالتے ہی ہم یہ دیکھ سکتے ہیں کہ یہ اکائی پارلیمنٹری راج کی ان سب برائیوں سے پاک ہے

जिन्होंने उस राज को इतना खतरनाक बना रखा है. चुनाव की इनमें कोई छाया नहीं. क़ानूनी नुमाइन्दगी का इनमें कहीं पता नहीं. इन्हें कोई हक़ या साधन हुकूमत की तरफ़ से नहीं मिले. सरकारी पंचायतों की तरह यह किसी सरकारी क़ानून की पाबंद नहीं. राजकाजी निगाह से इन्हें पूरी आजादी हासिल है.

अगर हम इन्हें पुरानी पंचायतों से मिलाकर देखें तो यह उनसे भी ऊँची और अच्छी हैं. पुराने पंचों को नुमाइंदगी का अधिकार चुनाव से मिलता था. यह ठीक है कि उनका चुनाव और उनकी नुमाइन्दगी दोनों आजकल के मुक़ाबले में सच्चे और असली लोकराज के असूलों पर थे. फिर भी उनको अधिकार चुनाव से ही मिलता था इसलिये वह पञ्चायतें स्वावलंबी नहीं थीं. पुरानी पंचायतों की यही बुनियादी कमी थी. वह अपने अंदर की नैतिक शक्ति से पैदा नहीं हुई थीं इसीलिये उनमें बाहर की शक्तियों से अपने आप को बचाकर रखने की ताक़त पैदा नहीं हो सकी. देश के राजा और बादशाह इन पंचायतों के अधिकारों में तो दख़ल न देते थे, पर वह राजा जिनके दिल में देश के रीत रिवाजों की बहुत अधिक क़द्र नहीं थी गांव के दूसरे राजकाजी मामलों में दख़ल दे सकते थे और कभी कभी देते भी रहते थे. पर चूँकि देश की सभ्यता और नैतिक हवा इन पंचायतों की मददगार थी इसलिये वह हजारों साल तक अपना काम अच्छी तरह चलाती रहीं. अब वह हालत बदल गई. अब जब तक कोई संगठन ऐसा खड़ा न हो जाय जो हमारे देश के सदाचार को ग़ैर सदाचारी हमलों से बचा सके तब तक हमारी सभ्यता इस मुल्क में क़ायम नहीं रह सकती. इसलिये एक

جنھوں نے اس راج کو اتنا خطرناک بنا رکھا ہے۔ چُناؤ کی ان میں کوئی چھایا نہیں۔ قانونی نمائندگی کا ان میں کہیں پتہ نہیں۔ انھیں کوئی حق یا سادھن حکومت کی طرف سے نہیں ملے۔ سرکاری پنچائتوں کی طرح یہ کسی سرکاری قانون کی پابند نہیں۔ راج کاجی نگاہ سے انھیں پوری آزادی حاصل ہے۔

اگر ہم انھیں پرانی پنچائتوں سے ملاکر دیکھیں تو یہ ان سے بھی اونچی اور اچھی ہیں۔ پُرانے پنچوں کو نمائندگی کا ادھیکار چُناؤ سے ملتا تھا۔ یہ ٹھیک ہے کہ ان کا چُناؤ اور ان کی نمائندگی دونوں آج کل کے مقابلے میں سچے اور اصلی لوک راج کے اصولوں پر تھے۔ پھر بھی ان کو ادھیکار چناؤ سے ہی ملتا تھا اس لئے وہ پنچائتیں سوادلمبی نہیں تھیں۔ پرانی پنچائتوں کی یہی بنیادی کمی تھی۔ وہ اپنے اندر کی نیتک شکتی سے پیدا نہیں ہوئی تھیں اسی لئے ان میں باہر کی شکتیوں سے اپنے آپ کو بچا کر رکھنے کی طاقت پیدا نہیں ہو سکی۔ دیش کے راجہ اور بادشاہ ان پنچائتوں کے ادھیکاروں میں تو دخل نہ دیتے تھے، پر وہ راجا جن کے دل میں دیش کے ریت رواجوں کی بہت ادھک قدر نہیں تھی گاؤں کے دوسرے راج کاجی معاملوں میں دخل دے سکتے تھے اور کبھی کبھی دیتے بھی رہتے تھے۔ پر چونکہ دیش کی سبھیتا اور نیتک ہوا ان پنچائتوں کی مددگار تھی اسلئے وہ ہزاروں سال تک اپنا کام اچھی طرح چلاتی رہیں۔ اب وہ حالت بدل گئی۔ اب جب تک کوئی سنگٹھن ایسا کھڑا نہ ہو جائے جو ہمارے دیش کے سدا چار کو غیر سدا چاری حملوں سے بچا سکے تب تک ہماری سبھیتا اس ملک میں قائم نہیں رہ سکتی۔ اس لئے ایک

नये नैतिक संगठन का पैदा होना जरूरी है. बापू की पंचायतें इसी संगठन का बीज हैं. वह पुरानी पंचायतों की जगह लेने नहीं आई हैं. इन पंचायतों के पंच खुद हमेशा गांव के चुनाव और राजकाजी दांवों से अलग रहेंगे. हुकूमत और ताक़त चुनाव और नुमाइन्दगी अपने साथ जो शक्ति और साधन लाते हैं उनमें इन पंचों का कभी कोई हिस्सा न होगा. इनके त्याग, इनकी नेकनीयती और इनकी निस्वार्थ सेवा का जनता के लिये यही खुला सबूत होगा. इसी पर इनके असर और ताक़त की बुनियाद होगी. इनकी सेवा, इनका साहस, इनकी नेकनीयती, इनका सदाचार और इनका जनता के सुख-दुख में साथ देना, और जनता को बाहर के दबाव से बचाने की दिल जान से कोशिश करना, यह सब चीजें इनकी उस शक्ति को बढ़ाती रहेंगी. इस तरह आजकल की सरकारी पंचायतों से बाहर रहते हुए यह इन्हें स्वावलम्बी बनाने और पूरी आज़ादी हासिल करने की तरफ़ बढ़ाते रहेंगे. गाँव में इनकी वही जगह होगी जो सारे लोक सेवक संघ की देश में होगी.

कहा जा सकता है कि आजकल की दुनिया में कोई गाँव या गाँव की पंचायत स्वावलम्बी कैसे हो सकती है या कोई भी हुकूमत अपने आप को बाहर की माली, समाजी, राजकाजी और नैतिक ज़िन्दगी से बिलकुल नाता तोड़ कर स्वावलम्बी कैसे बन सकती है. यह एतराज़ स्वावलम्बन के मानी ठीक-ठीक न समझने से पैदा होता है. आजकल की चारों तरफ़ फैली हुई उस खेंचातानी से अपने आप को अलग रखना जिसमें हरेक दूसरे को अपना दुश्मन मानता है, दूसरों से नाता तोड़ना नहीं है, नाता जोड़ना है. अपनी सारी

نئے نیتک سنگٹھن کا پیدا ہونا ضروری ہے۔ باپو کی پنچایتیں اسی سنگٹھن کا بیج ہیں۔ وہ پرانی پنچایتوں کی جگہ لینے نہیں آئی ہیں۔ ان پنچایتوں کے پنچ خود ہمیشہ گاؤں کے چناؤ اور راج کاجی داؤں سے الگ رہیں گے۔ حکومت اور طاقت چناؤ اور نمائندگی اپنے ساتھ جو شکتی اور سادھن لاتے ہیں اُن میں ان پنچوں کا کبھی کوئی حصہ نہ ہوگا۔ ان کے تیاگ، ان کی نیک نیتی اور ان کی نسوارتھ سیوا کا جنتا کے لئے یہی کھلا ثبوت ہوگا۔ اسی پر ان کے اثر اور طاقت کی بنیاد ہوگی۔ ان کی سیوا، ان کا ساہس، ان کی نیک نیتی، ان کا سداچار اور ان کا جنتا کے سکھ دکھ میں ساتھ دینا، اور جنتا کو باہر کے دباؤ سے بچانے کی دل جان سے کوشش کرنا، یہ سب چیزیں ان کی اس شکتی کو بڑھاتی رہیں گی۔ اس طرح آجکل کی سرکاری پنچایتوں سے باہر رہتے ہوئے یہ انہیں سوالمبی بنانے اور پوری آزادی حاصل کرنے کی طرف بڑھاتے رہیں گے۔ گاؤں میں ان کی وہی جگہ ہوگی جو سارے لوک سیوک سنگھ کی دیش میں ہوگی۔

کہا جا سکتا ہے کہ آج کل کی دنیا میں کوئی گاؤں یا گاؤں کی پنچایت سوالمبی کیسے ہو سکتی ہے یا کوئی بھی حکومت اپنے آپ کو باہر کی مالی، سماجی، راج کاجی اور نیتک زندگی سے بالکل ناتا توڑ کر سوالمبی کیسے بن سکتی ہے۔ یہ اعتراض سوالمبی کے معنی ٹھیک ٹھیک نہ سمجھنے سے پیدا ہوتا ہے۔ آج کل کی چاروں طرف پھیلی ہوئی اس کھینچا تانی سے اپنے آپ کو الگ رکھنا جس میں ہر ایک دوسرے کو اپنا دشمن مانتا ہے، دوسروں سے ناتا توڑنا نہیں ہے، ناتا جوڑنا ہے۔ اپنی ساری

ज़रूरतें ख़ुद अपनी मेहनत से पूरी करने की हद दरजे की कोशिश करना दूसरों से नाता तोड़ना नहीं हैं बल्कि उसी मक़सद की तरफ़ बढ़ना है जिसकी तरफ़ दुनिया बढ़ने की कोशिश कर रही है. उन चीज़ों से बचना जो हमें नुक़्सान पहुँचाती हैं, हर आदमी और हर गिरोह का फ़र्ज़ है. ऐसी चीज़ों से अपना काम चला लेना, जो हमें अपने यहाँ मिल सकती हैं और जो हमारी दौलत को बाहर जाने से रोक कर हमारे पेट भरने और तन ढकने में मदद देती हैं, किसी से नाता तोड़ना नहीं बल्कि दुश्मनी, नफ़रत, दंगों और जंगों से बचने और दूसरों को बचाने का रास्ता निकालना है. इसी से हममें वह शक्ति पैदा हो सकती है जिससे हम अपनी और दूसरों की सच्ची रक्षा और सेवा कर सकें. एक दूसरे से बेजा फ़ायदा उठाने की इच्छा और कोशिश जो आज हम सब की आम ज़िन्दगी है, दूसरों से नाता जोड़ती नहीं तोड़ती है. इस इच्छा और इस कोशिश को अपने अंदर से मिटा देने के बाद ही हम एक दूसरे से सच्चा और सही नाता जोड़ सकेंगे.

दूसरों से बेजा फ़ायदा न उठाना और दूसरों को हर जायज़ फ़ायदा पहुँचाने की कोशिश करना यही स्वावलम्बन के बुनियादी उसूल हैं. इसमें अलग रहने या नाता तोड़ने का सवाल ही पैदा नहीं होता.यह एक दूसरे के साथ हद दरजे का सहयोग है. हाँ इतना ज़रूर है कि यह इस सहयोग को सदाचारी और इन्सानी बुनियादों तक ही रखना चाहता है, और यह बात केवल अपने बचाव के लिये नहीं बल्कि दुनिया के सब इन्सानों की भलाई और बेहतरी के लिये.

ضرورتیں خود اپنی محنت سے پوری کرنے کی حد درجے کی کوشش کرنا دوسروں سے ناتا توڑنا نہیں ہیں بلکہ اُسی مقصد کی طرف بڑھنا ہے جس کی طرف دُنیا بڑھنے کی کوشش کر رہی ہے، اُن چیزوں سے بچنا جو ہمیں نقصان پہنچاتی ہیں، ہر آدمی اور ہر گروہ کا فرض ہے۔ ایسی چیزوں سے اپنا کام چلا لینا، جو ہمیں اپنے یہاں مل سکتی ہیں اور جو ہماری دولت کو باہر جانے سے روک کر ہمارے پیٹ بھرنے اور تن ڈھکنے میں مدد دیتی ہیں، کسی سے ناتا توڑنا نہیں بلکہ دشمنی، نفرت، دنگوں اور جنگوں سے بچنے اور دوسروں کو بچانے کا راستہ نکالنا ہے۔ اِسی سے ہم میں وہ شکتی پیدا ہو سکتی ہے جس سے ہم اپنی اور دوسروں کی سچی رکشا اور سیوا کر سکیں۔ ایک دوسرے سے بیجا فائدہ اُٹھانے کی اِچھا اور کوشش جو آج ہم سب کی عام زندگی ہے، دوسروں سے ناتا جوڑتی نہیں توڑتی ہے۔ اِس اِچھا اور اِس کوشش کو اپنے اندر سے مٹا دینے کے بعد ہی ہم ایک دوسرے سے سچا اور صحیح ناتا جوڑ سکیں گے۔

دوسروں سے بیجا فائدہ نہ اُٹھانا اور دوسروں کو ہر جائز فائدہ پہنچانے کی کوشش کرنا یہی سواولمبن کے بنیادی اصول ہیں۔ اس میں الگ رہنے یا ناتا توڑنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ یہ ایک دوسرے کے ساتھ حد درجے کا سہیوگ ہے۔ ہاں اتنا ضرور ہے کہ یہ اِس سہیوگ کو سداچاری اور انسانی بنیادوں تک ہی رکھنا چاہتا ہے، اور یہ بات کیول اپنے بچاؤ کے لئے نہیں بلکہ دُنیا کے سب انسانوں کی بھلائی اور بہتری کے لئے۔

बापू के इस विधान और इन पञ्चायतों में अपने को कुछ चीज़ों से अलग रखने की बात भी है. पर अलग रखना किन चीज़ों से? आजकल के जीवन के उन पहलुओं से जो हमारी सारी इन्सानी ज़िन्दगी को मटियामेट कर रहे हैं. एक दूसरे पर हुकूमत करने से, दुराचारों बेईमानियों और ज़ुल्मों से, जनता के टुकड़े टुकड़े कर डालने से, छूत अछूत और साम्प्रदायिक ज़हर से. यह पंचायतें तो सब धर्मों और सब इन्सानों को एक कुनबे के रूप में लाना चाहती हैं, दुनिया को एक बिरादरी बनाना चाहती हैं, और आदमी आदमी में सगे भाइयों का सा सम्बन्ध और व्यवहार क़ायम करना चाहती हैं. इनमें दूसरों से अलग रहने और नाता तोड़ने की बात आ ही नहीं सकती. दुनिया की हालत इतनी बिगड़ गई है कि इसमें सच्चे भाईचारे और बराबरी का विचार नाता तोड़ना मालूम होता है. लोगों को ना इन्साफ़ियों, पार्टीबाज़ियों और तरह तरह की बुराइयों में हिस्सा लेना नाता जोड़ना मालूम होता है, और मित्रता का आदर्श माना जाता है. जो पार्टियाँ देश की जनता के टुकड़े टुकड़े कर रही हैं, जो धर्म मज़हब जनता को अलग अलग टुकड़ों में रखने के लिये लोहे की दीवारें बन गए हैं, जो देश एक दूसरे को मारने और लूटने के लिये डाकू बने हुए हैं, और जिनकी सभ्यता अपने फ़ायदे के लिये दूसरे को नुक़सान पहुँचना जायज़ बताती है, इन सब से दूर रहने की कोशिश करना हमें दुनिया से नाता तोड़ना दिखाई देता है. बापू का विधान निस्वार्थ सेवा और मानव प्रेम को जीवन का बुनियादी असूल बना कर किसी से नाता तोड़ता नहीं, बल्कि सब को मिलाने का सब से

باپو کے اس ودھان اور ان پنچایتوں میں اپنے کو کچھ چیزوں سے الگ رکھنے کی بات بھی ہے۔ پر الگ رکھنا کن چیزوں سے؟ آج کل کے جیون کو ان پہلوؤں سے جو ہماری ساری انسانی زندگی کو مٹیا میٹ کر رہے ہیں۔ ایک دوسرے پر حکومت کرنے سے، دُراچاروں بے ایمانیوں اور ظلموں سے، جنتا کو ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالنے سے، چھوت اچھوت اور سامپردایک زہر سے۔ یہ پنچایتیں تو سب دھرم اور سب انسانوں کو ایک کُنبے کے روپ میں لانا چاہتی ہیں، دُنیا کو ایک برادری بنانا چاہتی ہیں، اور آدمی آدمی میں سگے بھائیوں کا سا سمبندھ اور دیوہار قائم کرنا چاہتی ہیں۔ ان میں دوسروں سے الگ رہنے اور ناتا توڑنے کی بات آ ہی نہیں سکتی۔ دُنیا کی حالت اتنی بگڑ گئی ہے کہ اس میں سچے بھائی چارے اور برابری کا وچار ناتا توڑنا معلوم ہوتا ہے۔ لوگوں کی نا انصافیوں، پارٹی بازیوں اور طرح طرح کی بُرائیوں میں حصہ لینا ناتا جوڑنا معلوم ہوتا ہے، اور مترتا کا آدرش مانا جاتا ہے۔ جو پارٹیاں دیش کی جنتا کے ٹکڑے ٹکڑے کر رہی ہیں، جو دھرم مذہب جنتا کو الگ الگ ٹکڑوں میں رکھنے کے لئے لوہے کی دیوار بن گئے ہیں، جو دیش ایک دوسرے کو مارنے اور لوٹنے کے لئے ڈاکو بنے ہوئے ہیں، اور جن کی سبھیتا اپنے فائدہ کے لئے دوسرے کو نقصان پہنچانا جائز بتاتی ہے، ان سب سے دور رہنے کی کوشش کرنا ہمیں دنیا سے ناتا توڑنا دکھائی دیتا ہے۔ باپو کا ودھان نسوارتھ سیوا اور مانو پریم کو جیون کا بنیادی اصول بنا کر کسی سے ناتا توڑتا نہیں، بلکہ سب کو ملانے کا سب سے

अच्छा तरीक़ा है. बापू की पंचायतें दुनिया से अलग नहीं रहेंगी. उनके विधान ही में इनके बढ़ने और एक दूसरे से मिलकर काम करने का नक़्शा दिया हुआ है. हम उसे उन्हीं के शब्दों में नीचे देते हैं—

"इस तरह की दो पास पास की पंचायतों को मिला कर एक काम करने वाला जत्था बनेगा जो अपने में से ही एक को अपना नेता चुन कर उसके अधीन काम करेगा.

"जब इस तरह की सौ पंचायतें बन जायँगी तो उनके पचास पहले दरजे के नेता अपने में से एक दूसरे दरजे का नेता चुनेंगे, इसी तरह बराबर होता रहेगा. इस बीच पहले दरजे के नेता दूसरे दरजे के नेता के अधीन काम करेंगे. दो दो सौ पंचायतों के इसी तरह बराबर बराबर के गिरोह बनते रहेंगे जब तक कि यह पंचायतें सारे हिन्दुस्तान में न फैल जायँ. इन पंचायतों का बाद का हर गिरोह पहले गिरोह की तरह अपना दूसरे दरजे का नेता चुनेगा. दूसरे दरजे के सब नेता मिलकर सारे हिंदुस्तान की सेवा करेंगे और अलग अलग अपने इलाक़ों की सेवा करेंगे. दूसरे दरजे के नेता जब कभी ज़रूरी समझें अपने में से एक को सरदार चुन सकेंगे. वह सरदार जब तक चाहेगा उन सब गिरोहों की क़ायदेदारी करेगा और उन्हें अपने हुक्म में रखेगा."

इससे ज़ाहिर है कि यह पंचायतें दूसरों से नाता तोड़ने के असूल पर क़ायम नहीं की गईं. इनमें से हरेक को अपने ही नहीं सारे हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया के भले को सामने रखकर काम करना होगा. साथ ही यह पंचायतें एक इन्क़लाबी पैग़ाम लेकर

اچھا طریقہ ہے۔ باپو کی پنچائتیں دنیا سے الگ نہیں رہیں گی۔ اُن کے ودھان ہی میں ان کے بڑھنے اور ایک دوسرے سے مل کر کام کرنے کا نقشہ دیا ہوا ہے۔ ہم اُسے انھیں کے شبدوں میں نیچے دیتے ہیں—

"اس طرح کی دو پاس پاس کی پنچائتوں کو ملا کر ایک کام کرنے والا جتھا بنے گا جو اپنے میں سے ہی ایک کو اپنا نیتا چن کر اُس کے ادھین کام کرے گا۔

جب اس طرح کی سو پنچائتیں بن جائیں گی تو اُن کے پچاس پہلے درجے کے نیتا اپنے میں سے ایک دوسرے درجے کا نیتا چنیں گے، اسی طرح برابر ہوتا رہے گا۔ اس بیچ پہلے درجے کے نیتا دوسرے درجے کے نیتا کے ادھین کام کریں گے۔ دو دو سو پنچائتوں کے اسی طرح برابر برابر کے گروہ بنتے رہیں گے جب تک کہ یہ پنچائتیں سارے ہندستان میں نہ پھیل جائیں۔ ان پنچائتوں کا بعد کا ہر گروہ پہلے گروہ کی طرح اپنا دوسرے درجے کا نیتا چنے گا۔ دوسرے درجے کے سب نیتا مل کر سارے ہندستان کی سیوا کریں گے اور الگ الگ اپنے علاقوں کی سیوا کریں گے۔ دوسرے درجے کے نیتا جب کبھی ضروری سمجھیں اپنے میں سے ایک کو سردار چن سکیں گے۔ وہ سردار جب تک چاہے گا اُن سب گروہوں کی قاعدے داری کرے گا اور انھیں اپنے حکم میں رکھے گا۔"

اس سے ظاہر ہے کہ یہ پنچائتیں دوسروں سے ناتا توڑنے کے اصول پر قائم نہیں کی گئیں۔ ان میں سے ہر ایک کو اپنے ہی نہیں سارے ہندستان بلکہ دنیا کے بھلے کو سامنے رکھ کر کام کرنا ہوگا۔ ساتھ ہی یہ پنچائتیں ایک انقلابی پیغام لے کر

दुनिया के सामने आई हैं इसलिये इनके संगठन की बुनियाद इस तरह पर पड़नी ज़रूरी है कि वह दुनिया की आपस की दुश्मनियों, लागडाट खेंचातानी और घातक चालों से अपने आपको और अपने इलाक़ों को बचाकर रख सकें.

ऊपर को दफ़ाओं को देखने से मालूम होता है कि बापू ने जो पहलू चुनाव का इनमें रखा है वह आजकल के चुनाव से बिलकुल दूसरे ढंग का है. जो मरकज़ीयत बापू ने इनमें रखी है उसे चुनाव होते हुए भी डिक्टेटरी की शकल दी है. इस विधान में इससे ज़्यादा इन पंचायतों, उनके गिरोहों और नेताओं के आपसी सम्बन्ध की बाबत कोई और नियम या क़ायदे नहीं दिये गये. यह तीनों बातें पार्लीमेंटी राज के चालू तरीक़ों से बिलकुल अलग हैं.

जहाँ तक इन पंचायतों का सवाल है बापू ने हर तरह की चुनाव की बुराइयों से इन्हें बचाया है. चुनाव का जो पहलू उन्होंने इन पंचायतों में ले लिया है उसमें से भी उसके ज़हर को निकाल देने की एक अजीब सूरत निकाली है. विधान कहता है कि पहले दर्जे के नेता अपने में से एक दूसरे दर्जे का नेता चुनेंगे और उसे अपना लीडर मान कर उसी के नीचे काम करेंगे. बापू ने इस नये तरीक़े में आजकल के चुनाव का सारा रूप और ढंग बदल दिया है.

बापू इस दुनिया में एक ज़बरदस्त नैतिक कीमियागर (Moral Chemist) थे. आम तौर पर चुनाव में लोगों के दिलों के बुरे से बुरे भाव नफ़रत, ग़ुस्सा, तिकड़म, बेईमानी सब ऊपर आ जाते हैं. बापू के इस चुनाव में यह सारी सूरत बदल गई. इससे

دنیا کے سامنے آئی ہیں اس لئے ان کے سنگٹھن کی بنیاد اس طرح پر پڑنی ضروری ہے کہ وہ دنیا کی آپس کی دشمنیوں، لاگ ڈاٹ کھینچا تانی اور گھاتک چالوں سے اپنے آپ کو اور اپنے علاقوں کو بچا کر رکھ سکیں۔

اوپر کی دفعاؤں کو دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ باپو نے جو پہلو چناؤ کا ان میں رکھا ہے وہ آج کل کے چناؤ سے بالکل دوسرے ڈھنگ کا ہے۔ جو مرکزیت باپو نے ان میں رکھی ہے اسے چناؤ ہوتے ہوئے بھی ڈکٹیٹری کی شکل دی ہے۔ اس ودھان میں اس سے زیادہ ان پنچایتوں، ان کے گروہوں اور نیتاؤں کے آپسی سمبندھ کی بابت کوئی اور نیم یا قاعدے نہیں دیے گئے۔ یہ تینوں باتیں پارلیمنٹی راج کے چالو طریقوں سے بالکل الگ ہیں۔

جہاں تک ان پنچایتوں کا سوال ہے باپو نے ہر طرح کی چناؤ کی برائیوں سے انھیں بچایا ہے۔ چناؤ کا جو پہلو انھوں نے ان پنچایتوں میں لے لیا ہے اس میں سے بھی اس کے زہر کو نکال دینے کی ایک عجیب صورت نکالی ہے۔ ودھان کہتا ہے کہ پہلے درجے کے نیتا اپنے میں سے ایک دوسرے درجے کا نیتا چنیں گے اور اسے اپنا لیڈر مان کر اسی کے نیچے کام کریں گے۔ باپو نے اس نئے طریقے میں آج کل کے چناؤ کا سارا روپ اور ڈھنگ بدل دیا ہے۔

باپو اس دنیا میں ایک زبردست نیتک کیمیا گر تھے۔ (Moral Chemist) عام طور پر چناؤ میں لوگوں کے دلوں کے برے سے برے بھاؤ نفرت، غصہ، تکڑم، بے ایمانی سب اوپر آجاتے ہیں۔ باپو کے اس چناؤ میں یہ ساری صورت بدل گئی۔ اس سے

पहले दर्जे के नेताओं में त्याग और उदारता पैदा होगी और दूसरे दर्जे के नेताओं में नम्रता, एहसानमन्दी, और वफ़ादारी पैदा होगी. और दोनों ही में एक दूसरे के साथ हमदर्दी और मुहब्बत पैदा होगी. एक दूसरे की इज़्ज़त होगी. अगर बापू का बताया हुआ यह ढंग आम हो जाय तो चुनाव की अधिकतर बुराइयाँ दूर हो सकती हैं. पुराने और पहले दर्जे के नेताओं और नये या दूसरे दर्जे के नेताओं में जो खैंचातानी होती है वह हमारे राजकाजी जीवन का सबसे भद्दा और दर्दनाक पहलू है. बापू ने अपने नये विधान में इसे ख़त्म कर दिया. बापू यह नहीं मानते थे कि अगर ज़िम्मेदार ओहदों पर अव्वल दर्जे के नेता होंगे तभी उन ओहदों का काम अच्छी तरह चल सकेगा. हुकूमत के और ज़िम्मेदारी के काम दूसरे दर्जे के नेताओं से लेना और पहले दर्जे के नेताओं का ख़ुद पीछे रह कर जनता की सेवा करना एक नया और बहुत ही अच्छा प्रयोग है. यही सच्ची ग़ैर मरकज़ीयत है. इसी से सच्चा लोकराज पैदा हो सकता है. हम अगर बापू के इस असूल को समझ लें और उस पर अमल करने की कोशिश करें तो दुनिया के राजकाजी जीवन की आधी से ज़्यादा गन्दगी मिट जाय.

इस विधान में दूसरी बात जिसकी तरफ़ हमें ध्यान देना है वह इन पंचायतों का देश की मरकज़ी सरकार के साथ सम्बन्ध है.

इनमें पार्लीमेंटी राज की कोई झलक नहीं है. अगर कोई झलक है तो डिक्टेटरी की. यहाँ भी बापू ने दूसरे दर्जे के नेता को पहिले दर्जे के नेताओं का डिक्टेटर बना कर डिक्टेटरी के ज़हर को निकाल दिया. वह डिक्टेटर भी जबरी नहीं चुना हुआ होगा.

پہلے درجے کے نیتاؤں میں تیاگ اور اُدارتا پیدا ہوگی اور دوسرے درجے کے نیتاؤں میں نمرتا، احسان مندی، اور وفاداری پیدا ہوگی۔ اور دونوں ہی میں ایک دوسرے کے ساتھ ہمدردی اور محبت پیدا ہوگی۔ ایک دوسرے کی عزت ہوگی۔ اگر باپو کا بتایا ہوا یہ ڈھنگ عام ہو جائے تو چناؤ کی اُدھِک تر برائیاں دور ہو سکتی ہیں۔ پرانے اور پہلے درجے کے نیتاؤں اور نئے یا دوسرے درجوں کے نیتاؤں میں جو کھینچا تانی ہوتی ہے وہ ہمارے راج کاجی جیون کا سب سے بھدّا اور دردناک پہلو ہے۔ باپو نے اپنے نئے ودھان میں اسے ختم کر دیا۔ باپو یہ نہیں مانتے تھے کہ اگر ذمہ دار عہدوں پر اوّل درجے کے نیتا ہوں گے تبھی ان عہدوں کا کام اچھی طرح چل سکے گا۔ حکومت کے اور ذمہ داری کے کام دوسرے درجے کے نیتاؤں سے لینا اور پہلے درجے کے نیتاؤں کا خود پیچھے رہ کر جنتا کی سیوا کرنا ایک نیا اور بہت ہی اچھا پریوگ ہے۔ یہی سچی غیر مرکزیت ہے۔ اسی سے سچا لوک راج پیدا ہو سکتا ہے۔ ہم اگر باپو کے اس اصول کو سمجھ لیں اور اس پر عمل کرنے کی کوشش کریں تو دنیا کے راج کاجی جیون کی آدھی سے زیادہ گندگی مٹ جائے۔

اس ودھان میں دوسری بات جس کی طرف ہمیں دھیان دینا ہے وہ ان پنچایتوں کا دیش کی مرکزی سرکار کے ساتھ سمبندھ ہے۔

ان میں پارلیمنٹری راج کی کوئی جھلک نہیں ہے۔ اگر کوئی جھلک ہے تو ڈکٹیٹری کی۔ یہاں بھی باپو نے دوسرے درجے کے نیتاؤں کو پہلے درجے کے نیتاؤں کا ڈکٹیٹر بنا کر ڈکٹیٹری کے زہر کو نکال دیا۔ وہ ڈکٹیٹر بھی جبری نہیں چنا ہوا ہوگا۔

डिक्टेटरी या डिक्टेटर शिप इसे कहते हैं कि एक आदमी जो किसी राज या संस्था का सरदार हो बिना किसी दूसरे की राय की परवाह किये सारे काम अपनी अकेली राय से चला सके. आम तौर पर डिक्टेटर या डिक्टेटरी के नाम से हमें इतनी नफ़रत है और अपने आजकल के राज के ढंग पर हम इतने लट्टू हैं कि हमें इन दोनों तरीक़ों की अलग अलग भलाई बुराई दिखाई भी नहीं देती.

सच यह है कि पार्लीमेंटी राज में क़ानून बनाने के ढंग इतने बुरे और इतने खतरनाक हैं कि क़ानून बनाने का इससे ज्यादा बुरा ढंग सोचा ही नहीं जा सकता. इनके बनाये हुए आजकल के अधिकतर क़ानून निकम्मे, नुक़सान पहुँचाने वाले और ग़ैर जरूरी होते हैं. हमारे इस लोकराज के दौर में क़ानून ऐसे और इतने होने चाहियें कि जिन्हें सब आसानी से समझ सकें और याद रख सकें. आजकल पार्लीमेंटी तरीक़े की बदौलत इतने और ऐसे क़ानून बनते हैं कि जिन सबको जानना तो अलग रहा उनके समझने और समझाने के लिये बड़े से बड़े वकीलों की जरूरत होती है. इस पर भी एक एक क़ानून और एक एक दफ़ा के तरह तरह के और एक दूसरे के खिलाफ़ मानी किये जाते हैं और हर मानी के लिये बेअंत बहसें होती हैं. इस पर अंधेर यह कि हर छोटे से छोटे आदमी के लिये यह जरूरी समझा जाता है कि वह इन सब क़ानूनों को जाने. कोई ग़लती करने वाला किसी कचहरी या दरबार में यह नहीं कह सकता कि मैं इस क़ानून या दफ़ा को न जानता था. मालूम नहीं दुनिया को क़ानूनों की जरूरत या क़ानूनों की भूक कितनी बढ़ गई

ڈکٹیٹری یا ڈکٹیٹر شپ اسے کہتے ہیں کہ ایک آدمی جو کسی راج یا سنستھا کا سردار ہو بنا کسی دوسرے کی رائے کی پرواہ کئے سارا کام اپنی اکیلی رائے سے چلا سکے۔ عام طور پر ڈکٹیٹر یا ڈکٹیٹری کے نام سے ہمیں اتنی نفرت ہے اور اپنے آج کل کے راج کے ڈھنگ پر ہم اتنے لٹو ہیں کہ ہمیں ان دونوں طریقوں کی الگ الگ بھلائی برائی دکھائی بھی نہیں دیتی۔

سچ یہ ہے کہ پارلیمنٹی راج میں قانون بنانے کے ڈھنگ اتنے برے اور اتنے خطرناک ہیں کہ قانون بنانے کا اس سے زیادہ برا ڈھنگ سوچا ہی نہیں جا سکتا۔ ان کے بنائے ہوئے آج کل کے ادھکتر قانون نکمے، نقصان پہنچانے والے اور غیر ضروری ہوتے ہیں۔ ہمارے اس لوک راج کے دور میں قانون ایسے اور اتنے ہونے چاہئیں کہ جنہیں سب آسانی سے سمجھ سکیں اور یاد رکھ سکیں۔ آج کل پارلیمنٹی طریقے کی بدولت اتنے اور ایسے قانون بنتے ہیں کہ جن سب کو جاننا تو الگ رہا ان کے سمجھنے اور سمجھانے کے لئے بڑے سے بڑے وکیلوں کی ضرورت ہوتی ہے۔ اس پر بھی ایک ایک قانون اور ایک ایک دفعہ کے طرح طرح کے اور ایک دوسرے کے خلاف معنی کئے جاتے ہیں اور ہر معنی کے لئے بے انت بحثیں ہوتی ہیں۔ اس پر اندھیر یہ کہ ہر چھوٹے سے چھوٹے آدمی کے لئے یہ ضروری سمجھا جاتا ہے کہ وہ ان سب قانونوں کو جانے۔ کوئی غلطی کرنے والا کسی کچہری یا دربار میں یہ نہیں کہہ سکتا کہ میں اس قانون یا دفعہ کو نہ جانتا تھا۔ معلوم نہیں دنیا کو قانونوں کی ضرورت یا قانونوں کی بھوک کتنی بڑھ گئی

है कि हमारी क़ानून बनाने वाली धारा सभाओं को क़ानून बनाने से कभी फ़ुरसत ही नहीं मिलती. जनता के करोड़ों और अरबों रुपये इन धारा सभाओं और उनकी इमारतों पर ख़र्च होते रहते हैं. दुनिया के किसी शहंशाह के दरबार पर भी शायद इतना ख़र्च न होता होगा. पुरानी दुनिया में दो चार किताबें करोड़ों आदमियों की ज़रूरतों के लिये काफ़ी होती थीं. अब बड़े से बड़े किताब घर भी काफ़ी नहीं होते. करोड़ों रुपये पानी की तरह बहाये जाते हैं. इस सारी फ़ज़ूलख़र्ची और इतने बड़े बड़े लोगों के अपनी जान खपाने और अपने दिमाग़ लड़ाने का नतीजा यह है कि कोई मुक़दमा ऐसा नहीं होता जिसमें बुरे से बुरे झूट और फ़रेब किसी न किसी पैमाने पर न बरते जाते हों. जिस किसी आदमी का क़ानून से कुछ भी सम्बन्ध रहा है वह जानता है कि शायद ही कोई मुक़दमा बिना झूट के चलाया जा सकता हो या कामयाब हो सकता हो. हमारे अनोखे लोकराज की इस संस्था ने जनता को जानबूझ कर झूट बोलने पर जितना मजबूर किया है उतना शायद ही किसी दूसरी बात ने किया हो. फिर भी क़ानून गढ़ने की इन नई टकसालों को हम पच्छिमी सभ्यता का सबसे चमकता हुआ और बढ़िया कारनामा समझते हैं. इससे ज्यादा बदनसीबी और क्या हो सकती है.

क़ानून साज़ी के इन महलों की एक विशेषता यह भी है कि इनके मेम्बर जिन शर्तों पर चुने जाते हैं उनमें इस तरह की कोई शर्त नहीं है कि जो लोग चुने जावें उन्हें क़ानून बनाने की जानकारी भी हो. क़ानून बनाना इनका पैदायशी हक़ मान लिया

ہے کہ ہماری قانون بنانے والی دھارا سبھاؤں کو قانون بنانے سے کبھی فرصت ہی نہیں ملتی. جنتا کے کروڑوں اور اربوں روپیے ان دھارا سبھاؤں اور ان کی عمارتوں پر خرچ ہوتے رہتے ہیں. دنیا کے کسی شہنشاہ کے دربار پر بھی شاید اتنا خرچ نہ ہوتا ہوگا. پرانی دنیا میں دو چار کتابیں کروڑوں آدمیوں کی ضرورتوں کے لئے کافی ہوتی تھیں. اب بڑے سے بڑے کتب گھر بھی کافی نہیں ہوتے. کروڑوں روپیے پانی کی طرح بہائے جاتے ہیں. اس ساری فضول خرچی اور اتنے بڑے بڑے لوگوں کے اپنی جان کھپانے اور اپنے دماغ لڑانے کا نتیجہ یہ ہے کہ کوئی مقدمہ ایسا نہیں ہوتا جس میں برے سے برے جھوٹ اور فریب کسی نہ کسی پیمانے پر نہ برتے جاتے ہوں. جس کسی آدمی کا قانون سے کچھ بھی سمبندھ رہا ہے وہ جانتا ہے کہ شاید ہی کوئی مقدمہ بنا جھوٹ کے چلایا جا سکتا ہو یا کامیاب ہو سکتا ہو. ہمارے انوکھے لوک راج کی اس سنستھا نے جنتا کو جان بوجھ کر جھوٹ بولنے پر جتنا مجبور کیا ہے اتنا شاید ہی کسی دوسری بات نے کیا ہو. پھر بھی قانون گڑھنے کی ان نئی ٹکسالوں کو ہم پچھمی سبھیتا کا سب سے چمکتا ہوا اور بڑھیا کارنامہ سمجھتے ہیں. اس سے زیادہ بدنصیبی اور کیا ہو سکتی ہے.

قانون سازی کے ان محلوں کی ایک وششٹتا یہ بھی ہے کہ ان کے ممبر جن شرطوں پر چنے جاتے ہیں ان میں اس طرح کی کوئی شرط نہیں ہے کہ جو لوگ چنے جاویں انہیں قانون بنانے کی جانکاری بھی ہو. قانون بنانا ان کا پیدائشی حق مان لیا

गया है. यह कहना कि लोकराज और इन्सानी बराबरी के जमाने में क़ानून बनाने का हक़ सब को एक बराबर हासिल है और इस तरह का भेदभाव लोकराज और बालिग़ मताधिकार के असूल के ख़िलाफ़ है एक बे बुनियाद बात है. सच यह है कि इस तरह की सब अनोखी और उनहोनी बातें पच्छिमी सभ्यता और मरकज़ीयत की ही पैदावार हैं. हमने इन्हें बिना इनकी असलियत और नतीजों पर ध्यान दिये राजकाज के बहाव में पड़कर नक़क़ाल की तरह नक़ल कर लिया है. जहाँ तक हक़ का सवाल है दुनिया में हर आदमी को यह हक़ हासिल है कि वह बढ़ई बन सके या भंगी बन सके पर जो आदमी भी इस हक़ को काम में लाना चाहेगा उसे पहले बढ़ई या भंगी का काम सीखना होगा. तभी वह किसी बढ़ई ख़ाने में या म्युनिसिपैलिटी के सफ़ाई के महकमे में भरती किया जा सकेगा. केवल किसी बात का हक़ होना जब तक हममें वह हक़ अदा करने की योग्यता न हो हमें उस काम के लिये तनख़ाह पाने और तरह तरह के ख़र्चे और भत्ते लेने का हक़दार नहीं बना देता, पच्छिमी सभ्यता हक़ों और अधिकारों का दौर अपने साथ लाई है. हक़ हर के मुक़ाबिले के कोई फ़र्ज़ भी होते हैं, यह सवाल ही इस दौर में नहीं पैदा होता. हम समझते यह हैं कि हम सब जनता के नुमाइन्दे हैं और इस हैसियत से मुल्क के बादशाह भी हैं. इंगलिस्तान के क़ानून के अनुसार बादशाह के हक़ ही हक़ होते हैं, उसका कोई फ़र्ज़ नहीं होता. फिर अगर वहाँ के इस रिवाज का साया हम पर भी पड़ रहा है तो इसमें अचरज क्या है.

گیا ہے. یہ کہنا کہ لوک راج اور انسانی برابری کے زمانے میں قانون بنانے کا حق سب کو ایک برابر حاصل ہے اور اس طرح کا بھید بھاؤ لوک راج اور بالغ متادھیکار کے اصول کے خلاف ہے ایک بے بنیاد بات ہے. سچ یہ ہے کہ اس طرح کی سب انوکھی اور ان ہونی باتیں پچھمی سبھیتا اور مرکزیت کی ہی پیداوار ہیں. ہم نے انھیں بنا ان کی اصلیت اور نتیجوں پر دھیان دیے راج کاج کے بہاؤ میں پڑ کر نقال کی طرح نقل کر لیا ہے. جہاں تک حق کا سوال ہے دنیا میں ہر آدمی کو یہ حق حاصل ہے کہ وہ بڑھئی بن سکے یا بھنگی بن سکے پر جو آدمی بھی اس حق کو کام میں لانا چاہے گا اسے پہلے بڑھئی یا بھنگی کا کام سیکھنا ہوگا. تبھی وہ کسی بڑھئی خانے میں یا میونسپلٹی کے صفائی کے محکمے میں بھرتی کیا جا سکے گا. کیول کسی بات کا حق ہونا جب تک ہم میں وہ حق ادا کرنے کی یوگیتا نہ ہو ہمیں اس کام کے لئے تنخواہ پانے اور طرح طرح کے خرچے اور بھتّے لینے کا حق دار نہیں بنا دیتا، پچھمی سبھیتا حقوں اور ادھیکاروں کا دور اپنے ساتھ لائی ہے. ہر حق کے مقابلے کے کوئی فرض بھی ہوتے ہیں، یہ سوال ہی اس دور میں نہیں پیدا ہوتا ہم سمجھتے یہ ہیں کہ ہم سب جنتا کے نمائندے ہیں اور اس حیثیت سے ملک کے بادشاہ بھی ہیں. انگلستان کے قانون کے انوسار بادشاہ کے حق ہی حق ہوتے ہیں، اس کا کوئی فرض نہیں ہوتا. پھر اگر وہاں کے اس رواج کا سایہ ہم پر بھی پڑ رہا ہے تو اس میں اچرج کیا ہے.

बापू के विधान में मरकज़ीयत केवल काजकारी पहलू (Executive) तक ही रखी गई है. राजकाज से अगर क़ानून बनाने का हक़ ले लिया जावे तो अमली कारबार के लिये डिक्टेटरी सब से अच्छा तरीक़ा है. यह ज़रूर है कि हमें डिक्टेटरी को नैतिक बन्धनों में जकड़ देना होगा, जैसे बापू ने अपने विधान में जकड़ा है. जहाँ तक विधान की मरकज़ीयत का सम्बन्ध है वहाँ तक बापू ने इस विधान में इसके लिये कोई क़ायदे या क़ानून नहीं रखे. ऐसा करने से इनका बढ़ना और फैलना रुक जाता. बापू ने इन्हें बढ़ने और फलने फूलने की पूरी सुविधा दी है और अपनी समय समय की ज़रूरतों और अनुभवों के अनुसार अपने रूप को बदलने और सुधारने की इन्हें आज़ादी दी है. उन्होंने इन पंचायतों को और उनके गिरोहों को मरकज़ी हुकूमत से अपने सम्बन्ध को भी ज़रूरत के अनुसार तय करने और बदलते रहने के लिये आज़ाद छोड़ा है. यह बात भी ज़रूरी थी. सच्चे लोकराज की ज़रूरतों को आजकल के तरीक़े और संस्थाएँ पूरा नहीं कर सकतीं. हमें आजकल की इन सब संस्थाओं और क़ायदे क़ानूनों को नैतिक बुनियादों पर फिर से नये नये रूपों में तामीर करना होगा.

ऊपर हमने बापू के विधान के कुछ पहलू यह दिखाने के लिये दिये हैं कि बापू की निगाह हर चीज़ पर कितनी रचनात्मक और सुधार की होती थी. अब हम उनके विधान के उस हिस्से की तरफ़ ध्यान दिलाते हैं जो सीधे राजकाज से सम्बन्ध रखता है.

باپو کے ودھان میں مرکزیت کیول کاج کاری پہلو (Executive) تک ہی رکھی گئی ہے۔ راج کاج سے اگر قانون بنانے کا حق لے لیا جاوے تو عملی کاربار کے لئے ڈکٹیٹری سب سے اچھا طریقہ ہے۔ یہ ضرور ہے کہ ہمیں ڈکٹیٹری کو نیتک بندھنوں میں جکڑ دینا ہوگا، جیسے باپو نے اپنے ودھان میں جکڑا ہے۔ جہاں تک ودھان کی مرکزیت کا سمبندھ ہے وہاں تک باپو نے اس ودھان میں اس کے لئے کوئی قاعدے یا قانون نہیں رکھے۔ ایسا کرنے سے ان کا بڑھنا اور پھیلنا رک جاتا۔ باپو نے انھیں بڑھنے اور پھلنے پھولنے کی پوری سودھا دی ہے اور اپنی سمے سمے کی ضرورتوں اور انوبھوؤں کے انوسار اپنے روپ کو بدلنے اور سدھارنے کی انھیں آزادی دی ہے۔ انھوں نے ان پنچایتوں کو اور ان کے گروہوں کو مرکزی حکومت سے اپنے سمبندھ کو بھی ضرورت کے انوسار طے کرنے اور بدلتے رہنے کے لئے آزاد چھوڑا ہے۔ یہ بات بھی ضروری تھی۔ سچے لوک راج کی ضرورتوں کو آج کل کے طریقے اور سنستھائیں پورا نہیں کر سکتیں۔ ہمیں آج کل کی ان سب سنستھاؤں اور قاعدے قانونوں کو نیتک بنیادوں پر پھر سے نئے نئے روپوں میں تعمیر کرنا ہوگا۔

اوپر ہم نے باپو کے ودھان کے کچھ پہلو یہ دکھانے کے لئے دئے ہیں کہ باپو کی نگاہ ہر چیز پر کتنی رچناتمک اور سدھار کی ہوتی تھی۔ اب ہم ان کے ودھان کے اس حصے کی طرف دھیان دلاتے ہیں جو سیدھے راج کاج سے سمبندھ رکھتا ہے۔

इसमें सबसे पहला सवाल यह है कि इन पंचायतों का बाहरी दुनिया से क्या सम्बन्ध होगा या यह कि इन में मरकज़ीयत किस रूप में और किस पैमाने पर होगी. मरकज़ीयत खुद कोई बुरी चीज़ नहीं है. केवल उससे स्वावलम्बन के असूल में कमी नहीं आनी चाहिये. स्वावलम्बन की असली सूरत यह है कि एक तरफ़ तो हमारा जीवन दूसरे किसी को बेजा नुक़सान न पहुँचा सके और दूसरी तरफ़ जो बातें हमें नैतिक या आर्थिक नुक़सान पहुँचाती हैं उन सबसे अपने को बचाकर रखा जावे. इसी बुनियादी सच्चाई पर इन पंचायतों के सारे बाहर के सम्बन्ध क़ायम होंगे. जहाँ तक इन पंचायतों के आपस के सम्बन्ध का सवाल है सौ पंचायतों के पास पहले दरजे के नेता मिल कर अपना सब का एक नेता और फिर इसी तरह के दूसरे दरजे के नेता मिल कर अगर चाहें तो अपना सबका एक नेता या सरदार चुन सकते हैं और उसी के अधीन अपना सारा काम कर सकते हैं. इस तरह अगर एक जिले में दो हज़ार गाँव हों और हर गाँव में एक पंचायत हो तो कुल जिले में बीस दूसरे दरजे के नेता होंगे यही मिलकर ज़िले की कारकुन कमेटी का रूप ले लेंगे और चाहेंगे तो अपने में से एक को अपना सरदार या मुखिया चुन लेंगे. यह कमेटी स्वावलंबन के असूल पर अपनी मातहत पंचायतों की सेवा करेगी यानी इनके इस तरह के माल के लाने ले जाने, खरीदने बेचने और अदल बदल करने में इन्हें मदद देगी जो एक जगह के लिये ज़रूरी और दूसरे की ज़रूरत से ज़्यादा हो. यह अदल बदल इस असूल पर होगा कि इसमें किसी को भी बेजा फ़ायदा या बेजा नुक़सान न पहुँचे.

ان میں سب سے پہلا سوال یہ ہے کہ ان پنچایتوں کا باہری دنیا سے کیا سمبندھ ہوگا یا یہ کہ ان میں مرکزیت کس روپ میں اور کس پیمانے پر ہوگی۔ مرکزیت خود کوئی بری چیز نہیں ہے۔ کیول اس سے سواولمبن کے اصول میں کمی نہیں آنی چاہیے۔ سواولمبن کی اصلی صورت یہ ہے کہ ایک طرف تو ہمارا جیون دوسرے کسی کو بے جا نقصان نہ پہنچا سکے اور دوسری طرف جو باتیں ہمیں نیتک یا آرتھک نقصان پہنچاتی ہیں ان سب سے اپنے کو بچا کر رکھا جائے۔ اسی بنیادی سچائی پر ان پنچایتوں کے سارے باہر کے سمبندھ قائم ہوں گے۔ جہاں تک ان پنچایتوں کے آپس کے سمبندھ کا سوال ہے سو پنچایتوں کے پچاس پہلے درجے کے نیتا مل کر اپنا سب کا ایک نیتا اور پھر اسی طرح کے دوسرے درجے کے نیتا مل کر اگر چاہیں تو اپنا سب کا ایک نیتا یا سردار چن سکتے ہیں اور اسی کے ادھین اپنا سارا کام کر سکتے ہیں۔ اس طرح اگر ایک ضلعے میں دو ہزار گاؤں ہوں اور ہر گاؤں میں ایک پنچایت ہو تو کل ضلعے میں بیس دوسرے درجے کے نیتا ہوں گے یہی مل کر ضلعے کی کارکن کمیٹی کا روپ لے لیں گے اور چاہیں گے تو اپنے میں سے ایک کو اپنا سردار یا مکھیا چن لیں گے۔ یہ کمیٹی سواولمبن کے اصول پر اپنی ماتحت پنچایتوں کی سیوا کرے گی یعنی ان کے اس طرح کے مال کے لانے لے جانے، خریدنے بیچنے اور ادل بدل کرنے میں انھیں مدد دے گی جو ایک جگہ کے لیے ضروری اور دوسرے کی ضرورت سے زیادہ ہو۔ یہ ادل بدل اس اصول پر ہوگا کہ ان میں کسی کو بھی بے جا فائدہ یا بے جا نقصان نہ پہنچے۔

इस कमेटी के और सब फ़ैसले भी बराबरी और भाईचारे के असूल पर होंगे, लाग डाट या किसी के निजी फ़ायदे के आधार पर नहीं. इसी तरह हर सूबे की पंचायतें अगर चाहेंगी तो इस तरह के कामों के लिये कोई मरकज़ी पंचायत अपने सूबे के लिये बना लेंगी और सब सूबों की पंचायतें मिल कर अगर चाहेंगी तो सारे हिन्दुस्तान के लिये अपनी मरकज़ी कमेटी बना लेंगी. यह सारा संगठन बहुत ही सीधा और सरल होगा. अगर इसके चलने में कोई कठिनाई होगी तो तजरबे की रोशनी में उनके हल निकाल लिये जावेंगे. इन पंचायतों के पास कोई क़ानूनी हक़ या राज की दी हुई कोई दौलत या ताक़त नहीं होगी. इनका जो कुछ भी असर लोगों पर होगा वह केवल इनकी निस्वार्थ सेवा के कारण होगा. जब इन्हें कोई अधिकार या पद राजकाजी चुनाव से या राज की तरफ़ से या कोई इस तरह की नौकरी नहीं मिलेगी तो इनमें आपस में कोई लाग डाट, बैर या खेंचातानी भी आज की तरह पैदा न हो सकेगी.

जहाँ तक इन पंचायतों का सम्बन्ध आजकल के मरकज़ी राज से है उनकी सदा यह कोशिश रहेगी और इसके लिये वह हर तरह के जायज़ तरीक़े काम में लावेंगे कि मरकज़ी राज उनकी तरफ़ और दूसरों की तरफ़ स्वावलम्बन की नीति पर चले. इन पंचायतों की निगाह में दुनिया का हर देश वैसी ही एक इकाई होगा जैसी अपने देश में एक पंचायत इकाई है. इनकी यह बुनियादी माँग होगी कि हर देश दूसरे देश के साथ स्वावलम्बन के असूल पर सम्बन्ध जोड़े. जो देश जिस बात में इस नीति को न मानेंगे उनके

اس کمیٹی کے اور سب فیصلے بھی برابری اور بھائی چارے کے اصول پر ہوں گے، لاگ ڈاٹ یا کسی کے نجی فائدے کے آدھار پر نہیں۔ اسی طرح ہر صوبے کی پنچائتیں اگر چاہیں گی تو اس طرح کے کاموں کے لئے کوئی مرکزی پنچائت اپنے صوبے کے لئے بنا لیں گی اور سب صوبوں کی پنچائتیں مل کر اگر چاہیں گی تو سارے ہندستان کے لئے اپنی مرکزی کمیٹی بنا لیں گی۔ یہ سارا سنگٹھن بہت ہی سیدھا اور سرل ہوگا۔ اگر اس کے چلنے میں کوئی کٹھنائی ہوگی تو تجربے کی روشنی میں ان کے حل نکال لئے جاویں گے۔ ان پنچائتوں کے پاس کوئی قانونی حق یا راج کی دی ہوئی کوئی دولت یا طاقت نہیں ہوگی۔ ان کا جو کچھ بھی اثر لوگوں پر ہوگا وہ کیول ان کی نسوارتھ سیوا کے کارن ہوگا۔ جب انھیں کوئی ادھیکار یا پد راج کاجی چناؤ سے یا راج کی طرف سے یا کوئی اس طرح کی نوکری نہیں ملے گی تو ان میں آپس میں کوئی لاگ ڈاٹ، بیر یا کھینچا تانی بھی آج کی طرح پیدا نہ ہو سکے گی۔

جہاں تک ان پنچائتوں کا سمبندھ آج کل کے مرکزی راج سے ہے ان کی سدا یہ کوشش رہے گی اور اس کے لئے وہ ہر طرح کے جائز طریقے کام میں لاویں گے کہ مرکزی راج ان کی طرف اور دوسروں کی طرف سواولمبن کی نیتی پر چلے۔ ان پنچائتوں کی نگاہ میں دنیا کا ہر دیش ویسی ہی ایک اکائی ہوگا جیسی اپنے دیش میں ایک پنچائت اکائی ہے۔ ان کی یہ بنیادی مانگ ہوگی کہ ہر دیش دوسرے دیش کے ساتھ سواولمبن کے اصول پر سمبندھ جوڑے۔ جو دیش جس بات میں اس نیتی کو نہ مانیں گے ان کے

साथ हमारा देश उन बातों में सहयोग न करेगा. आजकल हर देश और हर गिरोह एक दूसरे को चूसना और एक दूसरे से बेजा फ़ायदा उठाना अपना हक़ और ईमान समझता है. इस हालत को देखते हुए स्वावलम्बन की नीति बड़ी इन्क़लाबी नीति है. उसे मानने के लिये कोई मुल्क भी आसानी से तैयार न होगा. पर रास्ते की कठिनाइयाँ इन पंचायतों को उनके सीधे रास्ते से न हटा सकेंगी. इन्हीं कठिनाइयों को दूर करने के लिये दुनिया में इन पंचायतों का जन्म हुआ है.

अब सवाल यह रह जाता है कि यह पंचायतें अपनी इन विरोधी शक्तियों को चाहे वह मुक़ामी हों या मरकज़ी, दूर करने के लिये क्या क्या रास्ते निकालेंगी. इसका अमली तरीक़ा इस विधान में दिया हुआ है. हम उसे नीचे देते हैं.

इस समय हमारे इस सूबे (यू० पी०) की हुकूमत गाँव गाँव में पंचायतें क़ायम कर रही है. बापू की पंचायतें इन्हीं पंचायतों के साथ साथ क़ायम होंगी. सरकारी पंचायतों के पास सारी क़ानूनी शक्ति, अधिकार और साधन हैं. बापू की पंचायतों के पास केवल अपने सेवकों की निस्वार्थ सेवा और मानव प्रेम की शक्ति है. सरकारी पंचायतें सरकार की नीति को चलाने में मदद देंगी जैसे यह कि गाँव में पार्लामेंटी राज के चारों चरण जिनकी हमने ऊपर चर्चा की है और इन चरणों पर धड़ और सर के रूप में मशीन राज और फ़ौजराज क़ायम हों. बापू की पंचायतों की नीति समग्र सेवा और स्वावलम्बन होगी जिसकी बुनियादी ग़रज़ गाँव के जीवन को पश्चिमी सभ्यता और पार्लामेंटी राज से आज़ाद

ساتھ ہمارا دیش ان باتوں میں سہیوگ نہ کرے گا۔ آج کل ہر دیش اور ہر گروہ ایک دوسرے کو چوسنا اور ایک دوسرے سے بے جا فائدہ اٹھانا اپنا حق اور ایمان سمجھتا ہے۔ اس حالت کو دیکھتے ہوئے سواولمبن کی نیتی بڑی انقلابی نیتی ہے۔ اسے ماننے کے لئے کوئی ملک بھی آسانی سے تیار نہ ہوگا۔ پر راستے کی کٹھنائیاں ان پنچایتوں کو ان کے سیدھے راستے سے نہ ہٹا سکیں گی۔ انہیں کٹھنائیوں کو دور کرنے کے لئے دنیا میں ان پنچایتوں کا جنم ہوا ہے۔

اب سوال یہ رہ جاتا ہے کہ یہ پنچایتیں اپنی ان ورودھی شکتیوں کو چاہے وہ مقامی ہوں یا مرکزی، دور کرنے کے لئے کیا کیا راستے نکالیں گی۔ اس کا عملی طریقہ اس ودھان میں دیا ہوا ہے۔ ہم اسے نیچے دیتے ہیں۔

اس سمے ہمارے اس صوبے (یو۔ پی) کی حکومت گاؤں گاؤں میں پنچایتیں قائم کر رہی ہے۔ باپو کی پنچایتیں انہیں پنچایتوں کے ساتھ ساتھ قائم ہوں گی۔ سرکاری پنچایتوں کے پاس ساری قانونی شکتی، ادھیکار اور سادھن ہیں۔ باپو کی پنچایتوں کے پاس کیول اپنے سیوکوں کی نسوارتھ سیوا اور مانو پریم کی شکتی ہے۔ سرکاری پنچایتیں سرکار کی نیتی کو چلانے میں مدد دیں گی جیسے یہ کہ گاؤں میں پارلیمنٹری راج کے چاروں چرن جن کی ہم نے اوپر چرچا کی ہے اور ان چرنوں پر دھڑ اور سر کے روپ میں مشین راج اور فوج راج قائم ہوں۔ باپو کی پنچایتوں کی نیتی سمگر سیوا اور سواولمبن ہوگی جس کی بنیادی غرض گاؤں کے جیون کو پچھمی سبھیتا اور پارلیمنٹری راج سے آزاد

करना है. इस तरह मालूम होता है कि सरकारी पंचायतें और बापू की पंचायतें दो अलग अलग शक्तियाँ हैं एक भौतिक (माद्दी) और एक नैतिक (एख़लाक़ी) यह दोनों गाँव को अपने अपने माली, समाजी और राजकाजी साँचों में ढालना चाहेंगी. ऊपर से देखने में यह दोनों पंचायतें गाँव की हुकूमत चाहेंगी और गाँव के साधनों पर क़ब्ज़ा पाकर अपने अपने ढंग से गाँव का काम चलाना और उसकी हालत सुधारना चाहेंगी. पर असलियत यह नहीं है. इन दोनों तरह की पंचायतों के मक़सदों और काम के तरीक़ों में जमीन आसमान का फ़र्क़ है. सरकारी पंचायतें सरकार के धन और उसके अधिकार की मदद से जनता को मरकज़ी हुकूमत के बस में रखकर उसको हुकूमत की मरकज़ी और नीति पर चलाना चाहती हैं. बापू की पंचायतें अपने गाँव को स्वावलम्बी बनाकर उसे हर तरह के बाहरी दबाव से पूरी तरह आज़ाद रखेंगी, और उस आज़ादी के हासिल करने के लिये गाँव वालों में जागृति और शक्ति पैदा करेंगी. वह जनता को गांव का सच्चा राजा और गांव की पंचायत को किसी बाहरी राजा का नहीं इसी राजा का सच्चा सेवक बनायेंगी.

इस मक़सद के हासिल करने का बापू ने इन पंचायतों के सामने एक सीधा सादा राजकाजी रास्ता रख दिया है, उसे हम नीचे देते हैं—

"हर काम करने वाला इस बात को देखेगा कि जिन लोगों के नाम क़ानूनी वोटरों के रजिस्टर में दर्ज होने से रह गये हैं उनके नाम उस रजिस्टर में बाज़ाब्ता दर्ज कर लिये जावें.

"हर काम करने वाला उन लोगों को जिनमें अभी तक वोटर

کرنا ہے۔ اس طرح معلوم ہوتا ہے کہ سرکاری پنچائتیں اور باپو کی پنچائتیں دو الگ الگ شکتیاں ہیں ایک بھوتک (مادّی) اور ایک نیتک (اخلاقی) یہ دونوں گاؤں کو اپنے اپنے مالی، سماجی اور راج کاجی سانچوں میں ڈھالنا چاہیں گی۔ اوپر سے دیکھنے میں یہ دونوں پنچائتیں گاؤں کی حکومت چاہیں گی اور گاؤں کے سادھنوں پر قبضہ پاکر اپنے اپنے ڈھنگ سے گاؤں کا کام چلانا اور اس کی حالت سدھارنا چاہیں گی۔ پر اصلیت یہ نہیں ہے۔ ان دونوں طرح کی پنچائتوں کے مقصدوں اور کام کے طریقوں میں زمین آسمان کا فرق ہے۔ سرکاری پنچائتیں سرکار کے دھن اور اس کے ادھیکار کی مدد سے جنتا کو مرکزی حکومت کے بس میں رکھ کر اس کو حکومت کی مرکزی اور نیتی پر چلانا چاہتی ہیں۔ باپو کی پنچائتیں اپنے گاؤں کو سواولمبی بنا کر اسے ہر طرح کے باہری دباؤ سے پوری طرح آزاد رکھیں گی، اور اس آزادی کے حاصل کرنے کے لئے گاؤں والوں میں جاگرتی اور شکتی پیدا کریں گی۔ وہ جنتا کو گاؤں کا سچا راجہ اور گاؤں کی پنچائت کو کسی باہری راجہ کا نہیں اسی راجہ کا سچا سیوک بنائیں گی۔

اس مقصد کے حاصل کرنے کا باپو نے ان پنچائتوں کے سامنے ایک سیدھا سادا راج کاجی راستہ رکھ دیا ہے، اسے ہم نیچے دیتے ہیں—

"ہر کام کرنے والا اس بات کو دیکھے گا کہ جن لوگوں کے نام قانونی ووٹروں کے رجسٹر میں درج ہونے سے رہ گئے ہیں ان کے نام اس رجسٹر میں باضابطہ درج کر لئے جاویں۔

"ہر کام کرنے والا ان لوگوں کو جن میں ابھی تک ووٹر

बनाने की क़ानूनी योग्यता नहीं है इस बात के लिये बढ़ावा देगा कि वह वोट का अधिकार पाने के लिये अपने अन्दर उस योग्यता को पैदा करलें."

सब जानते हैं कि पार्लीमेंटी हुकूमत पर क़ब्ज़ा पाने का क़ानूनी तरीक़ा चुनाव में खड़े होना और कामयाबी हासिल करना है. यह चुनाव देश को उन ख़ानाजंगियों से बचाने के लिये जो तरह तरह की राजकाजी पार्टियाँ राजगद्दी छीनने के लिये एक दूसरे के साथ करती हैं पैदा हुआ था. हिंसा भरे इन्क़लाबों से बचाने का यह अहिंसा का एक तरीक़ा था. पर पच्छिमी सभ्यता ने राजकाज को सदाचार से पूरी तरह आज़ाद कर दिया इसलिये अव्वल तो इन चुनावों में ख़ुद हद दरजे की हिंसा भर गई, दूसरे चुनाव के रहते हुए भी राजकाजी पार्टियाँ जबरी और हिंसा भरे इन्क़लाबों के तरीक़े बराबर काम में लाती रहती हैं. इसलिये अगर चुनाव ईमान और इन्साफ़ के साथ किया जा सके तो इससे अच्छा ढङ्ग देश को पार्टी बाज़ी की मुसीबतों और घरेलू लड़ाइयों की बरबादियों से बचाने का कोई दूसरा नहीं हो सकता, बापू ने ऊपर की दोनों दफ़ाओं में अपनी पंचायतों का ध्यान वोटरों की तरफ़ दिलाया है. अगर एक बार वोटरों के दिल में यह जम जावे कि जनता के सच्चे नुमाइन्दे और रक्षक हम ही हैं और अच्छी बुरी हुकूमत बनाने की सारी ज़िम्मेवारी हमीं पर है और हमें इस ज़िम्मेवारी को किसी पार्टी के भले के लिये नहीं बल्कि कुल गांव के लोगों को भले के लिये पूरा करना चाहिये तो आजकल के चुनाव का रूप बिलकुल बदल सकता

بننے کی قانونی یوگیتا نہیں ہے اس بات کے لئے بڑھاوا دیگا کہ وہ ووٹ کا ادھیکار پانے کے لئے اپنے اندر اس یوگیتا کو پیدا کر لیں."

سب جانتے ہیں کہ پارلیمنٹی حکومت پر قبضہ پانے کا قانونی طریقہ چناؤ میں کھڑے ہونا اور کامیابی حاصل کرنا ہے. یہ چناؤ دیش کو ان خانہ جنگیوں سے بچانے کے لئے جو طرح طرح کی راج کاجی پارٹیاں راج گدی چھیننے کے لئے ایک دوسرے کے ساتھ کرتی ہیں پیدا ہوا تھا. ہنسا بھرے انقلابوں سے بچانے کا یہ اہنسا کا ایک طریقہ تھا. پر پچھمی سبھیتا نے راج کاج کو سداچار سے پوری طرح آزاد کر دیا اس لئے اول تو ان چناؤں میں خود حد درجے کی ہنسا بھر گئی، دوسرے چناؤ کے رہتے ہوئے بھی راج کاجی پارٹیاں جبری اور ہنسا بھرے انقلابوں کے طریقے برابر کام میں لاتی رہتی ہیں. اس لئے اگر چناؤ ایمان اور انصاف کے ساتھ کیا جا سکے تو اس سے اچھا ڈھنگ دیش کو پارٹی بازی کی مصیبتوں اور گھریلو لڑائیوں کی بربادیوں سے بچانے کا کوئی دوسرا نہیں ہو سکتا، باپو نے اوپر کی دونوں دفعاؤں میں اپنی پنچایتوں کا دھیان ووٹروں کی طرف دلایا ہے. اگر ایک بار ووٹروں کے دل میں یہ جم جائے کہ جنتا کے سچے نمائندے اور رکشک ہم ہی ہیں اور اچھی بری حکومت بنانے کی ساری ذمہ داری ہمیں پر ہے اور ہمیں اس ذمہ داری کو کسی پارٹی کے بھلے کے لئے نہیں بلکہ کل گاؤں کے بھلے کے لئے پورا کرنا چاہئے تو آج کل کے چناؤ کا روپ بالکل بدل سکتا

है बरबादी का जरिया होने की जगह यही चुनाव लाभ और रचना का का जरिया बन सकता है.

वोटरों में इस जिम्मेदारी की समझ पैदा करा देने के साथ साथ इन पंचायतों को अपने इलाक़े की जनता में इतनी जागृति और ताक़त पैदा कर देनी चाहिये कि वह किसी पार्टी को किसी वोटर पर नाजायज दबाव न डालने दें. यह पार्टियाँ जनता की मदद और सहयोग से ही ताक़त पकड़ती और फलती फूलती हैं. यह जनता को तरह तरह के धोखे देकर और झूठे वायदे करके अलग अलग टुकड़ों में बाँट देती हैं और फिर एक टुकड़े को दूसरे से लड़ाती रहती हैं. गाँव की जनता एक है. इसलिये उसका कोई भी टुकड़ा बरबाद हो असल में बरबादी गांव और जनता ही की है. बापू की पञ्चायतें इसी बात की समझ वोटरों और जनता में पैदा करेंगी. चूँकि चुनाव में इनका कोई अपना फ़ायदा न होगा इसलिये जनता इनकी बात सुनेगी और उसपर अमल करेगी. अगर इस अमल करने में अन्दर की या बाहर की कोई शक्ति जनता को जबरदस्ती दबाने की कोशिश करेगी तो यह पंञ्चायतें जनता को पीछे हटा कर अपना सीना सामने करेंगी. यही रास्ता सच्चे सत्याग्रही का रास्ता है. इसीसे गांव में वह शक्ति और वह एका पैदा हो जायगा जिसका कोई विरोधी शक्ति मुक़ाबला न कर सकेगी. इस तरह वोटर और चुनाव दोनों जनता के हाथ में हो जायँगे और जनता नेक और सच्चे लोगों को चुनाव में जिता सकेगी जो चुने जाने के बाद भी जनता के सच्चे सेवक बने रहें.

आजकल के चुनावों में वोटर बेचारे उम्मीदवारों और उनकी

ہے بربادی کا ذریعہ ہونے کی جگہ یہی چناؤ لابھ اور رچنا کا ذریعہ بن سکتا ہے۔

ووٹروں میں اس ذمہ داری کی سمجھ پیدا کرا دینے کے ساتھ ساتھ ان پنچایتوں کو اپنے علاقے کی جنتا میں اتنی جاگرتی اور طاقت پیدا کر دینی چاہئے کہ وہ کسی پارٹی کو کسی ووٹر پر ناجائز دباؤ نہ ڈالنے دیں۔ یہ پارٹیاں جنتا کی مدد اور سہیوگ سے ہی طاقت پکڑتی اور پھلتی پھولتی ہیں۔ یہ جنتا کو طرح طرح کے دھوکے دے کر اور جھوٹے وعدے کر کے الگ الگ ٹکڑوں میں بانٹ دیتی ہیں اور پھر ایک ٹکڑے کو دوسرے سے لڑاتی رہتی ہیں۔ گاؤں کی جنتا ایک ہے۔ اس لئے اس کا کوئی بھی ٹکڑا برباد ہو اصل میں بربادی گاؤں اور جنتا ہی کی ہے۔ باپو کی پنچایتیں اسی بات کی سمجھ ووٹروں اور جنتا میں پیدا کریں گی۔ چونکہ چناؤ میں ان کا کوئی اپنا فائدہ نہ ہوگا اس لئے جنتا ان کی بات سنے گی اور اس پر عمل کرے گی۔ اگر اس عمل کرنے میں اندر کی یا باہر کی کوئی شکتی جنتا کو زبردستی دبانے کی کوشش کرے گی تو یہ پنچایتیں جنتا کو پیچھے ہٹا کر اپنا سینہ سامنے کریں گی۔ یہی راستہ سچے ستیاگرہی کا راستہ ہے۔ اسی سے گاؤں میں وہ شکتی اور وہ ایکا پیدا ہو جائے گا جس کا کوئی ورودھی شکتی مقابلہ نہ کر سکے گی۔ اس طرح ووٹر اور چناؤ دونوں جنتا کے ہاتھ میں ہو جائیں گے اور جنتا نیک اور سچے لوگوں کو چناؤ میں جتا سکے گی جو چنے جانے کے بعد بھی جنتا کے سچے سیوک بنے رہیں۔

آج کل کے چناؤں میں ووٹر بے چارے امیدواروں اور ان کی

पार्टियों के बहकावे, दबाव, रिश्वे, झूठे वादों या पार्टीबाज़ी की उमंगों में आकर वोट देते हैं. जनता को यह समझना होगा कि आखिर यह पार्टियां किसके रुपये और किसके बल पर चल रही हैं. और जिसके बल पर चल रही हैं उसे ही टुकड़े टुकड़े करके मिटा रही हैं. अगर जनता संगठन करके इन सब पार्टियों से असहयोग करले तो यह पार्टियाँ बिलकुल बे बस और बेकार हो जायँ और जनता इन सब खैंचा-तानियों और बर्बादियों से बच जावे.

इस समय जो नेक और अच्छे लोग हैं और जिनपर पुरानी सभ्यता और दीन धर्म का असर अभी कुछ बाक़ी है वह अपने आस पास बुराई और बरबादी के इस तूफ़ान को देख कर दुखी होते हैं और चुप हो जाते हैं. अगर यह लोग एक बार इस बात को समझ लें कि पच्छिमी सभ्यता के इस नंगे नाच को अपने इलाक़े में से मिटा देना उनका धर्म है और उनमें इसकी शक्ति भी है तो वह कुछ ही दिनों में उसका ख़ातमा कर सकते हैं.

इस समय की सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि नेक और अच्छे लोग अपने अपने इलाक़ों के बहके हुए ना समझ और ग़लत रास्ते पर पड़े हुए लोगों से अपने इलाक़े की रक्षा नहीं कर सकते. इसका कारन यह है कि इन नेक और अच्छे लोगों का कोई संगठन नहीं है. दूसरी तरफ़ ग़लत रास्तों पर पड़े हुए लोगों का सबका अपना अपना संगठन है. हो सकता है कि शुरू में इन नेक और बेलाग लोगों को नुक़सान उठाना पड़े. पर उस नुक़सान को सह लेना ही उनका धर्म है. इस तरह का त्याग जनता को बड़ी से बड़ी बरबादी से बचा लेगा. कांग्रेस के थोड़े से त्याग ने बड़ी से बड़ी हुकूमत के

پارٹیوں کے بہکاوے، دباؤ، رشوت، جھوٹے وعدوں یا پارٹی بازی کی امنگوں میں آکر ووٹ دیتے ہیں. جنتا کو یہ سمجھنا ہوگا کہ آخر یہ پارٹیاں کس کے روپئے اور کس کے بل پر چل رہی ہیں. اور جس کے بل پر چل رہی ہیں اسے ہی ٹکڑے ٹکڑے کرکے مٹا رہی ہیں. اگر جنتا سنگٹھن کرکے ان سب پارٹیوں سے اسہیوگ کرلے تو یہ پارٹیاں بالکل بے بس اور بیکار ہو جائیں اور جنتا ان سب کھینچا تانیوں اور بربادیوں سے بچ جائے.

اس سمے جو نیک اور اچھے لوگ ہیں اور جن پر پرانی سبھیتا اور دین دھرم کا اثر ابھی کچھ باقی ہے وہ اپنے آس پاس برائی اور بربادی کے اس طوفان کو دیکھ کر دکھی ہوتے ہیں اور چپ ہو جاتے ہیں. اگر یہ لوگ ایک بار اس بات کو سمجھ لیں کہ پچھمی سبھیتا کے اس ننگے ناچ کو اپنے علاقے میں سے مٹا دینا ان کا دھرم ہے اور ان میں اس کی شکتی بھی ہے تو وہ کچھ ہی دنوں میں اس کا خاتمہ کر سکتے ہیں.

اس سمے کی سب سے بڑی کٹھنائی یہ ہے کہ نیک اور اچھے لوگ اپنے اپنے علاقوں کے بہکے ہوئے ناسمجھ اور غلط راستے پر پڑے ہوئے لوگوں سے اپنے علاقے کی رکشا نہیں کر سکتے. اس کا کارن یہ ہے کہ ان نیک اور اچھے لوگوں کا کوئی سنگٹھن نہیں ہے. دوسری طرف غلط راستوں پر پڑے ہوئے لوگوں کا سب کا اپنا اپنا سنگٹھن ہے. ہو سکتا ہے کہ شروع میں ان نیک اور بے لاگ لوگوں کو نقصان اٹھانا پڑے. پر اس نقصان کو سہہ لینا ہی ان کا دھرم ہے. اس طرح کا تیاگ جنتا کو بڑی سے بڑی بربادی سے بچالے گا. کانگریس کے تھوڑے سے تیاگ نے بڑی سے بڑی حکومت کو

पांव उखाड़ दिये. इसलिये जरूरत इस समय केवल इस बात की है कि हर इलाक़े के और हर शहर के नेक, सच्चे और बाअसर जो आजकल की हालत और पार्टीबाज़ियों से परेशान और दुखी हों और इससे देश की बरबादी को देख रहे हों एक बार अपना संगठन करके खुले तौर पर और हिम्मत के साथ इस बुराई का मुक़ाबला करें. फिर वह देखेंगे कि थोड़े ही दिनों में मुल्क का हालत बदल जावेगी.

हर इलाक़े में इसी तरह के संगठन की जरूरत है. इस सङ्गठन के लोग अपने आपको चुनाव की लाग डाट और प्रलोभनों से दूर रखेंगे. वह खुद हुकूमत की गद्दी पर न बैठेंगे. वह अधिकार के दायरों से खुद अलग रह कर जनता का जीवन का और उन दायरों की भी रक्षा करेंगे. इससे देश में और हर इलाक़े में एक ऐसी नैतिक शक्ति पैदा हो जायगी जो राज शक्ति से अलग रहते हुए भी उस शक्ति को अपने सामने झुका सकेगी और उसे देश का सच्चा सेवक बना सकेगी. बापू का विधान इसी अलग और बराबर की गवरमेंट का सन्देश देश के सामने लाया है.

इस विधान की पचायतों का काम अपने अपने इलाक़े में इसी तरह के संगठन पैदा करना है. अपनी सेवा से इलाक़े के भले लोगों को अपने साथ लेकर समग्र सेवा, स्वावलम्बन, सत्य और अहिंसा की हवा पैदा कर देना है, जो आज से सौ बरस पहले हमारे गांव में मौजूद थी. इन पंचायतों का काम होगा कि वोटरों की बाबत जो हिदायत बापू ने दी है उसे सामने रख कर अपने इलाक़े के वोटरों को अपने सङ्गठन का एक ऐसा हिस्सा बना लें जिसे राजकाजी

پاؤں اکھاڑ دیئے۔ اس لئے ضرورت اس سمے کیول اس بات کی ہے کہ ہر علاقے کے اور ہر شہر کے نیک، سچے اور با اثر جو آج کل کی حالت اور پارٹی بازیوں سے پریشان اور دکھی ہوں اور اس سے دیش کی بربادی کو دیکھ رہے ہوں ایک بار اپنا سنگٹھن کر کے کھلے طور پر اور ہمت کے ساتھ اس برائی کا مقابلہ کریں۔ پھر وہ دیکھیں گے کہ تھوڑے ہی دنوں میں ملک کی حالت بدل جاوے گی۔

ہر علاقے میں اسی طرح کے سنگٹھن کی ضرورت ہے۔ اس سنگٹھن کے لوگ اپنے آپ کو چناؤ کی لاگ ڈاٹ اور پرلوبھنوں سے دور رکھیں گے۔ وہ خود حکومت کی گدی پر نہ بیٹھیں گے۔ وہ ادھیکار کے دائروں سے خود الگ رہ کر جنتا کے جیون کی اور ان دائروں کی بھی رکشا کریں گے۔ اس سے دیش میں اور ہر علاقے میں ایک ایسی نیتک شکتی پیدا ہو جائے گی جو راج شکتی سے الگ رہتے ہوئے بھی اس شکتی کو اپنے سامنے جھکا سکے گی اور اسے دیش کا سچا سیوک بنا سکے گی۔ باپو کا ودھان اسی الگ اور برابر کی گورنمنٹ کا سندیش دیش کے سامنے لایا ہے۔

اس ودھان کی پنچائتوں کا کام اپنے اپنے علاقے میں اسی طرح کے سنگٹھن پیدا کرنا ہے۔ اپنی سیوا سے علاقے کے بھلے لوگوں کو اپنے ساتھ لے کر سمگر سیوا، سواولمبن، ستیہ اور اہنسا کی ہوا پیدا کر دینا ہے، جو آج سے سو برس پہلے ہمارے گاؤں میں موجود تھی۔ ان پنچائتوں کا کام ہوگا کہ ووٹروں کی بابت جو ہدایت باپو نے دی ہے اسے سامنے رکھ کر اپنے علاقے کے ووٹروں کو اپنے سنگٹھن کا ایک ایسا حصہ بنا لیں جسے راج کا جی

पार्टियाँ उनसे अलग न कर सकें. फिर इन वोटरों के जरिये से, खुद बाहर रहते हुए, ऐसे सच्चे और नेक सेवकों को चुनाव में कामयाब बनवावें जिनपर जनता को यह पूरा एतबार हो कि वह चुने जाने के बाद जनता की सच्ची सेवा करेंगे.

गांव की इन पंचायतों में इतना ही नहीं, इन्हें जब चाहें इन सेवकों को हटा देने का अधिकार भी अपने हाथ में लेना होगा. जब यह सब बातें हो जायँगी तब ही वह अपने इलाक़ों को पुरानी पंचायतों की तरह पूरी आजादी दे सकेंगी. तभी वह अपने इलाक़े की आर्थिक, नैतिक और समाजी आजादी को पच्छिमी सभ्यता की ग़ुलामी से बचा सकेंगी. इसी महान उद्देश्य के लिये बापू ने यह विधान और यह लोक सेवक संघ बनाया है. और इनका यही सङ्गठन देश की वह पैरेलल गवरमेन्ट होगी जिसे बापू का विधान क़ायम करना चाहता है.

हर इन्क़लाब के पैदा करने के लिये एक मक़सद, एक सङ्गठन, एक प्रोग्राम और एक हथियार और इनके साथ साथ एक गिरोह और एक शक्ति की जरूरत होती है. अपने विधान में बापू ने यह सारी बातें रखदी हैं. हमने पिछले हिस्सों में विधान के मक़सद, उसके सङ्गठन, उसके प्रोग्राम और उसके हथियारों का पूरा नक़्शा पेश करने की कोशिश की है. अगले हिस्से में हम उस शक्ति और उन सेवकों की चरचा करेंगे जिनके सुपुर्द बापू ने इस विधान को चलाने और कामयाब बनाने की जिम्मेदारी है.

پارٹیاں انھیں الگ نہ کر سکیں۔ پھر ان ووٹروں کے ذریعے سے، خود باہر رہتے ہوئے، ایسے سچے اور نیک سیوکوں کو چناؤ میں کامیاب بنوائیں جن پر جنتا کو یہ پورا اعتبار ہو کہ وہ چنے جانے کے بعد جنتا کی سچی سیوا کریں گے۔

گاؤں کی ان پنچایتوں میں اتنا ہی نہیں، انھیں جب چاہیں ان سیوکوں کو ہٹا دینے کا ادھیکار بھی اپنے ہاتھ میں لینا ہوگا۔ جب یہ سب باتیں ہو جائیں گی تب ہی وہ اپنے علاقوں کو پرانی پنچایتوں کی طرح پوری آزادی دے سکیں گی۔ تبھی وہ اپنے علاقے کی آرتھک، نیتک اور سماجی آزادی کو پچھمی سبھیتا کی غلامی سے بچا سکیں گی۔ اسی مہان اُدیش کے لئے باپو نے یہ ودھان اور یہ لوک سیوک سنگھ بنایا ہے۔ اور ان کا یہی سنگٹھن دیش کی وہ پیرلل گورنمنٹ ہوگی جسے باپو کا ودھان قائم کرنا چاہتا ہے۔

ہر انقلاب کے پیدا کرنے کے لئے ایک مقصد، ایک سنگٹھن، ایک پروگرام اور ایک ہتھیار اور ان کے ساتھ ساتھ ایک گروہ اور ایک شکتی کی ضرورت ہوتی ہے۔ اپنے ودھان میں باپو نے یہ ساری باتیں رکھ دی ہیں۔ ہم نے پچھلے حصوں میں ودھان کے مقصد، اس کے سنگٹھن، اس کے پروگرام اور اس کے ہتھیاروں کا پورا نقشہ پیش کرنے کی کوشش کی ہے۔ اگلے حصے میں ہم اس شکتی اور ان سیوکوں کی چرچا کریں گے جن کے سپرد باپو کے اس ودھان کو چلانے اور کامیاب بنانے کی ذمہ داری ہے۔

आत्मा की ताक़त

अब हम उस शक्ति और उन 'सेवकों का चर्चा करेंगे जिनकी मदद से बापू अपने मक़सद को पूरा करना चाहते थे और जिनका उन्होंने अपने विधान में ज़िक्र किया है.

पहिले हम शक्ति को लेते हैं. बापू सत्य और अहिंसा में और उनसे पैदा होने वाले आत्मा के बल में अटल विश्वास रखते थे. वह कहते थे कि पच्छिमी सभ्यता के असर ने हमें इतना चकाचौंध कर दिया है कि अपनी सभ्यता की अच्छाइयों और उसकी नैतिक और आत्मिक शक्तियों की तरफ़ हमारी निगाह भी नहीं जाती. हमारी झोपड़ियों का महलों में बदलते जाना, हमारे छकड़ों का रेलगाड़ियों का रूप ले लेना, हमारा चिड़ियों की तरह आकाश में उड़ते फिरना यह सब हमारी निगाह में सभ्यता और उन्नति के सबूत हैं. हम यह नहीं देखते कि जितना जितना इस तरह की शक्तियों और साधनों का दायरा बढ़ता जाता है उतना उतना ही लड़ाइयाँ, मारकाट, बरबादी और तरह तरह की खेंचा तानी भी बढ़ती जा रही हैं. हथियारों, हवाई जहाज़ों, ज़हरीली गैसों और ऐटम बमों ने हमारे दिलों और दिमाग़ों पर ऐसी गहरी छाप डाल दी है कि जिससे हमारी अक़ल गुम और हमारी आँखें धुँधिया गई हैं. यहाँ तक कि हम इन सब चीज़ों के उन बुरे नतीजों को भी नहीं देख पाते. यह ठीक है कि पच्छिमी सभ्यता की सारी शक्ति और उसके राज का सारा आधार फ़ौजों और हथियारों पर है. पर जहाँ तक अमन चैन और सुख शांति का सवाल है वहाँ तक ख़ुद योरप

آتما کی طاقت

اب ہم اس شکتی اور ان سیوکوں کا چرچا کریں گے جن کی مدد سے باپو اپنے مقصد کو پورا کرنا چاہتے تھے اور جن کا انھوں نے اپنے ودھان میں ذکر کیا ہے۔

پہلے ہم شکتی کو لیتے ہیں۔ باپو ستیہ اور اہنسا میں اور ان سے پیدا ہونے والے آتما کے بل میں اٹل وشواس رکھتے تھے۔ وہ کہتے تھے کہ پچھمی سبھیتا کے اثر نے ہمیں اتنا چکاچوندھ کر دیا ہے کہ اپنی سبھیتا کی اچھائیوں اور اس کی نیتک اور آتمک شکتیوں کی طرف ہماری نگاہ بھی نہیں جاتی۔ ہماری جھونپڑیوں کا محلوں میں بدلتے جانا، ہمارے چھکڑوں کا ریل گاڑیوں کا روپ لے لینا، ہمارا چڑیوں کی طرح آکاش میں اڑتے پھرنا یہ سب ہماری نگاہ میں سبھیتا اور اُنتی کے ثبوت ہیں۔ ہم یہ نہیں دیکھتے کہ جتنا جتنا اس طرح کی شکتیوں اور سادھنوں کا دائرہ بڑھتا جاتا ہے اُتنا اُتنا ہی لڑائیاں، مارکاٹ، بربادی اور طرح طرح کی کھینچا تانی بھی بڑھتی جا رہی ہے۔ ہتھیاروں، ہوائی جہازوں، زہریلی گیسوں اور ایٹم بموں نے ہمارے دلوں اور دماغوں پر ایسی گہری چھاپ ڈال دی ہے کہ جس سے ہماری عقل گم اور ہماری آنکھیں دھندھیا گئی ہیں۔ یہاں تک کہ ہم ان سب چیزوں کے ان برے نتیجوں کو بھی نہیں دیکھ پاتے۔ یہ ٹھیک ہے کہ پچھمی سبھیتا کی ساری شکتی اور اس کے راج کا سارا آدھار فوجوں اور ہتھیاروں پر ہے۔ پر جہاں تک امن چین اور سکھ شانتی کا سوال ہے وہاں تک خود یورپ

की क़ौमों की आजकल की हालत रो रो कर दुनिया को अपनी दुख भरी कहानी सुना रही है और कह रही है कि इन फ़ौजों और हथियारों का सहारा बिलकुल धोके की टट्टी है.

इसमें शक नहीं कि हमने बापू के साथ न्याय नहीं किया. बापू का दावा था कि सत्य और अहिंसा में वैसी ही शक्ति है जैसी दुनिया की कोई और शक्ति. उनका यह भी दावा था कि इस शक्ति पर लगभग पचास बरस तजरबे करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुँचे हैं. हमने उनकी इन बातों की तरफ़ कभी गहराई से ध्यान नहीं दिया. पच्छिम की डरावनी और घातक शक्तियों के सामने हमें बापू की अहिंसा सदा बेकार महसूस हुई. हमने कभी ठंडे दिल से इतिहास और तजरबे की रोशनी में एक सच्चे साइन्स वाले की तरह इन दोनों तरह की शक्तियों और उनके नतीजों को तोल कर देखने की कोशिश नहीं की. हम बुद्धिवाद और दलीलों की बात करते हैं पर जहाँ तक नेकी और बदी का सवाल है हम पच्छिमी सभ्यता की दिखावटी तड़क भड़क के मोह जाल में उसी तरह फंस गये हैं जैसे हमारे ही देश के बहुत से रीत रिवाज के पुजारी अपनी आज कल की खोखली रूढ़ियों और झूटी हठ धर्मियों में फंसे हुए हैं. इस मोह जाल में हम इतने गहरे फंस गये हैं कि ख़ुद अपने और अपने देश के हाल के तजरबों से भी हम फ़ायदा नहीं उठा सकते. हमारे अच्छे अच्छे बुद्धिवादी बापू को जादूगर और उनके कामों को जादू या आदमी की बुद्धि से बाहर की चीज़ कह कर टाल देते हैं. चीज़ों को इस तरह से देखना न साइन्स है, और न बुद्धिवाद हम बापू की सलाहों को ग़ैर अमली और उनके विचारों को केवल

کی قوموں کی آج کل کی حالت رو رو کر دنیا کو اپنی دُکھ بھری کہانی سُنا رہی ہے اور کہہ رہی ہے کہ ان فوجوں اور ہتھیاروں کا سہارا بالکل دھوکے کی ٹٹی ہے.

اس میں شک نہیں کہ ہم نے باپو کے ساتھ نیائے نہیں کیا. باپو کا دعوا تھا کہ ستیہ اور اہنسا میں ویسی ہی شکتی ہے جیسی دنیا کی کوئی اور شکتی. ان کا یہ بھی دعوا تھا کہ اس شکتی پر لگ بھگ پچاس برس تجربے کرنے کے بعد وہ اس نتیجے پر پہنچے ہیں. ہم نے اُن کی ان باتوں کی طرف کبھی گہرائی سے دھیان نہیں دیا. پچھم کی ڈراونی اور گھاتک شکتیوں کے سامنے ہمیں باپو کی اہنسا سدا بیکار محسوس ہوئی. ہم نے کبھی ٹھنڈے دل سے اتہاس اور تجربے کی روشنی میں ایک سچے سائنس والے کی طرح ان دونوں طرح کی شکتیوں اور ان کے نتیجوں کو تول کر دیکھنے کی کوشش نہیں کی. ہم بُدھی واد اور دلیلوں کی بات کرتے ہیں پر جہاں تک نیکی اور بدی کا سوال ہے ہم پچھمی سبھیتا کی دکھاوٹی تڑک بھڑک کے موہ جال میں اسی طرح پھنس گئے ہیں جیسے ہمارے ہی دیش کے بہت سے ریت رواج کے پجاری اپنی آج کل کی کھوکھلی روڑھیوں اور جھوٹی ہٹ دھرمیوں میں پھنسے ہوئے ہیں. اس موہ جال میں ہم اتنے گہرے پھنس گئے ہیں کہ خود اپنے اور اپنے دیش کے حال کے تجربوں سے بھی ہم فائدہ نہیں اٹھا سکتے. ہمارے اچھے اچھے بُدھی وادی باپو کو جادوگر اور ان کے کاموں کو جادو یا آدمی کی بُدھی سے باہر کی چیز کہہ کر ٹال دیتے ہیں. چیزوں کو اس طرح سے دیکھنا نہ سائنس ہے اور نہ بُدھی واد. ہم باپو کی صلاحوں کو غیر عملی اور ان کے وچاروں کو کیول

आदर्श समझते हैं. इसके मुक़ाबले में हमें यह बात बड़ी अक़्ल की मालूम होती है कि दूसरे देशों के पुराने कंडम किये हुए जहाज़ अपनी रक्षा के लिये खरीदें और देश की गाढ़ी कमाई को इसी तरह के हवाई जहाज़ों, तोपों, बमों और बन्दूक़ों के खरीदने और बनाने की कोशिशों में लुटा दें. हम अपनी खिलौना फ़ौज बनाने में इतने मगन हैं जितने बच्चे अपने रेती के महल बनाने में होते हैं.

सत्य और अहिंसा या किसी भी नई चीज़ में किसी को कितना भी गहरा विश्वास क्यों न हो और उस विश्वास को वह कितने ही ज़ोरदार शब्दों में क्यों न प्रकट करे, और कितनी ही ज़बरदस्त दलीलें क्यों न दे, दुनिया पर उसका उस समय तक कोई असर नहीं हो सकता जब तक वह अपने असूलों को दुनिया के सामने किसी अमली सूरत में पेश न करे. तभी वह दुनिया को उसके आजकल के ग़लत रास्ते से हटाकर ठीक रास्ते पर ले आने की आशा कर सकता है. ज़रूरत इस बात की होती है कि कोई दूसरा रास्ता जो चालू रास्ते से ज़्यादा सीधा और अच्छा हो दुनिया के सामने आवे और दुनिया को उसे देखने और आज़माने का अवसर मिले. इसके बाद अगर लोगों को तसल्ली होजावे तो यह हो नहीं सकता कि वह धीरे धीरे अपने पुराने रास्ते को छोड़कर नये पर न चलने लगे.

इसी लिये बापू ने अपने प्रोग्राम को बहसों और दलीलों के साथ पेश करने के बजाय उसे अमली रूप देना, उसे प्रयोगों की कसौटी पर कसना और उस पर खुले अमल करके दिखाना अधिक उचित समझा और अपनी सारी शक्ति इसी में लगा दी. हम यहाँ बापू की सब खोजों और उनके प्रयोगों के विस्तार में नहीं जा सकते,

آدرش سمجھتے ہیں۔ اس کے مقابلے میں ہمیں یہ بات بڑی عقل کی معلوم ہوتی ہے کہ دوسرے دیشوں کے پرانے کنڈم کئے ہوئے جہاز اپنی رکشا کے لئے خریدیں اور دیش کی گاڑھی کمائی کو اسی طرح کے ہوائی جہازوں، توپوں، بموں اور بندوقوں کے خریدنے اور بنانے کی کوششوں میں لٹا دیں۔ ہم اپنی کھلونا فوج بنانے میں اتنے مگن ہیں جتنے بچے اپنے ریتی کے محل بنانے میں ہوتے ہیں۔

ستیہ اور اہنسا یا کسی بھی نئی چیز میں کسی کو کتنا بھی گہرا وشواس کیوں نہ ہو اور اس وشواس کو وہ کتنے ہی زوردار شبدوں میں کیوں نہ پرکٹ کرے، اور کتنی ہی زبردست دلیلیں کیوں نہ دے، دنیا پر اس کا اس سمے تک کوئی اثر نہیں ہو سکتا جب تک وہ اپنے اصولوں کو دنیا کے سامنے کسی عملی صورت میں پیش نہ کرے۔ تبھی وہ دنیا کو اس کے آج کل کے غلط راستے سے ہٹا کر ٹھیک راستے پر لے جانے کی آشا کر سکتا ہے۔ ضرورت اس بات کی ہوتی ہے کہ کوئی دوسرا راستہ جو چالو راستے سے زیادہ سیدھا اور اچھا ہو دنیا کے سامنے آوے اور دنیا کو اسے دیکھنے اور آزمانے کا اوسر ملے۔ اس کے بعد اگر لوگوں کو تسلی ہو جاوے تو یہ ہو نہیں سکتا کہ وہ دھیرے دھیرے اپنے پرانے راستے کو چھوڑ کر نئے پر نہ چلنے لگیں۔

اسی لئے باپو نے اپنے پروگرام کو بحثوں اور دلیلوں کے ساتھ پیش کرنے کے بجائے اسے عملی روپ دینا، اسے پریوگوں کی کسوٹی پر کسنا اور اس پر کھلے عمل کر کے دکھانا ادھک اچت سمجھا اور اپنی ساری شکتی اسی میں لگا دی۔ ہم یہاں باپو کی سب کھوجوں اور ان کے پریوگوں کے وستار میں نہیں جا سکتے۔

उनके जीवन के इन पहलुओं पर भी बहुत सी किताबें लिखी जा चुकी हैं जिनसे जो चाहे फ़ायदा उठा सकता है. यहाँ हम सरसरी तौर पर बापू के कुछ प्रयोगों के नतीजों पर एक निगाह डालेंगे.

जिस शक्ति को बापू आदमी को सुधारने के लिये तलवार की जगह देना चाहते थे वह शक्ति मानव-प्रेम की शक्ति है. नीति शास्त्र और आत्मविद्या के बड़े बड़े जानकारों ने हज़ारों साल से इस शक्ति का पता लगा रखा था. जिस तरह लोग माद्दी ताक़तों की छानबीन में लगे रहे हैं उसी तरह रूहानी ताक़तों के समझने और जानने वाले इन ताक़तों की छानबीन में भी उसी लगन के साथ हमेशा लगे रहे हैं. इन्हें अपनी इस खोज में उतनी ही कामयाबियाँ मिली हैं जितनी माद्दी शक्तियों की छानबीन करने वालों को. इन रूहानी शक्तियों के जानकार अपनी खोजों से इन्सानी दुनिया को वैसे ही फ़ायदा पहुँचाते रहे हैं जैसे माद्दी शक्तियों के पंडित अपनी खोजों से. इन्सानी दुनिया का इतिहास अब इस निगाह से लिखा जावेगा तब हमें यह दिखाई देगा कि रूहानी ताक़त और प्रेम की ताक़त के असली प्रयोग से इन्सानी दुनिया को जितना फ़ायदा पहुँचा है उतना माद्दी ईजादों से नहीं पहुँचा. यह एक पक्की बात है कि धीरे धीरे मानव प्रेम की शक्ति मानव जीवन के आर्थिक, नैतिक और समाजी दायरों में तलवार की शक्ति पर विजय पाती आ रही है और धीरे धीरे बड़े से बड़े पैमानों पर उसने तलवार की शक्ति को इन दायरों से निकाल कर उनकी जगह लेली है. इतिहास इस बात को साबित कर देगा कि जिसे हम कलचर और संस्कृति कहते हैं वह असल में धीरे धीरे अहिंसात्मक प्रोग्रामों,

اُن کے جیون کے ان پہلوؤں پر بھی بہت سی کتابیں لکھی جا چکی ہیں جن سے جو چاہے فائدہ اٹھا سکتا ہے۔ یہاں ہم سرسری طور پر باپو کے کچھ پریوگوں کے نتیجوں پر ایک نگاہ ڈالیں گے۔

جس شکتی کو باپو آدمی کو شدھارنے کے لئے تلوار کی جگہ دینا چاہتے تھے وہ شکتی مانو پریم کی شکتی ہے۔ نیتی شاستر اور آتم ودیا کے بڑے بڑے جانکاروں نے ہزاروں سال سے اس شکتی کا پتہ لگا رکھا تھا۔ جس طرح لوگ مادی طاقتوں کی چھان بین میں لگے رہے ہیں اسی طرح روحانی طاقتوں کے سمجھنے اور جاننے والے ان طاقتوں کی چھان بین میں بھی اسی لگن کے ساتھ ہمیشہ لگے رہے ہیں۔ انہیں اپنی اس کھوج میں اتنی ہی کامیابیاں ملی ہیں جتنی مادی شکتیوں کی چھان بین کرنے والوں کو۔ ان روحانی شکتیوں کے جانکار اپنی کھوجوں سے انسانی دنیا کو ویسے ہی فائدہ پہنچاتے رہے ہیں جیسے مادی شکتیوں کے پنڈت اپنی کھوجوں سے۔ انسانی دنیا کا اتہاس جب اس نگاہ سے لکھا جائے گا تب ہمیں یہ دکھائی دے گا کہ روحانی طاقت اور پریم کی طاقت کے اصلی پریوگ سے انسانی دنیا کو جتنا فائدہ پہنچا ہے اتنا مادی ایجادوں سے نہیں پہنچا۔ یہ ایک پکی بات ہے کہ دھیرے دھیرے مانو پریم کی شکتی مانو جیون کے آرتھک، نیتک اور سماجی دائروں میں تلوار کی شکتی پر وجے پاتی جا رہی ہے اور دھیرے دھیرے بڑے سے بڑے پیمانوں پر اس نے تلوار کی شکتی کو ان دائروں سے نکال کر ان کی جگہ لے لی ہے۔ اتہاس اس بات کو ثابت کر دے گا کہ جسے ہم کلچر اور سنسکرتی کہتے ہیں وہ اصل میں دھیرے دھیرے اہنسا تمک پروگراموں،

रीत रिवाजों और क़ानूनों का हिंसात्मक रीत रिवाजों, प्रोग्रामों और क़ानूनों की जगह ले लेना है.

पच्छिमी सभ्यता के उठान के बाद से यह सूरत कुछ थोड़ी सी बदल गई. पर इतिहास हमें बताता है कि इस दौर में भी आदमी जाने या अनजाने इसी शक्ति को बढ़ाने और उसका संगठन करने को अपना असली लक्ष्य या मक़सद बनाये रहा. फिर क्या कारन है कि यह शक्ति तलवार की शक्ति पर आख़िरी विजय हासिल न कर सकी और आज तलवार ही इस शक्ति पर छाई हुई दिखाई देती है. इसके कुछ कारन हम नीचे देते हैं—

(१) पहिली बात तो यह है कि तलवार का इस शक्ति को हरा देना या दबा देना केवल एक सतही और चन्द रोज़ा चीज़ है. बड़े दर्जे तक यह हमारी निगाह का धोका है. यह सूरतें इस वास्ते पैदा हो गई हैं कि पिछले दो तीन सौ साल के अंदर हमारी दुनियावी या माद्दी तरक़्क़ी हमारी नैतिक और रूहानी तरक़्क़ी की निस्बत ज़्यादा तेज़ी के साथ आगे बढ़ी है. इससे पहिले हमारी दीनी धर्मी और नैतिक संस्थाएँ संसारी उन्नति को सदाचार और रूहानियत के अधीन रखकर मानव जीवन में एक बहुत अच्छा और तन्दुरुस्त समतोल बनाये रखती थीं. पच्छिम के उठान ने इस समतोल को बरबाद कर दिया. इसीलिये तलवार की शक्ति मानव प्रेम की शक्ति पर हावी दिखाई देने लगी. पर इसके साथ ही साथ वह संसारी रुकावटें जो आदमी को इन्सानी भाई चारे और लोक राज के साँचे में ढलने से रोकती थीं इतनी तेज़ी के साथ और इतनी

ریت رواجوں اور قانونوں کا ہنسا تمک ریت رواجوں، پروگراموں اور قانونوں کی جگہ لے لینا ہے۔

پچھمی سبھیتا کے اُٹھان کے بعد سے یہ صورت کچھ تھوڑی سی بدل گئی۔ پر اتہاس ہمیں بتاتا ہے کہ اس دور میں بھی آدمی جانے یا انجانے اسی شکتی کو بڑھانے اور اس کا سنگٹھن کرنے کو اپنا اصلی لکش یا مقصد بنائے رہا۔ پھر کیا کارن ہے کہ یہ شکتی تلوار کی شکتی پر آخری وجے حاصل نہ کر سکی اور آج تلوار ہی اس شکتی پر چھائی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔ اس کے کچھ کارن ہم نیچے دیتے ہیں —

(۱) پہلی بات تو یہ ہے کہ تلوار کا اس شکتی کو ہرا دینا یا دبا دینا کیول ایک سطحی اور چند روزہ چیز ہے۔ بڑے درجے تک یہ ہماری نگاہ کا دھوکہ ہے۔ یہ صورتیں اس واسطے پیدا ہو گئی ہیں کہ پچھلے دو تین سو سال کے اندر ہماری دنیاوی یا مادی ترقی ہماری نیتک اور روحانی ترقی کی نسبت زیادہ تیزی کے ساتھ آگے بڑھی ہے۔ اس سے پہلے ہماری دینی دھرمی اور نیتک سنستھائیں سنساری اُنتی کو سداچار اور روحانیت کے ادھین رکھ کر مانو جیون میں ایک بہت اچھا اور تندرست سمتول بنائے رکھتی تھیں۔ پچھم کے اُٹھان نے اس سمتول کو برباد کر دیا۔ اسی لئے تلوار کی شکتی مانو پریم کی شکتی پر حاوی دکھائی دینے لگی۔ پر اس کے ساتھ ہی ساتھ وہ سنساری رکاوٹیں جو آدمی کو انسانی بھائی چارے اور لوک راج کے سانچے میں ڈھلنے سے روکتی تھیں اتنی تیزی کے ساتھ اور اتنی

अच्छी तरह दूर होती जा रही हैं और हो गई हैं कि जो पिछले हज़ारों साल में भी न हुई थीं.

(२)दूसरी बात यह है कि लड़ाई और मारकाट के तूफ़ान आदमी के दिल और दिमाग़ को हिला कर तलवार के ख़तरों और उसकी बरबादियों से डरा डरा कर भौंचक्का कर रहे हैं. लोग इस तूफ़ान से इस हद तक घायल और परेशान हो गये हैं कि दुनिया के इतिहास में पहिली बार वह सच्चे दिल से ऐसी सूरतों की खोज में हैं जो आदमी को किसी तरह आजकल की बरबादियों से बचा सकें.

(३) तीसरे दुनिया की वह नैतिक और रूहानी शक्तियाँ जो थोड़े दिनों के लिये तलवार की चका चौंध से दब गई थीं, उनमें अब दोबारा एक नई जान, नई ताक़त और नया संगठन पैदा हो रहा है. अब अगर एक बार इन शक्तियों का संगठन हो गया तो तलवार का दौर हमेशा के लिये ख़तम हो जायगा.

(४) चौथे बापू के जन्म और उनकी कामयाब कोशिशों ने एक नया प्रोग्राम और नया हथियार दुनिया के सामने रख दिया है. यह प्रोग्राम और यह हथियार थोड़े ही दिनों में नैतिक और रूहानी संगठनों को अहिंसा के तरीक़ों पर तलवार की शक्ति से सीधे टक्कर लेने के लिये तैयार कर देंगे. इसी के साथ साथ जो लोग अब तक हिंसा के तरीक़ों पर इसलिये लट्टू हैं कि वह इसे आदमी की भलाई, तरक़्क़ी और रक्षा का अकेला रास्ता समझते हैं, किसी ऐसे दूसरे रास्ते के सामने आते ही जिससे इन्हें भलाई की कुछ उम्मीद दिखाई देगी, ख़ुद बख़ुद उसकी तरफ़ झुक जावेंगे.

अब सवाल यह है कि दुनिया ने तलवार के इस्तेमाल को क्यों

اچھی طرح دور ہوتی جا رہی ہیں اور ہو گئی ہیں کہ جو پچھلے ہزاروں سال میں بھی نہ ہوئی تھیں۔

(۲) دوسری بات یہ ہے کہ لڑائی اور مارکاٹ کے طوفان آدمی کے دل اور دماغ کو ہلا کر تلوار کے خطروں اور اس کی بربادیوں سے ڈرا ڈرا کر بھونچکا کر رہے ہیں۔ لوگ اس طوفان سے اس حد تک گھائل اور پریشان ہو گئے ہیں کہ دنیا کے اتہاس میں پہلی بار وہ سچے دل سے ایسی صورتوں کی کھوج میں ہیں جو آدمی کو کسی طرح آج کل کی بربادیوں سے بچا سکیں۔

(۳) تیسرے دنیا کی وہ نیتک اور روحانی شکتیاں جو تھوڑے دنوں کے لئے تلوار کی چکا چوندھ سے دب گئی تھیں، ان میں اب دوبارہ ایک نئی جان، نئی طاقت اور نیا سنگٹھن پیدا ہو رہا ہے۔ اب اگر ایک بار ان شکتیوں کا سنگٹھن ہو گیا تو تلوار کا دور ہمیشہ کے لئے ختم ہو جائے گا۔

(۴) چوتھے باپو کے جنم اور ان کی کامیاب کوششوں نے ایک نیا پروگرام اور نیا ہتھیار دنیا کے سامنے رکھ دیا ہے۔ یہ پروگرام اور یہ ہتھیار تھوڑے ہی دنوں میں نیتک اور روحانی سنگٹھنوں کو اہنسا کے طریقوں پر تلوار کی شکتی سے سیدھے ٹکر لینے کے لئے تیار کر دیں گے۔ اسی کے ساتھ ساتھ جو لوگ اب تک ہنسا کے طریقوں پر اس لئے لٹو ہیں کہ وہ اسے آدمی کی بھلائی، ترقی اور رکشا کا اکیلا راستہ سمجھتے ہیں، کسی ایسے دوسرے راستے کے سامنے آتے ہی جس سے انھیں بھلائی کی کچھ امید دکھائی دے گی، خود بخود اس کی طرف جھک جاویں گے۔

اب سوال یہ ہے کہ دنیا نے تلوار کے استعمال کو کیوں

जारी रहने दिया. इसका कारण राजकाजी और आर्थिक है. तलवार किसी देश या गिरोह में केवल सुधार ही का काम नहीं करती थी बल्कि रक्षा का काम भी करती थी. इसमें दो दायरे उसके सुपुर्द होते थे. एक अंदर की रक्षा और दूसरे बाहर से रक्षा. इतिहास बताता है कि जहाँ तक अंदर की रक्षा का सवाल था वहाँ तक मानव प्रेम की शक्ति के जानकारों ने हर देश और हर सभ्यता में ऐसे ऐसे तरीक़े पैदा कर लिये कि जिन्होंने धीरे धीरे शहरी जीवन से फ़ौजों की ज़रूरत को बिलकुल मिटा कर उसे ग़ैर फ़ौजी पुलिस और अदालतों के सुपुर्द कर दिया. पहिले हर आदमी को और हर गिरोह को अपनी रक्षा का ख़ुद अधिकार होता था. इस अधिकार को काम में लाने में हर आदमी आमतौर से हथियारों से काम लेता था या अपने मददगारों को हथियार देकर दूसरे से ख़ुद फ़ैसला कर लेने में मदद लेता था. और यह बात जायज़ समझी जाती थी. धीरे धीरे इस तरह की बातें मानव जीवन से ख़तम कर दी गईं. हर आदमी को क़ानून अपने हाथ में लेने की इजाज़त नहीं दी गई और सब तरह के आपसी झगड़े चुकाने के लिये हथियारों के इस्तेमाल की जगह अदालतों और दूसरी इसी तरह की संस्थाओं से काम लेना सब के लिये ज़रूरी कर दिया गया. पुलिस की संस्था भी इसी तरह फ़ौज की जगह एक ग़ैर फ़ौजी शहरी संस्था बनी जिसका काम शुरू में ग़ैर फ़ौजी ढंग से शांति क़ायम रखने में मदद देना था. इस तरह की पुलिस को भी अदालतों के अधीन रख कर उनके हिंसा के दायरे को एक बहुत बड़े पैमाने पर अहिंसा में बदल दिया गया.

جاری رہنے دیا۔ اس کا کارن راج کاجی اور آرتھک ہے۔ تلوار کسی دیش یا گروہ میں کیول سُدھاری کا کام نہیں کرتی تھی بلکہ رکشا کا کام بھی کرتی تھی۔ اس میں دو دائرے اس کے سپرد ہوتے تھے۔ ایک اندر کی رکشا اور دوسرے باہر سے رکشا۔ اتہاس بتاتا ہے کہ جہاں تک اندر کی رکشا کا سوال تھا وہاں تک مانو پریم کی شکتی کے جانکاروں نے ہر دیش اور ہر سبھیتا میں ایسے ایسے طریقے پیدا کر لئے کہ جنھوں نے دھیرے دھیرے شہری جیون سے فوجوں کی ضرورت کو بالکل مٹا کر اسے غیر فوجی پولیس اور عدالتوں کے سپرد کر دیا۔ پہلے ہر آدمی کو اور ہر گروہ کو اپنی رکشا کا خود ادھیکار ہوتا تھا۔ اس ادھیکار کو کام میں لانے میں ہر آدمی عام طور سے ہتھیاروں سے کام لیتا تھا یا اپنے مددگاروں کو ہتھیار دے کر دوسرے سے خود فیصلہ کر لینے میں مدد لیتا تھا۔ اور یہ بات جائز سمجھی جاتی تھی۔ دھیرے دھیرے اس طرح کی باتیں مانو جیون سے ختم کر دی گئیں۔ ہر آدمی کو قانون اپنے ہاتھ میں لینے کی اجازت نہیں دی گئی اور سب طرح کے آپسی جھگڑے چکانے کے لئے ہتھیاروں کے استعمال کی جگہ عدالتوں اور دوسری اسی طرح کی سنستھاؤں سے کام لینا سب کے لئے ضروری کر دیا گیا۔ پولس کی سنستھا بھی اسی طرح فوج کی جگہ ایک غیر فوجی شہری سنستھا بنی جس کا کام شروع میں غیر فوجی ڈھنگ سے شانتی قائم رکھنے میں مدد دینا تھا۔ اس طرح کی پولس کو بھی عدالتوں کے ادھین رکھ کر ان کے ہنسا کے دائرے کو ایک بہت بڑے پیمانے پر اہنسا میں بدل دیا گیا۔

अगर मानव उन्नति का दायरा कुल मानव जाति होती और कुल इन्सान एक ही हुकूमत के नीचे होते तो यह प्रबंध और यह प्रोग्राम ऐसा था जिसने आज से हजारों साल पहिले ही इन्सानी दुनिया से तलवार के इस्तेमाल को मिटा दिया होता. पर कठिनाई यह थी कि जहाँ तक राजकाज का सम्बन्ध है आदमी छोटे छोटे हजारों ऐसे टुकड़ों में बँटता रहा है कि जो एक दूसरे से बिलकुल आज़ाद होते थे. यह बँटवारा इतिहासी और भूगोली कारनों से होता था. शुरू शुरू में इनमें से हजारों गिरोह अपने रहन सहन, खानपान, धर्म मज़हब, पेशों, संगठन के तरीक़ों और आदर्शों में बिलकुल एक दूसरे से अलग और अक्सर एक दूसरे के खिलाफ़ सांचों में ढल जाते थे. फिर एक बार अलग अलग सांचों में ढल जाने के बाद आदमी क़ुदरती तौर पर अपने पुराने ढांचों से ही चिपटे रहना चाहता है. वह अपने या अपने गिरोह के रीत रिवाजों से इतनी मुहब्बत करने लगता है कि फिर उन्हीं का मोहताज हो जाता है. फिर उसके लिये इन साँचों को बदलना लगभग नामुमकिन हो जाता है. इसी तरह अलग अलग जातियां, अलग अलग क़ौमें, अलग अलग कलचर और अलग अलग राष्ट्र बन जाते हैं और यह सब अलग अलग हालतों में रह कर अलग अलग साँचों में ढले होते हैं. फिर जब इतिहास के उलट फेर या भूगोली शक्तियाँ इन्हें एक दूसरे के पास लाईं या उन्होंने इन्हें एक दूसरे से मिलाया तो एक दूसरे से अपनी रक्षा के लिये इनके पास तलवार के सिवा और कोई साधन था ही नहीं इसीलिये यह तलवार काम में लाने पर मजबूर हो जाते थे.

اگر مانو اُنتی کا دائرہ کل مانو جاتی ہوتی اور کل انسان ایک ہی حکومت کے نیچے ہوتے تو یہ پربندھ اور یہ پروگرام ایسا تھا جس نے آج سے ہزاروں سال پہلے ہی انسانی دنیا سے تلوار کے استعمال کو مٹا دیا ہوتا۔ پر کٹھنائی یہ تھی کہ جہاں تک راج کاج کا سمبندھ ہے آدمی چھوٹے چھوٹے ہزاروں ایسے ٹکڑوں میں بٹتا رہا ہے کہ جو ایک دوسرے سے بالکل آزاد ہوتے تھے۔ یہ بٹوارہ اتہاسی اور بھوگولی کارنوں سے ہوتا تھا۔ شروع شروع میں ان میں سے ہزاروں گروہ اپنے رہن سہن، کھان پان، دھرم مذہب، پیشوں، سنگٹھن کے طریقوں اور آدرشوں میں بالکل ایک دوسرے سے الگ اور اکثر ایک دوسرے کے خلاف سانچوں میں ڈھل جاتے تھے۔ پھر ایک بار الگ الگ سانچوں میں ڈھل جانے کے بعد آدمی قدرتی طور پر اپنے پرانے ڈھانچوں سے ہی چپٹے رہنا چاہتا ہے۔ وہ اپنے یا اپنے گروہ کے ریت رواجوں سے اتنی محبت کرنے لگتا ہے کہ پھر انھیں کا محتاج ہو جاتا ہے۔ پھر اس کے لئے ان سانچوں کو بدلنا لگ بھگ ناممکن ہو جاتا ہے۔ اسی طرح الگ الگ جاتیاں، الگ الگ قومیں، الگ الگ کلچر اور الگ الگ راشٹر بن جاتے ہیں اور یہ سب الگ الگ حالتوں میں رہ کر الگ الگ سانچوں میں ڈھلے ہوتے ہیں۔ پھر جب اتہاس کے الٹ پھیر یا بھوگولی شکتیاں انھیں ایک دوسرے سے پاس لائیں یا انھوں نے انھیں ایک دوسرے سے ملایا تو ایک دوسرے سے اپنی رکشا کے لئے ان کے پاس تلوار کے سوا اور کوئی سادھن تھا ہی نہیں اسی لئے یہ تلوار کام میں لانے پر مجبور ہو جاتے تھے۔

कुछ टक्करों के बाद एक दूसरे को जीत कर राजकाजी निगाह से यह एक दूसरे में मिल जाने पर मजबूर हो जाते थे. इसके बाद इनके अंदर के समाजी और माली पहलुओं पर मानव प्रेम की शक्ति धीरे धीरे अपना असर फैलाकर इनके आपसी फ़र्क़ों को मिटा मिटा कर इन्हें एक भाई चारे या राजकाजी और माली बिरादरी में ढालती रहती थी और इनमें एकता और एकरंगापन पैदा करती रहती थी. यहाँ तक कि इस तरह के मिले हुए गिरोहों में अपने आपसी सम्बन्धों और संगठन के लिये तलवार की कोई ज़रूरत या गुंजाइश बाक़ी न रहती थी. यही हालत दुनिया की आज तक बाक़ी है. इस हालत को ज़्यादा बड़ी और फैली हुई इन्सानी बुनियादों पर लाने के लिये इतिहासी और भूगोली शक्तियाँ पहिले से कहीं बड़े पैमाने पर अपना काम कर रही हैं.

अब छोटी छोटी हुकूमतों की जगह दुनिया में बड़ी से बड़ी हुकूमतें और छोटी छोटी कलचरों की जगह बड़ी से बड़ी कलचरें और सभ्यताएँ बन रही हैं और बन गई हैं. फिर भी अभी इतनी अलग अलग आज़ाद हुकूमतें और क़ौमें बाक़ी हैं कि इन्हें एक दूसरे से अपनी रक्षा के लिये अभी तक तलवार की ज़रूरत मालूम होती है. जब तक यह ज़रूरत इस रूप में बाक़ी रहेगी तब तक आदमी के दिल में तलवार को काम में लाने और उससे फ़ायदा उठाने की इच्छा बनी रहेगी और तब तक तलवार इन्सानी दुनिया से मिट न सकेगी.

पर अब यह सारी हालत जड़ से बदल रही है. मानव संसार की आज कल की हालत और उसके आज कल के संगठन पर

کچھ ٹکروں کے بعد ایک دوسرے کو جیت کر راج کاجی نگاہ سے یہ ایک دوسرے میں مل جانے پر مجبور ہو جاتے تھے۔ اس کے بعد ان کے اندر کے سماجی اور مالی پہلوؤں پر مانو پریم کی شکتی دھیرے دھیرے اپنا اثر پھیلا کر ان کے آپسی فرقوں کو مٹا مٹا کر انھیں ایک بھائی چارے یا راج کاجی اور مالی برادری میں ڈھالتی رہتی تھی اور ان میں ایکتا اور ایک رنگا پن پیدا کرتی رہتی تھی۔ یہاں تک کہ اس طرح کے ملے ہوئے گروہوں میں اپنے آپسی سمبندھوں اور سنگٹھن کے لئے تلوار کی کوئی ضرورت یا گنجائش باقی نہ رہتی تھی۔ یہی حالت دنیا کی آج تک باقی ہے۔ اس حالت کو زیادہ بڑی اور پھیلی ہوئی انسانی بنیادوں پر لانے کے لئے اتہاسی اور بھوگولی شکتیاں پہلے سے کہیں بڑے پیمانے پر اپنا کام کر رہی ہیں۔

اب چھوٹی چھوٹی حکومتوں کی جگہ دنیا میں بڑی سے بڑی حکومتیں اور چھوٹی چھوٹی کلچروں کی جگہ بڑی سے بڑی کلچریں اور سبھیتائیں بن رہی ہیں اور بن گئی ہیں۔ پھر بھی ابھی اتنی الگ الگ آزاد حکومتیں اور قومیں باقی ہیں کہ انھیں ایک دوسرے سے اپنی رکشا کے لئے ابھی تک تلوار کی ضرورت معلوم ہوتی ہے۔ جب تک یہ ضرورت اس روپ میں باقی رہے گی تب تک آدمی کے دل میں تلوار کو کام میں لانے اور اس سے فائدہ اٹھانے کی اچھا بنی رہے گی اور تب تک تلوار انسانی دنیا سے مٹ نہ سکے گی۔

پر اب یہ ساری حالت جڑ سے بدل رہی ہے۔ مانو سنسار کی آج کل کی حالت اور اس کے آج کل کے سنگٹھن پر

निगाह डालने से हमें एक दूसरा पहलू दिखाई देता है. हम यह देखते हैं कि जिन शक्तियों की हमने ऊपर चर्चा की है उन्होंने मानव संसार की हुकूमतों, संस्कृतियों और क़ौमों की तादाद पहिले से बेहद कम कर दी है. आज थोड़ी सी बड़ी बड़ी हुकूमतें क़ायम हो गई हैं और इनकी शक्ति और साधन इतने अधिक हैं कि इनके सामने छोटी हुकूमतों की कोई हक़ीक़त ही बाक़ी नहीं रही. आज कल के मशीन के दौरके हथियारों को भी बड़ी बड़ी मशीनों का रूप दे दिया है. इस इनक़लाब ने छोटी हुकूमतों को बड़ी हुकूमतों के सामने बिलकुल बेबस और लाचार कर दिया है. इसलिये आज तलवार दुनिया की छोटी क़ौमों और मुल्कों की इस तरह रक्षा नहीं कर सकती और उन्हें आज़ाद नहीं रख सकती जिस तरह पहिले रखती थी. अपनी आज़ादी को क़ायम रखने के लिये आज यह सब किसी दूसरी ताक़त या संगठन के मोहताज हो रहे हैं.

अगर हम आज की राजकाजी हालत पर निगाह डालें तो हम यह देखते हैं कि बड़ी बड़ी मशीनों वाले हथियारों और बड़ी बड़ी फ़ौजों को बड़े से बड़े पैमाने पर काम में लाने की शक्ति दुनिया की तीन क़ौमों के हाथ में आकर जमा हो गई है—अमरीका, इंगलिस्तान और रूस. इनमें से हम अमरीका और इंगलिस्तान को इस मानी में एक ही हुकूमत कह सकते हैं. अब जहाँ तक सच्ची राजकाजी आज़ादी का सवाल है वहाँ तक दुनिया में केवल दो ही हुकूमतें पूरे तौर पर आज़ाद रह गई हैं—अमरीका और रूस. बाक़ी सारी हुकूमतें देखने में आज़ाद हैं पर सच यह है कि अपनी आज़ादी बनाये रखने के लिये उनका तलवार पर जो

نگاہ ڈالنے سے ہمیں ایک دوسرا پہلو دکھائی دیتا ہے۔ ہم یہ دیکھتے ہیں کہ جن شکتیوں کی ہم نے اوپر چرچا کی ہے انہوں نے مانو سرکار کی حکومتوں، سنسکرتیوں اور قوموں کی تعداد پہلے سے بے حد کم کر دی ہے۔ آج تھوڑی سی بڑی بڑی حکومتیں قائم ہو گئی ہیں اور ان کی شکتی اور سادھن اتنے ادھک ہیں کہ ان کے سامنے چھوٹی حکومتوں کی کوئی حقیقت ہی باقی نہیں رہی۔ آج کل کے مشین کے دور نے ہتھیاروں کو بھی بڑی بڑی مشینوں کا روپ دے دیا ہے۔ اس انقلاب نے چھوٹی حکومتوں کو بڑی حکومتوں کے سامنے بالکل بے بس اور لاچار کر دیا ہے۔ اس لئے آج تلوار دنیا کی چھوٹی قوموں اور ملکوں کی اس طرح رکشا نہیں کر سکتی اور انہیں آزاد نہیں رکھ سکتی جس طرح پہلے رکھتی تھی۔ اپنی آزادی کو قائم رکھنے کے لئے آج یہ سب کسی دوسری طاقت یا سنگٹھن کے محتاج ہو رہے ہیں۔

اگر ہم آج کی راج کاجی حالت پر نگاہ ڈالیں تو ہم یہ دیکھتے ہیں کہ بڑی بڑی مشینوں والے ہتھیاروں اور بڑی بڑی فوجوں کو بڑے سے بڑے پیمانے پر کام میں لانے کی شکتی دنیا کی تین قوموں کے ہاتھ میں آکر جمع ہو گئی ہے — امریکہ، انگلستان اور روس۔ ان میں سے ہم امریکہ اور انگلستان کو اس معنی میں ایک ہی حکومت کہہ سکتے ہیں۔ اب جہاں تک سچی راج کاجی آزادی کا سوال ہے وہاں تک دنیا میں کیول دو ہی حکومتیں پورے طور پر آزاد رہ گئی ہیں — امریکہ اور روس۔ باقی ساری حکومتیں دیکھنے میں آزاد ہیں پر سچ یہ ہے کہ اپنی آزادی بنائے رکھنے کے لئے ان کا تلوار پر جو

भरोसा था वह हमेशा के लिये मिट चुका. हम हमेशा के लिये इस लिये कहते हैं कि जो बड़ी बड़ी मशीनों की शकल के हथियार आज कल काम में लाये जा रहे हैं उनका बनाना, तरक़्क़ी देना और बढ़ाना ऐसे साधन चाहता है कि जो रूस और अमरीका के सिवाय न किसी दूसरे के पास हैं और न इन हालात में हो सकते हैं. और अगर कोई भी बड़ी हुकूमत इन दो हुकूमतों की जगह लेले तो वह भी इन छोटी हुकूमतों को सदा इस तरह के हथियार बनाने से रोकेगी. नतीजा यह कि अब छोटी हुकूमतें हथियारों की मदद से हरगिज़ अपनी आज़ादी या अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकतीं. छोटी हुकूमतों से हमारा मतलब उन हुकूमतों से है जो इस तरह के हथियार बनाने की दौड़ में रूस और अमरीका से पीछे रह गई हैं चाहे उनमें आदमियों की गिनती, देश का फैलाव या दूसरे साधन कितने भी ज़्यादा क्यों न हों.

दूसरी तरफ़ दुनिया की हालत बता रही है कि यह दो बड़ी हुकूमतें भी बहुत दिनों तक अपने अलग अलग वजूद को इसी तरह क़ायम नहीं रख सकतीं. या तो यह सुलह और समझौते करके एक दूसरे से मिल जायँगी और या एक दूसरे से लड़ कर कोई एक दूसरी पर अपना क़ब्ज़ा जमा लेगी. ऐसी सूरत में जीती हुई हुकूमत हारी हुई हुकूमत से इस तरह के हथियार बनाने का अधिकार पूरी तरह छीन कर उसे हमेशा के लिये अपना महकूम और मोहताज बना लेगी. इस तरह दुनिया की हालत बता रही है कि सारी इंसानी सभ्यता, जहाँ तक उसका राजकाजी पहलू है और उस पहलू का तलवार से सम्बन्ध है, एक बड़ी हुकूमत के

بھروسہ تھا وہ ہمیشہ کے لئے مٹ چکا۔ ہم ہمیشہ کے لئے اِسلئے کہتے ہیں کہ جو بڑی بڑی مشینوں کی شکل کے ہتھیار آج کل کام میں لائے جارہے ہیں اُن کا بنانا، ترقی دینا اور بڑھانا ایسے سادھن چاہتا ہے کہ جو روس اور امریکہ کے سوائے نہ کسی دوسرے کے پاس ہیں اور نہ اِن حالات میں ہو سکتے ہیں۔ اور اگر کوئی بھی بڑی حکومت اِن دو حکومتوں کی جگہ لے لے تو وہ بھی ان چھوٹی حکومتوں کو سدا اس طرح کے ہتھیار بنانے سے روکے گی۔ نتیجہ یہ کہ اب چھوٹی حکومتیں ہتھیاروں کی مدد سے ہرگز اپنی آزادی یا اپنے ادھیکاروں کی رکشا نہیں کرسکتیں۔ چھوٹی حکومتوں سے ہمارا مطلب اُن حکومتوں سے ہے جو اِس طرح کے ہتھیار بنانے کی دوڑ میں روس اور امریکہ سے پیچھے رہ گئی ہیں چاہے اُن میں آدمیوں کی گنتی، دیش کا پھیلاؤ یا دوسرے سادھن کتنے بھی زیادہ کیوں نہ ہوں۔

دوسری طرف دنیا کی حالت بتا رہی ہے کہ یہ دو بڑی حکومتیں بھی بہت دنوں تک اپنے الگ الگ وجود کو اسی طرح قائم نہیں رکھ سکتیں۔ یا تو یہ صلح اور سمجھوتے کر کے ایک دوسرے سے مل جائیں گی اور یا ایک دوسرے سے لڑ کر کوئی ایک دوسری پر قبضہ جمالے گی۔ ایسی صورت میں جیتی ہوئی حکومت ہاری ہوئی حکومت سے اِس طرح کے ہتھیار بنانے کا ادھیکار پوری طرح چھین کر اُسے ہمیشہ کے لئے اپنا محکوم اور محتاج بنالے گی۔ اِس طرح دُنیا کی حالت بتا رہی ہے کہ ساری انسانی سبھیتا، جہاں تک اُس کا راج کاجی پہلو ہے، اور اُس پہلو کا تلوار سے سمبندھ ہے، ایک بڑی حکومت کے

अधीन होने जा रही हैं. इस बहाव को कोई शक्ति रोक नहीं सकती. इस सचाई को न समझना आजकल की दुनिया के सबसे बड़े इन्क़लाब से बेख़बर रहना है. यह बात किसी भी देश या राष्ट्र के लिये बहुत ख़तरनाक है. ऐसी हालत में हर समझदार आदमी को यह मानना चाहिये कि अपने राजकाजी जीवन की रक्षा और आज़ादी के लिये तलवार को अपना आख़िरी भरोसा और सहारा समझते रहना किसी भी राष्ट्र या राज के लिये बिलकुल बेकार और बेमानी है.

आज दुनिया की लगभग वह हालत है जो हिन्दुस्तान की सन् ५७ के ग़दर के बाद थी. हिन्दुस्तान की सारी फ़ौजी और राजकाजी ताक़त एक नई मरकज़ी हुकूमत के हाथ में आ गई. उसने देश का संगठन इस ढंग पर किया कि देश के एक बड़े हिस्से से तो देशी राज बिलकुल ख़तम कर दिया और दूसरे हिस्से में देशी राजाओं का राज बनाये रखा. अगर वह मरकज़ी हुकूमत चाहती तो देश से सब देशी हुकूमतों को ख़तम कर सकती थी पर उसने अपने मतलब के लिये बहुत सी देशी रियासतों को क़ायम रखा. उन्हें हथियार रखने की भी इजाज़त दी पर अपनी सलामती और अपने अधिकारों का उसमें भी पूरा ख़याल रखा. उसने एक ऐसी सूरत पैदा कर दी कि ऊपर से दिखाई देने में तो हर देशी रियासत ख़ुदमुख़्तार थी और एक दूसरे के ख़िलाफ़ अपने को आज़ाद मानती थी और यह भी समझती थी की उसकी यह आज़ादी फ़ौजों और तलवार के बल पर क़ायम है. पर असलियत में यह सब रियासतें

ادھین ہونے جا رہی ہیں۔ اس بہاؤ کو کوئی شکتی روک نہیں سکتی۔ اس سچائی کو نہ سمجھنا آج کل کی دنیا کے سب سے بڑے انقلاب سے بے خبر رہنا ہے۔ یہ بات کسی بھی دیش یا راشٹر کے لئے بہت خطرناک ہے۔ ایسی حالت میں ہر سمجھدار آدمی کو یہ ماننا چاہیئے کہ اپنے راج کاجی جیون کی رکشا اور آزادی کے لئے تلوار کو اپنا آخری بھروسہ اور سہارا سمجھتے رہنا کسی بھی راشٹر یا راج کے لئے بالکل بیکار اور بے معنی ہے۔

آج دنیا کی لگ بھگ وہ حالت ہے جو ہندستان کی سنہ ۵۷ کے غدر کے بعد تھی۔ ہندستان کی ساری فوجی اور راج کاجی طاقت ایک نئی مرکزی حکومت کے ہاتھ میں آ گئی۔ اس نے دیش کا سنگٹھن اس ڈھنگ پر کیا کہ دیش کے ایک بڑے حصے سے تو دیشی راج بالکل ختم کر دیا اور دوسرے حصے میں دیشی راجاؤں کا راج بنائے رکھا۔ اگر وہ مرکزی حکومت چاہتی تو دیش سے سب دیشی حکومتوں کو ختم کر سکتی تھی پر اس نے اپنے مطلب کے لئے بہت سی دیشی ریاستوں کو قائم رکھا۔ انہیں ہتھیار رکھنے کی بھی اجازت دی۔ پر اپنی سلامتی اور اپنے ادھیکاروں کا اس میں بھی پورا خیال رکھا۔ اس نے ایک ایسی صورت پیدا کر دی کہ اوپر سے دکھائی دینے میں تو ہر دیشی ریاست خودمختار تھی اور ایک دوسرے کے خلاف اپنے کو آزاد مانتی تھی اور یہ بھی سمجھتی تھی کہ اس کی یہ آزادی فوجوں اور تلوار کے بل پر قائم ہے۔ پر اصلیت میں یہ سب ریاستیں ہر معنی میں مرکزی

लगभग सौ साल तक हिन्दुस्तान की यही हालत रही. इन छै सौ राजकाजी इकाइयों में कोई ऐसा संगठन या कोई ऐसी शक्ति पैदा न हो सकी जिससे यह आपस में मिल कर अपने आप को मरकज़ी हुकूमत से सच्चे मानी में आज़ाद कर सकतीं. ऐसे ही देश की तीस करोड़ आबादी भी बहुत कुछ इच्छा रखते हुए भी अपने में कोई ऐसी शक्ति या संगठन पैदा न कर सकी जिसके बल यह अपने आपको मरकज़ी हुकूमत की फ़ौजी ताक़तों से आज़ाद कर सकती.

आज दुनिया की बहुत सी क़ौमें जिनमें वह भी शामिल हैं जिनकी तलवारों का सिक्का दुनिया पर जमा हुआ था जैसे जर्मनी और जापान, उस ज़माने के हिन्दुस्तान ही की तरह निहत्थी हो गईं. उनकी हालत को देख कर अब उनका हथियारों की मदद से सच्ची आज़ादी हासिल कर लेना बिल्कुल नामुमकिन मालूम होता है. यह ठीक है कि दुनिया अभी इतने बड़े इन्क़लाब के नतीजों को पूरी तरह नहीं समझ सकती. इसके लिये कुछ बरसों की ज़रूरत है. फिर भी जो हालत हमारे सामने है उस पर अगर हम ठंडे दिल से और बेलाग होकर नज़र डालें तो हम देखेंगे कि सचमुच अब दुनिया की पंचानवे फ़ीसदी हुकूमतें तो अपनी आज़ादी तलवार और फ़ौजों की मदद से बचाकर नहीं रख सकतीं.

हमें इस पहलू को भी निगाह में रखना चाहिये कि दुनिया की यह मरकज़ी हुकूमत जितना जितना हिंसा के आधार पर क़ायम होती जाती है और जितना जितना उसकी मरकज़ीयत बढ़ती जाती है उतना उतना ही इन्सानी भाई चारे और मानव प्रेम की ताक़त मरकज़ीयत से दूर होती जाती है, उतना उतना ही अन्याय, जुल्म

لگ بھگ سو سال تک ہندستان کی یہی حالت رہی۔ ان چھ سو راج کاجی اکائیوں میں کوئی ایسا سنگٹھن یا کوئی ایسی شکتی پیدا نہ ہو سکی جس سے یہ آپس میں مل کر اپنے آپ کو مرکزی حکومت سے سچے معنی میں آزاد کر سکتیں۔ ایسے ہی دیش کی تیس کروڑ آبادی بھی بہت کچھ اچھا رکھتے ہوئے بھی اپنے میں کوئی ایسی شکتی یا سنگٹھن پیدا نہ کر سکی جس کے بل یہ اپنے آپ کو مرکزی حکومت کی فوجی طاقتوں سے آزاد کر سکتی۔

آج دنیا کی بہت سی قومیں جن میں وہ بھی شامل ہیں جن کی تلواروں کا سکہ دنیا پر جما ہوا تھا جیسے جرمنی اور جاپان، اس زمانے کے ہندستان ہی کی طرح نہتھی ہو گئیں۔ ان کی حالت کو دیکھ کر اب ان کا ہتھیاروں کی مدد سے سچی آزادی حاصل کر لینا بالکل ناممکن معلوم ہوتا ہے۔ یہ ٹھیک ہے کہ دنیا ابھی اتنے بڑے انقلاب کے نتیجوں کو پوری طرح نہیں سمجھ سکتی۔ اس کے لئے کچھ برسوں کی ضرورت ہے۔ پھر بھی جو حالت ہمارے سامنے ہے اس پر اگر ہم ٹھنڈے دل سے اور بے لاگ ہو کر نظر ڈالیں تو ہم دیکھیں گے کہ سچ مچ اب دنیا کی پچانوے فیصدی حکومتیں تو اپنی آزادی تلوار اور فوجوں کی مدد سے بچا کر نہیں رکھ سکتیں۔

ہمیں اس پہلو کو بھی نگاہ میں رکھنا چاہئے کہ دنیا کی یہ مرکزی حکومت جتنا جتنا ہنسا کے آدھار پر قائم ہوتی جاتی ہے اور جتنا جتنا اس کی مرکزیت بڑھتی جاتی ہے اتنا اتنا ہی انسانی بھائی چارے اور مانو پریم کی طاقت مرکزیت سے دور ہوتی جاتی ہے، اتنا اتنا ہی انیائے، ظلم

और दूसरों का चूसना या उनसे बेजा फ़ायदा उठाना फिर बढ़ने लगेगा, अलग अलग राजकाजी इकाइयों के अधिकार बच नहीं सकेंगे, न इनमें अमन अमान और आराम चैन किसी अच्छे पैमाने पर पैदा हो सकेंगे. इसलिये दुनिया भर की इन सब इकाइयों को जरूरी तौर पर अपने अधिकारों की रक्षा और अपने यहाँ के अमन चैन और सुख शांति के लिये दूसरे शब्दों में अपनी सच्ची आजादी के लिये किसी न किसी दूसरी शक्ति और दूसरे साधनों की तरफ़ देखना होगा. हथियारों से यह उस मरकजी यत का मुक़ाबला न कर सकेंगी. कोई न कोई नई शक्ति ढूँढ़ने की तरफ़ इनका ध्यान जोरों में जायगा. ऐसी हालत में बापू के दिखाये हुए तरीक़े के सिवाय कोई दूसरा रास्ता ऐसा नहीं है जिससे यह अपने बचाव की आशा कर सकें.

हमारा दावा है कि आज कल की हालतों में बहुत जल्दी वह समय आये बग़ैर नहीं रह सकता कि जब दुनिया अहिंसा और मानव प्रेम के उन पहलुओं पर ध्यान देने के लिये मजबूर होगी जो बापू ने दुनिया के सामने रखे हैं. तब दुनिया ठंडे दिल से इस नई शक्ति की असलियत और इसके रूप को समझने की कोशिश करेगी और खुद तरह तरह के तजरबे करके इस बात को भी समझेगी और सीखेगी कि इस शक्ति से दुनिया में क्या कुछ हो सकता है.

हम कह चुके हैं कि अभी तक आत्मबल की शक्ति की तरफ़ केवल मजहबी, रूहानी और नैतिक संस्थाएँ ही ध्यान देती रही हैं. नैतिक और कचहरी जीवन में इन संस्थाओं ने आत्मबल को काम

اور دوسروں کا چوسنا یا ان سے بے جا فائدہ اٹھانا پھر بڑھنے لگے گا، الگ الگ راج کاجی اکائیوں کے ادھیکار بچ نہیں سکیں گے، نہ ان میں امن امان اور آرام چین کسی اچھے پیمانے پر پیدا ہو سکیں گے۔ اس لئے دنیا بھر کی ان سب اکائیوں کو ضروری طور پر اپنے ادھیکاروں کی رکشا اور اپنے یہاں کے امن چین اور سکھ شانتی کے لئے دوسرے شبدوں میں اپنی سچی آزادی کے لئے کسی نہ کسی دوسری شکتی اور دوسرے سادھنوں کی طرف دیکھنا ہوگا۔ ہتھیاروں سے یہ اس مرکزیت کا مقابلہ نہ کر سکیں گی۔ کوئی نہ کوئی نئی شکتی ڈھونڈھنے کی طرف ان کا دھیان زوروں میں جائے گا۔ ایسی حالت میں باپو کے دکھائے ہوئے طریقوں کے سوائے کوئی دوسرا راستہ ایسا نہیں ہے جس سے یہ اپنے بچاؤ کی آشا کر سکیں۔

ہمارا دعویٰ ہے کہ آج کل کی حالتوں میں بہت جلدی وہ سمے آئے بغیر نہیں رہ سکتا کہ جب دنیا اہنسا اور مانو پریم کے ان پہلوؤں پر دھیان دینے کے لئے مجبور ہوگی جو باپو نے دنیا کے سامنے رکھے ہیں۔ تب دنیا ٹھنڈے دل سے اس نئی شکتی کی اصلیت اور اس کے روپ کو سمجھنے کی کوشش کرے گی اور خود طرح طرح کے تجربے کرکے اس بات کو بھی سمجھے گی اور سیکھے گی کہ اس شکتی سے دنیا میں کیا کچھ ہو سکتا ہے۔

ہم کہہ چکے ہیں کہ ابھی تک آتم بل کی شکتی کی طرف کیول مذہبی، روحانی اور نیتک سنستھائیں ہی دھیان دیتی رہی ہیں۔ نیتک اور کچہری جیون میں ان سنستھاؤں نے آتم بل کو کام

में लाने की बड़ी से बड़ी कोशिशें की हैं और उन्हें सफलता भी मिली है. पर इसमें भी शक नहीं कि यही संस्थाएँ राजकाजी और दूसरी हिंसा की शक्तियों से अपने को हमेशा तलवार ही के ज़ोर से बचाने की कोशिश करती रही हैं. इसलिये इन संस्थाओं में भी राजकाज ही की तरह तलवार की ज़रूरत और उसकी सारी बुराइयाँ बराबर क़ायम रही हैं. यही कारन है कि यह मज़हबी संस्थाएँ भी मानव प्रेम की शक्ति को ऐसा हथियार और ऐसा साधन न बना सकीं जिससे वह राजकाज के मैदान में, आत्मबल के ज़रिये हिंसात्मक हमलों पर क़ाबू पा सकती. इन संस्थाओं के लिये भी अब दुनिया बदल गई है. अपनी ही सलामती और उन्नति के लिये इन्हें बापू के असूलों और प्रोग्रामों पर ठंडे दिल से विचार करना होगा.

आजकल की हालतों में अगर मुक़ाबला करके यह देखा जायगा कि इन्सानी दुनिया को तलवार से ज़्यादा फ़ायदा पहुंच सकता है या मानव प्रेम से और दुनिया तलवार से ज़्यादा सुधर सकती है या मानव प्रेम की शक्ति से तो यह हो ही नहीं सकता कि दुनिया के दुखी इन्सान मानव प्रेम के हक़ में फ़ैसला न दें और इस नतीजे पर न पहुँचें कि तलवार से ज़्यादा बुरा कोई सुधार का तरीक़ा हो ही नहीं सकता. हम अपने मतलब को और भी साफ़ कर देना चाहते हैं और यह दिखाना चाहते हैं कि मानव प्रेम की शक्ति मानव सुधार और मानव उन्नति दोनों के लिये तलवार की शक्ति से कहीं ज़्यादा अच्छी है.

अगर हम इन दोनों शक्तियों को ध्यान से देखें तो हमें पता चलेगा कि मानव प्रेम और तलवार दोनों की असली ताक़त हमारे विचारों, हमारी इच्छाओं और हमारी उमंगों पर निर्भर है. हम

میں لانے کی بڑی سے بڑی کوششیں کی ہیں اور انھیں سپھلتا بھی ملی ہے۔ پر اس میں بھی شک نہیں کہ یہی سنستھائیں راج کاجی اور دوسری ہنسا کی شکتیوں سے اپنے کو ہمیشہ تلوار ہی کے زور سے بچانے کی کوشش کرتی رہی ہیں۔ اس لئے ان سنستھاؤں میں بھی راج کاج ہی کی طرح تلوار کی ضرورت اور اسکی ساری برائیاں برابر قائم رہی ہیں۔ یہی کارن ہے کہ یہ مذہبی سنستھائیں بھی مانو پریم کی شکتی کو ایسا ہتھیار اور ایسا سادھن نہ بنا سکیں جس سے وہ راج کاج کے میدان میں، آتم بل کے ذریعے ہنسا تمک حملوں پر قابو پا سکتی۔ ان سنستھاؤں کے لئے بھی اب دنیا بدل گئی ہے۔ اپنی ہی سلامتی اور اُنتی کے لئے انھیں باپو کے اصولوں اور پروگراموں پر ٹھنڈے دل سے وچار کرنا ہوگا۔

آج کل کی حالتوں میں اگر مقابلہ کرکے یہ دیکھا جائیگا کہ انسانی دنیا کو تلوار سے زیادہ فائدہ پہنچ سکتا ہے یا مانو پریم سے اور دنیا تلوار سے زیادہ سدھر سکتی ہے یا مانو پریم کی شکتی سے تو یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ دنیا کے دکھی انسان مانو پریم کے حق میں فیصلہ نہ دیں اور اس نتیجہ پر پہونچیں کہ تلوار سے زیادہ برا کوئی سدھار کا طریقہ ہو ہی نہیں سکتا۔ ہم اپنے مطلب کو اور بھی صاف کر دینا چاہتے ہیں اور یہ دکھانا چاہتے ہیں کہ مانو پریم کی شکتی مانو سدھار اور مانو اُنتی دونوں کے لئے تلوار کی شکتی سے کہیں زیادہ اچھی ہے۔

اگر ہم ان دونوں شکتیوں کو دھیان سے دیکھیں تو ہمیں پتہ چلے گا کہ مانو پریم اور تلوار دونوں کی اصلی طاقت ہمارے وچاروں، ہماری اچھاؤں اور ہماری امنگوں پر نربھر ہے، ہم

अपनी संसारी ज़रूरतों को पूरा करने के लिये और अपने भाइयों से अपनी रक्षा के लिये स्वार्थ, नफ़रत गुस्सा, दुश्मनी और एक दूसरे से डाह को दुनिया के बुरे से बुरे साधनों की मदद से एक संगठन और एक संस्था का रूप दे देते हैं. इसमें आदमी हमारी फ़ौज और उसके सिपाहियों का काम देते हैं और तलवार, बन्दूक़, तोप, बारूद, ऐटमबम इन सिपाहियों के हाथों में हथियार का काम देते हैं, जो असली शक्ति इस संगठन के पीछे काम करती है और जो इसे चलाती है वह हमारे दिलों के अन्दर के वही भाव हैं जिन्हें हमने ऊपर बयान किया है. इस तरह के भाव जिस तरह हमें अपनी रक्षा के लिये काम देते हैं उसी तरह हमारे विरोधी की रक्षा के लिये भी काम में आते हैं. नतीजा यह होता है कि यह भाव दोनों तरफ़ बढ़ते चले जाते हैं. इन्हीं के साथ साथ उन साधनों का संगठन भी दोनों तरफ़ बढ़ता चला जाता है. फिर हम केवल इतना ही नहीं करते कि इन साधनों की मदद से अपनी रक्षा कर लें. बल्कि हम और आगे बढ़कर अपने विरोधी से अधिक से अधिक फ़ायदा उठाने की इन साधनों की मदद से कोशिश करते हैं चाहे वह फ़ायदा जायज़ हो या नाजायज़. अन्त में यह शैतानी चक्कर दोनों तरफ़ से ज़ुल्म ज़बरदस्ती और बरबादी का एक बहुत बड़ा सरचश्मा बन जाता है. इसी तरह मानव प्रेम की शक्ति के पीछे प्रेम, दया, क्षमा, त्याग, एक दूसरे की सेवा, और हम दर्दी के भाव होते हैं. इस में कोई ख़ुदग़रज़ी का पहलू या दूसरों से ज़बरदस्ती अपनी इच्छाएं पूरी करवाने का पहलू नहीं होता. इन दोनों बातों में यह शक्ति तलवार की शक्ति से बिलकुल एक अलग चीज़

اپنی سنساری ضرورتوں کو پورا کرنے کے لئے اور اپنے بھائیوں سے اپنی رکشا کے لئے سوارتھ، نفرت، غصہ، دشمنی اور ایک دوسرے سے ڈاہ کو دنیا کے بُرے سے بُرے سادھنوں کی مدد سے ایک سنگٹھن اور ایک سنستھا کا روپ دے دیتے ہیں۔ اس میں آدمی ہماری فوج اور اس کے سپاہیوں کا کام دیتے ہیں اور تلوار، بندوق، توپ، بارود، ایٹم بم ان سپاہیوں کے ہاتھوں میں ہتھیار کا کام دیتے ہیں۔ جو اصلی شکتی اس سنگٹھن کے پیچھے کام کرتی ہے اور جو اسے چلاتی ہے وہ ہمارے دلوں کے اندر کے وہی بھاؤ ہیں جنھیں ہم نے اوپر بیان کیا ہے۔ اس طرح کے بھاؤ جس طرح ہمیں اپنی رکشا کے لئے کام دیتے ہیں اسی طرح ہمارے ورودھی کی رکشا کے لئے بھی کام میں آتے ہیں۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ یہ بھاؤ دونوں طرف بڑھتے چلے جاتے ہیں۔ انھیں کے ساتھ ساتھ ان سادھنوں کا سنگٹھن بھی دونوں طرف بڑھتا چلا جاتا ہے۔ پھر ہم کیول اتنا ہی نہیں کرتے کہ ان سادھنوں کی مدد سے اپنی رکشا کر لیں۔ بلکہ ہم اور آگے بڑھ کر اپنے ورودھی سے ادھک سے ادھک فائدہ اٹھانے کی ان سادھنوں کی مدد سے کوشش کرتے ہیں چاہے وہ فائدہ جائز ہو یا ناجائز۔ انت میں یہ شیطانی چکر دونوں طرف سے ظلم زبردستی اور بربادی کا ایک بہت بڑا سرچشمہ بن جاتا ہے۔ اسی طرح مانو پریم کی شکتی کے پیچھے پریم، دیا، شما، تیاگ، ایک دوسرے کی سیوا، اور ہمدردی کے بھاؤ ہوتے ہیں۔ اس میں کوئی خودغرضی کا پہلو یا دوسروں سے زبردستی اپنی اچھائیں پوری کروانے کا پہلو نہیں ہوتا۔ ان دونوں باتوں میں یہ شکتی تلوار کی شکتی سے بالکل ایک الگ چیز

है. फिर भी एक बात इन दोनों में एक सी है. यह दोनों आदमी के दिल और दिमाग़ पर कब्ज़ा पाना चाहती हैं. पर इनके कब्ज़ा पाने के तरीक़े एक दूसरे से बिलकुल अलग हैं. इनमें तलवार आदमी के दिल में उसके तन मन या धन को कुछ न कुछ नुक़सान पहुँचा कर और उसमें डर पैदा करके अपना मतलब पूरा करती है. इसके ख़िलाफ़ मानव प्रेम की शक्ति अपने प्रेम, त्याग और सेवा से लोगों के दिलों को जीतना चाहती है और इसी रास्ते चलकर अपना मक़सद पूरा करती है.

अगर हम इन दोनों शक्तियों के काम और नतीजों को इख़लाक़ी निगाह से ही देखें तो तलवार दूसरे के दिल में डर बैठा कर उसे किसी एक रास्ते पर चलने के लिये मजबूर करती है चाहे वह रास्ता नेकी का हो या बदी का. इसके ख़िलाफ़ मानव प्रेम आदमी की पूरी आज़ादी क़ायम रखते हुए उसे अपनी मुहब्बत के जादू और त्याग की मोहिनी से बस में करता है. इन दोनों में अपने विरोधी को जीतने और सुधारने की बे अंत शक्ति है. लेकिन तलवार दूसरे को कम या ज़्यादा नुक़सान पहुँचाने से कभी भी पाक नहीं हो सकती. या तो यह खुले तौर पर छोटे या बड़े पैमाने पर लोगों को जान और माल का नुक़सान पहुँचाती है या कभी कभी खुला नुक़सान पहुँचाए बिना ही अपने विरोधी के दिल में डर और हैबत बैठाकर उसे ठीक करने की कोशिश करती है. गिरोहों और क़ौमों की क़ौमों के दिल में यह डर बैठ जाना उनके लिये जान और माल के नुक़सान से भी ज़्यादा बुरा होता है. यह उनके अंदर के ग़ुस्से, नफ़रत

ہے۔ پھر بھی ایک بات ان دونوں میں ایک سی ہے۔ یہ دونوں آدمی کے دل اور دماغ پر قبضہ پانا چاہتی ہیں۔ پر ان کے قبضہ پانے کے طریقے ایک دوسرے سے بالکل الگ ہیں۔ ان میں تلوار آدمی کے دل میں اس کے تن من یا دھن کو کچھ نہ کچھ نقصان پہنچا کر اور اس میں ڈر پیدا کر کے اپنا مطلب پورا کرتی ہے۔ اس کے خلاف مانو پریم کی شکتی اپنے پریم، تیاگ اور سیوا سے لوگوں کے دلوں کو جیتنا چاہتی ہے اور اسی راستے چل کر اپنا مقصد پورا کرتی ہے۔

اگر ہم ان دونوں شکتیوں کے کام اور نتیجوں کو اخلاقی نگاہ سے ہی دیکھیں تو تلوار دوسرے کے دل میں ڈر بٹھا کر اسے کسی ایک راستے پر چلنے کے لئے مجبور کرتی ہے چاہے وہ راستہ نیکی کا ہو یا بدی کا۔ اس کے خلاف مانو پریم آدمی کی پوری آزادی قائم رکھتے ہوئے اسے اپنی محبت کے جادو اور تیاگ کی موہنی سے بس میں کرتا ہے۔ ان دونوں میں اپنے ورودھی کو جیتنے اور سدھارنے کی بے انت شکتی ہے۔ لیکن تلوار دوسرے کو کم یا زیادہ نقصان پہنچانے سے کبھی بھی پاک نہیں ہو سکتی۔ یا تو یہ کھلے طور پر چھوٹے یا بڑے پیمانے پر لوگوں کے جان اور مال کا نقصان پہنچاتی ہے یا کبھی کبھی کھلا نقصان پہنچائے بنا ہی اپنے ورودھی کے دل میں ڈر اور ہیبت بٹھا کر اسے ٹھیک کرنے کی کوشش کرتی ہے۔ گروہوں اور قوموں کی قوموں کے دل میں یہ ڈر بیٹھ جانا ان کے لئے جان اور مال کے نقصان سے بھی زیادہ برا ہوتا ہے۔ یہ ان کے اندر کے غصے، نفرت

और दुश्मनी को न ख़तम करता है और न कम करता है. केवल उन्हें इस योग्य नहीं छोड़ता कि वह हिम्मत के साथ अपने दिल के इन भावों को प्रगट कर सकें. इस तरह अन्दर ही अन्दर इन भावों का ज़हर उनमें और भी बढ़ता जाता है. हिन्सा की शक्ति का यह बुरा नतीजा इतना बुनियादी है कि उसके ज़रिये कोई सच्चा सुधार हो ही नहीं सकता. सुधार की जगह यह लाखों इंसानों के शरीरों का ही नहीं उनकी आत्माओं और ज़मीरों का भी ख़ून कर देती है.

आज कल के नैतिक साइंस के जानने वाले और मन-विद्या के पंडित इस बात पर सब एक राय हैं कि किसी तरह की भी हिंसा दबाव या सज़ा का ख़याल किसी तालीमी मक़सद या किसी तरह के सुधार को पूरा करने में केवल बेकार ही नहीं बल्कि उल्टा नुक़सान देने वाला साबित होता है. आदमी के अंदर की कमज़ोरियों और बुराइयों को कम करने या सुधारने की जगह वह इन्हें और ज़्यादा गहरा और टिकाऊ बना देता है. इस असूल को आज दुनिया में आम तौर पर तालीम और सुधार के पंडितों ने ठीक मान लिया है, अब इन्सानी दुनिया अपनी सारी तालीमी संस्थाओं, सुधार की कोशिशों यहाँ तक कि जेलों तक में मुजरिमों के सुधार के लिये बिलकुल नये नये तरीक़े काम में लाती जा रही है, जिनमें हिंसा या सज़ा की भावना मिटती जा रही है. इस इन्क़लाब का बुनियादी असूल यह है कि हिंसा और ज़बरदस्ती के तरीक़े बन्द किये जावें और उनकी जगह अहिंसा के तरीक़ों

اور دشمنی کو نہ ختم کرتا ہے اور نہ کم کرتا ہے۔ کیول انھیں اس یوگیہ نہیں چھوڑتا کہ وہ ہمت کے ساتھ اپنے دل کے ان بھاؤں کو پرگٹ کر سکیں۔ اس طرح اندر ہی اندر ان بھاؤں کا زہر ان میں اور بھی بڑھتا جاتا ہے۔ ہنسا کی شکتی کا یہ برا نتیجہ اتنا بنیادی ہے کہ اس کے ذریعے کوئی سچا سدھار ہو ہی نہیں سکتا۔ سدھار کی جگہ یہ لاکھوں انسانوں کے شریروں کا ہی نہیں اُن کی آتماؤں اور ضمیروں کا بھی خون کر دیتی ہے۔

آج کل کے نیتک سائنس کے جاننے والے اور من ودیا کے پنڈت اس بات پر سب ایک رائے ہیں کہ کسی طرح کی بھی ہنسا دباؤ یا سزا کا خیال کسی تعلیمی مقصد یا کسی طرح کے سدھار کو پورا کرنے میں کیول بے کار ہی نہیں بلکہ اُلٹا نقصان دینے والا ثابت ہوتا ہے۔ آدمی کے اندر کی کمزوریوں اور برائیوں کو کم کرنے یا سدھارنے کی جگہ وہ انھیں اور زیادہ گہرا اور ٹکاؤ بنا دیتا ہے۔ اس اصول کو آج دنیا میں عام طور پر تعلیم اور سدھار کے پنڈتوں نے ٹھیک مان لیا ہے، اب انسانی دنیا اپنی ساری تعلیمی سنستھاؤں، سدھار کی کوششیں یہاں تک کہ جیلوں تک میں مجرموں کے سدھار کے لئے بالکل نئے نئے طریقے کام میں لاتی جا رہی ہے، جن میں ہنسا یا سزا کی بھاؤنا مٹتی جا رہی ہے۔ اس انقلاب کا بنیادی اصول یہ ہے کہ ہنسا اور زبردستی کے طریقے بند کئے جاویں اور اُن کی جگہ اہنسا کے طریقوں

से काम लिया जावे. यह इस बात का सबूत है कि हिंसा या तलवार सब तरह के सुधार के लिये बिलकुल बेकार है.

जहाँ तक मानव प्रेम का सम्बन्ध है वह किसी को किसी तरह का जान या माल का नुक़सान पहुंचा ही नहीं सकता. वह दोनों तरफ़ के दिलों से डर को बिलकुल मिटा देता है. डर ही हर तरह की हिंसा की जड़ है. जब आदमी बिलकुल निडर हो जाता है तो उसे अपनी रक्षा के लिये भी किसी संगठन की जरूरत दिखाई नहीं देती. इसलिये तलवार का यह काम भी कि उससे लोगों की रक्षा की जाती है बिलकुल ख़त्म हो जाता है.

सुधार या रक्षा के अलावा तलवार का एक काम और रह जाता है.वह है दूसरों को जीतना. अव्वल तो इन्सानी दुनिया आज इस गिरी हुई हालत में भी इस तरह के जीतने को नाजायज समझती है इसलिये हमारे जीवन के इस पहलू को जारी रखने का सवाल ही नहीं होना चाहिये. फिर भी अगर हम तलवार के इस पहलू का मानव प्रेम के इसी पहलू से मुक़ाबला करें तो इस बारे में भी मानव प्रेम का हथियार ज्यादा ऊँचा और काम का साबित होता है. मानव प्रेम की शक्ति हार जीत का जवाब त्याग से देती है. इस तरह हार जीत की बुराइयाँ भी बहुत कम हो जाती हैं और धीरे धीरे उसके मिट जाने की भी आशा पैदा हो जाती है. अगर हम त्याग में आदमी को सच्चा आदमी बनाने की शक्ति न भी मानें तब भी हम त्याग के फ़ायदे से इन्कार नहीं कर सकते न हम इस बात से इन्कार कर सकते हैं कि त्याग का रास्ता सुलह और समझौते की राहें खुली रखता है और

سے کام لیا جاوے۔ یہ اس بات کا ثبوت ہے کہ ہنسا یا تلوار سب طرح کے سُدھار کے لئے بالکل بے کار ہے۔

جہاں تک مانو پریم کا سمبندھ ہے وہ کسی کو کسی طرح کا جان یا مال کا نقصان پہنچا ہی نہیں سکتا۔ وہ دونوں طرف کے دلوں سے ڈر کو بالکل مٹا دیتا ہے۔ ڈر ہی ہر طرح کی ہنسا کی جڑ ہے۔ جب آدمی بالکل نڈر ہوجاتا ہے تو اُسے اپنی رکشا کے لئے بھی کسی سنگٹھن کی ضرورت دکھائی نہیں دیتی۔ اس لئے تلوار کا یہ کام بھی کہ اس سے لوگوں کی رکشا کی جاتی ہے بالکل ختم ہوجاتا ہے۔

سُدھار یا رکشا کے علاوہ، تلوار کا ایک کام اور رہ جاتا ہے۔ وہ ہے دوسروں کو جیتنا۔ اوّل تو انسانی دُنیا آج اس گری ہوئی حالت میں بھی اِس طرح کے جیتنے کو ناجائز سمجھتی ہے اس لئے ہمارے جیون کے اس پہلو کو جاری رکھنے کا سوال ہی نہیں ہونا چاہیئے۔ پھر بھی اگر ہم تلوار کے اس پہلو کا مانو پریم کے اسی پہلو سے مقابلہ کریں تو اس بارے میں بھی مانو پریم کا ہتھیار زیادہ اونچا اور کام کا ثابت ہوتا ہے۔ مانو پریم کی شکتی ہار جیت کا جواب تیاگ سے دیتی ہے۔ اس طرح ہار جیت کی بُرائیاں بھی بہت کم ہوجاتی ہیں اور دھیرے دھیرے اُس کے مٹ جانے کی بھی آشا پیدا ہوجاتی ہے۔ اگر ہم تیاگ میں آدمی کو سچا آدمی بنانے کی شکتی نہ بھی مانیں تب بھی ہم تیاگ کے فائدے سے انکار نہیں کرسکتے نہ ہم اس بات سے انکار کرسکتے ہیں کہ تیاگ کا راستہ صلح اور سمجھوتے کی راہیں کھلی رکھتا ہے اور

खेंचातानी, मारकाट और दुश्मनी की राहों को कम करके उनके मिलने की सूरतें पैदा कर देता है.

जहाँ तक इन दोनों शक्तियों के इस्तेमाल में बाहरी साधनों और सामान की ज़रूरत होती है वहां तक भी इन दोनों में ज़मीन आसमान का फ़रक़ है. तलवार के लिये माद्दी साधनों की बहुत बड़े पैमाने पर ज़रूरत पड़ती है जिसमें अनगिनत दौलत खर्च करनी पड़ती है. यह सारे साधन दुनिया को बनाने वाले नहीं बिगाड़ने वाले हैं. इनके जवाब के लिये विरोधी को इसी तरह के घातक साधन काम में लाने पड़ते हैं. इनके मुक़ाबले में मानव-प्रेम की शक्ति हमें रचना और स्वावलम्बन की तरफ़ ले जाती है. वह किसी माद्दी साधनों की मोहताज है ही नहीं. इससे भी ऊँची बात उसमें यह है कि उसका असर और जवाब और जवाब का जवाब, दोनों तरफ़ से और दोनों के लिये रचनात्मक होता है. उससे दोनों का सुधार ही सुधार होता है. तीसरा फ़रक़ यह है कि तलवार इन्सानी गुत्थियों को सुलझाती नहीं, उन्हें और भी उलझा कर कड़ा कर देती है. इससे हिंसा और दुश्मनी का एक दौर शुरू हो जाता है जिसे तलवार किसी तरह खत्म कर ही नहीं सकती. इस दौर को अगर दुनिया की कोई शक्ति खतम कर सकती है तो वह मानव प्रेम की ही शक्ति है.

इनमें चौथा फ़रक़ यह है कि तलवार अपनी कामयाबी के लिये बाहर के साधनों की मोहताज होने की वजह से अपने से ज़्यादा बड़े और ज़्यादा साधनों वाले संगठन के सामने झुक जाने और हार मान लेने पर मजबूर हो जाती है. इसलिये इसमें कोई आत्म गौरव या खुद्दारी का पहलू है ही नहीं. न इसमें कोई संतोष का

کھینچا تانی، مارکاٹ اور دشمنی کی راہوں کو کم کرکے اُن کے ملنے کی صورتیں پیدا کر دیتا ہے۔

جہاں تک ان دونوں شکتیوں کے استعمال میں باہری سادھنوں اور سامان کی ضرورت ہوتی ہے وہاں تک بھی ان دونوں میں زمین آسمان کا فرق ہے۔ تلوار کے لئے مادی سادھنوں کی بہت بڑے پیمانے پر ضرورت پڑتی ہے جس میں ان گنت دولت خرچ کرنی پڑتی ہے۔ یہ سارے سادھن دنیا کے بنانے والے نہیں بگاڑنے والے ہیں۔ ان کے جواب کے لئے ورودھی کو اسی طرح کے گھاتک سادھن کام میں لانے پڑتے ہیں۔ انکے مقابلے میں مانو پریم کی شکتی ہمیں رچنا اور سوا ولمبن کی طرف لے جاتی ہے۔ وہ کسی مادی سادھنوں کی محتاج ہے ہی نہیں۔ اس سے بھی اونچی بات اس میں یہ ہے کہ اس کا اثر اور جواب اور جواب کا جواب، دونوں طرف سے اور دونوں کے لئے رچناتمک ہوتا ہے۔ اس سے دونوں کا سدھار ہی سدھار ہوتا ہے۔ تیسرا فرق یہ ہے کہ تلوار انسانی گتھیوں کو سلجھاتی نہیں، انہیں اور بھی الجھا کر کڑا کر دیتی ہے۔ اس سے ہنسا اور دشمنی کا ایک دور شروع ہو جاتا ہے جسے تلوار کسی طرح ختم کر ہی نہیں سکتی۔ اس دور کو اگر دنیا کی کوئی شکتی ختم کر سکتی ہے تو وہ مانو پریم کی ہی شکتی ہے۔

ان میں چوتھا فرق یہ ہے کہ تلوار اپنی کامیابی کے لئے باہر کے سادھنوں کی محتاج ہونے کی وجہ سے اپنے سے زیادہ بڑے اور زیادہ سادھنوں والے سنگٹھن کے سامنے جھک جانے اور ہار مان لینے پر مجبور ہو جاتی ہے۔ اس لئے اس میں کوئی آتم گورو یا خودداری کا پہلو ہے ہی نہیں۔ نہ اس میں کوئی سنتوش کا

पहलू है. इसके लिये अपना फ़ौजी संगठन हर समय पूरा रखना और उसे बराबर बढ़ाते रहना ज़रूरी है. जब तक कोई ताक़त दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त न बन जावे तब तक उसे यह कोशिश और तैयारी जारी रखनी ही होगी, क्योंकि इसके बिना वह दूसरों से अपने को बचा कैसे सकेगी. दुनिया की सबसे बड़ी ताक़त बन जाने के बाद भी नये दुश्मन पैदा होने और पुराने दुश्मनों के इसके ख़िलाफ़ मिल जाने का डर हमेशा बना रहेगा. तलवार की यह आख़िरी बदनसीबी है कि इसे चैन और शांति कभी मिल ही नहीं सकती. इसके ख़िलाफ़ मानव प्रेम की शक्ति इतना सब्र और शांति पैदा करती है कि जिस पर कोई बाहर की ताक़त अपना असर नहीं डाल सकती. बाहरी दबाव से असर लेने का डर इसमें बहुत ही कम होता है. इस डर से यह लगभग आज़ाद रहती है. इस निगाह से इसमें सच्ची ख़ुददारी होती है जिसे सारी दुनिया की माद्दी ताक़तें भी मिलकर नहीं मिटा सकतीं.

हमारी सारी पुरानी मज़हबी किताबें और संस्थाएँ मानव प्रेम की शक्ति को दुनिया की सबसे बड़ी रचनात्मक शक्ति बताती हैं. वह यह दावा करती हैं कि यह शक्ति हिंसा की हर शक्ति पर हमेशा विजय हासिल कर सकती है. इनका कहना है कि ग़ुस्सा, नफ़रत और दुश्मनी आग का जौहर रखती हैं. तलवार इसी जौहर का साक्षात् रूप है. इसीलिये यह आग दूसरों की आग बुझा नहीं सकती उसे बढ़ा और भड़का ही सकती है. मानव प्रेम की शक्ति इस आग के लिये पानी है जो क़ुदरती तौर पर इस आग को बुझा देगा या कम कर देगा.

پہلو ہے۔ اس کے لئے اپنا فوجی سنگٹھن ہر سمے پورا رکھنا اور اُسے برابر بڑھاتے رہنا ضروری ہے۔ جب تک کوئی طاقت دنیا کی سب سے بڑی طاقت نہ بن جاوے تب تک اُسے یہ کوشش اور تیاری جاری رکھنی ہی ہوگی، کیونکہ اس کے بنا وہ دوسروں سے اپنے کو بچا کیسے سکے گی۔ دُنیا کی سب سے بڑی طاقت بن جانے کے بعد بھی نئے دشمن پیدا ہونے اور پُرانے دُشمنوں کے اس کے خلاف مل جانے کا ڈر ہمیشہ بنا رہے گا۔ تلوار کی یہ آخری بدنصیبی ہے کہ اسے چین اور شانتی کبھی مل ہی نہیں سکتی۔ اس کے خلاف مانو پریم کی شکتی اتنا صبر اور شانتی پیدا کرتی ہے کہ جس پر کوئی باہر کی طاقت اپنا اثر نہیں ڈال سکتی۔ باہری دباؤ سے اثر لینے کا ڈر اس میں بہت ہی کم ہوتا ہے۔ اس ڈر سے یہ لگ بھگ آزاد رہتی ہے۔ اس نگاہ سے اس میں سچی خودداری ہوتی ہے جسے ساری دنیا کی مادی طاقتیں بھی مل کر نہیں مٹا سکتیں۔

ہماری ساری پُرانی مذہبی کتابیں اور سنستھائیں مانو پریم کی شکتی کو دنیا کی سب سے بڑی رچناتمک شکتی بتاتی ہیں۔ وہ یہ دعویٰ کرتی ہیں کہ یہ شکتی ہنسا کی ہر شکتی پر ہمیشہ وجے حاصل کر سکتی ہے۔ ان کا کہنا ہے کہ غصہ، نفرت اور دشمنی آگ کا جوہر رکھتی ہیں۔ تلوار اسی جوہر کا ساکشات روپ ہے۔ اس لئے یہ آگ دوسروں کی آگ بجھا نہیں سکتی اُسے بڑھا اور بھڑکا ہی سکتی ہے۔ مانو پریم کی شکتی اس آگ کے لئے پانی ہے جو قدرتی طور پر اس آگ کو بجھا دے گا یا کم کر دے گا۔

इन धर्म पुस्तकों ने विस्तार के साथ वह साधन बताये हैं जिनसे आदमी इस शक्ति को बड़े से बड़े पैमाने पर अपने अंदर पैदा कर सकता है. जिस तरह बाहर की साइंस में दुनिया के माद्दी क़ानूनों की छानबीन की जाती है उसी तरह मानव प्रेम और आत्मबल के इन जानकारों ने तजरबे कर करके इस शक्ति के असली रूप का पता लगाया है और इस बात की खोज भी की है कि इस शक्ति के ज़रिये इन्सानी ज़िन्दगी की किन किन कठिनाइयों को किस किस तरह हल किया जा सकता है. उन्होंने इस शक्ति से काम लेने के लिये नियम और तरीक़े लिख दिये हैं जिनसे पता चलता है कि किस किस हालत में इस शक्ति से काम लेने के क्या क्या नतीजे होंगे. और उनके बाद फिर क्या क्या करना होगा.

इन खोजों और प्रयोगों से फ़ायदा उठाकर दुनिया के बड़े से बड़े सदाचारी और रुहानी जानकार जैसे ऋषी, मुनि, नबी, वली, तीर्थंकर और अवतार दुनिया के सामने आकर इतिहास के पन्नों पर अपने अचरज भरे कारनामे छोड़ गये हैं. इन कारनामों को देखने से यह साफ़ पता चलता है कि इन्सानों पर अपनी हुकूमत क़ायम करने के लिये तलवार की शक्ति मानव प्रेम की शक्ति का किसी तरह मुक़ाबला नहीं कर सकती.

हम इस सवाल की लम्बी बहस में न जाकर केवल थोड़ी सी मिसालें नीचे देते हैं—

दुनिया के कुछ महान से महान पुरुषों ने जो नैतिक और आत्मिक शक्ति के जानकार थे जैसे बुद्ध, ईसा, मुहम्मद, राम, कृष्ण,

ان دھرم پُستکوں نے وِستار کے ساتھ وہ سادھن بتائے ہیں جن سے آدمی اس شکتی کو بڑے سے بڑے پیمانے پر اپنے اندر پیدا کر سکتا ہے۔ جس طرح باہر کی سائنس میں دنیا کے مادّی قانونوں کی چھان بین کی جاتی ہے اسی طرح مانو پریم اور آتم بل کے ان جانکاروں نے تجربے کر کرکے اس شکتی کے اصلی روپ کا پتہ لگایا ہے اور اس بات کی کھوج بھی کی ہے کہ اس شکتی کے ذریعے انسانی زندگی کی کن کن کٹھنائیوں کو کس کس طرح حل کیا جا سکتا ہے۔ انھوں نے اس شکتی سے کام لینے کے لئے نیم اور طریقے لکھ دیئے ہیں جن سے پتہ چلتا ہے کہ کس کس حالت میں اس شکتی سے کام لینے کے کیا کیا نتیجے ہوں گے۔ اور ان کے بعد پھر کیا کیا کرنا ہوگا۔

ان کھوجوں اور پریوگوں سے فائدہ اٹھا کر دنیا کے بڑے سے بڑے سداچاری اور روحانی جانکار جیسے رشی، منی، نبی، ولی، تیرتھنکر اور اوتار دنیا کے سامنے آکر اتہاس کے پنّوں پر اپنے اچرج بھرے کارنامے چھوڑ گئے ہیں۔ ان کارناموں کو دیکھنے سے یہ صاف پتہ چلتا ہے کہ انسانوں پر اپنی حکومت قائم کرنے کے لئے تلوار کی شکتی مانو پریم کی شکتی کا کسی طرح مقابلہ نہیں کر سکتی۔

ہم اس سوال کی لمبی بحث میں نہ جا کر کیول تھوڑی سی مثالیں نیچے دیتے ہیں—

دنیا کے کچھ مہان سے مہان پُرشوں نے جو نیتک اور آتمک شکتی کے جانکار تھے جیسے بدھ، عیسیٰ، محمد، رام، کرشن،

ज़रतश्त, मूसा और इसी तरह के दूसरे देशों के बड़े बड़े बुज़ुर्गों ने दुनिया में अपनी अपनी एख़लाक़ी और रूहानी हुकूमतें जिन्हें हम धर्म मज़हब कहते हैं, क़ायम कीं. अगर हम इन हुकूमतों को देखें और फिर उन हुकूमतों को देखें जो दुनिया के बादशाहों और शहंशाहों ने क़ायम कीं तो साफ़ दिखाई दे जायगा कि जहाँ तक शान शौकत, फैलाव और मज़बूती का सम्बन्ध है, इन दोनों तरह की हुकूमतों का कोई मुक़ाबला ही नहीं हो सकता.

यह कहना कि इन हुकूमतों के क़ायम होने में भी बड़े बड़े पैमाने पर तलवार से काम लिया गया. अगर यह सच भी हो तो, हमारी बात पर इसका कोई असर नहीं पड़ता. क्योंकि अगर हम यों देखें तो जितना हर बादशाह और शहंशाह ने अपनी हुकूमत बनाने और बनाये रखने में इस तरह की मज़हबी संस्थाओं से या मानव प्रेम की शक्ति से काम लिया है वह इतना अधिक है कि जिसके सामने मज़हब का तलवार की मदद लेना कुछ भी नहीं रह जाता. इसके अलावा इतिहास की मदद से यह अच्छी तरह साबित किया जा सकता है कि जिस पैमाने पर किसी मज़हब ने अपने सच्चे मतलब को पूरा करने में तलवार से काम लिया उसी पैमाने पर वह मज़हब अपने असली मक़सद को पूरा करने में नाकाम रहा और उसने अपनी कमज़ोरी और बरबादी के बीज बोये.

दुनिया की एक बड़ी बदनसीबी यह है कि धर्म मज़हबों के बाद के आचार्य और माननेवाले ज्यों ज्यों अपने सच्चे नैतिक और आत्मिक स्रोतों से दूर होते गये उतना उतना ही वह बाहर के

ازتشت، موسیٰ اور اسی طرح کے دوسرے دیشوں کے بڑے بڑے بزرگوں نے دنیا میں اپنی اپنی اخلاقی اور روحانی حکومتیں جنھیں ہم دھرم مذہب کہتے ہیں، قائم کیں. اگر ہم ان حکومتوں کو دیکھیں اور پھر ان حکومتوں کو دیکھیں جو دنیا کے بادشاہوں اور شہنشاہوں نے قائم کیں تو صاف دکھائی دے جائے گا کہ جہاں تک شان شوکت، پھیلاؤ اور مضبوطی کا سمبندھ ہے، ان دونوں طرح کی حکومتوں کا کوئی مقابلہ ہی نہیں ہو سکتا.

یہ کہنا کہ ان حکومتوں کے قائم ہونے میں بھی بڑے بڑے پیمانے پر تلوار سے کام لیا گیا. اگر یہ سچ بھی ہو تو، ہماری بات پر اس کا کوئی اثر نہیں پڑتا. کیونکہ اگر ہم یوں دیکھیں تو جتنا ہر بادشاہ اور شہنشاہ نے اپنی حکومت بنانے اور بنائے رکھنے میں اس طرح کی مذہبی سنستھاؤں سے یا مانو پریم کی شکتی سے کام لیا ہے وہ اتنا ادھک ہے کہ جس کے سامنے مذہب کا تلوار کی مدد لینا کچھ بھی نہیں رہ جاتا. اس کے علاوہ اتہاس کی مدد سے یہ اچھی طرح ثابت کیا جا سکتا ہے کہ جس پیمانے پر کسی مذہب نے اپنے سچے مطلب کو پورا کرنے میں تلوار سے کام لیا اسی پیمانے پر وہ مذہب اپنے اصلی مقصد کو پورا کرنے میں ناکام رہا اور اس نے اپنی کمزوری اور بربادی کے بیج بو دیے.

دنیا کی ایک بڑی بدنصیبی یہ ہے کہ دھرم مذہبوں کے بعد کے آچاریہ اور ماننے والے جیوں جیوں اپنے سچے نیتک اور آتمک سوتوں سے دور ہوتے گئے اتنا اتنا ہی وہ باہر کے

संसारी साधनों के ज्यादा ज्यादा मोहताज होते चले गये, और उनमें दुनिया की वह इच्छाएँ और वह बुराइयाँ जिन्हें मजहब कम करने और मिटाने आया था, बढ़ती चली गईं. राजकाज के हिंसा भरे मैदानों से भी इन मजहबी संस्थाओं और आचार्यों को तलवार का प्रयोग मिटाना चाहिये था. उनसे आशा थी कि वह राजकाज को भी पूरी तरह सदाचारी और रूहानी शक्तियों के अधीन कर सकेंगे इस सब की जगह धीरे धीरे यह मजहबी लोग खुद राजकाज के अधीन और फ़र्मांबरदार बन गये और राज दरबारों से लाभ उठाने की इच्छाएं इनकी इतनी बढ़ीं कि अंत को इनमें और दुनिया के दूसरे लोगों में सिवाय ऊपर की दिखावटी और निकम्मी बातों के कोई सच्चा फ़र्क़ या कोई ऊँचाई न रह गई. इसका सबसे बुरा नतीजा यह हुआ कि इन्सानी दुनिया को एक भाईचारे के साँचे में ढालने की जगह यह लोग खुद उस भाईचारे के पैदा होने में सबसे बड़ी रुकावटें और लोहे की दीवारें बनकर रह गये. इनकी इस गिरावट का एक नतीजा यह हुआ कि इन्सानी जीवन के राजकाजी और माली पहलुओं को रूहानी और एखलाक़ी पहलुओं पर छा जाने का मौक़ा मिल गया. एक तरफ़ रूहानियत और मानव प्रेम और दूसरी तरफ़ राजकाज और तलवार यह दोनों एक दूसरे के ख़िलाफ़ शक्तियाँ थीं जिनका एक जगह पर मिल जाना कठिन ही नहीं बल्कि अनहोनी बात थी. तलवार के साये में रूहानियत का आश्रय लेना अपनी सारी सच्ची ऊँचाई और भलाई को ख़त्म कर देना था. इस तरह गिरते गिरते जब इन मजहबों ने अपने को क़ौमी और नसली ऐसे ही वर्ण और सम्प्रदाय

سنساری سادھنوں کے زیادہ زیادہ محتاج ہوتے چلے گئے، اور اُن میں دنیا کی وہ اچھائیاں اور وہ بُرائیاں جنھیں مذہب کم کرنے اور مٹانے آیا تھا بڑھتی چلی گئیں۔ راج کاج کے ہنسا بھرے میدانوں سے بھی ان مذہبی سنستھاؤں اور آچاریوں کو تلوار کا پریوگ مٹانا چاہیے تھا۔ اُن سے آشا تھی کہ وہ راج کاج کو بھی پوری طرح سداچاری اور روحانی شکتیوں کے ادھین کر سکیں گے اس سب کی جگہ دھیرے دھیرے یہ مذہبی لوگ خود راج کاج کے ادھین اور فرمانبردار بن گئے اور راج درباروں سے لابھ اُٹھانے کی اِچھائیں اِن کی اتنی بڑھیں کہ انت کو اِن میں اور دنیا کے دوسرے لوگوں میں سوائے اوپر کی دکھاوٹی اور نکمی باتوں کے کوئی سچا فرق یا کوئی اونچائی نہ رہ گئی۔ اس کا سب سے بُرا نتیجہ یہ ہوا کہ انسانی دنیا کو ایک بھائی چارے کے سانچے میں ڈھالنے کی جگہ یہ لوگ خود اس بھائی چارے کے پیدا ہونے میں سب سے بڑی رُکاوٹیں اور لوہے کی دیواریں بن کر رہ گئے۔ اِنکی اس گراوٹ کا ایک نتیجہ یہ ہوا کہ انسانی جیون کے راج کاجی اور مالی پہلوؤں کو روحانی اور اخلاقی پہلوؤں پر چھا جانے کا موقع مل گیا۔ ایک طرف روحانیت اور مانو پریم اور دوسری طرف راج کاج اور تلوار یہ دونوں ایک دوسرے کے خلاف شکتیاں تھیں جنکا ایک جگہ پر مل جانا کٹھن ہی نہیں بلکہ ان ہونی بات تھی۔ تلوار کے سائے میں روحانیت کا آشریہ لینا اپنی ساری سچی اونچائی اور بھلائی کو ختم کر دینا تھا۔ اس طرح گرتے گرتے جب ان مذہبوں نے اپنے کو قومی اور نسلی ایسے ہی ورن اور سمپرداسنے

की गिरोह बन्दियों में बाँट लिया और सच्चे दीन धर्म के टुकड़े टुकड़े कर डाले तो इन्सानी भाई चारे को अमली रूप देने के नैतिक और धार्मिक दरवाजे बंद हो गये. इसके बाद राजकाजी और दूसरे समाजी नेताओं को इस मक़सद को पूरा करने के दूसरे रास्ते निकालने पड़े जिन्होंने आज लोकराज, समाजवाद (सोशलिज्म) और साम्यवाद (कम्युनिज्म) के रूप ले लिये हैं. आज पुराने धर्म मज़हबों के दावेदार बड़े पैमानों पर इन्हीं आन्दोलनों की तरफ़ झुक रहे हैं. उन्हें यह दिखाई नहीं देता कि यह रास्ते उनके अपने मिटने के रास्ते हैं. यह समझ उनमें तभी आ सकती थी जब उनमें कुछ भी सच्चा सदाचार या रूहानियत बाक़ी होती. अगर आज भी वह अपनी असलियत को, अपने दीन धर्म के सच्चे रूप को और दुनिया के झुकाव को पूरी तरह समझ लें तो यह दुनिया की हालत में एक बहुत बड़ा इन्क़लाब पैदा कर दे सकते हैं. इनके लिये सीधा रास्ता यह है कि राजकाज के रौब में न आकर और उसके प्रलोभनों से ऊपर उठकर अपने पुराने दीनों और सदाचारी रास्तों पर आ जायँ और राजकाज से बाहर रह कर एक बड़ा और शानदार नैतिक और आत्मिक संगठन बना लें, जिस संगठन का एक अकेला मक़सद आदमी को आदमी बनाना और दुनिया को राजकाज की भूलों और बुराइयों से बचाना हो. इस संगठन का काम होगा राजकाज को सच्चे धर्म और सदाचार के अधीन करके उसके हाथ से हिंसा और जबरदस्ती का हथियार छीन कर उसे मानवजाति का सच्चा सेवक बना लेना. आजकल के मज़हबों के आचार्य अगर यह काम नहीं कर सकते तो दुनिया की

کی گروہ بندیوں میں بانٹ لیا اور سچے دین دھرم کے ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالے تو انسانی بھائی چارے کو عملی روپ دینے کے نیتک اور دھارمک دروازے بند ہوگئے۔ اس کے بعد راج کاجی اور دوسرے سماجی نیتاؤں کو اس مقصد کے پورا کرنے کے دوسرے راستے نکالنے پڑے جنھوں نے آج لوک راج، سماج واد (سوشلزم) اور سامیہ واد (کمیونزم) کے روپ لے لئے ہیں۔ آج پرانے دھرم مذہبوں کے دعوے دار بڑے پیمانوں پر انھیں آندولنوں کی طرف جھک رہے ہیں۔ انھیں یہ دکھائی نہیں دیتا کہ یہ راستے انکے اپنے مٹنے کے راستے ہیں۔ یہ سمجھ ان میں تبھی آسکتی تھی جب ان میں کچھ بھی سچا سداچار یا روحانیت باقی ہوتی۔ اگر آج بھی وہ اپنی اصلیت کو، اپنے دین دھرم کے سچے روپ کو اور دنیا کے جھکاؤ کو پوری طرح سمجھ لیں تو یہ دنیا کی حالت میں ایک بہت بڑا انقلاب پیدا کر دے سکتے ہیں۔ ان کے لئے سیدھا راستہ یہ ہے کہ راج کاج کے رعب میں نہ آکر اور اس کے پرلوبھنوں سے اوپر اٹھ کر اپنے پرانے دینوں اور سداچاری راستوں پر آجائیں اور راج کاج سے باہر رہ کر ایک بڑا اور شاندار نیتک اور آتمک سنگٹھن بنالیں، جس سنگٹھن کا ایک اکیلا مقصد آدمی کو آدمی بنانا اور دنیا کو راج کاج کی بھولوں اور برائیوں سے بچانا ہو۔ اس سنگٹھن کا کام ہوگا راج کاج کو سچے دھرم اور سداچار کے ادھین کرکے اس کے ہاتھ سے ہنسا اور زبردستی کا ہتھیار چھین کر اسے مانو جاتی کا سچا سیوک بنا لینا۔ آج کل کے مذہبوں کے آچاریہ اگر یہ کام نہیں کر سکتے تو دنیا کی

भलाई करने के बजाय वह उसकी उन्नति के रास्ते में एक बहुत बड़ी रुकावट होंगे जिसे दुनिया किसी तरह भी देर तक बरदाश्त न करेगी.

सेवक और सेवा

दुनिया की इस तरह की नाजुक और दर्दनाक हालत में बापू का जन्म हुआ. उन्होंने इतिहास में पहिली बार मानव प्रेम को तलवार के मुक़ाबले में लाकर खड़ा कर दिया और वह भी राजकाज के मैदान में. इस ताक़त की मदद से वह इन्सानी जीवन में एक नैतिक इन्क़लाब पैदा करना चाहते थे. जो पाँच बातें किसी भी इन्क़लाब के पैदा करने के लिये जरूरी होती हैं और जो बापू ने अपने विधान में रखी हैं उनमें से तीन (मक़सद, साधन, संगठन) हम ऊपर बयान कर चुके हैं. चौथी वह शक्ति है जिसके बल यह इन्क़लाब पैदा किया जा सकता है यानी आत्मबल और मानव प्रेम की शक्ति. पाँचवीं जगह हम उन निस्वार्थ, त्यागी सेवकों को देते हैं जो इस शक्ति की मदद से उस इन्क़लाब को पैदा करेंगे. मानव प्रेम की शक्ति के बारे में हम बहुत कुछ कह चुके अब हम इस विधान के सेवकों की बाबत कुछ कहना चाहते हैं.

जब से बापू को इस शक्ति का और अपने मिशन का अनुभव हुआ तभी से उन्होंने इस तरह के सेवक पैदा करने की कोशिश शुरू कर दी थी जो इस शक्ति को अपने अंदर पैदा करके उस मिशन के पूरा होने में मदद दें. उन्होंने अपने आश्रमों और

بھلائی کرنے کے بجائے وہ اس کی اُنتی کے راستے میں ایک بہت بڑی رُکاوٹ ہونگے جسے دنیا کسی طرح بھی دیر تک برداشت نہ کرے گی:

سیوک اور سیوا

دنیا کی اس طرح کی نازک اور دردناک حالت میں باپو کا جنم ہوا۔ اُنھوں نے اتہاس میں پہلی بار مانو پریم کو تلوار کے مقابلہ میں لاکر کھڑا کر دیا اور وہ بھی راج کاج کے میدان میں۔ اس طاقت کی مدد سے وہ انسانی جیون میں ایک نیتک انقلاب پیدا کرنا چاہتے تھے۔ جو پانچ باتیں کسی بھی انقلاب کے پیدا کرنے کے لئے ضروری ہوتی ہیں اور جو باپو نے اپنے ودھان میں رکھی ہیں اُن میں سے تین (مقصد، سادھن، سنگٹھن) ہم اوپر بیان کر چکے ہیں۔ چوتھی وہ شکتی ہے جس کے بل یہ انقلاب پیدا کیا جا سکتا ہے یعنی آتم بل اور مانو پریم کی شکتی۔ پانچویں جگہ ہم اُن نِسوارتھ، تیاگی سیوکوں کو دیتے ہیں جو اس شکتی کی مدد سے اُس انقلاب کو پیدا کریں گے۔ مانو پریم کی شکتی کے بارے میں ہم بہت کچھ کہہ چکے اب ہم اِس ودھان کے سیوکوں کی بابت کچھ کہنا چاہتے ہیں۔

جب سے باپو کو اس شکتی کا اور اپنے مشن کا انوبھو ہوا تبھی سے اُنھوں نے اس طرح کے سیوک پیدا کرنے کی کوشش شروع کر دی تھی جو اس شکتی کو اپنے اندر پیدا کر کے اُس مشن کے پورا ہونے میں مدد دیں۔ اُنھوں نے اپنے آشرموں اور

आन्दोलनों के जरिये ऐसे बहुत से सेवक मुल्क में पैदा कर दिये हैं. इस विधान को देखने से मालूम होता है कि बापू ने इन्हीं सेवकों पर इस नये आन्दोलन के चलाने की जिम्मेदारी डाली है और इस तरह के सब सेवक इस काम में लग सकें इसलिये बापू ने अपने सारे रचनात्मक संगठनों को "लोक सेवक संघ" में मिल जाने को कहा है. जिन संगठनों को उन्होंने इस नये संघ में शामिल किया है उनके नाम हम नीचे देते हैं. यह विधान की दफ़ा दस में दिये हुए हैं.

१. कुल हिंद चरखा संघ
२. कुल हिंद ग्राम उद्योग संघ
३. हिन्दुस्तानी तालीमी संघ
४. हरिजन सेवक संघ
५. गो सेवा संघ

दफ़ा दस में ऊपर के 'मक़सद' कह कर जिन मक़सदों का हवाला दिया गया है उन सब को हम पीछे दे चुके हैं. जो योग्यताएँ सेवकों में होनी जरूरी हैं वह भी हम बयान कर चुके हैं. जिन रचनात्मक कामों को पूरा करना इन सेवकों का फ़र्ज बताया गया है वह भी लगभग वही सब हैं जिन्हें ऊपर लिखे पाँच संघ मुल्क में चला रहे हैं. इस सब से जाहिर है कि यह नया आंदोलन भी बापू अपने परखे हुए जानकारों के ही सुपुर्द करना चाहते थे और चूँकि इन्हें उस मानव प्रेम की शक्ति से काम लेना था जिसे वह हर तरह की हिंसा से बचाना चाहते थे, इसलिये उन्होंने अपनी पंचायतों में ऐसे सेवकों के सिवाय और किसी को कोई जगह नहीं

آندولنوں کے ذریعے ایسے بہت سے سیوک ملک میں پیدا کر دیئے ہیں۔ اس ودھان کو دیکھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ باپو نے انھیں سیوکوں پر اس نئے آندولن کے چلانے کی ذمہ داری ڈالی ہے اور اس طرح کے سب سیوک اس کام میں لگ سکیں اس لئے باپو نے اپنے سارے رچناتمک سنگٹھنوں کو "لوک سیوک سنگھ" میں مل جانے کو کہا ہے۔ جن سنگٹھنوں کو انھوں نے اس نئے سنگھ میں شامل کیا ہے انکے نام ہم نیچے دیتے ہیں۔ یہ ودھان کی دفعہ دس میں دیئے ہوئے ہیں۔

۱۔ کل ہند چرخہ سنگھ
۲۔ کل ہند گرام اُدیوگ سنگھ
۳۔ ہندستانی تعلیمی سنگھ
۴۔ ہریجن سیوک سنگھ
۵۔ گو سیوا سنگھ

دفعہ دس میں اوپر کے 'مقصد' کہہ کر جن مقصدوں کا حوالہ دیا گیا ہے ان سب کو ہم پیچھے دے چکے ہیں۔ جو یوگتائیں سیوکوں میں ہونی ضروری ہیں وہ بھی ہم بیان کر چکے ہیں۔ جن رچناتمک کاموں کو پورا کرنا ان سیوکوں کا فرض بتایا گیا ہے وہ بھی لگ بھگ وہی سب ہیں جنھیں اوپر لکھے پانچ سنگھ ملک میں چلا رہے ہیں۔ اس سب سے ظاہر ہے کہ یہ نیا آندولن بھی باپو اپنے پرکھے ہوئے جانکاروں کے ہی سپرد کرنا چاہتے تھے اور چونکہ انھیں اس مانو پریم کی شکتی سے کام لینا تھا جسے وہ ہر طرح کی ہنسا سے بچانا چاہتے تھے، اس لئے انھوں نے اپنی پنچایتوں میں ایسے سیوکوں کے سوائے اور کسی کو کوئی جگہ نہیں

दी. बापू की गरज यह थी कि इस नये आन्दोलन को उन बातों से बचाया जावे जिनकी बदौलत कांग्रेस सीधे रास्ते से भटक चुकी थी. आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के सामने विधान की यह शर्तें पेश करने के साफ़ मानी यह थे कि कांग्रेस वाले इस बात को अच्छी तरह समझ लें कि उन लोगों को जिनका झुकाव केवल राजकाज की तरफ़ है अब रचनात्मक प्रोग्राम के काम करने वालों की रहनुमाई में काम करना होगा. यह उस हालत को उलट देना था जो पिछले तीस साल तक रह चुकी थी. यह कांग्रेस के पिछले राजकाजी जीवन को मिटा कर उसे एक अहिंसात्मक, रचनात्मक सेवक की तरह काम करने पर मजबूर करना था.

बापू ख़ुद अपनी ज़िंदगी में इस विधान को अमली रूप देते तो क्या क्या सूरतें पैदा होतीं इसका विचार करना अब कुछ मानी नहीं रखता. ज़ाहिर है कि कांग्रेस इस तरह के इन्क़लाब को पसंद नहीं कर सकती इसलिये इस आंदोलन को चलाने का सारा भार और ज़िम्मेदारी उन काम करने वालों पर है जो बापू के पुराने आन्दोलनों में काम करचुके हैं या ऐसे नये लोगों पर है जो बापू के प्रेमी हैं. उनके असूलों को मानते हैं और अब इसमें अमली हिस्सा लेकर इस आन्दोलन को सफल बनाना चाहते हैं.

बापू हमेशा अपने काम करने वालों के सामने सेवा और त्याग का वह ऊँचा आदर्श रखते थे जो मज़हबी सन्यासियों और योगियों के सामने रहता है. दुनिया के किसी राजकाजी काम करने वालों के सामने सेवा का इतना ऊँचा आदर्श शायद ही कभी रहा हो. ऐसे ही दुनिया के शायद कम काम करने वालों ने इस ऊँचे

دی. باپو کی غرض یہ تھی کہ اس نئے آندولن کو اُن باتوں سے بچایا جاوے جن کی بدولت کانگریس سیدھے راستے سے بھٹک چکی تھی. آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے سامنے ودھان کی یہ شرطیں پیش کرنے کے صاف معنی یہ تھے کہ کانگریس والے اس بات کو اچھی طرح سمجھ لیں کہ اُن لوگوں کو جن کا جھکاؤ کیول راج کاج کی طرف ہے اب رچناتمک پروگرام کے کام کرنے والوں کی رہنمائی میں کام کرنا ہوگا. یہ اُس حالت کو اُلٹ دینا تھا جو پچھلے تیس سال تک رہ چکی تھی. یہ کانگریس کے پچھلے راج کاجی جیون کو مٹا کر اُسے ایک اہنسا تمک، رچناتمک سیوک کی طرح کام کرنے پر مجبور کرنا تھا.

باپو خود اپنی زندگی میں اس ودھان کو عملی روپ دیتے تو کیا کیا صورتیں پیدا ہوتیں اس کا وچار کرنا اب کچھ معنی نہیں رکھتا. ظاہر ہے کہ کانگریس اس طرح کے انقلاب کو پسند نہیں کر سکتی اس لئے اس آندولن کو چلانے کا سارا بھار اور ذمہ داری اُن کام کرنے والوں پر ہے جو باپو کے پرانے آندولنوں میں کام کر چکے ہیں یا ایسے نئے لوگوں پر ہے جو باپو کے پریمی ہیں. اُن کے اصولوں کو مانتے ہیں اور اب اس میں عملی حصہ لے کر اس آندولن کو سپھل بنانا چاہتے ہیں.

باپو ہمیشہ اپنے کام کرنے والوں کے سامنے سیوا اور تیاگ کا وہ اونچا آدرش رکھتے تھے جو مذہبی سنیاسیوں اور یوگیوں کے سامنے رہتا ہے. دنیا کے کسی راج کاجی کام کرنے والوں کے سامنے سیوا کا اتنا اونچا آدرش شاید ہی کبھی رہا ہو. ایسے ہی دنیا کے شاید کم کام کرنے والوں نے اس اونچے

आदर्श को हमेशा अपने सामने रखने की इतनी सच्चाई से कोशिश की होगी जितनी बापू के सेवकों ने. फिर भी किसी आदर्श को पूरी तरह अपने जीवन में ढाल सकना आदमी की शक्ति से बाहर है. बापू इस बात को अच्छी तरह समझते थे. इसीलिये वह बड़े प्रेम के साथ हमेशा अपने सेवकों की हिम्मत बढ़ाते रहते थे. अपनी कमजोरियों को दूर करने की कोशिश में लगे रहना और अपनी ताक़त और हिम्मत के अनुसार अपनी ज़िम्मेदारियों को लगन के साथ पूरा करने की कोशिश करते रहना यही बापू की निगाह में सच्चे सेवक का काम था. वह कहते थे कि हमारी सच्चाई और कोशिश ही, अगर हम लगे रहेंगे तो हमारी कमजोरियों को दूर कर देगी और धीरे धीरे हमारी सेवा के दायरे के बढ़ने के साथ साथ हमारा असर भी बढ़ता जायगा. इस असर का बढ़ना ही हमारी सेवा की सच्चाई की कसौटी होगा.

बापू अपने सेवकों के लिये कोई क़ानूनी हक़ या माली साधन या इसी तरह की बाहरी सहूलतें जमा कर देना पसंद न करते थे. वह इन लोगों के सामने हमेशा स्वावलम्बन का आदर्श रखते थे. मानव प्रेम से और अपने त्याग और निस्वार्थ सेवा से लोगों के दिलों को जीतना, अपने समय, अपने साधनों, अपनी सारी शक्ति और श्रद्धा के अनमोल मोती मानव समाज की भलाई पर क़ुर्बान कर देना—यह ही बेलाग सेवा के सच्चे जौहर हैं. इसी से वह नैतिक बल या आत्मबल पैदा होता है जो तलवार और हिंसा से टक्कर लेता है और जो

آدرش کو ہمیشہ اپنے سامنے رکھنے کی اتنی سچائی سے کوشش کی ہوگی جتنی باپو کے سیوکوں نے۔ پھر بھی کسی آدرش کو پوری طرح اپنے جیون میں ڈال سکنا آدمی کی شکتی سے باہر ہے۔ باپو اس بات کو اچھی طرح سمجھتے تھے۔ اسی لئے وہ بڑے پریم کے ساتھ ہمیشہ اپنے سیوکوں کی ہمت بڑھاتے رہتے تھے۔ اپنی کمزوریوں کو دور کرنے کی کوشش میں لگے رہنا اور اپنی طاقت اور ہمت کے انوسار اپنی ذمہ داریوں کو لگن کے ساتھ پورا کرنے کی کوشش کرتے رہنا یہی باپو کی نگاہ میں سچے سیوک کا کام تھا۔ وہ کہتے تھے کہ ہماری سچائی اور کوشش ہی، اگر ہم لگے رہے تو ہماری کمزوریوں کو دور کردے گی اور دھیرے دھیرے ہماری سیوا کے دائرے کے بڑھنے کے ساتھ ساتھ ہمارا اثر بھی بڑھتا جائے گا۔ اس اثر کا بڑھنا ہی ہماری سیوا کی سچائی کی کسوٹی ہوگا۔

باپو اپنے سیوکوں کے لئے کوئی قانونی حق یا مالی سادھن یا اسی طرح کی باہری سہولتیں جمع کردینا پسند نہ کرتے تھے۔ وہ ان لوگوں کے سامنے ہمیشہ سواولمبن کا آدرش رکھتے تھے۔ مانو پریم سے اور اپنے تیاگ اور نسوارتھ سیوا سے لوگوں کے دلوں کو جیتنا، اپنے سمے، اپنے سادھنوں، اپنی ساری شکتی اور شردھا کے انمول موتی مانو سماج کی بھلائی پر قربان کردینا — یہ ہی بے لاگ سیوا کے سچے جوہر ہیں۔ اسی سے وہ نیتک بل یا آتم بل پیدا ہوتا ہے جو تلوار اور ہنسا سے ٹکر لیتا ہے اور جو

लोगों के दिलों पर अपना असर डाल कर एक छोटे से सेवक को उनका प्यारा बना देता है. माद्दी शक्ति और बेलाग सेवा दोनों अपनी अपनी हुकूमतें क़ायम करती हैं. एक लोगों के जान और माल पर क़ाबू पाकर, और दूसरी उनके दिल और दिमाग़ पर अपनी मुहब्बत और सेवा का सिक्का जमा कर. एक ख़िराज या टैक्स लेती है, दूसरी अपना सब कुछ दे देती है. तलवार चार दान लेती है तन, धन, जान और हिम्मत. मानव प्रेम चार दान देता है—धन, तन्दुरुस्ती, विद्या और निडरता. यही चार दान बापू ने अपनी समग्र सेवा की दफ़ाओं में शामिल किये हैं. इन्हीं चार दानों से तलवार और राजकाज की सब बड़ी से बड़ी ताक़तों का मुक़ाबला किया जा सकता है. तलवार एक डरावनी चीज़ है. मानव प्रेम और सेवा एक मोहनी शक्ति है जैसे दीपक में परवाने के लिये और चन्द्रमा में चकोर के लिये होती है. यह शक्ति सेवक के त्याग का असर जनता के दिल में डाल कर उसे तलवार के डर और हुकूमत की हिंसा दोनों से निडर और आज़ाद कर देती है और उसके मन की ताक़त को फ़ौलादी बना देती है. त्याग की वह शक्ति जो सेवक में होती है और जिसमें मानव प्रेम की मोहनी घुली हुई है लोगों के दिलों में घुस कर उन्हें माला माल कर देती है. त्याग उनके लिये एक फ़र्ज़ ही नहीं बलकि अन्दर की शांति, संतोष और आनन्द का ज़रिया बन जाता है. बापू अपने सेवकों में यही सेवा की शक्ति और यही मानव प्रेम पैदा कर देना चाहते थे. इस सब के बदले में बापू एक ही

لوگوں کے دلوں پر اپنا اثر ڈال کر ایک چھوٹے سے سیوک کو اُنکا پیارا بنا دیتا ہے۔ مادّی شکتی اور بے لاگ سیوا دونوں اپنی اپنی حکومتیں قائم کرتی ہیں۔ ایک لوگوں کے جان اور مال پر قابو پاکر، اور دوسری اُن کے دل اور دماغ پر اپنی محبت اور سیوا کا سکہ جماکر۔ ایک خراج یا ٹیکس لیتی ہے، دوسری اپنا سب کچھ دے دیتی ہے۔ تلوار چار دان لیتی ہے تن، دھن، جان اور ہمت۔ مانو پریم چار دان دیتا ہے — دھن، تندرستی، وِدّیا اور نڈرتا۔ یہی چار دان باپو نے اپنی سمگر سیوا کی دفعاؤں میں شامل کئے ہیں۔ انھیں چار دانوں سے تلوار اور راج کاج کی سب بڑی سے بڑی طاقتوں کا مقابلہ کیا جاسکتا ہے۔ تلوار ایک ڈراؤنی چیز ہے۔ مانو پریم اور سیوا ایک موہنی شکتی ہے جیسے دیپک میں پروانے کے لئے اور چندرما میں چکور کے لئے ہوتی ہے۔ یہ شکتی سیوک کے تیاگ کا اثر جنتا کے دل میں ڈال کر اُسے تلوار کے ڈر اور حکومت کی ہنسا دونوں سے نڈر اور آزاد کر دیتی ہے اور اُسکے من کی طاقت کو فولادی بنا دیتی ہے۔ تیاگ کی وہ شکتی جو سیوک میں ہوتی ہے اور جس میں مانو پریم کی موہنی گھلی ہوئی ہے لوگوں کے دلوں میں گھس کر انھیں مالا مال کر دیتی ہے۔ تیاگ اُن کے لئے ایک فرض ہی نہیں بلکہ اندر کی شانتی، سنتوش اور آنند کا ذریعہ بن جاتا ہے۔ باپو اپنے سیوکوں میں یہی سیوا کی شکتی اور یہی مانو پریم پیدا کر دینا چاہتے تھے۔ اس سب کے بدلے میں باپو ایک ہی

गुरु दक्षिणा माँगते थे. वह यह कि सेवक अपना राज जमाने में इस शक्ति के सिवा दुनिया की किसी दूसरी शक्ति से कोई सहारा न लें. सेवकों के जीवन में यह उसी स्वावलम्बन का चित्र है जो बापू को इतना प्यारा था और जिसे वह सारी सुख शांति और शक्ति का सोता बताते थे. इस विधान में उन्होंने जिन शब्दों में यह गुरु दक्षिणा माँगी है वह हम नीचे देते हैं—"यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि सेवकों की इस जमात को जो कुछ अधिकार होंगे या जो कुछ शक्ति उन्हें मिलेगी वह उस सेवा से मिलेगी जो वह अपने मालिक यानी सारे हिन्दुस्तान की पूरे दिल से ख़ुशी ख़ुशी और समझदारी के साथ करेंगे."

यही बापू का गायत्री मंत्र है. निस्वार्थ सेवा का यही रूप है. लोगों के दिलों को अपनी तरफ़ खींचने के लिये यही चुम्बक शक्ति है. तलवार को क़ाबू में करने का यही वशीकरण मंत्र (तावीज़ हुब्ब) है और नैतिक इन्क़लाब के लिये यही रामबान या इस्मे आज़म है.

बापू का सेवा को अपने विधान में यह शानदार जगह देना, उनके समग्र सेवा के प्रोग्राम को उस ब्रह्म यज्ञ या यज़दानी यज्ञ की शकल दे देता है जिसमें गीता के अनुसार सारे संसार की सृष्टि हुई है. गीता का यह उपदेश निस्वार्थ सेवा और त्याग को ही क़ुदरत के सारे क़ानूनों की धुरी बताता है. इस महायज्ञ में हिस्सा लेना सब प्राणियों का फ़र्ज़ है. यही क़ुदरत का नियम और तक़ाज़ा है. कोई जानदार या बेजान इस क़ानून के दायरे से बाहर नहीं जा सकता. अगर वह इस सच्चाई

گرو دکشنا مانگتے تھے۔ وہ یہ کہ سیوک اپنا راج جمانے میں اس شکتی کے سوا دنیا کی کسی دوسری شکتی سے کوئی سہارا نہ لیں۔ سیوکوں کے جیون میں یہ اُسی سواولمبن کا چتر ہے جو باپو کو اتنا پیارا تھا اور جسے وہ ساری سکھ شانتی اور شکتی کا سوتا بتاتے تھے۔ اس ودھان میں انھوں نے جن شبدوں میں یہ گرو دکشنا مانگی ہے وہ ہم نیچے دیتے ہیں — "یہ بات دھیان میں رکھنی چاہئے کہ سیوکوں کی جماعت کو جو کچھ ادھیکار ہونگے یا جو کچھ شکتی انہیں ملے گی وہ اس سیوا سے ملے گی جو اپنے مالک یعنی سارے ہندستان کی پورے دل سے خوشی خوشی اور سمجھداری کے ساتھ کریں گے۔"

یہی باپو کا گایتری منتر ہے۔ نسوارتھ سیوا کا یہی روپ ہے۔ لوگوں کے دلوں کو اپنی طرف کھینچنے کے لئے یہی چمبک شکتی ہے۔ تلوار کو قابو میں کرنے کا یہی وشیکرن منتر (تعویذ حُب) ہے اور نیتک انقلاب کے لئے یہی رام بان یا اسم اعظم ہے۔

باپو کا سیوا کو اپنے ودھان میں یہ شاندار جگہ دینا، انکے سمگر سیوا کے پروگرام کو اُس برہم یگیہ یا یزدانی یگیہ کی شکل دے دیتا ہے جس میں گیتا کے انوسار سارے سنسار کی سرشٹی ہوئی ہے۔ گیتا کا یہ اُپدیش نسوارتھ سیوا اور تیاگ کو ہی قدرت کے سارے قانونوں کی دُھری بتاتا ہے۔ اس مہایگیہ میں حصہ لینا سب پرانیوں کا فرض ہے۔ یہی قدرت کا نیم اور تقاضہ ہے۔ کوئی جاندار یا بے جان اس قانون کے دائرے سے باہر نہیں جاسکتا۔ اگر وہ اس سچائی

को समझ कर ,खुशी ,खुशी और पूरे दिल से उसमें हिस्सा लेता है तो उससे दुनिया को और दुनिया से उसको बेहद फ़ायदा पहुँचता है. लेकिन अगर वह इस धर्म के रास्ते से, इस राहे-मुस्तक़ीम से भटकता है तो वह क़ुदरत की नियामतों से दूर हट कर दुनिया के दुखों और मुसीबतों में फँस जाता है. हो सकता है कि वह इस क़ानून से अनजान है और अपने संसारी दुख के असली कारनों को न समझ पाता हो पर इससे वह इस क़ानून के नतीजों से बच नहीं सकता. अगर वह समझ कर भी अपने इस फ़र्ज़ को पूरा नहीं करता, तो उसे अपनी इस भारी भूल का खमियाजा भोगना पड़ेगा.

इसी क़ानून पर हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता की सारी तामीर हुई थी. इसलिये उस सभ्यता ने दुनिया में इतनी ऊँचाई और कामरानी हासिल की पर उस सभ्यता के नाम लेवा त्याग के इस ऊँचे आदर्श पर पूरे न उतर सके. इसी से हमारा देश बरबादी के भँवर में फँस गया है. बापू हमें इस भँवर से निकलने का रास्ता बताने आये थे. हम इसे मानें या न मानें पर क़ुदरत और दुनिया की हालत दोनों यह बता रहे हैं कि हमारे और दुनिया के लिये कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं.

बापू ख़ुद त्याग और मानव प्रेम की मूर्ति थे. उन्होंने निस्वार्थ सेवा की एक बाढ़ इस देश में पैदा कर दी थी. उनके लिये मानव प्रेम वैसी ही असली और सच्ची शक्ति थी जैसी बिजली या ऐटोमिक ऐनर्जी साइंस वालों के लिये. उनका ख़याल था कि हर आदमी यह शक्ति अपने अंदर पैदा कर सकता है और उसे जितना

کو سمجھ کر، خوشی خوشی اور پورے دل سے اس میں حصہ لیتا ہے تو اس سے دنیا کو اور دنیا سے اس کو بے حد فائدہ پہنچتا ہے۔ لیکن اگر وہ اس دھرم کے راستے سے، اس راہِ مستقیم سے بھٹکتا ہے تو وہ قدرت کی نعمتوں سے دور ہٹ کر دنیا کے دکھوں اور مصیبتوں میں پھنس جاتا ہے۔ ہو سکتا ہے کہ وہ اس قانون سے انجان ہے اور اپنے سنساری دکھ کے اصلی کارنوں کو نہ سمجھ پاتا ہو پر اس سے وہ اس قانون کے نتیجوں سے بچ نہیں سکتا۔ اگر وہ سمجھ کر بھی اپنے اس فرض کو پورا نہیں کرتا، تو اسے اپنی اس بھاری بھول کا خمیازہ بھگتنا پڑے گا۔

اسی قانون پر ہندستان کی پرانی سبھیتا کی ساری تعمیر ہوئی تھی۔ اس لئے اس سبھیتا نے دنیا میں اتنی اونچائی اور کامرانی حاصل کی پر اس سبھیتا کے نام لیوا تیاگ کے اس اونچے آدرش پر پورے نہ اتر سکے۔ اسی سے ہمارا دیش بربادی کے بھنور میں پھنس گیا ہے۔ باپو ہمیں اس بھنور سے نکالنے کا راستہ بتانے آئے تھے۔ ہم اسے مانیں یا نہ مانیں پر قدرت اور دنیا کی حالت دونوں یہ بتا رہی ہیں کہ ہمارے اور دنیا کے لئے کوئی دوسرا راستہ ہے ہی نہیں۔

باپو خود تیاگ اور مانو پریم کی مورتی تھے۔ انہوں نے نسوارتھ سیوا کی ایک باڑھ اس دیش میں پیدا کر دی تھی۔ ان کے لئے مانو پریم ویسی ہی اصلی اور سچی شکتی تھی جیسی بجلی یا ایٹومیک انرجی سائنس والوں کے لئے۔ ان کا خیال تھا کہ ہر آدمی یہ شکتی اپنے اندر پیدا کر سکتا ہے اور اسے جتنا

चाहे बढ़ा सकता है. प्रकृति के नियमों में इस शक्ति के बढ़ने के लिये कोई हद या सीमा नहीं है. न कोई बाहरी रुकावट हमें इस शक्ति के अपने अंदर बढ़ाने में कठिनाई पैदा कर सकती है. रुकावटें जो हैं वह हमारी अपनी पैदा की हुई हैं. मनुष्य ने अपनी ग़लतियों से ही अपने आप को बरबाद किया है. जितनी कोशिश, मेहनत और दौलत ख़र्च करके हमने अपने तलवारी संगठन को बनाया है और उसे बढ़ाने में जितनी कोशिश, मेहनत और दौलत हम ख़र्च करते रहते हैं उसका एक छोटा सा हिस्सा भी अगर हम मानव प्रेम की शक्ति को अपने अंदर पैदा करने और बढ़ाने में ख़र्च करें तो इन्सानी क़ौम की सारी मुसीबतें दमके दम में ख़तम हो सकती हैं. जनता और राज दोनों मिल कर इस काम को करना चाहें तो लोकराज और इंसानी भाई चारा दोनों का सच्चा दौर इस भूमि पर दो दिन के अंदर क़ायम हो सकता है. इसी आधार पर बापू ने यह कहा था कि अगर राज की बाग मेरे हाथ में आजावे तो मैं बिना फ़ौज और बिना पुलिस की मदद के इसे चला सकता हूँ.

बापू कोई जादूगर नहीं थे. उन्होंने यह बात उसी तरह सोच समझ कर और हिसाब लगा कर कही थी जिस तरह एक साइंस वाला साइंस की बात करता है या हिसाब जानने वाला हिसाब के किसी सवाल का जवाब बताता है. वह जानते थे कि राज अगर अपनी ग़लतियों और भूलों से बाज़ आजावे और ख़ुद मानव प्रेम के आधार पर अपने को चलाने लगे तो इसमें कोई शक नहीं कि वह सारे देश के दिलों को मानव प्रेम से अपने बस में कर

چاہے بڑھا سکتا ہے۔ پرکرتی کے نیموں میں اس شکتی کے بڑھانے کے لئے کوئی حد یا سیما نہیں ہے۔ نہ کوئی باہری رُکاوٹ ہمیں اس شکتی کے اپنے اندر بڑھانے میں کٹھنائی پیدا کر سکتی ہے۔ رُکاوٹیں جو ہیں وہ ہماری اپنی پیدا کی ہوئی ہیں۔ منشیہ نے اپنی غلطیوں سے ہی اپنے آپ کو برباد کیا ہے۔ جتنی کوشش محنت اور دولت خرچ کرکے ہم نے اپنے تلواری سنگھٹن کو بنایا ہے اور اُسے بڑھانے میں جتنی کوشش، محنت اور دولت ہم خرچ کرتے رہتے ہیں اس کا ایک چھوٹا سا حصہ بھی اگر ہم مانو پریم کی شکتی کو اپنے اندر پیدا کرنے اور بڑھانے میں خرچ کریں تو انسانی قوم کی ساری مصیبتیں دم کے دم میں ختم ہو سکتی ہیں۔ جنتا اور راج دونوں مل کر اس کام کو کرنا چاہیں تو لوک راج اور انسانی بھائی چارا دونوں کا سچا دَور اس بھومی پر دو دن کے اندر قائم ہو سکتا ہے۔ اسی آدھار پر باپو نے یہ کہا تھا کہ اگر راج کی باگ میرے ہاتھ میں آجاوے تو میں بنا فوج اور بنا پولیس کی مدد کے اسے چلا سکتا ہوں۔

باپو کوئی جادوگر نہیں تھے۔ انہوں نے یہ بات اُسی طرح سوچ سمجھ کر اور حساب لگا کر کہی تھی جس طرح ایک سائنس والا سائنس کی بات کرتا ہے یا حساب جاننے والا حساب کے کسی سوال کا جواب بتاتا ہے۔ وہ جانتے تھے کہ راج اگر اپنی غلطیوں اور بھولوں سے باز آجاوے اور خود مانو پریم کے آدھار پر اپنے کو چلانے لگے تو اس میں کوئی شک نہیں کہ وہ سارے دیش کے دلوں کو مانو پریم سے اپنے بس میں کر

सकता है और देश भर में इस तरह के नये संगठन खड़े कर सकता है जो विरोधी शक्तियों के मुक़ाबले के लिये तलवार से कई गुना ज्यादा काम के साबित हों. नफ़रतें और गुस्से और एक दूसरे की खेंचातानी मिट सकती है और मुल्क के कोने कोने में एक नई जान, नया जोश और नई तरह का आत्मबल पैदा हो सकता है. यह नामुमकिन बातें नहीं थीं. इसमें केवल जनता और राज दोनों के सहयोग की जरूरत थी. बापू को विश्वास था कि अगर राज उनका साथ दे दे तो जनता पूरा पूरा सहयोग देने से इन्कार नहीं कर सकती.

इसका मतलब यह नहीं है कि बापू खुद राजा या बादशाह या वज़ीर या इस तरह की कोई चीज बनना चाहते थे. वह केवल हुकूमत से और कांग्रेस से दिली सहयोग की भीक माँग रहे थे. जनता पर तो उन्हें भरोसा था ही. उनका दुख और उनकी बेबसी इसी में थी कि कांग्रेस और राज से उन्हें यह सहयोग न मिल सका.

बिना फ़ौज और बिना पुलिस के राज चलाने के लिये दो बातें दरकार हैं. एक देश को दूसरे देशों के हमलों और चालों से बचाना, दूसरे देश के अन्दर अमन अमान क़ायम रखना.

इनमें पहली बार बापू ने अँगरेजी राज की बुनियादों को हिला कर देश को खुद आजाद करके दिखा दिया. यह ऐसी हालत में जब कि देश के पास हथियार न थे और देश विदेशी राज की गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था. अब देश आजाद है. वह अपनी शक्ति को समझ चुका है, यह कहना कि इस बदली हुई हवा में बापू अपने मानव प्रेम की शक्ति और अहिंसा के साधनों से

سکتا ہے اور دیش بھر میں اس طرح کے نئے سنگٹھن کھڑے کر سکتا ہے جو ورودھی شکتیوں کے مقابلے کے لئے تلوار سے کئی گنا زیادہ کام کے ثابت ہوں۔ نفرتیں اور غصے اور ایک دوسرے کی کھینچا تانی مٹ سکتی ہے اور ملک کے کونے کونے میں ایک نئی جان، نیا جوش اور نئی طرح کا آتم بل پیدا ہو سکتا ہے۔ یہ ناممکن باتیں نہیں تھیں۔ اس میں کیول جنتا اور راج دونوں کے سہیوگ کی ضرورت تھی۔ باپو کو وشواس تھا کہ اگر راج ان کا ساتھ دے دے تو جنتا پورا پورا سہیوگ دینے سے انکار نہیں کر سکتی۔

اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ باپو خود راجہ یا بادشاہ یا وزیر یا اس طرح کی کوئی چیز بننا چاہتے تھے۔ وہ کیول حکومت سے اور کانگریس سے دلی سہیوگ کی بھیک مانگ رہے تھے۔ جنتا پر تو انہیں بھروسہ تھا ہی۔ ان کا دکھ اور ان کی بے بسی اسی میں تھی کہ کانگریس اور راج سے انہیں یہ سہیوگ نہ مل سکا۔

بنا فوج اور بنا پولیس کے راج چلانے کے لئے دو باتیں درکار ہیں۔ ایک دیش کو دوسرے دیشوں کے حملوں اور چالوں سے بچانا، دوسرے دیش کے اندر امن امان قائم رکھنا۔

ان میں پہلی بار باپو نے انگریزی راج کی بنیادوں کو ہلا کر دیش کو خود آزاد کر کے دکھا دیا۔ یہ ایسی حالت میں جب کہ دیش کے پاس ہتھیار نہ تھے اور دیش ودیشی راج کی غلامی کی زنجیروں میں جکڑا ہوا تھا۔ اب دیش آزاد ہے۔ وہ اپنی شکتی کو سمجھ چکا ہے۔ یہ کہنا کہ اس بدلی ہوئی ہوا میں باپو اپنے مانو پریم کی شکتی اور اہنسا کے سادھنوں سے

विदेशी ताक़तों की चालों से मुल्क को न बचा सकते थे, बिलकुल जबरदस्ती है. कोई आदमी जो थोड़ा बहुत भी इंसाफ़ और समझ से काम ले इस तरह की बात नहीं कह सकता.

जहाँ तक देश के अन्दर बिना फ़ौज और पुलिस के अमन अमान क़ायम रखने का सवाल है वहाँ तक बापू ने राज काज से भी बढ़ कर सबूत मानव प्रेम की शक्ति और आत्मबल के कारनामों के दिये हैं. बापू के जीवन के आखिरी दिनों के चमत्कार, उस समय जब कि साम्प्रदायिक तूफ़ान अपनी चोटी पर था, दुनिया के किसी भी आदमी को प्रेम की शक्ति और आत्मबल में विश्वास दिलाने के लिये काफ़ी है. हमारे पच्छिमी उस्तादों ने हमें दुनिया का यह एक बुनियादी असूल समझाया है कि कोई काम बिना कारन के नहीं होता. मानी हुई बात है कि नफ़रत, गुस्सा और हिंसा शक्तियाँ हैं और यही वह शक्तियाँ हैं जो आदमी को हैवानी और खूनी हरकतें करने पर मजबूर करती हैं. तलवार इन शक्तियों को लोगों के दिलों में डर बैठा कर दबा सकती है. सदाचार के पंडितों का दावा है कि यह शक्तियाँ मानव प्रेम की शक्ति से भी दबाई जा सकती हैं. जहाँ तक उन साम्प्रदायिक तूफ़ानों का सम्बन्ध है जो बापू के आखिरी जीवन में देश के बँटवारे से पैदा हुए वहाँ तक हम सब जानते हैं कि हुकूमतों की पुलिस और फ़ौजें उन तूफ़ानों को दबाने में नाकाम साबित हो रही थीं. बापू उस संकट के समय अपने विश्वास से काम लेकर उस तूफ़ान को अपने हथियारों से दबाने के लिये निकल पड़े. नोआखाली में वह पुलिस और फ़ौज के बजाय मुट्ठी भर निहत्थे मर्दों और

ودیشی طاقتوں کی چالوں سے ملک کو نہ بچا سکتے تھے، بالکل زبردستی ہے. کوئی آدمی جو تھوڑا بہت بھی انصاف اور سمجھ سے کام لے اس طرح کی بات نہیں کہہ سکتا.

جہاں تک دیش کے اندر بنا فوج اور پولس کے امن امان قائم رکھنے کا سوال ہے وہاں تک باپو نے راج کاج سے بھی بڑھ کر ثبوت مانو پریم کی شکتی اور آتم بل کے کارناموں کے دئیے ہیں. باپو کے جیون کے آخری دنوں کے چمتکار، اس سمے جب کہ سامپردایک طوفان اپنی چوٹی پر تھا، دنیا کے کسی بھی آدمی کو پریم کی شکتی اور آتم بل میں وشواس دلانے کے لئے کافی ہے. ہمارے پچھمی استادوں نے ہمیں دنیا کا یہ ایک بنیادی اصول سمجھایا ہے کہ کوئی کام بنا کارن کے نہیں ہوتا. مانی ہوئی بات ہے کہ نفرت، غصہ اور ہنسا شکتیاں ہیں اور یہی وہ شکتیاں ہیں جو آدمی کو حیوانی اور خونی حرکتیں کرنے پر مجبور کرتی ہیں. تلوار ان شکتیوں کو لوگوں کے دلوں میں ڈر بٹھا کر دبا سکتی ہے. سداچار کے پنڈتوں کا دعویٰ ہے کہ یہ شکتیاں مانو پریم کی شکتی سے بھی دبائی جا سکتی ہیں. جہاں تک ان سامپردایک طوفانوں کا سمبندھ ہے جو باپو کے آخری جیون میں دیش کے بٹوارے سے پیدا ہوئے وہاں تک ہم سب جانتے ہیں کہ حکومتوں کی پولس اور فوجیں ان طوفانوں کو دبانے میں ناکام ثابت ہو رہی تھیں. باپو اس سنکٹ کے سمے اپنے وشواس سے کام لے کر اس طوفان کو اپنے ہتھیاروں سے دبانے کے لئے نکل پڑے. نواکھالی میں وہ پولس اور فوج کے بجائے مٹھی بھر نہتے مردوں اور

औरतों को अपने साथ लेकर चले गये. उन्होंने वहाँ के लोगों की उनके घरों पर जाकर निस्वार्थ सेवा की. इन लोगों में बहके हुए और खून के प्यासे इन्सान और सहमे और दबे हुए मजलूम दोनों शामिल थे. बापू दोनों से मिले. उन्होंने दोनों की सेवा की. दोनों की मदद की. दोनों के दिलों को पिघलाया और बदला. थोड़े ही दिनों में उनके मानव प्रेम की शक्ति ने वहाँ की हवा पर इतना असर डाला कि जितना कोई दूसरी शक्ति न डाल सकती थी. बापू के इस असर को देख कर देश के बड़े से बड़े लोगों ने बापू की नैतिक शक्ति और आत्मबल का सिक्का माना.

बापू के इस असर को अगर हम एक साइन्स वाले की तरह देखें और समझें तो इसका यही मतलब है कि बापू की नैतिक और आत्मिक शक्तियों ने वहाँ के मुसलमानों के ग़लत जोश और हिन्दुओं के डर दोनों पर इतना गहरा असर डाला कि यह दोनों एक बहुत बड़े पैमाने पर ठंडे हो गये. ग़लत जोश, प्रेम और परेशानी में और डर, हिम्मत और धीरज में बदल गये. इससे एक ही नतीजा निकल सकता है वह यह कि नैतिक साइन्स के जानने वालों का जो दावा मानव प्रेम और आत्मबल की शक्ति के बारे में है वह ग़लत नहीं है.

इसके बाद दूसरी घटना हमें बिहार की मिलती है. बिहार के जुल्मों से बापू की बेचैनी और उनका दुख इतना बढ़ गया था कि उन्होंने नोआखाली ही से बिहार के लोगों को यह सन्देश भेजा कि अगर तुम लोग अपने इन कुकर्मों से बाज न आओगे तो मैं लाचार होकर अपनी जान दे दूँगा. इससे बढ़कर प्रेम और

عورتوں کو اپنے ساتھ لے کر چلے گئے. انھوں نے وہاں کے لوگوں کی ان کے گھروں پر جاکر نسوارتھ سیوا کی. ان لوگوں میں بہکے ہوئے اور خون کے پیاسے انسان اور سہمے اور دبے ہوئے مظلوم دونوں شامل تھے. باپو دونوں سے ملے. انھوں نے دونوں کی سیوا کی. دونوں کی مدد کی. دونوں کے دلوں کو پگھلایا اور بدلا. تھوڑے ہی دنوں میں ان کے مانو پریم کی شکتی نے وہاں کی ہوا پر اتنا اثر ڈالا کہ جتنا کوئی دوسری شکتی نہ ڈال سکتی تھی. باپو کے اس اثر کو دیکھ کر دیش کے بڑے سے بڑے لوگوں نے باپو کی نیتک شکتی اور آتم بل کا سکہ مانا.

باپو کے اس اثر کو اگر ہم ایک سائنس والے کی طرح دیکھیں اور سمجھیں تو اس کا یہی مطلب ہے کہ باپو کی نیتک اور آتمک شکتیوں نے وہاں کے مسلمانوں کے غلط جوش اور ہندوؤں کے ڈر دونوں پر اتنا گہرا اثر ڈالا کہ یہ دونوں ایک بہت بڑے پیمانے پر ٹھنڈے ہوگئے. غلط جوش، پریم اور پشیمانی میں اور ڈر، ہمت اور دھیرج میں بدل گئے. اس سے ایک ہی نتیجہ نکل سکتا ہے وہ یہ کہ نیتک سائنس کے جاننے والوں کا جو دعوا مانو پریم اور آتم بل کی شکتی کے بارے میں ہے وہ غلط نہیں ہے.

اس کے بعد دوسری گھٹنا ہمیں بہار کی ملتی ہے. بہار کے ظلموں سے باپو کی بے چینی اور ان کا دکھ اتنا بڑھ گیا تھا کہ انھوں نے نوآکھالی ہی سے بہار کے لوگوں کو یہ سندیش بھیجا کہ اگر تم لوگ اپنے ان ظلموں سے باز نہ آؤگے تو میں لاچار ہوکر اپنی جان دے دوں گا. اس سے بڑھ کر پریم اور

दर्द भरा दूसरा संदेश नहीं हो सकता. दुनिया जानती है कि बिहार के लोगों पर इस संदेश का इतना गहरा असर हुआ कि दुनिया की किसी दूसरी शक्ति का न हो सकता था. बिहार वालों के दिलों में बापू का जो प्रेम और आदर था उसका एक कारन वह सेवा थी जो बापू ने हिन्दुस्तान की और खास कर बिहार की की थी. बिहार की वह घटना नोआखाली से भी बढ़कर मानव प्रेम की शक्ति को साबित करती है. बिहार की घटना साबित करती है कि सैकड़ों मील की दूरी पर आत्मबल की शक्ति लाखों आदमियों के दिल को एक बारगी बदल सकती है. यह नतीजे पुलिस, फ़ौज या कोई भी हिंसा का साधन पैदा नहीं कर सकता था. यह इस बात का सबूत है कि मानव प्रेम की शक्ति तलवार की शक्ति से कहीं बढ़कर है.

यही सूरतें कलकत्ते और दिल्ली में दिखाई दीं. सब जगह इस एक ही तरह की घटनाओं से नैतिक साइन्स के जानने वालों का दावा सच्चा साबित होता है. इन सारी घटनाओं को हम जादू या करामात कह कर नहीं टाल सकते.

खास खास जगहों पर बापू का जो इस तरह असर पड़ा उसके अलावा सारे देश पर जो उन्होंने असर डाला वह भी हमारे सामने है. सारी दुनिया इस बात को मानती है कि साम्प्रदायिक तूफ़ान ने जो हालत उस समय पैदा कर रखी थी उसे बापू की मौत के सिवा कोई दूसरी शक्ति बदल न सकती थी. राज की फ़ौजें और पुलिस और दूसरी सारी कोशिशें बेकार साबित हो चुकी थीं. डर था कि अगर यह तूफ़ान और बढ़ा तो सारा मुल्क इसमें पड़

درد بھرا دوسرا سندیش نہیں ہو سکتا. دنیا جانتی ہے کہ بہار کے لوگوں پر اس سندیش کا اتنا گہرا اثر ہوا کہ دنیا کی کسی دوسری شکتی کا نہ ہو سکتا تھا. بہار والوں کے دلوں میں باپو کا جو پریم اور آدر تھا اس کا ایک کارن وہ سیوا تھی جو باپو نے ہندستان کی اور خاص کر بہار کی کی تھی. بہار کی وہ گھٹنا نواکھالی سے بھی بڑھ کر مانو پریم کی شکتی کو ثابت کرتی ہے. بہار کی گھٹنا ثابت کرتی ہے کہ سیکڑوں میل کی دوری پر آتم بل کی شکتی لاکھوں آدمیوں کے دل کو ایک بارگی بدل سکتی ہے. یہ نتیجے پولس، فوج یا کوئی بھی ہنسا کا سادھن پیدا نہیں کر سکتا تھا. یہ اس بات کا ثبوت ہے کہ مانو پریم کی شکتی تلوار کی شکتی سے کہیں بڑھ کر ہے.

یہی صورتیں کلکتے اور دلی میں دکھائی دیں. سب جگہ اس ایک ہی طرح کی گھٹناؤں سے نیتک سائنس کے جاننے والوں کا دعوا سچا ثابت ہوتا ہے. اس ساری گھٹناؤں کو ہم جادو یا کرامات کہہ کر نہیں ٹال سکتے.

خاص خاص جگہوں پر باپو کا جو اس طرح اثر پڑا اس کے علاوہ سارے دیش پر جو انھوں نے اثر ڈالا وہ بھی ہمارے سامنے ہے. ساری دنیا اس بات کو مانتی ہے کہ سامپردایک طوفان نے جو حالت اس سمے پیدا کر رکھی تھی اُسے باپو کی موت کے سوا کوئی دوسری شکتی بدل نہ سکتی تھی. راج کی فوجیں اور پولس اور دوسری ساری کوششیں بیکار ثابت ہو چکی تھیں. ڈر تھا کہ اگر یہ طوفان اور بڑھا تو سارا ملک اس میں پڑ

कर बरबाद हो जावेगा. इस सब के बाद भी अगर किसी को मानव प्रेम और आत्मबल की शक्ति में विश्वास न हो तो कमी इसमें उस आदमी की समझ की है.

देश का हर आदमी इस बात को मानता है कि अगर बापू अपने आपको क़ुरबान न करते तो देश, कांग्रेस और राज सबका खातमा होगया होता. फिर जब मानव प्रेम ऐसी तूफ़ानी हालत में देश को इस तरह बचा सकता है तो अगर इसी शक्ति के बड़े से बड़े पैमाने पर देश के कोने कोने में संगठन पैदा कर दिये जावें तो क्या यह संगठन देश में अमन अमान क़ायम नही रख सकते ? अगर एक महान त्यागी अकेला करोड़ों आदमियों के शैतानी भावों को ऐसे जोश और पागलपन के दिनों में इंसानियत के भावों में बदल दे सकता है तो क्या लाखों आदमी मिल कर कामयाबी के साथ मुल्क में अमन अमान बनाये न रख सकेंगे ? ज़रूरत केवल इस बात की है कि उन लाखों आदमियों को अपने अंदर मानव प्रेम पैदा करने और उसे काम में लाने की तालीम ठीक उसी तरह और उसी पैमाने पर दी जाय जिस तरह और जिस पैमाने पर हिंसा के सिपाहियों को तलवार चलाने और ख़ून बहाने की तालीम दी जाती है. हर आदमी के अंदर इंसानियत और हैवानियत दोनों मौजूद हैं. जिस तरह हम अपने स्कूलों और अपनी सारी ज़िन्दगी में जाने और अनजाने इतने बड़े पैमाने पर हैवानियत पैदा कर सकते हैं तो क्या हम इन्हीं स्कूलों की तालीम के ढंग को जड़ से बदल कर और उसी तरह अपने जीवन के हैवानी पहलुओं की जगह इन्सानी पहलू क़ायम करके इन्सानियत पैदा नहीं कर सकते ?

کر برباد ہو جاوے گا. اس سب کے بعد بھی اگر کسی کو مانو پریم اور آتم بل کی شکتی میں وشواس نہ ہو تو کمی اس میں اس آدمی کی سمجھ کی ہے.

دیش کا ہر آدمی اس بات کو مانتا ہے کہ اگر باپو اپنے آپ کو قربان نہ کرتے تو دیش، کانگریس اور راج سب کا خاتمہ ہو گیا ہوتا. پھر جب مانو پریم ایسی طوفانی حالت میں دیش کو اس طرح بچا سکتا ہے تو اگر اسی شکتی کے بڑے سے بڑے پیمانے پر دیش کے کونے کونے میں سنگٹھن پیدا کر دیئے جاویں تو کیا یہ سنگٹھن دیش میں امن امان قائم نہیں رکھ سکتے؟ اگر ایک مہان تیاگی اکیلا کروڑوں آدمیوں کے شیطانی بھاووں کو ایسے جوش اور پاگل پن کے دنوں میں انسانیت کے بھاووں میں بدل دے سکتا ہے تو کیا لاکھوں آدمی مل کر کامیابی کے ساتھ ملک میں امن امان بنائے نہ رکھ سکیں گے؟ ضرورت کیول اس بات کی ہے کہ ان لاکھوں آدمیوں کو اپنے اندر مانو پریم پیدا کرنے اور اسے کام میں لانے کی تعلیم ٹھیک اسی طرح اور اسی پیمانے پر دی جائے جس طرح اور جس پیمانے پر ہنسا کے سپاہیوں کو تلوار چلانے اور خون بہانے کی تعلیم دی جاتی ہے. ہر آدمی کے اندر انسانیت اور حیوانیت دونوں موجود ہیں. جس طرح ہم اپنے اسکولوں اور اپنی ساری زندگی میں جانے اور ان جانے اتنے بڑے پیمانے پر حیوانیت پیدا کر سکتے ہیں تو کیا ہم انہیں اسکولوں کی تعلیم کے ڈھنگ کو جڑ سے بدل کر اور اسی طرح اپنے جیون کے حیوانی پہلوؤں کی جگہ انسانی پہلو قائم کر کے انسانیت پیدا نہیں کر سکتے؟

इन सवालों के जवाब में एक ही बात कही जाती है. वह यह कि बापू महात्मा थे. तो क्या महात्मा आदमी नहीं होता ? क्या वह देवता या फ़रिश्ता होता है ? पर हमारा सवाल तो उन पढ़े लिखे लोगों से है जो साइंस के तरीक़े से सोचते हैं और जो देवता फ़रिश्ते क्या ईश्वर तक को नहीं मानते. जब आदमी के सिवाय और उससे बढ़कर और कोई है ही नहीं तो बापू केवल एक आदमी थे. सवाल यह है कि उस आदमी में यह शक्ति कहाँ से आई ? ज़ाहिर है कि यह उसकी तालीम और तरबियत से ही पैदा हुई होगी. क्योंकि और कोई सूरत तो इसके पैदा होने की हो ही नहीं सकती थी. इसके अलावा हर धर्म मज़हब की ख़ास ख़ास किताबें एक स्वर से इस शक्ति की चर्चा करती हैं और इसके पैदा करने और काम में लाने के ढंग बताती हैं. क्या वह सब ग़लत और बे बुनियाद हैं ? बापू ख़ुद कहते थे कि उन्हें इस शक्ति का पता और इसके बढ़ाने और काम में लाने के तरीक़े इन्हीं धर्म पुस्तकों से मालूम हुए और इन्हीं धर्म पुस्तकों के बताए हुए रास्तों पर चलकर उन्होंने इस शक्ति को अपने अन्दर पैदा किया और इतना बढ़ाया. तो क्या बापू यह सब बातें दुनिया को बहकाने और धोका देने को कहा करते थे ? आख़िर इस बहकाने से उन्हें क्या फ़ायदा हो सकता था ? और अगर उनकी यह सब बातें सच थीं तो क्या हमें उनसे फ़ायदा नहीं उठाना चाहिये.

यह कहना कि हरेक बापू नहीं हो सकता, अव्वल तो वैज्ञानिक निगाह से बिलकुल बेमानी है, दूसरे अगर हम यह मान भी लें तो क्या हम सब छोटे छोटे हज़ारों गांधी नहीं बन सकते ? और

ان سوالوں کے جواب میں ایک ہی بات کہی جاتی ہے۔ وہ یہ کہ باپو مہاتما تھے۔ تو کیا مہاتما آدمی نہیں ہوتا؟ کیا وہ دیوتا یا فرشتہ ہوتا ہے؟ پر ہمارا سوال تو اُن پڑھے لکھے لوگوں سے ہے جو سائنس کے طریقے سے سوچتے ہیں اور جو دیوتا فرشتے کیا ایشور تک کو نہیں مانتے۔ جب آدمی کے سوائے اور اس سے بڑھ کر اور کوئی ہے ہی نہیں تو باپو کیول ایک آدمی تھے۔ سوال یہ ہے کہ اس آدمی میں یہ شکتی کہاں سے آئی؟ ظاہر ہے کہ یہ اس کی تعلیم اور تربیت سے ہی پیدا ہوئی ہوگی۔ کیوں کہ اور کوئی صورت تو اس کے پیدا ہونے کی ہو ہی نہیں سکتی تھی۔ اس کے علاوہ ہر دھرم مذہب کی خاص خاص کتابیں ایک سور سے اس شکتی کی چرچا کرتی ہیں اور اس کے پیدا کرنے اور کام میں لانے کے ڈھنگ بتاتی ہیں۔ کیا وہ سب غلط اور بے بنیاد ہیں؟ باپو خود کہتے تھے کہ انھیں اس شکتی کا پتہ اور اس کے بڑھانے اور کام میں لانے کے طریقے انھیں دھرم پستکوں سے معلوم ہوئے اور انھیں دھرم پستکوں کے بتائے ہوئے راستوں پر چل کر انھوں نے اس شکتی کو اپنے اندر پیدا کیا اور اتنا بڑھایا۔ تو کیا باپو یہ سب باتیں دنیا کو بہکانے اور دھوکہ دینے کو کہا کرتے تھے؟ آخر اس بہانے سے انھیں کیا فائدہ ہو سکتا تھا؟ اور اگر ان کی یہ سب باتیں سچ تھیں تو کیا ہمیں ان سے فائدہ نہیں اٹھانا چاہیے۔

یہ کہنا کہ ہر ایک باپو نہیں ہو سکتا، اوّل تو ویگیانک نگاہ سے بالکل بے بنیاد ہے، دوسرے اگر ہم یہ مان بھی لیں تو کیا ہم سب چھوٹے چھوٹے ہزاروں گاندھی نہیں بن سکتے؟ اور

क्या इन सब हज़ारों गांधियों की मिली हुई कोशिश हमारे मतलब के लिये काफ़ी न हो जायगी. क्या और गांधी पैदा करने में इतनी कठिनाई इसीलिये नहीं है कि दुनिया अपनी सारी शक्ति हिटलर, मुसोलिनी और स्टैलिन पैदा करने में ख़र्च कर रही है ? दुनिया ने अपने सारे रीत रिवाज, क़ायदे क़ानून, खेल तमाशे, स्कूल कालिज और जीवन के सब कारबार उन्हीं असूलों पर क़ायम कर रखे हैं जिनसे हिटलर और मुसोलिनी पैदा होते हैं. क्या इन सब चीज़ों, संस्थाओं और उनके बुनियादी असूलों का बदल देना नामुमकिन है ? और क्या मानव प्रेम के इन चमत्कारों और नतीजों को देखते हुए भी हमें इस तरफ़ अमली क़दम नहीं बढ़ाना चाहिये ?

हमारा ख़याल है कि कांग्रेस और हुकूमत को बापू के जीवन और उनकी क़ुर्बानी को इस तरह भुलाना नहीं चाहिये, उन्हें उनसे फ़ायदा उठाना चाहिये.

लेकिन यह साफ़ ज़ाहिर है कि यह कोई आसान बात नहीं है. पच्छिमी तहज़ीब ने हमारे सारे पढ़े लिखे लोगों पर एक गहरा और ख़ास असर डाल रखा है. इसके साथ साथ हमारे मुल्क के क्या भीतरी और क्या दूसरे मुल्कों से ताल्लुक़ रखने वाले बाहरी मामले बहुत ज़्यादा पेचीदा हो गये हैं. इन पेचीदगियों ने हमारी ज़िन्दगी के हर पहलू को ही राजकाजी भँवरों में फँसा दिया है. इन सबसे निकल सकने की कोई सूरत आसानी से दिखलाई नहीं पड़ती है. इस तरह हमारे पढ़े-लिखे और राज काज में लगे हुए लोग अपनी उलझनों में बुरी तरह डूब गये हैं. मगर मुसीबत कुछ और भी है. वह यह कि हमारी अपनी पुरानी

کیا ان سب ہزاروں گاندھیوں کی ملی ہوئی کوشش ہمارے مطلب کے لئے کافی نہ ہو جائے گی۔ کیا اور گاندھی پیدا کرنے میں اتنی کٹھنائی اسی لئے نہیں ہے کہ دنیا اپنی ساری شکتی ہٹلر، مسولینی اور اسٹیلن پیدا کرنے میں خرچ کر رہی ہے؟ دنیا نے اپنے سارے ریت رواج، قاعدے قانون، کھیل تماشے، اسکول کالج اور جیون کے سب کاروبار انھیں اصولوں پر قائم کر رکھے ہیں جن سے ہٹلر اور مسولینی پیدا ہوتے ہیں۔ کیا ان سب چیزوں، سنستھاؤں اور ان کے بنیادی اصولوں کا بدل دینا ناممکن ہے؟ اور کیا مانو پریم کے ان چمتکاروں اور نتیجوں کو دیکھتے ہوئے بھی ہمیں اس طرف عملی قدم نہیں بڑھانا چاہیے؟

ہمارا خیال ہے کہ کانگریس اور حکومت کو باپو کے جیون اور ان کی قربانی کو اس طرح بھلانا نہیں چاہیے، انھیں ان سے فائدہ اٹھانا چاہیے۔

لیکن یہ صاف ظاہر ہے کہ یہ کوئی آسان بات نہیں ہے۔ پچھمی تہذیب نے ہمارے سارے پڑھے لکھے لوگوں پر ایک گہرا اور خاص اثر ڈال رکھا ہے۔ اس کے ساتھ ساتھ ہمارے ملک کے کیا بھیتری اور کیا دوسرے ملکوں سے تعلق رکھنے والے باہری معاملے بہت زیادہ پیچیدہ ہو گئے ہیں۔ ان پیچیدگیوں نے ہماری زندگی کے ہر پہلو کو ہی راج کاجی بھنوروں میں پھنسا دیا ہے۔ ان سب سے نکل سکنے کی کوئی صورت آسانی سے دکھلائی نہیں پڑتی ہے۔ اس طرح ہمارے پڑھے لکھے اور راج کاج میں لگے ہوئے لوگ اپنی الجھنوں میں بری طرح ڈوب گئے ہیں۔ مگر مصیبت کچھ اور بھی ہے۔ وہ یہ کہ ہماری اپنی پرانی

सभ्यता का सारा झुकाव राजनीति से परे था. उसका ज़ोर इसी पर था कि आम लोग राज काज को नज़र अन्दाज़ करें और उससे अलग रह कर अपना काम संभालें. इन सब बातों ने बापू की ज़िन्दगी से पूरा फ़ायदा उठाने के रास्ते में गहरी दुशवारियाँ पैदा कर दी हैं.

इसके अलावा एक दुशवारी और भी है. बापू एक सम्पूर्ण या मुकम्मल आदमी थे. उनकी ज़िन्दगी में सब ही पहलू और निशान—चाहे वह समाजी हों चाहे राजकाजी, चाहे एख़लाक़ी और चाहे आत्मिक या रूहानी—अपनी ऊँचाई और बुलन्दी पर मौजूद रहते थे, और एक ही वक़्त में एक साथ मौजूद रहते थे. इन सब में एक अनोखा तवाज़ुन या समतोल रहता था. बापू का काम करने का ढंग कुछ ऐसा निराला था कि इनमें से कोई भी पहलू कभी नज़रअन्दाज़ नहीं होता था. मगर उनके प्रेमियों और पैरोकारों में यह समतोल पैदा न हो सका. इसलिये वह इन पहलुओं में से किसी एक ही की तरक़्क़ी और सुधार को अपना मक़सद और फ़र्ज़ बना लेने पर मजबूर होते रहे. ज़िन्दगी के दूसरे पहलुओं से उनका कोई ताल्लुक़ ही बाक़ी न रहा. नतीजा यह है कि ज़िन्दगी की एकाई की जो तस्वीर बापू के सामने थी, इनमें पैदा न हुई. इसी वजह से किसी एक मरकज़ पर पूरी तरह से जम सकना और मिल कर उस पर जुट जाना इनके लिये नामुमकिन हो गया.

असल बात यह है कि बापू ने अपनी ज़िन्दगी के अलग अलग पहलुओं में एक ऐसा घुलामिला और मुकम्मल समतोल पैदा

سبھیتا کا سارا جھکاؤ راج نیتی سے پرے تھا۔ اس کا زور اسی پر تھا کہ عام لوگ راج کاج کو نظر انداز کریں اور اس سے الگ رہ کر اپنا کام سنبھالیں۔ ان سب باتوں نے باپو کی زندگی سے پورا فائدہ اٹھانے کے راستے میں گہری دشواریاں پیدا کر دی ہیں۔

اس کے علاوہ ایک دشواری اور بھی ہے۔ باپو ایک سمپورن یا مکمل آدمی تھے۔ ان کی زندگی میں سب ہی پہلو اور نشان — چاہے وہ سماجی ہوں چاہے راج کاجی، چاہے اخلاقی اور چاہے آتمک یا روحانی — اپنی اونچائی اور بلندی پر موجود رہتے تھے، اور ایک ہی وقت میں ایک ساتھ موجود رہتے تھے۔ ان سب میں ایک انوکھا توازن یا سمتول رہتا تھا۔ باپو کا کام کرنے کا ڈھنگ کچھ ایسا نرالا تھا کہ ان میں سے کوئی بھی پہلو کبھی نظر انداز نہیں ہوتا تھا۔ مگر ان کے پریمیوں اور پیروکاروں میں یہ سمتول پیدا نہ ہو سکا۔ اس لئے وہ ان پہلوؤں میں سے کسی ایک ہی کی ترقی اور سدھار کو اپنا مقصد اور فرض بنا لینے پر مجبور ہوتے رہے۔ زندگی کے دوسرے پہلوؤں سے ان کا کوئی تعلق ہی باقی نہ رہا۔ نتیجہ یہ ہے کہ زندگی کی اکائی کی جو تصویر باپو کے سامنے تھی، ان میں پیدا نہ ہوئی۔ اسی وجہ سے کسی ایک مرکز پر پوری طرح سے جم سکنا اور مل کر اس پر جٹ جانا ان کے لئے ناممکن ہو گیا۔

اصل بات یہ ہے کہ باپو نے اپنی زندگی کے الگ الگ پہلوؤں میں ایک ایسا گھلا ملا اور مکمل سمتول پیدا

किया था जिसकी मिसाल दुनिया के इतिहास में मिलना मुश्किल है. उनके सामने इन्सानी जिन्दगी एक इकाई थी जिसकी एक मजमूई हस्ती है. उनका खयाल था कि अगर हम इसके टुकड़े कर देंगे तो इसकी असलियत को और इसके झुकाव को नहीं समझ सकेंगे और न हम इससे पूरा फायदा ही उठा पायेंगे. हमारे जिस्म की तरह जिन्दगी भी एक मुकम्मल हस्ती है जिसमें रूह या जान है. इसके हर हिस्से का एक दूसरे के साथ वैसा ही नाता है जैसा हाड़ मांस में या खून और बदन में होता है. नैतिकता या अखलाकियात और आध्यात्मिकता यानी रूहानियात को इन्सानी जिन्दगी में बापू वही जगह देते थे जो बदन में दिमाग और रीढ़ की हड्डी की है. इस लिये जिन्दगी के किसी पहलू से भी नाता अलग कर देने की कोशिश करना या इसके किसी एक खास पहलू पर ही अपना सारा ध्यान व ताकत लगा देने का नतीजा उनकी राय में यह होगा कि हम अपनी बढ़ोती के असली रास्ते से भटक जायेंगे.

यह बापू की बुनियादी तालीम थी. लेकिन हम इस तालीम से पूरा फायदा न उठा सके. नतीजा यह हुआ कि बापू के प्रेमियों में से वह लोग, जिन्होंने रूहानियात को अपना मकसद बनाया, समाजी और राजकाजी झंझटों से एक दम अलग हो गये. उन्होंने अपने सामने जिन्दगी का एक ही मकसद रखा—आध्यात्मिक तरक्की.

बापू इस दुनिया और उस दुनिया में कोई भेद नहीं करते थे. उनके सामने जिन्दगी और मौत अलग अलग चीजें नहीं थीं. वह

کرلیا تھا جس کی مثال دنیا کے اتہاس میں ملنا مشکل ہے. اُن کے سامنے انسانی زندگی ایک اکائی تھی جس کی ایک مجموعی ہستی ہے. اُن کا خیال تھا کہ اگر ہم اس کے ٹکڑے کر دیں گے تو اس کی اصلیت کو اور اس کے جھکاؤ کو نہیں سمجھ سکیں گے. اور نہ ہم اس سے پورا فائدہ ہی اُٹھا پائیں گے. ہمارے جسم کی طرح زندگی بھی ایک مکمل ہستی ہے جس میں رُوح یا جان ہے. اس کے ہر حصے کا ایک دوسرے کے ساتھ ویسا ہی ناتا ہے جیسا ہاڑ مانس میں یا خون اور بدن میں ہوتا ہے. نیتکتا یا اخلاقیات اور آدھیاتمکتا یعنی روحانیت کو انسانی زندگی میں باپو وہی جگہ دیتے تھے جو بدن میں دماغ اور ریڑھ کی ہڈی کی ہے. اس لئے زندگی کے کسی پہلو سے بھی ناتا الگ کر دینے کی کوشش کرنا یا اس کے کسی ایک خاص پہلو پر ہی اپنا سارا دھیان و طاقت لگا دینے کا نتیجہ اُن کی رائے میں یہ ہوگا کہ ہم اپنی بڑھوتی کے اصلی راستے سے بھٹک جائیں گے.

یہ باپو کی بنیادی تعلیم تھی. لیکن ہم اس تعلیم سے پورا فائدہ نہ اُٹھا سکے. نتیجہ یہ ہوا کہ باپو کے پریمیوں میں سے وہ لوگ، جنھوں نے روحانیت کو اپنا مقصد بنایا، سماجی اور راج کاجی جھنجھٹوں سے ایک دم الگ ہو گئے. انھوں نے اپنے سامنے زندگی کا ایک ہی مقصد رکھا— آدھیاتمک ترقی.

باپو اس دنیا اور اُس دنیا میں کوئی بھید نہیں کرتے تھے. اُن کے سامنے زندگی اور موت الگ الگ چیزیں نہیں تھیں. وہ

ज़िन्दगी और मौत को ही नहीं बल्कि कुल सृष्टि की वहदत (एकता) का एक ऐसा समूचा और सच्चा स्वरूप मानते थे कि जिसमें पिछले या अगले की कोई गुन्जाइश ही नहीं थी. उनके ख़याल में इस वहदत का एक मुकम्मल वजूद है जो न बाँटा जा सकता है न जिसकी कोई हद है और न जो मारा या मिटाया ही जा सकता है. उनको यह भी विश्वास था कि इस संसार व्यापी और अमर स्वरूप के अन्दर इन्सान की भलाई और तरक़्क़ी का चाहे वह दीन की हो चाहे दुनिया की, एक ही रास्ता है—त्याग सेवा और प्रेम. ज्ञान, भक्ति और कर्मयोग बापू के लिये अखन्ड थे. इसलिये ज़िन्दगी की कशमकश से दूर भागना चाहे वह रूहानी मक़सदों के हासिल करने के लिये ही क्यों न हो—बापू की सीधी राह से भटक जाना था.

इसी तरह बापू के प्रेमियों का एक दूसरा गिरोह था जिसने रचनात्मक प्रोग्राम को चलाना अपना मक़सद बना लिया. वह भी असली राजनीति के दायरे से बाहर हो गया. इस गिरोह के लिये बापू यह चाहते थे कि यह राजकाजी ज़िन्दगी की असहयोग वाली झंझटों और एख़लाक़ी गिरावटों से अलग रहे. इससे उनका यह मंशा था कि यह हिस्सा उनके आन्दोलनों की नैतिक या एख़लाक़ी सतहों को ऊँचा रखने का फ़र्ज़ अदा कर सकेगा. मगर नतीजा यह हुआ कि इन लोगों ने रचनात्मक काम को असली राजनीति के दायरे से बाहर समझ लिया. हुकूमत के सीधे सुधार की कोशिश करना या उसकी पालिसियों को अपने असूलों और आदर्शों के मुताबिक़ पाबन्द बनाने के लिये उसे मजबूर करना—

زندگی اور موت کو ہی نہیں بلکہ کل سرشٹی کو وحدت (ایکتا) کا ایک ایسا سموچا اور سچا سروپ مانتے تھے کہ جس میں پچھلے یا اگلے کی کوئی گنجائش ہی نہیں تھی۔ اُن کے خیال میں اس وحدت کا ایک مکمل وجود ہے جو نہ بانٹا جاسکتا ہے اور نہ جسکی کوئی حد ہے اور نہ جو مارا یا مٹایا ہی جاسکتا ہے۔ اُنکو یہ بھی وشواس تھا کہ اس سنسار بیاپی اور امر سروپ کے اندر انسان کی بھلائی اور ترقی کا چاہے وہ دین کی ہو چاہے دنیا کی، ایک ہی راستہ ہے— تیاگ، سیوا اور پریم۔ گیان، بھکتی اور کرم یوگ باپو کے لئے اکھنڈ تھے۔ اس لئے زندگی کی کش مکش سے دور بھاگنا۔ چاہے وہ روحانی مقصدوں کے حاصل کرنے کے لئے ہی کیوں نہ ہو— باپو کی سیدھی راہ سے بھٹک جانا تھا۔

اسی طرح باپو کے پریمیوں کا ایک دوسرا گروہ تھا جس نے رچناتمک پروگرام کو چلانا اپنا مقصد بنا لیا۔ وہ بھی اصلی راج نیتی کے دائرے سے باہر ہوگیا۔ اس گروہ کے لئے باپو یہ چاہتے تھے کہ یہ راج کاجی زندگی کی اسہیوگ والی جھنجھٹوں اور اخلاقی گراوٹوں سے الگ رہے۔ اس سے اُن کا یہ منشا تھا کہ یہ حصہ اُن کے اندولنوں کی نیتک یا اخلاقی سطحوں کو اونچا رکھنے کا فرض ادا کر سکے گی۔ مگر نتیجہ یہ ہوا کہ ان لوگوں نے رچناتمک کام کو اصلی راج نیتی کے دائرے سے باہر سمجھ لیا۔ حکومت کے سیدھے سدھار کی کوشش کرنا یا اُس کی پالیسیوں کو اپنے اصولوں اور آدرشوں کے مطابق پابند بنانے کے لئے اُسے مجبور کرنا—

उनके खयाल में रचनात्मक काम का कोई असली हिस्सा नहीं था. उनके इस खयाल ने, जैसा कि हम कह चुके हैं, रचनात्मक प्रोग्रामों को नीरस और बेजान कर दिया.

जब तक बापू जिन्दा थे और परदेसी सरकार से लड़ाई जारी थी हमारे इस नासमझी के खतरनाक नतीजे साफ़ साफ़ सामने न आ सके, लेकिन हमारी आज की हालत साफ़ बताती है कि हम बापू के असली असूलों और मक़सदों से कितने दूर हो गये हैं. बापू अपने व्यवहारिक जीवन में तो सर से पाँव तक राजनिति की लड़ाइयों में या इनकी तैयारियों में डूबे रहते थे. जब तक विदेशी राज क़ायम था बापू का कहना था कि मैं अपनी जिन्दगी का एक एक छन इस हुकूमत से लड़ने में या लड़ने की तैयारी में खर्च करता रहता हूँ, क्योंकि जब तक मुल्क को आज़ादी न मिल जाय मेरे लिये जिन्दगी और यह जंग दोनों एक हैं. इनमें से किसी को भी मैं एक छन के लिये नज़र अन्दाज़ नहीं करता. यह ज़रूर है कि ज़रूरत के लिहाज़ से मेरे प्रोग्रामों के रूप बदलते रहते हैं. हम यह भी जानते हैं कि मरते दम तक उनकी यह जंग बराबर जारी रही. उनकी आखिरी वसीयत इस बात का सबूत है. इसकी प्रस्तावना में उन्होंने कहा है कि अब तक मुल्क को असली आज़ादी किसी माने में भी हासिल नहीं हुई है. और इसकी खातिर हमें अपनी जंग को बराबर जारी रखना है.

बापू का कहना था कि अगर कोई मेरे असूलों और काम करने के ढंगों को पूरी तरह समझना चाहे तो वह मेरी बातों पर नहीं बल्कि मेरे कामों पर ध्यान दे. अगर वह इन्हें पूरी तरह समझ

ان کے خیال میں رچناتمک کام کا کوئی اصلی حصّہ نہیں تھا. انکے اس خیال نے، جیسا کہ ہم کہہ چکے ہیں، رچناتمک پروگراموں کو نیرس اور بے جان کر دیا.

جب تک باپو زندہ تھے اور پردیسی سرکار سے لڑائی جاری تھی ہماری اس ناسمجھی کے خطرناک نتیجے صاف صاف سامنے نہ آسکے. لیکن ہماری آج کی حالت صاف بتاتی ہے کہ ہم باپو کے اصلی اصولوں اور مقصدوں سے کتنے دور ہوگئے ہیں. باپو اپنے دیوہارک جیون میں تو سر سے پاؤں تک راج نیتی کی لڑائیوں میں یا اُن کی تیاریوں میں ڈوبے رہتے تھے. جب تک ودیشی راج قائم تھا باپو کا کہنا تھا کہ میں اپنی زندگی کا ایک ایک چھن اس حکومت سے لڑنے میں یا لڑنے کی تیاری میں خرچ کرتا رہتا کیونکہ جب تک ملک کو آزادی نہ مل جائے میرے لئے زندگی اور یہ جنگ دونوں ایک ہیں. ان میں سے کسی کو بھی میں ایک چھن کے لئے نظر انداز نہیں کرتا. یہ ضرور ہے کہ ضرورت کے لحاظ سے میرے پروگراموں کے روپ بدلتے رہتے ہیں. ہم یہ بھی جانتے ہیں کہ مرتے دم تک اُن کی یہ جنگ برابر جاری رہی. اُن کی آخری وصیّت اس بات کا ثبوت ہے. اسکی پرستاؤنا میں انھوں نے کہا ہے کہ اب تک ملک کو اصلی آزادی کسی معنے میں بھی حاصل نہیں ہوئی ہے. اور اسکی خاطر ہمیں اپنی جنگ کو برابر جاری رکھنا ہے.

باپو کا کہنا تھا کہ اگر کوئی میرے اصولوں اور کام کرنے کے ڈھنگوں کو پوری طرح سمجھنا چاہے تو وہ میری باتوں پر نہیں بلکہ میرے کاموں پر دھیان دے. اگر وہ انھیں پوری طرح سمجھ

लेगा तो मेरी जिन्दगी का सारा असर उसकी समझ में आ जायगा. फिर अगर हम बापू की जिन्दगी में से उसका राजनीति से ताल्लुक रखने वाला हिस्सा निकाल दें तो वह बेजान सी रह जाती है और अधूरी तो हो ही जाती है. इसमें जरा भी शक नहीं कि बापू खुद राजनीति से बहुत दूर ऊंचे और पहुंचे हुए थे. उनका सर हमेशा आकाश की ऊंचाइयों से टक्करें लेता था लेकिन इसमें भी शक नहीं कि उनके पैर धरती पर ऐसे जमे रहते थे कि व्यवहारिता या अमलियत (Practicalism) वास्तविकता या असलियत (Realism) और भौतिकता या माद्दियत (Materialism) के बड़े से बड़े पुजारी उनके सामने हमेशा झुकते रहते थे. उनके जीवन के राजकाजी पहलुओं को ओझल करना एक सुघड़, सुन्दर और अमिट तसवीर को बिगाड़ देना और उजाड़ देना है. यह ऐसा ही है जैसे हम किसी इन्सान के जिस्म से गोश्त, पोस्त, रग-पुट्ठे सब निकाल कर उसकी हड्डियों के पिंजर को अपने सामने रख कर असली चीज समझ लें. बापू राष्ट्र के सुधारक और हर इन्सान के सेवक थे. दुनिया की हालत इस वक्त ऐसी हो गई है कि हमारे असली जीवन की सच्ची इसलाह बिना राजकाजी सुधार के नहीं हो सकती. अगर बापू राजकाजी सुधार को अपना खास मकसद न बनाते तो इससे उनके सारे मिशन का ही खातमा हो जाता. सच तो यह है कि बापू के जीवन के इस पहलू को हमने वह जगह दी ही न दी जो इसे मिलनी चाहिये थी. इसलिये हम बापू के रचनात्मक प्रोग्राम के असली मकसद से बहुत दूर हो गये हैं.

لے تو میری زندگی کا سارا اثر اُس کی سمجھ میں آجائے گا۔ پھر اگر ہم باپو کی زندگی میں سے اُس کا راج نیتی سے تعلق رکھنے والا حصّہ نکال دیں تو وہ بے جان سی رہ جاتی ہے اور ادھوری تو ہو ہی جاتی ہے۔ اس میں ذرا بھی شک نہیں کہ باپو خود راج نیتی سے بہت دور اونچے اور پہنچے ہوئے تھے۔ اُن کا سر ہمیشہ آکاش کی اونچائیوں سے ٹکریں لیتا تھا لیکن اس میں بھی شک نہیں کہ اُن کے پیر دھرتی پر ایسے جمے رہتے تھے کہ ویوہارکتا یا عملیت (PRACTICALISM) واستوکتا یا اصلیت (REALISM) اور بھوتکتا یا مادیت (MATIRIALISM) کے بڑے سے بڑے پجاری اُن کے سامنے ہمیشہ جھکتے رہتے تھے۔ اُن کے جیون کے راج کاجی پہلوؤں کو اوجھل کرنا ایک سوگھڑ، سندر اور امٹ تصویر کو بگاڑ دینا اور اُجاڑ دینا ہے۔ یہ ایسا ہی ہے جیسے ہم کسی انسان کے جسم سے گوشت، پوست، رگ پٹھے سب نکال کر اس کی ہڈیوں کے پنجر کو اپنے سامنے رکھ کر اصلی چیز سمجھ لیں۔ باپو راشٹر کے سدھارک اور ہر انسان کے سیوک تھے۔ دنیا کی حالت اس وقت ایسی ہو گئی ہے کہ ہمارے اصلی جیون کی سچی اصلاح بنا راج کاجی سدھار کے نہیں ہو سکتی۔ اگر باپو راج کاجی سدھار کو اپنا خاص مقصد نہ بناتے تو اس سے اُن کے سارے مشن کا ہی خاتمہ ہو جاتا۔ سچ تو یہ ہے کہ باپو کے جیون کے اس پہلو کو ہم نے وہ جگہ دی ہی نہ دی جو اسے ملنی چاہئے تھی۔ اس لئے ہم باپو کے رچناتمک پروگرام کے اصلی مقصد سے بہت دور ہو گئے ہیں۔

मगर इससे भी ज़्यादा बदनसीबी की बात एक और हो गई. वह यह कि बापू के साथियों का तीसरा दल जो राजनीति में गया और जिसकी ताक़त दूसरे दलों से बहुत ही ज़्यादा थी, उस दल ने बापू की तालीमों और तरीक़ों को दिल से स्वीकार नहीं किया. पच्छिम का इसके ऊपर इतना गहरा और अमिट असर था कि बापू की कोशिश से वह मिट न सका. राजकाजी कामयाबी पाने और ताक़त मिलने के साथ साथ यह असर और भी गहरा रंग पकड़ता गया. बापू की मौत के वक़्त तक यह हालत बदल न सकी. इसका यह नतीजा है कि हमारे देश का राजकाजी रूप-रंग कुछ ऐसा हो रहा है मानो इस देश में बापू कभी पैदा ही नहीं हुए थे. असल बात यह है कि बापू की ज़िन्दगी का बेहतरीन हिस्सा इस गिरोह को मुल्क पर हावी बनाने की कोशिश में ख़र्च हुआ था. एक लम्बे अरसे तक अपने मक़सदों को हासिल करने की उनकी सारी उम्मीदें इसी गिरोह के साथ घुली-मिली रही थीं. और यही नहीं बल्कि अपने इन्हीं प्रेमियों को पीछे रख कर बापू अपने आप को हमेशा इसी दल पर क़ुरबान करते रहते थे. इसलिये देश की जनता पर भी यह ज़बरदस्त असर पड़ गया है कि यह दल बापू का सच्चा अनुयायी है. इसका नतीजा यह हुआ कि जब यह गिरोह बापू के असूलों और आदर्शों से हट कर पच्छिम का प्रेमी और अनुयायी बना तो बापू के मिशन के पूरा होने में वह दुश्वारियाँ और ख़तरे पैदा हो गये जो दुनिया की कोई दूसरी ताक़त पैदा न कर सकती थी. आज

مگر اس سے بھی زیادہ بدنصیبی کی بات ایک اور ہو گئی۔ وہ یہ کہ باپو کے ساتھیوں کا تیسرا دل جو راج نیتی میں گیا اور جس کی طاقت دوسرے دلوں سے بہت ہی زیادہ تھی، اس دل نے باپو کی تعلیموں اور طریقوں کو دل سے سویکار نہیں کیا۔ پچھم کا اس کے اوپر اتنا گہرا اور امٹ اثر تھا کہ باپو کی کوشش سے وہ مٹ نہ سکا۔ راج کاجی کامیابی پانے اور طاقت ملنے کے ساتھ ساتھ یہ اثر اور بھی گہرا رنگ پکڑتا گیا۔ باپو کی موت کے وقت تک یہ حالت بدل نہ سکی۔ اس کا یہ نتیجہ ہے کہ ہمارے دیش کا راج کاجی روپ رنگ کچھ ایسا ہو رہا ہے مانو اس دیش میں باپو کبھی پیدا ہی نہیں ہوئے تھے۔ اصل بات یہ ہے کہ باپو کی زندگی کا بہترین حصہ اس گروہ کو ملک پر [illegible] بنانے کی کوشش میں خرچ ہوا تھا۔ ایک لمبے عرصے تک اپنے مقصدوں کو حاصل کرنے کی اُن کی ساری اُمیدیں اسی گروہ کے ساتھ گھلی ملی رہی تھیں۔ اور یہی نہیں بلکہ اپنے انہیں پریمیوں کو پیچھے رکھ کر باپو اپنے آپ کو ہمیشہ اسی دل پر قربان کرتے رہتے تھے۔ اس لئے دیش کی جنتا پر بھی یہ زبردست اثر پڑ گیا ہے کہ یہ دل باپو کا سچا انویائی ہے۔ اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ جب یہ گروہ باپو کے اصولوں اور آدرشوں سے ہٹ کر پچھم کا پریمی اور انویائی بنا تو باپو کے مشن کے پورا ہونے میں وہ دشواریاں اور خطرے پیدا ہو گئے جو دنیا کی کوئی دوسری طاقت پیدا نہ کر سکتی تھی۔ آج

बापू के मिशन की कामयाबी के रास्ते में यही सबसे बड़ी रुकावट है.

मगर यह सारी दिक़्क़तें ऊपरी और कुछ देरी हैं. इन्सानी ज़िन्दगी की आत्मिक या रूहानी ताक़तें और अन्दोलन—चाहे हम उन्हें देख सकें या न देख सकें—अपना काम बराबर करते रहते हैं. हज़रत ईसा के गुज़र जाने के सौ साल बाद उनका सन्देश मौजूदा बाइबिल के रूप में दुनिया के सामने आया था. मुहम्मद साहब ने अपनी नबूवत के पहले तेरह साल की खेंचातानी और तनमारी के बाद १८२ मुसलमान बनाये थे. इनमें से लगभग सब ही अपने जान व माल की हिफ़ाज़त के लिये अपना वतन छोड़ देने पर मजबूर हो गये थे. मगर इसके बाद दस साल के अन्दर ही सारा अरब मुसलमान हो गया और अगले तैंतीस साल के भीतर इसलाम दुनिया के कोने कोने तक पहुँच गया. महात्मा बुद्ध के जीते जी उनके मिशन का असर हिन्दुस्तान पर भी बहुत थोड़ा पड़ सका था मगर आज यह असर तमाम इन्सानी जीवन में इस तरह घर किये हुए है जिस तरह भौतिक या माद्दी दायरे में बिजली. असल बात यह है कि अगर हम किसी पहुँची हुई और आलीशान रूहानी हस्ती की जिन्दगी पर नज़र डालें, वह बुद्ध, मुहम्मद, ईसा या कोई भी हो, तो हमें एक ही सच्चाई नज़र आयगी. वह यह कि इन जन सेवकों के मिशनों की कामयाबी इनकी जिन्दगी के मुक़ाबले में इनकी मौत के बाद हज़ारहा गुनी ज्यादा होती रहती है. राजे,

باپو کے مشن کی کامیابی کے راستے میں یہی سب سے بڑی رکاوٹ ہے!

مگر یہ ساری دقتیں اوپری اور کچھ دیری ہیں۔ انسانی زندگی کا آتمک یا روحانی طاقتیں اور اندولن — چاہے ہم انھیں دیکھ سکیں یا نہ دیکھ سکیں — اپنا کام برابر کرتے رہتے ہیں۔ حضرت عیسیٰ کے گزر جانے کے سو سال بعد ان کا سندیش موجودہ بائبل کے روپ میں دنیا کے سامنے آیا تھا۔ محمد صاحب نے اپنی نبوت کے پہلے تیرہ سال کی کھینچا تانی اور تن ماری کے بعد ۱۸۲ مسلمان بنائے تھے۔ ان میں سے لگ بھگ سب ہی اپنے جان و مال کی حفاظت کے لئے اپنا وطن چھوڑ دینے پر مجبور ہو گئے تھے۔ مگر اس کے بعد دس سال کے اندر ہی سارا عرب مسلمان ہو گیا اور اگلے تینتیس سال کے بھیتر اسلام دنیا کے کونے کونے تک پہنچ گیا۔ مہاتما بدھ کے جیتے جی ان کے مشن کا اثر ہندستان پر بھی بہت تھوڑا پڑ سکا تھا مگر آج یہ اثر تمام انسانی جیون میں اس طرح گھر کئے ہوئے ہے جس طرح بھوتک یا مادی دائرے میں بجلی۔ اصل بات یہ ہے کہ اگر ہم کسی پہنچی ہوئی اور عالیشان روحانی ہستی کی زندگی پر نظر ڈالیں گے، وہ بدھ، محمد، عیسیٰ یا کوئی بھی ہو، تو ہمیں ایک ہی سچائی نظر آئے گی۔ وہ یہ کہ ان جن سیوکوں کے مشنوں کی کامیابی ان کی زندگی کے مقابلے میں ان کی موت کے بعد ہزار ہا گنی زیادہ ہوتی رہتی ہے۔ راجے،

महाराजे शहंशाहों, के राज उनकी मौत के बाद खत्म हो जाते हैं. लेकिन जो राज या हुकूमतें यह जन सेवक लोगों के दिलों, भावनाओं और जज़्बों पर क़ायम करते हैं वह उनके मरने के बाद भी हमेशा फूलती-फलती और फैलती रहती हैं.

हम इन महात्माओं के मिशान का अन्दाज़ा उन धर्मों या मज़हबों की मौजूदा हालत से नहीं लगा सकते जो आज दुनिया में इनके कहे पर चलने का दावा कर रहे हैं. यह सब धर्म तो उन नैतिक और रूहानी बाढ़ों या सैलाबों के भौतिक (माद्दी) गत-चित्र (पस अन्दाज़े) हैं जिनकी लहरें दुनिया में फैल-फैल कर अपना कम कर चुकी हैं. और आज भी कह रही हैं कि यह तो वह कीड़े-खाये सांचे हैं जो अपने टूटने और मिटने के लिये दूसरे ऐसे ही सैलाबों का इन्तज़ार कर रहे हैं. वह सैलाब चाहे राजनीति की तरफ़ से आवें या रूहानियत या अध्यात्मिकता की तरफ़ से आवें. सारे संसार की पहुँची हुई महान आत्मायें पहले दिन से लेकर आज तक हमेशा एक ही रूहानी और नैतिक संदेशा दुनिया में पहुँचाती रही हैं. यह संदेशा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (अख़ूवते इन्सानी) का है. इनके इसी संदेशों ने इन्सानी दुनिया में वह सारे पहलू और बीज पैदा किये हैं जिन्हें हम इन्सानियत कहते हैं. इन्हीं संदेशों से वह असूल और कारवाइयाँ, वह भले और बुरे के भेद, वह मुहब्बत और नफ़रत के रिश्ते और ताल्लुक़ पैदा हुए जिनके गारे और ईंटों की मदद से हमारी कल्चरों, सभ्यताओं और तहज़ीबों की इमारतें तैयार होकर खड़ी हुई

(२१५)

مہاراجے، شہنشاہوں کے راج، اُن کی موت کے بعد ختم ہوجاتے ہیں۔ لیکن جو راج یا حکومتیں یہ جن سیوک لوگوں کے دلوں، بھاوناؤں اور جذبوں پر قائم کرتے ہیں وہ اُن کے مرنے کے بعد بھی ہمیشہ پھولتی — پھلتی اور پھیلتی رہتی ہیں۔

ہم ان مہاتماؤں کے مشن کا اندازہ ان دھرموں یا مذہبوں کی موجودہ حالت سے نہیں لگا سکتے جو آج دنیا میں ان کے کہے پر چلنے کا دعویٰ کر رہے ہیں۔ یہ سب دھرم تو ان نیتک اور روحانی باڑھوں اور سیلابوں کے بھوتک (مادی) گت چتر (پس اندازے) ہیں جن کی لہریں دنیا میں پھیل پھیل کر اپنا کام کرچکی ہیں۔ اور آج بھی کہہ رہی ہیں کہ یہ تو وہ کیڑے کھائے سانچے ہیں جو اپنے ٹوٹنے اور مٹنے کے لئے دوسرے ایسے ہی سیلابوں کا انتظار کر رہے ہیں۔ وہ سیلاب چاہے راج نیتی کی طرف سے آویں یا روحانیت یا ادھیاتمکتا کی طرف سے آویں۔ سارے سنسار کی پہنچی ہوئی مہان آتمائیں پہلے دن سے لیکر آج تک ہمیشہ ایک ہی روحانیت اور نیتک سندیش دنیا میں پہنچاتی رہی ہیں۔ یہ سندیش 'وسودھیو کٹمبکم' (اخوت انسانی) کا ہے۔ ان کے انھیں سندیشوں نے انسانی دنیا میں وہ سارے پہلو اور بیج پیدا کئے ہیں جنھیں ہم انسانیت کہتے ہیں۔ انھیں سندیشوں سے وہ اصول اور کارروائیاں، وہ بھلے اور برے کے بھید، وہ محبت اور نفرت کے رشتے اور تعلق پیدا ہوئے جن کے گارے اور اینٹوں کی مدد سے ہماری کلچروں، سبھیتاؤں اور تہذیبوں کی عمارتیں تیار ہوکر کھڑی ہوئی

है और आज दुनिया में जितने भी राजकाजी आन्दोलन हैं वह सभी राजी-खुशी और खुले दिल के साथ, जान में या अनजान में, इन्हीं संदेसों को पूरा करने में लगे हुए हैं. इन सबका भी एक ही सच्चा ध्येय है—'वसुधैव कुटुम्बकम्' की स्थापना, अख़ूवते इन्सानी की तकमील. बापू ने अपने से पहले आने वाले सारे आलीशान पीरों, पैग़म्बरों और फ़क़ीरों की सिर्फ़ तसदीक ही नहीं की है, सिर्फ़ इन संदेसों की वहदत (एकता) को ही। रोशन नहीं किया है, बल्कि उन्होंने संसार के सामने एक नया नैतिक और आध्यात्मिक साधन लाकर रख दिया है जो इसकी बढ़ोतरी के रास्ते से उन सारी रुकावटों और मुसीबतों को मुस्तक़िल तौर पर दूर कर सकता है, जो इतिहास के शुरू से ही इस रास्ते की सबसे बड़ी दुश्वारियाँ साबित होती रही हैं. आज दुनिया ऐसे संदेसों की प्यासी और ऐसे साधन की हाजत में है. आज वह खुद ही परेशान है अपनी उन ग़लत कारवाइयों के हौलनाक नतीजों से जिन्होंने इसे घायल कर दिया और झकझोर दिया है और इसकी जान को ख़तरे में डाले हुए हैं. बापू का संदेश इसके लिये मरहम और अमृत है. ऐसे संदेसे इन्सानी इतिहास में कभी नज़रअन्दाज़ नहीं हुए. वह ऊपरी और कुछ देर बेरुख़ी और लापरवाही जो आज हम बापू के असली आन्दोलन की तरफ़ से देख रहे हैं वह कभी क़ायम नहीं रह सकती. हमें पूरा भरोसा है कि दुनिया इसका स्वागत करेगी और इसका पूरा पूरा लाभ उठायगी.

ہیں اور آج دنیا میں جتنے بھی راج کاجی آندولن ہیں وہ بڑی راضی خوشی اور کھلے دل کے ساتھ، جان میں یا انجان میں، انھیں سندیشوں کو پورا کرنے میں لگے ہوئے ہیں۔ ان سب کا بھی ایک ہی سچا دھییے ہے — "وسودھیو کٹمب کم" کی استھاپنا، اخوتِ انسانی کی تکمیل۔ باپو نے اپنے سے پہلے آنے والے سارے عالیشان پیروں، پیغمبروں اور فقیروں کی صرف تصدیق ہی نہیں کی ہے، صرف ان سندیشوں کی وحدت (ایکتا) کو ہی روشن نہیں کیا ہے، بلکہ انھوں نے سنسار کے سامنے ایک نیا نیتک اور آدھیاتمک سادھن لاکر رکھ دیا ہے جو اس کی بڑھوتری کے راستے سے اُن ساری رکاوٹوں اور مصیبتوں کو مستقل طور پر دور کر سکتا ہے، جو اتہاس کے شروع ہی سے اس راستے کی سب سے بڑی دشواریاں ثابت ہوتی رہی ہیں۔ آج دنیا ایسے سندیشوں کی پیاسی اور ایسے سادھن کی حاجت میں ہے۔ آج یہ خود ہی پریشان ہے اپنی اُن غلط کارروائیوں کے ہولناک نتیجوں سے جنھوں نے اسے گھائل کر دیا اور جھک جھوڑ دیا ہے اور اس کی جان کو خطرے میں ڈالے ہوئے ہیں۔ باپو کا سندیش اس کے لئے مرہم اور امرت ہے۔ ایسے سندیش انسانی اتہاس میں کبھی نظر انداز نہیں ہوئے۔ وہ اوپری اور کچھ دیری بےرخی اور لاپرواہی جو آج ہم باپو کے اصلی آندولن کی طرف سے دیکھ رہے ہیں وہ کبھی قائم نہیں رہ سکتا۔ ہمیں پورا بھروسہ ہے کہ دنیا اس کا سواگت کرے گی اور اس کا پورا پورا لابھ اٹھائے گی۔

लेकिन सवाल यह है कि यह कब होगा और तब तक हमारा हिन्दुस्तान क्या करेगा. इसमें शक नहीं कि बापू की मौत ने चारों तरफ़ गहरा सन्देह पैदा कर दिया है. असल में बापू ही अपने जीवन में इस आन्दोलन के अगुआ और राह दिखाने वाले थे. इसके निज़ाम में उनका वही मुक़ाम था जो सूरज का दुनिया के निज़ाम में है. उनकी रूहानी कशिश या शक्ति मुख़्तलिफ़ और एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिखाई पड़ने वाली हस्तियों और जमातों को एक मरकज़ पर खेंच लेती थी. वह हर आला और अदना इन्सान से—चाहे वह किसी भी क़ाबलियत और जमात का क्यों न हो—एक ही तरह अपने मक़सदों को पूरा करने में काम ले लिया करते थे. इस सूरज के डूब जाने से सारा निज़ाम बिखरा हुआ सा दिखलाई पड़ता है. मगर सूरज के डूबने से उसके निज़ाम में कोई असली या देरपा तबदीली थोड़ी पैदा होती है. वह ताक़तें जिन्होंने बापू को पैदा किया था अपनी जगह पर वैसी ही बाक़ी हैं. इसलिये किसी बुनियादी इन्क़लाब का सवाल पैदा ही नहीं होता. यह विचार कि जब बापू अपनी ज़िन्दगी में ख़ुद ही कुछ न कर सके तो उनके अनुयायी बेचारे क्या कर सकेंगे बिलकुल बे बुनियाद और बेमानी है. असलियत यह है कि बापू के अनोखे और शानदार जीवन ने और उससे भी कहीं ज़्यादा अनोखे और शानदार बलिदान ने हमारे मुल्क पर ही नहीं बल्कि तमाम दुनिया पर अपनी गहरी छाप डाल दी है. जो नैतिक और रूहानी तूफ़ान उनकी वजह से पैदा हुआ उसकी मौजें—चाहे वह हमें दिखलाई न पड़ें—दुनिया की ज़िन्दगी में हिलोरें ले रही हैं, यह सब जानते हैं

لیکن سوال یہ ہے کہ یہ کب ہوگا اور تب تک ہمارا ہندستان کیا کرے گا۔ اس میں شک نہیں کہ باپو کی موت نے چاروں طرف گہرا سندیہ پیدا کر دیا ہے۔ اصل میں باپو ہی اپنے جیون میں اس آندولن کے اگوا اور راہ دکھانے والے تھے۔ اس کے نظام میں اُن کا وہی مقام تھا جو سورج کا دنیا کے نظام میں ہے۔ اُن کی روحانی کشش یا شکتی مختلف اور ایک دوسرے کے خلاف دکھائی پڑنے والی ہستیوں اور جماعتوں کو ایک مرکز پر کھینچ لیتی تھی۔ وہ ہر اعلیٰ اور ادنیٰ انسان سے — چاہے وہ کسی بھی قابلیت اور جماعت کا کیوں نہ ہو — ایک ہی طرح اپنے مقصدوں کو پورا کرنے میں کام لے لیا کرتے تھے۔ اس سورج کے ڈوب جانے سے سارا نظام بکھرا ہوا سا دکھلائی پڑتا ہے۔ مگر سورج کے ڈوبنے سے اس کے نظام میں کوئی اصلی یا دیرپا تبدیلی تھوڑی پیدا ہوتی ہے۔ وہ طاقتیں جنہوں نے باپو کو پیدا کیا تھا اپنی جگہ پر ویسی ہی باقی ہیں۔ اس لئے کسی بنیادی انقلاب کا سوال پیدا ہی نہیں ہوتا۔ یہ وچار کہ جب باپو اپنی زندگی میں خود ہی کچھ نہ کر سکے تو اُن کے انویائی بےچارے کیا کر سکیں گے بالکل بے بنیاد اور بے معنی ہے۔ اصلیت یہ ہے کہ باپو کے انوکھے اور شاندار جیون نے اور اُس سے بھی کہیں زیادہ انوکھے اور شاندار بلیدان نے ہمارے ملک پر ہی نہیں بلکہ تمام دنیا پر اپنی گہری چھاپ ڈال دی ہے۔ جو نیتک اور روحانی طوفان اُن کی وجہ سے پیدا ہوا اُس کی موجیں — چاہے وہ ہمیں دکھلائی نہ پڑیں — دنیا کی زندگی میں ہلورے لے رہی ہیں۔ یہ سب جانتے ہیں

कि जहाँ धरती के तले बारूदी सुरंगें बिछाई जाती हैं वहाँ एक चिन्गारी भी बहुत ही ज़बरदस्त नतीजे पैदा कर सकती है. चिन्गारी का असर करने का तरीक़ा क़ुदरत के क़ानूनों के मातहत है. क़ुदरत के क़ानूनों की तरह नैतिकता या एख़लाक़ के क़ानून भी अटल और अमल हैं. जो रूहानी सुरंग बापू के आत्मबल ने इन्सानी जीवन में फैला दी थी उसमें उनके बेमिसाल बलिदान ने लाज़िमी तौर पर और भी ज़्यादा गर्मी और तेज़ी पैदा कर दी है. हवा तैयार है. देखना यह है कि इसमें चिन्गारी आती किधर से है.

बहुत कुछ मुमकिन यही है कि यह चिन्गारी उन्हीं लोगों से आयगी जिन्होंने नेकनियती के साथ अपने जीवन को बापू के मिशन को पूरा करने के लिये न्योछावर कर दिया है. इसमें शक नहीं कि ऐसे लोगों की तादाद मुल्क में बहुत कम है. लेकिन सत्याग्रह का यह एक बुनियादी असूल है कि इसमें तादाद की कोई ख़ास अहमियत नहीं होती. चन्द हस्तियाँ ही, अगर वह सच्ची सत्याग्रही हैं, तो देश को बड़ी से बड़ी सेवा कर सकती हैं और इसे बड़े से बड़े ख़तरों से बचा लेंगी. हम सब देख चुके हैं कि बापू ने कैसे अकेले एक सत्याग्रही की हैसियत से अंग्रेज़ी हुकूमत का मुक़ाबला किया और बहुत बड़े पैमाने पर कामयाबी पाई. हम यह भी देख चुके हैं कि उन्होंने अकेले ही फ़िरक़ेवाराना तूफ़ान पर कितना गहरा और कितना बड़ा असर डाला. इससे ज़्यादा उम्मीद और हिम्मत दिलाने वाली बात क्या हो सकती है? यह भी साफ़ ज़ाहिर है कि बापू की सारी कामयाबी का असली

کہ جہاں دھرتی کے تلے بارودی سرنگیں بچھائی جاتی ہیں وہاں ایک چنگاری بھی بہت ہی زبردست نتیجے پیدا کر سکتی ہے۔ چنگاری کا اثر کرنے کا طریقہ قدرت کے قانونوں کے ماتحت ہے۔ قدرت کے قانونوں کی طرح نیتکتا یا اخلاق کے قانون بھی اٹل اور امل ہیں۔ جو روحانی سرنگ باپو کے آتم بل نے انسانی جیون میں پھیلا دی تھی اس میں ان کے بے مثال بلیدان نے لازمی طور پر اور بھی زیادہ گرمی اور تیزی پیدا کر دی ہے۔ ہوا تیار ہے۔ دیکھنا یہ ہے کہ اس میں چنگاری آتی کدھر سے ہے۔

بہت کچھ ممکن یہی ہے کہ یہ چنگاری انہیں لوگوں سے آئے گی جنہوں نے نیک نیتی کے ساتھ اپنے جیون کو باپو کے مشن کو پورا کرنے کے لئے نچھاور کر دیا ہے۔ اس میں شک نہیں کہ ایسے لوگوں کی تعداد ملک میں بہت کم ہے۔ لیکن ستیہ گرہ کا یہ ایک بنیادی اصول ہے کہ اس میں تعداد کی کوئی خاص اہمیت نہیں ہوتی۔ چند ہستیاں ہی، اگر وہ سچی ستیاگرہی ہیں، تو دیش کی بڑی سے بڑی سیوا کر سکتی ہیں اور اسے بڑے سے بڑے خطروں سے بچا لیں گی۔ ہم سب دیکھ چکے ہیں کہ باپو نے کیسے اکیلے ایک ستیاگرہی کی حیثیت سے انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا اور بہت بڑے پیمانے پر کامیابی پائی۔ ہم یہ بھی دیکھ چکے ہیں کہ انہوں نے اکیلے ہی فرقہ وارانہ طوفان پر کتنا گہرا اور کتنا بڑا اثر ڈالا۔ اس سے زیادہ امید اور ہمت دلانے والی بات کیا ہو سکتی ہے؟ یہ بھی صاف ظاہر ہے کہ باپو کی ساری کامیابی کا اصلی

कारण उनका गोश्त और हड्डियाँ न थीं बल्कि वही असूल और कारवाइयाँ थीं जिनकी उन्होंने हमें बराबर तीस साल तक असूली और अमली तालीम दी है. बापू चले गये लेकिन उनके सारे असूल और काम करने के तौर-तरीक़े आज भी ज़िन्दा हैं. हम कह चुके हैं कि दुनिया की महान आत्मायें अपनी सारी ताक़त और ऊँचाई अपने आप को कुछ नैतिक असूलों का पाबन्द बनाकर हासिल करती हैं. फिर वह अपने बड़े बड़े तजरबों की रोशनी में इन्हीं असूलों की बारीकियाँ और गहराइयाँ खोलकर पूरे ब्योरे के साथ दुनिया के सामने पेश करती हैं और अपने ब्योहार से इन असूलों की ताक़त के नज़ारे लोगों को दिखला कर उनके अन्दर इन असूलों की असलियत का विश्वास और इनकी ताक़त का एहसास पैदा कराती हैं. तो फिर जब सूरत यह हो और जब हमारी तालीम, शिक्षा-दीक्षा के लिये हमारी पुरानी तहज़ीब का भंडार मौजूद ही हो, जब बापू की तालीम और उनके बेमिसाल कारनामे और कामयाब अनुभव हमारी आँखों के सामने हों, तो फिर हमें कमी किस बात की है, घबराना किस चीज़ से है? ज़रूरत महज़ इस पर तैयार हो जाने की और इस पर जुट जाने की है. अगर बापू के प्रेमी और अनुयायी एकमत होकर उनकी आख़िरी वसीयत के पूरा करने को अपना अकेला मक़सद बना लें तो दुनिया की कोई ताक़त नहीं है कि जिसका मुक़ाबला वह कामयाबी के साथ न कर सकें. लक्ष्य पर पहुँचने की कोशिश ही हमारी सफलता की असली कुन्जी है. जिनका यह विश्वास है कि दुनिया की कौंधातानियों के बीच आख़िरी और असली सूरत में नैतिक असूल

کارن اُن کا گوشت اور ہڈیاں نہ تھیں بلکہ وہی اُصول اور کارروائیاں تھیں جن کی اُنھوں نے ہمیں برابر تیس سال تک اصولی اور عملی تعلیم دی ہے۔ باپو چلے گئے لیکن اُن کے سارے اصول اور کام کرنے کے طور طریقے آج بھی زندہ ہیں۔ ہم کہہ چکے ہیں کہ دنیا کی مہان آتمائیں اپنی ساری طاقت اور اونچائی اپنے آپ کو کچھ نیتک اصولوں کا پابند بنا کر حاصل کرتی ہیں۔ پھر وہ اپنے بڑے بڑے تجربوں کی روشنی میں انھیں اصولوں کی باریکیاں اور گہرائیاں کھول کر پورے ویورے کے ساتھ دنیا کے سامنے پیش کرتی ہیں اور اپنے بیوہار سے ان اصولوں کی طاقت کے نظارے لوگوں کو دکھلا کر اُن کے اندر ان اصولوں کی اصلیت کا وشواس اور ان کی طاقت کا احساس پیدا کرتی ہیں۔ تو پھر جب صورت یہ ہو اور جب ہماری تعلیم، شکشا دکشا کے لیے ہماری پرانی تہذیب کا بھنڈار موجود ہی ہو، جب باپو کی تعلیم اور اُنکے بے مثال کارنامے اور کامیاب انوبھو ہماری آنکھوں کے سامنے ہوں، تو پھر ہمیں کمی کس بات کی ہے، گھبرانا کس چیز سے ہے؟ ضرورت محض اس پر تیار ہو جانے کی اور اس پر جُٹ جانے کی ہے۔ اگر باپو کے پریمی اور انویائی ایک مت ہو کر اُنکی آخری وصیت کے پورا کرنے کو اپنا اکیلا مقصد بنالیں تو دنیا کی کوئی طاقت نہیں ہے کہ جس کا مقابلہ وہ کامیابی کے ساتھ نہ کر سکیں۔ لکشیہ پر پہونچنے کی کوشش ہی ہماری سپھلتا کی اصلی کنجی ہے۔ جن کا یہ وشواس ہے کہ دنیا کی کھینچا تانیوں کے بیچ آخری اور اصلی صورت میں نیتک اصول

और ताक़तें ही अनैतिक असूल और ताक़तों पर हमेशा विजय पाते हैं और जो इस विजय को समाजी और क़ुदरती क़ानूनों का नतीजा समझते हैं उनके लिये इस रास्ते पर चलने में गिरने या उठने का कामयाबी या ना कामयाबी का सवाल ही पैदा नहीं होता. अपने लक्ष्य को सामने रखकर उसकी तरफ़ बढ़ने का भाव और कोशिश—यही उनका जीवन है.

बापू के भक्त इस लक्ष्य की तरफ़ बढ़ें या न बढ़ें मगर देश की जनता बहुत अरसे तक इससे बेख़बर नहीं रह सकती. बापू का मिशन ही इसकी सच्ची तरक़्क़ी और बेहतरी का अकेला ज़रिया है. देश का कोई ख़ास दल बापू का प्रेमी या अनुयायी हो या न हो, मगर इससे इन्कार नहीं हो सकता कि जनता उनकी सच्ची प्रेमी है और उन पर जान दे देने वाली है. बापू जनता के दुख दर्द को हमेशा के लिये दूर कर देना चाहते थे. वह जनता के अन्दर वह नैतिक ताक़त पैदा करना चाहते थे जिससे वह अपने देश की सच्ची मालिक और रक्षक बन सके. वह जनता के अन्दर अपनी पुरानी तहज़ीब को उन आध्यात्मिक ऊँचाइयों का अन्दाज़ पैदा कराना चाहते थे जिन्होंने इसे दुनिया में हमेशा हरा-भरा और ख़ुश रखा है, इसका सर हमेशा ऊँचा उठाया है और इसे इज़्ज़त दी है. हम कह चुके हैं कि मुद्दतों से ही यह हमारी पुरानी तहज़ीब दुनिया के कोने कोने को नैतिक और रूहानी ख़ुराक पहुँचाने की सेवा करती रही है. आज दुनिया अपने इतिहास के एक बहुत ही ख़तरनाक दौर से गुज़र रही है. इसके बहते हुए सैलाब में बापू हिमालय की ऊँची चोटी पर खड़े होकर अपनी

اور طاقتیں ہی انیتک اصول اور طاقتوں پر ہمیشہ وجے پاتی ہیں اور اس وجے کو سماجی اور قدرتی قانونوں کا نتیجہ سمجھتے ہیں اُن کے لئے اس راستے پر چلنے میں گرنے یا اُٹھنے کا کامیابی یا ناکامیابی کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔ اپنے لکشیہ کو سامنے رکھ کر اُس کی طرف بڑھنے کا بھاؤ اور کوشش — یہی اُن کا جیون ہے۔

باپو کے بھگت اس لکشیہ کی طرف بڑھیں یا نہ بڑھیں مگر دیش کی جنتا بہت عرصے تک اس سے بے خبر نہیں رہ سکتی۔ باپو کا مشن ہی اس کی سچی ترقی اور بہتری کا اکیلا ذریعہ ہے۔ دیش کا کوئی خاص دل باپو کا پریمی یا انویائی ہو یا نہ ہو، مگر اس سے انکار نہیں ہو سکتا کہ جنتا اُن کی سچی پریمی ہے اور اُن پر جان دیدینے والی ہے۔ باپو جنتا کے دُکھ درد کو ہمیشہ کے لئے دور کر دینا چاہتے تھے۔ وہ جنتا کے اندر وہ نیتک طاقت پیدا کرنا چاہتے تھے جس سے وہ اپنے دیش کی سچی مالک اور رکشک بن سکے۔ وہ جنتا کے اندر اپنی پرانی تہذیب کو اُن آدھیاتمک اونچائیوں کا انداز پیدا کرانا چاہتے تھے جنھوں نے اسے دنیا میں ہمیشہ ہرا بھرا اور خوش رکھا ہے۔ اس کا سر ہمیشہ اونچا اٹھایا ہے اور اسے عزت دی ہے۔ ہم کہہ چکے ہیں کہ مدتوں سے یہ ہماری پرانی تہذیب دنیا کے کونے کونے کو نیتک اور روحانی خوراک پہنچانے کی سیوا کرتی رہی ہے۔ آج دنیا اپنے اتہاس کے ایک بہت ہی خطرناک دور سے گزر رہی ہے۔ اس کے بہتے ہوئے سیلاب میں باپو ہمالیہ کی اونچی چوٹی پر کھڑے ہو کر اپنی

तेजमय किरनों से दुनिया की तूफ़ानज़दा बरबाद क़ौमों को असली जीवन देने वाले किनारे की राह दिखा रहे हैं. हमारी पुरानी सभ्यता ने सदियों से डूबने वालों की आहें और दर्द भरी पुकारें सुनकर संसार की बेहतरी और हिदायत के लिये इस तेजमय ज्योति को पैदा किया है. हमारा देश हमेशा से इस ज्योति का मानने वाला और पालने-पोसने वाला रहा है. आज भी यही हमारा कर्त्तव्य है, यही हमारा फ़र्ज़ है कि जिस महायज्ञ में हिस्सा लेने के लिये बापू ने अपने जीवन के जगमगाते कारनामों और अपने बलिदान की तेजमय ज्योति से हमें दावत दी है उस यज्ञ को कामयाब बनावें. यही एक अकेला रास्ता है हमारी मुक्ति का, यही एक अकेला रास्ता है दुनिया की निजात का.

تیج مئے کرنوں سے دنیا کی طوفان زدہ برباد قوموں کو اصلی جیون دینے والے کنارے کی راہ دکھا رہے ہیں. ہماری پرانی سبھیتا نے صدیوں سے ڈوبنے والوں کی آہیں اور درد بھری پکاریں سن کر سنسار کی بہتری اور ہدایت کے لئے تیج مئے جیوتی کو پیدا کیا ہے. ہمارا دیش ہمیشہ سے اس جیوتی کا ماننے والا اور پالنے پوسنے والا رہا ہے. آج بھی یہی ہمارا کرتویہ ہے، یہی ہمارا فرض ہے کہ جس مہایگیہ میں حصہ لینے کے لئے باپو نے اپنے جیون کے جگمگاتے کارناموں اور اپنے بلیدان کی تیج مئے جیوتی سے ہمیں دعوت دی ہے اس یگیہ کو کامیاب بناویں. یہی ایک اکیلا راستہ ہے ہماری مکتی کا، یہی ایک اکیلا راستہ ہے دنیا کی نجات کا.

इन्क़लाब कब और क्यों आता है ?

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

धीरज और बरदाश्त का बंधन टूट जाने से इन्क़लाब का सोता फूट निकलता है.

इन्क़लाब ! आकाश की मंज़िलों से होता हुआ आता है—बहुत से सितारे तोड़ता आता है. बहुत से बुझे दिये रोशन करता आता है—और वह परमात्मा का संदेश, आकाश आकाश लेकर चलता है, धरती धरती बरसाता चलता है.

इन्क़लाब ! पहाड़ की बुलन्दियों से टकराकर नीचे गिरता है. और फिर ज़्यादा ताक़त और ज़ोर के साथ आगे बढ़ता है. आस-पास की चीज़ों को अपने साथ समेटता चलता है—वह अपने बहाव में कूड़ा करकट लेकर चलता है और उसमें ज़िन्दगी की हरकत पैदा करके चलता है. इन्क़लाब ! समुन्दरों की थाह को चीर कर ऊपर उठता है. मौजों से खेलता है. उलझता है और उन पर दौड़ें लगाता है. इन्क़लाब ! तूफ़ान की तरह टकराता चकराता आता है और अपने साथ जज़्बात की सुर्ख़ सुर्ख़ फ़ौजें लाता है.

इन्क़लाब ! दिल की वादी से आग की तरह भड़क निकलता है और गरम गरम हवा की तरह लपक कर चलता है. इन्क़लाब, इन्क़लाब का गीत गाता जाता है और आबादियों को ढाता जाता है—ऊपर से वह मुस्कराता जाता है.

انقلاب کب اور کیوں آتا ہے؟

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

دھیرج اور برداشت کا بندھن ٹوٹ جانے سے انقلاب کا سوتا پھوٹ نکلتا ہے۔

انقلاب! آکاش کی منزلوں سے ہوتا ہوا آتا ہے — بہت سے ستارے توڑتا آتا ہے۔ بہت سے بجھے دیئے روشن کرتا آتا ہے — اور وہ پرماتما کا سندیش، آکاش آکاش لے کر چلتا ہے، دھرتی دھرتی برساتا چلتا ہے۔

انقلاب! پہاڑ کی بنیادوں سے ٹکرا کر نیچے گرتا ہے۔ اور پھر زیادہ طاقت اور زور کے ساتھ آگے بڑھتا ہے۔ آس پاس کی چیزوں کو اپنے ساتھ سمیٹتا چلتا ہے — وہ اپنے بہاؤ میں کوڑا کرکٹ لے کر چلتا ہے اور اس میں زندگی کی حرکت پیدا کرکے چلتا ہے۔ انقلاب! سمندروں کی تھاہ کو چیر کر اوپر اٹھاتا ہے۔ موجوں سے کھیلتا ہے۔ الجھتا ہے اور ان پر دوڑیں لگاتا ہے۔ انقلاب! طوفان کی طرح ٹکراتا چکراتا آتا ہے اور اپنے ساتھ جذبات کی سرخ سرخ فوجیں لاتا ہے۔

انقلاب! دل کی وادی سے آگ کی طرح بھڑک نکلتا ہے اور گرم گرم ہوا کی طرح لپک کر چلتا ہے۔ انقلاب، انقلاب کا گیت گاتا جاتا ہے اور آبادیوں کو ڈھاتا جاتا ہے — اوپر سے وہ مسکراتا جاتا ہے۔

इन्क़लाब के नाम से पूंजीवादी लरज़ जाते हैं. इन्क़लाब की चाप से अत्याचार कॉंप उठते हैं.

इन्क़लाब का धुआं ग़रीबों की कच्ची कच्ची झोपड़ियों से उठता है. इन्क़लाब की आग जले भुने दिलों से भड़क भड़क कर उबलती है. इन्क़लाब के बादल मज़लूमों की हल्की हल्की आहों से बनते हैं. इन्क़लाब की बिजली दुखी सृष्टि की पसली की रगड़ से चमकती है और चमक कर ग़ज़ब ढाती है.

इन्क़लाब मजबूरी और कमज़ोरी से आता है यानी कमज़ोरों की शक्ति से आता है.

इन्क़लाब, कमज़ोरी के जरासीम (कीड़ों) से आता है और जरासीम की तंज़ीम से तरक़्क़ी पाता है.

—इस समय यह भी याद रहे कि ग़रीब और मज़लूम पर ठोकर से इन्क़लाब का जन्म होता है—और जब इन्क़लाब जन्म लेता है तो साम्राज शालों का दम लेता है और घर में इसके मातम होता है–

इन्क़लाब ! एहसास की लपट से आता है और ग़ैरत के एहसास से.

इन्क़लाब ! इन्तक़ाम की आग से आता है और ग़ुस्से के झाग से.

इन्क़लाब ! दुखी की चीख़ से आता है और अधिक से अधिक तकलीफ़ से

इन्क़लाब ! इज़्ज़त आदर के लुटने से आता है और शराफ़त पर हमला करने से. ग़रीब की हक़ तलफ़ियों से आता है और उन

انقلاب کے نام سے پونجی وادی لرز جاتے ہیں. انقلاب کی چاپ سے اتیا چار کانپ اٹھتے ہیں.

انقلاب کا دھواں غریبوں کی کچی کچی جھونپڑیوں سے اٹھتا ہے. انقلاب کی آگ جلے بھنے دلوں سے بھڑک بھڑک کر ابلتی ہے. انقلاب کے بادل مظلوموں کی ہلکی ہلکی آہوں سے بنتے ہیں. انقلاب کی بجلی دکھی سرشٹی کی پسلی کی رگڑ سے چمکتی ہے اور چمک کر غضب ڈھاتی ہے.

انقلاب مجبوری اور کمزوری سے آتا ہے یعنی کمزوروں کی شکتی سے آتا ہے.

انقلاب، کمزوری کے جراثیم (کیڑوں) سے آتا ہے اور جراثیم کی تنظیم سے ترقی پاتا ہے.

— اس سمے یہ بھی یاد رہے کہ غریب اور مظلوم پر ٹھوکر سے انقلاب کا جنم ہوتا ہے— اور جب انقلاب جنم لیتا ہے تو سامراج والوں کا دم لیتا ہے اور گھر میں اسکے ماتم ہوتا ہے—

انقلاب! احساس کی لپٹ سے آتا ہے اور غیرت کے احساس سے.

انقلاب! انتقام کی آگ سے آتا ہے اور غصے کے جھاگ سے.

انقلاب! دکھی کی چیخ سے آتا ہے اور ادھک سے ادھک تکلیف سے.

انقلاب! عزت آدر کے لٹنے سے آتا ہے اور شرافت پر حملہ کرنے سے. غریب کی حق تلفیوں سے آتا ہے اور اُن

पर ज़ोर और जबरदस्तियों से. सेवकों की बदमस्तियों से आता है और हाकिमों की चीरा दस्तियों से. सियासी लाभ से आता है और क़ौमी फ़साद से.

दिलों की बीमारी से आता है और फ़िरक़ावारी की हवा से.

इन्साफ़ का ख़ून करने से आता है और जनता का ख़ून पीने से.

राज की ग़फ़लत से आता है और समाज की जाग से.

वफ़ादारों की नाक़दरी से आता है और नाअहलों की सरपरस्ती से.

विदेशी राज के साथ नफ़रत बढ़ाने से आता है और देश राज के नज़र चुराने से.

बेशक वह झूटे झूटे वचनों के बाद आता है—यानी झूटों को मौक़ा देकर आता है.

इन्क़लाब ! बर्फ़ानी पहाड़ों से आता है और गरमावी शुआओं से.

सुबह शाम के आफ़ताबों से आता है और पूरब पच्छिम की राहों से.

इन्क़लाब का इस्तक़बाल (स्वागत) भूका बंगाल करता है और खेत और खलिहान इन्क़लाब को मैदान देता है—किसान उसका मशकूर होता है. मज़दूर उसका स्वागत करता है.

इन्क़लाब, जब आता है. रीति रिवाज की दीवारें गिराता आता है—और ज़ुल्म व सितम के देवताओं को तोड़ता फोड़ता और चूर चूर करता आता है.

پہ زور اور زبردستیوں سے۔ سیوکوں کی بدمستیوں سے آتا ہے اور حاکموں کی چیرہ دستیوں سے۔ سیاسی لابھ سے آتا ہے اور قومی فساد سے۔

دلوں کی بیماری سے آتا ہے اور فرقہ داری کی ہوا سے۔

انصاف کا خون کرنے سے آتا ہے اور جنتا کا خون پینے سے۔

راج کی غفلت سے آتا ہے اور سماج کی جاگ سے۔

وفاداروں کی ناقدری سے آتا ہے اور نا اہلوں کی سرپرستی سے۔

ودیشی راج کے ساتھ نفرت بڑھانے سے آتا ہے اور دیش راج کے نظر چرانے سے۔

بے شک وہ جھوٹے جھوٹے بچنوں کے بعد آتا ہے — یعنی جھوٹوں کو موقع دے کر آتا ہے۔

انقلاب ! برفانی پہاڑوں سے آتا ہے اور گرماتی شعاعوں سے۔

صبح شام کے آفتابوں سے آتا ہے اور پورب پچھم کی راہوں سے۔

انقلاب کا استقبال (سواگت) بھوکا بنگال کرتا ہے اور کھیت اور کھلیان انقلاب کو میدان دیتا ہے — کسان اس کا مشکور ہوتا ہے۔ مزدور اس کا سواگت کرتا ہے۔

انقلاب، جب آتا ہے۔ ریت رواج کی دیواریں گراتا آتا ہے — اور ظلم و ستم کے دیوتاؤں کو توڑتا پھوڑتا اور چور چور کرتا آتا ہے۔

इन्क़लाब लाठी चार्ज से आता है और गोलियों की मार से आता है.

इन्क़लाब ! खुद मुख़्तारों की मुख़्तराना हरकतों से आता है, अत्याचारियों की नई नई चालों से आता है और राजनीति की नई राहों से आता है.

अधिकारों का इन्साफ़ से मुँह मोड़ने से आता है और आज़ादी कारों का क़ानूनी फंदे तोड़ने से.

राजनीतिकारों की मिली भगत करने से आता है और ज़माने की करवट बदलने से.

इन्क़लाब ! ख़ुदा की नाफ़रमानी से आता है और गुनाहों की फ़रावानी से. इन्क़लाब ! नाइन्साफ़ी की कसरत से आता है यानी अन्याय की बहुतायत से.

इन्क़लाब ! ग़रीबों के फ़ाक़ों से आता है और अमीरों के पापों से. यतीमों की चीख़ों से आता है और शरीफ़ों की भीकों से.

इन्क़लाब ! ज़बान बन्दी के तालों को तोड़कर आता है और पाबन्दियों की जकड़ बन्दियों से निकल कर आता है.

इन्क़लाब ! ख़ून के दरियाओं में नहाता आता है. आग के शोलों से खेलता आता है. अंगारों को चबाता आता है. सितारों से हँसता बोलता आता है—

इन्क़लाब ! लाल लाल झंडे लहराता आता है और ज़ोर ज़ोर के नारे लगाता आता है. सर पर क़यामत उठाता आता है और क़यामत पर क़यामत ढाता आता है.

इन्क़लाब ! ख़ुदा का क़ानून बन कर आता है. यानी ईश्वर

انقلاب لاٹھی چارج سے آتا ہے اور گولیوں کی مار سے آتا ہے۔

انقلاب! خود مختاروں کی مختارانہ حرکتوں سے آتا ہے، اتیاچاریوں کی نئی نئی چالوں سے آتا ہے اور راج نیتی کی نئی راہوں سے آتا ہے۔

ادھیکاروں کا انصاف سے منہ موڑنے سے آتا ہے اور آزادی کاروں کا قانونی پھندے توڑنے سے۔

راج نیتی کاروں کی ملی بھگت کرنے سے آتا ہے اور زمانے کی کروٹ بدلنے سے۔

انقلاب! خدا کی نافرمانی سے آتا ہے اور گناہوں کی فراوانی سے۔ انقلاب! ناانصافی کی کثرت سے آتا ہے یعنی انیائے کی بہتایت سے۔

انقلاب! غریبوں کے فاقوں سے آتا ہے اور امیروں کے پاپوں سے۔ یتیموں کی چیخوں سے آتا ہے اور شریفوں کی بھیکوں سے۔

انقلاب! زبان بندی کے تالوں کو توڑ کر آتا ہے اور پابندیوں کی جکڑ بندیوں سے نکل کر آتا ہے۔

انقلاب! خون کے دریاؤں میں نہاتا آتا ہے۔ آگ کے شعلوں سے کھیلتا آتا ہے۔ انگاروں کو چباتا آتا ہے۔ ستاروں سے ہنستا بولتا آتا ہے—

انقلاب! لال لال جھنڈے لہراتا آتا ہے اور زور زور کے نعرے لگاتا آتا ہے۔ سر پر قیامت اٹھاتا آتا ہے اور قیامت پر قیامت ڈھاتا آتا ہے۔

انقلاب! خدا کا قانون بن کر آتا ہے۔ یعنی ایشور

विधान का रूप धार लेकर आता है—बाज़ वक़्त वह तबाहकारी का सामान लेकर आता है तो बाज़ समय तामीरी प्रोग्राम ! यही सबब है कि कभी वह वरदान बनकर आता है ;तो कभी अज़ाब की शक्ल में ज़ाहिर होता है.

इन्क़लाब ! असल में निर्मान और सुधार के लिये आता है यानी समाज को नया जीवन देने आता है और दुनिया का पुराना प्रबन्ध बदलने आता है.

ودھان کا روپ دھار لے کر آتا ہے۔ بعض وقت وہ تباہ کاری کا سامان لے کر آتا ہے تو بعض سمے تعمیری پروگرام! یہی سبب ہے کہ کبھی وہ وردان بن کر آتا ہے تو کبھی عذاب کی شکل میں ظاہر ہوتا ہے۔

انقلاب! اصل میں نرمان اور سدھار کے لئے آتا ہے یعنی سماج کو نیا جیون دینے آتا ہے اور دنیا کا پرانا پربندھ بدلنے آتا ہے۔

हमारी राय

कांग्रेस किधर ?

कांग्रेस चार हालतों में होकर गुज़र चुकी है. पहली हालत उसकी ऐसी थी जैसे कोई पिन सिर वाले हिस्से से कपड़े में सूराख़ करने की कोशिश करे. उस युग को आप काटन-युग या ह्यूम-युग कह सकते हैं. वह युग सन् १९१६ तक चला. बीच में एक बार हलका सा तूफ़ान आया मगर वह कांग्रेस में कोई तबदीली न कर सका. उन दिनों की कांग्रेस को अगर विदेशी सरकार के हाथ का खिलौना कहा जाय तो कुछ बेजा न होगा. उन दिनों कांग्रेस भी भी बच्चा और बच्चे को खिलौना कहने में कोई हरज नहीं. कांग्रेस बनी इस लिये ही थी कि वह विदेशी सरकार के नौकरशाही जिस्म में अपनी नोक चुभाकर उसे चेतावनी देती रहे. पर ह्यू.म.युग में वह नोक चुभाने की जगह सर टकराने की कोशिश करती रही और इस तरीके से जितनी कामयाबी उसे मिलनी चाहिये थी मिली.

सन् १९१६ में मांडले से वापस आने पर लोकमान्य तिलक ने कांग्रेस में प्रवेश किया. और अब कांग्रेस के पिन ने अपने नोकीले हिस्से से सरकार को जगाना चाहा. जिस से सरकार कुछ तड़पी. सन् १७ में डाक्टर बेसेन्ट ने नोक तो चुभाई पर अपने तरीक़े से, जिस की सरकार ने उतनी ही परवाह की जितनी उस चुभन से तकलीफ़ हुई थी. जो सरकार सन् १९०५ में कांग्रेस न सही तो कांग्रेस के मददगारों की चुभाई हुई बरछी को हंसी हंसी सह गई थी,

ہماری رائے

کانگریس کدھر؟

کانگریس چار حالتوں میں ہو کر گذر چکی ہے. پہلی حالت اس کی ایسی تھی جیسے کوئی پن سر والے حصے سے کپڑے میں سوراخ کرنے کی کوشش کرے. اس یُگ کو آپ کاٹن یُگ یا ہیوم یُگ کہہ سکتے ہیں. یہ یُگ سنہ ۱۹۱۶ تک چلا. بیچ میں ایک بار ہلکا سا طوفان آیا مگر وہ کانگریس میں کوئی تبدیلی نہ کر سکا. اُن دنوں کی کانگریس کو اگر ودیشی سرکار کے ہاتھ کا کھلونا کہا جائے تو کچھ بے جا نہ ہوگا. اُن دنوں کانگریس تھی بھی بچہ اور بچے کو کھلونا کہنے میں کوئی ہرج نہیں. کانگریس بنی اس لئے ہی تھی کہ وہ ودیشی سرکار کے نوکر شاہی جسم میں اپنی نوک چبھا کر اُسے چتاونی دیتی رہے. پر ہیوم یُگ میں وہ نوک چبھانے کی جگہ سر ٹکرانے کی کوشش کرتی رہی اور اس طریقے سے جتنی کامیابی اسے ملنی چاہیے تھی ملی.

سنہ ۱۹۱۶ میں مانڈلے سے واپس آنے پر لوک مانیہ تلک نے کانگریس میں پرویش کیا. اور اب کانگریس کے پن نے اپنے نوکیلے حصے سے سرکار کو جگانا چاہا. جس سے سرکار کچھ تڑپی. سنہ ۱۷ میں ڈاکٹر بیسنٹ نے نوک تو چبھائی پر اپنے طریقے سے، جس کی سرکار نے اتنی ہی پرواہ کی جتنی اس چبھن سے تکلیف ہوئی تھی. جو سرکار سنہ ۱۹۰۵ میں کانگریس نہ سہی تو کانگریس کے مددگاروں کی چبھائی ہوئی برچھی کو ہنسی ہنسی سہہ گئی تھی،

वह डाक्टर बेसेन्ट की पिन की नोक से जितनी डरनी चाहिये थी उतनी ही डरी और उतना ही नतीजा भी हुआ. विदेशी सरकार के चोले में सन् पाँच की बरछी से जो जख्म हुआ था वह भर तो चुका था पर सन् सोलह की लोकमान्य की चुभन से वह फिर हरा हो गया था और डाक्टर बेसेन्ट की चुभन से सन् सत्तरह में वह बढ़ा नहीं पर घटा भी नहीं.

सन् अठारह में नौकरशाही ने अपनी भूल से ही जलियान वाला बाग़ कांड रच कर अपने बरछी वाले जख्म के आप ही टांके तोड़ डाले, जिसने कांग्रेस की सूई को सूली का रूप दे दिया और अब कांग्रेस की सूली भी सरकार के जख्म में इस तरह अंदर चली गई कि सरकार को पता भी न लगने पाया. तकलीफ होने की तो बात ही एक तरफ. नौकरशाही ने अपनी ग़लती से अपना जख्म ही इतना चौड़ा कर लिया था कि जिससे कांग्रेस की सूली को उसके अंदर चले जाने में कोई दिक़्क़त न हुई.

पहला युग ह्यूम-युग था तो दूसरा युग तिलक-युग और तीसरा युग गांधी-युग. पहला युग था तो उलटा युग पर चुभने वाली पिन जैसी चीज के बनने के युग होने के कारन कुछ कम का युग नहीं था. बीज देखने में कितना ही छोटा क्यों न हो समझदारों की नजर में वह बहुत काम की चीज होता है. और अभी तो समझदार अपने सर पर कष्ट झेल कर उसे बचाए रखने की कोशिश करते हैं. कांग्रेस का अगर वह ह्यूम-युग का छोटा सा पिन न होता तो गांधी-युग की सूली न बन ही पाती और फिर काम तो कुछ हो ही न पाता. दुनिया बीज को न पूज कर पेड़ को ही पूजती आई है

وہ ڈاکٹر بیسنٹ کی پن کی نوک سے جتنی ڈرنی چاہیے تھی اتنی ہی ڈری اور اتنا ہی نتیجہ بھی ہوا۔ ودیشی سرکار کے چولے میں سنہ پانچ کی برچھی سے جو زخم ہوا تھا وہ بھر تو چکا تھا پر سنہ سولہ کی لوکمانیہ کی چبھن سے وہ پھر ہرا ہو گیا تھا اور ڈاکٹر بیسنٹ کی چبھن سے سنہ سترہ میں وہ بڑھا نہیں پر گھٹا بھی نہیں۔

سنہ اٹھارہ میں نوکرشاہی نے اپنی بھول سے ہی جلیان والا باغ کانڈ رچ کر اپنے برچھی والے زخم کے آپ ہی ٹانکے توڑ ڈالے، جس نے کانگریس کی سوئی کو سولی کا روپ دے دیا اور اب کانگریس کی سولی بھی سرکار کے زخم میں اس طرح اندر چلی گئی کہ سرکار کو پتہ بھی نہ لگنے پایا۔ تکلیف ہونے کی تو بات ہی ایک طرف۔ نوکرشاہی نے اپنی غلطی سے اپنا زخم ہی اتنا چوڑا کر لیا تھا کہ جس سے کانگریس کی سولی کو اس کے اندر چلے جانے میں کوئی تکلیف نہ ہوئی۔

پہلا یُگ ہیوم یُگ تھا تو دوسرا یُگ تلک یُگ اور تیسرا یُگ گاندھی یُگ۔ پہلا یُگ تھا تو اُلٹا یُگ پر چبھنے والی پن جیسی چیز کے بننے کے یُگ ہونے کے کارن کچھ کم کا یُگ نہیں تھا۔ بیج دیکھنے میں کتنا ہی چھوٹا کیوں نہ ہو سمجھداروں کی نظر میں وہ بہت کام کی چیز ہوتا ہے۔ اور جبھی تو سمجھدار اپنے سر پر کشٹ جھیل کر اسے بچائے رکھنے کی کوشش کرتے ہیں۔ کانگریس کا اگر وہ ہیوم یُگ کا چھوٹا سا پن نہ ہوتا تو گاندھی یُگ کی سولی نہ بن ہی پاتی اور پھر کام تو کچھ ہو ہی نہ پاتا۔ دنیا بیج کو نہ پوج کر پیڑ کو ہی پوجتی آئی ہے

पर इससे क्या बीज का बड़प्पन कुछ कम हो जाता है ?

गांधी-युग ने जलियान वाला बाग़ कांड से खूब फ़ायदा उठाया. और उसी का नतीजा यह हुआ कि आज हम अपने आप को आज़ाद समझ रहे हैं. समझ ही नहीं रहे बहुत कुछ आज़ाद हैं भी.

जिस तरह आदमी किसी मकान को ढाते वक़्त मज़दूरों के कपड़े पहनता है और नई बुनियाद खोदने में भी मज़दूरों के कपड़ों से काम लेता है, वैसे ही कांग्रेस वालों ने जब सचमुच अंग्रेजी सरकार को ढाना चाहा तो बेहद सादगी से काम लिया. सन् बाईस की कांग्रेस से कुर्सियाँ ऐसे चल दीं जैसे गधे के सर से सींग. कांग्रेस के बड़े बड़े नेताओं ने ज़मीन पर बैठने में इतना ही सुख माना जितना एक राजा गद्दी पर बैठकर सुख मानता है. कांग्रेस वालों ने मज़दूर की तरह सिर्फ़ कपड़े ही नहीं पहने खाने में भी तबदीली की. कांग्रेस के बड़े बड़े नेता कपड़े की दूकानों पर धरना देते वक़्त चने चबाकर ही अपना पेट भर लेते थे. है भी बात ठीक. मज़दूरों का काम तब तक अच्छा नहीं हो सकता जब तक दिमाग़ को हर तरह से मज़दूर न बना दिया जाय. यह हिन्दुस्तान की ख़ुश क़िस्मती ही थी कि इस विदेशी राज के ढाने और नये राज की बुनियाद खोदने के लिये जो नेता हिन्दुस्तानियों को मिला. वह नाटक का मज़दूर ऐक्टर नहीं था, वह तो अंदर से बाहर तक मज़दूर था. मज़दूरी उस का धरम था. इस लिये जो कामयाबी नाटक के मज़दूर के ज़रिये सौ बरस में मिलती वह पचीस बरस में ही मिल गई. मेहनत मज़दूरी सुख का बीज है, यह वह नेता

پر اس سے کیا بیج کا بڑپن کچھ کم ہو جاتا ہے ؟

گاندھی یُگ نے جلیان والا باغ کانڈ سے خوب فائدہ اٹھایا۔ اور اسی کا نتیجہ یہ ہوا کہ آج ہم اپنے آپ کو آزاد سمجھ رہے ہیں. سمجھ ہی نہیں رہے بہت کچھ آزاد ہیں بھی.

جس طرح آدمی کسی مکان کو ڈھاتے وقت مزدوروں کے کپڑے پہنتا ہے اور نئی بنیاد کھودنے میں بھی مزدوروں کے کپڑوں سے کام لیتا ہے، ویسے ہی کانگریس والوں نے جب سچ مچ انگریزی سرکار کو ڈھانا چاہا تو بے حد سادگی سے کام لیا. سنہ بائیس کی کانگریس سے کرسیاں ایسے چل دیں جیسے گدھے کے سر سے سینگ. کانگریس کے بڑے بڑے نیتاؤں نے زمین پر بیٹھنے میں اتنا ہی سکھ مانا جتنا ایک راجہ گدی پر بیٹھ کر سکھ مانتا ہے. کانگریس والوں نے مزدور کی طرح صرف کپڑے ہی نہیں پہنے کھانے میں بھی تبدیلی کی. کانگریس کے بڑے بڑے نیتا کپڑے کی دکانوں پر دھرنا دیتے وقت چنے چباکر ہی اپنا پیٹ بھر لیتے تھے۔ ہے بھی بات ٹھیک. مزدوروں کا کام جب تک اچھا نہیں ہو سکتا جب تک دماغ کو ہر طرح سے مزدور نہ بنا دیا جائے۔ یہ ہندستان کی خوش قسمتی ہی تھی کہ اس ودیشی راج کے ڈھانے اور نئے راج کی بنیاد کھودنے کے لئے جو نیتا ہندستانیوں کو ملا وہ ناٹک کا مزدور ایکٹر نہیں تھا، وہ تو اندر سے باہر تک مزدور تھا. مزدوری اس کا دھرم تھا. اس لئے جو کامیابی ناٹک کے مزدور کے ذریعے سو برس میں ملتی وہ پچیس برس میں ہی مل گئی. محنت مزدوری سکھ کا بیج ہے، یہ وہ نیتا

खूब समझता था. और अपने जीते जी उसने अपने साथियों में इस खयाल के भर देने की पूरी पूरी कोशिश की. वह बहुत दरजे तक कामयाब भी हुआ. पर उसे यह पता कब था कि उसके साथी जो काम कर रहे हैं वह नाटक के मजदूर बन कर ही कर रहे हैं. उसका उस तरफ ध्यान भी क्यों जाता. उसकी बुनियाद की खुदाई में कोई फ़र्क़ नहीं आ रहा था. उसके साथी नाटक खेल रहे थे पर ऐसा खेल रहे थे कि वह अपने नेता को तो क्या अपने को भी धोका दे रहे थे. हो सकता है वह मजदूर का नाटक करते करते भूल गए हों कि वह नाटक कर रहे हैं और उसमें इतने मग्न हुए हों कि उनको मजदूरी का सच्चा मजा आने लगा हो. हम यह क्यों कह रहे हैं कि वह सब नाटक खेल रहे थे ? इस लिये कि आज वह मजदूरी का काम सब गायब है. आप कह सकते हैं कि जैसे रोटी बनाने वाली मां रोटी बनाते वक़् रसोई घर के सीधे सादे कपड़े पहनती है और वह ही मां खाना खाते वक़् रेशमी कपड़े पहन कर बढ़िया से बढ़िया थाली कटोरों में खाना खाती है, वैसे ही अगर कोई मजदूर सीधे सादे कपड़ों में मकान की बुनियाद खोदकर और फिर गद्दे तकियों पर आराम करता है तो क्या गुनाह करता है ? आप ठीक कहते हैं. बेशक वह कोई गुनाह नहीं करता. लेकिन आपने यह नहीं सोचा कि बुनियाद खोदने भर से मकान नहीं तैयार हो जाता. मकान तैयार होने से पहले जो मजदूर गद्दे तकियों का सहारा लेता है, उसे तो हम यही कहेंगे कि वह मजदूरी का नाटक कर रहा था. कांग्रेस वालों ने मजदूर बनकर अंग्रेजी राज को ढाया, मजदूर बनकर हिन्दुस्तान की आजादी की

خوب سمجھتا تھا۔ اور اپنے جیتے جی اس نے اپنے ساتھیوں میں اس خیال کے بھر دینے کی پوری پوری کوشش کی۔ وہ بہت درجے تک کامیاب بھی ہوا۔ پر اسے یہ پتہ کب تھا کہ اس کے ساتھی جو کام کر رہے ہیں وہ ناٹک کے مزدور بن کر ہی کر رہے ہیں۔ اس کا اس طرف دھیان بھی کیوں جاتا۔ اس کی بنیاد کی کھدائی میں کوئی فرق نہیں آ رہا تھا۔ اس کے ساتھی ناٹک کھیل رہے تھے پر ایسا کھیل رہے تھے کہ وہ اپنے نیتا کو تو کیا اپنے کو بھی دھوکا دے رہے تھے۔ ہو سکتا ہے وہ مزدور کا ناٹک کرتے کرتے بھول گئے ہوں کہ وہ ناٹک کر رہے ہیں اور اس میں اتنے محو ہوئے ہوں کہ ان کو مزدوری کا سچا مزا آنے لگا ہو۔ ہم یہ کیوں کہہ رہے ہیں کہ وہ سب ناٹک کھیل رہے تھے؟ اس لئے کہ آج وہ مزدوری کا کام سب غائب ہے۔ آپ کہہ سکتے ہیں کہ جیسے روٹی بنانے والی ماں روٹی بناتے وقت رسوئی گھر کے سیدھے سادے کپڑے پہنتی ہے اور وہ ہی ماں کھانا کھاتے وقت ریشمی کپڑے پہن کر بڑھیا سے بڑھیا تھالی کٹوروں میں کھانا کھاتی ہے، ویسے ہی اگر کوئی مزدور سیدھے سادے کپڑوں میں مکان کی بنیاد کھود کر اور پھر گدے تکیوں پر آرام کرتا ہے تو کیا گناہ کرتا ہے؟ آپ ٹھیک کہتے ہیں۔ بے شک وہ کوئی گناہ نہیں کرتا۔ لیکن آپ نے یہ نہیں سوچا کہ بنیاد کھودنے بھر سے مکان نہیں تیار ہو جاتا۔ مکان تیار ہونے سے پہلے جو مزدور گدے تکیوں کا سہارا لیتا ہے، اسے تو ہم یہی کہیں گے کہ وہ مزدوری کا ناٹک کر رہا تھا۔ کانگریس والوں نے مزدور بن کر انگریزی راج کو ڈھایا، مزدور بن کر ہندستان کی آزادی کی

नीव तैयार की, मजदूर बनकर ही आजादी के महल को गज डेढ़ गज खड़ा किया, पर अपने नेता की आँख बन्द होते ही वह गद्दे तकियों पर जा लेटे और अब बरसात सर पर है, नीव में हर तरह पानी भर आने का अंदेशा है, फिर भी वह बारिश की बूँदों और बौछार से पंखा लेकर लड़ रहे हैं. गद्दा और तकिया नहीं छोड़ना चाहते हो सकता है वह इधर उधर जमा हुई ईंटों और लकड़ी वगैरा और सामान के नीचे बौछारों से बचकर एक बरसात निकाल लें, पर उन्हें यह भी तो सोचना चाहिये कि इतनी मेहनत से खड़ी की गज डेढ़ गज दीवार का क्या होगा ? और बुनियाद में अगर पानी भर गया तो उसका क्या हाल होगा. अब उनके लिये कोई चारा नहीं है. उन्हें चाहिये यही कि वह गद्दे तकिये छोड़ें, मजदूरों के कपड़े पहनें और फिर से काम में लगें. चाहिये तो यह था कि वह कंकरों पर सोते, अगर वैसा न कर सकें तो टूटी खाटों से काम लें, क्यों कि अब वह मजदूर न रहकर मेमार बन चुके हैं और मेमारका रुतबा मजदूर से कुछ ज्यादा होता है. क्योंकि वह हाथ पाँव के साथ साथ दिमाग़ से भी काम लेता है.

कांग्रेस को उस वक़ तक अपना मजदूरी बाना बदलने का कोई हक़ नहीं था जब तक कि हिन्दुस्तानी राज की मंजिल ठीक ठीक बनकर खड़ी नहीं हो जाती और जब तक कि वह मंजिल अन्दर और बाहर हर तरह से सज धज कर तैयार न हो जाती. मजदूर की तरह मेमार को भी आराम कहाँ. मेमार मजदूर से भले ही रुतबे में बड़ा हो पर जान-जोखिम के लेहाज से मेमार मजदूर से कहीं ज्यादा खतरे में रहता है.

نیو تیار کی، مزدور بن کر ہی آزادی کے محل کو گز ڈیڑھ گز کھڑا کیا، پر اپنے نیتا کی آنکھ بند ہوتے ہی وہ گدے تکیوں پہ جا لیٹے اور اب برسات سر پر ہے، نیو میں ہر طرح پانی بھر جانے کا اندیشہ ہے، پھر بھی وہ بارش کی بوندوں اور بوچھار سے پنکھا لے کر لڑ رہے ہیں. گدا اور تکیہ نہیں چھوڑنا چاہتے. ہو سکتا ہے وہ ادھر اُدھر جمع ہوئی اینٹوں اور لکڑی وغیرہ اور سامان کے نیچے بوچھاروں سے بچ کر ایک برسات نکال لیں، پر انہیں یہ بھی تو سوچنا چاہیئے کہ اتنی محنت سے کھڑی کی گز ڈیڑھ گز دیوار کا کیا ہوگا؟ اور بنیاد میں اگر پانی بھر گیا تو اس کا کیا حال ہوگا. اب ان کے لئے کوئی چارہ نہیں ہے. انہیں چاہیئے یہی کہ وہ گدے تکیے چھوڑیں، مزدوروں کے کپڑے پہنیں اور پھر سے کام میں لگیں. چاہیئے تو یہ تھا کہ وہ کنکروں پر سوتے، اگر ویسا نہ کر سکیں تو ٹوٹی کھاٹوں سے کام لیں، کیوں کہ اب وہ مزدور نہ رہ کر معمار بن چکے ہیں اور معمار کا رتبہ مزدور سے کچھ زیادہ ہوتا ہے. کیوں کہ وہ ہاتھ پاؤں کے ساتھ ساتھ دماغ سے بھی کام لیتا ہے.

کانگریس کو اس وقت تک اپنا مزدوری بانا بدلنے کا کوئی حق نہیں تھا جب تک کہ ہندستانی راج کی منزل ٹھیک ٹھیک بن کر کھڑی نہیں ہو جاتی اور جب تک کہ وہ منزل اندر اور باہر ہر طرح سے سج دھج کر تیار نہ ہو جاتی. مزدور کی طرح معمار کو بھی آرام کہاں. معمار مزدور سے بھلے ہی رتبے میں بڑا ہو پر جان جوکھم کے لحاظ سے معمار مزدور سے کہیں زیادہ خطرے میں رہتا ہے.

दूसरे तरीक़े से भी सोचा जाय तो फ़ाक़े के बाद पेट भर खाने वाला आदमी अपनी जान को ख़तरे में डालता है. फ़ाक़े के बाद बहुत खाने की भूल या तो बच्चे करते हैं या ऐसे आदमी करते हैं जिन को अपनी नियत पर क़ाबू नहीं और ऐसे तो सौ फ़ीसदी करते हैं, जिन पर फ़ाक़े के वक़्त बड़ी देख भाल रखी गई हो और जिन को फ़ाक़े की ग़लतियों की वजह से काफ़ी डांटा डपटा गया हो. कांग्रेस वालों का यही हाल हुआ. इन्होंने मुल्क की ख़ातिर जो कुछ संयम किया वह अपने नेता के कहने पर, उसी की निगरानी में और भूल करने पर उसी की डांट डपट सहकर किया. आज वह नेता सामने नहीं है. इसीलिये बेपरवाही से यह बदपरहेज़ी पर टूट पड़े हैं. नतीजा क्या होगा इससे जनता से ज़्यादा कांग्रेस वाले वाक़िफ़ हैं पर अपनी नियत को क्या करें ? वह अब दिल के क़ाबू में हैं दिल पर अब उनका क़ाबू कहाँ ? जब कभी दिल पर क़ाबू था तो वह अपना न था, वह था अपने नेता की मारफ़त अब न नेता है न दिल पर क़ाबू. अब इसके सिवा कोई चारा नहीं है कि कांग्रेस वाले दिल पर क़ाबू हासिल करें और अपनी तन्दुरुस्ती का ख़याल रखते हुए फ़ाक़े के बाद कम खायें. इतमीनान रक्खें कम खाने से वह ज़्यादा वज़न बढ़ा सकेंगे, ज़्यादा खाकर वह ज़ायक़े को ख़ुश कर सकते हैं अपने राम को नहीं.

साम्यवाद (कम्युनिज़्म) त्यागी है सही पर तलवार बाँधे हुए त्यागी है. उसे गेरुआ कपड़े में सिपाही समझो. त्यागी होने के नाते और गेरुवे कपड़े के बल पर उसे जनता से इज़्ज़त मिलेगी

دوسرے طریقے سے بھی سوچا جائے تو فاقے کے بعد پیٹ بھر کھانے والا آدمی اپنی جان کو خطرے میں ڈالتا ہے۔ فاقے کے بعد بہت کھانے کی بھول یا تو بچے کرتے ہیں یا ایسے آدمی کرتے ہیں جن کو اپنی نیت پر قابو نہیں اور ایسے تو سو فی صدی کرتے ہیں، جن پر فاقے کے وقت بڑی دیکھ بھال رکھی گئی ہو اور جن کو فاقے کی غلطیوں کی وجہ سے کافی ڈانٹا ڈپٹا گیا ہو۔ کانگریس والوں کا یہی حال ہوا۔ انھوں نے ملک کی خاطر جو کچھ سنیم کیا وہ اپنے نیتا کے کہنے پر، اسی کی نگرانی میں اور بھول کرنے پر اسی کی ڈانٹ ڈپٹ سہہ کر کیا۔ آج وہ نیتا سامنے نہیں ہے۔ اسی لئے بے پرواہی سے یہ بدپرہیزی پر ٹوٹ پڑے ہیں۔ نتیجہ کیا ہوگا اس سے جنتا سے زیادہ کانگریس والے واقف ہیں پر اپنی نیت کو کیا کریں؟ وہ اب دل کے قابو میں ہیں دل پر اب ان کا قابو کہاں؟ جب کبھی دل پر قابو تھا تو وہ اپنا نہ تھا، وہ تھا اپنے نیتا کی معرفت۔ اب نہ نیتا ہے نہ دل پر قابو۔ اب اس کے سوا کوئی چارہ نہیں ہے کہ کانگریس والے دل پر قابو حاصل کریں اور اپنی تندرستی کا خیال رکھتے ہوئے فاقے کے بعد کم کھائیں۔ اطمینان رکھیں کم کھانے سے وہ زیادہ وزن بڑھا سکیں گے، زیادہ کھا کر وہ ذائقے کو خوش کر سکتے ہیں اپنے رام کو نہیں۔

سامیہ واد (کمیونزم) تیاگی ہے صحیح پر تلوار باندھے ہوئے تیاگی ہے۔ اسے گیروا کپڑے میں سپاہی سمجھو۔ تیاگی ہونے کے ناتے اور گیروے کپڑے کے بل پر اسے جنتا سے عزت ملیگی

और खूब मिलेगी. साम्राज शाही को उससे डरना ही चाहिये और डरती भी है पर सत्याग्रहियों को उसका क्या डर. सत्याग्रही तो त्यागी है और हाथ में लिये हुए है सेवा प्रेम का गुलदस्ता. उससे साम्यवाद कांपता है लेकिन तलवार फेंकते ही उसका कांपना बन्द हो जाता है और सत्याग्रह के पैरों में गिर पड़ता है. दुनिया को इस समय साम्यवाद की ज़रूरत है, इस समय क्या हर समय उसकी जरूरत है. जो तलवार से उसे फैलायगा, जनता अगर उसको दस नंबर की इज्जत देगी तो उस को सौ नंबर की इज्जत देगी जो उसी साम्यवाद को सेवा और प्रेम का गुलदस्ता हाथ में लिये हुए खुश्बू फैलाता हुआ फैलाता है. गांधी-युग अहिंसात्मक साम्यवाद का युग था, तलवार वाला साम्यवाद घबरा रहा था. उसकी आँख बंद होते ही तलवार वाले साम्यवाद का डर दूर हो गया और वह सारे चीन पर छा चुका है, बर्मा और काश्मीर के रास्ते हिन्दुस्तान में आने से उसे कोई नहीं रोक सकेगा. पूँजीवाद के दिन आ गये हैं. पूँजीवाद कभी अपनी मौत नहीं मरता. उस को तो कोई न कोई जहर ही देता है. हिन्दुस्तान ने ही उसे गुड़ देकर मारना सीखा है. फिर क्यों नहीं उसे गुड़ देकर खत्म किया जाता. पर गुड़ दे कौन ? पूँजी वादी के हाथ के गुड़ से पूंजी वाद मरेगा नहीं और अगर मरा तो गुड़ देने वाले को भी ले मरेगा. हिन्दुस्तान की आज की सरकार और असेम्बली के सारे मेम्बर पक्के पूँजी वादी हैं, पैंतालिस रुपये रोज लेने वाले पूंजी वादी नहीं तो और क्या हैं. यह पूंजी वाद और ज़मींदारी को खत्म नहीं कर सकते और अगर खत्म

اور خوب ملے گی. سامراج شاہی کو اس سے ڈرنا ہی چاہیئے اور ڈرتی بھی ہے پر ستیاگرہیوں کو اس کا کیا ڈر. ستیاگرہی تو تیاگی ہے اور ہاتھ میں لئے ہوئے ہے سیوا پریم کا گلدستہ. اس سے سامیہ واد کانپتا ہے لیکن تلوار پھینکتے ہی اس کا کانپنا بند ہو جاتا ہے اور ستیاگرہ کے پیروں میں گر پڑتا ہے. دنیا کو اس سمے سامیہ واد کی ضرورت ہے، اس سمے کیا ہر سمے اس کی ضرورت ہے. جو تلوار سے اسے پھیلائے گا جنتا اگر اس کو دس نمبر کی عزت دے گی تو اس کو سو نمبر کی عزت دے گی جو اسی سامیہ واد کو سیوا اور پریم کا گلدستہ ہاتھ میں لئے ہوئے خوشبو پھیلاتا ہوا پھیلاتا ہے. گاندھی یگ اہنسا تمک سامیہ واد کا یگ تھا، تلوار والا سامیہ واد گھبرا رہا تھا. اس کے آنکھ بند ہوتے ہی تلوار والے سامیہ واد کا ڈر دور ہو گیا اور وہ سارے چین پر چھا چکا ہے، برما اور کاشمیر کے راستے ہندستان میں آنے سے اسے کوئی نہیں روک سکے گا. پونجی واد کے دن آ گئے ہیں. پونجی واد کبھی اپنی موت نہیں مرتا. اس کو تو کوئی نہ کوئی زہر ہی دیتا ہے. ہندستان نے ہی اسے گڑ دے کر مارنا سیکھا ہے. پھر کیوں نہیں اسے گڑ دے کر ختم کیا جاتا. پر گڑ دے کون؟ پونجی وادی کے ہاتھ کے گڑ سے پونجی واد مرے گا نہیں اور اگر مرا تو گڑ دینے والے کو بھی لے مرے گا. ہندستان کی آج کی سرکار اور اسمبلی کے سارے ممبر پکے پونجی وادی ہیں، پینتالیس روپئے روز لینے والے پونجی وادی نہیں تو اور کیا ہیں، یہ پونجی واد اور زمینداری کو ختم نہیں کر سکتے اور اگر ختم

करने लग गये तो पूंजीवाद और जमीन्दारी के खत्म होने के बाद उसी जनता के हाथों यह भी खत्म हो जायँगे. क्यों कि यह खुद भी तो पूंजी वादी हैं. फ्रांस की क्रान्ति से सबको सबक लेना चाहिये और अगर वह सबक पुराना हो तो ताजा सबक बर्मा से लीजिये.

खूनी साम्यवाद से बचने का तरीक़ा है त्याग, सेवा और प्रेम. अगर कांग्रेस ने इन को जल्दी न अपनाया और हिन्दुस्तानी सरकार ने इन चीजों की क़दर न की तो वह दिखावे की मेहमान नवाजी पर ज्यादा दिन न टिक सकेगी.

२९-६-४९ भगवानदीन

کرنے لگ گئے تو پونجی واد اور زمینداری کے ختم ہونے کے بعد اسی جنتا کے ہاتھوں یہ بھی ختم ہو جائیں گے۔ کیوں کہ یہ خود بھی تو پونجی وادی ہیں۔ فرانس کی کرانتی سے سب کو سبق لینا چاہیئے اور اگر وہ سبق پرانا ہو تو تازہ سبق برما سے لیجئے۔

خونی سامیہ واد سے بچنے کا طریقہ ہے تیاگ، سیوا اور پریم۔ اگر کانگریس نے ان کو جلدی نہ اپنایا اور ہندستانی سرکار نے ان چیزوں کی قدر نہ کی تو وہ دکھاوے کی مہمان نوازی پر زیادہ دن نہ ٹک سکے گی۔

۲۹-۶-۴۹ بھگوان دین

भूल सुधार

छपाई की जल्दी और प्रेस की ग़लती से इस नम्बर में अक्सर भूलें रह गई हैं, कुछ ख़ास ख़ास भूलें और उनका सुधार हम नीचे दे रहे हैं.

सफ़ा	लाइन	ग़लत	सही
१	सात	अंधियारी	अंधियारी
७	आठ व ग्यारह	धम	धर्म
१८	उन्नीस	सर्व निर्भय धर्मरत पुनि	सब निदर्भ धरमत पूनी
३१	ग्यारह	थाड़े	थोड़े
४१	तीन	पता	पाता
४१	अठारह	तौरे	तौर
६२	दस	कशशकश	कशमकश
८२	बाईस	सत्यग्रह	सत्याग्रह
१०७	चौदह	की रोकने	के रोकने
११०	पन्द्रह व सत्तरह	जिदंगी	जिन्दगी
१२८	चार	अँगरेज़ी राजा	अंगरेज़ी राज
१३१	चार	जायगे,	जायँगे,
१५४	दो	दज	दर्जे
”	छै	दर्जे	दर्जे
”	बाईस	दजे	दर्जे
१५५	पन्द्रह	रही	रहा
१५७	पाँच	उनहोनी	अनहोनी
१५७	अठारह	हक़हर	हर हक़
१५६	ग्यारह	चास	पचास
१६२	ग्यारह	मरकज़ी और नीति	मरकज़ी नीति
१६३	पहली	बनाने	बनने
१६३	दो	उक	उस
१६३	बारह	पार्टियों	पार्टियाँ
१६३	बाईस	लोगों को भले	लोगों के भले
१६४	दो	का ज़रिया	ज़रिया
१६६	तीन	और या असर	और या असर लोग
१६६	बारह	जनता की	जनता के
१६७	पन्द्रह	हथिरार	हथियार
१६७	बीस	बापू ने	बापू के
१६८	पन्द्रह	ज़हरोंली	ज़हरीली
१६६	चौदह	सयभ्ता	सभ्यता
१८६	तेईस	रखना	रखता
१६८	बीस	याग	त्याग

एक प्रार्थना

हमें बहुत दुख है कि अपने वादे के मुताबिक़ हम 'नयाहिन्द' का यह खास अंक पन्द्रह अगस्त तक 'नयाहिन्द' के प्रेमियों की सेवा में न पहुँचा सके. इस देर के कई कारन हैं। एक तो यह कि हमने सोचा था कि यह अंक डेढ़ सौ सफ़े का या ज़्यादा से ज़्यादा दो सौ सफ़े का होगा, पर मंज़र अली सोख्ता साहब की व्याख्या ही २१६ सफ़े की हो गई और छपाई का काम बढ़ गया, दूसरे असिस्टंट एडीटर बीमार हो गये और दस दिन तक दफ़्तर बिलकुल न आ सके तीसरे प्रेस में छुट्टियाँ बहुत पड़ गईं, फिर भी हम 'नयाहिन्द' के सभी प्रेमियों के सामने शर्मिन्दा हैं और उनसे माफ़ी चाहते हैं कि उन्हें 'नयाहिन्द, का इतना इन्तज़ार करना पड़ा.

हमें आशा है कि आप 'नयाहिन्द' का यह खास अंक पाकर उस कष्ट को भूल जायँगे जो आपको इसके इन्तज़ार में हुआ.

मैनेजर 'नयाहिन्द'

ایک پرارتھنا

ہمیں بہت دُکھ ہے کہ اپنے وعدے کے مطابق ہم 'نیا ھند' کا یہ خاص انک پندرہ اگست تک 'نیا ھند' کے پریمیوں کی سیوا میں نہ پہنچا سکے۔ اس دیر کے کئی کارن ہیں۔ ایک تو یہ کہ ہم نے سوچا تھا کہ یہ انک ڈیڑھ سو صفحے کا یا زیادہ سے زیادہ دو سو صفحے کا ہوگا، پر منظر علی سوختہ صاحب کی ویاکھیا ہی ۲۱۹ صفحوں کی ہو گئی اور چھپائی کا کام بڑھ گیا، دوسرے اسسٹنٹ ایڈیٹر بیمار ہو گئے اور دس دن تک دفتر بالکل نہ آ سکے۔ تیسرے پریس میں چھٹیاں بہت زیادہ پڑ گئیں۔ پھر بھی ہم 'نیا ھند' کے سبھی پریمیوں کے سامنے شرمندہ ہیں اور ان سے معافی چاہتے ہیں کہ انھیں 'نیا ھند' کا انتظار کرنا پڑا۔

ہمیں آشا ہے کہ آپ 'نیا ھند' کا یہ خاص انک پا کر اس کشٹ کو بھول جائیں گے جو آپ کو اس کے انتظار میں ہوا۔

منیجر 'نیا ھند'

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया ! क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

हिन्दू मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दरलाल के

चार लैकचर, जो उन्होंने
सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर
की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک۔ پنڈت سندر لال

سامپردائکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا! قیمت بارہ آنہ۔

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

ہندو مسلم ایکتا

پنڈت سندر لال کے

چار لکچر، جو انھوں نے
سنٹرل کنسیلیٹری بورڈ گوالیر
کی دعوت پر گوالیر میں دئے۔

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے۔

کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔

منیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन् '४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سندرلال

پنڈت سندرلال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ '۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخیر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لیے، کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے۔

منیجر 'نیا ہند'
۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد۔

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री० रतनलाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और इनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

مسلم دیش بھکت

[لیکھک شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال اور اُن کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنہوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی ان کے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ان کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی۔

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی۔ اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انہوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے۔ قیمت ایک روپیہ ۱۲ آنے

مینیجر، 'نیا ہند'

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

आज के शहीद

(सम्पादक श्री० रतन लाल बंसल)

आज के शहीद में उन बहादुरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने विदेशी हाकिमों की फैलाई फूट की आग में इन्सानियत को भस्म होते देख एक छन की भी देर न की और उसे बुझाने के लिये अपनी जान क़ुरबान कर दी.

आज के शहीद में उन वीरों की कहानियाँ हैं जिन्होंने फूट और नफ़रत के अंधेरे में रोशनी बनकर दूसरों को रस्ता दिखाया.

आज के शहीद में देश पिता महात्मा गांधी के साथ-साथ श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री लाल मोहन सेन, श्री बसन्त राव हेंगिष्टे, जनाब रजब अली, श्री शचीन्द्रनाथ मित्र, मीर मक़बूल शेरवानी, श्री स्मृतीश बनर्जी और जनाब शोएबुल्ला ख़ाँ वग़ैरा के जीवन और बलिदान की कहानियाँ पढ़कर आप सोचने के लिये मजबूर हो जायँगे कि धर्म के सच्चे सेवक यह शहीद थे या वह फ़िरक़ा परस्त नेता जो बात-बात में धर्म और दीन का नाम लेकर इन्सानों को इन्सानों से नफ़रत करना सिखाते हैं.

अगर आपका इन्सानियत पर विश्वास और राष्ट्र पिता महात्मा गांधी के मिशन से प्रेम है तो आप इस किताब को न सिर्फ़ ख़ुद पढ़ें बल्कि अपने दोस्तों को भी पढ़ने की सलाह दें.

सुन्दर जिल्द और आर्ट पेपर पर छपी आठ तस्वीरों के साथ इस किताब का दाम सिर्फ़ ढाई रुपया रक्खा गया है. किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द' ४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

آج کے شہید

(سمپادک شری رتن لال بنسل)

آج کے شہید میں اُن بہادروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے ودیشی حاکموں کی پھیلائی پھوٹ کی آگ میں انسانیت کو بھسم ہوتے دیکھ ایک چھن کی بھی دیر نہ کی اور اسے بجھانے کے لئے اپنی جان قربان کر دی۔

آج کے شہید میں اُن ویروں کی کہانیاں ہیں جنھوں نے پھوٹ اور نفرت کے اندھیرے میں روشنی بن کر دوسروں کو راستہ دکھایا۔

آج کے شہید میں دیش پتا مہاتما گاندھی کے ساتھ ساتھ شری گنیش شنکر ودیارتھی، شری لال موہن سین، شری بسنت راؤ ہینگسٹے، جناب رجب علی، شری شچیندر ناتھ مِتر، میر مقبول شیروانی، شری سمرتیش بنرجی اور جناب شعیب اللہ خاں وغیرہ کے جیون اور بلیدان کی کہانیاں پڑھ کر آپ سوچنے کے لئے مجبور ہو جائیں گے کہ دھرم کے سچے سیوک یہ شہید تھے یا وہ فرقہ پرست نیتا جو بات بات میں دھرم اور دین کا نام لیکر انسانوں کو انسانوں سے نفرت کرنا سکھاتے ہیں۔

اگر آپ کو انسانیت پر وشواس اور راشٹر پتا مہاتما گاندھی کے مشن سے پریم ہے تو آپ اس کتاب کو نہ صرف خود پڑھیں بلکہ اپنے دوستوں کو بھی پڑھنے کی صلاح دیں۔

سندر جلد اور آرٹ پیپر پر چھپی آٹھ تصویروں کے ساتھ اس کتاب کا دام صرف ڈھائی روپیہ رکھا گیا ہے۔ کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔

مینجر نیا ہند، ۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू ; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़ ; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.
गवर्निंग बाडी के और मेम्बर
डा० सय्यद महमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, र० विशम्भर नाथ.

—०—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट, बम्बई.
बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अब्दुल्ला ब्रेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब किताबें वग़ैरह दो तहाई दाम पर मिलती हैं.

---

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں ۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا ۔

(۳) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند ۔
گورننگ باڈی کے اور ممبر—
ڈاکٹر سید محمود' مسٹر عبدالمجید خواجہ' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' شری بی جی کھیر' مسٹر ایس کے رودرا' پنڈت بشمبھر ناتھ ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—
جہانگیر واڈیا بلڈنگ' ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ' فورٹ بمبئی ۔
بمبئی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر—
شری بی - جی - کھیر' شریمتی صوفیا واڈیا' پرنسپل اے - اے - اے - فیضی' شری ایم - ایچ - پکواسا' شریمتی ہنسا مہتا' سید عبداللہ بریلوی' مسٹر کے - وی - شاہ ۔
ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے ۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی'
۴۸ بائی کا باغ' الہ آباد ۔

نوٹ—سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تہائی دام پر ملتی ہیں ۔

Registered No. A-210

"गीता और "कुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

इसके बाद गीता के लिखे जाने के वक्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान का पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़बत, आख़ेरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

کتاب آسان ہندوستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

مینیجر "نیا ہند"

۴۸ - بائی کا باغ الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Published by ... Nath for Hindustani Culture Society 48, Bai-ka-Bagh, Allahabad.

नया हिन्द نیا ہند



" नया हिन्द "

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का (परचा)

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़रहसन, विशवम्भरनाथ, सुन्दरलाल

सितम्बर १९४९

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने।

मनीजर
'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद।

'' نیا ھند ''

ھندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندر لال'

ستمبر ۱۹۴۹

قیمت—ھندوستان میں چھ روپیہ سال - باھر دس روپیہ سال
ایک پرچہ دس آنے

منیجر
'نیا ھند'

۴۸' بائی کا باغ' الہ آباد -

नया हिन्द

نیا ہند

जिल्द ७ सितम्बर '४९ नम्बर ३

جلد ۷ ستمبر ۴۹ء نمبر ۳

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

रसीले बोल

(भाई बाक़र रिज़वी)

जो देश धर्म के दुश्मन हैं, जनता का ध्यान बँटाते हैं,
मिट्टी के खिलौने देके उसे, बच्चों की तरह बहलाते हैं.

थे पेड़ में जब फल फूल लगे, सब पंख पखेरू आते थे,
पतझड़ की जब से रुत आई, यह छाँव से भी कतराते हैं.

बरखा की कोई आस नहीं, पानी भी कोसों पास नहीं,
फिर भी मतवाले, धुन के पक्के, माली पेड़ लगाते हैं.

رسیلے بول

(بھائی باقر رضوی)

جو دیش دھرم کے دشمن ہیں، جنتا کا دھیان بٹاتے ہیں،
مٹی کے کھلونے دے کے اُسے، بچوں کی طرح بہلاتے ہیں۔

تھے پیڑ میں جب پھل پھول لگے، سب پنکھ پکھیرو آتے تھے،
پت جھڑ کی جب سے رُت آئی، یہ چھاؤں سے بھی کتراتے ہیں۔

برکھا کی کوئی آس نہیں، پانی بھی کوسوں پاس نہیں،
پھر بھی متوالے، دھن کے پکے، مالی پیڑ لگاتے ہیں

अब ख़ून के बदले अंग अंग में प्रेम का रस भर जाता है,
तब इन्साँ बढ़कर क्रोध कपट के हर बुत से टकराते हैं.

संसार के चारों खूँट में जब सन्तोष का एक रस्ता है यही,
फिर सत्य के नाम से क्यों आख़िर दुनिया वाले घबराते हैं.

है प्रेम हमारा धर्म, नहीं कुछ जात पात का भेद अन्तर
हम एकता का दम भरते हैं और गीत प्रेम के गाते हैं.

ऊषा देवी के दर्शन की आशा में रैन बिताई है
अब उनकी सवारी आने के आसार भी पाये जाते हैं.

جب خون کے بدلے انگ انگ میں پریم کا رس بھر جاتا ہے
تب انساں بڑھ کر کرودھ کپٹ کے ہر بُت سے ٹکراتے ہیں.

سنسار کے چاروں کھونٹ میں جب سنتوش کا اِک رستہ ہے یہی
پھر ستیہ کے نام سے کیوں آخر دنیا والے گھبراتے ہیں.

ہے پریم ہمارا دھرم، نہیں کچھ جات پات کا بھید انتر
ہم ایکتا کا دَم بھرتے ہیں اور گیت پریم کے گاتے ہیں.

اوشا دیوی کے درشن کی آشا میں رین بتائی ہے
اب اُن کی سواری آنے کے آثار بھی پائے جاتے ہیں.

हमारी राह

(पंडित सुन्दरलाल)

(आज़ादी की दूसरी सालगिरह पर हैदराबाद दकिन से निकलने वाले "हिन्द नामा" के लिये लिखा गया.)

इस मुल्क में इसलाम और हिन्दू धर्म का एक दूसरे से मिलन हुए बारह सौ बरस से ऊपर बीत चुके. यह ख़याल ग़लत है कि इसलाम मज़हब यहाँ उत्तर पच्छिम के ख़ुश्की के रास्ते से आया. इसलाम यहाँ दक्खिन में समुन्दर के रास्ते आया और दक्खिन से उत्तर की तरफ़ बढ़ा. यहाँ तक कि हिन्दुस्तान से इसलाम के प्रचारकों ने अफ़ग़ानिस्तान पहुँच कर वहाँ इसलाम फैलाया और वहाँ के बुद्ध मज़हब और शिव मज़हब के मानने वालों को इसलाम की दीक्षा दी.

यह आम ख़याल भी ग़लत है कि इस मुल्क में इसलाम मुसलिम हुकूमतों के सहारे फैला. मुसलमान बादशाहों और हमलाआवरों के आने से सदियों पहले इसलाम अरब सौदागरों और मुसलिम फ़क़ीरों और दर्वेशों के साथ इस मुल्क में आ चुका था और फैलता जा रहा था. इतिहास के पढ़ने वालों का ख़याल है कि मुसलिम हुकूमतों के इस मुल्क में क़ायम होने से इसलाम के फैलने में मदद मिलने की जगह और धक्का पहुँचा.

इसलाम इस मुल्क में क्यों फैला ? सच यह है कि दुनिया में कोई मज़हब नया मज़हब नहीं होता. मज़हबी सचाइयाँ वही

ہماری راہ

(پنڈت سُندر لال)

(آزادی کی دوسری سالگرہ پر حیدر آباد دکن سے نکلنے والے "ہند نامہ" کے لئے لکھا گیا۔)

اِس مُلک میں اسلام اور ہندو دھرم کا ایک دوسرے سے مِلن ہوئے بارہ سو برس سے اوپر بیت چکے۔ یہ خیال غلط ہے کہ اسلام مذہب یہاں اُتر پچھم کے خشکی کے راستے سے آیا۔ اسلام یہاں دکھن میں سمندر کے راستے آیا اور دکھن سے اُتر کی طرف بڑھا۔ یہاں تک کہ ہندستان سے اسلام کے پرچارکوں نے افغانستان پہنچ کر وہاں اسلام پھیلایا اور وہاں کے بُدھ مذہب اور شیو مذہب کے ماننے والوں کو اسلام کی دِکشا دی۔

یہ عام خیال بھی غلط ہے کہ اِس مُلک میں اسلام مسلم حکومتوں کے سہارے پھیلا۔ مسلمان بادشاہوں اور حملہ آوروں کے آنے سے صدیوں پہلے اسلام عرب سوداگروں اور مسلم فقیروں اور درویشوں کے ساتھ اِس مُلک میں آچکا تھا اور پھیلتا جا رہا تھا۔ اتہاس کے پڑھنے والوں کا خیال ہے کہ مسلم حکومتوں کے اِس مُلک میں قائم ہونے سے اسلام کے پھیلنے میں مدد ملنے کی جگہ اور دھکا پہونچا۔

اِسلام اِس مُلک میں کیوں پھیلا؟ سچ یہ ہے کہ دنیا میں کوئی مذہب نیا مذہب نہیں ہوتا۔ مذہبی سچائیاں وہی

बुनियादी सचाइयाँ हैं जो दुनिया के शुरू से चली आ रही हैं. अलग अलग महा पुरुषों, अवतारों, तीरथंकरों और पैग़म्बरों ने उन्हीं सचाइयों को अपनी अपनी ज़बान में, अपने अपने ढंग से ज़ाहिर किया है. ज़माने का गर्दो गुबार जब जब उन बुनियादी सच्चाइयों को ढक लेता है और पुराने मज़हबों के मानने वालों के अमल और उनकी मान्यताओं में फ़रक़ पड़ने लगता है तो दुनिया को किसी न किसी ऐसे राह दिखाने वाले की ज़रूरत होती है जो पुरानी शराब को नई बोतलों में भर सके. दिलों की चिंगारियों पर से जमी हुई राख को हटा कर उन्हें फिर से रोशन कर सके. इसलाम भी इसी तरह की एक कोशिश थी. जिस वक़्त इसलाम इस मुल्क में [illegible] ज़्यादा गिरावट का [illegible] इसलाम के [illegible] हद को पहुँचे हुए थे. मंदिरों के कर्म कांड और पूजा पाठ बेहद पेचीदा थे. किसी शूद्र या किसी [illegible] शादी ब्याह या कोई और रस्म बिना उस [illegible] थी जो उस शूद्र के साये तक [illegible] करता था. मुल्क के करोड़ों इन्सानों के साथ [illegible] मानों में जानवरों से बदतर बरताव होता था. इसलाम ने आ कर [illegible] सादगी इन सब बुरे रिवाजों का ख़ातमा कर दिया. सब इन्सान [illegible] न कोई ज़ात और न पात [illegible] न कोई ऊँच और न कोई नीच. [illegible] छोटा मेहतर या चमार भी इसलाम के दायरे में दाखिल होते ही बड़े से बड़े आलिम मुसलमान के साथ बैठ कर एक

بنیادی سچائیاں ہیں جو دنیا کے شروع سے چلی آ رہی ہیں۔ الگ الگ مہاپرشوں، اوتاروں، تیرتھنکروں اور پیغمبروں نے انھیں سچائیوں کو اپنی اپنی زبان میں، اپنے اپنے ڈھنگ سے ظاہر کیا ہے۔ زمانے کا گرد غبار جب جب اُن بنیادی سچائیوں کو ڈھک لیتا ہے اور پرانے مذہبوں کے ماننے والوں کے عمل اور اُن کی مانتاؤں میں فرق پڑنے لگتا ہے تو دنیا کو کسی نہ کسی ایسے راہ دکھانے والے کی ضرورت ہوتی ہے جو پرانی شراب کو نئی بوتلوں میں بھر سکے۔ دلوں کی چنگاریوں پر سے جمی ہوئی راکھ کو ہٹا کر انھیں پھر سے روشن کر سکے۔ اسلام بھی اسی طرح کی ایک کوشش تھی۔ جس وقت اسلام اس ملک میں [illegible] پرانے دھرم کی شکل کافی بدل چکی تھی [illegible] ہندو دھرم کا سب سے زیادہ گراوٹ [illegible] چھات پات اور اونچ نیچ کے بیحد [illegible] مندروں کے کرم کانڈ اور پوجا پاٹ بیحد پیچیدہ تھے [illegible] اچھوت کا مرنا، جینا، شادی بیاہ یا کوئی اور رسم بنا [illegible] برہمن کے نہیں ہو سکتی تھی جو اس [illegible] سے بھی پرہیز کرتا تھا۔ ملک کے کروڑوں انسانوں کے ساتھ [illegible] معنوں میں جانوروں سے بدتر برتاؤ ہوتا تھا۔ اسلام نے آ کر [illegible] سادگی ان سب برے رواجوں کو ختم کر دیا۔ سب [illegible] نہ کوئی ذات نہ پات۔ نہ کوئی اونچ اور نہ کوئی [illegible] سے چھوٹا مہتر یا چمار بھی اسلام کے دائرے میں [illegible] ہی بڑے سے بڑے عالم مسلمان کے ساتھ بیٹھ کر ایک

[illegible] वान पर खाना खा सकता था. इन्सान और उसके अल्लाह [illegible] बीच में किसी पढ़े या पुरोहित [illegible] न थी. हर पढ़ा लिखा [illegible] निकाह पढ़ा [illegible] भी मुसलमान जो नमाज [illegible] आमतौर पर अपने पीछे दूसरों को नमाज पढ़ा सकता था. [illegible] पेचीदा कर्म [illegible] और पूजा, पाठ एकदम [illegible] हो जाते थे. सीधे सादे उसूल [illegible] एक निराकार ईश्वर और उसके पैगम्बर को मानना और नेक अमल करना. इसलाम का यही सीधा सादा रूप और उसका यही इन्सानी भाई चारा था, जिसकी वजह से दूसरे मुल्कों की तरह इस मुल्क के भी लाखों इन्सान अपने उन पुराने मजहबों को छोड़ कर, जिनकी शकलें बिगड़ चुकी थीं, इसलाम के दायरे में दाखिल होते चले गये. यह एक तारीखी सचाई है कि सबसे पहले बहुत कर वही लोग इसलाम के दायरे में दाखिल हुए जो हिन्दुओं में छोटी जातों के लोग समझे जाते थे और जिनके साथ हर तरह का बुरा बरताव जायज समझा जाता था. अभी तक इस मुल्क के मुसलमानों में सब से बड़ी तादाद कपड़ा बुनने वालों की है जिन्हें इस दिन तक हिन्दुओं में अछूत माना जाता है. सातवीं सदी ईसवी से ही सैकड़ों मुसलमान फ़क़ीर और दर्वेश समुन्दर के रास्ते से आकर इस मुल्क के अलग अलग हिस्सों में बस गये. यह लोग आम तौर पर अपनी इलमियत और अपने नेक चलन दोनों के लिये मशहूर होते थे. हजारों और लाखों लोग उनकी नेकी, पाकी और रूहानियत से खिचकर उनके चारों तरफ जमा हो जाते थे. उनके दरबारों में इन्सानी बराबरी का बरताव लोगों पर जादू का काम करता था. तारीख इस बात की गवाह है कि अकसर लोग

[illegible] پر کھانا کھا سکتا تھا۔ انسان اور اُس کے اللہ کے بیچ میں کسی پڑھے یا پروہت کی ضرورت نہ تھی۔ ہر پڑھا لکھا شخص نکاح پڑھا سکتا [illegible] بھی مسلمان جو نماز کا طریقہ جانتا ہو، اپنے پیچھے دوسروں کو نماز پڑھا سکتا تھا۔ مندروں کے پیچیدہ کرم کانڈ اور پوجا پاٹ ایک دم غیر ضروری ہو جاتے تھے۔ سیدھے سادے اصول۔ ایک نراکار ایشور اور اس کے پیغمبر کو ماننا اور نیک عمل کرنا۔ اسلام کا یہی سیدھا سادا روپ اور اُس کا یہی انسانی بھائی چارا تھا، جس کی وجہ سے دوسرے ملکوں کی طرح اس ملک کے بھی لاکھوں انسان اپنے اُن پرانے مذہبوں کو چھوڑ کر، جن کی شکلیں بگڑ چکی تھیں، اسلام کے دائرے میں داخل ہوتے چلے گئے۔ یہ ایک تاریخی سچائی ہے کہ سب سے پہلے بہت کر وہی لوگ اسلام کے دائرے میں داخل ہوئے جو ہندوؤں میں چھوٹی جاتوں کے لوگ سمجھے جاتے تھے اور جن کے ساتھ ہر طرح کا برا برتاؤ جائز سمجھا جاتا تھا۔ ابھی تک اس ملک کے مسلمانوں میں سب سے بڑی تعداد کپڑا بننے والوں کی ہے جنھیں اس دن تک ہندوؤں میں اچھوت مانا جاتا ہے۔ ساتویں صدی عیسوی سے ہی سیکڑوں مسلمان فقیر اور درویش سمندر کے راستے سے آکر اس ملک کے الگ الگ حصّوں میں بس گئے۔ یہ لوگ عام طور پر اپنی علمیت اور اپنے نیک چلن دونوں کے لئے مشہور ہوتے تھے۔ ہزاروں اور لاکھوں لوگ ان کی نیکی، پاکی اور روحانیت سے کھنچ کر اُن کے چاروں طرف جمع ہو جاتے تھے۔ اُن کے درباروں میں انسانی برابری کا برتاؤ لوگوں پر جادو کا کام کرتا تھا۔ تاریخ اس بات کی گواہ ہے کہ اکثر لوگ

उनसे दरख्वास्त करते थे कि हमें मुसलमान कर लीजिये और वह यह कह कर इन्कार करते थे कि हमारा काम 'इसलाम' की तबलीग़ करना नहीं है, 'ईमान' की तबलीग़ करना है. इस मुल्क में इसलाम ज्यादातर इन्हीं फ़क़ीरों और दर्वेशों के असर से फैला. बादशाहों या किसी अंजुमने तबलीग़े इसलाम के मेम्बरों के असर से नहीं. तारीख़ से यह भी जाहिर है कि हिन्दू राजाओं के बड़े दिल और उनकी रवादारी ने भी इसलाम के फैलने में बहुत बड़ी मदद दी. तफ़सीली घटनाओं में जाने का यह मौक़ा नहीं है.

इसलाम फैला.जहाँ तक आपसी लड़ाई की बात है, जैसे हिन्दू हिन्दू लड़े, मुसलमान मुसलमान लड़े, वैसे ही कभी कभी हिन्दू मुसलमान भी लड़े, पर आम तौर पर अंगरेज़ों के आने तक और उसके बहुत दिनों बाद तक भी इस मुल्क के एक एक शहर, एक एक गली और एक एक गाँव में हिन्दू और मुसलमान भले आदमियों और अच्छे पड़ोसियों की तरह मिल जुलकर मुहब्बत से रहते रहे. इसकी मिसालें देना फ़जूल है. सन् १९३१ में जब कानपुर का दंगा हुआ, जिसमें क़रीब दो सौ हिन्दू और दो सौ मुसलमान मारे गये और इससे क़रीब तिगुने जख़्मी हुए, तो यह सच्चाई के साथ कहा गया कि इस मुल्क के अंदर हिन्दू मुसलिम संबन्ध के क़रीब बारह सौ बरस के इतिहास में वह अपनी क़िस्म का पहला वाक़िया था. उसके १६ बरस बाद १९४७ में जो कुछ हुआ वह तो दुनिया की तारीख़ में अपनी क़िस्म की पहली घटना है. यह सब नतीजा है योरप की सियासत और ख़ासकर हमारे पढ़े लिखे लोगों के कैरेक्टर की गिरावट, इन दोनों के मेलका.हमारी गुलामी के जाने

اُن سے درخواست کرتے تھے کہ ہمیں مسلمان کر لیجیے اور وہ یہ کہکر انکار کرتے تھے کہ ہمارا کام 'اسلام' کی تبلیغ کرنا نہیں ہے، 'ایمان' کی تبلیغ کرنا ہے۔ اس ملک میں اسلام زیادہ تر انہیں فقیروں اور درویشوں کے اثر سے پھیلا۔ بادشاہوں یا کسی انجمن تبلیغ اسلام کے ممبروں کے اثر سے نہیں۔ تاریخ سے یہ بھی ظاہر ہے کہ ہندو راجاؤں کے بڑے دل اور اُن کی رواداری نے بھی اسلام کے پھیلانے میں بہت بڑی مدد دی۔ تفصیلی گھٹناؤں میں جانے کا یہ موقع نہیں ہے۔

اسلام پھیلا۔ جہاں تک آپسی لڑائی کی بات ہے، جیسے ہندو ہندو لڑے، مسلمان مسلمان لڑے، ویسے ہی کبھی کبھی ہندو مسلمان بھی لڑے، پر عام طور پر انگریزوں کے آنے تک اور اُس کے بہت دنوں بعد تک بھی اِس ملک کے ایک ایک شہر، ایک ایک گلی اور ایک ایک گاؤں میں ہندو اور مسلمان بھلے آدمیوں اور اچھے پڑوسیوں کی طرح مل جل کر محبت سے رہتے رہے اس کی مثالیں دینا فضول ہے۔ سنہ ۱۹۳۱ میں جب کانپور کا دنگا ہوا، جس میں قریب دو سو ہندو اور دو سو مسلمان مارے گئے اور اِس سے قریب تگنے زخمی ہوئے، تو یہ سچائی کے ساتھ کہا گیا کہ اِس ملک کے اندر ہندو مسلم سمبندھ کے قریب بارہ سو برس کے اتہاس میں وہ اپنی قسم کا پہلا واقعہ تھا۔ اُس کے ۱۶ برس بعد ۱۹۴۷ میں جو کچھ ہوا وہ تو دنیا کی تاریخ میں اپنی قسم کی پہلی گھٹنا ہے۔ یہ سب نتیجہ ہے یورپ کی سیاست اور خاص کر ہمارے پڑھے لکھے لوگوں کے کیریکٹر کی گراوٹ، ان دونوں کے میل کا۔ ہماری غلامی کے جانے

के साथ साथ यह एक बुरा ख्वाब था, जिससे हम आहिस्ता आहिस्ता बाहर निकल रहे हैं. भगवान की दया से हिन्दू और मुसलमान दोनों की आँखें खुलती जा रही हैं और हमें पक्का यक़ीन है कि यह बुरा ख्वाब बहुत देर तक नहीं रह सकता. महात्मा गांधी की क़ुरबानी इस मामले में हमारी सब से बड़ी मददगार साबित हो चुकी है और है. ज़ाहिर है कि कोई मुल्क उस वक़्त तक मोहज़्ज़ब या सभ्य नहीं कहला सकता जब तक कि उसमें अपने रीत रिवाज को पालने और अपने अपने तरीक़े से अपने ईश्वर अल्लाह को पूजने की सब को पूरी आज़ादी न हो. यही महात्मा गांधी की शहादत का सब से बड़ा सबक़ है. इसके ख़िलाफ़ जितने ख़याल, जितनी सभा सोसाइटियाँ, जितनी ख़ाहिशें और जितनी कोशिशें हैं वह सब अधर्म, ला मज़हबी, बेदीनी और पाप हैं.

महात्मा गांधी राम राज क़ायम करना चाहते थे. राम राज कोई बुरी चीज़ नहीं. गोस्वामी तुलसी दास जी ने अपनी रामायन में राम राज की जो तसवीर खींची है, उस पर दुनिया के किसी भी मज़हबवाले को एतराज़ नहीं हो सकता. गोस्वामी जी के बयान का निचोड़ यही है कि जिस राज में किसी को भी किसी तरह का दुख न हो और किसी के साथ अन्याय न हो, वही राम राज है. उनके राम राज में किसी भी एक तरह के रीत रिवाज या पूजा बंदगी के एक तरीक़े को सब के लिये मानना नहीं बताया गया.

इसी तरह सच्ची इसलामी हुकूमत भी क़ुरान और रसूले करीम के अमल के मुताबिक़ वही है जिस में मज़हब के मामले में किसी के साथ किसी तरह की ज़बरदस्ती न हो. मिसालें देकर मैं इस

کے ساتھ ساتھ یہ ایک بُرا خواب تھا، جس سے ہم آہستہ آہستہ باہر نکل رہے ہیں۔ بھگوان کی دیا سے ہندو اور مسلمان دونوں کی آنکھیں کھلتی جا رہی ہیں اور ہمیں پکّا یقین ہے کہ یہ بُرا خواب بہت دیر تک نہیں رہ سکتا۔ مہاتما گاندھی کی قربانی اس معاملے میں ہماری سب سے بڑی مددگار ثابت ہو چکی ہے اور ہے۔ ظاہر ہے کہ کوئی ملک اُس وقت تک مہذب یا سبھیہ نہیں کہلا سکتا جب تک کہ اُس میں اپنے ریت رواج کے پالنے اور اپنے اپنے طریقے سے اپنے ایشور اللہ کو پوجنے کی سب کو پوری آزادی نہ ہو۔ یہی مہاتما گاندھی کی شہادت کا سب سے بڑا سبق ہے۔ اس کے خلاف جتنے خیال، جتنی سبھا سوسائٹیاں، جتنی خواہشیں اور جتنی کوششیں ہیں وہ سب ادھرم لامذہبی، بے دینی اور پاپ ہیں۔

مہاتما گاندھی رام راج قائم کرنا چاہتے تھے۔ رام راج کوئی بُری چیز نہیں۔ گوسوامی تلسی داس جی نے اپنی رامائن میں رام راج کی جو تصویر کھینچی ہے، اُس پر دنیا کے کسی بھی مذہب والے کو اعتراض نہیں ہو سکتا۔ گوسوامی جی کے بیان کا نچوڑ یہی ہے کہ جس راج میں کسی کو بھی کسی طرح کا دُکھ نہ ہو اور کسی کے ساتھ اَنیائے نہ ہو، وہی رام راج ہے۔ اُن کے رام راج میں کسی بھی ایک طرح کے ریت رواج یا پوجا بندگی کے ایک طریقے کو سب کے لئے ماننا نہیں بتایا گیا۔

اسی طرح سچی اسلامی حکومت بھی قرآن اور رسولِ کریم کے عمل کے مطابق وہی ہے جس میں مذہب کے معاملے میں کسی کے ساتھ کسی طرح کی زبردستی نہ ہو۔ مثالیں دے کر میں اس

मजमून को लम्बा नहीं करना चाहता. मुहम्मद साहब के दूसरे मजहब वालों के साथ अहदनामे अभी तक मौजूद हैं. जो चाहें, उन्हें पढ़ लें. खुलफाय राशदीन के जमाने की अनगिनत मिसालें इसकी मिल सकती हैं. मैं सिर्फ़ एक मशहूर मिसाल से इस मजमून को खतम करूँगा:—

यह वाक़ेया 'बुत की नाक' के वाक़े के नाम से मशहूर है. खलीफ़ा के मातहत एक सूबे में किसी मुसलमान ने, किसी ऐसे बुत की, जिसे वहाँ की रिआया के कुछ लोग पूजते थे, चुपके से नाक तोड़ डाली. उस बुत के पूजने वालों ने वहाँ के अरब हाकिम से शिकायत की. हाकिम ने खलीफ़ा से पुछवाया कि क्या करना चाहिये ? खलीफ़ा ने जवाब दिया, एलान कर दो कि जिस मुसलमान ने बुत की नाक काटी है वह खुले सामने आकर अपने गुनाह को क़बूल करे और उस बुत के पूजने वालों से कहो कि वह सजा के तौर पर बुत की नाक के बदले में उस मुसलमान की नाक काट लें. इसके बाद सरकारी खर्च पर बुत की मरम्मत करा दो. मुसलमान हाकिम ने इसी के मुताबिक़ एलान करा दिया. लेकिन मुजरिम ने अपने को जाहिर न किया. हाकिम ने फिर खलीफ़ा से पूछा कि क्या करना चाहिये ? खलीफ़ा का जवाब आया कि अगर वह आदमी अपने को जाहिर नहीं करता तो सूबे के हाकिम को उस आदमी की जगह अपनी नाक कटवा देनी चाहिये, वरना खुद खलीफ़ा को एक मुसलमान के इस गुनाह का कफ्फ़ारा यानी प्रायश्चित्त करना पड़ेगा. हाकिम ने अपने सूबे में इसी के मुताबिक़ एलान करा दिया. जब मुसलमान हाकिम अपनी नाक कटवाने को तैयार हो गया तो असली

مضمون کو لمبا نہیں کرنا چاہتا۔ محمد صاحب کے دوسرے مذہب والوں کے ساتھ عہد نامے ابھی تک موجود ہیں۔ جو چاہیں، انھیں پڑھ لیں۔ خلفائے راشدین کے زمانے کی ان گنت مثالیں اسکی مل سکتی ہیں۔ میں صرف ایک مشہور مثال سے اس مضمون کو ختم کروں گا:—

یہ واقعہ 'بت کی ناک' کے واقعہ کے نام سے مشہور ہے۔ خلیفہ کے ماتحت ایک صوبے میں کسی مسلمان نے، کسی ایسے بت کی، جسے وہاں کی رعایا کے کچھ لوگ پوجتے تھے، چپکے سے ناک توڑ ڈالی۔ اس بت کے پوجنے والوں نے وہاں کے عرب حاکم سے شکایت کی۔ حاکم نے خلیفہ سے پچھوایا کہ کیا کرنا چاہیئے؟ خلیفہ نے جواب دیا، اعلان کردو کہ جس مسلمان نے بت کی ناک کاٹی ہے وہ کھلے سامنے آکر اپنے گناہ کو قبول کرے اور اس بت کے پوجنے والوں سے کہو کہ وہ سزا کے طور پر بت کی ناک کے بدلے میں اس مسلمان کی ناک کاٹ لیں۔ اس کے بعد سرکاری خرچ پر بت کی مرمت کرادو۔ مسلمان حاکم نے اسی کے مطابق اعلان کرادیا۔ لیکن مجرم نے اپنے کو ظاہر نہ کیا۔ حاکم نے پھر خلیفہ سے پوچھا کہ کیا کرنا چاہیئے؟ خلیفہ کا جواب آیا کہ اگر وہ آدمی اپنے کو ظاہر نہیں کرتا تو صوبے کے حاکم کو اس آدمی کی جگہ اپنی ناک کٹوا دینی چاہیئے، ورنہ خود خلیفہ کو ایک مسلمان کے اس گناہ کا کفارہ یعنی پرائشچت کرنا پڑیگا۔ حاکم نے اپنے صوبے میں اسی کے مطابق اعلان کرادیا۔ جب مسلمان حاکم اپنی ناک کٹوانے کو تیار ہوگیا تو اصلی

मुसलमान घबरा कर सामने आ गया. बुत के पूजने वालों से कहा गया कि उसकी नाक काट लें. बुत के उन पूजने वालों की इलतिजा पर और जिद करने पर बड़ी मुश्किल से खलीफा ने यह मंजूर किया कि इस मरतबा मुजरिम को माफ कर दिया जाय. बुत की मरम्मत सरकारी खजाने से करादी गई.

यह थी इसलाम की सच्ची स्प्रिट. यही है सच्चे इसलामी राज की तसवीर. यही राम राज है और यही है हुकूमते इलाही. इस के खिलाफ़ जो हरकत भी किसी मुसलमान बादशाह या किसी दूसरे मुसलमान ने की हो या सोची हो वह इसलाम की स्प्रिट के खिलाफ़, बेदीनी और गुनाह है.

इस वक़्त हिन्दू और मुसलमान दोनों ग़ैरों की चालों और उनके पढ़ाये हुए पाठों के असर में बहुत करके इसी बे दीनी और अधर्म में फँसे हुए हैं. इस गुनाह, इस पाप और इस बुरे ख्वाब से बाहर निकल कर सच्चे हिन्दू, सच्चे मुसलमान, सच्चे धर्मी और सच्चे मोमिन बनने में ही हमारी और हमारे मुल्क की निजात है. यही 'सेकुलर गवरमेन्ट' के असली मानी हैं. हमें पूरा भरोसा है कि हमारी इस वक़्त की सब मुसीबतें मौसमी बादलों की तरह छट रही हैं और छटेंगी और सच्चे दीन धर्म, सच्चे एखलाक़, सच्ची इंसानियत, सच्ची मोहब्बत, सच्ची रवादारी और सच्चे मेल मिलाप का सूरज फिर से इस मुल्क के एक एक शहर, एक एक गली, एक एक गाँव और एक एक झोंपड़े पर अपने पूरे तेज के साथ चमकेगा, तभी हिन्दुस्तान खुद सीधे रास्ते पर पड़ कर दुनिया की गुमराह क़ौमों को इन्सानी बहबूदी की सच्ची राह दिखा सकेगा.

مسلمان گھبرا کر سامنے آ گیا. بت کے پوجنے والوں سے کہا گیا کہ اس کی ناک کاٹ لیں. بت کے ان پوجنے والوں کی التجا پر اور ضد کرنے پر بڑی مشکل سے خلیفہ نے یہ منظور کیا کہ اس مرتبہ مجرم کو معاف کر دیا جائے. بت کی مرمت سرکاری خزانے سے کرا دی گئی.

یہ تھی اسلام کی سچی اسپرٹ. یہی ہے سچے اسلامی راج کی تصویر. یہی رام راج ہے اور یہی ہے حکومت الٰہی. اس کے خلاف جو حرکت بھی کسی مسلمان بادشاہ یا کسی دوسرے مسلمان نے کی ہو یا سوچی ہو وہ اسلام کی اسپرٹ کے خلاف، بے دینی اور گناہ ہے.

اس وقت ہندو اور مسلمان دونوں غیروں کی چالوں اور ان کے پڑھائے ہوئے پاٹھوں کے اثر میں بہت کر کے اسی بے دینی اور ادھرم میں پھنسے ہوئے ہیں. اس گناہ، اس پاپ اور اس برے خواب سے باہر نکل کر سچے ہندو، سچے مسلمان، سچے دھرمی اور سچے مومن بننے میں ہی ہماری اور ہمارے ملک کی نجات ہے. یہی 'سیکولر گورنمنٹ' کے اصلی معنی ہیں. ہمیں پورا بھروسہ ہے کہ ہماری اس وقت کی سب مصیبتیں موسمی بادلوں کی طرح چھٹ رہی ہیں اور چھٹیں گی اور سچے دین دھرم، سچے اخلاق، سچی انسانیت، سچی محبت، سچی رواداری اور سچے میل ملاپ کا سورج پھر سے اس ملک کے ایک ایک شہر، ایک ایک گلی، ایک ایک گاؤں اور ایک ایک جھونپڑے پر اپنے پورے تیج کے ساتھ چمکے گا. تبھی ہندوستان خود سیدھے راستے پر پڑ کر دنیا کی گمراہ قوموں کو انسانی بہبودی کی سچی راہ دکھا سکے گا.

संस्कृत ज़बान

(भाई मदन गोपाल)

यह तो सब जानते हैं कि संस्कृत संस्कार की हुईयानी बनाई हुई जबान है. यह कम सोचते हैं कि यह क्यों बनाई गई. जबान बनाने की कोई न कोई वजह ज़रूर होती है और कोई बनाई हुई जबान जड़ नहीं पकड़ती जब तक वह जरूरत जिसके लिये वह बनाई गई थी सदियों तक न जोर करती रहे. दुनिया में इसी तरह जबानें सैकड़ों बनी होंगी और अब भी बनाई जा रही हैं लेकिन फली फूली सिवाय संस्कृत के और कोई नहीं. यह फली फूली ही नहीं इस ने वह रंग दिखाये कि रहे नाम साईं का. दुनिया में आज तक जो और कोई न कर सका वह हम ने कर दिखाया ही नहीं बल्कि इस में वह बेल बूटे लगाये कि दुनिया इन्हें देखकर हैरान हो जाती है. इस पर हम जितना इतरायें थोड़ा है. इस इतराने के यह मानी नहीं कि हम यह बूझने की कोशिश न करें कि यह अनहोनी बात क्यों और कैसे हो गई.

बनाई हुई जबानें दो तरह की होती हैं. एक वह जो इसलिये बनाई जाती हैं कि आम आदमी उसे समझ न सकें. जो इस मतलब से बनाई जाती हैं उन्हें जितना मुश्किल बनाया जा सकता है, बनाया जाता है. इस तरह की जबाने आज कल हर सरकार और बहुत से व्योपारी भी बनाते हैं. इसे वह अपना 'कोड' कहते हैं.

سنسکرت زبان

(بھائی مدن گوپال)

یہ تو سب جانتے ہیں کہ سنسکرت سنسکار کی ہوئی یعنی بنائی ہوئی زبان ہے۔ یہ کم سوچتے ہیں کہ یہ کیوں بنائی گئی۔ زبان بنانے کی کوئی نہ کوئی وجہ ضرور ہوتی ہے اور کوئی بنائی ہوئی زبان جڑ نہیں پکڑتی جب تک وہ ضرورت جس کے لئے وہ بنائی گئی تھی صدیوں تک نہ زور کرتی رہے۔ دنیا میں اسی طرح زبانیں سیکڑوں بنی ہوں گی اور اب بھی بنائی جا رہی ہیں لیکن پھلی پھولی سوائے سنسکرت کے اور کوئی نہیں۔ یہ پھلی پھولی ہی نہیں اس نے وہ رنگ دکھائے کہ رہے نام سائیں کا۔ دنیا میں آج تک جو اور کوئی نہ کر سکا وہ ہم نے کر دکھایا ہی نہیں بلکہ اس میں وہ بیل بوٹے لگائے کہ دنیا انھیں دیکھ کر حیران ہو جاتی ہے۔ اس پر ہم جتنا اترائیں تھوڑا ہے۔ اس اترانے کے یہ معنی نہیں کہ ہم یہ بوجھنے کی کوشش نہ کریں کہ یہ ان ہونی بات کیوں اور کیسے ہو گئی۔

بنائی ہوئی زبانیں دو طرح کی ہوتی ہیں۔ ایک وہ جو اس لئے بنائی جاتی ہیں کہ عام آدمی اسے سمجھ نہ سکیں۔ جو اس مطلب سے بنائی جاتی ہیں انھیں جتنا مشکل بنایا جا سکتا ہے، بنایا جاتا ہے۔ اس طرح کی زبانیں آج کل ہر سرکار اور بہت سے بیوپاری بھی بناتے ہیں۔ اسے وہ اپنا 'کوڈ' کہتے ہیں۔

दूसरी क़िस्म वह है जो कुछ आदमी इस लिये बनाते हैं कि उनकी ज़बान इतनी आसान हो कि उसे हर आदमी आसानी से सीख सके. पच्छिम में इस मतलब से हाल ही में नौ दस ज़बानें बनाई गईं जैसे स्प्रिन्टो, न्यूलिंग. वग़ैरा. आसान होने पर भी यह ज़बानें कुछ बहुत फैले नहीं. यह देखकर अंग्रेज़ों ने अपनी ज़बान को और फैलाने के लिये एक बुनियादी अंग्रेज़ी बनाई है. हो सकता है यह कोशिश कुछ अधिक सफल हो.

संस्कृत क्यों बनाई गई और क्यों फली फूली इसके जानने के लिये उस ज़माने के धार्मिक, समाजो, आर्थिक और इतिहासी हालतों की कुछ जानकारी होनी चाहिये. समझा जाता है कि आर्य लोग पहले पहल हज़रत ईसा से पंद्रह सौ बरस पहले या उस से भी पहले हिन्दुस्तान में आये थे. उनकी ज़बान थी वैदिक और उनके देवता इन्द्र, मृत, सूरज और अग्नि वग़ैरा थे. जात पात उन में थी नहीं. इसके बाद इन आर्यों के और बहुत से भाई बन्द यहाँ आये और जहाँ उनका सींग समाया बस गये. उनकी ज़बान गो वैदिक न थी पर बहुत कुछ इस से मिलती जुलती थी. जो ज़बानें इन आर्य ज़बानों और यहाँ की असली ज़बानों के मेल जोल से पैदा हुईं उन्हें प्राकृत कहा जाता है. इन प्राकृतों में यहाँ की असली पुरानी बोलियों ने वैदिक से ज़्यादा रंग जमाया. इस को एक वजह तो यह थी कि यहाँ के पुराने रहने वालों की गिनती अधिक थी और दूसरी यह कि उनकी सभ्यता अधिक ऊँची थी.

संस्कृत हज़रत ईसा से लग भग छै सौ बरस पहले बनाई गई यानी आर्यों के हिन्दुस्तान में आने के सैकड़ों या इससे भी ज़्यादा

دوسری قسم وہ ہے جو کچھ آدمی اس لئے بناتے ہیں کہ ان کی زبان اتنی آسان ہو کہ اُسے ہر آدمی آسانی سے سیکھ سکے۔ پچھم میں اس مطلب سے حال ہی میں نو دس زبانیں بنائی گئیں جیسے اسپرنٹو، نیو لنگ وغیرہ۔ آسان ہونے پر بھی یہ زبانیں کچھ بہت پھیلی نہیں۔ یہ دیکھ کر انگریزوں نے اپنی زبان کو اور پھیلانے کے لئے ایک بنیادی انگریزی بنائی ہے۔ ہو سکتا ہے یہ کوشش کچھ ادھک سپھل ہو۔

سنسکرت کیوں بنائی گئی اور کیوں پھلی پھولی اس کے جاننے کے لئے اس زمانے کے دھارمک، سماجی، آرتھک اور اتہاسی حالتوں کی کچھ جان کاری ہونی چاہئیے۔ سمجھا جاتا ہے کہ آریہ لوگ پہلے پہل حضرت عیسیٰ سے پندرہ سو برس پہلے یا اس سے بھی پہلے ہندوستان میں آئے تھے۔ ان کی زبان تھی ویدک اور ان کے دیوتا اندر، مرت، سورج، اور اگنی وغیرہ تھے۔ جات پات ان میں تھی نہیں۔ اس کے بعد ان آریوں کے اور بہت سے بھائی بند یہاں آئے اور جہاں ان کا سینگ سمایا بس گئے۔ ان کی زبان گو ویدک نہ تھی پر بہت کچھ اس سے ملتی جلتی تھی۔ جو زبانیں ان آریہ زبانوں اور یہاں کی اصلی زبانوں کے میل جول سے پیدا ہوئیں انہیں پراکرت کہا جاتا ہے۔ ان پراکرتوں میں یہاں کی اصلی پرانی بولیوں نے ویدک سے زیادہ رنگ جمایا۔ اس کی ایک وجہ تو یہ تھی کہ یہاں کے پرانے رہنے والوں کی گنتی ادھک تھی اور دوسری یہ کہ ان کی سبھیتا ادھک اونچی تھی۔

سنسکرت حضرت عیسیٰ سے لگ بھگ چھ سو برس پہلے بنائی گئی یعنی آریوں کے ہندوستان میں آنے کے سینکڑوں یا اس سے بھی زیادہ

बरस के बाद. उससे पहले यहाँ प्राकृत ही बोली जाती थी. इस लगभग हज़ार बरस में हिन्दुस्तान की काया पलट चुकी थी. वैदिक देवताओं इन्द्र, मृत, अग्नि वग़ैरा की जगह हिन्दुस्तान के पुराने देवता शिव वग़ैरा पूजे जाने लगे थे. आम लोग आर्य भाषा भूल गये थे. अपनी अपनी प्राकृत बोलते थे. वैदिक भाषा सिर्फ़ पूजा पाठ और जंत्र मंत्र के ही काम में आती थी और वह भी सब जगह एक न थी. देश छोटी छोटी रियासतों में बँट गया था. जात पात ऐसी बनीं कि आदमी आदमी न रहा.जन्म से ही कोई ब्राहमन कोई चंडाल हो गया. इस जात पात के परदे में ब्राहमनों ने कुछ ऐसे खेल खेले कि आप देवता के समान पुजने लगे.कहीं वह राजा के रूप में राज करते थे और कहीं मंत्रियों के रूप में सारी ताक़त उनके हाथ में थी. वह खुद शिव या शक्ति के उपासक थे.' चाहे कोई ब्राहमन बच्चा कितना ही नालायक़ क्यों न हो किसी की मजाल न थी कि उसकी तरफ़ उंगली उठा सके. हद से बढ़कर ताक़त सबको गिरा देती है.ब्राहमनों की गिरावटका अंदाज़ा लगाना हो तो महाभारत यानी हिन्दुओं के महा पुरान का आख़िरी बाब 'शान्ति पर्व' पढ़िये.

ईसा से छै सात सौ बरस पहले जैन और बौद्ध धर्म पैदा होगये और इन दोनों ने जात पात के ख़िलाफ़ प्रचार शुरू किया.ब्राहमन ख़ूब जानते थे कि जब तक जात का झंडा बुलन्द रहे ब्राहमनी राज को कोई हिला नहीं सकता.जब यह नये धर्म ज़ोर पकड़ने लगे तो ब्राहमनों को फ़िक्र हुई और उन्होंने इन हमलों का सामना करने के लिये संस्कृत गढ़ी और जितना उसको मुशकिल बना सकते थे बनाया ताकि कोई उसे आसानी से सीख न सके. यह था ब्राहमनी राज का कोड या गुप्त बोली जिसे

برس کے بعد۔ اس سے پہلے یہاں پراکرت ہی بولی جاتی تھی۔ اس لگ بھگ ہزار برس میں ہندستان کی کایا پلٹ چکی تھی۔ ویدک دیوتاؤں اندر، مرت، اگنی وغیرہ کی جگہ ہندستان کے پرانے دیوتا شیو وغیرہ پوجے جانے لگے تھے۔ عام لوگ آریہ بھاشا بھول گئے تھے۔ اپنی اپنی پراکرت بولتے تھے۔ ویدک بھاشا صرف پوجا پاٹھ اور جنتر منتر کے ہی کام میں آتی تھی اور وہ بھی سب جگہ ایک نہ تھی۔ دیش چھوٹی چھوٹی ریاستوں میں بنٹ گیا تھا۔ جات پات ایسی بنیں کہ آدمی آدمی نہ رہا۔ جنم سے ہی کوئی برہمن کوئی چنڈال ہوگیا۔ اس جات پات کے پردے میں برہمنوں نے کچھ ایسے کھیل کھیلے کہ آپ دیوتا کے سمان پجنے لگے۔ کہیں وہ راجہ کے روپ میں راج کرتے تھے اور کہیں منتریوں کے روپ میں ساری طاقت ان کے ہاتھ میں تھی۔ وہ خود شیو یا شکتی کے اپاسک تھے۔ چاہے کوئی برہمن بچہ کتنا ہی نالائق کیوں نہ ہو کسی کی مجال نہ تھی کہ اس کی طرف انگلی اٹھا سکے۔ حد سے بڑھ کر طاقت سب کو گرا دیتی ہے۔ برہمنوں کی گراوٹ کا اندازہ لگانا ہو تو مہابھارت یعنی ہندوؤں کے مہاپران کا آخری باب 'شانتی پرو' پڑھیے۔

عیسے سے چھ سات سو برس پہلے جین اور بدھ دھرم پیدا ہوگئے اور ان دونوں نے جات پات کے خلاف پرچار شروع کیا۔ برہمن خوب جانتے تھے کہ جب تک جات کا جھنڈا بلند رہے برہمنی راج کو کوئی ہلا نہیں سکتا۔ جب یہ نئے دھرم زور پکڑنے لگے تو برہمنوں کو فکر ہوئی اور انھوں نے ان حملوں کا سامنا کرنے کے لئے سنسکرت گڑھی اور جتنا اس کو مشکل بنا سکتے تھے بنایا تاکہ کوئی اسے آسانی سے سیکھ نہ سکے۔ یہ تھا برہمنی راج کا کوڈ یا گپت بولی جسے

पानिनी ने तरतीब दी और चूंकि यह मुक़ाबला सदियों तक ज़ोरों पर रहा यह ज़बान जड़ पकड़ गई. कुछ सदियों तक तो यह सिर्फ़ धर्मी ज़बान रही लेकिन जब बौद्ध बुद्ध धर्म को देश निकाला देने और जैनियों की एक जात बनाने में ब्राह्मन कामयाब हो गये और ब्राह्मनी राज यानी जात पात फिर देश के हर हिस्से में जम गई तो ब्राह्मनों ने अपना सिक्का ज़्यादा जमाने के लिये उसे दरबारी ज़बान भी बना लिया. दरबारी ज़बान बनकर उसने अदबी सूरत अख़तियार कर ली और ख़ूब फली फूली. चूँकि हद से ज़्यादा फली फूली इस लिये उसकी अदबी ज़िन्दगी बहुत जल्द ख़तम हो गई, लेकिन बतौर इलमी ज़बान उसने मुद्दत तक राज किया. उत्तर हिन्दुस्तान में फ़ारसी ने उस का ज़ोर कुछ घटा दिया. अंग्रेज़ी अमलदारी में सारे हिन्दुस्तान की इलमी ज़बान अंग्रेज़ी बन गई. अंग्रेज़ों का अब राज नहीं रहा पर अंग्रेज़ी अब तक राज कर रही है और करती रहेगी जब तक अंग्रेज़ी इलमी लफ़्ज़ों को हम अपनी ज़बानों में नहीं अपनाते. आज कल अपनी बोली के चालू शब्दों की जगह संस्कृत के लफ़्ज़ों का प्रचार बड़े ज़ोरों पर है. जो ऐसा कर रहे हैं वह अंग्रेज़ी ज़बान की जड़ को हिन्दुस्तान में और पक्का बना रहे हैं.

नोट : पानिनी का ज़माना आम तौर पर बुद्ध से लगभग पाँच सौ बरस पहले का माना जाता है.

यह भी माना जाता है कि पानिनी से पहले संस्कृत रूप ले चुकी थी और संस्कृत व्याकरन भी बन चुका था. लेखक ने अपनी राय के लिये कुछ प्रमान भी दे दिये होते तो अधिक अच्छा होता. हम इस लेख को केवल एक राय के तौर पर छाप रहे हैं. :—एडीटर.

پانِنی نے ترتیب دی اور چوں کہ یہ مقابلہ صدیوں تک زوروں پر رہا یہ زبان جڑ پکڑ گئی۔ کچھ صدیوں تک تو یہ صرف دھرمی زبان رہی لیکن جب بدھ دھرم کو دیش نکالا دینے اور جینیوں کی ایک جات بنانے میں برہمن کامیاب ہو گئے اور برہمنی راج یعنی جات پات پھر دیش کے ہر حصے میں جم گئی تو برہمنوں نے اپنا سکہ زیادہ جمانے کے لئے اسے درباری زبان بھی بنا لیا۔ درباری زبان بن کر اس نے ادبی صورت اختیار کر لی اور خوب پھلی پھولی۔ چوں کہ حد سے زیادہ پھلی پھولی اس لئے اس کی ادبی زندگی بہت جلد ختم ہو گئی، لیکن بطور علمی زبان اس نے مدت تک راج کیا۔ اُتر ہندستان میں فارسی نے اس کا زور کچھ گھٹا دیا۔ انگریزی عملداری میں سارے ہندستان کی علمی زبان انگریزی بن گئی۔ انگریزوں کا اب راج نہیں رہا پر انگریزی اب تک راج کر رہی ہے اور کرتی رہے گی جب تک انگریزی علمی لفظوں کو ہم اپنی زبانوں میں نہیں اپناتے۔ آج کل اپنی بولی کے چالو شبدوں کی جگہ سنسکرت کے لفظوں کا پرچار بڑے زوروں پر ہے۔ جو ایسا کر رہے ہیں وہ انگریزی زبان کی جڑ کو ہندستان میں اور پکا بنا رہے ہیں۔

نوٹ: پانِنی کا زمانہ عام طور پر بدھ سے لگ بھگ پانچ سو برس پہلے کا مانا جاتا ہے۔

یہ بھی مانا جاتا ہے کہ پانِنی سے پہلے سنسکرت روپ لے چکی تھی اور سنسکرت بیاکرن بھی بن چکا تھا۔ لیکھک نے اپنی رائے کے لئے کچھ پرمان بھی دے دیئے ہوتے تو ادھک اچھا ہوتا۔ ہم اس لیکھ کو کیول ایک رائے کے طور پر چھاپ رہے ہیں۔ :— ایڈیٹر

ज़बान का ताना-बाना

(भाई मदन गोपाल)

यह तो सब जानते हैं कि हर ज़बान का लहजा (ध्वनि) अलग अलग होता है पर इस तरफ़ बहुत कम ध्यान देते हैं कि लहजे का यह फ़रक़ बहुत कुछ हर ज़बान के ताने बाने का नतीजा है. जब हम बोलते हैं तो कुछ हरफ़ और ख़ास कर कुछ हरफ़ों के जोड़ बोलते वक़्त हम हवा बाहर निकालते हैं और कुछ को बोलने में हम साँस अंदर की तरफ़ खींचते हैं. कुछ आवाज़ें ऐसी हैं जो सिर्फ़ हवा को बाहर निकालते वक़्त हम बोलते हैं कुछ ऐसी जो साँस लेने के वक़्त और बहुत ऐसी जिनका बाहर निकालना या अंदर खींचना आगे पीछे की आवाज़ों और हमारे भावों (जज़्बों) के अनुसार होता है. बोली के उस हिस्से को जो साँस बाहर निकालने में बोला जाता है. ज़बान का ताना और जो साँस लेने में बोला जाता है उसे ज़बान का बाना कहा जाता है. ज़बानों के ख़ूबियों में से एक बड़ी ख़ूबी यह गिनी जाती है कि ज़बान के ताने-बाने बराबर हों. जितना उनमें फ़रक़ अधिक हो उतना ही उस ज़बान को बिला मंझी या पिछड़ी हुई समझा जाता है. एक मिसाल तो साफ़ है. जब आदमी ग़ुस्सा, डर या नशे की हालत में हो तो उसके बोल का ताना बहुत बढ़ जाता है.

हमारी हिन्दुस्तानी बहुत मंझी हुई बोली है. मंझी हुई के

زبان کا تانا بانا

(بھائی مدن گوپال)

یہ تو سب جانتے ہیں کہ ہر زبان کا لہجہ (دھونی) الگ الگ ہوتا ہے پر اس طرف بہت کم دھیان دیتے ہیں کہ لہجے کا یہ فرق بہت کچھ ہر زبان کے تانے بانے کا نتیجہ ہے. جب ہم بولتے ہیں تو کچھ حروف اور خاص کر کچھ حرفوں کے جوڑ بولتے وقت ہم ہوا باہر نکالتے ہیں اور کچھ کو بولنے میں ہم سانس اندر کی طرف کھینچتے ہیں. کچھ آوازیں ایسی ہیں جو صرف ہوا کو باہر نکالتے وقت ہم بولتے ہیں کچھ ایسی جو سانس لینے کے وقت اور بہت ایسی جن کا باہر نکالنا یا اندر کھینچنا آگے پیچھے کی آوازوں اور ہمارے بھاوؤں (جذبوں) کے انوسار ہوتا ہے. بولی کے اس حصے کو جو سانس باہر نکالنے میں بولا جاتا ہے. زبان کا تانا اور جو سانس لینے میں بولا جاتا ہے اسے زبان کا بانا کہا جاتا ہے. زبانوں کی خوبیوں میں سے ایک بڑی خوبی یہ گنی جاتی ہے کہ زبان کے تانے بانے برابر ہوں. جتنا ان میں فرق ادھک ہو اتنا ہی اس زبان کو بلا منجھی یا پچھڑی ہوئی سمجھا جاتا ہے. ایک مثال تو صاف ہے. جب آدمی غصہ، ڈر یا نشے کی حالت میں ہو تو اس کے بول کا تانا بہت بڑھ جاتا ہے.

ہماری ہندستانی بہت منجھی ہوئی بولی ہے. منجھی ہوئی کے

मानी ही असल में बहुत कुछ यह हैं कि उसका ताना-बाना बिलकुल या बहुत कुछ बराबर है. जितनी गिनती किसी ज़बान के बोलने वालों की ज्यादा हो उतनी ही वह ज़बान ज्यादा गलों, दांतों और जीभों में घूम घूम कर ज्यादा घिसती है और जितनी ज्यादा घिसे उतनी ही ज्यादा मंझती है और ख़ासकर अगर' उसके बोलने वाले अधिकतर अनपढ़ हों. ख़ुश क़िस्मती से हमारे यहाँ अब भी अनपढ़ बहुत अधिक हैं. अनपढ़ क़ुदरती ढंग पर बोलते हैं, वह पढ़े हुओं की तरह इतराते नहीं और न दिखावे के लिये संस्कृत, फ़ारसी और अंगरेज़ी लफ़्ज़ों को इन पराई ज़बानों की शकल में बोलते हैं. पढ़े हुए पराई ज़बानों के लफ़्ज़ हिन्दुस्तानी बोलते हुए भी उन पराई ज़बानों के ताने-बाने में बोलते हैं जिनका ताना बाना हमारी बोली में ठीक जोड़ नहीं खाता. अनपढ़ पराई ज़बान के लफ़्ज़ बहुत कम इस्तेमाल करता है लेकिन जब करता है, उनका ताना बाना अपनी बोली के ताने बाने से मिला लेता है. इस निगाह से हमारे अनपढ़ भाई हम पढ़े हुओं से ज्यादा लायक़ हैं.

सच पूछो तो ताने बाने की निगाह से अंगरेज़ी और फ़ारसी हमारे लिये बोलने में इतनी मुश्किल नहीं जितनी संस्कृत. इसका ताना चौगुना नहीं तो बाने से दुगना ज़रूर है. किसी दोस्त से कहो कि तुम्हें हिन्दुस्तानी, फ़ारसी, अंगरेज़ी और संस्कृत के कोई शेर या नस्र, गद्य या पद्य पढ़ कर सुनाये. ठीक आज़माने के लिये यह ज़रूरी है कि दोस्त को यह पहले मालूम न हो कि तुम इन ज़बानों का ताना बाना जाँचना चाहते हो. संस्कृत बनाई हुई

معنی ہی اصل میں بہت کچھ یہ ہیں کہ اس کا تانا بانا بالکل یا بہت کچھ برابر ہے۔ جتنی گنتی کسی زبان کے بولنے والوں کی زیادہ ہو اتنی ہی وہ زبان زیادہ گلوں، دانتوں اور جیبھوں میں گھوم گھوم کر زیادہ گھستی ہے اور جتنی زیادہ گھسے اتنی ہی زیادہ منجھتی ہے اور خاص کر اگر اس کے بولنے والے ادھک تر ان پڑھ ہوں۔ خوش قسمتی سے ہمارے یہاں اب بھی ان پڑھ بہت ادھک ہیں۔ ان پڑھ قدرتی ڈھنگ پر بولتے ہیں، وہ پڑھے ہوؤں کی طرح اتراتے نہیں اور نہ دکھاوے کے لئے سنسکرت، فارسی اور انگریزی لفظوں کو ان پرائی زبانوں کی شکل میں بولتے ہیں۔ پڑھے ہوئے پرائی زبانوں کے لفظ ہندستانی بولتے ہوئے بھی ان پرائی زبانوں کے تانے بانے میں بولتے ہیں جن کا تانا بانا ہماری بولی میں ٹھیک جوڑ نہیں کھاتا۔ ان پڑھ پرائی زبان کے لفظ بہت کم استعمال کرتا ہے لیکن جب کرتا ہے، ان کا تانا بانا اپنی بولی کے تانے بانے سے ملا لیتا ہے۔ اس نگاہ سے ہمارے ان پڑھ بھائی ہم پڑھے ہوؤں سے زیادہ لائق ہیں۔

سچ پوچھو تو تانے بانے کی نگاہ سے انگریزی اور فارسی ہمارے لئے بولنے میں اتنی مشکل نہیں جتنی سنسکرت۔ اس کا تانا چوگنا نہیں تو بانے سے دوگنا ضرور ہے۔ کسی دوست سے کہو کہ تمہیں ہندستانی، فارسی، انگریزی اور سنسکرت کے کوئی شعر یا نثر، گدیہ یا پدیہ پڑھ کر سنائے۔ ٹھیک آزمانے کے لئے یہ ضروری ہے کہ دوست کو یہ پہلے معلوم نہ ہو کہ تم ان زبانوں کا تانا بانا جانچنا چاہتے ہو۔ سنسکرت بنائی ہوئی

जबान है. जानकर इसे ऐसा बनाया गया है ताकि इसे अनपढ़ तो बोल ही न सकें और पढ़े हुए भी कम बोलें और जब बोलें भी तो सिर्फ दिखावे के लिये. नतीजा यह कि संस्कृत की बनावट ही ऐसी है कि यह मंझ ही नहीं सकती. फ़ारसी और अंगरेज़ी सदियों से करोड़ों लोगों की बोलियाँ रही हैं इसलिये यह भी खूब मंझ गई हैं यानी इनका ताना बाना बहुत कुछ बराबर है. अंगरेज़ी इनसे नई ज़बान है इसलिये अभी तक इतनी नहीं मंझी जितनी फ़ारसी और हिन्दुस्तानी.

जब इंसान ने बोलना शुरू किया तो उसकी बोली में ताना ही ताना था बाना न था. वजह साफ़ है. शुरू में इंसान भी एक तरह का बंदर था. बंदरों की नक़्क़ाली मशहूर है. जब इन्सान सीधा खड़ा होकर चलना सीखने लगा तो वह भी दो टंगा होकर परिन्दों की तरह सीटियाँ बजाने और गाने लगा. परिन्दों और और जानवरों की आवाज़ों में ताना ही ताना होता है. शुरू शुरू में जितनी ज़बानें हुईं, इन सब में जुड़े हुए व्यंजन (कान्सु नेन्ट्स, हरूफ़ सहीह) बहुत अधिक थे और स्वर (वावेल) कम. इसलिये इनका ताना बहुत लंबा और बाना बहुत छोटा होता था. जूँ जूँ इन्सान तरक्क़ी करता गया उतना ही यह ताने बाने का फ़रक़ कम होता गया. अब भी जितनी जंगली क़ौमें हैं उनकी बोली का ताना ज़्यादा लंबा है. ज़बान को ठीक मंझने के लिये सदियाँ नहीं हज़ारों बरस की ज़रूरत है. यही वजह है कि उन क़ौमों की ज़बान जिन्होंने चन्द सदियों में ही बहुत तरक़्क़ी की है, इस तरक़्क़ी के

زبان ہے۔ جان کر اسے ایسا بنایا گیا ہے تاکہ اُسے اَن پڑھ تو بول ہی نہ سکیں اور پڑھے ہوئے بھی کم بولیں اور جب بولیں بھی تو صرف دکھاوے کے لئے۔ نتیجہ یہ کہ سنسکرت کی بناوٹ ہی ایسی ہے کہ یہ منجھ ہی نہیں سکتی۔ فارسی اور انگریزی صدیوں سے کروڑوں لوگوں کی بولیاں رہی ہیں اس لئے یہ بھی خوب منجھ گئی ہیں یعنی ان کا تانا بانا بہت کچھ برابر ہے۔ انگریزی ان سے نئی زبان ہے اس لئے ابھی تک اتنی نہیں منجھی جتنی فارسی اور ہندستانی۔

جب انسان نے بولنا شروع کیا تو اس کی بولی میں تانا ہی تانا تھا بانا نہ تھا۔ وجہ صاف ہے۔ شروع میں انسان بھی ایک طرح کا بندر تھا۔ بندروں کی نقالی مشہور ہے۔ جب انسان سیدھا کھڑا ہو کر چلنا سیکھنے لگا تو وہ بھی دو ٹنگا ہو کر پرندوں کی طرح سیٹیاں بجانے اور گانے لگا۔ پرندوں اور جانوروں کی آوازوں میں تانا ہی تانا ہوتا ہے۔ شروع شروع میں جتنی زبانیں ہوئیں، ان سب میں جوڑے ہوئے ویَنجن (کانسونینٹس، حروف صحیح) بہت ادھک تھے اور سور (وادیل) کم۔ اس لئے ان کا تانا بہت لمبا اور بانا بہت چھوٹا ہوتا تھا۔ جوں جوں انسان ترقی کرتا گیا اتنا ہی یہ تانے بانے کا فرق کم ہوتا گیا۔ اب بھی جتنی جنگلی قومیں ہیں ان کی بولی کا تانا زیادہ لمبا ہے۔ زبان کو ٹھیک منجھنے کے لئے صدیاں نہیں ہزاروں برس کی ضرورت ہے۔ یہی وجہ ہے کہ ان قوموں کی زبان جنھوں نے چند صدیوں میں ہی بہت ترقی کی ہے، اس ترقی کے

होते हुए भी अभी तक पूरी नहीं मंझी. अब भी हजारों बरस की महारत के बाद बहुत से जुड़े हुए व्यंजन आदमी के गले से ताने में ही ज्यादा आसानी से निकलते हैं. यही वजह है कि मंझते मंझते हर पुरानी जबान के अक्सर जुड़े हुए व्यंजनों के बीच में स्वर घुस जाते हैं. मिसाल के तौर पर अपनी ही बोली में देख लो कि प्रदेश-परदेस, जन्म-जनम, श्री सिरी, स्त्री-इसतिरी, भक्त, भगत हो गया है. ऐसी सैकड़ों मिसालें हमारी अपनी बोली में मौजूद हैं. अब हमारे कुछ पंडित उलटी गंगा बहाने की कोशिश कर रहे हैं. कर लें. वह क्या जानें कि जबान का ताना बाना क्या होता है. वह यह भी नहीं जानते कि जो जबान मंझ गई हो वह फिर बिगाड़ी नहीं जा सकती. ख़ास कर ऐसे देश में जहाँ की हुकूमत लोकराज होने का दावा करती है.

अब न राजा का राज है, न ब्राह्मनों का. कोशिश जरूर हो रही है और बड़े जोरों से कि ब्राह्मनों का फिर राज हो. ब्राह्मन का मतलब यहाँ इतना नसली जाति से नहीं है जितना पढ़े हुओं की जमाअत से है. अफ़सोस हमारे पढ़े लिखे यह भी नहीं जानते कि हर जबान की रास उसके देश के जुग़राफ़िया के हाथ में है. जहाँ लोकराज हो और अनपढ़ भाई ज्यादा हों, जबान का ताना बाना अनपढ़ के हाथ में रहेगा. पढ़े हुए लाख कोशिश कर लें. यह कोशिशें आजकल क्यों जोरों पर हैं. सिर्फ़ नमूद, दिखावा, अनपढ़ भाइयों को दिखाना कि हम तुम से बढ़िया हैं. शब्द चबा चबाकर बोले जाते हैं. नमूना देखना हो तो किसी दिन रेडियो पर किसी अच्छे पंडित को बोलते सुन लो. हमारी घर की बोली से उसका

ہوتے ہوئے بھی ابھی تک پوری نہیں منجھی. اب بھی ہزاروں برس کی مہارت کے بعد بہت سے جُڑے ہوئے وینجن آدمی کے گلے سے تانے میں ہی زیادہ آسانی سے نکلتے ہیں. یہی وجہ ہے کہ منجھتے منجھتے ہر پرانی زبان کے اکثر جُڑے ہوئے وینجنوں کے بیچ میں سور گھس جاتے ہیں. مثال کے طور پر اپنی ہی بولی میں دیکھ لو کہ پردیش پردیس، جنم جنم، شری سری، ستری استری، بھکت، بھگت ہوگیا ہے. ایسی سینکڑوں مثالیں ہماری اپنی بولی میں موجود ہیں. اب ہمارے کچھ پنڈت الٹی گنگا بہانے کی کوشش کر رہے ہیں. کر لیں. وہ کیا جانیں کہ زبان کا تانا بانا کیا ہوتا ہے. وہ یہ بھی نہیں جانتے کہ جو زبان منجھ گئی ہو وہ پھر بگاڑی نہیں جا سکتی. خاص کر ایسے دیش میں جہاں کی حکومت لوک راج ہونے کا دعوے کرتی ہے.

اب نہ راجہ کا راج ہے، نہ برہمنوں کا. کوشش ضرور ہو رہی ہے اور بڑے زوروں سے کہ برہمنوں کا پھر راج ہو. برہمن کا مطلب یہاں اتنا نسلی جاتی سے نہیں ہے جتنا پڑھے ہوؤں کی جماعت سے ہے. افسوس ہمارے پڑھے لکھے یہ بھی نہیں جانتے کہ ہر زبان کی راس اس کے دیش کے جغرافیہ کے ہاتھ میں ہے. جہاں لوک راج ہو اور ان پڑھ بھائی زیادہ ہوں، زبان کا تانا بانا ان پڑھ کے ہاتھ میں رہے گا. پڑھے لاکھ کوشش کر لیں. یہ کوششیں آج کل کیوں زوروں پر ہیں. صرف نمود، دکھاوا، ان پڑھ بھائیوں کو دکھانا کہ ہم تم سے بڑھیا ہیں. شبد چبا چبا کر بولے جاتے ہیں. نمونہ دیکھنا ہو تو کسی دن ریڈیو پر کسی اچھے پنڈت کو بولتے سن لو. ہماری گھر کی بولی سے اس کا

ताना बहुत ज़्यादा पाओगे. हो सकता है कि पंडिताई के खयाल से वह ज़्यादा शुद्ध हो. यह पंडिताई अंगरेज़ी शब्द Pedantry का अच्छा तरजुमा है मुमकिन है कि संस्कृत का शब्द पंडित और लातीनी का शब्द पेडेन्ट (Pedant) एक ही धातु से निकले हों.

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री० रतनलाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और इनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'

४८ बाई का बाग इलाहाबाद.

تانا بہت زیادہ پاؤ گے۔ ہو سکتا ہے کہ پنڈتائی کے خیال سے وہ زیادہ شدھ ہو۔ یہ پنڈتائی انگریزی شبد Pedantry کا اچھا ترجمہ ہے۔ ممکن ہے کہ سنسکرت کا شبد پنڈت اور لاطینی کا شبد پیڈنٹ (Pedant) ایک ہی دھاتو سے نکلے ہوں۔

مسلم دیش بھکت

(لیکھک شری رتن لال بنسل)

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھکتوں کے جیون کا حال اور ان کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی ان کے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ان کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی۔

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی۔ اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انھوں نے ہندستان اور بدیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا۔ یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے۔

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے۔ قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر، 'نیا ہند'

۴۸ بائی کا باغ الہ آباد

हिन्दुस्तान और इसलाम

(डाक्टर सैयद महमूद)

अरब विद्वानों का हिन्द की विद्याओं को सीखना और फैलाना.

इसलाम के शुरू ही में मुसलमानों ने हिन्दुओं के विज्ञान और उनकी विद्याओं की जानकारी बड़े शौक़ से हासिल की. इतना ही नहीं हिन्द के लिये उनके दिलों में वह प्रेम और आदर था जिसे धार्मिक रंग में रंगा हुआ कह सकते हैं.

सुना है कि मोहम्मद साहब ने एक बार कहा था, कि—"हिन्द से मुझे ठंडी हवाएँ आती हैं" इससे मालूम होता है कि उनकी राय में हिन्द के रहने वाले अच्छे, नेक और ईश्वर-भक्त थे. कहा जाता है कि मोहम्मद साहब के वक़्तों में दो हिन्दवासी, एक श्रमन नाम का जो क़न्नौज का राजा कहा जाता था और दूसरे रतन अरब गए थे. रतन ने रसूल की कही हुई बहुत सी बातों को एक किताब में जमा किया जो अभी तक 'अलरतनियात' के नाम से मौजूद है.

इब्नअली हातिम, अली के आधार पर लिखता है, मोहम्मद साहब कहा करते थे कि हिन्द की घाटी जहां आदम आसमान से उतरे थे और मक्के की घाटी जिसका इबराहीम के साथ गहरा नाता है, यह दोनों 'सुबहानुल मरजान' यानी दुनिया की सबसे अच्छी घाटियाँ हैं. मोहम्मद साहब के चचेरे भाई इब्न अब्बास का कहना

ہندستان اور اسلام

(ڈاکٹر سید محمود)

عرب وِدّوانوں کا ہند کی وِدّیاؤں کو سیکھنا اور پھیلانا

اسلام کے شروع ہی میں مسلمانوں نے ہندوؤں کے وگیان اور ان کی وِدّیاؤں کی جانکاری بڑے شوق سے حاصل کی۔ اتنا ہی نہیں ہند کے لئے ان کے دلوں میں وہ پریم اور آدر تھا جسے دھارمک رنگ میں رنگا ہوا کہہ سکتے ہیں۔

سُنا ہے کہ محمدؐ صاحب نے ایک بار کہا تھا، کہ — "ہند سے مجھے ٹھنڈی ہوائیں آتی ہیں" اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ان کی رائے میں ہند کے رہنے والے اچھے، نیک اور ایشور بھکت تھے۔ کہا جاتا ہے کہ محمدؐ صاحب کے وقتوں میں دو ہند باسی، ایک شرمن نام کا جو قنوج کا راجہ کہا جاتا تھا اور دوسرے رتن عرب گئے تھے۔ رتن نے رسول کی کہی ہوئی بہت سی باتوں کو ایک کتاب میں جمع کیا جو ابھی تک 'الرتنیات' کے نام سے موجود ہے۔

ابن علی حاتم، علی کے آدھار پر لکھتا ہے، محمدؐ صاحب کہا کرتے تھے کہ ہند کی گھاٹی جہاں آدم آسمان سے اُترے تھے اور مکے کی گھاٹی جس کا ابراہیم کے ساتھ گہرا ناتا ہے، یہ دونوں 'سبحان المرجان'، یعنی دنیا کی سب سے اچھی گھاٹیاں ہیں۔ محمدؐ صاحب کے چچیرے بھائی ابن عباس کا کہنا

है (इसका ज़िक्र मौलाना ग़ुलाम अली आज़ाद ने किया है) कि मोहम्मद साहब यह मानते थे कि आदम आस्मान से हिन्द में एक पौधा लाए थे जो बढ़कर पेड़ हो गया और मूसा की मशहूर लाठी (असा-ए-मूसा) उसमें से ही बनी थी. मोहम्मद साहब के एक और साथी अबूहुरैरा का कहना है (इसका ज़िक्र "सही मुसलिम" में है) कि हज़रत मोहम्मद हिन्द की एक नदी को जन्नत की नदियों में गिनते थे. ग़ुलाम अली आज़ाद का कहना है कि क़ुरान के लफ़्ज़ "तूबा" "सुन्दूस" और "अबलई" संस्कृत से निकले हैं. कुछ मुसलमान लेखक इस कथानक का ज़िक्र करते हैं कि हज़रत नूह की नाव बाढ़ के बाद हिन्द में पहुँची और वहाँ नूह के कुछ बेटे रहने लगे. एक और पुरानी हदीस इस तरह है.—"हिन्द में एक पैग़म्बर हुए उनका रंग सांवला था और नाम 'कान' ("कान्ह" या "कन्हैया") था"—इन कथानकों (हदीसों) से कम से कम इतना ज़रूर साबित होता है कि शुरू के मुसलमानों में हिन्द के लिये कितना प्रेम और आदर था.

इसलाम के चौथे ख़लीफ़ा अली की बाबत बयान किया जाता है कि वह कहा करते थे कि "वह देश जहाँ किताबें सबसे पहले लिखी गईं और जहाँ से विद्या और ज्ञान फैले हिन्द है" दूसरे ख़लीफ़ा उमर को यह कहकर ललचाया गया कि "हिन्द की नदियाँ मोतियों से, उसके पहाड़ लालों से और पेड़ ख़ुशबूओं से भरे हैं" फिर भी वह हिन्द पर धावा करने के ख़िलाफ़ रहे, क्योंकि उनको पता था कि हिन्द में इसलाम और दूसरे धर्मों के मानने

ہے (اس کا ذکر مولانا غلام علی آزاد نے کیا ہے) کہ محمد صاحب یہ مانتے تھے کہ آدم آسمان سے ہند میں ایک پودہ لائے تھے جو بڑھ کر پیڑ ہو گیا اور موسیٰ کی مشہور لاٹھی (عصائے موسیٰ) اس میں سے ہی بنی تھی۔ محمد صاحب کے ایک اور ساتھی ابوہریرہ کا کہنا ہے (اس کا ذکر "صحیح مسلم" میں ہے) کہ حضرت محمد ہند کی ایک ندی کو جنت کی ندیوں میں گنتے تھے۔ غلام علی آزاد کا کہنا ہے کہ قرآن کے لفظ "طوبیٰ" "سندس" اور "ابلعی" سنسکرت سے نکلے ہیں۔ کچھ مسلمان لیکھک اس کتھانک کا ذکر کرتے ہیں کہ حضرت نوح کی ناؤ باڑھ کے بعد ہند میں پہنچی اور وہاں نوح کے کچھ بیٹے رہنے لگے۔ ایک اور پرانی حدیث اس طرح ہے۔ "ہند میں ایک پیغمبر ہوئے ان کا رنگ سانولا تھا اور نام "کان" ("کانہہ" یا "کنہیا") تھا"۔ ان کتھانکوں (حدیثوں) سے کم سے کم اتنا ضرور ثابت ہوتا ہے کہ شروع کے مسلمانوں میں ہند کے لئے کتنا پریم اور آدر تھا۔

اسلام کے چوتھے خلیفہ علی کی بابت بیان کیا جاتا ہے کہ وہ کہا کرتے تھے کہ "وہ دیش جہاں کتابیں سب سے پہلے لکھی گئیں اور جہاں سے ودیا اور گیان پھیلے ہند ہے" دوسرے خلیفہ عمر کو یہ کہہ کر للچایا گیا کہ "ہند کی ندیاں موتیوں سے، اس کے پہاڑ لعلوں سے اور پیڑ خوشبوؤں سے بھرے ہیں" پھر بھی وہ ہند پر دھاوا کرنے کے خلاف رہے، کیونکہ ان کو پتہ تھا کہ ہند میں اسلام اور دوسرے دھرموں کے ماننے

वालों को अपने अपने धर्मों पर चलने में कोई ज़रा सी रुकावट भी किसी तरह की नहीं थी. मिस्र को जीत लेने के बाद अरब गवरनर अमर बिन आस ने ख़लीफ़ा उमर से इजाज़त मांगी कि लालसागर और भूमध्य सागर के बीच की ज़मीन (जहां अब स्वेज़ नहर है) खुदवा दी जावे, तो ख़लीफ़ा उमर ने पहले यह जवाब दिया कि अगर ऐसा किया गया तो योरप की क़ौमें एशिया के मुलकों पर छा जायँगी.※

एक नामी लेखक का कहना है कि दूसरे देशों को जीतने के बाद अरबों ने उन देशों की विद्याओं और वहाँ की कलचर को सीखने और समझने की तरफ़ ध्यान देना शुरू किया. बनी उमैय्या के ज़माने से ही अरब और हिन्द में राजकाजी और समाजी लगाव शुरू हो गया था. अब्दुल मलिक बिन मरवान के वक़्त में कुछ हिन्द वासी बसरा सरकार के माल के महकमे में काम करते थे और उन्होंने वहाँ के सिक्कों में सुधार किये थे. कहते हैं कि सीरिया के अनटियोक शहर में मआविया ने हिन्दुओं की एक बस्ती बसा दी थी और हज्जाज ने काशग़र में हिन्दुओं को बसाया. था. "काली काली आंखों वाले गेहुएँ रंग के हिन्दू ख़िलाफ़त के नगरों में मुसलमानों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर रहते सहते थे" (Nicholson, literary History of the Arabs.)

शुरू के अब्बासी ख़लीफ़ा अलमन्सूर ने एक महकमा

※मौजूदा नहर स्वेज़ हज़रत उमर के समय की और उनकी ही बनवाई हुई है—एडीटर

والوں کو اپنے اپنے دھرموں پر چلنے میں کوئی ذرا سی رُکاوٹ بھی کسی طرح کی نہیں تھی۔ مصر کو جیت لینے کے بعد عرب گورنر عمر بن عاص نے خلیفہ عمر سے اجازت مانگی کہ لال ساگر اور بھومدھیہ ساگر کے بیچ کی زمین (جہاں اب سویز نہر ہے) کھود وا دی جاوے، تو خلیفہ عمر نے پہلے یہ جواب دیا کہ اگر ایسا کیا گیا تو یورپ کی قومیں ایشیا کے ملکوں پر چھا جائیں گی۔ ※

ایک نامی لیکھک کا کہنا ہے کہ دوسرے دیشوں کو جیتنے کے بعد عربوں نے ان دیشوں کی ودیاؤں اور وہاں کی کلچر کو سیکھنے اور سمجھنے کی طرف دھیان دینا شروع کیا۔ بنی اُمیّہ کے زمانے سے ہی عرب اور ہند میں راج کاجی اور سماجی لگاؤ شروع ہو گیا تھا۔ عبد الملک بن مروان کے وقت میں کچھ ہند باسی بصرہ سرکار کے مال کے محکمے میں کام کرتے تھے اور انھوں نے وہاں کے سکوں میں سدھار کئے تھے۔ کہتے ہیں کہ سیریا کے انٹیوک شہر میں معاویہ نے ہندوؤں کی ایک بستی بسا دی تھی اور حجاج نے کاشغر میں ہندوؤں کو بسایا تھا۔ "کالی کالی آنکھوں والے گیہوں رنگ کے ہندو خلافت کے نگروں میں مسلمانوں کے ساتھ کندھے سے کندھے ملا کر رہتے سہتے تھے۔"
(Nicholson, literary History of the Arabs)

شروع کے عباسی خلیفہ المنصور نے ایک محکمہ

※ موجودہ نہر سویز حضرت عمر کے سمے کی اور ان کی ہی بنوائی ہوئی ہے — ایڈیٹر

'बैतुल हिकमत' क़ायम किया था जिसमें किताबों का तरजुमा कराया जाता था. हारून रशीद और उसके बेटे मामून के ज़माने में, सीरिया, एशिया माइनर और लिवंट के ईसाई मठों में और बलख़ और बुख़ारा के बौद्ध मठों में यूनानी और हिन्दुस्तानी हाथ की लिखी किताबों की बराबर खोज की जाती थी. फिर इनका बड़ी मेहनत और इल्मियत से अरबी में तरजुमा किया जाता था. उस समय के ख़लीफ़ाओं के दरबारों में ईसाई और यहूदी विद्वानों के अलावा हिन्द के कितने ही विद्वान भी रहते थे. ईरान के मागियों पर हिन्दुस्तानी और ईरानी विद्याओं का गहरा असर पड़ा और वही सबसे पहले, अलमनसूर के ज़माने में, बग़दाद में, हिन्दू और बौद्ध पुस्तकें, धर्म, रीति, रस्म रिवाज लाये थे. हारून रशीद के ज़माने में बरमारक घराने के लोगों ने हिन्द के साथ सामाजी और तहज़ीबी सम्बन्ध क़ायम करने में बड़ी मदद की. इस घराने ने जिस उदारता से धन देकर विद्वानों का मान किया वह स्वयं ख़लीफ़ा की उदारता से कुछ कम न थी.

शुरू शुरू के अब्बासी ख़लीफ़ाओं के दरबार में कई हिन्दू वैद्य रहा करते थे जिनमें 'माणिक' और 'धलेह' की निसबत कहा जाता है कि वह बहुत ऊँचे दरजे के वैद्य थे. माणिक ने हारून रशीद को एक बड़े कठिन रोग से अच्छा किया था. हिन्दू वैद्य 'धन' बग़दाद के बरमारक हस्पताल के सबसे बड़े अफ़सर (डाइरेक्टर जनरल) थे. इसके सिवा और भी बग़दाद के कई हस्पतालों में हिन्दू वैद्य काम करते थे और संस्कृत में लिखी वैद्यक किताबों का

"بیت الحکمت" قائم کیا تھا جس میں کتابوں کا ترجمہ کرایا جاتا تھا۔ ہارون رشید اور اس کے بیٹے مامون کے زمانے میں، سیریا، ایشیا مائنر اور لِونٹ کے عیسائی مٹھوں میں اور بلخ اور بخارا کے بودھ مٹھوں میں یونانی اور ہندستانی ہاتھ کی لکھی کتابوں کی برابر کھوج کی جاتی تھی۔ پھر ان کا بڑی محنت اور علمیت سے عربی میں ترجمہ کیا جاتا تھا۔ اس سمے کے خلیفاؤں کے درباروں میں عیسائی اور یہودی وِدّوانوں کے علاوہ ہند کے کتنے ہی وِدوان بھی رہتے تھے۔ ایران کے ماگیوں پر ہندستانی اور ایرانی وِدّیاؤں کا گہرا اثر پڑا اور وہی سب سے پہلے، المنصور کے زمانے میں، بغداد میں، ہندو اور بودھ پستکیں، دھرم، ریتی، رسم رواج لائے تھے۔ ہارون رشید کے زمانے میں برمارک گھرانے کے لوگوں نے ہند کے ساتھ سماجی اور تہذیبی سمبندھ قائم کرنے میں بڑی مدد کی۔ اس گھرانے نے جس اُدارتا سے دھن دے کر وِدوانوں کا مان کیا وہ سویم خلیفہ کی اُدارتا سے کچھ کم نہ تھی۔

شروع شروع کے عباسی خلیفاؤں کے دربار میں کئی ہندو وَید رہا کرتے تھے جن میں "مانک" اور "ملیہہ" کی نسبت کہا جاتا ہے کہ وہ بہت اونچے درجے کے وَید تھے۔ مانک نے ہارون رشید کو ایک بڑے کٹھن روگ سے اچھا کیا تھا۔ ہندو وَید "دھن" بغداد کے برمارک ہسپتال کے سب سے بڑے افسر (ڈائریکٹر جنرل) تھے۔ اس کے سوا اور بھی بغداد کے کئی ہسپتالوں میں ہندو وَید کام کرتے تھے اور سنسکرت میں لکھی وَیدک کتابوں کا

तरजुमा करने में मदद देते थे. माणिक ने ब्रह्मगुप्त की ब्रह्म-सिद्धान्त नामी किताब के तरजुमे 'सिंध-ओ-हिन्द' में मदद दी. 'कनके' पंडित बग़दाद के दरबार में उस समय के सब से नामी ज्योतिषी थे. इनकी लिखी ज्योतिष की किताबों का अरबी में तरजुमा किया गया था. संस्कृत की सदाचार की कहानियों की किताब पंच-तंत्र का अरबी में तरजुमा कराया गया था और उसका नाम "कलैलह-व-दमना" रक्खा गया था जो दुनिया भर में मशहूर है. इसी अरबी तरजुमे से, यूनानी, लातीनी, इबरानी, सीरियन, स्पेनिश, फ्रांसीसी, तुरकी, अंगरेज़ी और ईरानी तरजुमे बाद में किये गये हैं.

इसमाईल नामी एक अरब हिन्द में ज्योतिष सीखने आए थे.इसी तरह २८० हिजरी के लगभग अहमद सूफ़ी दरलानी ज्योतिष और गणित पढ़ने हिन्दुस्तान आए थे.वह इन विद्याओं के बहुत बड़े पंडित थे. हारून रशीद के दरबार में दो और हिन्दू ज्योतिषी 'बहला' और 'बाज़ीगर' रहते थे.इस से यह न समझना चाहिये कि मुसलमानों का हिन्दुस्तान की विद्याओं के साथ प्रेम और शौक़ बग़दाद के दरबार तक ही महदूद था. हिन्द के विज्ञान और यहाँ की विद्याओं की धूम तमाम अरब में थी और उनको सीखने का शौक़ इतनी दूर तक और इतने ज़ोर से फैल चुका था कि कई सौ बरस तक बहुत-से अरब इतिहास शास्त्री,विद्वान,भूगोल शास्त्री और यात्री हिन्द में इस लिये आते रहे कि हिन्द पहुँच कर खुद इन विद्याओं का ज्ञान हासिल करें.

डाक्टर सुचाउन का कहना है कि अलबेरूनी के समय में अरब में कुछ विद्वानों की ऐसे टोलियां थीं कि जिनको बड़ी लगन इस बात

ترجمہ کرنے میں مدد دیتے تھے۔ مانک نے برہمگپت کی برہم سدھانت نامی کتاب کے ترجمے "سند و ہند" میں مدد دی۔ "کنکے" پنڈت بغداد کے دربار میں اس سمے کے سب سے نامی جیوتشی تھے۔ ان کی لکھی جیوتش کی کتابوں کا عربی میں ترجمہ کیا گیا تھا۔ سنسکرت کی سداچار کی کہانیوں کی کتاب پنچ تنتر کا عربی میں ترجمہ کرایا گیا تھا اور اس کا نام "کلیلہ و دمنہ" رکھا گیا تھا جو دنیا بھر میں مشہور ہے۔ اسی عربی ترجمے سے، یونانی، لاطینی، عبرانی، سیرین، اسپینش، فرانسیسی، ترکی، انگریزی اور ایرانی ترجمے بعد میں کئے گئے ہیں۔

اسماعیل نامی ایک عرب ہند میں جیوتش سیکھنے آئے تھے۔ اسی طرح ۲۸۰ ہجری کے لگ بھگ احمد صفی درلانی جیوتش اور گنت پڑھنے ہندستان آئے تھے۔ وہ ان ودیاؤں کے بہت بڑے پنڈت تھے۔ ہارون رشید کے دربار میں دو اور ہندو جیوتشی "بہلا" اور "بازیگر" رہتے تھے۔ اس سے یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ مسلمانوں کا ہندستان کی ودیاؤں کے ساتھ پریم اور شوق بغداد کے دربار تک ہی محدود تھا۔ ہند کے وگیان اور یہاں کی ودیاؤں کی دھوم تمام عرب میں تھی اور ان کو سیکھنے کا شوق اتنی دور تک اور اتنے زور سے پھیل چکا تھا کہ کئی سو برس تک بہت سے عرب اتہاس شاستری، ودوان، بھوگول شاستری اور یاتری ہند میں اس لئے آتے رہے کہ ہند پہنچ کر خود ان ودیاؤں کا گیان حاصل کریں۔

ڈاکٹر سچاؤ کا کہنا ہے کہ البیرونی کے سمے میں عرب میں کچھ ودوانوں کی ایسی ٹولیاں تھیں کہ جن کو بڑی لگن اس بات

की थी कि हिन्द के विज्ञान की किताबों का अरबी में तरजुमा हो जाय. उनको इन मजमूनों से इतनां काफ़ी जानकारी थी कि वह तय कर सकते थे कि कौन सा तरजुमा ठीक है. अब्दुल्ला बिन अहमद सराक़स्ती ने एक छोटी सी किताब लिख डाली कि जिसमें उन्होंने सिद्धांत नामी किताब की जांच की और ब्रह्मगुप्त की ग़लतियाँ गिनाई. फिर स्पेन के आलिम इब्नसईद ने अबदुल्ला बिन अहमद सरक़ास्ती के जवाब में एक किताब लिखी कि जिसमें ब्रह्मगुप्त को ठीक ठहराया.

जो अरब विद्वान हिन्द आकर वापस गए और वह जो हिन्द से बग़दाद गए वह अपने साथ बहुत कुछ हिन्द का विज्ञान ले गए कि जो बाद में इसलामी किताबों में अपना लिया गया. इन इसलामी किताबों में हिन्द का असर शायद यूनान के असर से ज्यादा चमकता हुआ है. एक विद्वान का कहना है कि ''अरबों ने हिन्द से जो कुछ भी लिया उसको अपना कर और अपना रंग देकर पीछे योरप की नज़र किया.''

आज से १२०० बरस पहले ख़लीफ़ा मामून ने एक मज़हबी विद्यापीठ क़ायम की थी जिसमें खुले दिल से बहसें होती थीं और सब धर्मों के लोग पूरा पूरा हिस्सा लेते थे. उनमें बहुत से हिन्दुस्तान के पंडित होते थे. एक नामी लेखक लिखता है–''यह अजीब सी बात है कि बग़दाद के दरबार में इतनी ज़बरदस्त इल्म की खोज होते हुए भी, हिन्दवासियों की तरफ़ से उसका इतना कम बदला दिया गया. हिन्द वासी अरब से आने वालों से खुले दिल से नहीं बल्कि कुछ बचते हुए मिलते थे.''

کی تھی کہ ہند کے وگیان کی کتابوں کا عربی میں ترجمہ ہو جائے۔ ان کو ان مضمونوں سے اتنی کافی جان کاری تھی کہ وہ طے کر سکتے تھے کہ کون سا ترجمہ ٹھیک ہے۔ عبداللہ بن احمد سرقاسطی نے ایک چھوٹی سی کتاب لکھ ڈالی کہ جس میں انھوں نے سدھانت نامی کتاب کی جانچ کی اور برہم گپت کی غلطیاں گنائیں۔ پھر اسپین کے عالم ابن سعید نے عبداللہ بن احمد سرقاسطی کے جواب میں ایک کتاب لکھی کہ جس میں برہم گپت کو ٹھیک ٹھہرایا۔

جو عرب ودوان ہند آکر واپس گئے اور وہ جو ہند سے بغداد گئے وہ اپنے ساتھ بہت کچھ ہند کا وگیان لے گئے کہ جو بعد میں اسلامی کتابوں میں اپنا لیا گیا۔ ان اسلامی کتابوں میں ہند کا اثر شاید یونان کے اثر سے زیادہ چمکتا ہوا ہے۔ ایک ودوان کا کہنا ہے کہ "عربوں نے ہند سے جو کچھ بھی لیا اس کو اپنا کر اور اپنا رنگ دے کر پیچھے یورپ کی نذر کیا۔"

آج سے ۱۲۰۰ برس پہلے خلیفہ مامون نے ایک مذہبی ودیا پیٹھ قائم کی تھی جس میں کھلے دل سے بحثیں ہوتی تھیں اور سب دھرموں کے لوگ پورا پورا حصہ لیتے تھے۔ ان میں بہت سے ہندستان کے پنڈت ہوتے تھے۔ ایک نامی لیکھک لکھتا ہے– "یہ عجیب سی بات ہے کہ بغداد کے دربار میں اتنی زبردست علم کی کھوج ہوتے ہوئے بھی ہندباسیوں کی طرف سے اس کا اتنا کم بدلہ دیا گیا۔ ہند باسی عرب سے آنے والوں سے کھلے دل سے نہیں بلکہ کچھ بچتے ہوئے ملتے تھے۔"

दोनों की उदारता और एक दूसरे पर असर

हिन्द वासी हिन्द में आने वाले मुसलमान यात्रियों से बचते हुए से मिले. लेकिन फिर भी बहुत से हिन्दुओं ने इसलाम क्या सिखाता है, यह जानने की कोशिशें कीं. हारून रशीद के जमाने में एक हिन्दू राजा ने बगदाद दरबार से एक ऐसे मुसलिम मौलवी को माँगा जो हिन्द आकर राजा को इसलाम से पूरी जानकारी करा दे.

कहते हैं कि एक और हिन्दू राजा के हुकम से कुरान का सबसे पहला तरजुमा संस्कृत में २८० हिजरी में किया गया. यह भी कहा जाता है कि अलरा के एक राजाने, मनसूरा (सिंध) के गवरनर अबदुल्ला बिन उमर को लिखा कि किसी ऐसे आदमी को भेज दो जो मुझे इसलाम क्या है यह बतादे. (अजायबुल हिन्द).

मसूदी जो हिन्द में ईसा की दसवीं सदी में आए थे कहते हैं कि "खम्बात के राजा को धर्म चरचा का बड़ा शौक़ था और मुसलमानों से और दूसरे धर्मवालों से जो उसके राज में आते .वे उनके विचार सुनना और अपने विचार उनसे कहना उसने अपना रोजका काम बना रक्खा था" मसूदी ही का यह भी कहना है कि गुजरात के हिन्दू राज में इसलाम, का आदर ही नहीं था उसकी रक्षा भी की जाती थी. सुलेमान जो नवीं सदी ईसवी में हिन्द आए थे कहते हैं कि "गुजरात के बल्लभी राजा को अरबों से सबसे ज्यादा प्रेम था" बुजुर्ग बिन शहरयार, जो ईसा की नवीं सदी में हिन्द आए थे लिखते हैं कि "हिन्दू हाकिम अपने दिलों में

دونوں کی اُدارتا اور ایک دوسرے پر اثر

ہندباسی ہند میں آنے والے مسلمان یاتریوں سے بچتے ہوئے سے ملے. لیکن پھر بھی بہت سے ہندوؤں نے اسلام کیا سکھاتا ہے، یہ جاننے کی کوششیں کیں. ہارون رشید کے زمانے میں ایک ہندو راجہ نے بغداد دربار سے ایک ایسے مسلمان مولوی کو مانگا جو ہند آکر راجہ کو اسلام سے پوری جان کاری کرا دے.

کہتے ہیں کہ ایک اور ہندو راجہ کے حکم سے قرآن کا سب سے پہلا ترجمہ سنسکرت میں ۲۸۰ ہجری میں کیا گیا. یہ بھی کہا جاتا ہے کہ الرا کے ایک راجہ نے، منصورہ (سندھ) کے گورنر عبداللہ بن عمر کو لکھا کہ کسی ایسے آدمی کو بھیج دو جو مجھے اسلام کیا ہے یہ بتا دے. (عجائب الہند)

مسعودی جو ہند میں عیسیٰ کی دسویں صدی میں آئے تھے کہتے ہیں کہ "کھمبات کے راجہ کو دھرم چرچا کا بڑا شوق تھا اور مسلمانوں سے اور دوسرے دھرم والوں سے جو اس کے راج میں آتے تھے ان کے وچار سننا اور اپنے وچار ان سے کہنا اس نے اپنا روز کا کام بنا رکھا تھا" مسعودی ہی کا یہ بھی کہنا ہے کہ گجرات کے ہندو راج میں اسلام، کا آدر ہی نہیں تھا اس کی رکشا بھی کی جاتی تھی. سلیمان جو نویں صدی عیسوی میں ہند آئے تھے کہتے ہیں کہ "گجرات کے بلبھی راجہ کو عربوں سے سب سے زیادہ پریم تھا" بزرگ بن شہریار، جو عیسیٰ کی نویں صدی میں ہند آئے تھے لکھتے ہیں کہ "ہندو حاکم اپنے دلوں میں

मुसलमानों की तरफ़से अच्छे विचार रखते हैं. लंका के बौद्ध लोग मुसलमानों के मानो प्रेमी ही हैं, और उनसे बड़ी मेहरबानी का बरताव करते हैं" दूसरे ख़लीफ़ा उमर के ज़माने में लंका वालों ने दो ख़ास आदमी इस लिये अरब भेजे कि इसलाम के बारे में पूरी जानकारी इकट्ठा करके लावें. उनमें से एक तो लौटते हुए रास्ते में मर गए और दूसरे ने वापस आकर "ख़लीफ़ा की सीधी सादी बेशानो शौकत की ज़िन्दगी की बड़ी तारीफ़ें कीं" आगे चलकर शहरयार ने लिखा है कि "कश्मीर में अलोर के राजा ने क़ुरान का अपनी बोली में तरजुमा करा लिया है और रोज़ उसे पढ़वाकर सुनते हैं". शहरयार ने अपने सैरफ़ (इराक़ के पच्छिम में एक बन्दरगाह) जाने का ज़िक्र इस तरह पर किया है—"वहाँ पर जो हिन्दू (ज़्यादा तर गुजराती, मुलतानी और सिंधी) बसते थे उनको अरब सौदागरों ने खाने पर बुलाया. उनके लिये भोजन बनवाने का ख़ास बन्दोबस्त किया गया. इन हिन्दुओं के मुहावरे दार अरबी आसानी से बोलने का वहाँ वालों पर बड़ा असर पड़ा. इब्न हौक़ल ने लिखा है—"हिन्दू और मुसलिम दोनों का पहनावा बिलकुल एक ही जैसा है".

अब थोड़ा सा ज़िक्र उन कोशिशों का भी होना चाहिये जो इस मुल्क में मुसलमान आलिमों, राजाओं और कवियों ने एक दूसरे की कलचर समझने और हिन्दू विज्ञान, साहित्य, विचारों, और भावों की जानकारी आम लोगों में पैदा करने के लिये कीं. नामतो बहुत गिनाए जा सकते हैं पर मिसाल के तौर पर थोड़े ही काफ़ी होंगे. ईसा की बारहवीं सदी में जो आठ नामवर हिन्दी के

مسلمانوں کی طرف سے اچھے بچار رکھتے ہیں. لنکا کے بودھ لوگ مسلمانوں کے مانو پریمی ہی ہیں، اور ان سے بڑی مہربانی کا برتاؤ کرتے ہیں" دوسرے خلیفہ عمر کے زمانے میں لنکا والوں نے دو خاص آدمی اس لئے عرب بھیجے کہ اسلام کے بارے میں پوری جان کاری اکٹھا کر کے لاویں. ان میں سے ایک تو لوٹتے ہوئے راستے میں مر گئے اور دوسرے نے واپس آکر "خلیفہ کی سیدھی سادی بے شان شوکت کی زندگی کی بڑی تعریفیں کیں" آگے چلکر شہریار نے لکھا ہے کہ "کشمیر میں الور کے راجہ نے قرآن کا اپنی بولی میں ترجمہ کرا لیا ہے اور روز اُسے پڑھوا کر سنتے ہیں". شہریار نے اپنے صیرف (عراق کے پچھم میں ایک بندرگاہ) جانے کا ذکر اس طرح کیا ہے — "وہاں پر جو ہندو (زیادہ تر گجراتی، ملتانی اور سندھی) بستے تھے ان کو عرب سوداگروں نے کھانے پر بلایا. ان کے لئے بھوجن بنوانے کا خاص بندوبست کیا گیا. ان ہندوؤں کے محاورے دار عربی آسانی سے بولنے کا وہاں والوں پر بڑا اثر پڑا. ابن حوقل نے لکھا ہے — "ہندو اور مسلم دونوں کا پہناوا بالکل ایک ہی جیسا ہے".

اب تھوڑا سا ذکر ان کوششوں کا بھی ہونا چاہئے جو اس ملک میں مسلمان عالموں، راجاؤں اور کویوں نے ایک دوسرے کی کلچر سمجھنے اور ہندو وگیان، ساہتیہ، وچاروں، اور بھاوؤں کی جان کاری عام لوگوں میں پیدا کرنے کے لئے کیں. نام تو بہت گنائے جا سکتے ہیں پر مثال کے طور پر تھوڑے ہی کافی ہوں گے. عیسےٰ کی بارھویں صدی میں جو آٹھ نامور ہندی کے

शायर हो गए हैं उनमें से चार मुसलमान थे—मसूद, क़ुतबअली, अकरम और फैज़. खुसरो, अब्दुर रहीम खानखानाँ, दाऊद, मलिक मोहम्मद जायसी वग़ैरा और बहुत से हिन्दी साहित्य में चमकते हुए सितारे हैं. हिन्दी साहित्य पर कबीर और उनके लड़के मुल्ला कमाल की सेवा का भार हलका नहीं है. क़ुतबन, जान जहाँ उसमान, शेख़ नबी, नूर मोहम्मद और क़ासिम ने भी हिन्दी साहित्य को काफ़ी माला माल किया है. रहीम के नीति के दोहे बहुतसों की राय में तुलसीदास के दोहों से किसी तरह घटिया नहीं हैं और क़ादिर, ताहिर और मुबारक का दरजा भी ऊंचा है. रसखान श्रीकृष्ण के भगत थे और उनके बनाए हुए गोपियों-के-श्याम की तारीफ़ के गीत दिल खींच लेते हैं. हाल के ज़माने में अमीर अली मीर और ज़हूर बख़्श* माने हुए हिन्दी कवि हो गये हैं. नज़ीर अकबराबादी भी कृष्ण के भगत थे और मशहूर कवि मिरज़ा बेदिल राम के. हिन्दू मुसलिम मेल जोल जो विद्या के मैदान में पैदा हुआ उसके इतिहास में अलबेरूनी की हिन्द यात्रा बड़े मारके की चीज़ है. हिन्द के पच्छिमी किनारे किनारे मुसलमान अरबों का आना जाना जारी हो गया और मालाबार में इनका असर तेज़ी से बढ़ता गया. कहा जाता है कि ईसा की नवीं सदी में चेरामन-पेरूमल घराने के आख़िरी राजा ने इसलाम क़बूल कर लिया था और कुछ बरसों बाद अरब जाकर वहीं मरगया. अरब से इस राजा ने कुछ अरबों को राजकाजी बन्दो बस्त की हिदायतें देकर अपने मुल्क में भेज दिया. मालाबार पहुँचने पर इन अरबों

*ज़हूर बख़्श अभी जीवित हैं. एडीटर

شاعر ہو گئے ہیں ان میں سے چار مسلمان تھے مسعود، قطب علی، اکرم اور فیض۔ خسرو، عبدالرحیم خان خاناں، داؤد، ملک محمد جائسی وغیرہ اور بہت سے ہندی ساہتیہ میں چمکتے ہوئے ستارے ہیں۔ ہندی ساہتیہ پر کبیر اور ان کے لڑکے ملا کمال کی سیوا کا بھار ہلکا نہیں ہے۔ قطبن، جان جہاں عثمان، شیخ نبی، نور محمد اور قاسم نے بھی ہندی ساہتیہ کو کافی مالا مال کیا ہے۔ رحیم کے نیتی کے دوہے بہتوں کی رائے میں تلسی داس کے دوہوں سے کسی طرح گھٹیا نہیں ہیں اور قادر، طاہر اور مبارک کا درجہ بھی اونچا ہے۔ رسکھان شری کرشن کے بھگت تھے اور ان کے بنائے ہوئے گوپیوں کے شیام کی تعریف کے گیت دل کھینچ لیتے ہیں۔ حال کے زمانے میں امیر علی میر اور ظہور بخش* مانے ہوئے ہندی کوی ہو گئے ہیں۔ نظیر اکبرآبادی بھی کرشن کے بھگت تھے اور مشہور کوی مرزا بیدل رام کے۔ ہندو مسلم میل جول جو ودیا کے میدان میں پیدا ہوا اس کے اتہاس میں البیرونی کی ہند یاترا بڑے معرکے کی چیز ہے۔ ہند کے پچھمی کنارے کنارے مسلمان عربوں کا آنا جانا جاری ہو گیا اور مالابار میں ان کا اثر تیزی سے بڑھتا گیا۔ کہا جاتا ہے کہ عیسیٰ کی نویں صدی میں چیرامن پیرومل گھرانے کے آخری راجہ نے اسلام قبول کر لیا تھا اور کچھ برسوں بعد عرب جا کر وہیں مر گیا۔ عرب سے اس راجہ نے کچھ عربوں کو راج کاجی بندوبست کی ہدایتیں دے کر اپنے ملک میں بھیج دیا۔ مالابار پہنچنے پر ان عربوں

*ظہور بخش ابھی جیوت ہیں۔ ایڈیٹر

की अच्छी आवभगत हुई और उनको वहाँ पर मसजिदें बनाने दी गईं. वहां के जमोरिन राजा अरब सौदागरों के सरपरस्त बन गए. इसके बदले में अरबों ने जमोरिन राजाओं की लड़ाई के मौक़ों पर मदद की. जमोरिन राजा खुले तौर पर इसलाम के तरफ़दार थे और अपनी प्रजा को मुसलमान हो जाने के लिये खुला बढ़ावा देते थे. इस की वजह यह थी कि हिन्दू धर्म में समुन्दर पार जाना मना था और सौदागारी जहाज़ों के लिये हिन्दू मल्लाह नहीं मिलते थे.

मोहम्मद बिन क़ासिम ने "तमाम राजकाजी इन्तज़ाम मुल्क के रहने वालों के ही हाथों में सौंप रक्खा था". सिंध के हिन्दुओं ने उससे अपने धर्म पर चलने और पूजा करने की आज़ादी चाही. इराक़ के गवरनर हज्जाज के सामने यह मांग पेश हुई. उसने यह हुक्म लिखवाया—"हिन्दुओं को अपने देवताओं की पूजा करने की इजाज़त दी जाती है. किसी को भी अपने धर्म पर चलने से न रोका जाय न मना किया जाय."औन क्रैमर का बयान है कि उन दिनों ब्राह्मणों का जो मान और आदर किया जाता था वह जूं का तूं क़ायम रक्खा गया और उनको मालगुज़ारी का तीन फ़ीसैकड़ा दिये जाने का दस्तूर भी क़ायम रक्खा गया. हिन्दुओं को मन्दिर बनाने और मुसलमानों से ब्योपार करने की इजाज़त थी. वह बिना किसी तरह के डर के रह सकते थे और हर तरह से अपनी भलाई की कोशिश कर सकते थे. अरबों ने जो आज़ादी धर्म के मामलों में सिंध के हिन्दुओं को दे रक्खी थी और जिस तरह सिर्फ़ दूसरे धर्म वाले होने की वजह से वहाँ के हिन्दुओं पर रुकावटें नहीं लादी गई थीं उससे बढ़कर कोई

کی اچھی آؤ بھگت ہوئی اور ان کو وہاں پر مسجدیں بنانے دی گئیں۔ وہاں کے زموری راجہ عرب سوداگروں کے سرپرست بن گئے۔ اس کے بدلے میں عربوں نے زموری راجاؤں کی لڑائی کے موقعوں پر مدد کی۔ زموری راجہ کھلے طور پر اسلام کے طرف دار تھے اور اپنی پرجا کو مسلمان ہو جانے کے لئے کھلا بڑھاوا دیتے تھے۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ ہندو دھرم میں سمندر پار جانا منع تھا اور سوداگری جہازوں کے لئے ہندو ملاح نہیں ملتے تھے۔

محمد بن قاسم نے "تمام راج کاجی انتظام ملک کے رہنے والوں کے ہی ہاتھوں میں سونپ رکھا تھا"۔ سندھ کے ہندوؤں نے اس سے اپنے دھرم پر چلنے اور پوجا کرنے کی آزادی چاہی۔ عراق کے گورنر حجاج کے سامنے یہ مانگ پیش ہوئی۔ اس نے یہ حکم لکھوایا۔ "ہندوؤں کو اپنے دیوتاؤں کی پوجا کرنے کی اجازت دی جاتی ہے۔ کسی کو بھی اپنے دھرم پر چلنے سے نہ روکا جائے نہ منع کیا جائے۔" وون کریمر کا بیان ہے کہ ان دنوں برہمنوں کا جو مان اور آدر کیا جاتا تھا وہ جوں کا توں قائم رکھا گیا اور ان کو مال گذاری کا تین فی سیکڑا دئے جانے کا دستور بھی قائم رکھا گیا۔ ہندوؤں کو مندر بنانے اور مسلمانوں سے بیوپار کرنے کی اجازت تھی۔ وہ بنا کسی طرح کے ڈر کے رہ سکتے تھے اور ہر طرح سے اپنی بھلائی کی کوشش کر سکتے تھے۔ عربوں نے جو آزادی دھرم کے معاملوں میں سندھ کے ہندوؤں کو دے رکھی تھی اور جس طرح صرف دوسرے دھرم والے ہونے کی وجہ سے وہاں کے ہندوؤں پر رکاوٹیں نہیں لادی گئی تھیں اس سے بڑھکر کوئی

दूसरी मिसाल धार्मिक उदारता की उन दिनों के इतिहास में मिलना मुशकिल है. ईसा की दसवीं सदी में अलअस्तखारो हिन्द आए. उन्होंने भूगोल पर कई किताबें लिखी हैं और सिंध का एक नक़शा भी बनाया है जो इस क़िस्म का सबसे पहला नक़शा कहा जाता है. उन का कहना है कि उस समय हिन्दुओं और मुसलमानों का मेल जोल "दोनों के रस्मो रिवाज और रहन सहन की एकता की तरफ़ जा रहा था."

अल जहेज़ (दूसरी सदी हिजरी) ने लिखा है कि "हिन्दू ज्योतिष, हिसाब, वैद्यक और बहुत सी दूसरी विद्याओं में बढ़े चढ़े हैं, उन्होंने मूरतें बनाने, तसवीरें खींचने और मकान बनाने की कारीगरी और हुनर में कमाल हासिल कर लिया है. उनके पास कविता, दर्शनशास्त्र, ज्ञान विज्ञान और सदाचार की किताबों का भंडार है. हिन्द से ही हमें "कलेला-व-दमना" जैसी किताब मिली है. इन लोगों में विवेक और वीरता के गुण मौजूद हैं. रहन सहन में यह लोग पाक साफ़ और सुथरे होते हैं. ध्यान लगाने का अमल इन्हीं की ईजाद है." याक़ूबी (नवीं सदी) ने लिखा है "हिन्दू अक़ल की तेज़ी और विचारशीलता में और क़ौमों से कहीं बढ़कर हैं. गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष दोनों में जितना ठीक और सही हिसाब लगाना यह जानते हैं उतना कोई और क़ौम नहीं जानती. इनकी दिमाग़ी ताक़त का 'सिद्धान्त' नामी किताब अच्छा सबूत है कि जिससे यूनान और ईरान वालों ने भी बहुत कुछ फ़ायदा उठाया है. वैद्यक में इनकी राय अव्वल दरजे की मानी जाती है." इसी

دوسری مثال دھارمک اُدارتا کی ان دنوں کے اتہاس میں ملنا مشکل ہے۔ عیسےٰ کی دسویں صدی میں الاستخاری ہند آئے۔ انھوں نے بھوگول پر کئی کتابیں لکھی ہیں اور سندھ کا ایک نقشہ بھی بنایا ہے جو اس قسم کا سب سے پہلا نقشہ کہا جاتا ہے۔ اُن کا کہنا ہے کہ اس سمے ہندوؤں اور مسلمانوں کا میل جول "دونوں کے رسم و رواج اور رہن سہن کی ایکتا کی طرف جا رہا تھا۔"

الجہیز (دوسری صدی ہجری) نے لکھا ہے کہ "ہندو جیوتش، حساب، ویدک اور بہت سی دوسری ودیاؤں میں بڑھے چڑھے ہیں، انھوں نے مورتیں بنانے، تصویریں کھینچنے اور مکان بنانے کی کاریگری اور ہنر میں کمال حاصل کر لیا ہے۔ ان کے پاس کویتا، درشن شاستر، گیان وگیان اور سداچار کی کتابوں کا بھنڈار ہے۔ ہندستے ہی ہمیں کلیلہ و دمنہ جیسی کتاب ملی ہے۔ ان لوگوں میں وویک اور ویرتا کے گُن موجود ہیں۔ رہن سہن میں یہ لوگ پاک صاف اور ستھرے ہوتے ہیں۔ دھیان لگانے کا عمل انھیں کی ایجاد ہے۔" یعقوبی (نویں صدی) نے لکھا ہے "ہندو عقل کی تیزی اور وچارشیلتا میں اور قوموں سے کہیں بڑھ کر ہیں۔ گنت جیوتش اور پھلت جیوتش دونوں میں جتنا ٹھیک اور صحیح حساب لگانا یہ جانتے ہیں اتنا کوئی اور قوم نہیں جانتی۔ ان کی دماغی طاقت کا 'سدھانت' نامی کتاب اچھا ثبوت ہے کہ جس سے یونانی اور ایران والوں نے بھی بہت کچھ فائدہ اٹھایا ہے۔ ویدک میں ان کی رائے اوّل درجے کی مانی جاتی ہے۔" اسی

तरह की बहुत से मुसलमान विद्वानों और लेखकों की राय दी जा सकती है.

श्री शंकरा चार्य के जन्म लेने के समय मुसलमान अपना कारोबार हिन्द में जारी कर चुके थे. इसलामी असर को भी एक खास कामयाबी एक देशी राजा के मुसलमान हो जाने की सूरत में मिल चुकी थी. जहाँ शंकरा चार्य पैदा हुए, पले और बड़े हुए वहाँ बहुतेरे सौदागरी जहाज़ अरब से और ईरानी समुन्दर के रास्ते से आकर सामान उतारते थे. शंकराचार्य कट्टर एक-ईश्वर-वादी ही न थे, वह अपने विचारों की जड़ भी ईश्वरी पुस्तकों पर जमाना चाहते थे. अगर उनके इस विश्वास में कोई झलक उन ख़यालों की भी हो जो उनके चारों तरफ़ फैलाए जा रहे थे तो कोई बड़े अचंभे की बात नहीं है. यह हो या न हो पर शंकराचार्य के बाद जो सुधारक रामानुज, विष्णु स्वामी, माधवानन्द और निम्बार्क आए उनके विचारों और धर्म उपदेशों में तो इसलामी असर की झलक जगह जगह साफ़ नज़र आती है.

हिन्द के दक्खिन में जो विचार नवीं सदी में और उसके बाद फैले उनके कुछ खास पहलू भी इसलामी असर की तरफ़ इशारा करते हैं, जैसे एक-ईश्वर-वाद, भक्ति मार्ग में आपे को खो देने पर इतना बढ़ता हुआ ज़ोर, जात पात के रिवाज में ढीलापन और पूजा पाठ की बाहरी रस्मों की तरफ़ से बेपरवाही, वगैरा. उत्तर हिन्द में यह सब नहीं हुआ, क्योंकि उस समय के धर्म सुधारक सब दक्खिन ही के थे. इसकी एक साफ़ वजह इसलाम का असर था जो बराबर और बढ़ती हुई चाल से उस वक़्त मुल्क के इसी हिस्से में काम कर

طرح کی بہت سے مسلمان ودّوانوں اور لیکھکوں کی رائے دی جا سکتی ہے۔

شری شنکرا چاریہ کے جنم لینے کے سمے مسلمان اپنا کاروبار ہند میں جاری کر چکے تھے۔ اسلامی اثر کو بھی ایک خاص کامیابی ایک دیشی راجہ کے مسلمان ہو جانے کی صورت میں مل چکی تھی۔ جہاں شنکرا چاریہ پیدا ہوئے، پلے اور بڑے ہوئے وہاں بہتیرے سوداگری جہاز عرب سے اور ایرانی سمندر کے راستے سے آکر سامان اتارتے تھے۔ شنکرا چاریہ کٹر ایک ایشور وادی ہی نہ تھے، وہ اپنے وچاروں کی جڑ بھی ایشوری پستکوں پر جمانا چاہتے تھے۔ اگر ان کے اس وشواس میں کوئی جھلک ان خیالوں کی بھی ہو جو ان کے چاروں طرف پھیلائے جا رہے تھے تو کوئی بڑے اچنبھے کی بات نہیں ہے۔ یہ ہو یا نہ ہو پر شنکرا چاریہ کے بعد جو سدھارک رامانج، وشنو سوامی، مادھوانند اور نمبارک آئے ان کے وچاروں اور دھرم اپدیشوں میں تو اسلامی اثر کی جھلک جگہ جگہ صاف نظر آتی ہے۔

ہند کے دکھن میں جو وچار نویں صدی میں اور اس کے بعد پھیلے ان کے کچھ خاص پہلو بھی اسلامی اثر کی طرف اشارہ کرتے ہیں، جیسے ایک ایشور واد، بھکتی مارگ میں آپے کو کھو دینے پر اتنا بڑھتا ہوا زور، جات پات کے رواج میں ڈھیلا پن اور پوجا پاٹھ کی باہری رسموں کی طرف سے بے پرواہی، وغیرہ۔ اتر ہند میں یہ سب نہیں ہوا، کیونکہ اس سمے کے دھرم سدھارک سب دکھن ہی کے تھے۔ اس کی ایک صاف وجہ اسلام کا اثر تھا جو برابر اور بڑھتی ہوئی چال سے اس وقت ملک کے اسی حصے میں کام کر

रहा था. यह काम योरप-वालों के आते ही एक दम रुक गया. नहीं तो यह बात कैसे हो सकती थी कि सुधारक की कैंची उन्हीं हिस्सों और रिवाजों पर पड़ी जिन्हें इसलाम बुरा कहता है और उन्हीं नई बातों पर ज़ोर दिया गया जो इसलाम में सबसे ज्यादा चमकती हुई थीं.

जहाँ एक तरफ़ इसलाम का यह असर हुआ वहाँ दूसरी तरफ़ इसलाम पर जो असर पड़ा उसको भी देखना चाहिये. 'पूरी तरह मिट जाने' (यानी 'फ़ना') का सूफ़ी विचार साफ़ साफ़ बौद्ध धर्म के 'निर्वाण' से लिया गया है. मंसूर का 'अनल हक़' (मैं ही हक़ यानी ईश्वर हूँ) वेदान्त के 'सोऽहं' (मैं वह हूँ) की गूँज है. सूफ़ियों का 'पासे अनफ़ास' योग के प्राणायाम से निकला है. उनका 'ज़िक्र' हिन्दू 'जप' का दूसरा नाम है. 'तसबीह' बौद्धों की माला से ली गई है.

رہا تھا. یہ کام یورپ والوں کے آتے ہی ایک دم رُک گیا. نہیں تو یہ بات کیسے ہو سکتی تھی کہ سدھارک کی قینچی انھیں حصّوں اور رواجوں پر چلتی جنھیں اسلام بُرا کہتا ہے اور انھیں نئی باتوں پر زور دیا گیا جو اسلام میں سب سے زیادہ چمکتی ہوئی تھیں.

جہاں ایک طرف اسلام کا یہ اثر ہوا وہاں دوسری طرف اسلام پر جو اثر پڑا اس کو بھی دیکھنا چاہیے. 'پوری طرح مٹ جانے' (یعنی 'فنا') کا صوفی وچار صاف صاف بودھ دھرم کے 'نِروان' سے لیا گیا ہے. منصور کا 'انا الحق' (میں ہی حق یعنی ایشور ہوں) ویدانت کے 'سوہم' (میں وہ ہوں) کی گونج ہے. صوفیوں کا 'پاسِ انفاس' یوگ کے پرانایام سے نکلا ہے. ان کا 'ذکر' ہندو 'جپ' کا دوسرا نام ہے. 'تسبیح' بودھوں کی مالا سے لی گئی ہے.

शेर शाह

(सेठ गोविन्द दास)

(जून से आगे)

दूसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—सहसराम में निजाम का कमरा.

समय—रात्रि

[निजाम बैठा हुआ, आगरे में बनाये गये लाडबानू के चित्र को देखते हुए सितार बजा कर गा रहा है.]

गीत

क्या तुमने दिल पर वार किया
बरछी की अनी को पार किया
तस्वीर से बातें करता हूँ
सौ जान से इस पर मरता हूँ
क्या तुमने.......
हम किससे मुहब्बत कर बैठे
ली सर पे मुसीबत धर बैठे
क्या तुमने ....
क्या खूब तुम्हारी सूरत है

شیر شاہ

(سیٹھ گووند داس)

(جون سے آگے)

دوسرا انک

پہلا درشیہ

استھان — سہسرام میں نظام کا کمرہ۔

سمے — راتری

[نظام بیٹھا ہوا آگرے میں بنائے گئے لاڈبانو کے چتر کو دیکھتے ہوئے ستار بجا کر گا رہا ہے۔]

گیت

کیا تم نے دل پر وار کیا
برچھی کی انی کو پار کیا
تصویر سے باتیں کرتا ہوں
سو جان سے اس پر مرتا ہوں
کیا تم نے.......
ہم کس سے محبت کر بیٹھے
لی سر پے مصیبت دھر بیٹھے
کیا تم نے.......
کیا خوب تمہاری صورت ہے

यह जैसे हुस्न की मूरत है
क्या तुमने.........

निज़ाम—(गान पूरा होने पर सितार रख, एकटक चित्र को देखते हुए, चित्र को ही सम्बोधित कर) बानू!.........बानू! मुझे मालूम है. सुना, अच्छी तरह मालूम है कि तुम चुनार के सूबेदार ताज खाँ के हरम में चली गई हो.........लोग तुम्हें लाड मलिका, हाँ, लाड मलिका कहने लगे हैं;.........पर मेरे.........मेरे सामने मलिका.........मलिका.........तुम मलिका नहीं, वही हो, वही बानू हो, भोली भाली बानू, जो आगरे के बाग़ में तस्वीर बनवाने के लिये बैठ गई थी.........चुप थीं तुम, चुप था मैं;.........लेकिन ....लेकिन मुझे क्या मालूम था कि उसी.........हाँ, उसी वक़्त मेरी तक़दीर मेरी क़लम में बैठकर तस्वीर पर मेरी आइन्दा ज़िन्दगी के ख़्वाबों को भी रंग रही थी.........ग़र्क़ हो गया था मैं.........दूसरे दिन तुम मेरा रास्ता सा देखती जान पड़ीं.........मैं बेसब्र सा हो उठा.........तीसरे दिन मेरी क़लम चल रही थी,......... चल रही थी वह तेज़ी से.........आफ़ताब.........हाँ, आफ़ताब सिर पर आ गया और मोती के कुछ दाने तुम्हारे रुख़सारों को चूम कर दामन में छुप गये, लेकिन तुम.........तुम, बानू! हिलीं तक नहीं....खोगया था मैं, खो गई थीं तुम.........तस्वीर कैसे पूरी हुई, जान ही न सका.....चौथे दिन तस्वीर देने का वादा था, लेकिन बेजान इस तस्वीर में ही तुम.........जानदार हो उठी थीं.........दे

सम्बोधित = मुख़ातिब.

یہ جیسے حسن کی مورت ہے
کیا تم نے.......

نظام — (گان پورا ہونے پر ستار رکھ، اِکٹک چتر کو دیکھتے ہوئے، چتر کو ہی سمبودھت کر) بانو!...... بانو! مجھے معلوم ہے۔ سُنا، اچھی طرح معلوم ہے کہ تم چُنار کے صوبیدار تاج خاں کے حرم میں چلی گئی ہو..... لوگ تمھیں لاڈ ملکہ، ہاں، لاڈ ملکہ کہنے لگے ہیں؛..... پر میرے..... میرے سامنے ملکہ..... ملکہ..... تم ملکہ نہیں، وہی ہو، وہی بانو ہو، بھولی بھالی بانو، جو آگرہ کے باغ میں تصویر بنوانے کے لئے بیٹھ گئی تھی...... چپ تھیں تم، چپ تھا میں؛..... لیکن..... لیکن مجھے کیا معلوم تھا کہ اُسی..... ہاں، اُسی وقت میری تقدیر میرے قلم میں بیٹھ کر تصویر پر میری آئندہ زندگی کے خوابوں کو بھی رنگ رہی تھی..... غرق ہو گیا تھا میں..... دوسرے دن تم میرا راستہ سا دیکھتی جان پڑیں..... میں بے صبر سا ہو اُٹھا..... تیسرے دن میری قلم چل رہی تھی..... چل رہی تھی وہ تیزی سے..... آفتاب..... ہاں، آفتاب سر پر آ گیا اور موتی کے کچھ دانے تمھارے رُخساروں کو چوم کر دامن میں چھپ گئے، لیکن تم..... تم، بانو! ہلیں تک نہیں..... کھو گیا تھا میں، کھو گئی تھیں تم..... تصویر کیسے پوری ہوئی، جان ہی نہ سکا..... چوتھے دن تصویر دینے کا وعدہ تھا، لیکن بے جان اس تصویر میں ہی تم..... جان دار ہو اُٹھی تھیں..... مجھے

سمبودھت = مخاطب۔

न सका........और........और उस दिन........उस दिन के बाद तुम लाड मलिका होने पर भी मुझसे बोलती........हां, बोलती रहती हो. लाड बानू ही की तरह (कुछ देर चुप चाप एकटक तस्वीर को देखता रहता है और फिर सितार बजाकर गाना आरम्भ करता है.)

गीत

तुम्हारी याद अब तक आ रही है,
मुझे अच्छी तरह तड़पा रही है.
खुदा जाने मुझे क्या हो गया अब,
तबीयअत खुद बखुद घबरा रही है.
तेरी तस्वीर से मैं बोलता हूँ,
वह चुप होकर बहुत शर्मा रही है.
वह चेहरा और वह सूरत गुलाबी है,
मुझे बेखुद बनाये जा रही है.
मुझे दम भर को आता ही नहीं चैन,
तेरी याद और मुझको आ रही है.

[फ़रीद का प्रवेश, निज़ाम चित्र और गान में इतना मग्न है कि वह न फ़रीद को देख पाता है और न उसके आने की आहट सुन पाता.है फ़रीद नज़दीक आता है. उसकी नजर तस्वीर पर पड़ती है. वह चौंक सा पड़ता है.]

फ़रीद—(कड़े स्वर में) निज़ाम !

[निज़ाम फ़रीद का स्वर सुन, हक्का बक्का सा हो, सितार

نہ سکا..... اور..... اور اُس دن..... اُس دن کے بعد تم لاڈ ملکہ ہونے پر بھی مجھسے بولتی...... ہاں، بولتی رہتی ہو۔ لاڈ بانو ہی کی طرح (کچھ دیر چُپ چاپ اِک ٹک تصویر کو دیکھتا رہتا ہے اور پھر ستار بجاکر گانا آرمبھ کرتا ہے۔)

گیت

تمہاری یاد اب تک آرہی ہے،
مجھے اچھی طرح تڑپا رہی ہے.
خدا جانے مجھے کیا ہو گیا اب،
طبیعت خود بخود گھبرا رہی ہے.
تری تصویر سے میں بولتا ہوں،
وہ چُپ ہو کر بہت شرما رہی ہے.
وہ چہرہ اور وہ صورت گلابی ہے،
مجھے بے خود بنائے جا رہی ہے.
مجھے دم بھر کو آتا ہی نہیں چین،
تری یاد اور مجھ کو آ رہی ہے.

[فرید کا پرویش، نظام چتر اور گان میں اتنا مگن ہے کہ وہ نہ فرید کو دیکھ پاتا ہے اور نہ اُس کے آنے کی آہٹ سُن پاتا ہے۔ فرید نزدیک آتا ہے۔ اُس کی نظر تصویر پر پڑتی ہے۔ وہ چونک سا پڑتا ہے۔]

فرید — (کڑے سور میں) نظام!

[نظام فرید کا سور سُن، ہکا بکا سا ہو، ستار

को छोड़, खड़े हो, तस्वीर पर फ़ौरन पर्दा डाल देता है. गाना बन्द हो जाता है.]

फ़रीद—(निज़ाम की ओर देखते हुए) तो तुम्हारी मुसव्विरी में अब नया रंग आ रहा है; शायरी नई शक्ल अख़्तियार कर रही है !

[निज़ाम कुछ न कह कर सर झुका लेता है. फ़रीद चुपचाप कुछ देर निज़ाम की ओर देखता है.]

फ़रीद—(लम्बी साँस लेकर बैठते हुए) बैठो निज़ाम.

(निज़ाम कुछ न कहकर चुप चाप बैठ जाता है और सर झुका लेता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

फ़रीद—(गम्भीरता से) याद है, निज़ाम ! एक मरतबा मैंने तुमसे क्या कहा था ?

[निज़ाम कुछ न कहकर, सर उठा, फ़रीद की ओर देखता है.]

फ़रीद—अपने दिल की मुहब्बत के मुताल्लिक़ मैंने तुमसे कहा था कि मेरी मुहब्बत शायद पाक मुहब्बत है. तुम यकायक नाराज़ से होकर कह उठे थे कि तुम्हारे दिल में मेरी जो मुहब्बत है, वह क्या नापाक है. (कुछ रुककर) वह........वह नापाक है यह तो मैं नहीं कह सका. लेकिन........लेकिन.........निज़ाम उस.........उस तरह की मुहब्बत आखिर यह........यह शक्ल ले लेती है. जो........जो.........

[फ़रीद ढकी हुई तस्वीर के पर्दे को उठाने के लिये हाथ बढ़ाता है. पर निज़ाम जल्दी से बीच में आ जाता है.]

کو چھوڑ، کھڑے ہو، تصویر پر فوراً پردہ ڈال دیتا ہے۔ گانا بند ہو جاتا ہے۔]

فرید — (نظام کی اور دیکھتے ہوئے) تو تمہاری مصوّری میں اب نیا رنگ آ رہا ہے؛ شاعری نئی شکل اختیار کر رہی ہے!

[نظام کچھ نہ کہہ کر سر جھکا لیتا ہے۔ فرید چپ چاپ کچھ دیر نظام کی اور دیکھتا ہے۔]

فرید — (لمبی سانس لیکر بیٹھتے ہوئے) بیٹھو نظام۔

(نظام کچھ نہ کہکر چپ چاپ بیٹھ جاتا ہے اور سر جھکا لیتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

فرید — (گمبھیرتا سے) یاد ہے، نظام! ایک مرتبہ میں نے تم سے کیا کہا تھا؟

[نظام کچھ نہ کہکر، سر اٹھا، فرید کی اور دیکھتا ہے۔]

فرید — اپنے دل کی محبت کے متعلق میں نے تم سے کہا تھا کہ میری محبت شاید پاک محبت ہے۔ تم یکایک ناراض سے ہوکر کہہ اٹھے تھے کہ تمہارے دل میں میری جو محبت ہے، وہ کیا ناپاک ہے۔ (کچھ رک کر) وہ..... وہ ناپاک ہے یہ تو میں نہیں کہہ سکا۔ لیکن..... لیکن.........نظام اس..... اس طرح کی محبت آخر یہ...... یہ شکل لے لیتی ہے۔ جو..... جو.....

[فرید ڈھکی ہوئی تصویر کے پردے کو اٹھانے کیلئے ہاتھ بڑھاتا ہے۔ پر نظام جلدی سے بیچ میں آ جاتا ہے۔]

फ़रीद—(निज़ाम की ओर देखते हुए) मुझे इतना चाहने पर भी मुझसे कुछ छिपा कर रखना चाहते हो ?

[निज़ाम कुछ न कह कर फिर सर झुका लेता है. फ़रीद निज़ाम की ओर देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

फ़रीद—(निज़ाम की तरफ़ ही देखते हुए) किस औरत की यह तस्वीर है, यह अगर मुझे कह दो और वह अगर तुम्हारी शादी के क़ाबिल हो तो मैं उससे तुम्हारी फ़ौरन शादी कर दूंगा.

[निज़ाम फिर भी कुछ नहीं बोलता. मूर्ति के सदृश बैठा रहता है. फ़रीद उसकी ओर देखता रहता है. कुछ देर फिर निस्तब्धता.]

फ़रीद (निज़ाम का हाथ अपने हाथ में लेते हुए प्रेम भरे स्वर में) निज़ाम ! अगर तुम मुझे इतना चाहते हो तो मैं भी तुम्हारा भाई हूँ. तुम ख़ुद कह चुके हो कि मेरा दिल भी रेगिस्तान नहीं तुम मुझे दिल खोलकर सारा हाल क्यों नहीं कहते ? मैं वादा करता हूँ कि यह औरत तुम्हारी शादी के क़ाबिल हुई तो मैं उसके साथ तुम्हारी शादी ज़रूर ज़रूर कर दूँगा.

निज़ाम—(धीरे धीरे सर उठा कर भर्राये हुए स्वर में) लेकिन........लेकिन इसकी शादी हो चुकी है, भाई जान.

फ़रीद—(चौंककर) उफ़ ! तो तुम्हारी मुहब्बत ने अब यह रास्ता अख़्तियार किया है ! (निज़ाम का हाथ छोड़ देता है)

[निज़ाम कुछ न कहकर फिर सर झुका लेता है. उसकी आँखों

فرید — (نظام کی اور دیکھتے ہوئے) مجھے اتنا چاہنے پر بھی مجھ سے کچھ چھپا کر رکھنا چاہتے ہو؟

[نظام کچھ نہ کہہ کر پھر سر جھکا لیتا ہے۔ فرید نظام کی اور دیکھتا رہتا ہے۔ کچھ دیر نیستبدھتا۔]

فرید — (نظام کی طرف ہی دیکھتے ہوئے) کس عورت کی یہ تصویر ہے، یہ اگر مجھے کہہ دو اور وہ اگر تمہاری شادی کے قابل ہو تو میں اُس سے تمہاری فوراً شادی کر دوں گا۔

[نظام پھر بھی کچھ نہیں بولتا۔ مورت کے سدرش بیٹھا رہتا ہے۔ فرید اُس کی اور دیکھتا رہتا ہے۔ کچھ دیر پھر نیستبدھتا]

فرید (نظام کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لیتے ہوئے پریم بھرے سور میں) نظام! اگر تم مجھے اتنا چاہتے ہو تو میں بھی تمہارا بھائی ہوں۔ تم خود کہہ چکے ہو کہ میرا دل بھی ریگستان نہیں تم مجھے دل کھول کر سارا حال کیوں نہیں کہتے؟ میں وعدہ کرتا ہوں کہ یہ عورت تمہاری شادی کے قابل ہوئی تو میں اُس کے ساتھ تمہاری شادی ضرور ضرور کر دوں گا۔

نظام — (دھیرے دھیرے سر اُٹھا کر بھرائے ہوئے سور میں) لیکن...... لیکن اِس کی شادی ہو چکی ہے، بھائی جان۔

فرید — (چونک کر) اُف! تو تمہاری محبت نے اب یہ راستہ اختیار کیا ہے! (نظام کا ہاتھ چھوڑ دیتا ہے)

[نظام کچھ نہ کہہ کر پھر سر جھکا لیتا ہے۔ اُس کی آنکھوں

से आँसू गिरने लगते हैं. फ़रीद उसकी ओर देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता]

फ़रीद—(कुछ देर बाद) इस मुसव्विरी और शायरी का आखिर यही नतीजा निकलता है. इस तरह की ख़यालो मुहब्बतों ने न जाने कितनी ज़िन्दगियाँ तबाह कर ख़ाक में मिला दी हैं.

[निज़ाम कुछ न कहकर उसी तरह रोता रहता है. फ़रीद निज़ाम की तरफ़ देखता रहता है. कुछ देर फिर निस्तब्धता.]

फ़रीद—(दृढ़ता से) निज़ाम, तुम्हें बचाने के लिये मुझे अब तुम्हारी शादी का इन्तज़ाम करना होगा.

निज़ाम—(यकायक सर उठा कर दृढ़ता से) यह तो ग़ैर मुमकिन है, भाई साहब.

फ़रीद—(आश्चर्य से) ग़ैरमुमकिन है ? तुम शादी नहीं करोगे ?

निज़ाम—(आँसू पोंछते हुए) क़तई ग़ैरमुमकिन. मैंने आज तक कभी इस मसले पर सोचा ही न था आज आपने यकायक यह बात मुझसे कही. जिस क़दर जल्दी आपने की उसी क़दर जल्दी मेरे दिल ने फ़ैसला कर दिया. मैं शादी हरगिज़ नहीं करूँगा.

फ़रीद—लड़कपन कर रहे हो. निज़ाम मैं तुम्हें इस तरह तो ज़िन्दगी बरबाद नहीं करने दे सकता. (कुछ रुक कर) ख़ैर इस मामले पर फिर ग़ौर किया जायगा. इस वक़्त मैं, तुम्हारे पास एक दूसरे ही काम से आया था.

निज़ाम—(स्वस्थ होने का प्रयत्न करते हुए) हुक्म दीजिये.

स्वस्थ = तन्दुरुस्त.

سے آنسو گرنے لگتے ہیں ۔ فرید اس کی اُور دیکھتا رہتا ہے ۔ کچھ دیر نِستبدھتا]

فرید — (کچھ دیر بعد) اس مصوّری اور شاعری کا آخر یہی نتیجہ نکلتا ہے ۔ اس طرح کی خیالی محبتوں نے نہ جانے کتنی زندگیاں تباہ کر خاک میں ملادی ہیں ۔

[نظام کچھ نہ کہکر اُسی طرح روتا رہتا ہے ۔ فرید نظام کی طرف دیکھتا رہتا ہے ۔ کچھ دیر پھر نِستبدھتا ۔]

فرید — (دڑھتا سے) نظام، تمھیں بچانے کیلئے مجھے اب تمھاری شادی کا انتظام کرنا ہوگا ۔

نظام — (یکایک سر اٹھاکر دڑھتا سے) یہ تو غیر ممکن ہے، بھائی صاحب ۔

فرید — (آشچریہ سے) غیر ممکن ہے ؟ تم شادی نہیں کروگے ؟

نظام — (آنسو پونچھتے ہوئے) قطعی غیر ممکن ۔ میں نے آجتک کبھی اس مسئلے پر سوچا ہی نہ تھا آج آپ نے یکایک یہ بات مجھے کہی ۔ جس قدر جلدی آپ نے کی اسی قدر جلدی میرے دل نے فیصلہ کردیا ۔ میں شادی ہرگز نہیں کروں گا ۔

فرید — لڑکپن کر رہے ہو ۔ نظام میں تمھیں اس طرح تو زندگی برباد نہیں کرنے دے سکتا ۔ (کچھ رُک کر) خیر اس معاملے پر پھر غور کیا جائے گا ۔ اس وقت میں تمھارے پاس ایک دوسرے ہی کام سے آیا تھا ۔

نظام — (سوستھ ہونے کا پریتن کرتے ہوئے) حکم دیجئے ۔

سوستھ = تندرست ۔

फ़रीद—देखो वालिदे मरहूम के इन्तक़ाल को काफ़ी वक़्त गुज़र चुका है. इतने दिनों में जागीर का जैसा चाहिये वैसा इन्तज़ाम हो गया. सुलेमान और अहमद मुहम्मद ख़ाँ से जागीर पर हमला भी न करा सके, लेकिन जो हालात हिन्दुस्तान की हुकूमत के सुनने में आ रहे हैं उनसे सिर्फ़ शाही फ़र्मान के भरोसे हम अपनी जागीर शायद ही रख सकेंगे.

निज़ाम—(फ़रीद की ओर देखते हुए) अच्छा!

फ़रीद—हमें किसी न किसी बाहरी ताक़त से ताल्लुक़ रखना बहुत ज़रूरी है, नहीं तो किसी दिन जागीर ही नहीं हम जान से भी हाथ धो सकते हैं.

निज़ाम—ऐसा?

फ़रीद—बेशक. इस लिये मैंने तय किया है कि मैं बिहार शरीफ़ जाकर वहाँ के सूबेदार के यहाँ रहूँ.

निज़ाम—और मैं?

फ़रीद—तुम अब काफ़ी बड़े हो गये हो. तुम यहाँ जागीर का काम संभालो.

निज़ाम—(कुछ घबराकर) बग़ैर आपके मैं यहाँ रहूँ?

फ़रीद—(निज़ाम का हाथ अपने हाथ में लेते हुए) बचपन की यह बातें अब ख़त्म करो; और बन्द करो यह मुसव्विरी और शायरी भी. तुम एक जागीरदार के लड़के हो. तुम्हारी रगों मे पठानी ख़ून है. दुनिया में तुम भी कुछ काम करने आए हो. जौनपुर मेरा मदरसा हुआ था, यह जागीर तुम्हारा मदरसा हो.

निज़ाम—लेकिन अकेले...

فرید — دیکھو والدِ مرحوم کے انتقال کو کافی وقت گزر چکا ہے۔ اتنے دنوں میں جاگیر کا جیسا چاہئے ویسا انتظام ہو گیا۔ سلیمان اور احمد محمد خاں سے جاگیر پر حملہ بھی نہ کرا سکے، لیکن جو حالات ہندستان کی حکومت کے سننے میں آ رہے ہیں اُن سے صرف شاہی فرمان کے بھروسے ہم اپنی جاگیر شاید ہی رکھ سکیں گے۔

نظام — (فرید کی اور دیکھتے ہوئے) اچھا!

فرید — ہمیں کسی نہ کسی باہری طاقت سے تعلق رکھنا بہت ضروری ہے، نہیں تو کسی دن جاگیر ہی نہیں ہم جان سے بھی ہاتھ دھو سکتے ہیں۔

نظام — ایسا؟

فرید — بے شک۔ اس لئے میں نے طے کیا ہے کہ میں بہار شریف جا کر وہاں کے صوبیدار کے یہاں رہوں۔

نظام — اور میں؟

فرید — تم اب کافی بڑے ہو گئے ہو۔ تم یہاں جاگیر کا کام سنبھالو۔

نظام — (کچھ گھبرا کر) بغیر آپ کے میں یہاں رہوں؟

فرید — (نظام کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لیتے ہوئے) بچپن کی یہ باتیں اب ختم کرو؛ اور بند کرو یہ مصوّری اور شاعری بھی۔ تم ایک جاگیردار کے لڑکے ہو۔ تمھاری رگوں میں پٹھانی خون ہے۔ دنیا میں تم بھی کچھ کام کرنے آئے ہو۔ جونپور میرا مدرسہ ہوا تھا، یہ جاگیر تمھارا مدرسہ ہے۔

نظام — لیکن اکیلے.....

फ़रीद—(बीच ही में) जब तक अकेले काम न देखोगे, जब तक काम का बोझ और ज़िम्मेदारी सर पर न पड़ेगी तब तक न काम पूरा सीख ही सकोगे और न कर ही सकोगे. बिहार शरीफ़ सहसराम से कुछ दूर नहीं. जब चाहो तब वहाँ आ सकते हो. मैं भी वहाँ आता जाता रहूँगा. (कुछ रुककर) और देखो, बिहार शरीफ़ में किसी अच्छे ख़ानदान की किसी अच्छी लड़की से तुम्हारी शादी का भी इन्तज़ाम करूँगा.

[निज़ाम कोई उत्तर न देकर सर झुका लेता है. फ़रीद निज़ाम की ओर देखता रहता है.]

लघु-यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—चुनार के क़िले में लाड मलिका के कमरे का बरामदा.

समय—प्रातःकाल.

[दाहिनी ओर बरामदे का कुछ भाग दिखाई देता है. बाईं तरफ़ नज़र बाग़ का कुछ हिस्सा दीख पड़ता है. पीछे की ओर क़िले की फ़सील और उसके ऊपर आकाश है. बरामदे में पीछे की ओर दीवाल है और सामने खम्भों पर मेहराबें. दीवाल में कमरे के अन्दर जाने के कुछ दरवाज़े हैं और उनसे भीतर के एक सजे हुए कमरे का कुछ भाग दिखता है. सबसे निकट की मेहराब के बीच में सोने के एक अत्यन्त सुन्दर पिंजड़े में नसीम मैना टँगी है. उसके नज़दीक लाड मलिका खड़ी हुई मैना की ओर देखते हुए

فرید — (بیچ ہی میں) جب تک اکیلے کام نہ دیکھو گے، جب تک کام کا بوجھ اور ذمہ داری سر پر نہ پڑے گی تب تک نہ کام پورا سیکھ ہی سکو گے اور نہ کر ہی سکو گے۔ بہار شریف سہسرام سے کچھ دور نہیں۔ جب چاہو تب وہاں آ سکتے ہو۔ میں بھی یہاں آتا جاتا رہوں گا۔ (کچھ رُک کر) اور دیکھو، بہار شریف میں کسی اچھے خاندان کی کسی اچھی لڑکی سے تمہاری شادی کا بھی انتظام کروں گا۔

[نظام کوئی اُتّر نہ دے کر سر جھکا لیتا ہے۔ فرید نظام کی اور دیکھتا رہتا ہے۔]

لگھو یونکا

دوسرا درِشیہ

ستھان — چنار کے قلعہ میں لاڈ ملکہ کے کمرہ کا برامدہ۔

سمے — پراتہ : کال۔

[داہنی اَور برآمدے کا کچھ بھاگ دکھائی دیتا ہے۔ بائیں طرف نظر باغ کا کچھ حصہ دیکھ پڑتا ہے۔ پیچھے کی اور قلعہ کی فصیل اور اس کے اوپر آکاش ہے۔ برامدے میں پیچھے کی اَور دیوال ہے اور سامنے کھمبوں پر محرابیں۔ دیوال میں کمرے کے اندر جانے کے کچھ دروازے ہیں اور ان سے بھیتر کے ایک سجے ہوئے کمرے کا کچھ بھاگ دکھتا ہے۔ سب سے نکٹ کی محراب کے بیچ میں سونے کے ایک اتینت سُندر پنجڑے میں نسیم مینا ٹنگی ہے۔ اُسکے نزدیک لاڈ ملکہ کھڑی ہوئی مینا کی اَور دیکھتے ہوئے

गा रही है. बीच बीच में मैना भी सीटी बजा देती है तथा कभी कभी कुछ बोल भी देती है.]

गीत

मेरी तस्वीर बनाकर मुझे अपनाया था,
हाय वह वक़्त कि दिल तुझ पे मेरा आया था.
एक जादू था कि दिल हो गया बेबस अपना,
तू मुझे पहली नजर में जो नजर आया था.
आज क्या बात है क्यों इतना है दिल बेक़ाबू,
इससे पहले तो यह दिल इतना न घबराया था.
चार सू अब नजर आते हैं दुखों के बादल,
पहले दुनिया पे मसर्रत का घना साया था.
बेहया रूह न उस वक़्त भी तन से निकली,
जब कोई अपना बना कर मुझे ले आया था.

लाड—(गीत पूरा होने पर आँखों में आँसू भर, एक लम्बी साँस लेकर) नसीम ! प्यारी नसीम ! (चुप होकर मैना की ओर इस प्रकार देखती है मानो उससे उत्तर चाहती हो.)

नसीम—(कुछ देर पश्चात्) मलिका ! मलिका !

लाड—मलिका नहीं, तू तो बानू, सिर्फ़ बानू कह, सहेली.

नसीम—सहेली !

लाड—हाँ, यह.......यह बानू से भी अच्छा है. देख, सहेली, अब इसके बाद मुझे गाने को कभी न कहना.

[नसीम पिंजरे के एक सिरे से दूसरे सिरे पर कूद कर सीटी बजाती है.]

گا رہی ہے۔ بیچ بیچ میں مینا بھی سیٹی بجا دیتی ہے تتھا کبھی کبھی کچھ بول بھی دیتی ہے۔]

گیت

میری تصویر بنا کر مجھے اپنایا تھا،
ہائے وہ وقت کہ دل تجھ پہ مرا آیا تھا۔
ایک جادو تھا کہ دل ہو گیا بے بس اپنا،
تو مجھے پہلی نظر میں جو نظر آیا تھا۔
آج کیا بات ہے کیوں اتنا ہے دل بے قابو،
اس سے پہلے تو یہ دل اتنا نہ گھبرایا تھا۔
چار سو اب نظر آتے ہیں دکھوں کے بادل،
پہلے دنیا پہ مسرت کا گھنا سایا تھا۔
بے حیا روح نہ اس وقت بھی تن سے نکلی،
جب کوئی اپنا بنا کر مجھے لے آیا تھا۔

لاڈ — (گیت پورا ہونے پر آنکھوں میں آنسو بھر، ایک لمبی سانس لیکر) نسیم! پیاری نسیم! (چپ ہو کر مینا کی اور اس پرکار دیکھتی ہے مانو اس سے اتر چاہتی ہو۔)

نسیم — (کچھ دیر پشچات) ملکہ! ملکہ!

لاڈ — ملکہ نہیں، تو تو بانو، صرف بانو کہہ، سہیلی۔

نسیم — سہیلی!

لاڈ — ہاں، یہ...... یہ بانو سے بھی اچھا ہے۔ دیکھ، سہیلی، اب اس کے بعد مجھے گانے کو کبھی نہ کہنا۔

[نسیم پنجرے کے ایک سرے سے دوسرے سرے پر کود کر سیٹی بجاتی ہے۔]

लाड—कहेगी ....जिस तरह तू मीठी मीठी सीटियां मुझे सुनाती है, उसी तरह मैं भी तुझे मीठा मोठा गाना सुनाऊँ.

[नसीम फिर उसी प्रकार कूद कर सीटी बजाती है.]

लाड—ठीक, लेकिन, प्यारी सहेली, इस गाने से मेरे न जाने कितने पुराने.................कितने सूखे हुए ज़ख्म नये हो जाते हैं, ताज़े हो जाते हैं.

नसीम—मुसव्विर!

लाड—हाँ, मुसव्विर.........उसी मुसव्विर की याद करके, नसीम.................मेरे दिल की ऐसी बात ही कौन सी है जो तू न जानती हो.

नसीम—सहेली! सहेली!

लाड—हाँ, हाँ, जानती हूँ, तू मेरी सहेली है, सच्ची सहेली, सहेली दिल की बात न जाने यह कैसे हो सकता है?.........तो......... तो, सहेली, गाने से मुसव्विर की याद आती है. उस.......उस मुसव्विर की जो इन्सान न होकर फ़रिश्ता था.

नसीम—फ़रिश्ता!

लाड—हाँ, फ़रिश्ता, प्यारी नसीम.........मेरी तस्वीर बनाई थी, बोलती हुई तस्वीर!.........तस्वीर के मेहनताने की पेशगी में मेरी सहेली उसे मेरा एक हार देना चाहती थी, लेकिन इन कंकर पत्थरों इन बेजान चीज़ों की ज़रूरत रहती है इन्सानों को, वह तो फ़रिश्ता.........

नसीम—फ़रिश्ता! फ़रिश्ता!

लाड—हाँ, सच्चा फ़रिश्ता, नसीम, सच्चा फ़रिश्ता. हार.........

६

لاڈ — کہے گی...... جس طرح تو میٹھی میٹھی سیٹیاں مجھے سناتی ہے، اُسی طرح میں بھی تجھے میٹھا میٹھا گانا سناؤں۔

[نسیم پھر اُسی پرکار کود کر سیٹی بجاتی ہے۔]

لاڈ — ٹھیک، لیکن پیاری سہیلی، اس گانے سے میرے نہ جانے کتنے پرانے........ کتنے سوکھے ہوئے زخم نئے ہو جاتے ہیں، تازے ہو جاتے ہیں۔

نسیم — مصوّر!

لاڈ — ہاں مصوّر...... اُسی مصوّر کی یاد کر کے، نسیم...... میرے دل کی ایسی بات ہی کون سی ہے جو تو نہ جانتی ہو۔

نسیم — سہیلی! سہیلی!

لاڈ — ہاں، ہاں، جانتی ہوں، تو میری سہیلی ہے، سچی سہیلی، سہیلی دل کی بات نہ جانے یہ کیسے ہو سکتا ہے؟.....تو...... تو، سہیلی، گانے سے مصوّر کی یاد آتی ہے۔ اُس...... اُس مصوّر کی جو انسان نہ ہو کر فرشتہ تھا۔

نسیم — فرشتہ!

لاڈ — ہاں، فرشتہ، پیاری نسیم........ میری تصویر بنائی تھی، بولتی ہوئی تصویر!...... تصویر کے محنتانے کی پیشگی میں میری سہیلی اُسے میرا ایک ہار دینا چاہتی تھی، لیکن ان کنکر پتھروں ان بے جان چیزوں کی ضرورت رہتی ہے انسانوں کو، وہ تو فرشتہ........

نسیم — فرشتہ! فرشتہ!

لاڈ — ہاں، سچا فرشتہ، نسیم، سچا فرشتہ۔ ہار........

मामूली हार नहीं, क़ीमती हार था, पर उसने उसे ठोकर मार दी.

नसीम—मुसव्विर !

लाड—हाँ, उस फ़रिश्ते मुसव्विर ने और.........और, प्यारी सहेली उस हार को वापस कर उसने ले क्या लिया, जानती है ?

नसीम—बानू ! बानू !

लाड—बानू, हाँ, बानू को.........बानू के दिल को, बानू के सब कुछ को.........वह.........मेरे सूबेदार शौहर की मानिन्द मेरी दौलत को नहीं, मेरे दिल को चाहता था; और मैंने.........मैंने भी आँखों के रास्ते दिल उसकी नज़र कर दिया. (कुछ रुककर) यह........यह सब हो गया, नसीम, आगरे के उस बाग़ में, उन तीन ही दिनों के अन्दर जब मेरी तस्वीर बन रही थी.

[नसीम कूदकर फिर सीटी बजाती है.]

लाड—हाँ, कभी कभी तेरी इस मीठी तान की मानिन्द हमारी बातें भी हो जाया करती थीं, लेकिन असली काम लफ़्ज़ों ने नहीं आँखों ने किया था. तस्वीर बनते वक़्त सामने के चम्पे के दरख़्त को देखते देखते कभी कभी पुतलियाँ उसके तरफ़ भी घूम जातीं.

नसीम—मुसव्विर !

लाड—हाँ, उससे मेरा मतलब मुसव्विर ही है. पर वह कनखियों तक ही रहतीं.

नसीम—सहेली ! सहेली !

लाड—शायद सहेलियों के ही डर से. लेकिन इतने पर भी कभी कभी अचानक चार नज़रें हो ही जातीं. उस.........उस वक़्त, नसीम, कितनी.........कितनी शर्म आती मुझे, कैसा झुक जाता मेरा सर !

معمولی ہار نہیں، قیمتی ہار تھا، پر اُس نے اُسے ٹھوکر ماردی۔

نسیم— مصوّر!

لاڈ— ہاں! اُس فرشتہ مصوّر نے اور...... اور پیاری سہیلی اُس ہار کو واپس کر اُس نے لے کیا لیا، جانتی ہے؟

نسیم— بانو! بانو!

لاڈ— بانو، ہاں، بانو کو...... بانو کے دل کو، بانو کے سب کچھ کو...... وہ...... میرے صوبیدار شوہر کی مانند میری دولت کو نہیں، میرے دل کو چاہتا تھا، اور میں نے...... میں نے بھی آنکھوں کے راستے دل اُس کی نذر کر دیا۔ (کچھ رُک کر) یہ...... یہ سب ہوگیا، نسیم، آگرہ کے اُس باغ میں، اُن تین ہی دنوں کے اندر جب میری تصویر بن رہی تھی۔

[نسیم کود کر پھر سیٹی بجاتی ہے۔]

لاڈ— ہاں، کبھی کبھی تیری اس میٹھی تان کی مانند ہماری باتیں بھی ہو جایا کرتی تھیں، لیکن اصلی کام لفظوں نے نہیں آنکھوں نے کیا تھا۔ تصویر بنتے وقت سامنے کے چمپے کے درخت کو دیکھتے دیکھتے کبھی کبھی پُتلیاں اُس کی طرف بھی گھوم جاتیں۔

نسیم— مصوّر!

لاڈ— ہاں، اُس سے میرا مطلب مصوّر ہی ہے۔ پر وہ کنکھیوں تک ہی رہتیں۔

نسیم— سہیلی! سہیلی!

لاڈ— شاید سہیلیوں کے ہی ڈر سے۔ لیکن اتنے پر بھی کبھی کبھی اچانک چار نظریں ہو ہی جاتیں۔ اُس...... اُس وقت، نسیم، کتنی...... کتنی شرم آتی

[नसीम सीटी बजाती है.]

लाड—हाँ, उस वक़्त वह तेरी सीटी के मानिन्द ही मीठी आवाज़ से मुझे सर उठाने को कहता.

[नसीम बार बार सीटी बजाती है.]

लाड—हाँ, हाँ, उसी की आवाज़ के साथ गूँज उठते मेरी सहेलियों के भी मीठे मीठे फ़िक़रे. मुझे सर उठाना पड़ता;......... तस्वीर बन रही थी.........उन तीन.........हाँ, उन तीन दिनों में न जाने कितनी दफ़ा सर का यह झुकना और उठना.........कितनी मरतबा नज़रों की यह लुका छिपी हुई. चौथे दिन उसने तस्वीर देने का वादा किया था.

नसीम—मुसव्विर !

लाड—मुसव्विर.........मुसव्विर ही ने तो, प्यारी सहेली, लेकिन चौथे दिन वह आया ही नहीं. रोज़मर्रा तीसरे पहर.........कभी कभी इसके भी पहले आ जाता था, पर.........पर उस दिन शाम तक न आया, शब होने तक न आया. कैसी.........कैसी बेचैनी से उस दिन मैंने उसका रास्ता देखा था.

नसीम—सहेली ! सहेली !

लाड—मेरी सहेलियाँ भी कम बेचैन न थीं. पर.........पर वह न आया.........न आया. (कुछ रुक कर) शायद वह डर कर भागा था.

नसीम—मुसव्विर !

लाड—हाँ, मुसव्विर ही. नसीम इस डर के निशान तो दूसरे दिन से ही उसके चेहरे पर नज़र आने लगे थे. और.........और तीसरे दिन तो वह इस क़दर बढ़े कि मैं तक सहम गई.........उसकी

[نسیم سیٹی بجاتی ہے۔]

لاڈ— ہاں، اُس وقت وہ تیری سیٹی کے مانند ہی میٹھی آواز سے مجھے سر اُٹھانے کو کہتا۔

[نسیم بار بار سیٹی بجاتی ہے۔]

لاڈ— ہاں، ہاں، اُسی کی آواز کے ساتھ گونج اُٹھتے میری سہیلیوں کے بھی میٹھے میٹھے فقرے۔ مجھے سر اُٹھانا پڑتا؛..... تصویر بن رہی تھی..... اُن تین..... ہاں، اُن تین دنوں میں نہ جانے کتنی دفعہ سر کا یہ جھکنا اور اُٹھنا..... کتنی مرتبہ نظروں کی یہ لُکا چھپی ہوئی۔ چوتھے دن اُس نے تصویر دینے کا وعدہ کیا تھا۔

نسیم— مصوّر!

لاڈ— مصوّر..... مصوّر ہی نے تو، پیاری سہیلی، لیکن چوتھے دن وہ آیا ہی نہیں۔ روز مرّہ تیسرے پہر..... کبھی کبھی اِس کے بھی پہلے آجاتا تھا، پر..... پر اُس دن شام تک نہ آیا، شب ہونے تک نہ آیا ہی..... کیسی بے چینی سے اُس دن میں نے اُس کا راستہ دیکھا تھا۔

نسیم— سہیلی! سہیلی!

لاڈ— میری سہیلیاں بھی کم بے چین نہ تھیں۔ پر..... پر وہ نہ آیا..... نہ آیا۔ (کچھ رُک کر) شاید وہ ڈر کر بھاگا تھا۔

نسیم— مصوّر!

لاڈ— ہاں، مصوّر ہی۔ نسیم اِس ڈر کے نشان تو دوسرے دن سے ہی اُس کے چہرے پر نظر آنے لگے تھے..... اور تیسرے دن تو وہ اِس قدر بڑھے کہ میں تک سہم گئی..... اُس کی

खामोशी मुझसे गुफ़तगू कर उठी.........चौथे दिन डर हक़ीक़त बन गया.........मुसव्विर आया ही नहीं.........दिल ने दास्ताँ को छिपा लिया.........दुनिया ने हक़ीक़त को पहचाना ही नहीं.

[नसीम ज़ोर ज़ोर से सीटी बजाती है]

लाड—ठीक, इसी.........इसी तरह शादी के बाजे बजे, शोर ग़ुल हुआ. मैं आगरे से आगई चुनार.

नसीम—मुसव्विर !

लाड—मुसव्विर ? मुसव्विर कहाँ है, मैं नहीं जानती, नसीम. न उसका नाम जानती हूँ न पता. और.........और तू.........हाँ, पिंजरे में बन्द तू मेरे दर्द को जान सकती है.

नसीम—मलिका ! मलिका !

लाड—(क्रुद्ध होकर) उफ़ ! बेरहम ! फिर तीर चलाया तूने मलिका कह कर.

[लाड चल देती है. नसीम 'बानू !' 'बानू !' बोलने लगती है.]

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में फ़रीद के मकान का एक कमरा.

समय—तीसरा पहर

[कमरा जौनपुर के कमरे से मिलता जुलता है. फ़रीद और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं. फ़रीद हुक्का पी रहा है.

ब्रह्मादित्य—तो आप मानते हैं कि बिहार में आप जौनपुर तथा

خاموشی مجھ سے گفتگو کر اُٹھی...... چوتھے دن ڈر حقیقت بن گیا..... مصوّر آیا ہی نہیں..... دل نے داستان کو چھپا لیا..... دنیا نے حقیقت کو پہچانا ہی نہیں۔

[نسیم زور زور سے سیٹی بجاتی ہے]

لاڈ — ٹھیک، اسی..... اسی طرح شادی کے باجے بجے، شور غل ہوا۔ میں آگرہ سے آگئی چُنار۔

نسیم — مصوّر!

لاڈ — مصوّر؟ مصوّر کہاں ہے، میں نہیں جانتی، نسیم۔ نہ اس کا نام جانتی ہوں نہ پتہ۔ اور..... اور تو..... ہاں، پنجرے میں بند تو میرے درد کو جان سکتی ہے۔

نسیم — ملکہ! ملکہ!

لاڈ — (کرودھ ہوکر) اُف! بے رحم! پھر تیر چلایا تو نے ملکہ کہکر۔

[لاڈ چل دیتی ہے۔ نسیم بانو! بانو! بولنے لگتی ہے۔]

یونکا

تیسرا درشیہ

ستھان — بہار شریف میں فرید کے مکان کا ایک کمرہ۔

سمے — تیسرا پہر

[کمرہ جونپور کے کمرے سے ملتا جلتا ہے۔ فرید اور برہمادتیہ بیٹھے ہوئے ہیں۔ فرید حقہ پی رہا ہے۔]

برہمادتیہ — تو آپ مانتے ہیں کہ بہار میں آپ جونپور تنہا

अपनी जागीर से भी अधिक काम कर सके, और बहुत कम समय में ?

फ़रीद—हाँ, क्योंकि काम क़रीब क़रीब उसी तरह का था, जैसा जौनपुर और जागीर में था. फिर सूबेदार बहार ख़ाँ अब तो मुझे नौकर न समझ कर दोस्त समझने लगा है. सभी तरह के अख़्तियारात मुझे हासिल हैं. (धीरे धीरे धुआँ नाक से निकालता है.)

ब्रह्मादित्य—आपने उसकी शेर से जान बचाई है.

फ़रीद—लेकिन न जाने क्यों. पंडित, उसका दिया हुआ यह नया नाम शेर ख़ाँ मुझे अच्छा नहीं लगता. मुझे अपना छोटा सा फ़रीद नाम ही पसन्द था.

ब्रह्मादित्य—परन्तु आपकी पसन्दगी से क्या होता है ? अब तो आपका नया नाम ही प्रसिद्ध हो गया है. (कुछ रुककर) एक बात आप जानते हैं ?

शेरख़ाँ—क्या ?

ब्रह्मादित्य—राज्याभिषेक के समय अनेक आर्य सम्राटों का नाम बदल दिया जाता था.

शेरख़ाँ—(मुस्कराते हुए) तो मेरी तख़्त नशीनी हुई है ?

ब्रह्मादित्य—अभी तो नहीं हुई, पर भविष्य में होने वाली अवश्य है.

शेरख़ाँ—(हँसते हुए) और नाम बदल गया अभी से; तख़्तनशीनी के पेशतर ही ?

राज्याभिषेक = तख़्त नशिनी.

اپنی جاگیر سے بھی ادھک کام کر سکے، اور بہت کم سمے میں ؟

فرید — ہاں، کیونکہ کام تریب تریب اُسی طرح کا تھا، جیسا جونپور اور جاگیر میں تھا. پھر صوبیدار بہار خاں اب تو مجھے نوکر نہ سمجھ کر دوست سمجھنے لگا ہے. سبھی طرح کے اختیارات مجھے حاصل ہیں. (دھیرے دھیرے دھواں ناک سے نکالتا ہے.)

برہمادتیہ — آپ نے اُس کی شیر سے جان بچائی ہے.

فرید — لیکن نہ جانے کیوں. پنڈت، اُس کا دیا ہوا یہ نیا نام شیر خاں مجھے اچھا نہیں لگتا. مجھے اپنا چھوٹا سا فرید نام ہی پسند تھا.

برہمادتیہ — پرنتو آپ کی پسندگی سے کیا ہوتا ہے؟ اب تو آپ کا نیا نام ہی پرسدھ ہو گیا ہے. (کچھ رُک کر) ایک بات آپ جانتے ہیں ؟

شیر خاں — کیا ؟

برہمادتیہ — راجیابھیشیک کے سمے انیک آریہ سمراٹوں کا نام بدل دیا جاتا تھا.

شیر خاں — (مسکراتے ہوئے) تو میری تخت نشینی ہوئی ہے ؟

برہمادتیہ — ابھی تو نہیں ہوئی، پر بھوشیہ میں ہونے والی اوشیہ ہے.

شیر خاں — (ہنستے ہوئے) اور نام بدل گیا ابھی سے، تخت نشینی سے پیشتر ہی ؟

راجیابھیشیک = تخت نشینی.

ब्रह्मादित्य—सिंहासन मिलने वाला है, उसका यह प्रारम्भिक शकुन है.

[शेरखाँ कोई उत्तर न देकर गम्भीरता से कुछ सोचने लगता है. ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

शेरखाँ—अच्छा, यह मज़ाक़ तो छोड़ो; मैं आज तुमसे एक खास बात कहना चाहता हूँ.

ब्रह्मादित्य—मैं समझ गया आप क्या कहना चाहते हैं.

शेरखाँ—क्या समझे?

ब्रह्मादित्य—मुग़लों के आक्रमण से ही सम्बन्ध रखने वाली कोई बात होगी. क्योंकि आजकल वही विषय आप की दिवस की चिन्ता और रात्रि का स्वप्न है.

शेरखाँ—हां, उसी के मुताल्लिक़ है. तुम मेरे दिल की बात न जानो, यह मुमकिन ही नहीं. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुँआ छोड़ते हुए) देखो, पंडित, मुग़ल चाहे मुसलमान हों, लेकिन उन्हें मैं इस मुल्क के लिये लुटेरा समझता हूँ. इस मुल्क की दौलत ने न जाने कितनी बाहरी क़ौमों को यहाँ आने के लिये ललचाया है.

ब्रह्मादित्य—हाँ, सबसे पहले यवन आए. वे लूट खसोट कर चले गये. उनके पश्चात शक और हूण आए. पर देश उन्हें पचा गया. फिर ग़ज़नी और ग़ौर के मुसलमान आए. ऐसी लूट मार हुई जैसी उसके पहले कभी न हुई थी.

शेरखाँ—लेकिन आखिर में शकों और हूणों के मानिन्द पठानों ने इस मुल्क को ही अपना वतन मान लिया था.

प्रारंभिक शकुन = इब्तिदाई शगुन.

برہمادتیہ — سنگھاسن ملنے والا ہے، اُس کا یہ پرارمبھک شگن ہے۔

[شیرخاں کوئی اُتر نہ دے کر گمبھیرتا سے کچھ سوچنے لگتا ہے۔ برہمادتیہ اُس کی اور دیکھتا رہتا ہے۔ کچھ دیر نِستبدھتا۔]

شیرخاں — اچھا، یہ مذاق تو چھوڑو؛ میں آج تم سے ایک خاص بات کہنا چاہتا ہوں۔

برہمادتیہ — میں سمجھ گیا آپ کیا کہنا چاہتے ہیں۔

شیرخاں — کیا سمجھے؟

برہمادتیہ — مغلوں کے آکرمن سے ہی سمبندھ رکھنے والی کوئی بات ہوگی۔ کیونکہ آج کل وہی وشیہ آپ کی دیوس کی چنتا اور راتری کا سوپن ہے۔

شیرخاں — ہاں، اُسی کے متعلق ہے۔ تم میرے دل کی بات نہ جانو، یہ ممکن ہی نہیں۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) دیکھو، پنڈت، مغل چاہے مسلمان ہوں، لیکن اُنھیں میں اس ملک کے لئے لٹیرا سمجھتا ہوں۔ اس ملک کی دولت نے نہ جانے کتنی باہری قوموں کو یہاں آنے کے لئے للچایا ہے۔

برہمادتیہ — ہاں، سب سے پہلے یون آئے۔ وے لوٹ کھسوٹ کر چلے گئے۔ اُن کے پشچات شک اور ہُن ہوئے۔ پردیش انھیں پچا گیا۔ پھر غزنی اور غور کے مسلمان آئے۔ ایسی لوٹ مار ہوئی جیسی اُس کے پہلے کبھی نہ ہوئی تھی۔

شیرخاں — لیکن آخر میں شکوں اور ہنوں کے مانند پٹھانوں نے اس ملک کو ہی اپنا وطن مان لیا تھا۔

پرارمبھک شگن = ابتدائی شگون۔

ब्रह्मादित्य—हाँ, यह मैं मानता हूँ; आप ही इसके अत्यन्त प्रमाण हैं.

शेरख़ाँ—और बाहरी क़ौमों का आना अभी भी नहीं रुका है. कुछ अरसे पहले मुग़ल तैमूर का हमला हुआ था. जो उसने किया वही बाबर करेगा. और मुझे तो यह ख़ौफ़ है कि बाबर कहीं महमूद गज़नवी की मानिन्द न हो जाय.

ब्रह्मादित्य—इसमें सन्देह नहीं कि बाहरी जातियों के यह आक्रमण इस देश के इतिहास की महान दारुण और दुख पूर्ण घटनायें हैं.

शेरख़ाँ—और आगे भी अगर यहां यही होता रहा, तो ऐसे सरसब्ज़ मुल्क की जैसी हालत होनी चाहिये, वैसी कभी भी न हो सकेगी.

(हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) हम इस मुल्क के अन्दरूनी हालात तो ठीक करने की कोशिशों में मशग़ूल हैं, लेकिन इसके पहले अब इन बाहरी हमलों को रोकना ज़रूरी है.

ब्रह्मादित्य—यही सोच कर सुल्तान-इबराहीम लोदी की हार के पश्चात भी राणा सांगा इस प्रयत्न में दत्तचित हैं.

शेरख़ाँ—मेरी सारी हमदर्दी राना के साथ है. इस वक़्त अगर मेरी तैयारी होती तो मैं भी बाबर के ख़िलाफ़ राना के एक छोटे से मातहत की हैसियत से उनके मददगारों में होता.

ब्रह्मादित्य—और यही तय्यारी आप करना चाहते हैं ?

शेरख़ाँ—हाँ, यही तैयारी मैं करना चाहता हूँ. मैं चाहता हूँ, इस

आक्रमण = हमला. महान दारुण = बड़ी दर्द नाक

برہمادتیہ — ہاں، یہ میں مانتا ہوں؛ آپ ہی اِس کے اتینت پرمان ہیں۔

شیرخاں — اور باہری قوموں کا آنا ابھی بھی نہیں رُکا ہے۔ کچھ عرصے پہلے مغل تیمور کا حملہ ہوا تھا۔ جو اُس نے کیا وہی بابر کرے گا۔ اور مجھے تو یہ خوف ہے کہ بابر کہیں محمود غزنوی کی مانند نہ ہو جائے۔

برہمادتیہ — اِس میں سندیہہ نہیں کہ باہری جاتیوں کے یہ آکرمن اِس دیش کے اتہاس کی مہان دارون اور دُکھ پورن گھٹنائیں ہیں۔

شیرخاں — اور آگے بھی اگر یہاں یہی ہوتا رہا، تو ایسے سرسبز ملک کی جیسی حالت ہونی چاہیئے، ویسی کبھی بھی نہ ہو سکے گی۔

(حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) ہم اِس ملک کے اندرونی حالات تو ٹھیک کرنے کی کوششوں میں مشغول ہیں، لیکن اِس کے پہلے اب اِن باہری حملوں کو روکنا ضروری ہے۔

برہمادتیہ — یہی سوچ کر سلطان ابراہیم لودی کی ہار کے پشچات بھی رانا سانگا اِس پریتن میں دتت چت ہیں۔

شیرخاں — میری ساری ہمدردی رانا کے ساتھ ہے۔ اِس وقت اگر میری تیاری ہوتی تو میں بھی بابر کے خلاف رانا کے ایک چھوٹے سے ماتحت کی حیثیت سے اُن کے مددگاروں میں ہوتا۔

برہمادتیہ — اور یہی تیاری آپ کرنا چاہتے ہیں ؟

شیرخاں — ہاں، یہی تیاری میں کرنا چاہتا ہوں۔ میں چاہتا ہوں، اِس

آکرمن = حملہ۔ مہان دارُن = بڑی درد ناک۔

मुल्क के हिन्दू मुसलमान दोनों मिलकर इस बाहरी क़ौम का मुक़ाबला करें. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) फिर यह काम यहां के सुलतानों और राजाओं पर ही न छोड़ा जाय बल्कि यहां की आम रिआया को भी इस काम में शामिल किया जाय. साथ ही बाबर की नौकरी में कोई ऐसा शख़्स रहे जो ऐन मौक़े पर उसकी फ़ौज में बलवा करा दे.

ब्रह्मादित्य—तो हिन्दू मुसलमानों के संगठन का काम मुझ पर छोड़ कर आप बाबर की नौकरी करना चाहते हैं ?

शेर ख़ाँ—(ब्रह्मादित्य की हथेली पर हाथ मारते हुए) किस क़दर जल्दी हर तरह के मामलों को समझ लेते हो तुम !

ब्रह्मादित्य—(गम्भीरता से सोचते हुए) परन्तु यह काम बहुत बड़ा काम है. मुग़ल इस समय बहुत शक्तिशाली हैं. हमें जो कुछ करना है उसमें बहुत धैर्य रखना होगा; बिना पूरी तैयारी और ठीक अवसर के हम कुछ न कर बैठें इसके लिये अत्यधिक संयम से काम लेना होगा; अन्यथा फल उल्टा निकल सकता है.

शेरख़ाँ—इसमें क्या शक है ? साथ ही हमें अपने कुल काम और अरमान पोशीदा रखने होंगे और बड़ी से बड़ी तकलीफ़ बरदाश्त करने को भी तय्यार रखना होगा.

[शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य दोनों गम्भीरता से सोचने लगते हैं. दोनों के सर झुक जाते हैं.]

लघु-यवनिका

ملک کے ہندو مسلمان دونوں مل کر اس باہری قوم کا مقابلہ کریں۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) پھر یہ کام یہاں کے سلطانوں اور راجاؤں پر ہی نہ چھوڑا جائے بلکہ یہاں کی عام رعایا کو بھی اس کام میں شامل کیا جائے۔ ساتھ ہی بابر کی نوکری میں کوئی ایسا شخص رہے جو عین موقع پر اس کی فوج میں بلوہ کرا دے۔

برہمادتیہ— تو ہندو مسلمانوں کے سنگٹھن کا کام مجھ پر چھوڑ کر آپ بابر کی نوکری کرنا چاہتے ہیں؟

شیر خاں— (برہمادتیہ کی ہتھیلی پر ہاتھ مارتے ہوئے) کس قدر جلدی ہر طرح کے معاملوں کو سمجھ لیتے ہو تم!

برہمادتیہ— (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) پرنتو یہ کام بہت بڑا کام ہے۔ مغل اس سمے بہت شکتی شالی ہیں۔ ہمیں جو کچھ کرنا ہے اس میں بہت دھیریہ رکھنا ہوگا؛ بنا پوری تیاری اور ٹھیک اوسر کے ہم کچھ نہ کر بیٹھیں اس کے لئے اتیہ دھک سنیم سے کام لینا ہوگا؛ انیہ تھا پھل الٹا نکل سکتا ہے۔

شیر خاں— اس میں کیا شک ہے؟ ساتھ ہی ہمیں اپنے کل کام اور ارمان پوشیدہ رکھنے ہوں گے اور بڑی سے بڑی تکلیف برداشت کرنے کو بھی تیار رہنا ہوگا۔

[شیر خاں اور برہمادتیہ دونوں گمبھیرتا سے سوچنے لگتے ہیں۔ دونوں کے سر جھک جاتے ہیں۔]

لگھو یونکا

चौथा दृश्य

स्थान—सहसराम में निज़ाम का उद्यान.

समय—प्रात: काल.

[उद्यान आगरे के उद्यान की बनावट का ही है, परन्तु उससे बहुत छोटा. निकट के एक चबूतरे पर निज़ाम बैठा हुआ सितार बजा कर गा रहा है.]

गीत

क्यों प्रेम सिखाया था मुझको
अब दूर नज़र से रहती हो
कुछ दिल की बात भी कहती हो
क्यों प्रेम.................

एक बार ज़रा दर्शन देजा
दिल तेरा है लेजा लेजा
क्यों प्रेम.................

छल कपट नहीं अच्छा होता
यह पहले ही समझा होता
क्यों प्रेम.................

[रहमान का प्रवेश. रहमान की अवस्था पैंसठ वर्ष से कम नहीं. वह साँवले रंग का ऊँचा, किन्तु दुबला, मनुष्य है. सर और बड़ी बड़ी मूछों तथा दाढ़ी के बाल सन के सदृश सफ़ेद हो गये हैं. सफ़ेद कुर्ता और पायजामा पहने है. उसके हाथ पर पीतल की एक छोटी

چوتھا درشیہ

استھان — سہسرام میں نظام کا اُدیان۔

سمے — پرات کال۔

[اُدیان آگرے کے اُدیان کی بناوٹ کا ہی ہے، پرنتو اس سے بہت چھوٹا۔ نکٹ کے ایک چبوترے پر نظام بیٹھا ہوا ستار بجا کر گا رہا ہے۔]

گیت

کیوں پریم سکھایا تھا مجھکو
اب دور نظر سے رہتی ہو
کچھ دل کی بات بھی کہتی ہو
کیوں پریم.........

ایک بار ذرا درشن دیجا
دل تیرا ہے لے جا لے جا
کیوں پریم.........

چھل کپٹ نہیں اچھا ہوتا
یہ پہلے ہی سمجھا ہوتا
کیوں پریم.........

[رحمان کا پرویش۔ رحمان کی اوستھا پینسٹھ ورش سے کم نہیں۔ وہ سانولے رنگ کا اونچا، کنتو دُبلا، منشیہ ہے۔ سر اور بڑی بڑی مونچھیں تتھا داڑھی کے بال سن کے سدرش سفید ہو گئے ہیں۔ سفید کرتا اور پاجامہ پہنے ہے۔ اس کے ہاتھ پر پیتل کی ایک چھوٹی

की तश्तरी में पीतल का एक छोटा सा गिलास है, जो ढक्कन से ढका हुआ है.]

रहमान—छोटे मियां ! ....छोटे मियां !

निज़ाम—(गाना बन्द कर) उफ़ ! यहां तक भी तूने पीछा न छोड़ा.

रहमान—(बहरे मनुष्य के सदृश थोड़ा सा सर उठा कर) क्या........क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—(चिल्लाकर) कुछ नहीं. मैं दूध नहीं पियूँगा. (साधारण स्वर में) तूने गोद में खिलाया क्या है, आफ़त हो गई.

रहमान—नहीं कैसे पियोगे ? दुबले हो गये तो मैं बड़े मियां को क्या जवाब दूंगा ? दिन रात तस्वीरें और ग़ज़ल ! न खाने क ठिकाना है, न पीने का.

निज़ाम—(ग़ुस्से से) जो भाई साहब ने कहा था वही तू भी कह—शायरी करना छोड़ दो, मुसव्विरी करना छोड़ दो. और करूँ क्या ? दिन रात दूध पियूँ, बढ़िया बढ़िया चीजें खाऊँ. और यह सब खा पीकर जिन्दा क्यों रहूँ ? सोने चाँदी के टुकड़ों को इकट्ठा करने के लिये. मैं जागीरदार का लड़का हूँ न ! रगों में पठानी खून है न ! दुनिया में कुछ काम करने आया हूँ न !

रहमान—क्या........क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—खाने पीने, इन बेजान टुकड़ों को इकट्ठा और खर्च करने से बेहतर तुम लोगों की नज़र में और कोई काम है ही नहीं. जागीरदार, सूबेदार, नवाब, सुलतान इन सब के तमाम कामों की बुनियाद यही है.

سی تشتری میں پیتل کا ایک چھوٹا سا گلاس ہے، جو ڈھکن سے ڈھکا ہوا ہے۔]

رحمان — چھوٹے میاں !...... چھوٹے میاں !

نظام — (گانا بند کر) اُف ! یہاں تک بھی تُو نے پیچھا نہ چھوڑا۔

رحمان — (بہرے منشیہ کے سدرش تھوڑا سا سر اٹھا کر) کیا......... کیا کہا تم نے ؟

نظام — (چلّا کر) کچھ نہیں۔ میں دودھ نہیں پیوں گا۔ (سادھارن سور میں) تو نے گود میں کھلایا کیا ہے، آفت ہو گئی۔

رحمان — نہیں کیسے پیوگے ؟ دبلے ہو گئے تو میں بڑے میاں کو کیا جواب دوں گا ؟ دن رات تصویریں اور غزل ! نہ کھانے کا ٹھکانا ہے، نہ پینے کا۔

نظام — (غصے سے) جو بھائی صاحب نے کہا تھا وہی تو بھی کہہ — شاعری کرنا چھوڑ دو، مصوّری کرنا چھوڑ دو۔ اور کروں کیا ؟ دن رات دودھ پیوں، بڑھیا بڑھیا چیزیں کھاؤں۔ اور یہ سب کھا پی کر زندہ کیوں رہوں ؟ سونے چاندی کے ٹکڑوں کو اکٹھا کرنے کے لئے۔ میں جاگیردار کا لڑکا ہوں نا ! رگوں میں پٹھانی خون ہے نا ! دنیا میں کچھ کام کرنے آیا ہوں نا !

رحمان — کیا......... کیا کہا تم نے ؟

نظام — کھانے پینے، ان بے جان ٹکڑوں کو اکٹھا اور خرچ کرنے سے بہتر تم لوگوں کی نظر میں اور کوئی کام ہے ہی نہیں۔ جاگیردار، صوبے دار، نواب، سلطان ان سب کے تمام کاموں کی بنیاد یہی ہے۔

रहमान—ग़ज़लें फिर बनाना, पहले दूध पी लो.

निज़ाम—(चिल्लाकर) नहीं पियूँगा.

रहमान—(चबूतरे पर बैठते हुए) जब तक न पियोगे, मैं जाने वाला नहीं.

निज़ाम—(कुछ देर पश्चात् मुस्करा कर, सितार रखते हुए) अभी भी तू मुझे बच्चा ही समझता है. अच्छा ला, पी लेता हूँ.

रहमान—क्या.........क्या कहा तुमने ?

निज़ा—(चिल्लाकर) तेरे बहरे पन के मारे तो और नाकों दम है. मैंने कहा—ला, पी लेता हूँ. (हाथ बढ़ाता है)

रहमान—(खुश हो, उठकर दूध का गिलास निज़ाम को देते हुए) वारी जाऊँ तुमपर ! (दोनों हाथों को कानों पर लगता है)

निज़ाम—(दूध के कुछ घूँट पीकर) क्यों, रहमान, यह सब अमीर उमरा खा पीकर इस बे जान दौलत को इकट्ठा कर क्या करते हैं ?

रहमान—क्या.........क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—कह—अपनी तरह तरह की ख़ाहिशें पूरी करते हैं. ऐयाशी में मुब्तिला रहते हैं.

रहमान—फिर ग़ज़लें शुरू हुईं. मैं कहता हूँ पहले दूध तो पूरा पी लो.

निज़ाम—(थोड़ा सा दूध और पीकर) पर क्यों, रहमान, ऐसा भी कोई है जिसकी ख़ाहिश ही मुहब्बत हो ; बदला न मिलने पर भी चाहना ?

मुब्तिला = लगे रहना.

رحمان — غزلیں پھر بنانا، پہلے دودھ پی لو۔

نظام — (چلا کر) نہیں پیوں گا۔

رحمان — (چبوترے پر بیٹھتے ہوئے) جب تک نہ پیوگے، میں جانے والا نہیں۔

نظام — (کچھ دیر پشچات مسکرا کر، ستار رکھتے ہوئے) ابھی بھی تو مجھے بچہ ہی سمجھتا ہے۔ اچھا لا، پی لیتا ہوں۔

رحمان — کیا......کیا کہا تم نے ؟

نظام — (چلا کر) تیرے بہرے پن کے مارے تو اور ناکوں دم ہے۔ میں نے کہا — لا، پی لیتا ہوں۔ (ہاتھ بڑھاتا ہے)

رحمان — (خوش ہو، اٹھ کر دودھ کا گلاس نظام کو دیتے ہوئے) واری جاؤں تم پر! (دونوں ہاتھوں کو کانوں پر لگاتا ہے)

نظام — (دودھ کے کچھ گھونٹ پی کر) کیوں، رحمان۔ یہ سب امیر امرا کھا پی کر اس بے جان دولت کو اکٹھا کر کیا کرتے ہیں ؟

رحمان — کیا......کیا کہا تم نے ؟

نظام — کہہ — اپنی طرح طرح کی خواہشیں پوری کرتے ہیں۔ عیاشی میں مبتلا رہتے ہیں۔

رحمان — پھر غزلیں شروع ہوئیں۔ میں کہتا ہوں پہلے دودھ تو پورا پی لو۔

نظام — (تھوڑا سا دودھ اور پی کر) پر کیوں، رحمان، ایسا بھی کوئی ہے جس کی خواہش ہی محبت ہو ؛ بدلہ نہ ملنے پر بھی چاہنا ؟

مبتلا = لگے رہنا۔

[एक प्रौढ़ अवस्था के अहलकार का प्रवेश. वह अँगरखा और पायजामा पहने है. सर पर गोल पगड़ी है और गले में दुपट्टा. ललाट पर त्रिपुन्ड लगा है. वह आगे बढ़ कर निज़ाम को झुक कर सलाम करता है. निज़ाम दूध पूरा पीकर, गिलास रहमान को दे, सलाम का उत्तर देता है. रहमान का प्रस्थान.]

निज़ाम—कहिये—अहलकार साहब.

अहलकार—हुज़ूर, आज बहुत ही बुरे सम्वाद सुनाने को उपस्थित हुआ हूँ.

निज़ाम—(घबड़ा कर, जलदी से) क्यों, भाई जान तो अच्छे हैं ?

अहलकार—बिहार शरीफ़ में जागीर दार साहब नहीं हैं. कहां गये, कोई नहीं जानता.

निज़ाम—(अत्यन्त चिन्ता से) अच्छा ! (कुछ रुक कर) वह कहाँ जा रहे हैं, इसकी इत्तला भी उन्होंने मुझे भेजना ज़रूरी नहीं समझा.

[अहलकार कोई उत्तर नहीं देता. कुछ देर निस्तब्धता.]

निज़ाम—और दूसरी खबर क्या है ?

अहलकार—मुहम्मद ख़ाँ सूर जागीर पर आक्रमण करने के लिये रवाना हुआ है.

निज़ाम—(और भी घबड़ा कर) उफ़ ।

[कुछ देर फिर निस्तब्धता]

त्रिपुण्ड=भस्म की तीन आड़ी लकीरें. सम्वाद=ख़बर. उपस्थित=हाज़िर. आक्रमण=हमला.

[ایک پروڑھ اوستھا کے اہلکار کا پرویش۔ وہ انگرکھا اور پائجامہ پہنے ہے۔ سر پر گول پگڑی ہے اور گلے میں دوپٹا۔ للاٹ پر ترپنڈ لگا ہے۔ وہ آگے بڑھ کر نظام کو جھک کر سلام کرتا ہے۔ نظام دودھ پورا پی کر، گلاس رحمان کو دے، سلام کا اتر دیتا ہے۔ رحمان کا پرستھان۔]

نظام — کہئے — اہلکار صاحب۔

اہلکار — حضور، آج بہت ہی بُرے سمواد سنانے کو اُپستھت ہوا ہوں۔

نظام — (گھبرا کر، جلدی سے) کیوں، بھائی جان تو اچھے ہیں؟

اہلکار — بہار شریف میں جاگیردار صاحب نہیں ہیں۔ کہاں گئے، کوئی نہیں جانتا۔

نظام — (اتینت چنتا سے) اچھا! (کچھ رک کر) وہ کہاں جا رہے ہیں، اس کی اطلاع بھی انھوں نے مجھے بھیجنا ضروری نہیں سمجھا۔

[اہلکار کوئی اتر نہیں دیتا۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

نظام — اور دوسری خبر کیا ہے؟

اہلکار — محمد خاں سور جاگیر پر آکرمن کرنے کے لئے روانہ ہوا ہے۔

نظام — (اور بھی گھبرا کر) اُف!

[کچھ دیر پھر نستبدھتا]

ترپنڈ = بھسم کی تین آڑی لکیریں۔ سمواد = خبر۔
اپستھت = حاضر۔ آکرمن = حملہ۔

निज़ाम—पंडित ब्रह्मादित्य जी की कोई ख़बर है ?

अहलकार—उनकी ख़बर लेने मैंने बिहार शरीफ़ आदमी भेजा है.

[निज़ाम सर झुका कर गम्भीरता से सोचने लगता है. अहलकार निज़ाम की ओर देखता है.]

लघु—यवनिका

पाँचवाँ दृश्य

स्थान—बनारस के निकट बाबर का शिविर

समय—रात्रि

[चाँदनी के प्रकाश में दूर पर, दूर दूर तक फैले हुए बाबर के शिविर के डेरे दृष्टिगोचर होते हैं. दृश्य धुँधला सा है ; स्पष्ट नहीं. निकट ही एक डेरे के सामने उसकी परछी में शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए हैं. शेरख़ाँ हुक़्क़ा पी रहा है. परछी के बाहर मशाल जल रही है, जिससे यहाँ का दृश्य अधिक स्पष्ट है.

शेरख़ाँ—तो........तो आख़िर सुल्तान इबराहीम लोदी और राना साँगा की मानिन्द ही सुल्तान महमूद लोदी की भी हार हो गई और बाबर की जीत !

ब्रह्मादित्य—बहुत जल्दी की गई. मैंने कहा था कि हमें अत्यधिक संयम से काम लेना होगा, अन्यथा फल उल्टा निकल सकता है. मेरा संगठन नहीं हुआ था और आप बलवा कराने की तैयारी न कर सके थे.

शिविर=कैम्प.

نظام — پنڈت برہمادتیہ جی کی کوئی خبر ہے ؟

اہلکار — ان کی خبر لینے میں نے بہار شریف آدمی بھیجا ہے۔

[نظام سر جھکا کر گمبھیرتا سے سوچنے لگتا ہے۔ اہلکار نظام کی اور دیکھتا ہے۔]

لگھو—یونیکا

پانچواں درشیہ

استھان — بنارس کے نکٹ بابر کا شِوِر۔

سمے — راتری۔

[چاندنی کے پرکاش میں دور پر دور تک پھیلے ہوئے بابر کے شِوِر کے ڈیرے درشٹی گوچر ہوتے ہیں۔ درشیہ دھندلا سا ہے؛ سپشٹ نہیں۔ نکٹ ہی ایک ڈیرے کے سامنے اس کی پرچھی میں شیر خاں اور برہمادتیہ بیٹھے ہوئے ہیں۔ شیر خاں حقہ پی رہا ہے۔ پرچھی کے باہر مشعل جل رہی ہے، جس سے یہاں کا درشیہ ادھک سپشٹ ہے۔]

شیر خاں — تو...... تو آخر سلطان ابراہیم لودی اور رانا سانگا کی مانند ہی سلطان محمود لودی کی بھی ہار ہو گئی اور بابر کی جیت!

برہمادتیہ — بہت جلدی کی گئی۔ میں نے کہا تھا کہ ہمیں اتی ادھک سنیم سے کام لینا ہوگا، انیتھا پھل الٹا نکل سکتا ہے۔ میرا سنگٹھن نہیں ہوا تھا اور آپ بلوا کرانے کی تیاری نہ کر سکے تھے۔

شِوِر = کیمپ۔

शेरखाँ—लेकिन हमारी ग़लती नहीं, पंडित, महमूद माना ही नहीं.

ब्रह्मादित्य—हमने ग़लती की उसे सहायता देकर. बड़ी बात यही हुई कि हमारी सहायता गुप्त रही, अन्यथा हम कहीं के न रहते.

शेरखाँ—लेकिन.........लेकिन पंडित जिन हालात में मैं हूँ, उनमें सब्र रखना भी आसान बात नहीं है.

ब्रह्मादित्य—मानता हूँ.

शेरखाँ—जिसे मैं लुटेरा समझता हूँ, मुल्क का बड़े से बड़ा दुश्मन, उसी को मालिक बनाना पड़ा है. जिससे दिलो जान से नफ़रत करता हूँ उसी के सामने सर झुकानापड़ता है, उसी की ख़ुशामद करनी पड़ती है. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) वह मेरा हम मज़हब है. कई वक़्त नमाज़ तक उसी के साथ पढ़ी जाती है, लेकिन उस वक़्त भी दिली नफ़रत नहीं जाती. ख़ुदा की ठीक इबादत ही नहीं होती, और अपने ख़ेमे में लौट कर फिर से नमाज़ पढ़ता हूँ. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) तुम हिन्दू हो. तुम्हारी सन्ध्या, पूजा, प्रार्थना में मैं शरीक नहीं हो सकता, पर जब कभी तुम्हें सन्ध्या पूजा करते देखता हूँ, दिल में तुम्हारे ईश्वर के लिये मुहब्बत और इज़्ज़त पैदा होती है.

ब्रह्मादित्य—जानता हूँ.

शेरखाँ—बाबर के साथ नमाज़ पढ़ने के वक़्त तो बाबर के लिये जो नफ़रत है, उसके सबब से ख़ुदा को भी भूल जाता हूँ. (कुछ रुक कर) फिर तुम्हीं कहो सब्र रहे कैसे? (धीरे धीरे नाक से धुआँ निकालता है)

شیرخاں — لیکن ہماری غلطی نہیں، پنڈت، محمود مانا ہی نہیں۔

برہمادتیہ — ہم نے غلطی کی اُسے سہایتا دے کر. بڑی بات یہی ہوئی کہ ہماری سہایتا گپت رہی، انیہ تھا ہم کہیں کے نہ رہتے۔

شیرخاں — لیکن...... لیکن پنڈت جن حالات میں میں ہوں، ان میں صبر رکھنا بھی آسان بات نہیں ہے۔

برہمادتیہ — مانتا ہوں۔

شیرخاں — جسے میں لٹیرا سمجھتا ہوں، ملک کا بڑے سے بڑا دشمن، اسی کو مالک بنانا پڑا ہے. جس سے دل و جان سے نفرت کرتا ہوں اسی کے سامنے سر جھکانا پڑتا ہے، اسی کی خوشامد کرنی پڑتی ہے. (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) وہ میرا ہم مذہب ہے. کئی وقت نماز تک اسی کے ساتھ پڑھی جاتی ہے، لیکن اس وقت بھی دلی نفرت نہیں جاتی. خدا کی ٹھیک عبادت ہی نہیں ہوتی، اور اپنے خیمے میں لوٹ کر پھر سے نماز پڑھتا ہوں. (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) تم ہندو ہو. تمہاری سندھیا، پوجا، پرارتھنا میں میں شریک نہیں ہو سکتا، پر جب کبھی تمہیں سندھیا پوجا کرتے دیکھتا ہوں، دل میں تمہارے ایشور کے لئے محبت اور عزت پیدا ہوتی ہے۔

برہمادتیہ — جانتا ہوں۔

شیرخاں — بابر کے ساتھ نماز پڑھنے کے وقت تو بابر کے لئے جو نفرت ہے، اس کے سبب سے خدا کو بھی بھول جاتا ہوں۔ (کچھ رک کر) پھر تمہیں کہو صبر رہے کیسے؟ (دھیرے دھیرے ناک سے دھواں نکالتا ہے)

ब्रह्मादित्य—इन दिनों आपके साथ निरन्तर न रहने पर भी मैं आप की मानसिक अवस्था का अनुमान कर सकता हूँ. मैंने सदा कहा और फिर कहता हूँ कि हमें हर दशा में अत्यधिक संयम रखना होगा. यदि इस स्थिति में रहना आपकी शक्ति के बाहर है तो चले चलिये यहां से, पर जल्दी कोई काम न कीजिये. कहीं अब फिर हमने जल्दी की तो बार बार किया गया काम छिप नहीं सकता.

शेरखाँ—(बिचारते हुए) हाँ, यह तो है ही.

ब्रह्मादित्य—और फिर तो हम कहीं के न रहेंगे.

[एक दरबान का प्रवेश. वह आकर सलाम करता है.]

दरबान—हुज़ूर निज़ाम नाम के एक शख्स सरकार से मिलना चाहते हैं.

शेरखाँ—(जल्दी से) उन्हें फ़ौरन भेज दो.

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान]

शेरखां—यकायक निज़ाम कैसे, पंडित ?

ब्रह्मादित्य—(सोचते हुए) अभी मालूम हो जयगा.

[निज़ाम का प्रवेश. शेरखां उठकर आगे बढ़ता है. ब्रह्मादित्य भी उसके पीछे पीछे जाता है. निज़ाम शेरखां के सामने सर झुकाता है. शेरखां उसे हृदय से लगा लेता है. ब्रह्मादित्य और निज़ाम भी एक दूसरे का अभिवादन करते हैं.]

शेरखाँ—तो आखिर तुमने मेरा पता लगा ही लिया; अच्छे तो हो ?

निज़ाम—बड़ी मुश्किल से पता लगा सका हूँ. जागीर खोकर

अभिवादन=ख़ैरमक़दम

برہمادتیہ ــ ان دنوں آپ کے ساتھ نرنتر نہ رہنے پر بھی میں آپ کی مانسک اوستھا کا انومان کر سکتا ہوں. میں نے سدا کہا اور پھر کہتا ہوں کہ ہمیں ہر دشا میں اتیادھک سنیم رکھنا ہوگا. یدی اس استھتی میں رہنا آپ کی شکتی کے باہر ہے تو چلے چلیے یہاں سے، پر جلدی کوئی کام نہ کیجیے. کہیں اب پھر ہم نے جلدی کی تو بار بار کیا گیا کام چھپ نہیں سکتا.

شیرخاں ــ (بچارتے ہوئے) ہاں، یہ تو ہے ہی.

برہمادتیہ ــ اور پھر تو ہم کہیں کے نہ رہیں گے.

[ایک دربان کا پرویش. وہ آکر سلام کرتا ہے.]

دربان ــ حضور نظام نام کے ایک شخص سرکار سے ملنا چاہتے ہیں.

شیرخاں ــ (جلدی سے) انہیں فوراً بھیج دو.

[دربان کا سلام کر پرستھان]

شیرخاں ــ یکایک نظام کیسے، پنڈت؟

برہمادتیہ ــ (سوچتے ہوئے) ابھی معلوم ہو جائے گا.

[نظام کا پرویش. شیرخاں اٹھ کر آگے بڑھتا ہے. برہمادتیہ بھی اس کے پیچھے پیچھے جاتا ہے. نظام شیرخاں کے سامنے سر جھکاتا ہے. شیرخاں اسے ہردے سے لگا لیتا ہے. برہمادتیہ اور نظام بھی ایک دوسرے کا ابھوادن کرتے ہیں.]

شیرخاں ــ تو آخر تم نے میرا پتہ لگا ہی لیا؛ اچھے تو ہو؟

نظام ــ بڑی مشکل سے پتہ لگا سکا ہوں. جاگیر کھو کر

ابھوادن = خیر مقدم

आ रहा हूँ, भाई साहब.

[शेरखाँ के मुंह से कोई उत्तर नहीं निकलता. परन्तु एकाएक उत्पन्न हुआ उसका मानसिक उद्वेग उसके मुख से झलकने लगता है. वह सर झुका लेता है. निजाम ब्रह्मादित्य की ओर देखता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

निजाम—(सहमे हुए स्वर में अटक अटक कर) आप यह न समझियेगा कि इसमें मेरी कोई ग़लती है. जागीर के बचाने में मैंने कुछ उठा न रखा, लेकिन मुंहम्मद खां सूर के हमले का सामना करने के लिये हमारी तैयारी न थी; आपका और पंडित जी का पता न लगा और विहार से कोई मदद न मिली.

[फिर कुछ देर निस्तब्धता]

शेरखाँ—(सर उठाते हुए) आज ही महमूद लोदी की हार की खबर मिली और आज ही यह खबर. (कुछ रुककर एकाएक प्रसन्नता के स्वर में) लेकिन.........लेकिन कोई हरज नहीं.........बाबर मुझसे इतना खुश है कि उसकी मदद से मैं अपनी जागीर तो फ़ौरन वापस ले सकता हूँ. निजाम तुम दिल छोटा न करो. शेरखां इस दफ़ा सच्चा शेर होकर सुलेमान, अहमद, उनकी वालिदा और मुहम्मद खां सूर सब.....सब को खा जायगा. सुना, खा जायगा.

[शेरखां बेचैनी से इधर उधर टहलता है. निजाम और ब्रह्मादित्य दोनों उसकी ओर देखते हैं.]

लघु—यवनिका

मानसिक उद्वेग = दिली बेचैनी.

آ رہا ہوں، بھائی صاحب۔

[شیر خاں کے منہ سے کوئی اتر نہیں نکلتا۔ پرنتو یکایک اتپنّ ہوا اس کا مانسک ادویگ اس کے مکھ سے جھلکنے لگتا ہے۔ وہ سر جھکا لیتا ہے۔ نظام برہمادتیہ کی اور دیکھتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا]

نظام — (سہمے ہوئے سور میں اٹک اٹک کر) آپ یہ نہ سمجھئے گا کہ اس میں میری کوئی غلطی ہے۔ جاگیر کے بچانے میں میں نے کچھ اٹھا نہ رکھا، لیکن محمد خاں سور کے حملے کا سامنا کرنے کے لئے ہماری تیاری نہ تھی؛ آپ کا اور پنڈت جی کا پتہ نہ لگا اور بہار سے کوئی مدد نہ ملی۔

[پھر کچھ دیر نستبدھتا]

شیر خاں — (سر اٹھاتے ہوئے) آج ہی محمود لودی کی ہار کی خبر ملی اور آج ہی یہ خبر۔ (کچھ دیر رک کر یکایک پرسنتا کے سور میں) لیکن..... لیکن کوئی ہرج نہیں...... بابر مجھ سے اتنا خوش ہے کہ اس کی مدد سے میں اپنی جاگیر تو فوراً واپس لے سکتا ہوں۔ نظام تم دل چھوٹا نہ کرو۔ شیر خاں اس دفعہ سچا شیر ہو کر سلیمان، احمد، ان کی والدہ اور محمد خاں سور سب...... سب کو کھا جائے گا۔ سنا کھا جائے گا۔

[شیر خاں بیچینی سے ادھر ادھر ٹہلتا ہے۔ نظام اور برہمادتیہ دونوں اس کی اور دیکھتے ہیں۔]

لگھو یونیکا

مانسک ادویگ = دلی بےچینی۔

छटवाँ-दृश्य

स्थान—सहसराम में निज़ाम का कमरा.

समय—संध्या.

[दृश्य खुलते समय कमरे में कोई नहीं है. कुछ ही देर में निज़ाम और रहमान का प्रवेश. रहमान के सर और कन्धों पर निज़ाम का सामान है. निज़ाम का मुख अत्यन्त म्लीन है. निज़ाम इधर उधर घूम कर कमरे के सामान को व्यवस्थित सा करते हुए गाने लगता है. रहमान अपना बोझ उतार कर सामान जमाने लगता है.]

गीत

ए धन पर मिटने वालो,
दौलत को पूजने वालो.
यह धन दौलत की पूजा ही हमें नफ़रत सिखाती है,
गला भाई से भाई का यह दौलत ही कटाती है.
नशा दौलत का कर देता है अंधा आंख वालों को
इसी की चाह हर इन्सान को हैवां बनाती है.
ए धन पर मिटने वालो,
दौलत को पूजने वालो.
दुनिया में ज़रा देखो तो,
एक बार मुहब्बत करके.
मुहब्बत दूर ले जाती है नफ़रत और अदावत से,
मुहब्बत को नहीं कुछ वासता दुनिया की दौलत से.
मुहब्बत तो बुराई से हमें बचना सिखाती है,

استھان — سہسرام میں نظام کا کمرہ۔

سمے — سندھیا۔

[درشیہ کھلتے سمے کمرے میں کوئی نہیں۔ کچھ ہی دیر میں نظام اور رحمان کا پرویش۔ رحمان کے سر اور کندھوں پر نظام کا سامان ہے۔ نظام کا مُکھ اتینت ملین ہے۔ نظام اِدھر اُدھر گھوم کر کمرے کے سامان کو ویوستھت سا کرتے ہوئے گانے لگتا ہے۔ رحمان اپنا بوجھ اُتار کر سامان جمانے لگتا ہے۔]

گیت

اے دھن پر مٹنے والو،
دولت کو پوجنے والو۔
یہ دھن دولت کی پوجا ہی ہمیں نفرت سکھاتی ہے،
گلا بھائی سے بھائی کا یہ دولت ہی کٹاتی ہے۔
نشہ دولت کا کر دیتا ہے اندھا آنکھ والوں کو،
اسی کی چاہ ہر انسان کو حیواں بناتی ہے۔
اے دھن پر مٹنے والو،
دولت کو پوجنے والو۔
دُنیا میں ذرا دیکھو تو،
اِک بار محبت کرکے۔
محبت دور لے جاتی ہے نفرت اور عداوت سے،
محبت کو نہیں کچھ واسطہ دنیا کی دولت سے۔
محبت تو برائی سے ہمیں بچنا سکھاتی ہے،

मुहब्बत तो ख़ुदा के भी हमें नज़दीक लाती है.

दुनिया में ज़रा देखो तो,

एक बार मुहब्बत करके,

ए धन पर........................

दौलत को........................

[गाना ख़तम करके रहमान को देखता है.]

निज़ाम—रहमान !

[रहमान, जो अपनी कमर सीधी कर सुस्ता सा रहा है, नहीं सुनता.]

निज़ाम—(ज़ोर से) रहमान !

[रहमान सुनकर निज़ाम के निकट आता है.]

निज़ाम—रहमान, इस मरतबा भी बिना लड़ाई के ही हमें अपनी जागीर वापस मिल गई.

रहमान—तो मैं क्या करूँ ?

निज़ाम—तुमसे कुछ करने के लिये थोड़े ही कह रहा हूँ, लेकिन न मुझे पहली मरतबा सुलेमान और अहमद के भागने से ख़ुशी हुई थी, और न इस दफ़ा हुई.

रहमान—बड़ी हमदर्दी है, तो, छोटे मियां, जाकर उन्हें वापस बुला लाऊँ ?

निज़ाम—(और अधिक उदासी से) काश ! यह मेरे अख़्तियार में होता या भाई जान के पास शायर का दिल होता.........

रहमान—(उंगली उठाकर, जल्दी से) देखो, छोटे मियां,... ..... देखो, छोटे मियां.........

محبت تو خدا کے بھی ہمیں نزدیک لاتی ہے۔

دنیا میں ذرا دیکھو تو،

اک بار محبت کرکے۔

اے دھن پر..........

دولت کو..........

[گانا ختم کرکے رحمان کو دیکھتا ہے۔]

نظام — رحمان!

[رحمان، جو اپنی کمر سیدھی کر کے ستا سا رہا ہے، نہیں سنتا۔]

نظام — (زور سے) رحمان!

[رحمان سن کر نظام کے نکٹ آتا ہے۔]

نظام — رحمان، اس مرتبہ بھی بنا لڑائی کے ہی ہمیں اپنی جاگیر واپس مل گئی۔

رحمان — تو میں کیا کروں؟

نظام — تجھ سے کچھ کرنے کے لئے تھوڑے ہی کہہ رہا ہوں، لیکن نہ مجھے پہلی مرتبہ سلیمان اور احمد کے بھاگنے سے خوشی ہوئی تھی، اور نہ اس دفعہ ہوئی۔

رحمان — بڑی ہمدردی ہے، تو، چھوٹے میاں، جاکر انھیں واپس بلا لاؤں؟

نظام — (اور اِدھک اُداسی سے) کاش! یہ میرے اختیار میں ہوتا یا بھائی جان کے پاس شاعر کا دل ہوتا.......

رحمان — (انگلی اٹھاکر، جلدی سے) دیکھو، چھوٹے میاں ...... دیکھو چھوٹے میاں. ..

निज़ाम—(व्यंगपूर्ण हँसी से) अपनों से दुश्मनी और दुश्मनों से इमदाद, यह मेरी समझ में ही नहीं आता.

रहमान—क्या.........क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—कैसी.........कैसी है यह दुनिया.........

रहमान—गइया ?.........

निज़ाम—(रहमान की ओर देखकर, उसे व्यंगसा पा कुछ देर रुक कर, मुस्कराने का प्रयत्न करते हुए) हां.........हां, गइया ! मुझे आज दूध नहीं पिलायेगा ?

रहमान—(खुश होकर) गइया अब लगेगी. छोटे मियां, देखता हूँ और जल्दी दूध लाता हूँ, खाने में तो अभी बहुत देर होगी. (जल्दी से जाता है)

[निज़ाम जिस ओर रहमान गया है उसी ओर देखते हुए लम्बी सांस लेकर बैठता है. कुछ देर निस्तब्धता. अब निज़ाम सितार को सन्दूक़ से निकाल उसे बजाते हुए गाना आरम्भ करता है.]

गाना

क्या पता तुमको मुझे भूलने वाले ए दोस्त,
मुझको तड़पाती है किस दरजा मुहब्बत तेरी.
कितनी मुद्दत हुई सहते हुए ग़म के सदमे,
कितने दिन हो गये देखे हुए सूरत तेरी.
हद से बढ़ता है जुनूँ जब तेरे दीवाने का,
तेरी तस्वीर से करता है शिकायत तेरी.

लघु—यवनिका

व्यंगपूर्ण = तंज़िया.

نظام — (وینگ پورن ہنسی سے) اپنوں سے دشمنی اور دشمنوں سے امداد، یہ میری سمجھ میں ہی نہیں آتا۔

رحمان — کیا..... کیا کہا تم نے ؟

نظام — کیسی..... کیسی ہے یہ دنیا......

رحمان — گئیا ؟......

نظام — (رحمان کی اور دیکھکر، وینگ سا پا کچھ دیر رک کر، مسکرانے کا پریتن کرتے ہوئے) ہاں...... ہاں، گئیا! مجھے آج دودھ نہیں پلائے گا ؟

رحمان — (خوش ہو کر) گئیا اب لگے گی. چھوٹے میاں، دیکھتا ہوں اور جلدی دودھ لاتا ہوں، کھانے میں تو ابھی بہت دیر ہو گی. (جلدی سے جاتا ہے)

[نظام جس اور رحمان گیا ہے اُسی اور دیکھتے ہوئے لمبی سانس لے کر بیٹھتا ہے. کچھ دیر نیستبدھتا. اب نظام ستار کو صندوق سے نکال اُسے بجاتے ہوئے گانا آرمبھ کرتا ہے.]

گانا

کیا پتہ تجھ کو مجھے بھولنے والے اے دوست،
مجھ کو تڑپاتی ہے کس درجہ محبت تیری.
کتنی مدت ہوئی سہتے ہوئے غم کے صدمے،
کتنے دن ہو گئے دیکھے ہوئے صورت تیری.
حد سے بڑھتا ہے جنوں جب ترے دیوانے کا،
تیری تصویر سے کرتا ہے شکایت تیری.

لگھو یونیکا

وینگ پورن = طنزیہ.

सातवाँ—दृश्य

स्थान—सहसराम में शेरखाँ का कमरा.

समय.—प्रातः काल.

[शेरखाँ अत्यधिक उद्विग्नता से इधर उधर टहल रहा है. उसका हुक़्क़ा भरा हुआ रक्खा है. पर उसकी ओर भी उसका ध्यान नहीं है. बार बार वह द्वार की ओर देखता है, जिससे जान पड़ता है कि उत्कंठा से किसी की प्रतीक्षा कर रहा है. कुछ ही देर में ब्रह्मादित्यका प्रवेश. ब्रह्मादित्य को देखकर शेरखाँ खड़ा हो जाता है.]

शेरखाँ—जितनी बेसब्री से मैं आज तुम्हारा रास्ता देख रहा था, उतनी बेसब्री से शायद मैंने ज़िन्दगी में कभी किसी का भी रास्ता नहीं देखा.

ब्रह्मादित्य—ज्योंही आपका दरबान पहुंचा, त्योंही मैं. आगया.

शेरखाँ—हाँ, लेकिन दरबान के जाने और तुम्हारे आने तक का वक़्त भी मैं बड़ी मुशकिल से गुज़ार सका.(गद्दी पर बैठते हुए) बैठो, तुमसे आज मुझे बहुत जरूरी बातें करनी हैं.

ब्रह्मादित्य—(बैठते हुए) सो तो आपकी मुद्रा से ही जान पड़ता है.

शेरखाँ—पंडित, मुग़लों की मदद से अपनी जागीर वापस

उद्विग्नता= बेचैनी. मुद्रा=चेहरा

ساتواں درشیہ

ستھان — سہسرام میں شیر خاں کا کمرہ۔

سمے — پراتہ کال۔

[شیر خاں اتیہ دھک اودوگنتا سے اِدھر اُدھر ٹہل رہا ہے۔ اُس کا حقّہ بھرا ہوا رکھا ہے۔ پر اُس کی اور بھی اُس کا دھیان نہیں ہے۔ بار بار وہ دُوار کی اور دیکھتا ہے، جس سے جان پڑتا ہے کہ اُتکنٹھا سے کسی کی پرتکشا کر رہا ہے۔ کچھ ہی دیر میں برہمادتیہ کا پرویش۔ برہمادتیہ کو دیکھکر شیر خاں کھڑا ہو جاتا ہے۔]

شیر خاں — جتنی بے صبری سے میں آج تمہارا راستہ دیکھ رہا تھا، اُتنی بے صبری سے شاید میں نے زندگی میں کبھی کسی کا بھی راستہ نہیں دیکھا۔

برہمادتیہ — جوں ہی آپ کا دربان پہنچا، تیوں ہی میں آگیا۔

شیر خاں — ہاں، لیکن دربان کے جانے اور تمہارے آنے تک کا وقت بھی میں بڑی مشکل سے گزار سکا۔ (گدّی پر بیٹھتے ہوئے) بیٹھو، تم سے آج مجھے بہت ضروری باتیں کرنی ہیں۔

برہمادتیہ — (بیٹھتے ہوئے) سو تو آپ کی مُدرا سے ہی جان پڑتا ہے۔

شیر خاں — پنڈت، مغلوں کی مدد سے اپنی جاگیر واپس

اُدوِگنتا = بے چینی۔ مُدرا = چہرہ

पाकर मुझे जितना अफ़सोस हो रहा है, उतना आज तक कभी न हुआ था.

ब्रह्मादित्य—यह होना अस्वाभाविक नहीं है. और जिस प्रजा का आपने इतना भला किया था, उसी प्रजा के मुख से होने वाली अपनी बुराइयों के सम्वाद सुन सुन कर आपका दुख और बढ़ रहा होगा.

शेरख़ाँ—दर असल इन ख़बरों ने ही मेरी आँखें खोली हैं. शेरख़ाँ इतना ख़ुद गरज़ हो गया है कि उसने मुल्क के दुशमनों की मदद से अपने भाइयों को भगवाया. वह पठान नहीं अब मुग़ल है मुग़ल. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) यह और इसी तरह के दूसरे अलफ़ाज़ की ठोकरों से मेरी नज़र के सामने का पर्दा टूक टूक होकर फटा है. पंडित, अब मैं इस जागीर को एक पल भी नहीं रख सकता. मेरा सहसराम में रहना ग़ैर मुमकिन है.

ब्रह्मादित्य—तो इस जागीर का क्या कीजियेगा ?

शेरख़ाँ—मैं सुलेमान और अहमद को ख़त लिखना चाहता हूँ कि वह अब अपनी वालिदा के वापस आ जायँ. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) इस गुनाह के कफ़्फ़ारा या प्रायश्चित के लिये मैं तमाम जागीर सुलेमान और अहमद को देकर निज़ाम के साथ हमेशा के लिये सहसराम छोड़ देना चाहता हूँ.

[ब्रह्मादित्य सर झुका कर सोचने लगता है. शेरख़ाँ ब्रह्मादित्य की ओर देखता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

शेरख़ाँ—तुम चुप क्यों हो ? अपनी राय क्यों नहीं दे रहे हो ?

پاکر مجھے جتنا افسوس ہو رہا ہے، اُتنا آج تک کبھی نہ ہوا تھا۔

برہمادتیہ — یہ ہونا اسوابھاوک نہیں ہے۔ اور جس پرجا کا آپ نے اتنا بھلا کیا تھا، اُسی پرجا کے مُکھ سے ہونے والی اپنی بُرائیوں کے سمواد سُن سُن کر آپ کا دُکھ اور بڑھ رہا ہوگا۔

شیرخاں — دراصل ان خبروں نے ہی میری آنکھیں کھولی ہیں۔ شیرخاں اتنا خود غرض ہوگیا ہے کہ اُس نے مُلک کے دُشمنوں کی مدد سے اپنے بھائیوں کو بھگوایا۔ وہ پٹھان نہیں اب مغل ہے مغل۔ (حقّہ گڑگڑا کر دُھواں چھوڑتے ہوئے) یہ اور اسی طرح کے دوسرے الفاظ کی ٹھوکروں سے میری نظر کے سامنے کا پردہ ٹوک ٹوک ہوکر پھٹا ہے۔ پنڈت، اب میں اس جاگیر کو ایک پل بھی نہیں رکھ سکتا۔ میرا سہسرام میں رہنا غیر ممکن ہے۔

برہمادتیہ — تو اس جاگیر کا کیا کیجئے گا؟

شیرخاں — میں سلیمان اور احمد کو خط لکھنا چاہتا ہوں کہ وہ اب معہ اپنی والدہ کے واپس آجائیں۔ (حقّہ گڑگڑا کر دُھواں چھوڑتے ہوئے) اس گناہ کے کفارہ یا پرائشچت کے لئے میں تمام جاگیر سلیمان اور احمد کو دے کر نظام کے ساتھ ہمیشہ کے لئے سہسرام چھوڑ دینا چاہتا ہوں۔

[برہمادتیہ سر جھکا کر سوچنے لگتا ہے۔ شیرخاں برہمادتیہ کی اور دیکھتا ہے۔ کچھ دیر نِستبدھتا۔]

شیرخاں — تم چُپ کیوں ہو؟ اپنی رائے کیوں نہیں دے رہے ہو؟

ब्रह्मादित्य—(सर उठाते हुए) इस सम्बन्ध में मुझे कुछ भी कहना बहुत ही कठिन जान पड़ता है.

शेरख़ाँ—(कुछ आश्चर्य से) मुझसे भी कहना ?

ब्रह्मादित्य—हाँ, आपसे भी कहना.

शेरख़ाँ—(और भी आश्चार्य से) पंडित, तुम तो आज अजीब बात कर रहे हो.

ब्रह्मादित्य—देखिये, इस प्रकार के चालू प्रश्न बड़े नाज़ुक हुआ करते हैं. जब आपके पिता का देहान्त हुआ, उस समय भी मैं नहीं चाहता था कि आप सहसराम लौटें.

शेरख़ाँ—(सोचते हुए) हाँ, तुम तो नहीं चाहते थे.

ब्रह्मादित्य—पर जब मैंने देखा कि निज़ाम और आप बिना लौटे मानने वाले नहीं, तब, जागीर आपकी है, इस शाही फ़र्मान के बिना मैंने आप लोगों का लौटना आपकी कुशलता की दृष्टि से उचित नहीं समझा.

शेरख़ाँ—बहुत दुरन्देशी की समझ थी.

ब्रह्मादित्य—इस बार जब आपने कहा कि आप बाबर की सहायता से अपनी जागीर लौटा लेंगे, तब भी मैं उसके पक्ष में न होने के कारण चुप रहा,

शेरख़ाँ—(विचारते हुए) हां, उस वक्त तुम कुछ नहीं बोले थे.

ब्रह्मादित्य—आपने अपने जीवन के सम्मुख जिन आदर्शों और उद्देशों को रखा है, उनके सामने यह जागीर अत्यन्त तुच्छ वस्तु है, किन्तु प्राचीन पुश्तैनी सम्पत्ति होने के कारण बहुत बड़ी चीज़ भी. जिनकी सहायता से आपने इसे फिर प्राप्त किया है वे

برہمادتیہ — (سر اُٹھاتے ہوئے) اِس سمبندھ میں مجھے کچھ بھی کہنا بہت ہی کٹھن جان پڑتا ہے۔

شیرخاں — (کچھ آشچریہ سے) مجھ سے بھی کہنا ؟

برہمادتیہ — ہاں، آپ سے بھی کہنا۔

شیرخاں — (اور بھی آشچریہ سے) پنڈت، تم تو آج عجیب بات کر رہے ہو۔

برہمادتیہ — دیکھیے، اِس پرکار کے چالو پرشن بڑے نازک ہوا کرتے ہیں۔ جب آپ کے پتا کا دیہانت ہوا، اُس سمے بھی میں نہیں چاہتا تھا کہ آپ سہسرام لوٹیں۔

شیرخاں — (سوچتے ہوئے) ہاں، تم تو نہیں چاہتے تھے۔

برہمادتیہ — پر جب میں نے دیکھا کہ نظام اور آپ بنا لوٹے ماننے والے نہیں، تب، جاگیر آپ کی ہے، اِس شاہی فرمان کے بنا میں نے آپ لوگوں کا لوٹنا آپ کی کشلتا کی درشٹی سے اُچت نہیں سمجھا۔

شیرخاں — بہت دوراندیشی کی سمجھ تھی۔

برہمادتیہ — اِس بار جب آپ نے کہا کہ آپ بابر کی سہائتا سے اپنی جاگیر لوٹا لیں گے، تب بھی میں اُس کے پکش میں نہ ہونے کے کارن چپ رہا۔

شیرخاں — (وچارتے ہوئے) ہاں، اُس وقت تم کچھ نہیں بولے تھے۔

برہمادتیہ — آپ نے اپنے جیون کے سمکھ جن آدرشوں اور اُدیشوں کو رکھا ہے، اُن کے سامنے یہ جاگیر اتینت تچھ وستو ہے، کنتو پراچین پشتینی سمپتی ہونے کے کارن بہت بڑی چیز بھی۔ جن کی سہائتا سے آپ نے اِسے پھر پراپت کیا ہے وے

आपके शत्रु हैं, देश के भी शत्रु हैं. इसलिये आज इसके रखने में आपको बिराग हो रहा है, परन्तु सम्भव है फिर से राग की उत्पत्ति हो. इसीलिये मैं चुप था और अभी भी इस विषय में निशंक हो कर आपको कोई सम्मति नहीं दे सकता.

शेरखाँ—(गम्भीरता से सोचते हुए) अच्छा !

ब्रह्मादित्य—किन्तु आप जो भी निर्णय करेंगे, उस निर्णय को कार्य रूप में परिणत करने के लिये यदि मेरी किसी सहायता की आवश्यकता होगी, तो वह देने को मैं तैयार हूँ.

[शेरखाँ कुछ न कह सर झुकाकर विचार मग्न हो जाता है ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता]

शेरखाँ—(कुछ देर पश्चात्, सर उठा कर) पंडित अपनी कोई राय न देते हुए भी तुमने मेरे दिल का पर्दा हटा दिया. रिआया ने गालियाँ देकर मेरी नजर के सामने के पर्दे को फाड़ा, लेकिन तुमने कुछ न कहते हुए भी, सब कुछ कह कर, मेरे दिल का पर्दा टुकड़े टुकड़े कर दिया. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) छोटी सी होने पर भी पुश्तैनी चीज इतनी बड़ी होती है, इसे मैं आज महसूस कर रहा हूँ. अरे ! मैंने उसे वापस लेने के लिये, जिनसे मैं दिलो जान से नफ़रत करता हूँ, उन दुश्मनों तक की मदद ली. जरा सी चीज के लालच में रिआया की की हुई बड़ी बड़ी ख़िदमत को मिट्टी में मिला दिया. मैं इसे हमेशा के लिये छोड़ देना चाहता हूँ, नहीं तो जिन्दगी के तमाम मक़सद ही बरबाद हो सकते हैं. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) तुम्हें मेरे ख़त के साथ जाना होगा और जिस तरह

निर्णय=फ़ैसला. परिणत करने=अमल में लाने

آپ کے شترو ہیں، دیش کے بھی شترو ہیں. اس لئے آج اس کے رکھنے میں آپ کو بیراگ ہو رہا ہے، پرنتو سمبھو ہے پھر سے راگ کی اُتپتی ہو. اِسلئے میں چپ تھا اور ابھی بھی اس وِشے میں نِشنک ہو کر آپ کو کوئی سمّتی نہیں دے سکتا.

شیرخاں — (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) اچھا!

برہمادتیہ — کنتو آپ جو بھی نرنیے کریں گے، اُس نرنیے کو کاریہ روپ میں پرینت کرنے کے لئے یدی میری کسی سہائتا کی آوشیکتا ہوگی، تو وہ دینے کو میں تیار ہوں.

[شیرخاں کچھ نہ کہہ کر سر جھکا کر وچار مگن ہو جاتا ہے. برہمادتیہ اُس کی اور دیکھتا رہتا ہے. کچھ دیر نِستبدھتا]

شیرخاں — (کچھ دیر پشچات، سر اُٹھا کر) پنڈت اپنی کوئی رائے نہ دیتے ہوئے بھی تم نے میرے دل کا پردہ ہٹا دیا. رعایا نے گالیاں دے کر میری نظر کے سامنے کے پردے کو پھاڑا، لیکن تم نے کچھ نہ کہتے ہوئے بھی، سب کچھ کہہ کر، میرے دل کا پردہ ٹکڑے ٹکڑے کر دیا. (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) چھوٹی سی ہونے پر بھی پشتینی چیز اتنی بڑی ہوتی ہے، اسے میں آج محسوس کر رہا ہوں. ارے! میں نے اُسے واپس لینے کے لئے، جن سے میں دل و جان سے نفرت کرتا ہوں، اُن دشمنوں تک کی مدد لی. ذرا سی چیز کے لالچ میں رعایا کی کی ہوئی بڑی بڑی خدمت کو مٹی میں ملا دیا. میں اسے ہمیشہ کے لئے چھوڑ دینا چاہتا ہوں، نہیں تو زندگی کے تمام مقصد ہی برباد ہو سکتے ہیں. (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) تمہیں میرے خط کے ساتھ جانا ہوگا اور جس طرح

نرنیے = فیصلہ. پرینت کرنے = عمل میں لانے.

भी हो भागे हुए सुलेमान और अहमद को तलाश कर लाना होगा. मैं खानदानी झगड़ों को खतम कर देना चाहता हूँ, बग़ैर इस यक़ीन के वह कभी नहीं लौटे और तुम्हारे सिवा यह यक़ीन उन्हें कोई नहीं करा सकता. जब तक खानदानी झगड़ों का हमेशा के लिये खातमा न हो जायगा तब तक हम बड़े बड़े काम हरगिज़ न कर सकेंगे.

ब्रह्मादित्य—(गम्भीरता से सोचते हुए) मैं जाने को तैयार हूँ.

[शेरखाँ प्रसन्नता से उठ खड़ा होता है. ब्रह्मादित्य भी खड़ा हो जाता है]

लघु-यवनिका

आठवाँ-दृश्य

स्थान—सहसराम में निज़ाम का कमरा.

समय—रात्रि.

[निज़ाम अपना सामान बन्द करते हुए गा रहा है. उसी के निकट रहमान भी उसका सामान बाँध रहा है.]

गीत

अब दूर वतन से जाना है.
क़िस्मत क्या रंग दिखाती है, परदेश हमें ले जाती है.
अब दूर वतन से जाना है.
दिन अपने हैं यह रात नहीं, यह अपने बस की बात नहीं.
अब दूर वतन से जाना है.

निज़ाम—(गाना पूर्ण होने पर) रहमान !

بھی ہو بھاگے ہوئے سلیمان اور احمد کو تلاش کر لانا ہوگا۔ میں خاندانی جھگڑوں کو ختم کر دینا چاہتا ہوں، بغیر اس یقین کے وہ کبھی نہیں لوٹیں گے اور تمہارے سوا یہ یقین انھیں کوئی نہیں کرا سکتا۔ جب تک خاندانی جھگڑوں کا ہمیشہ کے لئے خاتمہ نہ ہو جائے گا تب تک ہم بڑے بڑے کام ہرگز نہ کر سکیں گے۔

برہمادتیہ — (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) میں جانے کو تیار ہوں۔

[شیرخاں پرستا سے اٹھ کھڑا ہوتا ہے۔ برہمادتیہ بھی کھڑا ہو جاتا ہے]

آٹھواں درشیہ

ستھان — سہسرام میں نظام کا کمرہ۔

سمے — راتری۔

[نظام اپنا سامان بند کرتے ہوئے گا رہا ہے۔ اسی کے نکٹ رحمان بھی اس کا سامان باندھ رہا ہے۔]

گیت

اب دور وطن سے جانا ہے۔
قسمت کیا رنگ دکھاتی ہے، پردیس ہمیں لے جاتی ہے۔
اب دور وطن سے جانا ہے۔
دن اپنے ہیں یہ رات نہیں، یہ اپنے بس کی بات نہیں۔
اب دور وطن سے جانا ہے۔

نظام — (گانا پورن ہونے پر) رحمان !

[रहमान नहीं सुनता, अपने काम में दत्तचित्त रहता है.]

निज़ाम—(जोर से) सुनता है रहमान !

रहमान—क्या.........क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—(सामान बाँधते हुए) मैं कहता हूँ इस मरतबा मुझे भाई साहब की कारवाई समझ में आती है. मुग़लों की मदद से भाइयों को निकाल कर जागीर हासिल करना मेरी समझ में न आया था, लेकिन भाइयों को वापस बुलाकर जागीर के कुल हक़ूक़ उन्हें दे देना मेरी समझ में आता है.

रहमान—हूँ !

निज़ाम—मैं.........मैं भी सुलेमाम और अहमद से लड़ा था, पर भाई जान के डर से, और इसीलिये हार भी गया. जो अपने हैं वह मुझे अपने लगते हैं रहमान.........

रहमान—अपने ?

निज़ाम—हाँ, अपने, पर दूसरों को अपना कैसे समझूँ, यह मेरी समझ में ही नहीं आता. इसीलिये भाई साहब की रिआया की यह ख़िदमत मैं कभी भी न समझ सका, और रिआया ने भी उन्हें क्या समझा ?

रहमान—हूँ !

निज़ाम—जिस रिआया के लिये उन्होंने सब कुछ किया और उन्हीं के क़दम बर क़दम पैरवी करने की मैंने भी कोशिश की, उसी का रुख़ मुग़लों से मदद लेते ही कैसा बदल गया.

रहमान—बदल गया ?

निज़ाम—एक दम. मुहब्बत अपनों से हो सकती है.

दत्तचित्त=महो.

६

[رحمان نہیں سنتا، اپنے کام میں دتّ چت رہتا ہے.]

نظام — (زور سے) سُنتا ہے رحمان!

رحمان — کیا...... کیا کہا تم نے ؟

نظام — (سامان باندھتے ہوئے) میں کہتا ہوں اس مرتبہ مجھے بھائی صاحب کی کارروائی سمجھ میں آتی ہے. مغلوں کی مدد سے بھائیوں کو نکال کر جاگیر حاصل کرنا میری سمجھ میں نہ آیا تھا، لیکن بھائیوں کو واپس بُلا کر جاگیر کے کُل حقوق اُنھیں دیدینا میری سمجھ میں آتا ہے.

رحمان — ہوں!

نظام — میں...... میں بھی سلیمان اور احمد سے لڑا تھا، پر بھائی جان کے ڈر سے، اور اسی لئے ہار بھی گیا. جو اپنے ہیں وہ مجھے اپنے لگتے ہیں رحمان......

رحمان — اپنے ؟

نظام — ہاں، اپنے، پر دوسروں کو اپنا کیسے سمجھوں، یہ میری سمجھ میں ہی نہیں آتا. اسی لئے بھائی صاحب کی رعایا کی یہ خدمت میں کبھی نہ سمجھ سکا، اور رعایا نے بھی اُنھیں کیا سمجھا ؟

رحمان — ہوں!

نظام — جس رعایا کے لئے اُنھوں نے سب کچھ کیا اور اُنھیں کے قدم بر قدم پیروی کرنے کی میں نے بھی کوشش کی، اُسی کا رُخ مغلوں سے مدد لیتے ہی کیسا بدل گیا.

رحمان — بدل گیا ؟

نظام — ایک دم. محبت اپنوں سے ہو سکتی ہے.

دتّ چت = محو

रहमान—अपनों से ?

निज़ाम—हाँ, अपनों से, या........या फिर (धीरे से) बानू से.

रहमान—क्या........क्या कहा तुमने ?

निज़ाम—(हँसते हुए) कुछ नहीं. (बनावटी गम्भीरता से) यही ....यही, रहमान, कि यह सैकड़ों, हज़ारों, लाखों की मुहब्बत मेरी समझ के बाहर की चीज़ है. भाई जान इस मुहब्बत को पाक समझते हैं. और जैसी मुहब्बत मेरे दिल में है, उसको नापाक ......

रहमान—(सर हिलाते हुए चिढ़कर) तुम्हारी मुहब्बत को ?

निज़ाम—हाँ, मेरी मुहब्बत को पर जिसको वह नापाक समझते हैं वही अब उनकी निगाह में भी झलकने लगी है. एक हिन्दू शायर ने सच कहा है—"ये न छिपाये छिपै सजनी, इक नेह के नैन औ सुगन्ध की चोरी" जिस तरह वह सुलेमान और अहमद से मिले, नई वालिदा से मिले, उस तरह उन्हें इसके पहले मैंने कभी किसी से मिलते न देखा था. और वह मुहब्बत झलक रही थी उनकी नज़रों से. (चिल्लाकर) कुछ समझा भी तू ?

रहमान—हाँ, हाँ, बहुत ....बहुत सा सामान तो बँध गया, थोड़ा ही बाक़ी है.

निज़ाम—(उँगली से सर ठोकते हुए) हाय तक़दीर ! गँवारी मसला मशहूर है—"भैंस के आगे बीन बाजे, भैंस खड़ी पगुराय"

[शेरख़ाँ का प्रवेश. शेरख़ाँ को देखते ही निज़ाम और रहमान खड़े हो जाते हैं.]

शेरख़ाँ—(आगे बढ़कर. निज़ाम के सामान को देखते हुए) असबाब बंध रहा है, निज़ाम ?

رحمان — اپنوں سے ؟

نظام — ہاں، اپنوں سے، یا ...... یا پھر (دھیرے سے) بانو سے

رحمان — کیا ...... کیا کہا تم نے ؟

نظام — (ہنستے ہوئے) کچھ نہیں۔ (بناوٹی گمبھیرتا سے) یہی ...... یہی، رحمان، کہ یہ سیکڑوں، ہزاروں، لاکھوں کی محبت میری سمجھ کے باہر کی چیز ہے۔ بھائی جان اِس محبت کو پاک سمجھتے ہیں۔ اور جیسی محبت میرے دل میں ہے، اُس کو ناپاک ......

رحمان — (سر ہلاتے ہوئے چڑھ کر) تمہاری محبت کو ؟

نظام — ہاں، میری محبت کو پر جس کو وہ ناپاک سمجھتے ہیں وہی اب اُن کی نگاہ میں بھی جھلکنے لگی ہے۔ ایک ہندو شاعر نے سچ کہا ہے — "یہ نہ چھپائے چھپے سجنی، اِک نیہہ کے نین اَو سوگندھ کی چوری" جس طرح وہ سلیمان اور احمد سے ملے، نئی والدہ سے ملے، اُس طرح انھیں اِس کے پہلے میں نے کبھی کسی سے ملتے نہ دیکھا تھا۔ اور وہ محبت جھلک رہی تھی اُن کی نظروں سے۔ (چلّا کر) کچھ سمجھا بھی تو ؟

رحمان — ہاں، ہاں، بہت ...... بہت سا سامان تو بندھ گیا، تھوڑا ہی باقی ہے۔

نظام — (انگلی سے سر ٹھوکتے ہوئے) ہائے تقدیر! گنواری مثل مشہور ہے — "بھینس کے آگے بین باجے، بھینس کھڑی پگورائے"

[شیر خاں کا پرویش۔ شیر خاں کو دیکھتے ہی نظام اور رحمان کھڑے ہو جاتے ہیں۔]

شیر خاں — (آگے بڑھ کر، نظام کے سامان کو دیکھتے ہوئے) اسباب بندھ رہا ہے، نظام ؟

निज़ाम—हाँ, कल सुबह ही चलना है न, भाई जान ?

शेरख़ाँ—यह तो तय है, लेकिन, निज़ाम, हम लोग कोई असबाब तो ले चलने वाले हैं नहीं. इस जागीर से हम एक कौड़ी भी न लेंगे और जितने कपड़ों से बदन ढँक सकता है उतने ही कपड़े पहन कर यहाँ से चल देंगे.

[निज़ाम का मुख चिन्ता ग्रस्त होकर सर झुक जाता है. कुछ देर निस्तब्धता]

निज़ाम—(धीरे धीरे सर उठा कर कुछ सोचते हुए) जैसा आपका हुक्म, ...लेकिन ......लेकिन सिर्फ़ एक चीज़ ले चलने की मैं आपसे इजाज़त चाहूँगा.

शेरख़ाँ—क्या ?

निज़ाम—मेरी बनाई हुई कुछ तस्वीरें. मुझे मालोज़र कुछ नहीं चाहिये, लेकिन वक़्त वक़्त पर जिन तस्वीरों में मैंने अपने तमाम दिली तज्बात भरे हैं, उन........उनके बिना तो मैं ज़िन्दा नहीं रह सकता.

शेरख़ाँ—(विचारते हुए) हाँ, उन्हें तुम ले चल सकते हो, क्यों कि वह किसी के काम की नहीं.

[निज़ाम का मुख खिल सा उठता है. शेरख़ाँ उसकी ओर देखता रहता है.]

यवनिका

(बाक़ी अगले परचे में)

نظام — ہاں، کل صبح ہی چلنا ہے نہ، بھائی جان ؟

شیرخاں — یہ تو طے ہے، لیکن، نظام، ہم لوگ کوئی اسباب تو لے چلنے والے ہیں نہیں۔ اس جاگیر سے ہم ایک کوڑی بھی نہ لیں گے اور جتنے کپڑوں سے بدن ڈھک سکتا ہے اُتنے ہی کپڑے پہن کر یہاں سے چل دیں گے۔

[نظام کا مکھ چنتا گرست ہو کر سر جھک جاتا ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا]

نظام — (دھیرے دھیرے سر اُٹھا کر کچھ سوچتے ہوئے) جیسا آپ کا حکم،..... لیکن..... لیکن صرف ایک چیز لے چلنے کی میں آپ سے اجازت چاہوں گا۔

شیرخاں — کیا ؟

نظام — میری بنائی ہوئی کچھ تصویریں، مجھے مال و زر کچھ نہیں چاہیئے، لیکن وقت وقت پر جن تصویروں میں میں نے اپنے تمام دلی جذبات بھرے ہیں، اُن...... اُن کے بنا تو میں زندہ نہیں رہ سکتا۔

شیرخاں — (وچارتے ہوئے) ہاں، انھیں تم لے چل سکتے ہو، کیونکہ وہ کسی کے کام کی نہیں۔

[نظام کا مکھ کھل سا اُٹھتا ہے۔ شیرخاں اُس کی اور دیکھتا رہتا ہے۔]

یونیکا

(باقی اگلے پرچے میں)

यह हिन्दुस्तानी है

(माननीय श्री सम्पूर्णानन्द)

हम लोग जो हिन्दी को राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन देखना चाहते रहे हैं अब तक यही मानते आये हैं कि हिन्दुस्तानी उर्दू से प्रायः अभिन्न है. फ़ारसी अरबी के कुछ शब्दों की जगह संस्कृत के तद्भव या देशज शब्दों को दे देने तथा विदेशी शब्दों के लिए देशी व्याकरण का प्रयोग करने से—उदाहरण के लिए सुलतान का बहुवचन सलातीन की जगह सुलतानों मान लेने से—उर्दू हिन्दुस्तानी बन जाती है. ऐसे लोग जो उर्दू के हिमायती हैं, देख रहे हैं कि आज के राजनीतिक वातावरण में उर्दू पक्ष की विजय नहीं हो सकती. इसलिए वह हिन्दुस्तानी का समर्थन करते हैं. उनका यह विश्वास है कि यदि भाषा का नाम हिन्दुस्तानी रह जाय तो वह उसके उर्दू स्वरूप की रक्षा कर ले जायेंगे.

उर्दू पंथियों के सिवा हिन्दुस्तानी के समर्थकों में एक ऐसा दल है जो महात्मा जी से सम्मत इस परिभाषा को स्वीकार करता है कि हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो उत्तर भारत में प्रायः सर्वत्र समझी और बोली जाती है. उर्दू वालों के अनुसार यह सौभाग्य उर्दू को प्राप्त है, हिन्दी वाले कहते हैं कि हिन्दी ही यह लोकवाणी है. परन्तु यदि इसका नाम हिन्दुस्तानी मान भी लिया जाय तो एक आक्षेप रहता है. इसमें हाट, बाजार की बोली होने की तो

یہ ہندستانی ہے

(مانیہ شری سمپورنا نند)

ہم لوگ جو ہندی کو راشٹر بھاشا کے پد پر آسین دیکھنا چاہتے رہے ہیں اب تک یہی مانتے آئے ہیں کہ ہندستانی اردو سے پرایہ ابھن ہے. فارسی عربی کے کچھ شبدوں کی جگہ سنسکرت کے تدبھو یا دیشج شبدوں کو دیدینے یا ودیشی شبدوں کیلئے دیشی ویاکرن کا پریوگ کرنے سے — اُداہرن کیلیے سُلطان کا بہو بچن سلاطین کی جگہ سلطانوں مان لینے سے — اُردو ہندستانی بن جاتی ہے. ایسے لوگ جو اردو کے حمائتی ہیں، دیکھ رہے ہیں کہ آج کے راج نیتک واتاورن میں اردو پکش کی وجے نہیں ہوسکتی. اس لئے وہ ہندستانی کا سمرتھن کرتے ہیں. اُن کا یہ وشواس ہے کہ یدی بھاشا کا نام ہندستانی رہجائے تو وہ اُسکے اردو سوروپ کی رکشا کرلے جائیں گے.

اردو پنتھیوں کے سوا ہندستانی کے سمرتھکوں میں ایک ایسا دل ہے جو مہاتما جی سے سمت اس پری بھاشا کو سویکار کرتا ہے کہ ہندستانی وہ بھاشا ہے جو اُتر بھارت میں پرایہ سروتر سمجھی اور بولی جاتی ہے. اردو والوں کے انوسار یہ سوبھاگیہ اردو کو پراپت ہے، ہندی والے کہتے ہیں کہ ہندی ہی یہ لوک وانی ہے. پرنتو یدی اس کا نام ہندستانی مان بھی لیا جائے تو ایک آکشیپ رہتا ہے. اس میں ہاٹ، بازار کی بولی ہونے کی تو

क्षमता है, प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षा भी इसमें दी जा सकती है, परन्तु इसमें ऐसे शब्द नहीं हैं जिनका व्यवहार सरकारी कामों या उच्च शिक्षा में किया जा सके. ऐसे कामों के लिये कहीं से शब्द लेने होंगे. यदि इसके लिए अरबी फ़ारसी का सहारा लिया गया तो हिन्दुस्तानी उर्दू बन जायगी. यदि संस्कृत को आधार बनाया गया तो भाषा हिन्दी हो जायगी.

इस तर्क के तथ्य को अस्वीकार करना असम्भव है. ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुस्तानी के आचार्यों ने इस विषय पर खूब विचार किया है. फलस्वरूप हमारे सामने हिन्द के विधान की अंगरेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दावली प्रस्तुत है. इसको इसी महीने में हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा, ने प्रकाशित किया है. शब्दावली के मुख्य रचयिता महात्मा भगवानदीन हैं और 'दो शब्द' लिख कर सर्व श्री काका कालेलकर, सत्यनारायण और सुन्दरलाल तथा श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ने इसका समर्थन किया है. व्यास, बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक, सूर, तुलसी और गांधी जी की आत्माओं का भी मूक आशीर्वाद प्राप्त कर लिया गया है.

जैसा कि 'दो शब्द' के आरम्भ में कहा गया है 'हिन्दुस्तानी एक जीती जागती बोली है' और यह भी मानना होगा कि शब्दावली के रचयिता और समर्थक सभी जागते जोगी हैं. अत: मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूँ कि उन अभागों को, जिनके हाथ में इस पुस्तक की प्रति न पहुँची हो, इसके टकसाली शब्दों का थोड़ा सा परिचय करा दूँ.

हम लोग जिस राज में रहते हैं उसको 'इंडियन यूनियन', कहा

کشمتا ہے، پراتھمک ککشاؤں میں شکشا بھی اِس میں دیجا سکتی ہے، پرنتو اِس میں ایسے شبد نہیں ہیں جنکا دیوہار سرکاری کاموں یا اُچّ شکشا میں کیا جا سکے. ایسے کاموں کے لئے کہیں سے شبد لینے ہوں گے. یدی اِس کے لئے عربی فارسی کا سہارا لیا گیا تو ہندستانی اردو بن جائے گی. یدی سنسکرت کو آدھار بنایا گیا تو بھاشا ہندی ہو جائے گی.

اِس ترک کے تتھیہ کو اَسویکار کرنا اسمبھو ہے. ایسا پرتیت ہوتا ہے کہ ہندستانی کے آچاریوں نے اِس وِشے پر خوب وِچار کیا ہے. پھل سوروپ ہمارے سامنے ہند کے وِدھان کی انگریزی ہندستانی شبداولی پرستت ہے. اِس کو اِسی مہینے میں ہندستانی پرچار سبھا، وردھا، نے پرکاشت کیا ہے. شبداولی کے مکھیہ رچیتا مہاتما بھگوان دین ہیں اور 'دو شبد' لکھکر سرو شری کاکا کالیلکر، ستیہ نارائن اور سندر لال تتھا شریمتی رامیشوری نہرو نے اِس کا سمرتھن کیا ہے. ویاس، بودھ، مہاویر، کبیر، نانک، سور، تلسی اور گاندھی جی کی آتماؤں کا بھی موک آشیرواد پراپت کر لیا گیا ہے.

جیسا کہ 'دو شبد' کے آرمبھ میں کہا گیا ہے 'ہندستانی ایک جیتی جاگتی بولی ہے'، اور یہ بھی ماننا ہوگا کہ شبداولی کے رچیتا اور سمرتھک سبھی جاگتے جوگی ہیں. اَتہ میں اپنا کرتویہ سمجھتا ہوں کہ اُن ابھاگوں کو، جنکے ہاتھ میں اِس پستک کی پرتی نہ پہنچی ہو، اُسکے ٹکسالی شبدوں کا تھوڑا سا پریچے کرادوں.

ہم لوگ جس راج میں رہتے ہیں اُسکو 'انڈین یونین'، کہا

जाता है. राजशास्त्र में यूनियन का विशेष अर्थ होता है. कई राज-सत्ताओं के विशेष प्रकार से मिलने पर यूनियन बनता है. शब्दावली में 'इंडियन यूनियन' को 'हिन्द इकावा' कहा गया है. लाख सिर खपाने पर भी हिन्दी वाले इतना सुन्दर शब्द न ढूंढ पाते. राज शास्त्र के बड़े बड़े सिद्धान्त छोटे से 'इकावा' शब्द में समा गए. 'मीटिंग' के लिए सभा और 'रेप्रेज़ेन्टेटिव' के लिए प्रतिनिधि तो सभी बोलने लगे हैं, परन्तु ऐसा करते समय हम यह भूल जाते हैं कि सादी बोली में 'मिलनी' और 'ओरिया' मौजूद हैं. यह ठीक है कि मिलनी विवाह में एक रस्म होती है और 'ओर' के होते हुए भी 'ओरिया' कहीं सुना नहीं जाता. परन्तु ऐसे आक्षेप उठाना जीवित बोली की शक्ति को न पहिचानने का सूचक है. इंकायरी के लिए 'पूछना' 'कंसालिडेशन' के लिए 'ठोसियाना, 'रिबेल' के लिए 'बिगड़ैल' 'प्रेज़र्व' के लिए 'सेंतना' रेसिप्रासिटी के लिए 'फिरफिराव' 'इंस्ट्रक्टर' के लिए 'सिखइया' और पब्लिशर के लिए 'निकालिया' यह ऐसे जानदार शब्द हैं कि गढ़ने वाले की क़लम को चूम लेने को जी चाहता है. उच्च शिक्षा के क्षेत्र को भी अछूता नहीं छोड़ा है. 'जिओग्राफ़ी' के लिए दो पर्याय दिये गए हैं, 'जुग़राफ़िया और भूवारता' 'जुआलोजी' 'प्रानी विद्या' है और 'मेटीरियलिज्म' 'माटीवाद' हो गया है. इस भांडागार के कितने रत्न सामने लाए जायें. 'पेसिव रेज़िस्टेंस' अब निष्क्रिय प्रतिरोध की जगह 'चुपहट' हो गया है, 'इम्प्लिसिट' की जगह 'हई' कहने से काम चल जायगा और 'सब सेक्शन' को 'उपखंड' जैसे किसी अनगढ़ नाम से पुकारने की जगह 'छुटकाट' कहा जा सकेगी.

جاتا ہے۔ راج شاستر میں یونین کا وشیش ارتھ ہوتا ہے۔ کئی راج ستاؤں کے وشیش پرکار سے ملنے پر یونین بنتا ہے۔ شبداولی میں 'انڈین یونین' کو 'ہند اکاوا' کہا گیا ہے۔ لاکھ سر کھپانے پر بھی ہندی والے اتنا سُندر شبد نہ ڈھونڈھ پاتے۔ راج شاستر کے بڑے بڑے سدھانت چھوٹے سے 'اکاوا' شبد میں سما گئے۔ 'میٹنگ' کے لئے سبھا اور 'ریپریزنٹیٹو' کے لئے پرتی ندھی تو سبھی بولنے لگے ہیں، پرنتو ایسا کرتے سمے ہم یہ بھول جاتے ہیں کہ سادی بولی میں 'ملنی' اور 'اوریا' موجود ہیں۔ یہ ٹھیک ہے کہ ملنی وواہ میں ایک رسم ہوتی ہے اور 'اور' کے ہوتے ہوئے بھی 'اوریا' کہیں سُنا نہیں جاتا۔ پرنتو ایسے آکشیپ اٹھانا جیوت بولی کی شکتی کو نہ پہچاننے کا سوچک ہے۔ انکوائری کے لئے 'پوچھنا'، 'کنسالیڈیشن' کے لئے 'ٹھوسیانا'، 'ریبل' کے لئے 'بگڑیل' 'پریزرو' کے لئے 'سینتنا'، 'ریسی پراسٹی' کے لئے 'پھرپھراؤ'، 'انسٹرکٹر' کے لئے 'سکھیا'، اور 'پبلشر' کے لئے 'نکالیا'، یہ ایسے جاندار شبد ہیں کہ گڑھنے والے کی قلم کو چوم لینے کو جی چاہتا ہے۔ اُچ شکشا کے کشیتر کو بھی اچھوتا نہیں چھوڑا ہے۔ 'جیوگرافی' کیلئے دو پریائے دیئے گئے ہیں، 'جغرافیہ اور بھوبارتا'، 'جوالوجی' 'پرانی ودیا' ہے اور 'میٹریلزم' 'ماٹی واد' ہو گیا ہے۔ اس بھنڈاگار کے کتنے رتن سامنے لائے جائیں۔ 'پیسو ریزسٹنس' اب نشکریہ پرتی رودھ کی جگہ 'چپ ہٹ' ہو گیا ہے، 'ایلیسٹ' کی جگہ 'ہئی' کہنے سے کام چل جائے گا اور 'سب سکشن' کو 'اپ کھنڈ' جیسے کسی ان گڑھ نام سے پکارنے کی جگہ 'چھوٹکاٹ' کہا جا سکے گا۔

अब सरकार लोगों की सम्पत्ति कांफ़िस्केट रजियाया करेगी. 'विकेन्द्रीकरण' कितना भोंडा लगता है, उसकी तुलना में 'निरबिचियान' सुन कर जी फड़क उठता है. किसी किसी शब्द की व्युत्पत्ति ठीक समझ में नहीं आती. ।उदाहरण के लिए 'आउट्रेज' का पर्याय 'किमहोनी' लीजिये. परन्तु शब्द का गोत्र पूछकर क्या होगा, उत्तमः स्वगुणः ख्याताः नामधातु तो खूब ही बने हैं. नकुछियाना, नमियाना, अन्तियाना, इकयाना, पूछताछना, एक्टियाना, दुशियाना' शक्तियाना.....इसे सजीव भाषा कहते हैं.

इस शब्दावली के समर्थकों के साहस की प्रशंसा तो करनी ही होगी. ऐसा मानना चाहिए कि या तो उनको इस बात का कुछ भी आभास नहीं है कि लोग उनको क्या कहेंगे या उनको लोकमत की परवाह नहीं है. ऐसे गम्भीर विद्वान कभी हँसते होंगे, ऐसा सोचना तो उनका अपमान करना है. वह आशा करते हैं कि ऐसी भाषा इस देश में चल जायगी, इससे बढ़ कर आश्चर्य की और क्या बात होगी ? हिन्दी को अपनी सैकड़ों वर्षों की साहित्यिक परम्परा है और फिर वह संस्कृत की सहस्र वर्षों की परम्परा की दायाद है. उर्दू के पीछे भी अरबी फ़ारसी की परम्परा है, चाहे यह परम्परा हमारी संस्कृति से भले ही अनमेल हो. ऐसे देश में इस प्रकार के शब्दों को प्रचलित कराने का यत्न कोई असाधारण व्यक्ति ही करेगा. मैं असाधारणता का विश्लेषण नहीं करता. एक बात खूब याद आई. विश्लेषण करने वाले को अब सुधार, सुलाफ़ या अलगाऊ कहना होगा. अस्तु. शब्दों के अभिधार्थ से बढ़कर कभी कभी उनके ध्वनितार्थ का महत्व अधिक होता है. ध्वनितार्थ

اب سرکار لوگوں کی سمپتی کانفیسکیٹ رجیایا کرے گی۔ 'وکیندری کرن' کتنا بھونڈا لگتا ہے، اس کی تُلنا میں 'نربچیان' سُن کر جی پھڑک اُٹھتا ہے۔ کسی کسی شبد کی بیوتپتی ٹھیک سمجھ میں نہیں آتی۔ اُداہرن کے لئے 'آؤٹ ریز' کا پریائے 'کِم ہونی' لیجئے۔ پرنتو شبد کا گوتر پوچھ کر کیا ہوگا، اُتم سوگُن کھیاتا نامدھاتو تو خوب ہی بنتے ہیں۔ نکچھیانا، نمیانا، انتیانا، اکیانا، پوچھ تاچھ نا، ایکٹیانا، دوشیانا، شکتیانا...... اسے سجیو بھاشا کہتے ہیں۔

اس شبداولی کے سمرتھکوں کے ساہس کی پرشنسا تو کرنی ہی ہوگی۔ ایسا ماننا چاہئے کہ یا تو اُن کو اس بات کا کچھ بھی آبھاس نہیں ہے کہ لوگ اُن کو کیا کہیں گے یا اُن کو لوک مت کی پرواہ نہیں ہے۔ ایسے گمبھیر وِدوان کبھی ہنستے ہوں گے، ایسا سوچنا تو اُن کا اپمان کرنا ہے۔ وہ آشا کرتے ہیں کہ ایسی بھاشا اس دیش میں چل جائے گی۔ اس سے بڑھ کر آشچریہ کی اور کیا بات ہوگی۔ ہندی کی اپنی سیکڑوں ورشوں کی ساہتیک پرمپرا ہے اور پھر وہ سنسکرت کی سہسر ورشوں کی پرمپرا کی دایاد ہے۔ اردو کے پیچھے بھی عربی فارسی کی پرمپرا ہے، چاہے یہ پرمپرا ہماری سنسکرتی سے بھلے ہی انمیل ہو۔ ایسے دیش میں اس پرکار کے شبدوں کو پرچلت کرانے کا یتن کوئی اسادھارن ویکتی ہی کرے گا۔ میں اسادھارنتا کا وشلیشن نہیں کرتا۔ ایک بات خوب یاد آئی۔ وشلیشن کرنے والے کو اب سُدھار، سُلاجھ، یا الگاؤ کہنا ہوگا۔ استو شبدوں کے ابھی دھارتھ سے بڑھ کر کبھی کبھی اُن کے دھونِتارتھ کا مہتو ادھک ہوتا ہے۔ دھونتارتھ

सैकड़ों वर्षों के व्यवहार से विकसित होता है. अब हमसे कहा जाता है कि हम ऐसे शब्दों को छोड़कर इन नये गढ़े शब्दों का प्रयोग करें जिनके पीछे कुछ थोड़े से व्यक्तियों का हिन्दी या संस्कृत द्वेषमात्र है.

मैं यह द्वेष वाली बात यों नहीं कह रहा हूँ, इसके लिए आधार है. जहाँ विदेशी शब्द लिए गए हैं वहाँ उनके उच्चारण की रक्षा का पूरा ध्यान रखा गया. जुग़राफ़िया, क़ानून, फ़ौजदारी जैसे शब्दों में अधोविन्दु देकर ग़ैन, फ़े, क़ाफ़ को शुद्ध रखा गया है, परन्तु संस्कृत शब्दों की कथा न्यारी है. पहिले तो उनको छोड़ देने का पूरा यत्न किया गया है. भूगोल जैसा सीधा शब्द भी न आ सका जो सारे देश में प्रचलित है, जिसे लाखों बच्चे प्रत्येक प्रान्त में बोल रहे हैं. भूगोल से भी अधिक प्रचलित मंत्री है, परन्तु उसको भी वज़ीर के सामने निकाल दिया गया, सचिव बेचारे को तो भला पूछता ही कौन. जहाँ संस्कृत के शब्द आये भी हैं तो उनके तद्भव रूप दिए गए हैं, तत्सम रूप नहीं. औसर, संग, नेम, बारता, सुर, करता, समन्दर, दीठ, की भरमार है. बेचारा धर्म भी न बच पाया. "ह्यूमन" के पर्याय में "मानवधर्मी" नहीं वरन् "मानवधरमी" आया है. यह तो स्पष्ट है कि इस हिन्दुस्तानी ने उन सब बातों की ओर से जिनमें भारत की भारतीयता है, मुँह फेरने का निश्चय कर लिया है. इस देश की परम्परा और संस्कृति से उसे स्फूर्ति नहीं लेनी है. तब फिर हम ऐसी भाषा को लेकर क्या करेंगे?

سیکڑوں برسوں کے ویوہار سے وکست ہوتا ہے۔ اب ہم سے کہا جاتا ہے کہ ہم ایسے شبدوں کو چھوڑ کر ان نئے گڑھے شبدوں کا پریوگ کریں جن کے پیچھے کچھ تھوڑے سے ویکتیوں کا ہندی یا سنسکرت دویش ماتر ہے۔

میں یہ دویش والی بات یوں نہیں کہہ رہا ہوں، اس کے لئے آدھار ہے۔ جہاں ودیشی شبد لئے گئے ہیں وہاں ان کے اچارن کی رکشا کا پورا دھیان رکھا گیا۔ جغرافیہ، قانون، فوجداری جیسے شبدوں میں ادھو بندو دے کر غین، فے، قاف، کو شدھ رکھا گیا ہے، پرنتو سنسکرت شبدوں کی کتھا نیاری ہے۔ پہلے تو ان کو چھوڑ دینے کا پورا یتن کیا گیا ہے۔ بھوگول جیسا سیدھا شبد بھی نہ آسکا جو سارے دیش میں پرچلت ہے، جسے لاکھوں بچے پرتیک پرانت میں بول رہے ہیں۔ بھوگول سے بھی ادھک پرچلت منتری ہے، پرنتو اس کو بھی وزیر کے سامنے نکال دیا گیا، سچو بے چارے کو تو بھلا پوچھتا ہی کون۔ جہاں سنسکرت کے شبد آئے بھی ہیں تو ان کے تدبھو روپ دیئے گئے ہیں، تتسم روپ نہیں، اوسر، سنگ، نیم، وارتا، سُر، کرتا، سمندر، دیٹھ، کی بھرمار ہے۔ بیچارہ دھرم بھی نہ بچ پایا۔ "ہیومن" کے پریائے میں "مانودھرمی" نہیں ورن "مانودھرمی" آیا ہے۔ یہ تو سپشٹ ہے کہ اس ہندستانی نے اُن سب باتوں کی اور سے جن میں بھارت کی بھارتیتا ہے، منہ پھیرنے کا نشچے کر لیا ہے۔ اس دیش کی پرمپرا اور سنسکرتی سے اُسے اسپھورتی نہیں لینی ہے۔ تب پھر ہم ایسی بھاشا کو لیکر کیا کریں گے؟

भारत की राष्ट्रभाषा के सम्बन्ध में जब तक रत्ती भर भी अवसर मिलेगा तब तक यह लोग अपना प्रयत्न जारी रखेंगे. जिन प्रान्तों में इनका बस चलेगा वहाँ इसी भाषा में पाठ्य पुस्तकें लिखी जायेंगी ताकि दस पांच वर्ष के बाद लाखों ऐसे व्यक्ति हो जायँ जो इसी कृत्रिम भाषा से परिचित हों. यह अभागे विद्यार्थी शुद्ध हिन्दी के जीवित प्रवाह से ही दूर न पड़ जायेंगे, परन्तु उनका सम्बन्ध उस पीयूषमय स्रोत से भी विच्छिन्न हो जायगा जो हिन्दी ही नहीं वरन् उर्दू को छोड़कर सभी भारतीय भाषाओं को अनुप्राणित कर रहा है. यदि यह षड्यंत्र सफल हो गया तो यहाँ अरबी संस्कृति तो नहीं जमेगी, परन्तु उस संस्कृति का लोप हो जायगा जिसका प्रतीक संस्कृत है. हमको सावधान रहना होगा.

(३१२)

यदि ऐसा प्रयास ऐसे लोग करते जिनके नाम अरबी फ़ारसी शब्दों से बने हैं तो उनका सामना अपेक्षया सुकर होता. परन्तु महात्मा, तपस्वी, पंडित कहलाने वालों का जादू देर तक चल जाता है. वह हिन्दी और संस्कृत का अधिक सफल विरोध कर सकते हैं. यह कहा जाता है कि हिन्दुस्तानी के समर्थकों को संस्कृत से कोई विरोध नहीं है. जो उसे पढ़ना चाहे, पढ़े. ठीक है, परन्तु संस्कृत हमारे लिए चीनी, ग्रीक, प्राचीन, मिश्री, आदि के समान भाषा नहीं है. उसके शब्दों में हमारी सहस्रों वर्षों की अनुभूतियाँ, आशायें, आशंकायें निहित हैं. एक एक शब्द का उच्चारण पुश्तों की सोयी स्मृति को जगा देता है, हृदय को झंकृत कर देता है. संस्कृत मृत नहीं, जीवित है. उसका हमारी लोकवाणी से अटूट सम्बन्ध है

بھارت کی راشٹر بھاشا کے سمبندھ میں جب تک رتّی بھر بھی اوسر ملے گا تب تک یہ لوگ اپنا پریتن جاری رکھیں گے. جن پرانتوں میں ان کا بس چلے گا وہاں اسی بھاشا میں پاٹھیہ پستکیں لکھی جائیں گی تاکہ دس پانچ ورش کے بعد لاکھوں ایسے ویکتی ہو جائیں جو اسی کرترم بھاشا سے پریچت ہوں. یہ ابھاگے ودیارتھی شدھ ہندی کے جیوت پرواہ سے ہی دور نہ پڑ جائیں گے، پرنتو ان کا سمبندھ اس پیوش مے سروت سے بھی وچھن ہو جائے گا جو ہندی ہی نہیں ورن اردو کو چھوڑ کر سبھی بھارتیہ بھاشاؤں کو انوپرانت کر رہا ہے. یدی یہ شڈینتر سپھل ہو گیا تو یہاں عربی سنسکرتی تو نہیں جمے گی، پرنتو اس سنسکرتی کا لوپ ہو جائے گا جس کا پرتیک سنسکرت ہے. ہم کو ساودھان رہنا ہوگا.

یدی ایسا پریاس ایسے لوگ کرتے جن کے نام عربی فارسی شبدوں سے بنے ہیں تو ان کا سامنا اپیکشیا سُکر ہوتا، پرنتو مہاتما، تپسوی، پنڈت کہلانے والوں کا جادو دیر تک چل جاتا ہے. وہ ہندی اور سنسکرت کا ادھک سپھل ورودھ کر سکتے ہیں. یہ کہا جاتا ہے کہ ہندستانی کے سمرتھکوں کو سنسکرت سے کوئی ورودھ نہیں ہے. جو اسے پڑھنا چاہے، پڑھے. ٹھیک ہے، پرنتو سنسکرت ہمارے لئے چینی، گریک، پراچین، مصری، آدی کے سمان بھاشا نہیں ہے. اس کے شبدوں میں ہماری سہسروں ورشوں کی انوبھوتیاں، آشائیں، آشنکائیں نہت ہیں. ایک ایک شبد کا اُچارن پشتوں کی سوئی سمرتی کو جگا دیتا ہے، ہردے کو جھنکرت کر دیتا ہے. سنسکرت مرت نہیں، جیوت ہے. اس کا ہماری لوک وانی سے اٹوٹ سمبندھ ہے.

और हमारी राष्ट्रभाषा की बनावट में भी उसका बड़ा स्थान होगा. जो लोग किसी भी नाम से हर बात का विरोध करते हैं, वह लोग हमारे राष्ट्रहित के विरोधी हैं.

اور ہماری راشٹر بھاشا کی بناوٹ میں بھی اس کا بڑا استھان ہوگا. جو لوگ کسی بھی نام سے ہر بات کا ورودھ کرتے ہیں، وہ لوگ ہمارے راشٹر ہت کے ورودھی ہیں.

यह हिन्दुस्तानी है !

इस सुरखी से २८ अगस्त के "हिन्दुस्तान" में डाक्टर सम्पूर्णानन्द जी के नाम से एक लेख मुझे पढ़ने को मिला. यह लेख कुछ और पत्रों में भी छपा है. यह उस अंगरेज़ी-हिन्दुस्तानी शब्दावली के ऊपर लिखा गया है जिसको हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा ने छापा है और जिसको मैंने अपने मित्रों की मदद से तैयार किया था. इस लेख में कुछ ऐसी बातें लिखी गई हैं जिनसे लोगों को हिन्दुस्तानी के बारे में भ्रम पैदा हो सकता है. इसीलिए नीचे की सतरें लिखी जाती हैं.

लेख में कहा गया है कि "हिन्दुस्तानी उर्दू से प्राय: अभिन्न है. फ़ारसी अरबी की जगह संस्कृत के तद्भव या देशज शब्दों को दे देने तथा विदेशी शब्दों के लिए देशी व्याकरण का प्रयोग करने से—उदाहरण के लिए 'सुलतान' का बहुबचन 'सलातीन' की जगह 'सुलतानों' मान लेने से—उर्दू हिन्दुस्तानी बन जाती है." यह बात एक दरजे तक सच है पर उस दरजे तक भी एक पूरी बात का आधा हिस्सा है. उसी लेख में डाक्टर साहब लिखते हैं कि "एक दल ऐसा है जो यह मानता है कि हिन्दुस्तानी वह भाषा है जो उत्तर भारत में प्राय: सर्वत्र समझी और बोली जाती है. उर्दू वालों के अनुसार यह सौभाग्य उर्दू को प्राप्त है, हिन्दी वाले कहते हैं कि हिन्दी ही वह लोक वाणी है." क्या इसका यह मतलब है

یہ ہندستانی ہے!

اس سرخی سے ۲۸ اگست کے "ہندستان" میں ڈاکٹر سمپورنانند جی کے نام سے ایک لیکھ مجھے پڑھنے کو ملا۔ یہ لیکھ کچھ اور پتروں میں بھی چھپا ہے۔ یہ اس انگریزی ہندستانی شبداولی کے اوپر لکھا گیا ہے جس کو ہندستانی پرچار سبھا، وردھا نے چھاپا ہے اور جس کو میں نے اپنے متروں کی مدد سے تیار کیا تھا۔ اس لیکھ میں کچھ ایسی باتیں لکھی گئی ہیں جن سے لوگوں کو ہندستانی کے بارے میں بھرم پیدا ہو سکتا ہے۔ اسی لئے نیچے کی سطریں لکھی جاتی ہیں۔

لیکھ میں کہا گیا ہے کہ "ہندستانی اردو سے پرایہ ابھن ہے۔ فارسی عربی کی جگہ سنسکرت کے تدبھو یا دیشج شبدوں کو دے دینے تھا ودیشی شبدوں کے لئے دیشی ویاکرن کا پریوگ کرنے سے — اداہرن کے لئے 'سلطان' کا بہو بچن 'سلاطین' کی جگہ 'سلطانوں' مان لینے سے — اردو ہندستانی بن جاتی ہے۔" یہ بات ایک درجے تک سچ ہے پر اس درجے تک بھی ایک پوری بات کا آدھا حصہ ہے۔ اسی لیکھ میں ڈاکٹر صاحب لکھتے ہیں کہ "ایک دل ایسا ہے جو یہ مانتا ہے کہ ہندستانی وہ بھاشا ہے جو اتر بھارت میں پرایہ سروتر سمجھی اور بولی جاتی ہے۔ اردو والوں کے انوسار یہ سوبھاگیہ اردو کو پراپت ہے، ہندی والے کہتے ہیں کہ ہندی ہی وہ لوک وانی ہے۔" کیا اس کا یہ مطلب ہے

कि हिन्दी वालों के अनुसार यह सौभाग्य हिन्दी को प्राप्त है. अगर वह यह कहना चाहते हैं कि वह हिन्दी, जिसमें रेलवे को 'अयोमार्ग' और रेल गाड़ी को 'वाष्पयान' कहा जाता है, लोक वाणी है तब हम कहेंगे कि यह ठीक नहीं है. जिस हिन्दी को लोक वाणी होने का दरजा मिला हुआ है उसमें और हिन्दुस्तानी में कोई अन्तर नहीं. हिन्दुस्तानी वही बोली है जो उत्तर भारत में लगभग सब जगह समझी और बोली जाती है.

हम यह नहीं मानते कि हिन्दुस्तानी में यह ताक़त नहीं है कि वह अरबी या संस्कृत की मदद के बिना हर तरह के शब्द तैयार कर सके. अगर हम ऐसा मानते तो हिन्दुस्तानी शब्दावली तैयार करने की क्यों सोचते ? हम तो यह मानते हैं कि हर ऐसी बोली में जो युगों की परम्परा से बनी हो हर विचार को ज़ाहिर करने की ताक़त मौजूद रहती है, ठीक उसी तरह जैसे हर पत्थर में हर तरह की मूर्ति बनने की या हर थान में हर तरह की पोशाक में तबदील होने की. हिन्दुस्तानी के शब्दों से वह सब काम निकल सकता है जो संस्कृत, अरबी, अंगरेज़ी या किसी भी भाषा के शब्दों से निकलता है. यह सारा खेल है विश्वास का. जिसे विश्वास नहीं, वह इस रास्ते एक क़दम भी नहीं चल सकता.

अपने शब्दों की बनावट पर आने से पहले हम संस्कृत के बारे में अपनी साफ़ साफ़ राय बता देना ज़रूरी समझते हैं. इन पंक्तियों का लेखक एक गुरुकुल का अधिष्ठाता रह चुका है. एक तरह से उस गुरुकुल की बुनियाद भी उसी ने डाली थी, और यों वह उसका सब कुछ था. उन दिनों वह इस ख़याल का था कि

کہ ہندی والوں کے انوسار یہ سوبھاگیہ ہندی کو پراپت ہے۔ اگر وہ یہ کہنا چاہتے ہیں کہ وہ ہندی، جس میں ریلوے کو 'ایومارگ' اور ریل گاڑی کو 'واشپ یان' کہا جاتا ہے، لوک وانی ہے تب ہم کہیں گے کہ یہ ٹھیک نہیں ہے۔ جس ہندی کو لوک وانی ہونے کا درجہ ملا ہوا ہے اس میں اور ہندستانی میں کوئی انتر نہیں۔ ہندستانی وہی بولی ہے جو اُتر بھارت میں لگ بھگ سب جگہ سمجھی اور بولی جاتی ہے۔

ہم یہ نہیں مانتے کہ ہندستانی میں یہ طاقت نہیں ہے کہ وہ عربی یا سنسکرت کی مدد کے بنا ہر طرح کے شبد تیار کر سکے۔ اگر ہم ایسا مانتے تو ہندستانی شبداولی تیار کرنے کی کیوں سوچتے؟ ہم تو یہ مانتے ہیں کہ ہر ایسی بولی میں جو یگوں کی پرمپرا سے بنی ہو ہر وچار کو ظاہر کرنے کی طاقت موجود رہتی ہے، ٹھیک اسی طرح جیسے ہر پتھر میں ہر طرح کی مورتی بننے کی یا ہر تھان میں ہر طرح کی پوشاک میں تبدیل ہونے کی۔ ہندستانی کے شبدوں سے وہ سب کام نکل سکتا ہے جو سنسکرت، عربی، انگریزی یا کسی بھی بھاشا کے شبدوں سے نکلتا ہے۔ یہ سارا کھیل ہے وشواس کا۔ جسے وشواس نہیں، وہ اس راستے ایک قدم بھی نہیں چل سکتا۔

اپنے شبدوں کی بناوٹ پر آنے سے پہلے ہم سنسکرت کے بارے میں اپنی صاف صاف رائے بتا دینا ضروری سمجھتے ہیں۔ ان پنکتیوں کا لیکھک ایک گروکل کا ادھشٹھاتا رہ چکا ہے۔ ایک طرح سے اس گروکل کی بنیاد بھی اسی نے ڈالی تھی، اور یوں وہ اس کا سب کچھ تھا۔ ان دنوں وہ اس خیال کا تھا کہ

जब तक सारे हिन्दुस्तान को संस्कृत की तालीम न दी जायगी तब तक न हिन्दुस्तान आजाद होगा और न हिन्दुस्तानी नेशन बन सकेगी. इस धुन में वह पांच पांच, सात सात बरस के बच्चों को संस्कृत व्याकरण के सूत्र रटवाया करता. गुरुकुल में पढ़ाने वाले पंडित के सात बरस के लड़के को अष्टाध्याई पूरी याद थी. एक साल बाद ही लेखक ने अपनी भूल को समझ लिया. रटना कम तो हुआ, पर बन्द न हो सका. संस्कृत रही पर अब वह नए तरीक़े से सिखाई जाने लगी यानी बोलचाल के ज़रिए. हां, शुरू की पहली दो श्रेणियों में संस्कृत बिलकुल नहीं पढ़ाई जाती थी. एक बार आश्रम दौरे पर गया. एक मन्दिर में ब्रह्मचारियों ने हिन्दुस्तानी में प्रार्थना की. वह सब छोटे छोटे थे, मैं उनके साथ था. जहां तक मुझे याद है यह बात गवालियर रियासत के भेलसा नगर की है. मन्दिर में नगर के जितने आदमी थे उनमें से किसी को संस्कृत नहीं आती थी. हिन्दुस्तानी प्रार्थना से किसी भेलसा वाले की तसल्ली न हुई. वह पूछने लगे क्या यह बच्चे संस्कृत के स्तोत्र नहीं बोल सकते. स्तोत्र शब्द उनके मुँह से इतना अटपटा रूप लेकर निकला कि मुझे हँसी आ गई. पर क्या करता उनमें संस्कृत के लिये बेजा भक्ति मौजूद थी. मैंने कुछ नाराज़ होकर मेघदूत के शुरू के श्लोक बोलने शुरू कर दिये. बच्चों को सुनकर बोलने की आदत तो थीं ही, उन्होंने दुहराना शुरू कर दिया. भेलसा के लोग इससे बहुत ख़ुश हुए. तब मैंने उनको फटकारा कि जो कुछ अभी कहा गया है वह स्तोत्र न थे, मेघदूत के श्रृंगार-रस के श्लोक थे. अब मेरी आंखें खुलीं और मुझे मालूम हुआ कि संस्कृत का बेजा

جب تک سارے ہندستان کو سنسکرت کی تعلیم نہ دی جائے گی تب تک نہ ہندستان آزاد ہوگا اور نہ ہندستانی نیشن بن سکے گی۔ اس دھن میں وہ پانچ پانچ، سات سات برس کے بچوں کو سنسکرت ویاکرن کے سوتر رٹوایا کرتا۔ گروکل میں پڑھانے والے پنڈت کے سات برس کے لڑکے کو اشٹادھیائی پوری یاد تھی۔ ایک سال بعد ہی لیکھک نے اپنی بھول کو سمجھ لیا۔ رٹنا کم تو ہوا، پر بند نہ ہو سکا۔ سنسکرت رہی پر اب وہ نئے طریقے سے سکھائی جانے لگی یعنی بول چال کے ذریعے۔ ہاں، شروع کی پہلی دو شرینیوں میں سنسکرت بالکل نہیں پڑھائی جاتی تھی۔ ایک بار آشرم دورے پر گیا۔ ایک مندر میں برہمچاریوں نے ہندستانی میں پرارتھنا کی۔ وہ سب چھوٹے چھوٹے تھے، میں ان کے ساتھ تھا۔ جہاں تک مجھے یاد ہے یہ بات گوالیر ریاست کے بھیلسا نگر کی ہے۔ مندر میں نگر کے جتنے آدمی تھے ان میں سے کسی کو سنسکرت نہیں آتی تھی۔ ہندستانی پرارتھنا سے کسی بھیلسا والے کی تسلی نہ ہوئی۔ وہ پوچھنے لگے کیا یہ بچے سنسکرت کے ستوتر نہیں بول سکتے۔ ستوتر شبد ان کے منہ سے اتنا اٹپٹا روپ لے کر نکلا کہ مجھے ہنسی آگئی۔ پر کیا کرتا ان میں سنسکرت کے لئے بے جا بھکتی موجود تھی۔ میں نے کچھ ناراض ہو کر میگھ دوت کے شروع کے شلوک بولنے شروع کر دیے۔ بچوں کو سن کر بولنے کی عادت تو تھی ہی، انھوں نے دہرانا شروع کر دیا۔ بھیلسا کے لوگ اس سے بہت خوش ہوئے۔ تب میں نے ان کو پھٹکارا کہ جو کچھ ابھی کہا گیا ہے وہ ستوتر نہ تھے، میگھ دوت کے شرنگار رس کے شلوک تھے۔ اب میری آنکھیں کھلیں اور مجھے معلوم ہوا کہ سنسکرت کا بے جا

मोह हिन्दुस्तानी आज़ादी के बीच की रुकावटों में से एक रुकावट है. यह बात है सन् १९१४ की. इसके बाद मैं धीरे धीरे इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि संस्कृत के हिन्दुस्तानियों के दिलों में इस तरह ग़लत जगह जमाए रहते हिन्दुस्तान में हिन्दुस्तानी नेशन क्या कोई नेशन नहीं बन सकती.

संस्कृत की मैं पूरी इज़्ज़त करता हूँ, ऐसी ही जैसे मैं अपनी दादी की करता हूँ. मैं बहुत सी बातों में उससे सलाह लूँगा, बहुत सी चीज़ें उससे सीखूँगा. पर अगर कोई मुझसे यह चाहे कि मैं अपनी दादी के हाथ में घर का सारा इन्तज़ाम दे दूँ या उसे हर छोटे बड़े काम में दख़ल देने की छुट्टी दे दूँ तब मैं ऐसी सलाह देने वाले को यही समझूँगा कि वह मेरे घर को मटियामेट करना चाहता है. संस्कृत आदर की चीज़ है, पर हर काम में बरतने की नहीं. तारीफ़ के क़ाबिल हैं वह अंगरेज़ जिन्होंने बाइबिल का अंगरेज़ी में तरजुमा करके दुनिया को यह भुला दिया कि बाइबिल लिखी किस बोली में गई थी. अंगरेज़ी की बाइबिल उतनी ही इज़्ज़त पाती है जितनी वह बाइबिल जो इबरानी में लिखी गई थी. हिन्दुस्तानी भी यही करती चली आ रही है. तुलसी दास जी ने अपने वक़्त और अपने सूबे की हिन्दुस्तानी में रामायण लिखकर बाल्मीकि की संस्कृत रामायण को लोगों के दिल से भुला दिया. तुलसी रामायण घर घर में पूजा की चीज़ बन गई है. बाल्मीकि रामायण लाइब्रेरियों की अलमारियों में ही पाई जा सकती है. कबीर और नानक ने जो कुछ लिखा वह अपने वक़्त की हिन्दुस्तानी में. आज सिखों के ग्रन्थ साहब पर सोच समझकर जितने जान

موہ ہندستانی آزادی کے بیچ کی رکاوٹوں میں سے ایک رکاوٹ ہے۔ یہ بات ہے سنہ ۱۹۱۴ کی۔ اس کے بعد میں دھیرے دھیرے اس نتیجے پر پہنچا ہوں کہ سنسکرت کے ہندستانیوں کے دلوں میں اس طرح غلط جگہ جمائے رہتے ہندستان میں ہندستانی نیشن کیا کوئی نیشن نہیں بن سکتی۔

سنسکرت کی میں پوری عزت کرتا ہوں، ایسی ہی جیسے میں اپنی دادی کی کرتا ہوں۔ میں بہت سی باتوں میں اس سے صلاح لوں گا، بہت سی چیزیں اس سے سیکھوں گا۔ پر اگر کوئی مجھ سے یہ چاہے کہ میں اپنی دادی کے ہاتھ میں گھر کا سارا انتظام دے دوں یا اسے ہر چھوٹے بڑے کام میں دخل دینے کی چھٹی دے دوں تب میں ایسی صلاح دینے والے کو یہی سمجھوں گا کہ وہ میرے گھر کو مٹیا میٹ کرنا چاہتا ہے۔ سنسکرت آدر کی چیز ہے، پر ہر کام میں برتنے کی نہیں۔ تعریف کے قابل ہیں وہ انگریز جنھوں نے بائیبل کا انگریزی میں ترجمہ کر کے دنیا کو یہ بھلا دیا کہ بائیبل لکھی کس بولی میں گئی تھی۔ انگریزی کی بائیبل اتنی ہی عزت پاتی ہے جتنی وہ بائیبل جو عبرانی میں لکھی گئی تھی۔ ہندستانی بھی یہی کرتی چلی آ رہی ہے۔ تلسی داس جی نے اپنے وقت اور اپنے صوبے کی ہندستانی میں رامائن لکھ کر والمیکی کی سنسکرت رامائن کو لوگوں کے دل سے بھلا دیا۔ تلسی رامائن گھر گھر میں پوجا کی چیز بن گئی ہے۔ والمیکی رامائن لائبریریوں کی الماریوں میں ہی پائی جا سکتی ہے۔ کبیر اور نانک نے جو کچھ لکھا وہ اپنے وقت کی ہندستانی میں۔ آج سکھوں کے گرنتھ صاحب پر سوچ سمجھ کر جتنے جان

पर खेल जाने वाले मिलेंगे उसके एक हिस्सा भी वेदों पर खेलने वाले न मिलेंगे. स्वामी दयानन्द संस्कृत के बहुत बड़े जानकार थे. वह जानते थे कि दुनिया को संस्कृत सिखा कर वेद सिखाना कभी नहीं हो सकता. वेद सिखाने के लिए वेद को ही दुनिया की अलग अलग बोलियों में लिखना होगा. तभी तो उन्होंने वेद को अपने वक़्त की हिन्दुस्तानी में लिख डाला. स्वामी जी का लिखा हुआ सत्यार्थ प्रकाश संस्कृत में नहीं है. स्वामी दयानन्द के लिए उसको संस्कृत में लिख डालना बाएं हाथ का खेल था. पर अगर वह ऐसा कर जाते तो आर्य समाजियों की गिनती उंगली पर गिनने के क़ाबिल होती. आज वह लाखों हैं. बुद्ध और महावीर ने अपने अपने उपदेशों के लिये संस्कृत को नहीं अपनाया. उन्होंने वह बोली अपनाई जो उनके पैदा होने की जगह के आस पास समझी और बोली जाती थी. उनकी बातें और उनकी सीख बहुत दिनों तक पाली और अर्ध मागधी में रहीं जो उन दिनों बिहार की बोली थी, जहां वह पैदा हुए थे. पर उनके निर्वाण होने के सदियों बाद उनकी सब किताबों को संस्कृत में कर डाला गया और बाद में जो कुछ लिखा गया वह सब संस्कृत में लिखा जाता रहा, जिसका नतीजा यह हुआ कि बौद्धों की तादाद जो कभी करोड़ों थी, लाखों भी न रह गई और जैनियों की गिनती जो कभी करोड़ों थी अठारवीं सदी में कुछ लाख रह गई. जैनियों को समझ आई, उन्होंने फिर अपने धर्म की किताबें अपने अपने सूबों की भाषाओं में लिखना शुरू कीं जिसका नतीजा यह हुआ कि उनकी तादाद घटना बन्द हो गई. अगर वह सन्तों की तरह हिन्दुस्तान भर में समझी जाने

پر کھیل جانے والے ملینگے اس کے ایک حصّہ بھی ویدوں پر کھیلنے والے نہ ملیں گے۔ سوامی دیانند سنسکرت کے بہت بڑے جانکار تھے۔ وہ جانتے تھے کہ دنیا کو سنسکرت سکھا کر وید سکھا کبھی نہیں ہو سکتا۔ وید سکھانے کے لئے وید کو ہی دنیا کی الگ الگ بولیوں میں لکھنا ہوگا۔ تبھی تو انھوں نے وید کو اپنے وقت کی ہندستانی میں لکھ ڈالا۔ سوامی جی کا لکھا ہوا ستیارتھ پرکاش سنسکرت میں نہیں ہے۔ سوامی دیانند کے لئے اس کو سنسکرت میں لکھ ڈالنا بائیں ہاتھ کا کھیل ہے۔ پر اگر وہ ایسا کر جاتے تو آریہ سماجیوں کی گنتی انگلی پر گننے کے قابل ہوتی۔ آج وہ لاکھوں ہیں۔ بدھ اور مہابیر نے اپنے اپنے اپدیشوں کے لئے سنسکرت کو نہیں اپنایا۔ انھوں نے وہ بولی اپنائی جو ان کے پیدا ہونے کی جگہ کے آس پاس سمجھی اور بولی جاتی تھی۔ ان کی باتیں اور ان کی سیکھ بہت دنوں تک پالی اور اردھ ماگدھی میں رہیں جو ان دنوں بہار کی بولی تھی، جہاں وہ پیدا ہوئے تھے۔ پر ان کے نروان ہونے کے صدیوں بعد ان کی سب کتابوں کو سنسکرت میں کر ڈالا گیا اور بعد میں جو کچھ لکھا گیا وہ سب سنسکرت میں لکھا جاتا رہا، جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ بودھوں کی تعداد جو کبھی کروڑوں تھی لاکھوں بھی نہ رہ گئی اور جینیوں کی گنتی جو کبھی کروڑوں تھی اٹھارویں صدی میں کچھ لاکھ رہ گئی۔ جینیوں کو سمجھ آئی، انھوں نے پھر اپنے دھرم کی کتابیں اپنے اپنے صوبوں کی بھاشاؤں میں لکھنا شروع کیں جس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ان کی تعداد گھٹنا بند ہو گئی۔ اگر وہ سنتوں کی طرح ہندستان بھر میں سمجھی جانے

वाली हिंदुस्तानी को अपनाते तो करोड़ की गिनती तक जरूर पहुँच जाते. हमारे जमाने में महात्मा गांधी ने अपनी मां की गोद से सीखी गुजराती का मोह छोड़ा और हिन्दुस्तानी को अपनाया. तभी तो वह हिन्दुस्तान को यह चमत्कार दिखा सके. लोक मान्य तिलक महात्मा गांधी से कम न थे पर उन्होंने अपनाई मराठी. इस लिए वह उस हिस्से को ही जगा सके, जहां मराठी बोली जाती है. दूसरे सूबों में उनकी इज्ज़त थी पर उनसे पूरा फ़ायदा वही उठा पाते थे जो अंगरेजी जानते थे. महात्मा गांधी ने अपनी बोली का मोह छोड़कर हिन्दुस्तानी अपनाई, तो गुजराती को इससे कोई धक्का नहीं पहुँचा. वह भी फली फूली. पर महात्मा गांधी के हाथों हिन्दुस्तानी गुजराती से कई गुना फली फूली. अकेले महात्मा गांधी ने ही नहीं लाखों ने अपनी अपनी बोलियों का मोह छोड़ा. तभी आज हम आजादी का मुंह देख पाए. अब अगर हम यह चाहते हैं कि हमारी आजादी बनी रहे तो हमें संस्कृत और अरबी का बेजा मोह छोड़ना पड़ेगा.

इसके बिना नेशन नहीं बन सकती, न जनता जाग सकती है. इस मुल्क में संस्कृत और अरबी की अब इतनी ही जरूरत है कि हम यह जान सकें कि हमारे बाप-दादे हमारे लिये क्या छोड़ गए हैं. बनारस और देव बन्द जैसे दो चार शहरों और क़सबों को इसी काम के लिए छोड़ा जा सकता है.

डाक्टर साहब का कहना है कि "हिन्दुस्तानी और उर्दू अभिन्न हैं. उर्दू के 'सलातीन' को 'सुलतानों' कर देने से हिन्दुस्तानी बन जाती है." हम इसमे इतना और जोड़ देना चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी

والی ہندستانی کو اپناتے تو کروڑ کی گنتی تک ضرور پہنچ جاتے۔ ہمارے زمانے میں مہاتما گاندھی نے اپنی ماں کی گود سے سیکھی گجراتی کا موہ چھوڑا اور ہندستانی کو اپنایا۔ تبھی تو وہ ہندستان کو یہ چمتکار دکھا سکے۔ لوک مانیہ تلک مہاتما گاندھی سے کم نہ تھے پر انھوں نے اپنائی مراٹھی۔ اس لئے وہ اس حصے کو ہی جگا سکے جہاں مراٹھی بولی جاتی ہے۔ دوسرے صوبوں میں ان کی عزت تھی پر ان سے پورا فائدہ وہی اٹھا پاتے تھے جو انگریزی جانتے تھے۔ مہاتما گاندھی نے اپنی بولی کا موہ چھوڑ کر ہندستانی اپنائی، تو گجراتی کو اس سے کوئی دھکا نہیں پہنچا۔ وہ بھی پھلی پھولی۔ پر مہاتما گاندھی کے ہاتھوں ہندستانی گجراتی سے کئی گنا پھلی پھولی۔ اکیلے مہاتما گاندھی نے ہی نہیں لاکھوں نے اپنی اپنی بولیوں کا موہ چھوڑا۔ تبھی آج ہم آزادی کا منہ دیکھ پائے۔ اب اگر ہم یہ چاہتے ہیں کہ ہماری آزادی بنی رہے تو ہمیں سنسکرت اور عربی کا بے جا موہ چھوڑنا پڑے گا۔

اس کے بنا نیشن نہیں بن سکتی، نہ جنتا جاگ سکتی ہے۔ اس ملک میں سنسکرت اور عربی کی اب اتنی ہی ضرورت ہے کہ ہم یہ جان سکیں کہ ہمارے باپ دادے ہمارے لئے کیا چھوڑ گئے ہیں۔ بنارس اور دیوبند جیسے دو چار شہروں اور قصبوں کو اسی کام کے لئے چھوڑا جا سکتا ہے۔

ڈاکٹر صاحب کا کہنا ہے کہ "ہندستانی اور اردو ابھن ہیں۔ اردو کے 'سلاطین' کو 'سلطانوں' کر دینے سے ہندستانی بن سکتی ہے۔" ہم اس میں اتنا اور جوڑ دینا چاہتے ہیں کہ ہندستانی

नए शब्द अगर फ़ारसी अरबी से लिए गए तो वह ऊँचे दरजे की उर्दू बन जाएगी और संस्कृत से लिए गये तो पंडिताऊ हिन्दी बन जाएगी और इनेगिने आदमियों के काम की चीज़ हो जाएगी. इस दिक़्क़त से बचने के लिए यह शब्दावली तैयार की गई है. इसमें न अरबी फ़ारसी से मदद ली गई है और न संस्कृत से. सब शब्द चालू शब्दों से बनाए गए हैं.

'आउटरेज' के लिए किमहोनी हमारी शब्दावली में नहीं है, मालूम नहीं डाक्टर साहब ने कहां से लिया है. "आउटरेज" के लिए शब्दावली में यह तीन शब्द हैं जुल्म, अत्याचार और बलात्कार.

(३२६)

" 'इंस्ट्रक्टर' के लिए "सिखैया" और 'पबलिशर" के लिए "निकालिया" यह ऐसे शानदार शब्द हैं कि गढ़ने वाले की क़लम को चूम लेने को जी चाहता है." इस जुमले के लिए हम डाक्टर साहब के बड़े आभारी हैं. पर साफ़ जाहिर है कि वह हमारे क़लम को (डाक्टर साहब की बोली में हमारी क़लम को) चूमना तो क्या तोड़ना चाहते हैं. अब लीजिये "सिखैया" और "निकालिया" को. "सिखिया" सीखने वाले के मानी में चालू है, "सिखैया" सिखाने वाले के मानों में शहरों में कम पर गांव में खूब बोला जाता है. लोकराज का ढिंढोरा पीटने वाले इन प्यारे मीठे शब्दों को अपनाने से क्यों झिझकें. 'इण्डियन प्रेस ने सौ किताबें निकालीं;' 'यह किताब यहां से निकलने वाली है;' 'वह किताब वहां से निकलने वाली है;' इस तरह सभी लिखते बोलते हैं. फिर प्रकाशक शब्द के लिए 'निकालिया' शब्द क्यों निकाल बाहर किया जाए ?

१२

نئے شبد اگر فارسی عربی سے لئے گئے تو وہ اونچے درجے کی اردو بن جائے گی اور سنسکرت سے لئے گئے تو پنڈتاؤ ہندی بن جائے گی اور اِنے گِنے آدمیوں کے کام کی چیز ہو جائے گی۔ اس دِقت سے بچنے کے لئے یہ شبداولی تیار کی گئی ہے۔ اس میں نہ عربی فارسی سے مدد لی گئی ہے اور نہ سنسکرت سے۔ سب شبد چالو شبدوں سے بنائے گئے ہیں۔

"آؤٹریز" کے لئے کمہونی ہماری شبداولی میں نہیں ہے، معلوم نہیں ڈاکٹر صاحب نے کہاں سے لیا ہے۔ "آؤٹریز" کے لئے شبداولی میں یہ تین شبد ہیں ظلم، اتیاچار اور بلاتکار۔

(۳۲۵)

"انسٹرکٹر" کے لئے "سکھیّا" اور "پبلشر" کے لئے "نکالیا" یہ ایسے شاندار شبد ہیں کہ گڑھنے والے کی قلم کو چوم لینے کو جی چاہتا ہے۔" اس جملے کے لئے ہم ڈاکٹر صاحب کے بڑے آبھاری ہیں۔ پر صاف ظاہر ہے کہ وہ ہمارے قلم کو (ڈاکٹر صاحب کی بولی میں ہماری قلم کو) چومنا تو کیا توڑنا چاہتے ہیں۔ اب لیجئے "سکھیّا" اور "نکالیا" کو۔ "سکھیا" سیکھنے والے کے معنی میں چالو ہے، "سکھیّا" سکھانے والے کے معنوں میں شہروں میں کم پر گاؤں میں خوب بولا جاتا ہے۔ لوک راج کا ڈھنڈھورا پیٹنے والے ان پیارے میٹھے شبدوں کو اپنانے سے کیوں جھجکیں۔ "انڈین پریس نے سو کتابیں نکالیں؛" "یہ کتاب یہاں سے نکلنے والی ہے؛" "وہ کتاب وہاں سے نکلنے والی ہے؛" اس طرح سبھی لکھتے بولتے ہیں پھر پرکاشک شبد کے لئے "نکالیا" شبد کیوں نکال باہر کیا جائے؟

"उच्च शिक्षा के क्षेत्र को भी अछूता" छोड़ना कैसा उस पर तो पूरी तौर से हमला करना है. उसकी लोहे की दीवारें तोड़कर उसके चारों तरफ़ झीने कपड़े का परदा डालना है. अब तक उच्च शिक्षा पांच फ़ीसदी तक नहीं पहुँच पाई है. उसे सौ फ़ीसदी तक पहुँचाना है. आसानी से वह तभी पहुँच सकेगी जब उसकी शब्दावली इतनी आसान कर दी जाए कि सातवीं आठवीं तक पढ़ा बालक शब्द के मानी और बनावट समझाने पर उस चीज़ की परिभाषा समझ जाए, जिसके लिए वह शब्द गढ़ा गया है. 'समकोण' को 'ठीक कोना' कहिये, 'अधिककोण' को 'बड़कोना' कहिए; 'न्युनकोण' का 'छुटकोना' से काम चलाइए. 'जूलोजी' के लिए 'प्राणी शास्त्र' कहा जा सकता है तो 'प्रान विद्या' क्यों नहीं ? शास्त्र को गांव वाले और ही चीज़ समझते हैं. गांव वालों के लिए विद्या में ही विज्ञान है. कुछ हिन्दी वाले 'जूलोजी' को 'प्राणिक' लिखते हैं उससे प्रान विद्या क्या बुरा है. 'मेटीरियलिज़्म' के लिए 'माटीवाद' क्यों बुरा ? "मिट्टी ओढ़ना, मिट्टी बिछौना, मिट्टी में मिल जाना होगा" कह कर सन्तों ने 'माटीवाद' का खंडन किया है.

डाक्टर साहब ने लोकमत की बात भी की है. अगर लोकमत का मतलब असेम्बली में चुनकर आए हुए आदमियों से है तो बेशक हमने उस तरफ़ निगाह डालने की कोशिश नहीं की. इसलिए हम नहीं कह सकते कि उस लोकमत का कितना हिस्सा हमारे साथ है और कितना नहीं. लेकिन अगर लोकमत से मतलब उस जनता से है जो गांव गांव में बिखरी हुई है तब हम यही कहेंगे कि

(३२०)

"اُچ شکشا کے کشیتر کو بھی اچھوتا" چھوڑنا کیسا اس پر تو پوری طور سے حملہ کرنا ہے۔ اس کی لوہے کی دیواریں توڑ کر اس کے چاروں طرف جھینے کپڑے کا پردہ ڈالنا ہے۔ اب تک اُچ شکشا پانچ فی صدی تک نہیں پہنچ پائی ہے۔ اُسے سو فی صدی تک پہنچانا ہے۔ آسانی سے وہ تبھی پہنچ سکے گی جب اس کی شبداولی اتنی آسان کر دی جائے کہ ساتویں آٹھویں تک پڑھا بالک شبد کے معنی اور بناوٹ سمجھانے پر اس چیز کی پریبھاشا سمجھ جائے، جس کے لئے وہ شبد گڑھا گیا ہے۔ 'سمکون' کو 'ٹھیک کونا' کہئیے، 'ادھک کون' کو 'بڑکونا' کہئیے؛ 'نیون کون' کا 'چھٹ کونا' سے کام چلائیے۔ 'زولوجی' کے لئے 'پرانی شاستر' کہا جا سکتا ہے تو 'پران ودّیا' کیوں نہیں؟ شاستر کو گاؤں والے اور ہی چیز سمجھتے ہیں۔ گاؤں والوں کے لئے ودّیا میں ہی وگیان ہے۔ کچھ ہندی والے 'زولوجی' کو 'پرانک' لکھتے ہیں اس سے پران ودّیا کیا بُرا ہے۔ 'میٹیریلزم' کے لئے 'ماٹی واد' کیوں بُرا؟ "مٹی اوڑھنا، مٹی بچھونا، مٹی میں مل جانا ہوگا" کہہ کر سنتوں نے 'ماٹی واد' کا کھنڈن کیا ہے۔

ڈاکٹر صاحب نے لوک مت کی بات بھی کی ہے۔ اگر لوک مت کا مطلب اسمبلی میں چن کر آئے ہوئے آدمیوں سے ہے تو بیشک ہم نے اس طرف نگاہ ڈالنے کی کوشش نہیں کی۔ اس لئے ہم نہیں کہہ سکتے کہ اس لوک مت کا کتنا حصہ ہمارے ساتھ ہے اور کتنا نہیں۔ لیکن اگر لوک مت سے مطلب اس جنتا سے ہے جو گاؤں گاؤں میں بکھری ہوئی ہے تب ہم یہی کہیں گے کہ

लोकमत हमारे साथ है. हम तो 'वायुयान' को 'चीलगाड़ी', 'दुई चकरी' को 'पैरगाड़ी' और 'वाष्पयान' को 'धुआँगाड़ी' कहने वालों में हैं. यह शब्द हिन्दुस्तानी हैं और इन्हीं को जनता बोलती है.

हिन्दी की परम्परा बेशक बहुत पुरानी है पर वह जीवित है इस वजह से कि उसमें बदलने की जबरदस्त क़ाबलियत है. अशोक के खम्बों पर लिखी बोली हिन्दी की दादी पर दादी है सही पर हर किसी की समझ में नहीं आ सकती. उर्दू भी उसी खम्बों वाली बोली की परम्परा है. उसकी अपनी अलग कोई परम्परा नहीं. हिन्दी में दो सौ ढाई सौ अंगरेज़ी शब्द मिल जाने से उसकी परम्परा को कोई बट्टा नहीं लगता तो उर्दू की परम्परा में चार पांच सौ अरबी फ़ारसी शब्द आ जाने से उर्दू की परम्परा को बट्टा कैसे लग सकता है ? यह तो परम्परा की दुहाई पीटकर जनता को धोके में डालना है और एक नाठीक सिद्धान्त पर लोकमत को तैयार करने की कोशिश करना है. वेदों की भाषा छन्दस से लेकर आज तक की हिन्दुस्तानी बोली में सुमेरी, यूनानी, तुरकी, फ़ारसी, अरबी, पख़तो, चीनी, अंगरेज़ी और न जाने किन किन बोलियों के शब्द मिले हुए हैं. इन शब्दों के मिलने से हमारे देश की बोली की परम्परा को न धक्का लगा है और न वह कमज़ोर हुई है, वह तो उलटी मज़बूत हुई है और अटल खड़ी है. अभिधार्थ और ध्वनितार्थ सैकड़ों बरस पुराने हो सकते हैं पर इन के मुँह चढ़ने में सैकड़ों बरस नहीं लगा करते. कंटरोल के अभिधार्थ और ध्वनितार्थ कुछ महीनों में सबके मुँह चढ़ गए. यही हाल कभी कलक्टर और कभी कमिश्नर का हुआ था. 'सुलाह'

لوک مت ہمارے ساتھ ہے. ہم تو 'وایویان' کو 'چیل گاڑی'، 'دوی چکری' کو 'پیرگاڑی' اور 'واشپیان' کو 'دھواں گاڑی' کہنے والوں میں ہیں. یہ شبد ہندستانی ہیں اور انھیں کو جنتا بولتی ہے.

ہندی کی پرمپرا بے شک بہت پرانی ہے پر وہ جیوت ہے اس وجہ سے کہ اس میں بدلنے کی زبردست قابلیت ہے. اشوک کے کھمبوں پر لکھی بولی ہندی کی دادی پر دادی ہے صحیح پر ہر کسی کی سمجھ میں نہیں آ سکتی. اردو بھی اسی کھمبوں والی بولی کی پرمپرا ہے. اس کی اپنی الگ کوئی پرمپرا نہیں. ہندی میں دو سو ڈھائی سو انگریزی شبد مل جانے سے اس کی پرمپرا کو کوئی بٹا نہیں لگتا تو اردو کی پرمپرا میں چار پانچ سو عربی فارسی شبد آ جانے سے اردو کی پرمپرا کو بٹا کیسے لگ سکتا ہے؟ یہ تو پرمپرا کی دہائی پیٹ کر جنتا کو دھوکے میں ڈالنا ہے اور ایک ناٹھیک سدھانت پر لوک مت کو تیار کرنے کی کوشش کرنا ہے. ویدوں کی بھاشا چھندس سے لے کر آج تک کی ہندستانی بولی میں سمیری، یونانی، ترکی، فارسی، عربی، پختو، چینی، انگریزی اور نہ جانے کن کن بولیوں کے شبد ملے ہوئے ہیں. ان شبدوں کے ملنے سے ہمارے دیش کی بولی کی پرمپرا کو نہ دھکا لگا ہے اور نہ وہ کمزور ہوئی ہے. وہ تو الٹی مضبوط ہوئی ہے اور اٹل کھڑی ہے. ابھیدھارتھ اور دھونتارتھ سیکڑوں برس پرانے ہو سکتے ہیں پر ان کے منہ چڑھنے میں سیکڑوں برس نہیں لگا کرتے. کنٹرول کے ابھیدھارتھ اور دھونتارتھ کچھ مہینوں میں سب کے منہ چڑھ گئے. یہی حال کبھی کلکٹر اور کمشنر کا ہوا تھا. 'سلاح'

शब्द की जड़ जनता की बोली में है. उसको अपनी जगह बना लेने में कोई दिक्कत न होगी.

'धर्म' शब्द को हमने अपनी शब्दावली में धरम लिखा है. इसको लेकर डाक्टर साहब ने एक तूफ़ान खड़ा कर दिया है. 'धम्म' जब 'धर्म' बना होगा तब भी यही हाल हुआ होगा. अगर डाक्टर साहब तुलसी युग में होते तो 'चखपूतरि' शब्द पर तुलसी दास जी की न जाने क्या क्या खबर ली होती. शब्दों का रूप बदलते रहना बोली के जीते जागते होने की निशानी है. उर्दू लिखावट से भी हम जाल, जो, ज्वाद, से, स्वाद, और तो, निकाल देने के हक़ में हैं और 'दस्तख़त' को दसखत लिखना तो शुरू कर ही दिया है. बदलने से भागने का नाम मौत है. हाँ, बदलना आंख खोलकर सोच समझ कर ही चाहिये.

डाक्टर साहब ने यह कह कर पढ़ने वालों को भड़काया है कि हिन्दुस्तानी के प्रचार से हिन्दुस्तान की संस्कृति पर कुल्हाड़ी चलाई जा रही है. अगर उनकी यह बात ठीक है तब तो बुद्ध ने संस्कृत की जगह पाली से काम लेकर डाक्टर साहब के अनुसार हिन्दुस्तान की संस्कृति पर कुल्हाड़ी चलाई थी और महावीर ने संस्कृत की जगह देश भाषा अर्ध मागधी में उपदेश देकर हिन्दुस्तान की संस्कृति को मटियामेट किया था. और इसी तरह और सन्तों ने न मालूम कितने वार संस्कृति पर किये. कबीर के बारे में डाक्टर साहब की क्या राय है यह डाक्टर साहब जानें. कुछ लोगों की नज़रों में तो गान्धीजी भी हिन्दुस्तान की संस्कृति पर कुल्हाड़ी चला रहे थे. पर अफ़सोस हमें इतना ही है कि यह कुल्हाड़ी चलाने

شبد کی جڑ جنتا کی بولی میں ہے. اس کو اپنی جگہ بنا لینے میں کوئی دقت نہ ہوگی.

"دھرم" شبد کو ہم نے اپنی شبداولی میں دھرم لکھا ہے. اس کو لے کر ڈاکٹر صاحب نے ایک طوفان کھڑا کر دیا ہے. "دھرم" جب "دھرم" بنا ہوگا تب بھی یہی حال ہوا ہوگا. اگر ڈاکٹر صاحب تلسی یگ میں ہوتے تو "چکھو پتری" شبد پر تلسی داس جی کی نہ جانے کیا کیا خبر لی ہوتی. شبدوں کا روپ بدلتے رہنا بولی کے جیتے جاگتے ہونے کی نشانی ہے. اردو لکھاوٹ سے بھی ہم ذ، ظ، ض، ث، ص، اور ط، نکال دینے کے حق میں ہیں اور "دستخط" کو دسخط لکھنا تو شروع کر ہی دیا ہے. بدلنے سے بھاگنے کا نام موت ہے. ہاں، بدلنا آنکھ کھول کر سوچ سمجھ کر ہی چاہئیے.

ڈاکٹر صاحب نے یہ کہہ کر پڑھنے والوں کو بھڑکایا ہے کہ ہندستانی کے پرچار سے ہندستان کی سنسکرتی پر کلہاڑی چلائی جا رہی ہے. اگر ان کی یہ بات ٹھیک ہے تب تو بدھ نے سنسکرت کی جگہ پالی سے کام لے کر ڈاکٹر صاحب کے انوسار ہندستان کی سنسکرتی پر کلہاڑی چلائی تھی اور مہاویر نے سنسکرت کی جگہ دیش بھاشا اردھ ماگدھی میں اپدیش دے کر ہندستان کی سنسکرتی کو مٹیامیٹ کیا تھا. اور اسی طرح اور سنتوں نے نہ معلوم کتنے وار سنسکرتی پر کئے. کبیر کے بارے میں ڈاکٹر صاحب کی کیا رائے ہے یہ ڈاکٹر صاحب جانیں. کچھ لوگوں کی نظروں میں تو گاندھی جی بھی ہندستان کی سنسکرتی پر کلہاڑی چلا رہے تھے. پر افسوس ہمیں اتنا ہی ہے کہ یہ کلہاڑی چلانے

की बात का शोर मचाने वाले सर से पैर और अन्दर से बाहर तक जिस संस्कृति में रंगे हुए हैं वह कहां तक हिन्दुस्तानी है ? जिस संस्कृति की डाक्टर साहब दुहाई पीट रहे हैं वह सिर्फ संस्कृत के शब्दों को फैलाने तक न रह जायगी. वह संस्कृत बोलने पर मजबूर करेगी और फिर मनुस्मृति के अनुसार चलने के लिए मजबूर करना अपने आप आजायगा. असल में संस्कृति का कोई सीधा सम्बन्ध खान पान, ओढ़ावे-पहनावे, बोलचाल से नहीं है. इन चीजों में हमेशा सुभीता देखा जाता रहा है और सुभीता ही देखना चाहिए. संस्कृति का असली मतलब सिर्फ इतना होता है कि इनसानों में इनसानियत कितनी आ गई है. जो आदमी आदमियत को समझ गया और आदमी बन गया वही संस्कृत है फिर चाहे वह योरोप का हो, अमरीका का हो या हिन्दुस्तान का.

हम पर षड्यन्त्र रचने का इलजाम भी लगाया गया है. इसका फैसला भी हम पढ़ने वालों पर छोड़ते हैं. इतना ही नहीं यह भी कहा गया है कि हम जो कुछ कर रहे हैं उसमें राष्ट्र का अहित है अगर राष्ट्र के सब लोगों में मेल मिलाप बढ़ाना राष्ट्र का अहित करना है तो हम जरूर अहित कर रहे हैं. अगर सब विद्याओं को आसान करके जनता तक पहुँचाना राष्ट्र का अहित है तो हम जरूर अहित कर रहे हैं अगर सब लोगों के लिए सब तरह की जानकारी सुलभ कर देना राष्ट्र का अहित है तो हम जरूर अहित कर रहे हैं पर इस तरह का अहित करने से हम किसी तरह रुकने वाले नहीं. रहा महात्मा, पंडित, तपस्वीपने का ताना सो हमें इसका जवाब देते शर्म आती है.

ی بات کا شور مچانے والے سر سے پیر اور اندر سے باہر تک جس سنسکرتی میں رنگے ہوئے ہیں وہ کہاں تک ہندستانی ہے؟ جس سنسکرتی کی ڈاکٹر صاحب دہائی پیٹ رہے ہیں وہ صرف سنسکرت کے شبدوں کو پھیلانے تک نہ رہ جائے گی۔ وہ سنسکرت بولنے پر مجبور کرے گی اور پھر منوسمرتی کے انوسار چلنے کے لئے مجبور کرنا اپنے آپ آجائے گا۔ اصل میں سنسکرتی کا کوئی سیدھا سمبندھ کھان پان، اوڑھاوے پہناوے، بول چال سے نہیں ہے۔ ان چیزوں میں ہمیشہ سبھیتا دیکھا جاتا رہا ہے اور سبھیتا ہی دیکھنا چاہیئے۔ سنسکرتی کا اصلی مطلب صرف اتنا ہوتا ہے کہ انسانوں میں انسانیت کتنی آگئی ہے۔ جو آدمی آدمیت کو سمجھ گیا اور آدمی بن گیا وہی سنسکرت ہے پھر چاہے وہ یورپ کا ہو، امریکہ کا ہو یا ہندستان کا۔

ہم پر شڈینتر رچنے کا الزام بھی لگایا گیا ہے۔ اس کا فیصلہ بھی ہم پڑھنے والوں پر چھوڑتے ہیں۔ اتنا ہی نہیں یہ بھی کہا گیا ہے کہ ہم جو کچھ کر رہے ہیں اس میں راشٹر کا اہت ہے۔ اگر راشٹر کے سب لوگوں میں میل ملاپ بڑھانا راشٹر کا اہت کرنا ہے تو ہم ضرور اہت کر رہے ہیں۔ اگر سب ودیاؤں کو آسان کرکے جنتا تک پہنچانا راشٹر کا اہت ہے تو ہم ضرور اہت کر رہے ہیں اگر سب لوگوں کے لئے سب طرح کی جانکاری سلبھ کر دینا راشٹر کا اہت ہے تو ہم ضرور اہت کر رہے ہیں پر اس طرح کا اہت کرنے سے ہم کسی طرح رکنے والے نہیں۔ رہا مہاتما، پنڈت، تپسوی کا تانا سو ہمیں اس کا جواب دیتے شرم آتی ہے۔

डाक्टर साहब की बातों के जवाब में और बहुत कुछ कहा जा सकता है, वह सब न कहकर हम इतना ही कहेंगे कि जो भाई और बहन इस सारे सवाल पर गंभीरता के साथ विचार करना चाहते हैं वह इस शब्दावली को पढ़ें और खुद फ़ैसला करें. हमें विश्वास है कि जिस भाषा को हिन्दुस्तान के देहातों में बसने वाले करोड़ों आदमी समझ सकेंगे और अपना सकेंगे, वही हमारी राष्ट्र भाषा होगी और वही सरकार को माननी होगी.

भगवानदीन

नई दिल्ली ६-६-४६

ڈاکٹر صاحب کی باتوں کے جواب میں اور بہت کچھ کہا جا سکتا ہے، وہ سب نہ کہہ کر ہم اتنا ہی کہیں گے کہ جو بھائی اور بہن اس سارے سوال پر گمبھیرتا کے ساتھ وچار کرنا چاہتے ہیں وہ اس شبداولی کو پڑھیں اور خود فیصلہ کریں۔ ہمیں وشواس ہے کہ جس بھاشا کو ہندستان کے دیہاتوں میں بسنے والے کروڑوں آدمی سمجھ سکیں گے اور اپنا سکیں گے، وہی ہماری راشٹر بھاشا ہوگی اور وہی سرکار کو ماننی ہوگی۔

بھگوان دین

نئی دلی ۹-۹-۴۹

हिन्दू मुस्लिम एकता

पंडित सुन्दरलाल के

चार लैकचर, जो उन्होंने

सेन्ट्रल कन्सलियेटरी बोर्ड ग्वालियर

की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

—मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

ہندو مسلم ایکتا

پنڈت سندرلال کے

چار لیکچر، جو انھوں نے

سینٹرل کینسیلیٹری بورڈ گوالیر

کی دعوت پر گوالیر میں دیئے

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے

کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے

مینیجر "نیا ہند"

۴۸ بائی کا باغ الہ آباد

हमारी राय

एक हिन्दुस्तानी चिट्ठी.

एक चिट्ठी हमें मिली है उसे हम ज्यों की त्यों छाप रहे हैं. छाप इसलिए रहे हैं कि वह हिन्दुस्तानी में है. अगर यही चिट्ठी हम लिखते तो कुछ शब्द बदल देते, जैसे,

	अथवा की जगह	या	
मालूम होना चाहिये	,,	,,	जानना चाहिये
राष्ट्र भाषा	,,	,,	जनमनी बोली
दुश्मनों	,,	,,	बैरीयों
का निवासी	,,	,,	बासी
सदैव	,,	,,	सदा
घून (खून)	,,	,,	लोहू
Office	,,	,,	काम घर
ज्यादह	,,	,,	बहुत
क्षमा	,,	,,	छमा
ताक़त	,,	,,	बल

श्रीमान्

हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा के पत्तपाती अथवा हिन्दी भाषा द्रोहियों और देशद्रोहियों, सुन्दर लाल, ताराचन्द्र, भगवानदीन, बिश्म्भरनाथ, इत्यादि। तुम्हें मालुम होना चाहिये कि मैं हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहता हूँ और हिन्दी के दुश्मनों को देश का सबसे बड़ा शत्रु समझता हूँ।

मैं लखनऊ का निवासी हूँ और सदैव लखनऊ में रहता हूँ। तीन दिन के लिये मैं कानपुर आया हूँ। एक दिन एक सज्जन के यहाँ मैंने "नया हिन्द" देखा. "नया हिन्द" को पढ़ कर मेरा घून खौलने लगा। इसलिये मैं आप को चुनौती देता हूँ कि आपके Office में आग लगवा दूंगा इसलिये कृपा करके आप ज्यादा हिन्दी का

ہماری رائے

ایک ہندستانی چٹھی

ایک چٹھی ہمیں ملی ہے اُسے ہم جیوں کی تیوں چھاپ رہے ہیں. چھاپ اس لئے رہے ہیں کہ وہ ہندستانی میں ہے. اگر یہی چٹھی ہم لکھتے تو کچھ شبد بدل دیتے جیسے،

	اتھوا کی جگہ	یا	
معلوم ہونا چاہیئے	,,	,,	جاننا چاہیئے
راشٹر بھاشا	,,	,,	جنمنی بولی
دشمنوں	,,	,,	بیریوں
کا نواسی	,,	,,	باسی
سدیو	,,	,,	سدا
گھون (خون)	,,	,,	لوہو
Office	,,	,,	کام گھر
زیادہ	,,	,,	بہت
کشما	,,	,,	چھما
طاقت	,,	,,	بل

شری مان

ہندستانی راشٹر بھاشا کے پکشپاتی اتھوا ہندی بھاشا دروہیوں اور دیش دروہیوں، سندر لال، تاراچندر، بھگوان دین، وشمبھر ناتھ، اتیادی! تمہیں معلوم ہونا چاہیئے کہ میں ہندی کو راشٹر بھاشا بنانا چاہتا ہوں اور ہندی کے دشمنوں کو دیش کا سب سے بڑا شترو سمجھتا ہوں۔

میں لکھنؤ کا نواسی ہوں اور سدیو لکھنؤ میں رہتا ہوں تین دن کے لئے میں کانپور آیا ہوں! ایک دن ایک سجن کے یہاں میں نے "نیا ہند" دیکھا. "نیا ہند" کو پڑھ کر میرا گھون

विरोध न करिये। आपने हमारे प्रिय नेताओं को जो इतनी बुरी २ बातें लिखी हैं इससे मैं अपने को बस में नहीं कर पा रहा हूँ. और मैं तुम्हें चुनौती दे रहा हूँ कि भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी होगी तुम अपनी पूरी ताक़त लगा दो तब भी हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती। भारत को सिर्फ़ एक का डर है और किसी का नहीं है. तुम लोगों को तो पैर के नीचे रखता हूँ।

मेरी सदैव से इच्छा है हिन्दी राष्ट्रभाषा हो। हिन्दी के पालन के ही जुग २ जियें।

आगे मैं कुछ भी नहीं लिखना चाहता हिन्दी का विरोध देखकर मैंने यह पत्र लिखा है क्षमा करना, कोई भी भारत में ऐसा स्थान न होगा जहाँ हिन्दी न होगी। अन्त में मैं फिर तुम्हें चुनौती देता हूँ कि सावधान हो और अपनाOfficeबचाओ अपनी जान की रक्षा करो हिन्दी से विद्रोह करके नर्क में भी स्थान तुम्हें न मिलेगा।

यह पत्र निजी है और मैं हूँ लेखक तारासिंह

अगर इस चिट्ठी में नाम न दिया होता तो हम यह चिट्ठी न छापते, क्योंकि गुमनाम चिट्ठीयों का हम आदर नहीं करते. अगर चिट्ठी पर पूरा पता भी होता, तब भी हम चिट्ठी छापने की जल्दी न करते. पहले सीधे लिखने वाले को ही लिखते. उसकी तसल्ली करने के बाद और उस के हाँ करने पर ही हम इस चिट्ठी को अपने परचे में जगह देते.

यह चिट्ठी जनता की बोली में है. इसी को हम हिन्दुस्तानी कहते हैं और इसी को हम चिट्ठी लिखने वाले के शब्दों में 'राष्ट्रभाषा' बनाना चाहते हैं.

भगवानदीन

کھولنے لگا! اس لئے میں آپ کو چنوتی دیتا ہوں کہ آپ کے Office میں آگ لگوا دوں گا اس لئے سنبھل جایا کر کے آپ زیادہ ہندی کا ورودھ نہ کریئے! آپ نے ہمارے پریہ نیتاؤں کو جو اتنی بری بری باتیں لکھی ہیں اس سے میں اپنے کو بس میں نہیں کر پا رہا ہوں۔ اور میں تمہیں چنوتی دے رہا ہوں کہ بھارت کی راشٹر بھاشا ہندی ہوگی تم اپنی پوری طاقت لگا دو تب بھی ہندستانی راشٹر بھاشا نہیں ہو سکتی! بھارت کو صرف ایک کا ڈر ہے اور کسی کا نہیں ہے۔ تم لوگوں کو تو پیر کے نیچے رکھتا ہوں!

میری سدیو سے اچھا ہے ہندی راشٹر بھاشا ہو! ہندی کے پالن کے ہی جگ جگ جئیں!

آگے میں کچھ بھی نہیں لکھنا چاہتا ہندی کا ورودھ دیکھ کر میں نے یہ پتر لکھا ہے کشما کرنا، کوئی بھی بھارت میں ایسا استھان نہ ہوگا جہاں ہندی نہ ہوگی! انت میں میں پھر تمہیں چنوتی دیتا ہوں کہ ساودھان ہو اور اپنا Office بچاؤ اپنی جان کی رکشا کرو ہندی سے ودروہ کر کے نرک میں بھی استھان تمہیں نہ ملے گا۔

یہ پتر نجی ہے اور میں ہوں لیکھک — تارا سنگھ

اگر اس چٹھی میں نام نہ دیا ہوتا تو ہم یہ چٹھی نہ چھاپتے، کیوں کہ گمنام چٹھیوں کا ہم آدر نہیں کرتے۔ اگر چٹھی پر پورا پتہ بھی ہوتا، تب بھی ہم چٹھی چھاپنے کی جلدی نہ کرتے۔ پہلے سیدھے لکھنے والے کو ہی لکھتے۔ اس کی تسلی کرنے کے بعد اور اس کے ہاں کرنے پر ہی ہم اس چٹھی کو اپنے پرچے میں جگہ دیتے۔

یہ چٹھی جنتا کی بولی میں ہے۔ اسی کو ہم ہندستانی کہتے ہیں اور اسی کو ہم چٹھی لکھنے والے کے شبدوں میں 'راشٹر بھاشا' بنانا چاہتے ہیں۔

— بھگوان دین

और हिन्दी भी अभिन्न हैं. संस्कृत के 'मातृ' को 'माता' कर देने से हिन्दी हिन्दुस्तानी बन जाती है. हम तो यह मानते हैं कि हिन्दुस्तानी उर्दू, हिन्दी, गुजराती, मराठी, बंगला, आसमी, पंजाबी, यहाँ तक कि नैपाली और काश्मीरी से भी अभिन्न है. इन सब बोलियों के कुछ शब्दों के हेर फेर से वह बोलियाँ हिन्दुस्तानी हो जाती हैं. हम चाहते तो यह हैं कि हिन्दुस्तानी धीरे-धीरे इसी तरह तामिल, तेलिगू, कन्नड और मलयालम से भी 'अभिन्न' हो जाय. वह इन सब का संगम हो.

डाक्टर साहब के लेख में संस्कृत भरी हिन्दी से जितना मोह है उतना अगर साइंस से भी होता तो इसकी शकल ही दूसरी हो जाती. डाक्टर साहब जिन शब्दों से नाराज़ हैं उनकी जगह अगर दूसरे शब्द सुझा कर हमें एहसान के बोझे से दबा देते तो हम उस बोझे को हंसते हंसते सह लेते और हमारा ख़याल है कि डाक्टर साहब ऐसा करने से ख़ुद भी हलके हो गए होते.

अब हम एक एक कर अपने उन शब्दों को लेते हैं जिन पर डाक्टर साहब को ख़ास एतराज़ है.

हमारे शब्द 'भूबारता' पर डाक्टर साहब ने जो एतराज़ किया है वह जानदार है. उसका जवाब देने से पहले दो शब्द कहने होंगे.

नाम वाले शब्द दो तरह के होते हैं—मानीदार और बे माना. बे मानी शब्द पहले बनते हैं चूंकि वह आसान होते हैं. मानीदार शब्द पीछे बनते हैं क्योंकि वह ज़रा मुशकिल होते हैं. उनको बनाने से पहले थोड़े सोच विचार की ज़रूरत होती है. मानीदार शब्दों के

اور ہندی بھی ابھن ہیں۔ سنسکرت کے 'ماتر' کو 'ماتا' کر دینے سے ہندی ہندستانی بن جاتی ہے۔ ہم تو یہ مانتے ہیں کہ ہندستانی اردو، ہندی، گجراتی، مراٹھی، بنگلہ، آسامی، پنجابی، یہاں تک کہ نیپالی اور کشمیری سے بھی ابھن ہے۔ ان سب بولیوں کے کچھ شبدوں کے ہیر پھیر سے وہ بولیاں ہندستانی ہو جاتی ہیں۔ ہم چاہتے تو یہ ہیں کہ ہندستانی دھیرے دھیرے اسی طرح تامل، تیلگو، کنڑ اور ملیالم سے بھی 'ابھن' ہو جائے۔ وہ ان سب کا سنگم ہو۔

ڈاکٹر صاحب کے لیکھ میں سنسکرت بھری ہندی سے جتنا موہ ہے اتنا اگر سائنس سے بھی ہوتا تو اس کی شکل ہی دوسری ہو جاتی۔ ڈاکٹر صاحب جن شبدوں سے ناراض ہیں ان کی جگہ اگر دوسرے شبد سجھا کر ہمیں احسان کے بوجھے سے دبا دیتے تو ہم اس بوجھے کو ہنستے ہنستے سہہ لیتے اور ہمارا خیال ہے کہ ڈاکٹر صاحب ایسا کرنے سے خود بھی ہلکے ہو گئے ہوتے۔

اب ہم ایک ایک کر کے اپنے ان شبدوں کو لیتے ہیں جن پر ڈاکٹر صاحب کو خاص اعتراض ہے۔

ہمارے شبد 'بھوبھارتا' پر ڈاکٹر صاحب نے جو اعتراض کیا ہے وہ جاندار ہے۔ اس کا جواب دینے سے پہلے دو شبد کہنے ہوں گے۔

نام والے شبد دو طرح کے ہوتے ہیں — معنی دار اور بے معنی۔ بے معنی شبد پہلے بنتے ہیں چونکہ وہ آسان ہوتے ہیں۔ معنی دار شبد پیچھے بنتے ہیں کیونکہ وہ ذرا مشکل ہوتے ہیں۔ ان کو بنانے سے پہلے تھوڑے سوچ وچار کی ضرورت ہوتی ہے معنی دار شبدوں کے

बनाने के पीछे कला रहती है, मतलब रहता है. सोच विचार की थोड़ी सी मेहनत से हमेशा के लिये सब लोगों को आसानी हो जाती है. मिसाल के लिये 'बबूल' या 'कीकर' शब्द को ले लीजिए. यह बे मानी हैं. काम चलाने के लिए जल्दी में गढ़ लिये गए हैं. अब यह मालूम हुआ कि इसकी छाल से दांत मजबूत हो जाते हैं तो इसका नाम वज्रदंती रख लिया गया. वज्रदंती मानी दार शब्द है. पर लोगों के मुंह चढ़े हुए हैं बबूल और कीकर, क्योंकि वह पहले बने हैं. अब वज्रदंती शब्द से यह फ़ायदा है कि इसके याद कर लेने से बबूल की खासियत भी याद हो जाती है.

अब 'भूगोल' शब्द को लीजिये. ज्योग्राफ़ी के लिये यह शब्द आसानी से गढ़ लिया गया और सब के मुंह चढ़ गया. स्कूल में जब मैंने भूगोल पढ़ना शुरू किया तब सवाल उठा भूगोल किसे कहते हैं ? जवाब में समझाया गया कि भूगोल उसे कहते हैं जिसमें भू सम्बन्धी तरह तरह की बातें समझाई गई हों. वह बचपन का जवाब मुझे याद आ गया और मैंने ज्योग्राफ़ी के लिये भूगोल से जियादा मानीदार शब्द 'भू बारता' लिख दिया. न जाने डाक्टर साहब को यह इतना बुरा क्यों लगा ! इससे तो हमेशा के लिये अनगिनत बच्चों के भूगोल की परिभाषा रटने की दिक़्क़त बच जाती है. हाँ, डाक्टर साहब 'भूबारता' की जगह हमें 'भूकथा' सुझा देते तो हम उनका एहसान मानते. 'भूकथा' तोल में भूगोल जितना है.

'यूनियन' के लिये 'एक' से बना 'इकावा' शब्द में वह सब भाव क्यों शामिल नहीं हो सकते जो यूनियन में ? अंगरेजी में आए

بنانے کے پیچھے کلا رہتی ہے۔ مطلب رہتا ہے۔ سوچ وچار کی تھوڑی سی محنت سے ہمیشہ کے لئے سب لوگوں کو آسانی ہو جاتی ہے۔ مثال کے لئے 'ببول' یا 'کیکر' شبد کو لے لیجئے۔ یہ بے معنی ہیں۔ کام چلانے کے لئے جلدی میں گڑھ لئے گئے ہیں۔ جب یہ معلوم ہوا کہ اس کی چھال سے دانت مضبوط ہو جاتے ہیں تو اس کا نام وجردنتی رکھ لیا گیا۔ وجردنتی معنی دار شبد ہے۔ پر لوگوں کے منہ چڑھے ہوئے ہیں ببول اور کیکر، کیونکہ وہ پہلے بنے ہیں۔ اب وجردنتی شبد سے یہ فائدہ ہے کہ اس کے یاد کر لینے سے ببول کی خاصیت بھی یاد ہو جاتی ہے۔

اب 'بھوگول' شبد کو لیجئے۔ جیوگرفی کے لئے یہ شبد آسانی سے گڑھ لیا گیا اور سب کے منہ چڑھ گیا۔ سکول میں جب میں نے بھوگول پڑھنا شروع کیا تب سوال اٹھا بھوگول کسے کہتے ہیں؟ جواب میں سمجھایا گیا کہ بھوگول اسے کہتے ہیں جس میں بھو سمبندھی طرح طرح کی باتیں سمجھائی گئی ہوں۔ وہ بچپن کا جواب مجھے یاد آ گیا اور میں نے جیوگرفی کے لئے بھوگول سے زیادہ معنی دار شبد 'بھو بارتا' لکھ دیا۔ نہ جانے ڈاکٹر صاحب کو یہ اتنا برا کیوں لگا! اس سے تو ہمیشہ کے لئے ان گنت بچوں کے بھوگول کی پریبھاشا رٹنے کی دقت بچ جاتی ہے۔ ہاں، ڈاکٹر صاحب 'بھوبارتا' کی جگہ ہمیں 'بھوکتھا' سجھا دیتے تو ہم ان کا احسان مانتے۔ 'بھوکتھا' تول میں بھوگول جتنا ہے۔

'یونین' کے لئے 'ایک' سے بنا 'اکاوا' شبد میں وہ سب بھاؤ کیوں شامل نہیں ہو سکتے جو یونین میں؟ انگریزی میں آئے

दिन नए शब्द बनते रहते हैं. पुराने शब्द नए मानों में काम में आने लगते हैं. मिसाल के लिये 'इन्टरेस्ट' शब्द के नये मानी हैं, गर्भवती कन्ट्रोल, राशन और परमिट शब्दों के पीछे न जाने क्या-क्या भाव छिपकर बैठे हैं. हमारी राय में तो 'इकावा' में भी अनगिनत भावों की समाई है. हिन्दी वाले "यूनियन" को अकसर 'संघ' कहते हैं. संघ शब्द आज कल तो हिन्दुस्तान में कुछ बदनाम सा हो रहा है. अगर इसी छोटे से 'संघ' शब्द में "राज शास्त्र के बड़े बड़े सिद्धान्त समा सकते हैं" तो 'इकावे' में क्यों नहीं ? कुछ हिन्दी वालों ने 'फ्रेडरेशन' के लिये 'संधान' शब्द लिया है. अपनी शब्दावली में हम "फ्रेडरेशन" के लिये 'संघ' शब्द काम में लाए हैं.

मीटिंग के लिये 'सभा' छोड़कर हमने 'मिलनी' शब्द इसलिये अपनाया है कि 'मीटिंग' जैसे शब्द अंगरेजी में बहुत से हैं जैसे कमेटी, गैदरिंग, असेम्बली, काउंसिल वग़ैरा. 'सभा' शब्द का बायकाट नहीं किया गया. 'कान्सटीटुएन्ट असेम्बली' के लिए हमने शब्दावली के १६ सफ़े पर 'विधान सभा' लिखा है. मीटिंग की जोड़ का 'मिलनी' अब समधियों ही की 'मिलनी' न रह जायगी, सभा का रूप भी लेलेगी. इससे 'मिलनी' शब्द की सुन्दरता बढ़ेगी और उपयोगिता भी. एक शब्द के दो अर्थ होने से कोई धोका नहीं होता है. 'नीमजान' कहने से कोई 'नीम' का दरख़्त नहीं समझ लेता.

मुशकिल शब्द 'प्रतिनिधि' और 'प्रतिनिधित्व' अभी गाँव तक नहीं पहुँच पाए. हाँ, डाक्टर साहब जिस जगह हैं उस जगह से यह शब्द गाँव तक लुढ़काए जा सकते हैं और गाँव वालों के सिर

دن نئے شبد بنتے رہتے ہیں۔ پُرانے شبد نئے معنوں میں کام میں آنے لگتے ہیں۔ مثال کے لیے 'انٹرسٹ' شبد کے نئے معنی ہیں، گربھوتی۔ کنٹرول راشن اور پرمٹ شبدوں کے پیچھے نہ جانے کیا کیا بھاؤ چھپ کر بیٹھے ہیں۔ ہماری رائے میں تو 'اِکاوا' میں بھی ان گنت بھاؤں کی سمائی ہے۔ ہندی والے "یونین" کو اکثر 'سنگھ' کہتے ہیں۔ سنگھ شبد آج کل تو ہندستان میں کچھ بدنام سا ہو رہا ہے۔ اگر اسی چھوٹے سے 'سنگھ' شبد میں راج شاستر کے بڑے بڑے سدھانت سما سکتے ہیں" تو 'اِکاوے' میں کیوں نہیں؟ کچھ ہندی والوں نے 'فیڈریشن' کے لیے 'سنگھان' شبد لیا ہے۔ اپنی شبداولی میں ہم "فیڈریشن" کے لیے 'سنگھ' شبد کام میں لائے ہیں۔

میٹنگ کے لیے 'سبھا' چھوڑ کر ہم نے 'ملنی' شبد اس لیے اپنایا ہے کہ 'میٹنگ' جیسے شبد انگریزی میں بہت سے ہیں جیسے کمیٹی، گیدرنگ، اسمبلی، کاؤنسل وغیرہ۔ 'سبھا' شبد کا بائیکاٹ نہیں کیا گیا۔ کانسٹی ٹیونٹ اسمبلی کے لیے ہم نے شبداولی کے ۱۶ صفحے پر 'ودھان سبھا' لکھا ہے۔ میٹنگ کی جوڑ کا 'ملنی' اب سمدھیوں ہی کی 'ملنی' نہ رہ جائے گی، سبھا کا روپ بھی لے لیگی۔ اس سے 'ملنی' شبد کی سندرتا بڑھے گی اور اُپیوگیتا بھی۔ ایک شبد کے دو ارتھ ہونے سے کوئی دھوکا نہیں ہوتا ہے۔ 'نیم جان' کہنے سے کوئی 'نیم' کا درخت نہیں سمجھ لیتا۔

مشکل شبد 'پرتی نیدھی' اور 'پرتی نیدھتو' ابھی گاؤں تک نہیں پہنچ پائے ہاں، ڈاکٹر صاحب جس جگہ ہیں اس جگہ سے وہ شبد گاؤں تک لڑھکائے جا سکتے ہیں اور گاؤں والوں کے سر

थोपे जासकते हैं. वह उनका कैसा स्वागत करेंगे, यह डाक्टर साहब हम से अच्छा जानते हैं. प्रतिनिधि और प्रतिनिधित्व हिन्दुस्तानी जनता के एक फ़ी सदी लोगों के मुंह चढ़ा हो तो चढ़ा हो, पर निन्नानवे फ़ी सदी अभी इसको नहीं जानते. कोई कह सकता है कि आप के 'ओरिया' को तो एक फ़ीसदी भी नहीं जानते. बेशक नहीं जानते, पर 'ओरिया' को पढ़े लिखे पलक मारते याद कर लेंगे. डाक्टर साहब ने भी चट समझ लिया और यह भी बता दिया कि यह ओर से बनाया गया है. बाक़ी निन्नानवे फ़ी सदी को भी सिर्फ़ एक बार समझाने की जरूरत होगी.

"इनकायरी" के लिये हम ने "पूछ ताछ" लिखा है. इस पूछ ताछ की हमने खोज बीन की. पर हमारी पूछ ताछ का यही नतीजा निकला कि इनकायरी के लिए 'पूछ ताछ' घिसा घिसाया शब्द है. गाँव तक जा पहुँचा है. 'तहक़ीक़ात' से कन्धे से कन्धा मिला कर चल सकेगा. 'तहक़ीक़ात' गाँव में 'तहकीकात' हो चुका है.

'कंसोलीडेट' के लिये हमने 'ठोसियाना' और 'मुठियाना' दो शब्द दिये हैं. और 'कंसोलीडेटेड फ़ंड' के लिये 'मूठकोष' शब्द दिया है. हमने जहाँ तक हो सका ऐसे शब्द दिये हैं जिनसे आसानी से ठीक मतलब तक पहुँचा जा सके. 'सालिड' के लिये 'ठोस' शब्द काम में आता है. अब रही ठोसियाना क्रिया, इसके बारे में हम आगे लिख रहे हैं.

'जुग़राफ़िया' के 'ग़' के नीचे की बिन्दी उड़ाने में हमें खुशी होगी. 'ग्राफ़' का 'ग़्राफ़' कैसा ! हिन्दी वालों की तरह उर्दू वालों को भी यह बीमारी है कि वह जान बूझ कर शब्दों को अरबी

تھوپے جاسکتے ہیں ۔ وہ اُن کا کیسا سواگت کریں گے ۔ یہ ڈاکٹر صاحب ہم سے اچھا جانتے ہیں ۔ پرتی ندھی اور پرتی ندھتو ہندستانی جنتا کے ایک فی صدی لوگوں کے منہ چڑھا ہو تو چڑھا ہو، پر ننانوے فی صدی ابھی اس کو نہیں جانتے ۔ کوئی کہہ سکتا ہے کہ آپ کے ''اوریا'' کو تو ایک فی صدی بھی نہیں جانتے، بیشک نہیں جانتے، پر ''اوریا'' کو پڑھے لکھے پلک مارتے یاد کرلیں گے ۔ ڈاکٹر صاحب نے بھی چٹ سمجھ لیا اور یہ بھی بتادیا کہ یہ اودھ سے بنایا گیا ہے ۔ باقی ننانوے فی صدی کو بھی صرف ایک بار سمجھانے کی ضرورت ہوگی ۔

''اِنکوائری'' کے لئے ہم نے ''پوچھ تاچھ'' لکھا ہے ۔ اس پوچھ تاچھ کی ہم نے کھوج بین کی ۔ پر ہماری پوچھ تاچھ کا یہی نتیجہ نکلا کہ اِنکوائری کے لئے 'پوچھ تاچھ' گھسا گھسایا شبد ہے ۔ گاؤں تک جا پہنچا ہے ۔ 'تحقیقات' سے کندھے سے کندھا ملاکر چل سکے گا ۔ 'تحقیقات' گاؤں میں 'تحکیکات' ہوچکا ہے ۔

'کنسولیڈیٹ' کے لئے ہم نے 'ٹھوسیانا' اور 'مٹھیانا' دو شبد دیئے ہیں ۔ اور 'کنسولیڈیٹڈ فنڈ' کے لئے 'موٹھ کوش' شبد دیا ہے ۔ ہم نے جہاں تک ہوسکا ایسے شبد دیئے ہیں جن سے آسانی سے ٹھیک مطلب تک پہنچا جاسکے ۔ 'سالڈ' کے لئے 'ٹھوس' شبد کام میں آتا ہے ۔ اب رہی ٹھوسیانا کریا، اسکے بارے میں ہم آگے لکھ رہے ہیں ۔

'جغرافیہ' کے 'غ' کے نیچے کی بندی اُڑانے میں ہمیں خوشی ہوگی ۔ 'گراف' کا 'غراف' کیسا! ہندی والوں کی طرح اردو والوں کو بھی یہ بیماری ہے کہ وہ جان بوجھ کر شبدوں کو عربی

फ़ारसी का जामा पहनाना चाहते हैं. 'जुग्राफ़ी' का हिन्दुस्तानी शब्द बनाने के लिये 'जुग्राफ़िया' बिलकुल ठीक है, 'जुग़राफ़िया' नहीं ! उर्दू वाले और भी ऐसी भूलें करते हैं 'चाक' से बने 'चाकू' को 'चाक़ू' कहते हैं. वह फ़ारसी के 'कुसती' शब्द को 'कुशती' कहते हैं. जब कि 'कुसतन' और 'कुशतन' दो अलग अलग शब्द हैं. उर्दू वाले हिन्दी के 'संकल्प' को 'शंकल्प' कह कर फ़ारसी के जामे में देखने के आदी हो गए हैं. हिन्दी वाले कम नहीं. वह हिन्दी के सीधे सादे 'इच्छा' शब्द को ''इष्चा'' कह कर लोगों पर यह असर डालेंगे कि उनको संस्कृत भी आती है. हिन्दुस्तानी शब्द 'जात' को वह 'ज़ात' लिखेंगे. इन सब मिसालों से पढ़ने वाले यह न समझें कि हम 'फ़,' क़, ख़, ज़ जैसी आवाज़ों के खिलाफ़ हैं.

'सब सेक्शन' के लिये डाक्टर साहब का बताया हुआ 'उपखंड' हमारे 'छुटकाट' से बेशक जियादा अच्छा है. पर हमें उपखंड नहीं सूझ सकता था. हमें सूझता भी तो सूझता 'छुटखंड'.

हमने जो 'रजियाना' 'निरबलयाना' जैसी क्रियाएँ तैयार की हैं उनके बारे में शब्दावली के साथ लगे 'दो शब्द,' में काफ़ी कुछ कह दिया गया है. ऐसी क्रियाएँ बनाकर हम हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों के लिये और दुनिया के दूसरे मुलकों के लिये हिन्दुस्तानी को आसान कर देना चाहते हैं. 'करना' 'होना' लगाकर क्रियाएँ बनाना ठीक नहीं. 'गरम करना' की जगह 'गरमाना' आसान है. 'गरम कर लो' यानी 'गरमा लो.'

अंगरेज़ी के कानफ़िस्केट शब्द में भाव यह है 'इस चीज़ को ज़ब्त करके राज की बनालो' यह सारा भाव राज से बने

فارسی کا جامہ پہنانا چاہتے ہیں۔ 'جیوگرافی' کا ہندستانی شبد بنانے کے لئے 'جگرافیہ' بالکل ٹھیک ہے، 'جغرافیہ' نہیں! اردو والے اور بھی ایسی بھولیں کرتے ہیں 'چاک' سے بنے 'چاکو' کو 'چاقو' کہتے ہیں۔ وہ فارسی کے 'کستی' شبد کو 'کشتی' کہتے ہیں۔ جبکہ 'کستن' اور 'کشتن' دو الگ الگ شبد ہیں۔ اردو والے ہندی کے 'سنکلپ' کو 'شنکلپ' کہکر فارسی کے جامے میں دیکھنے کے عادی ہوگئے ہیں۔ ہندی والے کم نہیں۔ وہ ہندی کے سیدھے سادے 'اچھا' شبد کو ''اِکشا'' کہکر لوگوں پر یہ اثر ڈالیں گے کہ ان کو سنسکرت بھی آتی ہے۔ ہندستانی شبد 'جات' کو وہ 'ذات' لکھیں گے۔ ان سب مثالوں سے پڑھنے والے یہ نہ سمجھیں کہ ہم 'ف'، ق، خ، ز، جیسی آوازوں کے خلاف ہیں۔

'سب سکشن' کے لئے ڈاکٹر صاحب کا بتایا ہوا 'اپ کھنڈ' ہمارے 'چھٹ کاٹ' سے بیشک زیادہ اچھا ہے۔ پر ہمیں اپ کھنڈ نہیں سوجھ سکتا تھا۔ ہمیں سوجھتا بھی تو سوجھتا 'چھٹ کھنڈ'۔

ہم نے جو 'رجیانا' 'نربلیانا' جیسی کریائیں تیار کی ہیں ان کے بارے میں شبداولی کے ساتھ لگے 'دو شبد' میں کافی کچھ کہہ دیا گیا ہے۔ ایسی کریائیں بناکر ہم ہندستان کے دوسرے صوبوں کے لئے اور دنیا کے دوسرے ملکوں کے لئے ہندستانی کو آسان کر دینا چاہتے ہیں۔ 'کرنا'، 'ہونا' لگاکر کریائیں بنانا ٹھیک نہیں۔ 'گرم کرنا' کی جگہ 'گرمانا' آسان ہے۔ 'گرم کرلو' یعنی 'گرمالو'۔

انگریزی کے کانفسکیٹ شبد میں بھاؤ یہ ہے 'اس چیز کو ضبط کرکے راج کی بنالو' یہ سارا بھاؤ راج سے بنے

'रजियाना' शब्द में समा जाता है. एक बार समझने पर हमेशा के लिये दिल पर जम सकता है. हिन्दुस्तानी में 'हथियाना' 'लतियाना' 'चपतियाना' उसी जैसे शब्द मौजूद भी हैं. उन से पंडित मौलवी दोनों ही काम लेते हैं.

हमारी शब्दावली को लेकर डाक्टर साहब ने जनता को आगाह किया है कि हिन्दुस्तानी की आड़ में एक "कृत्रिम" भाषा तैयार की जा रही है यानी एक बनावटी भाषा गढ़ी जा रही है. बनावटी भाषा के लिये 'कृत्रिम" भाषा कहना खुद एक "कृत्रिम" बोली गढ़ना है. इसे जाने दीजिये. नई बोली गढ़ना कोई बुरी बात नहीं. योरोप वाले एक से जियादा बोलियाँ गढ़ने की हिम्मत कर चुके हैं. नई गढ़ी बोली 'एस्पेरेन्टो' में फिर जान डाली जा रही है, वह आखिरी साँस ले रही थी. इस बीसवीं सदी में जो भी बोली गढ़ी जायगी वह अगर काफ़ी आसान न हुई तो बोलियों के मैदान में न टिक पायगी. बोली गढ़ना बुरा नहीं. पर हम वैसा नहीं कर रहे हैं और न हम अपने में इतनी क़ाबलियत पाते हैं. हाँ, कुछ शब्दों से शब्द जरूर गढ़ रहे हैं. शब्द गढ़ना बोली गढ़ना नहीं होता. शब्द गढ़ने का काम हिन्दी उर्दू वाले भी कर रहे हैं. बग़ैर नए शब्द गढ़े हम सरकार के दफ्तरों पर छाई अंगरेजी से लोहा नहीं ले सकते; उसे अपने घर भगा देने की बात तो सोच ही नहीं सकते. मिसाल के लिये "वेटिंग रूम" के लिये हिन्दी वालों ने गढ़ा मुगलसराय में 'विश्रामालय' और इलाहाबाद में 'प्रतीक्षालय.' इन दोनों से डर कर वेटिंग रूम नहीं भागेगा. वह भागेगा हमारे गढ़े "आराम घर" से. गाँव वाले तक इसे 'डाकघर' और 'तारघर' की तरह जल्दी अपना

' رجیانا' شبد میں سما جاتا ہے ۔ ایک بار سمجھنے پر ہمیشہ کے لئے دل پر جم سکتا ہے ۔ ہندستانی میں 'ہتھیانا' 'لتیانا' 'چپتیانا' اُسی جیسے شبد موجود بھی ہیں ۔ اُن سے پنڈت مولوی دونوں ہی کام لیتے ہیں ۔

ہماری شبداولی کو لے کر ڈاکٹر صاحب نے جنتا کو آگاہ کیا ہے کہ ہندستانی کی آڑ میں ایک "کرترم" بھاشا تیار کی جا رہی ہے یعنی ایک بناوٹی بھاشا گڑھی جا رہی ہے ۔ بناوٹی بھاشا کے لئے "کرترم" بھاشا کہنا خود ایک "کرترم" بولی گڑھنا ہے ۔ اِسے جانے دیجئے ۔ نئی بولی گڑھنا کوئی بُری بات نہیں ۔ یورپ والے ایک سے زیادہ بولیاں گڑھنے کی ہمت کر چکے ہیں ۔ نئی گڑھی بولی 'ایسپرنٹو' میں پھر جان ڈالی جا رہی ہے ۔ وہ آخری سانس لے رہی تھی ۔ اس بیسویں صدی میں جو بھی بولی گڑھی جائیگی وہ اگر کافی آسان نہ ہوئی تو بولیوں کے میدان میں نہ ٹِک پائے گی ۔ بولی گڑھنا بُرا نہیں ۔ پر ہم ویسا نہیں کر رہے ہیں اور نہ ہم اپنے میں اتنی قابلیت پاتے ہیں ۔ ہاں، کچھ شبدوں سے شبد ضرور گڑھ رہے ہیں ۔ شبد گڑھنا بولی گڑھنا نہیں ہوتا ۔ شبد گڑھنے کا کام ہندی اردو والے بھی کر رہے ہیں ۔ بغیر نئے شبد گڑھے ہم سرکار کے دفتروں پر چھائی انگریزی سے لوہا نہیں لے سکتے ؛ اُسے اپنے گھر بھگا دینے کی بات تو سوچ ہی نہیں سکتے ۔ مثال کے لئے "ویٹنگ روم" کے لئے ہندی والوں نے گڑھا مغلسرائے میں 'وشرامالیہ' اور الہ آباد میں 'پرتیکشالیہ' ۔ ان دونوں سے ڈر کر ویٹنگ روم نہیں بھاگے گا ۔ وہ بھاگے گا ہمارے گڑھے "آرام گھر" سے ۔ گاؤں والے تک اسے 'ڈاک گھر' 'تار گھر' کی طرح جلد ہی اپنا

होंगे. कुछ शब्द नए तो गढ़ने ही हैं. पर इस गढ़ने के काम में अगर हम जनता और गाँव वालों को साथ लेलें तो बहुत जल्दी बोली के छप्पर को हुकूमत की छत पर चढ़ा देंगे. हमने अपनी शब्दावली में सकत भर यही कोशिश की है.

डाक्टर साहब ठंडे दिल से सोचें कि वह नीचे लिखे शब्दों और जुमलों में से किस को पसंद करेंगे—"अन्तः प्रवेश वर्जित" या "अन्दर आना माना" "प्रथम, द्वितीय, तृतीय" या पहला, दूसरा, तीसरा; "परि परीक्षा" या "पूछताछ"; "परितोषण" या "मेहनताना"; "पुनरीक्षा करना" या "दुहराना"; "याचिका" या "अरज़ी"; "वैत्तिक" या "माली"; 'निष्क्रिय प्रतिरोध' या "चुप हट"; "केन्द्री करण, विकेन्द्री करण" या "विचियान, निर्बिचियान"; "विश्लेषण करने वाला" या "मुलाक्र" इत्यादि.

डाक्टर साहब "मिनिस्टर" की जगह 'वज़ीर' देख कर बड़े बिगड़े. यहाँ तक कह गये कि "मंत्री जैसे चालू शब्द के लिए भी इस शब्दावलीमें जगह नहीं मिली." "मंत्री" शब्द को हम भी चालू मानते हैं. पर "वज़ीर" को भी उतना ही चालू मानते हैं. वज़ीर और मंत्री दोनों गाँव के घर घर में पहुँच गए हैं. पर गाँव वाले "मंत्री" से कांगरेस का मंत्री या किसी सभा का मंत्री समझते हैं. मंत्री की जगह 'वज़ीर' शब्द काम में नहीं लाते. 'वज़ीर' शब्द के साथ उनका दूसरा भाव है. इस ख़याल से हमने मिनिस्टर को 'वज़ीर' लिखा है और सेक्रेटरी को 'मंत्री' लिखा है. हाँ, 'सचिव' से हम ने काम नहीं लिया, उसकी हमें ज़रूरत भी नहीं थी.

हम यह नहीं मानते कि चाहे जिस फ़ारसी अरबी शब्द के

لیں گے ۔ کچھ شبد نئے تو گڑھنے ہی ہیں ۔ پر اس گڑھنے کے کام میں اگر ہم جنتا اور گاؤں والوں کو ساتھ لے لیں تو بہت جلدی بولی کے چھپر کو حکومت کی چھت پر چڑھا دیں گے ۔ ہم نے اپنی شبداولی میں سکت بھر یہی کوشش کی ہے ۔

ڈاکٹر صاحب ٹھنڈے دل سے سوچیں کہ وہ نیچے لکھے شبدوں اور جملوں میں سے کس کو پسند کریں گے — "انتہ پرویش ورجت" یا "اندر آنا منع" "پرتھم، دوتیہ، ترتیہ" یا پہلا، دوسرا، تیسرا؛ "پری پریکشا" یا "پوچھ تاچھ" "پری توشن" یا "محنتانا"؛ "پُن پریکشا کرنا" یا "دُہرانا"؛ "یاچیکا" یا "دِاوتِک"؛ "عرضی" یا "مالی"؛ "نشکریہ پرتیرودھ" یا "چُپ ہٹ"؛ "کیندری کرن، وکیندری کرن" یا "بچیان، نربچیان"؛ "وشلوشن کرنے والا" یا "شلاچھ" اِتیادی ۔

ڈاکٹر صاحب "مینسٹر" کی جگہ 'وزیر' دیکھ کر بڑے بگڑے ۔ یہاں تک کہہ گئے کہ "منتری" جیسے چالو شبد کے لئے بھی اس شبداولی میں جگہ نہیں ملی ۔ "منتری" شبد کو ہم بھی چالو مانتے ہیں ۔ پر "وزیر" کو بھی اُتنا ہی چالو مانتے ہیں ۔ وزیر اور منتری دونوں گاؤں کے گھر گھر میں پہنچ گئے ہیں ۔ پر گاؤں والے "منتری" سے کانگریس کا منتری یا کسی سبھا کا منتری سمجھتے ہیں ۔ منتری کی جگہ 'وزیر' شبد کام میں نہیں لاتے ۔ 'وزیر' شبد کے ساتھ اُن کا دوسرا بھاؤ ہے ۔ اِس خیال سے ہم نے منسٹر کو 'وزیر' لکھا ہے اور سکریٹری کو 'منتری' لکھا ہے ۔ ہاں، 'سچو' سے ہم نے کام نہیں لیا، اُس کی ہمیں ضرورت بھی نہیں تھی ۔

ہم یہ نہیں مانتے کہ چاہے جس فارسی عربی شبد کے

बहुवचन को हिन्दुस्तानी बहुवचन का रूप दे देने से वह शब्द हिन्दुस्तानी हो जाता है. हम यह मानते हैं कि हर फ़ारसी अरबी, अंगरेजी और विदेशी शब्द को पहले यह साबित करना होगा कि वह उत्तर भारत के गाँव में पहुँच गया है तब और तभी हिन्दुस्तानी ढंग के बहुवचन लेकर वह हिन्दुस्तानी कहला सकता है, जैसे 'वकीलों' हिन्दुस्तानी है "वकला" नहीं, लेकिन हवाई जहाज़ के मानों में आया हुआ "तैयारा" शब्द या "एडिटर" के मानों में आया हुआ "मुदीर" शब्द न खुद हिन्दुस्तानी हैं, और न 'तैयारों; 'मुदीरों' होकर हिन्दुस्तानी बन सकते हैं.

हो सकता है हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे आदमी भी हों जो हिन्दुस्तानी की आड़ में अरबी फ़ारसी से लदी उर्दू को बढ़ाना चाहते हों पर हमने यह साफ़ बता दिया है कि हम कहाँ खड़े हैं. हमारी शब्दावली इस बात का जीता जागता सबूत है.. इस तरह का इलज़ाम हम पर लगा कर डाक्टर साहब ने इनसाफ़ किया है या नहीं यह हमारी शब्दावली के पढ़ने वाले ख़ुद तै करें. यहाँ हम इतना और कह देना चाहते हैं कि सीधी सादी उर्दू सिवाय हिन्दुस्तान के कहीं नहीं बोली जाती और वह सीधी सादी हिन्दी का दूसरा नाम ही है. उर्दू लिखावट में सीधी सादी हिन्दी उर्दू कहलाने लगती है और सीधी सादी उर्दू नागरी लिखावट में हिन्दी समझी जाती है. इस तरह की हिन्दी और उर्दू एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. रहेंगे तो दो जाएंगे तो दोनों. हिन्दुस्तानी इन दो पहलुओं का एक नाम है.

डाक्टर साहब का यह कहना ठीक है कि हिन्दुस्तानी के लिए

بہو بچن کو ہندستانی بہو بچن کا روپ دیدینے سے وہ شبد ہندستانی ہوجاتا ہے۔ ہم یہ مانتے ہیں کہ ہر فارسی عربی، انگریزی اور ودیشی شبد کو پہلے یہ ثابت کرنا ہوگا کہ وہ اُتر بھارت کے گاؤں میں پہنچ گیا ہے تب اور تبھی ہندستانی ڈھنگ کے بہو بچن لے کر وہ ہندستانی کہلا سکتا ہے، جیسے 'وکیلوں' ہندستانی ہے "وکلا" نہیں، لیکن ہوائی جہاز کے معنی میں آیا ہوا "طیارہ" شبد یا 'ایڈیٹر' کے معنوں میں آیا ہوا "مُدیر" شبد نہ خود ہندستانی ہے، اور نہ 'طیاروں' 'مُدیروں' بنکر ہندستانی بن سکتے ہیں۔

ہوسکتا ہے ہندستان میں کچھ ایسے آدمی بھی ہوں جو ہندستانی کی آڑ میں عربی فارسی سے لدی اردو کو بڑھانا چاہتے ہوں پر ہم نے یہ صاف بتادیا ہے کہ ہم کہاں کھڑے ہیں۔ ہماری شبداولی اس بات کا جیتا جاگتا ثبوت ہے۔ اس طرح کا الزام ہم پر لگاکر ڈاکٹر صاحب نے انصاف کیا ہے یا نہیں یہ ہماری شبداولی کے پڑھنے والے خود طے کریں۔ یہاں ہم اتنا اور کہہ دینا چاہتے ہیں کہ سیدھی سادی اردو سوائے ہندستان کے کہیں نہیں بولی جاتی اور وہ سیدھی سادی ہندی کا دوسرا نام ہی ہے۔ اردو لکھاوٹ میں سیدھی سادی ہندی اردو کہلانے لگتی ہے اور سیدھی سادی اردو ناگری لکھاوٹ میں ہندی سمجھی جاتی ہے۔ اس طرح کی ہندی اور اردو ایک ہی سکے کے دو پہلو ہیں۔ رہیں گے تو دو جائیں گے تو دونوں۔ ہندستانی ان دو پہلوؤں کا ایک نام ہے:

ڈاکٹر صاحب کا یہ کہنا ٹھیک ہے کہ ہندستانی کے لئے

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—०—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट, बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अब्दुल्ला ब्रेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब किताबें वग़ैरह दो तिहाई दाम पर मिलती हैं.

---

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔

بمبئی شاخ کی منیجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے فیضی، شری ایم - ایچ - پکواسا، شریمتی ہنسا مہتہ، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

نوٹ—سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا ہند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تہائی دام پر ملتی ہیں۔

Registered No. A-210.

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया [illegible] बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और [illegible] की किताबों से हवाले देकर मिलती जुलती बुनियादों [illegible] गया है.

उसके बाद गीता के लिखे [illegible] की हालत, गीता के बड़प्पन और एक [illegible] तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की [illegible] के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को [illegible] गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है [illegible] आक़बत, आख़िरत, जन्नत जहन्नम, [illegible]

जो लोग सब धर्मों की एकता, [illegible] और इस्लाम दोनों की [illegible] हासिल करना चाहें [illegible] किताब को [illegible]

किताब आसान [illegible] लिखावटों में [illegible] जिल्द बंधी किताब की कीमत [illegible]

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

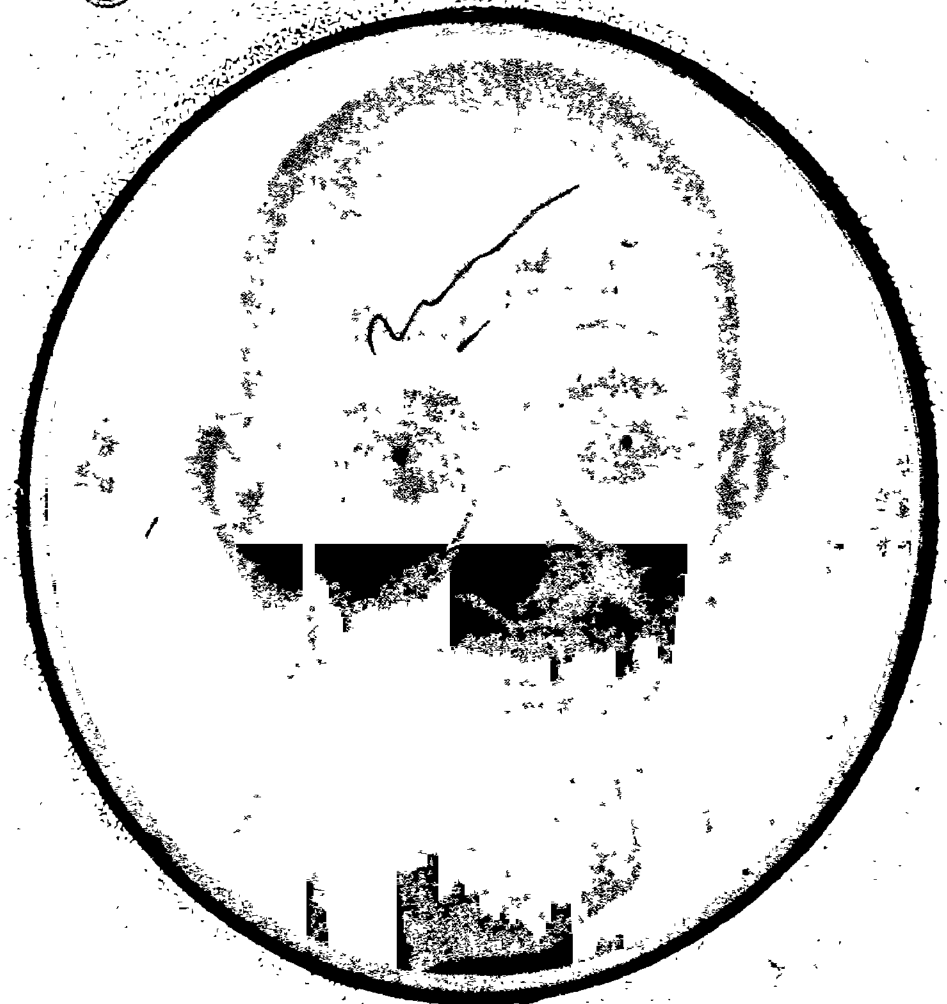
اس کتاب کے شروع میں [illegible] بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور [illegible] کی کتابوں سے حوالے دے کر ملتی جلتی [illegible] کیا گیا ھے

اسکے بعد گیتا کے لکھے [illegible] گیتا کے بڑپن اور ایک [illegible] کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے

آخر میں قرآن سے [illegible] کے بڑپن اور ایک ایک [illegible] قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے [illegible] دھرم، کفر وغیرہ [illegible] ھے.

جو لوگ سب دھرموں [illegible] دھرم اور اسلام [illegible] حاصل کرنا چاہیں [illegible]

کتاب [illegible] لکھاوٹوں میں الگ [illegible] جلد بندھی کتاب [illegible]



अक्टूबर

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

[illegible], [illegible], [illegible], विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

[illegible]

क्या किस से		सफ़ा
[illegible] मोल — [illegible] गांधी	...	[illegible]
[illegible]	...	[illegible]
[illegible] की ज़बान — भाई [illegible]	...	[illegible]
[illegible] और महिलायें — [illegible]	...	[illegible]
[illegible] — भाई रतन लाल [illegible]	...	[illegible]
[illegible] ......डाक्टर [illegible]	...	३०५
[illegible] — भाई [illegible]	...	३१४
[illegible] — [illegible] गोविन्द [illegible]	...	[illegible]
[illegible]	...	[illegible]

[illegible]

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ७ अक्तूबर '४९ नम्बर ४

جلد ۷ اکتوبر ۴۹ نمبر ۴

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

अनमोल मोती

(महात्मा गांधी)

अगर हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनना है, तो लिपि नागरी ही होगी; अगर उर्दू को बनना है, तो लिपि उर्दू ही होगी. अगर हिन्दी-उर्दू के संगम के जरिये हिन्दुस्तानी को राष्ट्रभाषा बनना है, तो दोनों लिपियाँ जरूरी हैं. याद रखना चाहिये कि आज सचमुच उर्दू लिपि या उर्दू भाषा सिर्फ मुसलमानों की नहीं है. ऐसे अनगिनत हिन्दू हैं, जिनकी मादरी जबान उर्दू है और वह उसे उर्दू लिपि में ही लिखते हैं. यह भी याद रखना चाहिये कि दो लिपियों

انمول موتی

(مہاتما گاندھی)

اگر ہندی کو راشٹر بھاشا بننا ہے، تو لپی ناگری ہی ہوگی: اگر اردو کو بننا ہے، تو لپی اردو ہی ہوگی۔ اگر ہندی اردو کے سنگم کے ذریعے ہندستانی کو راشٹر بھاشا بننا ہے، تو دونوں لپیاں ضروری ہیں۔ یاد رکھنا چاہیے کہ آج سچ مچ اردو لپی یا اردو بھاشا صرف مسلمانوں کی نہیں ہے۔ ایسے ان گنت ہندو ہیں، جن کی مادری زبان اردو ہے اور وہ اسے اردو لپی میں ہی لکھتے ہیں۔ یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ دو لپیوں

की बात आज की नहीं है. मैं जब हिन्दुस्तान में आया, तब से यह बात चली है. यही विचार मैंने इन्दौर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सामने रखे थे. उस वक़्त अगर कोई विरोध हुआ था तो नहीं के बराबर था. उसकी मुझे याद भी नहीं है. हाँ, नाम मैंने हिन्दी ही क़ायम रखा था; व्याख्या वही की थी, जो आज करता हूँ. मेरे ख़याल से आज जब विचारों की उथल-पुथल हो रही है, तब हमारी पतवार सिर्फ़ एक और मज़बूत होनी चाहिये.

* * *

सत्य में मैं सुन्दरता देखता और पाता हूँ और सत्य के ज़रिये ही तमाम हक़ीक़तों तक पहुँचता हूँ. सच्चे विचार ही नहीं, वह चेहरे जिनसे सच्चाई टपकती है और सचाई से भरे हुए गीत यह सब बेहद सुन्दर होते हैं. जब भी लोग सत्य में सुन्दरता देखने लगेंगे, सही कला पैदा हो जायगी.

* * *

सत्य से ऊँचा कोई ईश्वर नहीं. सबसे पहले खोजने की चीज़ सत्य है.

* * *

अहिन्सा के मानी हैं इन्तहाई प्रेम. यह क़ानून सब से बड़ा है. इन्सान की मुक्ति सिर्फ़ इसी से हो सकती है.

* * *

भगवान की धरती पर कोई आदमी ऊँचा और कोई आदमी नीचा नहीं है. अगर कोई आदमी अपने को दूसरों से ऊँचा समझता है तो वह भगवान और भगवान की सृष्टि (मख़लूक़) की निगाह में गुनाहगार है.

کی بات آج کی نہیں ہے۔ میں جب ہندستان میں آیا، تب سے یہ بات چلی ہے۔ یہی وچار میں نے اندور کے ہندی ساہتیہ سمیلن کے سامنے رکھے تھے۔ اس وقت اگر کوئی ورودھ ہوا تھا تو نہیں کے برابر تھا۔ اس کی مجھے یاد بھی نہیں ہے۔ ہاں، نام میں نے ہندی ہی قائم رکھا تھا؛ ویاکھیا وہی کی تھی، جو آج کرتا ہوں۔ میرے خیال سے آج جب وچاروں کی اتھل پتھل ہو رہی ہے، تب ہماری پتوار صرف ایک اور مضبوط ہونی چاہیے۔

* * *

ستیہ میں میں سندرتا دیکھتا اور پاتا ہوں اور ستیہ کے ذریعے ہی تمام حقیقتوں تک پہنچتا ہوں۔ سچے وچار ہی نہیں، وہ چہرے جن سے سچائی ٹپکتی ہے اور سچائی سے بھرے ہوئے گیت یہ سب بے حد سندر ہوتے ہیں۔ جب بھی لوگ ستیہ میں سندرتا دیکھنے لگیں گے، صحیح کلا پیدا ہو جائے گی۔

* * *

ستیہ سے اونچا کوئی ایشور نہیں۔ سب سے پہلے کھوجنے کی چیز ستیہ ہے۔

* * *

اہنسا کے معنی ہیں انتہائی پریم۔ یہ قانون سب سے بڑا ہے۔ انسان کی مکتی صرف اسی سے ہو سکتی ہے۔

* * *

بھگوان کی دھرتی پر کوئی آدمی اونچا اور کوئی آدمی نیچا نہیں ہے۔ اگر کوئی آدمی اپنے کو دوسروں سے اونچا سمجھتا ہے تو وہ اور بھگوان کی سرشٹی (مخلوق) کی نگاہ میں گنہگار ہے۔

बापू से....

हम यह नहीं मानते कि आप अब इस दुनिया में नहीं हैं. हम दुनिया में हैं, हमारे दिल इस दुनिया में हैं. हमारे दिल में आप बैठे हैं, इस लिये आप दुनिया में हैं. दिल में आप बैठे हैं हमारी तसल्ली है. तसल्ली ही नहीं हमारी हर तरह मौज है. हमारे जो दिल में आता है कह डालते हैं और बन पड़े तो कर डालते हैं ! इस से हमें कोई सरोकार नहीं कि जो कुछ हम कह रहे हैं या कर रहे हैं वह देश, धर्म या हमारे कुल के लिए भला है या बुरा ! जब आप हमारे दिल में हैं तो दिल की जिम्मेवारी आप पर ! कभी कभी हम कोशिश करते हैं कि आपको दिल से निकाल कर बाहर खड़ा करलें यानी यह कि आपकी कोई तसवीर अपने कमरे में टांग लें. या हमारे पास अगर पैसा हो तो, एक मूर्त्ति बना कर अपने घर के एक कोने में उसको कहीं जगह दे देवें और अगर कहीं से किसी तरह से बहुत सा पैसा हाथ आजाए तो एक शानदार विशाल मूर्त्ति कहीं नदी या तालाब के किनारे खड़ी कर के अपने दिल को तसल्ली दें. उस समय भी हम आपकी मूर्त्ति के सामने खड़े होकर अपने उन भले बुरे कामों के लिए तसल्ली ही मानेंगे जिनको हम दिलके कहने पर कर बैठे और जिनके बारे में हमने यह कभी नहीं सोचा कि इनके करते देश धर्म और कुल की इज्जत बनी रहेगी या नहीं ! और हम यह सोचते भी क्यों ? अबतो

باپو سے....

ہم یہ نہیں مانتے کہ آپ اب اس دنیا میں نہیں ہیں۔ ہم دنیا میں ہیں، ہمارے دل اس دنیا میں ہیں۔ ہمارے دل میں آپ بیٹھے ہیں، اس لئے آپ دنیا میں ہیں۔ دل میں آپ بیٹھے ہیں ہماری تسلی ہے۔ تسلی ہی نہیں ہماری ہر طرح موج ہے۔ ہمارے جو دل میں آتا ہے کہہ ڈالتے ہیں اور بن پڑے تو کر ڈالتے ہیں! اس سے ہمیں کوئی سروکار نہیں کہ جو کچھ ہم کہہ رہے ہیں یا کر رہے ہیں وہ دیش، دھرم یا ہمارے کل کے لئے بھلا ہے یا برا! جب آپ ہمارے دل میں ہیں تو دل کی ذمے داری آپ پر! کبھی کبھی ہم کوشش کرتے ہیں کہ آپ کو دل سے نکال کر باہر کھڑا کرلیں یعنی یہ کہ آپ کی کوئی تصویر اپنے کمرے میں ٹانگ لیں۔ یا ہمارے پاس اگر پیسہ ہو تو ایک مورتی بنا کر اپنے گھر کے ایک کونے میں اس کو کہیں جگہ دے دیویں اور اگر کہیں سے کسی طرح سے بہت سا پیسہ ہاتھ آجائے تو ایک شاندار وشال مورتی کہیں ندی یا تالاب کے کنارے کھڑی کر کے اپنے دل کو تسلی دیں۔ اس سمے بھی ہم آپ کی مورتی کے سامنے کھڑے ہو کر اپنے ان بھلے برے کاموں کے لئے تسلی ہی مانیں گے جن کو ہم دل کے کہنے پر کر بیٹھے اور جن کے بارے میں ہم نے یہ کبھی نہیں سوچا کہ ان کے کرتے دیش دھرم اور کل کی عزت بنی رہے گی یا نہیں! اور ہم یہ سوچتے بھی کیوں؟ اب تو

हमने आपको अपने दिल से निकाल कर तसवीर या मूर्त्ति की शकल में खड़ा कर दिया है. जब आप हमारे दिल में नहीं हैं तो ऐसा दिल अगर कुछ कर बैठे तो उसके लिये हमें सोच भी क्या हो सकती है ? मतलब यह कि आप हमारे दिल में हैं तब भी हम सब कुछ कर सकते हैं और तसल्ली पा सकते हैं और जब आप हमारे दिल में नहीं हैं, बाहर तसवीर या मूर्त्ति की शकल में हैं तब भी हम सब कुछ कर सकते हैं और तसल्ली पा सकते हैं !

बापू ! हम आप के सामने अपना दिल खोल कर रख देना चाहते हैं. सच मुच हमारी तसल्ली आपको कोरा रसूल या अवतार मानने से नहीं होती. शायद जब आप इन्सानी जिस्म में हमारे सामने थे, रसूल या अवतार रहे हों पर अब तो आपका इन्सानी जिस्म खत्म हो चुका फिर रसूल और अवतार कैसे ? अब तो आप हमारे लिये हर तरह भगवान हैं. हम आपको दिल से निकालना भी चाहें तो आप निकलेंगे कब ? किसी आकार वाली और मूर्त्ति वाली चीज को ही हम हिला सकते हैं या अन्दर बाहर कर सकते हैं पर जिसका न कोई आकार है और न मूर्त्ति उस पर हमारा क्या बस चल सकता है ? बस हमने तो अब यह ही मान लिया है कि आप भगवान हैं और हमारे भगवान हैं. फिर हम कुछ भी करें आपके साथ रहने के नाते माफ़ तो कर ही दिए जायेंगे ! बापू ! असल में हमारा मन सदा एकसा नहीं रहता. कभी हम हिन्दू हैं तो कभी मुसलमान. इस लिए जब हामारा मन मुसलमान की शक्ल में होता है तब हम आपको रसूल मान लेते हैं और समझ बैठते हैं कि आप हमें खुदा से माफ़ करवा ही देंगे

ہم نے آپ کو اپنے دل سے نکال کر تصویر یا مورتی کی شکل میں کھڑا کر دیا ہے. جب آپ ہمارے دل میں نہیں ہیں تو ایسا دل اگر کچھ کر بیٹھے تو اس کے لئے ہمیں سوچ بھی کیا ہو سکتی ہے؟ مطلب یہ کہ آپ ہمارے دل میں ہیں تب بھی ہم سب کچھ کر سکتے ہیں اور تسلی پا سکتے ہیں اور جب آپ ہمارے دل میں نہیں ہیں، باہر تصویر یا مورتی کی شکل میں ہیں تب بھی ہم سب کچھ کر سکتے ہیں اور تسلی پا سکتے ہیں!

باپو! ہم آپ کے سامنے اپنا دل کھول کر رکھ دینا چاہتے ہیں. سچ مچ ہماری تسلی آپ کو کورا رسول یا اوتار ماننے سے نہیں ہوتی. شاید جب آپ انسانی جسم میں ہمارے سامنے تھے، رسول یا اوتار رہے ہوں پر اب تو آپ کا انسانی جسم ختم ہو چکا پھر رسول یا اوتار کیسے؟ اب تو آپ ہمارے لئے ہر طرح بھگوان ہیں. ہم آپ کو دل سے نکالنا بھی چاہیں تو آپ نکلیں گے کب؟ کسی آکار والی اور مورتی والی چیز کو ہی ہم ہلا سکتے ہیں یا اندر باہر کر سکتے ہیں پر جس کا نہ کوئی آکار ہے اور نہ مورتی اس پر ہمارا کیا بس چل سکتا ہے؟ بس ہم نے تو اب یہ ہی مان لیا ہے کہ آپ بھگوان ہیں اور ہمارے بھگوان ہیں. پھر ہم کچھ بھی کریں آپ کے ساتھ رہنے کے ناتے معاف تو کر ہی دئے جائیں گے! باپو! اصل میں ہمارا من سدا ایک سا نہیں رہتا. کبھی ہم ہندو ہیں تو کبھی مسلمان. اس لئے جب ہمارا من مسلمان کی شکل میں ہوتا ہے تب ہم آپ کو رسول مان لیتے ہیں [illegible]

मतलब यह कि आपके भरोसे हम एक दम बेफ़िक्र हो गये हैं.

बापू! एक बात और सुनिये. हम आपको पैदा होने के दिन से ही नहीं पुतली देवी के गर्भ में आने के दिन से अवतारी मानते हैं. इस लिए आपके मां के पेट में आनेके दिन से चोला छोड़ने के दिन तक के सब कामों को अवतारियों का काम मानते हैं. हम उनकी नक़ल नहीं कर सकते. उनकी नक़ल करने की बात सोचना भी हम पातक मानते हैं. हम एक मामूली बन्दे, ईश्वर के अवतार के कामों की नक़ल करें! हमें अगर कोई यह कह दे कि आप अपने मां बाप के इकलौते बेटे थे तो हम उसको बिलकुल ठीक मान लेंगे क्योंकि जिस गर्भ में अवतारी आकर बसते हैं उसको पहले आकर कोई अपवित्र कैसे कर सकता है? और बाद में आकर उस आसन पर कोई कैसे बैठ सकता है जो ईश्वर का आसन रहा है? इस लिये जो आदमी हमें यह समझाने की कोशिश करता है कि आप अपने भाइयों में सबसे छोटे थे उसकी बात हमारा जी नहीं मानता. हमें विश्वास दिलाने के लिये कुछ लोग जोश में आकर आपकी अपनी लिखी जीवनी पेश कर देते हैं पर उसमें लिखी बात हमारे गले नहीं उतरती. छपी किताब का ऐतबार भी क्या! अगर कोई बहुत ज़ोर लगाकर हमें यह समझा ही दे कि नहीं सचमुच उस किताब में लिखी आप ही की कही बातें हैं तब भी हमारा मन अपनी ही बात पर डटा रहता है. और वह अपनी तसल्ली यूं कर लेता है कि अगर बापू ने ऐसी बात कही भी है कि वह कई भाई थे, तो भाइयों में मेल मिलाप बढ़ाने के लिए कही होगी. भला कहीं अवतारी भी कई भाई हुआ करते हैं! जैसे राम सीता के लिए रोये नहीं

مطلب یہ کہ آپ کے بھروسے سے ہم ایک دم بےفکر ہو گئے ہیں۔

باپو! ایک بات اور سنیئے۔ ہم آپ کو پیدا ہونے کے دن سے ہی نہیں پتلی دیوی کے گربھ میں آنے کے دن سے اوتاری مانتے ہیں۔ اس لئے آپ کے ماں کے پیٹ میں آنے کے دن سے چولا چھوڑنے کے دن تک کے سب کاموں کو اوتاریوں کا کام مانتے ہیں۔ ہم ان کی نقل نہیں کر سکتے۔ ان کی نقل کرنے کی بات سوچنا بھی ہم پاتک مانتے ہیں۔ ہم ایک معمولی بندے، ایشور کے اوتار کے کاموں کی نقل کریں! ہمیں اگر کوئی یہ کہہ دے کہ آپ اپنے ماں باپ کے اکلوتے بیٹے تھے تو ہم اس کو بالکل ٹھیک مان لیں گے کیونکہ جس گربھ میں اوتاری آکر بستے ہیں اس کو پہلے آکر کوئی اپوتر کیسے کر سکتا ہے؟ اور بعد میں آکر اس آسن پر کوئی کیسے بیٹھ سکتا ہے جو ایشور کا آسن رہا ہے؟ اس لئے جو آدمی ہمیں یہ سمجھانے کی کوشش کرتا ہے کہ آپ اپنے بھائیوں میں سب سے چھوٹے تھے اس کی بات ہمارا جی نہیں مانتا۔ ہمیں وشواس دلانے کے لئے کچھ لوگ جوش میں آکر آپ کی اپنی لکھی جیونی پیش کر دیتے ہیں پر اس میں لکھی بات ہمارے گلے نہیں اترتی۔ چھپی کتاب کا اعتبار بھی کیا! اگر کوئی بہت زور لگا کر ہمیں یہ سمجھا ہی دے کہ نہیں سچ مچ اس کتاب میں لکھی آپ ہی کی کہی باتیں ہیں تب بھی ہمارا من اپنی ہی بات پر ڈٹا رہتا ہے۔ اور وہ اپنی تسلی یوں کر لیتا ہے کہ اگر باپو نے ایسی بات کہی بھی ہے کہ وہ کئی بھائی تھے، تو بھائیوں میں میل ملاپ بڑھانے کے لئے کہی ہوگی۔ بھلا کہیں اوتاری بھی کئی بھائی ہوا کرتے ہیں! جیسے رام سیتا کے لئے روئے نہیں

थे, रुलाये गये थे वैसे ही बापू कई भाई वाले थे नहीं, बनाए गए. बापू ! आपकी ज़िन्दगी की हर एक घटना को हम अपने ही तरीक़े से देखते हैं. मिसाल के लिए लोकमान्य तिलक का स्वर्गवास ले लीजिए. आप लोकमान्य को हिन्दुस्तान के बड़े नायकों में से एक नायक मानते थे. आप उनकी जितनी क़द्र करते थे उतनी हम शायद आपकी नहीं करते पर आप ने उनके स्वर्गवास होने पर न कोई समाधि बनाई न कोई मूर्त्ति खड़ी की. आप अवतारी थे. अवतारी ही क्यों, साक्षात भगवान थे. फिर आपका लोकमान्य की याद में 'तिलक स्वराज्य फंड' क़ायम कर देना काफ़ी था. हम उसकी नक़ल में गांधी पीड़ित फंड खड़ा करके अगर आपकी नक़ल कर बैठें तो यह सरासर गुनाह होगा. कहाँ आप अवतारी कहां हम बन्दे ! हम तो आपकी समाधि बनाएंगे, आपकी मूर्त्तियाँ खड़ी करेंगे और इस काम के लिए हो सका तो लूट लूट कर रुपया लाने में भी धर्म समझेंगे. आपकी मूर्त्ति खड़ी करने के लिए रुपया लूटना लूट नहीं है. रुपया भगवान का होता है. भगवान का रुपया भगवान के काम में लगा देना लूट और अधर्म कैसे माना जा सकता है ? वह तो साफ़ धर्म है. आपका मन्दिर बनवाने की ख़ातिर लोगों को सता सताकर रुपया वसूल करना पुण्य कमाना है. पैदल तीर्थ यात्रा में क्या तकलीफ़ नहीं होती ? पहले तो यात्रा में लोग लुट जाया करते थे, जानें खो बैठते थे तभी पुण्य होता था और स्वर्ग मिलता था फिर आज आपके मन्दिरों की ख़ातिर लोग रुपया दे देकर भूखे मर जाएं या नंगे रह जाएं तो क्या पुण्य न होगा ? वह सचमुच पापी हैं जो इस तरह का

تھے، رُلائے گئے تھے ویسے ہی باپو کئی بھائی والے تھے نہیں، بنائے گئے۔ باپو! آپ کی زندگی کی ہر ایک گھٹنا کو ہم اپنے ہی طریقے سے دیکھتے ہیں۔ مثال کے لئے لوک مانیہ تلک کا سورگ واس لے لیجئے۔ آپ لوک مانیہ کو ہندوستان کے بڑے نائکوں میں سے ایک نائک مانتے تھے۔ آپ ان کی جتنی قدر کرتے تھے اتنی ہم شاید آپ کی نہیں کرتے پر آپ نے ان کے سورگ واس ہونے پر نہ کوئی سمادھی بنائی نہ کوئی مورتی کھڑی کی۔ آپ اوتاری تھے۔ اوتاری ہی کیوں، ساکشات بھگوان تھے۔ پھر آپ کا لوک مانیہ کی یاد میں 'تلک سوراجیہ فنڈ' قائم کر دینا کافی تھا۔ ہم اس کی نقل میں گاندھی پیڑت فنڈ کھڑا کر کے اگر آپ کی نقل کر بیٹھیں تو یہ سراسر گناہ ہوگا۔ کہاں آپ اوتاری کہاں ہم بندے! ہم تو آپ کی سمادھی بنائیں گے، آپ کی مورتیاں کھڑی کریں گے اور اس کام کے لئے ہو سکا تو لوٹ لوٹ کر روپیہ لانے میں بھی دھرم سمجھیں گے۔ آپ کی مورتی کھڑی کرنے کے لئے روپیہ لوٹنا لوٹ نہیں ہے۔ روپیہ بھگوان کا ہوتا ہے۔ بھگوان کا روپیہ بھگوان کے کام میں لگا دینا لوٹ اور ادھرم کیسے مانا جا سکتا ہے؟ وہ تو صاف دھرم ہے۔ آپ کا مندر بنوانے کی خاطر لوگوں کو ستا ستا کر روپیہ وصول کرنا پُنیہ کمانا ہے۔ پیدل تیرتھ یاترا میں کیا تکلیف نہیں ہوتی؟ پہلے تو یاترا میں لوگ لٹ جایا کرتے تھے، جانیں کھو بیٹھتے تھے تبھی پُنیہ ہوتا تھا اور سورگ ملتا تھا پھر آج آپ کے مندروں کی خاطر لوگ روپیہ دے دے کر بھوکے مر جائیں یا ننگے رہ جائیں تو کیا پُنیہ نہ ہوگا؟ وہ سچ مچ پاپی ہیں جو اس طرح کا

शोर मचाते हैं कि हम आपके नाम पर लोगों को सता सता कर रुपया इकट्ठा कर रहे हैं !

बापू ! अगर हमने चरखा चलाया और उम्र भर खादी पहनी और फिर आपने हमें तार दिया तो इसमें आपका बड़प्पन क्या ! आपका बड़प्पन तो इस बात में है कि हम चरखे को जला दें और खादी को धता बतादें और देश भर में कपड़े की मिलें खड़ी कर दें और सिवाय मिल के कपड़े के दूसरा कपड़ा न पहनें और तब भी आप हमें तार दें. यह कम्बख्त चरखा चलाने वाले और खादी पहनने वाले तो आपके बड़प्पन को मिटा कर ही छोड़ेंगे ? यह यह नहीं सोचते कि आपने खादी का हथियार तो अंगरेज़ी राज को खत्म करने को घड़ा था और अंगरेज़ी राज तो खत्म भी कर दिया. जब यह साबित हो गया कि खादी राज खतम करने का हथियार है तो अब खादी बनाना क्यों न जुर्म समझा जाए ! क्या अब खादी वाले यह चाहते हैं कि अपना राज भी खत्म कर दिया जाए ? सीधी सी बात यह समझ में नहीं आती कि जो शेर दुश्मन को खा जाता है वह हमें भी तो खा सकता है. जिस खादी ने अंगरेज़ी राज खाया वह हिन्दुस्तानी राज भी खा सकती है ! खैर हम राज जाने की इतनी परवाह नहीं करते. अगर सारे राज को बेचकर आपका एक बड़ा भारी मन्दिर बन सके तो हम यह भी कर सकते हैं ! पर खादी बनाने में तो आपके काम की नक़ल करनी होगी और अवतारी पुरुष के कामों की नक़ल करना तो भगवान से झगड़ा मोल लेना है ! हम बन्दों की और इतनी मजाल !

شور مچاتے ہیں کہ ہم آپ کے نام پر لوگوں کو ستا ستا کر روپیہ اکٹھا کر رہے ہیں !

باپو ! اگر ہم نے چرخہ چلایا اور عمر بھر کھادی پہنی اور پھر آپ نے ہمیں تار دیا تو اس میں آپ کا بڑپن کیا ! آپ کا بڑپن تو اس بات میں ہے کہ ہم چرخے کو جلا دیں اور کھادی کو دھتا بتادیں اور دیش بھر میں کپڑے کی ملیں کھڑی کر دیں اور سوائے مل کے کپڑے کے دوسرا کپڑا نہ پہنیں اور تب بھی آپ ہمیں تار دیں. یہ کمبخت چرخہ چلانے والے اور کھادی پہننے والے تو آپ کے بڑپن کو مٹا کر ہی چھوڑیں گے ؟ یہ یہ نہیں سوچتے کہ آپ نے کھادی کا ہتھیار تو انگریزی راج کو ختم کرنے کو گھڑا تھا اور انگریزی راج تو ختم بھی کر دیا. جب یہ ثابت ہوگیا کہ کھادی راج ختم کرنے کا ہتھیار ہے تو اب کھادی بنانا کیوں نہ جرم سمجھا جائے ! کیا اب کھادی والے یہ چاہتے ہیں کہ اپنا راج بھی ختم کر دیا جائے ؟ سیدھی سی بات یہ سمجھ میں نہیں آتی کہ جو شیر دشمن کو کھا جاتا ہے وہ ہمیں بھی تو کھا سکتا ہے. جس کھادی نے انگریزی راج کھایا وہ ہندستانی راج بھی کھا سکتی ہے ! خیر ہم راج جانے کی اتنی پرواہ نہیں کرتے. اگر سارے راج کو بیچ کر آپ کا ایک بڑا بھاری مندر بن سکے تو ہم یہ بھی کر سکتے ہیں ! پر کھادی بنانے میں تو آپ کے کام کی نقل کرنی ہوگی اور اوتاری پرش کے کاموں کی نقل کرنا تو بھگوان سے جھگڑا مول لینا ہے ! ہم بندوں کی اور اتنی مجال !

बापू ! आप अवतारी थे. आप जल को थल में और थल को जल में बदल सकते थे. आप अहिंसा के हथियार से गुलाम मुल्क को आज़ाद करा सकते थे और गुलाम हिन्दुस्तान को आज़ाद करा ही दिया पर हम तो भगवान नहीं. हम तो अपने सेनापति के शब्दों में 'अहिंसा की रक्षा हिंसा से करते हैं.' अहिंसा की मूर्त्ति गाय की बछिया के लिए हम हिंसा की मूर्त्ति कुत्ते को पहरे पर बैठाते हैं. और बापू सोचो तो सही हम उसे भेड़िये से बचा ही लेते हैं. भेड़ और भेड़िये के बीच में हम बन्दों के लिए कुत्ता ज़रूरी है. आप हमें शेर बकरी एक बर्तन में खाते हुए दिखलाकर अचरज में डाल सकते हैं कोई सबक़ नहीं दे सकते. अवतारी मामूली बन्दों का इतना ही भला कर सकते हैं. काश्मीर की लड़ाई आपके जीते जी हुई. लड़ाई पर जाने वाले सिपाहियों को आपने आशीर्वाद दिया तो दिया, नहीं दिया तो दिया. हम आशीर्वाद देने न देने की झंझट में नहीं पड़ते. हमारे दिल में जब आप मौजूद हैं तब हमारे हिंसा के भी सब काम अहिंसा का ही फल लाएंगे. गरम पानी बरफ़ के साथ रह कर गरम कब रह जाता है ? कभी कभी तो और भी ठंडा हो जाता है. इसी तरह हमारे हिंसा के काम आपकी अहिंसा की भक्ति के साथ मिलकर हिंसक कैसे रह जायेंगे. जिस देश को आप आज़ाद कर गए हैं उसे आज़ाद बनाए रखना हमारा सब से पहला धर्म है. उसी धर्म के पालन करने में हम हिंसा अहिंसा के झगड़े में क्यों पड़ें ? गुलाम मुल्क की हिंसा भी क्या ? गुलामी ख़ुद ही हिंसा से बहुत बुरी चीज़ होती है. और यह सबक़ तो आप ही

باپو! آپ اَوتاری تھے. آپ جل کو تھل میں اور تھل کو جل میں بدل سکتے تھے. آپ اہنسا کے ہتھیار سے غلام ملک کو آزاد کرا سکتے تھے اور غلام ہندستان کو آزاد کرا ہی دیا پر ہم تو بھگوان نہیں. ہم تو اپنے سیناپتی کے شبدوں میں 'اہنسا کی رکشا ہنسا سے کرتے ہیں'. اہنسا کی مورتی گائے کی بچھیا کے لئے ہم ہنسا کی مورتی کُتّے کو پہرے پر بیٹھاتے ہیں. اور باپو سوچو تو سہی ہم اُسے بھیڑیئے سے بچا ہی لیتے ہیں. بھیڑ اور بھیڑیئے کے بیچ میں ہم بندوں کے لئے کتّا ضروری ہے. آپ ہمیں شیر بکری ایک برتن میں کھاتے ہوئے دکھلا کر اچرج میں ڈال سکتے ہیں کوئی سبق نہیں دے سکتے. اَوتاری معمولی بندوں کا اتنا ہی بھلا کر سکتے ہیں. کاشمیر کی لڑائی آپ کے جیتے جی ہوئی. لڑائی پر جانے والے سپاہیوں کو آپ نے آشیرواد دیا تو دیا، نہیں دیا تو دیا. ہم آشیرواد دینے نہ دینے کی جھنجھٹ میں نہیں پڑتے. ہمارے دل میں جب آپ موجود ہیں تب ہمارے ہنسا کے بھی سب کام اہنسا کا ہی پھل لائیں گے. گرم پانی برف کے ساتھ رہ کر گرم کب رہ جاتا ہے؟ کبھی کبھی تو اور بھی ٹھنڈا ہو جاتا ہے. اسی طرح ہمارے ہنسا کے کام آپ کی اہنسا کی بھکتی کے ساتھ مل کر ہنسک کیسے رہ جائیں گے. جس دیش کو آپ آزاد کر گئے ہیں اُسے آزاد بنائے رکھنا ہمارا سب سے پہلا دھرم ہے. اُسی دھرم کے پالن کرنے میں ہم ہنسا اہنسا کے جھگڑے میں کیوں پڑیں؟ غلام ملک کی ہنسا بھی کیا؟ غلامی خود ہی ہنسا سے بہت بُری چیز ہوتی ہے. اور یہ سبق تو آپ ہی

का दिया हुआ है. एक बात और भी है—आपने हम को आज़ाद तो किया और हमारे आज़ाद कराने में हिंसा से काम भी नहीं लिया पर आपने हम को हिंसा से काम न लेकर राज चलाकर नहीं दिखाया. इस लिए अगर हम यह कहें कि अहिंसा से राज नहीं चला करते तो हम कोई भूल नहीं करते. सत्याग्रह करके बच्चा मां से मिठाई पा सकता है, पर सत्याग्रह करके मिठाई को कव्वों और कुत्तों से नहीं बचा सकता. इसके लिए तो उसे छड़ी से काम लेना होगा. और अगर हम भूल नहीं करते तो बन्दरों से बचने के लिए 'आपने भी कुछ इससे मिलती जुलती बात कही थी. आपने कही हो या न कही हो हम देश को आज़ाद रखने में खुलकर हिंसा से काम लेंगे. हम यह सुनना हरगिज़ पसन्द नहीं करते कि आपका मुल्क यानी गांधी का मुल्क सिर्फ़ इस वजह से ग़ुलाम रहे कि उसके रहने वाले तलवार चलाना नहीं जानते.

बापू! हम चाहे आपको बाप समझ कर 'बापू' न भी कहते हों पर आप हमको बेटा ज़रूर समझते थे और हममें और अपने ख़ून से पैदा हुए बेटों में कोई फ़रक़ नहीं करते थे, और इस लिए हम आज भी आप की नज़रों में हर तरह बेटे हैं. और अब आप ही कहिए कि क्या यह देखकर आप ख़ुश नहीं होंगे कि हम हज़ार हज़ार, दो दो हज़ार, पांच पांच हज़ार, तनख़्वाहें पाते हैं. राजाओं जैसे महलों में रहते हैं. मोटरों में घूमते और हवाई जहाज़ों में उड़ते हैं. हिन्दुस्तान के मां बाप तो अपने बेटों को यह आशीर्वाद देते आए हैं कि 'दूधों नहाओ और पूतों फलो' सो अभी तो हम

کا دیا ہوا ہے۔ ایک بات اور بھی ہے — آپ نے ہم کو آزاد تو کیا اور ہمارے آزاد کرانے میں ہنسا سے کام بھی نہیں لیا پر آپ نے ہم کو ہنسا سے کام نہ لے کر راج چلا کر نہیں دکھایا۔ اس لئے اگر ہم یہ کہیں کہ اہنسا سے راج نہیں چلا کرتے تو ہم کوئی بھول نہیں کرتے۔ ستیاگرہ کرکے بچہ ماں سے مٹھائی پا سکتا ہے، پر ستیاگرہ کرکے مٹھائی کو کوّوں اور کتوں سے نہیں بچا سکتا۔ اس کے لئے تو اسے چھڑی سے کام لینا ہوگا۔ اور اگر ہم بھول نہیں کرتے تو بندروں سے بچنے کے لئے آپ نے بھی کچھ اس سے ملتی جلتی بات کہی تھی۔ آپ نے کہی ہو یا نہ کہی ہو ہم دیش کو آزاد رکھنے میں کھل کر ہنسا سے کام لیں گے۔ ہم یہ سننا ہرگز پسند نہیں کرتے کہ آپ کا ملک یعنی گاندھی کا ملک صرف اس وجہ سے غلام رہے کہ اس کے رہنے والے تلوار چلانا نہیں جانتے۔

باپو! ہم چاہے آپ کو باپ سمجھ کر 'باپو' نہ بھی کہتے ہوں پر آپ ہم کو بیٹا ضرور سمجھتے تھے اور ہم میں اور اپنے خون سے پیدا ہوئے بیٹوں میں کوئی فرق نہیں کرتے تھے، اور اس لئے ہم آج بھی آپ کی نظروں میں ہر طرح بیٹے ہیں۔ اور اب آپ ہی کہئے کہ کیا یہ دیکھ کر آپ خوش نہیں ہوں گے کہ ہم ہزار ہزار، دو دو ہزار، پانچ پانچ ہزار، تنخواہیں پاتے ہیں، راجاؤں جیسے محلوں میں رہتے ہیں۔ موٹروں میں گھومتے اور ہوائی جہازوں میں اڑتے ہیں۔ ہندستان کے ماں باپ تو اپنے بیٹوں کو یہ آشیرواد دیتے رہے ہیں کہ 'دودھوں نہاؤ اور پوتوں پھلو' سو ابھی تو ہم

दूध से नहीं नहा पा रहे हैं जब हम दूध से नहाने लगेंगे तो आप को और भी ज्यादह ख़ुशी होगी !

आपने जो पांच सौ रुपये महीने तनख्वाह लेने की बात कही थी वह उसी वक़्त कही थी जब हमारा मुल्क ग़रीब था और अंगरेज़ों का राज था. उस बात में एक राजनीतिक चाल भी थी. असल में आपका मतलब यह था कि जब हम पांचसौ रुपये महीने से ज्यादह न लेंगे तो शर्मा शर्मी अंगरेज़ नौकर भी ज्यादह तनख्वाह न लेंगे या ज्यादह तनख्वाह लेते हुए झिझकेंगे और इसी तरह हमारे देश का रुपया विदेश जाने से बच जायगा. पर न तो अब हमारा मुल्क ग़रीब है ! और न अब अंगरेज़ी राज है ! फिर वह आपकी ५०० की बात अब कैसे काम में लाई जा सकती है ? पांच सौ की शर्त को इस वक़्त पूरा करना ऐसी ही बेवक़ूफ़ी होगी जैसे कोई लड़का दिसम्बर के महीने में सिर्फ़ इस वजह से बिजली का पंखा खोलकर बैठ जाय कि उसके बाप ने मई के महीने में उसको पंखा खोलकर बैठने की बात कही थी. हमारा देश आज बहुत मालदार है ! इसमें शक की कोई बात ही नहीं ! बर्तानिया जैसा देश अरबों रुपयों से हमारा क़र्ज़दार है. हम उसके साहूकार हैं. और कुछ न सही तो साहूकारी की शान बनाए रखने के लिए ही हमें बड़ी बड़ी तनख्वाहें लेनी होंगी और बड़े बड़े महलों में रहना होगा.

बापू ! रिश्वत और काले बाजार का शोर लोगों ने बे मतलब ही मचा रक्खा है. आज़ाद हिन्दुस्तान में रिश्वत और काला बाजार

دودھ سے نہیں نہا پا رہے ہیں جب ہم دودھ سے نہانے لگیں گے تو آپ کو اور بھی زیادہ خوشی ہوگی !

آپ نے جو پانچ سو روپئے مہینے تنخواہ لینے کی بات کہی تھی وہ اُسی وقت کہی تھی جب ہمارا ملک غریب تھا اور انگریزوں کا راج تھا۔ اُس بات میں ایک راج نیتک چال بھی تھی۔ اصل میں آپ کا مطلب یہ تھا کہ جب ہم پانچ سو روپئے مہینے سے زیادہ نہ لیں گے تو شرما شرمی انگریز نوکر بھی زیادہ تنخواہ نہ لیں گے یا زیادہ تنخواہ لیتے ہوئے جھجکیں گے اور اسی طرح ہمارے دیش کا روپیہ ودیش جانے سے بچ جائے گا۔ پر نہ تو اب ہمارا ملک غریب ہے ! اور نہ اب انگریزی راج ہے ! پھر وہ آپ کی ۵۰۰ کی بات اب کیسے کام میں لائی جا سکتی ہے ؟ پانچ سو کی شرط کو اس وقت پورا کرنا ایسی ہی بیوقوفی ہوگی جیسے کوئی لڑکا دسمبر کے مہینے میں صرف اس وجہ سے بجلی کا پنکھا کھول کر بیٹھ جائے کہ اُس کے باپ نے مئی کے مہینے میں اُس کو پنکھا کھول کر بیٹھنے کی بات کہی تھی۔ ہمارا دیش آج بہت مالدار ہے ! اس میں شک کی کوئی بات ہی نہیں ! برطانیہ جیسا دیش اربوں روپیوں سے ہمارا قرض دار ہے۔ ہم اُس کے ساہوکار ہیں۔ اور کچھ نہ سہی تو ساہوکاری کی شان بنائے رکھنے کے لئے ہی ہمیں بڑی بڑی تنخواہیں لینی ہوں گی اور بڑے بڑے محلوں میں رہنا ہوگا۔

باپو ! رشوت اور کالے بازار کا شور لوگوں نے بے مطلب ہی مچا رکھا ہے۔ آزاد ہندستان میں رشوت اور کالا بازار

कुछ मायने ही नहीं रखता ? हाँ यहाँ आकर कोई विदेशी रिश्वत लेने लगे या कोई विदेशी फ़र्म काला बाज़ार करने लगे तो बेशक शोर मचाने की चीज़ है क्योंकि उसका कमाया हुआ रुपया विदेश चला जायगा. पर हिन्दुस्तानी अफ़सरों की रिश्वत और हिन्दुस्तानी फ़र्मों का काला बाज़ार हिन्दुस्तान का क्या बिगाड़ लेगा ! घर में जब बच्चे चुपके चुपके मिठाई निकाल कर खा जाते हैं या चुपके से निकाल कर मां बाप को दिखा दिखा कर खाते हैं तो क्या मां बाप नाराज़ होते हैं ! उलटे हँसते हैं और देख देख कर रीझते हैं. बापू ! हमें पक्का विश्वास है कि आप भी इन रिश्वतख़ोरों और काले बाज़ार वालों को देख देख कर खूब खुश होते होंगे क्योंकि आप इन सब को सच्चे जी से बेटा मानते हैं. और फिर घर की चोरी भी कोई चोरी होती है ! यदि कोई आदमी अपनी दाहिनी जेब में से रुपया निकाल कर बाईं जेब में रख ले तो यह कोई रिश्वत और काला बाज़ार होगा ! हिन्दुस्तानी अफ़सर हमारे आदमी, हिन्दुस्तानी फ़र्म हमारे फ़र्म. घर का रुपया घर ही में तो रहा, या जेब बदल गई तो क्या हुआ ! न जाने क्यों कुछ हिन्दुस्तानी इतनी छोटी सी बात न समझ कर रिश्वतख़ोरी और काले बाज़ार के ख़िलाफ़ आपकी दुहाई देते फिरते हैं ? बापू ! आप इनकी परवाह न कीजिए और बाप के नाते आप परवाह करने भी क्यों लगे !

बापू ! हम आप को विश्वास दिलाते हैं कि हम अब उस जगह नहीं हैं जहाँ आप हम को छोड़ गए थे. और यही आप चाहते हैं. कोई बाप यह नहीं चाहता कि उसका बेटा उतना ही बड़ा रहे जितना वह उसे चलते वक़्त छोड़ जाए. तीन फ़ुट का छोड़ा

کچھ معنے ہی نہیں رکھتا؟ ہاں یہاں آکر کوئی ودیشی رشوت لینے لگے یا کوئی ودیشی فرم کالا بازار کرنے لگے تو بے شک شور مچانے کی چیز ہے کیونکہ اُس کا کمایا ہوا روپیہ ودیش چلا جائے گا۔ پر ہندستانی افسروں کی رشوت اور ہندستانی فرموں کا کالا بازار ہندستان کا کیا بگاڑ لے گا! گھر میں جب بچے چپکے چپکے مٹھائی نکال کر کھا جاتے ہیں یا چپکے سے نکال کر ماں باپ کو دکھا دکھا کر کھاتے ہیں تو کیا ماں باپ ناراض ہوتے ہیں! اُلٹے ہنستے ہیں اور دیکھ دیکھ کر ریجھتے ہیں۔ باپو! ہمیں پکا وشواس ہے کہ آپ بھی ان رشوت خوروں اور کالے بازار والوں کو دیکھ دیکھ کر خوب خوش ہوتے ہوں گے کیونکہ آپ ان سب کو سچے جی سے بیٹا مانتے ہیں۔ اور پھر گھر کی چوری بھی کوئی چوری ہوتی ہے! یدی کوئی آدمی اپنی داہنی جیب میں سے روپیہ نکال کر بائیں جیب میں رکھ لے تو یہ کوئی رشوت اور کالا بازار ہوگا! ہندستانی افسر ہمارے آدمی، ہندستانی فرم ہمارے فرم، گھر کا روپیہ گھر ہی میں تو رہا، یا جیب بدل گئی تو کیا ہوا! نہ جانے کیوں کچھ ہندستانی اتنی چھوٹی سی بات نہ سمجھ کر رشوت خوری اور کالے بازار کے خلاف آپ کی دُہائی دیتے پھرتے ہیں؟ باپو! آپ ان کی پرواہ نہ کیجئے اور باپ کے ناتے آپ پرواہ کرنے بھی کیوں لگے!

باپو! ہم آپ کو وشواس دلاتے ہیں کہ ہم اب اُس جگہ نہیں ہیں جہاں آپ ہم کو چھوڑ گئے تھے۔ اور یہی آپ چاہتے ہیں۔ کوئی باپ یہ نہیں چاہتا کہ اُس کا بیٹا اُتنا ہی بڑا رہے جتنا وہ اُسے چلتے وقت چھوڑ جائے۔ تین فٹ کا چھوڑا

हुआ बच्चा, साढ़े तीन, चार, पांच फ़ुट बढ़ता ही है और इस बढ़ने में स्वर्ग में बैठे मां बाप को ख़ुशी ही होती है. और फिर लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई बढ़ने के साथ साथ और भी चीज़ें बढ़ती हैं. इनके बढ़ने में भी स्वर्ग में बैठे मां बाप क्यों बुरा मानने लगे. बापू ! जब हम छोटे थे और आपके सामने तू तू मैं मैं करके लड़ते थे तो बड़े होकर हमें ईंट पत्थरों से लड़ना ही चाहिए और बड़े होकर तलवारों से लड़ेंगे और और बड़े होकर बंदूक़ों और बम गोलों से लड़ेंगे. बापू आपने बड़े से बड़ा चन्दा सवा करोड़ का किया हम तो अब दस दस करोड़ के हाथ मारते हैं ! अब तो आपको बेहद ख़ुशी हुई होगी ! यह ठीक है कि आपने अपना सवा करोड़ का चन्दा देश को आज़ाद करने में ख़र्च किया और ठीक किया. उस वक़्त वैसी ही ज़रूरत थी. और हम अपना दस करोड़ आपकी यादगार बनाने में ख़र्च करें यह भी हम ठीक करते हैं. क्योंकि इस वक़्त यही ज़रूरत है. बापू ! आप यह न समझें कि हम मुल्क को ऊँचा नहीं उठाने जा रहे. देखिये अब हम डाकख़ानों के टिकटों पर से बर्तानिया के राजा को निकाल बाहर कर रहे हैं और इसमें हमारा क्या बिगड़ता है कि हमारे गवर्नर, गवर्नर जनरल और हाईकोर्ट के जज की मंज़ूरी बर्तानिया के राजा से आती है ! मंज़ूरी किस को दिखाई देती है ! डाकख़ाने के टिकट तो देश के कोने कोने में पहुँचते थे ? बस बापू आप हमारी बात सुनिए और इन बे मतलब शोर मचाने वालों की तरफ़ ज़रा भी कान न दीजिए. और फिर आपको हमें यह कहने का भी क्या अधिकार ! आप

ہوا بچہ، ساڑھے تین، چار، پانچ فٹ بڑھتا ہی ہے اور اس بڑھنے میں سورگ میں بیٹھے ماں باپ کو خوشی ہی ہوتی ہے۔ اور پھر لمبائی، چوڑائی، موٹائی بڑھنے کے ساتھ ساتھ اور بھی چیزیں بڑھتی ہیں۔ ان کے بڑھنے میں بھی سورگ میں بیٹھے ماں باپ کیوں برا ماننے لگے۔ باپو! جب ہم چھوٹے تھے اور آپ کے سامنے تو تو میں میں کر کے لڑتے تھے تو بڑے ہو کر ہمیں اینٹ پتھروں سے لڑنا ہی چاہئے اور بڑے ہو کر تلواروں سے لڑیں گے اور اور بڑے ہو کر بندوقوں اور بم گولوں سے لڑیں گے۔ باپو آپ نے بڑے سے بڑا چندہ سوا کروڑ کا کیا ہم تو اب دس دس کروڑ کے ہاتھ مارتے ہیں! اب تو آپ کو بے حد خوشی ہوئی ہوگی! یہ ٹھیک ہے کہ آپ نے اپنا سوا کروڑ کا چندہ دیش کو آزاد کرنے میں خرچ کیا اور ٹھیک کیا۔ اس وقت ویسی ہی ضرورت تھی۔ اور ہم اپنا دس کروڑ آپ کی یادگار بنانے میں خرچ کریں یہ بھی ہم ٹھیک کرتے ہیں۔ کیونکہ اس وقت یہی ضرورت ہے۔ باپو! آپ یہ نہ سمجھیں کہ ہم ملک کو اونچا نہیں اٹھانے جا رہے۔ دیکھئے اب ہم ڈاکخانوں کے ٹکٹوں پر سے برطانیہ کے راجہ کو نکال باہر کر رہے ہیں اور اس میں ہمارا کیا بگڑتا ہے کہ ہمارے گورنر، گورنر جنرل اور ہائی کورٹ کے جج کی منظوری برطانیہ کے راجہ سے آتی ہے! منظوری کس کو دکھائی دیتی ہے! ڈاکخانے کے ٹکٹ تو دیش کے کونے کونے میں پہنچتے تھے؟ بس باپو آپ ہماری بات سنئے اور ان بے مطلب شور مچانے والوں کی طرف ذرا بھی کان نہ دیجئے۔ اور پھر آپ کو ہمیں یہ کہنے کا بھی کیا ادھیکار! آپ

ऐसी बातें ख़ूब समझते हैं और क़ल ही तो आप हमें स्वप्न में हँसते हँसते दिखलाई दिए थे और हमारी पीठ ठोंकी थी.

भगवान गांधी की जय !

भगवान दीन

१-६-४९

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री० रतनलाल वंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अगरेजों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अन्दाजा कर लिया था और इनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आजादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेजी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ایسی باتیں خوب سمجھتے ہیں اور کل ہی تو آپ ہمیں سوپن میں ہنستے ہنستے دکھلائی دیئے تھے اور ہماری پیٹھ ٹھونکی تھی.

بھگوان گاندھی کی جے !

بھگوان دین

۱-۶-۴۹

مسلم دیش بھگت

[لیکھک شری رتن لال بنسل]

اِس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور اُن کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی بُرائیوں کا اندازہ کرلیا تھا اور انکو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اِس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر اُنھوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھکر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر، 'نیا ہند'

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد.

हमारे अख़बारों की ज़बान

(भाई दिनेश खरे)

आज हमारी भाषा का किस तरह गला घोंटा जा रहा है, इसका नमूना हमारे हिन्दी और उर्दू के अख़बार हैं. संस्कृत या फ़ारसी के लफ़्ज़ों की भरमार करके इन अख़बारों में जो ज़बान लिखी जा रही है वह हमारी बोलचाल की ज़बान से बिलकुल अलग है. हमारे अख़बारों की ज़बान हमारी ही जनता नहीं समझ पाती क्योंकि वह उसकी ज़बान नहीं है. वह एक दूसरी ही, बनावटी ज़बान है जिसका बोलचाल की ज़बान से 'नहीं' के बराबर ताल्लुक़ है. मेरी इस बात का इम्तिहान लेने के लिये हिन्दी या उर्दू का एक अख़बार लेकर किसी देहात में चले जाइये, उसे पढ़ कर लोगों को सुनाइये और फिर पूछिये कि वह क्या समझे ? आप उनसे बातचीत करेंगे तो वह आपसे साफ़ साफ़ कहेंगे कि अख़बारों में लिखी जाने वाली भाषा उनकी समझ में नहीं आती. अगर आपने अपनी अख़बार वाली ज़बान में ही उनसे बातचीत भी करने की कोशिश की तो आपको पता लग जायगा कि आपकी और उनकी ज़बान में बहुत फ़रक़ है और इस मामले में आप में और उनमें बहुत दूरी है जो कि दिन दिन बढ़ती ही जा रही है. अगर आप दुनिया की भाषाओं का इतिहास जानते हैं तो

ہمارے اخباروں کی زبان

(بھائی دنیش کھرے)

آج ہماری بھاشا کا کس طرح گلا گھونٹا جا رہا ہے، اِس کا نمونہ ہمارے ہندی اور اردو کے اخبار ہیں. سنسکرت یا فارسی کے لفظوں کی بھرمار کرکے اِن اخباروں میں جو زبان لکھی جا رہی ہے وہ ہماری بول چال کی زبان سے بالکل الگ ہے. ہمارے اخباروں کی زبان ہماری ہی جنتا نہیں سمجھ پاتی کیونکہ وہ اُس کی زبان نہیں ہے. وہ ایک دوسری ہی، بناوٹی زبان ہے جس کا بول چال کی زبان سے 'نہیں' کے برابر تعلق ہے. میری اِس بات کا امتحان لینے کے لئے ہندی یا اردو کا ایک اخبار لے کر کسی دیہات میں چلے جایئے، اُسے پڑھکر لوگوں کو سنایئے اور پھر پوچھیے کہ وہ کیا سمجھے؟ آپ اُن سے بات چیت کریں گے تو وہ آپ سے صاف صاف کہیں گے کہ اخباروں میں لکھی جانے والی بھاشا اُن کے سمجھ میں نہیں آتی. اگر آپ نے اپنی اخبار والی زبان میں ہی اُن سے بات چیت بھی کرنے کی کوشش کی تو آپ کو پتہ لگ جائیگا کہ آپ کی اور اُن کی زبان میں بہت فرق ہے اور اِس معاملے میں آپ میں اور اُن میں بہت دوری ہے جو کہ دِن دِن بڑھتی ہی جا رہی ہے. اگر آپ دنیا کی بھاشاؤں کا اِتہاس جانتے ہیں تو

आप यह भी मान लेंगे कि यह दूरी मौजूदा अखबारी ज़बान को ज़िन्दा नहीं रहने देगी. अगर उसे ज़िन्दा रहना है तो उसे जनता के क़रीब आना पड़ेगा और जनता को भाषा सिखाने का दावा किनारे रखकर पहले ख़ुद उनसे ज़बान सीखनी पड़ेगी. अगर आप यह समझते हैं कि बोलचाल की ज़बान में ऊँचे विचारों का अच्छी तरह इज़हार नहीं हो सकता तो उनसे थोड़ी देर बातचीत कर लेने पर आप महसूस करेंगे कि आपकी डिक्शनरी वाली ज़बान की निस्बत जनता की ज़बान ज़्यादा धनी और मुहावरेदार है उस ज़बान में आपको जो लोच देखने को मिलेगा वह आप अपनी 'बनावटी' ज़बान में ढूँढे न पायेंगे.

असलियत तो यह है कि ऊपर लिखी बातों को कितने ही अख़बार नवीस महसूस करते और मानते हैं. ख़ुद अख़बार में काम करते रहने की वजह से मैं इस बात को जानता हूँ. आपसी बातचीत में हम लोग मानते और कहते हैं कि जो ज़बान हम लिख रहे हैं वह ज़्यादा दिन तक नहीं टिक सकेगी. वह बनावटी है इसलिये उसे ख़तम होना ही पड़ेगा. हम सरल ज़बान में लिखना भी चाहते हैं लेकिन ऐसा नहीं कर सकते. अगर हम हिन्दी के अख़बार में काम करते हैं तो हम से कहा जायगा कि उर्दू नहीं, हिन्दी लिखिये, मानो हिन्दी और उर्दू दो अलग अलग ज़बान हों. उसका मतलब सिर्फ़ यह होता है कि संस्कृत के शब्दों से भरी हुई भाषा लिखिये. इस तरह से हिन्दी के नाम पर संस्कृत से

آپ یہ بھی مان لیں گے کہ یہ دوری موجودہ اخباری زبان کو زندہ نہیں رہنے دے گی۔ اگر اُسے زندہ رہنا ہے تو اُسے جنتا کے قریب آنا پڑے گا اور جنتا کو بھاشا سکھانے کا دعویٰ کنارے رکھ کر پہلے خود اُن سے زبان سیکھنی پڑے گی۔ اگر آپ یہ سمجھتے ہیں کہ بول چال کی زبان میں اونچے وچاروں کا اچھی طرح اظہار نہیں ہو سکتا تو اُن سے تھوڑی دیر بات چیت کر لینے پر آپ محسوس کریں گے کہ آپ کی ڈکشنری والی زبان کی نسبت جنتا کی زبان زیادہ گھنی اور محاورے دار ہے اُس زبان میں آپ کو جو لوچ دیکھنے کو ملے گا وہ آپ اپنی 'بناوٹی' زبان میں ڈھونڈے نہ پائیں گے۔

اصلیت تو یہ ہے کہ اوپر لکھی باتوں کو کتنے ہی اخبار نویس محسوس کرتے اور مانتے ہیں۔ خود اخبار میں کام کرتے رہنے کی وجہ سے میں اِس بات کو جانتا ہوں۔ آپسی بات چیت میں ہم لوگ مانتے اور کہتے ہیں کہ جو زبان ہم لکھ رہے ہیں وہ زیادہ دن تک نہیں ٹک سکے گی۔ وہ بناوٹی ہے اس لئے اُسے ختم ہونا ہی پڑے گا۔ ہم سرل زبان میں لکھنا بھی چاہتے ہیں لیکن ایسا نہیں کر سکتے۔ اگر ہم ہندی کے اخبار میں کام کرتے ہیں تو ہم سے کہا جائے گا کہ اردو نہیں، ہندی لکھئے، مانو ہندی اور اردو دو الگ الگ زبان ہوں۔ اُس کا مطلب صرف یہ ہوتا ہے کہ سنسکرت کے شبدوں سے بھری ہوئی بھاشا لکھئے۔ اس طرح سے ہندی کے نام پر سنسکرت سے

भरी हुई भाषा लिख कर और उर्दू के नाम पर फ़ारसी और अरबी के शब्दों से भरी हुई ज़बान लिख कर एक ही भाषा को ऐसी दो शक्लों में पेश किया जाता है मानो वह एक दूसरे से बिलकुल अलग दो ज़बानें हों. यहीं से हिन्दी और उर्दू का झगड़ा खड़ा होता है जिसे लेकर बड़े बड़े सूरमा मैदान में उतर पड़ते हैं और ज़बान और कलचर के नाम पर जनता को गुमराह करके और उसमें फूट डालकर 'हीरो' बनने की कोशिश करते हैं. हम उन्हें सीधे सीधे फूट परस्त कह सकते हैं क्योंकि वह एक ही ज़बान बोलने वाली जनता को दो हिस्सों में बाँटना चाहते हैं. यू० पी० और सी० पी० में बोली जाने वाली ज़बान को ही कोई हिन्दी कहता है और कोई उर्दू, लेकिन यहाँ का एक मज़दूर या किसान जो कि अपनी भाषा को हिन्दी कहता है जब किसी ऐसे मज़दूर या किसान से बातचीत करता है जो अपनी ज़बान को उर्दू कहता है तो वह दोनों देखते हैं कि उनकी ज़बान में कोई ख़ास फ़रक़ नहीं और वह एक दूसरे की बात ब ख़ूबी समझ लेते हैं. इसका सीधे सीधे यह मतलब हुआ कि यहाँ की बोल चाल की ज़बान एक ही है, उसे चाहे जिस नाम से पुकारा जाय. लेकिन साहित्य की भाषा देखने पर हिन्दी और उर्दू का फ़रक़ साफ़ दिखाई पड़ता है जिसका मतलब यह हुआ कि एक ही बुनियाद (बोलचाल की ज़बान) पर दो अलग अलग महल खड़े किये गये. यह महल कैसे खड़े किये गये हैं यह जानने के लिये हमें अपनी गुलामी के इतिहास के पन्ने उलटने पड़ेंगे. इस झगड़े के पीछे अंगरेज़ी हुकूमत और

بھری ہوئی بھاشا لکھکر اور اردو کے نام پر فارسی اور عربی کے شبدوں سے بھری ہوئی زبان لکھکر ایک ہی بھاشا کو ایسی دو شکلوں میں پیش کیا جاتا ہے مانو وہ ایک دوسرے سے بالکل الگ دو زبانیں ہوں. یہیں سے ہندی اور اردو کا جھگڑا کھڑا ہوتا ہے جسے لیکر بڑے بڑے سورما میدان میں اُتر پڑتے ہیں اور زبان اور کلچر کے نام پر جنتا کو گمراہ کرکے اور اُس میں پھوٹ ڈالکر 'ہیرو' بننے کی کوشش کرتے ہیں۔ ہم اُنھیں سیدھے سیدھے پھوٹ پرست کہہ سکتے ہیں کیونکہ وہ ایک ہی زبان بولنے والی جنتا کو دو حصوں میں بانٹنا چاہتے ہیں۔ یو۔ پی۔ اور سی۔ پی۔ میں بولی جانے والی زبان کو ہی کوئی ہندی کہتا ہے اور کوئی اردو، لیکن یہاں کا ایک مزدور یا کسان جو کہ اپنی بھاشا کو ہندی کہتا ہے جب کسی ایسے مزدور یا کسان سے بات چیت کرتا ہے جو اپنی زبان کو اردو کہتا ہے تو وہ دونوں دیکھتے ہیں کہ اُن کی زبان میں کوئی خاص فرق نہیں اور وہ ایک دوسرے کی بات بخوبی سمجھ لیتے ہیں۔ اس کا سیدھے سیدھے یہ مطلب ہوا کہ یہاں کی بول چال کی زبان ایک ہی ہے، اُسے چاہے جس نام سے پکارا جائے۔ لیکن ساہتیہ کی بھاشا دیکھنے پر ہندی اور اردو کا فرق صاف دکھائی پڑتا ہے جس کا مطلب یہ ہوا کہ ایک ہی بنیاد (بول چال کی زبان) پر دو الگ الگ محل کھڑے کئے گئے۔ یہ محل کیسے کھڑے کئے گئے ہیں یہ جاننے کے لئے ہمیں اپنی غلامی کے اتہاس کے پنے اُلٹنے پڑیں گے۔ اس جھگڑے کے پیچھے انگریزی حکومت اور

हिन्दी और उर्दू के उन 'हीरोज़' (Heros)—महामहोपाध्यायों और शम्सुल उलमाओं का हाथ रहा है जो जनता में फूट डालने और उस फूट को क़ायम रखने में अँगरेजों की हमेशा इमदाद करते रहे हैं. आज अगर हम चाहते हैं कि खड़ी बोली बोलने वाली जनता में एकता क़ायम रहे तो हमें इन दोनों 'ज़बानों' को क़रीब लाना पड़ेगा. इसके लिये सिर्फ़ यही एक तरीक़ा है कि हम जनता से दूर न भागें और उसके समझने लायक़ ज़बान लिखें इसके लिये हमें खुद उनसे ज़बान सीखनी पड़ेगी.

कुछ अखबार नवीस सवाल उठायेंगे कि टेकनिकल लफ़्ज़ों के लिये क्या किया जाय? मानता हूँ कि इसका हल उतना आसान नहीं है, लेकिन हर टेकनिकल लफ़्ज़ के लिये संस्कृत या अरबी-फ़ारसी की डिक्शनरी लेकर बैठ जाने वाले अखबार नवीस अगर इस मामले में भी जनता से मदद लें तो उनकी मुश्किल बहुत कुछ आसान हो जायगी. जनता से बहुत से आमफ़हम लफ़्ज़ मिल जायँगे और वह ऐसे मुश्किल शब्द गढ़ने की परेशानी से बच जायंगे जो उनके अलावा और कोई न समझ सकेगा. मिसाल के लिये बिजली घरों में काम करने वाले मजदूरों ने बहुत से टेकनिकल लफ़्ज़ गढ़ लिये हैं या अंगरेजी के लफ़्ज़ तोड़ मरोड़ कर बना लिये हैं. अगर आप यह जानने की कोशिश करें कि बिजली के काम से ताल्लुक़ रखने वाले किस टेकनिकल लफ़्ज़ के लिये मजदूर किस शब्द का इस्तेमाल करता है तो आपको बहुत आसानी से बहुत से टेकनिकल लफ़्ज़ मिल जायंगे और आप देखेंगे कि वह लफ़्ज़

है

ہندی اور اُردو کے اُن 'ہیروز' (Heros) مہامہوپادھیاؤں اور شمس العلماؤں کا ہاتھ رہا ہے جو جنتا میں پھوٹ ڈالنے اور اس پھوٹ کو قائم رکھنے میں انگریزوں کی ہمیشہ امداد کرتے رہے ہیں۔ آج اگر ہم چاہتے ہیں کہ کھڑی بولی بولنے والی جنتا میں ایکتا قائم رہے تو ہمیں ان دونوں 'زبانوں' کو قریب لانا پڑے گا۔ اس کے لئے صرف یہی ایک طریقہ ہے کہ ہم جنتا سے دور نہ بھاگیں اور اس کے سمجھنے لائق زبان لکھیں اس کے لئے ہمیں خود اُن سے زبان سیکھنی پڑے گی۔

کچھ اخبار نویس سوال اٹھائیں گے کہ ٹیکنیکل لفظوں کے لئے کیا کیا جائے؟ مانتا ہوں کہ اس کا حل اتنا آسان نہیں ہے، لیکن ہر ٹیکنیکل لفظ کے لئے سنسکرت یا عربی فارسی کی ڈکشنری لیکر بیٹھ جانے والے اخبار نویس اگر اس معاملے میں بھی جنتا سے مدد لیں تو اُن کی مشکل بہت کچھ آسان ہو جائے گی۔ جنتا سے بہت سے عام فہم لفظ مل جائیں گے اور وہ ایسے مشکل شبد گڑھنے کی پریشانی سے بچ جائیں گے جو اُن کے علاوہ اور کوئی نہ سمجھ سکے گا۔ مثال کے لئے بجلی گھروں میں کام کرنے والے مزدوروں نے بہت سے ٹیکنیکل لفظ گڑھ لئے ہیں یا انگریزی کے لفظ توڑ مروڑ کر بنا لئے ہیں۔ اگر آپ یہ جاننے کی کوشش کریں کہ بجلی کے کام سے تعلق رکھنے والے کس ٹیکنیکل لفظ کے لئے مزدور کس شبد کا استعمال کرتا ہے تو آپ کو بہت آسانی سے بہت سے ٹیکنیکل لفظ مل جائیں گے اور آپ دیکھیں گے کہ وہ لفظ

आमफ़हम हैं, आपके गढ़े हुए लफ़्ज़ों की तरह महज़ कुछ लोगों की समझ में आने वाले नहीं. अगर कहीं पर इस तरह से आपको लफ़्ज़ नहीं मिलता है तो आप उसके लिये कोई भी लफ़्ज़ लिखिये. हम उसे आपकी मजबूरी समझेंगे, लेकिन थोड़े ही अरसे के बाद आप देखेंगे कि उन लफ़्ज़ों के लिए जनता आपको कोई न कोई आमफ़हम लफ़्ज़ दे देगी. इस तरह से वह थोड़े से लफ़्ज़ एक ही ज़बान को दो ज़बान न बना सकेंगे.

इस तरह से हर बार हम इसी नतीजे पर पहुँचते हैं कि अपनी ज़बान की तरक़्क़ी के लिये हमें जनता के पास जाना होगा, उसी जनता के पास जिस पर फ़िरक़ा परस्ती का कोई असर नहीं पड़ सका है और जो हिन्दी-उर्दू का लाख हौआ खड़ा करने पर भी जो ज़बान बोलती रही है वह आज भी बोलती है. वह फ़िरक़ा परस्ती में पड़ कर अपनी ज़बान बदलने को तैयार नहीं है और न ज़बान के मामले में उसे बनावटीपन ही पसन्द है. उसकी भाषा स्वाभाविक है. जिसे वह हमेशा से बोलती आई है. उसी भाषा को अपना कर और उसके स्वाभाविक बहाव को तरक़्क़ी के रास्ते पर ले जाकर ही हम अपनी ज़बान की तरक़्क़ी कर सकते हैं. जनता की ज़बान से मेरा मतलब बोलियों या भाषा की स्थानीय ख़ूबियों से नहीं है. मेरा मतलब उस ज़बान से है जिसे ब्रजभाषा और अवधी आदि बोलियों को बोलने वाली जनता ने आपसी बातचीत के लिये अपना लिया है, यानी खड़ी बोली या हिन्दुस्तानी. इसी जनता

عام فہم ہیں، آپ کے گڑھے ہوئے لفظوں کی طرح محض کچھ لوگوں کی سمجھ میں آنے والے نہیں۔ اگر کہیں پر اس طرح سے آپ کو لفظ نہیں ملتا ہے تو آپ اس کے لئے کوئی بھی لفظ لکھئے۔ ہم اسے آپ کی مجبوری سمجھیں گے، لیکن تھوڑے ہی عرصے کے بعد آپ دیکھیں گے کہ ان لفظوں کے لئے جنتا آپ کو کوئی نہ کوئی عام فہم لفظ دے دیگی۔ اس طرح سے وہ تھوڑے سے لفظ ایک ہی زبان کو دو زبان نہ بنا سکیں گے۔

اس طرح سے ہر بار ہم اسی نتیجے پر پہونچتے ہیں کہ اپنی زبان کی ترقی کے لئے ہمیں جنتا کے پاس جانا ہوگا، اسی جنتا کے پاس جس پر فرقہ پرستی کا کوئی اثر نہیں پڑ سکا ہے اور جو ہندی اردو کا لاکھ ہوّا کھڑا کرنے پر بھی جو زبان بولتی رہی ہے وہ آج بھی بولتی ہے۔ وہ فرقہ پرستی میں پڑ کر اپنی زبان بدلنے کو تیار نہیں ہے اور نہ زبان کے معاملے میں اسے بناوٹی پن ہی پسند ہے۔ اس کی بھاشا سوابھاوک ہے، جسے وہ ہمیشہ سے بولتی چلی آئی ہے۔ اسی بھاشا کو اپنا کر اور اس کے سوابھاوک بہاؤ کو ترقی کے راستے پر لے جا کر ہی ہم اپنی زبان کی ترقی کر سکتے ہیں۔ جنتا کی زبان سے میرا مطلب بولیوں یا بھاشا کی استھانیہ خوبیوں سے نہیں ہے۔ میرا مطلب اس زبان سے ہے جسے برج بھاشا اور اودھی آدی بولیوں کو بولنے والی جنتا نے آپسی بات چیت کے لئے اپنا لیا ہے، یعنی کھڑی بولی یا ہندوستانی۔ اسی جنتا

से हमें भाषा सीखनी पड़ेगी और उसके समझने लायक़ जबान लिखनी पड़ेगी. अगर इन सिद्धान्तों को मान लिया जाय तो हमारे अखबारों की भी जबान ऐसी हो सकती है जिसे ज्यादा से ज्यादा लोग समझ सकेंगे.

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन्'४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

سے ہمیں بھاشا سیکھنی پڑے گی اور اُس کے سمجھنے لائق زبان لکھنی پڑے گی۔ اگر ان سدھانتوں کو مان لیا جائے تو ہمارے اخباروں کی بھی زبان ایسی ہو سکتی ہے جسے زیادہ سے زیادہ لوگ سمجھ سکیں گے۔

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سُندرلال

پنڈت سندرلال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ ۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورہ کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں اُنھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخر میں، آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے، کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔
قیمت :- چار آنے

— منیجر 'نیا ہند'

۴۸، بائی کا باغ، الٰہ آباد

राष्ट्र भाषा और महिलायें

(बहन सरोजिनीदास)

हमारे देश में, तमाम दूसरे देशों की तरह, समाज की तरक्की के लिये साहित्य और भाषा को सही साधन बनाने की कोशिश चल रही है. राजनीति के मैदान में जो कुछ हो रहा है, उसके अलावा अदब की दुनिया और संस्कृति की दुनिया में भी पूरी कोशिश हो रही है कि जल्दी से जल्दी हमारे देश की जनता अपने को सभ्य और आगे बढ़ी हुई बना सके. महात्मा गांधी ने राजनीतिक जद्दो जेहद के साथ साथ समाजी संघर्ष को भी हमेशा अपने प्रोग्राम का बहुत जरूरी हिस्सा बनाकर रखा. हिन्दू-मुस्लिम एकता, हरिजनों का उद्धार, खादी का प्रचार, महिलाओं की आजादी वगैरा उनके प्रोग्राम के खास हिस्से रहे हैं. हिन्दी साहित्य सम्मेलन, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, हिन्दुस्तानी तालीमी संघ जैसे कार्य क्रम भी उन्हीं के साये में हमेशा चलते रहे हैं. मतलब यह कि गांधी जी कोरी राजनैतिक आजादी की ओर ध्यान नहीं देते थे, बल्कि वह देश की जनता की जिन्दगी के हर पहलू पर ध्यान देते थे और उसे ऊपर उठाने की कोशिश करते थे. आज भी, हमारे समाज की तरक्की के रास्ते में जो रोड़े आ रहे हैं उनको तभी हटाया

راشٹر بھاشا اور مہلائیں

(بہن سروجنی داس)

ہمارے دیش میں، تمام دوسرے دیشوں کی طرح، سماج کی ترقی کے لئے ساہتیہ اور بھاشا کو صحیح سادھن بنانے کی کوشش چل رہی ہے۔ راج نیتی کے میدان میں جو کچھ ہو رہا ہے، اس کے علاوہ ادب کی دنیا اور سنسکرتی کی دنیا میں بھی پوری کوشش ہو رہی ہے کہ جلدی سے جلدی ہمارے دیش کی جنتا اپنے کو سبھیہ اور آگے بڑھی ہوئی بنا سکے۔ مہاتما گاندھی نے راج نیتک جدوجہد کے ساتھ ساتھ سماجی سنگھرش کو بھی ہمیشہ اپنے پروگرام کا بہت ضروری حصہ بناکر رکھا۔ ہندو مسلم ایکتا، ہریجنوں کا ادھار، کھادی کا پرچار، مہلاؤں کی آزادی وغیرہ ان کے پروگرام کے خاص حصے رہے ہیں۔ ہندی ساہتیہ سمیلن، ہندستانی پرچار سبھا، ہندستانی تعلیمی سنگھ جیسے کاریہ کرم بھی انھیں کے سائے میں ہمیشہ چلتے رہے ہیں۔ مطلب یہ کہ گاندھی جی کوری راج نیتک آزادی کی اور دھیان نہیں دیتے تھے، بلکہ وہ دیش کی جنتا کی زندگی کے ہر پہلو پر دھیان دیتے تھے اور اسے اوپر اٹھانے کی کوشش کرتے تھے۔ آج بھی، ہمارے سماج کی ترقی کے راستے میں جو روڑے آرہے ہیں ان کو بھی ہٹایا

जा सकता है जब कि हमारा ध्यान देश की जनता की ज़िन्दगी के हर पहलू पर जाय.

साहित्य और भाषा के सवाल पर हम इसी दृष्टि से ग़ौर कर सकते हैं. अगर साहित्य जनता के जीवन का आईना है, अगर साहित्य जनता के हाथों का हथियार है और उसी हथियार के ज़रिये जनता को अपनी ज़िन्दगी की कठिनाइयों से लड़ना है तो साहित्य को जनता का साहित्य बनना पड़ेगा. इसका अर्थ यह हुआ कि साहित्य जनता के जीवन से, उसकी कठिनाइयों, मुसीबतों, संघर्षों और कामयाबी के लिये की गई कोशिशों से अलग, आसमान से टपकी हुई कोई चीज़ नहीं है. उसमें जनता का सुख-दुख, रोना हँसना, कामयाबी-नकामयाबी, मौत-ज़िन्दगी वग़ैरा की ज़िन्दा, चमकदार तस्वीरें रहती हैं. अगर ऐसा नहीं है तो वह साहित्य साहित्य नहीं है, ऐसे अदब का बनना न बनना, रहना न रहना बराबर है या यों कहें कि नुक़सान देह है. अदब के साथ ज़बान का सवाल उठता है. ज़बान मुंह के अन्दर की चीज़ है, मुंह के बाहर की चीज़ नहीं. ज़बान का सीधा सम्बन्ध दिल से होता है. दिल का काम है तजरबा करना. मगर उसको राह दिखाता है दिमाग़ और दिमाग़ इन्सान की अपनी अलग और सबसे बड़ी पूँजी है जिसे किसी भी क़ीमत पर ख़रीदा या बेचा नहीं जा सकता. तो, ज़बान का सीधा सम्बन्ध दिल और दिमाग़ से है जिसको ज़बरदस्ती अपने बस में करने, या अपने मुताबिक़ चलाने की कोशिश करना हिंसा है; जो जब समाजी और राजकाजी

جا سکتا ہے جب کہ ہمارا دھیان دیش کی جنتا کی زندگی کے ہر پہلو پر جائے۔

ساہتیہ اور بھاشا کے سوال پر ہم اسی درشٹی سے غور کر سکتے ہیں۔ اگر ساہتیہ جنتا کے جیون کا آئینہ ہے، اگر ساہتیہ جنتا کے ہاتھوں کا ہتھیار ہے اور اُسی ہتھیار کے ذریعے جنتا کو اپنی زندگی کی کٹھنائیوں سے لڑنا ہے تو ساہتیہ کو جنتا کا ساہتیہ بننا پڑے گا۔ اس کا ارتھ یہ ہوا کہ ساہتیہ جنتا کے جیون سے، اُس کی کٹھنائیوں، مصیبتوں، سنگھرشوں اور کامیابی کے لئے کی گئی کوششوں سے الگ، آسمان سے ٹپکی ہوئی کوئی چیز نہیں ہے۔ اس میں جنتا کا سکھ دکھ، رونا ہنسنا، کامیابی ناکامیابی، موت زندگی وغیرہ کی زندہ چمکدار تصویریں رہتی ہیں۔ اگر ایسا نہیں ہے تو وہ ساہتیہ ساہتیہ نہیں ہے، ایسے ادب کا بننا نہ بننا، رہنا نہ رہنا برابر ہے یا یوں کہیں کہ نقصان دہ ہے۔ ادب کے ساتھ زبان کا سوال اُٹھتا ہے۔ زبان منہ کے اندر کی چیز ہے، منہ کے باہر کی چیز نہیں۔ زبان کا سیدھا سمبندھ دل سے ہوتا ہے۔ دل کا کام ہے تجربہ کرنا۔ مگر اُس کو راہ دکھاتا ہے دماغ اور دماغ انسان کی اپنی الگ اور سب سے بڑی پونجی ہے جسے کسی بھی قیمت پر خریدا یا بیچا نہیں جا سکتا۔ تو، زبان کا سیدھا سمبندھ دل اور دماغ سے ہے جس کو زبردستی اپنے بس میں کرنے، یا اپنے مطابق چلانے کی کوشش کرنا ہنسا ہے؛ جو جب سماجی اور راج کاجی

मैदान में अमल में लाई जाती है तो साम्राजवाद या फ़ासिस्टवाद को जनम देती है. गांधीजी ने हमेशा इस रुख़ का इसीलिये विरोध किया और कहा कि अंगरेज़ी को हटा कर देसी बोली और ज़बान में ही सारा काम चलाना स्वाभाविक है. इसीलिये उन्होंने हिन्दी या हिन्दुस्तानी का इतना ज़ोरदार प्रचार किया.

आज अंगरेज़ी को हटाकर उसकी जगह पर किसी हिन्दुस्तानी ज़बान को बिठा देने की कोशिश के पीछे यही आदर्श है और यही मक़सद है. मगर यह आदर्श धुंधला पड़ता जा रहा है क्योंकि इसको पाने की कोशिश करने वाले चाहे या अन चाहे ग़लत रास्ते पर चले जा रहे हैं. जनता के जीवन की ओर आँख गड़ा कर देखते रहने के बजाय जनता की ओर से आंखें हटा लेने की आदत मज़बूत होती जा रही है. अदब और ज़बान का सवाल एक कंटीली झाड़ी में फँस गया है जिससे उबरना अभी कठिन मालूम पड़ता है. झाड़ी के कांटों को तोड़ फेंकने के बजाय कांटों को मज़बूत और नुकीला किया जा रहा है. फिर दामन बचे तो कैसे ? रास्ता साफ़ हो तो कैसे ?

अभी हाल में शंघाई में रहने वाले 'स्टेट्समैन' के सम्वाददाता ने यह ख़बर भेजी थी कि नई चीन सरकार ने एक एलान के ज़रिये अंगरेज़ी भाषा को निकाल बाहर किया और अब चीनी ज़बान में ही सारा कारबार हो रहा है. चीन की नई सरकार ने इतने कम दिनों में ही यह फ़ैसला किया और अपनी क़ौमी ज़बान को उसकी सही जगह दे दी. मगर हमारे देश के तो ढंग ही और हैं. हमारी

میدان میں عمل میں لائی جاتی ہے تو سامراج واد یا فاسسٹ واد کو جنم دیتی ہے۔ گاندھی جی نے ہمیشہ اس رُخ کا اسی لئے ورودھ کیا اور کہا کہ انگریزی کو ہٹاکر دیسی بولی اور زبان میں ہی سارا کام چلانا سوا بھاوک ہے۔ اسی لئے اُنھوں نے ہندی یا ہندستانی کا اتنا زور دار پرچار کیا۔

آج انگریزی کو ہٹاکر اُس کی جگہ پر کسی ہندستانی زبان کو بیٹھا دینے کی کوشش کے پیچھے یہی آدرش ہے اور یہی مقصد ہے۔ مگر یہ آدرش دھندلا پڑتا جارہا ہے کیونکہ اس کو پانے کی کوشش کرنے والے چاہے یا ان چاہے غلط راستے پر چلے جا رہے ہیں۔ جنتا کے جیون کی اور آنکھ گڑاکر دیکھتے رہنے کے بجائے جنتا کی اور سے آنکھ ہٹا لینے کی عادت مضبوط ہوتی جارہی ہے۔ ادب اور زبان کا سوال ایک کنٹیلی جھاڑی میں پھنس گیا ہے جس سے اُبھرنا ابھی کٹھن معلوم پڑتا ہے۔ جھاڑی کے کانٹوں کو توڑ پھینکنے کے بجائے کانٹوں کو مضبوط اور نکیلا کیا جارہا ہے۔ پھر دامن بچے تو کیسے؟ راستہ صاف ہو تو کیسے؟

ابھی حال میں شنگھائی میں رہنے والے 'اسٹیٹس مَین' کے سمواد داتا نے یہ خبر بھیجی تھی کہ نئی چین سرکار نے ایک اعلان کے ذریعہ انگریزی بھاشا کو نکال باہر کیا اور اب چینی زبان میں ہی سارا کاربار ہو رہا ہے۔ چین کی نئی سرکار نے اتنے کم دنوں میں ہی یہ فیصلہ کیا اور اپنی قومی زبان کو اُس کی ٹھیک جگہ دیدی۔ مگر ہمارے دیش کے تو ڈھنگ ہی اور ہیں۔ ہماری

सरकार ने अभी तक हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़बान के बारे में अपना कोई एलान नहीं किया. हिन्दुस्तान के लिये हिन्दुस्तानी के अलावा दूसरी कौन सी भाषा राष्ट्रभाषा बन सकती है. इसके एलान में इतनी देर क्यों? ज़ाहिर है कि जब तक हमें अपनी जनता में पूरा विश्वास न हो हम अपनी क़ौमी ज़बान के बारे में कोई फ़ैसला नहीं कर सकते. जनता में विश्वास अगर हो तो हम कठिन भाषा, भाषा के सम्बन्ध में कठमुल्लापन, तंग नज़री या फ़िरक़ा परस्ती आदि से अपने को आज़ाद कर जनवादी तरीक़े से इस मसले को तय कर सकते हैं. हमारी जनता (और हर देश की जनता) सीधी सादी है. वह घुमाव-फिराव और कठिन-दुरूह भाषा को न समझती है, न बोलती है और न इस्तेमाल करना चाहती है. वह सरल भाषा बोलती है क्योंकि उसका हृदय सरल है, स्वभाव सरल है, भाव सरल है. जो लोग ज़बान के पंडित हैं वह चाहे मानें या न मानें, संस्कृत कभी भी सारे हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा या जनभाषा नहीं बन पाई क्योंकि वह व्याकारन के क़ायदे क़ानूनों से बंधी थी और उसके शब्द भारी भरकम थे. बड़े बड़े साहित्य-कारों और दरबारी कवियों ने उसे इसलिये इस्तेमाल किया क्योंकि वह दरबार की भाषा और राज-भाषा थी. राजभाषा राष्ट्रभाषा ही रही हो इसका कोई सबूत नहीं मिलता. देश की जनता तो पाली, प्राकृत, अपभ्रंश वग़ैरा इस्तेमाल करती रही है. जो इसे नहीं मानते वह इतिहास को ग़लत पढ़ते हैं. सारे देश में संस्कृत के पंडितों का मिलना इस बात का सबूत नहीं है कि संस्कृत राष्ट्रभाषा थी, बल्कि वह इस बात का सबूत है कि संस्कृत बहुत लम्बे अरसे

سرکار نے ابھی تک ہندستان کی قومی زبان کے بارے میں اپنا کوئی اعلان نہیں کیا۔ ہندستان کے لئے ہندستانی کے علاوہ دوسری کون سی بھاشا راشٹر بھاشا بن سکتی ہے۔ اس کے اعلان میں اتنی دیر کیوں؟ ظاہر ہے کہ جب تک ہمیں اپنی جنتا میں پورا وشواس نہ ہو ہم اپنی قومی زبان کے بارے میں کوئی فیصلہ نہیں کر سکتے۔ جنتا میں وشواس اگر ہو تو ہم کٹھن بھاشا، بھاشا کے سمبندھ میں کٹھ مُلّا پن، تنگ نظری یا فرقہ پرستی آدی سے اپنے کو آزاد کر جنوادی طریقے سے اس مسئلے کو طے کر سکتے ہیں۔ ہماری جنتا (اور ہر دیش کی جنتا) سیدھی سادی ہے۔ وہ گھماؤ پھراؤ اور کٹھن دُروہ بھاشا کو نہ سمجھتی ہے، نہ بولتی ہے اور نہ استعمال کرنا چاہتی ہے۔ وہ سرل بھاشا بولتی ہے کیونکہ اس کا ہردیہ سرل ہے، سوبھاؤ سرل ہے، بھاؤ سرل ہے۔ جو لوگ زبان کے پنڈت ہیں وہ چاہے مانیں یا نہ مانیں سنسکرت کبھی بھی سارے ہندستان کی راشٹر بھاشا یا جن بھاشا نہیں بن پائی کیونکہ وہ دیاکرن کے قاعدے قانونوں سے بندھی تھی اور اسکے شبد بھاری بھرکم تھے۔ بڑے بڑے ساہتیہ کاروں اور درباری کویوں نے اُسے اسلئے استعمال کیا کیونکہ وہ دربار کی بھاشا اور راج بھاشا تھی۔ راج بھاشا راشٹر بھاشا ہی رہی ہو اس کا کوئی ثبوت نہیں ملتا۔ دیش کی جنتا تو پالی، پراکرت، اپبھرنش وغیرہ استعمال کرتی رہی ہے۔ جو اسے نہیں مانتے وہ اتہاس کو غلط پڑھتے ہیں۔ سارے دیش میں سنسکرت کے پنڈتوں کا ملنا اس بات کا ثبوت نہیں ہے کہ سنسکرت راشٹر بھاشا تھی، بلکہ وہ اس بات کا ثبوت ہے کہ سنسکرت بہت لمبے عرصے

तक राजभाषा थी. सामन्ती ज़माने में राज-भाषा और राष्ट्रभाषा का एक न होना कोई अचम्भे की बात न थी. मगर आज, जनवादी ज़माने में, प्रजातन्त्र के ज़माने में राष्ट्रभाषा को ही राजभाषा होना पड़ेगा. ऐसा न होना इस बात का सबूत है कि या तो राज में ही कोई दोष है या राष्ट्रभाषा की विचार धारा में. राज का रूप रंग ज्यों ज्यों जनवादी होता जायगा त्यों-त्यों राजभाषा भी जनता के नज़दीक आती जायगी और एक दिन ऐसा भी आयगा जब कि राज-भाषा और राष्ट्रभाषा दोनों मिलकर एक हो जायेंगी. मगर अभी तो दिल्ली दूर है.

फिर भी हमें हताश होकर नहीं बैठना है. हमें उन धागों को पकड़ना है जो हमें एकता और जनवाद की ओर ले जाते हैं. आज की बिखरी हुई समाजी हालत में उन धागों को पकड़ना आसान काम नहीं है. धागे कमज़ोर हैं और कहीं-कहीं आँखों से ओझल भी हैं. उन्हें मज़बूत करना है. जो आँखों से ओझल हैं उन्हें आँखों के आगे लाना है. विदेशी हुकूमत ने पिछले दो सौ बरस में इन एकता और समन्वय के धागों को तोड़ने की पूरी कोशिश की. हिन्दुस्तान की समाजी ज़िन्दगी का यह बिखरा हुआ रूप ही आज हमारे सामने है. जो इस बिखरे पन को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं उन्हीं समाज दोस्तों के कन्धे पर भाषा और संस्कृति की एकता की ज़िम्मेदारी है. जो इस बिखरे पन को ही मज़बूत करना चाहते हैं उन समाज-दुश्मनों से हमें होशियार रहना है और उनका हमें मुक़ाबला करना है. इसमें किसी तरह के समझौते की गुञ्जाइश नहीं है.

تک راج بھاشا تھی. سامنتی زمانے میں راج بھاشا اور راشٹر بھاشا کا ایک نہ ہونا کوئی اچنبھے کی بات نہ تھی. مگر آج، جنوادی زمانے میں، پرجاتنتر کے زمانے میں راشٹر بھاشا کو ہی راج بھاشا ہونا پڑے گا. ایسا نہ ہونا اِس بات کا ثبوت ہے کہ یا تو راج میں ہی کوئی دوش ہے یا راشٹر بھاشا کی وچار دھارا میں. راج کا روپ رنگ جیوں جیوں جنوادی ہوتا جائے گا تیوں تیوں راج بھاشا بھی جنتا کے نزدیک آتی جائیگی اور ایک دن ایسا بھی آئیگا جب کہ راج بھاشا اور راشٹر بھاشا دونوں مل کر ایک ہو جائیں گی. مگر ابھی تو دلّی دور ہے.

پھر بھی ہمیں ہتاش ہو کر نہیں بیٹھنا ہے. ہمیں اُن دھاگوں کو پکڑنا ہے جو ہمیں ایکتا اور جنواد کی اور لے جاتے ہیں. آج کی بکھری ہوئی سماجی حالت میں اُن دھاگوں کو پکڑنا آسان کام نہیں ہے. دھاگے کمزور ہیں اور کہیں کہیں آنکھوں سے اوجھل بھی ہیں. اُنھیں مضبوط کرنا ہے. جو آنکھوں سے اوجھل ہیں اُنھیں آنکھوں کے آگے لانا ہے. ودیشی حکومت نے پچھلے دو سو برس میں اِن ایکتا اور سمنویہ کے دھاگوں کو توڑنے کی پوری کوشش کی. ہندستان کی سماجی زندگی کا یہ بکھرا ہوا روپ ہی آج ہمارے سامنے ہے. جو اِس بکھرے پن کو دور کرنے کی کوشش کر رہے ہیں اُنھیں سماج دوستوں کے کندھے پر بھاشا اور سنسکرتی کی ایکتا کی ذمہ داری ہے. جو اِس بکھرے پن کو ہی مضبوط کرنا چاہتے ہیں اُن سماج دشمنوں سے ہمیں ہوشیار رہنا ہے اور اُن کا ہمیں مقابلہ کرنا ہے. اِس میں کسی طرح کے سمجھوتے کی گنجائش نہیں ہے.

इस काम में उन सब लोगों को लग जाना है जो एकता, समन्वय, और धागों के मिलाने और मज़बूत करने में विश्वास करते हैं. औरतें इस काम में बहुत हद तक हाथ बँटा सकती हैं. अभी तक भाषा और अदब के मैदान में औरतों ने बहुत कम काम किया है. उनसे काम लिया भी नहीं गया है. मगर यह याद रखना है कि हलवा, हलवाई, गेहूँ, चावल, दाल, आलू, कटहल, चूल्हा, आग, लकड़ी, साड़ी, धोती, शलवार कुर्ता, कुर्ती, टोपी, शेरवानी, पैजामा, जांघिया, बनियाइन, सद्री, क़लम, दावात, रोशनाई, काग़ज़, कापी, पेन्सिल, निब, फ़ाउन्टेनपेन, रेडियो, दरी, क़ालीन, तकिया, चादर, मसनद, कुर्सी, मेज़, टेबुल, तख़्त, आंगन, छत, बरामदा, सहन, दरवाज़ा, खिड़की, झरोखा, पर्दा, घूंघट, चूड़ी, गहना, नेकलेस, इयरिंग, करधनी, पायल, झांझ, अगूंठी, आंख, नाक, माथा, बाल, ओठ, गला, छाती, हाथ, पांव, नाख़ून, हथेली, मेंहदी, रंग, ख़ूबसूरती, नख़रा, जवानी, अलबेलापन, ज़िन्दगी वग़ैरा से सबसे सीधा सम्बन्ध उन्हीं का है. बिना उनके सहयोग के न भाषा भाषा बन सकती है, न साहित्य साहित्य रह सकता है. क़ौम और ज़बान में एकता क़ायम रखने के लिये यानी क़ौमी ज़बान बनाने के लिये ज़रूरी है कि समाज के सभी अंगों से सहायता ली जाय. महिलाओं की सहायता इस काम में सबसे अधिक कारगर साबित होगी—जिस भाषा को वह मंज़ूर करेंगी, वही भाषा राष्ट्रभाषा बनेगी.

اس کام میں ان سب لوگوں کو لگ جانا ہے جو ایکتا، سمنوے، اور دھاگوں کے ملانے اور مضبوط کرنے میں وشواس کرتے ہیں۔ عورتیں اس کام میں بہت حد تک ہاتھ بٹا سکتی ہیں۔ ابھی تک بھاشا اور ادب کے میدان میں عورتوں نے بہت کم کام کیا ہے۔ ان سے کام لیا بھی نہیں گیا ہے۔ مگر یہ یاد رکھنا ہے کہ حلوہ، حلوائی، گیہوں، چاول، دال، آلو، کٹھل، چولہا، آگ، لکڑی، ساڑی، دھوتی، شلوار، کرتہ، کرتی، ٹوپی، شیروانی، پاجامہ، جانگھیا، بنیان، صدری، قلم، دوات، روشنائی، کاغذ، کاپی، پینسل، نب، فاؤنٹین پن، ریڈیو، دری، قالین، تکیہ، چادر، مسند، کرسی، میز، ٹیبل، تخت، آنگن، چھت، برآمدہ، صحن، دروازہ، کھڑکی، جھروکہ، پردہ، گھونگھٹ، چوڑی، گہنا، نکلس، ایرنگ، کردھنی، پائل، جھانجھ، انگوٹھی، آنکھ، ناک، ماتھا، بال، اوٹھ، گلا، چھاتی، ہاتھ، پاؤں، ناخون، ہتھیلی، مہندی، رنگ، خوبصورتی، نخرہ، جوانی، البیلاپن، زندگی وغیرہ سے سب سے سیدھا سمبندھ انہیں کا ہے۔ بنا ان کے سہیوگ کے نہ بھاشا بھاشا بن سکتی ہے، نہ ساہتیہ ساہتیہ رہ سکتا ہے۔ قوم اور زبان میں ایکتا قائم رکھنے کے لئے یعنی قومی زبان بنانے کے لئے ضروری ہے کہ سماج کے سبھی انگوں سے سہایتا لی جائے۔ مہلاؤں کی سہایتا اس کام میں سب سے ادھک کارگر ثابت ہوگی۔ جس بھاشا کو وہ منظور کریں گی، وہی بھاشا راشٹر بھاشا بنے گی

भाषा की शुद्धि

(भाई रतन लाल बंसल]

आजकल हिन्दी से विदेशी और खास तौर पर अरबी फ़ारसी के लफ़्ज़ों को निकाल कर उनकी जगह संस्कृत से नए नए शब्द गढ़ने का काम जिस जोश ख़रोश के सथ हो रहा है, उसने साधारण जनता के लिये ही नहीं, बल्कि संस्कृत के बड़े बड़े विद्वानों यानी आलिमों तक के लिये मुसीबत पैदा कर दी है. महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसे संस्कृत के विद्वान् और 'हिन्दी' के कट्टर हिमायती तक ने, हाल में ही 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' की तरफ़ से निकलने वाले रिसाले 'सम्मेलन पत्रिका' में एक लम्बा लेख इसी विषय पर लिखा है, जिसमें उन्होंने बताया है कि सी० पी० सरकार की सर परस्ती में डाक्टर रघुवीर साहब जो शब्द कोष यानी लुग़त तय्यार कर रहे हैं, उसके "जबड़े मसूड़े तोड़ देने वाले" लफ़्ज़ों की गढ़न कितनी बेबुनियाद और बेमानी है. (यह एक अलग बात है कि ख़ुद राहुल जी के आज कल भाषा के बारे में जो विचार हैं, डा० रघुवीर साहब की जेहनियत उन विचारों की ही पैदावार है या नहीं, लेकिन इससे इतना तो साबित हो ही जाता है कि जनता की ज़बान पर चढ़े हुए शब्दों को सिर्फ़ विदेशी होने के क़सूर में निकाल कर उनकी जगह जो नए शब्द रक्खे जा रहे हैं, उनको जनता तो क्या, बड़े बड़े पंडित भी नहीं समझ पा रहे हैं और न वह कभी

(۳۶۸)

بھاشا کی شدھی

(بھائی رتن لال بنسل)

آج کل ہندی سے ودیشی اور خاص طور پر عربی فارسی کے
لفظوں کو نکال کر ان کی جگہ سنسکرت سے نئے نئے شبد
گڑھنے کا کام جس جوش خروش کے ساتھ ہو رہا ہے، اس نے سادھارن
جنتا کے لئے ہی نہیں، بلکہ سنسکرت کے بڑے بڑے ودوانوں یعنی
عالموں تک کے لئے مصیبت پیدا کر دی ہے۔ مہاپنڈت راہل سانکرتیاین
جیسے سنسکرت کے ودوان اور 'ہندی' کے کٹر حامی تک نے،
حال ہی میں 'ہندی ساہتیہ سمیلن' کی طرف سے نکلنے والے رسالے
'سمیلن پتریکا' میں ایک لمبا لیکھ اسی وشیہ پر لکھا ہے، جس میں انھوں نے
بتایا ہے کہ سی۔ پی۔ سرکار کی سرپرستی میں ڈاکٹر رگھوویر صاحب جو
شبد کوش یعنی لغت تیار کر رہے ہیں، اس کے "جبڑے مسوڑھے
توڑ دینے والے" لفظوں کی گڑھن کتنی بے بنیاد اور بے معنی ہے۔
یہ ایک الگ بات ہے کہ خود راہل جی کے آج کل بھاشا کے بارے
میں جو وچار ہیں، ڈاکٹر رگھوویر صاحب کی ذہنیت ان وچاروں کی
ہی پیداوار ہے یا نہیں، لیکن اس سے اتنا تو ثابت ہو ہی جاتا ہے
کہ جنتا کی زبان پر چڑھے ہوئے شبدوں کو صرف ودیشی ہونے
کے قصور میں نکال کر ان کی جگہ جو نئے شبد رکھے جا رہے ہیں، ان کو
جنتا تو کیا، بڑے بڑے پنڈت بھی نہیں سمجھ پا رہے ہیں اور نہ وہ کبھی

समझे ही जा सकेंगे क्यों कि उनकी गढ़न किसी असूल पर नहीं की जा रही है. दूसरी बात यह कि यह नये शब्द इतने नुकीले हैं कि 'सिगनल', 'कलक्टर' और 'बैंक' जैसे आसान और सीधेसादे लफ़्ज़ों को भी 'सिंगल', कलट्ट' और 'बैंक' कहने वाली जनता से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह 'सिगनल' को 'अग्निरथ गमनागमन सूचक लोह पट्टिका' कलक्टर को 'मंडलाधीश' और 'बैंक' को 'धनागार' कहने लगेगी. यह इन्सानी फ़ितरत है कि वह लफ़्ज़ों को तोड़मरोड़ कर ऐसा बना लेता है, जिनको वह आसानी से बोल सके. यही वजह है कि बड़े बड़े बंगाली पंडित भी 'लक्ष्मी' को 'लौक्खी' कहते और लिखते हैं और हमारे गवर्नर जनरल राजगोपालाचार्य, हालाँकि संस्कृत के एक बड़े विद्वान हैं, लेकिन कभी अपना नाम 'राजगोपाला चार्य' नहीं लिखते बल्कि हमेशा 'राजगोपाला चारि' ही लिखते हैं. जो लोग यह नए लफ़्ज़ गढ़ रहे हैं, या जो इन नए लफ़्ज़ों के हिमायती हैं वह ख़ुद कभी उन लफ़्ज़ो का इस्तेमाल नहीं करते, जिनको वह जनता से बुलवाना चाहते हैं. क्या डाक्टर रघुवीर साहब अपने मोटर ड्राइवर से कहते होंगे कि "वहित्रयाण ले आओ मुझे कार्यालय प्रस्थान करना है." या श्री पंत जी 'वारंट' को 'प्राह्वानपत्र' चुंगी को 'नगर पालिका' और रजिस्टी को 'पंजपिन' कहते हैं ? अथवा टंडन जी को अगर अपने नौकर से कहना होता है कि 'सेब ले आओ' तो वह 'उत्कोल ले आओ' कहते हैं ?

इसी सवाल का एक दूसरा पहलू यह है और उसी पर हम अपने इस लेख में ज़रा तफ़सील से विचार भी करना चाहते हैं कि हम अगर अपनी कलचर की हिफ़ाज़त के लिये विदेशी शब्दों

रहा

سمجھے ہی جاسکیں گے کیوں کہ ان کی گڑھن کسی اصول پر نہیں کی جا رہی ہے. دوسری بات یہ کہ یہ نئے شبد اتنے نکیلے ہیں کہ 'سگنل'، 'کلکٹر'، اور 'بینک'، جیسے آسان اور سیدھے سادے لفظوں کو بھی 'سنگل'، 'کلٹر'، اور 'بینک' کہنے والی جنتا سے یہ امید نہیں کی جاسکتی کہ وہ 'سگنل' کو 'اگنی رتھ گمناگمن سوچک لوہ پٹیکا'، 'کلکٹر' کو 'منڈلادھیش'، اور 'بینک' کو 'دھناگار' کہنے لگے گی. یہ انسانی فطرت ہے کہ وہ لفظوں کو توڑ مروڑ کر ایسا بنا لیتا ہے، جن کو وہ آسانی سے بول سکے. یہی وجہ ہے کہ بڑے بڑے بنگالی پنڈت بھی 'لکشمی' کو 'لوکھی' کہتے اور لکھتے ہیں اور ہمارے گورنر جنرل راج گوپال اچاریہ، حالانکہ سنسکرت کے ایک بڑے ودوان ہیں، لیکن کبھی اپنا نام 'راج گوپالا چاریہ' نہیں لکھتے بلکہ ہمیشہ 'راج گوپالا چاری' ہی لکھتے ہیں. جو لوگ یہ نئے لفظ گڑھ رہے ہیں، یا جو ان نئے لفظوں کے حمایتی ہیں وہ خود کبھی ان لفظوں کا استعمال نہیں کرتے، جن کو وہ جنتا سے بلوانا چاہتے ہیں. کیا ڈاکٹر رگھو ویر صاحب اپنے موٹر ڈرائیور سے کہتے ہوں گے کہ "بہتریان لے آؤ مجھے کاریالیہ پرستھان کرنا ہے." یا شری پنت جی 'وارنٹ' کو 'پراہوان پتر' چنگی کو 'نگر پالیکا' اور رجسٹری کو 'پنجی پن' کہتے ہیں؟ اتھوا ٹنڈن جی کو اگر اپنے نوکر سے کہنا ہوتا ہے کہ 'سیب لے آؤ' تو وہ 'اتکول لے آؤ' کہتے ہیں؟

اسی سوال کا ایک دوسرا پہلو یہ ہے اور اسی پر ہم اپنے اس لیکھ میں ذرا تفصیل سے وچار بھی کرنا چاہتے ہیں کہ ہم اگر اپنی سبھیتا کی حفاظت کے لئے ودیشی شبدوں

से अपनी ज़बान को बिलकुल पाक कर देना चाहते हैं, तो फिर हम अपने उस पुराने साहित्य का क्या करें, जो हमारी कलचर का सबसे बड़ा सरमाया है और जिसमें विदेशी शब्द भरे पड़े हैं. पढ़ कर चौंकिये मत और न हठ धर्मी ही दिखाइये, पर असलियत यह है कि वेदों में भी विदेशी लफ़्ज़ हैं और लोकमान्य तिलक ने 'भंडारकर स्मारक ग्रन्थ' में लिखे अपने एक लेख में इस पर बड़ी आलिमाना बहस की है, जिसमें उन्होंने साबित किया है (कि वेदों के ज़माने के आर्य समुन्दर के रास्ते बाबुल से सम्बन्ध बनाए हुए थे. यह 'बाबुल' आज कल के बग़दाद से सत्तर मील दूर था और इस देश के बासी उसी सेमेटिक नस्ल के थे, जिसके अरब हैं. बाबुल का मतलब "बाब-इलि" यानी 'दर वाज़ा देवता का' होता है. लोकमान्य तिलक ने साबित किया है कि अथर्व वेद के कई मंत्र, जो जादूटोने से ताल्लुक़ रखते हैं और संस्कृत के लिहाज़ से उनका कोई मतलब समझ मे नहीं आता उन मत्रों में बाबुली भाषा के शब्द, जिसको पुरानी अरबी कहा जा सकता है, बहुतायत से हैं. इसी प्रकार श्री भण्डारकर और श्री जायसवाल ने भी वेदों के बहुत से शब्दों को विदेशी माना है. (अब सवाल यह उठता है कि क्या अब हमें अपनी भाषा को शुद्ध करने के लिये वेदों से यह मंत्र या यह शब्द निकाल देने होंगे ? और अगर नहीं निकालेंगे तो हमारी भाषा शुद्ध कैसे होगी ? मेरा ख़याल है कि शायद यही परेशानी आज से कुछ बरस पहिले उन मुसलमान दोस्तों को भी हुई होगी, जिन्होंने 'मुसलिम कलचर' की हिफ़ाज़त के लिये हिन्दी के शब्दों का बायकाट करना शुरू कर दिया था.

سے اپنی زبان کو بالکل پاک کر دینا چاہتے ہیں، تو پھر ہم اپنے اس پرانے ساہتیہ کا کیا کریں، جو ہماری کلچر کا سب سے بڑا سرمایہ ہے اور جس میں ودیشی شبد بھرے پڑے ہیں۔ پڑھ کر چونکئے مت اور نہ ہٹ دھرمی ہی دکھائیے، پر اصلیت یہ ہے کہ ویدوں میں بھی ودیشی لفظ ہیں اور لوکمانیہ تلک نے "بھنڈارکر سمارک گرنتھ" میں لکھے اپنے ایک لیکھ میں اس پر بڑی عالمانہ بحث کی ہے، جس میں انھوں نے ثابت کیا ہے کہ ویدوں کے زمانے کے آریہ سمندر کے راستے بابل سے سمبندھ بنائے ہوئے تھے۔ یہ بابل آج کل کے بغداد سے ستر میل دور تھا اور اس دیش کے باسی اسی سیمیٹک نسل کے تھے، جس کے عرب ہیں۔ بابل کا مطلب "باب الی" یعنی "دروازہ دیوتا کا" ہوتا ہے۔ لوکمانیہ تلک نے ثابت کیا ہے کہ اتھرو وید کے کئی منتر، جو جادو ٹونے سے تعلق رکھتے ہیں اور سنسکرت کے لحاظ سے ان کا کوئی مطلب سمجھ میں نہیں آتا ان منتروں میں بابلی بھاشا کے شبد، جس کو پرانی عربی کہا جا سکتا ہے، بہتایت سے ہیں۔ اسی پرکار شری بھنڈارکر اور شری جائسوال نے بھی ویدوں کے بہت سے شبدوں کو ودیشی مانا ہے۔ اب سوال یہ اٹھتا ہے کہ کیا اب ہمیں اپنی بھاشا کو شدھ کرنے کے لئے ویدوں سے یہ منتر یا یہ شبد نکال دینے ہوں گے؟ اور اگر نہیں نکالیں گے تو ہماری بھاشا شدھ کیسے ہوگی؟ میرا خیال ہے کہ شاید یہی پریشانی آج سے کچھ برس پہلے ان مسلمان دوستوں کو بھی ہوئی ہوگی، جنھوں نے "مسلم کلچر" کی حفاظت کے لئے ہندی کے شبدوں کا بائیکاٹ کرنا شروع کر دیا تھا۔

हालाँ कि जनाब सय्यद सुलेमान नदवी साहब ने अपनी मशहूर किताब 'अरब और हिन्द के ताल्लुक़ात' में यह बात साफ़ तौर से लिखी दी है कि क़ुरान में कम से कम तीन लफ़्ज़ तो ठेठ हिन्दी के हैं ही. लेकिन हमारे दोस्तों ने इस दलील पर ध्यान भी नहीं दिया और अपनी जिद पर अड़े रहे. गोया इन भाइयों ने मान लिया है कि वेद और क़ुरान के सिरजने वाले को हिन्दू और मुसलिम कलचर की हिफ़ाज़त का इतना ख़याल नहीं था जितना उनको है.

(वेदों के ज़माने के बाद संस्कृत का जो साहित्य है उसमें भी दसियों लफ़्ज़ विदेशी मिलते हैं. फ़ारसी का तो कोई सवाल ही नहीं उठता क्योंकि भाषा शास्त्र का एक मामूली से मामूली विद्यार्थी भी यह जानता है कि संस्कृत और फ़ारसी मां जाई बहिनें हैं और इन दोनों की शक्ल ठीक उसी तरह मिलती जुलती है जैसी अक्सर दो मां जाई बहिनों की होती है. लेकिन फ़ारसी के अलावा अरबी के भी बहुत से लफ़्ज़ संस्कृत में आये हैं ख़ास तौर पर ज्योतिष की किताबों में इस तरह के बहुत से विदेशी लफ़्ज़ मिलते हैं. अभी कुछ दिन पहिले शान्ति निकेतन में हिन्दी के आचार्य श्री हज़ारी प्रसाद जी द्विवेदी ने हिन्दी के मशहूर रिसाले 'आजकल' में एक लेख लिखा था, जिसमें उन्होंने ज्योतिष के एक ख़ास और अहम लफ़्ज़ को विदेशी बताया था. संस्कृत के एक बड़े आचार्य श्री कुमारिल भट्ट ने भी संस्कृत के बहुत से शब्दों को विदेशी माना है. पर यह तमाम विदेशी शब्द संस्कृत में चलते रहे और आज भी चल रहे हैं. एक से एक बड़े आलिम, रिषि. और तपस्वी आये,

حالانکہ جناب سید سلیمان ندوی صاحب نے اپنی مشہور کتاب 'عرب اور ہند کے تعلقات' میں یہ بات صاف طور سے لکھ دی ہے کہ قرآن میں کم سے کم تین لفظ تو ٹھیٹھ ہندی کے ہیں ہی. لیکن ہمارے دوستوں نے اس دلیل پر دھیان بھی نہیں دیا اور اپنی ضد پر اڑے رہے. گویا ان بھائیوں نے مان لیا ہے کہ وید اور قرآن کے سرجنے والے کو ہندو اور مسلم کلچر کی حفاظت کا اتنا خیال نہیں تھا جتنا ان کو ہے.

(ویدوں کے زمانے کے بعد سنسکرت کا جو ساہتیہ ہے اس میں بھی دسیوں لفظ ودیشی ملتے ہیں. فارسی کا تو کوئی سوال ہی نہیں اٹھتا کیونکہ بھاشا شاستر کا ایک معمولی سے معمولی ودیارتھی بھی یہ جانتا ہے کہ سنسکرت اور فارسی ماں جائی بہنیں ہیں اور ان دونوں کی شکل ٹھیک اسی طرح ملتی جلتی ہے جیسی اکثر دو ماں جائی بہنوں کی ہوتی ہے. لیکن فارسی کے علاوہ عربی کے بھی بہت سے لفظ سنسکرت میں آئے ہیں خاص طور پر جیوتش کی کتابوں میں اس طرح کے بہت سے ودیشی لفظ ملتے ہیں. ابھی کچھ دن پہلے شانتی نکیتن میں ہندی کے آچاریہ شری ہزاری پرساد جی دویدی نے ہندی کے مشہور رسالے 'آج کل' میں ایک لیکھ لکھا تھا، جس میں انھوں نے جیوتش کے ایک خاص اور اہم لفظ کو ودیشی بتایا تھا. سنسکرت کے ایک بڑے آچاریہ شری کمارل بھٹ نے بھی سنسکرت کے بہت سے شبدوں کو ودیشی مانا ہے. پر یہ تمام ودیشی شبد سنسکرت میں چلتے رہے اور آج بھی چل رہے ہیں. ایک سے ایک بڑے عالم، رشی، اور تپسوی آئے،

लेकिन उनको इन शब्दों के इस्तेमाल करने में कोई गुरेज़ न हुआ. उन्होंने इन शब्दों का ऐसी उदार दिली से इस्तेमाल किया कि वह शब्द उनके ही हो गये. भला आज कोई कह सकता है कि संस्कृत साहित्य में जगह जगह आने वाला 'असुर' शब्द विदेशी है ? पर आज ....

संस्कृत के बाद अब हिन्दी की बात लीजिये. संस्कृत तो आज इने गिने लोग ही जानते हैं. इस लिये वह सोचेंगे या अपनी ज़िद को जायज़ साबित करने के लिये सोचना चाहेंगे कि वेदों और संस्कृत साहित्य के बारे में जो बातें ऊपर कही गई हैं, कौन जाने वह ठीक हैं या ग़लत ? लेकिन हिन्दी साहित्य के लिये तो यह बात नहीं है. हम हिन्दी के तीन बड़े कवियों को ही इस सिलसिले में लें. तुलसीदास, सूर दास और बिहारी. रहीम को भी मैं तो इसी पाये का कवि मानता हूँ. लेकिन उनको मैं जानबूझ कर इस लिये छोड़े दे रहा है कि वह मुसलमान थे और अगर मैं उनकी कविता में विदेशी शब्द गिनाने लगूँगा, तो मेरे बहुत से भाई कहेंगे कि रहीम ने जान बूझ कर, हिन्दी को बिगाड़ने के लिये, इन विदेशी शब्दों का प्रयोग किया था. क्योंकि आज से कुछ दिन पहले तक हमारे बहुत से मुसलमान दोस्त अक्सर यह कहते और लिखते थे कि गान्धी जी ने उर्दू को बिगाड़ने के लिये हिन्दुस्तानी ज़बान चलाई है. शायद इस क़िस्म के लोग बड़ी से बड़ी शख़्सियतों को भी सिर्फ़ अपने ही पैमाने से नापना जानते हैं.

यहाँ मैं यह भी याद दिलाना चाहूँगा कि हिन्दी के इन तीन बड़े कवियों में बिहारी तो सिर्फ़ एक बड़े शायर ही थे, लेकिन सूर

لیکن ان کو ان شبدوں کے استعمال کرنے میں کوئی گریز نہ ہوا. انھوں نے ان شبدوں کا ایسی اُدار دلی سے استعمال کیا کہ وہ شبد ان کے ہی ہو گئے. بھلا آج کوئی کہہ سکتا ہے کہ سنسکرت ساہتیہ میں جگہ جگہ آنے والا 'اسر' شبد ودیشی ہے ؟ پر آج ....

سنسکرت کے بعد اب ہندی کی بات لیجئے. سنسکرت تو آج اِنے گِنے لوگ ہی جانتے ہیں. اس لئے وہ سوچیں گے یا اپنی ضد کو جائز ثابت کرنے کے لئے سوچنا چاہیں گے کہ ویدوں اور سنسکرت ساہتیہ کے بارے میں جو باتیں اوپر کہی گئی ہیں، کون جانے وہ ٹھیک ہیں یا غلط ؟ لیکن ہندی ساہتیہ کے لئے تو یہ بات نہیں ہے. ہم ہندی کے تین بڑے کویوں کو ہی اس سلسلے میں لیں. تلسی داس، سورداس اور بہاری. رحیم کو بھی میں تو اسی پائے کا کوی مانتا ہوں. لیکن ان کو میں جان بوجھ کر اس لئے چھوڑے دے رہا ہوں کہ وہ مسلمان تھے اور اگر میں ان کی کویتا میں ودیشی شبد گنانے لگوں گا، تو میرے بہت سے بھائی کہیں گے کہ رحیم نے جان بوجھ کر، ہندی کو بگاڑنے کے لئے، ان ودیشی شبدوں کا پریوگ کیا تھا. کیوں کہ آج سے کچھ دن پہلے تک ہمارے بہت سے مسلمان دوست اکثر یہ کہتے اور لکھتے تھے کہ گاندھی جی نے اردو کو بگاڑنے کے لئے ہندستانی زبان چلائی ہے. شاید اس قسم کے لوگ بڑی سے بڑی شخصیتوں کو بھی صرف اپنے ہی پیمانے سے ناپنا جانتے ہیں.

یہاں میں یہ بھی یاد دلانا چاہوں گا کہ ہندی کے ان تین بڑے کویوں میں بہاری تو صرف ایک بڑے شاعر ہی تھے، لیکن سور

दास और तुलसी दास सिर्फ एक बड़े शायर ही नही बल्कि एक बड़े सन्त भी थे और अक्सर इन दोनों महान् कवियों के बारे में यह कहा गया है कि जब हिन्दू कलचर बड़े खतरे में थी और मर रही थी तब इन दोनों कवियों महात्माओं ने अपनी वाणी के अमृत से हिन्दू कल्चर को नया जीवन दिया था. लेकिन ताज्जुब है कि 'हिन्दू संस्कृति' के यह दोनों महान् रक्षक भी इस गुनाह के गुनाहगार हैं कि उन्होंने मलेच्छ भाषाओं के शब्दों का उदारता से उपयोग किया है. श्री तुलसी दास जी की कुछ इस प्रकार की चौपाइयाँ देखिये—

गई बहोरी गरीब निवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
नाम अनेक गरीब निवाजे. लोक वेद वर विरद विराजे ॥
लोकहुवेद सुसाहिब रीती. विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्राम नर नागर. पंडित मूढ़ मलीन उजागर. ॥

यह तो सिर्फ कुछ नमूने की चौपाइयाँ हैं. इनमें जिन शब्दों के नीचे लाइन है, उन पर ग़ौर कीजिये और सोचिये कि क्या वह उसी भाषा के शब्द नहीं हैं, जिसे आज हम म्लेच्छ भाषा कहने लगे हैं. और ज़रा यह भी सोचिये कि क्या वह भाषा भी म्लेच्छ भाषा रही होगी जिसके शब्द तुलसीदास जी जैसे सन्त ने रामायन जैसे पवित्र ग्रन्थ में इस्तेमाल किये हैं.

तुलसीदास जी के बाद सूरदास जी को लीजिये. उनका एक भजन है.:—

साँचो सो लिखधार कहावै.
काया ग्राम मसाहत करिकै. जमा बाँध ठहरावै.

داس اور تلسی داس صرف ایک بڑے شاعر ہی نہیں بلکہ ایک بڑے سنت بھی تھے اور اکثر ان دونوں مہان کویوں کے بارے میں یہ کہا گیا ہے کہ جب ہندو کلچر بڑے خطرے میں تھی اور مر رہی تھی تب ان دونوں کویوں مہاتماؤں نے اپنی بانی کے امرت سے ہندو کلچر کو نیا جیون دیا تھا. لیکن تعجب ہے کہ ہندو سنسکرتی، کے یہ دونوں مہان رکشک بھی اس گناہ کے گناہ گار ہیں کہ انھوں نے ملیچھ بھاشاؤں کے شبدوں کا اُدارتا سے اپیوگ کیا ہے. شری تلسی داس جی کی کچھ اس پرکار کی چوپائیاں دیکھئے —

گئی بہوری گریب نواجو ! سرل سبل صاحب رگھوراجو !!
نام انیک گریب نوازے. لوک وید بر برد برازے !!
لوک ہو وید صاحب ریتی. ونے سنت پہچانت پریتی !!
گنی گریب گرام نر ناگر. پنڈت مڑھ ملین اجاگر !!

یہ تو صرف کچھ نمونے کی چوپائیاں ہیں ان میں جن شبدوں کے نیچے لائن ہے ان پر غور کیجئے اور سوچئے کہ کیا وہ اسی بھاشا کے شبد نہیں ہیں جسے آج ہم ملیچھ بھاشا کہنے لگے ہیں. اور ذرا یہ بھی سوچئے کہ کیا وہ بھاشا بھی ملیچھ بھاشا رہی ہوگی جس کے شبد تلسی داس جی جیسے سنت نے رامائن جیسے پوتر گرنتھ میں استعمال کئے ہیں.

تلسی داس جی کے بعد سورداس جی کو لیجئے. ان کا ایک بھجن ہے :—

سانچو سو لکھدھار کہاوے.
کایا گرام مساحت کرکے. جما باندھ ٹھہراوے.

मनमथ करे कैद अपने में, ज्ञान जहतिया लावै ।
माँड़ि माँड़ि खरहान क्रोध को, पोता भजन भरावै ॥
बट्टा काटि कसूर मर्म को, फरद तले लै डारे ।
निश्चय एक असल पै राखै, टरै न कबहूँ टारै ॥
भरि अवारजा प्रेम प्रीति को, असल नहीं खतियावै ।
दूजी करै दूरि करि दाई, नेक न तामें आवै ॥
मुलजिम जोरे ध्यान कुल्लका, हरि सों तठे लै राखै ।
निर्भय रूपै लोभ छोड़ि कै, सोई बारिज राखै ॥
जमा खर्च नीके कर राखै, लेखा समुझि बतावै ।
सूर आप मुजरान मुहासिब, लै जवाब पहुँचावै ॥

हिन्दी के आचार्य श्री वियोगी हरि जी ने, जो आज हिन्दुस्तानी के प्रबल विरोधी हैं. संक्षिप्त सूर सागर' की भूमिका में इस बात को तसलीम करते हुए लिखा हैः—

"सूरदास ने विशुद्ध ब्रजभाषा के साथ साथ फ़ारसी शब्दों का भी अच्छा प्रयोग किया है × × ×"

(इसी प्रकार बिहारी की मशहूर किताब "बिहारी सतसई" पढ़ आइये उसमें आपको सैकड़ों हजारों शब्द बिदेशी मिल जावेंगे. कुछ नमूने देखियेः—

"लहि जोबन आमिल जोर
बड़ी इजाफा कीन
किबुलनुमा लौ दीठ
उपजी बड़ी बलाइ

من متھ کرے کید اپنے میں، گیان جہتیا لاوے ।
مانڈی مانڈی کھرہان کرودھ کو، پوتا بھجن بھراوے ॥
بٹا کاٹی کھسور مرم کو، پھرد تلے لے ڈارے ।
نشچے ایک اصل پے راکھے، ٹرے نہ کبہو ٹارے ॥
بھری اوارجا پریم پریتی کو، اصل نہیں کھتیاوے ।
دوجی کورے دوری کری داعی، نیک نہ تا میں آوے ॥
ملزم جورے دھیان کل کا، ہری سوں تھٹھے لے راکھے ।
نربھے روپے لوبھ چھوڑی کے، سوئی بارج راکھے ॥
جما کھرچ نیکے کر راکھے، لیکھا سموجھی بتاوے ।
سور آپ مجران محاسب، لے جواب پہونچاوے ॥

ہندی کے آچاریہ شری ویوگی ہری جی نے، جو آج ہندستانی کے پربل ورودھی ہیں، سنچھپت سور ساگر، کی بھومکا میں اس بات کو تسلیم کرتے ہوئے لکھا ہے :—

"سورداس نے شدھ برج بھاشا کے ساتھ ساتھ فارسی شبدوں کا بھی اچھا پریوگ کیا ہے × × ×"

اسی پرکار بہاری کی مشہور کتاب "بہاری ست سئی" پڑھ جائیے اس میں آپ کو سیکڑوں ہزاروں شبد ودیشی مل جاویں گے۔ کچھ نمونے دیکھئے :—

"لہی جوبن عامل جور
بڑھ و اضافا کین
قبلہ نما لو دیڑھ
اپجی بڑی بلائی

आगे कौन हवाल
नागर नरन सिकार
दई दई सु कबूल
अब मुँह आहि न आह
कौन गरीब निवाजिबौ
लखि लाखन की फौज
कोऊ लाख हजार
परी परी सीट्टद
ड्योढ़ी लसत निशान
दिये लोभ चसमा चखन)

वग़ैरा वग़ैरा

(इस प्रकार आप ब्रजभाषा के किसी पुराने कवि की कविता उठा लीजिये, उसमें आपको विदेशी भाषा के और विदेशी भाषा में भी खास तौर पर अरबी फ़ारसी के लफ़्ज़ों का एक बड़ा भंडार मिलेगा.)

और यह पुराने कवि ही नहीं, जिनके लिये अगर बहस और ज़िद ही करनी है तो कहा जा सकता है कि यह तो सन्त महात्मा थे, या रास रंग में लीन रहने वाले दरबारी कवि थे, यह अपने महात्मा पन के कारन या अलमस्ती के कारन इस सवाल के कल्चरल या सियासी पहलू पर ग़ौर न कर सके. बल्कि आप उन लोगों की भी कवितायें पढ़िये, जिनकी ज़िन्दगी और शानदार कारनामों को एक खास रंग देकर हिन्दू फ़िरक़ा परस्तों ने आज

آگے کون حوال
ناگر نرن سکار
دئی دئی سو کبول
اب منہ آہی نہ آہ
کون گریب نوا جبو
لکھ لاکھن کی پھوج
کوؤ لاکھ ہجار
پری پری سی ٹوٹ
ڈیوڑھی لست نشان
دئے لوبھ چسما چکھن

وغیرہ وغیرہ

اس پرکار آپ برج بھاشا کے کسی پرانے کوی کی کویتا اٹھا لیجیے، جس میں آپ کو ودیشی بھاشا کے اور ودیشی بھاشاؤں میں بھی خاص طور پر عربی فارسی کے لفظوں کا ایک بڑا بھنڈار ملے گا۔

اور یہ پرانے کوی ہی نہیں، جن کے لئے اگر بحث اور ضد ہی کرنی ہے تو کہا جا سکتا ہے کہ یہ تو سنت مہاتما تھے، یا راس رنگ میں لین رہنے والے درباری کوی تھے، یہ اپنے مہاتما پن کے کارن یا الستی کے کارن اس سوال کے کلچرل یا سیاسی پہلو پر غور نہ کر سکے۔ بلکہ آپ ان لوگوں کی بھی کویتائیں پڑھیے، جن کی زندگی اور شاندار کارناموں کو ایک خاص رنگ دے کر ہندو فرقہ پرستوں نے آج

उनको अपना हीरो मान लिया है. और कहा जाता है कि अगर वह न हुए होते, तो आज हिन्दुस्तान में एक भी चोटी नज़र न आती होती और पूरा हिन्दुस्तान मुसलमान हो गया होता. मेरा मतलब शिवाजी के दरबारी कवि 'भूषण' और श्री गुरु गोविन्द सिंह जी से है. भूषण का शायद ही काई कवित्त ऐसा हो, जिसमें अरबी फ़ारसी के दो चार लफ़्ज़ न मिल जायँ, लेकिन न तो भूषण को उनको इस्तेमाल करने में हिन्दू धर्म का कुछ नुक़सान दिखाई दिया और न महराज शिवाजी को ही इस पर कभी कोई एतराज़ हुआ. महाराज शिवाजी से भूषण को अपने इन अरबी फ़ारसी के लफ़्ज़ों से भरे हुए कवित्तों पर ही लाखों रुपये का इनाम मिलता रहा. महाराज शिवाजी तो इस मामले में इतने उदार थे कि उन्होंने अपने प्रधान मंत्री को 'पेशवा' का ख़िताब दिया था. वह चाहते तो इस पद के लिये महा आमात्य या इसी प्रकार का कोई संस्कृत नाम खोज सकते थे, पर उन्होंने इसकी ज़रूरत नहीं समझी.

अभी कुछ दिन पहले तक राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की तरफ़ से लाखों की तादाद में एक छोटी सी किताब ख़ुफ़िया तौर पर बाँटी गई थी, जिसे बताया जाता था कि यह वह ख़त है जिसे महाराज शिवा जी ने महाराज जयसिंह को लिखा था. यह किताब या यह ख़त असल है या बनावटी इस पर यहाँ बहस नहीं की जासकती, लेकिन यह बात ग़ौर करने लायक़ है कि हालाँ कि ख़त शिवाजी की तरफ़ से लिखा गया था और एक हिन्दू महाराज जयसिंह के नाम था, लेकिन वह फ़ारसी नज़्म में था. गान्धी जी के लेखों में दो चार अरबी फ़ारसी के लफ़्ज़ों को देखकर नाक भौं सिकोड़ने वाले

ان کو اپنا ہیرو مان لیا ہے۔ اور کہا جاتا ہے کہ اگر وہ نہ ہوئے ہوتے، تو آج ہندستان میں ایک بھی چوٹی نظر نہ آتی ہوتی اور پورا ہندستان مسلمان ہو گیا ہوتا۔ میرا مطلب شیواجی کے درباری کوی 'بھوشن' اور شری گرو گووند سنگھ جی سے ہے۔ بھوشن کا شاید ہی کوئی کوِت ایسا ہو، جس میں عربی فارسی کے دو چار لفظ نہ مل جائیں، لیکن نہ تو بھوشن کو ان کو استعمال کرنے میں ہندو دھرم کا کچھ نقصان دکھائی دیا اور نہ مہاراج شیواجی کو ہی اس پر کبھی کوئی اعتراض ہوا۔ مہاراج شیواجی سے بھوشن کو اپنے ان عربی فارسی کے لفظوں سے بھرے ہوئے کوِتوں پر ہی لاکھوں روپئے کا انعام ملتا رہا۔ مہاراج شیواجی تو اس معاملے میں اتنے اُدار تھے کہ انھوں نے اپنے پردھان منتری کو 'پیشوا' کا خطاب دیا تھا۔ وہ چاہتے تو اس پد کے لئے مہا آماتیہ یا اسی پرکار کا کوئی سنسکرت نام کھوج سکتے تھے، پر انھوں نے اس کی ضرورت نہیں سمجھی۔

ابھی کچھ دن پہلے تک راشٹریہ سویم سیوک سنگھ کی طرف سے لاکھوں کی تعداد میں ایک چھوٹی سی کتاب خفیہ طور پر بانٹی گئی تھی، جسے بتایا جاتا تھا کہ یہ وہ خط ہے جسے مہاراج شیواجی نے مہاراج جے سنگھ کو لکھا تھا۔ یہ کتاب یا یہ خط اصل ہے یا بناوٹی اس پر یہاں بحث نہیں کی جا سکتی، لیکن یہ بات غور کرنے لائق ہے کہ حالانکہ خط شیواجی کی طرف سے لکھا گیا تھا اور ایک ہندو مہاراج جے سنگھ کے نام تھا، لیکن وہ فارسی نظم میں تھا۔ گاندھی جی کے لیکھوں میں دو چار عربی فارسی کے لفظوں کو دیکھ کر ناک بھوں سکوڑنے والے

अपने हिन्दू दोस्तों से मैं पूछना चाहता हूँ कि शिवाजी महाराज के इस काम को भी क्या वह 'मुसलिम परस्ती' कहेंगे ?

शिवाजी के बाद गुरु गोबिन्दसिंह जी को लीजिये, जिनकी ज़िन्दगी उस ज़माने के हालात के मुताबिक़ मुसलमान बादशाहों से लड़ते ही बीती. लेकिन वह एक महान योद्धा होने के साथ साथ एक बड़े महात्मा और एक बड़े शायर भी थे. उनकी बानी आप पढ़ जाइये. उसमें भी आपको अरबी, फ़ारसी के लफ़्ज़ भरे हुए मिलेंगे. गुरू जीके मशहूर पद हैं.

(१)

कोऊ भयो मुंडिया सन्यासी कोऊ योगी भयो,
कोऊ ब्रह्मचारी, कोऊ जातिपन मानवो.
हिन्दू तुरुक कोऊ, रफ़ज़ी, इमाम शाफ़ी,
मानस की जाति सबै इकै पहिचानवो.
करता करीम सोई, राज़िक़ रहीम ओई,
दूसरो न भेद कोई भूल भ्रम मानवो.
एक ही की सेव, सब ही को गुरुदेव एक,
एक ही सरूप, सबै एकै जोत जानिवो.

(२)

देहुरा मसति सोई, पूजा और नमाज़ ओई
मानस सबै एक पै अनेक को प्रभाव है.
देवता, अदेव, जच्छ, गन्धर्व, तुरुक, हिन्दू,
न्यारे न्यारे देसन के भेसन को प्रभाव है.

اپنے ہندو دوستوں سے میں پوچھنا چاہتا ہوں کہ شیواجی مہاراج کے اس کام کو بھی کیا وہ "مسلم پرستی" کہینگے؟

شیواجی کے بعد گرو گووند سنگھ جی کو لیجئے، جن کی زندگی اس زمانے کے حالات کے مطابق مسلمان بادشاہوں سے لڑتے ہی بیتی۔ لیکن وہ ایک مہان یودھا ہونے کے ساتھ ساتھ ایک بڑے مہاتما اور ایک بڑے شاعر بھی تھے۔ ان کی بانی آپ پڑھ جائیے۔ اس میں بھی آپ کو عربی، فارسی کے لفظ بھرے ہوئے ملیں گے۔ گرو جی کے مشہور پد ہیں۔

(۱)

کوؤ بھیو منڈیا سنیاسی کوؤ یوگی بھیو،
کوؤ برہمچاری، کوؤ جاتی پن مانوو۔
ہندو ترک کوؤ رفضی، امام شافی،
مانس کی جاتی سبے ایکے پہچانوو۔
کرتا کریم سوئی، رازق رحیم اوئی،
دوسرو نہ بھید کوئی بھول بھرم مانوو۔
ایک ہی کی سیو، سب ہی کو گرو دیو ایک،
ایک ہی سروپ، سبے ایکے جوت جانوو۔

(۲)

دیہرا مسیتی سوئی، پوجا اور نماز اوئی
مانس سبے ایک پے انیک کو پربھاو ہے۔
دیوتا، ادیو، جچھ، گندھرب، ترک، ہندو،
نیارے نیارے دیسن کے بھیس کو پربھاو ہے۔

एक नैन एकै कान एकै देह एकै बानि,
खाकबाद आतिश औ आब को रलाव है.
अल्लाह अभेद सोई, पुरान औ कुरान ओई,
एक ही सरूप सबै एक ही बनाव है.

(इन कवित्तों में जो अमृत भरा हुआ है, उसकी चरचा मैं यहाँ नहीं करूँगा.) गुरु नानक की विरासत का मालिक भला इसके अलावा और कहता भी क्या, और इससे छोटी बात उसके मुँह से निकल भी कैसे सकती थी. (मैं तो सिर्फ़ इन कवित्तों में आये हुए अरबी फ़ारसी के लफ़्ज़ों की तरफ़ अपने पाठकों का ध्यान खींचना चाहूँगा, और जो भाई आज हिन्दी में से तमाम विदेशी शब्दों को निकाल कर उनकी जगह संस्कृत के शब्द इस्तेमाल करना ज़रूरी समझते हैं, उनसे मैं पूछना चाहूँगा कि क्या इन सन्तों की बानी और कविताओं में से भी वह इन लफ़्ज़ों को निकाल देना मुनासिब समझेंगे या इनके पाठ पर कोई रोक लगा देंगे ?

ज़ाहिर है कि इस तरह की चीज़ न तो चलने वाली है, न इसका हिन्दू कलचर या किसी भी कलचर से कोई ताल्लुक़ है. यह एक ग़ुस्से और जोश में किया हुआ फ़ैसला है, जिसकी ज़िम्मेदारी मुसलमानों पर भी कम नहीं है. मुसलमानों को भी यह भूल न जाना चाहिये कि अगर सर सय्यद मरहूम अपने मदर्से का नाम 'मुहमडन औरिंटियल कालेज' रखते थे तो मुसलमानों को कोई एतराज़ नहीं था और वह उसके लिये लाखों करोड़े रुपये का चन्दा दे सकते थे, हालाँकि इस नाम के तीनों लफ़्ज़ों में से ग़ैर पढ़ा लिखा मुसलमान एक भी लफ़्ज़ नहीं समझ पाता था. लेकिन सी० पी० की

ایک نین ایکے کان ایکے دیہہ ایکے بانی،
خاک باد آتش او آب کو رلاو ہے۔
اللہ ابھید سوئی، پران او قران کوئی،
ایک ہی سروپ سبے ایک ہی بناو ہے۔

(ان کویتوں میں جو امرت بھرا ہوا ہے، اس کی چرچا میں یہاں نہیں کروں گا۔) گرو نانک کی وراثت کا مالک بھلا اس کے علاوہ اور کہتا بھی کیا، اور اس سے چھوٹی بات اس کے منہ سے نکل بھی کیسے سکتی تھی۔ (میں تو صرف ان کویتوں میں آئے ہوئے عربی فارسی کے لفظوں کی طرف اپنے پاٹھکوں کا دھیان کھینچنا چاہوں گا، اور جو بھائی آج ہندی میں سے تمام ودیشی شبدوں کو نکال کر ان کی جگہ سنسکرت کے شبد استعمال کرنا ضروری سمجھتے ہیں، ان سے میں پوچھنا چاہوں گا کہ کیا ان سنتوں کی بانی اور کویتاؤں میں سے بھی وہ ان لفظوں کو نکال دینا مناسب سمجھیں گے یا ان کے پاٹھ پر کوئی روک لگا دیں گے؟

ظاہر ہے کہ اس طرح کی چیز نہ تو چلنے والی ہے، نہ اس کا ہندو کلچر یا کسی بھی کلچر سے کوئی تعلق ہے۔ یہ ایک غصے اور جوش میں کیا ہوا فیصلہ ہے، جس کی ذمے داری مسلمانوں پر بھی کم نہیں ہے۔ مسلمانوں کو بھی یہ بھول نہ جانا چاہیے کہ اگر سر سید مرحوم اپنے مدرسے کا نام محمڈن اورینٹیل کالج رکھتے تھے تو مسلمانوں کو کوئی اعتراض نہیں تھا اور وہ اس کے لئے لاکھوں کروڑوں روپئے کا چندہ دے سکتے تھے، حالانکہ اس نام کے تینوں لفظوں میں سے غیر پڑھا لکھا مسلمان ایک بھی لفظ نہیں سمجھ پاتا تھا۔ لیکن سی۔ پی۔ کی

सरकार अगर अपने मदर्सों का नाम 'विद्या मंदिर' रख लेती है, तो हिन्दुस्तान भर के मुसलमान चीख़ पुकार मचाने लगते हैं. मुसलिम कलचर ख़तरे में पड़जाती है. हालाँकि शायद ही कोई ऐसा मुसलमान हो, जो 'विद्या' और 'मंदिर' इन दोनों लफ़्ज़ों को न जानता हो !

इसी तरह की और भी बहुत सी मिसालें दी जा सकती हैं, लेकिन यह पुराने ज़ख्मों को फिर से ताज़ा करना होगा. भला इसी में है कि आज भी इस अभागे देश के हिन्दू मुसलमान सही रास्ते पर आजावें. दोनों इस सचाई को क़बूल करलें कि दुनिया की कोई ज़बान किसी दूसरी ज़बान से ज़्यादा पाक नहीं है. न तो मुसलमान संस्कृत बोलने से काफ़िर हो जाता है और न हिन्दू अरबी बोलने से म्लेच्छ हो जावेगा. अगर संस्कृत बोलना कुफ़्र होता, तो अरब के बादशाहों ने क्यों संस्कृत की सैकड़ों किताबों का अरबी में तर्जुमा कराया होता और अगर अरबी बोलना म्लेच्छपन होता तो क्यों हमारे सन्त महात्मा और देशभक्त अरबी फ़ारसी ज़बान के लफ़्ज़ इस्तेमाल करते.

ज़ाहिर है कि भाषा की शुद्धि का यह जुनून भी ज़्यादा दिन टिकने का नहीं. जनता की ज़बान पर जो शब्द चढ़ चुके हैं, उनकी जगह इस विशाल देश की जनता को यह अजीब अजीब शब्द सिखाये नहीं जा सकते. यह सिर्फ़ एक वक़्ती जोश है, जिसमें बहुत सी पेचीदगियाँ और मसलहतें हैं. अकबर इलाहाबादी ने भी तो फ़रमाया है—

سرکار اگر اپنے مدرسوں کا نام 'ودّیا مندر' رکھ لیتی ہے، تو ہندستان بھر کے مسلمان چیخ پکار مچانے لگتے ہیں. مسلم کلچر خطرے میں پڑ جاتا ہے. حالانکہ شاید ہی کوئی ایسا مسلمان ہو، جو 'ودّیا' اور 'مندر' ان دونوں لفظوں کو نہ جانتا ہو!

اسی طرح کی اور بھی بہت سی مثالیں دی جا سکتی ہیں، لیکن یہ پرانے زخموں کو پھر سے تازہ کرنا ہوگا. بھلا اسی میں ہے کہ آج بھی اس ابھاگے دیش کے ہندو مسلمان صحیح راستے پر آجاویں. دونوں اس سچائی کو قبول کرلیں کہ دنیا کی کوئی زبان کسی دوسری زبان سے زیادہ پاک نہیں ہے. نہ تو مسلمان سنسکرت بولنے سے کافر ہو جاتا ہے اور نہ ہندو عربی بولنے سے ملیچھ ہو جاوے گا. اگر سنسکرت بولنا کفر ہوتا، تو عرب کے بادشاہوں نے کیوں سنسکرت کی سیکڑوں کتابوں کا عربی میں ترجمہ کرایا ہوتا اور اگر عربی بولنا ملیچھ پن ہوتا تو کیوں ہمارے سنت مہاتما اور دیش بھگت عربی فارسی زبان کے لفظ استعمال کرتے.

ظاہر ہے کہ بھاشا کی شدھی کا یہ جنون بھی زیادہ دن ٹکنے کا نہیں. جنتا کی زبان پر جو شبد چڑھ چکے ہیں، ان کی جگہ اس وشال دیش کی جنتا کو یہ عجیب عجیب شبد سکھائے نہیں جا سکتے. یہ صرف ایک وقتی جوش ہے، جس میں بہت سی پیچیدگیاں اور مصلحتیں ہیں. اکبر الہ آبادی نے بھی تو فرمایا ہے—

मेम्बरी पर जंग हो इसमें गऊ का क्या क़सूर
मुल्क में बदनाम नाहक़ यह बिचारी हो गई.

आज बेचारी भाषा का भी यही हाल है. हमको उम्मीद रखनी चाहिये कि ज्यों ज्यों समय बीतता जायगा, त्यों त्यों यह जोश भी ठंडा पड़ता जायगा और भाषा की शुद्धि का यह आन्दोलन भी एक बीते ज़माने की याद बन जावेगा, जैसे कि आज सन् २३-२४ में चलने वाले, शुद्धि और 'तबलीग़' के आन्दोलन बन चुके हैं.

हिन्दू मुस्लिम एकता

पंडितसुन्दरलाल के

चार लैकचर, जो उन्होंने

सेन्ट्रल कन्सीलियेटरी बोर्ड ग्वालियर

की दावत पर ग्वालियर में दिये.

सौ सफ़े की किताब की क़ीमत सिर्फ़ बारह आने.

किताब नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में मिल सकती है

—मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

ممبری پر جنگ ہو اس میں گؤ کا کیا قصور
ملک میں بدنام ناحق یہ بچاری ہو گئی.

آج بیچاری بھاشا کا بھی یہی حال ہے. ہم کو امید رکھنی چاہئے کہ جیوں جیوں سمے بیتتا جائے گا، تیوں تیوں یہ جوش بھی ٹھنڈا پڑتا جائے گا اور بھاشا کی شدھی کا یہ آندولن بھی ایک بیتے زمانے کی یاد بن جائے گا، جیسے کہ آج سنہ ۲۳-۲۴ میں چلنے والے، شدھی اور "تبلیغ" کے آندولن بن چکے ہیں.

ہندو مسلم ایکتا

پنڈت سندرلال کے

چار لکچر، جو انھوں نے

سنٹرل کنسیلیٹری بورڈ گوالیر

کی دعوت پر گوالیر میں دئے.

سو صفحے کی کتاب کی قیمت صرف بارہ آنے.

کتاب ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے.

—مینیجر "نیا ہند"

۴۸ بائی کا باغ، الٰہ آباد

हिन्दू-मुस्लिम मेल में ही हिन्दुस्तानकी मज़बूती है

(डाक्टर सय्यद महमूद)

एक हिन्दुस्तानी कलचर की ज़रूरत

राजकाजी झगड़ों ने हिन्दू और मुसलमानों के दो अलग अलग दल बना दिये. पर यह झगड़े सिर्फ़ ऊपरी बुलबुले होते हैं. दल बनते रहते हैं, मिलते रहते हैं, फिर अलग अलग होते हैं. यह पहले भी हो चुकी है. पर इस अदल बदल के नीचे क़ौम के जीवन का गहरा बहाव बराबर जारी रहता है. राजकाजी काम आख़िरी उद्देश्य नहीं होता, वह सिर्फ़ एक रास्ता होता है जिस पर चल कर लोग अपनी असली मंज़िल तक पहुँच जाते हैं. हमारी असली मंज़िल क्या है, या क्या होनी चाहिए, उसका नक़शा कांगरेस ने अपनी समझ से बना कर अपने सामने रख लिया है. कांगरेस को पक्का भरोसा है कि उस मंज़िल तक पहुँचने का सिर्फ़ एक ही रास्ता है और वह है मुल्क के राजकाजी इन्तज़ाम के लिये ऐसी सरकार का क़ायम करना जो हर तरह व्योहारी (सेकुलर) हो यानी जिसका किसी ख़ास मज़हब, संप्रदाय या मत मतान्तर से कोई लगाव न हो. वही क़ौम एक पूरी ताक़त वाली और आज़ाद सलतनत बन सकती है जो इस लगन की डोर में बँधी हो कि हम सब की एक ही आख़िरी मंज़िल है, और

ہندو مسلم میل میں ہی ہندستان کی مضبوطی ہے

(ڈاکٹر سید محمود)

ایک ہندستانی کلچر کی ضرورت

راج کاجی جھگڑوں نے ہندو اور مسلمانوں کے دو الگ الگ دل بنا دیئے۔ پر یہ جھگڑے صرف اوپری بلبلے ہوتے ہیں۔ دل بنتے رہتے ہیں، ملتے رہتے ہیں، پھر الگ الگ ہوتے ہیں۔ یہ پہلے بھی ہو چکی ہے۔ پر اس ادل بدل کے نیچے قوم کے جیون کا گہرا بہاؤ برابر جاری رہتا ہے۔ راج کاجی کام آخری اُدیشیہ نہیں ہوتا، وہ صرف ایک راستہ ہوتا ہے جس پر چل کر لوگ اپنی اصلی منزل تک پہنچ جاتے ہیں۔ ہماری اصلی منزل کیا ہے، یا کیا ہونی چاہیئے، اس کا نقشہ کانگریس نے اپنی سمجھ سے بنا کر اپنے سامنے رکھ لیا ہے۔ کانگریس کو پکا بھروسہ ہے کہ اس منزل تک پہنچنے کا صرف ایک ہی راستہ ہے اور وہ ہے ملک کے راج کاجی انتظام کے لئے ایسی سرکار کا قائم کرنا جو ہر طرح ویوہاری (سیکلر) ہو یعنی جس کا کسی خاص مذہب، سمپردایہ یا مت متانتر سے کوئی لگاؤ نہ ہو۔ وہی قوم ایک پوری طاقت والی اور آزاد سلطنت بن سکتی ہے جو اس لگن کی ڈور میں بندھی ہو کہ ہم سب کی ایک ہی آخری منزل ہے، اور

वह मंज़िल यह है कि सब लोगों के लिये नेक और सुखी जीवन बिताने का मौक़ा और सामान मौजूद हो. इस तरह के राज में अलग अलग धर्म, मत, रहन सहन, आचार विचार, इल्म और हुनर की वजह से अलग अलग दल भले ही हों फिर भी वहाँ की सरकार ऐसे क़ायदे क़ानून बनाती है जिनमें सब दलों की आम रज़ामन्दी हो. हर सरकार की ताक़त और उसमें हुकूमत करने की क़ाबलीयत उतनी ही होगी जितना वहां की जनता उसे अपनी ख़ुशी और देश भक्ति से सहारा देती है. मुल्क के अलग अलग गिरोह अपने अलग अधिकारों और जान माल को मुल्क पर न्यौछावर करने को तैय्यार हो सकते हैं, मगर कब ? सिर्फ़ उसी हालत में जब उनको यक़ीन हो जाय कि उनके मुल्क की सरकार उसी तरफ़ जा रही है जहां पहुंचना जनता को अपनी जान से ज़्यादा प्यारा है, हम दुनिया की सबसे पुरानी और ऊँची सभ्यता के वारिस हैं. इस नाते उस मंज़िल तक पहुँचने की कोशिश करना हम सबका फ़र्ज़ है.

इसलिए अगर हम एक ऐसा ताक़तवर हिन्द-राज बनाना चाहते हैं जो किसी के अधीन न हो, तो उसके बनाने में हमें सिर्फ़ राज-काज ही को नहीं देखना है. मुल्क के अलग अलग दलों के बीच में राजकाजी समझौतों की ज़रूरत है, लेकिन इन पर अमल होने की गारंटी सिवाय इसके और कोई हो ही नहीं सकती कि हर एक को दूसरे पर पूरा पूरा भरोसा और एतबार हो. और भरोसा और एतबार तब ही पैदा हो सकते हैं जब हर गिरोह दूसरे गिरोहों का दिल हाथ में लेने की कोशिश करें और जिन चीज़ों को वह गिरोह अपना प्यारा धर्म समझता हो उनको समझे और उनका आदर करे.

وہ منزل یہ ہے کہ سب لوگوں کے لئے نیک اور سکھی جیون بتانے بتانے کا موقعہ اور سامان موجود ہو۔ اس طرح کے راج میں الگ الگ دھرم، مت، رہن سہن، آچار وچار، علم اور ہنر کی وجہ سے الگ الگ دل بھلے ہی ہوں پھر بھی وہاں کی سرکار ایسے قاعدے قانون بناتی ہے جن میں سب دلوں کی عام رضامندی ہو۔ ہر سرکار کی طاقت اور اس میں حکومت کرنے کی قابلیت اتنی ہی ہوگی جتنا وہاں کی جنتا اُسے اپنی خوشی اور دیش بھکتی سے سہارا دیتی ہے۔ ملک کے الگ الگ گروہ اپنے الگ ادھیکاروں اور جان مال کو ملک پر نچھاور کرنے کو تیار ہو سکتے ہیں، مگر کب؟ صرف اسی حالت میں جب ان کو یقین ہو جائے کہ ان کے ملک کی سرکار اسی طرف جا رہی ہے جہاں پہنچنا جنتا کو اپنی جان سے زیادہ پیارا ہے، ہم دنیا کی سب سے پرانی اور اونچی سبھیتا کے وارث ہیں۔ اس ناتے اس منزل تک پہنچنے کی کوشش کرنا ہم سب کا فرض ہے۔

اس لئے اگر ہم ایک ایسا طاقتور ہند راج بنانا چاہتے ہیں جو کسی کے ادھین نہ ہو، تو اس کے بنانے میں ہمیں صرف راج کاج ہی کو نہیں دیکھنا ہے۔ ملک کے الگ الگ دلوں کے بیچ میں راج کاجی سمجھوتوں کی ضرورت ہے۔ لیکن ان پر عمل ہونے کی گارنٹی سوائے اس کے اور کوئی ہو ہی نہیں سکتی کہ ہر ایک کو دوسرے پر پورا پورا بھروسہ اور اعتبار ہو۔ اور بھروسہ اور اعتبار تب ہی پیدا ہو سکتے ہیں جب ہر گروہ دوسرے گروہوں کا دل ہاتھ میں لینے کی کوشش کریں اور جن چیزوں کو وہ گروہ اپنا پیارا دھرم سمجھتا ہو ان کو سمجھے اور ان کا آدر کرے۔

सौ बरस से ऊपर हो गए कि हम सब इस फ़ज़ूल उमीम्द में कि अलग होने से ताक़त बढ़ेगी, अलहदा अलहदा हिन्दू और मुसलमान गिरोह बनाने के काम में जुट गए जिसका दूसरा नाम आत्म घात है. इस अलहदगी की लहर ने यहाँ तक जोर पकड़ा कि आचार विचार, इल्म हुनर के सुधार और तरक़्क़ी की नियत से भी जो धाराएँ बहीं उनका रुख़ भी मिलाप की तरफ़ न होकर अलग अलग अपनी अपनी पुरानी रीति नीति, अपनी अपनी ढपली और अपने अपने राग की तरफ़ ही रहा. यह इस लिये रक्खा गया कि हर गिरोह अलहदा हो आगे बढ़े. मिसाल के तौर पर कुछ हिन्दी और मराठी लेखकों ने अपना यह फ़र्ज़ समझ लिया कि फ़ारसी अरबी से बने शब्द अपने लेखों में न आने दें क्योंकि यह लेखक ग़लत या सही इन शब्दों को इसलामी समझते थे. हमारे इतिहासकार हमारे उन अच्छे अच्छे कारनामों पर भी परदा डालने लगे जो दोनों ने मिल कर किये थे. हिन्दू और मुस्लिम कलाकार अपना हुनर सीखने के लिये या तो मुसलमानों के समय से पहले के नमूनों का सहारा लेने लगे और या ईरान के नमूने अपने सामने रखने लगे. हमारे कवि और शायर उन सलतनतों की शान के गीत गाने लगे जो समय या जगह की निगाह से हम से बहुत दूर हैं.

अगर हिन्द के आगे के राजकाज की बुनियादें पक्की रखनी हैं तो यह सब ढंग बदलने ही नहीं होंगे बल्कि इन्हीं रास्तों से उलटे पाँव वापिस जाना होगा. हमें वह रास्ता छोड़ देना होगा जिस पर चल कर हम अपनी असलियत और जिनसियत को ही खो बैठेंगे. अगर हममें कोई ख़ास गुन ऐसा है जिसकी बिना पर हम दुनिया

سو برس سے اوپر ہو گئے کہ ہم سب اس فضول امید میں
کہ الگ ہونے سے طاقت بڑھے گی، علیحدہ علیحدہ ہندو اور مسلمان
گروہ بنانے کے کام میں جٹ گئے جس کا دوسرا نام آتم گھات ہے.
اس علیحدگی کی لہر نے یہاں تک زور پکڑا کہ آچار و چار، علم
ہنر کے سدھار اور ترقی کی نیت سے بھی جو دھارائیں بہیں
ان کا رخ بھی میلاپ کی طرف نہ ہوکر الگ الگ اپنی اپنی پرانی
ریتی نیتی، اپنی اپنی ڈھپلی اور اپنے اپنے راگ کی طرف ہی رہا.
یہ اس لئے رکھا گیا کہ ہر گروہ علیحدہ ہی آگے بڑھے. مثال کے
طور پر کچھ ہندی اور مراٹھی لیکھکوں نے اپنا یہ فرض سمجھ لیا کہ
فارسی عربی سے بنے شبد اپنے لیکھوں میں نہ آنے دیں کیونکہ یہ
لیکھک غلط یا صحیح ان شبدوں کو اسلامی سمجھتے تھے. ہمارے
اتہاس کار ہمارے ان اچھے اچھے کارناموں پر بھی پردہ ڈالنے
لگے جو دونوں نے مل کر کئے تھے. ہندو اور مسلم کلاکار اپنا
ہنر سیکھنے کے لئے یا تو مسلمانوں کے سمے سے پہلے کے نمونے
کا سہارا لینے لگے اور یا ایران کے نمونے اپنے سامنے
رکھنے لگے. ہمارے کوی اور شاعر ان سلطنتوں کی شان کے
گیت گانے لگے جو سمے یا جگہ کی نگاہ سے ہم سے بہت دور ہیں.
اگر ہند کے آگے کے راج کاج کی بنیادیں پکی رکھنی ہیں
تو یہ سب ڈھنگ بدلنے ہی نہیں ہوں گے بلکہ انہیں راستوں سے
الٹے پاؤں واپس جانا ہوگا. ہمیں وہ راستہ چھوڑ دینا ہوگا جس پر
چل کر ہم اپنی اصلیت اور جنسیت کو ہی کھو بیٹھیں گے.
اگر ہم میں کوئی خاص گن ایسا ہے جس کی بنا پر ہم دنیا

की और क़ौमों से अलग चमकते हैं तो वह यह है कि हममें समय और जरूरत के साथ साथ घटने बढ़ने और बदलने की शक्ति है. इसी शक्ति के सहारे बहुत पुराने जमाने में हमने आर्य संस्कृति और द्रविड़ संस्कृति दोनो को मिलाकर एक कर लिया था. इसके बहुत दिनों बाद उस मिली आर्य द्रविड़ क़ौम ने उन शक, हुण, जाट और अभीर जैसी क़ौमों को अपने में मिलाकर एक कर लिया जो उत्तर पच्छिम से हमारे देश में आई थीं. बीच के जमाने में हमने ही हिन्दी और मुसलिम सभ्यताओं को बड़ी ख़ूबी से मिला कर एक नई कलचर तैयार कर ली. लेकिन जो सफ़र अब हमें इस रास्ते में तय करना है वह इससे भी बड़ा और ज्यादा मुशकिल है. कलचर की एकता के उस काम को जो मुग़लों के जमाने में शुरू हुआ था हमें फिर से जारी ही नहीं करना बल्कि उसे पूरा भी करना है.

आजकल की हालत में इस काम में मुश्किलें बहुत हैं. पर हमें निराश होने का कोई कारन नहीं. हिन्द के तमाम रहने वाले आज कल एक दूसरे के इतने पास आगए हैं जितने पहले कभी नहीं थे. फ़ासले कम हो गए हैं. आने जाने के साधन बहुत बढ़ गए हैं. लोगों और चीजों का आना जाना भी बहुत तेजी से होने लगा है. साइंस आए दिन नई नई ईजादें कर रहा है. उन ईजादों को अपनाने की इच्छा ने तमाम दुनिया वालों में एक नई दिमाग़ी नाते दारी पैदा कर दी है. हिन्दू हो या मुसलमान, ज्ञान, विद्या और साइंस के मैदान में, असलियत और सत्य की तलाश में, दोनों बिलकुल एक ही रास्ते पर चल रहे हैं. दुनिया भर में कहीं कुछ भी हो उसका असर

کی اور قوموں سے الگ چمکتے ہیں تو وہ یہ ہے کہ ہم میں سمے اور ضرورت کے ساتھ ساتھ گھٹنے بڑھنے اور بدلنے کی شکتی ہے۔ اسی شکتی کے سہارے بہت پرانے زمانے میں ہم نے آریہ سنسکرتی اور دراوڑ سنسکرتی دونوں کو ملا کر ایک کر لیا تھا۔ اس کے بہت دنوں بعد اس ملی آریہ دراوڑ قوم نے ان شکوں، ہنوں، جاٹ اور ابھیر جیسی قوموں کو اپنے میں ملا کر ایک کر لیا جو اتر پچھم سے ہمارے دیش میں آئی تھیں۔ بیچ کے زمانے میں ہم نے ہی ہندی اور مسلم سبھیتاؤں کو بڑی خوبی سے ملا کر ایک نئی کلچر تیار کر لی۔ لیکن جو سفر اب ہمیں اس راستے میں طے کرنا ہے وہ اس سے بھی بڑا اور زیادہ مشکل ہے۔ کلچر کی ایکتا کے اس کام کو جو مغلوں کے زمانے میں شروع ہوا تھا ہمیں پھر سے جاری ہی نہیں کرنا بلکہ اسے پورا بھی کرنا ہے۔

آج کل کی حالت میں اس کام میں مشکلیں بہت ہیں۔ پر ہمیں نراش ہونے کا کوئی کارن نہیں۔ ہند کے تمام رہنے والے آج کل ایک دوسرے کے اتنے پاس آ گئے ہیں جتنے پہلے کبھی نہیں تھے۔ فاصلے کم ہو گئے ہیں۔ آنے جانے کے سادھن بہت بڑھ گئے ہیں۔ لوگوں اور چیزوں کا آنا جانا بھی بہت تیزی سے ہونے لگا ہے۔ سائنس آئے دن نئی نئی ایجادیں کر رہی ہے۔ ان ایجادوں کو اپنانے کی اچھا نے تمام دنیا والوں میں ایک نئی دماغی ناتے داری پیدا کر دی ہے۔ ہندو ہو یا مسلمان، گیان، ودیا اور سائنس کے میدان میں، اصلیت اور ستیہ کی تلاش میں، دونوں بالکل ایک ہی راستے پر چل رہے ہیں۔ دنیا بھر میں کہیں کچھ بھی ہو اس کا اثر

दोनों पर पड़ता है. मानवी अधिकारों के साफ़ साफ़ एलान और उनकी रक्षा की ज़रूरत ने और इस विचार ने कि राज की शक्ति सारी जनता में बराबर बराबर बाँट दी जावे, एशिया भर के लिये एक नई समाजी व्यवस्था या निज़ाम का ढाँचा लोगों के सामने लाकर रख दिया है.

कांगरेस ने इसे अपना लिया और इसकी साफ़ साफ़ तस्वीर लोगों के सामने रखने की कोशिश की. महात्मा गांधी ने अपनी तमाम ताक़त हिन्द वासियों में मेल पैदा करने और उनको आज़ादी की मंज़िल की तरफ़ ले जाने में लगा दी. उन्हीं की कोशिश से कांगरेस ने हिन्दू मुसलिम एकता, खादी और अछूतोद्धार को अपने ज़रूरी कामों में शामिल किया. सन् १९२४ में अपनी जान जोखम में डाल कर गान्धी जी ने दिल्ली में २१ दिन तक दाना पानी छोड़ दिया इस लिये कि हिन्दू-मुसलमान चेत जावें और अपने असली भले को समझें. उनके आख़िरी उपवास का भी यही मतलब था. फिर भी हम मुल्क को टुकड़े टुकड़े होने से क्यों न बचा सके और इस सवाल का हल हमारे हाथों से क्यों खिसक गया? कोई यह तो नहीं कह सकता कि हम इस पहेली को हल करना चाहते नहीं थे. चाहते तो ज़रूर थे पर जो साधन हम काम में लाए वह बिलकुल नाकाफ़ी थे. बात यह थी कि हमारा सारा ध्यान राजकाजी पहलू की तरफ़ खिंच गया था. कांगरेस का पूरा ज़ोर राजकाजी आज़ादी हासिल करने में लग गया था. यहाँ तक कि देश के कुछ बड़े बड़े नेता भी यह न समझ सके कि समाजी मैदान में हम क्या कुछ कर पाए हैं और क्या कुछ और करना हमारे लिये ज़रूरी है. कुछ लोग ऐसे

دونوں پر پڑتا ہے۔ مانوی ادھیکاروں کے صاف صاف اعلان اور اُن کی رکشا کی ضرورت نے اور اس وچار نے کہ راج کی شکتی ساری جنتا میں برابر برابر بانٹ دی جاوے، ایشیا بھر کے لئے ایک نئی سماجی ویوستھا یا نظام کا ڈھانچہ لوگوں کے سامنے لاکر رکھ دیا ہے۔

کانگریس نے اسے اپنا لیا اور اس کی صاف صاف تصویر لوگوں کے سامنے رکھنے کی کوشش کی۔ مہاتما گاندھی نے اپنی تمام طاقت ہندواسیوں میں میل پیدا کرنے اور اُن کو آزادی کی منزل کی طرف لے جانے میں لگا دی۔ انہیں کی کوشش سے کانگریس نے ہندو مسلم ایکتا، کھادی اور اچھوتودھار کو اپنے ضروری کاموں میں شامل کیا۔ سنہ ۱۹۲۴ میں اپنی جان جوکھم میں ڈال کر گاندھی جی نے دلی میں ۲۱ دن تک دانا پانی چھوڑ دیا اس لئے کہ ہندو مسلمان چیت جاویں اور اپنے اصلی بھلے کو سمجھیں۔ اُن کے آخری اُپواس کا بھی یہی مطلب تھا۔ پھر بھی ہم ملک کو ٹکڑے ٹکڑے ہونے سے کیوں نہ بچا سکے اور اس سوال کا حل ہمارے ہاتھوں سے کیوں کھسک گیا؟ کوئی یہ تو نہیں کہہ سکتا کہ ہم اس پہیلی کو حل کرنا چاہتے نہیں تھے۔ چاہتے تو ضرور تھے پر جو سادھن ہم کام میں لائے وہ بالکل ناکافی تھا۔ بات یہ تھی کہ ہمارا سارا دھیان راج کاجی پہلو کی طرف کھنچ گیا تھا۔ کانگریس کا پورا زور راج کاجی آزادی حاصل کرنے میں لگ گیا تھا۔ یہاں تک کہ دیش کے کچھ بڑے بڑے نیتا بھی یہ نہ سمجھ سکے کہ سماجی میدان میں ہم کیا کچھ کر پائے ہیں اور کیا کچھ اور کرنا ہمارے لئے ضروری ہے۔ کچھ لوگ ایسے

जरूर थे जिनको इस काम की लगन थी पर उनकी निगाह में भी उसके कुछ खास खास पहलू ही थे. कितने ही कांगरेस वाले राजकाजी अधिकार और छोटे मोटे फ़ायदों के लालच में फंस गए. उन्होंने रचनात्मक कामों से अपनी आँखें फेर लीं और यह भूल ही गए कि चाहे रचनात्मक काम उतना दिल लुभाने वाला न हो पर राजकाजी कामों से कहीं ज्यादा जरूरी है. अपनी धुन में उनको यह खयाल ही न रहा कि राजकाजी आजादी अगर मिल भी जाय तो बिना समाजी और सदाचारी एकता की पक्की बुनियाद के उसका क़ायम रह सकना ना मुमकिन है.

जो हुआ सो हुआ. अब कौन सा काम सबसे ज्यादा जरूरी है कि जिसको फ़ौरन ही शुरू कर देना चाहिये. क्या हमारे लिये बिलकुल सही सही ढंग की पारलिमेंटी सरकार क़ायम कर देना ही सबसे पहला और सबसे जरूरी काम है ? या क्या आदर्श राजकाजी और आर्थिक स्कीमें सोचना और बनाना ही सबसे जरूरी है ? क्या हमें सबसे पहले यह नहीं करना चाहिये कि देश वासियों में आपसदारी के उस भरोसे और एतबार को फिर से पैदा करें जो क़रीब क़रीब खतम हो चला है ? एक दूसरे पर भरोसा तब ही हो सकता है जब हमारी अलग अलग कलचरें भी एक दूसरे के नजदीक आवें और हम एक मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर के पुराने खयाल को फिर से जिन्दा और मजबूत करें. हमें सबसे पहले अपनी निगाहों को इस मामले में बिलकुल बदलना होगा.

कांगरेस हिन्द की क़ौमी संस्था है. उसको अपने दावे और वादों का पास रखना चाहिये. लोगों की काफ़ी तादाद ऐसी है

ضرور تھے جن کو اس کام کی لگن تھی [illegible] نگاہ میں بھی اس کے کچھ خاص خاص پہلو ہی تھے۔ کتنے [illegible] والے راج کاجی ادھیکار اور چھوٹے موٹے فائدوں کے [illegible] پھنس گئے۔ انہوں نے رچناتمک کاموں سے اپنی آنکھیں پھیر لیں اور یہ بھول ہی گئے کہ چاہے رچناتمک کام اتنا دل لبھانے والا نہ ہو پر راج کاجی کاموں سے کہیں زیادہ ضروری ہے۔ اپنی دھن میں ان کو یہ خیال ہی نہ رہا کہ راج کاجی آزادی اگر مل بھی جائے تو بنا سماجی اور سداچاری ایکتا کی پکی بنیاد کے اس کا قائم رہ سکنا ناممکن ہے۔

جو ہوا سو ہوا۔ اب کون سا کام سب سے زیادہ ضروری ہے کہ جس کو فوراً ہی شروع کر دینا چاہیے۔ کیا ہمارے لئے بالکل صحیح صحیح ڈھنگ کی پارلیمنٹری سرکار قائم کر دینا ہی سب سے پہلا اور سب سے ضروری کام ہے؟ یا کیا آدرش راج کاجی اور آرتھک اسکیمیں سوچنا اور بنانا ہی سب سے ضروری ہے؟ کیا ہمیں سب سے پہلے یہ نہیں کرنا چاہئے کہ دیش واسیوں میں آپس داری کے اس بھروسے اور اعتبار کو پھر سے پیدا کریں جو قریب قریب ختم ہو چلا ہے؟ ایک دوسرے پر بھروسہ تب ہی ہو سکتا ہے جب ہماری الگ الگ کلچریں بھی ایک دوسرے کے نزدیک آویں اور ہم ایک ملی جلی ہندوستانی کلچر کے پرانے خیال کو پھر سے زندہ اور مضبوط کریں۔ ہمیں سب سے پہلے اپنی نگاہوں کو اس معاملے میں بالکل بدلنا ہوگا۔

کانگریس ہند کی قومی سنستھا ہے۔ اس کو اپنے دعوے اور وعدوں کا پاس رکھنا چاہئے۔ لوگوں کی کافی تعداد ایسی ہے

जिसको यह यक़ीन नहीं होता कि कांगरेस मज़हबी फ़िरक़ेवाराना असर से बिलकुल बेदाग़ है और उसमें वह सब गुन मौजूद हैं जो एक क़ौमी संस्था में होने चाहिये. कारन यह है कि बहुत से कांगरेसी ऐसे हैं जो कलचर के सम्बन्ध में फ़िरक़े वाराना विचारों के तरफ़दार हैं और इस तरफ़दारी को राजकाजी मामलों में हिन्द की एक क़ौमियत के साथ मिलाकर एक अजीब खिचड़ी पकाते रहते हैं. अगर कांगरेस वाले हिन्द को एक मज़बूत और ठोस राज बनाना चाहते हैं तो उनको यह अच्छी तरह समझना होगा कि देश में जितने मतमतान्तर फैले हुए हैं और उनकी बिना पर जितने भी गिरोह बन गए हैं. उन सब को, कुछ ज़रूरी बातों में एक मक़सद और एक राय का बनाना पड़ेगा. यह एकता इतनी आम पसंद होनी चाहिये कि लोग आप से आप उसकी लहर में लीन होकर आपस के मज़हबी भेदभावों को भूल जावें. कलचर की एकता ही यह सब कुछ कर सकती है.

कलचर की एकता हासिल करने के सब साधन मुल्क में मौजूद हैं. तीन तरफ़ समुन्दर और चौथी तरफ़ पहाड़ों की हद बन्दी ने इस देश को एक ही देश बना रक्खा है. जितनी नसलों के लोग इस में बसे हुए हैं उन सब में अलग अलग नसलों के ख़ून इस तरह मिले हुए हैं कि जिसकी मिसाल संसार में और कहीं न मिलेगी. रोटी कमाने और रुपया पैसा कमाने के धन्धों का असर लोगों की कलचर पर बहुत पड़ता है. हमारे देश बासियों का ख़ास धन्धा खेती बाड़ी है जिसकी वजह से सारे देश का माली और रोज़गारी ढांचा एक ही सा है.

جس کو یہ یقین نہیں ہوتا کہ کانگریس مذہبی فرقہ وارانہ اثر سے بالکل بے داغ ہے اور اس میں وہ سب گن موجود ہیں جو ایک قومی سنستھا میں ہونے چاہئیں۔ کارن یہ ہے کہ بہت سے کانگریسی ایسے ہیں جو کلچر کے سمبندھ میں فرقہ وارانہ وچاروں کے طرفدار ہیں اور اس طرفداری کو راج کاجی معاملوں میں ہند کی ایک قومیت کے ساتھ ملا کر ایک عجیب کھچڑی پکاتے رہتے ہیں۔ اگر کانگریس والے ہند کو ایک مضبوط اور ٹھوس راج بنانا چاہتے ہیں تو ان کو یہ اچھی طرح سمجھنا ہوگا کہ دیش میں جتنے متمتانتر پھیلے ہوئے ہیں اور انکی بنا پر جتنے بھی گروہ بن گئے ہیں، ان سب کو، کچھ ضروری باتوں میں ایک مقصد اور ایک رائے کا بنانا پڑے گا۔ یہ ایکتا اتنی عام پسند ہونی چاہئے کہ لوگ آپ سے آپ اس کی لہر میں لین ہوکر آپس کے مذہبی بھید بھاؤں کو بھول جاویں۔ کلچر کی ایکتا ہی یہ سب کچھ کرسکتی ہے۔

کلچر کی ایکتا حاصل کرنے کے سب سادھن ملک میں موجود ہیں۔ تین طرف سمندر اور چوتھی طرف پہاڑوں کی حد بندی نے اس دیش کو ایک ہی دیش بنا رکھا ہے۔ جتنی نسلوں کے لوگ اس میں بسے ہوئے ہیں ان سب میں الگ الگ نسلوں کے خون اس طرح ملے ہوئے ہیں کہ جس کی مثال سنسار میں اور کہیں نہ ملے گی۔ روٹی کمانے اور روپیہ پیسہ کمانے کے دھندوں کا اثر لوگوں کی کلچر پر بہت پڑتا ہے۔ ہمارے دیش باسیوں کا خاص دھندا کھیتی باڑی ہے جس کی وجہ سے سارے دیش کا مالی اور روزگاری ڈھانچا ایک ہی سا ہے۔

एक मिली जुली कलचर के रूहानी अंगों की भी कमी नहीं है. पिछले हजार बरस में आपस के झगड़ों की उलझनों को सुलझा कर मिलकर काम करने की आदत हम में पड़ चुकी हैं. इतिहास इसकी गवाही देता है. हिन्दू और मुसलमान मिलकर दोनों के दुशमनों से अनगिनत बार लड़ चुके हैं; देश की मुशिकलों को आसान कर चुके हैं. देश के अलग अलग सूबों में अलग अलग बोलियाँ बोली जाती थीं, जैसे पंजाबी, हिन्दी, सिंधी, ब्रजभाषा, अवधी, बंगला, गुजराती, उर्दू वग़ैरा. पर इन सब भाषाओं के भंडार को भरने को और उनकी तरक़्क़ी की मिली जुली कोशिशें हिन्दू और मुसलमान दोनों धर्मों के लेखकों ने की हैं. आज भी जो राजकाजी ढाँचा हमारे यहाँ है उसका बोझ और उसकी जिम्मेवारी सब धर्मों के लोगों पर बराबर है और इन सब गिरोहों की इस इच्छा को कि सब बिना किसी की तरफ़दारी के आजाद जीवन बिता सकें हमारा यह राज पूरा करने की कोशिश करता है. शिक्षा और तालीम का जो रिवाज इस समय है उससे भी सब जातियों का ज्ञान, चलन और चरित्र एक जैसे स्कूल, कालिज और विद्या पीठों में एक जैसी रीति और तरीक़ों से एक जैसे रंग और सांचों में ढल रहा है.

यह हैं वह बुनियादें जिन पर हमें एक मिली जुली हिन्दुस्तानी कलचर का महल उठाना है. काम हमारी मान मर्यादा के जोग है. कांगरेस जैसी नेकनीयत संस्था जो आजाद ख़याली की बुनियादों पर खड़ी है इस काम को अच्छी तरह कर सकती है. लेकिन इस कोशिश की तह में वही भाव होने चाहियें जो ख़सरो, कबीर,

ایک ملی جلی کلچر کے روحانی انگوں کی بھی کمی نہیں ہے۔ پچھلے ہزار برس میں آپس کے جھگڑوں کی اُلجھنوں کو سلجھا کر مل کر کام کرنے کی عادت ہم میں پڑ چکی ہے۔ اتہاس اس کی گواہی دیتا ہے۔ ہندو اور مسلمان مل کر دونوں کے دشمنوں سے اَن گنت بار لڑ چکے ہیں؛ دیش کی مشکلوں کو آسان کر چکے ہیں۔ دیش کے الگ الگ صوبوں میں الگ الگ بولیاں بولی جاتی تھیں، جیسے پنجابی، ہندی، سندھی، برج بھاشا، اودھی، بنگلہ، گجراتی، اردو وغیرہ۔ پر ان سب بھاشاؤں کے بھنڈار کو بھرنے کی اور اُن کی ترقی کی ملی جلی کوششیں ہندو اور مسلمان دونوں دھرموں کے لیکھکوں نے کی ہیں۔ آج بھی جو راج کاجی ڈھانچہ ہمارے یہاں ہے اس کا بوجھ اور اس کی ذمہ داری سب دھرموں کے لوگوں پر برابر ہے اور ان سب گروہوں کی اس اچھا کو کہ سب بنا کسی کی طرفداری کے آزاد جیون بتا سکیں ہمارا یہ راج پورا کرنے کی کوشش کرتا ہے۔ شکشا اور تعلیم کا جو رواج اس سمے ہے اس سے بھی سب جاتیوں کا گیان، چلن اور چرتر ایک جیسے اسکول، کالج اور ودیا پیٹھوں میں ایک جیسی ریتی اور طریقوں سے ایک جیسے رنگ اور سانچوں میں ڈھل رہا ہے۔

یہ ہیں وہ بنیادیں جن پر ہمیں ایک ملی جلی ہندستانی کلچر کا محل اُٹھانا ہے۔ کام ہماری مان مریادا کے جوگ ہے۔ کانگریس جیسی نیک نیت سنستھا جو آزاد خیالی کی بنیادوں پر کھڑی ہے اس کام کو اچھی طرح کر سکتی ہے۔ لیکن اس کوشش کی تہ میں وہی بھاؤ ہونے چاہئیں جو خسرو، کبیر،

नानक, चैतन्य, ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया, बाबा फ़रीद, मिरज़ा मज़हर जान जानाँ, मलिक मुहम्मद जायसी, रहीम, रसखान, टोडरमल, अबुलफ़ज़ल, तानसैन जैसे अनगिनत संतों, सूफ़ियों और महापुरुषों के दिलों में हिलोरें मार रहे थे. यह महापुरुष लकीर के फ़क़ीर न थे और न ही सिर्फ़ बीते हुए समय का सहारा ढूंढते थे. वह अपने ऊपर भरोसा करतेथे. उन्हें अपनी सच्चाई पर इतना विश्वास था, जीवन के बुनियादी असूलों से वह इतने भरे हुए थे कि "अपना अपना निजी जीवन क़ायम रखते हुए भी वह इस बात को महसूस करके खुश और गदगद होते थे कि उनकी आत्मा के अन्दर उनसे कहीं जबरदस्त विश्व-आत्मा यानी परमात्मा का नूर जगमग कर रहा था, ठीक उसी तरह जिस तरह लोहे के एक गोले में आग की गरमी और दमक जगमग करती है." इसलिये हिन्दुस्तान के विशाल जीवन की धार में उन्होंने अपने आपको छोड़ दिया और अपने पन को क़ायम रखते हुए भी उन्होंने इसे इतने बड़े समाज और उसकी कलचर में अपने आप को इस तरह मिटा दिया कि "सबके सुख में सुख महसूस करते हुए वह प्रेममय भगवान की तरह सब के प्रेम में लीन हो गए". यही हिन्दुस्तानी कलचर का निचोड़ है. समाजी और कलचरी ज़िंदगी का यही जीता जागता असूल है जिससे आदमी की हिम्मत बढ़ती है, उसकी तंग दिली जलकर खाक हो जाती है और एक दूसरे पर बेएतबारी की कोई गुन्जाइश नहीं रह जाती. हमें इसी असूल को फिर से अपनाना है.

शहनशाह अकबर ने महाभारत का जो फ़ारसी तरजुमा

نانک، چیتنیہ، خواجہ نظام الدین اولیا، بابا فرید، مرزا مظہر جان جاناں، ملک محمد جائسی، رحیم، رسکھان، ٹوڈر مل، ابو الفضل، تان سین جیسے ان گنت سنتوں، صوفیوں اور مہاپرشوں کے دلوں میں ہلوریں مار رہے تھے۔ یہ مہاپرش لکیر کے فقیر نہ تھے اور نہ ہی صرف بیتے ہوئے سمے کا سہارا ڈھونڈھتے تھے۔ وہ اپنے اوپر بھروسہ رکھتے تھے۔ انھیں اپنی سچائی پر اتنا وشواس تھا، جیون کے بنیادی اصولوں سے وہ اتنے بھرے ہوئے تھے کہ "اپنا اپنا نجی جیون قائم رکھتے ہوئے بھی وہ اس بات کو محسوس کرکے خوش اور گدگد ہوتے تھے کہ اُن کی آتما کے اندر اُن سے کہیں زبردست وشو آتما یعنی پرماتما کا نور جگمگ کر رہا تھا، ٹھیک اُسی طرح جس طرح لوہے کے ایک گولے میں آگ کی گرمی اور دمک جگمگ کرتی ہے۔" اس لئے ہندستان کے وشال جیون کی دھار میں اُنھوں نے اپنے آپ کو چھوڑ دیا اور اپنے پن کو قائم رکھتے ہوئے بھی اُنھوں نے اِسے اتنے بڑے سماج اور اُس کی کلچر میں اپنے آپ کو اس طرح مٹا دیا کہ "سب کے سُکھ میں سُکھ محسوس کرتے ہوئے وہ پریم مئے بھگوان کی طرح سب کے پریم میں لین ہوگئے"۔ یہی ہندستانی کلچر کا نچوڑ ہے۔ سماجی اور کلچری زندگی کا یہی جیتا جاگتا اصول ہے جس سے آدمی کی ہمت بڑھتی ہے، اُس کی تنگ دلی جل کر خاک ہو جاتی ہے اور ایک دوسرے پر بے اعتباری کی کوئی گنجائش نہیں رہ جاتی۔ ہمیں اِسی اُصول کو پھر سے اپنانا ہے۔

شہنشاہ اکبر نے مہابھارت کا جو فارسی ترجمہ

कराया था उसके दीबाचे में अबुलफ़ज़ल ने इन ज़ोरदार शब्दों में इस असूल को बयान किया है :—

"ख़ुद पूरी तरह खोज बीन करने के बाद मैंने देखा कि मुसलमान और हिन्दू धर्म दोनों में अनगिनत अलग अलग फ़िरक़े और अलग अलग विचार मौजूद हैं. इन सब का मिलाकर एक कर देने की कठिनाई अदाज़े से बाहर है. इसलिये सचाई की तलाश में लगी हुई आत्मा इस नतीजे पर पहुँची कि अलग अलग फ़िरक़ों की मुस्तनद और प्रमानिक किताबें दूसरों की ज़बानों में तरजुमा करा दी जावें, ताकि सब फ़िरक़ों के लोग एक दूसरे को जान और समझ सकें. उस बादशाह की सचाई की बरकत से जो अपने समय का सबसे कामिल इनसान है, लोग आपसी लड़ाई झगड़ों से बाहर निकलकर एक दूसरे के अन्दर सच्चाई को देख सकें और अपनी अपनी और सबकी अच्छाइयों और कमियों को जानकर अपने अपने को सुधारने की पूरी कोशिश करें."

इस बयान की सच्चाई की मैंने आप जांच की है और वह इस तरह कि उन मुसलमानों को जो हिन्दुओं को काफ़िर मानते थे मैंने गीता का वह उर्दू तरजुमा पढ़कर सुनाया जिसको लाहौर के चौधरी दिल मोहम्मद ने किया है. उन मुसलमानों की आँखें खुल गईं. उनमें से कुछ के ख़याल में तो वह तरजुमा गीता का नहीं बल्कि क़ुरान का था. अगर गीता, उपनिषदों और क़ुरान के कुछ हिस्सों के तरजुमे हिन्दी और उर्दू में आसानी से हर जगह मिल सकें तो दोनों धर्म वाले एक दूसरे के बहुत कुछ पास आ जावेंगे.

کرایا تھا اُس کے دیباچے میں ابوالفضل نے اِن زوردار شبدوں میں اس اُصول کو بیان کیا ہے :—

" خود پوری طرح کھوج بین کرنے کے بعد میں نے دیکھا کہ مسلمان اور ہندو دھرم دونوں میں اَن گِنت الگ الگ فرقے اور الگ الگ وچار موجود ہیں۔ ان سب کو ملا کر ایک کر دینے کی کٹھنائی اندازے سے باہر ہے۔ اِس لئے سچّائی کی تلاش میں لگی ہوئی آتما اس نتیجے پر پہنچی کہ الگ الگ فرقوں کی مُستند اور پرمانک کتابیں دوسروں کی زبانوں میں ترجمہ کرادی جاویں، تاکہ سب فرقوں کے لوگ ایک دوسرے کو جان اور سمجھ سکیں۔ اُس بادشاہ کی سچّائی کی برکت سے جو اپنے سمے کا سب سے کامل انسان ہے، لوگ آپسی لڑائی جھگڑوں سے باہر نکل کر ایک دوسرے کے اندر سچّائی کو دیکھ سکیں اور اپنی اپنی اور سب کی اچھائیوں اور کمیوں کو جان کر اپنے اپنے کو سُدھارنے کی پوری کوشش کریں۔"

اِس بیان کی سچّائی کی میں نے آپ جانچ کی ہے اور وہ اس طرح کہ اُن مسلمانوں کو جو ہندوؤں کو کافر مانتے تھے میں نے گیتا کا وہ اردو ترجمہ پڑھ کر سنایا جس کو لاہور کے چودھری دل محمد نے کیا ہے۔ اُن مسلمانوں کی آنکھیں کھُل گئیں۔ اُن میں سے کچھ کے خیال میں تو وہ ترجمہ گیتا کا نہیں بلکہ قرآن کا تھا۔ اگر گیتا، اُپنشدوں اور قرآن کے کچھ حصّوں کے ترجمے ہندی اور اردو میں آسانی سے ہر جگہ مل سکیں تو دونوں دھرم والے ایک دوسرے کے بہت کچھ پاس آجاویں گے۔

हमें एक दूसरे के धर्म को समझने के इस विचार को खूब तरक़्क़ी देना है और फैलाना है. यह जरूरी नहीं कि हिन्दू या मुसलमान अपने अपने धर्म को या रीति रिवाजों को छोड़ दें. मगर यह तो दोनों को करना ही चाहिये कि दूसरे के धर्म को अच्छी तरह जान लें, समझ लें और उसका आदर करें.

मेल और एकता की राहें—एक हिन्दुस्तानी बोली

कलचर का मैदान बहुत बड़ा है. इसमें जानकारी और समझदारी से काम लेने पर मेल जोल बढ़ता है और सच्ची एकता पैदा होती है. अच्छी अच्छी किताबें, विद्या, कला और हुनर कलचर में शामिल हैं. बीच के जमाने में हिन्द की एक आम मिली जुली बोली बन चुकी थी और उसमें किताबें भी काफ़ी लिखी जा चुकी थीं. इस रास्ते में हमारे क़दम आए दिन तेजी से बढ़ रहे थे. हर सूबे के हिन्दू और मुसलमान मिल कर उस सूबे की खास बोली को बढ़ा रहे थे और उसमें अच्छी अच्छी किताबें लिखते थे. इसके सिवा तमाम हिन्द में काम आने वाली जो बोली उस वक़्त तक हिन्दू मुसलमानों की इकट्ठा कोशिशों से पैदा हुई थी वह उत्तर में और दक्खिन में आम लोग बोलते समझते थे. उसको कई नाम समय समय पर दिये गए हैं जैसे 'उर्दू', 'हिन्दी', 'हिन्दुस्तानी', 'रेख़्ता', वग़ैरा. यह वही जबान है जिसका गला घोंटने में आजकल के वह बहस करने वाले लगे हुए हैं जिनकी आँखों को राजकाजी असर सचाई देखने ही नहीं देता. सच यह है कि इस बोली की गिनती हिन्दू-मुसलिम मेल के सब से अच्छे नतीजों में है. इसके जरिये हम अपने बारीक से बारीक विचार और ख़याल जाहिर

ہمیں ایک دوسرے کے دھرم کو سمجھنے کے اس وچار کو خوب ترقی دینا ہے اور پھیلانا ہے۔ یہ ضروری نہیں کہ ہندو یا مسلمان اپنے اپنے دھرم کو یا ریت رواجوں کو چھوڑ دیں۔ مگر یہ تو دونوں کو کرنا ہی چاہئے کہ دوسرے کے دھرم کو اچھی طرح جان لیں، سمجھ لیں اور اسکا آدر کریں۔

میل اور ایکتا کی راہیں—ایک ہندستانی بولی

کلچر کا میدان بہت بڑا ہے۔ اس میں جانکاری اور سمجھداری سے کام لینے پر میل جول بڑھتا ہے اور سچی ایکتا پیدا ہوتی ہے۔ اچھی اچھی کتابیں، ودیا، کلا اور ہنر کلچر میں شامل ہیں۔ بیچ کے زمانے میں ہند کی ایک عام ملی جلی بولی بن چکی تھی اور اس میں کتابیں بھی کافی لکھی جا چکی تھیں۔ اس راستے میں ہمارے قدم آئے دن تیزی سے بڑھ رہے تھے۔ ہر صوبے کے ہندو اور مسلمان مل کر اس صوبے کی خاص بولی کو بڑھا رہے تھے اور اس میں اچھی اچھی کتابیں لکھتے تھے۔ اس کے سوا تمام ہند میں کام آنے والی جو بولی اس وقت تک ہندو مسلمانوں کی اکٹھا کوششوں سے پیدا ہوئی تھی وہ اتر میں اور دکھن میں عام لوگ بولتے سمجھتے تھے۔ اسکو کئی نام سمے سمے پر دیئے گئے ہیں جیسے 'اردو'، 'ہندی'، 'ہندستانی'، 'ریختہ'، وغیرہ۔ یہ وہی زبان ہے جس کا گلا گھونٹنے میں آج کل کے وہ بحث کرنے والے لگے ہوئے ہیں جنکی آنکھوں کو راج کاجی اثر سچائی دیکھنے ہی نہیں دیتا۔ سچ یہ ہے کہ اس بولی کی گنتی ہندو مسلم میل کے سب سے اچھے نتیجوں میں ہے۔ اسکے ذریعہ ہم اپنے باریک سے باریک وچار اور خیال ظاہر

कर सकते हैं और एक दूसरे से लेन देन कर सकते हैं. यह विरसा हम हिन्दुस्तानियों को बीते हुए जमाने से मिला है और हम सबका धन है.

कांगरेस का इस मामले में जो फ़र्ज़ है वह बहुत साफ़ है और वह यह है कि इस विरसे को (जो दोनों का है) न सिर्फ़ क़ायम ही रक्खा जाय बल्कि उसकी दौलत को बढ़ाने की कोशिशें भी जारी रक्खी जावें. यह न समझना चाहिये कि अगर 'हिन्दुस्तानी' तमाम हिन्द की एक आम भाषा बन गई तो इसके मानी यह होंगे कि मुल्क के दूसरे सूबों मे जो और भाषाएँ चल रही हैं और जिनमें किताबें लिखी गई हैं या लिखी जावेंगी उनकी तरक़्क़ी रुक जाय या उनकी तरफ़ से हम बेपरवाह हो जायँ. इसका मतलब सिर्फ़ इतना ही है कि समूचे हिन्द को एक आम भाषा मिल जाय और हर सूबे को अपनी भाषा काम में लाने और उसको तरक़्क़ी देने का हक़ जैसे का तैसा बना रहे.

तमाम मुल्क की एक भाषा क्या हो, और उसका नाम क्या हो, इन सवालों को हल करने में बड़ी कड़वी दलीलें आजकल पेश की जा रही हैं. इन सवालों का हल वह कसौटी है जिस पर हमारी क़ौमियत की परख हो जायगी. बोली ही के ज़रिये हम एक दूसरे से मिल सकते हैं. औरों से बरताव करने का, उनको साथी बनाने का यही एक साधन है. अब हम चाहते क्या हैं? क्या हम वह गिरोह बन्दी चाहते हैं जिसमें इनसानी धर्म के नाते आपस का मेल जोल सिर्फ़ अपने ही गिरोह की चार दीवारी तक बंद रहे? या हमें यह पसंद होगा कि इनसानी भाई चारा

کر سکتے ہیں اور ایک دوسرے سے لین دین کر سکتے ہیں۔ یہ ورثہ ہم ہندستانیوں کو بیتے ہوئے زمانے سے ملا ہے اور سب کا دھن ہے۔

کانگریس کا اِس معاملے میں جو فرض ہے وہ بہت صاف ہے اور وہ یہ ہے کہ اِس ورثے کو (جو دونوں کا ہے) نہ صرف قائم ہی رکھا جائے بلکہ اُس کی دولت کو بڑھانے کی کوششیں بھی جاری رکھی جاویں۔ یہ نہ سمجھنا چاہئے کہ اگر 'ہندستانی' تمام ہند کی ایک عام بھاشا بن گئی تو اِس کے معنی یہ ہوں گے کہ ملک کے دوسرے صوبوں میں جو اور بھاشائیں چل رہی ہیں اور جن میں کتابیں لکھی گئی ہیں یا لکھی جاویں گی اُنکی ترقی رُک جائے یا اُنکی طرف سے ہم بے پرواہ ہو جائیں۔ اِس کا مطلب صرف اتنا ہی ہے کہ سموچے ہند کو ایک عام بھاشا مل جائے اور ہر صوبے کو اپنی بھاشا کام میں لانے اور اُس کو ترقی دینے کا حق جیسے کا تیسا بنا رہے۔

تمام ملک کی ایک بھاشا کیا ہو، اور اُس کا نام کیا ہو، اِن سوالوں کو حل کرنے میں بڑی کڑوی دلیلیں آج کل پیش کی جا رہی ہیں۔ اِن سوالوں کا حل وہ کسوٹی ہے جس پر ہماری قومیت کی پرکھ ہو جائے گی۔ بولی ہی کے ذریعے ہم ایک دوسرے سے مل سکتے ہیں۔ اوروں سے برتاؤ کرنے کا، اُن کو ساتھی بنانے کا یہی ایک سادھن ہے۔ اب ہم چاہتے کیا ہیں؟ کیا ہم وہ گروہ بندی چاہتے ہیں جس میں انسانی دھرم کے ناتے آپس کا میل جول صرف اپنے ہی گروہ کی چار دیواری تک بند رہے؟ یا ہمیں یہ پسند ہوگا کہ انسانی بھائی چارا

गिरोह बन्दी की दीवारों को तोड़ डाले और एक गिरोह के आदमी दूसरे गिरोह के आदमियों से बिना किसी फ़िरक़ेवाराना भेदभाव के इस तरह घुल मिल जायँ जिस तरह एक क़ौम और एक देश के रहने वाले मिल जुल जाने चाहिये ? अगर हम सच्चे दिल से एक क़ौम बनना चाहते हैं तो क्या यह अक़लमन्दी होगी कि हम यह ज़िद पकड़ लें कि हमारी मुल्की ज़बान या राष्ट्रीभाषा से वह शब्द निकाल फेंके जावें जिनका निकास किसी और गिरोह की भाषा से है. डाक्टर बेनीप्रसाद की राय इस मामले में बड़े मारके की है. वह कहते हैं :—"आदमी के जीवन का कोई पहलू ऐसा नहीं है जिसके साथ भाषा का सम्बन्ध न हो. इसलिये भावों और जज़्बों के साथ भाषा का गहरा लगाव है. इतिहास इस बात की गवाही देता है कि लोगों के मिलाने और एक करने में एक ज़बान कितना बड़ा हिस्सा लेती रही है..................ज़बान को शुद्ध या पाक रखने की कोशिश के पीछे यानी इस तहरीक के पीछे कि जो शब्द बाहर से आए हुए समझे जाते हैं उन्हें अपनी बोली से निकाल दिया जावे, आमतौर पर राजकाजी ग़रज़ें काम करती हैं.......हिन्द के राजकाजी मामलों में अलग अलग गिरोहबन्दी ही एक दरजे तक उस जुदाई की जड़ है जो हिन्दी और उर्दू के बीच इस तेज़ी से बढ़ रही है. भाषा में ज़बरदस्ती संस्कृत या अरबी ठूँसने की कोशिश से लोगों को ऐसा लगता है कि अगर हम कामयाब हो गए तो हमारा गिरोह दूसरे गिरोह से जीत गया."

अब रह गया यह सवाल कि भाषा किन हरफ़ों में लिखी जावे. इसका हल मुशकिल नहीं. कोई वजह नहीं कि उर्दू और नागरी

گروہ بندی کی دیواروں کو توڑ ڈالے اور ایک گروہ کے آدمی دوسرے گروہ کے آدمیوں سے بنا کسی فرقے وارانہ بھید بھاؤ کے اس طرح گھل مل جائیں جس طرح ایک قوم اور ایک دیش کے رہنے والے مل جل جانے چاہیئے ؟ اگر ہم سچے دل سے ایک قوم بنا چاہتے ہیں تو کیا یہ عقلمندی ہوگی کہ ہم یہ ضد پکڑ لیں کہ ہماری ملکی زبان یا راشٹری بھاشا سے وہ شبد نکال پھینکے جاویں جن کا نکاس کسی اور گروہ کی بھاشا سے ہے. ڈاکٹر بینی پرساد کی رائے اس معاملے میں بڑے معرکے کی ہے. وہ کہتے ہیں :—" آدمی کے جیون کا کوئی پہلو ایسا نہیں ہے جس کے ساتھ بھاشا کا سمبندھ نہ ہو. اس لئے بھاؤں اور جذبوں کے ساتھ بھاشا کا گہرا لگاؤ ہے. اتہاس اس بات کی گواہی دیتا ہے کہ لوگوں کے ملانے اور ایک کرنے میں ایک زبان کتنا بڑا حصہ لیتی رہی ہے......... زبان کو شدھ یا پاک رکھنے کی کوشش کے پیچھے یعنی اس تحریک کے پیچھے کہ جو شبد باہر سے آئے ہوئے سمجھے جاتے ہیں انھیں اپنی بولی سے نکال دیا جاوے، عام طور پر راج کاجی غرضیں کام کرتی ہیں...... ہند کے راج کاجی معاملوں میں الگ الگ گروہ بندی ہی ایک درجے تک اس جدائی کی جڑ ہے جو ہندی اور اردو کے بیچ اس تیزی سے بڑھ رہی ہے. بھاشا میں زبردستی سنسکرت یا عربی ٹھونسنے کی کوشش سے لوگوں کو ایسا لگتا ہے کہ اگر ہم کامیاب ہو گئے تو ہمارا گروہ دوسرے گروہ سے جیت گیا."

اب رہ گیا یہ سوال کہ بھاشا کن حرفوں میں لکھی جاوے. اس کا حل مشکل نہیں. کوئی وجہ نہیں کہ اردو اور ناگری

दोनों के हरफ़ क्यों न पढ़ाए जायँ और दोनों को काम में लाना क्यों न सिखाया जा सके. दोनों ही आसानी से बिना किसी ख़ास मेहनत के सीखे जा सकते हैं. महात्मा गांधी ने भाषा और लिखावट के सवाल का यही हल निकाला था और समय साबित कर देगा कि वह हमें बिलकुल सही और ठीक रास्ते पर लेजा रहे थे.

पिछले इतिहास को ठीक ठीक समझने समझाने से भी कलचर की जानकारी और एकता बढ़ेगी. हमारे इतिहास के साथ मनमाना खिलवाड़ किया जा चुका है. इसके ज़िम्मेवार सिर्फ़ योरप के साम्राजवादी लेखक ही नहीं हैं बल्कि उनकी नक़ल करने वाले हिन्दुस्तानी लेखक भी हैं. अब सच्चे सच्चे बेलौस इतिहास की तैयारी की बड़ी सख़्त ज़रूरत है. इसी तरह यह भी ज़रूरी है कि जनता को मालूम कराया जाय कि पुराने ज़माने में और बीच के समय में भी हिन्द वालों ने फ़लसफ़े और धर्म के मामले में दुनिया को क्या क्या नई बातें सिखाई थीं.

हर क़ौम का विचार करने का ढंग, उसके आदर्श और उसकी कामनाएं उसकी किताबों से ही ज़ाहिर हो सकती हैं. दूसरे मुल्कों में, लिखने पढ़ने की संस्थाएँ, विद्यापीठें, और वहाँ की सरकारें इस काम पर खुले हाथों धन ख़र्च करती हैं इसलिये कि विद्या और ज्ञान में नित नई तरक़्क़ी होती रहे और नई नई चीज़ें पैदा होती रहें. विद्या, कला और हुनर को जो सहारा और बढ़ावा एशिया भर के हाकिम पुराने ज़माने में दिया करते थे वह सब को मालूम है आज हमें भी अपने मुल्क में इसका बंदोबस्त करना है

دونوں کے حرف کیوں نہ پڑھائے جائیں اور دونوں کو کام میں لانا کیوں نہ سکھایا جا سکے۔ دونوں ہی آسانی سے بنا کسی خاص محنت کے سیکھے جا سکتے ہیں۔ مہاتما گاندھی نے بھاشا اور لکھاوٹ کے سوال کا یہی حل نکالا تھا اور سمے ثابت کر دے گا کہ وہ ہمیں بالکل صحیح اور ٹھیک راستے پر لے جا رہے تھے۔

پچھلے اتہاس کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے سمجھانے سے بھی کلچر کی جانکاری اور ایکتا بڑھے گی۔ ہمارے اتہاس کے ساتھ من مانا کھلواڑ کیا جا چکا ہے۔ اس کے ذمے دار صرف یورپ کے سامراجوادی لیکھک ہی نہیں ہیں بلکہ ان کی نقل کرنے والے ہندستانی لیکھک بھی ہیں۔ اب سچے سچے بے لوث اتہاس کی تیاری کی بڑی سخت ضرورت ہے۔ اسی طرح یہ بھی ضروری ہے کہ جنتا کو معلوم کرایا جائے کہ پرانے زمانے میں اور بیچ کے سمے میں بھی ہند والوں نے فلسفے اور دھرم کے معاملے میں دنیا کو کیا کیا نئی باتیں سکھائی تھیں۔

ہر قوم کا وچار کرنے کا ڈھنگ، اس کے آدرش اور اس کی کامنائیں اس کی کتابوں سے ہی ظاہر ہو سکتی ہیں۔ دوسرے ملکوں میں، لکھنے پڑھنے کی سنستھائیں، ودیاپیٹھیں، اور وہاں کی سرکاریں اس کام پر کھلے ہاتھوں دھن خرچ کرتی ہیں اس لئے کہ ودیا اور گیان میں نت نئی ترقی ہوتی رہے اور نئی نئی چیزیں پیدا ہوتی رہیں۔ ودیا، کلا اور ہنر کو جو سہارا اور بڑھاوا ایشیا بھر کے حاکم پرانے زمانے میں دیا کرتے تھے وہ سب کو معلوم ہے۔ آج ہمیں بھی اپنے ملک میں اس کا بندوبست کرنا ہے

कि यह कोशिशें जारी रहे. इसके लिये हमें सभा सोसाइटियाँ बनाना हैं.

समाजी और तालीमी मैदानों में भी बहुत बड़े मौक़े काम करने वालों के लिये मौजूद हैं. शहरों और गांव में रहने वालों के लिये इस बारे में सेवा के मौक़े बहुत ज्यादा हैं. त्योहारों पर, स्वयं सेवकों और स्वयं-सेविकाओं के दलों में, स्काउट दलों में थियेटरों और सिनेमाओं में हिन्दू और मुसलमानों को मिलाने के मौक़े बहुत मिल सकते हैं. मुल्क में जितनी संस्थाएं जानकारी, इल्म और हुनर फैलाने की हैं जैसे यूनिवर्सिटी, रेडियो, अखबार और किताबें उनको हमें इस ग़रज़ के लिये ज्यादह समझ और बड़े दिल से काम में लाना चाहिये. मुख्तसिर यह कि क़ौमी ज़िन्दगी के हर पहलू में हिन्दू और मुसलमान साथ साथ रहें. मिलकर कोशिश करने से एक क़ौम और एक राष्ट्र के अनुभवों की एक पूंजी जमा हो जावेगी.

देश में जिन लोगों की गिनती कम है उनसे वफ़ादारी की मांग करना अनाड़ीपन है. इससे उनमें नाराज़गी ही फैलेगी. इसके बजाय वह लोग जिनकी मुल्क में कसरत है पंडित नेहरू के कहने के अनुसार ऐसे हालात पैदा कर दें कि जिससे कम तादाद के लोग आप से आप वफ़ादार बन जावें. महात्मा जी यही हालात पैदा कर रहे थे कि वह चल बसे. बहुत थोड़े ही समय में उन्होंने कम गिनत जाति को यह साफ़ दिखला दिया कि उनकी असली भलाई कहाँ और किन किन बातों में है. हो सकता है कि महात्मा जी ने देख लिया हो कि एक सुखी और खुशहाल मुसलिम जमात से

کہ یہ کوششیں جاری رہیں ۔ اِس کے لئے ہمیں سبھا سوسائٹیاں بنانا ہیں ۔

سماجی اور تعلیمی میدانوں میں بھی بہت بڑے موقعے کام کرنے والوں کے لئے موجود ہیں ۔ شہروں اور گاؤں میں رہنے والوں کے لئے اِس بارے میں سیوا کے موقعے بہت زیادہ ہیں ۔ تیوہاروں پر، سوین سیوکوں اور سوین سیوکاؤں کے دَلوں میں، اسکاؤٹ دَلوں میں، تھیٹروں اور سنیماؤں میں ہندو اور مسلمانوں کو ملانے کے موقعے بہت مل سکتے ہیں ۔ ملک میں جتنی سنستھائیں جانکاری، علم اور ہنر پھیلانے کی ہیں جیسے یونیورسٹی، ریڈیو، اخبار اور کتابیں اُن کو ہمیں اِس غرض کے لئے زیادہ سمجھ اور بڑے دل سے کام میں لانا چاہئے ۔ مختصر یہ کہ قومی زندگی کے ہر پہلو میں ہندو اور مسلمان ساتھ ساتھ رہیں ۔ مل کر کوشش کرنے سے ایک قوم اور ایک راشٹر کے انوبھووں کی ایک پونجی جمع ہو جاوے گی ۔

دیش میں جن لوگوں کی گنتی کم ہے اُن سے وفاداری کی مانگ کرنا اناڑی پن ہے ۔ اُس سے اُن میں ناراضگی ہی پھیلے گی ۔ اِس کے بجائے وہ لوگ جن کی ملک میں کثرت ہے پنڈت نہرو کے کہنے کے انوسار ایسے حالات پیدا کر دیں کہ جس سے کم تعداد کے لوگ آپ سے آپ وفادار بن جاویں ۔ مہاتما جی یہی حالات پیدا کر رہے تھے کہ وہ چل بسے ۔ بہت تھوڑے ہی سمے میں اُنھوں نے کم گنت جاتی کو یہ صاف دکھلا دیا کہ اُن کی اصلی بھلائی کہاں اور کن کن باتوں میں ہے ۔ ہو سکتا ہے کہ مہاتما جی نے دیکھ لیا ہو کہ ایک سکھی اور خوش حال مسلم جماعت سے

देश के अन्दर उन फूट और फ़साद फैलाने वाले असरों को रोकने में मदद मिलेगी जो आज धीरे धीरे ज़ोर पकड़ते जा रहे हैं.

अब मैं एक शब्द अपने मुसलमान भाइयों से कहना चाहता हूँ. मैं हिम्मत के साथ कह सकता हूँ कि जिस रवादारी, उदारता और आलमगीर भाई चारे का क़ुरान ने उपदेश दिया था मुसलमान उसे भूल गए हैं. क़ुरान ने साफ़ कहा है कि—"दुनिया के सब इनसान एक ही क़ौम हैं." मुहम्मद साहब अपनी हर नमाज़ से पहले कहा करते थे कि—"मैं गवाही देता हूँ कि सब इनसान भाई भाई हैं." इसलाम और दूसरे धर्मों में एक ख़ास फ़रक़ यह है कि एक ईसाई बिना हिन्दू धर्म, यहूदी धर्म या इसलाम को माने अच्छा ईसाई हो सकता है, इसी तरह एक हिन्दू बिना किसी दूसरे धर्म को माने सच्चा हिन्दू हो सकता है. यही बात यहूदियों और पारसियों के बारे में कही जा सकती है. पर क़ुरान के अनुसार कोई मुसलमान तब तक मुसलमान नहीं हो सकता जब तक वह दुनिया के "सब रसूलों और सब ईश्वरी किताबों को न मानता हो, और जब तक वह इस बात को भी न मानता हो कि इन अलग अलग रसूलों में कोई किसी तरह का भी फ़रक़ नहीं है." (सूरे बक़र, २८५) क़ुरान में बार बार कहा गया है कि दुनिया की सब क़ौमों और सब मुल्कों में अल्लाह के रसूल आए हैं और हर ज़माने में ईश्वरी किताबें रही हैं. और "जो लोग एक रसूल और दूसरे रसूल में फ़रक़ करते हैं और एक को मानते हैं और दूसरे को नही मानते और इस तरह अपना एक अलग ही रास्ता निकालना चाहते हैं वह लोग सचमुच काफ़िर हैं सूरे निसा १५०). इसीलिये इसलाम

دیش کے اندر اُن پھوٹ اور فساد پھیلانے والے اثروں کو روکنے میں مدد ملے گی جو آج دھیرے دھیرے زور پکڑتے جا رہے ہیں۔

اب میں ایک شبد اپنے مسلمان بھائیوں سے کہنا چاہتا ہوں ۔ میں ہمت کے ساتھ کہہ سکتا ہوں کہ جس رواداری، اُدارتا اور عالمگیر بھائی چارے کا قرآن نے اُپدیش دیا تھا مسلمان اُسے بھول گئے ہیں ۔ قرآن نے صاف کہا ہے کہ "دُنیا کے سب انسان ایک ہی قوم ہیں۔" محمدؐ صاحب اپنی ہر نماز سے پہلے کہا کرتے تھے کہ "میں گواہی دیتا ہوں کہ سب انسان بھائی بھائی ہیں۔" اسلام اور دوسرے دھرموں میں ایک خاص فرق یہ ہے کہ ایک عیسائی بنا ہندو دھرم، یہودی دھرم یا اسلام کو مانے اچھا عیسائی ہو سکتا ہے، اِسی طرح ایک ہندو بنا کسی دوسرے دھرم کو مانے سچّا ہندو ہو سکتا ہے ۔ یہی بات یہودیوں اور پارسیوں کے بارے میں کہی جا سکتی ہے ۔ پر قرآن کے انوسار کوئی مسلمان تب تک مسلمان نہیں ہو سکتا جب تک وہ دُنیا کے "سب رسولوں اور سب ایشوری کتابوں کو نہ مانتا ہو، اور جب تک وہ اِس بات کو بھی نہ مانتا ہو کہ اِن الگ الگ رسولوں میں کوئی کسی طرح کا بھی فرق نہیں ہے۔" (سورے بقرہ ۲۸۵) قرآن میں بار بار کہا گیا ہے کہ دُنیا کی سب قوموں اور سب ملکوں میں اللہ کے رسول آئے ہیں اور ہر زمانے میں ایشوری کتابیں رہی ہیں ۔ اور "جو لوگ ایک رسول اور دوسرے رسول میں فرق کرتے ہیں اور ایک کو مانتے ہیں اور دوسرے کو نہیں مانتے اور اِس طرح اپنا ایک الگ ہی راستہ نکالنا چاہتے ... (سورے نساء ۱۵۰). اِسی لئے اسلام

सब इनसानों का और सारी दुनिया का मजहब है. इसीलिये इसलाम के पैग़म्बर को 'ख़ातिमुन्न बीईन' कहा जाता है. क्योंकि उन्होंने इनसानी ज़िन्दगी के सबसे आख़िरी और सबसे बड़े असूल यानी इनसानी भाईचारे का उपदेश दिया.

अगर मुसलमान उस सच्चे और पूरे जोश के साथ, जो शुरू ज़माने के मुसलमानों में था, क़ुरान के सिखाए हुए इनसानी भाई चारे के सबक़ को फिर से अपना लें तो हारी हुई बाज़ी जीत लेंगे. क़ुरान के इस मूल विचार में ही हमारा और दुनिया का दोनों का भला है, मुसलमानों को चाहिये कि संस्कृत और हिन्दी सीखें और गीता जैसी हिन्दू धर्म की पुस्तकों को पढ़ें और समझें.

अपने हिन्दू भाइयों से मुझे वही बात दोहरानी है जो दिसम्बर १९४७ में महात्मा जी ने मुझ से कही थी—"हिन्दू-मुसलिम एकता में ही हिन्दुस्तान का छुटकारा है."

इतना अगर हम कर लें तो फिर कोई चीज़ ऐसी नहीं जो हमें अपने आदर्श तक पहुँचने से रोक सके.

पिछले एक लेख में शुरू के कलचरी सम्बन्धों का कुछ ज़िक्र आ चुका है जो हिन्द और इसलामी मुल्कों के बीच पैदा हो चुके थे और जिनके ज़रिये अरबों ने हिन्द वालों से गनित, ज्योतिष और वैद्यक सीखीं और तरक़्क़ी देकर फिर योरप को सिखाईं.

लगभग दो सौ बरस की विदेशी हुकूमत से छूट कर हिन्दुस्तानी अब फिर इस लायक़ हो गए हैं कि पच्छिमी एशिया और उत्तरी अफ़रीका के इसलामी मुल्कों से अपना पुराना राजकाजी, समाजी और इल्मी नाता फिर से क़ायम करें. हिन्दुस्तान इन

سب انسانوں کا اور ساری دُنیا کا مذہب ہے۔ اسی لئے اسلام کے پیغمبر کو 'خاتم النبیئین' کہا جاتا ہے۔ کیونکہ اُنھوں نے انسانی زندگی کے سب سے آخری اور سب سے بڑے اصول یعنی انسانی بھائی چارے کا اُپدیش دیا۔

اگر مسلمان اُس سچے اور پورے جوش کے ساتھ، جو شروع زمانے کے مسلمانوں میں تھا، قرآن کے سکھائے ہوئے انسانی بھائی چارے کے سبق کو پھر سے اپنا لیں تو ہاری ہوئی بازی جیت لیں گے۔ قرآن کے اِس مول وچار میں ہی ہمارا اور دُنیا کا دونوں کا بھلا ہے، مسلمانوں کو چاہئے کہ سنسکرت اور ہندی سیکھیں اور گیتا جیسی ہندو دھرم کی پستکوں کو پڑھیں اور سمجھیں۔

اپنے ہندو بھائیوں سے مجھے وہی بات دُہرانی ہے جو دسمبر ۱۹۴۷ میں مہاتما جی نے مجھ سے کہی تھی۔ "ہندو مسلم ایکتا میں ہی ہندستان کا چھٹکارا ہے۔"

اتنا اگر ہم کر لیں تو پھر کوئی چیز ایسی نہیں جو ہمیں اپنے آدرش تک پہنچنے سے روک سکے۔

پچھلے ایک لیکھ میں شروع کے کلچری سمبندھوں کا کچھ ذکر آ چکا ہے جو ہند اور اسلامی ملکوں کے بیچ پیدا ہو چکے تھے اور جن کے ذریعے عربوں نے ہند والوں سے گنت، جوتش اور ویدک سیکھیں اور ترقی دے کر پھر یورپ کو سکھائیں۔

لگ بھگ دو سو برس کی ودیشی حکومت سے چھوٹ کر ہندستانی اب پھر اس لائق ہو گئے ہیں کہ پچھمی ایشیا اور اُتری افریقہ کے اسلامی ملکوں سے اپنا پُرانا راج کاجی، سماجی اور علمی ناتا پھر سے قائم کریں۔ ہندستان اِن

मुल्कों को खुशहाली और आपस की एकता हासिल करने में बड़ी मदद दे सकता है. क्योंकि हिन्दुस्तान के पास न सिर्फ़ क़ुदरती सामाग्री ही काफी है बल्कि उनके मुक़ाबले में हिन्दुस्तान की राजकाजी जानकारी और राजकाजी विचार भी बहुत बढ़े चढ़े हैं. अगर हिन्द के साथ तमाम एशिया इस तरह मिल जाय तो सत्य और अहिंसा के हक़ में उनकी इकट्ठा पुकार दुनिया में आदर से सुनी जा सके. पर हमको यह मान तभी मिलेगा जब हम तंगदिली को और अलग अलग बढ़ने के विचार को छोड़ देंगे, आपस के आए दिन के झगड़ों और हुज्जतों को खतम कर देंगे और अपने दिल में सबसे ऊँची जगह इस विश्वास को देंगे कि हम सब उस एक इनसानी बिरादरी के हैं जिसने मनुष्य मात्र की सेवा करने का बीड़ा उठा लिया है.

पाकिस्तान भले ही किसी बड़ी ताक़तवर क़ौम के साथ नाता जोड़ने की फ़िक्र कर रहा हो पर अन्त में उसकी असली भलाई अपने घर के पास ही हिन्द से गहरा मेल जोल पैदा करने ही में होगी. यही बात हिन्द पर भी लागू है.

दोनों मुल्कों के बीच जो भेदभाव का गर्द ग़ुबार फैल गया है वह उस वक़्त उड़ जायगा जिस वक़्त दोनों कन्धे से कन्धा मिलाकर सारे हिन्दुस्तान के बचाव के लिये तैयार हो जायेंगे. मेरी तुच्छ समझ में यही एक ऐसी रामबान दवा है जो दोनों के आपस के तमाम रोगों को नष्ट कर सकती है.

हम दुनिया में अपने चारों तरफ़ उस बरबादी को देख रहे हैं जो नफ़रत से पैदा होती है. मगर मोहब्बत कभी बेकार साबित नहीं होती. प्रेम ही में जीवन का सार और सृष्टि का भेद छिपा है.

ملکوں کو خوشحالی اور آپس کی ایکتا حاصل کرنے میں بڑی مدد دے سکتا ہے۔ کیونکہ ہندستان کے پاس نہ صرف قدرتی سامگری ہی کافی ہے بلکہ اُن کے مقابلے میں ہندستان کی راج کاجی جانکاری اور راج کاجی وچار بھی بہت بڑھے چڑھے ہیں۔ اگر ہند کے ساتھ تمام ایشیا اس طرح مل جائے تو ستیہ اور اہنسا کے حق میں اُن کی اکٹھا پکار دنیا میں آدر سے سُنی جا سکے۔ پر ہم کو یہ مان تبھی ملے گا جب ہم تنگدلی کو اور الگ الگ بڑھنے کے وچار کو چھوڑ دیں گے، آپس کے آئے دن کے جھگڑوں اور حجتوں کو ختم کر دیں گے اور اپنے دل میں سب سے اونچی جگہ اس وشواس کو دیں گے کہ ہم سب اُس ایک انسانی برادری کے ہیں جس نے منشیہ ماتر کی سیوا کرنے کا بیڑا اُٹھا لیا ہے۔

پاکستان بھلے ہی کسی بڑی طاقتور قوم کے ساتھ ناتا جوڑنے کی فکر کر رہا ہو پرانت میں اُس کی اصلی بھلائی اپنے گھر کے پاس ہی ہند سے گہرا میل جول پیدا کرنے ہی میں ہوگی۔ یہی بات ہند پر بھی لاگو ہے۔

دونوں ملکوں کے بیچ جو بھید بھاؤ کا گرد و غبار پھیل گیا ہے وہ اُس وقت اُڑ جائے گا جس وقت دونوں کندھے سے کندھا ملا کر سارے ہندستان کے بچاؤ کیلئے تیار ہو جائیں گے۔ میری تُچھ سمجھ میں یہی ایک ایسی رام بان دوا ہے جو دونوں کے آپس کے تمام روگوں کو نشٹ کر سکتی ہے۔

ہم دنیا میں اپنے چاروں طرف اُس بربادی کو دیکھ رہے ہیں جو نفرت سے پیدا ہوتی ہے۔ مگر محبت کبھی بےکار ثابت نہیں ہوتی۔ پریم ہی میں جیون کا سار اور سرشٹی کا بھید چھپا ہے۔

ईश्वर करे हममें वह बुद्धि पैदा हो जिससे हम दोनों अपनी सच्ची और हमेशा की भलाई को समझ सकें, और हममें वह ताक़त और हिम्मत आवे जिसके बल हम सचाई और नेकी पर अड़ जायँ, फिर चाहे अपनों ही से मुक़ाबला क्यों न करना पड़े. क्योंकि सत्य फ़िरक़ा या क़ौम दोनों से ऊपर और दोनों से बड़ा है.

ایشور کرے ہم میں وہ بدھی پیدا ہو جس سے ہم دونوں اپنی سچی اور ہمیشہ کی بھلائی کو سمجھ سکیں، اور ہم میں وہ طاقت اور ہمت آوے جس کے بل ہم سچائی اور نیکی پر اڑ جائیں، پھر چاہے اپنوں ہی سے مقابلہ کیوں نہ کرنا پڑے۔ کیوں کہ ستیہ فرقہ یا قوم دونوں سے اوپر اور دونوں سے بڑا ہے۔

एक नया ख़तरा

[श्री कृष्ण दास]

हमारे आपके सामने एक नया, भयानक, गम्भीर ख़तरा आ रहा है. वह आ रहा है धीरे धीरे, पूरी तैयारी के साथ, हरबा-हथियार से लैस होकर, हमें हमारे समाज, संस्कृति और सियासी ज़िन्दगी को और हमारे आगे आने वाली बहबूदी, ख़ुशहाली और जातीय बड़प्पन को निगल जाने के लिये. वह आ रहा है, पूरी बदनीयती के साथ, वह आ रहा है अपने दिल में तरह तरह के मन्सूबे बाँध कर. वह आ रहा है हमारे देश के करोड़ों सीधे-सादे इन्सानों को पहले सहानुभूति दिखा कर पीछे अपने बूटों के तले रौंदने के लिये! वह आ रहा है हमारे देश की आत्मा की हत्या करने के लिये, हमसे हमारे आदर्शों को छीनने के लिये, हमारी क़ुरबानी और तपस्या के माद्दे को ख़त्म कर पैसों के लोभ में अपने ही जैसा जानवर बनाने के लिये.

वह एक नया वाद लेकर आ रहा है. वह एक नई तस्वीर एक नई विचारधारा, एक नई कसौटी लेकर आ रहा है. वह आ रहा है हमसे हमारे उन गुनों को छीनने के लिये जिन गुनों ने हमें पिछले दो सौ बरस की ग़ुलामी के बावजूद ज़िन्दा रखा, सिर ऊँचा उठाये रहने के क़ाबिल रखा. वह आ रहा है

ایک نیا خطرہ

[شری کرشن داس]

ہمارے آپ کے سامنے ایک نیا، بھیانک، گمبھیر خطرہ آرہا ہے۔ وہ آرہا ہے دھیرے دھیرے، پوری تیاری کے ساتھ، حربہ ہتھیار سے لیس ہوکر، ہمیں ہمارے سماج، سنسکرتی اور سیاسی زندگی کو اور ہمارے آگے آنے والی بہبودی، خوش حالی اور جاتیہ بڑپن کو نگل جانے کے لئے۔ وہ آرہا ہے، پوری بدنیتی کے ساتھ، وہ آرہا ہے اپنے دل میں طرح طرح کے منصوبے باندھ کر۔ وہ آرہا ہے ہمارے دیش کے کروڑوں سیدھے سادے انسانوں کو پہلے سہانوبھوتی دکھا کر پیچھے اپنے بوٹوں کے تلے روندنے کے لئے! وہ آرہا ہے ہمارے دیش کی آتما کی ہتیا کرنے کے لئے، ہم سے ہمارے آدرشوں کو چھیننے کے لئے، ہماری قربانی اور تپسیا کے مادے کو ختم کر پیسوں کے لوبھ میں اپنے ہی جیسا جانور بنانے کے لئے۔

وہ ایک نیا واد لے کر آرہا ہے۔ وہ ایک نئی تصویر ایک نئی وچار دھارا، ایک نئی کسوٹی لے کر آرہا ہے۔ وہ آرہا ہے ہم سے ہمارے اُن گنوں کو چھیننے کے لئے جن گنوں نے ہمیں پچھلے دو سو برس کی غلامی کے باوجود زندہ رکھا، سر اونچا اٹھائے رہنے کے قابل رکھا۔ وہ آرہا ہے

हमसे हमारी संस्कृति छीनने, सभ्यता छीनने, ज़िन्दगी का सही नज़रिया छीनने, जन-जीवन की आत्मा छीनने !

वह आ रहा है, दूर से, बहुत दूर से, समुन्दर के पार से ! वह अमरीकी डालर का भाई है, वह अमरीकी डालरी साम्राजवाद का बदला हुआ रूप है. वह हमारे देश के तमद्दुन की चिता पर फाग गाने आ रहा है. वह ख़तरा है— भयानक ख़तरा, जो कि हमारी विचारों की दुनिया में आग लगा कर उसकी आँच में अपने हाथ सेंकेगा

अभी-अभी अख़बारों में यह ख़बर छपी है कि कुछ अमरीकी व्योपारी और पूंजीपति लोगों ने अपना एक सिन्डिकेट बनाया है, यह सिन्डिकेट हिन्दुस्तान के अख़बारों को ख़रीदने की कोशिश करेगा. लाहौर का 'सिविल और मिलेट्री गज़ट' अख़बार वह ख़रीद भी चुका है. वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अख़बारों को ख़रीदने की पूरी तैयारी कर चुका है. अगर उसे काफ़ी अख़बार न मिले तो वह ख़ुद नये अख़बार निकालना शुरू कर देगा. उस सिन्डिकेट के नुमाइन्दे ने एक बयान में कहा है, "अख़बारों के ख़रीदने और छापने में हमारा मंशा यह है कि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और दूसरे एशियाई मुल्कों के साथ अमरीका का सम्बन्ध अच्छा बनाया जाय और व्यापार के लिये भी अच्छे रिश्ते क़ायम किये जायें. यह रिश्ते उन मुल्कों के साथ क़ायम किये जायेंगे जहाँ की सरकारें मज़बूत और टिकाऊ हैं. सिन्डिकेट के अख़बारों की नीति ऐसी होगी कि अमरीका और उन देशों में जहाँ यह

ہم سے ہماری سنسکرتی چھیننے، سبھیتا چھیننے، زندگی کا صحیح نظریہ چھیننے، جن جیون کی آتما چھیننے!

وہ آرہا ہے، دور سے، بہت دور سے، سمندر کے پار سے! وہ امریکی ڈالر کا بھائی ہے، وہ امریکی ڈالری سامراج واد کا بدلا ہوا روپ ہے۔ وہ ہمارے دیش کے تمدن کی چتا پر پھاگ گانے آرہا ہے۔ وہ خطرہ ہے — بھیانک خطرہ، جو کہ ہماری وچاروں کی دنیا میں آگ لگا کر اس کی آنچ میں اپنے ہاتھ سینکے گا۔

ابھی ابھی اخباروں میں یہ خبر چھپی ہے کہ کچھ امریکی بیوپاری اور پونجی پتی لوگوں نے اپنا ایک سنڈیکیٹ بنایا ہے۔ یہ سنڈیکیٹ ہندستان کے اخباروں کو خریدنے کی کوشش کرے گا۔ لاہور کا "سول اور ملٹری گزٹ" اخبار وہ خرید بھی چکا ہے۔ وہ ہندستان اور پاکستان کے اخباروں کو خریدنے کی پوری تیاری کر چکا ہے۔ اگر اسے کافی اخبار نہ ملے تو وہ خود نئے اخبار نکالنا شروع کر دے گا۔ اس سنڈیکیٹ کے نمائندے نے ایک بیان میں کہا ہے، "اخباروں کے خریدنے اور چھاپنے میں ہمارا منشا یہ ہے کہ ہندستان، پاکستان اور دوسرے ایشیائی ملکوں کے ساتھ امریکہ کا سمبندھ اچھا بنایا جائے اور ویوپار کے لئے بھی اچھے رشتے قائم کئے جائیں۔ یہ رشتے ان ملکوں کے ساتھ قائم کئے جائیں گے جہاں کی سرکاریں مضبوط اور ٹکاؤ ہیں۔ سنڈیکیٹ کے اخباروں کی نیتی ایسی ہوگی کہ امریکہ اور ان دیشوں میں جہاں یہ

अख़बार निकलेंगे, अच्छे सम्बन्ध पैदा किये जा सकें. यह अख़बार अमीरीकी दृष्टि कोण से ही ख़बरें पेश करेंगे.

सिन्डिकेट के नुमाइन्दे श्री मारगोलिन ने आगे बताया कि वह अख़बारी हल्क़ों में पूछ ताछ कर रहे हैं. देशी ख़बरें तो देशी एजेन्सियों से ही ली जायेंगी, मगर विदेशी ख़बरें उस एजेन्सी से ली जायेंगी, जिसे सिन्डिकेट की ओर से अमरीका में क़ायम किया जायगा. उस एजेन्सी के ज़रिये ख़ास ख़बरें ख़ास शक्लों में बना कर पेश की जायँगी.

श्री मारगोलिन ने कहा, "सिन्डिकेट के सदस्य विश्वास करते हैं कि चूंकि अमरीका दुनिया का सबसे ताक़तवर मुल्क है इसलिये उसे सारे संसार की भलाई के लिये अपनी ताक़त को इस्तेमाल करना पड़ेगा. हम आशा करते हैं कि अमरीकी लोगों के अख़बारों की जो लड़ी यहाँ क़ायम होगी वह बहुत हद तक उस ताक़त को सबकी भलाई के लिये इस्तेमाल होने में मदद देगी.

अन्त में उन्होंने कहा कि, "अब तक एशियाई अख़बारों में अमरीका के सम्बन्ध में बड़ी सनसनी ख़ेज़ ख़बरें छपती रही हैं. अब हम अमरीका की ज़िन्दगी और वहाँ की दूसरी बातों की सच्ची तस्वीर पेश करना चाहते हैं."

कहा जाता है कि इतिहास अपने को दोहरता है. क्या हम श्री मारगोलिन की आवाज़ में क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्ज़, मैकाले

اخبار نکلیں گے، اچھے سمبندھ پیدا کئے جا سکیں۔ یہ اخبار امریکی درشٹی کون سے ہی خبریں پیش کریں گے۔"

سنڈی کیٹ کے نمائندے شری مارگولن نے آگے بتایا کہ وہ اخباری حلقوں میں پوچھ تاچھ کر رہے ہیں۔ دیشی خبریں تو دیشی ایجنسیوں سے ہی لی جائیں گی، مگر ودیشی خبریں اُس ایجنسی سے لی جائیں گی، جسے سنڈی کیٹ کی اَور سے امریکہ میں قائم کیا جائے گا۔ اس ایجنسی کے ذریعے خاص خبریں خاص شکلوں میں بنا کر پیش کی جائیں گی۔

شری مارگولن نے کہا، "سنڈی کیٹ کے سدسیہ وشواس کرتے ہیں کہ چونکہ امریکہ دنیا کا سب سے طاقتور ملک ہے اس لئے اُسے سارے سنسار کی بھلائی کے لئے اپنی طاقت کو استعمال کرنا پڑے گا۔ ہم آشا کرتے ہیں کہ امریکی لوگوں کے اخباروں کی جو لڑی یہاں قائم ہوگی وہ بہت حد تک اس طاقت کو سب کی بھلائی کے لئے استعمال ہونے میں مدد دے گی۔

انت میں انھوں نے کہا کہ، "اب تک ایشیائی اخباروں میں امریکہ کے سمبندھ میں بڑی سنسنی خیز خبریں چھپتی رہی ہیں۔ اب ہم امریکہ کی زندگی اور وہاں کی دوسری باتوں کی سچی تصویر پیش کرنا چاہتے ہیں۔"

کہا جاتا ہے کہ اتہاس اپنے کو دہراتا ہے۔ کیا ہم شری مارگولن کی آواز میں کلائیو، وارن ہیسٹنگز، میکالے

और लार्ड कर्ज़न की मिली जुली आवाज़ नहीं सुन रहे हैं? क्या ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ज़माने के शान्ति का पाठ पढ़ाने वाले और भाई चारे का सबक़ सिखाने वाले पादरियों की मक्कारी अमरीकी जामा पहिन कर तो नहीं आई है!

हमें इन अच्छा सम्बन्ध क़ायम करने वालों पर यक़ीन क्यों कर हो? इन मीठे-मीठे नारों के पीछे, इन चाशनीदार बातों के पीछे कोरिया, फिलिपाइन, चीन, जापान जैसे दर्जनों मुल्कों के तल्ख़ तजरबे छिपे हुए हैं. जब अंगरेज़ आये थे तो वह भी यही कहा करते थे. अब वह चले गये हैं तो उन्हीं के रिश्तेदार आज बीसवीं सदी में—१५ अगस्त १६४६ के बाद—अच्छा सम्बन्ध क़ायम करने आ रहे हैं.

हमारे उद्योग-धन्धे, हमारे बांध, बिजली, पानी के सारे कारख़ाने तो इन्टरनेशल बैंक और डालर-स्टर्लिंग के क़र्ज़े पर खुलने ही जा रहे हैं. मगर केवल आर्थिक ढंग से घुसने पर देश की जनता के चौकन्ना हो जाने का ख़तरा रहता है. जनता को नशे और ग़शी की हालत में रखने के लिये प्रचारों की अफ़ीम ज़रूरी है. अमरीका धनी देश है. वहाँ की जिन्दगी का स्तर हमारे यहाँ से बहुत ऊँचा है. इसलिये जब वह लोग यहाँ अख़बार निकालेंगे तो सम्पादकों से लेकर मज़दूरों तक को दूसरे अख़बारों से कई गुना ज्यादा तन्ख़ाहें देंगे. वह प्रचार के नये ढंगों को अपना कर सस्ते दामों पर अधिक पन्ने छाप कर लोगों के पास पहुँचायँगे. उन पन्नों में अमरीकी नज़रिये से ढली हुई ख़बरें छपी रहेंगी. सब्ज़बाग़, बड़े बड़े वायदे,

اور لارڈ کرزن کی ملی جلی آواز نہیں سن رہے ہیں؟ کیا ایسٹ انڈیا کمپنی کے زمانے کے شانتی کا پاٹھ پڑھانے والے اور بھائی چارے کا سبق سکھانے والے پادریوں کی مکاری امریکی جامہ پہن کر تو نہیں آئی ہے!

ہمیں ان اچھا سمبندھ قائم کرنے والوں پر یقین کیوں کر ہو؟ ان میٹھے میٹھے نعروں کے پیچھے، ان چاشنی دار باتوں کے پیچھے کوریا، فلپائن، چین، جاپان جیسے درجنوں ملکوں کے تلخ تجربے چھپے ہوئے ہیں۔ جب انگریز آئے تھے تو وہ بھی یہی کہا کرتے تھے۔ اب وہ چلے گئے ہیں تو انھیں کے رشتے دار آج بیسویں صدی میں — ۱۵ اگست ۱۹۴۹ کے بعد — اچھا سمبندھ قائم کرنے آرہے ہیں۔

ہمارے اُدیوگ دھندے، ہمارے باندھ، بجلی، پانی کے سارے کارخانے تو انٹرنیشنل بینک اور ڈالر اسٹرلنگ کے قرضے پر کھلنے ہی جارہے ہیں۔ مگر کیول آرتھک ڈھنگ سے گھسنے پر دیش کی جنتا کے چوکنا ہو جانے کا خطرہ رہتا ہے۔ جنتا کو نشے اور غشی کی حالت میں رکھنے کے لئے پرچاروں کی افیم ضروری ہے۔ امریکہ دھنی دیش ہے۔ وہاں کی زندگی کا ستر ہمارے یہاں سے بہت اونچا ہے۔ اس لئے جب وہ لوگ یہاں اخبار نکالیں گے تو سمپادکوں سے لے کر مزدوروں تک کو دوسرے اخباروں سے کئی گنا زیادہ تنخواہیں دینگے۔ وہ پرچار کے نئے ڈھنگوں کو اپنا کر سستے داموں پر ادھک پنے چھاپ کر لوگوں کے پاس پہنچائیں گے۔ ان پنوں میں امریکی نظریئے سے ڈھلی ہوئی خبریں چھپی رہیں گی۔ سبز باغ، بڑے بڑے وعدے،

अमरीका का गुनगान – सब कुछ रहेगा उनमें ! उनमें अमरीका के मालों का इश्तहार रहेगा और प्रचार रहेगा. उनमें अमरीका की तारीफ़, अमरीका की समाजी संस्कृती और आर्थिक ज़िन्दगी की तारीफ़ रहेगी हमको भ्रम में रखने के लिये, उन पत्रों में कालीदास, तुलसीदास, कबीर, टैगोर, इक़बाल, गांधी जी, नेहरू सबकी, सब नेताओं की, सब विचारकों की, सब विद्वानों की तारीफ़ रहेगी. उन पत्रों में इसी तरह की हजारों बातें रहेंगी. यहाँ की भोली भाली जनता को भुलावे में डालने और अमरीकी सभ्यता की जय बोलने के लिये अच्छा वातावरन तैयार हो जायेगी.

हथियारों से जीता हुआ देश तो आसानी से अपने को मुक्त कर सकता है. मगर संस्कृति और सभ्यता से जीता हुआ देश आसानी से अपने को उसके असर से दूर नहीं कर सकता. अमरीकी अख़बारों का हिन्द में छापने—बेचने—प्रचार करने को यह योजना हमारी संस्कृति और सभ्यता पर अमरीकी डालरों का छिपा हुआ हमला है.

जो हिन्दुस्तान के अख़बारों, सम्पादकों और अख़बार नवीसों के इतिहास को जानते हैं, उन्हें यह पता है कि अख़बार नवीसी हमारे मुल्क में रोज़ी कमाने का ज़रिया नहीं, आज़ादी और न्याय के आन्दोलन को मज़बूत करने और जनता के आर्थिक, राज काजी समाजी और संस्कृती जीवन को ऊँचा बनाने का एक साधन रहा है. विपिन चन्द्रपाल, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपतराय, श्री अरविन्द घोष, महात्मा शिशिर

امریکہ کا گن گان سب کچھ رہے گا ان میں ! ان میں امریکہ کے مالوں کا اشتہار رہے گا اور پرچار رہے گا. ان میں امریکہ کی تعریف امریکہ کی سماجی سنسکرتی اور آرتھک زندگی کی تعریف رہے گی ہم کو بھرم میں رکھنے کے لئے، ان پتروں میں کالیداس، تلسی داس، کبیر، ٹیگور، اقبال، گاندھی جی، نہرو سب کی، سب نیتاؤں کی، سب وچارکوں کی، سب ودوانوں کی تعریف رہے گی. ان پتروں میں اسی طرح کی ہزاروں باتیں رہیں گی. یہاں کی بھولی بھالی جنتا کو بھلاوے میں ڈالنے کے لئے اچھا واتاورن تیار ہو جائے گا.

ہتھیاروں سے جیتا ہوا دیش تو آسانی سے اپنے کو مکت کر سکتا ہے. مگر سنسکرتی اور سبھیتا سے جیتا ہوا دیش آسانی سے اپنے کو اس کے اثر سے دور نہیں کر سکتا. امریکی اخباروں کا ہند میں چھاپنے — بیچنے — پرچار کرنے کی یہ یوجنا ہماری سنسکرتی اور سبھیتا پر امریکی ڈالروں کا چھپا ہوا حملہ ہے.

جو ہندستان کے اخباروں، سمپادکوں اور اخبار نویسوں کے اتہاس کو جانتے ہیں، انھیں یہ پتہ ہے کہ اخبار نویسی ہمارے ملک میں روزی کمانے کا ذریعہ نہیں، آزادی اور نیائے کے آندولن کو مضبوط کرنے اور جنتا کے آرتھک، راج کاجی سماجی اور سنسکرتی جیون کو اونچا بنانے کا ایک سادھن رہا ہے. وپن چندر پال، بال گنگادھر تلک، لالہ لاجپت رائے، شری اروند گھوش، مہاتما ششر

कुमार घोष, बाबू मोतीलाल घोष, पंडित मदन मोहन मालवीय, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, मौलाना मोहम्मद अली, श्री० सी० वाई० चिन्तामणि, श्री गणेश शंकर विद्यार्थी, पंडित सुन्दर लाल, श्री शिव प्रसाद गुप्त, श्री बाबू राव विष्णु पराड़कर वग़ैरा सैकड़ों-हज़ारों नेताओं ने अख़बार नवीसी की एक पवित्र परम्परा क़ायम की, पुलिस की ज़्यादतियाँ, ज़मानतें, पाबन्दियाँ, जेलख़ाने और सज़ाएं, फ़ाक़ाकाशी करके न्याय, आज़ादी और सच्चाई की ख़बर पहुँचाने वाले इन क़ौमी रहनुमाओं की राह में बाधा पहुँचाने में नाकाम ही रहीं. प्रेस ऐक्ट और धन का लालच इन कर्मवीरों को कभी भी डिगा न सका.

हमने कहा उनकी यह परम्परा क़ुरबानी, तपस्या और सच्चाई की परम्परा थी. मगर पिछली लड़ाई के बाद यह परम्परा कमज़ोर हो चली थी. बड़े-बड़े पूँजी पतियों ने धीरे धीरे सारे अख़बार हथिया लिये. 'प्रेस ट्रस्ट आफ़ इण्डिया और युनाइटेड प्रेस आफ़ इण्डिया इन्हीं पूँजीपतियों की जेबों का एक हिस्सा बन गई.समाचार पत्र सत्य के प्रचारक न रहे वह पूंजीपतियों और विज्ञापन दाताओं के स्वार्थों के प्रचारक मात्र रह गये. यह उस त्यागमय तपस्या-मय परम्परा की आख़िरी कड़ी थी. अब लगता है, यह अमरीकी दोस्त अपने डालरों के बोझ से उस कड़ी को भी तड़का देना चाहते हैं.

पुरानी परम्परा के जो थोड़े से पत्रकार, सम्पादक ,और लेखक बच गये हैं, शायद वह अपनी तरह के आख़िरी निशान ही रह गये हैं. अब उनकी परम्परा का दिया बुझने वाला है. गांधी जी के 'हरिजन' की पावन परम्परा तो शायद गांधी जी के साथ ही चली

کمار گھوش، بابو موتی لال گھوش، پنڈت مدن موہن مالویہ، مولانا ابوالکلام آزاد، مولانا محمد علی، شری سی. وائی چنتامنی، شری گنیش شنکر ودیارتھی، پنڈت سندر لال، شری شیو پرساد گپت، شری بابو راؤ وشنو پراڑکر وغیرہ سیکڑوں ہزاروں نیتاؤں نے اخبار نویسی کی ایک پوتر پرمپرا قائم کی، پولیس کی زیادتیاں، ضمانتیں، پابندیاں، جیل خانے اور سزائیں، فاقہ کشی کر کے نیائے، آزادی اور سچائی کی خبر پہنچانے والے ان قومی رہنماؤں کی راہ میں بادھا پہنچانے میں ناکام ہی رہیں. پریس ایکٹ اور دھن کا لالچ ان کرم ویروں کو کبھی بھی ڈگا نہ سکا.

ہم نے کہا ان کی یہ پرمپرا قربانی، تپسیا اور سچائی کی پرمپرا تھی. مگر پچھلی لڑائی کے بعد یہ پرمپرا کمزور ہو چلی تھی. بڑے بڑے پونجی پتیوں نے دھیرے دھیرے سارے اخبار ہتھیا لئے. 'پریس ٹرسٹ آف انڈیا اور یونائٹڈ پریس آف انڈیا انھیں پونجی پتیوں کی جیبوں کا ایک حصہ بن گئی. سماچار پتر ستیہ کے پرچارک نہ رہے وہ پونجی پتیوں اور وگیاپن داتاؤں کے سوارتھوں کے پرچارک ماتر رہ گئے. یہ اس تیاگ مے تپسیا پرمپرا کی آخری کڑی تھی. اب لگتا ہے، یہ امریکی دوست اپنے ڈالروں کے بوجھ سے اس کڑی کو بھی تڑکا دینا چاہتے ہیں.

پرانی پرمپرا کے جو تھوڑے سے پترکار، سمپادک اور لیکھک بچ گئے ہیں، شاید وہ اپنی طرح کے آخری نشان ہی رہ گئے ہیں. اب ان کی پرمپرا کا دیا بجھنے والا ہے. گاندھی جی کے 'ہریجن' کی پاون پرمپرا تو شاید گاندھی جی کے ساتھ ہی چلی

गई. 'जन-युग' या 'नया-हिन्द' की विज्ञापन न लेने की परम्परा भी लगता है धीरे धीरे ख़त्म होती जा रही है. आज के पूंजी वादी युग में, मुक़ाबले और इशतहार बाज़ी के ज़माने में बिना विज्ञापन के भला कौन सा अख़बार टिक सकता है !

और अब मानों देशी पूँजीपतियों के कारनामे काफ़ी न थे कि हमारे अमरीकी दोस्त भी आ धमके. समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों और पैम्फ़लेटों से वह हमारा घर भर देंगे. उनके जाल में फँसने वालों की कमी न होगी. हम अपने अनुभव से अच्छी तरह जानते हैं कि इन प्रचारों का कितना गहरा असर हमारे भाइयों पर पड़ता है. सच तो यह है कि अँग्रेज़ी असर से हमारा पिण्ड अभी पूरी तरह छूट भी न पाया था कि यह नया हमला, जो उससे भी ज़्यादा तेज़, पुर असर, भयानक और ख़तरनाक है, शुरू हो गया है.

'चना चबैना गंगाजल' के सहारे अपने को जीवित रख जिन लोगों ने पत्रकार के पेशे को पाक साफ़ रखने की कोशिश की है आज यह नया हमला उनको चुनौती देने के लिये आया है. अगर हम उनके चंगुल में फँस जाते हैं, अगर हम लुई फ़िशर और दूसरे प्रचारकों के चकमे में आ जाते हैं तो हम अपने इन बुज़ुर्गों के सामने गुनहगार होंगे. श्री बी० जी० हार्निमन भी एक विदेशी जाति के पत्रकार थे मगर उन्होंने हमारे देश को ही अपना देश मान लिया था और कई बार अंगरेज़ी सरकार से लोहा भी लिया था मगर उनकी बात दीगर थी.

महान पत्रकार महात्मा गांधी ने पत्रकारी की जो ऊँची मिसाल

گئی۔ 'جن یوگ' یا 'نیا ہند' کی وگیاپن نہ لینے کی پرمپرا بھی لگتا ہے دھیرے دھیرے ختم ہوتی جا رہی ہے۔ آج کے پونجی وادی یگ میں، مقابلے اور اشتہار بازی کے زمانے میں بنا وگیاپن کے بھلا کون سا اخبار ٹک سکتا ہے!

اور اب مانو دیشی پونجی پتیوں کے کارنامے کافی نہ تھے کہ ہمارے امریکی دوست بھی آ دھمکے۔ سماچار پتروں، پتریکاؤں، پستکوں اور پمفلیٹوں سے وہ ہمارا گھر بھر دیں گے۔ ان کے جال میں پھنسنے والوں کی کمی نہ ہوگی۔ ہم اپنے انوبھو سے اچھی طرح جانتے ہیں کہ ان پرچاروں کا کتنا گہرا اثر ہمارے بھائیوں پر پڑتا ہے۔ سچ تو یہ ہے کہ انگریزی اثر سے ہمارا پنڈ ابھی پوری طرح چھوٹ بھی نہ پایا تھا کہ یہ نیا حملہ، جو اس سے بھی زیادہ تیز، پُر اثر، بھیانک اور خطرناک ہے، شروع ہو گیا ہے۔

'چنا چبینا گنگا جل' کے سہارے اپنے کو جیوت رکھ جن لوگوں نے پترکار کے پیشے کو پاک صاف رکھنے کی کوشش کی ہے آج یہ نیا حملہ ان کو چنوتی دینے کے لئے آیا ہے۔ اگر ہم ان کے چنگل میں پھنس جاتے ہیں، اگر لوئی فشر اور دوسرے پرچارکوں کے چکمے میں آ جاتے ہیں تو ہم اپنے ان بزرگوں کے سامنے گنہگار ہوں گے۔ شری بی۔ جی ہارنیمن بھی ایک ودیشی جاتی کے پترکار تھے مگر انھوں نے ہمارے دیش کو ہی اپنا دیش مان لیا تھا اور کئی بار انگریزی سرکار سے لوہا بھی لیا تھا مگر ان کی بات دیگر تھی۔

مہان پترکار مہاتما گاندھی نے پترکاری کی جو اونچی مثال

हमारे सामने रखी थी वह हमें अभी याद है. मगर 'हरिजन' जैसे शुद्ध सिद्धान्त वादी पत्र हमारे देश मे कितने हैं ?

हमें तो भविष्य अँधेरा ही लगता है. जैसा कि हमने कहा है, हमारे देश क पत्र-मालिकों ने लगभग सभी पत्र-पत्रिकाओं को हथिया लिया है. पत्रों की आजाद खयाली तो खत्म होती ही जा रही थी, जो कुछ रही सही बात थी वह भी बिगड़ने वाली है. हमारे पत्र-मालिक जन-जीवन को और पत्रकारी के पेशे को पाक साफ बनाये रखन के बजाय, इन विदेशी लोगों से सहयोग करने में अपना लाभ देखेंगे.

यह नया खतरा दूसरे खतरों को भी पैदा करेगा. हमारी स्वतंत्र विचार धारा और हमारे स्वतंत्र नजरियों पर पर्दा पड़ने वाला है.

इसीलिये मैं कहता हूँ—क़ौम के पहरेदारो, होशियार!

—०—

ہمارے سامنے رکھی تھی وہ ہمیں ابھی یاد ہے۔ مگر 'ہریجن' جیسے شدھ سدھانت وادی پتر ہمارے دیش میں کتنے ہیں؟

ہمیں تو بھوشیہ اندھیرا ہی لگتا ہے۔ جیسا کہ ہم نے کہا ہے، ہمارے دیش کے پتر مالکوں نے لگ بھگ سبھی پتر پتریکاؤں کو ہتھیا لیا ہے۔ پتروں کی آزاد خیالی تو ختم ہوتی ہی جا رہی تھی، جو کچھ رہی سہی بات تھی وہ بھی بگڑنے والی ہے۔ ہمارے پتر مالک جن جیون کو اور پترکاری کے پیشے کو پاک صاف بنائے رکھنے کے بجائے، ان ودیشی لوگوں سے سہیوگ کرنے میں اپنا لابھ دیکھیں گے۔

یہ نیا خطرہ دوسرے خطروں کو بھی پیدا کرے گا۔ ہماری سوتنتر وچار دھارا اور ہمارے سوتنتر نظریوں پر پردہ پڑنے والا ہے۔

اسی لئے میں کہتا ہوں — قوم کے پہرے دارو، ہوشیار!

—٠٠٠—

शेरशाह

[सेठ गोविन्ददास]

तीसरा अंक

पहला दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरख़ाँ के मकान में शेरख़ाँ का कमरा.

समय—तीसरा पहर.

[कमरा वही है जो दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में था. शेरख़ाँ सर झुकाए हुए इधर उधर बेचैनी से टहल रहा है. हुक़्क़ा भरा हुआ रखा है. ब्रह्मादित्य का प्रवेश.]

ब्रह्मादित्य—सुलतान महमूद लोदी के दूत का कहना है कि बाबर के स्वर्गवास में सन्देह का कोई भी स्थान नहीं है यदि यह सत्य न होता तो महमूद लोदी अभी मुग़लों पर आक्रमण करने की बात ही न सोचता.

शेरख़ाँ—(बैठते हुए) बैठ जाओ; यह ख़बर मिलते ही मैं तमाम मसले पर ग़ौर करता रहा और जिस नतीजे पर पहुँचा हूँ, वह तुम्हें भी बता कर तुमसे भी सलाह चाहूँगा

[ब्रह्मादित्य भी बैठ जाता है]

شیر شاہ

[سیٹھ گووند داس]

تیسرا انک

پہلا درشیہ

ستھان — بہار شریف میں شیر خاں کے مکان میں شیر خاں کا کمرہ۔

سمے — تیسرا پہر۔

[کمرہ وہی ہے جو دوسرے انک کے دوسرے درشیہ میں تھا۔ شیر خاں سر جھکائے ہوئے اِدھر اُدھر بےچینی سے ٹہل رہا ہے۔ حقّہ بھرا ہوا رکھا ہے۔ برہمادتیہ کا پرویش]

برہمادتیہ — سُلطان محمود لودی کے دوت کا کہنا ہے کہ بابر کے سورگ واس میں سندیہہ کا کوئی بھی ستھان نہیں ہے یدی یہ ستیہ نہ ہوتا تو محمود لودی ابھی مغلوں پر آکرمن کرنے کی بات ہی نہ سوچتا۔

شیر خاں — (بیٹھتے ہوئے) بیٹھ جاؤ ؛ یہ خبر ملتے ہی میں تمام مسئلہ پر غور کرتا رہا اور جس نتیجے پر پہونچا ہوں، وہ تمھیں بھی بتا کر تم سے بھی صلاح چاہوں گا۔

[برہمادتیہ بھی بیٹھ جاتا ہے۔]

शेरख़ाँ—पंडित, याद है जब पहली मरतबा महमूद हारा तब हम लोगों ने क्या तय किया था. ?

ब्रह्मादित्य—अच्छी प्रकार स्मरण है. हम लोगों ने जल्दी न करने और-पूरे संयम रखने के अपने पहले निश्चय को और भी दृढ़ता से,पालन करने का निश्चय किया था.

शेरख़ाँ—बाबर मर गया है. बिहार के सूबेदार बहार ख़ाँ के मर जाने और उसके लड़के जलाल ख़ाँ के बचपन के सबब से बिहार के सारे अख़तियारात मेरे हाथ में हैं. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) लेकिन इतने पर भी क्या तुम यह समझते हो क हम मुग़लों से लड़ने के क़ाबिल हैं ?

ब्रह्मादित्य—सर्वथा नहीं. बाबर नहीं, तो उसका लड़का हुमायूँ है बिहार के सब अधिकार आपके हाथ में हैं; फिर भी हमारी वैसी तैयारी नहीं कि हम मुग़लों से इस समय लड़ सकें.

शेरख़ाँ—मेरी भी यही राय है जो तुम्हारी. मैं अब इस मसले पर ज़रा भी जल्दी करने वाला नहीं हूँ.

[निज़ाम का प्रवेश]

निज़ाम—(दोनों की गम्भीर मुद्रा को देखते हुए) शायद महमूद लोदी के-एलची को जवाब देने के मामले पर सलाह हो रही है. (बैठ जाता है)

शेरख़ाँ—हाँ, उसी के मुताल्लिक़. कहो, तुम्हारी क्या राय है ?

निज़ाम—मैं ऐसे मामलात में राय देने की अक़्ल ही नहीं रखता.

شیرخاں — پنڈت، یاد ہے جب پہلی مرتبہ محمود ہارا تب ہم لوگوں نے کیا طے کیا تھا؟

برہمادتیہ — اچھی پرکار سمرن ہے۔ ہم لوگوں نے جلدی نہ کرنے اور پورے سنیم رکھنے کے اپنے پہلے نشچے کو اور بھی درڑھتا سے پالن کرنے کا نشچے کیا تھا۔

شیرخاں — بابر مرگیا ہے۔ بہار کے صوبیدار بہار خاں کے مرجانے اور اُس کے لڑکے جلال خاں کے بچپن کے سبب سے بہار کے سارے اختیارات میرے ہاتھ میں ہیں۔ (حقہ گڑگڑا کر دُھواں چھوڑتے ہوئے) لیکن اتنے پر بھی کیا تم یہ سمجھتے ہو کہ ہم مغلوں سے لڑنے کے قابل ہیں؟

برہمادتیہ — سرو تھا نہیں۔ بابر نہیں، تو اُس کا لڑکا ہمایوں ہے۔ بہار کے سب ادھیکار آپ کے ہاتھ میں ہیں، پھر بھی ہماری ویسی تیاری نہیں کہ ہم مغلوں سے اس سمے لڑ سکیں۔

شیرخاں — میری بھی یہی رائے ہے جو تمھاری۔ میں اب اس مسئلے پر ذرا بھی جلدی کرنے والا نہیں ہوں۔

[نظام کا پرویش]

نظام — (دونوں کی گمبھیر مُدرا کو دیکھتے ہوئے) شاید محمود لودی کے ایلچی کو جواب دینے کے معاملے پر صلاح ہو رہی ہے۔ (بیٹھ جاتا ہے)

شیرخاں — ہاں، اُسی کے متعلق، کہو، تمھاری کیا رائے ہے؟

نظام — میں ایسے معاملات میں رائے دینے کی عقل ہی نہیں رکھتا۔

शेरख़ाँ—लेकिन दुनिया में तस्वीरें बनाना और शायरी करना ही सब कुछ नहीं है; इन बातों की तरफ़ तुम्हें ख़याल दौड़ाना ही चाहिये.

ब्रह्मादित्य—आपके साथ रहते रहते ऐसा कौन है जो इन बातों में दक्ष न हो जाय. आपकी अनुपस्थिति में जागीर का कार्य इन्होंने जिस योग्यता से किया था, उससे मुझे विश्वास है कि यह राजनैतिक विषयों में भी पटु हो जायँगे.

[कुछ देर निस्तब्धता.]

शेरख़ाँ—(निज़ाम से) निज़ाम, हम लोगों ने तय किया है कि हम महमूद लोदी को कोई मदद नहीं दे सकते. (धीरे धीरे नाक से धुआँ निकालता है)

निज़ाम—क्यों, जिसके लिये आप घूम फिर कर, फिर से बिहार आकर रहे, मुग़लों को निकालने का वह मक़सद आप भूल जाना चाहते हैं ? मुग़लों के लिये अब आप के दिल में वैसी नफ़रत नहीं रह गई ?

शेरख़ाँ—हरगिज़ नहीं, बल्कि इस मुल्क और यहाँ के बाशिन्दगान के मुताल्लिक़ बाबर ने जैसी गन्दी बातें लिखी हैं, उन्हें पढ़ने के बाद तो मैं उससे और भी ज्यादा नफ़रत करने लगा था.

निज़ाम—लेकिन अब बाबर नहीं है, हुमायूँ है; क्यों ?

शेरख़ाँ—इससे क्या, इन बाप बेटों में जैसी मुहब्बत थी वैसी तो शायद ही किसी बाप बेटों में हो. और जिस तरह

شیر خاں — لیکن دنیا میں تصویریں بنانا اور شاعری کرنا ہی سب کچھ نہیں ہے؛ ان باتوں کی طرف تمھیں خیال دوڑانا ہی چاہیے۔

برہما دتیہ — آپ کے ساتھ رہتے رہتے ایسا کون ہے جو ان باتوں میں دکش نہ ہو جائے۔ آپ کی انوپستھتی میں جاگیر کا کاریہ انھوں نے جس یوگیتا سے کیا تھا، اس سے مجھے وشواس ہے کہ یہ راج نیتک وشیوں میں بھی پٹو ہو جائیں گے۔

[کچھ دیر نستبدھتا]

شیر خاں — (نظام سے) نظام، ہم لوگوں نے طے کیا ہے کہ ہم محمود لودی کو کوئی مدد نہیں دے سکتے۔ (دھیرے دھیرے ناک سے دھواں نکالتا ہے)

نظام — کیوں، جس کے لئے آپ گھوم پھر کر، پھر سے بہار آکر رہے، مغلوں کو نکالنے کا وہ مقصد آپ بھول جانا چاہتے ہیں؟ مغلوں کے لئے اب آپ کے دل میں ویسی نفرت نہیں رہ گئی؟

شیر خاں — ہرگز نہیں، بلکہ اس ملک اور یہاں کے باشندگان کے متعلق بابر نے جیسی گندی باتیں لکھی ہیں، انھیں پڑھنے کے بعد تو میں اس سے اور بھی زیادہ نفرت کرنے لگا تھا۔

نظام — لیکن اب بابر نہیں ہے، ہمایوں ہے؛ کیوں؟

شیر خاں — اس سے کیا، ان باپ بیٹوں میں جیسی محبت تھی ویسی تو شاید ہی کسی باپ بیٹوں میں ہو۔ اور جس طرح

हुमायूँ पर सदक़े होकर बाबर मरा है, उससे तो मरहूम बाबर पर हुमायूँ की मुहब्बत जीते हुए बाबर से भी ज्यादा हो गई होगी. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) बाबर ने यहाँ के लिये जो कुछ लिखा है उसे हुमायूँ बाबर की वसीयत मानेगा. वह भी इस मुल्क और यहाँ के आदमियों से हमेशा नफ़रत करता रहेगा. क्यों, पंडित ?

ब्रह्मादित्य—मैं आपसे पूर्णतया सहमत हूँ.

शेरख़ाँ—हुमायूँ की आँखें भी अपने मुल्क की तरफ़ ही लगी रहेंगी. हिन्दुस्तान को वह कभी अपना वतन नहीं समझ सकता, और बिना यह समझे, उसके हाथ से इस मुल्क और यहाँ के रहने वालों की क्या भलाई हो सकती है ?

ब्रह्मादित्य—ख़ून की नदियाँ यहाँ सदा बहती अवश्य रह सकती हैं.

शेरख़ाँ—मैं हूँ हिन्दी, इसी मुल्क में पैदा हुआ, यहीं की आबोहवा में पला यहीं की मिट्टी से बना और इसी मिट्टी में मिलूँगा. यहाँ से बाहर देखने के लिये मेरे पास कुछ नहीं. हिन्दुस्तान ही मेरे लिये सब कुछ है. यहाँ के रहने वाले चाहे वह किसी भी मज़हबो मिल्लत के हों, मेरे भाई बिरादर.

ब्रह्मादित्य—आपने अब तक के अपने कामों से यह प्रमाणित कर दिया है.

शेरख़ाँ—जो हिन्दुस्तान और यहाँ के रहने वालों से नफ़रत करता है, चाहे वह मेरा हम मज़हब ही क्यों न हो, मैं उससे नफ़रत करता हूँ.

ہمایوں پر صدقے ہوکر بابر مرا ہے، اُس سے تو مرحوم بابر پر ہمایوں کی محبت جیتے ہوئے بابر سے بھی زیادہ ہو گئی ہوگی۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) بابر نے یہاں کے لئے جو کچھ لکھا ہے اُسے ہمایوں بابر کی وصیت مانے گا۔ وہ بھی اس ملک اور یہاں کے آدمیوں سے ہمیشہ نفرت کرتا رہے گا۔ کیوں، پنڈت؟

برہمادتیہ — میں آپ سے پورنتیا سہمت ہوں۔

شیر خاں — ہمایوں کی آنکھیں بھی اپنے ملک کی طرف ہی لگی رہیں گی۔ ہندستان کو وہ کبھی اپنا وطن نہیں سمجھ سکتا، اور بنا یہ سمجھے، اُس کے ہاتھ سے یہ ملک اور یہاں کے رہنے والوں کی کیا بھلائی ہو سکتی ہے؟

برہمادتیہ — خون کی ندیاں یہاں سدا بہتی اوشیہ رہ سکتی ہیں۔

شیر خاں — میں ہوں ہندی، اسی ملک میں پیدا ہوا، یہیں کی آب و ہوا میں پلا یہیں کی مٹی سے بنا اور اسی مٹی میں ملوں گا۔ یہاں سے باہر دیکھنے کے لئے میرے پاس کچھ نہیں۔ ہندستان ہی میرے لئے سب کچھ ہے۔ یہاں کے رہنے والے چاہے وہ کسی مذہب و ملت کے ہوں، میرے بھائی برادر۔

برہمادتیہ — آپ نے اب تک کے اپنے کاموں سے یہ پرمانت کر دیا ہے۔

شیر خاں — جو ہندستان اور یہاں کے رہنے والوں سے نفرت کرتا ہے، چاہے وہ میرا ہم مذہب ہی کیوں نہ ہو، میں اُس سے نفرت کرتا ہوں۔

ब्रह्मादित्य – धन्य है.

शेरख़ाँ—हुमायूँ को निकालना भी मैं उतना ही ज़रूरी समझता हूँ जितना बाबर को निकालना था. (धीरे धीरे नाक से धुआँ निकालता है.)

निज़ाम—तब आप महमूद लोदी के एलची को ख़ाली हाथ क्यों लौटाना चाहते हैं ?

ब्रह्मादित्य—इसलिये कि मुग़लों से लड़ने की हमारी अभी वैसी तैयारी नहीं जैसी होनी चाहिये. उनसे लड़कर हम हारना नहीं चाहते, नहीं तो फिर उन्हें निकालना और कठिन हो जायगा. पूरी तैयारी कर, ठीक अवसर पर हम उनसे भिड़ेंगे. (शेरख़ाँ से) तो महमूद लोदी के दूत को आपके निर्णय की सूचना दे दूँ ?

शेरख़ाँ—फ़ौरन; ऐसे मामलात में साफ़ साफ़ कह देना ही ठीक रास्ता है. (ब्रह्मादित्य जाने लगता है) हाँ, देखो मुग़लों के निकालने की तैयारी के मुताल्लिक़ ही आज मैंने एक नई बात सोची है; वह और सुनते जाओ.

ब्रह्मादित्य—(फिर बैठते हुए) अच्छी बात है.

शेरख़ाँ – इस काम के लिये इस वक़्त तो हमारी सबसे बड़ी ज़रूरत दौलत ही है न ?

ब्रह्मादित्य—हाँ, हमारे साध्य के लिये वही इस समय सबसे बड़ा साधन है.

शेरख़ाँ—तुम जानते हो चुनार के सूबेदार ताज ख़ाँ की बेगम लाड मलिका बहुत दौलत मन्द है ?

برہمادتیہ — دھنیہ ہے۔

شیرخاں — ہمایوں کو نکالنا بھی میں اُتنا ہی ضروری سمجھتا ہوں جتنا بابر کو نکالنا تھا۔ (دھیرے دھیرے ناک سے دُھواں نکالتا ہے۔)

نظام — تب آپ محمود لودی کے ایلچی کو خالی ہاتھ کیوں لوٹانا چاہتے ہیں ؟

برہمادتیہ — اس لئے کہ مغلوں سے لڑنے کی ہماری ابھی ویسی تیاری نہیں جیسی ہونی چاہئے۔ اُن سے لڑکر ہم ہارنا نہیں چاہتے، نہیں تو پھر انہیں نکالنا کٹھن ہو جائے گا۔ پوری تیاری کر، ٹھیک اوسر پر ہم اُن سے بھڑیں گے۔ (شیرخاں سے) تو محمود لودی کے دوت کو آپ کے نرنے کی سوچنا دیدوں ؟

شیرخاں — فوراً؛ ایسے معاملات میں صاف صاف کہدینا ہی ٹھیک راستہ ہے۔ (برہمادتیہ جانے لگتا ہے) ہاں، دیکھو مغلوں کے نکالنے کی تیاری کے متعلق ہی آج میں نے ایک نئی بات سوچی ہے؛ وہ اور سُنتے جاؤ۔

برہمادتیہ — (پھر بیٹھتے ہوئے) اچھی بات ہے۔

شیرخاں — اس کام کے لئے اس وقت تو ہماری سب سے بڑی ضرورت دولت ہی ہے نہ ؟

برہمادتیہ — ہاں، ہمارے سادھیہ کے لئے وہی اس سمے سب سے بڑا سادھن ہے۔

شیرخاں — تم جانتے ہو چُنار کے صوبیدار تاج خاں کی بیگم لاڈ ملکہ بہت دولت مند ہے ؟

[लाड मलिका का नाम सुनते ही निज़ाम के मुख पर एक विचित्र प्रकार का रंग आ जाता है.]

ब्रह्मादित्य—हाँ, सुना है उसके पास रत्तियों, तोलों, सेरों और पन्सेरियाँ नहीं, मानों मोती और सोना है.

शेरख़ाँ—बाबर के मरने के सबब से इस वक़्त हुमायूँ बहुत दूर तक नज़र न फेंक सकेगा. बिहार की सारी ताक़त मेरे हाथ में है. (हुक्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) मैं चुनार पर चढ़ाई कर ताज ख़ाँ को क़त्ल कर लाड मलिका से शादी करने की बात सोच रहा हूँ.

[जैसे जैसे शेरख़ाँ के प्रस्ताव का एक के बाद एक शब्द निज़ाम के कान में पड़ता है, उसके मुख के विद्युतगत से परिवर्तित होते हुए भाव उसके हृदय की विलक्षण स्थिति का अनुमान करा देते हैं, परन्तु उसकी ओर न शेरख़ाँ का ध्यान जाता है और न ब्रह्मादित्य का.

ब्रह्मादित्य—(हँसते हुए) तो इस अवस्था में आपके हृदय में नये प्रेम की उत्पत्ति हुई है और आपको नये विवाह करने की सूझी है?

शेरख़ाँ—प्रेम व्रेम मैं नहीं जानता, पंडित. इस तरह के इश्क़ वग़ैरह से ज़्यादा फ़ालतू और नुक़सान देह चीज़ मैं दुनिया में और कोई नहीं मानता. लेकिन......(हुक्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) लेकिन यह शादी मुल्क की भलाई के लिये

विद्युत गति=बिजली की सी तेजी. विलक्षण स्थिति=बेचैन हालत.

[لاڈ ملکہ کا نام سُنتے ہی نظام کے مکھ پر ایک وچتر پرکار کا رنگ آجاتا ہے۔]

برہمادتیہ — ہاں، سُنا ہے اُس کے پاس رتیوں، تولوں، سیروں اور پنسیریاں نہیں، منوں موتی اور سونا ہے۔

شیر خاں — بابر کے مرنے کے سبب سے اِس وقت ہمایوں بہت دور تک نظر نہ پھینک سکے گا۔ بہار کی ساری طاقت میرے ہاتھ میں ہے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) میں چُنار پر چڑھائی کر تاج خاں کو قتل کر لاڈ ملکہ سے شادی کرنے کی بات سوچ رہا ہوں۔

[جیسے جیسے شیر خاں کے پرستاؤ کا ایک کے بعد ایک شبد نظام کے کان میں پڑتا ہے، اُس کے مکھ کے وِدُت گتی سے پریورتت ہوتے ہوئے بھاؤ اُس کے ہردے کی وِلچھن ستھتی کا انومان کرا دیتے ہیں، پرنتو اُس کی اور نہ شیر خاں کا دھیان جاتا ہے اور نہ برہمادتیہ کا۔]

برہمادتیہ — (ہنستے ہوئے) تو اِس اوستھا میں آپ کے ہردے میں نئے پریم کی اُتپتی ہوئی ہے اور آپ کو نئے وِواہ کرنے کی سوجھی ہے؟

شیر خاں — پریم وریم میں نہیں جانتا، پنڈت۔ اِس طرح کے عشق وغیرہ سے زیادہ فالتو اور نقصان دِہ چیز میں دُنیا میں اور کوئی نہیں مانتا۔ لیکن ...... (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) لیکن یہ شادی مُلک کی بھلائی کے لئے

وِدُت گتی = بجلی کی سی تیزی۔ وِلچھن ستھتی = بےچین حالت۔

मैं जरूरी समझता हूँ. लाड मलिका की दौलत मुग़लों को निकालने में ज्यादा मददगार होगी.

[शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य एक दूसरे की ओर देखते हैं; निज़ाम किसी की ओर नहीं; वह अपने सामने की तरफ़ इस प्रकार देखता है मानो किसी बहुत दूर की वस्तु को देख रहा हो. उसकी दृष्टि में अब नितान्त शून्यता है.]

लघु—यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—चुनार के क़िले में लाड मलिका के कमरे का बरामदा.

समय—प्रातः काल.

[दृश्य वैसा ही है जैसा दूसरे अंक का दूसरा दृश्य था. लाड नसीम मैना का खाना प्याले में लिए हुए कमरे से बाहर आती है. उसकी वेष-भूषा एक दम बदल गई है. वह एक काले रंग की साड़ी और शलूका पहने हुए है. कोई भूषण उसके शरीर पर नहीं है. उसका मुख एक दम उदास है. वह चुपचाप आकर मैना के पिंजरे का दरवाज़ा खोल, प्याला पिंजरे में रखती है. नसीम खाने पर झपटती है, पर उसकी चोंच प्याले में न जाकर लाड की उँगली पर लगती है. उँगली से ख़ून निकलने लगता है. लाड 'उफ़' कह, हाथ निकाल कर उँगली देखती है.]

लाड—(कुछ देर उँगली देखने के पश्चात, मैना की ओर देखते हुए) नसीम !

میں ضروری سمجھتا ہوں ۔ لاڈ ملکہ کی دولت مغلوں کو نکالنے میں زیادہ مددگار ہوگی ۔

[شیرخاں اور برہما دتیہ ایک دوسرے کی اور دیکھتے ہیں؛ نظام کسی کی اور نہیں؛ وہ اپنے سامنے کی طرف اس پرکار دیکھتا ہے مانو کسی بہت دور کی وستو کو دیکھ رہا ہو ۔ اس کی درشٹی میں اب نتانت شونیتا ہے ۔]

لگھو یونیکا

دوسرا درشیہ

ستھان ــــ چنار کے قلعہ میں لاڈ ملکہ کے کمرے کا برامدہ ۔

سمے ــــ پراتہ: کال ۔

[درشیہ ویسا ہی ہے جیسا دوسرے انک کا دوسرا درشیہ تھا. لاڈ نسیم مینا کا کھانا پیالے میں لئے ہوئے کمرے سے باہر آتی ہے ۔ اس کی ویش بھوشا ایک دم بدل گئی ہے ۔ وہ ایک کالے رنگ کی ساڑی اور شلوکا پہنے ہوئے ہے ۔ کوئی بھوشن اس کے شریر پر نہیں ہے ۔ اس کا مکھ ایک دم اُداس ہے ۔ وہ چپ چاپ آکر مینا کے پنجرے کا دروازہ کھول، پیالہ پنجرے میں رکھتی ہے ۔ نسیم کھانے پر جھپٹتی ہے ، پر اس کی چونچ پیالے میں نہ جاکر لاڈ کی انگلی پر لگتی ہے ۔ انگلی سے خون نکلنے لگتا ہے ۔ لاڈ 'اُف' کہہ، ہاتھ نکال کر انگلی دیکھتی ہے ۔]

لاڈ ــــ (کچھ دیر انگلی دیکھنے کے پشچات ، مینا کی اور دیکھتے ہوئے) نسیم !

[नसीम, बेरुख़ी से केवल 'टें टें' करती, और खाती रहती है .]

लाड—(नसीम को ही देखते हुए) समझी, तू भी मालिक के मरने पर मातम मना रही है. (उँगली को देखते हुए) पर मुझ पर हमला क्यों ! (फिर मैना की ओर देखकर) मैं ... मैं तो बेक़सूर हूँ, नसीम, मैंने नहीं, मेरी दौलत ने उन्हें क़त्ल कराया है. (फिर उँगली की तरफ़ देखकर) फिर भी यह सज़ा !.... काश, मेरे ख़ून के यह चन्द क़तरे उस ख़ून के सारे दरया को नाप लेते, जो मेरी दौलत के लिये चुनार में बहा है ... उफ़ (पास ही की एक चौकी पर बेबस सी बैठती है और आँखों को पोंछती है . जो सजल हो गई थीं .)

नसीम—(खा चुकने पर) मलिका !

लाड—(ग़ुस्से से) फिर ...... फिर मलिका !

[नसीम बार बार सीटी बजाती है]

लाड—(उठकर नसीम के पास आकर) तो...तो फिर .... फिर से बाजे बजेंगे ?......फिर.......फिर से मेरी शादी होगी ? मेरी जिस दौलत के लिये पहली शादी हुई थी, उसी दौलत के लिये दूसरी ?

नसीम—मुसव्विर ! मुसव्विर !

लाड—मुसव्विर से नहीं, नसीम. वही...वहाँ कहीं हो सकती, तब........तब तो ....(कुछ रुक कर) दौलत मन्द की शादी तो दौलत मन्द से ही होती है; दरअसल यह शादी होती है कंकर पत्थरों हीरे, पन्नों, लालो गौहर की; पत्थरों की रूह

१०

(४०६)

[نسیم، بے رُخی سے کیول ٹیں ٹیں کرتی، اور کھاتی رہتی ہے۔]

لاڈ۔ (نسیم کو ہی دیکھتے ہوئے) سمجھی، تو بھی مالک کے مرنے پر ماتم منا رہی ہے۔ (اُنگلی کو دیکھتے ہوئے) پر مجھ پر حملہ کیوں! (پھر مینا کی اور دیکھ کر) میں ...... میں تو بے قصور ہوں، نسیم، میں نے نہیں، میری دولت نے انھیں قتل کرایا ہے۔ (پھر اُنگلی کی طرف دیکھ کر) پھر بھی یہ سزا!.... کاش، میرے خون کے یہ چند قطرے اس خون کے سارے دریا کو ناپ لیتے، جو میری دولت کے لئے چنار میں بہا ہے..... اُف (پاس ہی کی ایک چوکی پر بے بس سی بیٹھتی ہے اور آنکھوں کو پونچھتی ہے۔ جو سجل ہو گئی تھیں۔)

نسیم۔ (کھا چکنے پر) ملکہ!

لاڈ۔ (غصے سے) پھر...... پھر ملکہ!

[نسیم بار بار سیٹی بجاتی ہے]

لاڈ۔ (اُٹھ کر نسیم کے پاس آکر) تو..... تو پھر........ پھر سے باجے بجیں گے؟...... پھر...... پھر سے میری شادی ہوگی؟ میری جس دولت کے لئے پہلی شادی ہوئی تھی، اسی دولت کے لئے دوسری؟

نسیم۔ مصور! مصور!

لاڈ۔ مصور سے نہیں، نسیم۔ وہی..... وہی کہیں ہو سکتی، تب...... تب تو...... (کچھ رک کر) دولت مند کی شادی تو دولت مند ہی سے ہوتی ہے: دراصل یہ شادی ہوتی ہے کنکر پتھروں ہیرے، پنوں، لعل و گوہر کی؛ پتھروں کی روح

(۴۰۶)

सोने चाँदी की; दिल की नहीं (फिर कुछ रुक कर) और.....और शादी होते ही मातम की यह पोशाक भी उतर जायगी.

नसीम—सहेली !

लाड—(अपनी पोशाक को देखकर, नसीम की ओर देखते हुए) इस पोशाक में तेरी सच्ची सहेली नज़र आती हूँ, न ?... जब यह याद करती हूँ, तेरे नज़दीक आती. हूँ, तब चाहती हूँ, यह न उतरे, हम दोनों सहेलियाँ एक सी रहें........ लेकिन इस पोशाक को देखकर जब शौहर मरहूम याद आते हैं. तब... तब.........

नसीम—मलिका ! मलिका !

लाड—फिर मलिका बनना चाहती हूँ ? नहीं, नहीं........

नसीम—बानू !

लाड—ठीक, बानू ... फिर से बानू ज़रूर बनना चाहती हूँ..... ...आगरे के बाग़ से उन तीन दिनों की ज़िन्दगी के बाद की ज़िन्दगी की तवारीख़ के काले हरफ़ों को मिटाकर फिर...फिर से.........

नसीम—फ़रिश्ता !

लाड—हाँ, उस फ़रिश्ते के साथ नई.........बिलकुल नई ज़िन्दगी.........

[नसीम सीटी बजाती है]

लाड—तेरी इस मीठी तान के मानिन्द ही नई .... बिलकुल नई ज़िन्दगी बसर करना चाहती हूँ.

سونے چاندی کی؛ دل کی نہیں (پھر کچھ رک کر) اور...... اور شادی ہوتے ہی ماتم کی یہ پوشاک بھی اتر جائے گی۔

نسیم — سہیلی!

لاڈ — (اپنی پوشاک کو دیکھ کر، نسیم کی اور دیکھتے ہوئے) اس پوشاک میں تیری سچی سہیلی نظر آتی ہوں، نہ؟...... جب یہ یاد کرتی ہوں، تیرے نزدیک آتی ہوں، تب چاہتی ہوں، یہ نہ اترے، ہم دونوں سہیلیاں ایک سی رہیں..... لیکن اس پوشاک کو دیکھ کر جب شوہر مرحوم یاد آتے ہیں۔ تب ..... تب........

نسیم — ملکہ! ملکہ!

لاڈ — پھر ملکہ بننا چاہتی ہوں؟ نہیں، نہیں........

نسیم — بانو!

لاڈ — ٹھیک، بانو..... پھر سے بانو ضرور بننا چاہتی ہوں.. ...... آگرے کے باغ سے ان تین دنوں کی زندگی کے بعد کی زندگی کی تواریخ کے کالے حرفوں کو مٹا کر پھر..... پھر سے.....

نسیم — فرشتہ!

لاڈ — ہاں، اس فرشتے کے ساتھ نئی..... بالکل نئی زندگی......

[نسیم سیٹی بجاتی ہے]

لاڈ — تیری اس میٹھی تان کے مانند ہی نئی...... بالکل نئی زندگی بسر کرنا چاہتی ہوں۔

[नसीम लगातार सीटियाँ बजाती है]

लाड—जानती हूँ वह .... वह न हो सकेगा. सितार न बजेगा इसराज न बजेगा, तान न उठेगी. ढोल पिटेंगे, शोरोग़ुल होगा. ताक़तवर के अरमानों को कौन ....कौन रोक सकता है ? और जो रोक सकते हैं, उनमें भी एक ख़ास तरह की क़ूवत........ सुना, क़ूवत रहती है.

नसीम—सहेली ! सहेली !

लाड—तेरी सहेली कमज़ोर.........एकदम कमज़ोर है, तभी तो एक ताक़तवर उसे आगरे से चुनार ले आया और दूसरा चुनार से बिहार ले जायगा.

नसीम—मुसव्विर !

लाड—उसका नाम पता भी होता तो शायद मुझमें भी क़ूवत आ जाती, लेकिन इतनी........इतनी बड़ी दुनिया में बिना नाम पते के मैं औरत जात कहाँ.........कहाँ ढूढ़ूँ उसे ?

नसीम—मुसव्विर ! मुसव्विर !

लाड—मुसव्विर ! संगदिल मुसव्विर !.........मुसव्विर सिर्फ़ मुसव्विर निकला ! छोड़......छोड़ इस नाम को, भूल...भूल जा उसे. वह.........वह तो जिन्दगी का एक ख़्वाब था.........चार दिनों की चाँदनी थी. (उंगली को देखकर नसीम को देखते हुए) कमबख़्त ! तूने तो नाराज़ होकर उँगली पर छोटा सा ज़ख़्म किया है, जिसे तू देख सकती है; थोड़ा सा ही ख़ून बहाया है. लेकिन उसने........उसने तो मुहब्बत कर दिल में ज़ख़्म किया है, ऐसा जो दिख तक नहीं सकता, ऐसा ज़ख़्म जो बढ़ते बढ़ते नासूर.........

[نسیم لگاتار سیٹیاں بجاتی ہے]

لاڈ — جانتی ہوں وہ...... وہ نہ ہو سکے گا. ستار نہ بجے گا اسراج نہ بجے گا، تان نہ اُٹھے گی. ڈھول پیٹیں گے. شور و غل ہوگا. طاقتور کے ارمانوں کو کون......کون روک سکتا ہے؟ اور جو روک سکتے ہیں، ان میں بھی ایک خاص طرح کی قوت......سُنا، قوت رہتی ہے.

نسیم — سہیلی! سہیلی!

لاڈ — تیری سہیلی کمزور......ایک دم کمزور ہے، تبھی تو ایک طاقتور اُسے آگرے سے چنار لے آیا اور دوسرا چنار سے بہار لے جائے گا.

نسیم — مصور!

لاڈ — اس کا نام پتہ بھی ہوتا تو شاید مجھ میں بھی قوت آجاتی، لیکن اتنی.......اتنی بڑی دنیا میں بنا نام پتے کے میں عورت ذات کہاں......کہاں ڈھونڈوں اُسے؟

نسیم — مصور! مصور!

لاڈ — مصور! سنگدل مصور!.........مصور صرف مصور نکلا! چھوڑ.......چھوڑ اس نام کو؛ بھول......بھول جا اُسے. وہ........وہ تو زندگی کا ایک خواب تھا.......چار دنوں کی چاندنی تھی. (انگلی کو دیکھ کر نسیم کو دیکھتے ہوئے) کم بخت! تو نے تو ناراض ہو کر انگلی پر چھوٹا سا زخم کیا ہے، جسے تو دیکھ سکتی ہے؛ تھوڑا سا ہی خون بہایا ہے. لیکن اس نے......اس نے تو محبت کر دل میں زخم کیا ہے. ایسا جو دکھ تک نہیں سکتا؛ ایسا زخم جو بڑھتے بڑھتے ناسور.......

ऐसा.........हाँ, ऐसा नासूर हो गया है, जो अन्दर से तो सुर्ख़ ख़ून बहाता है और आँखों से सफ़ेद !

[लाड की आँखों से आँसू बहने लगते हैं. नसीम पिंजरे में फुदक फुदक कर सीटियाँ बजाती है.]

लघु—यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरख़ाँ के मकान में निज़ाम का शयनागार.

समय—रात्रि.

[शयनागार में अत्यन्त मन्द प्रकाश है, इतने पर भी यह मालूम हो जाता है कि शयनागार भी अन्य कमरों के सदृश ही है; फ़र्क़ इतना ही है कि इसमें दाहिनी ओर की दीवाल के निकट एक पलंग बिछा हुआ है. पलंग पर कोई सो रहा है, परन्तु प्रकाश मन्द होने के कारण उसे पहचाना नहीं जाता. एकाएक पीछे की दीवाल पर धुँधला सा प्रकाश दिखाई पड़ता है और इस प्रकाश में दिखता है कि दो निज़ाम एक दूसरे की ओर मुख किये हुए खड़े हैं. दोनों का पूरा मुख तो नहीं दिखाई देता, पर जितना दिख पड़ता है उससे दोनों के निज़ाम होने का अनुमान हो जाता है.]

एक निज़ाम—ताजख़ाँ मारा गया, चुनार भाई जान को मिल गया, लेकिन.........लेकिन क्या लाड मलिका का दिल भी उन्हें मिल गया होगा ?

ایسا ...... ہاں، ایسا ناسور ہو گیا ہے، جو اندر سے تو سرخ خون بہاتا ہے اور آنکھوں سے سفید!

[لاڈ کی آنکھوں سے آنسو بہنے لگتے ہیں۔ نسیم پنجرے میں پھدک پھدک کر سیٹیاں بجاتی ہے۔]

لگھو—یونیکا

تیسرا درشیہ

استھان—بہار شریف میں شیر خاں کے مکان میں نظام کا شیناگار۔

سمے—راتری۔

[شیناگار میں اتینت مند پرکاش ہے، اتنے پر بھی یہ معلوم ہو جاتا ہے کہ شیناگار بھی انیہ کمروں کے سدرش ہی ہے! فرق اتنا ہی ہے کہ اس میں داہنی اور کی دیوال کے نکٹ ایک پلنگ بچھا ہوا ہے۔ پلنگ پر کوئی سو رہا ہے۔ پرنتو پرکاش مند ہونے کے کارن اسے پہچانا نہیں جاتا۔ یکایک پیچھے کی دیوال پر دھندلا سا پرکاش دکھائی پڑتا ہے اور اس پرکاش میں دکھتا ہے کہ دو نظام ایک دوسرے کی اور مکھ کئے ہوئے کھڑے ہیں۔ دونوں کا پورا مکھ تو نہیں دکھائی دیتا، پر جتنا دکھ پڑتا ہے اس سے دونوں کے نظام ہونے کا انومان ہو جاتا ہے۔]

ایک نظام—تاج خاں مارا گیا، چنار بھائی جان کو مل گیا، لیکن ...... لیکن کیا لاڈ ملکہ کا دل بھی انھیں مل گیا ہوگا؟

दूसरा निज़ाम—इससे क्या ? इश्क़ को तो वह सिर्फ़ फ़ालतू ही नहीं, नुक़सान देह चीज़ भी समझते हैं. उन्हें लाड का दिल नहीं, उसकी दौलत चाहिये.

पहला—ताजख़ाँ ने भी शायद उसकी दौलत के लिये ही उससे शादी की थी, भाई साहब भी उसकी दौलत के लिये उससे शादी करना चाहते हैं !

दूसरा—लेकिन ताजख़ाँ ने वह दौलत अपने लिये चाही थी, भाई जान उसे मुल्क के लिये चाहते हैं.

पहला—माना कि वह मुल्क के लिये दौलत चाहते हैं फिर भी उन्हें एक भोली-भाली, सीधी-सादी औरत की जिन्दगी को खिलवाड़ बनाने का क्या हक़ है ? क्या औरत आदमी के लिये खिलौने से ज्यादा कुछ भी नहीं, जो चाहे जिस तरह उससे खेले ? मुहब्बत के लिये शादी जायज़ है, दौलत के लिये भी शादी सुनी थी, लेकिन मुल्क के लिये शादी तो एकअजीबो ग़रीब चीज़ है.

दूसरा—पर भाई साहब के लिये मुल्क के सिवा और कुछ है ही नहीं.

पहला—(गम्भीरता से सोचते हुए) उसकी शादी अगर मेरे साथ होती तो भी उसकी दौलत तो मुल्क के लिये काम आ सकती थी.

दूसरा—यह बात भाई जान से कही क्यों नहीं ?

पहला—कहता कैसे ? शायद भाई साहब उससे मुहब्बत करते हों ?

دوسرا نظام — اس سے کیا؟ عشق کو تو وہ صرف فالتو ہی نہیں، نقصان دہ چیز بھی سمجھتے ہیں۔ انھیں لاڈ کا دل نہیں، اس کی دولت چاہیئے۔

پہلا — تاج خاں نے بھی شاید اس کی دولت کے لئے ہی اس سے شادی کی تھی، بھائی صاحب بھی اس کی دولت کے لئے اس سے شادی کرنا چاہتے ہیں!

دوسرا — لیکن تاج خاں نے وہ دولت اپنے لئے چاہی تھی، بھائی جان اسے ملک کے لئے چاہتے ہیں۔

پہلا — مانا کہ وہ ملک کے لئے دولت چاہتے ہیں پھر بھی انھیں ایک بھولی بھالی، سیدھی سادی عورت کی زندگی کو کھلواڑ بنانے کا کیا حق ہے؟ کیا عورت آدمی کے لئے کھلونے سے زیادہ کچھ بھی نہیں، جو چاہے جس طرح اس سے کھیلے؟ محبت کے لئے شادی جائز ہے، دولت کے لئے بھی شادی سنی تھی، لیکن ملک کے لئے شادی تو ایک عجیب و غریب چیز ہے۔

دوسرا — پر بھائی صاحب کے لئے ملک کے سوا اور کچھ ہے ہی نہیں۔

پہلا — (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) اس کی شادی اگر میرے ساتھ ہوتی تو بھی اس کی دولت تو ملک کے لئے کام آ سکتی تھی۔

دوسرا — یہ بات بھائی جان سے کہی کیوں نہیں؟

پہلا — کہتا کیسے؟ شاید بھائی صاحب اس سے محبت کرتے ہوں؟

दूसरा—(आश्चर्य से) मुहब्बत करते हों ? उन्होंने कभी उसे देखा भी है ? मुहब्बत कैसे करेंगे ?

पहला—शायद मेरी बनाई हुई तस्वीर देख ली हो; एक दिन उनकी निगाह तो उस पर पड़ ही गई थी.

दूसरा—पर जब तक उसके पहले उसकी और कोई तस्वीर उन्होंने न देखी हो, साथ ही यह न जानते हों कि वह लाड की तस्वीर है, तब तक यह उन्हें मालूम कैसे हो सकता है कि फलाँ तस्वीर लाड की ही है !

पहला—(गम्भीरता से सोचते हुए) नहीं, नहीं, वह जरूर उससे मुहब्बत करते हैं, इसीलिये तो चुनार की लड़ाई पर मुझे ले नहीं गये.

दूसरा—फिजूल का शक है; जंग पर न ले जाने का सबब है— प्यार !

पहला—तो फिर उन्होंने यह क्यों नहीं कहा कि लाड से मैं शादी कर लूँ; उन्हें तो मेरी शादी की बड़ी फिक्र रहती थी.

दूसरा—वाह ! वाह ! उनसे न जाने कितने मरतबा शादी करने का इन्कार किया गया; बार-बार के इस इन्कार के बाद वह चुप हो गये. किस मुँह से फिर शादी करने के लिये कहते ?

पहला—(और गम्भीरता से विचार करते हुए) तो मुलक के लिये तो लाड की दौलत उसकी मुझसे शादी होने पर भी काम आ सकती है. अभी भी शायद उनकी लाड से शादी न हुई हो. चल दूँ चुनार, और खोलकर रख दूँ अपना दिल भाई जान के सामने ?

दूसरा—जरूर. जिस भाई को इतना चाहते हो उसके सामने

دوسرا— (آشچریہ سے) محبت کرتے ہوں؟ انھوں نے کبھی اُسے دیکھا بھی ہے؟ محبت کیسے کریں گے؟

پہلا— شاید میری بنائی ہوئی تصویر دیکھ لی ہو؛ ایک دن ان کی نگاہ تو اس پر پڑ ہی گئی تھی.

دوسرا— پر جب تک اس کے پہلے اس کی اور کوئی تصویر انھوں نے نہ دیکھی ہو، ساتھ ہی یہ نہ جانتے ہوں کہ وہ لاڈ کی تصویر ہے، تب تک یہ انھیں معلوم کیسے ہو سکتا ہے کہ فلاں تصویر لاڈ کی ہی ہے!

پہلا— (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) نہیں، نہیں، وہ ضرور اس سے محبت کرتے ہیں، اسی لئے تو چنار کی لڑائی پر مجھے لے نہیں گئے.

دوسرا— فضول کا شک ہے؛ جنگ پر نہ لے جانے کا سبب ہے— پیار!

پہلا— تو پھر انھوں نے یہ کیوں نہیں کہا کہ لاڈ سے میں شادی کر لوں؛ انھیں تو میری شادی کی بڑی فکر رہتی تھی.

دوسرا— واہ! واہ! ان سے نہ جانے کتنے مرتبہ شادی کرنے کا انکار کیا گیا؛ بار بار کے اس انکار کے بعد وہ چپ ہو گئے. کس منہ سے پھر شادی کرنے کے لئے کہتے؟

پہلا— (اور گمبھیرتا سے وچار کرتے ہوئے) تو ملک کے لئے تو لاڈ کی دولت اس کی مجھ سے شادی ہونے پر بھی کام آ سکتی ہے. ابھی بھی شاید ان کی لاڈ سے شادی نہ ہوئی ہو. چل دوں چنار، اور کھول کر رکھ دوں اپنا دل بھائی جان کے سامنے؟

دوسرا— ضرور. جس بھائی کو اتنا چاہتے ہو اس کے سامنے

दिल खोल कर रखने में हर्ज ही क्या है ? अभी भी शायद लाड मिल जाय.

[बीच की दिवाल का धुँधला प्रकाश लुप्त हो जाता है; दोनों निज़ाम अब नहीं दिखते.]

पलंग पर सोया मनुष्य—(एकाएक उठते हुए) लाड !........ लाड मिल जायगी ? (बैठते हुए) लाड !........लाड ! (खड़े होते हुए) बानू !........बानू ! (दरवाज़े की ओर बढ़ते हुए) बानू ! मैं अभी आता हूँ........अभी आता हूँ, बानू !........इन्तज़ार........हाँ, इन्तज़ार करना. (प्रस्थान)

[यद्यपि अत्यन्त मन्द प्रकाश के कारन यह मनुष्य पहचाना नहीं जाता, परन्तु स्वर से मालूम हो जाता कि निज़ाम है. कुछ ही देर में आगे आगे शमादान लिये हुए रहमान और उसके पीछे पीछे निज़ाम का उसी दरवाज़े से प्रवेश, जिस दरवाज़े से निज़ाम गया था.]

निज़ाम—(ज़ोर से) हाँ, जल्दी........जल्दी बाँध सामान, रहमान, मैं फ़ौरन चुनार जा रहा हूँ.

रहमान—(बिस्तर की ओर बढ़ते हुए) लेकिन........लेकिन, छोटे मियाँ, अभी तो सुबह होने में काफ़ी देर है.

निज़ाम—(गुस्से से) तुझे........तुझे इससे क्या ?

रहमान—पर........रात........रात को अंधेरे में तुम्हारा जाना....

निज़ाम—(और गुस्से से) तो क्या मैं अभी भी बच्चा हूँ ? (कुछ रुककर, डाँटते हुए) बाँध, तू तो जल्दी बाँध सामान.

دل کھول کر رکھنے میں ہرج ہی کیا ہے؟ ابھی بھی شاید لاڈ مل جائے۔

[بیچ کی دیوال کا دھندھلا پرکاش لپت ہو جاتا ہے؛ دونوں نظام اب نہیں دکھتے۔]

پلنگ پر سویا منشیہ — (یکایک اٹھتے ہوئے) لاڈ!.... لاڈ مل جائے گی؟ (بیٹھتے ہوئے) لاڈ!........ لاڈ! (کھڑے ہوتے ہوئے) بانو!...... بانو! (دروازے کی اور بڑھتے ہوئے) بانو! میں ابھی آتا ہوں........ ابھی آتا ہوں، بانو!........ انتظار..... ہاں، انتظار کرنا۔ (پرستھان)

[یدیپی اتینت مند پرکاش کے کارن یہ منشیہ پہچانا نہیں جاتا، پرنتو سور سے معلوم ہو جاتا کہ نظام ہے۔ کچھ ہی دیر میں آگے آگے شمع دان لئے ہوئے رحمان اور اس کے پیچھے پیچھے نظام کا اسی دروازے سے پرویش، جس دروازے سے نظام گیا تھا۔]

نظام — (زور سے) ہاں، جلدی...... جلدی باندھ سامان، رحمان، میں فوراً چنار جا رہا ہوں۔

رحمان — (بستر کی اور بڑھتے ہوئے) لیکن......... لیکن، چھوٹے میاں، ابھی تو صبح ہونے میں کافی دیر ہے۔

نظام — (غصے سے) تجھے ... تجھے اس سے کیا؟

رحمان — پر........ رات........ رات کو اندھیرے میں تمہارا جانا...

نظام — (اور غصے سے) تو کیا میں ابھی بھی بچہ ہوں؟ (کچھ رک کر، ڈانٹتے ہوئے) باندھ، تو تو جلدی باندھ سامان۔

[रहमान एक लम्बी साँस लेकर बिस्तर उठाना आरंभ करता है.]

लघु—यवनिका

चौथा दृश्य

स्थान—चुनार के क़िले का आँगन.

समय—रात्रि.

[आँगन के तीन ओर क़िले की इमारतें दिखाई देती हैं, पर रात्रि के कारण धुँधली. आँगन में चारों तरफ़ चिराग़ों से रोशनी की गई है. बीच का स्थान शादी के लिये सजा हुआ है. शेरख़ाँ दुल्हे के वेष में है. उसके सर पर फूलों का सेहरा और मुख पर सेहरे की फूल मालाएं हैं. लाड मलिका भी दुलहिन के वेष में है. क़ाज़ी शादी की रस्म अदा कर रहा है. ब्रह्मादित्य तथा कई हिन्दू-मुस्लिम सरदार आँगन में हैं. नेपथ्य से शहनाई की ध्वनि आ रही है. शादी की रस्म पूरी होने पर लाड को लौंडियाँ अन्दर ले जाती हैं. सब लोग आगे बढ़ बढ़ कर शेरख़ाँ को मुबारक बाद देते हैं. नर्तकियाँ आती हैं और नाच तथा मुबारकबाद का गान आरंभ होता है.]

गीत

गाओ गाओ मुबारकबादी
गाओ गाओ मुबारकबादी

[رحمان ایک لمبی سانس لے کر بستر اٹھانا آرمبھ کرتا ہے.]

لگھو — یونیکا

چوتھا درشیہ

استھان — چنار کے قلعے کا آنگن۔

سمے — راتری.

[آنگن کے تین اور قلعے کی عمارتیں دکھائی دیتی ہیں، پر راتری کے کارن دھندھلی. آنگن میں چاروں طرف چراغوں سے روشنی کی گئی ہے. بیچ کا استھان شادی کے لئے سجا ہوا ہے. شیر خاں دولہے کے ویش میں ہے. اس کے سر پر پھولوں کا سہرا اور مکھ پر سہرے کی پھول مالائیں ہیں. لاڈ ملکہ بھی دلہن کے ویش میں ہے. قاضی شادی کی رسم ادا کر رہا ہے. برہمادیتہ تھا کئی ہندو مسلم سردار آنگن میں ہیں. نیپتھیہ سے شہنائی کی دھونی آ رہی ہے. شادی کی رسم پوری ہونے پر لاڈ کو لونڈیاں اندر لے جاتی ہیں. سب لوگ آگے بڑھ بڑھ کر شیر خاں کو مبارک باد دیتے ہیں. نرتکیاں آتی ہیں اور ناچ تھا مبارکباد کا گان آرمبھ ہوتا ہے.]

گیت

گاؤ گاؤ مبارک بادی
گاؤ گاؤ مبارک بادی

हर तरफ़ आज छाई बहार है
सारी दुनिया बनी गुलज़ार है
किस मुबारक घड़ी में है शादी
गाओ गाओ मुबारक बादी
गाओ...........................

[निज़ाम का जल्दी से प्रवेश. वह इस दृश्य को देखकर ठिठक कर खड़ा रह जाता है. उसके मुख का सारा रंग ही उड़ जाता है, पर अपने को संभालने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए वह शेरख़ाँ की ओर बढ़ता है.]

निज़ाम—(सर झुकाकर सलाम करते हुए) भाई जान! मैं भी चुनार की फ़तह और शादी की मुबारक बाद देने को हाज़िर हो गया हूँ.

शेरख़ाँ—(निज़ाम को गले लगाकर) निहायत ख़ुशी हुई तुम्हारे आने से. (दोनों अलग हो जाते हैं. कुछ रुककर) तुम्हारी भाभी अभी अभी अन्दर गई हैं, उन्हें भी मुबारक बाद दे आओ.

लघु—यवनिका

(बाक़ी अगले परचे में)

ہر طرف آج چھائی بہار ہے
ساری دنیا بنی گلزار ہے
کس مبارک گھڑی میں ہے شادی
گاؤ گاؤ مبارک بادی
گاؤ...........................

[نظام کا جلدی سے پرویش۔ وہ اس درشیہ کو دیکھ کر ٹھٹھک کر کھڑا رہ جاتا ہے۔ اس کے مکھ کا سارا رنگ ہی اُڑ جاتا ہے، پر اپنے کو سنبھالنے کا پورن پریتن کرتے ہوئے وہ شیر خاں کی اور بڑھتا ہے۔]

نظام۔۔(سر جھکا کر سلام کرتے ہوئے) بھائی جان! میں بھی چنار کی فتح اور شادی کی مبارک باد دینے کو حاضر ہو گیا ہوں۔

شیر خاں۔۔(نظام کو گلے لگا کر) نہایت خوشی ہوئی تمہارے آنے سے۔ (دونوں الگ ہو جاتے ہیں۔ کچھ رک کر) تمہاری بھابھی ابھی ابھی اندر گئی ہیں، انھیں بھی مبارک باد دے آؤ۔

لگھو۔یونیکا

(باقی اگلے پرچے میں)

हमारी राय

दफ़तरी भाषा के बारे में विधान सभा का ठहराव

[१४-९-४९]

3o1,A

(1) यूनियन की दफ़तरी भाषा देवनागरी लिखावट में हिन्दी होगी. यूनियन के दफ़तरी कामों के लिये अंकों का जो रूप बरता जायगा वह हिन्दुस्तानी अंकों (हिंदसों) का अंतर राष्ट्री रूप होगा.

(2) इस दफ़ा की धारा (1) में जो कुछ आया है उसके बावजूद, इस विधान के शुरू होने के समय यूनियन के जिन जिन दफ़तरी कामों के लिये अंगरेज़ी भाषा बरती जाती थी उन सब के लिये इस विधान के शुरू होने से पन्द्रह बरस के अरसे तक अंगरेज़ी भाषा ही बरती जाती रहेगी.

शर्त यह है कि इस अरसे के अन्दर प्रेसीडेन्ट अपने हुकुम से यूनियन के दफ़तरी कामों में से किसी काम के लिये अंगरेज़ी भाषा के साथ साथ हिन्दी भाषा के भी बरते जाने और हिन्दुस्तानी अंकों (हिन्दसों) के अन्तर राष्ट्री रूप के साथ साथ उन अंकों के देव नागरी रूप के भी बरते जाने की इजाज़त दे सकता है.

(3) इस दफ़ा में जो कुछ आया है उसके बावजूद, पन्द्रह साल के इस अरसे के बाद पारलीमेन्ट क़ानून बना कर यह तय कर सकती है कि उस क़ानून में बताये कामों के लिये (a) अंगरेज़ी भाषा, या (b) अंकों का देवनागरी रूप बरता जाय.

301,B

दफ़तरी भाषा पर कमीशन, और पारलीमेन्ट की कमेटी.

ہماری رائے

دفتری بھاشا کے بارے میں ودھان سبھا کا ٹھہراؤ

[۱۸-۹-۴۹]

3o1,A

(1) یونین کی دفتری بھاشا دیوناگری لکھاوٹ میں ہندی ہوگی۔ یونین کے دفتری کاموں کے لئے انکوں کا جو روپ برتا جائے گا وہ ہندستانی انکوں (ہندسوں) کا انتر راشٹری روپ ہوگا۔

(2) اس دفعہ کی دھارا (1) میں جو کچھ آیا ہے اس کے باوجود، اس ودھان کے شروع ہونے کے سمے یونین کے جن جن دفتری کاموں کے لئے انگریزی بھاشا برتی جاتی تھی ان سب کے لئے اس ودھان کے شروع ہونے سے پندرہ برس کے عرصے تک انگریزی بھاشا ہی برتی جاتی رہے گی۔

شرط یہ ہے کہ اس عرصے کے اندر پریسیڈنٹ اپنے حکم سے یونین کے دفتری کاموں میں سے کسی کام کے لئے انگریزی بھاشا کے ساتھ ساتھ ہندی بھاشا کے بھی برتے جانے اور ہندستانی انکوں (ہندسوں) کے انتر راشٹری روپ کے ساتھ ساتھ ان انکوں کے دیوناگری روپ کے بھی برتے جانے کی اجازت دے سکتا ہے۔

(3) اس دفعہ میں جو کچھ آیا ہے اس کے باوجود، پندرہ سال کے اس عرصے کے بعد پارلیمنٹ قانون بنا کر یہ طے کر سکتی ہے کہ اس قانون میں بتائے کاموں کے لئے (a) انگریزی بھاشا، یا (b) انکوں کا دیوناگری روپ برتا جائے۔

3o1,B

دفتری بھاشا پر کمیشن، اور پارلیمنٹ کی کمیٹی۔

(1) इस विधान के शुरू होने से पाँच साल बीत जाने पर, और उसके बाद विधान के शुरू होने से दस साल बीत जाने पर, प्रेसीडेन्ट, अपने हुकुम से, एक कमीशन बनायगा जिसमें एक चेयरमैन होगा और जिसके दूसरे मेम्बर पट्टी (शैडूल) VIIA में बताई हुई अलग अलग भाषाओं के वह नुमाइन्दे होंगे जिन्हें प्रसीडेन्ट नियोजे, और उस हुकुम मे काम का ढंग भी बता दिया जायगा जिस पर कमीशन चलेगा.

(2) कमीशन का फ़र्ज़ होगा कि नीचे लिखी बातों के बारे में प्रेसीडेन्ट से सिफ़ारिश करे—

(a) यूनियन के दफ़तरी कामों के लिये हिन्दी भाषा का बढ़ता हुआ उपयोग.

(b) यूनियन के सब दफ़तरी कामों या किसी दफ़तरी काम के लिये अंगरेज़ी भाषा के उपयोग पर बन्धन.

(c) वह भाषा जो इस विधान की दफ़ा 301,E में बताए हुए कामों मे से सबके या किसी के लिये बरती जाय.

(d) अंकों का वह रूप जो यूनियन के किसी एक ख़ास काम या एक से ज़ियादा ख़ास ख़ास कामों के लिये बरता जाय.

(e) यूनियन की दफ़तरी भाषा के बारे में, और एक रियासत और दूसरी रियासत के बीच चिट्ठी पत्री की भाषा के बारे में, और इन भाषाओं के उपयोग के बारे में कोई और बात जिस पर प्रेसीडेन्ट कमीशन से राय मांगे.

(3) इस दफ़ा की धारा (2) के अधीन सिफ़ारिशें करने में, कमीशन भारत की सनअती, कलचरी और साइन्सी उन्नति का,

(1) اس ودھان کے شروع ہونے سے پانچ سال بیت جانے پر، اور اس کے بعد ودھان کے شروع ہونے سے دس سال بیت جانے پر، پریسیڈنٹ، اپنے حکم سے، ایک کمیشن بنائے گا جس میں ایک چیرمین ہوگا اور جس کے دوسرے ممبر پٹی (شیڈول) VIIA میں بتائی ہوئی الگ الگ بھاشاؤں کے وہ نمائندے ہوں گے جنھیں پریسیڈنٹ نیوجے، اور اس حکم میں کام کا ڈھنگ بھی بتا دیا جائے گا جس پر کمیشن چلے گا۔

(2) کمیشن کا فرض ہوگا کہ نیچے لکھی باتوں کے بارے میں پریسیڈنٹ سے سفارش کرے —

(a) یونین کے دفتری کاموں کے لئے ہندی بھاشا کا بڑھتا ہوا اُپیوگ۔

(b) یونین کے سب دفتری کاموں یا کسی دفتری کام کے لئے انگریزی بھاشا کے اُپیوگ پر بندھن۔

(c) وہ بھاشا جو اس ودھان کی دفعہ 301,E میں بتائے ہوئے کاموں میں سے سب کے یا کسی کے لئے برتی جائے۔

(d) انکوں کا وہ روپ جو یونین کے کسی ایک خاص کام یا ایک سے زیادہ خاص خاص کاموں کے لئے برتا جائے۔

(e) یونین کی دفتری بھاشا کے بارے میں، اور ایک ریاست اور دوسری ریاست کے بیچ چٹھی پتری کی بھاشا کے بارے میں، اور ان بھاشاؤں کے اُپیوگ کے بارے میں کوئی اور بات جس پر پریسیڈنٹ کمیشن سے رائے مانگے۔

(3) اس دفعہ کی دھارا (2) کے ادھین سفارشیں کرنے میں، کمیشن بھارت کی صنعتی، کلچری اور سائنسی اُنتی کا،

और सरकारी नौकरियों के मामले में ग़ैर हिन्दी भाषी इलाक़ों के लोगों के उचित दावों और उनके हितों का मुनासिब ख़याल रखेगा.

(4) तीस मेम्बरों की एक कमेटी बनाई जायगी जिसमें से बीस लोक सदन के मेम्बरों में से होंगे और दस रियासत सदन के. इन्हें लोक सदन और रियासत सदन के मेम्बर अलग अलग निस्बती प्रतिनिधान के तरीक़े पर इकहरी बदलती वोट से चुनेंगे.

(5) कमेटी का यह फ़र्ज़ होगा कि इस दफ़ा के अधीन बने हुए कमीशन की सिफ़ारिशों को जाँचे और उन पर अपनी राय की प्रेसीडेन्ट को रिपोर्ट करे.

(6) इस विधान की दफ़ा 301,A में जो कुछ आया है उसके बावजूद, इस दफ़ा की धारा (5) में बताई हुई 'रिपोर्ट पर विचार करने के बाद प्रेसीडेन्ट उस रिपोर्ट के या उसके किसी हिस्से के अनुसार हिदायतें जारी कर सकता है.

301,C

किसी रियासत की दफ़तरी भाषा या भाषाएँ.

दफ़ा 301,D और 301,E की शर्तों का ध्यान रखते हुए, कोई रियासत उस रियासत में काम में आने वाली भाषाओं में से किसी को, या हिन्दी को, एक को या अधिक को, क़ानून बना कर, उस रियासत के सब दफ़तरी कामों या किसी दफ़तरी काम के लिये अपना सकती है.

शर्त यह है कि जब तक रियासत की क़ानून सभा क़ानून बना कर कुछ और तै न कर दे तब तक रियासत के अंदर उन दफ़तरी

اور سرکاری نوکریوں کے معاملے میں غیر ہندی بھاشی علاقوں کے لوگوں کے اُچت دعووں اور ان کے ہتوں کا مناسب خیال رکھے گا۔

(4) تیس ممبروں کی ایک کمیٹی بنائی جائے گی جس میں سے بیس لوک سدن کے ممبروں میں سے ہوں گے اور دس ریاست سدن کے۔ انھیں لوک سدن اور ریاست سدن کے ممبر الگ الگ نسبتی پرتیندھان کے طریقے پر اکہری بدلتی ووٹ سے چنیں گے۔

(5) کمیٹی کا یہ فرض ہوگا کہ اس دفعہ کے ادھین بنے ہوئے کمیشن کی سفارشوں کو جانچے اور ان پر اپنی رائے کی پریسیڈنٹ کو رپورٹ کرے۔

(6) اس ودھان کی دفعہ A 301 میں جو کچھ آیا ہے اس کے باوجود، اس دفعہ کی دھارا (5) میں بتائی ہوئی رپورٹ پر وچار کرنے کے بعد پریسیڈنٹ اس رپورٹ کے یا اس کے کسی حصے کے انوسار ہدایتیں جاری کر سکتا ہے۔

301C

کسی ریاست کی دفتری بھاشا یا بھاشائیں۔

دفعہ 301D اور 301E کی شرطوں کا دھیان رکھتے ہوئے، کوئی ریاست اس ریاست میں کام میں آنے والی بھاشاؤں میں سے کسی کو، یا ہندی کو، ایک کو یا ادھک کو، قانون بنا کر، اس ریاست کے سب دفتری کاموں یا کسی دفتری کام کے لئے اپنا سکتی ہے۔

شرط یہ ہے کہ جب تک ریاست کی قانون سبھا قانون بنا کر کچھ اور طے نہ کر دے تب تک ریاست کے اندر ان دفتری

कामों के लिये जिनके लिये इस विधान के शरू होने के समय अंगरेज़ी काम में आती थी, अंगरेज़ी भाषा काम में आती रहेगी.

301,D

एक रियासत और दूसरी रियासत के बीच या किसी रियासत और यूनियन के बीच चिट्ठी पत्री के लिये दफ़तरी भाषा—

जिस भाषा को किसी समय यूनियन के अन्दर दफतरी कामों के लिये बरते जाने का अधिकार मिला हुआ है वही भाषा उस समय एक रियासत और दूसरी रियासत के बीच और किसी रियासत और यूनियन के बीच चिट्ठी पत्री के लिये दफ़तरी ज़बान होगी.

शर्त यह है कि अगर दो या जियादा रियासतें इस बात पर राज़ी हों कि उन रियासतों में चिट्ठी पत्री के लिये दफ़तरी भाषा हिन्दी हो तो उनमें चिट्ठी पत्री के लिये हिन्दी काम में लाई जा सकेगी.

301,E

जो भाषा किसी रियासत की आबादी का कोई एक हिस्सा बोलता हो उसके बारे में ख़ास शर्तें.

जहां कहीं इस बात की मांग किये जाने पर प्रेसीडेन्ट की तसल्ली हो जाय कि किसी रियासत की आबादी का एक ख़ासा हिस्सा चाहता है कि कोई ऐसी भाषा जिसे वह हिस्सा बोलता है रियासत की दफ़तरी भाषा मानली जाय, तो प्रेसीडेन्ट यह आदेश दे सकता है कि उस रियासत भर में या उसके किसी हिस्से में, जिस जिस काम के लिये प्रेसीडेन्ट बतादे, उस भाषा को भी दफ़तरी भाषा माना जायगा.

کاموں کے لئے جن کے لئے اس ودھان کے شروع ہونے کے سمے انگریزی کام میں آتی تھی، انگریزی بھاشا کام میں آتی رہے گی۔

301,D

ایک ریاست اور دوسری ریاست کے بیچ یا کسی ریاست اور یونین کے بیچ چٹھی پتری کے لئے دفتری بھاشا—

جس بھاشا کو کسی سمے یونین کے اندر دفتری کاموں کے لئے برتے جانے کا ادھیکار ملا ہوا ہے وہی بھاشا اس سمے ایک ریاست اور دوسری ریاست کے بیچ اور کسی ریاست اور یونین کے بیچ چٹھی پتری کے لئے دفتری زبان ہوگی۔

شرط یہ ہے کہ اگر دو یا زیادہ ریاستیں اس بات پر راضی ہوں کہ ان ریاستوں میں چٹھی پتری کے لئے دفتری بھاشا ہندی ہو تو ان میں چٹھی پتری کے لئے ہندی کام میں لائی جاسکے گی۔

301,E

جو بھاشا کسی ریاست کی آبادی کا کوئی ایک حصہ بولتا ہو اس کے بارے میں خاص شرطیں۔

جہاں کہیں اس بات کی مانگ کئے جانے پر پریسیڈنٹ کی تسلی ہو جائے کہ کسی ریاست کی آبادی کا ایک خاصا حصہ چاہتا ہے کہ کوئی ایسی بھاشا جسے وہ حصہ بولتا ہے ریاست کی دفتری بھاشا مان لی جائے، تو پریسیڈنٹ یہ آدیش دے سکتا ہے کہ اس ریاست بھر میں یا اس کے کسی حصے میں، جس جس کام کے لئے پریسیڈنٹ بتادے، اس بھاشا کو بھی دفتری بھاشا مانا جائے گا۔

301,F

(1) इस हिस्से की ऊपर की शर्तों में जो कुछ आया है उसके बावजूद, जब तक पारलीमेंन्ट क़ानून बनाकर कुछ और तय न करे, तब तक

(a) आला अदालत (सुपरीमकोर्ट) में और हर बड़ी अदातल (हाईकोर्ट) मे सब कारवाई

और (b) (I) पारली मेन्ट के दोनों सदनों में से किसी में या रियासत की कानून सभा के सदन या दोनों सदनो मे से किसी में जितने बिल रखे जाने हों या उन पर जो कोई तरमीम पेश करनी हो, उन सबकी

(II) पारलीमेन्ट या किसी रियासत की क़ानून सभा जितने एक्ट पास करे या प्रेसीडेन्ट या कोई गवरनर या शासक, जैसी सूरत हो, जो जो सर हुकुम (ordinace) जारी करे, उन सबको

(III) इस विधान के अधीन, या पारलीमेन्ट के बनाए हुए या किसी रियासत की क़ानन सभा के बनाए हुए किसी क़ानन के अधीन जितने हुकुम, नियम, क़ायदे और छुट क़ानून (By law) जारी किये जायें, उन सबकी.

असली प्रमाणी इबारत अगरेजी भाषा ही में होगी.

(2) इस दफ़ा की धारा (1) का उपधारा (a) की कोई बात किसी रियासत का, प्रेसीडेन्ट की रजामन्दी से, यह तै करने से नहीं रोकेगी कि उस रियासत की बड़ी अदालत (हाई कोर्ट) मे, फैसलों, डिगरियों और हुक्मो को छोड़कर बाकी कारवाई मे हिन्दी भाषा या

301,F

(1) اس حصے کی اوپر کی شرطوں میں جو کچھ آیا ہے اس کے باوجود، جب تک پارلیمنٹ قانون بنا کر کچھ اور طے نہ کرے، تب تک۔

(a) اعلیٰ عدالت (سپریم کورٹ) میں اور ہر بڑی عدالت (ہائی کورٹ) میں سب کاروائی۔

اور (b) (I) پارلیمنٹ کے دونوں سدنوں میں سے کسی میں یا ریاست کی قانون سبھا کے سدن یا دونوں سدنوں میں سے کسی میں جتنے بل رکھے جانے ہوں یا ان پر جو کوئی ترمیم پیش کرنی ہو، ان سب کی۔

(II) پارلیمنٹ یا کسی ریاست کی قانون سبھا جتنے ایکٹ پاس کرے یا پریسیڈنٹ یا کوئی گورنر یا شاسک جیسی صورت ہو جو جو سرحکم (ordinance) جاری کرے، ان سب کی۔

(III) اس ودھان کے ادھین، یا پارلیمنٹ کے بنائے ہوئے یا کسی ریاست کی قانون سبھا کے بنائے ہوئے کسی قانون کے ادھین جتنے حکم، نیم، قاعدے اور چھٹ قانون (By Law) جاری کئے جائیں، ان سب کی۔

اصلی پرمانی عبارت انگریزی بھاشا ہی میں ہوگی۔

(2) اس دفعہ کی دھارا (1) کی اپدھارا (a) کی کوئی بات کسی ریاست کو، پریسیڈنٹ کی رضامندی سے، یہ طے کرنے سے نہیں روکے گی کہ اس ریاست کی بڑی عدالت (ہائی کورٹ) میں، فیصلوں، ڈگریوں اور حکموں کو چھوڑ کر باقی کاروائی میں ہندی بھاشا یا

(۴۲۲)

कोई और ऐसी भाषा, जो उस रियासत में दफ़्तरी कामों के लिये मान ली गई हो, काम में लाई जावे.

(a) इस दफ़ा की धारा (I) की उपधारा (b) में जो कुछ आया है उसके बावजूद, जब कभी किसी रियासत की क़ानून सभा ने यह तय कर दिया हो कि बिलों, ऐक्टों, सर हुकमों (ordinances), और ऐसे हुकमों के लिये जिनका असर क़ानून के बराबर हो, और उस उपधारा में बताए हुए नियमों के लिये, अंगरेज़ी के सिवा कोई दूसरी भाषा काम में लाई जावे, तो उसका अंगरेज़ी में ऐसा तरजुमा, जिसे रियासत का गवरनर तसदीक़ कर दे शाया किया जायगा, और वह तरजुमा इस दफ़ा के अधीन अंगरेज़ी में असली प्रमाणी इबारत माना जायगा.

301,G

भाषा के बारे में कुछ क़ानूनों के बनाये जाने के लिये ख़ास दस्तूर—

इस विधान के शुरू होने से पन्द्रह बरस के अरसे के अन्दर, इस विधान की दफ़ा 301,F में बताए किसी काम के लिये बरती जाने वाली भाषा को तै करने वाला कोई बिल पारलीमेन्ट के किसी सदन में बिना प्रेसीडेन्ट की पहले से मनज़ूरी लिये नहीं रखा जायगा, और न ऐसी कोई तरमीम बिना इसके पेश की जायगी, और प्रेसीडेन्ट इस तरह के किसी बिल के रखने या इस तरह की किसी तरमीम को पेश करने के लिये तब तक मनज़ूरी नहीं देगा जब तक उसने इस विधान की दफ़ा 301,B के अधीन बने कमीशन की

کوئی اور ایسی بھاشا، جو اس ریاست میں دفتری کاموں کے لئے مان لی گئی ہو، کام میں لائی جاوے۔

(a) اس دفعہ کی دھارا (I) کی اُپدھارا (b) میں جو کچھ آیا ہے اس کے باوجود، جب کبھی کسی ریاست کی قانون سبھا نے یہ طے کر دیا ہو کہ بلوں، ایکٹوں، سر حکموں (ordinances) اور ایسے حکموں کے لئے جن کا اثر قانون کے برابر ہو، اور اس اُپدھارا میں بتائے ہوئے نیموں کے لئے، انگریزی کے سوا کوئی دوسری بھاشا کام میں لائی جاوے، تو اس کا انگریزی میں ایسا ترجمہ جسے ریاست کا گورنر تصدیق کر دے شایع کیا جائے گا۔ اور وہ ترجمہ اس دفعہ کے ادھین انگریزی میں اصلی پرمانی عبارت مانا جائے گا۔

301,G

بھاشا کے بارے میں کچھ قانونوں کے بنائے جانے کے لئے خاص دستور —

اس ودھان کے شروع ہونے کے پندرہ برس کے عرصے کے اندر، اس ودھان کی دفعہ 301,F میں بتائے کسی کام کے لئے برتی جانے والی بھاشا کو طے کرنے والا کوئی بل پارلیمنٹ کے کسی سدن میں بنا پریسیڈنٹ کی پہلے سے منظوری لئے نہیں رکھا جائے گا، اور نہ ایسی کوئی ترمیم بنا اس کے پیش کی جائے گی، اور پریسیڈنٹ اس طرح کے کسی بل کے رکھنے یا اس طرح کی کسی ترمیم کو پیش کرنے کے لئے تب تک منظوری نہیں دے گا جب تک اس نے اس ودھان کی دفعہ 301,B کے ادھین بنے کمیشن کی

सिफारिशों पर और उस दफ़ा में बताई कमेटी की रिपोर्ट पर वचार न कर लिया हो.

310,H

शिकायतें दूर कराने के लिये आवेदन पत्रों की भाषा.

हर आदमी को यह अधिकार होगा कि वह किसी शिकायत को दूर कराने के लिये यूनियन के या किसी रियासत के किसी भी अफ़सर या अधिकारी को, यूनियन में या उस रियासत में, जैसी सूरत हो, बरती जाने वाली किसी भी भाषा में आवेदन पत्र दे.

301,I

हिन्दी को बढ़ाने के लिये निर्देश—

यूनियन का यह फ़र्ज होगा कि हिन्दी के फैलने में मदद दे और हिन्दी भाषा को इस तरह से बढ़ावे कि वह भारत की मिली जुली कलचर के सब अंशों को जाहिर करने का साधन बन सके, और हिन्दी की आत्मा को बिना नुक़सान पहुंचाये जो रूप, जो शैलियाँ, जो महावरे हिन्दुस्तानी में और भारत की दूसरी भाषाओं में काम में आते हैं उन्हें हिन्दी में अपना कर उसे माला माल करे, और जहां कहीं जरूरी या ठीक हो वहां हिन्दी की शब्दावली के लिये पहले संस्कृत से और दूसरे और भाषाओं से मदद ले.

पट्टी (Schedule) VII,A

(1) असामी, (2) बंगला, (3) कन्नड़, (4) गुजराती, (5) हिन्दी, (6) काशमीरी, (7) मलयालम, (8) मराठी, (9) उड़िया, (10) पंजाबी, (11) तामिल, (12) तेलिगू, (13) उर्दू, (14) संस्कृत.

سفارشوں پر اور اس دفعہ میں بتائی کمیٹی کی رپورٹ پر وچار نہ کر لیا ہو۔

301,H

شکایتیں دور کرنے کے لئے آویدن پتروں کی بھاشا۔

ہر آدمی کو یہ ادھیکار ہوگا کہ وہ کسی شکایت کو دور کرنے کے لئے یونین کے یا کسی ریاست کے کسی بھی افسر یا ادھیکاری کو، یونین میں یا اس ریاست میں، جیسی صورت ہو، برتی جانے والی کسی بھی بھاشا میں آویدن پتر دے۔

301,I

ہندی کو بڑھانے کے لئے نردیش —

یونین کا یہ فرض ہوگا کہ ہندی کو پھیلنے میں مدد دے اور ہندی بھاشا کو اس طرح سے بڑھاوے کہ وہ بھارت کی ملی جلی کلچر کے سب انشوں کو ظاہر کرنے کا سادھن بن سکے، اور ہندی کی آتما کو بنا نقصان پہنچائے جو روپ، جو شیلیاں، جو محاورے ہندستانی میں اور بھارت کی دوسری بھاشاؤں میں کام میں آتے ہیں انہیں ہندی میں اپنا کر اسے مالا مال کرے، اور جہاں کہیں ضروری یا ٹھیک ہو وہاں ہندی کی شبداولی کے لئے پہلے سنسکرت سے اور دوسرے اور بھاشاؤں سے مدد لے۔

VII,A (Schedule) پٹی

(۱) آسامی، (۲) بنگلہ، (۳) کنڑ، (۴) گجراتی، (۵) ہندی، (۶) کاشمیری، (۷) ملیالم، (۸) مراٹھی، (۹) اڑیا، (۱۰) پنجابی، (۱۱) تامل، (۱۲) تلگو، (۱۳) اردو، (۱۴) سنسکرت۔

ठहराव पर एक निगाह

दिल्ली की विधान सभा कई बरस से भारत का नया विधान तय्यार कर रही है. चौदह सितम्बर सन् ४९ को विधान सभा ने भारत की 'दफ़तरी भाषा' के सम्बन्ध में एक ठहराव पास कर दिया, जिसका हिन्दुस्तानी उलथा हम ऊपर दे चुके हैं. विधान सभा ने तय कर दिया है कि हमारी दफ़तरी भाषा हिन्दी हो जो देवनागरी लिपि में लिखी जाय.

हमारी दफ़तरी भाषा क्या होनी चाहिये इस सवाल पर कई बरस से बहसें हो रही थीं. महात्मा गान्धी की साफ़ राय थी कि हमारी राष्ट्र भाषा और राज भाषा दोनों हिन्दुस्तानी होनी चाहिये, और उसके लिये नागरी और उर्दू दोनों लिपियों का बराबर का दरजा होना चाहिये. विधान सभा और उसके अन्दर कांग्रेस पार्टी के रंग ढंग को देखकर और उससे दुखी होकर महात्मा गान्धी ने यह भी कहा था कि विधान सभा इस बारे में चाहे कुछ ही पास कर दे वह ख़ुद अपनी बात पर क़ायम रहेंगे और जनता में उसी का प्रचार करते रहेंगे. २२-७-४७ को नई दिल्ली से श्रीमती पेरिन बहिन के नाम उन्होंने अपने ख़त में लिखा था—

"Heaven knows what is in store for us. The old order changeth giving place to new. Nothing is settled. Whatever is decided by the C. A. Hindustani with the two scripts remains for you and me. Rashtra Bhasha for me means Hindi + Urdu = Hindustani.

ٹھہراؤ پر ایک نگاہ

دلی کی ودھان سبھا کئی برس سے بھارت کا نیا ودھان تیار کر رہی ہے۔ چودہ ستمبر سنہ ۴۹ کو ودھان سبھا نے بھارت کی 'دفتری بھاشا' کے سمبندھ میں ایک ٹھہراؤ پاس کر دیا، جس کا ہندستانی التھا ہم اوپر دے چکے ہیں۔ ودھان سبھا نے طے کر دیا ہے کہ ہماری دفتری بھاشا ہندی ہو جو دیوناگری لپی میں لکھی جائے۔

ہماری دفتری بھاشا کیا ہونی چاہئے اس سوال پر کئی برس سے بحثیں ہو رہی تھیں۔ مہاتما گاندھی کی صاف رائے تھی کہ ہماری راشٹر بھاشا اور راج بھاشا دونوں ہندستانی ہونی چاہئے۔ اور اس کے لئے ناگری اور اردو دونوں لپیوں کا برابر کا درجہ ہونا چاہئے۔ ودھان سبھا اور اس کے اندر کانگریس پارٹی کے رنگ ڈھنگ کو دیکھ کر اور اس سے دکھی ہو کر مہاتما گاندھی نے یہ بھی کہا تھا کہ ودھان سبھا اس بارے میں چاہے کچھ پاس کر دے وہ خود اپنی بات پر قائم رہیں گے اور جنتا میں اسی کا پرچار کرتے رہیں گے۔ ۲۲-۷-۴۷ کو دلی سے شریمتی … بہن کے نام انہوں نے اپنے خط میں لکھا تھا —

HEAVEN KNOWS WHAT IS IN STORE FOR US. THE OLD ORDER CHANGETH GIVING PLACE TO NEW. NOTHING IS SETTLED. WHATEVER IS DECIDED BY THE C. A. HINDUSTANI WITH THE TWO SCRIPTS REMAINS FOR YOU AND ME RASHTRA BHASHA FOR ME MEANS HINDI + URDU = HINDUSTANI.

"भगवान जाने हमारे भाग्य में क्या बदा है. पुराने तरीक़े बदलते हैं, नए उनकी जगह लेते हैं. कोई बात तय नहीं है. विधान सभा चाहे कुछ भी फ़ैसला करे, तुम्हारे और मेरे लिये दोनों लिपियों के साथ हिन्दुस्तानी ही रहेगी. मेरे लिये राष्ट्र भाषा का मतलब है हिन्दी + उर्दू = हिन्दुस्तानी."

'नया हिन्द' इसी असूल को लेकर जनमा था और आज भी वह अपने उस पवित्र मिशन पर उसी तरह क़ायम है और क़ायम रहेगा.

इन दो बरस के अन्दर जिन जिन बहसों, जिदों, नाराज़गियों, दर्दों, धमकियों और ग़लत फ़हमियों में से निकल कर यह ठहराव पास हुआ है उन्हें हमने दिल्ली में रहकर काफ़ी पास से देखा है. बड़े बड़े ज़िम्मेदार लोग दिल्ली में यह खुली धमकियाँ देते थे कि अगर हिन्दी का ठहराव पास न हुआ तो देश में सिविल वार हो जावेगी. कहा जाता था कि अगर इस ठहराव पर जवाहर लाल जी या वज़ीर मंडल इस्तीफ़ा दे दे तो हम .खुशी से मंज़ूर कर लेंगे. ज़ियादा कड़ुवी बातों से हम अपने क़लम को रोक रहे हैं. इतना भी हमें केवल इसलिये कहना पड़ा कि हम अपने दिलों और दिमाग़ों की हालत को समझें.

देश काफ़ी आफ़तों में से निकल चुका है, काफ़ी आफ़तों में से निकल रहा है. गांधी जी के शब्दों में अभी न जाने उसे किन किन आफ़तों में से निकलना है. बचपन से लेकर लड़कपन, जवानी और सारी उमरें जिनकी इस कोशिश में बीती हैं कि यह देश फिर एक बार आज़ाद और महान हो उन्हें फूँक फूँक कर क़दम रखना

"بھگوان جانے ہمارے بھاگیہ میں کیا بدا ہے. پرانے طریقے بدلتے ہیں، نئے ان کی جگہ لیتے ہیں. کوئی بات طے نہیں ہے. ودھان سبھا چاہے کچھ بھی فیصلہ کرے، تمہارے اور میرے لئے دونوں لپیوں کے ساتھ ہندستانی ہی رہے گی. میرے لئے راشٹر بھاشا کا مطلب ہے ہندی + اردو = ہندستانی."

'نیا ہند' اسی اصول کو لیکر جنما تھا اور آج بھی وہ اپنے اس پوتر مشن پر اسی طرح قائم ہے اور قائم رہے گا.

ان دو برس کے اندر جن جن بحثوں، ضدوں، ناراضگیوں، دردوں، دھمکیوں اور غلط فہمیوں میں سے نکل کر یہ ٹھہراؤ پاس ہوا ہے انھیں ہم نے دلی میں رہ کر کافی پاس سے دیکھا ہے. بڑے بڑے ذمہ دار لوگ دلی میں یہ کھلی دھمکیاں دیتے تھے کہ اگر ہندی کا ٹھہراؤ پاس نہ ہوا تو دیش میں سول وار ہو جاوے گی. کہا جاتا تھا کہ اگر اس ٹھہراؤ پر جواہر لال جی یا وزیر منڈل استعفیٰ دے دے تو ہم خوشی سے منظور کر لیں گے. زیادہ کڑوی باتوں سے ہم اپنے قلم کو روک رہے ہیں. اتنا بھی ہمیں کیول اس لئے کہنا پڑا کہ ہم اپنے دلوں اور دماغوں کی حالت کو سمجھیں.

دیش کافی آفتوں میں سے نکل چکا ہے، کافی آفتوں میں سے نکل رہا ہے. گاندھی جی کے شبدوں میں ابھی نہ جانے اسے کن کن آفتوں میں سے نکلنا ہے. بچپن سے لے کر لڑکپن، جوانی اور ساری عمریں جن کی اس کوشش میں بیتی ہے کہ یہ دیش پھر ایک بار آزاد اور مہان ہو انھیں پھونک پھونک کر قدم رکھنا

पड़ता है, संभहल संभहल कर चलना पड़ता है. विधान सभा के अन्दर जो लोग शुरू से हिन्दुस्तानी के पक्ष में रहे हैं, अब भी हैं और हमेशा रहेंगे. उनके सामने पहेली लगभग वैसी ही है जैसी सुलेमान के दरबार में उस माँ के सामने थी जिसके बच्चे को कोई दूसरी औरत अपना बच्चा कह कर माँग रही थी और बादशाह के फ़ैसला न कर पा सकने पर यह सलाह दे रही थी कि बच्चे के दो टुकड़े करके एक एक टुकड़ा दोनों औरतों को दे दिया जाय. असली माँ चिल्ला पड़ी—"बच्चा मेरा नहीं है, इसीका है, इसी को दे दो!"

इसके बाद सवाल उठता है कि विधान सभा के ठहराव की तरफ़ हमारा रुख़ क्या होगा? हमारा जवाब है और सोच समझ कर जवाब है कि हम उस ठहराव के सामने सर झुकाते हैं. हम उसे मानने के लिये तय्यार हैं. हमारे इस जवाब में और हमने जो कुछ ऊपर कहा है उसमें, ऊपर से देखने पर विरोध दिखाई दे सकता है, पर विरोध है नहीं. ठहराव और उसके पीछे की चीज़ों को हम ज़रा और साफ़ साफ़ बयान करना चाहते हैं.

महात्मा गान्धी को या हमें या हमारे हमख़याल लोगों को 'हिन्दी' शब्द पर एतराज़ क्यों था? महात्मा गान्धी दो बार हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति हुए. इस देश में हिन्दी को फैलाने और बढ़ाने में पिछले सौ बरस के भीतर किसी एक आदमी ने इतना काम नहीं किया जितना महात्मा गान्धी ने. यहाँ तक कि बहुत से उर्दू के प्रेमी भाई उन्हें उर्दू का दुश्मन तक समझने लगे थे. इन पंक्तियों के तुच्छ लेखक ने उस समय से अब कि आज कल

پڑتا ہے، سنبھل سنبھل کر چلنا پڑتا ہے۔ ودھان سبھا کے اندر
جو لوگ شروع سے ہندستانی کے پکش میں رہے ہیں، اب بھی
ہیں اور ہمیشہ رہیں گے۔ اُن کے سامنے پہیلی لگ بھگ ویسی ہی ہے
جیسی سلیمان کے دربار میں اُس ماں کے سامنے تھی جس کے بچّے کو
کوئی دوسری عورت اپنا بچّہ کہہ کر مانگ رہی تھی اور بادشاہ کے
فیصلہ نہ کر پا سکنے پر یہ صلاح دے رہی تھی کہ بچّے کے دو ٹکڑے
کرکے ایک ایک ٹکڑا دونوں عورتوں کو دیدیا جائے۔ اصلی ماں چلّا
پڑی۔ "بچّہ میرا نہیں ہے، اسی کا ہے، اسی کو دیدو!"

اس کے بعد سوال اُٹھتا ہے کہ ودھان سبھا کے ٹھہراؤ
کی طرف ہمارا رُخ کیا ہوگا؟ ہمارا جواب ہے اور سوچ سمجھ کر
جواب ہے کہ ہم اُس ٹھہراؤ کے سامنے سر جھکاتے ہیں۔ ہم
اُسے ماننے کے لئے تیار ہیں۔ ہمارے اس جواب میں اور ہم نے
جو کچھ اوپر کہا ہے اُس میں، اوپر سے دیکھنے پر وِرودھ دکھائی دے سکتا
ہے، پر وِرودھ ہے نہیں۔ ٹھہراؤ اور اُس کے پیچھے کی چیزوں کو ہم
ذرا اور صاف صاف بیان کرنا چاہتے ہیں۔

مہاتما گاندھی کو یا ہمیں یا ہمارے ہم خیال لوگوں کو 'ہندی'
شبد پر اعتراض کیوں تھا؟ مہاتما گاندھی دو بار ہندی
ساہتیہ سمیلن کے سبھاپتی ہوئے۔ اس دیش میں ہندی کو پھیلانے
اور بڑھانے میں پچھلے سو برس کے بھیتر کسی ایک آدمی نے
اتنا کام نہیں کیا جتنا مہاتما گاندھی نے۔ یہاں تک کہ بہت
سے اردو کے پریمی بھائی اُنھیں اردو کا دشمن تک سمجھنے لگے
تھے۔ ان پنکتیوں کے تُچھ لیکھک نے اُس سمے جب کہ آج کل

के हिन्दी के बहुत से महारथी शायद पैदा भी नहीं हुए थे, हिन्दी में सैकड़ों ग्रंथ लिखे होंगे. हिन्दी को छोड़ कर हिन्दुस्तानी की तरफ़ आने से पहिले महात्मा गान्धी ने कई बरस तक हिन्दी के बड़े बड़े महारथियों के साथ बातचीत करके जी से यह चाहा कि उन्हें हिन्दी का साथ न छोड़ना पड़े, पर बात बहुत सीधी और साफ़ थी.

बात यह थी और अभी तक यह बात गई नहीं है कि हिन्दी और वह लोग जो अपने को ही हिन्दी का हिमायती मानते थे उर्दू के साथ दिन दिन नफ़रत और द्वेष से भरते जा रहे थे. एक तरफ़ उनमें से बहुत से यह कहते थे कि हम किसी भी भाषा के चालू शब्दों को हिन्दी से नहीं निकालना चाहते, दूसरी तरफ़ उन्हें ज़मीन, क़ानून, तारीख़, नुसख़ा, वज़ीर और अदालत जैसे उन शब्दों से भी परहेज़ होने लगा जिन्हें केवल उत्तर भारत में ही नहीं, शायद देश के अधिकतर हिस्से में अधिकतर आदमी बोलते और समझते हैं. फ़ारसी अरबी के ही शब्दों से नहीं, उन्हें ठेठ हिन्दी के 'सड़क' और 'चुंगी' जैसे उन शब्दों से भी नफ़रत होने लगी जिन्हें आम जनता बोलती और समझती है, यहाँ तक कि 'फिर' की जगह 'पुनः', 'और' की जगह 'एवम्' और 'पहिला, दूसरा, तीसरा की जगह 'प्रथम, द्वितीय, तृतीय,' 'शुद्ध' हिन्दी समझे जाने लगे. इस तरह की मिसालें सैकड़ों दी जा सकती हैं. इस ग़लत और ज़हरीले असूल का प्रचार होने लगा और अब भी हो रहा है कि जनता की भाषा अलग और साहित्य की या पढ़े लिखों की भाषा अलग. हम यह मानते हैं कि साइन्स में या ख़ास ख़ास

کے ہندی کے بہت سے مہارتھی شاید پیدا بھی نہیں ہوئے تھے، ہندی میں سیکڑوں گرنتھ لکھے ہوں گے. ہندی کو چھوڑ کر ہندستانی کی طرف آنے سے پہلے مہاتما گاندھی نے کئی برس تک ہندی کے بڑے بڑے مہارتھیوں کے ساتھ بات چیت کرکے جی سے یہ چاہا کہ انھیں ہندی کا ساتھ نہ چھوڑنا پڑے، پر بات بہت سیدھی اور صاف تھی.

بات یہ تھی اور ابھی تک یہ بات گئی نہیں ہے کہ ہندی اور وہ لوگ جو اپنے کو ہی ہندی کا حمایتی مانتے تھے اردو کے ساتھ دن دن نفرت اور دویش سے بھرتے جا رہے تھے. ایک طرف ان میں سے بہت سے یہ کہتے تھے کہ ہم کسی بھی بھاشا کے چالو شبدوں کو ہندی سے نہیں نکالنا چاہتے، دوسری طرف انھیں زمین، قانون، تاریخ، نسخہ، وزیر اور عدالت جیسے ان شبدوں سے بھی پرہیز ہونے لگا جنھیں کیول اتر بھارت میں ہی نہیں، شاید دیش کے ادھک تر حصے میں ادھک تر آدمی بولتے اور سمجھتے ہیں. فارسی عربی کے ہی شبدوں سے نہیں، انھیں ٹھیٹھ ہندی کے 'سڑک' اور 'چنگی' جیسے ان شبدوں سے بھی نفرت ہونے لگی جنھیں عام جنتا بولتی اور سمجھتی ہے، یہاں تک کہ 'پھر' کی جگہ 'پنہ:'، 'اور' کی جگہ 'ایوم' اور 'پہلا، دوسرا، تیسرا' کی جگہ 'پرتھم، دوتیہ، ترتیہ'، 'شدھ' ہندی سمجھے جانے لگے. اس طرح کی مثالیں سیکڑوں دی جا سکتی ہیں. اس غلط اور زہریلے اصول کا پرچار ہونے لگا اور اب بھی ہو رہا ہے کہ جنتا کی بھاشا الگ اور ساہتیہ کی یا پڑھے لکھوں کی بھاشا الگ. ہم یہ مانتے ہیں کہ سائنس میں یا خاص خاص

विद्याओं में तकनीकी शब्द ऐसे काम में आवें जिन्हें अनपढ़ लोग या उन विद्याओं के न जानने वाले लोग आमतौर पर न समझते हों.—पर जिस तरह की मिसालें हमने ऊपर दी हैं और जिस तरह की सैकड़ों और मिसालें दी जा सकती हैं, उनमें सिवा हमारे अभागे देश के दुनिया में न कहीं जनता की और विद्वानों की दो भाषाएँ होती हैं और न हैं.

देश की आज़ादी के साथ साथ समय आया था कि हम लाखों की तादाद में पुस्तकों और पत्रिकाओं के ज़रिये अच्छे से अच्छे और ऊँचे से ऊँचे विचार देश की जनता में फैलावें और उस जनता को दुनिया में उन्नत से उन्नत देशों की जनता के बराबर लाकर खड़ा कर दें. पर हिन्दी के नाम से एक ऐसी कठिन, बनावटी, फीकी और हमारे एक मित्र के शब्दों में, कंठ मरोड़ और जबड़ा तोड़ भाषा तय्यार की जाने लगी और अब भी तय्यार की जा रही है जिसमें न केवल उर्दू के साथ बल्कि देश की और दुनिया की दूसरी भाषाओं के साथ और आम जनता के साथ भी नफ़रत, ग़ैरियत और छूत छात का भाव भरा है.

यह दलीलें बार बार दुहराई जा चुकी हैं. यहाँ हम इन्हें अधिक बढ़ाना नहीं चाहते. हम यह केवल दो बातों को साफ़ कर देने के लिये कह रहे हैं. एक यह कि अगर हिन्दी वालों का झुकाव इस ग़लत तरफ़ न होता तो महात्मा गान्धी को हिन्दुस्तानी प्रचार सभा क़ायम करने की ज़रूरत न पड़ती. उन्होंने 'हिन्दी अथवा हिन्दुस्तानी' कह कर भी अपने देश भाइयों के बीच की इस खाई को पाटना चाहा, पर उनकी न चल सकी. दूसरी बात हम यह फिर से साफ़

ودیاؤں میں تکنیکی شبد ایسے کام میں آویں جنھیں ان پڑھ لوگ یا اُن ودیاؤں کے نہ جاننے والے لوگ عام طور پر نہ سمجھتے ہوں — پر جس طرح کی مثالیں ہم نے اوپر دی ہیں اور جس طرح کی سیکڑوں اور مثالیں دی جا سکتی ہیں، اُن میں سوا ہمارے ابھاگے دیش کے دُنیا میں نہ کہیں جنتا کی اور ودوانوں کی دو بھاشائیں ہوتی ہیں اور نہ ہیں۔

دیش کی آزادی کے ساتھ ساتھ سمے آیا تھا کہ ہم لاکھوں کی تعداد میں پستکوں اور پترکاؤں کے ذریعہ اچھے سے اچھے اور اونچے سے اونچے وچار دیش کی جنتا میں پھیلا دیں اور اُس جنتا کو دُنیا میں اُنّت سے اُنّت دیشوں کی جنتا کے برابر لا کر کھڑا کر دیں۔ پر ہندی کے نام سے ایک ایسی کٹھن، بناوٹی، پھیکی اور ہمارے ایک متر کے شبدوں میں، گلا مروڑ اور جبڑا توڑ بھاشا تیار کی جانے لگی اور اب بھی تیار کی جا رہی ہے جس میں نہ کیول اردو کے ساتھ بلکہ دیش کی اور دُنیا کی دوسری بھاشاؤں کے ساتھ اور عام جنتا کے ساتھ بھی نفرت، غیریت اور چھوت چھات کا بھاو بھرا ہے۔

یہ دلیلیں بار بار دُہرائی جا چکی ہیں۔ یہاں ہم انھیں ادھک بڑھانا نہیں چاہتے۔ ہم یہ کیول دو باتوں کو صاف کر دینے کے لئے کہہ رہے ہیں۔ ایک یہ کہ اگر ہندی والوں کا جھکاؤ اس غلط طرف نہ ہوتا تو مہاتما گاندھی کو ہندستانی پرچار سبھا قائم کرنے کی ضرورت نہ پڑتی۔ انھوں نے 'ہندی اتھوا ہندستانی' کہہ کر بھی اپنے دیش بھائیوں کے بیچ کی اس کھائی کو پاٹنا چاہا، پر اُن کی نہ چل سکی۔ دوسری بات ہم یہ پھر سے صاف

कर देना चाहते हैं कि हमारी राय में इस देश की राष्ट्र भाषा वही होनी चाहिये और वही होगी, जो उदार हो, बड़े दिल की हो, जिसका देश की सब भाषाओं के साथ और साइन्स जैसे मैदानों में, दुनिया की दूसरी जीवित और बढ़ी हुई भाषाओं के साथ भी प्रेम और लेन देन का नाता हो. भाषा को मालामाल करने, बढ़ाने, उसके साहित्य को चमकाने और तरक़्क़ी देने का भी यही रास्ता है. यही हिन्दुस्तानी का आदर्श है.

हमारा विचार है कि हमारी दफ़तरी भाषा या राज भाषा भी ऐसी ही होनी चाहिये. 'हिन्दी' शब्द से न कभी हमें नफ़रत थी और न है. हमारी राय में हमने हिन्दी की सच्ची सेवा की है और अब भी कर रहे हैं. हमें यक़ीन है कि हिन्दी का सबसे अधिक बुरा वह लोग कर रहे हैं जो हिन्दी को ऊपर बताई हुई ग़लत राह पर ले जा रहे हैं.

ज़ाहिर है कि अगर विधान सभा हमारी राय पर चल सकती तो नई सरकार की दफ़तरी भाषा हिन्दुस्तानी ही कही जानी चाहिये थी और नागरी और उर्दू दोनों लिपियाँ उसकी लिपियाँ होनी चाहिये थीं. पर मौलाना अबुलकलाम आज़ाद ने विधान सभा के अन्दर अपने भाषन में ठीक कहा था कि—

"लेकिन यह बात ज़ाहिर है अगर चे अफ़सोस-नाक है कि मेम्बरों के दिलों और दिमाग़ों की इस समय की हालत में इससे अच्छा कोई मसौदा तय्यार नहीं किया जा सकता था."

इस मसौदे को 'मुन्शी आयंगर मसौदा' कहा गया है. श्री कन्हय्या लाल मुंशी और श्री गोपाल स्वामी आयंगर इस सवाल

کر دینا چاہتے ہیں کہ ہماری رائے میں اس دیش کی راشٹر بھاشا وہی ہونی چاہیئے اور وہی ہوگی، جو اُدار ہو، بڑے دل کی ہو، جس کا دیش کی سب بھاشاؤں کے ساتھ اور سائنس جیسے میدانوں میں، دنیا کی دوسری جیوت اور بڑھی ہوئی بھاشاؤں کے ساتھ بھی پریم اور لین دین کا ناتا ہو، بھاشا کو مالا مال کرنے، بڑھانے اُس کے ساہتیہ کو چمکانے اور ترقی دینے کا بھی یہی راستہ ہے۔ یہی ہندستانی کا آدرش ہے۔

ہمارا وچار ہے کہ ہماری دفتری بھاشا یا راج بھاشا بھی ایسی ہی ہونی چاہیئے۔ 'ہندی' شبد سے نہ کبھی ہمیں نفرت تھی اور نہ ہے۔ ہماری رائے میں ہم نے ہندی کی سچی سیوا کی ہے اور اب بھی کر رہے ہیں۔ ہمیں یقین ہے کہ ہندی کا سب سے اُدھک بُرا وہ لوگ کر رہے ہیں جو ہندی کو اوپر بتائی ہوئی غلط راہ پر لے جا رہے ہیں۔

ظاہر ہے کہ اگر ودھان سبھا ہماری رائے پر چل سکتی تو نئی سرکار کی دفتری بھاشا ہندستانی ہی کہی جانی چاہیئے تھی اور ناگری اور اردو دونوں لپیاں اُس کی لپیاں ہونی چاہیئے تھیں۔ پر مولانا ابوالکلام آزاد نے ودھان سبھا کے اندر اپنے بھاشن میں ٹھیک کہا تھا کہ—

"لیکن یہ بات ظاہر ہے اگرچہ افسوسناک ہے کہ ممبروں کے دلوں اور دماغوں کی اس سمے کی حالت میں اس سے اچھا کوئی مسودہ تیار نہیں کیا جا سکتا تھا۔"

اس مسودے کو 'منشی آینگر مسودہ' کہا گیا ہے۔ شری کنہیا لال منشی اور شری گوپال سوامی آینگر اس سوال

पर दो खास दलों के नेता थे. यह मसौदा कई दलों के बीच के समझौते का नतीजा है. श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने विधान सभा में कहा था—

"यह मसौदा बहुत सोच विचार और बहसों का नतीजा है. यह उन रायों के बीच समझौते के तौर पर पैदा हुआ है जिन्हें एक दूसरे से मिलाना आसान न था, इस लिये जब आप इस मसौदे को देखें तो आप इसे एक ऐसी चीज़ न समझें जिसकी मैं और मेरे साथी तजवीज़ कर रहे हैं. इसे हम एक ऐसे समझौते के रूप में पेशकर रहे हैं, जिस समझौते के करने में अपनी अपनी रायों की और उन विचारों और हितों की जिनकी दिल से हम बहुत क़द्र करते थे बड़ी बड़ी क़ुर्बानियाँ की गई हैं, इस ग़रज़ से कि हम सब एक राय पर आ सकें."

जिन क़ुरबानियों की श्री आयंगर ने चर्चा की है उनमें से कुछ को मदरास की श्रीमती दुर्गाबाई ने विधान सभा के अन्दर इन शब्दों में बयान किया—

"इस बहसा बहसी ने जो रूप लिया है उससे मुझे दुख हुआ है. यह बात सबको समझ लेनी चाहिये कि ग़ैर-हिन्दी भाषी इलाक़े के मेम्बरों ने दो तरह की क़ुरबानियाँ की हैं—पहिली यह कि उन्होंने श्री आयंगर के मसौदे की शर्तों पर हिन्दी को, जो एक सूबे की भाषा है और जिसने अभी काफ़ी उन्नति भी नहीं की है, यूनियन की दफ़्तरी ज़बान मान लिया है. दूसरी क़ुरबानी हमने यह की है कि हम महात्मा गान्धी के असूल से, गान्धी जी के उदार आदर्शों से, गान्धी जी की फ़िलासफ़ी से और गान्धी जी की इस तजवीज़ से

[illegible]

हटने के लिये राजी हो गये कि हिन्दुस्तान की दफ्तरी भाषा हिन्दुस्तानी यानी हिन्दी + उर्दू होनी चाहिये.'

दुख है कि इस मौक़े पर भी हिन्दी के जो नमूने हिन्दी के कुछ महारथियों ने विधान सभा के सामने पेश किये उनसे हिन्दी भाषी प्रान्तों और ग़ैर हिन्दी भाषी प्रान्तों में ग़ैरियत बजाय घटने के और बढ़ी ही. सी०पी०के एक बहुत बड़े हिन्दी के महारथी बारह सितम्बर को जब बोलने खड़े हुए तो चारों तरफ़ से जोरदार विरोध के होते हुए भी उन्होंने "शुद्ध" हिन्दी में ही अपना लम्बा भाषन दे डाला. जब वो बोलकर बैठ गये तो मेम्बरों की एक बहुत बड़ी तादाद को यह शिकायत करनी पड़ी कि वह बोलने वाले की दलीलों का "एक शब्द" भी नहीं समझ पाए.

धुर पूरब से आसाम के श्री कुलाधार चलियाहा ने, जो संस्कृत को यूनियन की दफ्तरी भाषा तजवीज़ करने के लिये खड़े हुए थे, हिन्दुस्तानी को हिन्दी से अधिक पसन्द करते हुए कहा कि—

"From the speeches made in this House Hindustani appears to have more dignity, 'flexibility, musical intonation and power of expression than Hindi."

"इस सदन में जो भाषन दिये गये हैं उनसे जान पड़ता है कि हिन्दी की निस्बत हिन्दुस्तानी में जियादा शान है, जियादा लोच है, जियादा सुरीलापन है और अपना मतलब जाहिर करने की जियादा शक्ति है."

एक दूसरे के बाद अनेक बोलने वालों को हिन्दी वालों को

ہٹنے کے لئے راضی ہو گئے کہ ہندستان کی دفتری بھاشا ہندستانی یعنی ہندی + اردو ہونی چاہیئے۔"

دُکھ ہے کہ اِس موقعے پر بھی ہندی کے جو نمونے ہندی کے کچھ مہارتھیوں نے ودھان سبھا کے سامنے پیش کئے اُن سے ہندی بھاشی پرانتوں اور غیر ہندی بھاشی پرانتوں میں غیریت بجائے گھٹنے کے اور بڑھی ہے۔ سی۔ پی۔ کے ایک بہت بڑے ہندی کے مہارتھی بارہ ستمبر کو جب بولنے کھڑے ہوئے تو چاروں طرف سے زور دار وِرودھ کے ہوتے ہوئے بھی اُنھوں نے "شدھ" ہندی میں ہی اپنا لمبا بھاشن دے ڈالا۔ جب وے بول کر بیٹھ گئے تو ممبروں کی ایک بہت بڑی تعداد کو یہ شکایت کرنی پڑی کہ وہ بولنے والے کی دلیلوں کا "ایک شبد" بھی نہیں سمجھ پائے۔

دُھر پورب سے آسام کے شری کُلا دھار چلیا ہا نے، جو سنسکرت کو یونین کی دفتری بھاشا تجویز کرنے کے لئے کھڑے ہوئے تھے، ہندستانی کو ہندی سے ادھک پسند کرتے ہوئے کہا کہ --

"FROM THE SPEECHES MADE IN THIS HOUSE HINDUSTANI APPEARS TO HAVE MORE DIGNITY, FELXIBILITY, MUSICAL INTONATION AND POWER OF EXPRESSION THAN HINDI."

"اس سدن میں جو بھاشن دیئے گئے ہیں اُن سے جان پڑتا ہے کہ ہندی کی نسبت ہندستانی میں زیادہ شان ہے۔ زیادہ لوچ ہے۔ زیادہ سُریلا پن ہے اور اپنا مطلب ظاہر کرنے کی زیادہ شکتی ہے۔"

ایک دوسرے کے بعد انیک بولنے والوں کو ہندی والوں کی

अनुदारता (इन टालरेन्स), हठधर्मी (फ़ेनेटिसिज़्म), साम्प्रदायिकता (कम्यूनलिज़्म), ज़ियादती (अग्रेसिवनेस) आदि की बारबार शिकायत करनी पड़ी. यह बात यहां तक बढ़ी कि जब यू. पी. के एक हिन्दी प्रेमी सज्जन हिन्दी को "इस देश की राष्ट्र भाषा" और संस्कृत को 'अन्तर राष्ट्रीय भाषा" बनाने के बाद मुसलमानों पर बेमौक़े हमले करने लगे तो पं० जवाहर लाल जी नेहरू को खड़े होकर एतराज़ करना पड़ा, और सभापति डा०राजेन्द्र प्रसाद को यह कह कर उन्हें रोकना पड़ा कि "यहाँ हम भाषा के सवाल पर बहस कर रहे हैं, साम्प्रदायिक सवाल पर नहीं." यू.पी.के ही एक दूसरे प्रसिद्ध हिन्दी प्रेमी ने जब बम्बई के श्री शंकर राव देव को बोलते हुए बार बार बुरी तरह टोकना शुरू किया तो सभापति डा० राजेन्द्र प्रसाद को उन्हें यह कह कर डाँटना पड़ा—

"You have to keep your temper if you are to sit in this House. No body has a right to lose his temper here."

"अगर आपको इस सदन में बैठना है तो अपने को क़ाबू में रखना होगा. यहाँ किसी को आपे से बाहर होने का हक़ नहीं है."

श्री फ्रेंकएन्थनी ने कहा कि—"जो लोग हिन्दी के लिये जोश और हठधर्मी दिखा रहे हैं उन्होंने अपनी अनुदारता से हिन्दी को सबसे ज़ियादा नुक़सान पहुँचाया है..........इसके अलावा एक नई तरह की हिन्दी जो समझ में नहीं आ सकती और बहुत ज़ियादा संस्कृत से भरी है देश पर लादने की कोशिश की जा रही है. इससे हिन्दी बोलने वाले हिन्दुओं तक को बहुत बड़ी और ग़ैर ज़रूरी कठिनाई होगी.........हिन्दी को

انوُدارتا (اِن ٹالرینس)، ہٹ دھرمی (فینیٹسزم)، سامپردایکتا (کمیونلزم)، زیادتی (اگریسونس) آدی کی بار بار شکایت کرنی پڑی. یہ بات یہاں تک بڑھی کہ جب یو. پی. کے ایک ہندی پریمی سجن ہندی کو "اس دیش کی راشٹر بھاشا" اور سنسکرت کو 'انتر راشٹریہ بھاشا" بنانے کے بعد مسلمانوں پر بے موقع حملے کرنے لگے تو پنڈت جواہر لال جی نہرو کو کھڑے ہوکر اعتراض کرنا پڑا، اور سبھا پتی ڈاکٹر راجندر پرساد کو یہ کہکر اُنھیں روکنا پڑا کہ "یہاں ہم بھاشا کے سوال پر بحث کر رہے ہیں، سامپردایک سوال پر نہیں." یو. پی. کے ہی ایک دوسرے پرسدھ ہندی پریمی نے جب بمبئی کے شری شنکر راؤ دیو کو بولتے ہوئے بار بار بُری طرح ٹوکنا شروع کیا تو سبھا پتی ڈاکٹر راجندر پرساد کو اُنھیں یہ کہکر ڈانٹنا پڑا—

"YOU HAVE TO KEEP YOUR TEMPER IF YOU ARE TO SIT IN THIS HOUSE. NO BODY HAS A RIGHT TO LOSE HIS TOMPER HERE."

"اگر آپ کو اس سدن میں بیٹھنا ہے تو اپنے کو قابو میں رکھنا ہوگا. یہاں کسی کو آپے سے باہر ہونے کا حق نہیں ہے."

شری فرینک انتھنی نے کہا کہ "جو لوگ ہندی کیلئے جوش اور ہٹ دھرمی دکھا رہے ہیں اُنھوں نے اپنی انوُدارتا سے ہندی کو سب سے زیادہ نقصان پہنچایا ہے.......اس کے علاوہ ایک نئی طرح کی ہندی جو سمجھ میں نہیں آسکتی اور بہت زیادہ سنسکرت سے بھری ہے دیش پر لادنے کی کوشش کی جارہی ہے. اس سے ہندی بولنے والے ہندوؤں تک کو بہت بڑی اور غیر ضروری کٹھنائی ہوگی........ ہندی کو

अपनी शब्दावली में अंगरेज़ी से भी खुले तौर पर शब्द लेने चाहियें."

उड़ीसा के श्री बी.दास ने कहा कि—"यू.पी.और सी.पी.से आए हुए मेम्बरों की ज़ियादती ने ग़ैर हिन्दी भाषी लोगों के दिलों में डर पैदा कर दिया है."

पंजाब के सरदार हुकुमसिंह ने रोमन लिखावट में हिन्दुस्तानी का समर्थन करते हुए कहा कि—"मैं पहिले देवनागरी लिखावट में हिन्दी का तरफ़दार था.........अब मैं उन लोगों में से हूँ जिन्होंने देवनागरी लिखावट में हिन्दी से अपनी राय हटा ली है. केवल उन लोगों की हठधर्मी और अनुदारता के कारन जो हिन्दी के हिमायती हैं."

ऊपर के कुछ फ़िकरे हमने केवल इसलिये नक़ल किये हैं कि हम यह समझ लें कि अगर हमें विधान सभा के ठहराव को सफल बनाना है तो किस तरह चलना होगा.

हम कह चुके हैं कि हम विधान सभा के ठहराव को मानने को तय्यार हैं. ठहराव में दो बातें बहुत साफ़ हैं—

पहिली यह कि ठहराव का देश की राष्ट्र भाषा से सम्बन्ध नहीं है. एक दल चाहता था कि ठहराव में शब्द 'राष्ट्र भाषा' (नेशनल लेंगुएज) रक्खा जाय. बहुत बहसों के बाद तै हुआ कि ठहराव में 'दफ़तरी भाषा'—(आफ़िशल लेंगुएज) की ही बात होनी चाहिये. राष्ट्र-भाषा कहीं भी सरकारों या पारलीमेन्टों के हुकुम से नहीं बनती. राष्ट्र भाषा वह है जिसे राष्ट्र की जनता समझे, बोले और बरते. हमारे देश की राष्ट्र भाषा का क्या रूप होगा यह भविष्य ही

اپنی شبداولی میں انگریزی سے بھی کھلے طور پر شبد لینے چاہئیں۔"

اڑیسہ کے شری بی۔ داس نے کہا کہ "یو۔پی۔ اور سی۔پی۔ سے آئے ہوئے ممبروں کی زیادتی نے غیر ہندی بھاشی لوگوں کے دلوں میں ڈر پیدا کر دیا ہے۔"

پنجاب کے سردار حکم سنگھ نے رومن لکھاوٹ میں ہندستانی کا سمرتھن کرتے ہوئے کہا کہ "میں پہلے دیوناگری لکھاوٹ میں ہندی کا طرفدار تھا...... اب میں ان لوگوں میں سے ہوں جنہوں نے دیوناگری لکھاوٹ میں ہندی سے اپنی رائے ہٹا لی ہے۔ کیول ان لوگوں کی ہٹ دھرمی اور انوداراتا کے کارن جو ہندی کے حمایتی ہیں۔"

اوپر کے کچھ فقرے ہم نے کیول اس لئے نقل کئے ہیں کہ ہم یہ سمجھ لیں کہ اگر ہمیں ودھان سبھا کے ٹھہراؤ کو سپھل بنانا ہے تو کس طرح چلنا ہوگا۔

ہم کہہ چکے ہیں کہ ہم ودھان سبھا کے ٹھہراؤ کو ماننے کو تیار ہیں۔ ٹھہراؤ میں دو باتیں بہت صاف ہیں—

پہلی یہ کہ ٹھہراؤ کا دیش کی راشٹر بھاشا سے سمبندھ نہیں ہے۔ ایک دل چاہتا تھا کہ ٹھہراؤ میں شبد 'راشٹر بھاشا' (نیشنل لینگوج) رکھا جائے۔ بہت بحثوں کے بعد طے ہوا کہ ٹھہراؤ میں 'دفتری بھاشا'— (آفیشل لینگوج) کی ہی بات ہونی چاہئے۔ راشٹر بھاشا کہیں بھی سرکاروں یا پارلیمنٹوں کے حکم سے نہیں بنتی۔ راشٹر بھاشا وہ ہے جسے راشٹر کی جنتا سمجھے، بولے اور برتے۔ ہمارے دیش کی راشٹر بھاشا کا کیا روپ ہوگا یہ بھوشیہ ہی

तै करेगा और जनता खुद तै करेगी—हमें विश्वास है कि भारत की और सारे हिन्दुस्तान की राष्ट्र भाषा वही होगी जिसे हम हिंदुस्तानी कहते हैं, जो देश की सारी भाषाओं के रंग अपने ताने बाने में लिये हुए होगी और जिसके सबसे अच्छे नमूने कबीर, नानक, नामदेव और इनसे भी बढ़ कर दादू की बानी में मिलते हैं. इन पंक्तियों के लेखक ने धुर दक्खिन के चारों प्रान्तों तामिल, तेलिगू, मलयालम और कन्नड़ का दौरा किया है. उसका निजी अनुभव है कि उन प्रान्तों तक के लोग जितनी अच्छी तरह हिन्दुस्तानी को समझते हैं उतनी अच्छी तरह 'शुद्ध' समझी जाने वाली हिन्दी को नहीं समझते.

दूसरी बात यह है कि विधान सभा के इस ठहराव में "हिन्दुस्तानी भाषा" उसके रूप, उसकी शैली और उसके महावरों की चरचा करते हुए सरकार का यह फ़र्ज़ ठहराया गया है कि वह हिन्दी को इस तरह से रूप दे और बढ़ावे कि जिसमें हिन्दी केवल हिन्दुस्तानी ही नहीं बल्कि उर्दू और देश की दूसरी भाषाओं का भी संगम बन सके. ठहराव के शब्द यह हैं—

"यूनियन का यह फ़र्ज़ होगा कि हिन्दी के फैलने में मदद दे और हिन्दी भाषा को इस तरह से बढ़ावे कि वह भारत की मिली जुली कलचर के सब अंगों को चमकाने का साधन बन सके, और हिन्दी की आत्मा को बिना नुक़सान पहुँचाए, जो रूप, जो शैलियाँ, जो महावरे हिन्दुस्तानी में और भारत की दूसरी भाषाओं में काम में आते हैं उन्हे हिन्दी में समो कर उसे मालामाल करे, और, जहाँ कहीं ज़रूरी हो या अच्छा लगे वहाँ, हिन्दी की

طے کرے گا اور جنتا خود طے کرے گی ۔ ہمیں وشواس ہے کہ بھارت کی اور سارے ہندستان کی راشٹر بھاشا وہی ہوگی جسے ہم ہندستانی کہتے ہیں، جو دیش کی ساری بھاشاؤں کے رنگ اپنے تانے بانے میں لئے ہوئے ہوگی اور جس کے سب سے اچھے نمونے کبیر، نانک، نام دیو اور ان سے بھی بڑھ کر دادو کی بانی میں ملتے ہیں۔ ان پنکتیوں کے لیکھک نے دھر دکھن کے چاروں پرانتوں تامل، تیلگو، ملیالم اور کنڑ کا دورہ کیا ہے۔ اس کا نجی انوبھو ہے کہ ان پرانتوں تک کے لوگ جتنی اچھی طرح ہندستانی کو سمجھتے ہیں اتنی اچھی طرح 'شدھ' سمجھی جانے والی ہندی کو نہیں سمجھتے۔

دوسری بات یہ ہے کہ ودھان سبھا کے اس ٹھہراؤ میں "ہندستانی بھاشا" اس کے روپ، اس کی شیلی اور اس کے محاوروں کی چرچا کرتے ہوئے سرکار کا یہ فرض ٹھہرایا گیا ہے کہ وہ ہندی کو اس طرح سے روپ دے اور بڑھاوے کہ جس میں ہندی کیول ہندستانی ہی نہیں بلکہ اردو اور دیش کی دوسری بھاشاؤں کا بھی سنگم بن سکے۔ ٹھہراؤ کے شبد یہ ہیں—

"یونین کا یہ فرض ہوگا کہ ہندی کے پھیلانے میں مدد دے اور ہندی بھاشا کو اس طرح سے بڑھاوے کہ وہ بھارت کی ملی جلی کلچر کے سب انگوں کو چمکانے کا سادھن بن سکے، اور ہندی کی آتما کو بنا نقصان پہنچائے، جو روپ، جو شیلیاں، جو محاورے ہندستانی میں اور بھارت کی دوسری بھاشاؤں میں کام میں آتے ہیں انھیں ہندی میں سمو کر اسے مالا مال کرے، اور جہاں کہیں ضروری ہو یا اچھا لگے وہاں، ہندی کی

शब्दावली के लिये पहिले संस्कृत से और दूसरे और भाषाओं से मदद ले."

पं० जवाहर लाल नेहरू ने विधान सभा में तेरह सितम्बर को इस सवाल पर बोलते हुए ऊपर के फ़िक़रे की तरफ़ मेम्बरों का ख़ास ध्यान दिलाया था. उन्होंने कहा था कि—

"राष्ट्र पिता ने इस सवाल पर भी उसी तरह सोचा था जिस तरह देश के राष्ट्रीय भविष्य पर असर डालने वाले और बहुत से बड़े बड़े सवालों पर सोचा था. अपनी ज़िन्दगी भर उन्होंने इस पर बहुत बड़ा ध्यान दिया और इस बारे में वह अपनी सलाह को बार बार दुहराते रहे. उन्होंने बुनियादी और जड़ की चीज़ों को ले लिया और सवाल के ऊपरी पहलुओं पर अपना समय और अपना दिमाग़ व्यर्थ नहीं खोया.

"उन्होंने जिस तरह इस सवाल को लिया, वह उन्हीं का हिस्सा था. वह बहुत बड़े साहित्यिक भी थे पर उन्होंने इस सवाल पर एक साहित्यिक की ही निगाह से नहीं, जनता के हित और भारत के भविष्य को सामने रख कर सोचा.

"महात्मा गान्धी ने इस सवाल को उसी ऊँची सतह पर रक्खा, जिस पर उन्होंने देश की इस तरह की बुराइयों जैसे विदेशी राज, ऊँच नीच और छूतछात को दूर करने के सवालों को रक्खा. वह एक ऐसा हिन्दुस्तान बनाना चाहते थे, जिसमें बल हो, जिसमें एकता हो. महात्मा गान्धी ने देश को बताया कि अंगरेज़ी भाषा एक बड़ी भाषा है, पर कोई राष्ट्र किसी विदेशी भाषा के सहारे बड़ा नहीं हो सकता. इसमें शक नहीं कि अंगरेज़ी

شبداولی کیلئے پہلے سنسکرت سے اور دوسرے اور بھاشاؤں سے مدد لے۔"

پنڈت جواہر لال نہرو نے ودھان سبھا میں تیرہ ستمبر کو اس سوال پر بولتے ہوئے اوپر کے فقرے کی طرف ممبروں کا خاص دھیان دلایا تھا۔ اُنھوں نے کہا تھا کہ—

"راشٹر پتا نے اس سوال پر بھی اُسی طرح سوچا تھا جس طرح دیش کے راشٹریہ بھوشیہ پر اثر ڈالنے والے اور بہت سے بڑے بڑے سوالوں پر سوچا تھا۔ اپنی زندگی بھر اُنھوں نے اس پر بہت بڑا دھیان دیا اور اس بارے میں وہ اپنی صلاح کو بار بار دُہراتے رہے۔ اُنھوں نے بُنیادی اور جڑ کی چیزوں کو لے لیا اور سوال کے اوپری پہلوؤں پر اپنا سمے اور اپنا دماغ ویرتھ نہیں کھویا۔

"اُنھوں نے جس طرح اس سوال کو لیا، وہ اُنھیں کا حصّہ تھا۔ وہ بہت بڑے ساہتیک بھی تھے پر اُنھوں نے اس سوال پر ایک ساہتیک کی ہی نگاہ سے نہیں، جنتا کے ہت اور بھارت کے بھوشیہ کو سامنے رکھکر سوچا۔

"مہاتما گاندھی نے اس سوال کو اُسی اونچی سطح پر رکھا، جس پر اُنھوں نے دیش کی اس طرح کی بُرائیوں جیسے ودیشی راج، اونچ نیچ اور چھوت چھات کو دور کرنے کے سوالوں کو رکھا۔ وہ ایک ایسا ہندستان بنانا چاہتے تھے، جسمیں بل ہو، جس میں ایکتا ہو۔ مہاتما گاندھی نے دیش کو بتایا کہ انگریزی بھاشا ایک بڑی بھاشا ہے، پر کوئی راشٹر کسی ودیشی بھاشا کے سہارے بڑا نہیں ہو سکتا۔ اس میں شک نہیں کہ انگریزی

ने हमें बहुत फ़ायदा पहुँचाया है, पर कोई विदेशी भाषा कभी भी जनता की भाषा नहीं हो सकती. गान्धीजी ने लोगों पर जोर दिया कि वह एक राष्ट्र भाषा के लिये जियादा से जियादा काम करें.

"दूसरे महात्मा गान्धी ने इस पर जोर दिया कि कम या जियादा राष्ट्रभाषा जनता की भाषा होनी चाहिये, थोड़े से विद्वानों की भाषा नहीं. इसका मतलब यह नहीं कि विद्या की कोई क़ीमत नहीं या विद्या की इज्जत नहीं करनी चाहिये, मतलब यह कि राष्ट्र भाषा की जड़ें जनता में होनी चाहिये.

"आज कल के जमाने में पुराने जमाने से कहीं जियादा, कोई ऐसी भाषा महान नहीं हो सकती, जो जनता की भाषा से अलग चलती हो. एक कुल हिन्द भाषा चुनने में इस सदन को इन बातों को ध्यान में रखना चाहिये.

"भाषा के मामले में हम शुद्धता पर जोर देने वालों Purists (प्योरिस्ट) और कांटे की तोल तोलने वालों (प्रेसिज़िनिस्ट) Precesionists की हाथी दाँत की मीनार में नहीं रहते. किसी भाषा के लिये शुद्धता पर जोर देने वालों का लाडला बच्चा बन जाना बड़ी ख़तरनाक बात है, क्यों कि फिर वह भाषा आम जनता से कट जाती है. एक दरजे तक भाषा के ठीक होने और उसके गहरा होने की भी जरूरत होती है, पर भाषा का सम्पर्क जनता से बना रहना चाहिये और आम जनता से ही उसे ख़ूराक मिलनी चाहिये.

"जहाँ तक हिन्दी भाषा की बात है हिन्दी से वह मिली जुली कलचर जाहिर होनी चाहिये जो उत्तर भारत में पैदा हुई और

نے ہمیں بہت فائدہ پہنچایا ہے، پر کوئی ودیشی بھاشا کبھی بھی جنتا کی بھاشا نہیں ہو سکتی۔ گاندھی جی نے لوگوں پر زور دیا کہ وہ ایک راشٹر بھاشا کیلئے زیادہ سے زیادہ کام کریں۔

"دوسرے مہاتما گاندھی نے اس پر زور دیا کہ کم یا زیادہ راشٹر بھاشا جنتا کی بھاشا ہونی چاہئے، تھوڑے سے ودوانوں کی بھاشا نہیں۔ اس کا مطلب یہ نہیں کہ ودیا کی کوئی قیمت نہیں یا ودیا کی عزت نہیں کرنی چاہئے، مطلب یہ کہ راشٹر بھاشا کی جڑیں جنتا میں ہونی چاہئے۔

"آج کل کے زمانے میں پرانے زمانے سے کہیں زیادہ، کوئی ایسی بھاشا مہان نہیں ہو سکتی، جو جنتا کی بھاشا سے الگ چلتی ہو۔ ایک کل ہند بھاشا چننے میں اس سدن کو ان باتوں کو دھیان میں رکھنا چاہئے۔

"بھاشا کے معاملے میں ہم شدھتا پر زور دینے والوں PURISTS (پیوریسٹ)، اور کانٹے کی تول تولنے والوں (پریسیزنسٹ) PRECESIONISTS کی ہاتھی دانت کی مینار میں نہیں رہتے۔ کسی بھاشا کے لئے شدھتا پر زور دینے والوں کا لاڈلا بچہ بن جانا بڑی خطرناک بات ہے، کیونکہ پھر وہ بھاشا عام جنتا سے کٹ جاتی ہے۔ ایک درجے تک بھاشا کے ٹھیک ہونے اور اس کے گہرا ہونے کی بھی ضرورت ہوتی ہے، پر بھاشا کا سمپرک جنتا سے بنا رہنا چاہئے اور عام جنتا سے ہی اسے خوراک ملنی چاہئے۔

"جہاں تک ہندی بھاشا کی بات ہے ہندی سے وہ ملی جلی کلچر ظاہر ہونی چاہئے جو اتر بھارت میں پیدا ہوئی اور

फली फूली थी. यहीं हिन्दी भाषा का खास तौर पर राज था. हिन्दी भाषा से वह मिली जुली कलचर भी जाहिर होनी चाहिये जो उसे हिन्दुस्तान के दूसरे हिस्सों से मिलती है. इसी लिये महात्मा गान्धी ने हिन्दुस्तानी शब्द का उपयोग किया, तकनीकी अर्थों में नहीं बल्कि एक बड़े अर्थों में, जिसमें उत्तर भारत की आम जनता और अलग अलग गिरोहों सबकी बोलियाँ शामिल हैं.

"मैं एक छोटा सा आदमी हूँ. मेरे लिये यह कहना गुस्ताखी होगी कि मैं महात्मा गान्धी से इत्तफ़ाक़ करता हूँ या नहीं करता हूँ. पिछले लगभग तीस बरस के अन्दर भाषा के बारे में अपने छोटे से ढग पर मैंने इसी असूल का साथ दिया है और अगर यह सदन मुझसे कहे कि मैं अब इस असूल को छोड़ दूँ, जिसका मैंने अपने लगभग सारे राजकाजी जीवन भर साथ दिया है, तो मेरे लिये मुश्किल होगा.

"लेकिन मैं यह ज़रूर मानता हूँ कि भारत के हित में और एक ताक़तवर हिन्दुस्तानी राष्ट्र के फलने फूलने के लिये, किसी ऐसे इकल खुरे राष्ट्र के लिये नहीं जो बाक़ी दुनिया से अलग रहने की कोशिश करता हो. इस बारे में महात्मा गान्धी का सोचने का ढंग ही ठीक ढंग है.

"मैं चाहता था कि ठहराव में इस बात पर और जियादा जोर दिया जाता. आख़ीर में जब इस ठहराव ने रूप लिया तो मैंने उसे इस लिये मान लिया कि कम से कम ठहराव के किसी हिस्से में इस बात की तरफ ध्यान दिलाया गया है जिसकी मैं चरचा कर रहा हूँ. मैं चाहता था कि यह बात और जियादा साफ साफ कही

پھلی پھولی تھی ۔ یہاں ہندی بھاشا کا خاص طور پر راج تھا. ہندی بھاشا سے وہ ملی جلی کلچر بھی ظاہر ہونی چاہیے جو اسے ہندستان کے دوسرے حصّوں سے ملتی ہے ۔ اسی لئے مہاتما گاندھی نے ہندستانی شبد کا اُپیوگ کیا ، تکنیکی ارتھوں میں نہیں بلکہ ایک بڑے ارتھوں میں ، جس میں اُتر بھارت کی عام جنتا اور الگ الگ گروہوں سب کی بولیاں شامل ہیں ۔

" میں ایک چھوٹا سا آدمی ہوں ۔ میرے لئے یہ کہنا گستاخی ہوگی کہ میں مہاتما گاندھی سے اتفاق کرتا ہوں یا نہیں کرتا ہوں ۔ پچھلے لگ بھگ تیس برس کے اندر بھاشا کے بارے میں اپنے چھوٹے سے ڈھنگ پر میں نے اسی اُصول کا ساتھ دیا ہے اور اگر یہ سدن مجھ سے کہے کہ میں اب اس اُصول کو چھوڑ دوں ، جس کا میں نے اپنے لگ بھگ سارے راج کاجی جیون بھر ساتھ دیا ہے ، تو میرے لئے مشکل ہوگا ۔

"لیکن میں یہ ضرور مانتا ہوں کہ بھارت کے ہت میں اور ایک طاقتور ہندستانی راشٹر کے پھلنے پھولنے کے لئے ، کسی ایسے اِکل کھورے راشٹر کے لئے نہیں جو باقی دُنیا سے الگ رہنے کی کوشش کرتا ہو ۔ اس بارے میں مہاتما گاندھی کا سوچنے کا ڈھنگ ہی ٹھیک ڈھنگ ہے ۔

" میں چاہتا تھا کہ ٹھہراؤ میں اس بات پر اور زیادہ زور دیا جاتا ۔ آخر میں جب اس ٹھہراؤ نے روپ لیا تو میں نے اُسے اس لئے مان لیا کہ کم سے کم ٹھہراؤ کے کسی حصّے میں اس بات کی طرف دھیان دلایا گیا ہے جس کی میں چرچا کر رہا ہوں ۔ میں چاہتا تھا کہ یہ بات اور زیادہ صاف صاف کہی

गई होती. अगर ठहराव में इस बात की तरफ़ ध्यान न दिलाया गया होता, तो मेरे लिये उसे मंज़ूर करना बहुत कठिन होता."

पं० जवाहर लाल जी का इशारा ठहराव के उसी हिस्से की तरफ़ है, जिसे हमने ऊपर नक़ल किया है.

यह ठहराव देश के उन सब लोगों पर जो राष्ट्रभाषा के सवाल में दिलचस्पी रखते हैं, और ख़ास कर हिन्दुस्तानी के प्रेमियों और हिन्दी के प्रेमियों दोनों पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी डालता है.

हिन्दुस्तानी के प्रेमियों और उन सब संस्थाओं, सभाओं, सोसाइटियों और पत्रों का जो हिन्दुस्तानी के प्रचार से सम्बन्ध रखते हैं या उसमें दिलचस्पी रखते हैं अब यह फ़र्ज़ है कि वह हिन्दुस्तानी के साहित्य के ज़रिये उन सब रूपों, शैलियों और महावरों को देश के सामने रख दें जिन्हें वह कुल हिन्द भाषा बनाना चाहते हैं. हिन्दुस्तानी को सच्चा संगम बनाने और बनाए रखने के लिये यह भी बिलकुल ज़रूरी है कि ज़ियादा से ज़ियादा भाई बहिन नागरी और उर्दू दोनों लिपियों को सीखें और दोनों का प्रचार करते रहें. हिन्दुस्तानी की संस्थाओं को अब पहिले से ज़ियादा लगन के साथ काम करना है.

जो भाई अपने को ख़ास तौर से हिन्दी प्रेमी समझते हैं उनका कर्तव्य है कि वह खुले दिल से ठहराव के ऊपर के हिस्से पर अमल करें. हम कह देना चाहते हैं कि इस टुकड़े में दो छोटे से खटके भी आ गये हैं, जिन पर अगर सचाई से और ज़रा बड़े दिल से काम किया जावे तो किसी को एतराज़ नहीं हो सकता,

گئی ہوتی۔ اگر ٹھہراؤ میں اس بات کی طرف دھیان نہ دلایا گیا ہوتا، تو میرے لئے اُسے منظور کرنا بہت کٹھن ہوتا۔"

پنڈت جواہر لال جی کا اشارہ ٹھہراؤ کے اُسی حصے کی طرف ہے، جسے ہم نے اوپر نقل کیا ہے۔

یہ ٹھہراؤ دیش کے اُن سب لوگوں پر جو راشٹر بھاشا کے سوال میں دلچسپی رکھتے ہیں، اور خاص کر ہندستانی کے پریمیوں اور ہندی کے پریمیوں دونوں پر بہت بڑی ذمے داری ڈالتا ہے۔

ہندستانی کے پریمیوں اور اُن سب سنستھاؤں، سبھاؤں، سوسائٹیوں اور پتروں کا جو ہندستانی کے پرچار سے سمبندھ رکھتے ہیں یا اُس میں دلچسپی رکھتے ہیں اب یہ فرض ہے کہ وہ ہندستانی کے ساہتیہ کے ذریعے اُن سب روپوں، شیلیوں اور محاوروں کو دیش کے سامنے رکھ دیں جنھیں وہ کل ہند بھاشا بنانا چاہتے ہیں۔ ہندستانی کو سچا سنگم بنانے اور بنائے رکھنے کے لئے یہ بھی بالکل ضروری ہے کہ زیادہ سے زیادہ بھائی بہن ناگری اور اردو دونوں لپیوں کو سیکھیں اور دونوں کا پرچار کرتے رہیں۔ ہندستانی کی سنستھاؤں کو اب پہلے سے زیادہ لگن کے ساتھ کام کرنا ہے۔

جو بھائی اپنے کو خاص طور سے ہندی پریمی سمجھتے ہیں اُنکا کرتویہ ہے کہ وہ کھلے دل سے ٹھہراؤ کے اوپر کے حصے پر عمل کریں۔ ہم کہہ دینا چاہتے ہیں کہ اس ٹکڑے میں دو چھوٹے سے کھٹکے بھی آگئے ہیں، جن پر اگر سچائی سے اور ذرا بڑے دل سے کام کیا جاوے تو کسی کو اعتراض نہیں ہو سکتا،

पर जिनका ग़लत अर्थ लगाना सारे ठहराव के अच्छे असर को ख़तम कर सकता है.

बम्बई के श्री बी० एम० गुप्ता ने हिन्दी को अधिक संस्कृत भरी बनाने का विरोध करते हुए विधान सभा में कहा था कि—

"मैं आशा करता हूँ कि मसौदे के इस वाक्य का बेजा फ़ायदा नहीं उठाया जावेगा कि नये शब्दों के लिये पहिले संस्कृत से मदद ली जावेगी, इत्यादि."

मद्रास की श्रीमती दुर्गा बाई ने अपने भाषन में कहा कि—"दफ़तरी भाषा का नाम आप जो चाहें रख लें, पर उस भाषा को अपना प्राण, अपने रूप, अपनी शैलियाँ और अपने महावरे दूसरी भाषाओं से लेने होंगे जिनमें उर्दू और मुक़ामी भाषाएँ शामिल हैं."

मद्रास के रेवरेण्ड जैरोम डी सूज़ा ने इस "विश्वास" के ऊपर ठहराव का समर्थन किया कि—"समय के साथ साथ उन सब अलग अलग अंगों को जिनसे मिलकर यह राष्ट्र बना है हिन्दी के अन्दर अपने फलने फूलने के लिये अच्छा और मददगार दिमाग़ी व कलचरी वातावरण मिलेगा."

श्री गोपाल स्वामी आयंगर ने, जिन्होंने ठहराव को विधान सभा के सामने पेश किया था, कहा कि—"यह दफ़ा सरकार को हिदायत करती है कि वह इस तरह के क़दम उठावे जिससे हिन्दी हिन्दुस्तानी से और देश की दूसरी भाषाओं से शैलियाँ, रूप, महावरे वग़ैरह ले सके और पहिले संस्कृत से और फिर दूसरी सब भाषाओं से शब्द लेकर अपने भंडार को मालामाल कर सके."

پر جن کا غلط ارتھ لگانا سارے ٹھہراؤ کے اچھے اثر کو ختم کر سکتا ہے.

بمبئی کے شری بی. ایم. گپتا نے ہندی کو ادھک سنسکرت بھری بنانے کا ورودھ کرتے ہوئے ودھان سبھا میں کہا تھا کہ—

"میں آشا کرتا ہوں کہ مسودے کے اس واکیہ کا بیجا فائدہ نہیں اُٹھایا جاوے گا کہ نئے شبدوں کے لئے پہلے سنسکرت سے مدد لی جاوے گی، اتیادی."

مدراس کی شریمتی دُرگا بائی نے اپنے بھاشن میں کہا کہ—"دفتری بھاشا کا نام آپ جو چاہیں رکھ لیں، پر اُس بھاشا کو اپنا پران، اپنے روپ، اپنی شیلیاں اور اپنے محاورے دوسری بھاشاؤں سے لینے ہوں گے جن میں اردو اور مقامی بھاشائیں شامل ہیں."

مدراس کے ریورینڈ جےروم ڈی سوزا نے اس "وشواس" کے اوپر ٹھہراؤ کا سمرتھن کیا کہ—"سمے کے ساتھ ساتھ اُن سب الگ الگ انگوں کو جن سے مل کر یہ راشٹر بنا ہے ہندی کے اندر اپنے پھلنے پھولنے کے لئے اچھا اور مددگار دماغی و کلچری واتاورن ملے گا."

شری گوپال سوامی آینگر نے، جنہوں نے ٹھہراؤ کو ودھان سبھا کے سامنے پیش کیا تھا، کہا کہ—"یہ دفعہ سرکار کو ہدایت کرتی ہے کہ وہ اس طرح کے قدم اُٹھاوے جس سے ہندی ہندستانی سے اور دیش کی دوسری بھاشاؤں سے شیلیاں، روپ، محاورے وغیرہ لے سکے اور پہلے سنسکرت سے اور پھر دوسری سب بھاشاؤں سے شبد لے کر اپنے بھنڈار کو مالا مال کر سکے."

सारी बहस के आख़ीर में डा० राजेन्द्र प्रसाद ने मेम्बरों से और ख़ास कर हिन्दी के तरफ़दारों से अपील की कि जो समझौता इस दफ़ा के अन्दर दर्ज है उसे "सहयोग की भावना के साथ" अमल में लाएँ.

हमें थोड़ा सा दुख है कि एक लम्बे अरसे के लिये अंगरेज़ी हमारे दफ़तरी कामों में जम गई. बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन ने ठीक कहा था कि शुरू के पाँच साल के अन्दर अंगरेज़ी के 'साथ साथ' हिन्दी की भी इजाज़त हो सकना बहुत कुछ एक बेमानी बात है. अदालतों में बहसें और गवाहियाँ वग़ैरह तो अब भी जगह जगह देशी भाषा में हो सकती हैं. इस तरह की रिआयत कोई ख़ास क़ीमत नहीं रखती.

जिन लोगों के ऊपर जनता के विचारों को रूप देने की ज़िम्मेदारी है वह ठंडे दिल से सोचें कि अगर शुरू से हम सबने महात्मा गान्धी की सलाह पर इस मामले में काम किया होता तो अंगरेज़ी को इतने दिनों के लिये यह जगह न मिलती और न राष्ट्र-भाषा के सवाल पर इतनी बहसा बहसी और न इतना कड़ुआपन पैदा होने पाता. आगे के लिये भी सरकारें आएँगी और जाएँगी, हो सकता है हमारा यह सारा विधान ही कुछ का कुछ रूप ले ले. इसमें शक नहीं देश के बँटवारे ने और आस पास की राजकाजी हालत ने कलचर और भाषा जैसे प्रेम और मेलजोल के मैदानों में भी हमारी निगाहों को धुँधला कर दिया है. पर क़ौमें नफ़रतों की बुनियादों पर फलफूल नहीं सकतीं और न जी सकती हैं. हमें हिन्दी शब्द प्यारा है. हिन्दुस्तानी शब्द से हमें

ساری بحث کے آخر میں ڈاکٹر راجندر پرساد نے ممبروں سے اور خاص کر ہندی کے طرفداروں سے اپیل کی کہ جو سمجھوتہ اِس دفعہ کے اندر درج ہے اُسے "سہیوگ کی بھاؤنا کے ساتھ" عمل میں لائیں۔

ہمیں تھوڑا سا دُکھ ہے کہ ایک لمبے عرصے کیلئے انگریزی ہمارے دفتری کاموں میں جم گئی۔ بابو پرشوتم داس ٹنڈن نے ٹھیک کہا تھا کہ شروع کے پانچ سال کے اندر انگریزی کے 'ساتھ ساتھ' ہندی کی بھی اجازت ہوسکنا بہت کچھ ایک بے معنی بات ہے۔ عدالتوں میں بحثیں اور گواہیاں وغیرہ تو اب بھی جگہ جگہ دیشی بھاشا میں ہوسکتی ہیں۔ اِس طرح کی رعایت کوئی خاص قیمت نہیں رکھتی۔

جن لوگوں کے اوپر جنتا کے وچاروں کو روپ دینے کی ذمہ داری ہے وہ ٹھنڈے دل سے سوچیں کہ اگر شروع سے ہم سب نے مہاتما گاندھی کی صلاح پر اِس معاملے میں کام لیا ہوتا تو انگریزی کو اتنے دنوں کے لئے یہ جگہ نہ ملتی اور نہ راشٹر بھاشا کے سوال پر اِتنی بحثا بحثی اور نہ اِتنا کڑواپن پیدا ہونے پاتا۔ آگے کے لئے بھی سرکاریں آئیں گی اور جائیں گی، ہوسکتا ہے ہمارا یہ سارا وِدھان ہی کچھ کا کچھ روپ لے لے۔ اِس میں شک نہیں دیش کے بٹوارے نے اور آس پاس کی راج کاجی حالت نے کلچر اور بھاشا جیسے پریم اور میل جول کے میدانوں میں بھی ہماری نگاہوں کو دُھندلا کردیا ہے۔ پر قومیں نفرتوں کی بُنیادوں پر پھل پھول نہیں سکتیں اور نہ جی سکتی ہیں۔ ہمیں ہندی شبد پیارا ہے۔ ہندستانی شبد سے ہمیں

कोई खास मोह नहीं. अगर विधान सभा के ठहराव पर बड़े दिल से अमल किया गया तो हिन्दी और हिन्दुस्तानी दो अलग अलग चीज़ें नहीं रह सकतीं. इस ठहराव के अनुसार काम करने पर हिन्दुस्तानी ही हिन्दी होगी और हिन्दी हिन्दुस्तानी. हम यह भी कह सकते हैं कि अगर मेल और समझ से काम लिया गया, तो वह हिन्दी जो हिन्दुस्तानी को अपने अन्दर समा लेगी केवल दफ़तरी भाषा ही नहीं देश की राष्ट्र भाषा भी बन सकेगी. हिन्दी को यह रुतबा देना उन लोगों के ही हाथों में है जो हिन्दी के ख़ास तरफ़दार हैं. भाषाएँ और लिपियाँ बनती और ख़त्म होती रहती हैं. अपनी अपनी बोली सबको प्यारी भी हो सकती है. पर कोई भाषा किसी भाषा से ज़ियादा या कम पवित्र नहीं होती. किसी भी भाषा को रूप देने में निगाह हमेशा सब की आसानी, सब की सुविधा और सबके भले की तरफ़ रहनी चाहिये.

उर्दू जानने वालों का भी फ़र्ज़ है कि वह उर्दू को इस तरह चमकावें और उसें हिन्दी के और हिन्दुस्तानी यानी जनता की बोली के इतने पास ले आवें कि इन सबका संगम एक शानदार भाषा बन सके. उर्दू इसी देश की एक भाषा है, इसी देश में जनमी है और हमारे प्रेम की वैसी ही हक़दार है जैसी देश की दूसरी बोलियाँ.

जिस देश में अभी पचासी फ़ीसदी आदमी बे पढ़े हैं वहाँ हमारी ऊँची से ऊँची साहित्यिक भाषा की जड़ें जितना ज़ियादा आम लोगों की बोली में होंगी, उतना ही ज़ियादा देश में विद्या का

کوئی خاص موہ نہیں۔ اگر ودھان سبھا کے ٹھہراؤ پر بڑے دل سے عمل کیا گیا تو ہندی اور ہندستانی دو الگ الگ چیزیں نہیں رہ سکتیں۔ اس ٹھہراؤ کے انوسار کام کرنے پر ہندستانی ہی ہندی ہوگی اور ہندی ہندستانی۔ ہم یہ بھی کہہ سکتے ہیں کہ اگر میل اور سمجھ سے کام لیا گیا، تو وہ ہندی جو ہندستانی کو اپنے اندر سما لے گی کیول دفتری بھاشا ہی نہیں دیش کی راشٹر بھاشا بھی بن سکے گی۔ ہندی کو یہ رتبہ دینا ان لوگوں کے ہی ہاتھوں میں ہے جو ہندی کے خاص طرفدار ہیں۔ بھاشائیں اور لپیاں بنتی اور ختم ہوتی رہتی ہیں۔ اپنی اپنی بولی سب کو پیاری بھی ہو سکتی ہے۔ پر کوئی بھاشا کسی بھاشا سے زیادہ یا کم پوتر نہیں ہوتی۔ کسی بھی بھاشا کو روپ دینے میں نگاہ ہمیشہ سب کی آسانی، سب کی سودھا اور سب کے بھلے کی طرف رہنی چاہئے۔

اردو جاننے والوں کا بھی فرض ہے کہ وہ اردو کو اس طرح چمکا دیں اور اسے ہندی کے اور ہندستانی یعنی جنتا کی بولی کے اتنے پاس لے آدیں کہ ان سب کا سنگم ایک شان دار بھاشا بن سکے۔ اردو اسی دیش کی ایک بھاشا ہے، اس دیش میں جنمی ہے اور ہمارے پریم کی ویسی ہی حق دار ہے جیسے دیش کی دوسری بولیاں۔

جس دیش میں ابھی پچاسی فیصدی آدمی بے پڑھے ہیں وہاں ہماری اونچی سے اونچی ساہتیک بھاشا کی جڑیں جتنا زیادہ عام لوگوں کی بولی میں ہوں گی، اتنا ہی زیادہ دیش میں ودیا کا

फैलाव, मेल मिलाप और उन्नति होगी. हम चाहें तो यह सब हो सकता है.

सुन्दरलाल

'भारत' यानी 'इन्डिया'

जब से हिन्दुस्तान के दो हिस्से हुए तब से यह सवाल उठ रहा था कि एक हिस्से का नाम पाकिस्तान है तो दूसरे का क्या होगा. कुछ दिनों मालूम हुआ पाकिस्तान के हामी चाहते थे कि इस टुकड़े को 'पाकिस्तान' के मुक़ाबले की चीज़ 'हिन्दुस्तान' कहा जाय. इधर वालों को यह कुछ अच्छा नहीं लग रहा था. इसे इन्डिया कहना भी बहुत लोगों को इसलिये पसन्द नहीं था कि इन्डिया नाम में दोनों टुकड़े शामिल समझे जाते थे, उसे हम कम क्यों करें. पर कुछ नाम तो इस डोमिनियन या यूनियन का रखना ही था. कुछ भाई ऐसे भी थे जो आए दिन की साम्प्रदायिक बहसों, मांगों और रिआयतों से बेज़ार होकर सोचने लगे थे कि अच्छा हुआ पाकिस्तान अलग होकर हमेशा के लिये इन झगड़ों का पाप कट गया, और अब एक विचार एक आदर्श वालों का सांस लेने का मौक़ा मिलेगा. इस तरह सोचने वाले कुछ भाइयों की राय हुई कि यूनियन का नाम अब कोई ऐसा रखा जावे जो बीच के जमाने के असरों ख़ास कर हिन्दू, मुसलिम सम्बन्ध से बिलकुल पाक हो. यूनियन का नाम "इन्डिया" या "भारत" रख दिया गया.

हमें भारत नाम प्यारा है. इसीलिये इन पंक्तियों के लेखक ने अपनी एक पुस्तक का नाम "भारत में अंगरेज़ी राज" रखा था. 'भारत' नाम पुराना और तारीख़ी है. सन १९०७ का पंजाब का आंदोलन 'भारत माता' आन्दोलन कहलाता था. रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने इसे अपने 'जन गन मन अधिनायक भारत भाग्य विधाता' में गाकर अमर कर दिया है. श्री बासित बिसवानी जैसे अनेक मुसलमान कवियों ने भी "भारत माता सब की माता, गंगा माई

پھیلاؤ، میل ملاپ اور اُنتی ہوگی. ہم چاہیں تو یہ سب ہو سکتا ہے.

سندرلال

'بھارت' یعنی 'انڈیا'

جب سے ہندستان کے دو حصے ہوئے تب سے یہ سوال اُٹھ رہا تھا کہ ایک حصے کا نام پاکستان ہے تو دوسرے کا کیا ہوگا. کچھ دنوں معلوم ہوا پاکستان کے حامی چاہتے تھے کہ اِس ٹکڑے کو 'پاکستان' کے مقابلے کی چیز 'ہندستان' کہا جائے. اِدھر والوں کو یہ کچھ اچھا نہیں لگ رہا تھا. اِسے انڈیا کہنا بھی بہت لوگوں کو اس لئے پسند نہیں تھا کہ انڈیا نام میں دونوں ٹکڑے شامل سمجھے جاتے تھے، اُسے ہم کم کیوں کریں. پر کچھ نام تو اس ڈومینین یا یونین کا رکھنا ہی تھا. کچھ بھائی ایسے بھی تھے جو آئے دن کی سامپروایک بحثوں، مانگوں اور رعائتوں سے بیزار ہوکر سوچنے لگے تھے کہ اچھا ہوا پاکستان الگ ہوکر ہمیشہ کے لئے اِن جھگڑوں کا پاپ کٹ گیا، اور اب ایک وچار ایک آدرش والوں کو سانس لینے کا موقع ملے گا. اِس طرح سوچنے والے کچھ بھائیوں کی رائے ہوئی کہ یونین کا نام اب کوئی ایسا رکھا جاوے جو بیچ کے زمانے کے اثروں خاص [illegible] مسلم سمبندھ سے بالکل پاک ہو. یونین کا نام 'انڈیا' یا 'بھارت' رکھ دیا گیا.

ہمیں بھارت نام پیارا ہے. اِسی لئے اِن پنکتیوں کے لیکھک نے اپنی ایک پستک کا نام "بھارت میں انگریزی راج" رکھا تھا. 'بھارت' نام پُرانا اور تاریخی ہے. سنہ ۱۹۰۷ کا پنجاب کا آندولن 'بھارت ماتا' آندولن کہلاتا تھا. رویندر ناتھ ٹیگور نے اِسے اپنے 'جن گن من ادھنایک بھارت بھاگیہ ودھاتا' میں گاکر اَمر کر دیا ہے. شری باسط بسوانی جیسے انیک مسلمان کویوں نے بھی "بھارت ماتا سب کی ماتا، گنگا مائی

सब की माई." गा कर इस नाम को सब का प्यारा बना दिया है. हमें यूनियन का यह नाम ख़ुशी से मंज़ूर है. केवल एक छोटी सी बात कभी कभी खटकती है. जब से 'भारत' नाम शुरू हुआ है धुर पूरब या धुर दक्खिन का कोई इलाक़ा भारत में रहा हो या न रहा हो, लाहौर, पेशावर, मुलतान और हैदराबाद सिन्ध हमेशा भारत में शामिल रहे हैं. आज इस बीच के टुकड़े का दफ़तरी नाम 'भारत' रख कर हमने उस नाम का मान बढ़ाया ही है इसमें कुछ सन्देह है. इसके अलावा जो भावनाएँ इस नाम को रखाने के पीछे काम कर रही थीं उनमें कुछ तंग नज़री और पीछे को देखने की तरफ़ झुकाव भी था. पर यूनियन का कुछ न कुछ नाम तो रखना ही था.

भारत, भारतवर्ष, आर्यावर्त, हिन्द, हिन्दुस्तान और इंडिया सब इस देश के नाम रहे हैं और हैं. 'भारत' नाम को रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने, तो हिन्दुस्तान नाम को डाक्टर मुहम्मद इक़बाल ने अपने अमर गीत 'सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' में ख़ूब चमकाया. यह नाम एक ज़ियादा हाल की और उस मिली जुली संस्कृति को अपने अन्दर लिये हुए है, जिसे हम विशाल भारतीय संस्कृति मानते हैं. 'हिन्द' नाम को भी नेता जी सुभाष बाबू ने अपने 'जय हिन्द' के नारे में घर घर पहुँचा दिया है. और एक प्रेम की चीज़ बना दिया है.

यह सब नाम हमें प्यारे हैं कुछ दिनों के लिये इतना फ़रक़ ज़रूर हो गया कि हिन्द और हिन्दुस्तान नाम यूनियन के 'दफ़तरी' नाम न होने के कारन किसी टुकड़े के नाम नहीं हैं. सरकारें एक हों या दो या अधिक, और पहिले भी इस देश में सदियों कई कई आज़ाद सरकारें रही हैं. पर हमारे लिये देश एक है और एक रहेगा. इसलिये हिन्द या हिन्दुस्तान का मतलब अब और साफ़

سب کی مائی،" گاکر اس نام کو سب کا پیارا بنا دیا ہے۔ ہمیں یونین کا یہ نام خوشی سے منظور ہے۔ کیول ایک چھوٹی سی بات کبھی کبھی کھٹکتی ہے۔ جب سے 'بھارت' نام شروع ہوا ہے دُھر پورب یا دُھر دکھن کا کوئی علاقہ بھارت میں رہا ہو یا نہ رہا ہو، لاہور، پیشاور، مُلتان اور حیدرآباد سندھ ہمیشہ بھارت میں شامل رہے ہیں۔ آج اس بیچ کے ٹکڑے کا دفتری نام 'بھارت' رکھ کر ہم نے اُس نام کا مان بڑھایا ہی ہے اس میں کچھ سندیہ ہے۔ اس کے علاوہ جو بھاؤنائیں اس نام کو رکھنے کے پیچھے کام کر رہی تھیں اُن میں کچھ تنگ نظری اور پیچھے کو دیکھنے کی طرف جھکاؤ بھی تھا پر یونین کا کچھ نہ کچھ نام تو رکھنا ہی تھا۔

بھارت، بھارت ورش، آریہ ورت، ہند، ہندستان اور انڈیا سب اس دیش کے نام رہے ہیں۔ 'بھارت' نام کو رویندرناتھ ٹھاکر نے، تو ہندستان نام کو ڈاکٹر محمد اقبال نے اپنے امر گیت 'سارے جہاں سے اچھا ہندستاں ہمارا' میں خوب چمکایا۔ یہ نام ایک زیادہ حال کی اور اُس ملی جُلی سنسکرت کو اپنے اندر لئے ہوئے ہے، جسے ہم وشال بھارتیہ سنسکرت مانتے ہیں۔ 'ہند' نام کو بھی نیتاجی سُبھاش بابو نے اپنے 'جے ہند' کے نعرے میں گھر گھر پہنچا دیا ہے۔ اور ایک پریم کی چیز بنا دیا ہے۔

یہ سب نام ہمیں پیارے ہیں۔ کچھ دنوں کے لئے اتنا فرق ضرور ہو گیا کہ ہند اور ہندستان نام یونین کے 'دفتری' نام نہ ہونے کے کارن کسی ٹکڑے کے نام نہیں ہیں۔ سرکاریں ایک ہوں یا دو یا ادھک، اور پہلے بھی اس دیش میں صدیوں کئی کئی آزاد سرکاریں رہی ہیں۔ پر ہمارے لئے دیش ایک ہے اور ایک رہے گا۔ اس لئے ہند یا ہندستان کا مطلب اب اور صاف

साफ़ है वह पूरा देश जिसमें भारत और पाकिस्तान दोनों शामिल हैं.

"नयाहिन्द" का हमेशा यही आदर्श रहा है और रहेगा.

२६-९-४९ सुन्दरलाल

अेक खुलासा

सेवाग्राम संमेलन के बाद निर्वासितों की सेवा के लिये हम लोग दिल्ली चल पड़े. तब से अभी तक, हम से जो कुछ हो सकता था करने की हमारी कोशिश रही है. अभी चंदरोज़ पहिले कल्याण केम्प के और बंबअी अुपनगर के सिंधी निर्वासितों में, मैं हो आया. और आगे भी जब वह चाहेंगे वहां पहुंचने का अुन्हें आश्वासन दे आया हूँ.

अिस काम को करते हुअे बीच में मेवों का काम आ पड़ा जो टालना मेरे लिये असंभव था. वह भी सर्वथा परित्यक्त थे, और अुनको फिर से बसाना बापू का अवशिष्ट काम था. वैसे निर्वासितों के काम की तुलना में यह अेक छोटा सा काम था, और ख़याल था कि अल्प काल में ही यह निपट जायगा. लेकिन जातीय-वैमनस्य के कारण वैसा नहीं होना था. अुसने दीर्घ काल लिया, और अब यद्यपि समाप्ति पर आया है तथापि पुच्छ बाक़ी है. और अभी कह नहीं सकते हैं कि यह पुच्छ कितना लंबा चलेगा,

अिस में जो कुछ प्रयास करना पड़ा अुसमें मुख्य चिंता यही रही कि किसी भी हालत में मेवों से कोअी अत्याचारी कार्य न हो. अुनमें काम करने के लिये जिन कार्यकर्ताओं की योजना की गयी थी वह परखे हुअे, पूरे प्रेमी थे. अुनके संपर्क, अुपदेश, और प्रयत्नों से मेवों के हाथ से कोअी अुल्लेखनीय अतिक्रमण नहीं हुआ, यह मेरे लिये अेक बहुत समाधान की बात हुअी है. अुसी के परिणाम स्वरूप, और सर्व सामान्य देश परिस्थिति सुधर जाने के कारण, मेव कुछ बसाये जा सके हैं.

صاف ہے وہ پورا دیش جس میں بھارت اور پاکستان دونوں شامل ہیں۔

"نیا ہند" کا ہمیشہ یہی آدرش رہا ہے اور رہے گا۔

۴۹-۹-۲۳ سندر لال

ایک خلاصہ

سیواگرام سمیلن کے بعد نرواستوں کی سیوا کے لئے ہم لوگ دلی چل پڑے۔ تب سے ابھی تک، ہم سے جو کچھ ہو سکتا تھا کرنے کی ہماری کوشش رہی ہے۔ ابھی چند روز پہلے کلیان کیمپ کے اور بمبئی اپ نگر کے سندھی نرواستوں میں، میں ہو آیا۔ اور آگے بھی جب وہ چاہیں گے وہاں پہنچنے کا انھیں آشواشن دے آیا ہوں۔

اس کام کو کرتے ہوئے بیچ میں میوؤں کا کام آ پڑا جو ٹالنا میرے لئے اسنبھو تھا۔ وہ بھی سروتھا پریتکت تھے، اور اُن کو پھر سے بسانا باپو کا اوشِشٹ کام تھا، اور خیال تھا کہ الپ کال میں ہی یہ نپٹ جائے گا۔ لیکن جاتیہ ویمنسیہ کے کارن ویسا نہیں ہونا تھا۔ اُس نے دردھ کال لیا، اور اب یدیپی سماپتی پر آیا ہے تتھاپی پچھ باقی ہے۔ اور ابھی کہہ نہیں سکتے ہیں کہ یہ پچھ کتنا لمبا چلے گا۔

اس میں جو کچھ پریاس کرنا پڑا اُس میں مکھیہ چنتا یہی رہی کہ کسی بھی حالت میں میوؤں سے کوئی اتیاچاری کاریہ نہ ہو۔ اُن میں کام کرنے کے لئے جن کاریہ کرتاؤں کی یوجنا کی گئی تھی وہ پرکھے ہوئے، پورے پریمی تھے۔ اُن کے سمپرک، اُپدیش اور پریتنوں سے میوؤں کے ہاتھ سے کوئی اُلیکھنیہ اتی کرمن نہیں ہوا، یہ میرے لئے ایک بہت سمادھان کی بات ہوئی ہے۔ اُسی کے پرنام سوروپ، اور سروسامانیہ دیش پرستھتی سدھر جانے کے کارن، میو کچھ بسائے جا سکے ہیں۔

अिसमें मैंने देखा है कि वहां के हिंदुओं को भी खुशी हुअी और अुनके और मेवों के स्नेह संबंध पहिले जैसे बन गये. लेकिन अिसका अेक दूसरा स्वाभाविक परिणाम हुआ है, जिससे कुछ आर्यसमाजियों और सनातनी वृत्ति के लोगों का चित्त-क्षोभ सा हुआ है. दंगे के दिनों में मुसलमान वहाँ से भगाये गये थे. लेकिन अुनमें से जिन्होंने भय के मारे धर्मांतर कर लिया, अुनको वहां रहने दिया गया. अुनमें से कुछ लोग, अब, धीरे धीरे परिस्थिति पूर्ववत् होने के कारण, फिर से जाहिरा तौर पर नमाज आदि पढ़ने लगे हैं. अुन दिनों भी वह छुपे छुपे नमाज पढ़ते थे. 'दिन को हिंदू, रात को मुसलमान !' अैसी अुनकी संज्ञा थी. अब वह 'दिन को भी मुसलमान' हो रहे हैं. सब की यह बात नहीं है, कुछ लोगों की है. कुछ ने तो, जो अेक बार भेष बदला था सो बदला. क्यों कि आखिर वह हिंदुओं से बहुत भिन्न थे अैसी तो बात नहीं है. लेकिन दूसरे अब फिर से वेषांतर कर रहे हैं, जिससे सनातनियों का धैर्य-भंग हुआ है, और अुन्होंने, यह मानकर कि यह सारा हमारे कार्यकर्त्ताओं के कारण हुआ है, अुन की शिकायत करना शुरू किया है. खास करके आर्यसमाजियों ने हिंदुस्तान भर की अपनी बहुत सारी शाखाओं की ओर से अेक ही नमूने के विरोधी पत्रक नेताओं के पास भिजवाये हैं. और कुछ लोगों न मुझपर अिस्लाम-पक्षपाती होने का भी आरोप किया है.

अिस विषय में मुझे अितना ही कहना है कि हमें अिस धर्मांतर, प्रति-धर्मांतर, और प्रति-प्रति-धर्मांतर आदि में कोअी दिलचस्पी नहीं है. हम तो सिर्फ दुखितों की सेवा करना चाहते हैं. और अुनके दुख मिटाने में अगर कुछ मदद हो सकती है तो करना चाहते हैं. कुछ लोगों ने यह भी आक्षेप किया है कि अगर अिनको दुखितों की सेवा करनी थी तो यह मुसलमानों को ही सेवा मे क्यों लग गये ? अिसका अुत्तर अितना ही है कि यह गलत-खयाल है.

اِس میں میں نے دیکھا ہے کہ وہاں کے ہندؤں کو بھی خوشی ہوئی اور اُن کے اور میوؤں کے سنیہ سمبندھ پہلے جیسے بن گئے. لیکن اس کا ایک دوسرا سوابھاوک پرنام ہوا ہے، جس سے کچھ آریہ سماجیوں اور سناتنی ورتی کے لوگوں کا چت چھوبھ سا ہوا ہے. دنگے کے دنوں میں مسلمان وہاں سے بھگائے گئے تھے. لیکن اُن میں سے جنھوں نے بھیہ کے مارے دھرمانتر کر لیا، اُن کو وہاں رہنے دیا گیا. اُن میں سے کچھ لوگ، اب، دھیرے دھیرے پرستھت پوروت ہونے کے کارن، پھر سے ظاہرا طور پر نماز آدی پڑھنے لگے ہیں. اُن دنوں بھی وہ چھپے چھپے نماز پڑھتے تھے. 'دن کو ہندو، رات کو مسلمان !' ایسی اُن کی سنگیا تھی. اب وہ 'دن کو بھی مسلمان' ہو رہے ہیں. سب کی یہ بات نہیں ہے، کچھ لوگوں کی ہے. کچھ نے تو، جو ایک بار بھیش بدلا تھا سو بدلا. کیونکہ آخر وہ ہندوؤں سے بہت بھِن تھے ایسی تو بات نہیں ہے. لیکن دوسرے اب پھر سے ویشانتر کر رہے ہیں، جس سے سناتنیوں کا دھیریہ بھنگ ہوا ہے، اور انھوں نے، یہ مان کر کہ یہ سارا ہمارے کاریہ کرتاؤں کے کارن ہوا ہے، اُن کی شکایت کرنا شروع کیا ہے. خاص کر کے آریہ سماجیوں نے ہندستان بھر کی اپنی بہت ساری شاکھاؤں کی اُور سے ایک ہی نمونے کے وردھی پترک نیتاؤں کے پاس بھجوائے ہیں. اور کچھ لوگوں نے مجھ پر اسلام پکشپاتی ہونے کا بھی آروپ کیا ہے.

اِس وشے میں مجھے اتنا ہی کہنا ہے کہ ہمیں اس دھرمانتر، پرتی دھرمانتر، اور پرتی پرتی دھرمانتر آدی میں کوئی دلچسپی نہیں ہے. ہم تو صرف دُکھتوں کی سیوا کرنا چاہتے ہیں. اور اُن کے دُکھ مٹانے میں اگر کچھ مدد ہو سکتی ہے تو کرنا چاہتے ہیں. کچھ لوگوں نے یہ بھی آکشیپ کیا ہے کہ اگر اُن کو دُکھیوں کی سیوا کرنی تھی تو یہ مسلمانوں کی ہی سیوا میں کیوں [illegible]

हमारे सेवक जो अभी मेवों की सेवा में काम कर रहे हैं, पहिले निर्वासितों की सेवा में लगे हुओ थे. बीच में यह दूसरा काम आ गया तो अुनको अिधर आना पड़ा. हमारे दूसरे कअी सेवक आज भी निर्वासितों की सेवा में लगे हुओ हैं. दुखितों में हम जाति-भेद नहीं पहचानते.

मेरे बारे में मैं अपने आर्यसमाजी मित्रों को अेक बात कहना चाहता हूँ. अुनके और मेरे छोटे मोटे जो भी मतभेद हों, अेक वस्तु और जो बहुत ही महत्व की है, हम दोनों में समान है. वह है वेदों की भक्ति. अिसलिये अपने समान-धर्मा के विषय में अुन्हें व्यर्थ गलतफ़हमी में नहीं पड़ना चाहिये. समझना चाहिये कि मेरे जैसा वेदों का अुपासक वेद-विरोधी काम नहीं करेगा. अगर वह अैसा विश्वास रखेंगे तो कुछ खोअेंगे नहीं.

महिलाश्रम. वर्धा. विनोबा
ता. ९-९-४९

श्री विनोबा भावे का यह लेख हमने सितम्बर मास के 'सर्वोदय' से लिया है. हाल में दिल्ली में एक आम जलसे में मुक़ामी आर्य समाज के एक जिम्मेदार पदाधिकारी ने हमसे भी शिकायत की कि विनोबा जी या उनके आदमियों ने कुछ ऐसे मेवों को, जो बाजाप्ता मुसलमान से हिन्दू हो गये थे, 'ज़बरदस्ती' फिर से उनकी चोटियाँ काट कर मुसलमान कर लिया. हमने वहीं इस शिकायत को ग़लत बताया था और सवाल करने वाले भाई को सलाह दी कि वह भाई घनश्याम सिंह जी गुप्त जैसे किसी विश्वस्त आर्य-समाजी नेता से इस मामले की जांच करावें. हमने उन्हें यह भी बताया कि असली बात क्या थी. बात यह थी कि दंगों के दिनों में जब बहुत से मुसलमान मेवात से और दूसरे इलाक़ों से अपने घर द्वार छोड़ छोड़ कर भाग रहे थे, तो उनमें से कुछ जो पीछे रह गये थे,

ہمارے سیوک جو ابھی میووں کی سیوا میں کام کر رہے ہیں، پہلے نرواستوں کی سیوا میں لگے ہوئے تھے۔ بیچ میں یہ دوسرا کام آگیا تو ان کو ادھر آنا پڑا۔ ہمارے دوسرے کئی سیوک آج بھی نرواستوں کی سیوا میں لگے ہوئے ہیں۔ دکھیوں میں ہم جاتی بھید نہیں پہچانتے۔

میرے بارے میں میں اپنے آریہ سماجی متروں کو ایک بات کہنا چاہتا ہوں۔ ان کے اور میرے چھوٹے موٹے جو بھی مت بھید ہوں، ایک وستو اور جو بہت ہی مہتو کی ہے، ہم دونوں میں سمان ہے۔ وہ ہے ویدوں کی بھکتی۔ اس لئے اپنے سمان دھرما کے وشے میں انہیں ویرتھ غلط فہمی میں نہیں پڑنا چاہئے۔ سمجھنا چاہئے کہ میرے جیسا ویدوں کا اپاسک وید ورودھی کام نہیں کرے گا۔ اگر وہ ایسا وشواس رکھیں گے تو کچھ کھوئیں گے نہیں۔

مہلا شرم، وردھا۔ ونوبا
تا. ۹.۹.۴۹

شری ونوبا بھاوے کا یہ لیکھ ہم نے ستمبر ماس کے 'سرودیہ' سے لیا ہے۔ حال میں دلی میں ایک عام جلسے میں مقامی آریہ سماج کے ایک ذمے دار پدادھکاری نے ہم سے بھی شکایت کی کہ ونوبا جی یا ان کے آدمیوں نے کچھ ایسے میووں کو، جو باضابطہ مسلمان سے ہندو ہو گئے تھے، 'زبردستی' پھر سے ان کی چوٹیاں کاٹ کر مسلمان کر لیا۔ ہم نے وہیں اس شکایت کو غلط بتایا تھا اور سوال کرنے والے بھائی کو صلاح دی کہ وہ بھائی گھنشیام سنگھ جی گپت جیسے کسی وشوست آریہ سماجی نیتا سے اس معاملے کی جانچ کرا دیں۔ ہم نے انہیں یہ بھی بتایا کہ اصلی بات کیا تھی۔ بات یہ تھی کہ دنگوں کے دنوں میں جب بہت سے مسلمان میوات سے اور دوسرے علاقوں سے اپنے گھر دوار چھوڑ چھوڑ کر بھاگ رہے تھے، تو ان میں سے کچھ جو پیچھے رہ گئے تھے،

डर के मारे, जान बचाने के लिये चोटियाँ रख कर अपने को हिन्दू कहने लगे. जाहिर है कि उनके दिल बदले नहीं थे. रात बिरात को छुपे छुपे उनमें से कुछ नमाज़ भी पढ़ लेते थे. विनोबा जी और उनके आदमियों ने और ख़ुद हमने भी जगह जगह ऐसे लोगों से यह कहा कि अगर वह विश्वास बदल जाने के कारन हिन्दू हुए हैं, तो वह ख़ुशी से हिन्दू बने रहें, पर यदि डर के कारन ऐसा हुआ है, तो उन्हें अपने दिल से डर निकाल कर फिर से अपने को मुसलमान कहना और वैसे ही बरतना चाहिये. सरकार उनकी पूरी हिफ़ाज़त करेगी. ठीक यही काम सरहद के कई ज़िलों में ख़ुदाई ख़िदमतगार बहुत दिनों तक करते रहे थे. मेवात में जिन जोशीले प्रचारकों ने इन मेवों को हवन करके "शुद्ध" किया था, उन्होंने उन्हें यह कह कर भी समझाया था कि अब ब्राह्मनों का राज है. पं० जवाहर लाल जी ब्राह्मन हैं. तुम हिन्दू बन कर ही यहाँ रह सकते हो, इतनी बात तो "शुद्धि" करने वाले कुछ भाइयों ने कुछ ख़ास प्रतिष्ठित आर्य समाजियों ही के सामने स्वीकार भी की है जाहिर है इस तरह का धर्म परिवर्तन इन्साफ़ नहीं है और न किसी धर्म या समाज का भला कर सकता है. हम आशा करते हैं कि विनोबा जी के इस ख़ुलासे से सब न्याय प्रेमी भाइयों की शंका मिट जावेगी और आगे के लिये धर्म परिवर्तन के काम में लगे हुए सज्जन चाहे वह किसी भी धर्म के हों कम से कम अपने तरीक़ों को ऊँचा, सच्चा और न्याय भरा रखने की कोशिश करेंगे.

सुन्दरलाल

ڈر کے مارے، جان بچانے کے لئے چوٹیاں رکھ کر اپنے کو ہندو کہنے لگے. ظاہر ہے کہ ان کے دل بدلے نہیں تھے. رات برات کو چھپے چھپے ان میں سے کچھ نماز بھی پڑھ لیتے تھے. ونوبا جی اور ان کے آدمیوں نے اور خود ہم نے بھی جگہ جگہ ایسے لوگوں سے یہ کہا کہ اگر وہ وشواس بدل جانے کے کارن ہندو ہوئے ہیں، تو وہ خوشی سے ہندو بنے رہیں. پر یدی ڈر کے کارن ایسا ہوا ہے تو انھیں اپنے دل سے ڈر نکال کر پھر سے اپنے کو مسلمان کہنا اور ویسے ہی برتنا چاہیے. سرکار ان کی پوری حفاظت کرے گی. ٹھیک یہی کام سرحد کے کئی ضلعوں میں خدائی خدمت گار بہت دنوں تک کرتے رہے تھے. میوات میں جن جوشیلے پرچارکوں نے ان میووں کو ہون کر کے "شدھ" کیا تھا، انھوں نے انھیں یہ کہہ کر بھی سمجھایا تھا کہ اب برہمنوں کا راج ہے. پنڈت جواہر لال جی برہمن ہیں. تم ہندو بن کر ہی یہاں رہ سکتے ہو، اتنی بات تو "شدھی" کرنے والے کچھ بھائیوں نے کچھ خاص پرتیشٹھت آریہ سماجیوں ہی کے سامنے سویکار بھی کی ہے. ظاہر ہے اس طرح کا دھرم پریورتن انصاف نہیں ہے اور نہ کسی دھرم یا سماج کا بھلا کر سکتا ہے. ہم آشا کرتے ہیں کہ ونوبا جی کے اس خلاصے سے سب نیائے پریمی بھائیوں کی شنکا مٹ جاوے گی اور آگے کے لئے دھرم پریورتن کے کام میں لگے ہوئے سجن چاہے وہ کسی بھی دھرم کے ہوں کم سے کم اپنے طریقوں کو اونچا، سچا اور نیائے بھرا رکھنے کی کوشش کریں گے.

سندر لال

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—•—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० बिशम्भर नाथ.

—•—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहांगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट, बम्बई.

बम्बई शाख़ को मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

क़ायदे केलिए लिखिए.

सुन्दर लाल
सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी
[illegible] बाई का बाग़, इलाहाबाद.

ہندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندستانی کلچر کا بڑھانا، پھیلانا اور پرچار جس میں سب ہندستانی شامل ہوں۔

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں، اخباروں، رسالوں وغیرہ کا چھاپنا۔

(۳) پڑھائی گھروں، کتاب گھروں، سبھاؤں، کانفرنسوں، لکچروں سے سب دھرموں، جاتوں، برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سر تیج بہادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ۔ ڈاکٹر بھگوان داس؛ سکریٹری — پنڈت سندر لال؛ خزانچی — ڈاکٹر تارا چند۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود، مسٹر عبدالمجید خواجہ، مولوی سید سلیمان ندوی، مسٹر منظر علی سوختہ، شری بی جی کھیر، مسٹر ایس کے رودرا، پنڈت بشمبھر ناتھ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر —

جہانگیر واڈیا بلڈنگ، ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ، فورٹ بمبئی۔

بمبئی شاخ کی منیجنگ کمیٹی کے ممبر —

شری بی - جی - کھیر، شریمتی صوفیا واڈیا، پرنسپل اے - اے - اے فیضی، شری یم - یچ - پکواسا، شریمتی ہنسا مہتا، سید عبداللہ بریلوی، مسٹر کے - وی - شاہ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکھئے۔

سندر لال
سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی
[illegible] بائی کا باغ، الہ آباد

Registered No. A-310.

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت' گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت' قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد' عاقبت' آخرت' جنت' جہنم' کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئیے.

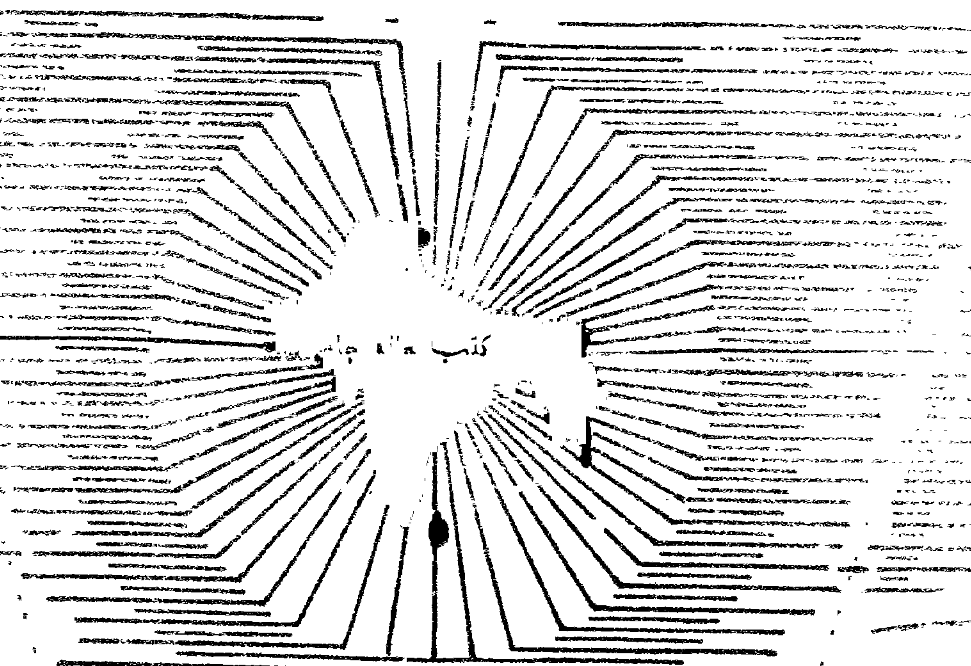
کتاب آسان ھندوستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

منیجر 'نیا ھند'

۴۸ - بائی کا باغ' الٰہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48, Bai-ka-Bagh, Allahabad.

नया हिन्द
نیا ہند



नवम्बर
सन् १९४९
दस आना

نومبر
سنہ ۱۹۴۹ء
دس آنہ

" नया हिन्द "

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुजफ्फर हसन, विश्वम्भरनाथ, सुन्दरलाल

नवम्बर १९४९

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपया साल, बाहर दस रुपया साल
एक परचा दस आने।

मनीजर
'नया हिन्द'
..., बाई का बाग़, इलाहाबाद।

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

... بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھہ' سندر لال'

نومبر ۱۹۴۹

... ہندستان میں چھہ روپیہ سال - باہر دس روپیہ سال
... پرچہ دس آنے

منیجر
'نیا ہند'
... کا باغ' الہ آباد -

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ७ नवम्बर '४६ नम्बर ५

جلد ۷ نومبر ۴۹ نمبر ۵

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

गीत

(भाई मसऊद अशअर)

क्या साजन मुझको भूल गये ?
हाँ लोभी साजन भूल गये .
एक वह दिन था जब इस घर में तुम आशा बन कर आये थे
कुछ नई उमँगें, नई तरंगें, नये तराने लाये थे
कुछ ऐसे वादे भी जिन पर अरमान मेरे इतराये थे
वह समय वह बातें भूल गये !
हाँ लोभी साजन भूल गये !

گیت

(بھائی مسعود اشعر)

کیا ساجن مجھکو بھول گئے؟
ہاں لوبھی ساجن بھول گئے۔
اک وہ دن تھا جب اس گھر میں تم آشا بن کر آئے تھے
کچھ نئی امنگیں، نئی ترنگیں، نئے ترانے لائے تھے
کچھ ایسے وعدے بھی جن پر ارمان مرے اترائے تھے
وہ سمے وہ باتیں بھول گئے!
ہاں لوبھی ساجن بھول گئے!

तुम कहते थे इन आँखों में, अब आँसू कभी न आयेंगे
तुम कहते थे इन होंठों पर, अब शिकवे आ ही न पायेंगे
तुम कहते थे अँधियारे भी सुन्दर सपने बरसायेंगे

वह बीती रातें भूल गये ?
हाँ लोभी साजन भूल गये.

मैं जान गई तुमने साजन जिस कारन आँख चुराई है
हाँ, और कोई है ! और किसी से तुमने पेंग बढ़ाई है
लेकिन साजन कब बुझती है ! जो तुमने जोत जगाई है

इस जोत की घातें भूल गये ?
हाँ साजन शायद भूल गये.

('मख़ज़न' से)

تم کہتے تھے اِن آنکھوں میں، اب آنسو کبھی نہ آئیں گے
تم کہتے تھے اِن ہونٹوں پر، اب شکوے آ ہی نہ پائیں گے
تم کہتے تھے اندھیارے بھی سُندر سپنے برسائیں گے

وہ بیتی راتیں بھول گئے؟
ہاں لوبھی ساجن بھول گئے۔

میں جان گئی تم نے ساجن جس کارن آنکھ چُرائی ہے
ہاں، اور کوئی ہے! اور کسی سے تم نے پینگ بڑھائی ہے
لیکن ساجن کب بُجھتی ہے! جو تم نے جوت جگائی ہے

اِس جوت کی گھاتیں بھول گئے؟
ہاں ساجن شاید بھول گئے۔

(مخزن سے)

पत्रकार गांधी

(भाई श्री कृष्ण दास)

[यह लेख अक्तूबर अंक के लिये लिखा गया था पर देर में मिलने के कारन हम अब छाप रहे हैं.—'हुनर' वास्ते एडीटर.]

महात्मा गांधी को क़ौम का पिता, नेता, सेवक, दुनिया के सब से बड़े इन्सान, की तरह हम जानते हैं. हमारी क़ौमी जिन्दगी का कोई ऐसा हिस्सा न था जिसको बदलने और बनाने में बापू का हाथ न रहा हो.

मगर बापू को पत्रकार की हैसियत से जानते हुए भी हमने यह अच्छी तरह नहीं समझा कि बापू कितने कामयाब, जोरदार और पहुँचे हुए अख़बार नवीस थे.

जिस समय दक्खिन अफ्रीक़ा में महात्मा जी ने जन सेवा का काम शुरू किया उसी समय उन्होंने अच्छी तरह समझ लिया था कि बिना कामयाब प्रचार के अपनी बातों को जनता और शासकों तक पहुँचाना कठिन होगा. इसलिये गांधी जी ने शुरू ही से अख़बार निकालने और उसे एक ख़ास ढंग से चलाने पर जोर दिया.

गांधी जी अंग्रेजी बहुत अच्छी लिखते और बोलते थे. अंग्रेजी पर उनको इतना अधिकार था कि बड़े बड़े अंग्रेजी लेखक भी उनके आगे माथा झुका देते थे. सीधी सरल अंग्रेजी ही गांधी जी की अपनी शैली थी. मुहावरों के तो वह राजा थे. ख़ूबी यह थी कि उन्होंने हिन्दुस्तानी मुहावरों को भी बड़ी अच्छी अंग्रेजी में तरजुमा करके

پترکار گاندھی

(بھائی شری کرشن داس)

[یہ لیکھ اکتوبر انک کیلئے لکھا گیا تھا پر دیر میں ملنے کے کارن ہم اب چھاپ رہے ہیں۔ 'ہنر' واسطے ایڈیٹر۔]

مہاتما گاندھی کو قوم کا پتا، نیتا، سیوک، دنیا کے سب سے بڑے انسان، کی طرح ہم جانتے ہیں۔ ہماری قومی زندگی کا کوئی ایسا حصہ نہ تھا جس کو بدلنے اور بنانے میں باپو کا ہاتھ نہ رہا ہو۔

مگر باپو کو پترکار کی حیثیت سے جانتے ہوئے بھی ہم نے یہ اچھی طرح نہیں سمجھا کہ باپو کتنے کامیاب، زوردار اور پہنچے ہوئے اخبار نویس تھے۔

جس سمے دکھن افریقہ میں مہاتما جی نے جن سیوا کا کام شروع کیا اُسی سمے اُنھوں نے اچھی طرح سمجھ لیا تھا کہ بنا کامیاب پرچار کے اپنی باتوں کو جنتا اور شاسکوں تک پہنچانا کٹھن ہوگا۔ اس لئے گاندھی جی نے شروع ہی سے اخبار نکالنے اور اُسے ایک خاص ڈھنگ سے چلانے پر زور دیا۔

گاندھی جی انگریزی بہت اچھی لکھتے اور بولتے تھے۔ انگریزی پر اُن کو اتنا ادھیکار تھا کہ بڑے بڑے انگریزی لیکھک بھی اُنکے آگے ماتھا جھکا دیتے تھے۔ سیدھی سرل انگریزی ہی گاندھی جی کی اپنی شیلی تھی۔ محاوروں کے تو وہ راجہ تھے۔ خوبی یہ تھی کہ اُنھوں نے ہندستانی محاوروں کو بھی بڑی اچھی انگریزی میں ترجمہ کرکے

इस्तेमाल किया. बापू ने जिन मुहावरों और चुभते टुकड़ों का दान अंग्रेज़ी भाषा को दिया उन्हें पाकर अंग्रेज़ी भाषा धन्य हो गई.

अपनी इसी सरल, चुस्त, मुहावरे दार अंग्रेज़ी को वह अपने अखबारों में लिखा करते थे. डरबन में, फ़िनिक्स में, तालस्ताय आश्रम में, जहां कहीं भी गांधी जी रहे उनका लिखना-पढ़ना चलता रहा. नव जीवन, यंग इण्डिया वग़ैरा गांधी जी के ऐसे अखबार थे जिन्हें लोग धर्म पुस्तकों की तरह पढ़ते, धुनते और गुनते थे. इन्हीं अखबारों के ज़रिये गांधी जी अपनी बातें लोगों तक पहुँचाते थे. बाद में, हरिजन, अँग्रेज़ी हिन्दी, उर्दू और गुजराती में निकलने लगा. हरिजन की हज़ारों प्रतियां वैसे ही श्रद्धा के साथ जनता के घरों में स्थान पातीं थीं जैसे गीता और क़ुरान. और हरिजन के लेख, सम्पादकी नोट, सवाल-जवाब के कालम और चिट्ठियां हमारे पास हमेशा नई रोशनी, नया भरोसा और विश्वास, नई ताक़त और हिम्मत और नया उत्साह लेकर आते थे.

आख़िर उस हरिजन में क्या जादू रहता था ? हरिजन का सब से बड़ा जादू यह था कि उसके पीछे युग के सबसे बड़े इन्सान की आवाज़, बुद्धि, ज्ञान, सूझ-बूझ, राजनीति, आदर्श, सिद्धान्त, प्रोग्राम, रहबरी—सब कुछ छिपी रहती थी. हरिजन की सतरों में गांधी जी का ज्ञान पिरोया रहता था. हरिजन के शब्दों से गांधी जी की वाणी बोलती थी, हरिजन के पन्नों से गांधी जी की आत्मा झाँकती थी. हरिजन महात्मा जी के महान व्यक्तित्व का ही एक रूप था. इसी लिये हरिजन सब को इतना प्यारा था.

यही नहीं, जनता और गांधी-भक्त हिन्दुस्तानियों के अलावा,

استعمال کیا۔ باپو نے جن محاوروں، اور چبھتے ٹکڑوں کا دان انگریزی بھاشا کو دیا اُنھیں پاکر انگریزی بھاشا دھنیہ ہوگئی۔

اپنی اسی سرل، چُست، محاورے دار انگریزی کو وہ اپنے اخباروں میں لکھا کرتے تھے۔ ڈربن میں، فینکس میں، تالستائے آشرم میں، جہاں کہیں بھی گاندھی جی رہے اُن کا لکھنا پڑھنا چلتا رہا۔ نو جیون، ینگ انڈیا وغیرہ گاندھی جی کے ایسے اخبار تھے جنھیں لوگ دھرم پستکوں کی طرح پڑھتے، دُھنتے اور گُنتے تھے۔ انھیں اخباروں کے ذریعے گاندھی جی اپنی باتیں لوگوں تک پہنچاتے تھے۔ بعد میں ہریجن، انگریزی، ہندی، اردو اور گجراتی میں نکلنے لگا۔ ہریجن کی ہزاروں پرتیاں ویسے ہی شردھا کے ساتھ جنتا کے گھروں میں ستھان پاتی تھیں جیسے گیتا اور قرآن۔ اور ہریجن کے لیکھ، سمپادکی نوٹ، سوال جواب کے کالم اور چٹھیاں ہمارے پاس ہمیشہ نئی روشنی، نیا بھروسہ اور وشواس، نئی طاقت اور ہمت اور نیا اُتساہ لے کر آتے تھے۔

آخر اُس ہریجن میں کیا جادو رہتا تھا؟ ہریجن کا سب سے بڑا جادو یہ تھا کہ اُس کے پیچھے یُگ کے سب سے بڑے انسان کی آواز، بدّھی، گیان، سوجھ بوجھ، راج نیتی، آدرش، سدھانت، پروگرام، رہبری — سب کچھ چھپی رہتی تھی۔ ہریجن کی سطروں میں گاندھی جی کا گیان پرویا رہتا تھا۔ ہریجن کے شبدوں سے گاندھی جی کی بانی بولتی تھی، ہریجن کے پنّوں سے گاندھی جی کی آتما جھانکتی تھی۔ ہریجن مہاتما جی کے مہان ویکتتو کا ہی ایک روپ تھا۔ اسی لئے ہریجن سب کو اتنا پیارا تھا۔

یہی نہیں، جنتا اور گاندھی بھگت ہندستانیوں کے علاوہ،

अँग्रेजी सरकार और देश विदेश के व्यापारी, पूंजी पति भी हरिजन से हमेशा चौकन्ना रहते थे. हरिजन के एक नोट का अर्थ था देश भर में इस कोने से उस कोने तक उथल-पुथल. चाहे राजनैतिक मसला हो, चाहे आर्थिक समस्या, चाहे सत्याग्रह और सिविल नाफ़रमानी—हरिजन के समाचार और हरिजन की राय हमेशा इतनी पायदार, वज़नी और पुर असर होती थी कि उससे सभी घबराते थे.

सन् १९४२ की गर्मियों में जब कि दिल्ली में अप्रैल में कांग्रेस वर्किंग कमेटी की मीटिंग हुई और बाद में मई के महीने में इलाहाबाद में कुल हिन्द कांगरेस कमेटी का इजलास हुआ तब से लेकर ९ अगस्त १९४२ तक जब कि गांधी जी गिरफ़्तार हुए, हरिजन के लेखों ने दुनिया भर के राजनीतिज्ञों और शासकों को किस तरह झकझोर दिया था, यह हमें अभी तक याद है.

वर्धा में बैठे हुए, आठ पन्ने के अख़बार के ज़रिये, गांधी जी ने सारी ब्रिटिश सरकार के प्रोपेगैण्डे को ख़त्म कर दिया था और हिन्दुस्तान की जनता को रास्ता दिखाया था, उसका मनोबल मज़बूत किया था, उसे 'कर मिट या मर मिट' का पाठ पढ़ा कर एक महान क्रान्ति करने के लिये तैयार कर दिया था. उन लेखों में कितना बल था, कितना ओज था, कितना प्रभाव था, कितनी आग थी, कितनी साफ़ गोई थी.

क्रिप्स का भण्डाफोड़ गांधी जी के हरिजन ने ही किया था, भूखा बंगाल और दूसरी समस्याओं पर गांधी जी के हरिजन ने देश को सही रास्ता दिखाया था, दंगों के ज़माने में—जब कि सारा देश घोर अंधेरे में, अपने ही भाइयों के ख़ून-मांस की कीचड़ में

انگریزی سرکار اور دیش بدیش کے بیوپاری، پونجی پتی بھی ہریجن سے ہمیشہ چوکنّا رہتے تھے۔ ہریجن کے ایک نوٹ کا ارتھ تھا دیش بھر میں اس کونے سے اُس کونے تک اُتھل پتھل۔ چاہے راج نیتک مسئلہ ہو، چاہے آرتھک سمسیا، چاہے ستیاگرہ اور سول نافرمانی—ہریجن کے سماچار اور ہریجن کی رائے ہمیشہ اتنی پائیدار، وزنی اور پُر اثر ہوتی تھی کہ اُس سے سبھی گھبراتے تھے۔

سنہ ۱۹۴۲ کی گرمیوں میں جب کہ دِلّی میں اپریل میں کانگریس ورکنگ کمیٹی کی میٹنگ ہوئی اور بعد میں مئی کے مہینے میں الٰہ آباد میں کُل ہند کانگریس کمیٹی کا اجلاس ہوا تب سے لیکر ۹ اگست ۱۹۴۲ تک جب کہ گاندھی جی گرفتار ہوئے، ہریجن کے لیکھوں نے دُنیا بھر کے راج نیتکوں اور شاسکوں کو کس طرح جھنجھوڑ دیا تھا، یہ ہمیں ابھی تک یاد ہے۔

وردھا میں بیٹھے ہوئے، آٹھ پنّے کے اخبار کے ذریعے، گاندھی جی نے ساری برٹش سرکار کے پروپیگنڈے کو ختم کر دیا تھا اور ہندستان کی جنتا کو راستہ دکھایا تھا، اُس کا منوبل مضبوط کیا تھا، اُسے 'کر مِٹ یا مر مِٹ' کا پاٹھ پڑھا کر ایک مہان کرانتی کرنے کے لئے تیار کر دیا تھا۔ اُن لیکھوں میں کتنا بل تھا، کتنا اوج تھا، کتنا پربھاؤ تھا، کتنی آگ تھی، کتنی صاف گوئی تھی۔

کرپس کا بھنڈا پھوڑ گاندھی جی کے ہریجن نے ہی کیا تھا، بھوکا بنگال اور دوسری سمسیاؤں پر گاندھی جی کے ہریجن نے دیش کو صحیح راستہ دکھایا تھا، دنگوں کے زمانے میں—جبکہ سارا دیش گھور اندھیرے میں، اپنے ہی بھائیوں کی خون مانس کی کیچڑ میں

फँस गया था—हरिजन ने ही उम्मीद के चमकदार नूरानी सितारे का काम किया था. हरिजन का पिछले पन्द्रह साल का इतिहास ही देश का राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास रहा है.

हरिजन या दूसरे ऐसे अखबारों की चर्चा करते समय, हालाँकि हम भाई महादेव देसाई, प्यारेलाल, किशोरलाल घनश्यामदास मश्रूवाला, दादा धर्माधिकारी, कुमारप्पा बन्धुओं को नहीं भूल सकते, फिर भी यह तो साफ ही है कि ह[illegible] की आत्मा तो महात्मा गांधी ही थे.

महात्मा गांधी के सारे पत्र समाचार पत्र [illegible]म थे विचार-पत्र अधिक थे. उनमें विज्ञापन नहीं रहते थे, [illegible]नमें किसी भी पूंजी पति का स्वार्थ या धन लगा रहता था. इ[illegible]लिये उनमें प्रकट किये गये विचार निर्भीर, निडर और तेज विचार रहा करते थे. गांधी जी न तो अपने को बख्शते थे, न अपने सहकारियों को. अपने देशवासियों की ग़लतियां बताने में वह निर्मम डाक्टर की तरह सख्त थे. सरकार और देश द्रोहियों के साथ चाहे वह भले ही कुछ [illegible] का बर्ताव कर लें, मगर वह अपने साथियों को कभी नहीं [illegible]

इसलिये महात्माजी का हरिजन चिरायता [illegible] होते हुए भी देश की समाजी और राजनैतिक [illegible] हमेशा बहुत कारगर साबित हुआ.

महात्मा जी अपने अखबार को अपने विचारों के प्रचा[र] साधन और अपने संघर्षों में सफलता पाने के लिये हथियार की तरह इस्तेमाल करते थे. और कितना पैना, कितना तेज, कितना चोट करने वाला था वह हथियार !

پھنس گیا تھا — ہریجن نے ہی اُمید کے چمکدار نورانی ستارے کا کام کیا تھا۔ ہریجن کا پچھلے پندرہ سال کا اتہاس ہی دیش کا راج نیتک، آرتھک اور سانسکرتک اتہاس رہا ہے۔

ہریجن یا دوسرے ایسے اخباروں کی چرچا کرتے سمے، حالانکہ ہم بھائی مہادیو دیسائی، پیارے لال، کشور لال گھنشیام داس مشروالا، دادا دھرمادھیکاری، کمارپا بندھوؤں کو نہیں بھول سکتے پھر بھی یہ تو صاف ہی ہے کہ ہریجن کی آتما تو مہاتما گاندھی ہی تھے۔

مہاتما گاندھی کے سارے پتر سماچار پتر تو کم تھے وچار پتر ادھک تھے۔ اُن میں وگیاپن نہیں رہتے تھے، نہ اُن میں کسی بھی پونجی پتی کا سوارتھ یا دھن لگا رہتا تھا۔ اس لئے اُن میں پرکٹ کئے گئے وچار نربھر، نڈر اور تیز وچار رہا کرتے تھے۔ گاندھی جی نہ تو اپنے کو بخشتے تھے، نہ اپنے سہکاریوں کو۔ اپنے دیش واسیوں کی غلطیاں بتانے میں وہ نرمم ڈاکٹر کی طرح سخت تھے۔ سرکار اور دیش دروہیوں کے ساتھ چاہے وہ بھلے ہی کچھ نرمی کا برتاؤ کریں، مگر وہ اپنے ساتھیوں کو کبھی نہیں چھوڑتے تھے۔

اس لئے مہاتما جی کا ہریجن چرائتا کی طرح کڑوا ہوتے ہوئے بھی دیش کی سماجی اور راج نیتک تندرستی کے لئے ہمیشہ بہت کارگر ثابت ہوا۔

مہاتما جی اپنے اخبار کو اپنے وچاروں کے پرچار کا سادھن اور اپنے سنگھرشوں میں سپھلتا پانے کے لئے ہتھیار کی طرح استعمال کرتے تھے۔ اور کتنا پینا، کتنا تیز، کتنا چوٹ کرنے والا تھا وہ ہتھیار!

गांधी जी के पास कोई बड़ा प्रेस न था, न प्रेस के नये आधुनिक साधन थे. उनके अखबार में तस्वीरें नहीं छपती थीं, न बढ़ा चढ़ा कर सनसनी फैलाने वाली खबरें ही उसमें जगह पाती थीं. फिर भी हरिजन हर दिल अजीज़ था. लोग उसकी क़द्र करते थे. उसे देख और पढ़ पाने के लिये उतावले रहा करते थे. हरिजन अखबार अखबार नहीं एक संस्था बन गया था.

हमने कहा है कि हरिजन समाचार पत्र नहीं विचार पत्र था. इसका अर्थ यह है कि हरिजन को सिर्फ़ उनका प्यारा बनना चाहिये था जो गांधीवादी थे और गांधी जी की विचार धारा को मानते थे. मगर बात यह नहीं थी. अक्सर हरिजन ऐसे लोगों के हाथों में दिखाई देता था जो सिर्फ़ उसकी अँग्रेज़ी के लिये उसे पढ़ते थे और अपने बच्चों को पढ़ाते थे. ऐसे भी लोग थे जो हरिजन से गांधी जी के लेखों को लेकर कोर्स की किताबों में रख देते थे जिससे बच्चे उसे पढ़ें और अच्छी अंग्रेज़ी लिखना सीखें.

जहाँ तक गांधी जी के विचारों का सम्बन्ध है, उसके बारे में क्या लिखा जाय. हरिजन के हर जुमले और हर पैरा में गांधी जी के विचार ही तो रहते थे. उन विचारों की क़ीमत का अन्दाज़ तब लगता है जब उनके असर को देखा जाय. जब पहिली बार सर स्टेफ़र्ड क्रिप्स अपने प्रस्ताव लेकर आये तो गांधी जी ने सिर्फ़ एक टुकड़ा लिखा था: "यह प्रस्ताव टूटते हुए बैंक का ऐसा चेक है जिस पर अगली तारीख़ पड़ी है." गांधी जी के इस टुकड़े ने क्रिप्स के प्रस्तावों को ऐसा उखाड़ दिया कि क्रिप्स को हिन्दुस्तान छोड़कर भागते ही बना. इस तरह के हज़ारों टुकड़े हरिजन के कालमों में

گاندھی جی کے پاس کوئی بڑا پریس نہیں تھا، نہ پریس کے نئے آدھونک سادھن تھے. اُن کے اخبار میں تصویریں نہیں چھپتی تھیں نہ بڑھا چڑھا کر سنسنی پھیلانے والی خبریں ہی اُس میں جگہ پاتی تھیں. پھر بھی ہریجن ہر دل عزیز تھا. لوگ اُس کی قدر کرتے تھے. اُسے دیکھ اور پڑھ پانے کے لئے اُتاولے رہا کرتے تھے. ہریجن اخبار اخبار نہیں ایک سنستھا بن گیا تھا.

ہم نے کہا ہے کہ ہریجن سماچار پتر نہیں وچار پتر تھا. اس کا ارتھ یہ ہے کہ ہریجن کو صرف اُن کا پیارا بننا چاہئے تھا جو گاندھی وادی تھے اور گاندھی جی کی وچار دھارا کو مانتے تھے. مگر بات یہ نہیں تھی. اکثر ہریجن ایسے لوگوں کے ہاتھوں میں دکھائی دیتا تھا جو صرف اُس کی انگریزی کے لئے اُسے پڑھتے تھے اور اپنے بچوں کو پڑھاتے تھے. ایسے بھی لوگ تھے جو ہریجن سے گاندھی جی کے لیکھوں کو لیکر کورس کی کتابوں میں رکھ دیتے تھے جس سے بچے اُسے پڑھیں اور اچھی انگریزی لکھنا سیکھیں.

جہاں تک گاندھی جی کے وچاروں کا سمبندھ ہے، اُس کے بارے میں کیا لکھا جائے. ہریجن کے ہر جملے اور ہر پیرا میں گاندھی جی کے وچار ہی تو رہتے تھے. اُن وچاروں کی قیمت کا انداز تب لگتا ہے جب اُن کے اثر کو دیکھا جائے. جب پہلی بار سر اسٹیفرڈ کرپس اپنے پرستاؤ لیکر آئے تو گاندھی جی نے صرف ایک ٹکڑا لکھا تھا: "یہ پرستاؤ ٹوٹتے ہوئے بینک کا ایسا چیک ہے جس پر اگلی تاریخ پڑی ہے." گاندھی جی کے اس ٹکڑے نے کرپس کے پرستاؤں کو ایسا اُکھاڑ دیا کہ کرپس کو ہندستان چھوڑ کر بھاگتے ہی بنا. اس طرح کے ہزاروں ٹکڑے ہریجن کے کالموں میں

भरे पड़े रहते थे. और यह टुकड़े कितने तेज़ और वज़नी हुआ करते थे, इसका अन्दाज़ आसानी से लगाया जा सकता है.

हरिजन के ज़रिये हिन्दू-मुस्लिम एकता, हरिजन उद्धार, चर्खा प्रचार और रचनात्मक कार्यक्रम के बारे में गांधी जी अपनी सलाह दिया करते थे. इससे बढ़कर उन ख़तों का जवाब रहता था जिन्हें छोटे बच्चे से लेकर बूढ़े तक गांधी जी के पास लिखते रहते थे. देश और विदेश के लोग, समाज सुधारक और राजनैतिक कार्यकर्ता, पत्रकार और लेखक, सहयोगी और विरोधी सभी गांधी जी के पास ख़त लिखा करते थे. ख़तों के विषय भी हर तरह के रहा करते थे. राजनैतिक सवालों से लेकर विवाह-सम्बन्ध और जन्म-कण्ट्रोल तक के सम्बन्ध में गांधी जी से सवाल पूछा जाता था. गांधी जी इन हज़ारों ख़तों का जवाब हरिजन के कालमों में दिया करते थे.

आज भी लोगों को हरिजन की याद बनी है. गांधी जी के बाद आज भी हरिजन निकल रहा है. उसमें वही बेलौसपन और सच्चाई रहती है. हिन्दुस्तान में हरिजन की तरह के अख़बार कितने हैं ! नया हिन्द, हंस, जनयुग वग़ैरा कुछ इने-गिने ही पत्र पत्रिकायें हैं जो विज्ञापनों को नहीं छापते, जो अपने पत्रों को विचार पत्र ही रखते हैं और जिन्हें आर्थिक लाभ की चिन्ता नहीं है. मगर यह आदर्श आज कल के ज़माने में, जब कि अख़बार विचारों के प्रचार के लिये नहीं, धन कमाने, अपने दलों को मज़बूत करने और जनवाद तथा प्रजातन्त्र के नाम पर जनता को धोखा देने के लिये निकलते हैं, नया हिन्द, हंस और जन-युग का उदाहरण

بھرے پڑے رہتے تھے۔ اور یہ ٹکڑے کتنے تیز اور وزنی ہوا کرتے تھے، اِس کا اندازہ آسانی سے لگایا جا سکتا ہے۔

ہریجن کے ذریعے ہندو مسلم ایکتا، ہریجن اُدّھار، چرخہ پرچار اور رچناتمک کاریکرم کے بارے میں گاندھی جی اپنی صلاح دیا کرتے تھے۔ اِس سے بڑھ کر اُن خطوں کا جواب رہتا تھا جنھیں چھوٹے بچّے سے لیکر بوڑھے تک گاندھی جی کے پاس لکھتے رہتے تھے۔ دیش اور ودیش کے لوگ، سماج سُدھارک اور راج نیتک کاریہ کرتا، پترکار اور لیکھک، سہیوگی اور ورودھی سبھی گاندھی جی کے پاس خط لکھا کرتے تھے۔ خطوں کے وِشے بھی ہر طرح کے رہا کرتے تھے۔ راج نیتک سوالوں سے لیکر وِواہ سمبندھ اور جنم کنٹرول تک کے سمبندھ میں گاندھی جی سے سوال پوچھا جاتا تھا۔ گاندھی جی اِن ہزاروں خطوں کا جواب ہریجن کے کالموں میں دیا کرتے تھے۔

آج بھی لوگوں کو ہریجن کی یاد بنی ہے۔ گاندھی جی کے بعد آج بھی ہریجن نکل رہا ہے۔ اُس میں وہی بے لوث پن اور سچائی رہتی ہے۔ ہندستان میں ہریجن کی طرح کے اخبار کتنے ہیں! نیا ہند، ہنس، جن یگ وغیرہ کچھ اِنے گنے ہی پتر پترکائیں ہیں جو وگیاپنوں کو نہیں چھاپتے، جو اپنے پتروں کو وچار پتر ہی رکھتے ہیں اور جنھیں آرتھک لابھ کی چنتا نہیں ہے۔ مگر یہ آدرش آج کل کے زمانے میں، جب کہ اخبار وچاروں کے پرچار کے لئے نہیں، دھن کمانے، اپنے دلوں کو مضبوط کرنے اور جنواد تتھا پرجاتنتر کے نام پر جنتا کو دھوکا دینے کے لئے نکلتے ہیں، نیا ہند، ہنس اور جن یگ کا اُداہرن

आदर्शों की रक्षा का उदाहरण है. गांधी जी की ईमानदारी, सच्चाई और बे लौस पन की परम्परा की रक्षा बहुत हद तक इन पत्रों ने की है, हालांकि इनमें सभी गांधीवादी नहीं हैं. आदर्श और सिद्धान्तों की रक्षा के लिये संसार के सभी सुखों को बलिदान कर देने की परिपाटी अब उठती जा रही है. पत्रकारी व्यवसाय बन चुकी है, वैसी ही जैसे कपड़े की मिलें. आगे आने वाला अमरीकी हमला पत्रकारी की रही सही सच्चाई और सिद्धान्तों का भी खात्मा कर देगा.

आज जब कि देश गांधी जी का जन्म दिन मना रहा है, पत्रकार गांधी का आदर्श हमें बल प्रदान करता है. यंग इण्डिया, नवजीवन, हरिजन जैसे पत्रों के ज़रिये गांधी जी ने हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई लड़ी और जनता को सही मार्ग सुझाया. आज गांधी जी की याद बहुत अधिक आती है. इसलिये कि सच बोलने वाली कोई भी पत्र-पत्रिका अब चल पायेगी इसमें सन्देह होने लगा है. फिर भी, इन्सानियत सिद्धान्तों और सच्चाइयों के बल पर ही अब तक ज़िन्दा रहो है. गांधी जी की पत्रकारी के यह आधार—सच्चाई और सिद्धान्त-प्रेम—ढह नहीं जायेंगे, ढह नहीं सकते. अगर यह सिद्धान्त ढह जायें, अगर यह सिद्धान्त कमज़ोर हो जायें तो फिर इन्सानियत, जम्हूरियत और तरक़्क़ी के लिये कौन से आधार, कौन से साधन रह जायेंगे ?

अख़बारनवीसी पवित्र पेशा रहा है. उसे अपनी पवित्रता क़ायम रखनी ही होगी. अगर ऐसा नहीं होता तो जन-जीवन की क़ीमतों की रक्षा नहीं हो सकती. पत्र और पत्रकार जन-जीवन के

آدرشوں کی رکشا کا اُداہرن ہے۔ گاندھی جی کی ایمانداری، سچائی اور بے لوث پن کی پرمپرا کی رکشا بہت حد تک ان پتروں نے کی ہے، حالانکہ ان میں سبھی گاندھی وادی نہیں ہیں۔ آدرش اور سدھانتوں کی رکشا کے لئے سنسار کے سبھی سکھوں کو بلیدان کر دینے کی پرپاٹی اب اُٹھتی جا رہی ہے۔ پترکاری ویوسائے بن چکی ہے، ویسی ہی جیسے کپڑے کی ملیں۔ آگے آنے والا امریکی حملہ پترکاری کی رہی سہی سچائی اور سدھانتوں کا بھی خاتمہ کر دے گا۔

آج جب کہ دیش گاندھی جی کا جنم دن منا رہا ہے، پترکار گاندھی کا آدرش ہمیں بل پردان کرتا ہے۔ ینگ انڈیا، نوجیون، ہریجن جیسے پتروں کے ذریعے گاندھی جی نے ہندوستان کی آزادی کی لڑائی لڑی اور جنتا کو صحیح مارگ سجھایا۔ آج گاندھی جی کی یاد بہت ادھک آتی ہے۔ اس لئے کہ سچ بولنے والی کوئی بھی پتر پترکا اب چل پائے گی اس میں سندیہہ ہونے لگا ہے۔ پھر بھی، انسانیت سدھانتوں اور سچائیوں کے بل پر ہی اب تک زندہ رہی ہے۔ گاندھی جی کی پترکاری کے یہ آدھار — سچائی اور سدھانت پریم — ڈھ نہیں جائیں گے، ڈھ نہیں سکتے۔ اگر یہ سدھانت ڈھ جائیں، اگر یہ سدھانت کمزور ہو جائیں تو پھر انسانیت، جمہوریت اور ترقی کے لئے کون سے آدھار، کون سے سادھن رہ جائیں گے؟

اخبار نویسی پوتر پیشہ رہا ہے۔ اُسے اپنی پوترتا قائم رکھنی ہی ہوگی۔ اگر ایسا نہیں ہوتا تو جن جیون کی قیمتوں کی رکشا نہیں ہو سکتی۔ پتر اور پترکار جن جیون کے

मूल्यों के सबसे बड़े पहरेदार, जनवाद और जम्हूरियत के सबसे बड़े अलमबरदार और सचाई और अहिंसा के सबसे बड़े पैरोकार रहे हैं.

आज इस पेशे पर और इस पेशे के कार्यकर्ताओं पर मुसीबतों के बादल मंडला रहे हैं. या तो उन्हें धन का लालच देकर खरीदने की कोशिश की जा रही है या उनका मुँह बन्द कर के उनका गला घोंटा जा रहा है. और यह हो रहा है गांधी जी के प्यारे सिद्धान्तों सचाई, न्याय और अहिंसा के नाम पर!

इसलिये गांधी जी के पवित्र जन्म दिवस पर इन पत्रों और पत्रकारों को अच्छी तरह सोचना है कि वह क्या करें. अपने अखबारों और अपने पेशे को पवित्र रखने के लिये जो संघर्ष उन्हें करना पड़ेगा उसके लिये उन्हें बल और प्रेरणा गांधी जी और उनके पत्रकार जीवन से बढ़कर और कहां मिलेगी?

مولیوں کے سب سے بڑے پہرے دار، جنواد اور جمہوریت کے سب سے بڑے علمبردار اور سچائی اور اہنسا کے سب سے بڑے پیروکار رہے ہیں۔

آج اس پیشے پر اور اس پیشے کے کاریہ کرتاؤں پر مصیبتوں کے بادل منڈلا رہے ہیں۔ یا تو انھیں دھن کا لالچ دے کر خریدنے کی کوشش کی جارہی ہے یا اُن کا مُنھ بند کر کے اُن کا گلا گھونٹا جارہا ہے۔ اور یہ ہو رہا ہے گاندھی جی کے پیارے سدھانتوں سچائی، نیائے اور اہنسا کے نام پر!

اِس لئے گاندھی جی کے پوتر جنم دیوس پر اِن پتروں اور پترکاروں کو اچھی طرح سوچنا ہے کہ وہ کیا کریں۔ اپنے اخباروں اور اپنے پیشے کو پوتر رکھنے کے لئے جو سنگھرش انھیں کرنا پڑے گا اُس کے لئے اُنھیں بل اور پریرنا گاندھی جی اور اُن کے پترکار جیون سے بڑھ کر اور کہاں ملے گی؟

शेरशाह

[सेठ गोविन्ददास]

तीसरा अंक

पाँचवा दृश्य

स्थान—चुनार के क़िले में लाड मलिका के कमरे का बरामदा.

समय—रात्रि.

[बरामदे में शमादानों का प्रकाश है. नसीम का पिंजरा गिर पड़ा है. उस पिंजरे पर एक बिल्ला झपट रहा है. नसीम फड़फड़ा रही है. लाड मलिका का दुलहिन के वेष में प्रवेश. बिल्ले की इस लीला को देख, झपट कर वह उसे भगाती है और पिंजरा उठाकर उसे टाँगते हुए कहती है.]

लाड—नसीम ! मैंने.........मैंने तो तेरी जान बिल्ले से बचा दी, लेकिन मुझ.........मुझ पर जो यह नया शेर झपटा है, इससे मुझे कौन.........

[निज़ाम का प्रवेश. लाड की निगाह निज़ाम पर पड़ती है, वह ठिठक कर रह जाती है.]

شیر شاہ

(سیٹھ گووندداس)

تیسرا انک

پانچواں دِرشیہ

ستھان — چُنار کے قلعہ میں لاڈ ملکہ کے کمرے کا برامدا۔

سمے — راتری۔

[برامدے میں شمعدانوں کا پرکاش ہے۔ نسیم کا پنجرہ گر پڑا ہے۔ اس پنجرے پر ایک بلّا جھپٹ رہا ہے۔ نسیم پھڑپھڑا رہی ہے۔ لاڈ ملکہ کا دُلہن کے ویش میں پرویش۔ بلّے کی اس لیلا کو دیکھ، جھپٹ کر وہ اُسے بھگاتی ہے اور پنجرہ اُٹھا کر اُسے ٹانگتے ہوئے کہتی ہے۔]

لاڈ — نسیم! میں نے...... میں نے تو تیری جان بلّے سے بچا دی لیکن مجھ...... مجھ پر جو یہ نیا شیر جھپٹا ہے، اِس سے مجھے کون......

[نظام کا پرویش۔ لاڈ کی نگاہ نظام پر پڑتی ہے۔ وہ ٹھٹھک کر رہ جاتی ہے۔]

लाड—(अत्यन्त आश्चर्य भरे स्वर में) मुसव्विर ! .... मुसव्विर ! तुम कहाँ !'

निज़ाम—(सर झुकाते हुए, भर्राये हुए स्वर में) मुसव्विर नहीं, मैं आपका देवर हूँ, भाभी. भाई जान और आपको इस शादी की मुबारक बाद देने के लिये बिहार शरीफ से हाज़िर हुआ हूँ.

लाड—(ध्यान पूर्वक निज़ाम को देखते हुए, उसी प्रकार के आश्चर्य भरे स्वर में) लेकिन ....लेकिन.........

निज़ाम—(उसी प्रकार झुके हुए और वैसे ही भर्राये हुए स्वर में) आप अपने देवर को दुआ भी न देंगी, भाभी ?

[लाड—कुछ देर उसी प्रकार खड़ी रहती है, उसकी मुद्रा से जान पड़ता है कि उसकी समझ में ही नहीं आता कि वह किसे देख रही है और उसे क्या करना चाहिये.]

निज़ाम—(उसी दशा में और वैसे ही स्वर में) दुआ......... दुआ दीजिये, भाभी.

[लाड के मुख से कुछ नहीं निकलता. वह अपना काँपता हुआ दाहिना हाथ निज़ाम के सर पर रखती है. निज़ाम की आँखों से दो बूँद आँसू लाड के पैरों पर गिरते हैं. वह चौंक पड़ती है. निज़ाम का अपने मुख को छिपाने का प्रयत्न करते हुए शीघ्रता से प्रस्थान. लाड अपने पैरों को देखती है. पैरों पर पड़े हुए आँसुओं को देख वह और भी भौंचक्की सी रह जाती है. एकाएक उसके पैर लड़खड़ाने लगते हैं और वह एक दम से बैठकर अपने दोनों घुटनों के बीच

لاڈ ـــ (اتینت آشچریہ بھرے سور میں) مُصوّر!.........
مُصوّر! تم کہاں !

نظام ـــ (سر جھکاتے ہوئے، بھرّائے ہوئے سور میں) مُصوّر نہیں، میں آپ کا دیور ہوں، بھابھی. بھائی جان اور آپ کو اس شادی کی مبارک باد دینے کے لئے بہار شریف سے حاضر ہوا ہوں.

لاڈ ـــ (دھیان پوروک نظام کو دیکھتے ہوئے، اُسی پرکار کے آشچریہ بھرے سور میں) لیکن........ لیکن......

نظام ـــ (اُسی پرکار جھکے ہوئے اور ویسے ہی بھرّائے ہوئے سور میں) آپ اپنے دیور کو دُعا بھی نہ دیں گی، بھابھی ؟

[لاڈ ـــ کچھ دیر اُسی پرکار کھڑی رہتی ہے. اُسکی مُدرا سے جان پڑتا ہے کہ اُس کی سمجھ میں ہی نہیں آتا کہ وہ کسے دیکھ رہی ہے اور اُسے کیا کرنا چاہیے.]

نظام ـــ (اُسی دشا میں اور ویسے ہی سور میں) دُعا..... دُعا دیجئے، بھابھی.

[لاڈ کے مکھ سے کچھ نہیں نکلتا. وہ اپنا کانپتا ہوا داہنا ہاتھ نظام کے سر پر رکھتی ہے. نظام کی آنکھوں سے دو بوند آنسو لاڈ کے پیروں پر گرتے ہیں. وہ چونک پڑتی ہے. نظام کا اپنے مکھ کو چھپانے کا پریتن کرتے ہوئے شیگھرتا سے پرستھان. لاڈ اپنے پیروں کو دیکھتی ہے. پیروں پر پڑے ہوئے آنسوؤں کو دیکھ وہ اور بھی بھونچکی سی رہ جاتی ہے. ایکایک اس کے پیر لڑکھڑانے لگتے ہیں اور وہ ایک دم سے بیٹھ کر اپنے دونوں گھٹنوں کے بیچ

में अपना मुख छिपा लेती है. उसके हिलते हुए कन्धों से जान पड़ता है कि वह रो रही है.]

लघु—यवनिका

छठवाँ दृश्य

स्थान—चुनार में शेरख़ाँ का कमरा.

समय—दोपहर.

[कमरा उस समय के अन्य कमरों सदृश ही है; उसी प्रकार सजा हुआ. शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं. शेरख़ाँ हुक्का भी पीता जाता है.]

शेरख़ाँ—तो पठानों की मुग़लों से दर्राह में हार हुई ?

ब्रह्मादित्य—जी हाँ. दर्राह में.

शेरख़ाँ—(गम्भीरता से विचारते हुए) पंडित, सुलतान महमूद लोदी अब हमेशा को ख़त्म हो गया. इतना ही नहीं, उसने पठान क़ौम को बहुत बड़ा धक्का पहुँचाया. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) ग़नीमत यही हुई कि इस लड़ाई में हम लोग शामिल नहीं हुए, नहीं तो फिर मुग़लों के निकालने की बात ही ख़त्म हो जाती.

ब्रह्मादित्य—परन्तु युद्ध में सहायता न देने के कारण हमारी अकीर्ति भी कम नहीं हो रही है. लोग कहते हैं पठान आपकी सहायता न मिलने के कारण हारे.

میں اپنا مکھ چھپا لیتی ہے۔ اُس کے ہلتے ہوئے کندھوں سے جان پڑتا ہے کہ وہ رو رہی ہے۔]

لگھو یونیکا

چھٹواں درشیہ

ستھان — چنار میں شیر خاں کا کمرہ۔

سمے — دوپہر

[کمرہ اُس سمے کے انیہ کمروں سدرش ہی ہے؛ اُسی پرکار سجا ہوا۔ شیر خاں اور برہمادتیہ بیٹھے ہوئے بات چیت کر رہے ہیں۔ شیر خاں حقہ بھی پیتا جاتا ہے۔]

شیر خاں — تو پٹھانوں کی مغلوں سے درّاہ میں ہار ہوئی؟

برہمادتیہ — جی ہاں، درّاہ میں۔

شیر خاں — (گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) پنڈت، سلطان محمود لودی اب ہمیشہ کو ختم ہوگیا۔ اتنا ہی نہیں، اُس نے پٹھان قوم کو بہت بڑا دھکا پہنچایا۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) غنیمت یہی ہوئی کہ اس لڑائی میں ہم لوگ شامل نہیں ہوئے، نہیں تو پھر مغلوں کے نکالنے کی بات ہی ختم ہو جاتی۔

برہمادتیہ — پرنتو یدھ میں سہائتا نہ دینے کے کارن ہماری اکیرتی بھی کم نہیں ہو رہی ہے۔ لوگ کہتے ہیں پٹھان آپ کی سہائتا نہ ملنے کے کارن ہارے۔

शेरखाँ—यह तो मैं जानता हूँ. जब लड़ाई चल रही थी तभी, जब यह बातें शुरू थीं, तो जंग खत्म होने पर तो और ज्यादा हो गई होंगी. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) लेकिन मुझे अब इस तरह की बातों की मुतलक़ परवाह नहीं रह गई. मुझे ख़याल है अपने मक़सद का, उसे पूरा करने का. अगर वह पूरा हो गया तो आज जितनी बदनामी है, कल उतनी ही नेकनामी हो जायगी. (धीरे-धीरे धुआँ नाक से निकालता है.)

ब्रह्मादित्य—आपके हृदय के इस धीरे धीरे होने वाले परिवर्तन को देखकर मुझे जितना हर्ष होता है, वह मैं शब्दों में नहीं कह सकता.

शेरखाँ—कैसा रद्दो बदल ?

ब्रह्मादित्य—याद कीजिये उस समय को जब आपने अपनी जागीर छोड़ी थी.

शेरखाँ—(सोचते हुए) अच्छा.

ब्रह्मादित्य—जिस प्रकार की चर्चाओं ने आपसे अपनी पुश्तैनी जागीर छुड़वा दी उसी प्रकार की चर्चायें आज आपके हृदय पर कोई प्रभाव नहीं डाल रही हैं.

शेरखाँ—(गम्भीरता से सोचते हुए) हाँ, यह तो है.

ब्रह्मादित्य—आज आपको इन क्षणिक बुराइयों की परवाह न होकर अपने उद्देश पूर्ण करने की ही चिन्ता है. यह भविष्य के लिये अच्छे से अच्छे लक्षण के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता.

شیر خاں — یہ تو میں جانتا ہوں۔ جب لڑائی چل رہی تھی تبھی، جب یہ باتیں شروع تھیں، تو جنگ ختم ہونے پر تو اور زیادہ ہو گئی ہوں گی۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) لیکن مجھے اب اس طرح کی باتوں کی مطلق پرواہ نہیں رہ گئی۔ مجھے خیال ہے اپنے مقصد کا، اُسے پورا کرنے کا۔ اگر وہ پورا ہو گیا تو آج جتنی بدنامی ہے، کل اُتنی ہی نیک نامی ہو جائے گی۔ (دھیرے دھیرے دھواں ناک سے نکالتا ہے۔)

برہمادتیہ — آپ کے ہردے کے اس دھیرے دھیرے ہونے والے پریورتن کو دیکھ کر مجھے جتنا ہرش ہوتا ہے، وہ میں شبدوں میں نہیں کہہ سکتا۔

شیر خاں — کیسا ردّو بدل؟

برہمادتیہ — یاد کیجیے اُس سمے کو جب آپ نے اپنی جاگیر چھوڑی تھی۔

شیر خاں — (سوچتے ہوئے) اچھا۔

برہمادتیہ — جس پرکار کی چرچاؤں نے آپ سے اپنی پشتینی جاگیر چھڑوا دی اُسی پرکار کی چرچائیں آج آپ کے ہردے پر کوئی پربھاؤ نہیں ڈال رہی ہیں۔

شیر خاں — (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) ہاں، یہ تو ہے۔

برہمادتیہ — آج آپ کو اِن چھنک برائیوں کی پرواہ نہ ہو کر اپنے ادیش پورن کرنے کی ہی چنتا ہے۔ یہ بھوشیہ کے لیے اچھے سے اچھے لچھن کے اتِرکت اور کچھ نہیں ہو سکتا۔

[दरबान का प्रवेश]

दरबान—(सलाम कर) हुज़ूर बादशाह हुमायूँ के एक सरदार सरकार से मुलाक़ात करने के लिये तशरीफ़ लाये हुए हैं.

शेरख़ाँ—(आश्चर्य से) अच्छा ! (कुछ रुककर) उन्हें इज़्ज़त के साथ अन्दर ले आओ.

[दरबान का सलाम कर प्रस्थान]

शेरख़ाँ—(चिन्ताकुल स्वर में) पंडित, क्या माजरा है ?

ब्रह्मादित्य—(गम्भीरता से विचारते हुए) कहना कठिन है, किन्तु अभी मालूम ही हुआ जाता है.

[दरबान के साथ हुमायूँ के सरदार का प्रवेश. सरदार अधेड़ अवस्था और गेहुएँ रंग का, ऊँचा-पूरा, मोटा-ताज़ा आदमी है. वेशभूषा शेरख़ाँ आदि से मिलती जुलती है. उसके हाथ में उस समय की बादशाही रीति के अनुसार काग़ज़ के एक सुन्दर पोंगरे में बादशाही पत्र है. पोंगरे पर फ़ारसी के बड़े बड़े अक्षरों में नाम लिखा है और दोनों ओर मुहरें लगीं हैं. दरबान का सरदार को पहुँचा, सलाम कर प्रस्थान. शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य खड़े होकर सरदार का स्वागत करते हैं. दोनों ओर से आदाब बजाये जाते हैं. और तीनों गद्दी पर बैठते हैं.]

शेरख़ाँ—बन्दे पर बड़ी नवाज़िश की शाहिंशाह ने. कहिए, क्या हुक्म भेजा है ?

सरदार—बादशाह सलामत का ख़त जनाब की ख़िदमत में लाया हूँ. (काग़ज़ का पोंगरा शेरख़ाँ को देता है.)

[دربان کا پرویش]

دربان — (سلام کر) حضور بادشاہ ہمایوں کے ایک سردار سرکار سے ملاقات کرنے کے لئے تشریف لائے ہوئے ہیں۔

شیرخاں — (آشچریہ سے) اچھا! (کچھ رک کر) انھیں عزت کے ساتھ اندر لے آؤ۔

[دربان کا سلام کر پرستھان]

شیرخان — (چنتاکل سور میں) پنڈت، کیا ماجرا ہے؟

برہمادتیہ — (گمبھیرتا سے وچارتے ہوئے) کہنا کٹھن ہے، کنتو ابھی معلوم ہی ہوا جاتا ہے۔

[دربان کے ساتھ ہمایوں کے سردار کا پرویش۔ سردار ادھیڑ اوستھا اور گیہوئیں رنگ کا، اونچا پورا، موٹا تازہ آدمی ہے۔ ویش بھوشا شیرخاں آدی سے ملتی جلتی ہے۔ اس کے ہاتھ میں اس سمے کی بادشاہی ریت کے انوسار کاغذ کے ایک سندر پونگرے میں بادشاہی پتر ہے۔ پونگرے پر فارسی کے بڑے بڑے اکشروں میں نام لکھا ہے اور دونوں اور مہریں لگی ہیں۔ دربان کا سردار کو پہنچا، سلام کر پرستھان۔ شیرخاں اور برہمادتیہ کھڑے ہو کر سردار کا سواگت کرتے ہیں۔ دونوں اور سے آداب بجائے جاتے ہیں۔ اور تینوں گدی پر بیٹھتے ہیں۔]

شیرخاں — بندے پر بڑی نوازش کی شہنشاہ نے، کہئے، کیا حکم بھیجا ہے؟

سردار — بادشاہ سلامت کا خط جناب کی خدمت میں لایا ہوں۔ (کاغذ کا پونگرا شیرخاں کو دیتا ہے۔)

[शेरख़ाँ काग़ज़ का पोंगरा ले, उसमें से पत्र निकाल कर पढ़ता है, पत्र भी फ़ारसी में लिखा है. वह पत्र कितनी जल्दी जल्दी पढ़ रहा है यह उसकी आँखों की पुतलियों के पंक्ति के एक सिरे से दूसरे सिर तथा तक एक पंक्ति से दूसरी पंक्ति पर जाने से ज्ञात हो जाता है. पत्र का प्रभाव उसके हृदय पर किस प्रकार पड़ रहा है यह उसको पहले क्रुद्ध और फिर उसकी निराश मुद्रा से मालूम हो जाता है.]

शेरख़ाँ—(पत्र पढ़कर अपने को संभालने का पूर्ण प्रयत्न करते हुए, ब्रह्मादित्य से) पंडित, बादशाह मेरा चुनार की चढ़ाई के सबब से बहुत ख़फ़ा हो गये हैं. वह चाहते हैं कि चुनार फ़ौरन उनके हवाले कर दिया जाय. अगर हमने ऐसा न किया तो ख़त में जंग की धमकी दी गई है.

ब्रह्मादित्य—(भर्राये हुए स्वर में) ऐसा !.........ऐसा !

[शेरख़ाँ फिर से पत्र पढ़ने लगता है. इस बार उसकी निराश मुद्रा फिर क्रोध में बदल जाती है. हुमायूं का सरदार और ब्रह्मादित्य दोनों शेरख़ाँ की ओर देखते हैं. कुछ देर निस्तब्धता.]

[शेरख़ाँ—(एका एक खड़े होकर, उसके खड़े होने के कारन ब्रह्मादित्य और सरदार भी खड़े हो जाते हैं.) मुझे सोचना होगा, सरदार साहब, कि मुझे सुलह मंजूर है या जंग (ब्रह्मादित्य से) पंडित, सरदार के ठहरने का ठीक इन्तज़ाम करदो. (सरदार से) आज शाम तक आप को शहंशाह के ख़त का जवाब मिल जायगा.

लघु—यवनिका

[شیر خاں کاغذ کا پونگرا لے، اس میں سے پتر نکال کر پڑھتا ہے، پتر بھی فارسی میں لکھا ہے۔ وہ پتر کتنی جلدی جلدی پڑھ رہا ہے یہ اس کی آنکھوں کی پتلیوں کے پنکتی کے ایک سرے سے دوسرے سرے تک تتھا ایک پنکتی سے دوسری پنکتی پر جانے سے گیات ہوجاتا ہے۔ پتر کا پربھاؤ اسکے ہردے پر کس پرکار پڑ رہا ہے یہ اسکو پہلے کرودھ اور پھر اسکی نراش مدرا سے معلوم ہوجاتا ہے۔]

شیر خاں — (پتر پڑھ کر اپنے کو سنبھالنے کا پورن پریتن کرتے ہوئے، برہمادتیہ سے) پنڈت: بادشاہ میرے چنار کی چڑھائی کے سبب سے بہت خفا ہوگئے ہیں۔ وہ چاہتے ہیں کہ چنار فوراً اُن کے حوالے کردیا جائے۔ اگر ہم نے ایسا نہ کیا تو خط میں جنگ کی دھمکی دی گئی ہے۔

برہمادتیہ — (بھرّائے ہوئے سور میں) ایسا!.......ایسا!

[شیر خاں پھر سے پتر پڑھنے لگتا ہے۔ اِس بار اُس کی نراش مدرا پھر کرودھ میں بدل جاتی ہے۔ ہمایوں کا سردار اور برہمادتیہ دونوں شیر خاں کی اور دیکھتے ہیں۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

[شیر خاں — (یکایک کھڑے ہوکر، اُس کے کھڑے ہونے کے کارن برہمادتیہ اور سردار بھی کھڑے ہوجاتے ہیں۔) مجھے سوچنا ہوگا، سردار صاحب، کہ مجھے صلح منظور ہے یا جنگ (برہمادتیہ سے) پنڈت، سردار کے ٹھہرنے کا ٹھیک انتظام کردو۔ (سردار سے) آج شام تک آپ کو شہنشاہ کے خط کا جواب مل جائے گا۔

لگھو یونیکا

सातवाँ—दृश्य

स्थान—चुनार में निज़ाम का कमरा.

समय—रात्रि

[कमरा शेरख़ाँ के कमरे के सदृश ही है. कमरे की एक खिड़की खुली है, जो निज़ाम के पीछे है. शेष दरवाज़े खिड़कियाँ बंद हैं. निज़ाम अपने सामने लाड मलिका के आगरे वाले चित्र को रखे, उसे देखते हुए, सितार बजा कर गा रहा है.]

गीत

मुहब्बत में मज़ा क्या आ रहा है
मेरा दिल यह मुझे समझा रहा है.

[लाड मलिका चुपचाप आकर खिड़की में खड़ी हो जाती है. उसे निज़ाम नहीं देख पाता. निज़ाम का मुख उसे नहीं दिखता, पर अपना चित्र दिखता है. निज़ाम का गाना चलता रहता है.]

नज़र में रात दिन वह फिर रहे हैं,
तसव्वुर रंग क्या क्या ला रहा है.

[कुछ देर बाद लाड खिड़की से हट जाती है. निज़ाम का गीत आगे बढ़ता है.]

ज़माने में नहीं कोई किसी का,
मुझे यह तजरबा बतला रहा है.

[कुछ ही देर में दरवाज़े पर थपकियाँ सुन पड़ती हैं. निज़ाम

ساتواں درشیہ

ستھان—چنار میں نظام کا کمرہ۔

سمے—راتری۔

[کمرہ شیرخاں کے کمرے کے سدرش ہی ہے۔ کمرے کی ایک کھڑکی کھلی ہے، جو نظام کے پیچھے ہے۔ شیش دروازے کھڑکیاں بند ہیں۔ نظام اپنے سامنے لاڈ ملکہ کے آگرے والے چتر کو رکھے، اُسے دیکھتے ہوئے، ستار بجا کر گا رہا ہے۔]

گیت

محبت میں مزہ کیا آ رہا ہے
میرا دل یہ مجھے سمجھا رہا ہے۔

[لاڈ ملکہ چپ چاپ آکر کھڑکی میں کھڑی ہو جاتی ہے۔ اُسے نظام نہیں دیکھ پاتا۔ نظام کا مکھ اُسے نہیں دکھتا، پر اپنا چتر اُسے دکھتا ہے۔ نظام کا گانا چلتا رہتا ہے۔]

نظر میں رات دن وہ پھر رہے ہیں،
تصور رنگ کیا کیا لا رہا ہے۔

[کچھ دیر بعد لاڈ کھڑکی سے ہٹ جاتی ہے۔ نظام کا گیت آگے بڑھتا ہے۔]

زمانے میں نہیں کوئی کسی کا،
مجھے یہ تجربہ بتلا رہا ہے۔

[کچھ ہی دیر میں دروازے پر تھپکیاں سُن پڑتی ہیں۔ نظام

गान बंदकर, सितार रख, तस्वीर पर पर्दा डाल दरवाजा खोलता है. लाड का प्रवेश]

निज़ाम—(आशचर्य से) आप !.........भाभी..........आधीरात गये आप !

लाड—नींद नहीं आती थी. तुम गा रहे थे, कितना दर्द था तुम्हारी शायरी में, सोचा, थोड़ा दिल बहल जायगा, चली आई. गाओ, गाओ न, निज़ाम, तुम बहुत अच्छा गाते हो.

निज़ाम—भाभी ! (संकोच से सर कुछ नीचा करते हुए) भाई साहब अब तक नहीं आये ?

लाड—तुम्हारे भाई जान ?.........जंग की तैयारी ' के सबब उन्हें कहाँ फ़ुरसत ! (अन्तिम वाक्य कहती हुई वह दीवाल पर टँगे हुए चित्रों की ओर बढ़ती है.)

निज़ाम—(कुछ चंचल होकर) तो आपने आने की तकलीफ़ क्यों गवारा की ? लौंडी के हाथ मुझे बुला भेजतीं.

लाड—(निज़ाम के कथन पर कोई ध्यान न देते हुए एक प्राकृतिक दृश्य के चित्र की ओर देखते हुए) कितनी अच्छी तस्वीर है !

[निज़ाम संकुचित सा चुपचाप पास ही खड़ा रहता है. लाड दूसरे चित्रों की ओर बढ़ती है.]

निज़ाम—(कुछ देर बाद, एक चित्र की ओर संकेत करते हुए) यह.........यह भाई जान की तब की तस्वीर है जब वह अब्बा से

گان بند کر، ستار رکھ، تصویر پر پردا ڈال دروازہ کھولتا ہے.
لاڈ کا پرویش]

نظام — (آشچریہ سے) آپ !....... بھابھی.... آدھی رات گئے آپ !

لاڈ — نیند نہیں آتی تھی. تم گا رہے تھے، کتنا درد تھا تمھاری شاعری میں، سوچا، تھوڑا دل بہل جائے گا، چلی آئی. گاؤ، گاؤ نا، نظام، تم بہت اچھا گاتے ہو.

نظام — بھابھی ! (سنکوچ سے سر کچھ نیچا کرتے ہوئے) بھائی صاحب اب تک نہیں آئے؟

لاڈ — تمھارے بھائی جان؟...... جنگ کی تیاری کے سبب انھیں کہاں فرصت ! (انتم واکیہ کہتی ہوئی وہ دیوال پر ٹنگے ہوئے چتروں کی اور بڑھتی ہے.]

نظام — (کچھ چنچل ہوکر) تو آپ نے آنے کی تکلیف کیوں گوارا کی؟ لونڈی کے ہاتھ مجھے بلا بھیجتیں.

لاڈ — نظام کے کتھن پر کوئی دھیان نہ دیتے ہوئے ایک پراکرتک درشیہ کے چتر کی اور دیکھتے ہوئے) کتنی اچھی تصویر ہے!

[نظام سنکوچت سا چپ چاپ پاس ہی کھڑا رہتا ہے. لاڈ دوسرے چتروں کی اور بڑھتی ہے.]

نظام — (کچھ دیر بعد، ایک چتر کی اور سنکیت کرتے ہوئے) یہ..... یہ بھائی جان کی تب کی تصویر ہے جب وہ ابا سے

खफ़ा होकर भाग गये थे. मैंने उनकी जुदाई में यह बचपना किया था.

लाड—काश मैं भी मुसव्विर होती.

निज़ाम—(लाड की ओर देख, फिर जल्दी से नज़र नीचे की ओर झुका) भाभी.........

लाड—निज़ाम, मेरी ज़िन्दगी में भी एक मुसव्विर आया था; उसने मेरी एक तस्वीर बनाई (कनखियों से निज़ाम की ओर देखते हुए, जो सिर झुकाये हुए चुप था) तस्वीर पूरी हो गई, पर, निज़ाम, मुसव्विर बड़ा अजीब निकला; न तो उसने तस्वीर दी और न वादे पर आया ही. मैं कुछ समझ न सकी. (कुछ रुककर निज़ाम की ओर पूरी दृष्टि से देखते हुए) निज़ाम !

निज़ाम—(सर उठा कर, पर दूसरी ओर देखकर) जी.

लाड—तुम भी तो मुसव्विर हो, सच्चे मुसव्विर. तुम्हीं बताओ आख़िर उसने ऐसा क्यों किया ?

[निज़ाम चुप रहता है. उसका मुख कुछ लाल हो जाता है.]

लाड—(निज़ाम की परेशानी को समझते हुए) तुम नहीं बता सकते ? अच्छा.........मैं ही बताती हूँ तुम्हें. मुसव्विर.........वह मुसव्विर बुज़दिल था..........मुझे याद है तस्वीर बनाते बनाते उसके हाथ काँपने लगे थे और फिर तस्वीर देने को आते हुए उसके पैर काँपने लगे होंगे.

निज़ाम—(एक दम भर्राये हुए स्वर में) भाभी.........

लाड—हाँ, हाँ, मैं सच कह रही हूँ, ...और तुम जानते हो निज़ाम, ऐसी हालत किसकी होती है ?.........उसकी........उसकी जो

خفا ہو کر بھاگ گئے تھے. میں نے اُن کی جُدائی میں یہ بچپنا کیا تھا.

لاڈ— کاش میں بھی مصوّر ہوتی.

نظام— (لاڈ کی اُور دیکھ، پھر جلدی سے نظر نیچے کی اُور جُھکا) بھابی......

لاڈ— نظام، میری زندگی میں بھی ایک مصوّر آیا تھا؛ اُس نے میری ایک تصویر بنائی (کنکھیوں سے نظام کی اُور دیکھتے ہوئے، جو سر جُھکائے ہوئے چُپ تھا) تصویر پوری ہو گئی، پر، نظام، مصوّر بڑا عجیب نکلا؛ نہ تو اُس نے تصویر دی اور نہ وعدے پر آیا ہی. میں کچھ سمجھ نہ سکی. (کچھ رُک کر نظام کی اُور پوری نظر سے دیکھتے ہوئے) نظام!

نظام— (سر اُٹھا کر، پر دوسری اُور دیکھ کر) جی.

لاڈ— تم بھی تو مصوّر ہو، سچّے مصوّر. تمہیں بتاؤ آخر اُس نے ایسا کیوں کیا؟

[نظام چُپ رہتا ہے. اُس کا مُکھ کچھ لال ہو جاتا ہے.]

لاڈ— (نظام کی پریشانی کو سمجھتے ہوئے) تم نہیں بتا سکتے؟ اچھا...... میں ہی بتاتی ہوں تمہیں. مصوّر...... وہ مصوّر بزدل تھا........ مجھے یاد ہے تصویر بناتے بناتے اُس کے ہاتھ کانپنے لگے تھے اور پھر تصویر دینے کو آتے ہوئے اُس کے پیر کانپنے لگے ہوں گے.

نظام— (ایک دم بھرّائے ہوئے سُور میں) بھابی....

لاڈ— ہاں، ہاں، میں سچ کہہ رہی ہوں...... اور تم جانتے ہو نظام، ایسی حالت کس کی ہوتی ہے؟ اُس کی........ اُس کی جو

गुनाह करता है.........जो गुनाहगार होता है. (अन्तिम वाक्य कहते कहते लाड परदे से ढके हुए चित्र के पास पहुँच जाती है)

निज़ाम—(उसी प्रकार के स्वर में) गु.........ना.........ह.........गा.........र !.........

[उसी समय लाड चित्र के परदे को शीघ्रता से हटा देती है और कुछ उग्रता से चित्र की ओर और फिर निज़ाम की ओर देखती है.]

लाड—हाँ, गुनाहगार.........मुसव्विर गुनाहगार है.

निज़ाम—(उसी प्रकार के स्वर में) उफ़.

[दोनों हाथों से अपने चेहरे को ढाँकते हुए निज़ाम उसी खिड़की की ओर जाता है, जहाँ लाड आकर खड़ी हो गई थी. उस खिड़की से अब चाँदनी आ रही है. कुछ देर निस्तब्धता.]

निज़ाम—(एकाएक लाड की ओर घूमकर रूँधे हुए गले से) भाभी !.........भाभी ! आप ....आप चली जायँ.........चली जाइये यहाँ से,.........जाइए.........जाइए.........जाइए.

लाड—(लम्बी साँस लेकर) माफ़ करना, निज़ाम, तुम्हें तकलीफ़ हुई. मैंने तुम्हारे ज़ख्म को छू दिया, पर.........पर तुमने अपने ही ज़ख्म को देखा, तुम अपने ज़ख्म के दर्द में दूसरे के ज़ख्मों को देख ही न सके.........

निज़ाम—(कुछ चिल्लाकर) बस.........बस भी करो, भाभी ! ....भाभी !.........भाभी !.........भाभी ! कितने.........आह ! कितने नश्तर चुभो रही हो तुम !

[निज़ाम की आँखें छलछला आती हैं और उसके आँसू बहने लगते हैं. लाड उसके नज़दीक जाती है और स्नेह से अपने दामन से

گناہ کرتا ہے........ جو گناہ گار ہوتا ہے۔ (انتم واکیہ کہتے کہتے لاڈ پردے سے ڈھکے ہوئے چتر کے پاس پہنچ جاتی ہے)

نظام — (اُسی پرکار کے سور میں) گ.....نا.....ہ......گا......ر!......

[اُسی سمے لاڈ چتر کے پردے کو شیگھرتا سے ہٹا دیتی ہے اور کچھ اُگرتا سے چتر کی اُور اور پھر نظام کی اُور دیکھتی ہے۔]

لاڈ — ہاں، گناہ گار...... مصوّر گناہ گار ہے۔

نظام — (اُسی پرکار کے سور میں) اُف۔

[دونوں ہاتھوں سے اپنے چہرے کو ڈھانکتے ہوئے نظام اُسی کھڑکی کی اُور جاتا ہے، جہاں لاڈ آکر کھڑی ہو گئی تھی۔ اُس کھڑکی سے اب چاندنی آ رہی ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

نظام — (یکایک لاڈ کی اُور گھوم کر روندھے ہوئے گلے سے) بھابھی!...... بھابھی! آپ...... آپ چلی جائیں...... چلی جائیے یہاں سے...... جائیے...... جائیے...... جائیے۔

لاڈ — (لمبی سانس لے کر) معاف کرنا، نظام، تمھیں تکلیف ہوئی۔ میں نے تمھارے زخم کو چھو دیا، پر...... پر تم نے اپنے ہی زخم کو دیکھا، تم اپنے زخم کے درد میں دوسرے کے زخموں کو دیکھ ہی نہ سکے......

نظام — (کچھ چلّا کر) بس..... بس بھی کرو، بھابھی!..... بھابھی!...... بھابھی!...... کتنے...... آہ! کتنے نشتر چبھو رہی ہو تم!

[نظام کی آنکھیں چھلچھلا آتی ہیں اور اُس کے آنسو بہنے لگتے ہیں۔ لاڈ اُس کے نزدیک جاتی ہے اور سنیہہ سے اپنے دامن سے

उसके आँसू पोंछ देती है. निजाम बेसुध सा लाड की ओर देखने लगता है. लाड उसकी ओर देखती है. आँखें चार होती हैं. लाड हँस देती है.]

लाड—तुम अब तक बच्चे हो!

[लाड निजाम का हाथ पकड़कर उसे एक चौकी पर बिठाती है. वह चुपचाप बैठ जाता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

लाड—निजाम!

निजाम—भाभी!

लाड—(हँसते हुए) अच्छा, देखो, अब मेरी एक तस्वीर और बनाओ. (कुछ रुककर) बोलो, बनाओगे न ?

निजाम—आपकी....... आपकी तस्वीर, भाभी ? आपकी तस्वीर तो मैं नहीं बना सकता.

लाड—(अपनी तस्वीर की ओर संकेत कर) और वह किसकी तस्वीर है.

[निजाम कुछ न कह सर झुका लेता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

लाड—हाँ, कहो, वह किसकी तस्वीर है ?

निजाम—फिर भी कुछ नहीं कहता. उसी प्रकार मूर्ति के सदृश बैठा रहता है.]

लाड—नहीं बोलोगे ?

निजाम—(एकाएक सर उठा कर) वह तस्वीर आपकी नहीं है.

लाड—(आश्चर्य से) मेरी नहीं है!

निजाम—नहीं.

اُس کے آنسو پونچھ دیتی ہے. نظام بے سُدھ سا لاڈ کی اُور دیکھنے لگتا ہے. لاڈ اُس کی اُور دیکھتی ہے. آنکھیں چار ہوتی ہیں. لاڈ ہنس دیتی ہے.]

لاڈ— تم اب تک بچے ہو!

[لاڈ نظام کا ہاتھ پکڑ کر اُسے ایک چوکی پر بٹھاتی ہے. وہ چُپ چاپ بیٹھ جاتا ہے. کچھ دیر نستبدھتا.]

لاڈ— نظام!

نظام— بھابھی!

لاڈ— (ہنستے ہوئے) اچھا، دیکھو، اب میری ایک تصویر اور بناؤ. (کچھ رُک کر) بولو، بناؤگے نا؟

نظام— آپ کی........ آپ کی تصویر، بھابھی؟ آپ کی تصویر تو میں نہیں بنا سکتا.

لاڈ— (اپنی تصویر کی اور سنکیت کر) اور وہ کس کی تصویر ہے.

[نظام کچھ نہ کہہ سر جُھکا لیتا ہے. کچھ دیر نستبدھتا.]

لاڈ— ہاں، کہو، وہ کس کی تصویر ہے؟

[نظام پھر بھی کچھ نہیں کہتا. اُسی پرکار مورت کے سدرش بیٹھا رہتا ہے.]

لاڈ— نہیں بولوگے؟

نظام— (یکایک سر اُٹھا کر) وہ تصویر آپ کی نہیں ہے.

لاڈ— (آشچریہ سے) میری نہیں ہے!

نظام— نہیں.

लाड—(उसी प्रकार

निजाम—(भर्राये हुए स्वर में) वह आगरे में रहने वाली लाड बानू नाम की एक लड़की की है; वह लाड मलिका नहीं थी, न सूबेदार ताजखाँ की बेगम, न मेरे भाई साहब की बीबी, न मेरी भाभी.

[निजाम का सर झुक जाता है. लाड एक कौतुहल पूर्ण दृष्टि से निजाम की ओर देखती रहती है.]

लघु—यवनिका

आठवाँ दृश्य

स्थान—चुनार के बाहर युद्ध क्षेत्र.

समय—तीसरा पहर.

शवों, उनके कटे हुए अंगों, गिरे हुए शस्त्रों तथ हाथी, घोड़े आदि के कटे हुए अंगों से भरा हुआ है. अभी भी मुग़लों और पठानों में   रहा है. पठान सेना में कुछ हिन्दू सैनिक भी हैं. नेपथ्य से नाना प्रकार के युद्ध शब्द भी सुनाई पड़ते हैं. धीरे धीरे पठानों की हार हो रही है, कई मरते हैं कई घायल होकर गिरते हैं, रहे हुए भागते हैं. मुग़ल इनका पीछा करते शेरखाँ और ब्रह्मादित्य का कुछ सैनिकों के साथ प्रवेश. सब सैनिक वेष में हैं.]

शेरखाँ—बुरी.........बुरी तरह हमारी हार हो रही है, पंडित.

ब्रह्मादित्य—फिर.........फिर हम जल्दी कर बैठे.

لاڈ ـــ (اسی پرکار آشچریہ سے) تو کس کی ہے؟

نظام ـــ (بھرائے ہوئے سور میں) وہ آگرہ میں رہنے والی لاڈ بانو نام کی ایک لڑکی کی ہے؛ وہ لاڈ ملکہ نہیں تھی، نہ صوبیدار تاج خاں کی بیگم، نہ میرے بھائی صاحب کی بی بی، نہ میری بھابی۔

[نظام کا سر جھک جاتا ہے۔ لاڈ ایک کوتوہل پورن درشٹی سے نظام کی اور دیکھتی رہتی ہے۔]

لگھو یونیکا

آٹھواں درشیہ

ستھان ـــ چُنار کے باہر یُدھ چھیتر۔

سمے ـــ تیسرا پہر۔

[یدھ چھیتر منشیہ شوؤں، اُن کے کٹے ہوئے انگوں گرے ہوئے شستروں تتھا ہاتھی، گھوڑے آدی کے کٹے ہوئے انگوں سے بھرا ہوا ہے۔ ابھی بھی مغلوں اور پٹھانوں میں یدھ ہو رہا ہے۔ پٹھان سینا میں کچھ ہندو سینک بھی ہیں۔ نیپتھیہ سے نانا پرکار کے یدھ شبد بھی سنائی پڑتے ہیں۔ دھیرے دھیرے پٹھانوں کی ہار ہو رہی ہے، کئی مرتے ہیں کئی گھائل ہوکر گرتے ہیں، رہے ہوئے بھاگتے ہیں۔ مغل انکا پیچھا کرتے ہیں۔ شیر خاں اور برہمادتیہ کا کچھ سینکوں کے ساتھ پرویش۔ سب سینک ویش میں ہیں۔]

شیر خاں ـــ بُری...... بُری طرح ہماری ہار ہو رہی ہے، پنڈت۔

برہمادتیہ ـــ پھر...... پھر ہم جلدی کر بیٹھے۔

शेरख़ाँ—(लम्बी साँस लेकर) हाँ, फिर हमने जल्दी करदी.

ब्रह्मादित्य—जिस प्रकार पुरानी पुशतैनी जायदाद छोड़नी कठिन होती है.........उसी.........उसी प्रकार नई कदाचित् नई प्राप्त की हुई वस्तु देना भी.

शेरख़ाँ—लेकिन.........लेकिन, पंडित. अभी.........अभी भी शायद मौक़ा है. अभी भी हम लड़ाई बन्द कर आगे का रास्ता.........(कुछ रुककर एकदम जल्दी से) देखो.........देखो, तुम फ़ौरन सफ़ेद झंडा दिखाने का इन्तज़ाम करो.

ब्रह्मादित्य—ऐसा.........ऐसा ?

शेरख़ाँ—(और जल्दी से) हाँ, फ़ौरन.........फ़ौरन, पंडित, बिना देरी के, जल्दी से जल्दी, एकदम दुरुस्तगी के लिये युद्ध रहते हुए ग़लती दुरुस्त करना ही सबसे बड़ी अक़्लमंदी है.

यवनिका

चौथा अंक

पहला दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरख़ाँ के मकान में शेरख़ाँ का कमरा.

समय—तीसरा प्रहर.

[कमरा वही है जो दूसरे अंक के दूसरे दृश्य में था. शेरख़ाँ गद्दी पर बैठा हुआ हुक़्क़ा पी रहा है. उसकी मुद्रा अत्यन्त गम्भीर

شیر خاں —— (لمبی سانس لے کر) ہاں، پھر ہم نے جلدی کر دی۔

برہمادتیہ —— جس پرکار پرانی پشتینی جائداد چھوڑنی کٹھن ہوتی ہے...... اُسی...... اُسی پرکار نئی کداچت نئی پراپت کی ہوئی وستو دینا بھی۔

شیر خاں —— لیکن...... لیکن، پنڈت. ابھی...... ابھی بھی شاید موقع ہے۔ ابھی بھی ہم لڑائی بند کر آگے کا راستہ...... (کچھ رُک کر ایک دم جلدی سے) دیکھو...... دیکھو، تم فوراً سفید جھنڈا دکھانے کا انتظام کرو۔

برہمادتیہ —— ایسا...... ایسا؟

شیر خاں —— (اور جلدی سے) ہاں، فوراً...... فوراً پنڈت، بنا دیری کے، جلدی سے جلدی، ایک دم دُرستگی کے لئے یدھ رہتے ہوئے غلطی دُرست کرنا ہی سب سے بڑی عقلمندی ہے۔

یونیکا

چوتھا انک

پہلا درشیہ

ستھان —— بہار شریف میں شیر خاں کے مکان میں شیر خاں کا کمرہ۔

سمے —— تیسرا پہر۔

[کمرہ وہی ہے جو دوسرے انک کے درشیہ میں تھا۔ شیر خاں گدّی پر بیٹھا ہوا حقّہ پی رہا ہے۔ اُس کی مُدرا اتینت گمبھیر

है. वह कभी हुक़्क़े के धुएँ के उठते हुए कुन्डालियों को ध्यान से देखता है, कभी सर झुका पृथ्वीपर बिछे हुए कालीन को और कभी सर उठाकर छत से लटकते हुए झाड़ों को. ब्रह्मादित्य का प्रवेश. वह आकर गद्दी के एक ओर बैठता है]

शेरख़ाँ--कहो, पंडित, क्या नई ख़बर है ?

ब्रह्मादित्य—आज तो दो बड़ी बड़ी ख़बरें हैं.

शेरख़ाँ—एक न होकर दो और दोनों बड़ी बड़ी ?

ब्रह्मादित्य—जी हाँ, दो और दोनों बहुत बड़ी बड़ी.

शेरख़ाँ—बताओ ?

ब्रह्मादित्य—पहली ख़बर तो यह है कि बंगाल का बिहार पर आक्रमण हो रहा है और दूसरी यह कि यहाँ के कुछ लोहनी सरदार आपकी हत्या का षड़यंत्र रच रहे हैं जिसमें बहुत कर यहाँ का जलालख़ाँ भी सम्मिलित है.

शेरख़ाँ—(लम्बी साँस लेकर) उन दोनों ख़बरों को सुनकर मुझे कोई ख़ास ताज्जुब नहीं हुआ. इन दिनों जिस तरह की बातें रोज़ मर्रा सुनने को मिलती थीं उनसे मुझे शक था कि बंगाल का बिहार पर शायद हमला हो जाय. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) मेरे ख़िलाफ़ तो इस दफ़ा बिहार आते ही नई नई साज़िशें हो रही हैं, मेरे ख़ून करने की साज़िश करने वालों का शायद आख़िरी दाँव है. (कुछ रुक कर नाक से धुआँ निकालते हुए) पंडित, आज कल की अपनी ज़िन्दगी से मैं तंग आ गया हूँ.

ब्रह्मादित्य—आपका असन्तोष मैं भली भाँति जानता हूँ.

ہے. وہ کبھی حقے کے دھویں کے اٹھتے ہوئے کنڈالیوں کو دھیان سے دیکھتا ہے، کبھی سر جھکا پرتھوی پر بچھے ہوئے قالین کو اور کبھی سر اٹھا کر چھت سے لٹکتے ہوئے جھاڑوں کو. برہمادتیہ کا پرویش. وہ آکر گدی کے ایک اور بیٹھتا ہے]

شیر خاں — کہو، پنڈت، کیا نئی خبر ہے؟

برہمادتیہ — آج تو دو بڑی بڑی خبریں ہیں.

شیر خاں — ایک نہ ہوکر دو اور دونوں بڑی بڑی.

برہمادتیہ — جی ہاں، دو اور دونوں بہت بڑی بڑی.

شیر خاں — بتاؤ؟

برہمادتیہ — پہلی خبر تو یہ ہے کہ بنگال کا بہار پر آکرمن ہو رہا ہے اور دوسری یہ کہ یہاں کے کچھ لوہنی سردار آپ کی ہتیا کا شڈینتر رچ رہے ہیں جس میں بہت کر یہاں کا جلال خاں بھی سمّلت ہے.

شیر خاں — (لمبی سانس لے کر) ان دونوں خبروں کو سنکر مجھے کوئی خاص تعجب نہیں ہوا. ان دنوں جس طرح کی باتیں روزمرّہ سننے کو ملتی تھیں ان سے مجھے شک تھا کہ بنگال کا بہار پر شاید حملہ ہو جائے. (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) میرے خلاف تو اس دفعہ بہار آتے ہی نئی نئی سازشیں ہو رہی ہیں، میرے خون کرنے کی سازش کرنے والوں کا شاید آخری داؤں ہے. (کچھ رک کر ناک سے دھواں نکالتے ہوئے) پنڈت، آج کل کی اپنی زندگی سے میں تنگ آ گیا ہوں.

برہمادتیہ — آپ کا اسنتوش میں بھلی بھانت جانتا ہوں.

शेरखाँ—या तो आदमी की तरक़्क़ी होती है या वह तज़्ज़ुनल होता है; मैं तनज़्ज़ुल हो रहा हूँ, तरक़्क़ी नहीं कर रहा हूँ. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) बुज़ुर्गों की कमाई हुई जागीर गई, अपना फ़तह किया हुआ चुनार गया, और विहार की यह नौकरी इस मरतबा सच्ची नौकरी है.

ब्रह्मादित्य—हाँ, सो तो है.

शेरखाँ—पहले भी नौकरियाँ हीं कीं थी. जौनपुर की नौकरी पहली नौकरी थी, पर वहाँ नये नये काम सीखने और करने के सबब वह नौकरी नौकरी न जान पड़ी. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) फिर यहाँ नौकरी की, पर शेर से बहार ख़ाँ की जान बचाने की वजह से बहुत जल्दी नौकर से उसका दोस्त हो गया. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ाकर धुआँ छोड़ते हुए) दूसरी दफ़ा जब यहाँ नौकरी की तब जलाल ख़ाँ बच्चा था. इसलिये उस वक़्त यह भी न मालूम हुआ कि मैं नौकर हूँ. लेकिन इस.........इस मरतबे...(चुप हो जाता है)

ब्रह्मादित्य—अब जलाल ख़ाँ बच्चा नहीं है, इतना ही नहीं, वह कान का भी बहुत कच्चा है.

शेरखाँ—इसीलिये तो यह हाल है. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) ज़िन्दगी के हम लोगों के बड़े बड़े मक़सद और अरमान एक तरफ़ पड़े हुए हैं और हम लोगों का काम हो गया है—इन छोटी छोटी साज़िशों को नाकामयाब बनाने के लिये नई नई साज़िशें करना.

ब्रह्मादित्य—तो हम दूसरों के षडयंत्रों को सफल हो जाने दें ?

شیرخاں — یا تو آدمی کی ترقی ہوتی ہے یا وہ تنزل ہوتا ہے؛ میں تنزل ہو رہا ہوں، ترقی نہیں کر رہا ہوں۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) بزرگوں کی کمائی ہوئی جاگیر گئی، اپنا فتح کیا ہوا چنار گیا، اور بہار کی یہ نوکری اس مرتبہ سچی نوکری ہے۔

برہمادتیہ — ہاں، سو تو ہے۔

شیرخاں — پہلے بھی نوکریاں ہی کی تھیں۔ جونپور کی نوکری پہلی نوکری تھی، پر وہاں نئے نئے کام سیکھنے اور کرنے کے سبب وہ نوکری نوکری نہ جان پڑی۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) پھر یہاں نوکری کی، پر شیر سے بہار خاں کی جان بچانے کی وجہ سے بہت جلدی نوکر سے اس کا دوست ہو گیا۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) دوسری دفعہ جب یہاں نوکری کی تب جلال خاں بچہ تھا۔ اس لئے اس وقت یہ بھی نہ معلوم ہوا کہ میں نوکر ہوں۔ لیکن اس...... اس مرتبے...... (چپ ہو جاتا ہے)

برہمادتیہ — اب جلال خاں بچہ نہیں ہے، اتنا ہی نہیں، وہ کان کا بھی بہت کچا ہے۔

شیرخاں — اسی لئے تو یہ حال ہے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) زندگی کے ہم لوگوں کے بڑے بڑے مقصد اور ارمان ایک طرف پڑے ہوئے ہیں اور ہم لوگوں کا کام ہو گیا ہے — ان چھوٹی چھوٹی سازشوں کو ناکامیاب بنانے کے لئے نئی نئی سازشیں کرنا۔

برہمادتیہ — تو ہم دوسروں کے شڈینتروں کو سپھل ہو جانے دیں؟

शेरख़ाँ—नहीं, सो तो नहीं हो सकता, लेकिन इस तरह की ज़िन्दगी बसर करते रहना भी मेरे लिये ग़ैर मुमकिन है. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) एक तो यह हो सकता है कि हम बिहार छोड़कर ही चल दें और अपने अरमान पूरे करने के लिये कोई दूसरा रास्ता ढूढें.

ब्रह्मादित्य—सो तो हमने कई बार सोचा, पर कोई दूसरा स्थान अभी तक तो सूझा नहीं; और तब तक जो है उसे कैसे छोड़ा जाय.

शेरख़ाँ—पर इस हालत में अब यहाँ रहना भी मुशकिल है.

[शेरख़ाँ सर झुकाकर गम्भीरता से सोचने लगता है. कुछ देर निस्तब्धता; हाँ, यह निस्तब्धता बीच बीच में हुक़्क़े की गुड़गुड़ाहट से अवश्य भंग हो जाती है. ब्रह्मादित्य शेरख़ाँ की ओर देखता रहता है.]

शेरख़ाँ—(कुछ देर पश्चात सर उठा कर) देखो पंडित, मैं चाहता हूँ कि एक मरतबा जलाल ख़ाँ से साफ़ साफ़ बात करूँ. कई दफ़ा मैंने यह सोचा, लेकिन रुक गया. अब जब बंगाल का हमला ही हो रहा है, तब तो यह करना ही होगा.

ब्रह्मादित्य—आप उससे क्या कहेंगे ?

शेरख़ाँ—साफ़ साफ़ कहूँगा कि बिहार के सियासी काम में दलबन्दी है और लड़ाई के वक़्त अगर बिहार इन दो दलों के बीच इसी तरह उलझा रहा तो जंग में उसकी हार तय शुदा बात है. (धीरे धीरे नाक से धुआँ निकालता है.)

شیرخاں — نہیں، سو تو نہیں ہو سکتا، لیکن اس طرح کی زندگی بسر کرتے رہنا بھی میرے لئے غیر ممکن ہے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) ایک تو یہ ہو سکتا ہے کہ ہم بہار چھوڑ کر ہی چل دیں اور اپنے ارمان پورے کرنے کیلئے کوئی دوسرا راستہ ڈھونڈیں۔

برہمادتیہ — سو تو ہم نے کئی بار سوچا، پر کوئی دوسرا ستھان ابھی تک تو سوجھا نہیں، اور تب تک جو ہے اُسے کیسے چھوڑا جائے۔

شیرخاں — پر اس حالت میں اب یہاں رہنا بھی مشکل ہے۔

[شیرخاں سر جھکا کر گمبھیرتا سے سوچنے لگتا ہے۔ کچھ دیر نِستبدھتا؛ ہاں، یہ نِستبدھتا بیچ بیچ میں حقے کی گڑگڑاہٹ سے اَوشیہ بھنگ ہو جاتی ہے۔ برہمادتیہ شیرخاں کی اور دیکھتا رہتا ہے۔]

شیرخاں — (کچھ دیر پشچات سر اُٹھا کر) دیکھو پنڈت، میں چاہتا ہوں کہ ایک مرتبہ جلال خاں سے صاف صاف بات کروں۔ کئی دفعہ میں نے یہ سوچا، لیکن رُک گیا۔ اب جب بنگال کا حملہ ہی ہو رہا ہے، تب تو یہ کرنا ہی ہوگا۔

برہمادتیہ — آپ اُس سے کیا کہیں گے؟

شیرخاں — صاف صاف کہوں گا کہ بہار کے سیاسی کام میں دل بندی ہے اور لڑائی کے وقت اگر بہار اِن دو دلوں کے بیچ اسی طرح اُلجھا رہا تو جنگ میں اُس کی ہار طے شدہ بات ہے۔

ब्रह्मादित्य—परन्तु दलबन्दी स्पष्ट कहाँ है ? दो ही दल हैं, यह कैसे कहा जा सकता है ?

शेरखाँ—हमारा एक दल है. यह तो हम जानते हैं न ? हमारे दल में कौन कौन हैं, यह भी हमें मालूम है न ?

ब्रह्मादित्य—हाँ, हमारा दल और उसके व्यक्ति हमारे लिये स्पष्ट हैं.

शेरखाँ—मैं जलाल खाँ से कहूँगा कि जंग का काम या तो वह बिना कोई दखल दिये मेरे जिम्मे करे, हमारा दल जिस तरह मुनासिब समझेगा, उसे निपटायगा, या फिर वह लड़ाई का काम अपने जिम्मे रक्खे. दूसरे लफ्जों में इसका मतलब होता है कि लड़ाई का काम, हमारे खिलाफ़ जो दल हैं उनके हाथ में चला जाय. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) ऐसी हालत में मैं जलाल खाँ से कहूँगा कि वह सल्तनत का अन्दरूनी इन्तजाम मेरे जिम्मे कर दे.

[ब्रह्मादित्य कुछ उत्तर न देकर गम्भीरता से विचारने लगता है. शेरखाँ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए उसकी ओर देखता है.]

शेरखाँ—(कुछ देर पश्चात) तुम्हें यह तजवीज पसन्द नहीं आई ?

ब्रह्मादित्य—(सर उठाते हुए) हाँ, कुछ बहुत सन्तोषजनक नहीं है.

शेरखाँ—यह मैं भी मानता हूँ. मगर फिलहाल जो हालत है उससे बेहतर हो जायगी या नहीं ? (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ

برہمادتیہ — پرنتو دل بندی سپشٹ کہاں ہے؟ دو ہی دل ہیں، یہ کیسے کہا جا سکتا ہے؟

شیر خاں — ہمارا ایک دل ہے۔ یہ تو ہم جانتے ہیں نا؟ ہمارے دل میں کون کون ہیں، یہ بھی ہمیں معلوم ہے نا؟

برہمادتیہ — ہاں، ہمارا دل اور اس کے ویکتی ہمارے لئے سپشٹ ہیں۔

شیر خاں — میں جلال خاں سے کہوں گا کہ جنگ کا کام یا تو وہ بنا کوئی دخل دیئے میرے ذمے کرے، ہمارا دل جس طرح مناسب سمجھے گا، اسے نپٹائے گا، یا پھر وہ لڑائی کا کام اپنے ذمے رکھے۔ دوسرے لفظوں میں اس کا مطلب ہوتا ہے کہ لڑائی کا کام، ہمارے خلاف جو دل ہیں ان کے ہاتھ میں چلا جائے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) ایسی حالت میں میں جلال خاں سے کہوں گا کہ وہ سلطنت کا اندرونی انتظام میرے ذمے کر دے۔

[برہمادتیہ کچھ اتر نہ دے کر گمبھیرتا سے وچارنے لگتا ہے۔ شیر خاں حقہ گڑگڑاتے ہوئے اس کی اور دیکھتا ہے۔]

شیر خاں — (کچھ دیر پشچات) تمھیں یہ تجویز پسند نہیں آئی؟

برہمادتیہ — (سر اٹھاتے ہوئے) ہاں، کچھ بہت سنتوش جنک نہیں ہے۔

شیر خاں — یہ میں بھی مانتا ہوں۔ مگر فی الحال جو حالت ہے اس سے بہتر ہو جائے گی یا نہیں؟ (حقہ گڑگڑا کر دھواں

छोड़ते हुए, कुछ रुककर) देखो पंडित, सबसे अच्छी बात तो थी बिहार छोड़ देना, लेकिन जैसा तुमने अभी कहा बिहार छोड़ कर कहाँ चला जाय, यह हमारी समझ में नहीं आता, और बिना किसी मुनासिब जगह को पाए, हाथ की जगह छोड़ना अब मुझे भी ठीक नहीं जान पड़ता.

ब्रह्मादित्य—इससे मैं सहमत हूँ.

शेरख़ाँ—जंग का काम हमारे जिम्मे रहा तो यह लड़ाई हम जीत सकेंगे इसका मुझे यक़ीन है, क्यों कि यह मुग़लों से न होकर पठानों से है.

ब्रह्मादित्य—अच्छा.

शेरख़ाँ—(हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) उस वक़्त सल्तनत का अंदरूनी इन्तज़ाम अपने हाथ में रहने की वजह से सुलह हमारे दल के साथ होगी और इस तरह हमारे दल की अहमियत बढ़ जायगी.

[ब्रह्मादित्य फिर कुछ न कह, सर झुका कर गम्भीरता से सोचने लगता है. शेरख़ाँ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाते हुए उसकी ओर देखता है]

ब्रह्मादित्य—(कुछ देर पश्चात सर उठाते हुए) यद्यपि मुझे अभी भी आपका प्रस्ताव बहुत सन्तोषजनक नहीं दिख रहा है, तथापि मैं आपको कोई दूसरा मार्ग सुझा भी नहीं सकता.

शेरख़ाँ—तसल्ली बख़्श नहीं है, यह तो मैं भी मानता हूँ लेकिन इससे मौजूदा हालत में तरक़्क़ी होगी या नहीं ?

چھوڑتے ہوئے کچھ رک کر) دیکھو پنڈت، سب سے اچھی بات تو تھی بہار چھوڑ دینا، لیکن جیسا تم نے ابھی کہا بہار چھوڑ کر کہاں چلا جائے، یہ ہماری سمجھ میں نہیں آتا، اور بنا کسی مناسب جگہ کو پائے، ہاتھ کی جگہ چھوڑنا اب مجھے بھی ٹھیک نہیں جان پڑتا۔

برہمادتیہ — اس سے میں سہمت ہوں۔

شیر خاں — جنگ کا کام ہمارے ذمے رہا تو یہ لڑائی ہم جیت سکیں گے اس کا مجھے یقین ہے، کیونکہ یہ مغلوں سے نہ ہو کر پٹھانوں سے ہے۔

برہمادتیہ — اچھا۔

شیر خاں — (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) اس وقت سلطنت کا اندرونی انتظام اپنے ہاتھ میں رہنے کی وجہ سے صلح ہمارے دل کے ساتھ ہوگی اور اس طرح ہمارے دل کی اہمیت بڑھ جائے گی۔

[برہمادتیہ پھر کچھ نہ کہہ، سر جھکا کر گمبھیرتا سے سوچنے لگتا ہے۔ شیر خاں حقہ گڑگڑاتے ہوئے اس کی اور دیکھتا ہے]

برہمادتیہ — (کچھ دیر پشچات سر اٹھاتے ہوئے) یدیپی مجھے ابھی بھی آپ کا پرستاؤ بہت سنتوش جنک نہیں دکھ رہا ہے، تتھاپی میں آپ کو کوئی دوسرا مارگ سجھا بھی نہیں سکتا۔

شیر خاں — تسلی بخش نہیں ہے، یہ تو میں بھی مانتا ہوں لیکن اس سے موجودہ حالت میں ترقی ہوگی یا نہیں؟

ब्रह्मादित्य—(गम्भीरता से सोचते हुए) थोड़ा बहुत सुधार हो सकता है.

शेरख़ाँ—और फिर, पंडित, लड़ाई एक ऐसी बात है कि जहाँ उससे मौजूदा चीज़ों में से कई का ख़ात्मा होता है, वहाँ उससे नई नई चीज़ें पैदा भी होती हैं. (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) बंगाल और बिहार की यह जंग हमें कहाँ ले जायगी, यह आज हम नहीं कह सकते.

ब्रह्मादित्य—(कुछ सन्तोष से) हाँ, यह मैं भी मानता हूँ. (कुछ रुककर) और आपकी हत्या का जो षडयन्त्र रचा जा रहा है, उसके लिये क्या करना है ?

शेरख़ाँ—(बेपरवाही से) वह........वह तो बहुत छोटी सी बात है. उस साज़िश को तो हम किसी भी तरह ख़तम कर देंगे. (हुक़्क़ा गुड़ गुड़ा कर धुआँ छोड़, मुस्कराते हुए) और फिर, पंडित, तुम तो समझते हो न कि मैं बड़े बड़े, कामों के लिये पैदा हुआ हूँ, बिना उन कामों के पूरे हुए मेरा ख़ून कैसे हो सकता है ?

ब्रह्मादित्य—(मुस्कराकर) हाँ, सो तो मैं अभी भी कहता हूँ; आपके द्वारा बड़े बड़े काम होंगे; होकर रहेंगे.

[दोनों हसने लगते हैं]

लघु—यवनिका

दूसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरख़ाँ के मकान में लाड का शयनागार

समय—संध्या.

برہمادتیہ — (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) تھوڑا بہت سُدھار ہو سکتا ہے۔

شیرخاں — اور پھر، پنڈت، لڑائی ایک ایسی بات ہے کہ جہاں اُس سے موجودہ چیزوں میں سے کئی کا خاتمہ ہوتا ہے، وہاں اُس سے نئی نئی چیزیں پیدا بھی ہوتی ہیں۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) بنگال اور بہار کی یہ جنگ ہمیں کہاں لے جائے گی، یہ آج ہم نہیں کہہ سکتے۔

برہمادتیہ — (کچھ سنتوش سے) ہاں، یہ میں بھی مانتا ہوں۔ (کچھ رُک کر) اور آپ کی ہتیا کا جو شڈینتر رچا رہا ہے، اُسکے لئے کیا کرنا ہے؟

شیرخاں — (بے پرواہی سے) وہ...... وہ تو بہت چھوٹی سی بات ہے۔ اُس سازش کو تو ہم کسی بھی طرح ختم کر دیں گے۔ (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑ، مسکراتے ہوئے) اور پھر، پنڈت، تم تو سمجھتے ہو نا کہ میں بڑے بڑے، کاموں کے لئے پیدا ہوا ہوں، بنا اُن کاموں کے پورے ہوئے میرا خون کیسے ہو سکتا ہے؟

برہمادتیہ — (مسکرا کر) ہاں، سو تو میں ابھی بھی کہتا ہوں؛ آپ کے دوارا بڑے بڑے کام ہوں گے؛ ہو کر رہیں گے۔

[دونوں ہنسنے لگتے ہیں]

لگھو یونیکا

دوسرا درشیہ

ستھان — بہار شریف میں شیرخاں کے مکان میں لاڈ کا شیناگار۔

سمے — سندھیا۔

[शयनागार अन्य कमरों के सदृश ही है. शयनागार के बीच में लाड का पलंग बिछा हुआ है. लाड बीमारी के कारण पलंग पर बेहोश सी लेटी हुई है. उसके पलंग के निकट ही उसकी मैना का पिंजरा टँगा है. एक लौंडी के साथ निजाम का प्रवेश.]

लौंडी—देखिये, अभी भी बेहोश हैं. दवा तो पीती ही नहीं.

निजाम—(लाड की ओर देखते हुए, लौंडी से) अच्छा, तुम जाकर हकीम जी को बुला लाओ, मैं तमाम बातों का इन्तजाम कर दूँगा.

[लौंडी का प्रस्थान. निजाम पलंग पर एक ओर बैठ जाता है.]

निजाम—(धीरे से) भाभी ! भाभी !

[लाड कोई उत्तर न देकर उसी प्रकार पड़ी रहती है. निजाम उसकी ओर देखता रहता है. कुछ देर निस्तब्धता.]

निजाम—(कुछ कातर स्वर में) भाभी ! आपको निजाम पुकार रहा है.........बोलो.........भाभी ....बोलो.

[लाड हिलती सी है, पर बोलती नहीं. निजाम लाड की ओर देखता रहता है. कुछ देर फिर निस्तब्धता.]

निजाम—भाभी !.........भाभी !

नसीम—बानू ! बानू !

[निजाम कुछ चौंककर मैना की ओर देखता है. वह एकाएक उदास हो जाता है और अचानक उसके मुख से निकलता है—]

निजाम—बा ....नू !.........बानू !......

लाड—(दर्द भरे स्वर में, किन्तु आँखें फिर भी बन्द रहती हैं) बानू ! .. ... फिर... ....फिर कहो.

[شیناگار انیہ کمروں کے سدرش ہی ہے. شیناگار کے بیچ میں لاڈ کا پلنگ بچھا ہوا ہے. لاڈ بیماری کے کارن پلنگ پر بے ہوش سی لیٹی ہوئی ہے. اس کے پلنگ کے نکٹ ہی اسکی مینا کا پنجرا ٹنگا ہے. ایک لونڈی کے ساتھ نظام کا پرویش.]

لونڈی — دیکھئے، ابھی بھی بے ہوش ہیں. دوا تو پیتی ہی نہیں.

نظام — (لاڈ کی اور دیکھتے ہوئے، لونڈی سے) اچھا، تم جاکر حکیم جی کو بلا لاؤ، میں تمام باتوں کا انتظام کر دوں گا.

[لونڈی کا پرستھان. نظام پلنگ پر ایک اور بیٹھ جاتا ہے.]

نظام — (دھیرے سے) بھابی ! بھابی !

[لاڈ کوئی اتر نہ دے کر اسی پرکار پڑی رہتی ہے. نظام اس کی اور دیکھتا رہتا ہے. کچھ دیر نستبدھتا.]

نظام — (کچھ کاتر سور میں) بھابی ! آپ کو نظام پکار رہا ہے...... بولو...... بھابی...... بولو.

[لاڈ ہلتی سی ہے، پر بولتی نہیں. نظام لاڈ کی اور دیکھتا رہتا ہے. کچھ دیر پھر نستبدھتا.]

نظام — بھابی !...... بھابی !

نسیم — بانو ! بانو !

[نظام کچھ چونک کر مینا کی اور دیکھتا ہے. وہ یکایک اداس ہو جاتا ہے اور اچانک اس کے مکھ سے نکلتا ہے —]

نظام — با...... نو !...... بانو !......

لاڈ — (درد بھرے سور میں، کنتو آنکھیں پھر بھی بند رہتی ہیں) بانو !...... پھر...... پھر کہو.

[निज़ाम कुछ विस्मय पूर्ण दृष्टि से लाड की ओर देखता है. लाड की आँखों की कोरों से दो बूंद आँसू ढलक जाते हैं.]

निज़ाम—(काँपते हुए स्वर में) बानू!

लाड—(उसी प्रकार आँखों को बन्द किये हुए) फिर...फिर कहो.

निज़ाम—बानू!

लाड—रुको मत, कहते जाओ.

निज़ाम—बानू! बानू! बानू!

[लाड आँखें खोल देती है. उसके दोनों हाथ निज़ाम की ओर बढ़ते हैं. निज़ाम उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर उसके हाथ अपने गालों में मलने लगता है. निज़ाम के आँसू लाड के हाथों को भिगो देते हैं, दोनों कातर दृष्टि से एक दूसरे की ओर देखते हैं.]

नसीम—मुसव्विर! मुसव्विर!

[दोनों की दृष्टि मैना की ओर घूमती है. पर तुरन्त ही फिर दोनों एक दूसरे को देखने लगते हैं. लाड के ओठों पर एक अपूर्व मुस्कराहट दौड़ जाती है.]

लाड—निज़ाम! आज मैं जीत गई. अब मैं अच्छी हो जाऊँगी.

निज़ाम—(मुग्ध मुस्कराहट के साथ) बानू!..................मेरी बानू!.........

लघु—यवनिका

[نظام کچھ وِسمیہ پورن دِرشٹی سے لاڈ کی اُور دیکھتا ہے۔ لاڈ کی آنکھوں کی کوروں سے دو بوند آنسو ڈھلک جاتے ہیں۔]

نظام — (کانپتے ہوئے سور میں) بانو!

لاڈ — (اُسی پرکار آنکھوں کو بند کئے ہوئے) پھر...... پھر کہو۔

نظام — بانو!

لاڈ — رُکو مت، کہتے جاؤ۔

نظام — بانو! بانو! بانو!

[لاڈ آنکھیں کھول دیتی ہے۔ اُس کے دونوں ہاتھ نظام کی اُور بڑھتے ہیں۔ نظام اُس کے ہاتھوں کو اپنے ہاتھوں میں لیکر اُس کے ہاتھ اپنے گالوں میں ملنے لگتا ہے۔ نظام کے آنسو لاڈ کے ہاتھوں کو بھگو دیتے ہیں، دونوں کاتر دِرشٹی سے ایک دوسرے کی اُور دیکھتے ہیں۔]

نسیم — مصوّر! مصوّر!

[دونوں کی دِرشٹی مینا کی اُور گھومتی ہے۔ پر تُرنت ہی پھر دونوں ایک دوسرے کو دیکھنے لگتے ہیں۔ لاڈ کے ہونٹوں پر ایک اَپورو مُسکراہٹ دَوڑ جاتی ہے۔]

لاڈ — نظام! آج میں جیت گئی۔ اب میں اچھی ہو جاؤں گی۔

نظام — (مُگدھ مُسکراہٹ کے ساتھ) بانو!............ میری بانو!.......

لگھو۔ یونیکا

तीसरा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरख़ाँ के मकान में शेरख़ाँ का कमरा.

समय—रात्रि.

[शेरख़ाँ बेचैनी से इधर उधर टहल रहा है. उसका हुक़्क़ा भरा हुआ रखा है पर उस ओर उसका ध्यान ही नहीं है, वह कितना बेचैन है, यह उसकी मुद्रा से जान पड़ता है. उसकी आँखें चढ़ी हुई हैं, ओठ सूख गये हैं, जिन्हें वह बार बार जीभ से गीले करता है. टहलते टहलते कभी वह खड़ा हो जाता है. फिर घूमने लगता है. कभी शून्य दृष्टि से सामने की ओर देखता है. कभी मुट्ठी बाँधता है. कभी पैरों से ज़मीन ठोकने लगता है. ब्रह्मादित्य का प्रवेश. उसे देख कर शेरख़ाँ शीघ्रता से उसकी ओर बढ़ता है.]

शेरख़ाँ—(जल्दी से) हाँ, क्या.........क्या ख़बर है मैदाने जंग की ?

ब्रह्मादित्य—बड़ी विचित्र ख़बर है—मैदान, मैदाने जंग न रह कर ख़ाली मैदान ही रह गया.

शेरख़ाँ—(आश्चर्य से) याने ?

ब्रह्मादित्य—लड़ाई हुई ही नहीं.

शेरख़ाँ—(और अधिक आश्चर्य से) लड़ाई हुई ही नहीं ?

ब्रह्मादित्य—जी नहीं.

शेरख़ाँ—तब ?

ब्रह्मादित्य—राज्य का अन्तरंग-कार्य आपको सौंप कर जलाल

تیسرا درشیہ

ستھان — بہار شریف میں شیرخاں کے مکان میں شیرخاں کا کمرہ۔

سمے — راتری۔

[شیرخاں بے چینی سے اِدھر اُدھر ٹہل رہا ہے۔ اُس کا حُقّہ بھرا ہوا رکھا ہے پر اُس اَور اُس کا دھیان ہی نہیں ہے، وہ کتنا بے چین ہے، یہ اُس کی مُدرا سے جان پڑتا ہے۔ اُس کی آنکھیں چڑھی ہوئی ہیں، ہونٹ سوکھ گئے ہیں، جنھیں وہ بار بار جیبھ سے گیلے کرتا ہے، ٹہلتے ٹہلتے کبھی وہ کھڑا ہو جاتا ہے۔ پھر گھومنے لگتا ہے۔ کبھی شونیہ درشٹی سے سامنے کی اَور دیکھتا ہے۔ کبھی مٹھی باندھتا ہے۔ کبھی پیروں سے زمین ٹھوکنے لگتا ہے۔ برہمادتیہ کا پرویش۔ اُسے دیکھ کر شیرخاں شیگھرتا سے اُس کی اَور بڑھتا ہے۔]

شیرخاں — (جلدی سے) ہاں، کیا...... کیا خبر ہے میدانِ جنگ کی؟

برہمادتیہ — بڑی وچتر خبر ہے — میدان، میدانِ جنگ نہ رہ کر خالی میدان ہی رہ گیا۔

شیرخاں — (آشچریہ سے) یعنی؟

برہمادتیہ — لڑائی ہوئی ہی نہیں۔

شیرخاں — (اور ادھک آشچریہ سے) لڑائی ہوئی ہی نہیں؟

برہمادتیہ — جی نہیں۔

شیرخاں — تب؟

برہمادتیہ — راجیہ کا انترنگ کاریہ آپ کو سونپ کر جلال

खाँ यहाँ के दूसरे दलों के साथ बंगाल के सुलतान से युद्ध करने नहीं गया था.

शेरखाँ—(अत्यन्त आश्चर्य से, पैरों को जमीन पर पटक, हाथों की मुट्ठियाँ बाँधकर) तब.........तब काहे को गया था ?

ब्रह्मादित्य—बिहार प्रान्त बंगाल के सुलतान को भेंट करने.

शेरखाँ—(चिल्ला कर) पंडित ! पंडित ! पहेलियों में बात न करो; यह वक़्त मज़ाक़ करने का नहीं है.

ब्रह्मादित्य—मैं पहेलियों में बात नहीं कर रहा हूँ, और मज़ाक़ तो मैं शायद ही कभी करता हाऊँ; पर बात ही ऐसी आश्चर्य जनक हुई है, जो पहेली भी समझी जा सकती है और मज़ाक़ भी. जलाल खाँ ने लड़कपन किया है. ऐसा बचपन जैसा इतिहास में इसके पूर्व कदाचित् किसी ने न किया होगा. आपके सामने अपने को निबल मानकर, आपसे अपना पीछा छुड़ाने के लिये, उसने इस आशा पर कि बंगाल का सुलतान बिहार उसे लौटा देगा, बिना युद्ध और बिना संधि की ही किन्हीं शर्तों के बिहार प्रान्त बगाल के सुलतान को नज़र कर दिया. न युद्ध हुआ, न संधि, सैनिक बरखास्त कर दिये गये और अपने दल के मित्रों के साथ जलाल खाँ साहब बंगाल के सुलतान के मेहमान हैं.

[शेरखाँ बड़ी गहरी सांस ले, कुछ न कहकर चुपचाप इधर उधर टहलता है. ब्रह्मादित्य उसकी ओर देखता है. बदहवास सा निज़ाम जल्दी जल्दी आता है.]

निज़ाम—(भर्राये और काँपते हुए स्वर में) भाई साहब ! ....भाई जान. मुझसे एक ग़लती.........बहुत बड़ी ग़लती

خاں یہاں کے دوسرے دَلوں کے ساتھ بنگال کے سُلطان سے یُدھ کرنے نہیں گیا تھا۔

شیر خاں — (اتینت آشچریہ سے، پیروں کو زمین پر پٹک، ہاتھوں کی مٹھیاں باندھکر) تب...... تب کاہے کو گیا تھا؟

برہمادتیہ — بہار پرانت بنگال کے سُلطان کو بھینٹ کرنے۔

شیر خاں — (چلّا کر) پنڈت! پنڈت! پہیلیوں میں بات نہ کرو؛ یہ وقت مذاق کرنے کا نہیں ہے۔

برہمادتیہ — میں پہیلیوں میں بات نہیں کر رہا ہوں، اور مذاق تو میں شاید ہی کبھی کرتا ہوؤں؛ پر بات ہی ایسی آشچریہ جنک ہوئی ہے، جو پہیلی بھی سمجھی جا سکتی ہے اور مذاق بھی۔ جلال خاں نے لڑکپن کیا ہے۔ ایسا بچپن جیسا اتہاس میں اُس کے پوروکداچت کسی نے نہ کیا ہوگا۔ آپ کے سامنے اپنے کو نربل مان کر، آپ سے اپنا پیچھا چھڑانے کے لئے، اُس نے اِس آشا پر کہ بنگال کا سُلطان بہار اُسے لَوٹا دے گا، بنا یُدھ اور بنا سَندھی کی ہی کنھیں شرطوں کے بہار پرانت بنگال کے سلطان کو نذر کر دیا۔ نہ یُدھ ہوا، نہ سندھی، سینک برخاست کر دیئے گئے اور اپنے دَل کے مِتروں کے ساتھ جلال خاں صاحب بنگال کے سُلطان کے مہمان ہیں۔

[شیر خاں بڑی گہری سانس لے، کچھ نہ کہہ کر چپ چاپ اِدھر اُدھر ٹہلتا ہے۔ برہمادتیہ اُس کی اَور دیکھتا ہے۔ بدحواس سا نظام جلدی جلدی آتا ہے۔]

نظام — (بھرّائے ہوئے کانپتے ہوئے سور میں) بھائی صاحب! .... بھائی جان۔ مجھ سے ایک غلطی...... بہت بڑی غلطی

हो गई है, लेकिन.........लेकिन मुझे उम्मीद है कि आप मुझे माफ़.........

शेरखाँ—(कड़क कर) ठहरो निज़ाम ! (ब्रह्मादित्य की ओर घूम कर) पंडित, इस तरह मुल्क नज़र नहीं किये जा सकते, सुना, हरगिज़......हरगिज़ नहीं. मेरे रहते...शेरखाँ के रहते, जलाल खाँ...जलाल खाँ क्या कोई.........कोई भी बिहार को बंगाल के सुलतान की नज़र नहीं कर सकता..........जलाल खाँ के वालिद ने मुझे नौकर रखा था, जलाल खाँ मेरा शागिर्द रह चुका था, इसीलिये मेरे दिल में उसके लिये मुरव्वत आ जाती थी; लेकिन दुशमने मुल्क होकर उसी ने......जलाल खाँ ने ही मुझे छुटकारा दे दिया. मैं अभी ऐलान कराता हूँ कि इस तरह मुल्क नज़र नहीं किया जा सकता. इस हरकत के सबब से जलाल खाँ बिहार का सुलतान नहीं रह गया. बिहार बंगाल का न होकर आज़ाद मुल्क है. इस ऐलान के बाद ही हम फ़ौरन जंग की तैयारी करेंगे. अगर बंगाल का हमला हुआ तो उस हमले से हम अपनी हिफ़ाज़त करेंगे. और अगर हमला न हुआ तो, सुना ही है कि हुमायूं गुजरात पर हमला करने वाला है, उसके गुजरात की लड़ाई में फँसते ही हमारी फौजें बंगाल की तरफ़ कूच करेंगी. इन दिनों हमारे मक़सदों की तरफ़ जाने से हमारे जो रास्ते बंद हो गये थे, वह यकायक आज फिर खुल गये. (प्रसन्नता से) चलो, पंडित, मेरे साथ आओ, मैं अभी अभी यह ऐलान कराता हूँ.

[शेरखाँ बिना निज़ाम की ओर देखे शीघ्रता से जाता है. ब्रह्मादित्य उसके पीछे पीछे जाता है. निज़ाम अत्यन्त निराश दृष्टि

ہوگئی ہے، لیکن....... لیکن مجھے امید ہے کہ آپ مجھے معاف.....

شیر خاں— (کڑک کر) ٹھہرو نظام! (برہمادتیہ کی اور گھوم کر) پنڈت، اس طرح ملک نذر نہیں کئے جا سکتے، سُنا، ہرگز...... ہرگز نہیں. میرے رہتے...... شیر خاں کے رہتے، جلال خاں...... جلال خاں کیا کوئی...... کوئی بھی بہار کو بنگال کے سلطان کی نذر نہیں کر سکتا........ جلال خاں کے والد نے مجھے نوکر رکھا تھا، جلال خاں میرا شاگرد رہ چکا تھا، اسی لئے میرے دل میں اس کے لئے مروت آجاتی تھی؛ لیکن دشمنِ ملک ہوکر اسی نے........ جلال خاں نے ہی مجھے چھٹکارا دے دیا. میں ابھی اعلان کراتا ہوں کہ اس طرح ملک نذر نہیں کیا جا سکتا. اس حرکت کے سبب سے جلال خاں بہار کا سلطان نہیں رہ گیا. بہار بنگال کا نہ ہوکر آزاد ملک ہے. اس اعلان کے بعد ہی ہم فوراً جنگ کی تیاری کریں گے. اگر بنگال کا حملہ ہوا تو اُس حملے سے ہم اپنی حفاظت کریں گے. اور اگر حملہ نہ ہوا تو، سُنا ہی ہے کہ ہمایوں گجرات پر حملہ کرنے والا ہے، اُس کے گجرات کی لڑائی میں پھنستے ہی ہماری فوجیں بنگال کی طرف کوچ کریں گی. ان دنوں ہمارے مقصدوں کی طرف جانے سے ہمارے جو راستے بند ہوگئے تھے، وہ یکایک آج پھر کھل گئے. (پرسنتا سے) چلو، پنڈت، میرے ساتھ آؤ، میں ابھی ابھی یہ اعلان کراتا ہوں.

[شیر خاں بنا نظام کی اور دیکھے شیگھرتا سے جاتا ہے. برہمادتیہ اُس کے پیچھے پیچھے جاتا ہے. نظام اتینت نراش درشٹی

से जिस ओर यह दोनों गये हैं उस ओर देखता है. उसकी आँखों में आँसू छलछला आते हैं.]

लघु—यवनिका

हिन्द के विधान
की
अंगरेज़ी हिन्दुस्तानी शब्दावली

(अंगरेज़ी नागरी लिखावट में)

जिसमें

हिन्द का जो नया विधान पास हो रहा है उसके लगभग चौदह सौ ख़ास ख़ास अंगरेज़ी शब्दों के लिए आसान हिन्दुस्तानी शब्द महात्मा भगवान दीन और कुछ दूसरे विद्वानों ने सुझाए हैं.

शुरू में 'दो शब्द' लिखे हैं—काका कालेलकर, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्री मो० सत्यनारायण और पंडित सुन्दर लाल ने.

निकाली है—हिन्दुस्तानी प्रचार सभा वर्धा ने.

क़ीमत दो रुपै.

मिलने का पता—मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़.
इलाहाबाद.

سے جس اُور یہ دونوں گئے ہیں اُس اُور دیکھتا ہے۔ اُس کی آنکھوں میں آنسو چھلچھلا آتے ہیں۔]

لگھو یونیکا

ہند کے ودھان
کی
انگریزی ہندستانی شبداولی

(انگریزی ناگری لکھاوٹ میں)

جسمیں

ہند کا جو نیا ودھان پاس ہو رہا ہے اُس کے لگ بھگ چودہ سو خاص خاص انگریزی شبدوں کے لئے آسان ہندستانی شبد مہاتما بھگوان دین اور کچھ دوسرے وِدوانوں نے سجھائے ہیں۔

شروع میں "دو شبد" لکھے ہیں—کاکا کالیلکر، شریمتی رامیشوری نہرو، شری م۔ ستیہ نارائن اور پنڈت سندر لال نے۔

نکالی ہے—ہندستانی پرچار سبھا وردھا نے۔ قیمت دو روپے۔

ملنے کا پتہ—مینیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ۔
الہ آباد۔

यह भाषा का प्रचार नहीं है !

[श्रीमती सरोजिनीदास]

जैसा कि मैंने कई लेखों में लिखा है, और जैसा कि आप सभी जानते हैं भाषा के सवाल का सबसे सीधा और गहरा सम्बन्ध नारियों से है. ऐसा इसलिये कि अभी हमारे देश और समाज की जैसी हालत है, उसमें एक-एक बच्चे और बड़े के ऊपर सबसे अधिक असर औरतों का ही पड़ता है. उनके रहन-सहन, चाल-ढाल, बातचीत सबका असर घर के सदस्यों पर पड़ता है. घर का बनना और बिगड़ना जिस तरह औरतों के ऊपर रहता है उसी तरह घर के बच्चों और बड़ों की संस्कृति, भाषा, व्यवहार, सभ्यता, शराफ़त वगैरा के बढ़ने, संवरने और दिनों दिन ख़ूबसूरत होने में भी अगर किसी की देन सबसे अधिक होती है तो वह औरतों की देन होती है. इसी लिये 'मां के दूध' का इतना ज्यादा महत्व है. जैसे मुहावरा है—'शराफ़त तो उसने मां के दूध से ही पाई है.' यह 'मां का दूध' मुमकिन है, और ज्यादा मुमकिन है, सिर्फ़ हिन्दुस्तान की ही ख़ास बात हो. मगर इस पर हमें नाज़ है. हिन्दुस्तान की जहाँ दूसरी चीजें नाज़ के क़ाबिल हैं, वहीं, यह चीज़ भी बहुत अधिक महत्वपूर्ण और क़ीमती है. घर की सभ्यता, संस्कृति, आचार विचार, व्यवहार सब कुछ मां की और दूसरी औरतों की देन होती

یہ بھاشا کا پرچار نہیں ہے!

[شریمتی سروجنی داس]

جیسا کہ میں نے کئی لیکھوں میں لکھا ہے، اور جیسا کہ آپ سبھی جانتے ہیں بھاشا کے سوال کا سب سے سیدھا اور گہرا سمبندھ ناریوں سے ہے. ایسا اس لئے کہ ابھی ہمارے دیش اور سماج کی جیسی حالت ہے، اس میں ایک ایک بچے اور بڑے کے اوپر سب سے ادھک اثر عورتوں کا ہی پڑتا ہے. ان کے رہن سہن، چال ڈھال، بات چیت سب کا اثر گھر کے سدسیوں پر پڑتا ہے. گھر کا بننا اور بگڑنا جس طرح عورتوں کے اوپر رہتا ہے اسی طرح گھر کے بچوں اور بڑوں کی سنسکرتی، بھاشا، ویوہار، سبھیتا، شرافت وغیرہ کے بڑھنے، سنورنے اور دنوں دن خوبصورت ہونے میں بھی اگر کسی کی دین سب سے ادھک ہوتی ہے تو وہ عورتوں کی دین ہوتی ہے. اسی لئے 'ماں کے دودھ' کا اتنا زیادہ مہتو ہے. جیسا محاورہ ہے — 'شرافت تو اس نے ماں کے دودھ سے ہی پائی ہے.' یہ 'ماں کا دودھ' ممکن ہے، اور زیادہ ممکن ہے، صرف ہندستان ہی کی خاص بات ہو. مگر اس پر ہمیں ناز ہے. ہندستان کی جہاں دوسری چیزیں ناز کے قابل ہیں، وہاں، یہ چیز بھی بہت ادھک مہتوپورن اور قیمتی ہے. گھر کی سبھیتا، سنسکرتی، آچار

है. और, लोगों को यह देन मिलती है उस बोली के ज़रिये जिसे मां अपने बच्चों से और बहिन अपने भाइयों से बोलती है.

मैंने अच्छे से अच्छे सभ्य घरानों में देखा है कि मर्द लोग बाहर चाहे जितनी अरबी छाँटें या संस्कृत में वार्तालाप करें, जब वह घर में आते हैं तो अपनी बीबी और बच्चों से घर की बोली में बोलते हैं क्योंकि इस तरह की बोली ज्यादा स्वाभाविक, आसान और मीठी होती है. उसमें बनावटी पन नहीं रहता. उसमें किसी पर अपनी क़ाबलीयत जमाने की कोशिश नहीं रहती. जो लोग अपनी बीबी को 'डारलिंग' और बच्चे को 'डियर सनी' कहते हैं वह भी थोड़ी देर बाद ही अपनी सूबाई या जिले और शहर की भाषा में बात करने लगते हैं.

यह तो हुआ अलग-अलग घरानों का हाल. अगर सभी घरानों के हाल को एक साथ गूंथ दिया जाय और सबको एक साथ देखा जाय तो भी इस बुनियादी बात में कोई फ़र्क़ नहीं आता. जब सब घरानों में औरतों की इस तरह की देन का महत्व है और उससे इनकार नहीं किया जा सकता तो फिर यह क्यों न मान लिया जाय कि भाषा भी, जिसके ज़रिये औरतें इतना बड़ा फ़र्ज़ अन्जाम देती हैं और इतना ज्यादा जरूरी काम करती हैं, उतनी महत्व पूर्ण चीज़ है और उसका सीधा और सबसे नज़दीकी सम्बन्ध औरतों से है. इसीलिये हमारा यह इसरार रहा है कि भाषा का सम्बन्ध बोलियों से रहे यानी भाषा इतनी सरल, मुहावरेदार और स्वाभाविक हो कि वह आसानी के साथ घरों में बोली जा सके.

अगर हमारी यह बात मान ली जाय और इस बात को लिखी

ہے: اور، لوگوں کو یہ دین ملتی ہے اُس بولی کے ذریعے جسے ماں اپنے بچوں سے اور بہن اپنے بھائیوں سے بولتی ہے.

میں نے اچھے سے اچھے سبھیہ گھرانوں میں دیکھا ہے کہ مرد لوگ باہر چاہے جتنی عربی چھانٹیں یا سنسکرت میں وارتالاپ کریں، جب وہ گھر میں آتے ہیں تو اپنی بی بی اور بچوں سے گھر کی بولی میں بولتے ہیں کیونکہ اس طرح کی بولی زیادہ سوابھاوک، آسان اور میٹھی ہوتی ہے. اُس میں بناوٹی پن نہیں رہتا. اُس میں کسی پر اپنی قابلیت جمانے کی کوشش نہیں رہتی. جو لوگ اپنی بی بی کو 'ڈارلنگ' اور بچے کو 'ڈیر سنی' کہتے ہیں وہ بھی تھوڑی دیر بعد ہی اپنی صوبائی یا ضلع اور شہر کی بھاشا میں بات کرنے لگتے ہیں.

یہ تو ہوا الگ الگ گھرانوں کا حال. اگر سبھی گھرانوں کے حال کو ایک ساتھ گونتھ دیا جائے اور سب کو ایک ساتھ دیکھا جائے تو بھی اس بُنیادی بات میں کوئی فرق نہیں ہوتا. جب سب گھرانوں میں عورتوں کی اس طرح کی دین کا مہتو ہے اور اس سے انکار نہیں کیا جا سکتا تو پھر یہ کیوں نہ مان لیا جائے کہ بھاشا بھی، جس کے ذریعے عورتیں اتنا بڑا فرض انجام دیتی ہیں اور اتنا زیادہ ضروری کام کرتی ہیں. اتنا مہتو پورن چیز ہے اور اس کا سیدھا اور سب سے نزدیکی سمبندھ عورتوں سے ہے. اسی لئے ہمارا یہ اصرار رہا ہے کہ بھاشا کا سمبندھ بولیوں سے رہے یعنی بھاشا اتنی سرل، محاورے دار اور سوابھاوک ہو کہ وہ آسانی کے ساتھ گھروں میں بولی جا سکے.

اگر ہماری یہ بات مان لی جائے اور اس بات کو لکھی

हुई भाषा में भी लागू किया जा सके तो हमारी राष्ट्र भाषा और राज भाषा का मसला बहुत हद तक हल हो सकता है.

मैं हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मेरठ अधिवेशन में गई थी. मैंने वहां का रंग ढंग नज़दीक से देखा और समझा था. मुझे वहाँ अधिवेशन में आई हुई सैकड़ों औरतों से बात चीत करने का भी मौक़ा मिला था. और, मुझे यह जानकर ख़ुशी हुई कि अधिकतर औरतें सीधी और सरल भाषा को ही समझती और पसन्द करती हैं. वहां तो जिस समय श्रीमती श्रद्धा माता ने संस्कृत और संस्कृत-भरी हिन्दी के समर्थन में भाषन दिया उस समय सबसे कम असर उनकी बात का अगर किसी पर पड़ा था तो औरतों पर. शान्ति बहन का यह कहना, 'क्या बकवास कर रही है यह औरत' मुझे अभी तक याद है. हां, वह कोई भाषन न था, वह कोरी बकवास थी.

दिल्ली की असेम्बली में राज-भाषा के सम्बन्ध में प्रस्ताव पास हो चुका है और जहां तक हो सके हम सब को उसे अमल में लाना भी चाहिये. मगर प्रस्ताव की 'स्प्रिट' को समझना और उसे अमल में लाना आसान बात नहीं है. प्रस्ताव में साफ़ कहा गया है कि जिस नई राष्ट्र भाषा को सबने स्वीकार किया है उसके बनाने के सम्बन्ध में "युनियन का यह फ़र्ज होगा कि हिन्दी के फैलने में मदद दे और हिन्दी भाषा को इस तरह से बढ़ावे कि वह भारत की **मिली-जुली कलचर के सब अंशो** को ज़ाहिर करने का साधन बन सके, और हिन्दी की आत्मा को नुक़सान पहुँचाये बिना जो रूप, जो शैलियाँ, जो मुहावरे हिन्दुस्तानी में और भारत की दूसरी भाषाओं में काम आते है उन्हें हिन्दी में अपना कर उसे माला-माल करे, और जहाँ कहीं

ہوئی بھاشا میں بھی لاگو کیا جا سکے تو ہماری راشٹر بھاشا اور راج بھاشا کا مسئلہ بہت حد تک حل ہو سکتا ہے.

میں ہندی ساہتیہ سمیلن کے میرٹھ ادھیویشن میں گئی تھی. میں نے وہاں کا رنگ ڈھنگ نزدیک سے دیکھا اور سمجھا تھا. مجھے وہاں ادھیویشن میں آئی ہوئی سیکڑوں عورتوں سے بات چیت کرنے کا بھی موقع ملا تھا. اور، مجھے یہ جان کر خوشی ہوئی کہ ادھک تر عورتیں سیدھی اور سرل بھاشا کو ہی سمجھتی اور پسند کرتی ہیں. وہاں تو جس سمے شریمتی شردھا ماتا نے سنسکرت اور سنسکرت بھری ہندی کے سمرتھن میں بھاشن دیا اُس سمے سب سے کم اثر اُن کی بات کا اگر کسی پر پڑا تھا تو عورتوں پر. شانتی بہن کا یہ کہنا 'کیا بکواس کر رہی ہے یہ عورت'، مجھے ابھی تک یاد ہے. ہاں، وہ کوئی بھاشن نہ تھا، وہ کوری بکواس تھی.

دلی کی اسمبلی میں راج بھاشا کے سمبندھ میں پرستاؤ پاس ہو چکا ہے اور جہاں تک ہو سکے ہم سب کو اُسے عمل میں لانا بھی چاہئے. مگر پرستاؤ کی 'سپرٹ' کو سمجھنا اور اُسے عمل میں لانا آسان بات نہیں ہے. پرستاؤ میں صاف کہا گیا ہے کہ جس نئی راشٹر بھاشا کو سب نے سویکار کیا ہے اُس کے بنانے کے سمبندھ میں 'یونین کا یہ فرض ہوگا کہ ہندی کے پھیلنے میں مدد دے اور ہندی بھاشا کو اس طرح سے بڑھاوے کہ وہ بھارت کی **ملی جلی کلچر کے سب انشوں** کو ظاہر کرنے کا سادھن بن سکے، اور ہندی کی آتما کو نقصان پہنچائے بنا جو روپ، جو شیلیاں، جو محاورے ہندستانی میں اور بھارت کی دوسری بھاشاؤں میں کام آتے ہیں انھیں ہندی میں اپنا کر اُسے مالا مال کرے، اور جہاں کہیں

जरूरी या ठीक हो वहाँ हिन्दी की शब्दावली के लिये पहले संस्कृत से और दूसरे और भाषाओं से मदद ले."

इस प्रस्ताव की स्प्रिट यह है कि राज भाषा के बनाने में तंग नजरी और तंग दिली से काम न लिया जाय बल्कि इस मामले में ज्यादा से ज्यादा उदारता से काम लिया जाय. मिली-जुली कलचर के लिये यह उदारता बहुत जरूरी है. और यह उदारता सबसे ज्यादा पाई जाती है औरतों में.

अब जरा ग़ौर कीजिये कि अगर हिन्दुस्तान के हर हिस्से के लोगों के लिये एक भाषा बनाई जाय तो फिर मिली-जुली भाषा के आलावा दूसरी कौन सी भाषा राष्ट्र भाषा बन सकती है और क्या यही राष्ट्र भाषा मिली-जुली कलचर को गारण्टी नहीं है. तो फिर मिली-जुली कलचर और मिली-जुली या बोल चाल की सरल भाषा ही क्यों न हमारी कोशिशों का मक़सद बने ?

यहां एक दुख भरी घटना की याद आ गई. घटना दुख भरी है और वह आने वाले खतरे की घण्टी भी है.

अभी-अभी, इलाहाबाद में बड़ी धूम-धाम से विजय दशमी का जलूस निकला था. उस जलूस में श्रद्धेय पुरुषोत्तम दास टण्डन की प्रेरणा से हिन्दी के समर्थन में कई चौकियाँ भी निकली थीं. उनमें से एक चौकी पर स्वयं टण्डन जी का रूप धारन किये एक आदमी था. वही अधपकी दाढ़ी, वही मासूम और प्यारा चेहरा जिसे देखकर दिल में खुद-बखुद इज्जत पैदा हो जाती है. तो यह बाबू जी हैं ! इलाहाबाद वाले टण्डन जी को श्रद्धा और प्रेम के कारन बाबू जी कहते हैं. इसलिये जब हिन्दी का प्रचार करने वाली एक गाड़ी पर

ضروری یا ٹھیک ہو وہاں ہندی کی شبداولی کے لئے پہلے سنسکرت سے اور دوسرے اور بھاشاؤں سے مدد لے۔"

اس پرستاؤ کی سپرٹ یہ ہے کہ راج بھاشا کے بنانے میں تنگ نظری اور تنگ دلی سے کام نہ لیا جائے بلکہ اس معاملے میں زیادہ سے زیادہ اُدارتا سے کام لیا جائے۔ ملی جلی کلچر کے لئے یہ اُدارتا بہت ضروری ہے۔ اور یہ اُدارتا سب سے زیادہ پائی جاتی ہے عورتوں میں۔

اب ذرا غور کیجئے کہ اگر ہندستان کے ہر حصے کے لوگوں کے لئے ایک بھاشا بنائی جائے تو پھر ملی جلی بھاشا کے علاوہ دوسری کون سی بھاشا راشٹر بھاشا بن سکتی ہے۔ اور کیا یہی راشٹر بھاشا ملی جلی کلچر کی گارنٹی نہیں ہے۔ تو پھر ملی جلی کلچر اور ملی جلی یا بول چال کی سرل بھاشا ہی کیوں نہ ہماری کوششوں کا مقصد بنے؟

یہاں ایک دُکھ بھری گھٹنا کی یاد آگئی۔ گھٹنا دُکھ بھری ہے اور وہ آنے والے خطرے کی گھنٹی بھی ہے۔

ابھی ابھی، الہ آباد میں بڑی دھوم دھام سے وجے دشمی کا جلوس نکلا تھا۔ اُس جلوس میں شردھیے پرشوتم داس ٹنڈن کی پریرنا سے ہندی کے سمرتھن میں کئی چوکیاں بھی نکلی تھیں۔ ان میں سے ایک چوکی پر سویم ٹنڈن جی کا روپ دھارن کئے ایک آدمی تھا۔ وہی ادھ پکی داڑھی، وہی معصوم اور پیارا چہرہ جسے دیکھ کر دل میں خود بخود عزت پیدا ہو جاتی ہے۔ تو یہ بابو جی ہیں! الہ آباد والے ٹنڈن جی کو شردھا اور پریم کے کارن بابو جی کہتے ہیں۔ اس لئے جب ہندی کا پرچار کرنے والی ایک گاڑی پر

'बाबू जी' की सजीव प्रतिमा दिखाई दी तो हम लोगों को बड़ी खुशी हुई.

मगर उसी गाड़ी के पीछे एक दूसरी गाड़ी भी थी. इस गाड़ी पर एक अधेड़ उम्र का मुसलमान बैठा तख्ती सामने रखे क. ख. ग. घ. ङ. लिखना सीख रहा था. उसे हिन्दी अक्षरों को सिखाने वाला एक छोटा सा गांधी टोपी पहिने हुए बच्चा बैठा था. वह बच्चा रह-रह कर उस अधेड़ बुज़ुर्ग मुसलमान हिन्दी सीखने वाले आदमी के कान उमेंठ रहा था और उसे चपत लगा रहा था. यही नहीं, अगर वह मुसलमान अधेड़ विद्यार्थी ज़रा सी ढिलाई कर देता या सीखने की दिक़्क़तों से परेशान होकर रुक जाता तो उसके पीछे खड़ा हुआ बावर्दी पुलिस का आफ़सर उसके ऊपर बन्दूक तान देता और बन्दूक़ के कुन्दे से उसकी कुन्दी करने लगता.

यह दृश्य विजया-दशमी के दिन इलाहाबाद की लाखों जनता ने देखा है. सुना है, टन्डन जी भी एक नगर-सेठ के यहाँ बैठे यह चौकी देख रहे थे. उस चौकी पर उन्होंने कोई एतराज़ किया इसकी खबर हमें नहीं मिली है. हालाँ कि हमें आशा यही करना चाहिये कि उन्होंने उस चौकी पर ज़रूर एतराज़ किया होगा.

बहर हाल, यह चौकी कितनी गन्दी और खतरनाक भावना फैला रही थी, यह आसानी से समझा जा सकता है. अगर हिन्दी सिखाने के लिये पुलिस की बन्दूक़ों का सहारा लिया गया तो हम मजबूर होकर इसे हिन्दी साम्राज्यवाद और हिन्दी फ़ाशिज़्म कहेंगे. और उस छोटे से बच्चे ने हिन्दी सिखाने के लिये उस बुज़ुर्ग मुसलमान के कान जिस तरह ऐंठे उसे देख कर तो यह लगता है कि अगर यही

بابو جی، کی سجیو پرتما دکھائی دی تو ہم لوگوں کو بڑی خوشی ہوئی۔

مگر اُسی گاڑی کے پیچھے ایک دوسری گاڑی بھی تھی۔ اس گاڑی پر ایک ادھیڑ عمر کا مسلمان بیٹھا تختی سامنے رکھے क · ख · ग · घ · ङ · لکھنا سیکھ رہا تھا۔ اُسے ہندی اکشروں کو سکھانے والا ایک چھوٹا سا گاندھی ٹوپی پہنے ہوئے بچہ بیٹھا تھا۔ وہ بچہ رہ رہ کر اُس ادھیڑ بزرگ مسلمان ہندی سیکھنے والے آدمی کے کان اُمیٹھ رہا تھا اور اُسے چپت لگا رہا تھا۔ یہی نہیں، اگر وہ مسلمان ادھیڑ ودّیارتھی ذرا سی ڈھلائی کر دیتا یا سیکھنے کی دقتوں سے پریشان ہو کر رُک جاتا تو اُس کے پیچھے کھڑا ہوا باوردی پولیس کا افسر اُس کے اوپر بندوق تان دیتا اور بندوق کے کندے سے اُس کی کندی کرنے لگتا۔

یہ درشیہ وجیا دشمی کے دن الہ آباد کی لاکھوں جنتا نے دیکھا ہے۔ سُنا ہے، ٹنڈن جی بھی ایک نگر سیٹھ کے یہاں بیٹھے یہ چوکی دیکھ رہے تھے۔ اس چوکی پر انھوں نے کوئی اعتراض کیا اس کی خبر ہمیں نہیں ملی ہے۔ حالانکہ ہمیں آشا یہی کرنا چاہیئے کہ اُنھوں نے اُس چوکی پر ضرور اعتراض کیا ہوگا۔

بہر حال، یہ چوکی کتنی گندی اور خطرناک بھاؤنا پھیلا رہی تھی، یہ آسانی سے سمجھا جا سکتا ہے۔ اگر ہندی سکھانے کے لئے پولس کی بندوقوں کا سہارا لیا گیا تو ہم مجبور ہو کر اسے ہندی سامراجیہ واد اور ہندی فاشزم کہیں گے۔ اور اُس چھوٹے سے بچے نے ہندی سکھانے کیلئے اُس بزرگ مسلمان کے کان جس طرح اینٹھے اُسے دیکھ کر تو یہ لگتا ہے کہ اگر یہی

रंग रहा तो हमारे देश का इतना पुराना कलचर बड़े-छोटे की तमीज़, बुज़ुर्गों की इज़्ज़त वग़ैरा जो हमारी बहुत पुरानी और क़ीमती क़ौमी थातियां हैं वह सब की सब जहन्नुम में चली जायेंगी. यह तगं दिली और बर्बरता का नंगा नाच हमारी मिली-जुली भाषा और संस्कृति को कैसे आगे बढ़ायेगा और हमारी बिखरी क़ौमी ज़िन्दगी को कैसे एक धागे में पिरो कर मज़बूत बनायेगा, यह बात समझ में नहीं आती. यह तो वही ज़ोर ज़बरदस्ती और वही राक्षस है जिसे समाप्त करने के लिये रामको जन्म लेना पड़ा था और जिनकी जीत की ख़ुशी मनाने के लिये औरत-मर्द विजया दशमी के दिन उस स्थान पर मौजूद थे.

मेरा तो कहना सिर्फ़ यही है कि अगर मर्दों ने अपनी समझदारी इस हद तक छोड़ दी है कि ज़ोर ज़बरदस्ती के बग़ैर उनका काम ही नहीं चल सकता तो वह इस मैदान को छोड़ कर अलग हो जायँ. यह मैदान भाषा का, संस्कृति का, शराफ़त और शालीनता का मैदान है. अगर वह ठंढे दिल से सोच नहीं सकते और मीठी बोली बोलकर अपनी बात मानने के लिये लोगों को राज़ी नहीं कर सकते तो उन्हें इस मैदान से अपने को हटा लेना न चाहिये तब मुमकिन है, जो औरतें घर के बच्चों और जवानों को अपनी मधुर बातों और अपने अच्छे व्यवहार से सभ्य, शरीफ़ और संस्कृत बना देती हैं, वही औरतें इस मैदान में भी अपनी शराफ़त, मिठास और मोहब्बत के ज़रिये ऐसा वातावरण बनालें जिससे मिले-जुले कलचर के आधार पर मिली-जुली भाषा के बनने में आसानी हो !

رنگ رہا تو ہمارے دیش کا اتنا پرانا کلچر بڑے چھوٹے کی تمیز، بزرگوں کی عزّت وغیرہ جو ہماری بہت پرانی اور قیمتی قومی تھاتیاں ہیں وہ سب کی سب جہنم میں چلی جائیں گی۔ یہ تنگ دلی اور بربرتا کا ننگا ناچ ہماری ملی جلی بھاشا اور سنسکرتی کو کیسے آگے بڑھائے گا اور ہماری بکھری قومی زندگی کو کیسے ایک دھاگے میں پرو کر مضبوط بنائے گا، یہ بات سمجھ میں نہیں آتی۔ یہ تو وہی زور زبردستی اور وہی راکشس ہے جسے سماپت کرنے کے لئے رام کو جنم لینا پڑا تھا اور جن کی جیت کی خوشی منانے کے لئے عورت۔ مرد وجیے دشمی کے دن اس استھان پر موجود تھے۔

میرا تو کہنا صرف یہی ہے کہ اگر مردوں نے اپنی سمجھداری اس حد تک چھوڑ دی ہے کہ زور زبردستی کے بغیر اُن کا کام ہی نہیں چل سکتا تو وہ اس میدان کو چھوڑ کر الگ ہو جائیں۔ یہ میدان بھاشا کا، سنسکرتی کا، شرافت اور شالینتا کا میدان ہے۔ اگر وہ ٹھنڈے دل سے سوچ نہیں سکتے اور میٹھی بولی بول کر اپنی بات ماننے کے لئے لوگوں کو راضی نہیں کر سکتے تو انھیں اس میدان سے اپنے کو ہٹا لینا چاہیئے تب ممکن ہے، جو عورتیں گھر کے بچوں اور جوانوں کو اپنی مدھر باتوں اور اپنے اچھے ویوہار سے سبھیہ، شریف اور سنسکرت بنا دیتی ہیں، وہی عورتیں اس میدان میں بھی اپنی شرافت، مٹھاس اور محبت کے ذریعے ایسا واتاورن بنائیں جس سے ملے جلے کلچر کے آدھار پر ملی جلی بھاشا کے بننے میں آسانی ہو!

आज कीं हालत और उसका इलाज

[भाई रतनलाल बंसल]

बापू की हत्या के बाद हमारे देश में साम्प्रदायिकता के खिलाफ़ जो तूफ़ान दिखाई देता था और उस तूफ़ान के असर से घोर से घोर साम्प्रदायिक नेता और साम्प्रदायिक संगठन जिस तरह हिन्दू मुस्लिम एकता की बातें करते नजर आते थे और पाकिस्तान में जिस बड़े पैमाने पर और जिस दर्द और सच्चाई के साथ बापू का मातम मनाया गया था, उससे ऐसा मालूम होता था कि अब हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से यह मनहूसियत हमेशा के लिये विदा हो गई. बापू के जुदा हो जाने के उस घोर दुख में भी यह बात काफ़ी तसल्ली देने लायक़ थी. लेकिन अफ़सोस यह सब चार दिन का एक मीठा सपना था, जो अब कभी का खत्म हो चुका है और हालत पहिले से ज्यादा बिगड़ी हुई नजर आती है. इस वक्त धारा बिलकुल उलटी बह रही है और जो नेता व जो संगठन बापू के इस मिशन को पूरा करने के लिये 'सबसे ज्यादा जिम्मेदार थे, वह भी साम्प्रदायिक शक्तियों के सामने घुटने टेकते नजर आते हैं. इनमें से कुछ तो खुल्लम खुल्ला उनसे मिल चुके हैं और उनके ही स्वर में बोलने लगे हैं.

पाकिस्तान की हालत और उसकी सरकार के कामों में और

آج کی حالت اور اس کا علاج

(بھائی رتن لال بنسل)

باپو کی ہتیا کے بعد ہمارے دیش میں سامپردایکتا کے خلاف جو طوفان دکھائی دیتا تھا اور اس طوفان کے اثر سے گھور سے گھور سامپردایک نیتا اور سامپردایک سنگٹھن جس طرح ہندو مسلم ایکتا کی باتیں کرتے نظر آتے تھے اور پاکستان میں جس بڑے پیمانے پر اور جس درد اور سچائی کے ساتھ باپو کا ماتم منایا گیا تھا، اس سے ایسا معلوم ہوتا تھا کہ اب ہندستان اور پاکستان سے یہ منحوسیت ہمیشہ کے لئے بدا ہو گئی۔ باپو کے جدا ہو جانے کے اس گھور دکھ میں بھی یہ بات کافی تسلی دینے لائق تھی۔ لیکن افسوس یہ سب چار دن کا ایک میٹھا سپنا تھا، جو اب کبھی کا ختم ہو چکا ہے اور حالت پہلے سے زیادہ بگڑی ہوئی نظر آتی ہے۔ اس وقت دھارا بالکل الٹی بہہ رہی ہے اور جو نیتا و جو سنگٹھن باپو کے اس مشن کو پورا کرنے کے لئے سب سے زیادہ ذمے دار تھے، وہ بھی سامپردایک شکتیوں کے سامنے گھٹنے ٹیکتے نظر آتے ہیں۔ ان میں سے کچھ تو کھلم کھلا ان سے مل چکے ہیں اور ان کے ہی سور میں بولنے لگے ہیں۔

پاکستان کی حالت اور اس کی سرکار کے کاموں میں اور

लहजे में भी कोई फ़र्क़ नहीं पड़ा. पाकिस्तान का काफ़ी बड़ा हिस्सा हिन्दू और सिक्खों से क़रीब क़रीब ख़ाली करा लिया गया है और जो थोड़े से लोग बचे हैं, उन पर दिन रात तरह तरह की मुसीबतें ढाई जाती हैं. इस बात का बार बार दावा किया जाता है कि पाकिस्तान 'इस्लामी स्टेट' है, लेकिन इस्लामी स्टेट में तो दूसरे मज़हब के लोगों के जान, माल और उनकी पूजा करने की जगहों की बड़ी मुस्तैदी से हिफ़ाज़त की जाती है. अफ़ग़ानिस्तान वग़ैरा की कुछ हुकूमतें आज भी इस उसूल पर बड़ी सख्ती से अमल करके इस्लाम की शान को बढ़ा रही हैं, लेकिन पाकिस्तान के तौर तरीक़े बिलकुल उलटे हैं और उसीका यह नतीजा है कि लाखों करोड़ों लोगों के दिलों में यह झूटा वहम यक़ीन बनता जा रहा है कि इस्लाम की बुनियादी तालीम ही दूसरे मज़ाहब के लोगों पर ज़ुल्म करने और उनका घरबार छीन लेने की है.

मुसीबत यह है कि दोनों देशों में से आज कोई भी अपनी नीति में सुधार करने के लिये तय्यार नहीं है. दोनों देशों में क्या सरकार और क्या वहाँ ज्यादा तादाद में रहने वाली जाति की प्रजा, सबका यही जवाब है कि हमारे देश में तो फिर भी ग़नीमत है, मुक़ाबले के मुल्क में तो इससे भी ज्यादा ज़ुल्म किये जारहे हैं. मतलब यह कि आज से दो बरस पहिले एक जगह के बलवे का जवाब देने के लिये जिस तरह दूसरी जगह बलवे किये जाते थे और बेगुनाहों का ख़ून बहाया जाता था, वही वहशियाना तरीक़ा अब हम यानी दोनों देशों की सरकारें और दोनों देशों में ज्यादा तादाद में बसने वाली जातियों के लोग फिर से अपना रहे हैं. अफ़सोस, इतनी भयानक

لہجے میں بھی کوئی فرق نہیں پڑا۔ پاکستان کا کافی بڑا حصہ ہندو اور سکھوں سے قریب قریب خالی کرا لیا گیا ہے اور جو تھوڑے سے لوگ بچے ہیں، ان پر دن رات طرح طرح کی مصیبتیں ڈھائی جاتی ہیں۔ اس بات کا بار بار دعوا کیا جاتا ہے کہ پاکستان 'اسلامی اسٹیٹ' ہے، لیکن اسلامی اسٹیٹ میں تو دوسرے مذہب کے لوگوں کے جان، مال اور ان کی پوجا کرنے کی جگہوں کی بڑی مستعدی سے حفاظت کی جاتی ہے۔ افغانستان وغیرہ کی کچھ حکومتیں آج بھی اس اصول پر بڑی سختی سے عمل کر کے اسلام کی شان کو بڑھا رہی ہیں، لیکن پاکستان کے طور طریقے بالکل الٹے ہیں اور اسی کا یہ نتیجہ ہے کہ لاکھوں کروڑوں لوگوں کے دلوں میں یہ جھوٹا وہم یقین بنتا جا رہا ہے کہ اسلام کی بنیادی تعلیم ہی دوسرے مذہب کے لوگوں پر ظلم کرنے اور ان کا گھر بار چھین لینے کی ہے۔

مصیبت یہ ہے کہ دونوں دیشوں میں سے آج کوئی بھی اپنی نیتی میں سدھار کرنے کے لئے تیار نہیں ہے۔ دونوں دیشوں میں کیا سرکار اور کیا وہاں زیادہ تعداد میں رہنے والی جاتی کی پرجا، سب کا یہی جواب ہے کہ ہمارے دیش میں تو پھر بھی غنیمت ہے، مقابلے کے ملک میں تو اس سے بھی زیادہ ظلم کئے جا رہے ہیں۔ مطلب یہ کہ آج سے دو برس پہلے ایک جگہ کے بلوے کا جواب دینے کے لئے جس طرح دوسری جگہ بلوے کئے جاتے تھے اور بے گناہوں کا خون بہایا جاتا تھا، وہی وحشیانہ طریقہ اب ہم یعنی دونوں دیشوں کی سرکاریں اور دونوں دیشوں میں زیادہ تعداد میں بسنے والی جاتیوں کے لوگ پھر سے اپنا رہے ہیں۔ افسوس، اتنی بھیانک

खूँरेज़ी और लाखों बहिनों के आँसू भी हमें इन्सान नहीं बना सके.

साम्प्रदायिकता के इस उभार से कुछ दूसरी मुसीबतें भी पैदा होती जा रही हैं. चोरी, डकैती और क़त्ल की इतनी वारदातें पहिले कभी नहीं हुई', जितनी आज कल हो रही हैं. एक ख़ास बात यह है कि दोनों देशों के जिन हिस्सों में साम्प्रदायिक बलवों का जोर ज्यादा रहा, वहीं इस तरह की वारदातों का भी जोर है.

एक दूसरी मुसीबत जातिवाद और प्रन्तवाद है जो हमारी समाजी ज़िन्दगी को बिलकुल बरबाद किये दे रही है. आज गाँव गाँव में 'अहीर अहीर एक हैं' 'ब्राह्मण ब्राह्मण एक हैं' 'कायस्थ कायस्थ एक हैं' के आन्दोलन चल रहे हैं. तामिल और आन्ध्र, महाराष्ट्र और गुजरात व कर्नाटक और केरल को अलग कर देने के सवालों पर इन सूबों में जो ज़हर फैलाया जा रहा है, उसकी धूम तो रोज़ अख़बारों में हम देखते ही हैं.

इसी बीच हिन्दू और सिक्खों के बीच जो भयानक कड़वाहट पैदा हो गई है और महाराष्ट्र व मद्रास में ब्राह्मण और ग़ैर ब्राह्मणों के बीच जो कशमकश चल रही है, वह भी आँखें खोल देने लायक़ है.

रिश्वतख़ोरी, चोरबाज़ारी और चीज़ों की महँगाई भी दिनों दिन बढ़ती जा रही है. आम लोग यह बात खुल्लम खुल्ला कहने लगे हैं कि इस राज से तो अंग्रेज़ी राज ही अच्छा था. इस तरह की भावनाएँ किसी ख़ास मौक़े पर बड़े संकट का कारण बन सकती हैं.

आजज रूरत है क हम इन तमाम मसलों पर नये सिरे से

خونریزی اور لاکھوں بہنوں کے آنسو بھی ہمیں انسان نہیں بنا سکے۔

سامپردایکتا کے اس ابھار سے کچھ دوسری مصیبتیں بھی پیدا ہوتی جا رہی ہیں۔ چوری، ڈکیتی اور قتل کی اتنی وارداتیں پہلے کبھی نہیں ہوئیں، جتنی آج کل ہو رہی ہیں۔ ایک خاص بات یہ ہے کہ دونوں دیشوں کے جن حصوں میں سامپردایک بلووں کا زور زیادہ رہا، وہیں اس طرح کی وارداتوں کا بھی زور رہا ہے۔

ایک دوسری مصیبت جاتی واد اور پرانت واد ہے جو ہماری سماجی زندگی کو بالکل برباد کئے دے رہی ہے۔ آج گاؤں گاؤں میں 'اہیر اہیر ایک ہیں'، 'برہمن برہمن ایک ہیں'، 'کایستھ کایستھ ایک ہیں' کے آندولن چل رہے ہیں۔ تامل اور آندھر، مہاراشٹر اور گجرات و کرناٹک اور کیرل کو الگ کر دینے کے سوالوں پر ان صوبوں میں جو زہر پھیلایا جا رہا ہے، اس کی دھوم تو روز اخباروں میں ہم دیکھتے ہی ہیں۔

اسی بیچ ہندوؤں اور سکھوں کے بیچ جو بھیانک کڑواہٹ پیدا ہو گئی ہے اور مہاراشٹر و مدراس میں برہمن اور غیر برہمنوں کے بیچ جو کشمکش چل رہی ہے، وہ بھی آنکھیں کھول دینے لائق ہے۔

رشوت خوری، چور بازاری اور چیزوں کی مہنگائی بھی دنوں دن بڑھتی جا رہی ہے۔ عام لوگ یہ بات کھلم کھلا کہنے لگے ہیں کہ اس راج سے تو انگریزی راج ہی اچھا تھا۔ اس طرح کی بھاؤنائیں کسی خاص موقعے پر بڑے سنکٹ کا کارن بن سکتی ہیں۔

آج ضرورت ہے کہ ہم ان تمام مسئلوں پر نئے سرے سے

विचार करें और ठंडे दिल से सोचें कि आख़िर क्या कारण है कि एक ओर तो चारों तरफ़ धर्म, संस्कृति, संगठन का शोर सुनाई देता है, लाखों करोड़ों रुपया इन आन्दोलनों पर जा रहा है और हज़ारों लाखों आदमी इस तरह के आन्दोलनों में हिस्सा लेते नज़र आ रहे हैं, लेकिन इसके बदले में बेईमानियाँ, बदमाशियाँ और फूट हमें मिल रही है.

वजह इसकी बिलकुल साफ़ है और वह यह है कि हमने 'धर्म' 'संस्कृति' और 'संगठन' के नाम पर अधर्म, ज़ुल्म और फूट का प्रचार किया है. हमें पढ़ाया गया है और पढ़ाया जारहा है कि दूसरों के साथ इन्साफ़ करना, दूसरे की ग़लतियों को सच्चे दिल से माफ़ कर देना, दुश्मनों से भी प्रेम करना आदि बातें चाहे धर्मशास्त्रों में धर्म ठहराई गई हों, लेकिन दुनियावी ज़िन्दगी में इन उसूलों पर चल कर किसी को कामयाबी नहीं मिल सकती. ऐसा प्रचार करने वाले समझते हैं कि बिना ऐसा प्रचार किये हम दूसरे मज़हब के लोगों को नीचा नहीं दिखा सकते, लेकिन वह इस हक़ीक़त को भूल जाते हैं कि इन्सान नीचे लेजाने के लिये किसी शिक्षा और किसी मेहनत की ज़रूरत नहीं. एक आदमी को सच बोलने, त्याग करने और क्रोध को जीतने के लिये बरसों तक तपस्या व साधना की ज़रूरत पड़ती है और फिर भी उसे मुश्किल से ही कामयाबी मिलती है, लेकिन फूट, ख़ुदग़रज़ी और ज़ुल्म के लिये किसी ट्रेनिंग, अभ्यास या मेहनत की ज़रूरत नहीं. आदमी की आँख ज़रा चूकी और वह इस पाप के गढ़े में गिरा.

وچار کریں اور ٹھنڈے دل سے سوچیں کہ آخر کیا کارن ہے کہ ایک اور تو چاروں طرف دھرم، سنسکرتی، سنگٹھن کا شور سنائی دیتا ہے، لاکھوں کروڑوں روپیہ ان آندولنوں پر جا رہا ہے اور ہزاروں لاکھوں آدمی اس طرح کے آندولنوں میں حصہ لیتے نظر آ رہے ہیں، لیکن اس کے بدلے میں بے ایمانیاں، بدماشیاں اور پھوٹ ہمیں مل رہی ہے۔

وجہ اس کی بالکل صاف ہے اور وہ یہ ہے کہ ہم نے 'دھرم' 'سنسکرتی' اور 'سنگٹھن' کے نام پر ادھرم، ظلم اور پھوٹ کا پرچار کیا ہے۔ ہمیں پڑھایا گیا ہے اور پڑھایا جا رہا ہے کہ دوسروں کے ساتھ انصاف کرنا، دوسرے کی غلطیوں کو سچے دل سے معاف کر دینا، دشمنوں سے بھی پریم کرنا آدی باتیں چاہے دھرم شاستروں میں دھرم ٹھہرائی گئی ہوں، لیکن دنیاوی زندگی میں ان اصولوں پر چل کر کسی کو کامیابی نہیں مل سکتی۔ ایسا پرچار کرنے والے سمجھتے ہیں کہ بنا ایسا پرچار کئے ہم دوسرے مذہب کے لوگوں کو نیچا نہیں دکھا سکتے، لیکن وہ اس حقیقت کو بھول جاتے ہیں کہ انسان کو نیچے لے جانے کے لئے کسی شکشا اور کسی محنت کی ضرورت نہیں۔ ایک آدمی کو سچ بولنے، تیاگ کرنے اور کرودھ کو جیتنے کے لئے برسوں تک تپسیا و سادھنا کی ضرورت پڑتی ہے اور پھر بھی اسے مشکل سے ہی کامیابی ملتی ہے، لیکن پھوٹ، خود غرضی اور ظلم کے لئے کسی ٹریننگ، ابھیاس یا محنت کی ضرورت نہیں۔ آدمی کی آنکھ ذرا چوکی اور وہ اس پاپ کے گڑھے میں گرا۔

लेकिन अगर हम इन चीजों को धरम का जामा पहिना दें, तबतो इन्सान इन सबको और भी आजादी के साथ करने लगता है. यही कारण है कि जिन लोगों ने पहिले धर्म समझ कर हिन्दुस्तान में मुसलमानों को और पाकिस्तान में हिन्दू सिक्खों को क़त्ल किया उनमें से ज्यादातर आज पेशेवर क़ातिल हो गये हैं, क्यों कि इन्सान की हत्या करने में आदमी को जो एक स्वाभाविक हिचक होती है, वह उनके दिल से बिलकुल निकल गई है. क़त्ल और डकैतियों की वारदातों के बढ़ने का यही सबसे बड़ा कारण है.

इसी तरह जब हम हिन्दू मुसलमान के नाम पर एक बार इन्सान इन्सान के बीच भेद भाव करना सीख गये और दुनिया के सभी इन्सान एक समान हैं व भाई भाई हैं, के सुनहरे उसूल से हमारी श्रद्धा हट गई, तो हम ब्राह्मण और वैश्य व अहीर और जाट या हिन्दू और सिक्ख के बीच भी भेद भाव जरूर ही बरतने लगेंगे. हम जिस जाति या फ़िरक़े के होंगे, उसे बेजा फ़ायदा पहुँचाने और उसके साथ बेजा पक्षपात बरतने की हमारी आदत बन जावेगी, जिसका असर दूसरी जातियों और दूसरे फ़िरक़े के लोग भी जरूर ही लेंगे. पिछले दिनों हमारे यहाँ यही हुआ है और उसी का नतीजा है हमारे यहाँ का बढ़ता हुआ प्रान्तवाद व जातिवाद. आज हर जगह और हर दफ़्तर में यह शिकायत सुनने को मिलती है कि मद्रासी अफ़सर मद्रासियों को, सिन्धी सिन्धियों को, काश्मीरी काश्मीरियों को, कायस्थ कायस्थों को, ब्राह्मण ब्राह्मणों को नौकरी वग़ैरा देने में बेजा पक्षपात बरतता है. इतना ही नहीं, बल्कि जब हमारे साथ कोई हमारे फ़िरक़े या जाति का अफ़सर

لیکن اگر ہم ان چیزوں کو دھرم کا جامہ پہنا دیں، تب تو انسان ان سب کو اور بھی آزادی کے ساتھ کرنے لگتا ہے۔ یہی کارن ہے کہ جن لوگوں نے پہلے دھرم سمجھ کر ہندستان میں مسلمانوں کو اور پاکستان میں ہندو سکھوں کو قتل کیا اُن میں سے زیادہ تر آج پیشے ور قاتل ہو گئے ہیں، کیوں کہ انسان کی ہتیا کرنے میں آدمی کو جو ایک سوابھاوک ہچک ہوتی ہے، وہ ان کے دل سے بالکل نکل گئی ہے۔ قتل اور ڈکیتیوں کی وارداتوں کے بڑھنے کا یہی سب سے بڑا کارن ہے۔

اسی طرح جب ہم ہندو مسلمان کے نام پر ایک بار انسان انسان کے بیچ بھید بھاؤ کرنا سیکھ گئے اور دنیا کے سبھی انسان ایک سمان ہیں و بھائی بھائی ہیں، کے سنہرے اصول سے ہماری شردھا ہٹ گئی، تو ہم برہمن اور ویشیہ و اہیر اور جاٹ یا ہندو اور سکھ کے بیچ بھی بھید بھاؤ ضرور ہی برتنے لگیں گے۔ ہم جس جاتی یا فرقے کے ہوں گے، اُسے بیجا فائدہ پہنچانے اور اس کے ساتھ بے جا پکشپات برتنے کی ہماری عادت بن جائے گی، جس کا اثر دوسری جاتیوں اور دوسرے فرقے کے لوگ بھی ضرور ہی لیں گے۔ پچھلے دنوں ہمارے یہاں یہی ہوا ہے اور اسی کا نتیجہ ہے ہمارے یہاں کا بڑھتا ہوا پرانت واد و جاتی واد۔ آج ہر جگہ اور ہر دفتر میں یہ شکایت سننے کو ملتی ہے کہ مدراسی افسر مدراسیوں کو، سندھی سندھیوں کو، کاشمیری کاشمیریوں کو، کایستھ کایستھوں کو، برہمن برہمنوں کو نوکری وغیرہ دینے میں بے جا پکشپات برتتا ہے۔ اتنا ہی نہیں، بلکہ جب ہمارے ساتھ کوئی ہمارے فرقے یا جاتی کا افسر

बेजा पक्षपात नहीं दिखाता, तो हम उसे उलहना देते हैं कि फलाँ फलाँ फ़िरक़े या जाति के अफ़सर तो इस तरह अपने लोगों के साथ तरफ़दारी बरतते हैं, लेकिन तुम ऐसा न करके अपने धर्म और जाति के साथ ग़द्दारी कर रहे हो. मतलब यह कि हम उसे इन्साफ़ से बे इन्साफ़ी की तरफ़ ले जाने की कोशिश करते हैं. उसकी ग़ैर इन्साफ़ी से ख़ुश होते हैं और इन्साफ़ पर नाराज़ होते हैं.

इसके बाद आदमी स्वाभाविक रूप से और भी छोटे दायरे में आता है. वह सोचने लगता है कि अगर दूसरे मज़हब के आदमी के मुक़ाबले में अपने मज़हब के आदमी के साथ तरफ़दारी बरतना पाप नहीं है, और किसी दूसरी जाति के आदमी का हक़ मार कर उसका हिस्सा अपनी जाति के आदमी को दे देना ज़ुल्म नहीं है, तो दूसरे के हिस्से को ख़ुद ही हड़प कर लेने में क्या बुराई है. यों भी उसका मन दिन रात इस तरह के कामों के लिये ललचाया करता है, फिर अब तो उसे एक दलील मिल जाती है और फिर वह निहायत बेबाकी से इस तरह के काम करने लगता है. हमारे देश में इस वक़्त रिश्वतख़ोरी, चोरबाज़ारी और चीज़ों की महँगाई का एक यह भी बहुत बड़ा कारण है.

यह हालत हमें बताती है कि जब तक हमारे सामने धर्म, संस्कृति और संगठन के रूप इस तरह पेश किये जाते रहेंगे, जिस तरह आज किये जा रहे हैं, तब तक अधर्म, ज़ुल्म और फूट में इसी तरह तरक़्क़ी होती जावेगी. हम अगर ज़हर का अमृत का नाम देकर पीने लगें तो वह हमें अमर नहीं करेगा, वह तो हमारी जान ही लेगा.

بے جا پکشپات نہیں دکھاتا، تو ہم اُسے اُلہنا دیتے ہیں کہ فلاں فلاں فرقے یا جاتی کے افسر تو اس طرح اپنے لوگوں کے ساتھ طرفداری برتتے ہیں، لیکن تم ایسا نہ کرکے اپنے دھرم اور جاتی کے ساتھ غدّاری کر رہے ہو. مطلب یہ کہ ہم اُسے انصاف سے بے انصافی کی طرف لے جانے کی کوشش کرتے ہیں. اس کی غیر انصافی سے خوش ہوتے ہیں اور انصاف پر ناراض ہوتے ہیں.

اس کے بعد آدمی سوابھاوک روپ سے اور بھی چھوٹے دائرے میں آتا ہے. وہ سوچنے لگتا ہے کہ اگر دوسرے مذہب کے آدمی کے مقابلے میں اپنے مذہب کے آدمی کے ساتھ طرفداری برتنا پاپ نہیں ہے، اور دوسری جاتی کے آدمی کا حق مار کر اس کا حصّہ اپنی جاتی کے آدمی کو دے دینا ظلم نہیں ہے، تو دوسرے کے حصّے کو خود ہی ہڑپ کر لینے میں کیا بُرائی ہے. یوں بھی اس کا من دن رات اس طرح کے کاموں کے لئے للچایا کرتا ہے، پھر اب تو اُسے ایک دلیل مل جاتی ہے اور پھر وہ نہایت بیباکی سے اس طرح کے کام کرنے لگتا ہے. ہمارے دیش میں اس وقت رشوت خوری، چور بازاری اور چیزوں کی مہنگائی کا ایک یہ بھی بہت بڑا کارن ہے.

یہ حالت ہمیں بتاتی ہے کہ جب تک ہمارے سامنے دھرم، سنسکرتی اور سنگھٹن کے روپ اس طرح پیش کئے جاتے رہیں گے، جس طرح آج کئے جا رہے ہیں، تب تک اَدھرم، ظلم اور پھوٹ میں اسی طرح ترقی ہوتی جاوے گی. ہم اگر زہر کو امرت کا نام دے کر پینے لگیں تو وہ ہمیں امر نہیں کرے گا، وہ تو ہماری جان ہی لے گا.

यह तो आज की हालत और उसके कारण हुए, लेकिन सवाल यह है कि इसका इलाज क्या है ? कुछ लोग यह समझ कर निराश हो गये हैं कि जो साम्प्रदायिकता बापू के खून से भी नहीं धुल सकी, वह अब किसी तरह भी खत्म नहीं हो सकती. इस लिये हमें जो कुछ हो रहा है, उसे चुपचाप देखते रहना चाहिये.

ऐसे लोग भूल जाते हैं कि यह हालत हमेशा रह ही नहीं सकती. लाखों करोड़ों आदमी इस तरह हमेशा मुसीबत, डर और परेशानी की जिन्दगी नहीं बिता सकते. एक जमाने में यूरोप में रोमन कैथोलिक व प्रोटेस्टेन्टों के बीच इससे कई सौ गुने भयानक साम्प्रदायिक बलवे हो चुके हैं जो कई सौ बरस तक चलते रहे. इसी तरह जापान में ईसाइयों और बौद्धों के बीच भयानक खाना जंगी हो चुकी है. उस समय भी ज्यादातर लोग यही समझते थे कि न तो कभी कैथोलिक और प्रोटेस्टेन्ट एक हो सकते हैं और न कभी ईसाई और बौद्ध. लेकिन आज इन देशों में दोनों ही जातियों और फिरक़ों के लोग रहते हैं और कोई भी आदमी इस तरह के झगड़ों की वहाँ कल्पना तक नहीं कर सकता. इस लिये हमें मानना चाहिये कि हमारे देश में भी यह हिन्दू-मुसलमानों के बीच के झगड़े ज्यादा दिन टिकने वाले नहीं हैं. यह कभी न कभी तो हमेशा के लिये खत्म होंगे ही. सवाल सिर्फ इतना है कि अगर हम अपने होश हवास को दुरुस्त रक्खें तो हम इस आग को यहीं क्यों न ठंडी कर दें और जो लाखों आदमी इस आग में आज जल रहे हैं या जलने वाले हैं, उनकी जिन्दगी को क्यों न बचा लें ?

इस लिये पहिली जरूरत तो इस बात की है कि ऐसे तमाम

یہ تو آج کی حالت اور اس کے کارن ہوئے، لیکن سوال یہ ہے کہ اس کا علاج کیا ہے؟ کچھ لوگ یہ سمجھ کر نراش ہو گئے ہیں کہ جو سامپردایکتا باپو کے خون سے بھی نہیں دھل سکی، وہ کسی طرح بھی ختم نہیں ہو سکتی۔ اس لئے ہمیں جو کچھ ہو رہا ہے، اسے چپ چاپ دیکھتے رہنا چاہیے۔

ایسے لوگ بھول جاتے ہیں کہ یہ حالت ہمیشہ رہ ہی نہیں سکتی۔ لاکھوں کروڑوں آدمی اس طرح ہمیشہ مصیبت، ڈر اور پریشانی کی زندگی نہیں بتا سکتے۔ ایک زمانے میں یورپ میں رومن کیتھولک اور پروٹیسٹنٹوں کے بیچ اس سے کئی سو گنے بھیانک سامپردایک بلوے ہو چکے ہیں جو کئی سو برس تک چلتے رہے۔ اسی طرح جاپان میں عیسائیوں اور بودھوں کے بیچ بھیانک خانہ جنگی ہو چکی ہے۔ اس سمے بھی زیادہ تر لوگ یہی سمجھتے تھے کہ نہ تو کبھی کیتھولک اور پروٹیسٹنٹ ایک ہو سکتے ہیں اور نہ کبھی عیسائی اور بودھ۔ لیکن آج ان دیشوں میں دونوں ہی جاتیوں اور فرقوں کے لوگ رہتے ہیں اور کوئی بھی آدمی اس طرح کے جھگڑوں کی وہاں کلپنا تک نہیں کر سکتا۔ اس لئے ہمیں ماننا چاہیے کہ ہمارے دیش میں بھی یہ ہندو مسلمانوں کے بیچ کے جھگڑے زیادہ دن ٹکنے والے نہیں ہیں۔ یہ کبھی نہ کبھی تو ہمیشہ کے لئے ختم ہوں گے ہی۔ سوال صرف اتنا ہے کہ اگر ہم اپنے ہوش حواس کو درست رکھیں تو ہم اس آگ کو یہیں کیوں نہ ٹھنڈی کر دیں اور جو لاکھوں آدمی اس آگ میں آج جل رہے ہیں یا جلنے والے ہیں، ان کی زندگی کو کیوں نہ بچا لیں؟

اس لئے پہلی ضرورت تو اس بات کی ہے کہ ایسے تمام

लोगों का, जिनके दिल फ़िरक़े वाराना ज़हर से बिलकुल पाक हैं, एक मज़बूत संगठन बनना चाहिये. यह संगठन यूरोप के उन शान्तिवादियों के आदर्शों पर होना चाहिये, जिन्होंने राष्ट्रीयता और फ़िरक़े से ऊपर उठ कर इन्सानी समाज की सेवा के महत्व को पहिचाना था और पिछली दोनों लड़ाइयों के दौरान में अपने ही जैसे इन्सानों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया था. यह याद रखना चाहिये कि आज हिन्दू मुस्लिम एकता की बात करना और इसके लिये आन्दोलन चलाना इतना मुश्किल नहीं है, जितना लड़ाई के ज़माने में किसी अंग्रेज़ के लिये अंग्रेज़ों के बीच जर्मन जनता के लिये प्रेम भाव और भाई चारा प्रकट करना मुश्किल था. एक तरफ़ हर रोज़ जर्मन जहाज़ लन्दन पर बमबारी कर रहे थे और बृटिश अख़बार जर्मन सेना के अत्याचारों की ख़बरों से भरे चले आ रहे थे और दूसरी ओर उसी लन्दन में एक मामूली सा लेकिन सच्चा आदमी किसी चौराहे पर खड़ा होकर यह भाषण देने की हिम्मत करता था कि इस बमबारी और अत्याचारों के लिये हमारी सरकार भी उतनी ही ज़िम्मेदार है जितनी जर्मन सरकार और इसका इलाज सिर्फ़ यही है कि दोनों तरफ़ की जनता लड़ाई में भाग लेने से इनकार कर दे.

यह शान्तिवादी लोग दुश्मन समझे जाने वाले मुल्कों की जनता के लिये रेडक्रास सोसाइटियों और नातरफ़दार देशों की मारफ़त वक़्त वक़्त पर तरह तरह के उपहार भी भेजते थे और ज़ाहिर करते थे कि आख़िर हम सब एक हैं और हमेशा एक रहेंगे.

लड़ाई के बाद सैकड़ों अंग्रेज़ जर्मनी में और सैकड़ों जर्मन

لوگوں کا، جن کے دل فرقے وارانہ زہر سے بالکل پاک ہیں، ایک مضبوط سنگٹھن بننا چاہیئے۔ یہ سنگٹھن یورپ کے ان شانتی وادیوں کے آدرشوں پر ہونا چاہیئے، جنھوں نے راشٹریتا اور فرقے سے اوپر اٹھ کر انسانی سماج کی سیوا کے مہتو کو پہچانا تھا اور پچھلی دونوں لڑائیوں کے دوران میں اپنے ہی جیسے انسانوں پر گولی چلانے سے انکار کر دیا تھا۔ یہ یاد رکھنا چاہیئے کہ آج ہندو مسلم ایکتا کی بات کرنا اور اس کے لئے آندولن چلانا اتنا مشکل نہیں ہے، جتنا لڑائی کے زمانے میں کسی انگریز کے لئے انگریزوں کے بیچ جرمن جنتا کے لئے پریم بھاؤ اور بھائی چارہ پرکٹ کرنا مشکل تھا۔ ایک طرف ہر روز جرمن جہاز لندن پر بمباری کر رہے تھے اور برٹش اخبار جرمن سینا کے اتیاچاروں کی خبروں سے بھرے چلے آ رہے تھے اور دوسری اور اسی لندن میں ایک معمولی سا لیکن سچا آدمی کسی چوراہے پر کھڑا ہو کر یہ بھاشن دینے کی ہمت کرتا تھا کہ اس بمباری اور اتیاچاروں کے لئے ہماری سرکار بھی اتنی ہی ذمے دار ہے جتنی جرمن سرکار، اور اس کا علاج صرف یہی ہے کہ دونوں طرف کی جنتا لڑائی میں بھاگ لینے سے انکار کر دے۔

یہ شانتی وادی لوگ دشمن سمجھے جانے والے ملکوں کی جنتا کے لئے ریڈ کراس سوسائیٹیوں اور ناطرفدار دیشوں کی معرفت وقت وقت پر طرح طرح کے اپہار بھی بھیجتے تھے اور ظاہر کرتے تھے کہ آخر ہم سب ایک ہیں اور ہمیشہ ایک رہیں گے۔

لڑائی کے بعد سیکڑوں انگریز جرمنی میں اور سیکڑوں جرمن

इंग्लैंड व दूसरे उन मुल्कों में गये, जिनको लड़ाई के दौरान में उनके देशों की सरकारों ने दुश्मन क़रार दिया था. उन लोगों ने इन मकानों की मरम्मत की, जो उनके देशों के हवाई जहाजों की बमबारी ने गिरा दिये थे.

अपने इन उसूलों के लिये शान्तिवादियों को कम क़ीमत नहीं चुकानी पड़ी. जनता से तो उनको 'दुश्मनों के जासूस' 'देश द्रोही' वग़ैरा गालियाँ और कभी मार भी सहनी ही पड़ी, साथ ही सरकार ने भी उनको लड़ाई के खिलाफ़ प्रचार करने और फ़ौज में भरती न होने के जुर्म में लम्बी लम्बी सजायें दीं और अक्सर ऐसे लोगों को गोली भी मार दी गई.

जिस तरह हमारे देश के अख़बार सिर्फ़ नफ़रत और दुश्मनी बढ़ाने वाली ख़बरें ही छापते हैं और उन ख़बरों को जगह नहीं देते, जिनसे मेल जोल और प्रेम को बढ़ावा मिलता है, उसी तरह यूरप के अख़बारों ने भी शान्तिवादियों की चर्चा से हमेशा अपने को बचाए रक्खा है, लेकिन फिर भी शान्तिवादियों की अपील ने हज़ारों लोगों के दिलों पर असर किया और लाखों लोगों को इन्सान बने रहने में मदद दी.

आज यूरप के हर एक मुल्क में शान्तिवादियों के संगठन हैं. उनका आन्दोलन दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है और हालाँकि एक तरफ़ दुनिया एटम बम की तरफ़ जाती दिखाई देती है, लेकिन हक़ीक़त यह है कि आम लोग लड़ाइयों से ऊब चुके हैं और जिस दिन आम लोगों के हाथों में ताक़त आई, यह लड़ाइयाँ नामुमकिन हो जावेंगी.

انگلینڈ و دوسرے ان ملکوں میں گئے، جن کو لڑائی کے دوران ان کے دیشوں کی سرکاروں نے دشمن قرار دیا تھا. ان لوگوں نے ان مکانوں کی مرمت کی، جو اُن کے دیشوں کے ہوائی جہازوں کی بمباری نے گرا دیئے تھے.

اپنے ان اصولوں کے لئے شانتی وادیوں کو کم قیمت نہیں چکانی پڑی. جنتا سے تو اُن کو "دشمنوں کے جاسوس"، "دیش دروہی" وغیرہ گالیاں اور کبھی مار بھی سہنی ہی پڑی، ساتھ ہی سرکار نے بھی ان کو لڑائی کے خلاف پرچار کرنے اور فوج میں بھرتی نہ ہونے کے جرم میں لمبی لمبی سزائیں دیں اور اکثر ایسے لوگوں کو گولی بھی مار دی گئی.

جس طرح ہمارے دیش کے اخبار صرف نفرت اور دشمنی بڑھانے والی خبریں ہی چھاپتے ہیں اور ان خبروں کو جگہ نہیں دیتے، جن سے میل جول اور پریم کو بڑھاوا ملتا ہے، اسی طرح یورپ کے اخباروں نے بھی شانتی وادیوں کی چرچا سے ہمیشہ اپنے کو بچائے رکھا ہے، لیکن پھر بھی شانتی وادیوں کی اپیل نے ہزاروں لوگوں کے دلوں پر اثر کیا اور لاکھوں لوگوں کو انسان بنے رہنے میں مدد دی.

آج یورپ کے ہر ایک ملک میں شانتی وادیوں کے سنگٹھن ہیں. ان کا آندولن دنوں دن بڑھتا ہی جا رہا ہے اور حالانکہ ایک طرف دنیا ایٹم بم کی طرف جاتی دکھائی دیتی ہے، لیکن حقیقت یہ ہے کہ عام لوگ لڑائیوں سے اوب چکے ہیں اور جس دن عام لوگوں کے ہاتھوں میں طاقت آئی، یہ لڑائیاں ناممکن ہو جاویں گی.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में भी आज ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो ठीक इसी तरह से सोचते हैं और उनमें से ज्यादातर लोग बड़ी सचाई के साथ इसी तरह के कामों में लगे हुए हैं. आज कितने लोग इस बात को जानते हैं कि पाकिस्तान में अपना सब कुछ गँवा कर आये हुए बहुत से शरणार्थी भाई आज पंजाब मेवात वग़ैरा में मुसलमानों को फिर से बसाने का काम कर रहे हैं. अभी तक किसी नामधारी सम्प्रदाय के सिक्ख ने किसी मुसलमान के घर पर जबरदस्ती क़ब्ज़ा नहीं किया. श्री विनोबाजी के कुछ शिष्य मेवात में तरह तरह का विरोध सहकर भी जो काम कर रहे हैं, उनकी बाबत भी आम जनता बहुत कम जानती है.

इसी तरह पाकिस्तान में सरहद के इलाक़े में ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ और उनके हज़ारों ख़ुदाई ख़िदमतगारों ने जिस तरह के ख़तरों का मुक़ाबला करके हिन्दू, सिक्खों की हिफ़ाज़त की और उनकी मदद की, उसकी कहानी आप सरहद से आये हुए किसी भी हिन्दू सिक्ख से सुन सकते हैं. उसी का यह नतीजा था कि अभी कुछ दिन पहिले पंडित जवाहर लाल नेहरू की कोठी पर फ़रीदाबाद कैम्प के कुछ सरहदी शरणार्थी जब अपनी माँगें लेकर पहुंचे, तो वह 'ख़ान अब्दुलग़फ़्फ़ार ख़ाँ ज़िन्दाबाद' के नारे लगा रहे थे. इसी तरह पाकिस्तान का शायद ही कोई गाँव या ऐसा शहर हो जहाँ की मुसलमान जनता में से कुछ न कुछ आदमियों ने हिन्दू, सिक्खों की हिफ़ाज़त करने या उनको मदद करने की कोशिश न की हो. लेकिन जहाँ बलवा करने वाले गुन्डे संगठित थे, वहाँ ऐसे लोग बिलकुल असंगठित थे, इसी लिये उनकी न चल सकी.

ہندستان اور پاکستان میں بھی آج ایسے لوگوں کی کمی نہیں ہے جو ٹھیک اسی طرح سے سوچتے ہیں اور ان میں سے زیادہ تر لوگ بڑی سچائی کے ساتھ اسی طرح کے کاموں میں لگے ہوئے ہیں۔ آج کتنے لوگ اس بات کو جانتے ہیں کہ پاکستان میں اپنا سب کچھ گنوا کر آئے ہوئے بہت سے شرنارتھی بھائی آج پنجاب میوات وغیرہ میں مسلمانوں کو پھر سے بسانے کا کام کر رہے ہیں۔ ابھی تک کسی نام دھاری سمپردائے کے سکھ نے کسی مسلمان کے گھر پر زبردستی قبضہ نہیں کیا۔ شری ونوباجی کے کچھ شیشیہ میوات میں طرح طرح کا ورودھ سہہ کر بھی جو کام کر رہے ہیں، ان کی بابت بھی عام جنتا بہت کم جانتی ہے۔

اسی طرح پاکستان میں سرحد کے علاقے میں خان عبدالغفار خاں اور ان کے ہزاروں خدائی خدمت گاروں نے جس طرح کے خطروں کا مقابلہ کر کے ہندو، سکھوں کی حفاظت کی اور ان کی مدد کی، اس کی کہانی آپ سرحد سے آئے ہوئے کسی بھی ہندو سکھ سے سن سکتے ہیں۔ اسی کا یہ نتیجہ تھا کہ ابھی کچھ دن پہلے پنڈت جواہر لال نہرو کی کوٹھی پر فرید آباد کیمپ کے کچھ سرحدی شرنارتھی جب اپنی مانگیں لے کر پہنچے، تو وہ "خان عبدالغفار خاں زندہ باد" کے نعرے لگا رہے تھے۔ اسی طرح پاکستان کا شاید ہی کوئی گاؤں یا ایسا شہر ہو جہاں کی مسلمان جنتا میں سے کچھ نہ کچھ آدمیوں نے ہندو، سکھوں کی حفاظت کرنے یا ان کو مدد کرنے کی کوشش نہ کی ہو۔ لیکن جہاں بلوا کرنے والے گنڈے سنگٹھت تھے، وہاں ایسے لوگ بالکل اسنگٹھت تھے، اسی لئے ان کی نہ چل سکی۔

ठीक यही हालत आज भी है. आज ऐसे लोगों की तादाद काफ़ी बड़ी है, जो साम्प्रदायिक एकता चाहते हैं, लेकिन उनका कोई संगठन न होने से उनकी ताक़त दिखाई नहीं देती. इसके खिलाफ़ साम्प्रदायिक शक्तियाँ संगठित हैं और उनकी ताक़त दिखाई देती है. इस लिये पहिली जरूरत यह है कि ऐसे तमाम लोगों का एक संगठन क़ायम होना चाहिये, जो साम्प्रदायिक एकता में विश्वास रखते हैं.

यह संगठन हिन्दुस्तान में भी हो और पाकिस्तान में भी हो. दोनों देशों के संगठन इस बात की पूरी कोशिश करें कि चाहे दूसरे मुल्क में कुछ भी हो, लेकिन उनके अपने मुल्क में कम तादाद वाली जातियों के साथ कोई ज़्यादती नहीं होने पावेगी. उनको यह बात अपने मुल्क की जनता को समझानी पड़ेगी कि अगर पाकिस्तान में एक हिन्दू या सिक्ख और हिन्दुस्तान में एक मुसलमान की जायदाद ग़ैर क़ानूनी तौर पर ज़ब्त की जाती है तो उसके बदले में दूसरे मुल्क में इसी तरह की कारवाई करने से उस बेचारे हिन्दू, सिक्ख या मुसलमान को तो कोई फ़ायदा होता ही नहीं, अलबत्ता इस ज़िद में फिर बदले का बदला लेने के लिये दूसरे लोगों पर मुसीबत के पहाड़ टूट पड़ते हैं. दोनों देशों की सरकारों को इससे एक खास फ़ायदा यह होता है कि शरणार्थियों को फिर से बसाने के काम में कामयाब न होने की आलोचना से उन्हें किसी हद तक छुटकारा मिल जाता है, क्योंकि जो लोग इस तरह की आलोचना करते हैं वही इस बदले की कारवाई में उलझ कर रह जाते हैं और इस ज़्यादती के लिये अपनी सरकार की तारीफ़ करने लगते हैं.

ٹھیک یہی حالت آج بھی ہے. آج ایسے لوگوں کی تعداد کافی بڑی ہے، جو سامپردایک ایکتا چاہتے ہیں، لیکن ان کا کوئی سنگٹھن نہ ہونے سے ان کی طاقت دکھائی نہیں دیتی. اس کے خلاف سامپردایک شکتیاں سنگٹھت ہیں اور ان کی طاقت دکھائی دیتی ہے. اس لئے پہلی ضرورت یہ ہے کہ ایسے تمام لوگوں کا ایک سنگٹھن قائم ہونا چاہئے، جو سامپردایک ایکتا میں وشواس رکھتے ہیں.

یہ سنگٹھن ہندستان میں بھی ہو اور پاکستان میں بھی ہو. دونوں دیشوں کے سنگٹھن اس بات کی پوری کوشش کریں کہ چاہے دوسرے ملک میں کچھ بھی ہو، لیکن ان کے اپنے ملک میں کم تعداد والی جاتیوں کے ساتھ کوئی زیادتی نہیں ہونے پائے گی. ان کو یہ بات اپنے ملک کی جنتا کو سمجھانی پڑے گی کہ اگر پاکستان میں ایک ہندو یا سکھ اور ہندستان میں ایک مسلمان کی جائداد غیر قانونی طور پر ضبط کی جاتی ہے تو اس کے بدلے میں دوسرے ملک میں اسی طرح کی کاروائی کرنے سے اس بیچارے ہندو، سکھ یا مسلمان کو تو کوئی فائدہ ہوتا ہی نہیں، البتہ اس ضد میں پھر بدلے کا بدلہ لینے کے لئے دوسرے لوگوں پر مصیبت کے پہاڑ ٹوٹ پڑتے ہیں. دونوں دیشوں کی سرکاروں کو اس سے ایک خاص فائدہ یہ ہوتا ہے کہ شرنارتھیوں کو پھر سے بسانے کے کام میں کامیاب نہ ہونے کی آلوچنا سے انھیں کسی حد تک چھٹکارہ مل جاتا ہے، کیونکہ جو لوگ اس طرح کی آلوچنا کرتے ہیں وہی اس بدلے کی کاروائی میں الجھ کر رہ جاتے ہیں اور اس زیادتی کے لئے اپنی سرکار کی تعریف کرنے لگتے ہیں.

आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में इन मुल्कों से जबरदस्ती भगाये गये लोगों की सम्पत्ति पर जिस तरह सरकारी कारवाइयाँ हो रही हैं और जिस तरह बेगुनाह लोग सताये जा रहे हैं उसका एक मंशा यही मालूम होता है. अफ़सोस की बात यह है कि जो हिन्दू सिक्ख पाकिस्तान में अपनी जायदाद छोड़ कर आये हैं, वह किसी मुसलमान की जायदाद पर सरकारी क़ब्ज़ा होते देख कर खुश होते हैं. इसी तरह पाकिस्तान से भागे हुए किसी हिन्दू सिक्ख की जायदाद पर जब पाकिस्तान सरकार क़ब्ज़ा करती है तो हिन्दुस्तान से गये हुए मुसलमान को इससे ख़ुशी होती है. आदमी तकलीफ़ों और मुसीबतों में उलझ कर कितना गिर जाता है, इसकी यह एक जिन्दा मिसाल है.

साम्प्रदायिक एकता के लिये काम करने वालों को धीरज और हिम्मत के साथ यह बात शरणार्थियों को समझानी होगी और चूँकि बात सच्ची है इस लिये उनको कामयाबी भी जरूर ही मिलेगी.

इससे भी पहिले आम जनता को यह बात समझानी है कि मजहब किस तरह आगे बढ़ते और ऊँचे उठते हैं. हर एक मजहब का इतिहास इस बात की साफ़ गवाही देता है कि दुनिया का कोई भी मजहब कभी सरकारी मदद से नहीं फैल सका. हजरत मुहम्मद ने जब अरब में इस्लाम के उसूलों का पहिले पहिल प्रचार किया तो उनके साथ किसी राजा या बादशाह की फ़ौज नहीं थी. ठीक वही हालत भगवान बुद्ध और भगवान महावीर या हिन्दुस्तान के किसी भी दूसरे इस तरह के धर्म प्रचारक की थी. लेकिन इन धर्म

آج ہندستان اور پاکستان میں ان ملکوں سے زبردستی بھگائے گئے لوگوں کی سمپتی پر جس طرح سرکاری کارروائیاں ہو رہی ہیں اور جس طرح بے گناہ لوگ ستائے جا رہے ہیں اس کا ایک منشا یہی معلوم ہوتا ہے۔ افسوس کی بات یہ ہے کہ جو ہندو سکھ پاکستان میں اپنی جائداد چھوڑ کر آئے ہیں، وہ کسی مسلمان کی جائداد پر سرکاری قبضہ ہوتے دیکھ کر خوش ہوتے ہیں۔ اسی طرح پاکستان سے بھاگے ہوئے کسی ہندو سکھ کی جائداد پر جب پاکستان سرکار قبضہ کرتی ہے تو ہندستان سے گئے ہوئے مسلمان کو اس سے خوشی ہوتی ہے۔ آدمی تکلیفوں اور مصیبتوں میں الجھ کر کتنا گر جاتا ہے، اس کی یہ ایک زندہ مثال ہے۔

سامپردایک ایکتا کے لئے کام کرنے والوں کو دھیرج اور ہمت کے ساتھ یہ بات شرنارتھیوں کو سمجھانی ہوگی اور چونکہ بات سچی ہے اس لئے ان کو کامیابی بھی ضرور ہی ملے گی۔

اس سے بھی پہلے عام جنتا کو یہ بات سمجھانی ہے کہ مذہب کس طرح آگے بڑھتے اور اونچے اٹھتے ہیں۔ ہر ایک مذہب کا اتہاس اس بات کی صاف گواہی دیتا ہے کہ دنیا کا کوئی بھی مذہب کبھی سرکاری مدد سے نہیں پھیل سکا۔ حضرت محمدؐ نے جب عرب میں اسلام کے اصولوں کا پہلے پہلے پرچار کیا تو ان کے ساتھ کسی راجہ یا بادشاہ کی فوج نہیں تھی۔ ٹھیک یہی حالت بھگوان بودھ اور بھگوان مہاویر یا ہندستان کے کسی بھی دوسرے اس طرح کے دھرم پرچارک کی تھی۔ لیکن ان دھرم

प्रचारकों की पवित्र जिन्दगी और अपने खिलाफ़ रहने वाले लोगों के साथ भी उनके अच्छे बरताव ने लोगों का दिल उनकी ओर खींच लिया और इस तरह उनका मजहब फैलने लगा.

लेकिन आज हम अधर्म के जरिये धर्म को फैलाने में लगे हुए हैं. इस बदक़िस्मत मुल्क में न जाने कितनी हिन्दू लड़कियाँ मुसलमानों ने और न जाने कितनी मुसलमान लड़कियाँ हिन्दुओं ने यह समझ कर भगाई हैं कि इससे हमारे मजहब की बढ़ौती ही होगी. इन भावनाओं का ही एक दूसरा रूप यह है कि आज जब कोई मुसलमान यह सुनता है कि हुकूमत रेडियो पर क़ुरान की तिलावत बन्द करा रही है, उर्दू की जगह हिन्दी चला रही है या किसी स्कूल में जुम्मे की छुट्टी बन्द करके इतवार को छुट्टी का दिन मुक़र्रर कर रही है तो उसे लगता है कि यह इस्लाम पर चोट की जा रही है. इन तमाम बातों से उसका पड़ोसी हिन्दू ख़ुश होने लगता है और वह सोचता है कि इस तरह की कारवाइयों से हिन्दू धर्म की अज़मत बढ़ती है.

हमें बताना होगा कि धर्म और मजहब तो सिर्फ़ चाल चलन से ही बढ़ते हैं. इस तरह की ज्यादतियों का उन पर कोई बुनियादी असर नहीं होता. आज भी लोग अगर किसी मुसलमान में ऊँचे दरजे का कैरेक्टर पावेंगे तो हजारों हिन्दू उसके सामने सर झुकायेंगे ही. इसी तरह एक ऊँचे चाल चलन का हिन्दू हजारों मुसलमानों के दिलों को मोह सकता है. पिछले जमाने में ऐसी बहुतेरी मिसालें हैं जब बावजूद मुसलमान राज होने के हजारों मुसलमान किसी हिन्दू फ़क़ीर के शागिर्द होते थे और मुसलमान पीरों के हजारों

پرچارکوں کی پوتر زندگی اور اپنے خلاف رہنے والے لوگوں کے ساتھ بھی ان کے اچھے برتاؤ نے لوگوں کا دل ان کی اور کھینچ لیا اور اس طرح ان کا مذہب پھیلنے لگا۔

لیکن آج ہم اَدھرم کے ذریعے دھرم کو پھیلانے میں لگے ہوئے ہیں۔ اس بدقسمت ملک میں نہ جانے کتنی ہندو لڑکیاں مسلمانوں نے اور نہ جانے کتنی مسلمان لڑکیاں ہندوؤں نے یہ سمجھ کر بھگائی ہیں کہ اس سے ہمارے مذہب کی بڑھوتی ہی ہوگی۔ ان بھاوناؤں کا ہی ایک دوسرا روپ یہ ہے کہ آج جب کوئی مسلمان یہ سنتا ہے کہ حکومت ریڈیو پر قرآن کی تلاوت بند کرا رہی ہے، اردو کی جگہ ہندی چلا رہی ہے یا کسی اسکول میں جمعہ کی چھٹی بند کر کے اتوار کو چھٹی کا دن مقرر کر رہی ہے تو اسے لگتا ہے کہ یہ اسلام پر چوٹ کی جا رہی ہے۔ ان تمام باتوں سے اس کا پڑوسی ہندو خوش ہونے لگتا ہے اور وہ سوچتا ہے کہ اس طرح کی کاروائیوں سے ہندو دھرم کی عظمت بڑھتی ہے۔

ہمیں بتانا ہوگا کہ دھرم اور مذہب تو صرف چال چلن سے ہی بڑھتے ہیں۔ اس طرح کی زیادتیوں کا ان پر کوئی بنیادی اثر نہیں ہوتا۔ آج بھی لوگ اگر کسی مسلمان میں اونچے درجے کا کریکٹر پاویں گے تو ہزاروں ہندو اس کے سامنے سر جھکائیں گے ہی۔ اسی طرح ایک اونچے چال چلن کا ہندو ہزاروں مسلمانوں کے دلوں کو موہ سکتا ہے۔ پچھلے زمانے میں ایسی بہتیری مثالیں ہیں جب باوجود مسلمان راج ہونے کے ہزاروں مسلمان کسی ہندو فقیر کے شاگرد ہوتے تھے اور مسلمان پیروں کے ہزاروں

हिन्दू भी मुरीद देखे जाते थे. ज़ोर ज़ुल्म से तो उस धर्म से नफ़रत ही बढ़ती है.

इस साम्प्रदायिकता दुश्मन संगठन को अपने इस तरह के विचार छोटी छोटी किताबों और पैम्फ़लेटो के ज़रिये आम लोगों में फैलाने होंगे. इसके लिये सैकड़ों हज़ारों मिशनरियों की ज़रूरत होगी, जो ख़ास तौर पर अपने अपने हल्क़ों में ही काम करेंगे. सिक्ख सिक्खों में, हिन्दू हिन्दुओं में और मुसलमान मुसलमानों में ही ज़्यादा कामयाब हो सकते हैं और इसका दूसरे मज़हब के लोगों पर भी अच्छा असर पड़ता है. यह हक़ीक़त है कि गान्धी जी के विचारों और कामों ने हज़ारों मुसलमानों को और ख़ान भाइयों के कामों और विचारों ने हज़ारों हिन्दुओं को साम्प्रदायिकता के गढ़े से उबारा है.

इस संगठन को ऐसे दूसरे संगठनों से भी पूरी मदद लेनी चाहिये जो अपने अपने तरीक़ों से साम्प्रदायिकता के ख़िलाफ़ काम कर रहे हैं. इस तरह से हम हर एक साम्प्रदायिकता विरोधी ताक़त से अपना सम्बन्ध क़ायम कर सकेंगे. आज ज़माने की सबसे बड़ी ज़रूरत यही है, जिसको अनसुना करना इन्सानियत के ख़िलाफ़ एक गुनाह है.

ہندو بھی مُرید دیکھے جاتے تھے۔ زور ظلم سے تو اُس دھرم سے نفرت ہی بڑھتی ہے۔

اس سامپردایکتا دشمن سنگٹھن کو اپنے اس طرح کے وچار چھوٹی چھوٹی کتابوں اور پیمفلیٹوں کے ذریعے عام لوگوں میں پھیلانے ہوں گے۔ اس کے لئے سیکڑوں ہزاروں مشنریوں کی ضرورت ہوگی، جو خاص طور پر اپنے اپنے حلقوں میں ہی کام کریں گے۔ سکھ سکھوں میں، ہندو ہندوؤں میں اور مسلمان مسلمانوں میں ہی زیادہ کامیاب ہو سکتے ہیں اور اس کا دوسرے مذہب کے لوگوں پر بھی اچھا اثر پڑتا ہے۔ یہ حقیقت ہے کہ گاندھی جی کے وچاروں اور کاموں نے ہزاروں مسلمانوں کو اور خان بھائیوں کے کاموں اور وچاروں نے ہزاروں ہندوؤں کو سامپردایکتا کے گڑھے سے اُبارا ہے۔

اس سنگٹھن کو ایسے دوسرے سنگٹھنوں سے بھی پوری مدد لینی چاہیے جو اپنے اپنے طریقوں سے سامپردایکتا کے خلاف کام کر رہے ہیں۔ اس طرح سے ہم ہر ایک سامپردایکتا وِرودھی طاقت سے اپنا سمبندھ قائم کر سکیں گے۔ آج زمانے کی سب سے بڑی ضرورت یہی ہے، جس کو ان سنا کرنا انسانیت کے خلاف ایک گناہ ہے۔

बिकास काल या विनाश काल

(भाई अब्दुल हलीम अंसारी)

यह बिकास का काल है. यह रचनाओं का जमाना है.
यह तजवीज़ों का राज है. यह तहरीकों का इदारा है.
यह क़ौमी संगठन है. यह स्कीमों का कारख़ाना है.
जिधर देखो, तामीरी स्कीमों का अंबार है.
जिधर नज़र दौड़ाओ; रचनात्मक योजनाओं का जाल है.
—लेकिन, फिर भी जनता हाल से बद हाल है.
बेशक! दिमाग़ों के अन्दर सुन्दर सुन्दर सुझाव हैं.
बेशक ! मेज़ों के ऊपर अच्छे अच्छे प्रस्ताव हैं.
—लेकिन, फिर भी जनता हाल से बदहाल है.
हर सेवक के मन में सेवा का भाव है.
हर नेता के भाव में एकता का चाव है,

—लेकिन, फिर भी कितने नाते टूट चुके हैं और क़ौमी जामे के तार तार बिखरते जा रहे हैं.

हर मंत्री के क़लम की जबान पर विकास की तक़रीर है. निर्मान का बयान है, सुधार की तहरीर है. प्रचार की ख़िदमत है.

हर नेता के दिमाग़ में समाज की भलाई का पुराना प्रोग्राम है और उसके दिल में मज़लूम की रक्षा का सियासी राज़ है. जिसको देखो वह उसी आवाज़ को उठाता चला जा रहा है और उसी लकीर

وِکاس کال یا وِناش کال

(بھائی عبدالحلیم انصاری)

یہ وِکاس کا کال ہے۔ یہ رچناؤں کا زمانہ ہے۔
یہ تجویزوں کا راج ہے۔ یہ تحریکوں کا ادارہ ہے۔
یہ قومی سنگٹھن ہے۔ یہ اسکیموں کا کارخانہ ہے۔
جدھر دیکھو، تعمیری اسکیموں کا انبار ہے۔
جدھر نظر دوڑاؤ؛ رچناتمک یوجناؤں کا جال ہے۔
— لیکن، پھر بھی جنتا حال سے بدحال ہے۔
بیشک! دماغوں کے اندر سُندر سُندر سجھاؤ ہیں۔
بیشک! میزوں کے اوپر اچھے اچھے پرستاؤ ہیں۔
— لیکن، پھر بھی جنتا حال سے بدحال ہے۔
ہر سیوک کے من میں سیوا کا بھاؤ ہے۔
ہر نیتا کے بھاؤ میں ایکتا کا چاؤ ہے،

— لیکن، پھر بھی کتنے ناتے ٹوٹ چکے ہیں اور قومی جامے کے تار تار بکھرتے جا رہے ہیں۔

ہر منتری کے قلم کی زبان پر وِکاس کی تقریر ہے۔ نرمان کا بیان ہے، سُدھار کی تحریر ہے۔ پرچار کی خدمت ہے۔

ہر نیتا کے دماغ میں سماج کی بھلائی کا پرانا پروگرام ہے اور اس کے دل میں مظلوم کی رکشا کا سیاسی راز ہے۔ جس کو دیکھو وہ اُسی آواز کو اٹھاتا چلا جا رہا ہے اور اسی لکیر

को पीटता जा रहा है. यानी हर सेवक और हर वज़ीर आज भी उसी लकीर का फ़क़ीर है. सचमुच उसके नज़दीक न सुधार और सेवा की सलाहियत है, न भलाई की तदबीर है.

विकास के जिस काल से हम आज गुज़र रहे हैं और आज़ादी के जिस राज को हम आज भुगत रहे हैं उसमें तो हमको न कहीं विकास ही मिलता है और न कहीं सुधार की शकल ही दिखाई देती है. अलबत्ता विकास और सुधार के शब्दों का प्रचार बहुत ज़्यादा दिखाई और सुनाई देता है. इन शब्दों के अधिक प्रचार से और इनके दिलकश नाम से भोली और वफ़ादार जनता ख़ुश ज़रूर हो जाती है. पर ज़्यादा देर तक उसकी वह ख़ुशी और तसल्ली बाक़ी नहीं रहने पाती—बाज़ वक़्त ऐसा भी होता है कि इन सियासी शब्दों के शोबदों में उलझकर अवाम कुछ देर के लिये अपनी अक़्ल खो बैठते हैं और हर देसी या विदेशी इन सुन्दर सुन्दर शब्दों को जलसों में सुन सुन कर या पत्रों में पढ़ पढ़ कर यह समझने लग जाता है कि हिन्दुस्तान तामीर और निर्मान का एक कारख़ाना है, तहज़ीब और सुधार का एक देस है, कलचर और विकास का एक मुल्क है—यह सब ठीक और बिलकुल ठीक, लेकिन अपनों के लिये लीडरों के यहाँ कुछ और ही तरकीब है. घर की बातें घर ही वाले ख़ूब जानते हैं. बहलावे और फुसलावे की बातें ज़्यादा देर क़ायम नहीं रह पातीं. वह यह भी समझते हैं कि दिखावटी शब्दों और विचारों में न वज़न होता है न जान—वह बिलकुल ऐसे होते हैं जैसे पानी के ऊपर नक़्श यानी जैसे जल के ऊपर चित्र!

यह भी सियासत की एक चाल है और राजनीति की तरकीब

کو پیٹتا جا رہا ہے۔ یعنی ہر سیوک اور ہر وزیر آج بھی اُسی لکیر کا فقیر ہے۔ سچ مچ اُس کے نزدیک نہ سُدھار اور سیوا کی صلاحیت ہے، نہ بھلائی کی تدبیر ہے۔

وِکاس کے جس کال سے ہم آج گزر رہے ہیں اور آزادی کے جس راج کو ہم آج بھگت رہے ہیں اس میں تو ہم کو نہ کہیں وِکاس ہی ملتا ہے اور نہ کہیں سُدھار کی شکل ہی دکھائی دیتی ہے۔ البتہ وِکاس اور سُدھار کے شبدوں کا پرچار بہت زیادہ دکھائی اور سُنائی دیتا ہے۔ اِن شبدوں کے ادھک پرچار سے اور اِن کے دلکش نام سے بھولی اور وفادار جنتا خوش ضرور ہو جاتی ہے۔ پر زیادہ دیر تک اُس کی وہ خوشی اور تسلی باقی نہیں رہنے پاتی — بعض وقت ایسا بھی ہوتا ہے کہ اِن سیاسی شبدوں کے شعبدوں میں اُلجھ کر عوام کچھ دیر کے لئے اپنی عقل کھو بیٹھتے ہیں اور ہر دیسی یا ودیشی ان سندر سندر شبدوں کو جلسوں میں سُن سُن کر یا پتروں میں پڑھ پڑھ کر یہ سمجھنے لگ جاتا ہے کہ ہندستان تعمیر اور نرمان کا ایک کارخانہ ہے، تہذیب اور سُدھار کا ایک دیس ہے، کلچر اور وِکاس کا ایک ملک ہے — یہ سب ٹھیک اور بالکل ٹھیک، لیکن اپنوں کے لئے لیڈروں کے یہاں کچھ اور ہی ترکیب ہے۔ گھر کی باتیں گھر ہی والے خوب جانتے ہیں۔ بہلاوے اور پھسلاوے کی باتیں زیادہ دیر قائم نہیں رہ پاتیں۔ وہ یہ بھی سمجھتے ہیں کہ دکھاوٹی شبدوں اور وچاروں میں نہ وزن ہوتا ہے نہ جان — وہ بالکل ایسے ہوتے ہیں جیسے پانی کے اوپر نقش یعنی جیسے جل کے اوپر چِتر!

یہ بھی سیاست کی ایک چال ہے اور راج نیتی کی ترکیب

जिसमें ग़रीब बेचारे फँस कर अपनी तरसती जिन्दगी को उसके हवाले कर देते हैं, जिसके नतीजे में उनको रोने धोने और सर पीटने के सिवा कुछ हासिल नहीं होता.

राजकाज की नीति को अगर बारीकी से देखा जाय तो उसके बहुत से अन्दरूनी भेद भाव खुल जाते हैं—और यह ऐसी चीज़ भी नहीं कि जिसको कोई गहरी और बारीक नजर रखने वाला ही समझ सके. अब तो उसके काम इतने भद्देपन से होने लगे हैं कि एक मोटी अक़्ल वाला भी उनको समझ सकता है, और एक गँवार भी ताड़ जाता है.यही कारन है कि राज और राजनीति का विश्वास दिन बदिन कम होता जारहा है जिसका असर उसके भविष्य पर अच्छा पड़ता मालूम नहीं होता.

आज देश जिस हाल से गुज़र रहा है और जनता जिस दुख में मुबतिला है वह छुपी बात नहीं—दोनों चीज़ें सामने हैं. जिधर देखो विकास की जगह विनाश ही विनाश है और सुधार की जगह बिगाड़ ही बिगाड़ है. अजीब बात यह कि अब जब कि हर तरफ़ हमारा ही हमारा मंत्री है, फिर भी देशभर में अबतरी ही अबतरी है. इसकी ज़िम्मेदारी किस पर ?

क्या हर ज़िम्मेदार मंत्री पर नहीं ?

तबाही, बरबादी और विनाशकारी के मुख़तलिफ़ समें अपनी आँखों से देखते हुए और अपनी जानों पर झेलते हुए इस काल को आप क्या कहेंगे ?

सुनी सुनाई बातों को छोड़िये—बिन देखी चीज़ों की चरचा की ज़रूरत नहीं बल्कि अपनी आँखों देखे हालात को सामने रखिये.

جس میں غریب بے چارے پھنس کر اپنی ترستی زندگی کو اُس کے حوالے کر دیتے ہیں، جس کے نتیجے میں اُن کو رونے دھونے اور سر پیٹنے کے سوا کچھ حاصل نہیں ہوتا۔

راج کاج کی نیتی کو اگر باریکی سے دیکھا جائے تو اُس کے بہت سے اندرونی بھید بھاؤ کھل جاتے ہیں — اور یہ ایسی چیز بھی نہیں کہ جس کو کوئی گہری اور باریک نظر رکھنے والا ہی سمجھ سکے۔ اب تو اس کے کام اتنے بھدے پن سے ہونے لگے ہیں کہ ایک موٹی عقل والا بھی اُن کو سمجھ سکتا ہے، اور ایک گنوار بھی تاڑ جاتا ہے۔ یہی کارن ہے کہ راج اور راج نیتی کا وشواس دن بدن کم ہوتا جا رہا ہے جس کا اثر اس کے بھوشیہ پر اچھا پڑتا معلوم نہیں ہوتا۔

آج دیش جس حال سے گزر رہا ہے اور جنتا جس دُکھ میں مُبتلا ہے وہ چھپی بات نہیں ہے — دونوں چیزیں سامنے ہیں۔ جدھر دیکھو وکاس کی جگہ وناش ہی وناش ہے اور سدھار کی جگہ بگاڑ ہی بگاڑ ہے۔ عجیب بات یہ کہ اب جب کہ ہر طرف ہمارا ہی ہمارا منتری ہے، پھر بھی دیش بھر میں ابتری ہی ابتری ہے۔ اس کی ذمہ داری کس پر؟

کیا ہر ذمہ دار منتری پر نہیں؟

تباہی، بربادی اور وناش کاری کے مختلف سمیں اپنی آنکھوں سے دیکھتے ہوئے اور اپنی جانوں پر جھیلتے ہوئے اس کال کو آپ کیا کہیں گے؟

سُنی سُنائی باتوں کو چھوڑیئے — بن دیکھی چیزوں کی چرچا کی ضرورت نہیں بلکہ اپنی آنکھوں دیکھے حالات کو سامنے رکھیے۔

अपनी बीती पर एक मिनट ध्यान दीजिये और फिर खुद फ़ैसला कीजिये. जिन संकटों से आप गुज़र चुके हैं, जिन मुसीबतों को आप भुगत चुके हैं, जिन तकलीफ़ों को आप झेल चुके हैं, जिन घटनाओं का आप नज़्ज़ारा कर चुके हैं—और अब जिस हाल में आप हैं और जिस काल में जीवन के कठिन दिन काट रहे हैं—यह सब हालात ख़ुद आपको अपना फ़ैसला तैयार करने में मदद देंगे.

आप से मेरा मतलब, अवाम !

आपसे मेरी मुराद, समाज !

आज़ादी ने देश को शान्ती का संदेसा दिया था—देखना यह है कि आज़ादी में वह शान्ती कहाँ ?

राजनीति ने कपड़े लत्ते का इतमीनान और रहने सहने का विश्वास दिलाया था—आज हमको उसी विश्वास की तलाश है—लेकिन वह है कहाँ ?

—फिर ऐसी आज़ादी और ऐसी राजनीति का क्या मतलब ? और उसके विश्वासों की क्या क़ीमत ?

देश के सेवकों और राजनीतकारों को यह बात याद रखनी चाहिये कि जो बात उनकी ज़बान से निकले उसमें पूरी पूरी सच्चाई और ज़िम्मेदारी हो—बात खोटी हो जाने पर जनता के दिल में वह किसी आदर के लायक़ नहीं रहते—ख़ुद्दार और ग़ैरतदार लोग इस बात का बड़ा ख़याल रखते हैं.

क़ौम के सेवकों और लीडरों ने हमेशा अपने को सेवक कह कर पेश किया है—सेवक और रक्षक होते हुए भी अगर जनता भूकी और नंगी रहे तो बेशक उसके सेवक के सेवक पन पर कितना

اپنی بیتی پر ایک منٹ دھیان دیجئے اور پھر خود فیصلہ کیجئے۔ جن سنکٹوں سے آپ گزر چکے ہیں، جن مصیبتوں کو آپ بھگت چکے ہیں، جن تکلیفوں کو آپ جھیل چکے ہیں، جن گھٹناؤں کا آپ نظارہ کر چکے ہیں — اور اب جس حال میں آپ ہیں اور جس کال میں جیون کے کٹھن دن کاٹ رہے ہیں — یہ سب حالات خود آپ کو اپنا فیصلہ تیار کرنے میں مدد دیں گے۔

آپ سے میرا مطلب، عوام!

آپ سے میری مراد، سماج!

آزادی نے دیش کو شانتی کا سندیسہ دیا تھا — دیکھنا یہ ہے کہ آزادی میں وہ شانتی کہاں؟

راج نیتی نے کپڑے لتے کا اطمینان اور رہنے سہنے کا وشواس دلایا تھا — آج ہم کو اسی وشواس کی تلاش ہے — لیکن وہ ہے کہاں؟

— پھر ایسی آزادی اور ایسی راج نیتی کا کیا مطلب؟ اور اس کے وشواسوں کی کیا قیمت؟

دیش کے سیوکوں اور راج نیتی کاروں کو یہ بات یاد رکھنی چاہئے کہ جو بات ان کی زبان سے نکلے اس میں پوری پوری سچائی اور ذمہ داری ہو — بات کھوٹی ہو جانے پر جنتا کے دل میں وہ کسی آدر کے لائق نہیں رہتے — خوددار اور غیرت دار لوگ اس بات کا بڑا خیال رکھتے ہیں۔

قوم کے سیوکوں اور لیڈروں نے ہمیشہ اپنے کو سیوک کہہ کر پیش کیا ہے — سیوک اور رکشک ہوتے ہوئے بھی اگر جنتا بھوکی اور ننگی رہے تو بیشک اس سیوک کے پن پر کتنا

भारी इलजाम आता है और उसकी लीडरी के दामन पर कितना मोटा दाग़ !

देश में शान्ती की फ़िज़ा क़ायम करना और जनता का दुख दर्द दूर करना यह सेवकों का ज़िम्मेदाराना काम है. अगर वह इस काम में नाकाम हैं तो समझना चाहिये कि सेवा का शब्द अपने मक़सद को पूरा नहीं कर पाया.

देश अब भी शान्ती से महरूम है, जनता अब भी दुखिया है. इसलिये उसको सेवक दरकार हैं—लेकिन सच्चे, और मुख़लिस सेवक ! मगर मातम यह कि मुख़लिसों का काल है.

देश को अब भी मेमारों की ज़रूरत है. लेकिन इमारत खड़ी करने वालों की—ढाने वालों की नहीं,

देश को अब भी ख़िदमतगारों की ज़रूरत है—बे लौस ख़िदमतगारों की—ग़रज़मंद ख़िदमतगारों की नहीं.

देश, अमन की हवाओं से अभी तक तरसा हुआ है. अवाम "शान्ती निकेतन" में अभी तक पूरी तरह दाख़िल नहीं हुए हैं.

अब भी देश में तरह तरह की मुसीबतें फैली हुई हैं—अब भी घर घर परेशानियों की घटायें छाई हुई हैं—आफ़तें मंडला रही हैं—बग़ावतों के बादल सर पर घूम रहे हैं—तास्सुब की चिनगारियाँ क़रीब ही क़रीब सुलग रही हैं—फ़िरक़ेवारी की बलायें सामने खड़ी मुस्करा रही हैं—ग़रज़ यह कि नये नये फ़ितने जाग रहे हैं—नये नये ख़तरे आ रहे हैं. जिसका मतलब यह है कि देश अब भी नाज़ुक से नाज़ुक मंज़िल से गुज़र रहा है. अचरज नहीं कि आगे चलकर

بھاری الزام آتا ہے اور اُس کی لیڈری کے دامن پر کتنا موٹا داغ!

دیش میں شانتی کی فضا قائم کرنا اور جنتا کا دُکھ درد دور کرنا یہ سیوکوں کا ذمہ دارانہ کام ہے۔ اگر وہ اِس کام میں ناکام ہیں تو سمجھنا چاہئے کہ سیوا کا شبد اپنے مقصد کو پورا نہیں کر پایا۔

دیش اب بھی شانتی سے محروم ہے، جنتا اب بھی دُکھیا ہے۔ اِس لئے اُس کو سیوک درکار ہیں — لیکن سچے، اور مخلص سیوک! مگر ماتم یہ کہ مخلصوں کا کال ہے۔

دیش کو اب بھی معماروں کی ضرورت ہے۔ لیکن عمارت کھڑی کرنے والوں کی — ڈھانے والوں کی نہیں،

دیش کو اب بھی خدمت گاروں کی ضرورت ہے — بے لوث خدمت گاروں کی — غرض مند خدمتگاروں کی نہیں۔

دیش، امن کی ہواؤں سے ابھی تک ترسا ہوا ہے۔ عوام "شانتی نکیتن" میں ابھی تک پوری طرح داخل نہیں ہوئے ہیں۔

اب بھی دیش میں طرح طرح کی مصیبتیں پھیلی ہوئی ہیں — اب بھی گھر گھر پریشانیوں کی گھٹائیں چھائی ہوئی ہیں — آفتیں منڈلا رہی ہیں — بغاوتوں کے بادل سر پر گھوم رہے ہیں — تعصب کی چنگاریاں قریب ہی قریب سلگ رہی ہیں — فرقہ داری کی بلائیں سامنے کھڑی مسکرا رہی ہیں — غرض یہ کہ نئے نئے فتنے جاگ رہے ہیں — نئے نئے خطرے آرہے ہیں۔ جس کا مطلب یہ ہے کہ دیش اب بھی نازک سے نازک منزل سے گزر رہا ہے۔ اچرج نہیں کہ آگے چل کر

और किसी नाज़ुक मुक़ाम पर पहुँच कर वह टकरा जाय—इसके अलावा इस काल या इस राज में,

समाजी और एक़्तसादी ज़िन्दगियों को सख़्त नुक़सान और धक्का पहुंच रहा है. कारबार ठप हो रहा है. आमदनी गिर रही है. पैसा उड़ रहा है. चोर बाज़ारी बढ़ रही है—रिश्वत और लूट खसोट जारी है—तिजारत और ज़राअत को सियासत का कीड़ा खाये जा रहा है. जिसके सबब उनके ज़ख़ीरों में घुन लग रहा है, और वहाँ उसी चौड़े चकले कीड़े का तनहा क़ब्ज़ा और अधिकार है—जहाँ महाजन कान नहीं हिला सकता और जहाँ "बैंकर" दम नहीं मार सकता.

जायदादों पर ज़बरदस्ती क़ब्ज़ा और छीना छानी और इन्साफ़ के नाम पर आना कानी. ख़ानदानों की बरबादी और तबाह हाली—यह तमाम के तमाम वह हौल नाक निशानात हैं जो फ़िज़ा का भयानकपन और मुसतक़बिल का बदला हुआ रंग ज़ाहिर करने में अपना अपना भाग अदा कर रहे हैं और भविष्य की ग़ुस्सा भरी निगाह में जो निशाने बन चुके हैं उनकी तरफ़ वह इशारे कर रहे हैं.

इन सबसे बढ़कर बेकारी और बेरोज़गारी—और फिर सितम पर सितम यह कि मँहगाई पर मँहगाई !

क्या इस तरह जनता ज़िन्दा रह सकती है—और क्या ऐसे कर्मों से राज की उमर लम्बी हो सकती है ?

समाज को शान्ती और शक्ति पहुँचाना—उसके पेट को रोटी और तन को कपड़ा पहुंचाना, और उसके गिरे हुए आदर्श को ऊंचा

اور کسی نازک مقام پر پہنچ کر وہ ٹکرا جائے — اس کے علاوہ اس کال یا اِس راج میں،

سماجی اور اقتصادی زندگیوں کو سخت نقصان اور دھکا پہنچ رہا ہے۔ کار بار ٹھپ ہو رہا ہے۔ آمدنی گر رہی ہے۔ پیسہ اُڑ رہا ہے۔ چور بازاری بڑھ رہی ہے — رشوت اور لوٹ کھسوٹ جاری ہے — تجارت اور زراعت کو سیاست کا کیڑا کھائے جا رہا ہے۔ جس کے سبب اُن کے ذخیروں میں گھن لگ رہا ہے، اور وہاں اُسی چوڑے چکلے کیڑے کا تنہا قبضہ اور ادھیکار ہے — جہاں مہاجن کان نہیں ہلا سکتا اور جہاں "بینکر" دم نہیں مار سکتا۔

جائدادوں پر زبردستی قبضہ اور چھینا چھانی اور انصاف کے نام پر آنا کانی۔ خاندانوں کی بربادی اور تباہ حالی — یہ تمام کے تمام وہ ہولناک نشانات ہیں جو فضا کا بھیانک پن اور مستقبل کا بدلا ہوا رنگ ظاہر کرنے میں اپنا اپنا بھاگ ادا کر رہے ہیں اور بھوشیہ کی غصہ بھری نگاہ میں جو نشانے بن چکے ہیں اُن کی طرف وہ اشارے کر رہے ہیں۔

ان سب سے بڑھ کر بےکاری اور بےروزگاری — اور پھر ستم پر ستم یہ کہ مہنگائی پر مہنگائی!

کیا اِس طرح جنتا زندہ رہ سکتی ہے — اور کیا ایسے کرموں سے راج کی عمر لمبی ہو سکتی ہے؟

سماج کو شانتی اور شکتی پہنچانا — اُس کے پیٹ کو روٹی اور تن کو کپڑا پہنچانا، اور اُس کے گرے ہوئے آدرش کو اونچا

उठाना हुकूमत का ज़िम्मेदाराना फ़र्ज़ है और सबसे पहला काम ! बाक़ी के काम इसके पीछे !

चूँकि राज की ज़िन्दगी जनता से है. राज की शान और आन जनता से है—अगर जनता नहीं तो राज कब ? जनता के दम क़दम से राज है और जनता की ताक़त से एक़तदार—लेकिन उसी की ज़िन्दगी बेचैन और बेक़रार है.

आज हम जिस माहौल में हैं और जिस आकाश के नीचे—यही आज़ाद काल और यही आज़ाद हिन्दुस्तान है—इसी को लोग विकास काल भी कहते हैं—विकास राज भी और सुराज भाग भी—जिसमें न अपनों के रहने सहने का ठिकाना, न रोटी पानी का प्रबन्ध ! क्या यही वह विकास काल और आज़ाद काल है—और क्या यही आज़ादी और ज़िन्दगी के नाम पर वह शान्ती का माहौल है जहाँ तरफ़ तरफ़ तबाही के मन्ज़र !

जगह जगह बरबादी के खंडर.

ज़िन्दगियाँ जलती भुनती, तड़पती और सिसकती.

क्या यही वह सुराज काल है, जहाँ ज़िन्दगियों का यह हाल है.

क्या यही वह तामीरी इदारह है, जहाँ बरबादियों का यह नज़ारा है.

और—

जहाँ ग़रीबों की यह हालत हो,
जहाँ शरीफ़ों की यह दुरगत हो,
जहाँ इन्सानियत की मिट्टी पलीद हो,
जहाँ तहज़ीब मटियामेट हो,

اٹھانا حکومت کا ذمہ دارانہ فرض ہے اور سب سے پہلا کام ! باقی کے کام اس کے پیچھے !

چونکہ راج کی زندگی جنتا سے ہے۔ راج کی شان اور آن جنتا سے ہے — اگر جنتا نہیں تو راج کب ؟ جنتا کے دم قدم سے راج ہے اور جنتا کی طاقت سے اقتدار — لیکن اسی کی زندگی بے چین اور بے قرار ہے۔

آج ہم جس ماحول میں ہیں اور جس آکاش کے نیچے — یہی آزاد کال اور یہی آزاد ہندستان ہے — اسی کو لوگ وکاس کال بھی کہتے ہیں — وکاس راج بھی اور سوراج بھاگ بھی — جس میں نہ اپنوں کے رہنے سہنے کا ٹھکانا، نہ روٹی پانی کا پربندھ ! کیا یہی وہ وکاس کال اور آزاد کال ہے — اور کیا یہی آزادی اور زندگی کے نام پر وہ شانتی کا ماحول ہے جہاں طرف طرف تباہی کے منظر !

جگہ جگہ بربادی کے کھنڈر۔

زندگیاں جلتی بھنتی، تڑپتی اور سسکتی۔

کیا یہی وہ سوراج کال ہے، جہاں زندگیوں کا یہ حال ہے۔

کیا یہی وہ تعمیری ادارہ ہے، جہاں بربادیوں کا یہ نظارا ہے۔

اور —

جہاں غریبوں کی یہ حالت ہو،
جہاں شریفوں کی یہ درگت ہو،
جہاں انسانیت کی مٹی پلید ہو،
جہاں تہذیب مٹیا میٹ ہو،

जहाँ कलचर और भाषा के मामले पर उपच,
जहाँ धर्म और मज़हब के नाम पर खटक,
जहाँ अब भी पच्छिमी दिमाग़ हों,
जहाँ अब भी ग़ुलामी की बूबास हो,
वहाँ भला क्योंकर देश का विकास हो,
जहाँ विकास का नाम तो हो मगर काम न हो.
जहाँ मेयार का प्रचार तो हो मगर सदाचार न हो.
जहाँ ज़बान से दुश्मनी हो—जहाँ अवाम से हमदर्दी न हो.
जहाँ लिबास पर एतराज़ हो—जहाँ त्याग ख़ाक न हो.
जहाँ भूके का मज़ाक हो.
जहाँ दुखी पर हँसी हो.
जहाँ लहजों में सख़्ती हो.
जहाँ शब्दों में तुर्शी हो.
जहाँ एख़लाक़ की गिरावट हो, और ख़यालात में तंगी हो.
जहाँ रवादारी की कमी हो और मेयार में पस्ती हो.
क्या यही विकास का मेयार है ?
क्या यही मेयार का विकास है ?
क्या यही तरक़्क़ी का देश है ?
क्या यही विकास का काल है ?
इसको तरक़्क़ी का देश कहना ग़लत—इसको विकास का काल भी कहना ग़लत !
यह विकास काल नहीं, यह विनाश काल है.

جہاں کلچر اور بھاشا کے معاملے پر اُپچ،
جہاں دھرم اور مذہب کے نام پر کھٹک،
وہاں اب بھی پچھمی دماغ ہوں،
جہاں اب بھی غلامی کی بوباس ہو،
وہاں بھلا کیونکر دیش کا وِکاس ہو،
جہاں وِکاس کا نام تو ہو مگر کام نہ ہو،
جہاں معیار کا پرچار تو ہو مگر سداچار نہ ہو،
جہاں زبان سے دشمنی ہو— جہاں عوام سے ہمدردی نہ ہو۔
جہاں لباس پر اعتراض ہو— جہاں تیاگ خاک نہ ہو۔
جہاں بھوکے کا مذاق ہو۔
جہاں دُکھی پر ہنسی ہو۔
جہاں لہجوں میں سختی ہو۔
جہاں شبدوں میں ترشی ہو۔
جہاں اخلاق کی گراوٹ ہو، اور خیالات میں تنگی ہو۔
جہاں رواداری کی کمی ہو اور معیار میں پستی ہو۔
کیا یہی وِکاس کا معیار ہے؟
کیا یہی معیار کا وِکاس ہے؟
کیا یہی ترقی کا دیش ہے؟
کیا یہی وِکاس کا کال ہے؟
اس کو ترقی کا دیش کہنا غلط— اس کو وِکاس کا کال بھی کہنا غلط!
یہ وِکاس کال نہیں، یہ وِناش کال ہے۔

हिन्दुस्तानी की कथा

(भाई वक़ार ख़लील शाहपूरी)

"ज़बान उस दरिया की तरह है जो आलिमों और पंडितों की चट्टानों को चीरता हुआ विकसाव के बहाव के साथ आगे बढ़ता जाय"—वान्द्री

हिन्दुस्तानी वह ज़बान है जो उत्तर और बीच के हिन्दुस्तान में बोली और समझी जाती है. ग्यारहवीं और बारहवीं सदी के कुछ मुसलमान इतिहास कारों ने हिंद की ज़बान हिन्दुस्तानी का ज़िक्र किया है. सन् १०२२ ई० में "तबक़ात अकबरी" के लेखक निज़ामुद्दीन ने कलींजर के राजा को लिखी हुई कुछ नज़्मों का, जो उसने हिन्दुस्तानी में लिखी थीं, ज़िक्र किया है. पहला मुसलमान जिसने हिन्दुस्तानी में लिखना शुरू किया मसऊद इब्न सऊद था जो सन् ११३० ई० में चल बसा.

सोलहवीं सदी के पहले की हिन्दुस्तानी का कोई सही मवाद नहीं मिलता. बंगाली, गुजराती और मराठी ज़बान का काफ़ी मसाला मिलता है.

हिन्दुस्तानी का आरंभ यूँ हुआ. जब मुस्लिम सूरमा पंजाब से आकर दिल्ली में बस गये तो वहाँ के रहने बसने वालों के साथ उनके रिश्ते नाते मज़बूत होने शुरू हुए. इस इलाक़े में ब्रजभाषा बोली और समझी तो जाती थी पर वह थी पंडितों की बोली.

ہندستانی کی کتھا

(بھائی وقار خلیل شاہپوری)

"زبان اُس دریا کی طرح ہے جو عالموں اور پنڈتوں کی چٹانوں کو چیرتا ہوا وِکساؤ کے بہاؤ کے ساتھ آگے بڑھتا جائے"۔ واندری

ہندستانی وہ زبان ہے جو اُتر اور بیچ کے ہندستان میں بولی اور سمجھی جاتی ہے۔ گیارھویں اور بارھویں صدی کے کچھ مسلمان اتہاس کاروں نے ہند کی زبان ہندستانی کا ذکر کیا ہے۔ سنہ ۱۰۲۲ میں "طبقات اکبری" کے لیکھک نظام الدین نے کلنجر کے راجہ کی لکھی ہوئی کچھ نظموں کا، جو اُس نے ہندستانی میں لکھی تھیں، ذکر کیا ہے۔ پہلا مسلمان جس نے ہندستانی میں لکھنا شروع کیا مسعود ابن سعد تھا جو سنہ ۱۱۳۰ء میں چل بسا۔

سولھویں صدی کے پہلے کی ہندستانی کا کوئی صحیح مواد نہیں ملتا۔ بنگالی، گجراتی اور مراٹھی زبان کا کافی مسالا ملتا ہے۔

ہندستانی کا آرمبھ یوں ہوا۔ جب مسلم سورما پنجاب سے آکر دلّی میں بس گئے تو وہاں کے رہنے بسنے والوں کے ساتھ اُن کے رشتے ناتے مضبوط ہونے شروع ہوئے۔ اس علاقے میں برج بھاشا بولی اور سمجھی تو جاتی تھی پر وہ تھی پنڈتوں کی بولی۔

दिल्ली वालों को वह बोली ज्यादा प्यारी और पसंद थी, जो दिल्ली के बाजारों और पास के इलाकों में बोली जाती थी जिसका नाम "हिन्दुस्तानी" या "हिन्दी" या खड़ी बोली था.

भूदेव मुकर्जी लिखते हैं "जो जबानें हिन्दुस्तान में चालू हैं उन सब में मरहटे की जबान हिन्दुस्तानी है. और मुसलमानों की मेहरबानी से यह समूचे हिन्दुस्तान में फैल गई है"

चटर्जी के अनुसार सत्तरहवीं और अठारहवीं सदी में हिन्दुस्तानी का फैलना उन सभी नेमतों में से है जो मुगल सल्तनत ने हिन्दुस्तान को बख्शी हैं. अठारहवीं सदी के मुगल दरबार में अदबी उर्दू का काम में लाना सम्मान की बात समझा जाता था और बादशाह उर्दू नज़्मों की ख़ूब क़दर करते थे.

अमीर ख़ुसरो ने तेरहवीं और चौदहवीं सदी में हिन्दुस्तानी में कुछ अच्छी नज़्में लिखीं. चौदहवीं सदी में कबीर दास और पंद्रहवीं सदी में सिक्ख गुरुओं ने मजहबी नज़्में लिखकर हिन्दुस्तानी को और भी बढ़ाया. हिन्दुस्तानी का शब्द भन्डार ब्रजभाषा तक ही महदूद न रहा. पूर्वी हिन्द और पंजाब की सरहद से भी लफ़्ज़ों का खजाना इसने हासिल किया.

सोलहवीं और सत्तरहवीं सदी में मुसलमान अपनी अदबी किताबें अक्सर हिन्दुस्तानी में लिखते रहे जैसा कि मोहम्मद जायसी की "पद्मावत" और बीजापुर के शाह बुरहानुद्दीन जानम के कुछ लेखों से जाहिर है. अदबी हिन्दुस्तानी, अदबी उर्दू से लगभग दो सदी ज्यादह पुरानी है. पंद्रहवीं सदी में कबीर के दोहे अदबी हिन्दुस्तानी में लिखे गये थे.

دلی والوں کو وہ بولی زیادہ پیاری اور پسند تھی، جو دلی کے بازاروں اور پاس کے علاقوں میں بولی جاتی تھی جس کا نام "ہندستانی" یا "ہندی" یا کھڑی بولی تھا.

بھودیو مکرجی لکھتے ہیں "جو زبانیں ہندستان میں چالو ہیں ان سب میں مرہٹے کی زبان ہندستانی ہے. اور مسلمانوں کی مہربانی سے یہ سموچے ہندستان میں پھیل گئی ہے"

چٹرجی کے انوسار سترھویں اور اٹھارھویں صدی میں ہندستانی کا پھیلنا ان سبھی نعمتوں میں سے ہے جو مغل سلطنت نے ہندستان کو بخشی ہیں. اٹھارھویں صدی کے مغل دربار میں ادبی اردو کا کام میں لانا سمان کی بات سمجھا جاتا تھا اور بادشاہ اردو نظموں کی خوب قدر کرتے تھے.

امیر خسرو نے تیرھویں اور چودھویں صدی میں ہندستانی میں کچھ اچھی نظمیں لکھیں. چودھویں صدی میں کبیر داس اور پندرھویں صدی میں سکھ گروؤں نے مذہبی نظمیں لکھ کر ہندستانی کو اور بھی بڑھایا. ہندستانی کا شبد بھنڈار برج بھاشا تک ہی محدود نہ رہا. پوربی ہند اور پنجاب کی سرحد سے بھی لفظوں کا خزانہ اس نے حاصل کیا.

سولھویں اور سترھویں صدی میں مسلمان اپنی ادبی کتابیں اکثر ہندستانی میں لکھتے رہے جیسا کہ محمد جائسی کی "پدماوت" اور بیجاپور کے شاہ برہان الدین جانم کے کچھ لیکھوں سے ظاہر ہے. ادبی ہندستانی، ادبی اردو سے لگ بھگ دو صدی زیادہ پرانی ہے. پندرھویں صدی میں کبیر کے دوہے ادبی ہندستانی میں لکھے گئے تھے.

हिन्दुस्तानी के दूसरे नाम (उर्दू) का आरम्भ सत्तरहवीं सदी में हुआ. जब दिल्ली के सिपाही एक दूसरे के बाद दक्खिन पहुँचे तो उनकी जबान को "उर्दू" नाम दिया गया.

उर्दू शब्द शहंशाह अकबर के सिक्कों में भी पाया जाता है. वहाँ उसके मानी "शाही छावनी" के हैं. यह लफ्ज़ तुर्की है. और इसके लफ्ज़ी मानी "खेमा" या "छावनी" के हैं. बाबर और दूसरे तुर्क बादशाहों के दरबार खेमों में लगा करते थे, इसलिये उर्दू लफ्ज़ के मानी बाद में "दरबार" हो गये. कुछ दिनों बाद यानी सत्तरहवीं सदी में दरबारी जबान भी "उर्दू" कहलाने लगी और जब औरंगज़ेब का लश्कर दक्खिन पहुँचा तो उनकी जबान "उर्दूए मुअल्ला" कहलाने लगी.

अदबी उर्दू का आरम्भ अव्वल अव्वल दक्खिन ही में हुआ और मुल्ला वजही (सन् १६०९ ई०) और सुलतान मुहम्मद कुली कुतुबशाह (सन् १५८०ई०—सन् १६११ ई०) की किताबों से दक्खिन में अदबी उर्दू और पक्की हो गई. दक्खिन की मिसाल से असर लेकर देहली वालों ने भी उर्दू में नज़्में लिखनी शुरू कर दीं. यह बात सत्तरहवीं सदी के आखीर की है. नई अदबी उर्दू का पहला शायर वली था जो दक्खिन से दिल्ली आया था.

अंग्रेजी राज से पहले उर्दू और हिन्दुस्तानी दोनों बहुत करके नज़्म का रूप लिये हुए हैं. अंग्रेजी राज के साथ साथ इन दोनों जबानों में नस्र (गद्य) का लिखा जाना शुरू हो गया. हिन्दुस्तानी नस्र का आरम्भ अठारहवीं सदी के आखीर में अंग्रेजी राज के नौकर मुंशी सदासुख के क़लम से हुआ, जिन्होंने "भागवत

ہندستانی کے دوسرے نام (اردو) کا آرمبھ سترھویں صدی میں ہوا۔ جب دلّی کے سپاہی ایک دوسرے کے بعد دکھن پہنچے تو اُن کی زبان کو "اردو" نام دیا گیا۔

اردو شبد شہنشاہ اکبر کے سکوں میں بھی پایا جاتا ہے۔ وہاں اُس کے معنی "شاہی چھاؤنی" کے ہیں۔ یہ لفظ ترکی ہے۔ اور اس کے لفظی معنی "خیمہ" یا "چھاؤنی" کے ہیں۔ بابر اور دوسرے ترک بادشاہوں کے دربار خیموں میں لگا کرتے تھے، اس لئے اردو لفظ کے معنی بعد میں "دربار" ہو گئے۔ کچھ دنوں بعد یعنی سترھویں صدی میں درباری زبان بھی "اردو" کہلانے لگی اور جب اورنگ زیب کا لشکر دکھن پہنچا تو ان کی زبان "اردوئے معلّیٰ" کہلانے لگی۔

ادبی اردو کا آرمبھ اوّل اوّل دکھن ہی میں ہوا اور مُلّا وجہی (سن ۱۶۰۹ء) اور سلطان محمد قلی قطب شاہ (سن ۱۵۸۰ء — سن ۱۶۱۱ء) کی کتابوں سے دکھن میں ادبی اردو اور پکّی ہو گئی۔ دکھن کی مثال سے اثر لے کر دہلی والوں نے بھی اردو میں نظمیں لکھنی شروع کر دیں۔ یہ بات سترھویں صدی کے آخیر کی ہے۔ نئی ادبی اردو کا پہلا شاعر ولی تھا جو دکھن سے دلّی آیا تھا۔

انگریزی راج سے پہلے اردو اور ہندستانی دونوں بہت کر کے نظم کا روپ لئے ہوئے ہیں۔ انگریزی راج کے ساتھ ساتھ ان دونوں زبانوں میں نثر (گدیہ) کا لکھا جانا شروع ہو گیا۔ ہندستانی نثر کا آرمبھ اٹھارھویں صدی کے آخیر میں انگریزی راج کے نوکر منشی سداسکھ کے قلم سے ہوا، جنھوں نے "بھاگوت

पुराण" का हिन्दुस्तानी में तरजुमा किया. नई उर्दू नस्र की पहल अंग्रेज़ी सरकार के साये में उन्नीसवीं सदी के शुरू में हुई. मीर अम्मन की लिखी "बाग़ो बहार" और हफ़ीजुद्दीन अहमद की लिखी "ख़ुर्द अफ़रोज़" नई उर्दू नस्र की सबसे पहली किताबों में से हैं.

अगर हम भाषा शास्त्र की निगाह से देखें तो ज़बान की तीन क़िस्में हैं. एक टक्साली ज़बान यानी बोल चाल की, दूसरे लिखने की ज़बान, तीसरे अदबी ज़बान.

(१) टक्साली ज़बान की असलियत यह है कि यह अलग अलग बोलियों के बीच एक समता और मेल पैदा करती है. किसी टक्साली ज़बान के ज़िन्दा रहने के लिये इस बात का ध्यान रखना ज़रूरी है. टकसाली ज़बान को अपनी पड़ोसी बोलियों की तरफ़ से नफ़रत और कट्टरपन के झुकाव से बचना होगा. इन बोलियों से भी कभी कभी शब्द लेकर अपने शब्द भन्डार में शामिल करना होगा. सही मानों में वही ज़बान टक्साली है जिसमें ज़िन्दगी के सारे पहलुओं और पेचीदा ख़यालों को ज़ाहिर किया जा सके और जिसमें सब लोग अपने विचार ज़ाहिर कर सकें.

(२) लिखने की ज़बान वह है जो दुनिया के कारबार के लिये काम में आवे जैसे अशोक के शिला लेख, जो आम लोगों को आगाह करने के लिये आसान ज़बान में लिखे गये थे या आज कल के तिजारती लेख लिखने की ज़बान की ख़ास बात यह है कि यह अकसर टक्साली ज़बान के ज़्यादा पास रहती है.

(३) अदबी ज़बान जो अदब यानी साहित्य के काम आती है,

پوران" کا ہندستانی میں ترجمہ کیا۔ نئی اردو نثر کی پہل انگریزی سرکار کے سائے میں انیسویں صدی کے شروع میں ہوئی۔ میر امّن کی لکھی "باغ و بہار" اور حفیظ الدین احمد کی لکھی "خرد افروز" نئی اردو نثر کی سب سے پہلی کتابوں میں سے ہیں۔

اگر ہم بھاشا شاستر کی نگاہ سے دیکھیں تو زبان کی تین قسمیں ہیں۔ ایک ٹکسالی زبان یعنی بول چال کی، دوسرے لکھنے کی زبان، تیسرے ادبی زبان۔

(۱) ٹکسالی زبان کی اصلیت یہ ہے کہ یہ الگ الگ بولیوں کے بیچ ایک سمتا اور میل پیدا کرتی ہے۔ کسی ٹکسالی زبان کے زندہ رہنے کے لئے اس بات کا دھیان رکھنا ضروری ہے۔ ٹکسالی زبان کو اپنی پڑوسی بولیوں کی طرف سے نفرت اور کٹرپن کے جھکاؤ سے بچنا ہوگا۔ ان بولیوں سے بھی کبھی کبھی شبد لے کر اپنے شبد بھنڈار میں شامل کرنا ہوگا۔ صحیح معنوں میں وہی زبان ٹکسالی ہے جس میں زندگی کے سارے پہلوؤں اور پیچیدہ خیالوں کو ظاہر کیا جا سکے اور جس میں سب لوگ اپنے وچار ظاہر کر سکیں۔

(۲) لکھنے کی زبان وہ ہے جو دنیا کے کاروبار کے لئے کام میں آوے جیسے اشوک کے شلا لیکھ، جو عام لوگوں کو آگاہ کرنے کے لئے آسان زبان میں لکھے گئے تھے یا آج کل کے تجارتی لیکھ لکھنے کی زبان کی خاص بات یہ ہے کہ یہ اکثر ٹکسالی زبان کے زیادہ پاس رہتی ہے۔

(۳) ادبی زبان جو ادب یعنی ساہتیہ کے کام آتی ہے۔

यह अकसर टक्साली और लिखने की ज़बान से दूर रहती है. बहुत से मुल्कों में अदबी लेखकों की जात आम लोगों से अलग होती है. ऐसी अदबी ज़बानें टक्साली ज़बान की ख़ास बोलियाँ कहलाई जा सकती हैं. टक्साली ज़बान तो मुल्क की ख़ास जमाअतों में मेल जोल का साधन है पर अदबी ज़बान सिर्फ़ थोड़े से लोगों ही में बोली और समझी जाती है. अदबी ज़बान एक "दिमाग़ी मदारी" का खेल है और पंडितों और आलिमों के एक ख़ास गिरोह की बोली है.

टक्साली हिन्दुस्तानी वह ज़बान है जिसमें हिन्दुस्तानी की तमाम बोल चाल (अनपढ़ गँवार की बोली से लेकर आलिम और पंडित की बोली तक) शामिल है. भाषा शास्त्र की निगाह से टक्साली हिन्दुस्तानी का सबसे मारके का हिस्सा वह है जिसको ज़्यादा लोग जान सकें. वही सही मानों में ज़बान कहलायेगी. हिन्दुस्तान जैसे मुल्क में पढ़े लिखे लोगों की गिनती इतनी कम है कि वहाँ अदबी ज़बान बोली या उप बोली ही कहलायेगी. क्योंकि इसे सिर्फ़ पढ़े लिखे लोग ही समझते हैं. टक्साली हिन्दुस्तानी ज़बान हिन्दुस्तान की सब से बड़ी ज़बान है. भले ही यह ज़बान हिन्दुस्तान के कुछ सूबों ही में बोली और समझी जाती है, लेकिन अव्वल तो यह उन सूबों की भी ज़बान हो गई है, जिनकी मादरी ज़बानें अलग अलग हैं. जैसे पंजाब का बड़ा हिस्सा, सरहदी सूबा, राजपूताना के पंद्रह करोड़ से ज़्यादा लोग हिन्दुस्तान में ऐसे हैं जिनकी मादरी ज़बान हिन्दुस्तानी नहीं फिर भी वहां के बे पढ़े लोग हिन्दुस्तानी को आसानी से समझ सकते हैं और टूटी फूटी शक्ल

یہ اکثر ٹکسالی اور لکھنے کی زبان سے دور رہتی ہے۔ بہت سے ملکوں میں ادبی لیکھکوں کی جات عام لوگوں سے الگ ہوتی ہے۔ ایسی ادبی زبانیں ٹکسالی زبان کی خاص بولیاں کہلائی جا سکتی ہیں۔ ٹکسالی زبان تو ملک کی خاص جماعتوں میں میل جول کا سادھن ہے پر ادبی زبان صرف تھوڑے سے لوگوں ہی میں بولی اور سمجھی جاتی ہے۔ ادبی زبان ایک "دماغی مداری" کا کھیل ہے اور پنڈتوں اور عالموں کے ایک خاص گروہ کی بولی ہے۔

ٹکسالی ہندستانی وہ زبان ہے جس میں ہندستانی کی تمام بول چال (ان پڑھ گنوار کی بولی سے لے کر عالم اور پنڈت کی بولی تک) شامل ہے۔ بھاشا شاستر کی نگاہ سے ٹکسالی ہندستانی کا سب سے معرکے کا حصہ وہ ہے جس کو زیادہ لوگ جان سکیں۔ وہی صحیح معنوں میں زبان کہلائے گی۔ ہندستان جیسے ملک میں پڑھے لکھے لوگوں کی گنتی اتنی کم ہے، کہ یہاں ادبی زبان بولی یا اپ بولی ہی کہلائیں گی۔ کیوں کہ اسے صرف پڑھے لکھے لوگ ہی سمجھتے ہیں۔ ٹکسالی ہندستانی زبان ہندستان کی سب سے بڑی زبان ہے۔ بھلے ہی یہ زبان ہندستان کے کچھ صوبوں ہی میں بولی اور سمجھی جاتی ہے، لیکن اوّل تو یہ ان صوبوں کی بھی زبان ہو گئی ہے، جن کی مادری زبانیں الگ الگ ہیں۔ جیسے پنجاب کا بڑا حصہ، سرحدی صوبہ، راجپوتانہ کے پندرہ کروڑ سے زیادہ لوگ ہندستان میں ایسے ہیں جن کی مادری زبان ہندستانی نہیں پھر بھی وہاں کے بے پڑھے لوگ ہندستانی کو آسانی سے سمجھ سکتے ہیں اور ٹوٹی پھوٹی شکل

में बोल भी सकते हैं. इसलिये हिन्दुस्तान के लगभग चालीस करोड़ लोगों में से क़रीब पच्चीस करोड़ इन्सान हिन्दुस्तानी को बोल और समझ सकते हैं.

अदबी हिन्दुस्तानी और अदबी उर्दू में लफ़्ज़ों के बनाने का ढंग और फ़िक़रों के रूप देने का तरीक़ा जो कुछ है शब्दों का है. अदबी हिन्दुस्तानी में बहुत से शब्द संस्कृत के होते हैं.ऐसे ही उर्दू ज़बान में अक्सर फ़ारसी, अरबी शब्द अपने पुराने रूप में ही शामिल हैं. भाषा शास्त्रियों के लिये यह परेशानी की बात है. उनकी निगाह से अदबी हिन्दी और अदबी उर्दू का आज कल का रूप टकसाली हिन्दुस्तानी के क़ुदरती रूप के सामने बहुत बनावटी मालूम होता है. आज कल की अदबी हिन्दी नस्र संस्कृत शब्दों की भरमार से वैसी ही बनावटी और भोंडी हो गई है जैसी फ़ारसी अरबी से भरी हुई उर्दू. नतीजा यह हुआ कि यह दोनों बोलियाँ सिवाय कुछ बहुत पढ़े लिखे लोगों के किसी के समझ में नहीं आतीं. सच तो यह है कि इस तरह की हिन्दी और उर्दू में कहीं कहीं टकसाली हिन्दुस्तानी के सिर्फ़ खंडहर नज़र आते हैं. जैसे "मैं" "तू" "है" "करना" और "होना" लेकिन क्या यह सचमुच हिन्दुस्तानी ज़बान की बोलियाँ ही हैं ?

और क्या इन में से टकसाली हिन्दुस्तानी का रंग ढंग बिलकुल चला गया ? नीचे की मिसाल से मालूम हो जायगा कि अदबी हिन्दी और अदबी उर्दू को अगर हम टकसाली हिन्दुस्तानी से बिलकुल अलग समझें तो यह भी निरी ग़लती होगी. इनमें इधर से उधर तक टकसाली हिन्दुस्तानी समाई है, जिसकी मिसाल हम नीचे देते हैं—

میں بول بھی سکتے ہیں۔ اس لئے ہندستان کے لگ بھگ چالیس کروڑ لوگوں میں سے قریب پچیس کروڑ انسان ہندستانی کو بول اور سمجھ سکتے ہیں۔

ادبی ہندستانی اور ادبی اُردو میں لفظوں کے بنانے کا ڈھنگ اور فقروں کے روپ دینے کا طریقہ جو کچھ ہے شبدوں کا ہے۔ ادبی ہندستانی میں بہت سے شبد سنسکرت کے ہوتے ہیں۔ ایسے ہی اُردو زبان میں اکثر فارسی، عربی شبد اپنے پرانے روپ میں ہی شامل ہیں۔ بھاشا شاستریوں کے لئے یہ پریشانی کی بات ہے۔ ان کی نگاہ سے ادبی ہندی اور ادبی اردو کا آج کل کا روپ ٹکسالی ہندستانی کے قدرتی روپ کے سامنے بہت بناوٹی معلوم ہوتا ہے۔ آج کل کی ادبی ہندی نثر سنسکرت شبدوں کی بھرمار سے ویسی ہی بناوٹی اور بھونڈی ہو گئی ہے جیسی فارسی عربی سے بھری ہوئی اُردو۔ نتیجہ یہ ہوا کہ یہ دونوں بولیاں سوائے کچھ بہت پڑھے لکھے لوگوں کے کسی کے سمجھ میں نہیں آتیں۔ سچ تو یہ ہے کہ اس طرح کی ہندی اور اردو میں کہیں کہیں ٹکسالی ہندستانی کے صرف کھنڈھر نظر آتے ہیں۔ جیسے "میں" "تو" "ہے" "کرنا" اور "ہونا" لیکن کیا یہ سچ مچ ہندستانی زبان کی بولیاں ہی ہیں؟

اور کیا ان میں سے ٹکسالی ہندستانی کا رنگ ڈھنگ بالکل چلا گیا؟ نیچے کی مثال سے معلوم ہو جائے گا کہ ادبی ہندی اور ادبی اردو کو اگر ہم ٹکسالی ہندستانی سے بالکل الگ سمجھیں تو یہ بھی نری غلطی ہوگی۔ ان میں ادھر سے ادھر تک ٹکسالی ہندستانی سمائی ہے، جس کی مثال ہم نیچے دیتے ہیں —

टक्साली हिन्दुस्तानी (जिसको सब समझ सकें)........

उसकी घर वाली चल बसी है.

हिन्दी........................उसकी धर्मपत्नी का देहान्त हो गया है.

उर्दू.............................उसकी अहलिया का इन्तक़ाल हो गया है.

जिस हद तक हिन्दी या उर्दू में "उसकी घर वाली चल बसी है" जैसे फ़िक़रे शामिल हैं उस हद तक इन दोनों में टक्साली हिन्दुस्तानी का होना साफ़ ज़ाहिर है. इस निगाह से अदबी हिन्दी और उर्दू दोनों टक्साली हिन्दुस्तानी के बहुत पास हैं.

जैसा कि ऊपर की मिसाल "उसकी घर वाली चल बसी है" से ज़ाहिर होता है, टक्साली ज़बान का एक हिस्सा अदबी बोलियों में भी शामिल है. उर्दू और हिन्दी के इस टक्साली हिस्से को जिसे सब लोग समझ सकें खड़ी बोली कहते हैं. हो सकता है कभी खड़ी बोली का दायरा इतना बड़ा हो जाय कि वह ज़िन्दगी के तमाम पहलुओं को ज़ाहिर कर सके. तब हिन्दुस्तान की सब गुत्थियाँ सुलझ जायँगी.

चटर्जी ने अपनी किताब "हिन्द आर्याई व हिन्दी" में सफ़ा १९२ पर कुछ दिलचस्प शब्दों की मिसालें दी हैं जिनका सम्बंध तो तहज़ीब के साधनों से है पर जिनका विकास बेपढ़ों की बोली से है. जैसे—

खड़ी बोली	अंगरेज़ी या अदबी उर्दू
१—आगबोट	स्टीमर
२—हवा गाड़ी	मोटरकार

ٹکسالی ہندستانی (جس کو سب سمجھ سکیں) ....

اس کی گھر والی چل بسی ہے۔

ہندی .... اس کی دھرم پتنی کا دیہانت ہو گیا ہے۔

اردو .... اس کی اہلیہ کا انتقال ہو گیا ہے۔

جس حد تک ہندی یا اردو میں "اس کی گھر والی چل بسی ہے" جیسے فقرے شامل ہیں اس حد تک ان دونوں میں ٹکسالی ہندستانی کا ہونا صاف ظاہر ہے۔ اس نگاہ سے ادبی ہندی اور اردو دونوں ٹکسالی ہندستانی کے بہت پاس ہیں۔

جیسا کہ اوپر کی مثال "اس کی گھر والی چل بسی ہے" سے ظاہر ہوتا ہے، ٹکسالی زبان کا ایک حصہ ادبی بولیوں میں بھی شامل ہے۔ اردو اور ہندی کے اس ٹکسالی حصے کو جسے سب لوگ سمجھ سکیں کھڑی بولی کہتے ہیں۔ ہو سکتا ہے کبھی کھڑی بولی کا دائرہ اتنا بڑا ہو جائے کہ وہ زندگی کے تمام پہلوؤں کو ظاہر کر سکے۔ تب ہندستان کی سب گتھیاں سلجھ جائیں گی۔

چٹرجی نے اپنی کتاب "ہند آریائی و ہندی" میں صفحہ ۱۹۲ پر کچھ دلچسپ شبدوں کی مثالیں دی ہیں جن کا سمبندھ تو تہذیب کے سادھنوں سے ہے پر جن کا وکاس بے پڑھوں کی بولی سے ہے۔ جیسے —

کھڑی بولی	انگریزی یا ادبی اردو
۱ — آگ بوٹ	اسٹیمر
۲ — ہوا گاڑی	موٹرکار

३—जादू घर	अजायब घर
४—बिजली बत्ती	बिजली की रोशनी
५—हाथ घड़ी	रिस्ट वाच
६—गर्मी नाप	थर्मा मीटर

इस तरह की मिसालें, खड़ी बोली के ऐसे शब्द आगे के विकास के लिये बहुत अच्छे और बहुत उम्मीद दिलाने वाले हैं.

हिन्दुस्तानी के लिये यह मौत और ज़िन्दगी का सवाल है कि कहाँ तक इस तरह के शब्द अदबी ज़बान में शामिल किये जा सकते हैं. जितने ज़्यादा इस तरह के शब्द अदबी ज़बान में शामिल किये जायँगे अदबी ज़बान का टिकाऊपन उतना ही बढ़ता चला जायगा. पर अगर अदबी ज़बानों ने ऐसे शब्दों को बाज़ारी समझ कर बेपरवाही की तो इन अदबी ज़बानों की मौत क़रीब है. यह है भाषा शास्त्र यानी लस्सानियात का इस बारे में फ़ैसला.

भाषा शास्त्र की निगाह जमहूरियत यानी लोकशाही और इन्सानी भाई चारे की निगाह है. भाषा शास्त्रों की राय में कोई ज़बान टकसाली नहीं कहला सकती जब तक कि उसका गहरा और पास का सम्बन्ध पड़ोसी बोलियों के साथ न हो. इसलिये अदबी बोलियों का आम लोगों की बोलियों की तरफ़ घमंड और तअस्सुब बरतना हद दरजे की ना समझी है और अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ी मारना है. अगर अपने को अदबी और साहित्यिक मानने वाली बोलियाँ अपनी ही शक्लों पर अड़ी रहेंगी और दूसरी बोलियों को "बाज़ारी" समझकर नफ़रत और लापरवाही की निगाह से देखती रहेंगी तो उनका भी वही नतीजा होगा जो इस तरह की

۳— جادو گھر	عجائب گھر
۴— بجلی بتی	بجلی کی روشنی
۵— ہاتھ گھڑی	ریسٹ واچ
۶— گرمی ناپ	تھرما میٹر

اس طرح کی مثالیں، کھڑی بولی کے ایسے شبد آگے کے وکاس کے لئے بہت اچھے اور بہت امید دلانے والے ہیں۔

ہندستانی کے لئے یہ موت اور زندگی کا سوال ہے کہ کہاں تک اس طرح کے شبد ادبی زبان میں شامل کئے جا سکتے ہیں۔ جتنے زیادہ اس طرح کے شبد ادبی زبان میں شامل کئے جائیں گے ادبی زبان کا ٹکاؤپن اتنا ہی بڑھتا چلا جائے گا۔ پر اگر ادبی زبانوں نے ایسے شبدوں کو بازاری سمجھ کر بے پرواہی کی تو ان ادبی زبانوں کی موت قریب ہے۔ یہ ہے بھاشا شاستر یعنی لسانیات کا اس بارے میں فیصلہ۔

بھاشا شاستر کی نگاہ جمہوریت یعنی لوک شاہی اور انسانی بھائی چارے کی نگاہ ہے۔ بھاشا شاستروں کی رائے میں کوئی زبان ٹکسالی نہیں کہلا سکتی جب تک کہ اس کا گہرا اور پاس کا سمبندھ پڑوسی بولیوں کے ساتھ نہ ہو۔ اس لئے ادبی بولیوں کا عام لوگوں کی بولیوں کی طرف گھمنڈ اور تعصب برتنا حد درجے کی ناسمجھی ہے۔ اور اپنے پیروں پر آپ کلہاڑی مارنا ہے۔ اگر اپنے کو ادبی اور ساہتیک ماننے والی بولیاں اپنی ہی شکلوں پر اڑی رہیں گی اور دوسری بولیوں کو "بازاری" سمجھ کر نفرت اور لاپرواہی کی نگاہ سے دیکھتی رہیں گی تو ان کا بھی وہی نتیجہ ہوگا جو اس طرح کی

बनावटी ज़बानों का हुआ करता है. क्योंकि वान्द्री के शब्दों में—ज़बान उस दरिया की तरह है जो आलिमों और पंडितों की चट्टानों को चीरता हुआ विकसाव के बहाव के साथ आगे बढ़ता जाय……"

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री० रतनलाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और इनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और इनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

بناوٹی زبانوں کا ہوا کرتا ہے. کیوں کہ واندری کے شبدوں میں — زبان اس دریا کی طرح ہے جو عالموں اور پنڈتوں کی چٹانوں کو چیرتا ہوا وکساو کے بہاو کے ساتھ آگے بڑھتا جائے……"

مسلم دیش بھگت

(لیکھک - شری رتن لال بنسل)

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور ان کے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی ان کے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ان کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سن ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انھوں نے ہندستان اور ودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے۔ قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ. الہ آباد

"मैं तो यहाँ सिर्फ़ एक मेहमान हूँ !"

(भाई० गु० म०)

कुछ दिन हुए कि बम्बई में समुन्दर के किनारे जोहू के पास जिस आलीशान मकान में एक दोस्त के यहाँ मैं रहता हूँ वहाँ एक दोस्त अपनी मोटर में मुझे मिलने आये. अपनी मोटर से उतरते ही उन्होंने मकान की तरफ़ एक नज़र करके कहा—"आप का यह मकान तो बड़ा आलीशान है.

मैंने बड़ी नम्रता से हाथ जोड़कर जवाब दिया—"मगर मैं तो यहाँ सिर्फ़ एक मेहमान हूँ !"

फिर थोड़ी देर के बाद कुछ बात चीत करके वह तो अपने घर चले गये. मगर मेरे कानों में "मैं तो यहाँ सिर्फ़ एक मेहमनान हूँ !" यह शब्द बहुत देर तक गूँजते रहे.

एकाएक मुझे ईशोपनिषद् का पहला मंत्र—जो गांधी जी और गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर दोनों का बहुत प्यारा ध्यान मन्त्र था—याद आया जिसमें रिषि कहते हैं कि यह सारा जगत प्रभु से ढका हुआ है इस लिये इन्सान को चाहिये कि वह जो कुछ भी पाये उसका भोग वह त्याग भाव से करे. आसान शब्दों में इसका मतलब इतना ही होता है कि वह किसी भी चीज़ का मालिक नहीं है बल्कि सिर्फ़ "ट्रस्टी" यानी उसकी संभाल करने वाला है. या यों कहिये कि

"میں تو یہاں صرف ایک مہمان ہوں!"

(بھائی گ.م)

کچھ دن ہوئے کہ بمبئی میں سمندر کے کنارے جوہو کے پاس جس عالی شان مکان میں ایک دوست کے یہاں میں رہتا ہوں وہاں ایک دوست اپنی موٹر میں مجھے ملنے آئے۔ اپنی موٹر سے اُترتے ہی انھوں نے مکان کی طرف ایک نظر کر کے کہا—"آپ کا یہ مکان تو بڑا عالی شان ہے۔"

میں نے بڑی نمرتا سے ہاتھ جوڑ کر جواب دیا—"مگر میں تو یہاں صرف ایک مہمان ہوں!"

پھر تھوڑی دیر کے بعد کچھ بات چیت کر کے وہ تو اپنے گھر چلے گئے۔ مگر میرے کانوں میں "میں تو یہاں صرف ایک مہمان ہوں!" یہ شبد بہت دیر تک گونجتے رہے۔

ایکا ایک مجھے ایشوپنشد کا پہلا منتر—جو گاندھی جی اور گرودیو رویندر ناتھ ٹھاکر دونوں کا بہت پیارا دھیان منتر تھا—یاد آیا جس میں رشی کہتے ہیں کہ یہ سارا جگت پربھو سے ڈھکا ہوا ہے اس لئے انسان کو چاہئے کہ وہ جو کچھ بھی پائے اس کا بھوگ وہ تیاگ بھاؤ سے کرے۔ آسان شبدوں میں اس کا مطلب اتنا ہی ہوتا ہے کہ وہ کسی بھی چیز کا مالک نہیں ہے بلکہ صرف "ٹرسٹی" یعنی اس کی سنبھال کرنے والا ہے۔ یا یوں کہئے کہ

यह दुनिया एक सराय है जिसमें इन्सान सिर्फ कुछ दिनों के लिये एक मेहमान है अगरचे इस सराय में वह बार बार आता है.

अगर रोज़ाना जिन्दगी में हम सब ऐसा समझकर चलें तो जो हमारा सब से बड़ा दुश्मन है यानी लोभ उससे हम बच कर रह सकते हैं. इस दुश्मन ने क्या उधम मचा रक्खा है यह बात सब अच्छी तरह जानते हैं. पचीस बरस में दो बड़ी लड़ाइयाँ इसके कारन ही हुई हैं. हमारे देश का बँटवारा भी इसी के कारन हुआ है. बहुत से घरों में फूट फाट भी यही लोभ महाशय करवाते हैं. यही तो एक बड़ा कारन है कि जहाँ देखिये अशान्ति ही अशान्ति नज़र आती है.

कोई कहेगा यह सब कहना आसान है पर उस' पर अमल करना आसान नहीं. यह बात ठीक है मगर उस पर अमल करने के तरीक़े को ही तो धर्म कहते हैं और इसी लिये तो इन्सान धर्म के बिना नहीं जी सकता जैसा कि गांधी जी बार बार कहा करते थे— "मैं ख़ूराक और पानी के बिना जी सकता हूँ लेकिन प्रार्थना के बिना एक पल भी नहीं जी सकता."

यह सच है क्योंकि प्रार्थना आत्मा की ख़ूराक है. प्रार्थना कोई योग्य की करामत नहीं है, बल्कि जीवन की एक कीमिया है.

मगर प्रार्थना का मतलब क्या है ? प्रभु को याद करना और सब कुछ इस संसार में उसका है, इसको हमेशा याद रखना ताकि कभी भी अगर हो सके तो लोभ की वृत्ति प्रबल न हो उठे और वह उधम मचाना शुरू न करदे.

یہ دنیا ایک سرائے ہے جس میں انسان صرف کچھ دنوں کے لئے ایک مہمان ہے اگرچہ اس سرائے میں وہ بار بار آتا ہے۔

اگر روزانہ زندگی میں ہم سب ایسا سمجھ کر چلیں تو جو ہمارا سب سے بڑا دشمن ہے یعنی لوبھ اس سے ہم بچ کر رہ سکتے ہیں۔ اس دشمن نے کیا اودھم مچا رکھا ہے یہ بات سب اچھی طرح جانتے ہیں۔ پچیس برس میں دو بڑی لڑائیاں اس کے کارن ہی ہوئی ہیں۔ ہمارے دیش کا بٹوارہ بھی اسی کے کارن ہوا ہے۔ بہت سے گھروں میں پھوٹ پھاٹ بھی یہی لوبھ مہاشے کرواتے ہیں۔ یہی تو ایک بڑا کارن ہے کہ جہاں دیکھئے اشانتی ہی اشانتی نظر آتی ہے۔

کوئی کہے گا یہ سب کہنا آسان ہے پر اس پر عمل کرنا آسان نہیں۔ یہ بات ٹھیک ہے مگر اس پر عمل کرنے کے طریقے کو ہی تو دھرم کہتے ہیں اور اسی لئے تو انسان دھرم کے بنا نہیں جی سکتا جیسا کہ گاندھی جی بار بار کہا کرتے تھے— "میں خوراک اور پانی کے بنا جی سکتا ہوں لیکن پرارتھنا کے بنا ایک پل بھی نہیں جی سکتا۔"

یہ سچ ہے کیونکہ پرارتھنا آتما کی خوراک ہے۔ پرارتھنا کوئی یوگیہ کی کرامت نہیں ہے، بلکہ جیون کی ایک کیمیا ہے۔

مگر پرارتھنا کا مطلب کیا ہے؟ پربھو کو یاد کرنا اور سب کچھ اس سنسار میں اس کا ہے، اس کو ہمیشہ یاد رکھنا تاکہ کبھی بھی اگر ہو سکے تو لوبھ کی ورتی پربل نہ ہو اٹھے اور وہ اودھم مچانا شروع نہ کر دے۔

और यही बात ईशोपनिषद् का पहला मन्त्र हमें सिखलाता है.

सब कुछ तेरा तू है मेरा
मैं नाहीं और कुछ नहीं मेरा

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन'४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आख़ीर में, आजकल की मुसीबतों का हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'

४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

اور یہی بات "ایشوپنشد" کا پہلا منتر ہمیں سکھلاتا ہے۔

سب کچھ تیرا تو ہے میرا
میں ناہیں اور کچھ نہیں میرا

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک۔ پنڈت سندر لال

پنڈت سندر لال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ ۴۷ء میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا۔ اس چھوٹے سے بیان میں انھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں ان کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے۔ آخیر میں، آج کل کی مصیبتوں کو حل کرنے کے لئے کچھ سجھاؤ بھی پیش کئے ہیں۔ ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی۔

کتاب اردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے۔ قیمت چار آنے۔

مینیجر "نیا ہند"

۴۸، بائی کا باغ، الہ آباد

ख़ून का रिशता

[भाई रामजी दर]

ध्यान जमाये मैं एक लेख लिखने में मसरूफ़ था. एकाएक मेरी नजर एक मजदूर पर पड़ी जो मेरे पड़ोस ही में फड़ुआ चलाने में लीन था.

मैंने उसकी ओर देखा. उसने मेरी ओर—मगर हम दोनों ने बहुत देर तक आँखें चार न होने दीं.

कुछ देर के बाद मैंने उस आदमी को दोबारा ग़ौर से देखा—उसने भी मुझे देखा मगर कुछ ठिठक कर और कनखियों से.

उसका फड़ुआ बराबर अपना काम करता जा रहा था मगर मेरे औजार ने हड़ताल बोल दी.

मैंने अपने मन और हृदय को टटोला. मजमून, ख़यालात और जज़्बों से उन्हें भरा पाया—लिखने की बेहद इच्छा थी.

फिर क़लम क्यों नहीं चलता ?

मैंने क़लम को झटका, उसके निब की जांच की. क़लम में कोई दोष न था, न सियाही की कमी थी. तीसरी बार मैंने फिर मजदूर पर निगाह डाली. उसका फड़ुआ-रूपी क़लम मशीन की तरह धरती-रूपी काग़ज़ पर चल रहा था.

इस बार मजदूर ने मेरी ओर देखना मुनासिब न समझा—कम से कम देखा नहीं, वजह जो कुछ भी हो.

خون کا رشتہ

(بھائی رام جی در)

دھیان جمائے میں ایک لیکھ لکھنے میں مصروف تھا ایکایک میری نظر ایک مزدور پر پڑی جو میرے پڑوس ہی میں پھڑوا چلانے میں لین تھا۔

میں نے اس کی اُور دیکھا۔ اس نے میری اُور —مگر ہم دونوں نے بہت دیر تک آنکھیں چار نہ ہونے دیں۔

کچھ دیر کے بعد میں نے اس آدمی کو دوبارہ غور سے دیکھا۔ اس نے بھی مجھے دیکھا مگر کچھ ٹھٹک کر اور کنکھیوں سے۔

اس کا پھڑوا برابر اپنا کام کرتا جا رہا تھا مگر میرے اوزار نے ہڑتال بول دی۔

میں نے اپنے من اور ہردے کو ٹٹولا۔ مضمون، خیالات اور جذبوں سے انھیں بھرا پایا— لکھنے کی بے حد اچھا تھی۔

پھر قلم کیوں نہیں چلتا؟

میں نے قلم کو جھٹکا، اس کے نب کی جانچ کی۔ قلم میں کوئی دوش نہ تھا، نہ سیاہی کی کمی تھی۔ تیسری بار میں نے پھر مزدور پر نگاہ ڈالی۔ اس کا پھڑوا روپی قلم مشین کی طرح دھرتی روپی کاغذ پر چل رہا تھا۔

اس بار مزدور نے میری اُور دیکھنا مناسب نہ سمجھا— کم سے کم دیکھا نہیں، وجہ جو کچھ بھی ہو۔

क़लम चलाने की मैंने आख़िरी कोशिश की मगर नाकामयाब रहा !

मेरा क़लम मेरी रोज़ी का एक ख़ास साधन था—मुझे उस पर पूरा अधिकार था. एक मशहूर लेखक होने का मुझे फ़ख़् था. साहित्य-संसार में मेरा मान था—मेरे मज़मूनों की बड़ी मांग थी और आज—मेरा क़लम नहीं चलता ?

निराश हो मैं आँखें बन्द कर अपनी आराम कुरसी पर पड़ गया.

मुझे नींद आगई. नींद की दशा में मेरा क़लम जाग उठा और तेज़ी से उसने लिखा:—

'मैं आज तक आप का ग़ुलाम बन कर रहा क्योंकि मैं आप को एक ऊँची हसती समझता था. मुझे आशा थी कि एक ब्राहमन की सेवा करके मैं अपना और कुल मनुष्य-जाति का कल्यान कर सकूंगा मगर आज जब आप मज़मून लिखवा रहे थे और आप की नज़र उस ग़रीब अभागे मज़दूर पर पड़ी और उसकी आप पर तो मैं दोनों के दिल के सच्चे भावों को ताड़ गया. आप न तो उस दीन आदमी की आप-बीती को जानते हैं और न अपने दिल के छिपे हुए भेद को. क़लम का रिशता इन्सान के दिल और दिमाग़ से बड़ा गहरा होता है. उससे कुछ नहीं छिपा है.

आप के मन में उस आदमी की ओर और ख़ास कर उसके "नीच" काम के बारे में नफ़रत का अंकुर था—और उस अनपढ़

قلم چلانے کی میں نے آخری کوشش کی مگر ناکامیاب رہا !

میرا قلم میری روزی کا ایک خاص سادھن تھا۔ مجھے اس پر پورا ادھیکار تھا. ایک مشہور لیکھک ہونے کا مجھے فخر تھا. ساہتیہ سنسار میں میرا مان تھا۔ میرے مضمونوں کی بڑی مانگ تھی. اور آج — میرا قلم نہیں چلتا ؟

نراش ہو میں آنکھیں بند کر اپنی آرام کرسی پر پڑ گیا.

مجھے نیند آگئی. نیند کی دشا میں میرا قلم جاگ اٹھا اور تیزی سے اس نے لکھا:—

"میں آج تک آپ کا غلام بن کر رہا کیونکہ میں آپ کو ایک اونچی ہستی سمجھتا تھا. مجھے آشا تھی کہ ایک براہمن کی سیوا کر کے میں اپنا اور کل منشیہ جاتی کا کلیان کر سکوں گا مگر آج جب آپ مضمون لکھوا رہے تھے اور آپ کی نظر اس غریب ابھاگے مزدور پر پڑی اور اس کی آپ پر تو میں دونوں کے دل کے سچے بھاوں کو تاڑ گیا. آپ نہ تو اس دین آدمی کی آپ بیتی کو جانتے ہیں اور نہ اپنے دل کے چھپے ہوئے بھید کو. قلم کا رشتہ انسان کے دل اور دماغ سے بڑا گہرا ہوتا ہے. اس سے کچھ نہیں چھپا ہے.

آپ کے من میں اس آدمی کی اور اور خاص کر اس کے "نیچ" کام کے بارے میں نفرت کا انکر تھا — اور اس ان پڑھ

और दरिद्र आदमी के दिल में आप की तरफ़ से डर और ना-उम्मीदी थी.

मुझे यह देखकर न सिर्फ़ दुख हुआ बल्कि मैंने इसमें अपना अपमान समझा.

असल में क़लम और फड़ुए में ख़ून का रिशता है. हम किसी जन्म में सगे भाई बहन थे. ज़माने के फेर से अब हम दोनों के रूप और कार्य-क्षेत्र और हैसियत में फ़र्क़ पैदा हो गया है.

यही वजह है कि मेरे लिखने की इच्छा कुछ देर के लिये जाती रही थी—लाचार हो मैंने सत्याग्रह कर दिया था........"

اور دریدر آدمی کے دل میں آپ کی طرف سے ڈر اور نا امیدی تھی.

مجھے یہ دیکھ کر نہ صرف دُکھ ہوا بلکہ میں نے اس میں اپنا اپمان سمجھا.

اصل میں قلم اور پھڑوے میں خون کا رشتہ ہے. ہم کسی جنم میں سگے بھائی بہن تھے. زمانے کے پھیر سے اب ہم دونوں کے روپ، اور کاریہ چھیتر اور حیثیت میں فرق پیدا ہوگیا ہے.

یہی وجہ ہے کہ میرے لکھنے کی اچھا کچھ دیر کے لئے جاتی رہی تھی۔ لاچار ہو میں نے ستیاگرہ کر دیا تھا......"

हमारी राय

कहाँ बढ़ रहे हैं !

गांधी जी हमको आगे आगे लिये चले जारहे थे.वह जितने दिनों और जीते हम को आगे ही बढ़ाते रहते. उनके जीवन-दीप बुझने से हमारा आगे बढ़ना रुक गया. रुकना चाहिए नहीं था. गांधी जी खुद ही अपने जीते-जी हम को यह पाठ पढ़ा गये थे कि कोई साथ न दे तो अकेले ही बढ़े चलो.उन्होंने यह पाठ पढ़ाकर ही नहीं छोड़ दिया था, उस पर अपने जीते जी हम से अमल भी करा लिया था. 'व्यक्तिगत सत्याग्रह'का ही तो नाम अकेले बढ़े चलना है. यों तो यह'अकेले बढ़ने' का पाठ युगों से चला आता है पर किसी रिषि ने यह नहीं सिखाया था कि उस पर अमल किस तरह किया जाय. यह अमल गांधी जी ने ही .सिखाया. यह सिखाकर उन्होंने उस उसको अपना जैसा बना दिया जिस जिसको व्यक्तिगत सत्याग्रह का हुक्म दिया. प्रकृति में अपना जैसा बना डालने की बात नई नहीं है. क़ुदरत क्या क्या खेल नहीं खेलती.छोटी सी भवरी को किसने घर घर में यह करते नहीं देखा ? वह किसी भी कीड़े को ले जाकर अपने बनाये मिट्टी के घरोंदे में बन्द कर के अपना जैसा बना देती है. इसमें शक नहीं कि गांधी जी अपने जैसे अपने पीछे सैकड़ों नहीं तो दसियों जरूर छोड़ गये हैं पर इसे देश की बदक़िस्मती ही समझना चाहिए कि वह दसियों अपनी इस ताक़त को न ध्यान में ला रहे हैं और न उससे कुछ काम

ہماری رائے

کہاں بڑھ رہے ہیں

گاندھی جی ہم کو آگے آگے لئے چلے جا رہے تھے۔ وہ جتنے دنوں اور جیتے ہم کو آگے ہی بڑھاتے رہتے۔ ان کے جیون دیپ بجھنے سے ہمارا آگے بڑھنا رک گیا۔ رکنا چاہئیے نہیں تھا۔ گاندھی جی خود ہی اپنے جیتے جی ہم کو یہ پاٹھ پڑھا گئے تھے کہ کوئی ساتھ نہ دے تو اکیلے ہی بڑھے چلو۔ انھوں نے یہ پاٹھ پڑھا کر ہی نہیں چھوڑ دیا تھا، اس پر اپنے جیتے جی ہم سے عمل بھی کرا لیا تھا۔ 'ویکتی گت ستیاگرہ' کا ہی تو نام اکیلے بڑھے چلنا ہے۔ یوں تو یہ 'اکیلے بڑھنے' کا پاٹھ یگوں سے چلا آتا ہے پر کسی رشی نے یہ نہیں سکھایا تھا کہ اس پر عمل کس طرح کیا جائے۔ یہ عمل گاندھی جی نے ہی سکھایا۔ یہ سکھا کر انھوں نے اس اس کو اپنا جیسا بنا دیا جس جس کو ویکتی گت ستیاگرہ کا حکم دیا۔ پرکرتی میں اپنا جیسا بنا ڈالنے کی بات نئی نہیں ہے۔ قدرت کیا کیا کھیل نہیں کھیلتی۔ چھوٹی سی بھوری کو کس نے گھر گھر میں یہ کرتے نہیں دیکھا؟ وہ کسی بھی کیڑے کو لے جا کر اپنے بنائے مٹی کے گھروندے میں بند کر کے اپنا جیسا بنا دیتی ہے۔ اس میں شک نہیں کہ گاندھی جی اپنے جیسے اپنے پیچھے سیکڑوں نہیں تو دسیوں ضرور چھوڑ گئے ہیں پر اسے دیش کی بدقسمتی ہی سمجھنا چاہئیے کہ وہ دسیوں اپنی اس طاقت کو نہ دھیان میں لا رہے ہیں اور نہ اس سے کچھ کام

ते रहे हैं. इस नाज़ुक अवसर पर अगर उन दसियों ने कुछ काम न किया तो उनको तो हाथ मलकर पछताना ही पड़ेगा पर उनके साथ साथ देश को भी भारी नुक़सान उठाना पड़ेगा.

यह तो मानना ही पड़ेगा कि सबकी भलाई के लिए जो जो काम गांधी जी ने उठाये थे उनमें से कोई एक भी आगे नहीं बढ़ रहा सबके सब वहीं के वहीं रह गये हैं जहाँ वह तीस जनवरी सन् अड़तालीस को थे. किसी किसी काम में कहीं कहीं किसी किसी ने अपना बल लगाकर उस काम के पतलेपन को गाढ़ेपन में बदला तो है पर इससे क्या इतने बड़े देश का कुछ काम चल सकता है ? उस गाढ़ेपन को गाढ़ापन कहना भी बेकार है क्योंकि कहीं कहीं विरोधियों ने उनसे कई गुना काम को पतले पन से और भी पतलेपन में बदल डाला. सब हिसाब लगाकर औसत निकाला जाय तो बढ़ने की जगह हम कुछ पीछे ही हटे हैं और इतने पीछे हटे हैं कि हमारा पीछे हटना सब की नज़रों में साफ़ साफ़ आगया है तभी तो यहाँ तक नौबत आगई है कि गांधी टोपी सरों से उतार फेंकी जाती है और खादी धारियों को दुरदुराया जाता है. कहीं कहीं भूले भटके चपता भी दिया जाता है. यह ठीक है कि इस व्यवहार में उतना कडुवापन नहीं है जितना उस व्यवहार में था जो यहाँ की विदेशी सरकार गांधी टोपी और खादी के साथ करती थी. कुछ भी कडुवा पन न हो, ऐसी बात नहीं. यह ठीक है कि उस कडुवेपन में बहुत कुछ मिठास है पर यह भी ठीक है कि वह मिठास ज़्यादा दिन टिकने वाली नहीं, अगर हम यही रवैया अपनाये रहे जो अबतक अपनाये हुए हैं.

رہے ہیں. اس نازک اوسر پر اگر اُن دیسیوں نے کچھ کام نہ کیا تو اُن کو تو ہاتھ مل کر پچھتانا ہی پڑے گا پر اُن کے ساتھ ساتھ دیش کو بھی بھاری نقصان اٹھانا پڑے گا.

یہ تو ماننا ہی پڑے گا کہ سب کی بھلائی کے لئے جو جو کام گاندھی جی نے اٹھائے تھے ان میں سے کوئی ایک بھی آگے نہیں بڑھ رہا سب کے سب وہیں کے وہیں رہ گئے ہیں جہاں وہ تیس جنوری سنہ اڑتالیس کو تھے. کسی کسی کام میں کہیں کہیں کسی کسی نے اپنا بل لگا کر اس کام کے پتلے پن کو گاڑھے پن میں بدلا تو ہے پر اس سے کیا اتنے بڑے دیش کا کچھ کام چل سکتا ہے؟ اس گاڑھے پن کو گاڑھا پن کہنا بھی بیکار ہے کیونکہ کہیں کہیں ورودھیوں نے ان سے کئی گنا کام کو پتلے پن سے اور بھی پتلے پن میں بدل ڈالا. سب حساب لگا کر اوسط نکالا جائے تو بڑھنے کی جگہ ہم کچھ پیچھے ہی ہٹے ہیں اور اتنے پیچھے ہٹے ہیں کہ ہمارا پیچھے ہٹنا سب کی نظروں میں صاف صاف آ گیا ہے تبھی تو یہاں تک نوبت آ گئی ہے کہ گاندھی ٹوپی سروں سے اتار پھینکی جاتی ہے اور کھادی دھاریوں کو دُر دُرایا جاتا ہے. کہیں کہیں بھولے بھٹکے چپتا بھی دیا جاتا ہے. یہ ٹھیک ہے کہ اس دیوہار میں اتنا کڑواپن نہیں ہے جتنا اس دیوہار میں تھا جو یہاں کی ودیشی سرکار گاندھی ٹوپی اور کھادی کے ساتھ کرتی تھی. کچھ بھی کڑواپن نہ ہو، ایسی بات نہیں. یہ ٹھیک ہے کہ اس کڑوے پن میں بہت کچھ مٹھاس ہے پر یہ بھی ٹھیک ہے کہ وہ مٹھاس زیادہ دن ٹکنے والی نہیں، اگر ہم یہی رویہ اپنائے رہے جو اب تک

अन्तर्वर्ण-विवाह को ही लीजिये, इन विवाहों से मेरा मतलब प्रतिलोम विवाहो से है. प्रतिलोम-विवाह से मतलब है, शूद्र लड़कों का वैश्य, क्षत्रिय, ब्राह्मण लड़कियों से शादी करना और इसी तरह वैश्य लड़कों का क्षत्रिय, ब्राह्मण लड़कियों से शादी करना. मार्के के ऐसे विवाह इतने भी नहीं गिनाये जा सकते जिनकी गिनती से एक हाथ की उँगलियाँ पूरी हो जायँ. पंडित जवाहरलाल जी ने अपनी बहन की शादी वैश्य लड़के से की और राजा गोपालाचारी जी ने अपनी लड़की वैश्य लड़के को दी और बस ! बापू के चल बसने के बाद एक शादी और बड़े मार्के की हुई. मद्रास के ब्राह्मण प्रोफ़ेसर रामचन्द्रराव ने अपनी सोलह वर्ष की पढ़ी लिखी कन्या का विवाह एक मामूली पढ़े लिखे अन्त्यज लड़के से किया. इस काम को अन्तर्वर्ण विवाह पथ पर आगे बढ़ना कहा जा सकता है. पर यह काम यूँ आगे बढ़ना नहीं माना जा सकता कि इस विवाह की दाग़बेल बापू अपने हाथ खुद डाल गये थे. यह विवाह उन्हीं के हाथों होना था पर हुआ काका कालेलकर का हाज़िरी में एक अन्त्यज पुरोहित के ज़रिये. कुछ देर के लिए उसका काफ़ी चर्चा भी रही क्योंकि वर-वधू को आशीर्वाद दिया था पं० जवाहर लाल ने, नहीं, नहीं प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल ने. पर वह सब मामला तो बिजली की चमक बनकर रह गया. दो शब्दों में हम इस मामले में भी 'पीछे हटे'.

खादी जो लोकशाही की जान है उसमें तो हम बेहद पीछे हटे हैं. मैं यह कहकर कोई भावुकता में डूबी बात नहीं कह रहा कि हिन्दुस्तान भर से आदर पाने वाला हिन्दुस्तान का तिरंगा निशान भी अब खादी का होना ज़रूरी नहीं. खादी की ओर से तो बेपरवाही

انتروَرن وِواہ کو ہی لیجیے، ان وِواہوں سے میرا مطلب پرتی لوم وِواہوں سے ہے. پرتی لوم وِواہ سے مطلب ہے شودر لڑکوں کا ویشیہ، چھتری، برہمن لڑکیوں سے شادی کرنا اور اسی طرح ویشیہ لڑکوں کا چھتری، برہمن لڑکیوں سے شادی کرنا. معرکے کے ایسے وِواہ اتنے بھی نہیں گنائے جا سکتے جن کی گنتی سے ایک ہاتھ کی انگلیاں پوری ہو جائیں. پنڈت جواہر لال جی نے اپنی بہن کی شادی ویشیہ لڑکے سے کی اور راجہ گوپالاچاری جی نے اپنی لڑکی ویشیہ لڑکے کو دی اور بس! باپو کے چل بسنے کے بعد ایک شادی اور بڑے معرکے کی ہوئی. مدراس کے برہمن پروفیسر رام چندر راؤ نے اپنی سولہ ورش کی پڑھی لکھی کنیا کا وِواہ ایک معمولی پڑھے لکھے انتیج لڑکے سے کیا. اس کام کو انتروَرن وِواہ پتھ پر آگے بڑھنا کہا جا سکتا ہے. پر یہ کام یوں آگے بڑھنا نہیں مانا جا سکتا کہ اس وِواہ کی داغ بیل باپو اپنے ہاتھ خود ڈال گئے تھے. یہ وِواہ انہیں کے ہاتھوں ہونا تھا پر ہوا کاکا کالیلکر کی حاضری میں ایک انتیج پروہت کے ذریعے، کچھ دیر کے لیے اس کی کافی چرچا بھی رہی کیونکہ ور ودھو کو آشیرواد دیا تھا پنڈت جواہر لال نے، نہیں، نہیں پردھان منتری پنڈت جواہر لال نے. پر وہ سب معاملہ تو بجلی کی چمک بنکر رہ گیا. دو شبدوں میں ہم اس معاملے میں بھی 'پیچھے ہٹے'.

کھادی جو لوک شاہی کی جان ہے اس میں تو ہم بیحد پیچھے ہٹے ہیں. میں یہ کہکر کوئی بھاؤکتا میں ڈوبی بات نہیں کہہ رہا کہ ہندستان بھر سے آدر پانے والا ہندستان کا ترنگا نشان بھی اب کھادی کا ہونا ضروری نہیں. کھادی کی اور سے تو بے پرواہی

करना लोकशाही के सिद्धान्त को बेक़दरी से देखना है. जो भी हो खादी के मामले में भी हम आगे बढ़ने की जगह 'काफ़ी पीछे हटे'.

लोकशाही को दमदार बनाने के लिए खादी के बाद नम्बर आता है गाय का. (गाय में हम तो शामिल समझते हैं वह सब पशु जो हमें दूध दें और खेती में मदद करें) गाय की सेवा करने में गांधी जी के जीते जी हम जो बढ़े बढ़ लिये अब तो पीछे ही हट रहे हैं. इस पर लिखने से पहले हम एक बात समझ लें. मान लीजिये आज मैं एक गाय लाता हूँ. वह पांच सेर दूध देती है. अगर आठ दिन बाद वह तीन सेर दूध देने लगे तब मेरे बारे मे मेरे पड़ोसी यही राय बनायेंगे कि मैं गाय की ठीक सेवा नहीं करता. मेरा यह साबित करना बेसूद ही होगा कि मैंने गाय के लिए इतने मकान बनाए, इतना चारा खरीदा, इतनी खली खिलाई, इतनी नहलाई धुलाई और इतनी तरह तरह की टहल की. सचमुच इतनी सेवा करने पर यह हो ही नहीं सकता कि गाय पांच सेर दूध देने की जगह दस सेर न सही तो छः या सात सेर दूध न देने लगे. इस माप से जब हम गाय की सेवा को मापते हैं तो हमें साफ़ मलूम होता है कि इस मामले में भी आगे न बढ़कर 'पीछे ही हटे' हैं. बापू की आँख बंद होने के बाद से दूध का भाव चढ़ा है और काफ़ी चढ़ा है. दूध पीते बच्चों तक को दूध मिलना मुश्किल हो गया. गो-हत्या बन्द कराने में गो सेवा कितनी होती है, होती है या नहीं होती इस पर हम लेखनी उठाना नहीं चाहते. गोसेवा भले ही कुछ लोगों को बढ़ती हुई दिखाई देती हो, और शायद वह हमारे सामने आंकड़े पेश करके हमारा मुंह बन्द करदें पर हम तो गो-सेवा को दूध के रूप में देखकर ही

کرنا لوک شاہی کے سدھانت کو بے قدری سے دیکھنا ہے. جو بھی ہو کھادی کے معاملے میں بھی ہم آگے بڑھنے کی جگہ 'کافی پیچھے ہٹے'.

لوک شاہی کو دم دار بنانے کے لئے کھادی کے بعد نمبر آتا ہے گائے کا. (گائے میں ہم تو شامل سمجھتے ہیں وہ سب پشو جو ہمیں دودھ دیں اور کھیتی میں مدد کریں) گائے کی سیوا کرنے میں گاندھی جی کے جیتے جی ہم بڑھے بڑھ لئے اب تو پیچھے ہی ہٹ رہے ہیں. اس پر لکھنے سے پہلے ہم ایک بات سمجھ لیں. مان لیجئے آج میں ایک گائے لاتا ہوں. وہ پانچ سیر دودھ دیتی ہے. اگر آٹھ دن بعد وہ تین سیر دودھ دینے لگے تب میرے بارے میں میرے پڑوسی یہی رائے بنائیں گے کہ میں گائے کی ٹھیک سیوا نہیں کرتا. میرا یہ ثابت کرنا بے سود ہی ہوگا کہ میں نے گائے کے لئے اتنے مکان بنائے، اتنا چارا خریدا، اتنی کھلی کھلائی، اتنی نہلائی دھلائی اور اتنی طرح طرح کی ٹہل کی. سچ مچ اتنی سیوا کرنے پر یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ گائے پانچ سیر دودھ دینے کی جگہ دس سیر نہ سہی تو چھ یا سات سیر دودھ نہ دینے لگے. اس ماپ سے جب ہم گائے کی سیوا کو ماپتے ہیں تو ہمیں صاف معلوم ہوتا ہے کہ اس معاملے میں بھی آگے نہ بڑھ کر 'پیچھے ہی ہٹے' ہیں. باپو کی آنکھ بند ہونے کے بعد سے دودھ کا بھاؤ چڑھا ہے اور کافی چڑھا ہے. دودھ پیتے بچوں تک کو دودھ ملنا مشکل ہوگیا. گو ہتیا بند کرانے میں گو سیوا کتنی ہوتی ہے، ہوتی ہے یا نہیں ہوتی اس پر ہم لیکھنی اٹھانا نہیں چاہتے. گو سیوا بھلے ہی کچھ لوگوں کو بڑھتی ہوئی دکھائی دیتی ہو، اور شاید وہ ہمارے سامنے آنکڑے پیش کر کے ہمارا منہ بند کر دیں پر ہم تو گو سیوا کو دودھ کے روپ میں دیکھ کر ہی

अपने मन की तसल्ली मानेंगे. हम करें क्या ? हमारी छाती पर सवार था बनस्पति घी और अब सवार है जमा हुआ मूंगफली का तेल या बिनौले का तेल. सांप नाथ और नाग नाथ में हमें तो कोई भेद दीख नहीं पड़ता.

लोकशाही का मतलब है गाँवों का अपने आप में भरापूरा होना यानी अपनी मोटी मोटी जरूरतों को अपने बलबूते पूरी कर लेना. गांवों के धन्धों में जान डालना लोकशाही को इतना बलवान बना देना है कि वह विदेशी व्यापार के हमले से टक्कर ले सके और उस टकर को ऐसे झेल ले जैसे समुन्दर का चट्टानी किनारा समुन्दर की लहरों की टक्कर झेल लेता है. बापू को अन्तिम बिदाई देकर हम बापू के गीत गाने वालों ने इस रास्ते पर कितने क़दम उठाये हैं इसका भी पता नहीं चलता. मजदूर तक आटा पीसने में अपनी इज्जत गई समझता है. इसलिए कि अब उसको दो रुपये रोज मजदूरी मिलती है. जो पंजाब में कभी तहसीलदार की तनखाह थी. सुनते हैं कि वजीरों के चपरासियों को चार रुपये रोज तक मिलते हैं. अब उनकी औरतें हाथ चक्की से आटा पीसेंगी तो सहेलियों में उनकी नाक नहीं कट जायगी ? यह बात तो हमसे ज्यादा अच्छा उन चपरासियों को चार रुपया रोज देने वाले समझते हैं कि ऐसा करने से उनका रहन सहन नाक के लिए और दिखाने के लिए ही बढ़ा है क्योंकि चीजों के भाव इतने बढ़ चढ़ गये हैं कि उनका रहन सहन असलियत में बढ़ ही नहीं सकता. सन् १९०५ में आम तौर से दो नहीं तो पौने दो पैसे छटांक ही घी था. अब घी है आठ आने और दस आने छटांक. यानी घी का भाव सोलह गुना, बीस गुना और

اپنے من کی تسلی مانیں گے ۔ ہم کریں کیا؟ ہماری چھاتی پر سوار تھا بنسپتی گھی اور اب سوار ہے جما ہوا مونگ پھلی کا تیل یا بنولے کا تیل ۔ سانپ ناتھ اور ناگ ناتھ میں ہمیں تو کوئی بھید دکھ نہیں پڑتا ۔

لوک شاہی کا مطلب ہے گاؤں کا اپنے آپ میں بھراپورا ہونا یعنی اپنی موٹی موٹی ضرورتوں کو اپنے بل بوتے پوری کرلینا ۔ گاؤں کے دھندھوں میں جان ڈالنا لوک شاہی کو اتنا بلوان بنا دینا ہے کہ وہ ودیشی ویوپار کے حملے سے ٹکر لے سکے اور اس ٹکر کو ایسے جھیلے جیسے سمندر کا چٹانی کنارا سمندر کی لہروں کی ٹکر جھیل لیتا ہے ۔ باپو کو انتم وِدائی دے کر ہم باپو کے گیت گانے والوں نے اس راستے پر کتنے قدم اٹھائے ہیں اس کا بھی پتہ نہیں چلتا ۔ مزدور تک آٹا پیسنے میں اپنی عزت گئی سمجھتا ہے ۔ اس لئے کہ اب اس کو دو روپے روز مزدوری ملتی ہے ۔ جو پنجاب میں کبھی تحصیلدار کی تنخواہ تھی ۔ سنتے ہیں کہ وزیروں کے چپراسیوں کو چار روپے روز تک ملتے ہیں ۔ اب ان کی عورتیں ہاتھ چکی سے آٹا پیسیں گی تو سہیلیوں میں ان کی ناک نہیں کٹ جائے گی؟ یہ بات تو ہم سے زیادہ اچھا ان چپراسیوں کو چار روپیہ روز دینے والے سمجھتے ہیں کہ ایسا کرنے سے ان کا رہن سہن ناک کے لئے اور دکھانے کے لئے ہی بڑھا ہے کیونکہ چیزوں کے بھاؤ اتنے بڑھ چڑھ گئے ہیں کہ ان کا رہن سہن اصلیت میں بڑھ ہی نہیں سکتا ۔ سنہ ۱۹۰۵ میں عام طور سے دو نہیں تو پونے دو پیسے چھٹانک ہی گھی تھا ۔ اب گھی ہے آٹھ آنے اور دس آنے چھٹانک ۔ یعنی گھی کا بھاؤ سولہ گنا ، بیس گنا اور

पच्चीस गुना बढ़ गया. इस हिसाब से गवर्नर-जनरल के तीस रुपये पाने वाले चपरासी को चार सौ अस्सी, छः सौ और साढ़े सात सौ तनख्वाह मिले तब यह कहा जा सकता है कि उसका रहन सहन बढ़ा नहीं तो घटा भी नहीं. हाँ, उसे हजार रुपये मिलने लगें तो कुछ रहन-सहन बढ़ा माना जा सकता है. यह हिसाब की बात है कविता का अलंकार नहीं है. मतलब यह कि रहन सहन नाम का बढ़ाकर हमें काम का भी नहीं रखा गया. गांव के धन्धों पर आये दिन चोट पर चोट हो रही है. फिर इस ओर बढ़ने की डींग मारने की हिम्मत कौन कर सकता है? यह सड़क तो आगे से एक दम बन्द दिखाई देती है. यह गली सचमुच अन्धी गली बनी हुई है.

लोकशाही की पूरी स्वाधीनता छिपी हुई है बुनियादी तालीम में. बुनियादी तालीम के मानी हैं ऐसे मदरसे और शालाएँ खोलना जो आये दिन लोगों के सामने और सरकार के सामने हाथ पसारे खड़ी हुई दिखाई न दें. यह रास्ता तो बापू की जिन्दगी में ही बीहड़ जंगल में होकर गया था. बापू खुद बड़ी हिम्मत से कुल्हाड़ी चला चलाकर रास्ता बनाते थे और घोंघे की चाल चल रहे थे. पर उनमें तो इतना विश्वास था कि वह दिन रात कुल्हाड़ी चला कर भी थकन महसूस नहीं करते थे और कुछ न कुछ हर पखवाड़े, महीने न सही हर साल जरूर आगे बढ़ जाते थे. और अब? अब तो बनी बनाई सड़कों तक पर झाड़ियाँ खड़ी हो गई हैं और दस पन्द्रह बरस में पहले से कहीं घना जंगल खड़ा हो जायगा. पन्द्रह बरस तक कंधों पर लदी, सिर को हाथ से दबाये, छाती पर पांव लटकाये अंगरेजी जो न कर दिखाये वह थोड़ा. बुनियादी तालीम के लिए चाहिए, बुनियादी शब्दावली. बुनियादी शब्द बिखरे पड़े हैं गांव गांव में. अब किसको गरज पड़ी है जो उनको ढूंढने में अपना सर खपाये. बुनियादी तालीम के रास्ते का बेहद बुरा हाल है. उसमें बढ़ने की बात

پچیس گنا بڑھ گیا ہے۔ اس حساب سے گورنر جنرل کے تیس روپے پانے والے چپراسی کو چار سو اسی، چھ سو اور ساڑھے سات سو تنخواہ ملے تب یہ کہا جا سکتا ہے کہ اس کا رہن سہن بڑھا نہیں تو گھٹا بھی نہیں۔ ہاں، اسے ہزار روپے ملنے لگیں تو کچھ رہن سہن بڑھا مانا جا سکتا ہے۔ یہ حساب کی بات ہے کویتا کا النکار نہیں ہے۔ مطلب یہ کہ رہن سہن نام کا بڑھا کر ہمیں کام کا بھی نہیں رکھا گیا۔ گاؤں کے دھندھوں پر آئے دن چوٹ پر چوٹ ہو رہی ہے۔ پھر اس اور بڑھنے کی ڈینگ مارنے کی ہمت کون کر سکتا ہے؟ یہ سڑک تو آگے سے ایک دم بند دکھائی دیتی ہے۔ یہ گلی سچ مچ اندھی گلی بنی ہوئی ہے۔

لوک شاہی کی پوری سوادھینتا چھپی ہوئی ہے بنیادی تعلیم میں۔ بنیادی تعلیم کے معنی ہیں ایسے مدرسے اور شالائیں کھولنا جو آئے دن لوگوں کے سامنے اور سرکار کے سامنے ہاتھ پسارے کھڑی ہوئی دکھائی نہ دیں۔ یہ راستہ تو باپو کی زندگی میں ہی بیہڑ جنگل میں ہو کر گیا تھا۔ باپو خود بڑی ہمت سے کلہاڑی چلا چلا کر راستہ بناتے تھے اور گھونگھے کی چال چل رہے تھے۔ پر ان میں تو اتنا وشواس تھا کہ وہ دن رات کلہاڑی چلا کر بھی تھکن محسوس نہیں کرتے تھے اور کچھ نہ کچھ ہر پکھواڑے، مہینے نہ سہی ہر سال ضرور آگے بڑھ جاتے تھے۔ اور اب؟ اب تو بنی بنائی سڑکوں تک پر جھاڑیاں کھڑی ہو گئی ہیں اور دس پندرہ برس میں پہلے سے کہیں گھنا جنگل کھڑا ہو جائے گا۔ پندرہ برس تک کندھوں پر لدی، سر کو ہاتھ سے دبائے، چھاتی پر پاؤں لٹکائے انگریزی جو نہ کر دکھائے وہ تھوڑا۔ بنیادی تعلیم کے لئے چاہئے، بنیادی شبداولی۔ بنیادی شبد بکھرے پڑے ہیں گاؤں گاؤں میں۔ اب کس کو غرض پڑی ہے جو ان کو ڈھونڈنے میں اپنا سر کھپائے۔ بنیادی تعلیم کے راستے کا بیحد برا حال ہے۔ اس میں بڑھنے کی بات

तो एक ओर, हम बुरी तरह पीछे हट रहे हैं यानी धक्के खाकर पीछे हट रहे हैं.

सरकार के या सरकारी क्षेत्र को इस लेख में छेड़ना हम बिलकुल बेकार समझते हैं. जब ऊपर के क्षेत्रों में हम कुछ बढ़ लें तब और तभी हम इस योग्य होंगे कि इस राजनीतिक सरकार के साथ साथ अपनी एक नैतिक सरकार क़ायम कर सकें और राजनीतिक सरकार को न्याय की हद से बाहर क़दम न रखने दें.

नागपुर भगवान दीन

"क़दम क़दम बढ़ाये जा"

१४ सितम्बर को हिन्द की विधान सभा ने तय किया कि हिन्द यूनियन की राज भाषा हिन्दी और उसकी लिखावट देवनागरी रहेगी. लेकिन इस पर पूरा पूरा अमल पन्द्रह बरस तक न होगा. सब कारबार तो फ़िलहाल जैसा अंगरेज़ी में चलता है, वैसा ही चलता रहेगा. अख़बारों की ख़बरों से पता चलता है कि उस वक़्त विधान सभा के सदन में चारों ओर ख़ुशी और उत्साह की हवा फैल गई थी. विधान सभा के मेम्बरों को इस बात की ख़ुशी थी कि जो सवाल उनके लिये अखाड़ा बन गया था, उसमें वह आख़िर एक राय हो गये.

लेकिन इस फ़ैसले से मुझे ख़ुशी नहीं बल्कि दुख ही हुआ. वह इस लिये नहीं कि हिन्दुस्तानी को राज भाषा के तौर पर मंज़ूर नहीं किया गया, बल्कि इस लिये कि अपने राज में भी स्वदेशी भाषा में हम अपना कारबार नहीं चला सकेंगे. ज़बरदस्ती उसे विदेशी भाषा में ही चलाना होगा. अभी पन्द्रह साल है, शायद ज़्यादा भी हो जायँ. रह रह कर मन में यही सवाल उठता है कि क्या विधान सभा के मेम्बरों ने इस बारे में हिन्द की आम जनता की नुमाइन्दगी की? दिल कहता है—नहीं, बिलकुल नहीं! सवाल हल करना था एक और हुआ दूसरा. सवाल यह नहीं था कि राज कौन करे, अपने को

تو ایک اور، ہم بُری طرح پیچھے ہٹ رہے ہیں یعنی دھکّے کھا کر پیچھے ہٹ رہے ہیں۔

سرکار کے یا سرکاری چھیتر کو اس لیکھ میں چھیڑنا ہم بالکل بیکار سمجھتے ہیں۔ جب اوپر کے چھیتروں میں ہم کچھ بڑھ لیں تب اور تبھی ہم اِس یوگیہ ہوں گے کہ اس راج نیتک سرکار کے ساتھ ساتھ اپنی ایک نیتک سرکار قائم کر سکیں اور راج نیتک سرکار کو نیائے کی حد سے باہر قدم نہ رکھنے دیں۔

ناگپور بھگوان دین

"قدم قدم بڑھائے جا"

۱۴ ستمبر کو ہند کی ودھان سبھا نے طے کیا کہ ہند یونین کی راج بھاشا ہندی اور اُس کی لکھاوٹ دیوناگری رہے گی۔ لیکن اس پر پورا عمل پندرہ برس تک نہ ہوگا۔ سب کار بار تو فی الحال جیسا انگریزی میں چلتا ہے، ویسا ہی چلتا رہے گا۔ اخباروں کی خبروں سے پتہ چلتا ہے کہ اُس وقت ودھان سبھا کے سدن میں چاروں اور خوشی اور اُتساہ کی ہوا پھیل گئی تھی۔ ودھان سبھا کے ممبروں کو اس بات کی خوشی تھی کہ جو سوال اُنکے لئے اکھاڑا بن گیا تھا، اُس میں وہ آخر ایک رائے ہو گئے۔

لیکن اِس فیصلے سے مجھے خوشی نہیں بلکہ دُکھ ہی ہوا۔ وہ اِس لئے نہیں کہ ہندستانی کو راج بھاشا کے طور پر منظور نہیں کیا گیا۔ بلکہ اِس لئے کہ اپنے راج میں بھی سودیشی بھاشا میں ہم اپنا کار بار نہیں چلا سکیں گے۔ زبردستی اُسے ودیشی بھاشا میں ہی چلانا ہوگا۔ ابھی پندرہ سال ہے، شاید زیادہ بھی ہو جائیں۔ رہ رہ کر من میں یہی سوال اُٹھتا ہے کہ کیا ودھان سبھا کے ممبروں نے اِس بارے میں ہند کی عام جنتا کی نمائندگی کی؟ دِل کہتا ہے — نہیں، بالکل نہیں! سوال حل کرنا تھا ایک اور ہوا دوسرا۔ سوال یہ نہیں تھا کہ راج کون کرے؟ اپنے کو

पढ़ा लिखा मानने वाले उत्तर भारत के लोग या दक्खिन भारत के, बल्कि यह था कि जनता का राज जल्द से जल्द जनता की भाषा में हो या आज की तरह अंगरेजी में ? अफ़सोस है कि यह असल सवाल एक ओर रह गया.

इस फ़ैसले के बाद अब मेरे साथियों के खत आने लगे हैं. वह मेरी राय और सभा की नीति जानना चाहते हैं. सभा की बैठक इसी महीने में होगी और उसका फ़ैसला जनता को मालूम हो जायगा. अपनी राय बताने के पहले पूज्य गांधी जी की राय बतादूं. दो साल पहले नई दिल्ली से गांधी जी ने श्री पेरीन बहन कैप्टन (सेक्रेटरी, हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, बम्बई) को दो खत अंगरेजी में लिखे थे. उनका तरजुमा नीचे देता हूँ—

नई दिल्ली २२—७—'४७

"भगवान जाने हमारे भाग्य में क्या बदा है. पुराने तरीक़े बदलते हैं, नए उनकी जगह लेते हैं. कोई बात तय नहीं है. विधान सभा चाहे कुछ भी फ़ैसला करे, तुम्हारे और मेरे लिये दोनों लिखावटों के साथ हिन्दुस्तानी ही रहेगी. बापू का आशीर्वाद"

दूसरा खत तीन दिन बाद का है—

नई दिल्ली २५—७—'४७

"तुम्हारा खत मिला. हिन्दुस्तानी के बारे में मैंने जो कल कहा था वह तुम देखोगी. तुम को और मुझे इसके लिये सख्त मेहनत करनी चाहिये, चाहे मरना भी पड़े.हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये."

दो साल पहले बापू ने हिन्दुस्तानी के प्रेमियों और प्रचारकों को रास्ता दिखाया है. अगर मेरी राय पूछी जाय, तो मैं तो अपने साथियों से यही कह सकता हूँ कि बापू जी ने जो हुक्म दिया है, उससे अलग बात मैं सोच ही नहीं सकता, यानी हमें अपने मक़सद के लिये सख़्त मेहनत करनी चाहिए, चाहे मरना ही पड़े. हमें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये. मैं यही कहूँगा कि

پڑھا لکھا ماننے والے اُتر بھارت کے لوگ یا دکھن بھارت کے، بلکہ یہ تھا کہ جنتا کا راج جلد سے جلد جنتا کی بھاشا میں ہو یا آج کی طرح انگریزی میں ؟ افسوس ہے کہ یہ اصل سوال ایک اور رہ گیا۔

اس فیصلے کے بعد اب میرے ساتھیوں کے خط آنے لگے ہیں۔ وہ میری رائے اور سبھا کی نیتی جاننا چاہتے ہیں۔ سبھا کی بیٹھک اسی مہینے میں ہوگی اور اُسکا فیصلہ جنتا کو معلوم ہو جائے گا۔ اپنی رائے بتانے کے پہلے پوجیہ گاندھی جی کی رائے بتا دوں۔ دو سال پہلے دلی سے گاندھی جی نے شری پیرین بہن کیپٹن (سکریٹری، ہندستانی پرچار سبھا، بمبئی) کو دو خط انگریزی میں لکھے تھے۔ اُن کا ترجمہ نیچے دیتا ہوں —

نئی دلی ۲۲—۷—۴۷ء

"بھگوان جانے ہمارے بھاگیہ میں کیا بدا ہے۔ پُرانے طریقے بدلتے ہیں، نئے اُن کی جگہ لیتے ہیں۔ کوئی بات طے نہیں ہے۔ ودھان سبھا چاہے کچھ بھی فیصلہ کرے، تمہارے اور میرے لئے دونوں لکھاوٹوں کے ساتھ ہندستانی ہی رہے گی۔ باپو کا آشیرواد"

دوسرا خط تین دن بعد کا ہے —

نئی دلی ۲۵—۷—۴۷ء

"تمہارا خط ملا۔ ہندستانی کے بارے میں میں نے جو کل کہا تھا وہ تم دیکھو گی۔ تم کو اور مجھے اس کے لئے سخت محنت کرنی چاہیئے۔ چاہے مرنا بھی پڑے۔ ہمیں ہمت نہیں ہارنی چاہیئے۔"

دو سال پہلے باپو نے ہندستانی کے پریمیوں اور پرچارکوں کو راستہ دکھایا ہے۔ اگر میری رائے پوچھی جائے تو میں تو اپنے ساتھیوں سے یہی کہہ سکتا ہوں کہ باپو جی نے جو حکم دیا ہے، اس سے الگ بات میں سوچ ہی نہیں سکتا، یعنی ہمیں اپنے مقصد کے لئے سخت محنت کرنی چاہیئے، چاہے مرنا ہی پڑے۔ ہمیں ہمت نہیں ہارنی چاہیئے۔ میں یہی کہوں گا کہ

हिन्दुस्तानी के प्रचार में पक्के इरादे से आगे बढ़िये. क्योंकि मुझे पूरा भरोसा है कि जब कभी राजभाषा के तौर पर हिन्दी काम में लाई जायगी तो उसका रूप हिन्दुस्तानी ही होगा. और इसमें भी कोई शक नहीं कि अगर हिन्द में किसी ख़ास गिरोह का राज क़ायम नहीं करना है; बल्कि सब तरह के लोगों के और उनके रीत रिवाज, साहित्य और धर्म को समझ कर, अपनाकर हिन्दुस्तानी कलचर का निर्माण करना है, तो नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में हिन्दुस्तानी की जानकारी बड़ी मददगार साबित होगी. किसी भी देश या क़ौम के लिये साम्प्रदायिकता की निगाह हमेशा उसको मिटाने वाली रहेगी.

हमारी लड़ाई थी इस देश में स्वराज—राम राज—क़ायम करने के लिये. हमने दूसरों का राज तो हटाया, लेकिन स्वराज क़ायम करना बाक़ी है. अंगरेज़ों के राज को हटाया, अंगरेज़ी के राज का हटाना बाक़ी है. हमारी लड़ाई ख़त्म नहीं हुई, जाग्रत रह कर हमें तब तक लड़ते रहना है जब तक सर्वोदय राज क़ायम न हो.

कहा जाता है कि राज चलाने के लिये देशी भाषा में वह क्षमता (अहलियत) नहीं है जो अंगरेज़ी में है. अपने विद्वान नुमाइन्दों की यह बात हम अपनी आँख बन्द करके नहीं मान सकते. कल की ही बात है. बड़ौदा राज में राज का कारबार गुजराती भाषा और देवनागरी लिखावट में चलता था. दूरदर्शी स्वर्गवासी श्री सयाजी राव गायकवाड़ ने बरसों पहले यह काम शुरू किया था. आज जब वह बम्बई सूबे में मिलगया, तब वहाँ का कारबार अंगरेज़ी में शुरू हो गया है ! गाँव का मुखिया गायकवाड़ सरकार का हुक्म समझ सकता था, लेकिन वह बेचारा बम्बई सरकार का हुक्म नहीं समझ सकता. क्योंकि वह अंगरेज़ी नहीं जानता. अपने राज का यह अनुभव !

ہندستانی کے پرچار میں پکّے ارادے سے آگے بڑھئے. کیونکہ مجھے پورا بھروسہ ہے کہ جب کبھی راج بھاشا کے طور پر ہندی کام میں لائی جائے گی تو اُس کا روپ ہندستانی ہی ہوگا. اور اس میں بھی کوئی شک نہیں کہ اگر ہند میں کسی خاص گروہ کا راج قائم نہیں کرنا ہے بلکہ سب طرح کے لوگوں کے اور ان کے ریت رواج، ساہتیہ اور دھرم کو سمجھ کر، اپنا کر ہندستانی کلچر کا نرمان کرنا ہے، تو ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں ہندستانی کی جانکاری بڑی مددگار ثابت ہوگی. کسی بھی دیش یا قوم کے لئے سامپردائکتا کی نگاہ ہمیشہ اُس کو مٹانے والی رہے گی.

ہماری لڑائی تھی اس دیش میں سوراج — رام راج — قائم کرنے کے لئے. ہم نے دوسروں کا راج تو ہٹایا، لیکن سوراج قائم کرنا باقی ہے. انگریزوں کے راج کو ہٹایا، انگریزی کے راج کو ہٹانا باقی ہے. ہماری لڑائی ختم نہیں ہوئی، جاگرت رہ کر ہمیں تب تک لڑتے رہنا ہے جب تک سروودے راج قائم نہ ہو.

کہا جاتا ہے کہ راج چلانے کے لئے دیشی بھاشا میں وہ کشمتا (اہلیت) نہیں ہے جو انگریزی میں ہے. اپنے ودوان نمائندوں کی یہ بات ہم اپنی آنکھ بند کر کے نہیں مان سکتے. کل کی ہی بات ہے. بڑودا راج میں راج کا کاروبار گجراتی بھاشا اور دیوناگری لکھاوٹ میں چلتا تھا. دوردرشی سورگ واسی شری سیاجی راؤ گائکواڑ نے برسوں پہلے یہ کام شروع کیا تھا. آج جب وہ بمبئی صوبے میں مل گیا، تب وہاں کا کاروبار انگریزی میں شروع ہو گیا ہے! گاؤں کا مکھیا گائکواڑ سرکار کا حکم سمجھ سکتا تھا، لیکن وہ بیچارا بمبئی سرکار کا حکم نہیں سمجھ سکتا. کیونکہ وہ انگریزی نہیں جانتا. اپنے راج کا یہ انوبھو!

और उनतीस बरस पहले गांधी जी के क़ायम किये हुए गुजरात विद्यापीठ ने गुजराती के ज़रिये सारी पढ़ाई शुरू करके पढ़ाई के मैदान में इनक़लाब कर दिया है. यह दो बड़ी बातें हम—कम से कम गुजरात के लोग—कैसे भूल सकते हैं ? जो गुजरात में हो सका, वह हिन्द के दूसरे सूबों में भी हो सकता है. पूज्य गांधी जी ने दो साल पहले चेतावनी दी थी कि अगर अंगरेज़ी को तुरन्त नहीं हटाया, तो वह घर कर बैठेगी. [देखिये, हरिजन सेवक. २१—९—'४७ का 'सावधान' लेख]

फिर भी, अब जो हमारे ही लोग हमारा राजकाज चलाना चाहते हैं, उनका अपने देश की भाषाओं पर से विश्वास हट गया है. वह डरते हैं कि अंगरेज़ी में लिखने बोलने की इजाज़त न रही तो राज कैसे चलेगा ? वह भूल जाते हैं कि उनका अंगरेज़ी में लिखा हुआ क़ानून या हुक्म जनता को तो देशी भाषा में ही पहुँचाना पड़ता है, तब उसी भाषा में वह क्यों नहीं निकाला जा सकता.

ख़ैर, लेकिन उनके इस डर को मिटाने के लिये हिन्दुस्तानी को हमें इतना बढ़ाना और फैलाना चाहिये कि किसी भी विचार को हिन्दुस्तानी में ज़ाहिर करने में कहीं भी भाषा की कमज़ोरी न अड़े.

और मैं ज़ोर और आग्रह (इसरार) से कहूँगा कि हमारे देश के कारबार में से अंगरेज़ी हटाई जानी चाहिये. यह जितनी जल्दी हो उतना अच्छा. और अपने साथियों से एक बार फिर कहूँगा—"दोनों लिखावटों वाली हिन्दुस्तानी के साथ क़दम क़दम बढ़ाये जा."

विजया दशमी

वर्धा, १—१०—'४९ — अमृत लाल नानावटी

('हरिजन सेवक' से)

اور اُنتیس برس پہلے گاندھی جی کے قائم کیئے ہوئے گجرات ودیاپیٹھ نے گجراتی کے ذریعے ساری پڑھائی شروع کرکے پڑھائی کے میدان میں انقلاب کر دیا ہے۔ یہ دو بڑی باتیں ہم — کم سے کم گجرات کے لوگ — کیسے بھول سکتے ہیں؟ جو گجرات میں ہو سکا، وہ ہند کے دوسرے صوبوں میں بھی ہو سکتا ہے۔ پوجیہ گاندھی جی نے دو سال پہلے چتاونی دی تھی کہ اگر انگریزی کو ترنت نہیں ہٹایا تو وہ گھر کر بیٹھے گی۔ [دیکھئے، ہریجن سیوک۔ ۲۱—۹—۴۷ء کا 'ساودھان' لیکھ]

پھر بھی، اب جو ہمارے ہی لوگ ہمارا راج کاج چلانا چاہتے ہیں، اُن کا اپنے دیش کی بھاشاؤں پر سے وشواس ہٹ گیا ہے۔ وہ ڈرتے ہیں کہ انگریزی میں لکھنے بولنے کی اجازت نہ رہی تو راج کیسے چلے گا؟ وہ بھول جاتے ہیں کہ ان کا انگریزی میں لکھا ہوا قانون یا حکم جنتا کو تو دیشی بھاشا میں ہی پہنچانا پڑتا ہے، تب اُسی بھاشا میں وہ کیوں نہیں نکالا جا سکتا۔

خیر، لیکن اُن کے اس ڈر کو مٹانے کے لئے ہندستانی کو ہمیں اتنا بڑھانا اور پھیلانا چاہیئے کہ کسی بھی وچار کو ہندستانی میں ظاہر کرنے میں کہیں بھی بھاشا کی کمزوری نہ اڑے۔

اور میں زور اور آگرہ (اصرار) سے کہوں گا کہ ہمارے دیش کے کاروبار میں سے انگریزی ہٹائی جانی چاہیئے۔ یہ جتنی جلدی ہو اُتنا اچھا۔ اور اپنے ساتھیوں سے ایک بار پھر کہوں گا — "دونوں لکھاوٹوں والی ہندستانی کے ساتھ قدم قدم بڑھائے جا۔"

وجے دشمی

امرت لال ناناوتی

وردھا، ۱—۱۰—۴۹ء

('ہریجن سیوک' سے)

मक़सद

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापाना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों मे सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों मे आपस में मेल बढ़ाना.

—o—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द, गवर्निंग बाडी के और मेम्बर

डा० सय्यद महमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—o—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर

जहांगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

मेम्बरी के क़ायदों के लिये लिखिए.

सुन्दर लाल

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब [illegible]

مقصد

(۱) ایک ایسی ہندوستانی کلچر کا بڑھانا' پھیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب ہندستانی شامل ہوں -

(۲) ایکتا پھیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چھاپنا -

(۳) پڑھائی گھروں' کتاب گھروں' سبھاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دھرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑھانا -

——

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ -- سر تیج بہادر سپرو - وائس پریسیڈنٹ — ڈاکٹر بھگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق' گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ - ڈاکٹر بھگوان داس' سکریٹری پنڈت سندر لال' خزانچی — ڈاکٹر تارا چند -

گورننگ باڈی کے اور ممبر —

ڈاکٹر سید محمود' مسٹر عبدالمجید خواجہ' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوختہ' سری بی - جی - کھیر' مسٹر ایس- کے- رودرا' پنڈت بشمبر ناتھہ -

——

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر —

جہانگیر واڈیا بلڈنگ' ۵۱ مہاتما گاندھی روڈ' فورٹ بمبئی'

بمبئی شاخ کی مینیجنگ کمیٹی کے ممبر —

شری بی - جی - کھیر' شریمتی صوفیا واڈیا' پرنسپل اے - اے - اے فیضی' شری یم - یچ - پکواسا' شریمتی ہنسا مہتا' سید عبداللہ بریلوی' مسٹر کے - وی - شاہ -

ممبری کے قاعدے کے لئے لکھئے -

سندر لال

سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی'

۴۸ بائی کا باغ' الہآباد

نوٹ — سوسائٹی کے ممبروں کو " نیا ہند " اور سوسائٹی کی سب [illegible]

Registered No. A—210.

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.



नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ७   दिसम्बर '४९   नम्बर ६

جلد ۷   دسمبر ۴۹   نمبر ۶

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لیے پریم کی جھولی ۔

न जाने कौन ?

(हज़रत 'जोश' मलीहाबादी)

मन मन्दिर में आता है—ना जाने कौन ?

(१)

जब होती है भोर
गाते हैं जब मोर
तो मन में जूँ चोर
चुपके चुपके आता है—ना जाने कौन ?
मन मन्दिर में आता है—ना जाने कौन ?

نہ جانے کون؟

(حضرت 'جوش' ملیح آبادی)

من مندر میں آتا ہے — نا جانے کون ؟

(۱)

جب ہوتی ہے بھور
گاتے ہیں جب مور
تو من میں جوں چور
چپکے چپکے آتا ہے — نا جانے کون ؟
من مندر میں آتا ہے — نا جانے کون ؟

(२)

बढ़ते हैं जब साये
तारों को छिटकाये
तो हृदय में हाये
चुटकी सी ले जाता है—ना जाने कौन ?
मन मन्दिर में आता है—ना जाने कौन ?

(३)

जब होती है रात
गाती है बरसात
जी करता है बात
तब दिल में मुस्काता है—ना जाने कौन ?
मन मन्दिर में आता है—ना जाने कौन ?

---

(۲)

بڑھتے ہیں جب سائے
تاروں کو چھٹکائے
تو ہردے میں ہائے
چٹکی سی لے جاتا ہے — نا جانے کون ؟
مَن مندر میں آتا ہے — نا جانے کون ؟

(۳)

جب ہوتی ہے رات
گاتی ہے برسات
جی کرتا ہے بات
تب دِل میں مُسکاتا ہے — ناجانے کون ؟
مَن مندر میں آتا ہے — ناجانے کون ؟

हमारी कलचर

(तर्क तीर्थ पंडित लक्ष्मण शास्त्री जोशी)

[वर्धा में स्वामी सत्य-भक्त जी ने एक सत्य-समाज क़ायम किया है जिसके छटे सालाना जलसे पर सभापति की हैसियत से मशहूर महाराष्ट्र विद्वान् पंडित लक्ष्मण शास्त्री जोशी का भाषण पढ़ा गया था. इस भाषण में हमारी पुरानी संस्कृति मे इतनी गहरी जानकारी दिखाई देती है कि हम उसे आसान भाषा में नीचे दे रहे हैं—एडीटर]

स्वामी सत्यभक्त दर्शन शास्त्र के बड़े जानकार और कवि हैं. वह साधुओं की तरह रहते हैं. बड़े आज़ाद ख़याल हैं. सत्य-समाज का यह जलसा उन्हीं के विचारों के अनुसार हो रहा है. इस लिये मुझे यह उम्मीद रखना वाजिब मालूम होता है कि भारत के जटिल सवालों को हल करने में इस जलसे से जरूर बड़ी मदद मिल सकेगी. स्वामी सत्य-भक्त जी के विचारों का मैदान इन्सानियत है. अलग अलग राष्ट्र, अलग अलग समाज, अलग अलग देश और अलग अलग संस्कृति या कलचर की तंग दिवारों को तोड़ कर सब दुनिया को अपना समझने और सबकी बुनियादी एकता को दर्शाने वाले इस देश में इने-गिने ही हैं. उनमें स्वामी सत्यभक्त एक ख़ास महापुरुष हैं. दुनिया के बेग़रज़ और बेलाग महापुरुष आज बड़ी फ़िक्र

ہماری کلچر

(ترک تیرتھ پنڈت لکشمن شاستری جوشی)

[وردھا میں سوامی ستیہ بھکت جی نے ایک ستیہ سماج قائم کیا ہے جس کے چھٹے سالانہ جلسے پر سبھاپتی کی حیثیت سے مشہور مہاراشٹر وِدوان پنڈت لکشمن شاستری جوشی کا بھاشن پڑھا گیا تھا۔ اس بھاشن میں ہماری پرانی سنسکرتی سے اتنی گہری جانکاری دکھائی دیتی ہے کہ ہم اُسے آسان بھاشا میں نیچے دے رہے ہیں۔ ایڈیٹر]

سوامی ستیہ بھکت درشن شاستر کے بڑے جانکار اور کوی ہیں۔ وہ سادھوؤں کی طرح رہتے ہیں۔ بڑے آزاد خیال ہیں۔ ستیہ سماج کا یہ جلسہ انھیں کے وچاروں کے انوسار ہو رہا ہے۔ اس لئے مجھے یہ امید رکھنا واجب معلوم ہوتا ہے کہ بھارت کے جٹل سوالوں کو حل کرنے میں اس جلسے سے ضرور بڑی مدد مل سکے گی۔ سوامی ستیہ بھکت جی کے وچاروں کا میدان انسانیت ہے۔ الگ الگ راشٹر، الگ الگ سماج، الگ الگ دیش اور الگ الگ سنسکرتی یا کلچر کی تنگ دیواروں کو توڑ کر سب دنیا کو اپنا سمجھنے اور سب کی بنیادی ایکتا کو درشانے والے اس دیش میں اِنے گنے ہی ہیں۔ اُن میں سوامی ستیہ بھکت ایک خاص مہاپُرش ہیں۔ دنیا کے بے غرض اور بے لاگ مہاپُرش آج بڑی فکر

में पड़े हुए हैं.वह सोचते हैं कि अलग अलग संस्कृतियों की जो खींचा तानी इससमय चल रही है उसे दुनिया अगर पार न कर सकी तो वह समय नज़दीक आरहा है जब हमारी रही सही इन्सानियत फिर से हैवानियत में बदल जावेगी.सरमायेदारी,ग़रीब अमीर का झगड़ा,मज़हब से बग़ावत,क़ौमों का एक दूसरे पर हमला,फ़ासिज़म,आर्थिक बद-इन्तज़ामी, मुल्क मुल्क में बढ़ती हुई बेरोज़गारी वग़ैरह सब इन्सानी क़ौम की अन्दर की किसी बीमारी की बाहरी अलामतें हैं. आज इस बात की ज़रूरत है कि हम इन्सानी क़ौम की इस अन्दर की बीमारी के कारणों और उसकी असलियत को समझें. साइन्स ने बहुत तरक़्क़ी की है और तेज़ी से कर रही है लेकिन यह इकतरफ़ा तरक़्क़ी है, इन्सानी समाज की सब पहलुओं से तरक़्क़ी नहीं है. हमारी आध्यात्मिक संस्कृति यानी रूहानी कलचर बिगड़ी हुई है. दुनिया की अलग अलग क़ौमों का एक दूसरे से फ़ासला मिटता जा रहा है. देश और काल छोटे हो गये हैं. पर इस के साथ साथ ही अपनी अपनी कलचर के बारे में हमारा घमण्ड और एक दूसरे से दुश्मनी इतनी बढ़ गई है कि मालूम होता है सारी इन्सानी दुनिया के ख़त्म होने का दिन नज़दीक आ रहा है. इस समय हमें ऐसी फ़लसफ़ी निगाह की ज़रूरत है, ऐसे दर्शन-शास्त्रियों की आवश्यकता है जो हमारी मरती हुई इन्सानियत में फिर से जान डाल दें. ज़रूरत है एक ऐसे धर्म के फलने फूलने और फैलने की जो सारे इन्सानी समाज को अपनी गोद में ले सके. हमें किसी इतनी ज़बरदस्त ताक़त की ज़रूरत है जो अलग अलग धर्मों, अलग अलग राष्ट्रों, अलग

میں پڑے ہوئے ہیں۔ وہ سوچتے ہیں کہ الگ الگ سنسکرتیوں کی جو کھینچا تانی اس سمے چل رہی ہے اُسے دنیا اگر پار نہ کر سکی تو وہ سمے نزدیک آرہا ہے جب ہماری رہی سہی انسانیت پھر سے حیوانیت میں بدل جاوے گی۔ سرمایہ داری، غریب امیر کا جھگڑا، مذہب سے بغاوت، قوموں کا ایک دوسرے پر حملہ، فاسزم، آرتھک بدانتظامی، ملک ملک میں بڑھتی ہوئی بے روزگاری وغیرہ سب انسانی قوم کی اندر کی کسی بیماری کی باہری علامتیں ہیں۔ آج اس بات کی ضرورت ہے کہ ہم انسانی قوم کی اس اندر کی بیماری کے کارنوں اور اُس کی اصلیت کو سمجھیں۔ سائنس نے بہت ترقی کی ہے اور تیزی سے کر رہی ہے لیکن یہ ایک طرفہ ترقی ہے، انسانی سماج کی سب پہلوؤں سے ترقی نہیں ہے۔ ہماری آدھیاتمک سنسکرتی یعنی روحانی کلچر بگڑی ہوئی ہے۔ دنیا کی الگ الگ قوموں کا ایک دوسرے سے فاصلہ مٹتا جا رہا ہے۔ دیش اور کال چھوٹے ہو گئے ہیں۔ پر اس کے ساتھ ساتھ ہی اپنی اپنی کلچر کے بارے میں ہمارا گھمنڈ اور ایک دوسرے سے دشمنی اتنی بڑھ گئی ہے کہ معلوم ہوتا ہے ساری انسانی دنیا کے ختم ہونے کا دن نزدیک آرہا ہے۔ اس سمے ہمیں ایسی فلسفی نگاہ کی ضرورت ہے، ایسے درشن شاستریوں کی آوشیکتا ہے جو ہماری مرتی ہوئی انسانیت میں پھر سے جان ڈال دیں۔ ضرورت ہے ایک ایسے دھرم کے پھلنے پھولنے اور پھیلنے کی جو سارے انسانی سماج کو اپنی گود میں لے سکے۔ ہمیں کسی اتنی زبردست طاقت کی ضرورت ہے جو الگ الگ دھرموں، الگ الگ راشٹروں، الگ

अलग संस्कृतियों की घमण्ड भरी पुरानी जंजीरों को तोड़ कर फेंक दे.

हमारे देश में भी चारों तरफ़ भारती संस्कृति को फिर से जिन्दा करने की आवाज़ें उठ रही हैं. भारत की पुरानी संस्कृति अपने सब पहलुओं को लिए हुए उसी पुराने रूप में फिर से पैदा नहीं हो सकती. इतिहास का यह एक असूल है कि दुनिया की कोई बीती हुई हालत जैसी की तैसी फिर नहीं दोहराई जा सकती. देश, काल और दुनिया हमेशा बदलतीरहती है. आदमी संस्कृति या कलचर को तरक़्क़ी दे सकता है, बढ़ा सकता है, पर कोई ऐसी संस्कृति या कलचर दुनिया में नहीं हो सकती जिसका बाहरी रूप रंग न बदलता रहे.

अलग अलग मुल्कों की संस्कृतियां आज एक दूसरे से मिल रही हैं. यह संस्कृतियां अलग अलग हालतों में पैदा हुई हैं. उनका अलग अलग इतिहास और उनकी अलग अलग परम्पराएँ या रवायतें बन गई हैं इसी लिए उनमें इस तरह की बातें आ गई हैं जो एक दूसरे से मेल नहीं खातीं और जिनके कारण एक कलचर दूसरी कलचर से टकराती है. इसीसे झगड़ा होता है. दूसरी तरफ़ आज कल की नई साइन्स, नये बुद्धिवाद, तर्क शास्त्र (मंतिक़) और नई नई विद्याओं के सहारे दुनिया भर में एक नई मिली जुली संस्कृति जन्म ले रही है. यह विश्वव्यापी यानी आलमगीर संस्कृति अभी केवल बीज की शकल में है. पुरानी अलग अलग संस्कृतियों के ढांचे इस बीज को बढ़ने और उसमें अंकुर फूटने नहीं देते. कुछ इन्क़लाबी लोग कहते हैं कि पुरानी संस्कृतियों को मिटाने से ही इस नई संस्कृति का बीज फैल सकता है और रूप ले सकता है.

الگ سنسکرتیوں کی گھمنڈ بھری پرانی زنجیروں کو توڑ کر پھینک دے۔

ہمارے دیش میں بھی چاروں طرف بھارتی سنسکرتی کو پھر سے زندہ کرنے کی آوازیں اٹھ رہی ہیں. بھارت کی پرانی سنسکرتی اپنے سب پہلوؤں کو لئے ہوئے اسی پرانے روپ میں پھر سے پیدا نہیں ہو سکتی. اتہاس کا ایک اصول ہے کہ دنیا کی کوئی بیتی ہوئی حالت جیسی کی تیسی پھر نہیں دہرائی جا سکتی. دیش، کال اور دنیا ہمیشہ بدلتی رہتی ہے. آدمی سنسکرتی یا کلچر کو ترقی دے سکتا ہے، بڑھا سکتا ہے، پر کوئی ایسی سنسکرتی یا کلچر دنیا میں نہیں ہو سکتی جس کا باہری روپ رنگ نہ بدلتا رہے۔

الگ الگ ملکوں کی سنسکرتیاں آج ایک دوسرے سے مل رہی ہیں. یہ سنسکرتیاں الگ الگ حالتوں میں پیدا ہوئی ہیں. ان کا الگ الگ اتہاس اور ان کی الگ الگ پرمپرائیں یا روائتیں بن گئی ہیں اسی لئے ان میں اس طرح کی باتیں آ گئی ہیں جو ایک دوسرے سے میل نہیں کھاتیں اور جن کے کارن ایک کلچر دوسری کلچر سے ٹکراتی ہے. اسی سے جھگڑا ہوتا ہے. دوسری طرف آج کل کی نئی سائنس، نئے بدھی واد، ترک شاستر (منطق) اور نئی نئی ودیاؤں کے سہارے دنیا بھر میں ایک نئی ملی جلی سنسکرتی جنم لے رہی ہے. یہ وشو ویاپی یعنی عالمگیر سنسکرتی ابھی کیول بیج کی شکل میں ہے. پرانی الگ الگ سنسکرتیوں کے ڈھانچے اس بیج کو بڑھنے اور اس میں انکر پھوٹنے نہیں دیتے. کچھ انقلابی لوگ کہتے ہیں کہ پرانی سنسکرتیوں کو مٹانے سے ہی اس نئی سنسکرتی کا بیج پھیل سکتا ہے اور روپ لے سکتا ہے.

पर अलग अलग मुल्कों की संस्कृतियाँ इस तरह से मिटाई नहीं जा सकतीं. हमें कामयाबी तभी मिल सकती है जब हम इन अलग अलग संस्कृतियों को उस बड़ी मानव संस्कृति यानी इन्सानी कलचर के मुताबिक़ ढालने की कोशिश करें. जब तक इन अलग अलग संस्कृतियों में वह टिकाऊ पहलू मौजूद हैं जो सारे मानव समाज के भले के हैं तब तक इन संस्कृतियों को जड़ मूल से उखाड़ने की कोशिश कामयाब नहीं हो सकती. दुनिया भर की साइन्स एक है. सब धर्मों में नेकी और बदी के असूल एक से हैं. आर्ट, कला और सुन्दरता के बुनियादी असूल एक से हैं. इस लिये हमें आशा है कि अगर हम सब धर्मों का समन्वय कर सकें, सब को मिला सकें, तो हम इन सब संस्कृतियों को भी एक कर सकते हैं. अलग अलग मुल्कों की संस्कृतियाँ इस तरह के मेल जोल से विश्व संस्कृति यानी दुनिया भर की एक इन्सानी कलचर के आन्दोलन में हिस्सा ले सकती हैं और उसमें मिलकर एक सुन्दर संस्कृति-संगम बना सकती हैं.

भारत की कलचर को दुनिया की एक कलचर के आन्दोलन में हिस्सा लेने के लिए पहले अपने आप को भीतर से शुद्ध करना होगा. यह शुद्धि दो तरह से करने की जरूरत है. योरप की संस्कृति के हमारे देश में आने के बाद से हमारी संस्कृति के इतिहास की नये सिरे से खोज शुरू हुई. विद्वानों ने हमें बताया है कि इस देश की संस्कृति में आर्य, अनार्य, द्रविड़, आदिवासी, शक, हून, यूनानी जैसी बहुत सी अलग अलग जातियों के मिलने उनके टकराने और फिर मिलजुल कर एक हो जाने का पता चलता है.

इस देश की संस्कृति में वैदिक, द्राविड़, पुराणिक, बौद्ध, जैन

پر الگ الگ ملکوں کی سنسکرتیاں اس طرح سے مٹائی نہیں جا سکتیں. ہمیں کامیابی تبھی مل سکتی ہے جب ہم ان الگ الگ سنسکرتیوں کو اس بڑی مانو سنسکرتی یعنی انسانی کلچر کے مطابق ڈھالنے کی کوشش کریں. جب تک ان الگ الگ سنسکرتیوں میں وہ ٹکاؤ پہلو موجود ہیں جو سارے مانو سماج کے بھلے کے ہیں تب تک ان سنسکرتیوں کو جڑ مول سے اکھاڑنے کی کوشش کامیاب نہیں ہو سکتی. دنیا بھر کی سائنس ایک ہے. سب دھرموں میں نیکی اور بدی کے اصول ایک سے ہیں. آرٹ، کلا اور سندرتا کے بنیادی اصول ایک سے ہیں. اس لئے ہمیں آشا ہے کہ اگر ہم سب دھرموں کا سمنویہ کر سکیں، سب کو ملا سکیں، تو ہم ان سب سنسکرتیوں کو بھی ایک کر سکتے ہیں. الگ الگ ملکوں کی سنسکرتیاں اس طرح کے میل جول سے وشو سنسکرتی یعنی دنیا بھر کی ایک انسانی کلچر کے آندولن میں حصہ لے سکتی ہیں اور اس میں مل کر ایک سندر سنسکرتی سنگم بنا سکتی ہیں.

بھارت کی کلچر کو دنیا کی ایک کلچر کے آندولن میں حصہ لینے کے لئے پہلے اپنے آپ کو بھیتر سے شدھ کرنا ہوگا. یہ شدھی دو طرح سے کرنے کی ضرورت ہے. یورپ کی سنسکرتی کے ہمارے دیش میں آنے کے بعد سے ہماری سنسکرتی کے اتہاس کی نئے سرے سے کھوج شروع ہوئی. ودوانوں نے ہمیں بتایا ہے کہ اس دیش کی سنسکرتی میں آریہ، اناریہ، دراوڑ، آدی واسی، شک، ہون، یونانی جیسی بہت سی الگ الگ جاتیوں کے ملنے ان کے ٹکرانے اور پھر مل جل کر ایک ہو جانے کا پتہ چلتا ہے.

اس دیش کی سنسکرتی میں ویدک، دراوڑ، پرانک، بودھ، جین

वग़ैरा धर्मों और संस्कृतियों की अलग अलग और कहीं कहीं एक दुसरे को काटने वाली धारें शामिल हैं. इस तरह भारत की संस्कृति की आत्मा बहुत से टुकड़ों में बँटी हुई है. यह समझना कि इस देश की संस्कृति का दरख़्त शुरू से आज तक किसी एक ही धारा से खिंचता रहा है, बुद्धि के सामने नहीं ठहर सकता. संस्कृति के इन अलग अलग पहलुओं और रूपों के मेल को हम एक भारती संस्कृति भी नहीं कह सकते. हमारी गिरावट का यही एक बड़ा कारण है. हमें इस देश की संस्कृति और उसके सारे जीवन को नया रूप देना होगा. इस लिए अपनी संस्कृति के इतिहास को सामने रखते हुए हमें यह कोशिश करनी होगी कि हम भारत की संस्कृति की एक आत्मा को सामने ला सकें.

इस देश की कलचर की बुनियाद वेदों ने डाली. वेदों के ज़माने से लेकर आज तक जो बहुत से सुधार हुए हैं या नई धारें चली हैं उनकी जड़ में भी ऐसी ही चीज़ें मिलती हैं जिनकी शुरुआत हमें साफ़ वेदों से दिखलाई देती है. अरण्यक और दूसरे उपनिषदों ने सबसे पहले इस बात का उपदेश दिया कि यज्ञ में जो जानवरों की हिंसा होती थी उसे बन्द किया जाय. उपनिषदों में जो सबके अन्दर एक आत्मा दिखाई गई है उसी से अहिंसा का असूल पैदा हुआ है. उपनिषदों ने हमें बताया कि आदमी की ज़िन्दगी ही यज्ञ है. सच्चाई, ईमानदारी और किसी को कष्ट न देना यह ही इस यज्ञ की दक्षिणा है. इसी तरह के विचार छान्दोग्य उपनिषद में मिलते हैं. अरण्यक में लिखा है कि शुरू के ऋषि आग का हवन नहीं करते थे. प्रायश्चित्त यानी अपनी ग़लतियों पर पछतावा करना, तप और ब्रह्मचर्य का उपदेश वेदों में मिलता है. तृष्णा और पपणा

وغیرہ دھرموں اور سنسکرتیوں کی الگ الگ اور کہیں کہیں ایک دوسرے کو کاٹنے والی دھاریں شامل ہیں۔ اس طرح بھارت کی سنسکرتی کی آتما بہت سے ٹکڑوں میں بٹی ہوئی ہے۔ یہ سمجھنا کہ اس دیش کی سنسکرتی کا درخت شروع سے آج تک کسی ایک ہی دھارا سے سینچتا رہا ہے، بدھی کے سامنے نہیں ٹھہر سکتا۔ سنسکرتی کے ان الگ الگ پہلوؤں اور روپوں کے میل کو ہم ایک بھارتی سنسکرتی بھی نہیں کہہ سکتے۔ ہماری گراوٹ کا یہی ایک بڑا کارن ہے۔ ہمیں اس دیش کی سنسکرتی اور اس کے سارے جیون کو نیا روپ دینا ہوگا۔ اس لئے اپنی سنسکرتی کے اتہاس کو سامنے رکھتے ہوئے ہمیں یہ کوشش کرنی ہوگی کہ ہم بھارت کی سنسکرتی کی ایک آتما کو سامنے لا سکیں۔

اس دیش کی کلچر کی بنیاد ویدوں نے ڈالی۔ ویدوں کے زمانے سے لے کر آج تک جو بہت سے سدھار ہوئے ہیں یا نئی دھاریں چلی ہیں اُن کی جڑ میں بھی ایسی ہی چیزیں ملتی ہیں جن کی شروعات ہمیں صاف ویدوں سے دکھلائی دیتی ہے۔ ارنیک اور دوسرے اُپنشدوں نے سب سے پہلے اس بات کا اُپدیش دیا کہ یگیوں میں جو جانوروں کی ہنسا ہوتی تھی اُسے بند کیا جائے۔ اپنشدوں میں جو سب کے اندر ایک آتما دکھائی گئی ہے اسی سے اہنسا کا اصول پیدا ہوا ہے۔ اُپنشدوں نے ہمیں بتایا کہ آدمی کی زندگی ہی یگیہ ہے۔ سچائی، ایمانداری اور کسی کو کشٹ نہ دینا یہ ہی اس یگیہ کی دکشنا ہے۔ اسی طرح کے وچار چھاندوگیہ اُپنشد میں ملتے ہیں۔ ارنیک میں لکھا ہے کہ شروع کے رشی آگ کا ہون نہیں کرتے تھے۔ پرایشچت یعنی اپنی غلطیوں پر پچھتاوا کرنا، تپ اور برہمچریہ کا اُپدیش ویدوں میں ملتا ہے۔ ترشنا اور اشنا

का त्याग यानी अपनी इच्छाओं और ख्वाहिशों पर क़ाबू हासिल करना यही यति का धर्म बताया गया है. इसी से बढ़ते बढ़ते जैन धर्म और बौद्ध धर्म पैदा हुए. हमारे दर्शन शास्त्रों में सबसे पुराना सांख्य दर्शन है. सांख्य-दर्शन में जिन्हें पुरुष और प्रकृति कहा गया है उन्हीं को जैन धर्म में जीव और अजीव माना गया है. स्वामी सत्य भक्त जी ने केशी-गौतम संवाद से यह पूरी तरह साबित कर दिया है कि तीर्थंकर महावीर ने ही जैन धर्म को क़ायम किया था. भगवान बुद्ध ख़ुद कहते हैं कि मैं ब्रह्म निर्वाण को पहुँच जाऊँगा जिससे उपनिषदों के साथ उनके असूलों का नाता जुड़ जाता है. बौद्ध धर्म और जैन धर्म इन दोनों ने इस देश को दो ख़ास चीज़ों की तालीम दी है, एक अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू हासिल करना और दूसरे किसी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना. प्रकृतिवादी यानी वह लोग जो इस दुनिया की ज़िन्दगी को ही अच्छे से अच्छा बनाना चाहते हैं, कहते हैं कि जैन धर्म और बौद्ध धर्म ने इस देश के लोगों को निवृत्तिवाद का यानी दुनिया से हट जाने का उपदेश देकर उन्हें कम-हिम्मत, आलसी और कमज़ोर कर दिया. पर इतिहास इस बात को साबित नहीं करता. बौद्ध धर्म के क़ायम होने के बाद हिन्दुस्तान में वह बड़े बड़े साम्राज क़ायम हुए जिनका आज तक इतिहास में नाम है. हिन्दुस्तान में ही वह धर्म पैदा हुआ जिसने मारकाट, दूसरों पर ज़ुल्म और धोका धड़ी से बिलकुल अलग रह कर अहिंसा और सचाई के साथ अपना प्रचार किया और धर्म के मैदान में दुनिया के एक बड़े हिस्से को जीत कर दिखा दिया. बौद्ध धर्म के भिक्षुओं ने हिमालय के ऊँचे पहाड़ों को लांघ कर तुर्किस्तान,

کا تیاگ یعنی اپنی اچھاؤں اور خواہشوں پر قابو حاصل کرنا یہی یتی کا دھرم بتایا گیا ہے۔ اسی سے بڑھتے بڑھتے جین دھرم اور بودھ دھرم پیدا ہوئے۔ ہمارے درشن شاستروں میں سب سے پرانا سانکھیہ درشن ہے۔ سانکھیہ درشن میں جنھیں پرش اور پرکرتی کہا گیا ہے انھیں کو جین دھرم میں جیو اور اجیو مانا گیا ہے۔ سوامی ستیہ بھکت جی نے کیشی گوتم سنواد سے یہ پوری طرح ثابت کر دیا ہے کہ تیرتھنکر مہاویر نے ہی جین دھرم کو قائم کیا تھا۔ بھگوان بودھ خود کہتے ہیں کہ میں برہم نروان کو پہنچ جاؤں گا جس سے اپنشدوں کے ساتھ ان کے اصولوں کا ناتا جڑ جاتا ہے۔ بودھ دھرم اور جین دھرم ان دونوں نے اس دیش کو دو خاص چیزوں کی تعلیم دی ہے، ایک اپنی اندریوں پر قابو حاصل کرنا اور دوسرے کسی پرانی کو کشٹ نہ پہنچانا۔ پرکرتی وادی یعنی وہ لوگ جو اس دنیا کی زندگی کو ہی اچھے سے اچھا بنانا چاہتے ہیں، کہتے ہیں کہ جین دھرم اور بودھ دھرم نے اس دیش کے لوگوں کو نروتی واد کا یعنی دنیا سے ہٹ جانے کا اپدیش دے کر انھیں کم ہمت، آلسی اور کمزور کر دیا۔ پر اتہاس اس بات کو ثابت نہیں کرتا۔ بودھ دھرم کے قائم ہونے کے بعد ہندستان میں وہ بڑے بڑے سامراج قائم ہوئے جن کا آج تک اتہاس میں نام ہے۔ ہندستان میں ہی وہ دھرم پیدا ہوا جس نے مار کاٹ، دوسروں پر ظلم اور دھوکہ دھڑی سے بالکل الگ رہ کر اہنسا اور سچائی کے ساتھ اپنا پرچار کیا اور دھرم کے میدان میں دنیا کے ایک بڑے حصے کو جیت کر دکھا دیا۔ بودھ دھرم کے بھکشوؤں نے ہمالیہ کے اونچے پہاڑوں کو لانگھ کر ترکستان،

चीन, जापान और बीच एशिया में शान्ति के साथ अपने धर्म को फैलाया. दुनिया में कोई ऐसा दूसरा धर्म नहीं है जो इतनी शान्ति के साथ इस तरह दूर दूर तक फैला हो. जैन धर्म और बौद्ध धर्म ने हिन्दुस्तान में इमारतें बनाने की विद्या को बहुत बड़ी तरक़्क़ी दी. इस देश में जैन-मन्दिरों और बौद्ध-इमारतों के नमूने आज तक देश की शोभा को बढ़ा रहे हैं. जैन धर्म को मानने वाले बड़े बड़े सेठ और व्यापारी हज़ारों वर्षों से इस देश में व्यापार कर रहे हैं और खूब धन कमा रहे हैं. इससे जाहिर है कि अपनी इन्द्रियों पर क़ाबू और त्याग सिखाने वाला निवृत्ति-मार्ग और उस तरह के त्यागियों की पूजा दुनियादारी की निगाह से बड़े से बड़े साम्राजों, ख़ुशहाली और धन दौलत को जन्म दे सकती है.

पुरानों का सम्बन्ध वेदों से है. पुराना की कथाएं पहले पहल वैदिक यज्ञों में ही गाई जाती थीं. वेदों में लिखा है कि इतिहास और पुरान भी वेद हैं. रामायण, महाभारत और भागवत् में जिस तरह की कथाएँ, जिस तरह के आदमियों का बयान और जिस तरह के उपदेश मिलते हैं ठीक वैसे ही जैन और बौद्ध पुस्तकों में भी मिलते हैं. इन सब बातों से हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि हिन्दुस्तान की संस्कृति के अन्दर बाहर के नाम, रूप और रीति रिवाज अलग अलग होते हुए भी असली जान या जीवन शक्ति एक ही है. इस तरह से हम अपने देश की संस्कृति को देखें और समझें तो हम उसमें एक समन्वय या एक मिली जुली संस्कृति का दर्शन कर सकते हैं.

हम जिसे आज भारत की कलचर कहते हैं, वह ख़ास तौर पर

چین، جاپان اور بیچ ایشیا میں شانتی کے ساتھ اپنے دھرم کو پھیلایا۔ دنیا میں کوئی ایسا دوسرا دھرم نہیں ہے جو اتنی شانتی کے ساتھ اس طرح دور دور تک پھیلا ہو۔ جین دھرم اور بودھ دھرم نے ہندستان میں عمارتیں بنانے کی ودّیا کو بہت بڑی ترقی دی۔ اس دیش میں جین مندروں اور بودھ عمارتوں کے نمونے آج تک دیش کی شوبھا کو بڑھا رہے ہیں۔ جین دھرم کو ماننے والے بڑے بڑے سیٹھ اور ویاپاری ہزاروں ورشوں سے اس دیش میں ویاپار کر رہے ہیں اور خوب دھن کما رہے ہیں۔ اس سے ظاہر ہے کہ اپنی اندریوں پر قابو اور تیاگ سکھانے والا نورتی مارگ اور اس طرح کے تیاگیوں کی پوجا دنیا داری کی نگاہ سے بڑے سے بڑے سامراجوں خوشحالی اور دھن دولت کو جنم دے سکتی ہے۔

پورانوں کا سمبندھ ویدوں سے ہے۔ پرانوں کی کتھائیں پہلے پہلے ویدک یگیوں میں ہی گائی جاتی تھیں۔ ویدوں میں لکھا ہے کہ اتہاس اور پوران بھی وید ہیں۔ رامائن، مہابھارت اور بھاگوت میں جس طرح کی کتھائیں، جس طرح کے آدمیوں کا بیان اور جس طرح کے اپدیش ملتے ہیں ٹھیک ویسے ہی جین اور بودھ پستکوں میں بھی ملتے ہیں۔ ان سب باتوں سے ہم اس نتیجے پر پہنچتے ہیں کہ ہندستان کی سنسکرتی کے اندر باہر کے نام روپ اور ریتی رواج الگ الگ ہوتے ہوئے بھی اصلی جان یا جیون شکتی ایک ہی ہے۔ اس طرح سے ہم اپنے دیش کی سنسکرتی کو دیکھیں اور سمجھیں تو ہم اس میں ایک سمنوے یا ایک ملی جلی سنسکرتی کا درشن کر سکتے ہیں۔

ہم جسے آج بھارت کی کلچر کہتے ہیں، وہ خاص طور پر

हिन्दू कलचर ही है. बौद्ध जैन और सिक्ख भी हिन्दू ही हैं. बौद्ध, जैन और सिक्ख वेदों को नहीं मानते इसलिए कोई कोई लोग कहते हैं कि वह हिन्दू नहीं हैं. पर संस्कृति इस तरह नहीं देखी जाती. संस्कृति के एक होने के तीन सबूत हैं. एक यह कि उस संस्कृति में शुरू से आखिर तक एक लगातार सिलसिला दिखाई दे. दूसरा यह कि उस संस्कृति के अपने खास असूल हों और तीसरे यह कि वह संस्कृति उन खास असूलों या कुछ खास चीजों की हमेशा एक सी क़द्र करती रही हो. इस बात में दो राय नहीं हो सकतीं कि जैन और बौद्ध-धर्म उपनिषदों के ही असूलों से निकले हैं. अहिंसा, सचाई, ईमानदारी जैसे महाव्रत और कर्म के सिद्धान्त बौद्धों, जैनों और वेदों के मानने वालों तीनों में एक से हैं. आर्ट यानी कला के बारे में भी तीनों के एक से आदर्श हैं. जैन और बौद्ध वेदों के शब्दों को चाहे न मानें लेकिन वेदों के अच्छे अच्छे असूलों को दलीलों से मानते हैं. किसी भी पुस्तक के शब्दों को प्रमान मानने का जमाना अब जाता रहा. अब दुनिया हर चीज को इतिहास और बुद्धि की कसौटी पर कस कर ही मान सकती है.

सच यह है कि भारत की संस्कृति हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और पारसी इन सब को मिलाकर और इनके मेल से बन रही है. मुसलमान, ईसाई और पारसी अपना अपना खास रूप भी बनाये हुए हैं पर उनकी संस्कृति पर भारत की पुरानी संस्कृति या हिन्दू संस्कृति का बहुत गहरा असर पड़ा हुआ है. उनकी बोली, खान पान, साहित्य, आर्ट, कला, रहन सहन और धन्धों पर हिन्दू-संस्कृति का रंग इतना छाया हुआ है कि दूर से दीख पड़ता है.

ہندو کلچر ہی ہے۔ بودھ جین اور سکھ بھی ہندو ہی ہیں۔ بودھ جین اور سکھ ویدوں کو نہیں مانتے اس لئے کوئی کوئی لوگ کہتے ہیں کہ وہ ہندو نہیں ہیں۔ پر سنسکرتی اس طرح نہیں دیکھی جاتی سنسکرتی کے ایک ہونے کے تین ثبوت ہیں۔ ایک یہ کہ اس سنسکرتی میں شروع سے آخر تک ایک لگاتار سلسلہ دکھائی دے۔ دوسرا یہ کہ اس سنسکرتی کے اپنے خاص اصول ہوں اور تیسرے یہ کہ وہ سنسکرتی اُن خاص اصولوں یا کچھ خاص چیزوں کی ہمیشہ ایک سی قدر کرتی رہی ہو۔ اس بات میں دو رائیں نہیں ہو سکتیں کہ جین اور بودھ دھرم اپنشدوں کے ہی اصولوں سے نکلے ہیں۔ اہنسا، سچائی، ایمانداری جیسے مہابرت اور کرم کے سدھانت، بودھوں، جینوں اور ویدوں کے ماننے والوں تینوں میں ایک سے ہیں۔ آرٹ یعنی کلا کے بارے میں بھی تینوں کے ایک سے آدرش ہیں۔ جین اور بودھ ویدوں کے شبدوں کو چاہے نہ مانیں لیکن ویدوں کے اچھے اچھے اصولوں کو دلیلوں سے مانتے ہیں۔ کسی بھی پستک کے شبدوں کو پرمان ماننے کا زمانہ اب جاتا رہا۔ اب دنیا ہر چیز کو اتہاس اور بدھی کی کسوٹی پر کس کر ہی مان سکتی ہے۔

سچ یہ ہے کہ بھارت کی سنسکرتی ہندو، مسلمان، عیسائی اور پارسی ان سب کو ملا کر اور ان کے میل سے بن رہی ہے۔ مسلمان، عیسائی اور پارسی اپنا اپنا خاص روپ بھی بنائے ہوئے ہیں۔ پر اُن کی سنسکرتی پر بھارت کی پرانی سنسکرتی یا ہندو سنسکرتی کا بہت گہرا اثر پڑا ہوا ہے۔ اُن کی بولی، کھان پان، ساہتیہ، آرٹ، کلا، رہن سہن اور دھندوں پر ہندو سنسکرتی کا رنگ اتنا چھایا ہوا ہے کہ دور سے دیکھ پڑتا ہے۔

पंजाब, सिन्ध, बंगाल, तामिल, कन्नड़ और महाराष्ट्र में रहने वाले मुसलमान उन उन प्रान्तों की ही बोली बोलते हैं. उर्दू ज्यादातर केवल यु० पी० और सी० पी० में बोली जाती है. हिन्दुस्तान का मुसलमान कलचर की निगाह से आधा हिन्दू है. यह बात उर्दू भाषा की बनावट और उर्दू साहित्य में भी साफ़ दिखाई देती है. संस्कृति की क़ीमत भाषा में ही अधिक चमकती है. शुद्ध इसलामी संस्कृति अगर कोई है तो वह हिन्दुस्तान कभी नहीं आई. हो सकता है वह अरबों के पास रही हो. हिन्दुस्तान के किनारों को वह कई दफ़ा केवल छूकर चली गई. इसी तरह हमारी अपनी भाषाओं, साहित्य, दरबारी रीति रिवाज, पोशाक, ऐश-आराम के सामान वग़ैरह में मुसलिम संस्कृति की छाप जगह जगह और खूब देखने को मिलती है. मुसलिम संस्कृति की इस छाप को हम मिटाना चाहें तो हमें अपने बदन के टुकड़े काट कर फेंक देने पड़ेंगे, और उसके बाद जो जख़म रह जायेंगे उनका भर सकना या उन्हें अच्छा कर सकना नामुमकिन हो जायगा. मुसलिम संस्कृति के अच्छे पहलुओं को या उस संस्कृति की अच्छी चीज़ों को अपने जीवन से निकालने की कोशिश करना हमें अपनी मूरखता का सबूत देना होगा. दुनिया की हर संस्कृति कई अलग अलग संस्कृतियों के मिलने से ही बनती, फलती फूलती और बढ़ती है. ब्राह्म समाज और आर्य-समाज इस देश में योरपी सभ्यता के आने के बाद ही बने हैं. दुनिया की सभ्यता की जिन्दगी लेने देने से ही चलती है. मनुष्यता यानी इन्सानियत की जड़ हमारे दिमाग़ की बनावट में है. हमारे दिमाग़ के आगे का हिस्सा और उसके अन्दर का भेजा

پنجاب، سندھ، بنگال، تامل، کنڑ، اور مہاراشٹر میں رہنے والے مسلمان ان ان پرانتوں کی ہی بولی بولتے ہیں۔ اردو زیادہ تر کیول یو پی اور سی پی میں بولی جاتی ہے۔ ہندستان کا مسلمان کلچر کی نگاہ سے آدھا ہندو ہے۔ یہ بات اردو بھاشا کی بناوٹ اور اردو ساہتیہ میں بھی صاف دکھائی دیتی ہے۔ سنسکرتی کی قیمت بھاشا میں ہی ادھک چمکتی ہے۔ شدھ اسلامی سنسکرتی اگر کوئی ہے تو وہ ہندستان کبھی نہیں آئی۔ ہوسکتا ہے وہ عربوں کے پاس رہی ہو۔ ہندستان کے کناروں کو وہ کئی دفعہ کیول چھوکر چلی گئی۔ اسی طرح ہماری اپنی بھاشاؤں، ساہتیہ، درباری ریتی رواج، پوشاک، عیش آرام کے سامان وغیرہ میں مسلم سنسکرتی کی چھاپ جگہ جگہ اور خوب دیکھنے کو ملتی ہے۔ مسلم سنسکرتی کی اس چھاپ کو ہم مٹانا چاہیں تو ہمیں اپنے بدن کے ٹکڑے کاٹ کر پھینک دینے پڑیں گے اور اس کے بعد زخم رہ جائیں گے ان کا بھر سکنا یا انھیں اچھا کر سکنا ناممکن ہوجائے گا۔ مسلم سنسکرتی کے اچھے پہلوؤں کو یا اس سنسکرتی کی اچھی چیزوں کو اپنے جیون سے نکالنے کی کوشش کرنا ہمیں اپنی مورکھتا کا ثبوت دینا ہوگا۔ دنیا کی ہر سنسکرتی کئی الگ الگ سنسکرتیوں کے ملنے سے ہی بنتی، پھلتی پھولتی اور بڑھتی ہے۔ برہم سماج اور آریہ سماج اس دیش میں یورپی سبھیتا کے آنے کے بعد ہی بنے ہیں۔ دنیا کی سبھیتا کی زندگی لینے دینے سے ہی چلتی ہے منشیتا یعنی انسانیت کی جڑ ہمارے دماغ کی بناوٹ میں ہے۔ ہمارے دماغ کے آگے کا حصہ اور اس کے اندر کا بھیجا

और जानवरों से बहुत बड़ा होता है. दिमाग़ का यह हिस्सा ही आदमी को सब नई नई चीज़ें अपनाते रहने और पुरानी चीज़ों को छोड़ते रहने के क़ाबिल बनाता है. आदमी के दिमाग़ की बनावट से ही उसमें यह तीन गुण पैदा हुए हैं. एक पिछली चीज़ों और आदतों को छोड़ने की क़ाबलियत, दूसरे एक दूसरे की नक़ल करने की क़ाबलियत और तीसरे नई से नई चीज़ों और आदतों को अपनाने की क़ाबलियत. अलग अलग राष्ट्रों में यह बात कि वह पुराने और निकम्मे रीति रिवाजों और विचारों को छोड़ कर नये और काम के रीति रिवाज और विचार अपनाते रहें, उ के दिमाग़ों से ही पैदा होती है. आदमी में ही यह ताक़त है कि वह पुरानी और सड़ी-गली परम्पराओं के बन्धनों को तोड़कर आगे बढ़ सके. इसलिए आदमी ही संस्कृति या कलचर का भी काया-कल्प कर सकता है. उसी में यह शक्ति है कि अलग अलग संस्कृतियों को मिलाकर उनका संगम और गठजोड़ कर सके. बुद्धि की ऊँची से ऊँची चमक और शक्ति हर क़ौम में पैदा हो सकती है. यह चीज़ किसी एक देश या क़ौम की बपौती नहीं है. अपनी और पराई का भेद भाव आदमी की तरक़्क़ी करने की शक्ति को ख़तम कर देता है.

आज कल यह सवाल बार बार उठाया जाता है कि योरप की कलचर माद्दी यानी माटी वादी है और भारत की कलचर आध्यात्मिक यानी रूहानी है. कहा जाता है कि योरप के माटीवाद (मेटिरियलिज़्म) से इन्सानी समाज गिरता जा रहा है और भारत की संस्कृति आध्यात्म का संदेश देकर इन्सानियत को बचावेगी.

اور جانوروں سے بہت بڑا ہوتا ہے۔ دماغ کا یہ حصہ ہی آدمی کو سب نئی نئی چیزیں اپناتے رہنے اور پرانی چیزوں کو چھوڑتے رہنے کے قابل بناتا ہے۔ آدمی کے دماغ کی بناوٹ سے ہی اس میں یہ تین گن پیدا ہوئے ہیں۔ ایک پچھلی چیزوں اور عادتوں کو چھوڑنے کی قابلیت، دوسرے ایک دوسرے کی نقل کرنے کی قابلیت اور تیسرے نئی سے نئی چیزوں اور عادتوں کو اپنانے کی قابلیت۔ الگ الگ راشٹروں میں یہ بات کہ وہ پرانے اور نکمے ریتی رواجوں اور وچاروں کو چھوڑ کر نئے اور کام کے ریتی رواج اور وچار اپناتے رہیں انہی کے دماغوں سے ہی پیدا ہوتی ہے۔ آدمی میں ہی یہ طاقت ہے کہ وہ پرانی اور سڑی گلی پرمپراؤں کے بندھنوں کو توڑ کر آگے بڑھ سکے۔ اس لئے آدمی ہی سنسکرتی یا کلچر کا بھی کایا کلپ کر سکتا ہے۔ اسی میں یہ شکتی ہے کہ الگ الگ سنسکرتیوں کو ملا کر ان کا سنگم اور گٹھ جوڑ کر سکے۔ بدھی کی اونچی سے اونچی چمک اور شکتی ہر قوم میں پیدا ہو سکتی ہے۔ یہ چیز کسی ایک دیش یا قوم کی بپوتی نہیں ہے۔ اپنی اور پرائی کا بھید بھاؤ آدمی کی ترقی کرنے کی شکتی کو ختم کر دیتا ہے۔

آج کل یہ سوال بار بار اٹھایا جاتا ہے کہ یورپ کی کلچر مادی یعنی ماٹی وادی ہے اور بھارت کی کلچر آدھیاتمک یعنی روحانی ہے۔ کہا جاتا ہے کہ یورپ کے ماٹی واد (میٹیریلزم) سے انسانی سماج گرتا جا رہا ہے اور بھارت کی سنسکرتی ادھیاتم کا سندیش دے کر انسانیت کو بچاوے گی۔

यह भी कहा जाता है कि साइन्स के सहारे यह माटीवाद बढ़ता आ रहा है.

पर हमारा यह समझना कि इस देश की संस्कृति रूहानी है और योरपियों की साइन्स वाली संस्कृति माद्दी या माटी वादी है इसमें भी एक झूठा घमण्ड छिपा हुआ है. भारत वासियों का यह कहना उनकी इस गिरी हुई हालत में उनको शोभा नहीं देता. साइन्स न माटीवादी है और न आध्यात्मवादी है. माटीवाद या आध्यात्मवाद यह दोनों दर्शन शास्त्र (फलसफे) के दो सिद्धान्त हैं. साइन्स जिन बुनियादी असूलों को मानकर नई नई इजादें करती है उनका आत्मा, ईश्वर, परलोक, बन्धन या मोक्ष जैसी चीजों से कोई वास्ता नहीं. यह चीजें धर्म के मैदान की हैं या दर्शन शास्त्र यानी फलसफे के मैदान की. ईश्वर, ग़ैब, कर्म-फल का सिद्धान्त जैसी चीजें न साइन्स के मतलब की हैं और न साइन्स को उनसे कोई विरोध है. जो वैद्य या हकीम ईश्वर का भक्त होता है वह भी किसी बीमार को देखकर यह नहीं कहता कि इसका रोग ईश्वर के क्रोध की वजह से पैदा हुआ. उसे तो जड़-पदार्थों का नाम लेकर और उन्हीं को रोग का कारण बताकर इलाज करना पड़ता है. ऐसे ही कोई ईश्वर को मानने वाला आदमी जब उसकी बीवी के हाथ से रसोई बिगड़ जाती है तो यह समझ कर चुप नहीं बैठ जाता कि पिछले जन्म के कर्मों से रसोई बिगड़ी है. बड़े से बड़े ईश्वर के मानने वाले भी आये दिन के व्यापार में दुनियावी कारणों को ही जानना, समझना चाहते हैं. आयुर्वेद, गाने बजाने की कला, मकान बनाने की कला वग़ैरह हमारी पुरानी विद्याएँ हैं. इनका कोई

یہ بھی کہا جاتا ہے کہ سائنس کے سہارے یہ ماٹی واد بڑھتا جاتا ہے۔

پر ہمارا یہ سمجھنا کہ اس دیش کی سنسکرتی روحانی ہے اور یورپیوں کی سائنس والی سنسکرتی مادی یا ماٹی وادی ہے۔ اس میں بھی ایک جھوٹا گھمنڈ چھپا ہوا ہے۔ بھارت واسیوں کا یہ کہنا اُن کی اس گری ہوئی حالت میں اُن کو شوبھا نہیں دیتا۔ سائنس نہ ماٹی واد ہے اور نہ ادھیاتم واد ہے۔ ماٹی واد یا ادھیاتم واد یہ دونوں درشن شاستر (فلسفے) کے دو سدھانت ہیں۔ سائنس جن بنیادی اصولوں کو مان کر نئی نئی ایجادیں کرتی ہے اُن کا آتما، ایشور، پرلوک، بندھن یا موکش جیسی چیزوں سے کوئی واسطہ نہیں۔ یہ چیزیں دھرم کے میدان کی ہیں یا درشن شاستر یعنی فلسفے کے میدان کی۔ ایشور، غیب، کرم پھل کا سدھانت جیسی چیزیں نہ سائنس کے مطلب کی ہیں اور نہ سائنس کو اُن سے کوئی ورودھ ہے۔ جو وید یا حکیم ایشور کا بھگت ہوتا ہے وہ بھی کسی بیمار کو دیکھ کر یہ نہیں کہتا کہ اس کا روگ ایشور کے کرودھ کی وجہ سے پیدا ہوا۔ اُسے تو جڑ پدارتھوں کا نام لے کر اور انہیں کو روگ کا کارن بتا کر علاج کرنا پڑتا ہے۔ ایسے ہی کوئی ایشور کو ماننے والا آدمی جب اُس کی بیوی کے ہاتھ سے رسوئی بگڑ جاتی ہے تو یہ سمجھ کر چپ نہیں بیٹھ جاتا کہ پچھلے جنم کے کرموں سے رسوئی بگڑی ہے۔ بڑے سے بڑے ایشور کے ماننے والے بھی آئے دن کے ویاپار میں دنیاوی کارنوں کو ہی جاننا سمجھنا چاہتے ہیں۔ آیوروید، گانے بجانے کی کلا، مکان بنانے کی کلا وغیرہ ہماری پرانی ودیائیں ہیں۔ ان کا کوئی

जानकार अपने काम के बनने बिगड़ने को पिछले जन्म के कर्मों से या ईश्वर की मरजी से नहीं जोड़ता. इस तरह की बात करने वालों को, कृष्ण ईसा, मुहम्मद और शंकराचार्य भी पागलों के अस्पताल में भेज देते. साइन्स यानी विज्ञान का मतलब है दुनिया का ठीक-ठीक ज्ञान यानी ठीक-ठीक जानकारी. इसी जानकारी के सहारे आदमी की जिन्दगी चलती है. साइन्स का दिया बुझा दिया जाय तो आदमी ही मिट जाय. आदमी का साइन्स से नाता है इसीलिए वह भूमि पर चल फिर सकता है.

हिन्दुस्तान में और योरप के देशों में दोनों जगह पुराने ज़माने से साइन्स का बहाव बहता रहा है. हिन्दुस्तानियों की निस्बत योरप वाले साइन्स में ज्यादा बढ़ गये. हिन्दुस्तानी पीछे रह गये. इसकी वजह यह नहीं है कि हम भारत-वासियों में योरप वालों की निस्बत आध्यात्मिकता या रूहानियत ज्यादा है. अफरीक़ा के हब्शी लोग भी साइन्स में बहुत पिछड़े हुए हैं. इसका मतलब यह नहीं कि वह आध्यात्मिक चिन्तन में यानी रूहानी सोच विचार में मशग़ूल हैं. यह समझना भी ठीक मालूम नहीं होता कि जो लोग दर्शन शास्त्र या फ़लसफ़े की निगाह से माटीवादी यानी मैटिरियलिस्ट होते हैं, वह नेकी और सदाचार में हमेशा गिरे हुए होते हैं. ईश्वर को मानने वाले और परलोक का सहारा लेने वाले लोग अक्सर अपनी पाप करने की ताक़त को बढ़ाने के लिए ईश्वर की पूजा करते हैं. इसकी बहुत सी मिसालें हमारे सामने मौजूद हैं. योरप के देशों में धर्म और ईश्वर पर श्रद्धा आज भी काफ़ी है. साइन्स के बड़े बड़े जानकार भी ईश्वर भक्त मिलते हैं. साइन्स के प्रेम और

جان کار اپنے کام کے بننے بگڑنے کو پچھلے جنم کے کرموں سے یا ایشور کی مرضی سے نہیں جوڑتا۔ اس طرح کی بات کرنے والوں کو کرشن عیسیٰ محمد اور شنکراچاریہ بھی پاگلوں کے اسپتال میں بھیج دیتے۔ سائنس یعنی وگیان کا مطلب ہے دنیا کا ٹھیک ٹھیک گیان یعنی ٹھیک ٹھیک جان کاری۔ اسی جان کاری کے سہارے آدمی کی زندگی چلتی ہے۔ سائنس کا دیا بجھا دیا جائے تو آدمی ہی مٹ جائے۔ آدمی کا سائنس سے ناتا ہے اسی لئے وہ بھومی پر چل پھر سکتا ہے۔

ہندستان میں اور یورپ کے دیشوں میں دونوں جگہ پرانے زمانے سے سائنس کا بہاؤ بہتا رہا ہے۔ ہندستانیوں کی نسبت یورپ والے سائنس میں زیادہ بڑھ گئے۔ ہندستانی پیچھے رہ گئے۔ اس کی وجہ یہ نہیں ہے کہ ہم بھارت واسیوں میں یورپ والوں کی نسبت ادھیاتمکتا یا روحانیت زیادہ ہے۔ افریقہ کے حبشی لوگ بھی سائنس میں بہت پچھڑے ہوئے ہیں۔ اس کا مطلب یہ نہیں کہ وہ ادھیاتمک چنتن میں یعنی روحانی سوچ وچار میں مشغول ہیں۔ یہ سمجھنا بھی ٹھیک معلوم نہیں ہوتا کہ جو لوگ درشن شاستر یا فلسفے کی نگاہ سے ماٹی وادی یعنی میٹیریلسٹ ہوتے ہیں وہ نیکی اور سداچار میں ہمیشہ گرے ہوئے ہوتے ہیں۔ ایشور کو ماننے والے اور پرلوک کا سہارا لینے والے لوگ اکثر اپنی پاپ کرنے کی طاقت کو بڑھانے کے لئے ایشور کی پوجا کرتے ہیں۔ اس کی بہت سی مثالیں ہمارے سامنے موجود ہیں۔ یورپ کے دیشوں میں دھرم اور ایشور پر شردھا آج بھی کافی ہے۔ سائنس کے بڑے بڑے جان کار بھی ایشور بھکت ہوتے ہیں۔ سائنس کے پریم او

उसकी जानकारी से बहुत से लोगों में बुद्धूपन, जेहालत, अन्ध-विश्वास, जन्तर-मन्तर में यक़ीन, भूत-प्रेतों को मानना, गुरुडम वग़ैरह मिट जाते हैं. भारत भर में इन सब चीज़ों का गहरा अन्धकार छाया हुआ है. इसे हम आध्यात्मिकता या रूहानियत नहीं कह सकते. यह आत्मा की गिरावट है. आत्मा की गिरावट ही की यह सब पहचानें हैं.

हमारा देश हज़ार वर्ष से गिरता चला जा रहा है. इसकी वजह साइन्स का माटीवाद नहीं है. आपस की लड़ाइयाँ, कुटिल राजनीति, ढोंग, धर्म गुरुओं का धन-लोभ, जात-पाँत वग़ैरह की वजह से यह देश गिरता गया है. हम अशोक, विक्रमादित्य, समुद्रगुप्त, हर्ष वर्धन जैसी पुरानी सल्तनतों का सपना देखते हैं और भारत की संस्कृति के गुण गाते रहते हैं. आध्यात्मिकता यानी रूहानियत के लिए आदमी में तीन गुणों का होना ज़रूरी है. पहला यह कि उसमें विश्व की सच्चाई की खोज करने की इच्छा हो, दूसरा यह कि उसे अपनी इन्द्रियों पर और अपने नफ़्स पर क़ाबू हासिल हो, और तीसरा यह कि उसे दुनिया भर के सब इन्सानों से एकसा प्रेम हो. जहाँ यह तीनों बातें हैं वहीं आध्यात्मिकता हो सकती है. साइन्स इन तीन बातों के ख़िलाफ़ नहीं है. दुनिया के सब धर्मों में इन तीनों गुणों की तारीफ़ की गई है. भारत के सब धर्मों में भी इन्हें पूरी तरह माना गया है. इन तीन गुणों से हट जाने की वजह से ही हमारा देश नीचे गिरता गया है.

भारत की पुरानी संस्कृति में तीन ख़ास बातें हैं. सबसे पहली यह कि यह संस्कृति हज़ारों वर्ष से जिन्दा चली आती है. बहुत

اُس کی جان کاری سے بہت سے لوگوں میں بُدھوپن، جہالت، اندھ وشواس، جنتر منتر میں یقین، بھوت پریتوں کو ماننا، گروڈم وغیرہ مٹ جاتے ہیں۔ بھارت بھر میں ان سب چیزوں کا گہرا اندھ کار چھایا ہوا ہے۔ اسے ہم آدھیا تمکتا یا روحانیت نہیں کہہ سکتے۔ یہ آتما کی گراوٹ ہے۔ آتما کی گراوٹ ہی کی یہ سب پہچانیں ہیں۔

ہمارا دیش ہزار ورش سے گرتا چلا جا رہا ہے۔ اس کی وجہ سائنس کا مادی واد نہیں ہے۔ آپس کی لڑائیاں، کٹل راج نیتی، ڈھونگ، دھرم گروؤں کا دھن لوبھ، ذات پات وغیرہ کی وجہ سے یہ دیش گرتا گیا ہے۔ ہم اشوک، وکرمادتیہ، سمدرگپت، ہرش وردھن جیسی پرانی سلطنتوں کا سپنا دیکھتے ہیں اور بھارت کی سنسکرتی کے گن گاتے رہتے ہیں۔ آدھیا تمکتا یعنی روحانیت کے لئے آدمی میں تین گنوں کا ہونا ضروری ہے۔ پہلا یہ کہ اس میں وشو کی سچائی کی کھوج کرنے کی اچھا ہو، دوسرا یہ کہ اسے اپنی اندریوں پر اور اپنے نفس پر قابو حاصل ہو، اور تیسرا یہ کہ اسے دنیا بھر کے سب انسانوں سے ایک سا پریم ہو۔ جہاں یہ تینوں باتیں ہیں وہاں آدھیا تمکتا پیدا ہو سکتی ہے۔ سائنس ان تین باتوں کے خلاف نہیں ہے۔ دنیا کے سب دھرموں میں ان تینوں گنوں کی تعریف کی گئی ہے۔ بھارت کے سب دھرموں میں بھی انہیں پوری طرح مانا گیا ہے۔ ان تین گنوں سے ہٹ جانے کی وجہ سے ہی ہمارا دیش نیچے گرتا گیا ہے۔

بھارت کی پرانی سنسکرتی میں تین خاص باتیں ہیں۔ سب سے پہلی یہ کہ یہ سنسکرتی ہزاروں ورشوں سے زندہ چلی آتی ہے۔ بہت

दिनों तक जीना हमेशा अच्छी बात नहीं होती. पर हो सकता है कि किसी अच्छे गुण की वजह से कोई आदमी या कोई समाज देर तक जिन्दा रहे. मिस्र, सुमेर, बाबुल, यूनान, रोम वग़ैरह की पुरानी संस्कृतियाँ मिट चुकी हैं. उसी जमाने की इस देश की संस्कृति आज तक जिन्दा है. उन पुरानी संस्कृतियों का महल जिस तरह के समाजी ढाँचे पर खड़ा हुआ था वह ढाँचा जब टूट गया तो उनके महल भी गिर गये. उस समाजी ढाँचे की बुनियाद गुलामी के रिवाज पर थी. पुरोहित, सरदार और राजा लोग गुलामों के हाथों से अपने ऐश और आराम की चीजें बनवाते थे. ऊँचे खानदान वालों के जो लोग मरते थे उनके बड़े-बड़े मक़बरे और आलीशान यादगारें बनाने में गुलामों की मेहनत खर्च होती थी. आदमी की सबसे पहली जरूरतें खाना, कपड़ा, घर वग़ैरह की तरफ़ से बेपरवाही की जाती थी. पर इनके बिना समाज नहीं चल सकता. नतीजा यह हुआ कि उन संस्कृतियों के वह बड़े बड़े मकान ढह गये. इसके खिलाफ़ पुराने भारत में समाज की बुनियाद गुलामी पर नहीं थी. शूद्र थे. पर शूद्र का मतलब दास या गुलाम नहीं होता. धर्म शास्त्र में शूद्र को आजाद माना गया है. दासता यानी गुलामी का रिवाज भी इस देश में था लेकिन समाज की बुनियादें उस पर नहीं थीं. नहीं तो यह देश भी उन्हीं पुराने देशों की तरह मिट गया होता. मिस्र देश की मीनारें (पिरेमिड्स) उस जमाने की गुलामी के रिवाज की यादगार हैं. भारत की संस्कृति उस तरह की गुलामी का रिवाज न होने के कारण ही आज तक जिन्दा है।

दूसरी खास बात हमारी संस्कृति की सर्व धर्म समानता है.

دنوں تک جینا ہمیشہ اچھی بات نہیں ہوتی۔ پر ہو سکتا ہے کہ کسی اچھے گن کی وجہ سے کوئی آدمی یا کوئی سماج دیر تک زندہ رہے۔ مصر، سمیر، بابل، یونان، روم وغیرہ کی پرانی سنسکرتیاں مٹ چکی ہیں۔ اسی زمانے کی اس دیش کی سنسکرتی آج تک زندہ ہے۔ ان پرانی سنسکرتیوں کا محل جس طرح کے سماجی ڈھانچے پر کھڑا ہوا تھا وہ ڈھانچہ جب ٹوٹ گیا تو ان کے محل بھی گر گئے۔ اس سماجی ڈھانچے کی بنیاد غلامی کے رواج پر تھی۔ پروہت سردار اور راجا لوگ غلاموں کے ہاتھوں سے اپنے عیش اور آرام کی چیزیں بنواتے تھے۔ اونچے خاندان والوں کے جو لوگ مرتے تھے ان کے بڑے بڑے مقبرے اور عالیشان یادگاریں بنانے میں غلاموں کی محنت خرچ ہوتی تھی۔ آدمی کی سب سے پہلی ضرورتیں کھانا، کپڑا، گھر وغیرہ کی طرف سے بے پرواہی کی جاتی تھی۔ پر ان کے بنا سماج نہیں چل سکتا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ان سنسکرتیوں کے وہ بڑے بڑے مکان ڈھ گئے۔ اس کے خلاف پرانے بھارت میں سماج کی بنیاد غلامی پر نہیں تھی۔ شودر تھے مگر شودر کا مطلب داس یا غلام نہیں ہوتا۔ دھرم شاستروں میں شودر کو آزاد مانا گیا ہے۔ داستا یعنی غلامی کا رواج بھی اس دیش میں تھا لیکن سماج کی بنیادیں اس پر نہیں تھیں۔ نہیں تو یہ دیش بھی انھیں پرانے دیشوں کی طرح مٹ گیا ہوتا۔ مصر دیش کی میناریں (پیرو میڈس) اس زمانے کی غلامی کے رواج کی یادگار ہیں۔ بھارت کی سنسکرتی اس طرح کی غلامی کا رواج نہ ہونے کے کارن ہی آج تک زندہ ہے۔

دوسری خاص بات ہماری سنسکرتی کی سرو دھرم سمانتا ہے

तरह तरह की धार्मिक मानताएँ इस देश में एक साथ एक से आदर मान के साथ रहती रही हैं. हमारे इतिहास की यह एक बहुत बड़ी सच्चाई है. दर्शन शास्त्र में जो हमारी निगाह रही है उसी से हमने दूसरे धर्मों की तरफ़ उदारता और रवादारी का असूल सीखा है. दुनिया में असली और आख़िरी सच्चाई क्या है? इसे कोई पूरी तरह नहीं जान सकता. यही दर्शन शास्त्र का निचोड़ है. हर धर्म, मज़हब उस अथाह और बेअन्त सच्चाई की तरफ़ इशारा करता है, पर कोई भी धर्म उस तक उस आख़िरी सच्चाई के हर पहलू को हमें नहीं समझा सकता. दुनिया की सारी अलग अलग संस्कृतियों में एकता और मेल जोल क़ायम करने के लिए हमें इस असूल से बहुत बड़ी मदद मिल सकती है कि हम सब धर्म, मज़हबों की बराबर की इज़्ज़त करें. योरप की तरफ़ के धर्म मज़हब एक दूसरे को बरदाश्त नहीं कर सके इसका कारण यही है कि वह इस बात को नहीं समझ पाये. आज कल की असली साइन्स इस बात को अच्छी तरह समझने लगी है. साइन्स की निगाह आदमी को उसके छोटे पन का यक़ीन दिला देती है. आदमी का घमण्ड जाता रहता है. उसमें आजज़ी आ जाती है. इसीलिए अलग अलग धर्म वालों में जो एक दूसरे से नफ़रत और दुश्मनी है उसे मिटाने में साइन्स से बहुत बड़ी मदद मिलती है. तीसरी ख़ास बात हमारी संस्कृति की अहिंसा है. इस देश के धर्म जो एक दूसरे के साथ उदारता और रवादारी बरतते रहे हैं इसका एक कारण यह भी है कि इस देश वालों ने अहिंसा को अपने महाव्रतों में ख़ास जगह दी है. ईश्वर के होने न होने के बारे में भारत के धर्मों में अलग अलग

طرح طرح کی دھارمک ماننائیں اس دیش میں ایک ساتھ ایک سے آدر مان کے ساتھ رہتی رہی ہیں۔ ہمارے اتہاس کی یہ ایک بہت بڑی سچائی ہے۔ درشن شاستر میں جو ہماری نگاہ رہی ہے اسی سے ہم نے دوسرے دھرموں کی طرف اُدارتا اور رواداری کا اصول سیکھا ہے۔ دنیا میں اصلی اور آخری سچائی کیا ہے؟ اسے کوئی پوری طرح نہیں جان سکتا۔ یہی درشن شاستر کا نچوڑ ہے۔ ہر دھرم، مذہب اس اتھاہ اور بے انت سچائی کی طرف اشارہ کرتا ہے، پر کوئی بھی دھرم اس تک، اس آخری سچائی کے ہر پہلو کو ہمیں نہیں سمجھا سکتا۔ دنیا کی سب الگ الگ سنسکرتیوں میں ایکتا اور میل جول قائم کرنے کے لئے ہمیں اس اصول سے بہت بڑی مدد مل سکتی ہے کہ ہم سب دھرم، مذہبوں کی برابر کی عزت کریں۔ یورپ کی طرف کے دھرم مذہب ایک دوسرے کو برداشت نہیں کر سکے اس کا کارن یہی ہے کہ وہ اس بات کو نہیں سمجھ پائے۔ آج کل کی اصلی سائنس اس بات کو اچھی طرح سمجھنے لگی ہے۔ سائنس کی نگاہ آدمی کو اس کے چھوٹے پن کا یقین دلا دیتی ہے۔ آدمی کا گھمنڈ جاتا رہتا ہے۔ اس میں عاجزی آ جاتی ہے۔ اسی لئے الگ الگ دھرم والوں میں جو ایک دوسرے سے نفرت اور دشمنی ہے اسے مٹانے میں سائنس سے بہت بڑی مدد ملتی ہے۔ تیسری خاص بات ہماری سنسکرتی کی اہنسا ہے۔ اس دیش کے دھرم جو ایک دوسرے کے ساتھ اُدارتا اور رواداری برتتے رہے ہیں اس کا ایک کارن یہ بھی ہے کہ اس دیش والوں نے اہنسا کو اپنے مہابرتوں میں خاص جگہ دی ہے۔ ایشور کے ہونے نہ ہونے کے بارے میں بھارت کے دھرموں میں الگ الگ

राय रही है. पर अहिंसा के असूल को सबने माना है और उसे बड़ी जगह दी है. अहिंसा के असूल के सहारे ही हम सब धर्मों को बराबर की और एक से आदर की निगाह से देख सकते हैं.

आजादी मिलने के बाद से भारत वासियों की गिरावट तेज़ी से बढ़ती जा रही है. हमारी समाजी और कलचरी कमज़ोरी की यह बड़ी भारी निशानी है. हमारी समाजी सेहत बिगड़ चुकी है. हमारी इस गिरावट का कारण ही यह है कि हमारे अलग अलग सम्प्रदाय और जमातों में सच्चा मेल नहीं है. हमारे यहाँ के जात पात ने, और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के फ़रक़ ने यह सब सत्यानाश किया है. हमारे समाज की ज़िन्दगी टुकड़े टुकड़े हुई पड़ी है. किसी एक गाँव में भी हम सब का रहन सहन और दरजा एक बराबर नहीं है. अलग अलग फ़िरक़े, अलग अलग धर्म, अलग अलग बिरादरी और प्रांत प्रांत का फ़रक़ सब तरफ़ चमकता रहता है. योरप में भी अलग अलग राष्ट्र हैं. लेकिन समाजी जीवन लगभग सब योरप का एक बराबर है. हिन्दुस्तान की जात जात के बीच महासागर फैले हुए हैं.

हमारी गिरावट का दूसरा कारण यह है कि हमारी निगाह अंधी श्रद्धा के सहारे चलती है. अपनी मानताओं को हम बुद्धि और विवेक की कसौटी पर नहीं कसते. हमारे यहाँ की तालीम भी हमारी बुद्धि और विवेक को नहीं जगाती. अगर हमें आने वाले समय को जीत कर उस पर सवार होना है तो हमें योरप की कलचर से दो बातें ज़रूर सीखनी होंगी. एक यह कि आदमी के बुनियादी हक़ क्या हैं और दूसरे यह कि साइन्स से प्रेम और उसकी लगन का

رائے رہی ہے۔ پر اہنسا کے اصول کو سب نے مانا ہے اور اُسے بڑی جگہ دی ہے۔ اہنسا کے اصول کے سہارے ہی ہم سب دھرموں کو برابر کی اور ایک سے آدر کی نگاہ سے دیکھ سکتے ہیں۔

آزادی ملنے کے بعد سے بھارت واسیوں کی گراوٹ تیزی سے بڑھتی جا رہی ہے۔ ہماری سماجی اور کلچری کمزوری کی یہ بڑی بھاری نشانی ہے۔ ہماری سماجی صحت بگڑ چکی ہے۔ ہماری اس گراوٹ کا کارن ہی یہ ہے کہ ہمارے الگ الگ سمپردائے اور جماعتوں میں سچا میل نہیں ہے۔ ہمارے یہاں کے جات پات نے، اور برہمن، چھتری، ویشیہ، شودر، کے فرق نے یہ سب ستیاناش کیا ہے۔ ہمارے سماج کی زندگی ٹکڑے ٹکڑے ہوئی پڑی ہے۔ کسی ایک گاؤں میں بھی ہم سب کا رہن سہن اور درجہ ایک برابر نہیں ہے۔ الگ الگ فرقے، الگ الگ دھرم، الگ الگ برادری اور پرانت پرانت کا فرق سب طرف چمکتا رہتا ہے۔ یورپ میں بھی الگ الگ راشٹر ہیں۔ لیکن سماجی جیون لگ بھگ سب یورپ کا ایک برابر ہے۔ ہندستان کی جات جات کے بیچ مہاساگر پھیلے ہوئے ہیں۔

ہماری گراوٹ کا دوسرا کارن یہ ہے کہ ہماری نگاہ اندھی شردھا کے سہارے چلتی ہے۔ اپنی مانتاؤں کو ہم بدھی اور وویک کی کسوٹی پر نہیں کستے۔ ہمارے یہاں کی تعلیم بھی ہماری بدھی اور وویک کو نہیں جگاتی۔ اگر ہمیں آنے والے سمے کو جیت کر اس پر سوار ہونا ہے تو ہمیں یورپ کی کلچر سے دو باتیں ضرور سیکھنی ہوں گی۔ ایک یہ کہ آدمی کے بنیادی حق کیا ہیں اور دوسرے یہ کہ سائنس سے پریم اور اس کی لگن کا

क्या मतलब है. यह दोनों बातें हम योरप की संस्कृति से सीखेंगे तो तरक़्क़ी के रास्ते पर आगे बढ़ सकेंगे. कोई किसी का गुरू नहीं है, और न कोई किसी का चेला. यह समझना कि भारत की संस्कृति दुनिया की गुरू है, केवल हमारा झूटा घमण्ड है. इसी से हम अपनी आध्यात्मिकता, अपनी रूहानियत खो बैठे हैं. दुनिया की सब संस्कृतियां बहनें हैं उनमें एक दूसरे से प्रेम, मेल-जोल और लेन-देन बढ़ाने की ज़रूरत है. सच्ची आध्यात्मिक संस्कृति वही कहला सकती है जिसमें अपने पराये, हिन्दुस्तानी और ग़ैर हिन्दुस्तानी का फ़रक़ न हो. यह हमारे अन्दर अहंकार पैदा करता है. हर संस्कृति में कुछ न कुछ क़ीमती और टिकाऊ सचाइयाँ होतीं हैं. इन सचाइयों की परख यह है कि वह सारी दुनिया पर लागू हो सकें. भगवन् गीता की तालीम और इन्जील का पहाड़ पर का उपदेश (सरमन आन दी माउन्ट) सारे इन्सानी समाज की बपौती है. इनसे सारा मानव समाज मालमाल हो जाता है. अंगरेज़ी शेक्सपियर सारी दुनिया का नाटक कार है. सुक़रात जैसा महापुरुष सारी दुनिया की मिलकियत है. चांद सूरज केवल भारत के ही नहीं हैं. इस लिए क्या हम उनकी रोशनी का स्वागत नहीं करते ? बादल बाहर से पानी लाते हैं और हमारे यहाँ बरसाते हैं इसलिए क्या हम उन्हें रोकते हैं ? संस्कृति या कलचर की रूह इन्सानियत है. सब अलग अलग राष्ट्रों की संस्कृतियों का समन्वय यानी उनका मेल इसी असूल पर हो सकता है. इन्सानी क़ौम अगर तबाही और बरबादी के ख़तरे से बच सकती है तो सब संस्कृतियों के मेल से ही बच सकती है.

کیا مطلب ہے۔ یہ دونوں باتیں ہم یورپ کی سنسکرتی سے سیکھیں گے تو ترقی کے راستے پر آگے بڑھ سکیں گے۔ کوئی کسی کا گرو نہیں ہے، اور نہ کوئی کسی کا چیلا۔ یہ سمجھنا کہ بھارت کی سنسکرتی دنیا کی گرو ہے، کیول ہمارا جھوٹا گھمنڈ ہے۔ اسی سے ہم اپنی آدھیاتمکتا، اپنی روحانیت کھو بیٹھے ہیں۔ دنیا کی سب سنسکرتیاں بہنیں ہیں ان میں ایک دوسرے سے پریم، میل جول اور لین دین بڑھانے کی ضرورت ہے۔ سچی آدھیاتمک سنسکرتی وہی کہلا سکتی ہے جس میں اپنے پرائے، ہندستانی اور غیر ہندستانی کا فرق نہ ہو۔ یہ ہمارے اندر اہنکار پیدا کرتا ہے۔ ہر سنسکرتی میں کچھ نہ کچھ قیمتی اور ٹکاؤ سچائیاں ہوتی ہیں۔ ان سچائیوں کی پرکھ یہ ہے کہ وہ ساری دنیا پر لاگو ہو سکیں۔ بھگوت گیتا کی تعلیم اور انجیل کا پہاڑ پر کا اپدیش (سرمن آن دی ماؤنٹ) سارے انسانی سماج کی بپوتی ہے۔ ان سے سارا مانو سماج مالامال ہو جاتا ہے۔ انگریزی شیکسپیر ساری دنیا کا ناٹک کار ہے۔ سقراط جیسا مہاپرش ساری دنیا کی ملکیت ہے۔ چاند سورج کیول بھارت کے ہی نہیں ہیں۔ اس لئے کیا ہم ان کی روشنی کا سواگت نہیں کرتے؟ بادل باہر سے پانی لاتے ہیں اور ہمارے یہاں برساتے ہیں اس لئے کیا ہم انھیں روکتے ہیں؟ سنسکرتی یا کلچر کی روح انسانیت ہے۔ سب الگ الگ راشٹروں کی سنسکرتیوں کا سمنویہ یعنی ان کا میل اسی اصول پر ہو سکتا ہے۔ انسانی قوم اگر تباہی اور بربادی کے خطرے سے بچ سکتی ہے تو سب سنسکرتیوں کے میل سے ہی بچ سکتی ہے۔

मंत्री और संतरी

(भाई अब्दुल हलीम अन्सारी आर्टिस्ट, भूपाल)

यह राजतंत्र है. यह तंत्रकाल है.

यह आज़ादी का ज़माना है. यह जम्हूरियत का मौसम है.

हम आज आज़ादी के देश में हैं.

आज़ादी आज, जम्हूरियत के भेस में है.

आज की हुकूमत "जम्हूरियत और मसावियत" की दावेदार है. इसी लिये उसकी ज़बान पर "जम्हूरियत" की पुकार है. उसके बयान में "मसावियत" का प्रचार है—उसके एलानों और फ़रमानों में "जम्हूरियत के नाम से" आप अपना प्रोपगन्डा है. देश, और अंतर देश आप अपनी शोहरत है.

जम्हूरियत है क्या ?

इन्सानियत और मसावात (बराबरी) की अलमबरदारी !

दूसरे शब्दों में :

एक समाजी, अदारा, एक आलमी निज़ाम.

समाज और मानवता के नाम पर एक विशाल संगठन, एक मज़बूत प्रबंध !

मसावात और इन्साफ़ के रवादाराना अमल से जम्हूरियत की शकल बनती है. जिसके आधार पर उसकी वज़ारतें और

منتری اور سنتری

(بھائی عبدالحلیم انصاری آرٹسٹ بھوپال)

یہ راج تنتر ہے۔ یہ تنتر کال ہے۔

یہ آزادی کا زمانہ ہے۔ یہ جمہوریت کا موسم ہے۔

ہم آج آزادی کے دیش میں ہیں۔

آزادی آج، جمہوریت کے بھیس میں ہے۔

آج کی حکومت "جمہوریت اور مساویت" کی دعویدار ہے۔ اسی لئے اس کی زبان پر "جمہوریت" کی پکار ہے۔ اس کے بیان میں "مساویت" کا پرچار ہے — اس کے اعلانوں اور فرمانوں میں "جمہوریت کے نام سے" آپ اپنا پروپگنڈا ہے۔ دیش، اور انتر دیش آپ اپنی شہرت ہے۔

جمہوریت ہے کیا؟

انسانیت اور مساوات (برابری) کی علمبرداری!

دوسرے شبدوں میں:

ایک سماجی، ادارہ، ایک عالمی نظام۔

سماج اور مانوتا کے نام پر ایک وشال سنگٹھن، ایک مضبوط پربندھ!

مساوات اور انصاف کے روادارانہ عمل سے جمہوریت کی شکل بنتی ہے۔ جس کے آدھار پر اس کی وزارتیں اور

संस्थायें समाज के नाम या सेवा के काम से खूब चलती और फूलती फलती हैं.

जम्हूरियत ! इंसान नवाज़ और समाज नवाज़ एक तरकीब और एक तहज़ीब है

जम्हूरियत ! इन्सान के हक़ हुक़ूक़ की ज़ामिन है. समाज के दुख दर्द का इलाज है—अवाम के तन मन का आराम है.

जम्हूरियत ! नाम है ख़िदमत और त्याग का,

——ख़िदमत ठोस, त्याग बेलौस !

जम्हूरियत का फ़र्ज़ है फ़रियाद रसी और इन्साफ़ परवरी.

ऐसी सूरत में देखना यह है कि जम्हूरियत के मंत्री कहाँ तक इन्साफ़ परवरी से काम ले रहे हैं वह जनता की आवाज़ और मज़लूम की फ़रियाद सुनने में कहाँ तक अपना फ़र्ज़ त्याग और ज़िम्मेदारी के साथ अदा कर रहे हैं. उसी के साथ अवाम के ज़िम्मे यह काम है कि वह उनके काम को जाँचें और उनकी नीयत पर निगाह रक्खें—अगर जम्हूरी मंत्री के अंदर इंसाफ़ का मादा नहीं, ख़िदमत का भाव नहीं या उसके भाव में जनता का आदर नहीं तो वह जम्हूरियत और वह वज़ारत, दोनों आदर के लायक़ नहीं—दोनों विश्वास के क़ाबिल नहीं इसलिये कि जहाँ जनता की हतक और हक़तलफ़ी का सवाल हो वहाँ की वज़ारत को इज़्ज़त का हक़ नहीं पहुँचता.

आज सियासत ने जम्हूरियत के लिबास में आकर नया रूप लिया है—वह राज काज के कामों को और समाज की ज़िन्दगी के सारे निज़ामों को अपने तरीक़ों और उसूलों पर

سنستھائیں سماج کے نام یا سیوا کے کام سے خوب چلتی اور پھولتی پھلتی ہیں۔

جمہوریت! انسان نواز اور سماج نواز ایک ترکیب اور ایک تہذیب ہے۔

جمہوریت! انسان کے حق حقوق کی ضامن ہے۔ سماج کے دُکھ درد کا علاج ہے — عوام کے تن من کا آرام ہے۔

جمہوریت! نام ہے خدمت اور تیاگ کا،

—— خدمت ٹھوس، تیاگ بے لوث!

جمہوریت کا فرض ہے فریادرسی اور انصاف پروری۔

ایسی صورت میں دیکھنا یہ ہے کہ جمہوریت کے منتری کہاں تک انصاف پروری سے کام لے رہے ہیں وہ جنتا کی آواز اور مظلوم کی فریاد سننے میں کہاں تک اپنا فرض تیاگ اور ذمے داری کے ساتھ ادا کر رہے ہیں۔ اسی کے ساتھ عوام کے ذمے یہ کام ہے کہ وہ ان کے کام کو جانچیں اور ان کی نیت پر نگاہ رکھیں — اگر جمہوری منتری کے اندر انصاف کا مادا نہیں، خدمت کا بھاؤ نہیں یا اس کے بھاؤ میں جنتا کا آدر نہیں تو وہ جمہوریت اور وہ وزارت، دونوں آدر کے لائق نہیں — دونوں وشواس کے قابل نہیں اس لئے کہ جہاں جنتا کی ہتک اور حق تلفی کا سوال ہو وہاں کی وزارت کو عزت کا حق نہیں پہنچتا۔

آج سیاست نے جمہوریت کے لباس میں آکر نیا روپ لیا ہے — وہ راج کاج کے کاموں کو اور سماج کی زندگی کے سارے نظاموں کو اپنے طریقوں اور اصولوں پر

चला रही है और आगे भी ऐसा ही चलाना चाह रही है. यानी अपनी मर्ज़ी और मन्शा के मुताबिक़—जिससे समाज की ज़िन्दगी ग़ुलामी में तबदील होती जा रही है और जान उसकी अज़ाब में मुबतिला हो रही है. यह कितना बड़ा नुक़सान है इन्सानियत के हक़ में और कितना भारी ज़ुल्म है समाज के ऊपर.

इस मौक़े पर इस बात की जाँच परताल रखना भी ज़रूरी है कि वह हुकूमत जो तहज़ीब, इन्सानियत और जम्हूरियत की अलमबरदार हो, जो इन्साफ़ और वफ़ादारी के नाम पर हलफ़ उठा चुकी हो, जो ईमानदारी के साथ ठोस और बेलौस ख़िदमत का यक़ीन दिला चुकी हो—कहाँ तक वह जम्हूरियत के नियम निज़ाम और उसूलों को पूरा करने में अपना फ़र्ज़ या अपनी ख़िदमत का हक़ अदा कर रही है. और कहाँ तक अपने को उनके लायक़ साबित करने में कामयाब या नाकामयाब रही है—इन उसूलों पर देखने और परखने से उसकी लियाक़त साबित होगी—उसकी क़ाबलियत मालूम होगी—उसके अमल और किरदार का पता चलेगा—वरना जम्हूरियत बदनाम होगी, उसके नाम पर हर्फ़ आयेगा, उसके काम को नुक़सान पहुँचेगा.

हुकूमत, जहाँ जनता से वफ़ादारी का बार बार मतालबा करती है वहाँ उसके ऊपर भी हर बार यह ज़िम्मेदारी लाज़िम आती है कि वह ख़ुद भी जनता के हक़ में अपने को

چلا رہی ہے اور آگے بھی ایسا ہی چلانا چاہ رہی ہے. یعنی اپنی مرضی اور منشا کے مطابق — جس سے سماج کی زندگی غلامی میں تبدیل ہوتی جا رہی ہے اور جان اس کی عذاب میں مبتلا ہو رہی ہے. یہ کتنا بڑا نقصان ہے انسانیت کے حق میں اور کتنا بھاری ظلم ہے سماج کے اوپر.

اس موقعے پر اس بات کی جانچ پرتال رکھنا بھی ضروری ہے کہ وہ حکومت جو تہذیب، انسانیت اور جمہوریت کی علمبردار ہو، جو انصاف اور وفاداری کے نام پر حلف اٹھا چکی ہو، جو ایمانداری کے ساتھ ٹھوس اور بے لوث خدمت کا یقین دلا چکی ہو — کہاں تک وہ جمہوریت کے نیم نظام اور اصولوں کو پورا کرنے میں اپنا فرض یا اپنی خدمت کا حق ادا کر رہی ہے. اور کہاں تک اپنے کو ان کے لائق ثابت کرنے میں کامیاب یا ناکامیاب رہی ہے — ان اصولوں پر دیکھنے اور پرکھنے سے اس کی لیاقت ثابت ہوگی — اس کی قابلیت معلوم ہوگی — اس کے عمل اور کردار کا پتہ چلے گا — ورنہ جمہوریت بدنام ہوگی، اس کے نام پر حرف آئے گا، اس کے کام کو نقصان پہنچے گا.

حکومت، جہاں جنتا سے وفاداری کا بار بار مطالبہ کرتی ہے، وہاں اس کے اوپر بھی ہر بار یہ ذمہ داری لازم آتی ہے کہ وہ خود بھی جنتا کے حق میں اپنے کو

वफ़ादार साबित करे. क्योंकि जनता उसकी आक़ा है. जनता उसकी राजा है.

हमने इसी जम्हूरियत की आज़माइश की है, जिसका शोर मचा है और जिसका ढोंग रचा है. हमने बहुत क़रीब जाकर उसका चेहरा मोहरा देखा है और बहुत नज़दीक पहुँचकर उसका रंग ढग भाँपा है.

हम "राज घर" में गये हैं और उसके हर दफ़्तर में गये हैं. हम 'शिक्षा मन्दिर' में गये हैं, और "रक्षा मण्डल" में गये हैं. हम पूरब पच्छिम की दिशाओं में घूमे फिरे हैं—हम "नार्थ ब्लाक" में भी गये हैं और "साउथ ब्लाक" में भी, हम "वायसराय के लाज" में भी गये हैं और "कौंसिल हाल" में भी जिनकी सीढ़ियों पर हमने पीक देखी और वहीं चेम्बर के चपरासियों की भीक देखी—चेम्बर के उजले उजले खम्भों पर दाग़ धब्बे देखे, उसकी सुथरी सुथरी दीवारों पर ख़ाक लिपटी देखी—हम "सेक्रेटेरियट" के अंधेरे अंधेरे रस्तों से गुज़रे और गोल गोल कमरों से—जहां हमने बहुत सी चीज़ें गोल देखीं. चालें भी गोल देखीं, बातें भी गोल देखीं.

यही वह उत्तम बिल्डिंग ! जिसके ऊपर हमने बुलन्द बुलन्द टावर देखे और नीचे उसके झुके झुके झंडे देखे—यानी, सर झुकाये झुकाये गोया कि शरमाये शरमाये.

हम उस क्रांतिक माहौल के लाल लाल महलों से गुज़रे और जम्हूरी फ़िज़ा के नीले आस्मान से. काली काली सड़कों से

وفادار ثابت کرے۔ کیوں کہ جنتا اس کی آقا ہے۔ جنتا اس کی راجہ ہے۔

ہم نے اسی جمہوریت کی آزمائش کی ہے، جس کا شور مچا ہے اور جس کا ڈھونگ رچا ہے۔ ہم نے بہت قریب جاکر اس کا چہرا مہرا دیکھا ہے اور بہت نزدیک پہنچکر اس کا رنگ ڈھنگ بھانپا ہے۔

ہم "راج گھر" میں گئے ہیں اور اس کے ہر دفتر میں گئے ہیں۔ ہم "شکشا مندر" میں گئے ہیں، اور "رکشا منڈل" میں گئے ہیں۔ ہم پورب پچھم کی دشاؤں میں گھومے پھرے ہیں— ہم "نارتھ بلاک" میں بھی گئے ہیں اور "ساؤتھ بلاک" میں بھی، ہم "وائسرائے کے لاج" میں بھی گئے ہیں اور "کونسل ہال" میں بھی جن کی سیڑھیوں پر ہم نے پیک دیکھی اور وہیں چیمبر کے چپراسیوں کی بھیک دیکھی— چیمبر کے اُجلے اُجلے کھمبوں پر داغ دھبے دیکھے، اس کی ستھری ستھری دیواروں پر خاک لپٹی دیکھی— ہم "سیکرٹریٹ" کے اندھیرے رستوں سے گذرے اور گول گول کمروں سے— جہاں ہم نے بہت سی چیزیں گول دیکھیں۔ چالیں بھی گول دیکھیں، باتیں بھی گول دیکھیں۔

یہی وہ اُتم بلڈنگ! جس کے اوپر ہم نے بلند بلند ٹاور دیکھے اور نیچے اس کے جھکے جھکے جھنڈے دیکھے— یعنی، سر جھکائے جھکائے گویا کہ شرمائے شرمائے۔

ہم اس کرانتک ماحول کے لال لال محلوں سے گذرے اور جمہوری فضا کے نیلے آسمان سے۔ کالی کالی سڑکوں سے

गुज़रे और हरे हरे "लान" से. जहां बैठकर हमने कुछ "इस्केच" भी किये और कुछ "नोट" भी लिखे.

हम उन शानदार इमारतों के उम्दा उम्दा फ़र्शों से गुज़रे हैं. पर उन पर हमने जगह जगह कागज़ों के पुरज़े देखे और तरह तरह के छिलके देखे, जिनको देखकर दिल कुढ़ा है और आंखें रोई हैं. अफ़सोस! हमने "राजधानी" में गन्दा पानी पिया—अचरज! हमने "राज निकेतन" में गंदापन देखा जिससे आर्टिस्ट की निगाह को तकलीफ़ हुई—उसकी रूह को सदमा पहुँचा और उसके लतीफ़ मज़ाक़ पर जैसे कोई हादसा गुज़रा.

हमने तमाम चीज़ों के नुमाइशी पहलू भी देखे, और, असली रूप भी. उनकी ऊपरी तरकीबें भी देखीं और भीतरी चालें भी जानीं समझीं.

———

एक दिन हम "पूरे मंत्री, और आधे मंत्री" से मिलने का विचार करके नई देहली गये. नई देहली से "राज हवेली"—इधर उधर घूमे फिरे. कहीं कहीं भटके भी, कहीं कहीं खटके भी. अंत यह कि बहुत से खटके तोड़े, फंदे तोड़े और वज़ीरों के दफ़्तरों का खोज उठाया. फिर उधर ही क़दम बढ़ाया. क़दम क़दम पर पूछ ताँछ, मुक़ाम मुक़ाम पर रोक थाम. जवाब देते गये, आगे बढ़ते गये.

मंत्रियों तक पहुँचने से पहले हमको संतरियों से पाला पड़ा. जिन्होंने क़दम क़दम पर रोका और आगे बढ़ने से टोका. उनसे पीछा छुटा तो "स्वागत करने वालों" से मुकाबला हुआ—

گذرے اور ہرے ہرے "لان" سے. جہاں بیٹھ کر ہم نے کچھ "اسکیچ" بھی کیے اور کچھ "نوٹ" بھی لکھے.

ہم ان شاندار عمارتوں کے عمدہ عمدہ فرشوں سے گذرے ہیں. پر ان پر ہم نے جگہ جگہ کاغذوں کے پرزے دیکھے اور طرح طرح کے چھلکے دیکھے، جن کو دیکھ کر دل کڑھا ہے اور آنکھیں روئی ہیں. افسوس! ہم نے "راج دھانی" میں گندہ پانی پیا۔ اچرج! ہم نے "راج نکیتن" میں گندا پن دیکھا جس سے آرٹسٹ کی نگاہ کو تکلیف ہوئی۔ اس کی روح کو صدمہ پہنچا اور اس کے لطیف مذاق پر جیسے کوئی حادثہ گذرا.

ہم نے تمام چیزوں کے نمائشی پہلو بھی دیکھے اور، اصلی روپ بھی. ان کی اوپری ترکیبیں بھی دیکھیں اور بھیتری چالیں بھی جانیں سمجھیں.

———

ایک دن ہم "پورے منتری، اور آدھے منتری" سے ملنے کا وچار کر کے نئی دہلی گئے. نئی دہلی سے "راج حویلی"— ادھر ادھر گھومے پھرے. کہیں کہیں بھٹکے بھی، کہیں کہیں کھٹکے بھی. انت یہ کہ بہت سے کھٹکے توڑے، پھندے توڑے اور وزیروں کے دفتروں کا کھوج اٹھایا. پھر ادھر ہی قدم بڑھایا. قدم قدم پر پوچھ تانچھ، مقام مقام پر روک تھام. جواب دیتے گئے، آگے بڑھتے گئے.

منتریوں تک پہنچنے سے پہلے ہم کو سنتریوں سے پالا پڑا. جنھوں نے قدم قدم پر روکا اور آگے بڑھنے سے ٹوکا. ان سے پیچھا چھوٹا تو "سواگت کرنے والوں" سے مقابلہ ہوا —

जहाँ पचासों सवाल हुए जिनमें अधिकतर, बेकार, बे तुके और लचर—हमने साफ़ साफ़ जवाब दिये फिर भी उन भले मानसों ने अपना फ़र्ज़ अदा करने में कमी रखी.

—स्वागत करने वालों को मर्दमशनास, सभ्य और शिष्टाचारी होना चाहिये तपाक और शिष्टाचार के साथ मेहमानों का स्वागत करना चाहिये जिनके लिये स्वागत का स्टाफ़ क़ायम किया गया है, उनको मुश्किलों में नहीं डाल देना चाहिये. स्वागत की कुरसियाँ आराम और आसानियाँ पहुँचाने के लिये रक्खी गई हैं. लिहाज़ रहे कि यह कुरसियाँ रोक थाम की चौकियाँ साबित न हों.

एक बड़ा अजीब सवाल यह हुआ कि "इन" से आप क्या बात करना चाहते हैं. और "उन" से आपकी गुफ़्तगू क्या होगी ? यह सवाल हमारे कानों को बड़े अजीब लगे. हमने कहा, क्या उस बात और उस गुफ़्तगू को जो "इन" और "उन" से कीजाये, पहले आपको बतला देना ज़रूरी है. अगर आपके पास ऐसा कोई हुक्म या हिदायत है तो हम इसके लिये तैयार हैं. हमारे इस जवाब पर वह न इसरार कर सके न इक़रार.

—यह सब हमारा दिलचस्प तजरबा था और ज़ाती आज़माइश, जिसने हमारी मालूमात में भारी इज़ाफ़ा बख़्शा.

जम्हूर राज का वज़ीर आज़म हो या सदर आज़म, उसका ज़िम्मेदाराना फ़र्ज़ है कि वह जनता की आवाज़ पर लब्बैक (हाज़िर हो) कहे. उसको मिलने का मौक़ा दे और उसकी सेवा को अपना फ़र्ज़ जाने. यह फ़र्ज़ का एहसास ही उसकी

جہاں پچاسوں سوال ہوئے جن میں ادھک تر، بیکار، بے تکے اور لچر۔ ہم نے صاف صاف جواب دیا پھر بھی اُن بھلے مانسوں نے اپنا فرض ادا کرنے میں کمی رکھی۔

— سواگت کرنے والوں کو مردم شناس، سبھیہ اور شِشٹاچاری ہونا چاہئے تپاک اور شِشٹاچار کے ساتھ مہمانوں کا سواگت کرنا چاہئے۔ جن کے لئے سواگت کا اسٹاف قائم کیا گیا ہے، اُن کو مشکلوں میں نہیں ڈال دینا چاہئے۔ سواگت کی کرسیاں آرام اور آسانیاں پہنچانے کے لئے رکھی گئی ہیں۔ لحاظ رہے کہ یہ کرسیاں روک تھام کی چوکیاں ثابت نہ ہوں۔

ایک بڑا عجیب سوال یہ ہوا کہ "اِن" سے آپ کیا بات کرنا چاہتے ہیں۔ اور 'اُن' سے آپ کی گفتگو کیا ہوگی؟ یہ سوال ہمارے کانوں کو بڑے عجیب لگے ہم نے کہا، کیا اس بات اور اس گفتگو کو جو "اِن" اور "اُن" سے کی جائے، پہلے آپ کو بتلا دینا ضروری ہے۔ اگر آپ کے پاس ایسا کوئی حکم یا ہدایت ہے تو ہم اس کے لئے تیار ہیں۔ ہمارے اس جواب پر وہ نہ اصرار کر سکے نہ اقرار۔

— یہ سب ہمارا دلچسپ تجربہ تھا اور ذاتی آزمائش جس نے ہماری معلومات میں بھاری اضافہ بخشا۔

جمہور راج کا وزیر اعظم ہو یا صدر اعظم، اس کا ذمہ دارانہ فرض ہے کہ وہ جنتا کی آواز پر لبیک (حاضر ہو) کہے۔ اس کو ملنے کا موقع دے اور اس کی سیوا کو اپنا فرض جانے۔ یہ فرض کا احساس ہی جس کی

जिम्मेदारी पूरी करेगा. जम्हूर राज के दरवाजे हर वक्त हर शख्स के लिये खुले रहना चाहिये. जनराज के हर मंत्री को मजदूर और भंगी तक का स्वागत करना अपना राजकाजी फर्ज़ समझना चाहिये. क्योंकि वह भी उनकी प्रजा है इसलिये वह उसके भी सेवक हैं. जम्हूरी विधान के लिहाज से भी और गांधी शिक्षा के एतबार से भी.

जनता राज या जम्हूरराज के जितने वज़ीर होते हैं वह सेवक होते हैं जनता के, देखना यह है कि ज़िम्मेदार हुकूमत के ज़िम्मेदार नेता और रंगरूट वज़ीर.इस फ़र्ज़ और इस ज़िम्मेदारी को अदा करने में कहां तक अपनी खिदमत का भाग अदा कर रहे हैं. अगर नहीं तो इन्साफ़ की रूसे वह भी ऐसे ही इल्ज़ाम के मुस्तहक़ हैं जैसे वह अपने दफ्तर के मुलाज़िम पर ग़फ़लत, ना अहली, या नालायक़ी का इल्ज़ाम थोप कर उसे अलग कर देते हैं. जिस तरह वह अपने अख़तियार को अपने मातहत पर बरतते हैं बिलकुल उसी तरह जनता को यह हक़ और ताक़त हासिल है कि वह अपने अख़तियार को उन पर बरते.

हम पहली ही नज़र में जम्हूरी मंत्री के दर और दफ्तर पर पहरा चौकी देख कर चौंके थे.

जम्हूरियत और पहरा !

मंत्री और संतरी !

यह शब्द और इनके असर देर तक हमारे दिमाग़ में घूमते रहे जो जम्हूरियत की ख़ूबसूरती पर धुँधलका छाने वाले थे और

ذمہ داری پوری کرے گا۔ جمہور راج کے دروازے ہر وقت ہر شخص کے لئے کھلے رہنا چاہئے۔ جن راج کے ہر منتری کو مزدور اور بھنگی تک کا سواگت کرنا اپنا راج کاجی فرض سمجھنا چاہئے۔ کیونکہ وہ بھی انکی پرجا ہے۔ اس لئے وہ اُس کے بھی سیوک ہیں۔ جمہوری ودھان کے لحاظ سے بھی اور گاندھی شکشا کے اعتبار سے بھی۔

جنتا راج یا جمہور راج کے جتنے وزیر ہوتے ہیں وہ سیوک ہوتے ہیں جنتا کے، دیکھنا یہ ہے کہ ذمہ دار حکومت کے ذمہ دار نیتا اور رنگروٹ وزیر، اس فرض اور اس ذمہ داری کو ادا کرنے میں کہاں تک اپنی خدمت کا بھاگ ادا کر رہے ہیں۔ اگر نہیں تو انصاف کی رُو سے وہ بھی ایسے ہی الزام کے مستحق ہیں جیسے وہ اپنے دفتر کے ملازم پر غفلت، نا اہلی یا نالائقی کا الزام تھوپ کر اُسے الگ کر دیتے ہیں۔ جس طرح وہ اپنے اختیار کو اپنے ماتحت پر برتتے ہیں بالکل اسی طرح جنتا کو یہ حق اور طاقت حاصل ہے کہ وہ اپنے اختیار کو اُن پر برتے۔

ہم پہلی ہی نظر میں جمہوری منتری کے در اور دفتر پر پہرا چوکی دیکھ کر چونکے تھے۔

جمہوریت اور پہرا!

منتری اور سنتری!

یہ شبد اور ان کے اثر دیر تک ہمارے دماغ میں گھومتے رہے جو جمہوریت کی خوبصورتی پر دھندھلکا چھانے والے تھے اور

उसके हसीन चेहरे पर परदा डालने वाले! पहरा चौकी जम्हूरियत पर ज़र्ब है चूँकि वह उसके असूल के बर अक्स है.

अगर मंत्री के दर पर संतरी हो तो उस राज को जम्हूर राज कहना कब दुरुस्त? उस हुकूमत को जम्हूरियत का नाम देना क्या मानी? मंत्री के "गेट" पर संतरी से जम्हूरियत का असूल टूटता है. उसके दामन पर धब्बा आता है, उसके नाम को बट्टा लगता है. बेशक! संतरी रक्षक होता है मंत्री का, मगर मंत्री तो ख़ुद रक्षक होता है जनता का, फिर जनता से उसका पर्दा कैसा? उससे आड़ क्यों? उसके दरमियान संतरी की टट्टी और दीवार क्यों?

मालूम हुआ यह वह जम्हूरियत नहीं जिसका झंडा खड़ा किया गया है और जिसके नीचे जन सेवा का 'हलफ़' उठाया गया है. इसलिये इसपर अमल न करने से हलफ़ झूटा पड़ता है और हलफ़ उठाने वाला मुजरिम क़रार पाता है.

अगर मंत्री के दर पर संतरी है तो वह जनता राज न रहा—वह संतरी राज हो गया. और संतरी राज का मतलब हुआ शख़्सी राज!

संतरी न होकर "जनतंत्र" या "जनता राज" होता है.

संतरी का होना "जनतंत्र" की "ना" करता है.

संतरी का न होना "जनतंत्र" को "हाँ" करता है. क्योंकि पहरा चौकी जम्हूर विधानकी खिलाफ़ वर्ज़ी है और विधान की खिलाफ़ वर्ज़ी करने वाला क़ानून और इन्साफ़ की नजर में दोषी है. मुजरिम है, खता कार है.

क़ौम के वह सरदार और राजनीतकार जिनको जम्हूर राज

اُن کے حسین چہرے پر پردہ ڈالنے والے! پہرہ چوکی جمہوریت پر ضرب ہے، چونکہ وہ اُس کے اصولوں کے برعکس ہے۔

اگر منتری کے در پر سنتری ہو تو اُس راج کو جمہور راج کہنا کب درست؟ اس حکومت کو جمہوریت کا نام دینا کیا معنی؟ منتری کے "گیٹ" پر سنتری سے جمہوریت کا اصول ٹوٹتا ہے۔ اس کے دامن پر دھبہ آتا ہے۔ اس کے نام کو بٹہ لگتا ہے۔ بے شک! سنتری رکھشک ہوتا ہے منتری کا، مگر منتری تو خود رکھشک ہوتا ہے جنتا کا، پھر جنتا سے اس کا پردہ کیسا؟ اس سے آڑ کیوں؟ اس کے درمیان سنتری کی ٹٹی اور دیوار کیوں؟

معلوم ہوا کہ یہ وہ جمہوریت نہیں جس کا جھنڈا کھڑا کیا گیا ہو اور جس کے نیچے جن سیوا کا "حلف" اٹھایا گیا ہو۔ اس لئے اس پر عمل نہ کرنے سے حلف جھوٹا پڑتا ہے اور حلف اٹھانے والا مجرم قرار پاتا ہے۔

اگر منتری کے [illegible] سنتری ہو تو وہ جنتا راج نہ رہا۔ وہ سنتری راج ہوگیا۔ اور سنتری راج کا مطلب ہوا شخصی راج!

سنتری نہ ہوکر "جن تنتر" یا "جنتا راج" ہوتا ہے۔

سنتری کا ہونا "جن تنتر" کی "نا" کرتا ہے۔

سنتری کا نہ ہونا "جن تنتر" کی "ہاں" کرتا ہے۔ کیوں کہ پہرا چوکی جمہور ودھان کی خلاف ورزی ہے اور ودھان کی خلاف ورزی کرنے والا قانون اور انصاف کی نظر میں دوشی ہے۔ مجرم ہے خطاکار ہے۔

قوم کے وہ سردار اور راج نیتی کار جن کو جمہور راج

या लोकराज चलाने और बनाने का शौक़ और अरमान है उनको खलीफ़ा उमर की ज़िन्दगी से सबक़ लेना चाहिये. राज काज और सलतनत के मामलों में भी, मज़हब और इन्सानियत के दायरों में भी.

जिनकी ज़िन्दगी भंडार था जम्हूरी निज़ाम का,
जिनकी ज़ात चिराग़ था—तंत्र विधान का,
उसी भंडार से जम्हूरी निज़ाम का धन समेटा जा सकता है.

उसी चिराग़ से जम्हूरी मानताओं को चलाने और कामयाब बनाने के सम्बन्ध में रोशनी हासिल की जा सकती है. उसी रोशनी में लोक राज चलाने का तरीक़ा मालूम होगा. और बेलौस ख़िदमत करने का सलीक़ा आयेगा. सामाजिक और राजनैतिक तहज़ीब और तरकीब से जानकारी होगी. उसी भंडार और ज़ख़ीरे से उसको सुन्दर रूप देने में अच्छा पक्का मसाला मिलेगा जो जम्हूरियत की ख़ूबसूरत और मज़बूत इमारत खड़ी करने के काम आयगा-

हज़रत उमर यानी जम्हूरी सलतनत के "सदर आज़म" की ज़िन्दगी पर एक ओझल नज़र !

वह जनता की पुकार पर दौड़ पड़ते थे. मज़लूम की आवाज़ पर रो पड़ते थे—तड़प जाते थे—आज के लीडर और सेवक का हाल यह है कि सामने जनता उसकी तड़पा करे. चीख़ करे. बिलबिलाया करे. उसकी बला से—लीडर उधर रुख़ तक न करे. सेवक उधर पलट कर न देखे—दस दस बीस बीस और पचास पचास लाउड स्पीकर एक आवाज़ होकर चीख़ चीख़ कर जनता की आवाज़ उन तक पहुंचायें लेकिन उनके कानों को हलकी सी लहर तक महसूस

یا لوک راج چلانے اور بنانے کا شوق اور ارمان ہے اُن کو خلیفہ عمر کی زندگی سے سبق لینا چاہیے۔ راج کاج اور سلطنت کے معاملوں میں بھی، مذہب اور انسانیت کے دائروں میں بھی۔

جن کی زندگی بھنڈار تھا جمہوری نظام کا،
جن کی ذات چراغ تھا ــ تنتر ودھان کا،
اُسی بھنڈار سے جمہوری نظام کا دھن سمیٹا جا سکتا ہے۔

اُسی چراغ سے جمہوری مانتاؤں کو چلانے اور کامیاب بنانے کے سمبندھ میں روشنی حاصل کی جا سکتی ہے۔ اسی روشنی میں لوک راج چلانے کا طریقہ معلوم ہوگا۔ اور بے لوث خدمت کرنے کا سلیقہ آئے گا۔ سماجک اور راج نیتک تہذیب اور ترکیب سے جانکاری ہوگی۔ اسی بھنڈار اور ذخیرے سے اُس کو سُندر روپ دینے سے اچھا پکا مسالا ملے گا جو جمہوریت کی خوبصورت اور مضبوط عمارت کھڑی کرنے کے کام آئے گا۔

حضرت عمر یعنی جمہوری سلطنت کے "صدر اعظم" کی زندگی پر ایک اوجھل نظر!

وہ جنتا کی پکار پر دوڑ پڑتے تھے۔ مظلوم کی آواز پر رو پڑتے تھے ــ تڑپ جاتے تھے ــ آج کے لیڈر اور سیوک کا حال یہ ہے کہ سامنے جنتا اُس کی تڑپا کرے۔ چیخا کرے۔ بلبلایا کرے۔ اس کی بلا سے ــ لیڈر ادھر رُخ تک نہ کرے۔ سیوک ادھر پلٹ کر نہ دیکھے ــ دس دس بیس بیس اور پچاس پچاس لاؤڈ اسپیکر ایک آواز ہو کر چیخ چیخ کر جنتا کی آواز اُن تک پہنچائیں لیکن اُن کے کانوں کو ہلکی سی لہر تک محسوس

न हो—ठीक है, जैसे जनता के लिये उनके दरवाज़े बन्द हैं. इसी तरह उनके कानों के पट भी उसकी आवाज़ों के लिये बंद हैं.

वह जनता का दुख दर्द और ग़म अलम दूर करने के कारन आधी पिछली रात गश्त लगाया करते थे. वह गली गली कूचे कूचे फिरते थे, और खोज उठाते थे, कोई भूका तो नहीं है. कोई दुख और तकलीफ़ में तो नहीं है—अगर पाते, "फ़ौरन" उसका दुख दूर करते, और ग़म अलम, काफ़ूर !

वह कमज़ोरों का बोझ उठाते थे और माज़ूरों का सौदा लाते थे—वह उनकी लकड़ियाँ काटते थे, और उनकी चिट्ठियाँ बाँटते थे. अक्सर करके जवाब भी वह ख़ुद ही लिखते थे.

वह क़ौम के सरदार थे. इसलिए सरदारी की जिम्मेदारी को ख़ूब समझते थे.

वह राष्ट्र के सेवक थे. इसलिये वह जानते थे सेवक की सेवायें क्या क्या हैं ?

वह जनता के आराम और इतमीनान की ख़ातिर अपना आराम छोड़ देते थे. अपनी नींद तर्क कर देते थे. सेवा में उनको शांती मिलती थी. ख़िदमत में वह राहत पाते थे. यह थी उस असली सरदार की जिंदगी और उस सच्चे सेवक का काम !

और आज का सेवक और सरदार ? दुनिया के ज़्यादातर मुल्कों में राहत ही राहत पाता है और मज़े ही मज़े उड़ाता है.

शेवा (तरीक़ा) उसका ग़फ़लत है. और सेवा सिर्फ़ नाम का एक शब्द है.

نہ ہو — ٹھیک ہے، جیسے جنتا کے لئے اُن کے دروازے بند ہیں۔ اسی طرح اُن کے کانوں کے پٹ بھی اُسکی آوازوں کیلئے بند ہیں۔

وہ جنتا کا دُکھ درد اور غم الم دور کرنے کے کارن آدھی پچھلی رات گشت لگایا کرتے تھے۔ وہ گلی گلی کوچے کوچے پھرتے تھے، اور کھوج اُٹھاتے تھے، کوئی بھوکا تو نہیں ہے۔ کوئی دکھ اور تکلیف میں تو نہیں ہے — اگر پاتے، "فوراً" اس کا دکھ دور کرتے، اور غم الم، کافور!

وہ کمزوروں کا بوجھ اٹھاتے تھے اور معذوروں کا سودا لاتے تھے — وہ اُن کی لکڑیاں کاٹتے تھے، اور انکی چٹھیاں بانٹتے تھے۔ اکثر کرکے وہ جواب بھی خود ہی لکھتے تھے۔

وہ قوم کے سردار تھے۔ اس لئے سرداری کی ذمہ داری کو خوب سمجھتے تھے۔

وہ راشٹر کے سیوک تھے۔ اس لئے وہ جانتے تھے سیوک کی سیوائیں کیا کیا ہیں؟

وہ جنتا کے آرام اور اطمینان کی خاطر اپنا آرام چھوڑ دیتے تھے، اپنی نیند ترک کر دیتے تھے۔ سیوا میں اُن کو شانتی ملتی تھی۔ خدمت میں وہ راحت پاتے تھے۔ یہ تھی اس اصلی سردار کی زندگی اور اس سچے سیوک کا کام!

اور آج کا سیوک اور سردار؟ دنیا کے زیادہ تر ملکوں میں راحت ہی راحت پاتا ہے اور مزے ہی مزے اڑاتا ہے۔

شیوا (طریقہ) اس کا غفلت ہے۔ اور سیوا صرف نام کا ایک شبد ہے۔

खलीफ़ा उमर यानी जम्हूरी दुनिया का सबसे बड़ा सदर ! वह रूखी सूखी खाता था. वह मोटा झोंटा पहनता था. वह कच्चे 'हुजरे' (कोठरी) में रहता था और अँधेरे कमरे में वह सोता था. सरकारी बात चीत में चिराग़ जलाता था और निजी बातों में गुल कर देता था—देखा आपने यह था क़ौम का नेता, और यह था उसका तक़वा !

वह क़ौम का सरदरा बैतुलमाल (सरकारी खज़ाना) पर बार न डालता था—अपने गुज़ारे के लिये बस इतना लेता था कि जिन्दगी की दीवार क़ायम रह सके.

आज के क़ौमी सेवक, हज़ारों की तनख़्वाह लेते हैं. बात कह कर वह मुकर जाते हैं. गोया, अपने क़ौल से वह फिर जाते हैं. और हाथ से हाथ को लाभ वह अलग, चुपके चुपके बात वह अलग. क्या यही हैं जन के सेवक, क्या यही हैं राष्ट्र के दास ? नहीं नहीं, यह हैं स्वार्थ के ग़ुलाम !—और जब गाड, अल्लाह या भगवान का नाम लेने के बजाय क़ौम का नाम लेकर, हवामें वह उड़ते हैं तो एक उड़ान में लाखों फूँक डालते हैं. इस तरह क़ौम का खज़ाना उनकी ज़ातों पर खर्च होता हैं, और दुनिया भर में लाखों करोड़ों पर फ़ाक़ों की मार पड़ती है. कुछ दिनों का भुलावा देकर एलान होता है कि हुकूमत को इतने करोड़ का नुक़सान हुआ. यह एलान दुनिया की नज़र में "राज की लाज" खोता है और हुकूमत के दीवालिया होने की अलामत ज़ाहिर करता है.

हज़रत उमर ! जिनके नाम से जम्हूरियत को इज़्ज़त, और जिनके काम से जम्हूरियत को शोहरत !

خلیفہ عمر یعنی جمہوری دنیا کا سب سے بڑا صدر! وہ رُوکھا سوکھا کھاتا تھا۔ وہ موٹا جھوٹا پہنتا تھا۔ وہ کچے حجرے (کوٹھری) میں رہتا تھا اور اندھیرے کمرے میں وہ سوتا تھا۔ سرکاری بات چیت میں چراغ جلاتا تھا اور نجی باتوں میں گل کر دیتا تھا — دیکھا آپ نے یہ تھا قوم کا نیتا، اور یہ تھا اُس کا تقویٰ!

وہ قوم کا سردار بیت المال (سرکاری خزانے) پر بار نہ ڈالتا تھا — اپنے گزارے کے لئے بس اتنا لیتا تھا کہ زندگی کی دیوار قائم رہ سکے۔

آج کے قومی سیوک، ہزاروں کی تنخواہ لیتے ہیں۔ بات کہہ کر وہ مکر جاتے ہیں۔ گویا، اپنے قول سے وہ پھر جاتے ہیں۔ اور ہاتھ سے ہاتھ کو لابھ وہ الگ، چپکے چپکے بات وہ الگ۔ کیا یہی ہیں جن کے سیوک، کیا یہی ہیں راشٹر کے داس؟ نہیں، نہیں، یہ ہیں سوارتھ کے غلام! — اور جب گاڈ، اللہ یا بھگوان کا نام لینے کے بجائے، قوم کا نام لے کر، ہوا میں وہ اڑتے ہیں تو ایک اڑان میں لاکھوں پھونک ڈالتے ہیں۔ اس طرح قوم کا خزانہ اُنکی ذاتوں پر خرچ ہوتا ہے اور دنیا بھر میں لاکھوں کروڑوں پر فاقوں کی مار پڑتی ہے۔ کچھ دنوں کا بھلاوا دیکر اعلان ہوتا ہے کہ حکومت کو اتنے کروڑ کا نقصان ہوا۔ یہ اعلان دنیا کی نظر میں "راج کی لاج" کھوتا ہے اور حکومت کے دیوالیہ ہونے کی علامت ظاہر کرتا ہے۔

حضرت عمر! جن کے نام سے جمہوریت کو عزت، اور جن کے کام سے جمہوریت کو شہرت!

वह वह वक़्त था कि जब दुश्मनों का ज़ोर था और बग़ावतों का शोर—अदावतों का जाल था और हक़ पर ग़ैरों का वार !

इसी हाल में वह सलतनत का काम संभालते थे और निज़ाम क़ायम रखते थे. सफ़ीरों से मुलाक़ातें भी करते थे. मैदानों में फ़ौजें भी भेज देते थे. शहरों में अमन क़ायम रखते थे. घर घर सेवा को जाते थे—जनता की रक्षा करते थे, फ़रियाद सुनते थे, इन्साफ़ करते थे.

वह कितना इन्साफ़ पसंद था और कितना अमन दोस्त, कितना ख़ुदा तरस था और कितना रिआया परवर.

वह कितना बड़ा मुंतज़िम और विचारवान था और कितना दिलेर. वह कितना अच्छा रवादार था और कितना बड़ा वीर.

वह हक़ का प्रचारक था और धीरज का मालिक !

उसका दिल कितना पाक था, उसका सीना कितना कुशादा. उसका कैरेक्टर कितना मज़बूत !

उसकी आत्मा कितनी उजली थी और उसकी ज़िन्दगी कितनी सुथरी.

इन्साफ़, न्याय, प्रेम और सदाचार से वह दिलों को जीतता था. ख़िदमत और त्याग से वह दिलों पर हुकूमत करता था. उसकी हुकूमत दिलों पर थी—पत्थर मिट्टी की दीवारों पर नहीं. न शानदार महलों पर, न शान शौकत की चीज़ों पर—उनकी ज़िन्दगी सादा थी और उमर का कारनामा अमर !

وہ وہ وقت تھا کہ جب دشمنوں کا زور تھا اور بغاوتوں کا شور — عداوتوں کا جال تھا اور حق پر غیروں کا وار !

اسی حال میں وہ سلطنت کا کام سنبھالتے تھے اور نظام قائم رکھتے تھے۔ سفیروں سے ملاقاتیں بھی کرتے تھے۔ میدانوں میں فوجیں بھی بھیج دیتے تھے۔ شہروں میں امن قائم رکھتے تھے۔ گھر گھر سیوا کو جاتے تھے — جنتا کی رکھشا کرتے تھے، فریاد سنتے تھے، انصاف کرتے تھے۔

وہ کتنا انصاف پسند تھا اور کتنا امن دوست، کتنا خدا ترس تھا اور کتنا رعایا پرور۔

وہ کتنا بڑا منتظم اور وچاروان تھا اور کتنا دلیر وہ کتنا اچھا روادار تھا اور کتنا بڑا ویر۔

وہ حق کا پرچارک تھا اور دھیرج کا مالک !

اس کا دل کتنا پاک تھا، اس کا سینہ کتنا کشادہ۔ اس کا کیریکٹر کتنا مضبوط !

اس کی آتما کتنی اجلی تھی اور اس کی زندگی کتنی ستھری۔

انصاف، نیائے، پریم اور سداچار سے وہ دلوں کو جیتتا تھا۔ خدمت اور تیاگ سے وہ دلوں پر حکومت کرتا تھا۔ اس کی حکومت دلوں پر تھی — پتھر مٹی کی دیواروں پر نہیں۔ نہ شاندار محلوں پر، نہ شان شوکت کی چیزوں پر — اس کی زندگی سادہ تھی اور عمر کا کارنامہ امر۔

यह थी उस सेवक और सरदार की ज़िन्दगी, यह था उस बुलन्द मेयार इन्सान का कैरेक्टर और किरदार !

इतनी सेवा और ईसार करने के बावजूद वह क़ौम का सेवक और इन्सानियत का ख़ादिम ख़ुदा की जनाब में, रात की तनहाइयों में रोया करता था. गिड़गिड़ाया करता था, इस ख़ौफ़ और डर से कि जनता की सेवा में ग़फ़लत या भूल न हो जाय, जिसका जवाब इस "लोकराज" के सेवक को "परलोक" में देना पड़े यह बात मानी हुई है कि दुनिया का कोई गवनर, कोई सदर आज़म, कोई मुसलेह, कोई रिफ़ार्मर उसके पासंग को भी नहीं पहुँचता.

इसी चीज़ को महात्मा गांधी ने समझ कर "कांग्रेस" को उपदेश दिया था. जम्हूरी राज को हज़रत उमर की ज़िदगी से लाभ उठाने का, जम्हूरियत के असूल सीखने समझने और उन्हीं लाइनों पर जम्हूरी निज़ाम चलाने का. गोया महात्मा जी ने अपने तजरबे के भंडार से क़ीमती मोती निकाल कर कांग्रेस को दिया था. लेकिन, अफ़सोस उसने "क़ौम के बाप" की बात न मानी, और उस "पीरेदाना" की नसीहत पर अमल न किया, न अपने को उस मोती का अहेल (लायक़) साबित किया. यही कारन कि वह जम्हूरियत के रास्तों पर अभी तक भटक रही है—काश ! वह बाप की बात मान लेती तो उसे नाकामियों का मुँह न देखना पड़ता.

ख़लीफ़ा उमर साहब की पवित्र और सादा ज़िन्दगी के सुन्दर और उत्तम कारनामों से मदद लिये बग़ैर जम्हूरराज या निज़ाम कामयाब नहीं हो सकता. इसलिये उनके शानदार कारनामों को जम्हूरियत की मंज़िल की मशाल बनाना चाहिये, और जम्हूरियत

یہ تھی اُس سیوک اور سردار کی زندگی، یہ تھا اُس بلند معیار انسان کا کیریکٹر اور کردار!

اتنی سیوا اور ایثار کرنے کے باوجود وہ قوم کا سیوک اور انسانیت کا خادم خدا کی جناب میں، رات کی تنہائیوں میں رویا کرتا تھا۔ گڑگڑایا کرتا تھا، اس خوف اور ڈر سے کہ جنتا کی سیوا میں غفلت یا بھول نہ ہو جائے، جس کا جواب اس "لوک راج" کے سیوک کو "پرلوک" میں دینا پڑے یہ بات مانی ہوئی ہے کہ دُنیا کا کوئی گورنر، کوئی صدر اعظم، کوئی مصلح، کوئی ریفارمر اُس کے پاسنگ کو بھی نہیں پہنچتا۔

اس چیز کو مہاتما گاندھی نے سمجھ کر "کانگریس" کو اُپدیش دیا تھا۔ جمہوری راج کو حضرت عمر کی زندگی سے لابھ اُٹھانے کا، جمہوریت کے اصول سیکھنے اور سمجھنے اور انھیں لائنوں پر جمہوری نظام چلانے کا۔ گویا مہاتما جی نے اپنے تجربے کے بھنڈار سے قیمتی موتی نکال کر کانگریس کو دیا تھا۔ لیکن افسوس اُس نے "قوم کے باپ" کی بات نہ مانی، اور اُس "پیردانا" کی نصیحت پر عمل نہ کیا، نہ اپنے کو اُس موتی کا اہل (لائق) ثابت کیا۔ یہی کارن کہ وہ جمہوریت کے راستوں پر ابھی تک بھٹک رہی ہے۔ کاش! وہ باپ کی بات مان لیتی تو اُسے ناکامیوں کا مُنہ نہ دیکھنا پڑتا۔

خلیفہ عمر صاحب کی پوتر اور سادہ زندگی کے سُندر اور اُتم کارناموں سے مدد لیے بغیر جمہور راج یا نظام کامیاب نہیں ہو سکتا۔ اس لیے اُن کے شاندار کارناموں کو جمہوریت کی منزل کی مشعل بنانا چاہیے، اور جمہوریت

के खालिक की रूह समझना चाहिये. उसी की रोशनी और शक्ति से जम्हूरियत की तसवीर सही रंग रूप, और असल लेबास और किरदार में सामने आयेगी जो जम्हूरियत के समाजी निज़ाम और मसावी भेदभाव से आगाही बख़्शेगी.

महात्मा गांधी जम्हूरियत के बड़े मतवाले थे. मसावात (बराबरी) के महा प्रचारक और अलमबरदार !

महात्मा जी भी दुखों की मुसीबत पर बेचैन और बेक़रार हो जाते थे. अपना सुख आराम छोड़कर इधर उधर भागे भागे फिरते थे, नगर नगर और बन बन—बन बन को वह शांती का निकेतन बना देना चाहते थे और नगर नगर प्रेम के सागर दौड़ा देने की उमंग रखते थे.

हज़रत उमर ! जम्हूरियत के महा पैग़म्बर थे-महा विचारवान थे और महानगवर्नर !

महात्मा गांधी ! हज़रत उमर के सच्चे शैदाई थे—उनके कामों की दिल से क़द्र करने वाले और उनके साथ सच्चा प्रेम और आत्मिक संबन्ध रखने वाले ! सब जानते हैं, ख़लीफ़ा उमर के दर पर पहरा न था—कोई नहीं जानता, महात्मा गांधी की कुटी पर संतरी न था—फिर मंत्री के दर पर संतरी क्यों ?

کے خالق کی روح سمجھنا چاہئے۔ اسی کی روشنی اور شکتی سے جمہوریت کی تصویر صحیح رنگ روپ، در اصل لباس اور کردار میں سامنے آئے گی جو جمہوریت کے سماجی نظام اور مساوی بھید بھاؤ سے آگاہی بخشے گی۔

مہاتما گاندھی جمہوریت کے بڑے متوالے تھے۔ مساوات (برابری) کے مہا پرچارک اور علم بردار!

مہاتما گاندھی بھی دکھی کی مصیبت پر بےچین اور بے قرار ہو جاتے تھے۔ اپنا سکھ آرام چھوڑ کر اِدھر اُدھر بھاگے بھاگے پھرتے تھے، نگر نگر اور بن بن — بن بن کو وہ شانتی کا نکیتن بنا دینا چاہتے تھے اور نگر نگر پریم کے ساگر دوڑا دینے کی اُمنگ رکھتے تھے۔

حضرت عمر! جمہوریت کے مہا پیغامبر تھے۔ مہا وچار وان تھے اور مہان گورنر!

مہاتما گاندھی! حضرت عمر کے سچے شیدائی تھے — اُنکے کاموں کی دل سے قدر کرنے والے اور اُن کے ساتھ سچا پریم اور آتمک سمبندھ رکھنے والے! سب جانتے ہیں، خلیفہ عمر کے در پر پہرا نہ تھا — کوئی نہیں جانتا، مہاتما گاندھی کی کٹی پر سنتری نہ تھا — پھر منتری کے در پر سنتری کیوں؟

शान्ति का सवाल

[भाई श्री कृष्ण दास]

अभी-अभी प्रधान मंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू अमरीका से वापिस लौटे हैं और उन्होंने बतलाय है कि उन्होंने अमेरिका में जो कुछ देखा, सुना और समझा उससे उन्हें विश्वास हो गया है कि वहां के लोग युद्ध से ऊब गये हैं, वह शान्ति चाहते हैं, इसलिए उनका ध्यान ज्यादा से ज्यादा गांधी जी के उसूलों की ओर खिंचता जा रहा है. पं० नेहरू ने जो कुछ बताया उसको ज्यों का त्यों मान लिया जाय तो भी यकायक यह यक़ीन नहीं होता कि ऐसे लोग जिनका दामन अब भी, इस वक़्त भी, लाखों बच्चों, औरतों और मर्दों के मासूम खून से रंगा हुआ है, कैसे अपना पेशा, अपना शेवा, अपने ढंग छोड़कर शान्ति के पुजारी बन गये हैं.

राजकाज की बागडोर जिनके हाथों में है उन्हीं के हाथों में विज्ञान है, पैसा है, आदमी हैं. यह लोग एक ही धर्म जानते हैं–वह है धन-धर्म. धन जहां जहां ले जाय वह चले जायेंगे, धन जो कराये वह कर देंगे, धन जो सिखाये वह सीख लेंगे और धन जो भुलाये उसे वह भूल भी जायेंगे. अगर उनके हित में यह है कि शान्ति और अमन का नारा बुलन्द किया जाय तो वह शान्ति और अमन का नारा बुलन्द करेंगे. अगर उनके हितमें यह है कि ऐटम बमों के अम्बार लगायें तो वह

ثانتی کا سوال

(بھائی شری کرشن داس)

ابھی ابھی پردھان منتری پنڈت جواہر لال نہرو امریکہ سے واپس لوٹے ہیں اور انھوں نے بتلایا ہے کہ اُنھوں نے امریکہ میں جو کچھ دیکھا، سُنا اور سمجھا اُس سے اُنھیں وشواس ہوگیا کہ وہاں کے لوگ یُدھ سے اُوب گئے ہیں، وہ شانتی چاہتے ہیں، اس لئے اُن کا دھیان زیادہ سے زیادہ گاندھی جی کے اُصولوں کی اور کھنچتا جا رہا ہے۔ پنڈت نہرو نے جو کچھ بتایا اُسے جیوں کا تیوں مان لیا جائے تو بھی یکایک یہ یقین نہیں ہوتا کہ ایسے لوگ جن کا دامن اب بھی اس وقت بھی لاکھوں بچّوں، عورتوں اور مردوں کے معصوم خون سے رنگا ہوا ہو، کیسے اپنا پیشہ، اپنا شیوہ، اپنے ڈھنگ چھوڑ کر شانتی کے پجاری بن گئے ہیں۔

راج کاج کی باگ ڈور جن کے ہاتھوں میں ہے انھیں کے ہاتھوں میں وگیان ہے، پیسہ ہے، آدمی ہیں۔ یہ لوگ ایک ہی دھرم جانتے ہیں — وہ ہے دھن دھرم۔ دھن جہاں جہاں لے جائے وہ چلے جائیں گے، دھن جو کرائے وہ کر دیں گے، دھن جو سکھائے وہ سیکھ لیں گے اور دھن جو بھلائے اُسے وہ بھول بھی جائیں گے۔ اگر اُن کے ہت میں یہ ہے کہ شانتی اور امن کا نعرہ بلند کیا جائے تو وہ شانتی اور امن کا نعرہ بلند کریں گے۔ اگر اُن کے ہت میں یہ ہے کہ ایٹم بموں کے انبار لگائیں تو وہ

यह भी उसी जोश कि साथ करेंगे. और अगर उनके हित में यह है कि शान्ति के नारों के साथ साथ लड़ाई की तैयारियां भी करते जायँ तो वह इसे भी ख़ुशी-ख़ुशी, बिना किसी परेशानी के, बिना किसी हिचक के, करेंगे. यही इनका शेवा रहा है और यही इनका पेशा. जब चाहते हैं, यह लड़ाई की फ़िज़ा तैयार कर देते हैं, लाखों इन्सानों को मौत के घाट उतरवा देते हैं, लाखों घरों को उजाड़ देते हैं, क़ौमों का इतिहास और देशों का भूगोल अपनी मर्ज़ी के मुताबिक़ बना बिगाड़ देते हैं, ज़बान, कलचर और सभ्यता को जिस ओर भी चाहे मोड़ देते हैं, और इस तरह इन्सान की क़िस्मत का फ़ैसला अपने फ़ायदे के मुताबिक़ कर देते हैं.

पिछले सैकड़ों सालों से हम इनका रवैया देख रहे हैं. पिछली दो लड़ाइयों में इन्होंने जो कुछ कहा और किया उसका नतीजा हम आज भी भुगत रहे हैं. फिर, आज हम इनकी बातों, वायदों और प्रचार पर कैसे यक़ीन करलें ? शेर ने हिरन की खाल ओढ़ ली हो तो ! और खालें बदलने-ओढ़ने की आदत ही जिनका इतिहास रहा है उनके आँसुओं, कंठी-माला और राम-राम, शान्ति-शान्ति पर यक़ीन कर लेना क्या अपने को धोका देना नहीं है ? क्या पंडित नेहरू सचमुच कह सकते हैं कि प्रेसिडेन्ट ट्रूमन और प्रधान मंत्री एटली युद्ध का रास्ता हमेशा के लिए छोड़ चुके हैं ? क्या गोश्तख़ोर भेड़िये ने सचमुच साग-पात खाना शुरू कर दिया है ?

प्रेसिडेन्ट ट्रूमन या प्रधान मंत्री एटली एक ऐसी व्यवस्था के सरग़ना हैं जिसकी ख़ूराक लड़ाई है, जिसका स्वभाव लड़ाई है और जिसका ज़रूरी नतीजा भी लड़ाई है. फिर, उनसे सचमुच शान्ति,

یہ بھی اُسی جوش کے ساتھ کریں گے۔ اور اگر اُن کے ہت میں یہ ہو کہ شانتی کے نعروں کے ساتھ ساتھ لڑائی کی تیاریاں بھی کرتے جائیں تو وہ اسے بھی خوشی خوشی، بنا کسی پریشانی کے، بنا کسی جھجک کے کریں گے۔ یہی ان کا شیوہ رہا ہے اور یہی ان کا پیشہ۔ جب چاہتے ہیں، یہ لڑائی کی فضا تیار کر دیتے ہیں۔ لاکھوں انسانوں کو موت کے گھاٹ اُتروا دیتے ہیں، لاکھوں گھروں کو اُجاڑ دیتے ہیں، قوموں کا اتہاس اور دیشوں کا بھوگول اپنی مرضی کے مطابق بنا بگاڑ دیتے ہیں، زبان، کلچر اور سبھیتا کو جس اور بھی چاہے موڑ دیتے ہیں، اور اس طرح انسان کی قسمت کا فیصلہ اپنے فائدے کے مطابق کر دیتے ہیں۔

[illegible] سیکڑوں سالوں سے ہم ان کا رویّہ دیکھ رہے ہیں۔ پچھلی دو لڑائیوں میں انہوں نے جو کچھ کہا اور کیا اس کا نتیجہ ہم آج بھی بھگت رہے ہیں۔ پھر آج ہم ان کی باتوں، وعدوں اور پرچار پر کیسے یقین کر لیں؟ شیر نے ہرن کی کھال اوڑھ لی ہو تو! اور کھالیں بدلنے اوڑھنے کی عادت ہی جن کا اتہاس رہا ہو اُن کے آنسوؤں، کنٹھی مالا اور رام رام شانتی شانتی پر یقین کر لینا کیا اپنے کو دھوکہ دینا نہیں ہے؟ کیا پنڈت نہرو سچ مچ کہہ سکتے ہیں کہ پریسیڈنٹ ٹرومین اور پردھان منتری ایٹلی یدھ کا راستہ ہمیشہ کے لئے چھوڑ چکے ہیں؟ کیا گوشت خور بھیڑیئے نے سچ مچ ساگ پات کھانا شروع کر دیا ہے؟

پریسیڈنٹ ٹرومین یا پردھان منتری ایٹلی ایک ایسی ویوستھا کے سرغنہ ہیں جس کی خوراک لڑائی ہے، جس کا سوبھاؤ لڑائی ہے اور جس کا ضروری نتیجہ بھی لڑائی ہے۔ پھر اُن سے سچ مچ شانتی،

समझौता, अहिंसा और भाई चारे के उसूलों की हिमायत की उम्मीद रखना अपने को साफ़-साफ़ भुलावे में डालना है. और अपने को भुलावे में रखना किसी भी तरह अक़्लमन्दी नहीं है.

शान्ति निकेतन में होने वाले शान्ति सम्मेलन का चर्चा हम बहुत दिनों से सुनते आये हैं. चीन, जापान, अमेरिका, इङ्गलैण्ड वग़ैरा दर्जनों मुल्कों से आये हुए शान्ति के पुजारी नुमाइन्दे संसार में शान्ति क़ायम रखने के लिए आपस में सलाह मशविरा कर रहे हैं. यह शान्ति के पुजारी अपने अपने मुल्कों की सरकारों के नहीं जनता के प्रतिनिधि हैं. हर मुल्क की जनता शान्ति चाहती है. इसलिए उसके प्रतिनिधि जो शान्ति निकेतन में इकट्ठा होकर शान्ति सम्मेलन कर रहे हैं, सचमुच शान्ति के पुजारी माने जा सकते हैं. यह लोग जो कुछ फ़ैसला करेंगे और शान्ति क़ायम रखने के लिए जो रास्ते भी निकालेंगे उनसे संसार को ज़रूर फ़ायदा होगा.

हिन्दुस्तान के लोग इस शान्ति सम्मेलन की कामयाबी ज़रूर चाहते हैं. हिन्दुस्तान का पिछले ६ हज़ार साल का इतिहास शान्ति का ही इतिहास रहा है. पूरब में चीन, दक्खिन में जावा और बाली, पच्छिम में फ़ारस और उत्तर में तिब्बत और दूसरे मुल्कों से भी हिन्दुस्तान का सम्बन्ध था. यह सम्बन्ध हज़ारों बरस तक क़ायम रहा. हिन्दुस्तान के विद्यार्थी और मिशनरी सैकड़ों की तायदाद में इन मुल्कों में जाते रहे. इन मुल्कों के हज़ारों आदमी पढ़ने लिखने के लिए हिन्दुस्तान में आते रहे. हज़ारों बरस के मेल-मिलाप का यह इतिहास कभी भी बेजा बहे हुए ख़ून के मासूम दाग़ से नापाक नहीं हुआ. बुद्ध और महावीर स्वामी का सन्देश धीरे-धीरे

سمجھوتہ، اہنسا اور بھائی چارے کے اصولوں کی حمایت کی اُمید رکھنا اپنے کو صاف صاف بھلاوے میں ڈالنا ہے۔ اور اپنے کو بھلاوے میں رکھنا کسی بھی طرح عقلمندی نہیں ہے۔

شانتی نکیتن میں ہونے والے شانتی سمیلن کا چرچا ہم بہت دنوں سے سنتے آئے ہیں۔ چین، جاپان، امریکہ، انگلینڈ وغیرہ درجنوں ملکوں سے آئے ہوئے شانتی کے پجاری نمائندے سنسار میں شانتی قائم رکھنے کے لئے آپس میں صلاح مشورہ کر رہے ہیں۔ یہ شانتی کے پجاری اپنے اپنے ملکوں کی سرکاروں کے نہیں جنتا کے پرتی ندھی ہیں۔ ہر ملک کی جنتا شانتی چاہتی ہے۔ اس لئے اس کے پرتی ندھی جو شانتی نکیتن میں اکٹھا ہو کر شانتی سمیلن کر رہے ہیں، سچ مچ شانتی کے پجاری مانے جا سکتے ہیں۔ یہ لوگ جو کچھ فیصلہ کریں گے اور شانتی قائم رکھنے کے لئے جو راستے بھی نکالیں گے اُن سے سنسار کو ضرور فائدہ ہوگا۔

ہندستان کے لوگ اس شانتی سمیلن کی کامیابی ضرور چاہتے ہیں۔ ہندستان کے پچھلے ۶ ہزار سال کا اتہاس شانتی ہی کا اتہاس رہا ہے۔ پورب میں چین، دکھن میں جاوا اور بالی، پچھم میں فارس اور اُتر میں تبت اور دوسرے ملکوں سے بھی ہندستان کا سمبندھ تھا۔ یہ سمبندھ ہزاروں برس تک قائم رہا۔ ہندستان کے ودیارتھی اور مشنری سیکڑوں کی تعداد میں ان ملکوں میں جاتے رہے۔ ان ملکوں کے ہزاروں آدمی پڑھنے لکھنے کے لئے ہندستان میں آتے رہے۔ ہزاروں برس کے میل ملاپ کا یہ اتہاس کبھی بھی بیجا بہے ہوئے خون کے معصوم داغ سے ناپاک نہیں ہوا۔ بدھ اور مہابیر سوامی کا سندیش دھیرے دھیرے

अमेरिका तक फैल गया. श्याम, मलाया, ब्रह्मदेश, जावा, बाली वग़ैरा तक हिन्दुस्तानी कलचर की सुनहरी किरने पहुंचीं और वहां के लोगों की तारीक जिन्दगी को रोशन किया. मगर इस लम्बे अरसे में जोर जबरदस्ती के बहुत कम मौक़े आये.

हिन्दुस्तान के भीतर राजाओं और नवाबों में चाहे जितनी बार भी झगड़े हुए हों और उनके सिपाहियों को जंग के मैदान में जूझना भी पड़ा हो, मगर कोई भी जानकार आदमी यह नहीं कह सकता कि हिन्दुस्तान की जनता जङ्ग और मारकाट को कभी भी पसन्द करती थी या उसे तरजीह देती थी. मुसलमानी अमलदारी में जो कुछ झगड़े हुए वह हमेशा सियासी रहे हैं. मगर हिन्दुस्तान की जनता ने हिन्दू या मुसलमान की हैसियत से नहीं बल्कि दो सेनाओं के सिपाहियों की हैसियत से ही उन लड़ाइयों में हिस्सा लिया.

कलचर के मैदान में जो दूध चीनी का सा मेल मिलाप हुआ उसी का नतीजा ताजमहल है, या उसके हज़ारों बरस पहले की अजन्ता की गुफायें हैं. मैंने हज़ारों बरस का चर्चा किया है. इसलिए कि आज जो हिन्दू मुसलमानों के मेल जोल की बातें चल रही हैं, हिन्दुस्तान के लिये बिलकुल नई नहीं हैं. जो लोग हिन्दुस्तान के इतिहास को जानते हैं उन्हें पता है कि आर्यों के बहुत पहिले यहां के रहने वाले अदब, कलचर, कला वग़ैरा के सम्बन्ध में काफ़ी तरक़्क़ी कर चुके थे. संगीत और नाच और बाजों के इस्तेमाल में तो कहना ही क्या है! हड़प्पा और मोहन्जोदड़ो की खुदाई में जो चीज़ें मिली हैं वह मेरी इस बात की गवाह हैं कि आर्यों के पहिले और आर्यों के आने के बाद हिन्दुस्तान की कलचर

امریکہ تک پھیل گیا۔ سیام، ملایا، برہما دیش، جاوا، بالی وغیرہ تک ہندستانی کلچر کی سنہری کرنیں پہنچیں اور وہاں کے لوگوں کی تاریک زندگی کو روشن کیا۔ مگر اس لمبے عرصے میں زور زبردستی کے بہت کم موقعے آئے۔

ہندستان کے بھیتر راجاؤں اور نوابوں میں چاہے جتنی بار بھی جھگڑے ہوئے ہوں اور اُن کے سپاہیوں کو جنگ کے میدان میں جوجھنا بھی پڑا ہو، مگر کوئی بھی جانکار آدمی یہ نہیں کہہ سکتا کہ ہندستان کی جنتا جنگ اور مارکاٹ کو کبھی بھی پسند کرتی تھی یا اُسے ترجیح دیتی تھی۔ مسلمانی عملداری میں جو کچھ جھگڑے ہوئے وہ ہمیشہ سیاسی رہے ہیں۔ مگر ہندستان کی جنتا نے ہندو یا مسلمان کی حیثیت سے نہیں بلکہ دو سیناؤں کے سپاہیوں کی حیثیت سے ہی ان لڑائیوں میں حصہ لیا۔

کلچر کے میدان میں جو دودھ چینی کا سا میل ملاپ ہوا اُسی کا نتیجہ تاج محل ہے، یا اس کے ہزاروں برس پہلے کی اجنتا کی گپھائیں ہیں۔ میں نے ہزاروں برس کا چرچا کیا ہے۔ اس لئے کہ آج جو ہندو مسلمانوں کے میل جول کی باتیں چل رہی ہیں، ہندستان کے لئے بالکل نئی نہیں ہیں۔ جو لوگ ہندستان کے اتہاس کو جانتے ہیں انھیں پتہ ہے کہ آریوں کے بہت پہلے یہاں کے رہنے والے ادب، کلچر، کلا وغیرہ کے سمبندھ میں کافی ترقی کر چکے تھے۔ سنگیت اور ناچ اور باجوں کے استعمال میں تو کہنا ہی کیا ہے! ہڑپا اور موہن جودڑو کی کھدائی میں جو چیزیں ملی ہیں وہ میری اس بات کی گواہ ہیں کہ آریوں کے پہلے اور آریوں کے آنے کے بعد ہندستان کی کلچر

कितनी तरक़्क़ी कर चुकी थी. आर्यों के पहिले जो लोग रहते थे उनके देवता महादेव थे. आर्यों के देवता तो इन्द्र, वरुण, उषा, अग्नि, समुद्र वग़ैरा थे. फिर, आर्यों और अनार्यों की लड़ाइयाँ हुई. इसी को देवासुर संग्राम कहते हैं. इन लड़ाइयों के बाद समुद्र मंथन हुआ और उसमें से रतन निकले. रतन देवताओं ने (आर्यों ने) ले लिए और जहर महादेव ने. इस तरह हिन्दुस्तान की पुरानी कलचर दब गई और आर्यों की नई कलचर उस पर पर हावी हो गयी. मगर यह बात अधिक दिनों तक चल न सकी. शंकर को महादेव (सबसे बड़ा देवता) एलान करना पड़ा. धीरे धीरे आर्यों और आदिम हिन्दियों की कलचरों में ऐसा घोल मेल हुआ कि एक बिलकुल नई कलचर पैदा हो गई. इस कलचर में महादेव को विष्णु की पूजा करनी पड़ी और और विष्णु को महादेव के आगे सिर झुकाना पड़ा. आर्य और अनार्यों का यह मेल-मिलाप हमारी पुरानी तारीख़ का सुनहरा हिस्सा है.

इतिहास का पहिया चलता रहा. आर्यों के बाद जितने भी लोग बाहर से आये उन्होंने यहां की कलचर, भाषा, रहन सहन, सबको अपना लिया. यही नहीं, उन्होंने यहाँ की कलचर, भाषा, रहन-सहन हर चीज़ पर अपना पूरा असर भी डाला. बाहर वाले यहाँ आए तो यहां के लोगों में इस तरह मिल जुल गए कि उनकी अलग क़ौमियत का पता लगाना बहुत कठिन हो गया. मिसाल के लिये, राजपूतों (चन्द्रवंशियों) और आभीरों (अहीरों) को हिन्दुस्तान के लोगों से अलग करके फिर उनके इतिहास का पता लगाना बहुत बड़े खोजियों का ही काम है. कृष्ण इन्हीं आभीरों के सबसे

کتنی ترقی کر چکی تھی. آریوں کے پہلے جو لوگ رہتے تھے اُن کے دیوتا مہادیو تھے. آریوں کے دیوتا تو اندر، ورُن، اوشا، اگنی، سمدر وغیرہ تھے. پھر، آریوں اور اناریوں کی لڑائیاں ہوئیں. اسی کو دیواسُر سنگرام کہتے ہیں. ان لڑائیوں کے بعد سمدر منتھن ہوا اور اُس میں سے رتن نکلے. رتن دیوتاؤں نے (آریوں نے) لے لئے اور زہر مہادیو نے. اس طرح ہندستان کی پُرانی کلچر دب گئی اور آریوں کی نئی کلچر اس پر حاوی ہو گئی. مگر یہ بات ادھک دنوں تک چل نہ سکی. شنکر کو مہادیو (سب سے بڑا دیوتا) اعلان کرنا پڑا. دھیرے دھیرے آریوں اور آدم ہندیوں کی کلچروں میں ایسا گھول میل ہوا کہ ایک بالکل نئی کلچر پیدا ہو گئی. اس کلچر میں مہادیو کو وشنو کی پوجا کرنی پڑی اور اور وشنو کو مہادیو کے آگے سر جھکانا پڑا. آریہ اور اناریوں کا یہ میل ملاپ ہماری پُرانی تاریخ کا سنہرا حصہ ہے.

اتہاس کا پہیہ چلتا رہا. آریوں کے بعد جتنے بھی لوگ باہر سے آئے اُنھوں نے یہاں کی کلچر، بھاشا، رہن سہن، سب کو اپنا لیا. یہی نہیں، اُنھوں نے یہاں کی کلچر، بھاشا، رہن سہن ہر چیز پر اپنا پورا اثر بھی ڈالا. باہر والے یہاں آئے تو یہاں کے لوگوں میں اس طرح مل جل گئے کہ اُن کی الگ قومیت کا پتہ لگانا بہت کٹھن ہو گیا. مثال کے لئے، راجپوتوں (چندر بنشیوں) اور آبھیروں (اہیروں) کو ہندستان کے لوگوں سے الگ کرکے پھر اُن کے اتہاس کا پتہ لگانا بہت بڑے کھوجیوں کا ہی کام ہے. کرشن انھیں آبھیروں کے سب سے

बड़े नेता थे, ऐसे नेता जिनके कारण महाभारत हुआ और जिन्होंने गीता जैसी बेशक़ीमती किताब हिन्दुस्तान को दी. कौन कह सकता है कि कृष्ण विदेशी नस्ल के थे, कौन ऐसा आदमी है जो कृष्ण को अलग करके हिन्दुस्तान की तारीख़ और उसकी कलचर को समझ सकता है. राम को ही लीजिए. राम के पिता राजा दशरथ अयोध्या के चक्रवर्ती राजा दशरथ थे. यही बात बालमीकि की रामायण से हमें मालूम होती है. मगर मिश्र के राजा 'दुश्रत्त' के बारे में आप क्या कहेंगे ? खोज करने वाले और इतिहास के जानकार लोग बतायेंगे कि इस नाम के मिश्री राजा का पूरा पता उनको है. कथा कहानी में, रामायण में और दूसरी धार्मिक किताबों में राम का चर्चा है. हिन्दुस्तान की हर ज़बान में अपनी अपनी रामायण (राम की कथा) है. अब, मिश्र के राजा 'दुश्रत्त' और आयोध्या के राजा 'दशरथ' का सम्बन्ध कैसे जोड़ा जाय ? भूगोल ने उस सम्बन्ध को ज़रूर तोड़ देने की कोशिश की है, मगर हिन्दुस्तान के जिन हिस्सों में आज रेगिस्तान है वहाँ कभी पानी था, हिन्दुस्तान के पच्छिमी किनारों पर जहाँ आज सागर है वहां कभी धरती थी और शायद मिश्र और हिन्दुस्तान कभी एक में ही जुड़े हुये थे—इन बातों को अगर मान लिया जाय तो इस संबन्ध को जानने समझने में आसानी हो जाती है. यह सब कहने का मतलब सिर्फ़ यह है कि हमारे मुल्क में शुरू से ही तरह-तरह की जातियां आती रही हैं और एक दूसरे से घुलमिल कर एक होती रही हैं. यह एकता कुछ ऐसी रही है कि जिसके नतीजे में उनका पहिले का इतिहास ही जैसे ग़ायब हो गया.

जब मुसलमान आए तो यहां के रहने वालों का हाज़मा ख़राब

بڑے نیتا تھے، ایسے نیتا جن کے کارن مہابھارت ہوا اور جنھوں نے گیتا جیسی بیش قیمتی کتاب ہندستان کو دی۔ کون کہہ سکتا ہے کہ کرشن بدیشی نسل کے تھے، کون ایسا آدمی ہے جو کرشن کو الگ کرکے ہندستان کی تاریخ اور اس کی کلچر کو سمجھ سکتا ہے۔ رام کو ہی لیجیے۔ رام کے پتا راجہ دشرتھ ایودھیا کے چکرورتی راجہ دشرتھ تھے۔ یہی بات بالمیکی کی رامائن سے ہمیں معلوم ہوتی ہے۔ مگر مصر کے راجہ 'دشرت' کے بارے میں آپ کیا کہیں گے؟ کھوج کرنے والے اور اتہاس کے جانکار لوگ بتائیں گے کہ اس نام کے مصری راجہ کا پورا پتہ انکو ہے۔ کتھا کہانی میں، رامائن میں اور دوسری دھارمک کتابوں میں رام کا چرچا ہے۔ ہندستان کی ہر زبان میں اپنی اپنی رامائن (رام کی کتھا) ہے۔ اب، مصر کے راجہ 'دشرت' اور ایودھیا کے راجہ 'دشرتھ' کا سمبندھ کیسے جوڑا جائے؟ بھوگول نے اس سمبندھ کو ضرور توڑ دینے کی کوشش کی ہے، مگر ہندستان کے جن حصوں میں آج ریگستان ہے وہاں کبھی پانی تھا، ہندستان کے پچھمی کناروں پر جہاں آج ساگر ہے وہاں کبھی دھرتی تھی اور شاید مصر اور ہندستان کبھی ایک میں ہی جڑے ہوئے تھے — ان باتوں کو اگر مان لیا جائے تو اس سمبندھ کو جاننے سمجھنے میں آسانی ہو جاتی ہے۔ یہ سب کہنے کا مطلب صرف یہ ہے کہ ہمارے ملک میں شروع ہی سے طرح طرح کی جاتیاں آتی رہی ہیں اور ایک دوسرے سے گھل مل کر ایک ہوتی رہی ہیں۔ یہ ایکتا کچھ ایسی رہی ہے کہ جس کے نتیجے میں ان کا پہلے کا اتہاس ہی جیسے غائب ہو گیا۔

جب مسلمان آئے تو یہاں کے رہنے والوں کا ہاضمہ خراب

हो चुका था. समाज जाति वर्णों के बन्धन में पड़ कर बीमार हो चुका था. इसलिए वह मुसलमानों को अपने भीतर हज़्म न कर सका. मगर मुसलमानों और हिन्दुस्तान के रहने वालों का आपसी नाता कुछ ऐसा क़ायम हुआ कि यहां के रहने वालों ने मुसलमानों से कुछ बातें लीं, मगर बाहर से आने वाले मुसलमानों ने यहां के रहने वालों से खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता, भाषा-कलचर, रीतिरिवाज, शादी-ब्याह सब कुछ सीखा. पुराने ढंग बदले और बहुत हद तक बदले. यहां तक बदले कि हिन्दुस्तानी मुसलमानों और फारस और अरब के मुसलमानों में कोई समानता ही न रह गई. अगर अँग्रेज़ न आ गये होते और उन्होंने मेल मिलाप के बहते दरिया में बाँध न लगाया होता तो ज़रूर ही आज हिन्दुस्तान का नक़्शा बदला हुआ रहता.

ऊपर जो मैंने पिचले छ: हज़ार बरसों के कलचरी मेल-मिलाप का एक हलका सा खाका सामने रखा वह सिर्फ यह बताने के लिए कि इतने लम्बे अरसे तक लगातार मेल-मिलाप के ज़रिए हमारी क़ौमी ज़िन्दगी तरक़्क़ी करती गई और हमारी संस्कृति भी निखरती गई—मगर इन ६ हज़ार बरसों में ६ सौ बरस भी ऐसे नहीं गुज़रे जबकि कलचर के नाम पर, भाषा के नाम पर या किसी ग़ैर-सियासी कारन से दंगे-फ़साद, झगड़े या संघर्ष हुए हों. जब कि योरप में उन्नीसवीं सदी के पहिले कोई सदी और कोई साल नहीं गुज़रा जब वहां खून खच्चर न हुआ हो. सियासी झगड़ों में भी, सामन्ती ज़माने की खूबियों को ध्यान में रखते हुए, हम यह अच्छी तरह देख सकते हैं कि हमारे यहां फ़िरक़ावाराना दंगों का कभी चर्चा

ہو چکا تھا۔ سماج جاتی ورنوں کے بندھن میں پڑ کر بیمار ہو چکا تھا۔ اس لئے وہ مسلمانوں کو اپنے بھیتر ہضم نہ کر سکا۔ مگر مسلمانوں اور ہندستان کے رہنے والوں کا آپسی ناتا کچھ ایسا قائم ہوا کہ یہاں کے رہنے والوں نے مسلمانوں سے کچھ باتیں لیں، مگر باہر سے آنے والے مسلمانوں نے یہاں کے رہنے والوں سے کھانا پینا، کپڑا لتا، بھاشا کلچر، ریت رواج، شادی بیاہ سب کچھ سیکھا۔ پرانے ڈھنگ بدلے اور بہت حد تک بدلے۔ یہاں تک بدلے کہ ہندستانی مسلمانوں اور فارس اور عرب کے مسلمانوں میں کوئی سمانتا ہی نہ رہ گئی۔ اگر انگریز نہ آ گئے ہوتے اور انھوں نے ملاپ کے بہتے دریا میں باندھ نہ لگایا ہوتا تو ضرور ہی آج ہندستان کا نقشہ بدلا ہوا رہتا۔

اوپر جو میں نے پچھلے چھ ہزار برسوں کے کلچری میل ملاپ کا ایک ہلکا سا خاکہ سامنے رکھا وہ صرف یہ بتانے کے لئے کہ اتنے لمبے عرصے تک لگاتار میل ملاپ کے ذریعے ہماری قومی زندگی ترقی کرتی گئی اور ہماری سنسکرتی بھی نکھرتی گئی — مگر ان چھ ہزار برسوں میں چھ سو برس بھی ایسے نہیں گزرے جب کہ کلچر کے نام پر، بھاشا کے نام پر یا کسی غیر سیاسی کارن سے دنگے فساد، جھگڑے یا سنگھرش ہوئے ہوں، جبکہ یورپ میں انیسویں صدی کے پہلے کوئی صدی اور کوئی سال نہیں گزرا جب وہاں خون خچر نہ ہوا ہو۔ سیاسی جھگڑوں میں بھی، سامنتی زمانے کی خوبیوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے، ہم یہ اچھی طرح دیکھ سکتے ہیں کہ ہمارے یہاں فرقہ وارانہ جھگڑوں کا کبھی چرچا

नहीं मिलता. मोटे तौर से समन्वय, मेल-मिलाप, घुलने-मिलने की परम्परा ही हमारे देश की कलचरी परम्परा रही है. और, इसीलिए हमारी क़ौम इतने दिनों तक ज़िन्दा भी रही है.

हमारे देश की एक बहुत बड़ी ख़ूबी यह भी रही है कि इसके भीतर रहने वाले राजाओं ने राज रियासत के लिए आपस में चाहे जितना भी ख़ून बहाया हो, मगर हिन्दुस्तान ने कभी भी किसी दूसरे मुल्क पर हमला नहीं किया. यह एक बहुत बड़ी बात है कि जब कि अंग्रेज, फ्रेन्च, पूर्तगाली और दूसरे लोग ग़ैर मुल्कों पर क़ब्ज़ा जमा रहे थे और वहां की आज़ादी छीन रहे थे, उस समय हिन्दुस्तान के किसी आदमी ने किसी भी देश पर हमला नहीं किया, न किसी की आज़ादी छीनी. पिछले हज़ारों सालों के इतिहास में हिन्दुस्तान में जो आस पास के देशों के साथ प्रेम मोहब्बत के रिश्ते बनाए रखने की परम्परा चली आ रही थी, उसकी रक्षा अन्त तक की गई.

इस तरह हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़िन्दगी की दो बड़ी ख़ूबियां रही हैं—एक तो यह कि यहां की रहने वाली जनता की सांस्कृतिक जीवन धारा समन्वय या मेल जोल की हमवार ज़मीन पर ही हमेशा बही है. दूसरे यह कि यहां की नीति हमेशा पड़ोसियों से दोस्ती और मोहब्बत क़ायम रखने की रही है.

आज, इन्हीं दोनों ख़ूबियों का इम्तहान हो रहा है, क्योंकि हमारी क़ौमी ज़िन्दगी की इन दो ख़ास ख़ूबियों का ख़त्म करने वाली ताक़तें हमारी बदक़िस्मती से उभर आई हैं. अगर हमारी क़ौमी मेल जोल की परम्परा ख़त्म हुई तो हमारी संस्कृति और

نہیں ملتا۔ موٹے طور سے سمنویہ، میل ملاپ، گھلنے ملنے کی پرمپرا ہی ہمارے دیش کی کلچری پرمپرا رہی ہے۔ اور، اسی لئے ہماری قوم اتنے دنوں تک زندہ بھی رہی ہے۔

ہمارے دیش کی ایک بہت بڑی خوبی یہ بھی رہی ہے کہ اس کے بھیتر رہنے والے راجاؤں نے راج ریاست کے لئے آپس میں چاہے جتنا بھی خون بہایا ہو، مگر ہندستان نے کبھی بھی کسی دوسرے ملک پر حملہ نہیں کیا۔ یہ ایک بہت بڑی بات ہے کہ جب کہ انگریز، فرنچ، پرتگالی اور دوسرے لوگ غیر ملکوں پر قبضہ جما رہے تھے اور وہاں کی آزادی چھین رہے تھے، اس سمے ہندستان کے کسی آدمی نے کسی بھی دیش پر حملہ نہیں کیا، نہ کسی کی آزادی چھینی۔ پچھلے ہزاروں سالوں کے اتہاس میں ہندستان میں جو آس پاس کے دیشوں کے ساتھ پریم محبت کے رشتے بنائے رکھنے کی پرمپرا چلی آ رہی تھی، اس کی رکشا انت تک کی گئی۔

اس طرح ہندستان کی قومی زندگی کی دو بڑی خوبیاں رہی ہیں۔ ایک تو یہ کہ یہاں کی رہنے والی جنتا کی سانسکرتک جیون دھارا سمنویہ یا میل جول کی ہموار زمین پر ہی ہمیشہ بہی ہے۔ دوسرے یہ کہ یہاں کی نیتی ہمیشہ پڑوسیوں سے دوستی اور محبت قائم رکھنے کی رہی ہے۔

آج، انھیں دونوں خوبیوں کا امتحان ہو رہا ہے، کیوں کہ ہماری قومی زندگی کی ان دو خاص خوبیوں کو ختم کرنے والی طاقتیں ہماری بدقسمتی سے ابھر آئی ہیں۔ اگر ہماری قومی میل جول کی پرمپرا ختم ہوئی تو ہماری سنسکرتی اور

हमारी जातीय जिन्दगी भी खत्म हुई. अगर हमने किसी के भी चक्कर में फंस कर अपने किसी भी पड़ोसी से झगड़ा किया या किसी की आजादी में दखल दिया तो यह ख़ुदकुशी के अलावा और कुछ न होगा.

हम अगर इन दो बातों को अच्छी तरह समझ लें और अपने दिलों में उतार लें तो फिर आज दिन महात्मा गांधी की जो ग़ैर मौजूदगी हमें इतनी बुरी तरह खटक रही है उसमें कुछ कमी आ जाय और हम अपनी क़ौमी जिन्दगी को ही पाक, संगठित और मजबूत न बना लें, बल्कि हम आने वाली जंग के खतरे को भी बहुत हद तक कम कर दें.

गुरु देव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कुछ समझ बूझ कर और अपने देश की सभ्यता, संस्कृति और परम्परा का ध्यान रख कर ही अपने विद्यालय का नाम शान्ति-निकेतन रखा था. डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद और उनके बहुत से साथी, विदेशों से आए हुए प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करके जिन फ़ैसलों पर पहुँचेंगे, शान्ति क़ायम रखने और युद्ध के खतरे को दूर रखने के लिए जो प्रस्ताव मंज़ूर करेंगे उन्हें अमली जामा पहिनाना हमारा काम होगा.

हम किसी भी विदेशी सरकार के झूटे-सच्चे वायदों पर यक़ीन नहीं कर सकते. मगर हम हर देश की रहने वाली जनता के शान्ति प्रेम पर तो विश्वास कर ही सकते हैं. हालाँकि अमेरिका के प्रसिद्ध हब्शी गायक पाल राब्सन को कलकत्ता वाले ट्रेड युनियन कांग्रेस की तरफ़ से बुलाये गये शान्ति सम्मेलन में शामिल होने नहीं दिया गया फिर भी

ہماری جاتیہ زندگی بھی ختم ہوئی۔ اگر ہم نے کسی کے بھی چکر میں پھنس کر اپنے کسی بھی پڑوسی سے جھگڑا کیا یا کسی کی آزادی میں دخل دیا تو یہ خودکشی کے علاوہ اور کچھ نہ ہوگا۔

ہم اگر ان دو باتوں کو اچھی طرح سمجھ لیں اور اپنے دلوں میں اتار لیں تو پھر آج دن مہاتما گاندھی کی جو غیر موجودگی ہمیں اتنی بری طرح کھٹک رہی ہے اس میں کچھ کمی آجائے اور ہم اپنی قومی زندگی کو ہی پاک، سنگٹھت اور مضبوط نہ بنالیں، بلکہ ہم آنے والی جنگ کے خطرے کو بھی بہت حد تک کم کر دیں۔

گرودیو رویندرناتھ ٹیگور نے کچھ سمجھ بوجھ کر اور اپنے دیش کی سبھیتا، سنسکرتی اور پرمپرا کا دھیان رکھ کر ہی اپنے ودیالیہ کا نام شانتی نکیتن رکھا تھا۔ ڈاکٹر راجندر پرساد اور ان کے بہت ساتھی، ودیشوں سے آئے ہوئے پرتیندھیوں کے ساتھ بات چیت کر کے جن فیصلوں پر پہنچیں گے، شانتی قائم رکھنے اور یدھ کے خطرے کو دور رکھنے کے لئے جو پرستاؤ منظور کریں گے انھیں عملی جامہ پہنانا ہمارا کام ہوگا۔

ہم کسی بھی ودیشی سرکار کے جھوٹے سچے وعدوں پر یقین نہیں کر سکتے۔ مگر ہم ہر دیش کی رہنے والی جنتا کے شانتی پریم پر تو وشواس کر ہی سکتے ہیں۔ حالانکہ امریکہ کے پرسدھ حبشی گایک پال رابسن کو کلکتہ والے ٹریڈ یونین کانگریس کی طرف سے بلائے گئے شانتی سمیلن میں شامل ہونے نہیں دیا گیا پھر بھی

शान्ति का प्रचार, युद्ध को नामुमकिन बना देने की तैयारी तो चलती ही रहनी चाहिए. उस तैयारी को रोकना मौत को दावत देना है.

शान्ति-निकेतन और कलकत्ते के शान्ति सम्मेलनों की ओर हमारा क्या रुख हो यह तो हमारा आत्म-विश्वास, हमारी क़ौम-परस्ती, हमारा स्वाधीनता-प्रेम, हमारी शान्ति-भक्ति और भाई चारे के उसूल में हमारा अक़ीदा ही तय करेगा.

बहरहाल, शान्ति के लिए जो भी कोशिश हो, जहां भी हो हम उसके साथ हैं, क्यों कि इन्सानियत सरमाये के दरिन्दों के ख़ौफ़नाक पंजों से अपने को आज़ाद रखना चाहती है. अमन और अहिंसा में ही हमारी और सारी दुनिया की जिन्दगी है. अगर लड़ाई हुई तो उसका नतीजा किसी के लिए भी अच्छा न होगा.

महात्मा गांधी के बलिदान से सबक़

लेखक—पंडित सुन्दर लाल

साम्प्रदायिकता यानी फ़िरक़ा परस्ती की बीमारी पर राजकाजी, मज़हबी और इतिहासी पहलू से विचार और उसका इलाज, जिसने आख़िर में देश-पिता महात्मा गांधी तक को हमारे बीच में न रहने दिया !　　क़ीमत बारह आना.

किताब नागरी और उर्दू लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है.

मैनेजर 'नया हिन्द'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

شانتی کا پرچار، یدھ کو ناممکن بنا دینے کی تیاری تو چلتی ہی رہنی چاہیے۔ اس تیاری کو روکنا موت کو دعوت دینا ہے۔

شانتی نکیتن اور کلکتے کے شانتی سمیلنوں کی اور ہمارا کیا رخ ہو یہ تو ہمارا آتم وشواس، ہماری قوم پرستی، ہمارا سوادھینتا پریم، ہماری شانتی بھکتی اور بھائی چارے کے اصولوں میں ہمارا عقیدہ ہی طے کرے گا۔

بہرحال، شانتی کے لئے جو بھی کوشش ہو، جہاں بھی ہو ہم اس کے ساتھ ہیں، کیوں کہ انسانیت سرمائے کے درندوں کے خوفناک پنجوں سے اپنے کو آزاد رکھنا چاہتی ہے۔ امن اور اہنسا میں ہی ہماری اور ساری دنیا کی زندگی ہے۔ اگر لڑائی ہوئی تو اس کا نتیجہ کسی کے لئے بھی اچھا نہ ہوگا۔

مہاتما گاندھی کے بلیدان سے سبق

لیکھک — پنڈت سندر لال

سامپردائکتا یعنی فرقہ پرستی کی بیماری پر راج کاجی، مذہبی اور اتہاسی پہلو سے وچار اور اس کا علاج، جس نے آخر میں دیش پتا مہاتما گاندھی تک کو ہمارے بیچ میں نہ رہنے دیا!　　قیمت بارہ آنے

کتاب ناگری اور اردو لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔

منیجر "نیا ہند"
۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد

शेरशाह

[सेठ गोविंददास]

चौथा दृश्य

स्थान—बिहार शरीफ़ में शेरख़ाँ के मकान में लाड मलिका का कमरा.

समय—रात्रि.

[कमरा अन्य कमरों के सदृश ही है, उसी प्रकार सजा हुआ. कमरे में एक तरफ़ माणिक, पन्ने और हीरों का एक ढेर लगा हुआ है; इसी ढेर के नज़दीक मोतियों का एक ढेर, मोतियों का ढेर माणिक, पन्ने और हीरों के ढेर से बहुत बड़ा है. मोती के ढेर के नज़दीक सोने के दो ढेर हैं. सोने का एक ढेर मोती के ढेर से भी बहुत बड़ा है और दूसरा इससे बहुत छोटा. लाड मलिका सोने के दोनों ढेरों के नज़दीक बैठी हुई, छोटे ढेर का सोना तोल तोलकर बड़े ढेर में डाल रही है, जिससे जान पड़ता है कि छोटा ढेर इसलिये छोटा हो रहा है कि उसका सोना तुल तुल कर बड़े ढेर में जा रहा है. लाड के हाथ में काँटा भी छोटा नहीं है, बल्कि उसे काँटा न कह कर तराज़ू कहना ही अधिक ठीक होगा. उसके एक पलड़े में पाँच सेर का एक बाट है. लाड मलिका पसीने में भीग गई है,

شیرشاہ

[سیٹھ گووندداس]

چوتھا درشیہ

استھان — بہار شریف میں شیرخاں کے مکان میں لاڈ ملکہ کا کمرہ۔

سمے — راتری۔

[کمرہ انیہ کمروں کے سدرش ہی ہے، اسی پرکار سجا ہوا۔ کمرے میں ایک طرف مانک، پنے اور ہیروں کا ایک ڈھیر لگا ہوا ہے؛ اسی ڈھیر کے نزدیک موتیوں کا ایک ڈھیر، موتیوں کا ڈھیر مانک، پنے اور ہیروں کے ڈھیر سے بہت بڑا ہے۔ موتی کے ڈھیر کے نزدیک سونے کے دو ڈھیر ہیں۔ سونے کا ایک ڈھیر موتی کے ڈھیر سے بھی بہت بڑا ہے اور دوسرا اس سے بہت چھوٹا۔ لاڈ ملکہ سونے کے دونوں ڈھیروں کے نزدیک بیٹھی ہوئی، چھوٹے ڈھیر کا سونا تول تول کر بڑے ڈھیر میں ڈال رہی ہے، جس سے جان پڑتا ہے کہ چھوٹا ڈھیر اس لئے چھوٹا ہو رہا ہے کہ اس کا سونا تول تول کر بڑے ڈھیر میں جا رہا ہے۔ لاڈ کے ہاتھ میں کانٹا بھی چھوٹا نہیں ہے، بلکہ اسے کانٹا نہ کہہ کر ترازو کہنا ہی ادھک ٹھیک ہوگا۔ اس کے ایک پلڑے میں پانچ سیر کا ایک باٹ ہے۔ لاڈ ملکہ پسینے میں بھیگ گئی ہے،

जिससे जान पड़ता है उसे इस तोल में बहुत परिश्रम हुआ है. वह गा भी रही है.]

गीत

लूट मची है लूट,
जग में, लूट मची है लूट,

निर्धन को धनवान सताये, निर्बल को बलवान,
यह क्या तेरी लीला है, यह कैसी तेरी शान,
मची है कैसी लूट !
लूट मची है लूट ! जग में.........

पानी में रह कर जो मछली बुझा न पाये प्यास,
वह बेचारी, दुख की मारी, क्यों न रहे उदास !
आस गई है टूट
लूट मची है लूट ! जग में.........

धन दौलत का जो हो लोभी प्रेम भला क्या जाने ?
सोने औ चांदी का पुजारी दिल को क्या पहिचाने ?
क़िस्मत ही गई फूट
लूट मची है लूट ! जग में.........

ए दाता तू मुझसे लेले अपनी सारी माया,
इस माया के बदले दे दे प्रेम की ठंढी छाया,
दुख से जाऊँ छूट
लूट मची है लूट ! जग में.........

جس سے جان پڑتا ہے اُسے اس تول میں بہت پرشرم ہوا ہے۔ وہ گا بھی رہی ہے۔]

گیت

لُوٹ مچی ہے لُوٹ،
جگ میں، لوٹ مچی ہے لُوٹ،

نردھن کو دھنوان ستائے، نربل کو بلوان،
یہ کیا تیری لیلا ہے، یہ کیسی تیری شان،
مچی ہے کیسی لوٹ!
لوٹ مچی ہے لوٹ! جگ میں......

پانی میں رہ کر جو مچھلی بجھا نہ پائے پیاس،
وہ بے چاری، دُکھ کی ماری، کیوں نہ رہے اُداس!
آس گئی ہے ٹوٹ
لوٹ مچی ہے لوٹ! جگ میں......

دھن دولت کا جو ہو لوبھی پریم بھلا کیا جانے؟
سونے او چاندی کا پجاری دل کو کیا پہچانے؟
قسمت ہی گئی پھوٹ
لوٹ مچی ہے لوٹ! جگ میں......

اے داتا تو مجھ سے لے لے اپنی ساری مایا،
اس مایا کے بدلے دے دے پریم کی ٹھنڈی چھایا،
دُکھ سے جاؤں چھوٹ
لوٹ مچی ہے لوٹ! جگ میں......

[गाना समाप्त होते होते तोल भी समाप्त हो जाती है. लाड खड़ी होकर एक लम्बी साँस पीकर धीरे धीरे साँस की हवा को निकालती है, मानो परिश्रम से सुस्ताने का प्रयत्न कर रही है. ज्योंही वह हाथ की तराज़ू रखती है त्योंही निज़ाम का प्रवेश. निज़ाम पीछे से आकर खड़ा हो जाता है. उसकी आहट से लाड कुछ चौंक पड़ती है.]

लाड—कौन ?

निज़ाम—चोर !

लाड—(उसकी ओर घूम कर, मुस्कराते हुए) चोर अब क्या लेगा, जब मैं लुट चुकी.

निज़ाम—(सामने आकर) भाभी, यह सब क्या है ?

लाड—(लम्बी साँस लेकर) मेरी वह तमाम दौलत, जिसकी मुल्क में इतनी शोहरत है.

निज़ाम—मैंने तो इतने जवाहरात और सोना कभी देखे ही नहीं.

लाड—कैसे देखते, निज़ाम, किसी के पास शायद ही इतना हो. जानते हो इनकी तादाद ?

निज़ाम—बहुत है, देख रहा हूँ.

लाड—मैं भी, अब तक बहुत है, इतना ही जानती थी, लेकिन आज मुझे ठीक तादाद मालूम हो गई. (माणिक, पन्ने और हीरे के ढेरों की ओर संकेत कर) यह जवाहर डेढ़ सौ हैं, लेकिन इनकी क़ीमत करोड़ों होगी. (मोती के ढेर की ओर संकेत कर) मोती सात मन हैं. (सोने के ढेर की ओर संकेत कर) सोना है डेढ़ सौ मन !

निज़ाम—ओफ़् ! ओह ! (कुछ रुककर) आज यह सब सामान इकठा क्यों किया गया है. तोला क्यों गया है ?

[گانا سماپت ہوتے ہوتے تول بھی سماپت ہو جاتی ہے۔ لاڈ کھڑی ہو کر ایک لمبی سانس پی کر دھیرے دھیرے سانس کی ہوا کو نکالتی ہے، مانو پرشرم سے سستانے کا پرتین کر رہی ہے۔ جیوں ہی وہ ہاتھ کی ترازو رکھتی ہے تیوں ہی نظام کا پرویش۔ نظام پیچھے سے آکر کھڑا ہو جاتا ہے۔ اس کی آہٹ سے لاڈ کچھ چونک پڑتی ہے۔]

لاڈ — کون؟

نظام — چور!

لاڈ — (اس کی اور گھوم کر، مسکراتے ہوئے) چور اب کیا لیگا، جب میں لٹ چکی۔

نظام — (سامنے آکر) بھابھی، یہ سب کیا ہے؟

لاڈ — (لمبی سانس لے کر) میری وہ تمام دولت، جس کی ملک میں اتنی شہرت ہے۔

نظام — میں نے تو اتنے جواہرات اور سونا کبھی دیکھے ہی نہیں۔

لاڈ — کیسے دیکھتے، نظام، کسی کے پاس شاید ہی اتنا ہو، جانتے ہو ان کی تعداد؟

نظام — بہت ہے، دیکھ رہا ہوں۔

لاڈ — میں بھی، اب تک بہت ہے، اتنا ہی جانتی تھی، لیکن آج مجھے ٹھیک تعداد معلوم ہو گئی۔ (مانک، پنے اور ہیرے کے ڈھیروں کی اور سنکیت کر) یہ جواہر ڈیڑھ سو ہیں، لیکن ان کی قیمت کروڑوں ہوگی۔ (موتی کے ڈھیر کی اور سنکیت کر) موتی سات من ہیں (سونے کے ڈھیر کی اور سنکیت کر) سونا ہے ڈیڑھ سو من!

نظام — اُف! اوہ (کچھ رک کر) آج یہ سب سامان اکٹھا کیوں کیا گیا ہے، تولا کیوں گیا ہے۔

लाड—तुम्हारे भाई साहब बंगाल पर हमला करने के लिये कल ही कूच कर रहे है न!

निज़ाम—हाँ, कल ही.

लाड—जाने के वक़्त यह सब सामान उनकी नज़र करूँगी. (लम्बी साँस लेकर) तुमने कहा था न कि उन्होंने मेरी दौलत के लिये मुझसे शादी की है ?

निज़ाम—(भर्राये हुए स्वर में) हाँ,.........सो तो.........सो तो...

लाड—(बीच ही में) चुनार के सूबेदार ने मेरी दौलत के लिये ही मुझसे शादी की थी.

निज़ाम—लेकिन.........लेकिन, भाभी, ताज ख़ाँ और भाईजान का क्या मिलान हो सकता है ? ताज ख़ाँ इस दौलत से ज़ाती फ़ायदे उठाना चाहते थे, भाईजान के लिये 'ज़ाती' ऐसी कोई चीज़ रह ही नहीं गई है; वह तो सब कुछ मुल्क व रिआया...

लाड—(बीच ही मे) ठीक है, इसीलिये तो पुराने सूबेदार को मैं ख़ुद इसका कोई जुज़ तक न दे सकी. और तुम्हारे भाई साहब को बिना एक जवाहर, एक मोती और एक रत्ती सोना भी अपने पास रखे, सब का सब दे रही हूँ. (कुछ रुककर) एक लम्बी साँस लेकर) और.........और भी कुछ ऐसी वजूहात हैं, जिनसे अब मैं उस दौलत को एक लमहा भी अपने पास नहीं रखना चाहती.

निज़ाम—और भी वजूहात हैं !

लाड—(लम्बी साँस लेकर) हाँ, निज़ाम, मैं नहीं चाहती कि दौलत की वजह से अब मैं फिर ज़बरदस्त किसी की बीबी बनाई जाऊँ (कुछ रुककर, थोड़ा सा सोना हाथ में उठाकर, उसे उछालते हुए)

لاڈ — تمہارے بھائی صاحب بنگال پر حملہ کرنے کے لئے کل ہی کوچ کر رہے ہیں نہ!

نظام — ہاں، کل ہی۔

لاڈ — جانے کے وقت یہ سب سامان ان کی نذر کروں گی (لمبی سانس لےکر) تم نے کہا تھا نا کہ انھوں نے میری دولت کے لئے مجھ سے شادی کی ہے؟

نظام — (بھرّائے ہوئے سُر میں) ہاں، ...... سو تو ...... سو تو ......

لاڈ — (بیچ ہی میں) چُنار کے صوبے دار نے میری دولت کے لئے ہی مجھ سے شادی کی تھی۔

نظام — لیکن ...... لیکن، بھابھی، تاج خاں اور بھائی جان کا کیا ملان ہو سکتا ہے؟ تاج خاں اس دولت سے ذاتی فائدے اُٹھانا چاہتے تھے، بھائی جان کے لئے 'ذاتی' ایسی کوئی چیز رہ ہی نہیں گئی ہے؛ وہ تو سب کچھ ملک و رعایا......

لاڈ — (بیچ ہی میں) ٹھیک ہے، اسی لئے تو پرانے صوبیدار کو میں خود اس کا کوئی جُز تک نہ دے سکی۔ اور تمہارے بھائی صاحب کو بنا ایک جواہر، ایک موتی اور ایک رتّی سونا بھی اپنے پاس رکھے، سب کا سب دے رہی ہوں۔ (کچھ رک کر ایک لمبی سانس لیکر) اور ...... اور بھی کچھ ایسی وجوہات ہیں، جن سے اب میں اس دولت کو ایک لمحہ بھی اپنے پاس نہیں رکھنا چاہتی۔

نظام — اور بھی وجوہات ہیں؟

لاڈ — (لمبی سانس لےکر) ہاں، نظام، میں نہیں چاہتی کہ دولت کی وجہ سے اب میں پھر زبردستی کسی کی بی بی بنائی جاؤں (کچھ رک کر، تھوڑا سا سونا ہاتھ میں اٹھا کر، اُسے اچھالتے ہوئے)

यह भी बड़े वज़नी होते हैं. तुम.........तुम.........नहीं जानते, निज़ाम, कि इस वज़न को ढोते ढोते मेरा दिल कितना घबरा गया है, तुम्हें न देखती तो शायद टूट ही जाता, पर ठीक.........हाँ ऐन मौक़े पर तुम फिर नज़र पड़ गये.........चुनार के पुराने सूबेदार को मेरा दिल नहीं, यह कंकर, पत्थर, (रत्नों को ढेर में डाल, फिर सोना उठाते हुए) पत्थरों की यह रूह चाहिये थी. उसे तो न मिल सकी, तुम्हारे भाई जान को भी इन्हीं बेजान चीज़ों की ज़रूरत थी, ख़ुद के लिये न सही, मुल्क के लिये सही, उन्हें देकर इस वज़न के साथ ही शादी के वज़न से भी छुटकारा पाकर, क्योंकि इसी.........इसीलिये तो उन्होंने शादी की थी न, हलकी हो जाना चाहती हूँ. (सोने को सोने के ढेर में डालती है.)

निज़ाम—हलकी होकर क्या हज करने जाओगी भाभी ?

लाड—(हँसकर) तुम बड़े शरीर हो,

निज़ाम—देखो, भाभी, मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ, अगर हज करने जाओ तो मुझे भी साथ ले चलना.

लाड—तुम.........तुम तो साथ चलोगे, तुम साथ न हुए तो हज क्या बहिश्त में भी मुझे राहत नहीं मिल सकती. (निज़ाम का हाथ अपने हाथ में लेकर प्रेम से दबाती है)

[निज़ाम कुछ नहीं कहता, न हाथ छुड़ाता है. उसका मुख झुक जाता है. लाड उसकी ओर देखती रहती हैं. कुछ देर निस्तब्धता.]

निज़ाम—(एक बार सर उठाकर लाड की ओर देख, फिर सर नीचा करते हुए) भाभी !.........

یہ بھی بڑے وزنی ہوتے ہیں۔ تم......... تم......... نہیں جانتے، نظام، کہ اس وزن کو ڈھوتے ڈھوتے میرا دل کتنا گھبرا گیا ہے، تمہیں نہ دیکھتی تو شاید ٹوٹ ہی جاتا، پر ٹھیک.........ہاں عین موقعے پر تم پھر نظر پڑ گئے.........چنار کے پرانے صوبے دار کو میرا دل نہیں، یہ کنکر، پتھر، (رتنوں کو ڈھیر میں ڈال، پھر سونا اٹھاتے ہوئے) پتھروں کی یہ روح چاہیے تھی۔ اسے تو نہ مل سکی، تمہارے بھائی جان کو بھی انھیں بے جان چیزوں کی ضرورت تھی، خود کے لئے نہ سہی، ملک کے لئے سہی، انھیں دے کر اس وزن کے ساتھ ہی شادی کے وزن سے بھی چھٹکارہ پاکر، کیوں کہ اسی.........اسی لئے تو انھوں نے شادی کی تھی نا، ہلکی ہو جانا چاہتی ہوں۔ (سونے کو سونے کے ڈھیر میں ڈالتی ہے۔)

نظام — ہلکی ہو کر کیا حج کرنے جاؤگی بھابی؟

لاڈ — (ہنس کر) تم بڑے شریر ہو،

نظام — دیکھو، بھابی، میں مذاق نہیں کر رہا ہوں، اگر حج کرنے جاؤ تو مجھے بھی ساتھ لے چلنا۔

لاڈ — تم.........تم تو ساتھ چلوگے، تم ساتھ نہ ہوئے تو حج کیا بہشت میں بھی مجھے راحت نہیں مل سکتی۔ (نظام کا ہاتھ اپنے ہاتھ میں لے کر پریم سے دباتی ہے)

[نظام کچھ نہیں کہتا، نہ ہاتھ چھڑاتا ہے۔ اس کا مکھ جھک جاتا ہے۔ لاڈ اس کی اور دیکھتی رہتی ہے۔ کچھ دیر نستبدھتا۔]

نظام — (ایک بار سر اٹھا کر لاڈ کی اور دیکھ، پھر سر نیچا کرتے ہوئے) بھابی !.........

लाड—हूँ ! (ओठों पर स्थिर मुस्कराहट)

निज़ाम—(कुछ अनमना सा होकर, हाथ छुड़ाने का उपक्रम करते हुए, पर लाड हाथ वैसे ही दबाये रहती है) मेरी समझ में एक बात नहीं आती.

लाड—क्या ?

निज़ाम—(उस सिलसिले में निज़ाम का हाथ छूट जाता है) उस दिन की ही बात ले लीजिए. आप बीमार थीं मैंने भाभी भाभी पुकारा. आपकी मैना 'बानू' पुकार उठी. न जाने मेरे मुँह से भी कैसे बानू निकल गया, आह !

लाड—फिर ?

निज़ाम—फिर ?.........फिर क्या हुआ, आप जानती हैं. हमें इतने नज़दीक नहीं आना चाहिए था.

लाड—(मुस्कराते हुए) पर अब तो नज़दीक पहुंच ही गये हैं.

निज़ाम—(दुःख से) नज़दीक पहुँच गये हैं. मैं उसी वक़्त सब कुछ कहने और माफ़ी माँगने के लिए भाई साहब के पास गया था, पर उन्हें फ़ुर्सत ही न थी, उन्होंने मेरी बात ही न सुनी. बाद में मेरी भी हिम्मत न पड़ी; बुज़दिल ही तो ठहरा.

लाड—(उदास होकर) नहीं, नहीं, निज़ाम ऐसा नहीं कहते, दिल को इतना छोटा न बनाओ. माना कि उस दिन हमारे दिल बे-काबू हो गये थे, पर गुनहगार हम न थे. कौन सी गुस्ताख़ी की थी हमने ? हम इन्सान हैं, हमारे पास इन्सान के दिल हैं, जो ख़ुदा की सबसे बेहतरीन नियामत हैं.........ख़ुदा की यह नियामत हमारी अपनी चीज़ है.........दिल हँसता है, दिल रोता है, और दिल

لاڈ— ہوں! (ہونٹوں پر مستقر مسکراہٹ)

نظام—(کچھ اَن منا سا ہوکر، ہاتھ چھڑانے کا اُپکرم کرتے ہوئے، پر لاڈ ہاتھ ویسے ہی دبائے رہتی ہے) میری سمجھ میں ایک بات نہیں آتی۔

لاڈ— کیا؟

نظام—(اُس سلسلے میں نظام کا ہاتھ چھوٹ جاتا ہے) اُس دن کی ہی بات لے لیجیے۔ آپ بیمار تھیں میں نے بھابی بھابی پکارا۔ آپ کی مینا 'بانو' پکار اُٹھی۔ نہ جانے میرے منہ سے بھی کیسے بانو نکل گیا، آہ!

لاڈ— پھر؟

نظام— پھر؟...... پھر کیا ہوا، آپ جانتی ہیں۔ ہمیں اتنے نزدیک نہیں آنا چاہیے تھا۔

لاڈ— (مسکراتے ہوئے) پر اب تو نزدیک پہنچ ہی گئے ہیں۔

نظام—(دُکھ سے) نزدیک پہنچ گئے ہیں۔ میں اُسی وقت سب کچھ کہنے اور معافی مانگنے کیلئے بھائی صاحب کے پاس گیا تھا، پر انھیں فرصت ہی نہ تھی، اُنھوں نے میری بات ہی نہ سُنی۔ بعد میں میری بھی ہمت نہ پڑی؛ بُزدل ہی تو ٹھہرا۔

لاڈ— (اُداس ہوکر) نہیں، نہیں، نظام ایسا نہیں کہتے، دل کو اتنا چھوٹا نہ بناؤ۔ مانا کہ اُس دن ہمارے دل بے قابو ہوگئے تھے پر گنہگار ہم نہ تھے۔ کون سی گستاخی کی تھی ہم نے؟ ہم انسان ہیں، ہمارے پاس انسان کے دل ہیں، جو خدا کی سب سے بہترین نعمت ہیں...... خدا کی یہ نعمت ہماری اپنی چیز ہے...... دل ہنستا ہے، دل روتا ہے، اور دل

ہے

मुहब्बत करता है. निज़ाम, जो मुहब्बत दिल से होती है, वह पाक मुहब्बत है (कुछ रुककर दृढ़ता से) हमारी मुहब्बत पाक है, यक़ीन करो, निज़ाम, हमारी मुहब्बत पाक है.

निज़ाम—(मानो अपने आप से कह रहा हो) हमारी मुहब्बत पाक है. (कुछ रुक कर रुँधे हुए गले से) भाभी !.........

लाड—भाभी ?.........निज़ाम तुम मुझे भाभी कह कर ही बुलाते हो, पर जानते हो, (गला भारी हो जाता है आँसू छलछला आते हैं) जब तुम भाभी कहते हो, मुझे ऐसा मालूम होता है कि तुम मुझे बानू ही कह रहे हो.........बानू........बानू......बदनसीब बानू !

निज़ाम—(मानो फिर अपने आप से कह रहा हो) बानू ! ....भाभी.......बानू.........भाभी !.........(हाथ सर पैर रखकर) या ख़ुदा ! (कुछ रुककर, लाड के निकट जा, अपने दोनों हाथ उसकी दोनों कन्धों पर रख, लाड की ओर ध्यान से देखते हुए, जो उसके तरफ़ एकटक मुग्ध सी देख रही है.) कुछ समझ में नहीं आता ! (कुछ रुक कर लाड के कन्धों को छोड़, सर घुमाते हुए, जो अगले वाक्य के साथ साथ होता है) हम गिर रहे हैं !......... भाभी ! हमारी मुहब्बत पाक नहीं !......हम जब तक अपने दिलों पर पूरा क़ाबू न कर लें, हमें मिलना जुलना, सुना, मिलना जुलना ही बंद कर देना चाहिए. (शीघ्रता से प्रस्थान)

लाड—(निज़ाम के पीछे पीछे जाते हुए) निज़ाम !...निज़ाम... सुनो.........सुनो तो.........

लघु-यवनिका

محبت کرتا ہے۔ نظام، جو محبت دل سے ہوتی ہے، وہ پاک محبت ہے (کچھ رُک کر دڑھتا سے) ہماری محبت پاک ہے، یقین کرو، نظام، ہماری محبت پاک ہے۔

نظام — (مانو اپنے آپ سے کہہ رہا ہو) ہماری محبت پاک ہے۔ (کچھ رُک کر روندھے ہوئے گلے سے) بھابی !.........

لاڈ — بھابی ؟......... نظام تم مجھے بھابی کہہ کر ہی بلاتے ہو، پر جانتے ہو، (گلا بھاری ہو جاتا ہے آنسو چھلچھلا آتے ہیں) جب تم بھابی کہتے ہو، مجھے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ تم مجھے بانو ہی کہہ رہے ہو......... بانو......... بانو......... بد نصیب بانو !

نظام — (مانو پھر اپنے آپ سے کہہ رہا ہو) بانو......... بھابی......... بانو......... بھابی !......... (ہاتھ سر پر رکھ کر) یا خدا ! (کچھ رُک کر، لاڈ کے نکٹ جا، اپنے دونوں ہاتھ اُس کی دونوں کندھوں پر رکھ، لاڈ کی اور دھیان سے دیکھتے ہوئے، جو اُس کی طرف اِک ٹک مگدھ سی دیکھ رہی ہے۔) کچھ سمجھ میں نہیں آتا ! (کچھ رُک کر لاڈ کے کندھوں کو چھوڑ، سر گھماتے ہوئے، جو اگلے واکیہ کے ساتھ ساتھ ہوتا ہے) ہم گر رہے ہیں !...... بھابی ! ہماری محبت پاک نہیں !......... ہم جب تک اپنے دلوں پر پورا قابو نہ کر لیں، ہمیں ملنا جلنا، سُنا، ملنا جلنا ہی بند کر دینا چاہئے۔ (شیگھرتا سے پرستھان)

لاڈ — (نظام کے پیچھے پیچھے جاتے ہوئے) نظام !...... نظام...... سُنو...... سُنو تو.........

لگھو یونیکا

पाचवाँ-दृश्य

स्थान—रोहतास गढ़ के क़िले में शेरख़ाँ का कमरा.

समय—दोपहर.

[कमरा उस समय के अन्य कमरों के सदृश ही है. शेरख़ाँ और ब्रह्मादित्य बैठे हुए बातें कर रहे हैं. शेरख़ाँ हुक़्क़ा पी रहा है.]

ब्रह्मादित्य—आपकी असाधारण प्रतिभा, उसमें शौर्य, साहस, धैर्य और त्याग के विलक्षण पुट, मैं आजकल जिस प्रकार देख रहा हूँ, उस प्रकार इसके पूर्व कभी भी देखने को नहीं मिला.

शेरख़ाँ—ऐसा !

ब्रह्मादित्य—जी हाँ, गुजरात विजय कर हुमायूँ बिहार की ओर रवाना हुआ है, यह सुनते ही बंगाल विजय के बड़े भारी लोभ का संवरण कर, बंगाल विजय का कार्य अधूरा ही छोड़, आप तत्काल बिहार लौट आए. हुमायूँ बिहार के कुछ हिस्से को लेकर बंगाल पहुंचा. आपने छल, बल किसी प्रकार रोहतास गढ़ को ले, स्त्री आदि को ऐसे सुरक्षित स्थान में रख, हुमायूँ के बंगाल रहते हुए क़न्नौज तक उत्तर भारत के अनेक स्थानों को जीता और ज्यों ही ख़बर मिली कि हुमायूँ बंगाल से लौट रहा है, त्यों ही उत्तर भारत के इन जीते हुए स्थानों की भी परवाह न कर आप बिहार के दक्षिण में किसी सुरक्षित स्थान में पहुँच, वहाँ अपनी सेना का संगठन करना चाहते हैं. प्रतिभा का और कोई प्रमाण चाहिये ?

शेरख़ाँ—लेकिन यह सब तो ज़रूरत मुझसे करा रही है.

प्रतिभा = ज़हानत. शौर्य = बहादुरी.

پانچواں درشیہ

ستھان۔ روہتاس گڑھ کے قلعہ میں شیر خان کا کمرہ۔

سمے۔ دوپہر۔

[کمرہ اس سمے کے انیہ کمروں کے سدرش ہی ہے۔ شیر خاں اور برہمادتیہ بیٹھے ہوئے باتیں کر رہے ہیں۔ شیر خاں حقہ پی رہا ہے۔]

برہمادتیہ۔ آپ کی اسادھارن پرتبھا، اس میں شوریہ، ساہس، دھیریہ اور تیاگ کے ولکشن پُٹ، میں آج کل جس پرکار دیکھ رہا ہوں، اس پرکار اس کے پورو کبھی بھی دیکھنے کو نہیں ملا۔

شیر خاں۔ ایسا!

برہمادتیہ۔ جی ہاں، گجرات وجے کر ہمایوں بہار کی اور روانہ ہوا ہے، یہ سنتے ہی بنگال وجے کے بڑے بھاری لوبھ کا سنورن کر، بنگال وجے کا کاریہ ادھورا ہی چھوڑ، آپ تتکال بہار لوٹ آئے۔ ہمایوں بہار کے کچھ حصے کو لیکر بنگال پہنچا۔ آپ نے چھل، بل کسی پرکار روہتاس گڑھ کو لے، ستری آدی کو ایسے سرکشت ستھان میں رکھ، ہمایوں کے بنگال رہتے ہوئے قنوج تک اُتر بھارت کے انیک ستھانوں کو جیتا اور جیوں ہی خبر ملی کہ ہمایوں بنگال سے لوٹ رہا ہے، تیوں ہی اُتر بھارت کے ان جیتے ہوئے ستھانوں کی بھی پرواہ نہ کر آپ بہار کے دکھن میں کسی سرکشت ستھان میں پہنچ، وہاں اپنی سینا کا سنگٹھن کرنا چاہتے ہیں۔ پرتبھا کا اور کوئی پرمان چاہیے؟

شیر خاں۔ لیکن یہ سب تو ضرورت مجھ سے کرا رہی ہے۔

پرتبھا = ذہانت۔ شوریہ = بہادری۔

ब्रह्मादित्य—पर आप उलटी बातें भी कर सकते थे. पहले हुमायूँ के माँगने पर आप अकेला चुनार न लौटा सके थे. असमय ही उससे लड़ पड़े थे, और अब आपको अपने उद्देश्य के सामने बंगाल की चिन्ता है, न जीते हुए उत्तर भारत के स्थानों की.

शेरख़ाँ—पंडित, चुनार में बेवक़ूफ़ी से लड़कर, और उसे खोकर, मैंने जो सीखा है, वह मैं जिन्दगी भर नहीं भूल सकता (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) गुजरात की जंग इतनी जल्द ख़त्म हो जायगी, यह मैं नहीं समझता था, नहीं तो बंगाल पर इस वक़्त हमला ही न करता.

ब्रह्मादित्य—मैं भी इतनी दूर तक न देख सका, नहीं तो आपको यह आक्रमण न करने देता.

शेरख़ाँ—गुजरात की जीत के सबब, हुमायूँ की फ़ौज के हौसले बहुत बढ़ गये थे (हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) रूमी ख़ाँ की मातहती में उसके तोपख़ाने ने गुजरात में जैसा काम किया था, उसने इस हौसले को और बढ़ा दिया था.

ब्रह्मादित्य—फिर चटगाँव का पुर्तगाली जहाज़ी बेड़ा भी हमारे विरुद्ध था.

शेरख़ाँ—ठीक, ऐसी हालत में हुमायूँ के बिहार की तरफ़ कूच करने पर हमारा बंगाल छोड़कर न हटना महज़ बेवक़ूफ़ी ही होती.

ब्रह्मादित्य—बिलकुल.

शेरख़ाँ—बाबर का हुमायूँ पर कितना असर है, इसका पता इसी से लगता है कि इस मुल्क में जिस बरसात के मौसम की बाबर ने तारीफ़ की है, और जो बंगाल में शायद सबसे अच्छा

برہمادتیہ — پر آپ اُلٹی باتیں بھی کرسکتے تھے. پہلے ہمایوں کے مانگنے پر آپ اکیلا چنار نہ لوٹا سکے تھے. اسمے ہی اُس سے لڑ پڑے تھے، اور اب آپ کو اپنے اُدیشیہ کے سامنے بنگال کی چنتا ہے، نہ جیتے ہوئے اُتر بھارت کے استھانوں کی.

شیرخاں — پنڈت، چنار میں بے وقوفی سے لڑکر، اور اُسے کھوکر، میں نے جو سیکھا ہے، وہ میں زندگی بھر نہیں بھول سکتا (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) گجرات کی جنگ اتنی جلد ختم ہو جائے گی یہ میں نہیں سمجھتا تھا، نہیں تو بنگال پر اس وقت حملہ ہی نہ کرتا.

برہمادتیہ — میں بھی اتنی دور تک نہ دیکھ سکا، نہیں تو آپ کو یہ آکرمن نہ کرنے دیتا.

شیرخاں — گجرات کی جیت کے سبب، ہمایوں کی فوج کے حوصلے بہت بڑھ گئے تھے (حقہ گڑگڑا کر دھواں چھوڑتے ہوئے) رومی خاں کی ماتحتی میں اس کے توپ خانے نے گجرات میں جیسا کام کیا تھا، اس نے اس حوصلے کو اور بڑھا دیا تھا.

برہمادتیہ — پھر چٹگاؤں کا پرتگالی جہازی بیڑا بھی ہمارے ورودھ تھا.

شیرخاں — ٹھیک، ایسی حالت میں ہمایوں کے بہار کی طرف کوچ کرنے پر ہمارا بنگال چھوڑکر نہ ہٹنا محض بے وقوفی ہی ہوتی.

برہمادتیہ — بالکل.

شیرخاں — بابر کا ہمایوں پر کتنا اثر ہے، اس کا پتہ اسی سے لگتا ہے کہ اس ملک میں جس برسات کے موسم کی بابر نے تعریف کی ہے، اور جو بنگال میں شاید سب سے اچھا

होता है, वह मौसम हुमायूँ ने बंगाल में ही गुजारना चाहा. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए): बादशाह सलामत बंगाल में रम गए हैं, यह पक्की ख़बर पाने के बाद हमने शुमाली हिन्द की क़न्नौज तक की जगहों को फ़तह कर कोई ग़लती नहीं की.

ब्रह्मादित्य—बल्कि इसने हमारी धाक जमा दी.

शेरख़ाँ—और अब जब हुमायूँ बंगाल से लौट रहा है, तब भी हमारा उसके रास्ते से हट जाना ही मुनासिब है, क्योंकि अभी भी मुक़ाबले में हम उससे लड़ सकते हैं यह मैं नहीं मानता.

ब्रह्मादित्य—ठीक, इन जीतों से हमारी जो धाक जम गई है उसे खो देने के स्थान पर जीते हुए परगनों को छोड़ देना कहीं अच्छा है.

शेरख़ाँ—(हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) पंडित, ठीक वक़्त पर ही मैं हुमायूँ का मुक़ाबला करूँगा. ठीक वक़्त के एक दिन भी पहले नहीं,

ब्रह्मादित्य—तभी तो मैं आपकी प्रतिभा की सराहना कर रहा था. मैं आपसे सर्वथा सहमत हूँ, स्त्रियों आदि को यहीं छोड़ भावी संगठन के लिए हमें बिहार के दक्षिण में ही हट जाना चाहिए.

शेरख़ाँ—और वहाँ तैयारी करते हुए ठीक मौक़े का इन्तज़ार करना चाहिए. लाड मलिका के डेढ़ सौ जवाहर, सात मन मोती और डेढ़ सौ मन सोने की वजह से हमें अब पैसे की कमी तो हो नहीं सकती. (हुक्का गुड़गुड़ा कर धुआँ छोड़ते हुए) धीरे धीरे फ़ौज भी हमारे पास काफ़ी इकट्ठी होती जा रही है.

ہوتا ہے، وہ موسم ہمایوں نے بنگال میں ہی گزارنا چاہا۔ (حقہ گڑگڑا کر دُھواں چھوڑتے ہوئے) بادشاہ سلامت بنگال میں رم گئے ہیں، یہ پکی خبر پانے کے بعد ہم نے شمالی ہند کی قنوج تک کی جگہوں کو فتح کر کوئی غلطی نہیں کی۔

برہمادتیہ — بلکہ اس نے ہماری دھاک جمادی۔

شیرخاں — اور اب جب ہمایوں بنگال سے لوٹ رہا ہے، تب بھی ہمارا اُس کے راستے سے ہٹ جانا ہی مناسب ہے، کیونکہ ابھی بھی مقابلے میں ہم اُس سے لڑ سکتے ہیں یہ میں نہیں مانتا۔

برہمادتیہ — ٹھیک، ان جیتوں سے ہماری جو دھاک جم گئی ہے اُسے کھو دینے کے ستھان پر جیتے ہوئے پرگنوں کو چھوڑ دینا کہیں اچھا ہے۔

شیرخاں — (حقہ گڑگڑا کر دُھواں چھوڑتے ہوئے) پنڈت، ٹھیک وقت پر ہی میں ہمایوں کا مقابلہ کروں گا۔ ٹھیک وقت کے ایک دن بھی پہلے نہیں،

برہمادتیہ — تبھی تو میں آپ کی پرتبھا کی سراہنا کر رہا تھا۔ میں آپ سے سروتھا سہمت ہوں، استریوں آدی کو یہیں چھوڑ بھاوی سنگٹھن کیلئے ہمیں بہار کے دکھن میں ہی ہٹ جانا چاہئے۔

شیرخاں — اور وہاں تیاری کرتے ہوئے ٹھیک موقعے کا انتظار کرنا چاہئے۔ لاڈ ملکہ کے ڈیڑھ سو جواہر، سات من موتی اور ڈیڑھ سو من سونے کی وجہ سے ہمیں اب پیسے کی کمی تو ہو نہیں سکتی۔ (حقہ گڑگڑا کر دُھواں چھوڑتے ہوئے) دھیرے دھیرے فوج بھی ہمارے پاس کافی اکٹھی ہوتی جا رہی ہے۔

ब्रह्मादित्य—और हिन्दू तथा मुसलमान दोनों ही सेना में भरती भी हो रहे हैं.

[कुछ देर दोनों चुप रहते हैं. शेरख़ाँ हुक़्क़ा गुड़गुड़ाता रहता है.]

शेरख़ाँ—(गम्भीरता से सोचते हुए) एक बात जानते हो, पंडित ?

ब्रह्मादित्य—क्या ?

शेरख़ाँ—बाबर की नौकरी करके मैं तो उसकी फ़ौज में बलवा न करा सका. लेकिन हुमायूँ की नौकरी कर तुम उसकी फ़ौज में बलवा करा सकोगे, इसकी मुझे उम्मीद है.

ब्रह्मादित्य—(सोचते हुए, मुस्करा कर) आप ऐसा समझते हैं. ?

शेरख़ाँ—(.उसी प्रकार विचारते हुए) हाँ, और मैं समझता हूँ, कि फिर मौक़ा आ गया, जब हमें अपने कामों का बँटवारा कर लेना चाहिये.

ब्रह्मादित्य—(विचारते हुए) मैं तैयार हूँ.

शेरख़ाँ—(हुक़्क़ा गुड़गुड़ा कर, धुआँ छोड़ते हुए, कुछ रुककर) पंडित,........पंडित, हलाँ कि हम बंगाल फ़तह नहीं कर सके, हालाँकि शुमाली हिन्द की जीती हुई जगहों को भी हमें छोड़ना पड़ रहा है, लेकिन इन दिनों हमने जो कुछ भी किया है, और मामलात जिस तरह बढ़ रहे हैं, उन्हें देखते। हुए अब मुझे यक़ीन होता है कि हम इन मुग़लों को मुल्क से बाहर निकाल सकेंगे,

ब्रह्मादित्य—और इसके पश्चात् क्या होगा, जानते हैं ?

برہمادتیہ — اور ہندو تتھا مسلمان دونوں ہی سینا میں بھرتی بھی ہو رہے ہیں۔

[کچھ دیر دونوں چپ رہتے ہیں۔ شیر خاں حقہ گڑگڑاتا رہتا ہے۔]

شیر خاں — (گمبھیرتا سے سوچتے ہوئے) ایک بات جانتے ہو، پنڈت؟

برہمادتیہ — کیا؟

شیر خاں — بابر کی نوکری کرکے میں تو اس کی فوج میں بلوہ نہ کرا سکا۔ لیکن ہمایوں کی نوکری کر تم اس کی فوج میں بلوہ کرا سکوگے اس کی مجھے امید ہے۔

برہمادتیہ — (سوچتے ہوئے، مسکرا کر) آپ ایسا سمجھتے ہیں۔؟

شیر خاں — (اسی پرکار وچارتے ہوئے) ہاں، اور میں سمجھتا ہوں کہ پھر موقع آگیا، جب ہمیں اپنے کاموں کا بٹوارا کر لینا چاہیے۔

برہمادتیہ — (وچارتے ہوئے) میں تیار ہوں۔

شیر خاں — (حقہ گڑگڑا کر، دھواں چھوڑتے ہوئے، کچھ رک کر) پنڈت...... پنڈت، حالانکہ ہم بنگال فتح نہیں کر سکے، حالانکہ شمالی ہند کی جیتی ہوئی جگہوں کو بھی ہمیں چھوڑنا پڑ رہا ہے، لیکن ان دنوں ہم نے جو کچھ بھی کیا ہے، اور معاملات جس طرح بڑھ رہے ہیں، انھیں دیکھتے ہوئے اب مجھے یقین ہوتا ہے کہ ہم ان مغلوں کو ملک سے باہر نکال سکیں گے،

برہمادتیہ — اور اس کے پشچات کیا ہوگا، جانتے ہیں؟

शेरख़ाँ—क्या ?

ब्रह्मादित्य—आप इस देश के बादशाह होंगे.

शेरख़ाँ—(उठते और मुस्कराते हुए) अब तुमने फिर फ़िज़ूल की बातें शुरू कीं. (कुछ रुककर) पंडित, मैं इस मुल्क का बादशाह नहीं, ख़ादिम, सुना, सच्चा ख़ादिम ही रहना चाहता हूँ.

लघु-यवनिका

شیر خاں — کیا ؟

برہما دتیہ — آپ اس دیش کے بادشاہ ہوں گے۔

شیر خاں — (اُٹھتے اور مسکراتے ہوئے) اب تم نے پھر فضول کی باتیں شروع کیں۔ (کچھ رُک کر) پنڈت، میں اس مُلک کا بادشاہ نہیں، خادم، سُنا، سچا خادم ہی رہنا چاہتا ہوں۔

لگھو یونیکا

सम्मेलन से हमारी अपील

[भाई सरस्वती कुमार]

मेरठ में पिछले साल जब हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इजलास हुआ था उस वक़्त हमारे सामने मसला यह था कि विधान सभा किस भाषा को राज भाषा के रूप में मंज़ूर करे. उसी समय ऐसा लग रहा था हिन्दी भाषा को राज भाषा और नागरी लिपि को राज लिपि की शक्ल में मंज़ूर कर लिया जायेगा.

मेरठ के इजलास में जिन नेताओं ने हिस्सा लिया था उनकी बातों से ऐसा लग रहा था कि जहां तक नागरी का सम्बन्ध है वह सबको मंज़ूर है. मगर हिन्दी का क्या रूप हो इस पर काफ़ी मतभेद था. कुछ लोग ऐसे थे जो हिन्दी को शुद्ध करने के फ़िराक़ में उसे संस्कृत के शब्दों से भर देना चाहते थे. उनका कहना यह था कि बिना संस्कृत शब्दों को भरे हिन्दी का रूप ऐसा नहीं हो सकता कि बंगाल, गुजरात और महाराष्ट्र के लोग उसे आसानी के साथ बोल लिख और समझ सकें. दूसरे वह लोग थे जो सरल और सादी भाषा चाहते थे. उनका कहना यह था कि अगर हिन्दी को राजभाषा बनने के साथ साथ जनता की भाषा भी बनना है तो उसे कठिन शब्दों से बचना होगा. उनका कहना था कि बंगाल, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक वग़ैरा में

سمیلن سے ہماری اپیل

(بھائی سرسوتی کمار)

میرٹھ میں پچھلے سال جب ہندی ساہتیہ سمیلن کا اجلاس ہوا تھا اُس وقت ہمارے سامنے مسئلہ یہ تھا کہ ودھان سبھا کس بھاشا کو راج بھاشا کے رُوپ میں منظور کرے۔ اسی سمے ایسا لگ رہا تھا ہندی بھاشا کو راج بھاشا اور ناگری لپی کو راج لپی کی شکل میں منظور کر لیا جائے گا۔

میرٹھ کے اجلاس میں جن نیتاؤں نے حصہ لیا تھا اُن کی باتوں سے ایسا لگ رہا تھا کہ جہاں تک ناگری کا سمبندھ ہے وہ سب کو منظور ہے۔ مگر ہندی کا کیا روپ ہو اِس پر کافی مت بھید تھا۔ کچھ لوگ ایسے تھے جو ہندی کو شدھ کرنے کے فراق میں اُسے سنسکرت کے شبدوں سے بھر دینا چاہتے تھے۔ اُن کا کہنا یہ تھا کہ بنا سنسکرت شبدوں کے بھرے ہندی کا روپ ایسا نہیں ہو سکتا کہ بنگال، گجرات اور مہاراشٹر کے لوگ اُسے آسانی کے ساتھ بول لکھ اور سمجھ سکیں۔ دوسرے وہ لوگ تھے جو سرل اور سادی بھاشا چاہتے تھے۔ اُن کا کہنا یہ تھا کہ اگر ہندی کو راج بھاشا بننے کے ساتھ ساتھ جنتا کی بھاشا بھی بننا ہے تو اُسے کٹھن شبدوں سے بچنا ہوگا۔ اُن کا کہنا تھا کہ بنگال، گجرات، مہاراشٹر، کرناٹک وغیرہ میں

जो चालू शब्द हैं उनका सहारा लेकर हिन्दी और उर्दू के आसान शब्दों की मिली-जुली भाषा अगर बने तो वह जनता के बहुत नजदीक की भाषा होगी और उसे लिखने, पढ़ने, बोलने में सबको आसानी होगी.

प्रस्ताव पास हुआ और उसे मेम्बरों ने मंजूर किया, मगर कठिन हिन्दी के समर्थकों ने उसे दिल से मंजूर नहीं किया. उसका सबूत टन्डन जी का इस्तीफ़ा है. जहाँ तक उर्दू या हिन्दुस्तानी के समर्थकों का सवाल है उन्होंने प्रस्ताव को समझौते की शकल में मंजूर किया. हिन्दी के रूप के बारे में जो कुछ उस प्रस्ताव में है उसमें इस बात की काफी गुंजायश है कि उदारता और दरियादिली के साथ हिन्दी और हिन्दुस्तानी के समर्थक आपस में मिल सकें और मिल जुल कर ऐसी राज भाषा बना सकें जो सबको प्यारी, मीठी और अच्छी लगे. मगर प्रस्ताव मंजूर होने के बाद भी कठिन हिन्दी के कट्टर समर्थकों ने जो रवैया रखा उससे साफ़ जाहिर हो रहा है कि उनको अभी पूरा सन्तोष नहीं हुआ है और वह इस प्रस्ताव में अभी कुछ रद्दो बदल चाहते हैं. जाहिर है कि वह कठिन हिन्दी को राजभाषा के रूप में एलान कराना चाहते हैं.

अब, हमारे सामने कठिन हिन्दी वालों के इस रुख से नये सवाल उठ खड़े हुए हैं. हिन्दी को सारे देश की राज भाषा बनाने का मतलब यह भी तो है कि दक्खिन हिन्दुस्तान के लोग भी उसे ख़ुशी-ख़ुशी मंजूर कर लें. मगर विधान सभा के वह मेम्बर जो दक्खिन हिन्दुस्तान से आये थे, कठिन हिन्दी को राजभाषा

جو چالو شبد ہیں اُن کا سہارا لے کر ہندی اور اُردو کے آسان شبدوں کی ملی جلی بھاشا اگر بنے تو وہ جنتا کے بہت نزدیک کی بھاشا ہوگی اور اُسے لکھنے، پڑھنے، بولنے میں سب کو آسانی ہوگی۔

پرستاؤ پاس ہوا اور اُسے میمبروں نے منظور کیا، مگر کٹھن ہندی کے سمرتھکوں نے اُسے دل سے منظور نہیں کیا۔ اُسکا ثبوت ٹنڈن جی کا استعفیٰ ہے۔ جہاں تک اُردو یا ہندستانی کے سمرتھکوں کا سوال ہے انھوں نے پرستاؤ کو سمجھوتے کی شکل میں منظور کیا۔ ہندی کے رُوپ کے بارے میں جو کچھ اُس پرستاؤ میں ہے اُس میں اس بات کی کافی گنجائش ہے کہ اُدارتا اور دریا دلی کے ساتھ ہندی اور ہندستانی کے سمرتھک آپس میں مل سکیں اور مل جُل کر ایسی راج بھاشا بنا سکیں جو سب کو پیاری، میٹھی اور اچھی لگے۔ مگر پرستاؤ منظور ہونے کے بعد بھی کٹھن ہندی کے کٹّر سمرتھکوں نے جو رویّہ رکھا اس سے صاف ظاہر ہو رہا ہے کہ اُنکو ابھی پورا سنتوش نہیں ہوا ہے اور وہ اس پرستاؤ میں ابھی کچھ ردّو بدل چاہتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ وہ کٹھن ہندی کو راج بھاشا کے رُوپ میں اعلان کرانا چاہتے ہیں۔

اب، ہمارے سامنے کٹھن ہندی والوں کے اس رُخ سے نئے سوال اُٹھ کھڑے ہوئے ہیں۔ ہندی کو سارے دیش کی راج بھاشا بنانے کا مطلب یہ بھی تو ہے کہ دکھن ہندستان کے لوگ بھی اُسے خوشی خوشی منظور کرلیں۔ مگر ودھان سبھا کے وہ میمبر جو دکھن ہندستان سے آئے تھے، کٹھن ہندی کو راج بھاشا

के रूप में मंजूर करने के लिये आसानी से तैयार नहीं हुए. हिन्दी के समर्थकों की कट्टरता देख कर उनको गुस्सा आ गया, और एक बार तो हालत यहाँ तक पहुंच गई थी कि इस मसले पर उत्तर और दक्खिन के मेम्बरों ने अँग्रेजी के चलते रहने की मांग सामने रख दी. नौकरी पेशावालों, आई. सी. एस. के अफसरों और दफ्तर के बाबुओं के लिये तो यही अच्छा था कि अंग्रेजी ज्यों की त्यों चलती रहे. और, कुछ दिनों के लिये तो ऐसा लगा कि राज भाषा का सवाल खटाई में पड़ जायेगा और अंग्रेजी की जीत हो जायेगी. जब हालत इतनी नाजुक हो गई तो घबरा कर हिन्दी वालों ने वह प्रस्ताव मंजूर कर लिया. दक्खिन हिन्दुस्तान के मेम्बरों के इस सख्त विरोध का मतलब क्या है ? हिन्दी के समर्थन को उन्होंने हिन्दी साम्राजवाद क्यों कहा ? हिन्दी का 'यह समर्थन उन्हें इतना बुरा क्यों लगा ? क्यों वह ख़ुशी-ख़ुशी हिन्दी को राज भाषा मंजूर नहीं कर सके ? क्या यह सच नहीं है कि उनके इस विरोध के सामने उर्दू, बंगला और हिन्दुस्तानी के समर्थकों का विरोध बिलकुल फीका पड़ गया ? क्या इसका मतलब यह नहीं है कि सारे हिन्दुस्तान की राज भाषा बनने के लिये हिन्दुस्तान की तमाम ज़बानों के बोलने वाले नुमायन्दों का जो समर्थन हिन्दी को मिलना चाहिये था वह नहीं मिला ? और अगर यह बातें सच हैं तो क्या यह सही न होगा कि कठिन हिन्दी का समर्थन करने वाले लोग संजीदगी के साथ सोचें कि उनका अगला क़दम क्या हो ? ऐसी राज भाषा जो सारे देश की राजभाषा बनना चाहती हो वह किसी भी सूबे के लोगों के मन मुटाव, बद् गमानी

کے روپ میں منظور کرنے کے لئے آسانی سے تیار نہیں ہوئے۔ ہندی کے سمرتھکوں کی کٹرتا دیکھ کر اُن کو غصّہ آ گیا، اور ایک بار تو حالت یہاں تک پہنچ گئی تھی کہ اس مسئلے پر اُتّر اور دکھن کے میمبروں نے انگریزی کے چلتے رہنے کی مانگ سامنے رکھ دی. نوکری پیشہ والوں، آئی. سی. ایس کے افسروں اور دفتر کے بابوؤں کے لئے تو یہی اچھا تھا کہ انگریزی جیوں کی تیوں چلتی رہے. اور، کچھ دنوں کے لئے تو ایسا لگا کہ راج بھاشا کا سوال کھٹائی میں پڑ جائے گا اور انگریزی کی جیت ہو جائے گی. جب حالت اتنی نازک ہو گئی تو گھبرا کر ہندی والوں نے وہ پرستاؤ منظور کر لیا. دکھن ہندستان کے میمبروں کے اس سخت ورودھ کا مطلب کیا ہے؟ ہندی کے سمرتھن کو انھوں نے ہندی سامراج واد کیوں کہا؟ ہندی کا یہ سمرتھن انھیں اتنا بُرا کیوں لگا؟ کیوں وہ خوشی خوشی ہندی کو راج بھاشا منظور نہیں کر سکے؟ کیا یہ سچ نہیں ہے کہ اُن کے اس ورودھ کے سامنے اُردو، بنگلہ اور ہندستانی کے سمرتھکوں کا ورودھ بالکل پھیکا پڑ گیا؟ کیا اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ سارے ہندستان کی راج بھاشا بننے کے لئے ہندستان کی تمام زبانوں کے بولنے والے نمائندوں کا جو سمرتھن ہندی کو ملنا چاہئے تھا وہ نہیں ملا؟ اور اگر یہ باتیں سچ ہیں تو کیا یہ صحیح نہ ہوگا کہ کٹھن ہندی کا سمرتھن کرنے والے لوگ سنجیدگی کے ساتھ سوچیں کہ اُن کا اگلا قدم کیا ہو؟ ایسی راج بھاشا جو سارے دیش کی راج بھاشا بننا چاہتی ہو وہ کسی بھی صوبے کے لوگوں کے من مٹاؤ، بدگمانی

ग़लत फ़हमी या ग़ुस्से को गवारा नहीं कर सकती. उसे तो सब लोगों को, सब भाषा वालों को साथ लेकर ही आगे बढ़ना होगा.

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का इजलास इस साल दिसम्बर में हैदराबाद में होने जा रहा है. इस इजलास के सामने मसला यह नहीं है कि उर्दू का क्या हो ? या हिन्दुस्तानी और हिन्दी का क्या सम्बन्ध हो. या कि सरल हिन्दी या कठिन हिन्दी राजभाषा बने. सवाल यह उठने जा रहा है कि सचमुच हिन्दुस्तान की कोई देशी भाषा राज भाषा बनेगी या अंग्रेज़ी ही चलती रहेगी ? अगर दक्खिन हिन्दुस्तान के नुमायन्दों ने यह रुख़ अख़्तियार किया कि वह सरल हिन्दी या हिन्दुस्तानी भाषा और रोमन लिपि को मंज़ूर करेंगे तब क्या होगा ? तामिल, तेलगू, कन्नड और मलयालम ज़बानें संस्कृत घराने की ज़बानें नहीं हैं, न वह जिन लिपियों को लिखते हैं उनका कोई सम्बन्ध नागरी लिपि से है. इस लिये वह आसानी के साथ रोमन लिपि की मांग कर सकते हैं. वह यह भी कह सकते हैं कि चूंकि दक्खिन हिन्दुस्तान के ज़्यादातर लोग, जो थोड़ा भी पढ़े लिखे हैं अंग्रेज़ी जानते हैं, इसलिये उनकी राजभाषा अंग्रेज़ी ही रहे, तो क्या होगा ? हमने सवाल के इस पहलू को सामने इसलिये रखा है कि हम अभी से सजग हो जायँ ! दक्खिन हिन्दुस्तान वालों के दिलों में हिन्दी वालों की ओर से ग़लतफ़हमी पैदा हो चुकी है. उत्तर हिन्दुस्तान के लोगों के हर काम को वह शक की निगाह से देखने लगे हैं. हिन्दी का प्रचार उनको अपनी कलचर पर हमला जैसा लग रहा है. अगर उन लोगों के दिलों में यह बदगुमानी सचमुच घर कर गई तो पिछले तीस

غلط فہمی یا غصّے کو گوارا نہیں کرسکتی ۔ اُسے تو سب لوگوں کو، سب بھاشا والوں کو ساتھ لے کر ہی آگے بڑھنا ہوگا ۔

ہندی ساہتیہ سمیلن کا اجلاس اس سال دسمبر میں حیدرآباد میں ہونے جا رہا ہے ۔ اس اجلاس کے سامنے مسئلہ یہ نہیں ہے کہ اُردو کا کیا ہو؟ یا ہندستانی اور ہندی کا کیا سمبندھ ہو، یا کہ سرل ہندی یا کٹھن ہندی راج بھاشا بنے ۔ سوال یہ اُٹھنے جا رہا ہے کہ سچ مچ ہندستان کی کوئی دیشی بھاشا راج بھاشا بنے گی یا انگریزی ہی چلتی رہے گی؟ اگر دکھن ہندستان کے نایندوں نے یہ رُخ اختیار کیا کہ وہ سرل ہندی یا ہندستانی بھاشا اور رومن لیپی کو منظور کریں گے تب کیا ہوگا؟ تامل، تیلگو، کنڑ اور ملیالم زبانیں سنسکرت گھرانے کی زبانیں نہیں ہیں، نہ وہ جن لیپیوں کو لکھتے ہیں اُن کا کوئی سمبندھ ناگری لیپی سے ہے ۔ اس لئے وہ آسانی کے ساتھ رومن لیپی کی مانگ کرسکتے ہیں ۔ وہ یہ بھی کہہ سکتے ہیں کہ چونکہ دکھن ہندستان کے زیادہ تر لوگ جو تھوڑا بھی پڑھے لکھے ہیں انگریزی جانتے ہیں، اس لئے اُن کی راج بھاشا انگریزی ہی رہے، تو کیا ہوگا؟ ہم نے سوال کے اس پہلو کو سامنے اس لئے رکھا ہے کہ ہم ابھی سے سجگ ہو جائیں! دکھن ہندستان والوں کے دلوں میں ہندی والوں کی اور سے غلط فہمی پیدا ہو چکی ہے ۔ اُتر ہندستان کے لوگوں کے ہر کام کو وہ شک کی نگاہ سے دیکھنے لگے ہیں ۔ ہندی کا پرچار اُن کو اپنے کلچر پر حملہ جیسا لگ رہا ہے ۔ اگر اُن لوگوں کے دلوں میں یہ بدگمانی سچ مچ گھر کر گئی تو پچھلے تیس

साल की गांधी जी की कोशिशें और कामयाबियां बेकार हो जायेंगी. जिस बदगुमानी और ग़लतफ़हमी ने हिन्दुस्तान के दो बड़े टुकड़े कराये वही बदगुमानी और ग़लतफ़हमी हिन्दुस्तान को फिर उत्तर और दक्खिन दो टुकड़ों में बांट सकती है. राजनैतिक ग़लतफ़हमी तो आसानी से दूर हो सकती है मगर कलचर और भाषा से। जिस ग़लतफ़हमी और ग़ुस्से का सम्बन्ध हो वह आसानी से दूर नहीं हो सकती. कलचर और भाषा का सम्बन्ध इतिहास से है, पूरी क़ौमी जिन्दगी और उसकी आत्मा से है. सियासत के मैदान में रोज़ समझौते होते रहते हैं. उसमें तो थोड़ी हद तक जोर जबरदस्ती के लिये गुंजायश है, मगर भाषा और संस्कृति के मैदान में जोर जबरदस्ती के लिये ज़रा भी गुंजायश नहीं है. हिन्दी साहित्य सम्मेलन और हिन्दी का समर्थन करने वाले लोग अगर समझदारी से काम नहीं लेंगे तो उत्तर दक्खिन का यह झगड़ा भयानक रूप ले लेगा, राजभाषा का सवाल खटाई में पड़ जायेगा और हिन्दुस्तानी जनता की क़ौमी ज़बान को एक बना कर उसकी क़ौमी कलचर को मज़बूत, ख़ुशनुमा, तरक़्क़ी पसन्द बनाने की जो कोशिश गांधी जी ने अपनी सारी जिन्दगी में की थी वह बेकार हो जायेगी.

ज़माना ख़तरनाक है. हिन्दुस्तान के बंटवारे ने फ़िरक़ापरस्त ताक़तों को काफ़ी मज़बूत बना दिया है. इतना ख़ून बह जाने के बाद भी आपस की ख़लिश मिटी नहीं है. गांधी जी का लाल लोहू भी क़ौमी जिन्दगी की दरारों को पाट देने में कामयाब नहीं हो सका है. ऐसी हालत में उत्तर दक्खिन का यह नया झगड़ा

سال کی گاندھی جی کی کوششیں اور کامیابیاں بیکار ہو جائیں گی۔ جس بدگمانی اور غلط فہمی نے ہندستان کے دو بڑے ٹکڑے کرائے وہی بدگمانی اور غلط فہمی ہندستان کو پھر اُتر اور دکھن دو ٹکڑوں میں بانٹ سکتی ہے۔ راج نیتک غلط فہمی تو آسانی سے دور ہو سکتی ہے مگر کلچر اور بھاشا سے جس غلط فہمی اور غصّے کا سمبندھ ہو وہ آسانی سے دور نہیں ہو سکتی۔ کلچر اور بھاشا کا سمبندھ اتہاس سے ہے، پوری قومی زندگی اور اُس کی آتما سے ہے۔ سیاست کے میدان میں روز سمجھوتے ہوتے رہتے ہیں، اُس میں تو تھوڑی حد تک زور زبردستی کے لئے گنجائش ہے، مگر بھاشا اور سنسکرتی کے میدان میں زور زبردستی کے لئے ذرا بھی گنجائش نہیں ہے۔ ہندی ساہتیہ سمیلن اور ہندی کے سمرتھن کرنے والے لوگ اگر سمجھداری سے کام نہیں لیں گے تو اُتر دکھن کا یہ جھگڑا بھیانک روپ لے لے گا، راج بھاشا کا سوال کھٹائی میں پڑ جائے گا اور ہندستانی جنتا کی قومی زبان کو ایک بنا کر اُس کی قومی کلچر کو مضبوط، خوشنما، ترقی پسند بنانے کی جو کوشش گاندھی جی نے اپنی ساری زندگی میں کی تھی وہ بیکار ہو جائے گی۔

زمانہ خطرناک ہے۔ ہندستان کے بٹوارے نے فرقہ پرست طاقتوں کو کافی مضبوط بنا دیا ہے۔ اتنا خون بہہ جانے کے بعد بھی آپس کی خلش مٹی نہیں ہے۔ گاندھی جی کا لال لہو بھی قومی زندگی کی دراروں کو پاٹ دینے میں کامیاب نہیں ہو سکا ہے۔ ایسی حالت میں اُتر دکھن کا یہ نیا جھگڑا

मुल्क को कहां ले जायेगा. पूरबी पंजाब में सिखों और हिन्दुओं का झगड़ा, बंगालियों-उड़ियों का झगड़ा, आन्ध्रों और तामिलों का झगड़ा, कर्नाटकियों और आन्ध्रों का झगड़ा, महाराष्ट्रियों और गुजरातियों का झगड़ा, गुजरातियों और राजस्थानियों का झगड़ा—इन झगड़ों को देख कर ऐसा लगता है जैसे सारे देश की क़ौमी ज़िन्दगी ही किसी दिन टूटकर बिखर जायेगी. यह झगड़े इन सूबों में रहने वाली जनता के नहीं बल्कि मालदारों, नौकरी पेशा वालों और व्यापारियों के हैं. मगर झगड़ों का सिलसिला जब एक बार शुरू होता है तो वह गहरा उतर जाता है. उसमें कलचर, भाषा, रीति रिवाज, खान-पान तक के मसले शामिल हो जाते हैं. सियासी और आर्थिक झगड़े कलचरी झगड़ों की शक्ल अख़तियार कर लेते हैं. ऐसी हालत में इन झगड़ों का नतीजा बहुत गहरा और बहुत बुरा होता है.

इसीलिये हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कन्धों पर ज़िम्मेदारी है. भाषा का सवाल कलचर का सवाल है. और कलचर का सवाल हमारी क़ौमियत का सवाल है. अगर ग़ैरज़िम्मेदारी से काम लिया गया और वक़्त और मसले की निज़ाकत का ख़याल न रखा गया तो हालत ज्यादा खराब हो जा सकती है. ज़रूरत है वक़्त रहते हुए होशियार हो जाने की. हम आशा करना चाहते हैं कि सम्मेलन हमें सही रास्ता दिखायेगा. मगर सम्मेलन में जो चुनाव हुए हैं और जैसे लोगों के हाथों में इस साल सम्मेलन की बागडोर जा रही है उनसे हम बहुत ज्यादा उम्मीद नहीं कर सकते. सच तो यह है कि नये सभापति और नये मंत्रियों में से कोई

ملک کو کہاں لے جائے گا۔ پوربی پنجاب میں سکھوں اور ہندوؤں کا جھگڑا، بنگالیوں اڑیوں کا جھگڑا، آندھروں اور تاملوں کا جھگڑا، کرناٹکیوں اور آندھروں کا جھگڑا، مہاراشٹریوں اور گجراتیوں کا جھگڑا، گجراتیوں اور راجستھانیوں کا جھگڑا۔ ان جھگڑوں کو دیکھ کر ایسا لگتا ہے جیسے سارے دیش کی قومی زندگی ہی کسی دن ٹوٹ کر بکھر جائے گی۔ یہ جھگڑے اُن صوبوں میں رہنے والی جنتا کے نہیں بلکہ مالداروں، نوکری پیشہ والوں اور بیوپاریوں کے ہیں۔ مگر جھگڑوں کا سلسلہ جب ایک بار شروع ہوتا ہے تو وہ گہرا اُتر جاتا ہے۔ اُس میں کلچر، بھاشا، ریت رواج کھان پان تک کے مسئلے شامل ہو جاتے ہیں۔ سیاسی اور آرتھک جھگڑے کلچری جھگڑوں کی شکل اختیار کر لیتے ہیں۔ ایسی حالت میں ان جھگڑوں کا نتیجہ بہت گہرا اور بہت بُرا ہوتا ہے۔

اسی لئے ہندی ساہتیہ سمیلن کے کندھوں پر ذمہ داری ہے۔ بھاشا کا سوال کلچر کا سوال ہے۔ اور کلچر کا سوال ہماری قومیت کا سوال ہے۔ اگر غیرذمہ داری سے کام لیا گیا اور وقت اور مسئلے کی نزاکت کا خیال نہ رکھا گیا تو حالت زیادہ خراب ہو جا سکتی ہے۔ ضرورت ہے وقت رہتے ہوئے ہوشیار ہو جانے کی۔ ہم آشا کرنا چاہتے ہیں کہ سمیلن ہمیں صحیح راستہ دکھائے گا۔ مگر سمیلن میں جو چناؤ ہوئے ہیں اور جیسے لوگوں کے ہاتھوں میں اس سال سمیلن کی باگ ڈور جا رہی ہے اُن سے ہم بہت زیادہ امید نہیں کر سکتے۔ سچ تو یہ ہے کہ نئے سبھاپتی اور نئے منتریوں میں سے کوئی

बुजुर्ग भी ऐसे नहीं हैं जिनका पिछला रेकार्ड ऐसा रहा हो जिसके सहारे हम आगे उनसे कुछ भी उम्मीद रख सकें. सम्मेलन में उसूलों की नहीं, पार्टियों की लड़ाई होती है. इस साल जो लोग चुन कर आये हैं वह ज्यादा तर ऐसे ही लोग हैं जो अपनी कट्टरता और जिद के लिये मशहूर रहे हैं. खुद टन्डन जी भी सारे मसले को सही रोशनी में नहीं देख पा रहे हैं. इसलिये हैदराबाद के इजलास में क्या होगा यह सोच कर जी घबराने लगता है.

दिल्ली में अभी दिल्ली हिन्दी परिषद् की सभा हुई थी जिसमें डा० राजेन्द्र प्रसाद और मौलाना अबुलकलाम आजाद भी शामिल हुए थे. लगता है, सम्मेलन के कठमुल्लापन से ऊब कर ही यह संस्था खड़ी की गई है. अभी इस संस्था के बारे में हम कुछ नहीं कह सकते, मगर सम्मेलन से तो हम इतना कह ही सकते हैं कि वह जरा समझ बूझ कर देश को राह दिखावे. हम चाहते हैं कि उसके क़दम सही दिशा की ओर बढ़ें जिससे देश और क़ौम का कल्यान हो. अगर ऐसा न हुआ तो सम्मेलन से अपना नाता तोड़ कर देश को कोई नया रास्ता अपनाना पड़ेगा. हो सकता है दिल्ली वाली परिषद् को ही हिन्दी साहित्य सम्मेलन की जगह लेनी पड़े.

दिल्ली वाली परिषद् में राजेन्द्र बाबू ने कहा कि अब जब कि हिन्दी को क़ौमी जबान क़रार दे दिया गया है हमें ऐसी भाषा बनानी है जो हिन्दुस्तान की मिली जुली कलचर की नुमायन्दिगी कर सके. इसके लिये राजेन्द्र बाबू ने चार सुझाव रखे (१) हिन्दी में ऐसे तमाम ग़ैर-हिन्दी और विदेशी शब्दों को शामिल कर लिया जाय जो कि रायज और चालू हैं. (२) हिन्दी के ग्रामर (व्याकरण)

بزرگ بھی ایسے نہیں ہیں جن کا پچھلا ریکارڈ ایسا رہا ہو جس کے سہارے ہم آگے اُن سے کچھ بھی اُمید رکھ سکیں۔ سمیلن میں اُصولوں کی نہیں، پارٹیوں کی لڑائی ہوتی ہے۔ اس سال جو لوگ چُن کر آئے ہیں وہ زیادہ تر ایسے ہی لوگ ہیں جو اپنی کٹرتا اور ضد کے لئے مشہور رہے ہیں۔ خود ٹنڈن جی بھی سارے مسئلے کو صحیح روشنی میں نہیں دیکھ پا رہے ہیں۔ اس لئے حیدرآباد کے اجلاس میں کیا ہوگا یہ سوچ کر جی گھبرانے لگتا ہے۔

دلّی میں ابھی دلّی ہندی پریشد کی سبھا ہوئی تھی جس میں ڈاکٹر راجیندر پرساد اور مولانا ابوالکلام آزاد بھی شامل ہوئے تھے۔ لگتا ہے سمیلن کے کٹھ ملّاپن سے اُوب کر ہی یہ سنستھا کھڑی کی گئی ہے۔ ابھی اس سنستھا کے بارے میں ہم کچھ نہیں کہہ سکتے، مگر سمیلن سے تو ہم اتنا کہہ ہی سکتے ہیں کہ وہ ذرا سمجھ بوجھ کر دیش کو راہ دکھائے۔ ہم چاہتے ہیں کہ اس کے قدم صحیح دشا کی اور بڑھیں جس سے دیش اور قوم کا کلیان ہو۔ اگر ایسا نہ ہوا تو سمیلن سے اپنا ناتا توڑ کر دیش کو کوئی نیا راستہ اپنانا پڑے گا۔ ہو سکتا ہے دلّی والی پریشد کو ہی ہندی ساہتیہ سمیلن کی جگہ لینی پڑے۔

دلّی والی پریشد میں راجیندر بابو نے کہا کہ اب جبکہ ہندی کو قومی زبان قرار دے دیا گیا ہے ہمیں ایسی بھاشا بنانی ہے جو ہندستان کی ملی جلی کلچر کی نمائندگی کر سکے۔ اس کے لئے راجیندر بابو نے چار سجھاؤ رکھے (۱) ہندی میں ایسے تمام غیر ہندی اور بدیشی شبدوں کو شامل کر لیا جائے جو کہ رائج اور چالو ہیں۔ (۲) ہندی کے گرامر (ویاکرن)

में ऐसे सुधार कर दिये जायँ जिससे वह आसानी के साथ समझा जा सके (३) हिन्दी बोलने वाली जनता के बीच दूसरी सूबाई ज़बानों का प्रचार किया जाय जिससे उन ज़बानों के आसान शब्दों को हिन्दी वाले अपने में शामिल कर सकें. (४) हिन्दी शब्दों के माने ठहरा दिये जायं जिससे एक शब्द का एक ही अर्थ सारे हिन्दुस्तान में लिखा, बोला और समझा जाय.

राजेन्द्र बाबू ने क़ानूनी और टेकनिकल ज़रूरतों के लिये भी शब्दों के गढ़ने पर ज़ोर दिया. मौलाना आज़ाद ने कहा कि हालाँकि अंग्रेज़ी के लिये पन्द्रह बरस का मौक़ा दिया गया है मगर सही यही है कि पन्द्रह बरस से पहिले ही उसका इस्तेमाल बन्द हो जाना चाहिये. उन्होंने कहा कि हिन्दी का रूप ऐसा होना चाहिये कि उसे दक्खिन हिन्दुस्तान के रहने वाले लोग भी आसानी के साथ अपना सकें. दक्खिन हिन्दुस्तान वालों को यह न लगना चाहिये कि हिन्दी उनके ऊपर ज़बरदस्ती लादी जा रही है.

बम्बई के प्रधान मंत्री श्री ब्री० जी० खेर ने रूस की मिसाल देते हुए बताया कि हिन्दुस्तान की ही तरह वहां भी यह मसला उठा था, मगर वहां के लोगों ने आपस में मिल जुल कर इस मसले को तय कर डाला. इसी तरह हिन्दुस्तान के रहने वालों को भी इस मसले को आपस में मिल जुल कर तय कर डालना चाहिये.

राजेन्द्र बाबू, मौलाना आज़ाद, श्री बी. जी. खेर वग़ैरा ने जो कुछ कहा उससे साफ़ ज़ाहिर है कि अब वह सब लोग मसले की

میں ایسے سدھار کر دیئے جائیں جس سے وہ آسانی کے ساتھ سمجھا جا سکے (۳) ہندی بولنے والی جنتا کے بیچ دوسری صوبائی زبانوں کا پرچار کیا جائے جس سے اُن زبانوں کے آسان شبدوں کو ہندی والے اپنے میں شامل کر سکیں۔ (۴) ہندی شبدوں کے معنی ٹھہرا دیئے جائیں جس سے ایک شبد کا ایک ہی ارتھ سارے ہندستان میں لکھا، بولا اور سمجھا جائے۔

راجیندر بابو نے قانونی اور ٹیکنیکل ضرورتوں کے لئے بھی شبدوں کے گڑھنے پر زور دیا۔ مولانا آزاد نے کہا کہ حالانکہ انگریزی کے لئے پندرہ برس کا موقع دیا گیا ہے مگر صحیح یہی ہے کہ پندرہ برس سے پہلے ہی اس کا استعمال بند ہو جانا چاہیئے۔ اُنھوں نے کہا کہ ہندی کا روپ ایسا ہونا چاہیئے کہ اُسے دکھن ہندستان کے رہنے والے لوگ بھی آسانی کے ساتھ اپنا سکیں۔ دکھن ہندستان والوں کو یہ نہ لگنا چاہیئے کہ ہندی اُن کے اوپر زبردستی لادی جا رہی ہے۔

بمبئی کے پردھان منتری شری بی۔ جی۔ کھیر نے روس کی مثال دیتے ہوئے بتایا کہ ہندستان کی ہی طرح وہاں بھی یہ مسئلہ اُٹھا تھا، مگر وہاں کے لوگوں نے آپس میں مل جل کر اس مسئلے کو طے کر ڈالا۔ اسی طرح ہندستان کے رہنے والوں کو بھی اس مسئلے کو آپس میں مل جل کر طے کر ڈالنا چاہیئے۔

راجیندر بابو، مولانا آزاد، شری بی۔ جی۔ کھیر وغیرہ نے جو کچھ کہا اُس سے صاف ظاہر ہے کہ اب وہ سب لوگ مسئلے کی

गम्भीरता को समझने, सोचने और उसका हल निकालने लगे हैं.

एक दो मसले और भी हैं जिन पर हमें गम्भीर होकर ग़ौर करना है. एक तो यह कि हिन्दी को लिखावट में क्या सुधार किया जाय कि वह टाइप रायटर और टेलीप्रिन्टर के काम में आसानी के साथ आसके. हिन्दी में आज जो मात्राओं के ऊपर, नीचे, दायें और बायें लगाने का ढंग है वह टाइप रायटर या टेलीप्रिन्टर के कामों में काफ़ी अड़चन पैदा करता है. साथ ही ऊपर लाइन खींचने में भी काफी वक़्त और जगह ख़राब होती है. हिन्दी की लिखावट में कुछ सुधार कर दिया जाय तो टेलीप्रिन्टर और टाइप राइटर में हिन्दी शब्दों को लिखना आसान हो जाय. अगर यह सुधार नहीं होता तो कम से कम अख़बारी दुनिया का काम नहीं चल सकता. आज टाइप राइटर और टेली प्रिन्टर का काम अंग्रेज़ी में ही होता है. सब एडीटरों को हर समाचार का तरजुमा करना पड़ता है. इसमें बहुत सा वक़्त और मेहनत जाया जाती है. ख़बरों का तरजुमा करने पर उनमें न जान बाक़ी रह जाती है, न ताज़गी. इसी लिये हिन्दी और दूसरे देशी अख़बार अंग्रेज़ी अख़बारों के मुक़ाबले में टिक नहीं पाते.

यही बातें तार के लिये भी कही जा सकती हैं. हिन्दी जुमलों और शब्दों को छोटा करने के लिये भी हमें तैयार होना चाहिये. तार का अर्थ ही यह है कि कम से कम वक़्त में और कम से कम जगह में ज्यादा से ज्यादा शब्दों को लिख दिया जाय. जब तक हिन्दी शब्दों और जुमलों को छोटा करने की आदत हम नहीं

گمبھیرتا کو سمجھنے، سوچنے اور اس کا حل نکالنے لگے ہیں۔

ایک دو مسئلے اور بھی ہیں جن پر ہمیں گمبھیر ہو کر غور کرنا ہے۔ ایک تو یہ کہ ہندی کی لکھاوٹ میں کیا سدھار کیا جائے کہ وہ ٹائپ رائٹر اور ٹیلی پرنٹر کے کام میں آسانی کے ساتھ آسکے۔ ہندی میں آج جو ماتراؤں کے اوپر، نیچے، دائیں اور بائیں لگانے کا ڈھنگ ہے وہ ٹائپ رائٹر یا ٹیلی پرنٹر کے کاموں میں کافی اڑچن پیدا کرتا ہے۔ ساتھ ہی اوپر لائن کھینچنے میں بھی کافی وقت اور جگہ خراب ہوتی ہے۔ ہندی کی لکھاوٹ میں کچھ سدھار کر دیا جائے تو ٹیلی پرنٹر اور ٹائپ رائٹر میں ہندی شبدوں کو لکھنا آسان ہو جائے۔ اگر یہ سدھار نہیں ہوتا تو کم سے کم اخباری دنیا کا کام نہیں چل سکتا۔ آج ٹائپ رائٹر اور ٹیلی پرنٹر کا کام انگریزی میں ہی ہوتا ہے۔ اب ایڈیٹروں کو ہر سماچار کا ترجمہ کرنا پڑتا ہے۔ اس میں بہت سا وقت اور محنت ضائع جاتی ہے۔ خبروں کا ترجمہ کرنے پر ان میں نہ جان باقی رہ جاتی ہے، نہ تازگی۔ اسی لئے ہندی اور دوسرے دیشی اخبار انگریزی اخباروں کے مقابلے میں ٹک نہیں پاتے۔

یہی باتیں تار کے لئے بھی کہی جا سکتی ہیں۔ ہندی جملوں اور شبدوں کو چھوٹا کرنے کے لئے بھی ہمیں تیار ہونا چاہئے۔ تار کا ارتھ ہی یہ ہے کہ کم سے کم وقت میں اور کم سے کم جگہ میں زیادہ سے زیادہ شبدوں کو لکھ دیا جائے۔ اب تک ہندی شبدوں اور جملوں کو چھوٹا کرنے کی عادت ہم نہیں

डालते तब तक हिन्दी में तार भेजना या पढ़ना कैसे मुमकिन होगा ?

इस साल हैदराबाद में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का जो इजलास हो रहा है उसके सामने यह सब मसले आयेंगे. किन मसलों का सही हल निकल सकेगा। यह तो हम नहीं जानते, मगर हिन्दी साहित्य सम्मेलन के नेताओं से हमारी यह मांग जरूर है कि वह इन सवालों पर ग़ौर करें और सोच विचार कर ऐसे हल निकालें जिससे आपस की कड़ुवाहट कम हो सके और ज्यादा से ज्याद लोग मिल कर राज भाषा हिन्दी को ऐसा बना सकें जिससे वह जल्द से जल्द राष्ट्र भाषा बन जाय.

क्या हिन्दी साहित्य सम्मेलन का हैदराबाद का इजलास मेरठ वाले इजलास से आगे क़दम बढ़ायेगा ?

ڈالتے تب تک ہندی میں تار بھیجنا یا پڑھنا کیسے ممکن ہوگا ؟

اس سال حیدرآباد میں ہندی ساہتیہ سمیلن کا جو اجلاس ہو رہا ہے اس کے سامنے یہ سب مسئلے آئیں گے. کن مسئلوں کا صحیح حل نکل سکے گا یہ تو ہم نہیں جانتے، مگر ہندی ساہتیہ سمیلن کے نیتاؤں سے ہماری یہ مانگ ضرور ہے کہ وہ ان سوالوں پر غور کریں اور سوچ وچار کر ایسے حل نکالیں جس سے آپس کی کڑواہٹ کم ہو سکے اور زیادہ سے زیادہ لوگ مل کر راج بھاشا ہندی کو ایسا بنا سکیں جس سے وہ جلد سے جلد راشٹر بھاشا بن جائے.

کیا ہندی ساہتیہ سمیلن کا حیدرآباد کا اجلاس میرٹھ والے اجلاس سے آگے قدم بڑھائے گا ؟

क़ौमी ज़बान

(श्री० डी० राजन)

आज कल राज भाषा और राष्ट्रभाषा के नाम से बहस मुबाहिसा ज़ोर से चल रहा है. राज भाषा जो भी हो पर चन्द संस्कृत या हिन्दी प्रेमियों की राय लेकर "हिन्दी" को नागरी लिपि में ही क़ौमी ज़बान मानना ठीक नहीं है. गांधी जी के असूल के मुताबिक़ नागरी और उर्दू हरफ़ों को अपना कर "हिन्दुस्तानी" को ही राष्ट्र-भाषा बनाना बेहतर है. आप लोगों की भाषा में ठेठ संस्कृत या अरबी फ़ारसी के शब्द पाये नहीं जाते. जो भाषा रोज़मर्रे की ज़िन्दगी में चालू है; वही हमारी राष्ट्र-भाषा हो सकती है.

ज़्यादातर ठेठ हिन्दी के प्रेमी जोश में आकर भाषा में जो आसान लफ़्ज़ हैं उन्हें निकाल कर उसके बदले कठिन संस्कृत के शब्दों को ज़बरदस्ती ठूँसना पसन्द करते हैं. मसलन् "अन्दर जाना मना है" इसके लिये "अन्तर प्रवेश वर्जित" कहना पसन्द करेंगे ! "अन्दर जाना मना है," यह आसान हिन्दी भी है और उर्दू भी है. इसलिये वह "हिन्दुस्तानी" है. आसान शब्द के बदले कठिन शब्द को ठूँसने वालों की हालत पर हमें तरस आता है.

एक ज़माना था जब जर्मनी में चन्द सियासत दोनों के हाथ

قومی زبان

(شری و ڈی ۔ راجن)

آج کل راج بھاشا اور راشٹر بھاشا کے نام سے بحث مباحثہ زور سے چل رہا ہے۔ راج بھاشا جو بھی ہو پر چند سنسکرت یا ہندی پریمیوں کی رائے لے کر "ہندی" کو ناگری لپی میں ہی قومی زبان ماننا ٹھیک نہیں ہے۔ گاندھی جی کے اصول کے مطابق ناگری اور اُردو حرفوں کو اپنا کر "ہندستانی" کو ہی راشٹر بھاشا بنانا بہتر ہے۔ آپ لوگوں کی بھاشا میں ٹھیٹھ سنسکرت یا عربی فارسی کے شبد پائے نہیں جاتے۔ جو بھاشا روزمرے کی زندگی میں چالو ہے، وہی ہماری راشٹر بھاشا ہو سکتی ہے۔

زیادہ تر ٹھیٹھ ہندی کے پریمی جوش میں آکر بھاشا میں جو آسان لفظ ہیں انھیں نکال کر اس کے بدلے کٹھن سنسکرت کے شبدوں کو زبردستی ٹھونسنا پسند کرتے ہیں۔ مثلاً "اندر جانا منع ہے" اس کے لئے "انتر پرویش ورجت" کہنا پسند کریں گے! "اندر جانا منع ہے" یہ آسان ہندی بھی ہے اور اردو بھی ہے۔ اس لئے وہ "ہندستانی" ہے۔ آسان شبد کے بدلے کٹھن شبد کو ٹھونسنے والوں کی حالت پر ہمیں ترس آتا ہے۔

ایک زمانہ تھا جب جرمنی میں چند سیاست دانوں کے ہاتھ

में अधिकार था तब वह अपनी जर्मन भाषा से आम फ़हम लातीन, ग्रीक और फ्रेंच के शब्दों को निकाल कर अपनी भाषा को शुद्ध करना चाहते थे. पर जनता और कवि (शायर) इसके ख़िलाफ़ थे. क्योंकि भाषा को बनावटी रूप देने से वह ज़िन्दा नहीं रह सकती. पर जिनके हाथ में अधिकार था वह अपनी बात पर डटे रहे. इसलिये जनता की बोली और सरकार की भाषा अलग अलग हो गई. आज कल हमारी राष्ट्र भाषा का मसला भी उसी ग़लती की तरफ़ जा रहा है. अफ़सोस कुछ दिन के बाद उनको अपनी भूल याद आई और सीधे रास्ते को पकड़ने लगे.

हिन्दी और उर्दू भारत की दो आँखें हैं. इसलिये इज्ज़त के क़ाबिल हैं. हिन्दी-उर्दू का मिलाप हिन्दू-मुसलमानों की तहज़ीबों का मिलाप है. इसलिये हिन्दी-उर्दू को मिलाकर आसान "हिन्दुस्तानी" को ही मानना बेहतर है.

अगर्चे हिन्दुस्तानी में साहित्य या अदब कम है फिर भी हमें इस कमी को दूर करना है जो साहित्य जनता की भाषा में नहीं है वह बहुत अरसे तक ज़िन्दा नहीं रह सकता.

"हिन्दुस्तानी" में हिन्दी कविताओं और उर्दू शायरी को मिला कर सोने में सुगन्ध लाना है. बाबू पुरुषोत्तमदास टंडन और यू.पी. के प्रधान मंत्री की भाषा में संस्कृत की ही भरमार है और आसानी से समझ में नहीं आती ! हमारे वज़ीर आज़म पं० जवाहरलाल नेहरू की भाषा सुनने से वाक़ई हमें बड़ा आनन्द आता है और उनकी भाषा में सजीवता पाई जाती है. इसलिये पंडित नेहरू जो भाषा बोलते हैं वही हमारी

میں ادھیکار تھا تب وہ اپنی جرمن بھاشا سے عام فہم لاٹین، گریک، اور فرینچ کے شبدوں کو نکال کر اپنی بھاشا کو شدھ کرنا چاہتے تھے۔ پر جنتا اور کوی (شاعر) اس کے خلاف تھے۔ کیونکہ بھاشا کو بناوٹی روپ دینے سے وہ زندہ نہیں رہ سکتی۔ پر جن کے ہاتھ میں ادھیکار تھا وہ اپنی بات پر ڈٹے رہے۔ اس لئے جنتا کی بولی اور سرکار کی بھاشا الگ الگ ہو گئی۔ آج کل ہماری راشٹر بھاشا کا مسئلہ بھی اسی غلطی کی طرف جا رہا ہے۔ افسوس کچھ دن کے بعد ان کو اپنی بھول یاد آئی اور سیدھے راستے کو پکڑنے لگے۔

ہندی اور اردو بھارت کی دو آنکھیں ہیں۔ اس لئے عزت کے قابل ہیں۔ ہندی اردو کا ملاپ ہندو مسلمانوں کی تہذیبوں کا ملاپ ہے۔ اس لئے ہندی اردو کو ملا کر آسان "ہندستانی" کو ہی ماننا بہتر ہے۔

اگرچہ ہندستانی میں ساہتیہ یا ادب کم ہے پھر بھی ہمیں اس کمی کو دور کرنا ہے۔ جو ساہتیہ جنتا کی بھاشا میں نہیں ہے وہ بہت عرصے تک زندہ نہیں رہ سکتا۔

"ہندستانی" میں ہندی کویتاؤں اور اردو شاعری کو ملا کر سونے میں سوگندھ لانا ہے۔ بابو پرشوتم داس ٹنڈن اور یو۔پی۔ کے پردھان منتری کی بھاشا میں سنسکرت کی ہی بھرمار ہے اور آسانی سے سمجھ میں نہیں آتی! ہمارے وزیر اعظم پنڈت جواہر لال نہرو کی بھاشا سننے سے واقعی ہمیں بڑا آنند آتا ہے اور ان کی بھاشا میں سجیوتا پائی جاتی ہے۔ اس لئے پنڈت نہرو جو بھاشا بولتے ہیں وہی ہماری

राष्ट्र-भाषा हो सकती है. नेहरू जी की भाषा सारे हिन्द में ही नहीं, बल्कि पाकिस्तान में भी समझी जाती है मानो उनकी भाषा में कोई जादू रहता हो. उनकी भाषा ही राष्ट्र-भाषा है. इसलिये वह बाज़ारों में कालेजों में, थियेटरों में सभी जगहों पर मशहूर है.

"हिन्दुस्तानी" के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना गांधी जी के उसूल के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने के बराबर है. जब बापू हमारे बीच में ज़िन्दा रहे तब भी कई कांग्रेसी उनकी मरज़ी के ख़िलाफ़ चलते थे. इसलिये उनके दिल पर गहरी चोट लगी. कम से कम भाषा के सवाल को ठीक ठीक हल करने में उनकी आत्मा को शांति मिल सकती है.

भाषा के मसले को हल करने की ताक़त सिर्फ़, पंडित नेहरू काका कालेलकर डा० ताराचंद, महात्मा भगवान दीन और पंडित सुन्दरलाल जैसे बुज़ुर्गों के पास ही है. बहुत से लोगों में महज़ तंग दिली ही नज़र आ रही है.

मुझे यह भी बताना है कि दक्षिण में कुछ दिनों से आर्य और द्राविड़ संस्कृति पर ज़ोरों से बहस मुबहिसा हो रहा है. तामिल बोलने वालों में जो अपने को द्राविड़ी समझते हैं वह संस्कृत या संस्कृत मिश्रित हिन्दी (आर्य भाषाओं) के ख़िलाफ़ हैं. द्राविड़ों की राय है कि संस्कृत या हिन्दी द्राविड़ों की कलचर को तबाह करने वाली भयानक आग है. वह किसी भी ज़बान को अपने ऊपर लादना पसन्द नहीं करते.

नागरी और उर्दू लिपि में जो हिन्दुस्तानी लिखी जाती है उसे

راشٹر بھاشا ہو سکتی ہے۔ نہرو جی کی بھاشا سارے ہند میں ہی نہیں، بلکہ پاکستان میں بھی سمجھی جاتی ہے مانو ان کی بھاشا میں کوئی ~~جادو رہتا ہو~~ ۔ ان کی بھاشا ہی راشٹر بھاشا ہے۔ اس لئے وہ بازاروں میں کالجوں میں، تھیٹروں میں سبھی جگہوں پر مشہور ہے۔

"ہندستانی" کے خلاف آواز اٹھانا گاندھی جی کے اصول کے خلاف آواز اٹھانے کے برابر ہے۔ جب باپو ہمارے بیچ میں زندہ رہے تب بھی کئی کانگریسی ان کی مرضی کے خلاف چلتے تھے۔ اس لئے ان کے دل پر گہری چوٹ لگی۔ کم سے کم بھاشا کے سوال کو ٹھیک ٹھیک حل کرنے میں ان کی آتما کو شانتی مل سکتی ہے۔

بھاشا کے مسئلے کو حل کرنے کی طاقت صرف پنڈت نہرو، کاکا کالیلکر، ڈاکٹر تاراچند، مہاتما بھگوان دین اور پنڈت سندر لال جیسے بزرگوں کے پاس ہی ہے۔ بہت سے لوگوں میں محض تنگ دلی ہی نظر آ رہی ہے۔

~~مجھے یہ بھی بتانا ہے~~ کہ دکھن میں کچھ دنوں سے آریہ اور دراوڑ سنسکرتی پر زوروں سے بحث مباحثہ ہو رہا ہے۔ تامل بولنے والوں میں جو اپنے کو دراوڑی سمجھتے ہیں وہ سنسکرت یا سنسکرت مشرت ہندی (آریہ بھاشاؤں) کے خلاف ہیں۔ دراوڑوں کی رائے ہے کہ سنسکرت یا ہندی دراوڑوں کی کلچر کو تباہ کرنے والی بھیانک آگ ہے۔ وہ کسی بھی زبان کو اپنے اوپر لادنا پسند نہیں کرتے۔

ناگری اور اردو لپی میں جو ہندستانی لکھی جاتی ہے اُسے

अपना कर गांधी जी के नाम से अपील करके उनको (द्राविड़ों को) शायद राज़ी करके उनसे सुलह कर सकते हैं. हमें ऐसा लगता है कि हिन्दी वाले हिन्दी को राज भाषा या राष्ट्र-भाषा बनाने में जितनी जल्द बाज़ी करते हैं उतनी जल्द बाज़ी देश के सामने जो ज़रूरी मसले हैं उनकी तरफ़ बिलकुल नहीं करते.

याद रहे कि हिन्दुस्तान में आगे चल कर ऐसे साधु भी पैदा होंगे कि एक साल में जो बारह महीने हैं, उनको हटाकर छै महीने बनाने के लिये भी भूख हड़ताल शुरू कर देंगे! बेकार बहस करने से हमारी क़ुरबानी व जाँनिसारी फ़िज़ूल हो जायँगी. सरकार को ऐसी धमकियों से झुकना नहीं चाहिये. अँग्रेज़ी भाषा से लातीन, ग्रीक और फ्रेंच लफ़्ज़ों को ख़ारिज करने से भाषा में बनावटी पन आ जायगा. यह मिसाल हमारी क़ौमी ज़बान के लिये भी मौज़ूँ है. दक्षिण के कई पढ़े लिखे लोग नागरी व उर्दू हरूफ़ के साथ साथ सरकारी काग़ज़ात के लिये रोमन हरफ़ और नंबरों को भी अपनाना अक़ल मन्दी का काम मानते हैं. क्योंकि रोमन लिपि में टैपिंग और छपाई की सुविधा है. जितनी आसनी से रोमन लिपि से "टैप" कर सकते हैं उतनी आसानी से नागरी में नामुमकिन है. इसलिये नागरी टैप रैटर बनाने में हमारे समय को ख़र्च करना ठीक नहीं है. तामिल भाषा में एक कहावत मशहूर है "मक्खन को हाथ में रख कर घी के लिये रोना फ़िज़ूल है." साइन्स के शब्द जो सारी दुनिया में मशहूर हैं उनको अपनाना चाहिये. आसान रास्ते को छोड़कर छटवीं सदी की तरफ़ मुड़ना हँसी की बात है. मुझे एक दक्षिण के आदमी के नाते "क़ौमी

اپنا کر گاندھی جی کے نام سے اپیل کر کے ان کو (دراوڑوں کو) شاید راضی کر کے اُن سے صلح کر سکتے ہیں۔ ہمیں ایسا لگتا ہے کہ ہندی والے ہندی کو راج بھاشا یا راشٹر بھاشا بنانے میں جتنی جلد بازی کرتے ہیں اتنی جلد بازی دیس کے سامنے جو ضروری مسئلے ہیں ان کی طرف بالکل نہیں کرتے۔

یاد رہے کہ ہندستان میں آگے چل کر ایسے سادھو بھی پیدا ہوں گے کہ ایک سال میں جو بارہ مہینے ہیں، اُن کو ہٹا کر چھ مہینے بنانے کے لئے بھی بھوک ہڑتال شروع کر دیں گے! بے کار بحث کرنے سے ہماری قربانی و جاں نثاری فضول ہو جائیں گی۔ سرکار کو ایسی دھمکیوں سے جھکنا نہیں چاہئیے۔ انگریزی بھاشا سے لاٹین، گریک اور فرینچ لفظوں کو خارج کرنے سے بھاشا میں بناوٹی پن آجائے گا۔ یہ مثال ہماری قومی زبان کے لئے بھی موزوں ہے۔ دکھن کے کئی پڑھے لکھے لوگ ناگری و اُردو حروف کے ساتھ ساتھ سرکاری کاغذات کے لئے رومن حرف اور نمبروں کو بھی اپنانا عقل مندی کا کام مانتے ہیں۔ کیوں کہ رومن لپی میں ٹیپنگ اور چھپائی کی سودھا ہے۔ جتنی آسانی سے رومن لپی سے "ٹیپ" کر سکتے ہیں اتنی آسانی سے ناگری میں ناممکن ہے۔ اس لئے ناگری ٹیپ ریٹر بنانے میں ہمارے سمے کو خرچ کرنا ٹھیک نہیں ہے۔ تامل بھاشا میں ایک کہاوت مشہور ہے "مکھن کو ہاتھ میں رکھ کر گھی کے لئے رونا فضول ہے۔" سائنس کے شبد جو ساری دنیا میں مشہور ہیں ان کو اپنانا چاہئیے۔ آسان راستے کو چھوڑ کر چھٹویں صدی کی طرف مڑنا ہنسی کی بات ہے۔ مجھے ایک دکشن کے آدمی کے ناتے "قومی

ज़बान" के बारे में कुछ कहना अपना फ़र्ज़ महसूस हुआ. इसलिये अपनी राय सेवा में पेश की. अर्ज़ है कि हम सावधानी व सब्र से राष्ट्र भाषा के मसले को हल करें. राज भाषा जो भी हो हमारी राष्ट्र भाषा वही होनी चाहिये जो गांधी जी चाहते थे.

زبان" کے بارے میں کچھ کہنا اپنا فرض محسوس ہوا۔ اس لئے اپنی رائے سیوا میں پیش کی۔ عرض ہے کہ ہم ساودھانی و صبر سے راشٹر بھاشا کے مسئلے کو حل کریں۔ راج بھاشا جو بھی ہو ہماری راشٹر بھاشا وہی ہونی چاہئیے جو گاندھی جی چاہتے تھے۔

रेडियो का बायकाट

(भाई हयातुल्ला अंसारी)

हिन्दी लेखकों और अखबारों ने आल इंण्डिया रेडियो का बायकाट कर दिया है. अब न वह वहाँ बोलने जाते हैं और न उसके प्रोग्राम छापते हैं. उनकी शिकायत यह है कि इस मुहकमे में ऊंची जगहों पर वह लोग हैं जो हिन्दी नहीं जानते हैं या हिन्दी के अच्छे लेखक नहीं समझे जाते हैं. उनमें से कुछ तो वह हैं जो पहले से इन जगहों पर चले आ रहे हैं और कुछ वह हैं जो नये रक्खे गये हैं लेकिन उनको रखते वक़्त इस बात को नहीं देखा गया कि आया उनकी हिन्दी साहित्य में कोई ख़ास पोज़ीशन है या नहीं. इस वजह से आल इंडिया रेडियो से जो हिन्दी बोली जाती है वह मेयारी (स्टैंडर्ड) नहीं होती है और अक्सर शब्द तक ठीक से अदा नहीं होते हैं.

इन शिकायतों और बायकाट को अगर माँगों की शकल दी जाय तो वह सिर्फ़ एक माँग का रूप ले लेते हैं. वह यह कि अब चूँकि हिन्दी सरकारी ज़बान हो गई है इसलिये पुराने नौकरों को रेडियो से अलग कर दिया जाय और उनकी जगह हिन्दी के मेयारी लिखने वालों को ले लिया जाय. क्योंकि सिर्फ़ वही लोग मेयारी हिन्दी लिख और बोल सकते हैं. इसका मतलब यह भी है कि हिन्दी कोई ऐसी ज़बान नहीं है जिसे हर आदमी बोल और लिख

ریڈیو کا بائیکاٹ

(بھائی حیات اللہ انصاری)

ہندی لیکھکوں اور اخباروں نے آل انڈیا ریڈیو کا بائیکاٹ کر دیا ہے۔ اب نہ وہ وہاں بولنے جاتے ہیں اور نہ اس کے پروگرام چھاپتے ہیں۔ ان کی شکایت یہ ہے کہ اس محکمے میں اونچی جگہوں پر وہ لوگ ہیں جو ہندی نہیں جانتے ہیں یا ہندی کے اچھے لیکھک نہیں سمجھے جاتے ہیں۔ ان میں سے کچھ تو وہ ہیں جو پہلے سے ان جگہوں پر چلے آ رہے ہیں اور کچھ وہ ہیں جو نئے رکھے گئے ہیں لیکن ان کو رکھتے وقت اس بات کو نہیں دیکھا گیا کہ آیا ان کی ہندی ساہتیہ میں کوئی خاص پوزیشن ہے یا نہیں۔ اس وجہ سے آل انڈیا ریڈیو سے جو ہندی بولی جاتی ہے وہ معیاری (اسٹینڈرڈ) نہیں ہوتی ہے اور اکثر شبد تک ٹھیک سے ادا نہیں ہوتے ہیں۔

ان شکایتوں اور بائیکاٹ کو اگر مانگوں کی شکل دی جائے تو وہ صرف ایک مانگ کا روپ لے لیتے ہیں۔ وہ یہ کہ اب چوں کہ ہندی سرکاری زبان ہو گئی ہے اس لئے پرانے نوکروں کو ریڈیو سے الگ کر دیا جائے اور ان کی جگہ ہندی کے معیاری لکھنے والوں کو لے لیا جائے۔ کیوں کہ صرف وہی لوگ معیاری ہندی لکھ اور بول سکتے ہیں۔ اس کا مطلب یہ بھی ہے کہ ہندی کوئی ایسی زبان نہیں ہے جسے ہر آدمی بول اور لکھ

सके. इसे सिर्फ़ ख़ास ख़ित्ते (क्षेत्र) के बसने वाले ही और मशहूर लेखक ही बोल और लिख सकते हैं.

इस वक़्त आल इण्डिया रेडियो का हाल यह है कि उसने उन तमाम लफ़्ज़ों का इस्तेमाल करना छोड़ दिया है जो आम तौर पर चलते हैं. हद यह है कि जवाहरलाल जी की तक़रीर अगर समाचार में ब्राडकास्ट की जाती है तो कठिन हिन्दी में तरजुमा करने के बाद. (अगर रिकार्ड की हुई तक़रीर हो तो मजबूरी है.) गोया कि आल इण्डिया रेडियो के नज़दीक जवाहर लाल जी जिस ज़बान में तक़रीर करते हैं वह आम तौर पर बोली और समझी नहीं जाती है. और वह पिछले चुनाव के दौरों में जो कुछ मुल्क भर में कहते फिरे हैं उसे बहुत कम लोग समझे हैं और अब भी वह जो कुछ दस दस लाख के मजमे में कहते हैं उसे मजमा बहुत कम समझता है. बल्कि अगर तरजुमे के ढंग को देखा जाय तो सिर्फ़ एक नतीजा निकाला जा सकता है, वह यह कि उनकी तक़रीरों को दो तीन फ़ीसदी लोग समझते हों तो समझते हों, बाक़ी कोई नहीं समझता है. जवाहर लाल जी पर क्या मुनहसर है सरदार पटेल और दिवाकर जी के भाषण भी जब समाचार में आते हैं तो तरजुमा होकर. रेडियो पर जो लोग बोलते हैं उन्होंने "खाना" और "पानी" तक छोड़ दिया है. उनकी जगह सिर्फ़ भोजन और जल इस्तेमाल करते हैं. गोया कि खाना और पानी अपने इस्तेमाल की कसरत के कारन हिन्दी से निकल कर उर्दू बन गये हैं.

ज़रा कठिन हिन्दी की माँग करने वालों को देखिये, ज़रा इस बात पर ध्यान दीजिये कि इनकी माँग यह नहीं है कि हिन्दी को

سکے. اسے صرف خاص خطے (چھیتر) کے بسنے والے ہی اور مشہور لیکھک ہی بول اور لکھ سکتے ہیں.

اس وقت آل انڈیا ریڈیو کا حال یہ ہے کہ اس نے ان تمام لفظوں کو استعمال کرنا چھوڑ دیا ہے جو عام طور پر چلتے ہیں. حد یہ ہے کہ جواہر لال جی کی تقریر اگر سماچار میں براڈکاسٹ کی جاتی ہے تو کٹھن ہندی میں ترجمہ کرنے کے بعد. (اگر ریکارڈ کی ہوئی تقریر ہو تو مجبوری ہے.) گویا کہ آل انڈیا ریڈیو کے نزدیک جواہر لال جی جس زبان میں تقریر کرتے ہیں وہ عام طور پر بولی اور سمجھی نہیں جاتی ہے. اور وہ پچھلے چناؤ کے دوروں میں جو کچھ ملک بھر میں کہتے پھرے ہیں اُسے بہت کم لوگ سمجھے ہیں اور اب بھی وہ جو کچھ دس دس لاکھ کے مجمع میں کہتے ہیں اُسے مجمع بہت کم سمجھتا ہے. بلکہ اگر ترجمہ کے ڈھنگ کو دیکھا جائے تو صرف ایک نتیجہ نکالا جا سکتا ہے، وہ یہ کہ ان کی تقریروں کو دو تین فی صدی لوگ سمجھتے ہوں تو سمجھتے ہوں، باقی کوئی نہیں سمجھتا ہے. جواہر لال جی پر کیا منحصر ہے سردار پٹیل اور دِواکر جی کے بھاشن بھی جب سماچار میں آتے ہیں تو ترجمہ ہو کر. ریڈیو پر جو لوگ بولتے ہیں انھوں نے "کھانا" اور "پانی" تک چھوڑ دیا ہے. ان کی جگہ صرف بھوجن اور جل استعمال کرتے ہیں. گویا کہ کھانا اور پانی اپنے استعمال کی کثرت کے کارن ہندی سے نکل کر اردو بن گئے ہیں.

ذرا کٹھن ہندی کی مانگ کرنے والوں کو دیکھئے، ذرا اس بات پر دھیان دیجئے کہ ان کی مانگ یہ نہیں ہے کہ ہندی کو

ऐसा ऐसा बनाया जाय और न यह है कि रेडियो में काम करने वालों को हिन्दी पढ़ाई जाय, बल्कि उनकी माँग यह है कि रेडियों में इस वक़्त जो लोग काम कर रहे हैं उनको निकाल दिया जाय. वह इस बात को मानने के लिये भी तैयार नहीं मालूम होते कि जो आदमी हिन्दी का नहीं बल्कि किसी दूसरी भाषा का लेखक है वह भी कुछ दिनों मेहनत करके राष्ट्र भाषा का लेखक बन सकता है. या यह कि जो लोग ग़ैर हिन्दी सूबों यानी यू० पी०, सी० पी० और बिहार के अलावा कहीं और पैदा हुए हैं वह भी आज नहीं तो कल हिन्दी के लेखक बन सकते हैं. और अगर वह इन बातों के मानने के लिये तैयार हैं तो फिर इस बात के लिये बिलकुल नहीं तैयार हैं कि दो चार साल सब्र करें और रेडियो वालो को नई ज़बान अपनाने का मौक़ा दें और जो लोग वहाँ नौकर हैं उनको भी कुछ नहीं तो एक कोशिश करके अपने दिल की भड़ास ही निकाल लेने दें. असिल बात यह है कि कठिन हिन्दी के हिमायतियों को जल्दी है और बहुत सख़्त जल्दी है. वह चाहते हैं कि रेडियो की भाषा फ़ौरन मेयारी हिन्दी बन जाय चाहे इसके लिये आल इंडिया रेडियो को अपने तमाम स्टाफ़ को निकाल देना पड़े, चाहे इससे भी सख़्त क़दम उठाना पड़े. इन्सानों के दुख दर्द की उनको कोई परवाह नहीं है.

यह कोशिश, हिन्दी का यह मेयार और यह जल्दी यह सब तानाशाही हैं यानी एक तबक़ा ज़बरदस्ती अपनी चीज़ों को जनता पर लादना चाहता है. वह दूसरे तबक़ों की, दूसरे सूबों के बाशिन्दों की और जनता की परेशानियों की कोई परवाह नहीं करता है. वह समझता है कि उसकी कलचर, उस का अदब यानी

ایسا ایسا بنایا جائے اور نہ یہ ہے کہ ریڈیو میں کام کرنے والوں کو ہندی پڑھائی جائے، بلکہ اُن کی مانگ یہ ہے کہ ریڈیو میں اس وقت جو لوگ کام کر رہے ہیں اُن کو نکال دیا جائے. وہ اس بات کو ماننے کے لئے بھی تیار نہیں معلوم ہوتے کہ جو آدمی ہندی کا نہیں بلکہ کسی دوسری بھاشا کا لیکھک ہے وہ بھی کچھ دنوں محنت کرکے راشٹر بھاشا کا لیکھک بن سکتا ہے۔ یا یہ کہ جو لوگ غیر ہندی صوبوں یعنی یو-پی، سی-پی- اور بہار کے علاوہ کہیں اور پیدا ہوئے ہیں وہ بھی آج نہیں تو کل ہندی کے لیکھک بن سکتے ہیں۔ اور اگر وہ ان باتوں کے ماننے کیلئے تیار ہیں تو پھر اس بات کیلئے بالکل نہیں تیار ہیں کہ دو چار سال صبر کریں اور ریڈیو والوں کو نئی زبان اپنانے کا موقع دیں اور جو لوگ وہاں نوکر ہیں اُن کو بھی کچھ نہیں تو ایک کوشش کرکے اپنے دل کی بھڑاس ہی نکال لینے دیں۔ اصل بات یہ ہے کہ کٹھن ہندی کے حامیوں کو جلدی ہے اور بہت سخت جلدی ہے۔ وہ چاہتے ہیں کہ ریڈیو کی بھاشا فوراً معیاری ہندی بن جائے چاہے اس کے لئے آل انڈیا ریڈیو کو اپنے تمام اسٹاف کو نکال دینا پڑے، چاہے اس سے بھی سخت قدم اُٹھانا پڑے۔ انسانوں کے دُکھ درد کی اُن کو کوئی پرواہ نہیں ہے۔

یہ کوشش، ہندی کا یہ معیار اور یہ جلدی یہ سب تاناشاہی ہیں یعنی ایک طبقہ زبردستی اپنی چیزوں کو جنتا پر لادنا چاہتا ہے۔ وہ دوسرے طبقوں کی، دوسرے صوبوں کے باشندوں کی اور جنتا کی پریشانیوں کی کوئی پرواہ نہیں کرتا ہے۔ وہ سمجھتا ہے کہ اُس کی کلچر، اُس کا ادب یعنی

साहित्य और उसका शब्दों को अदा करने का ढंग बेहतरीन है, इस लिये सब को उसे क़बूल करना चाहिये. इन ही चीजों को नहीं बल्कि उस ख़ास तबक़े की बड़ाई को भी क़बूल करना चाहिये. यह समझ कर क़बूल करना चाहिये कि दूसरे इस मरतबे तक पहुंच ही नहीं सकते. क्या हिटलर और मसोलिनी ने कुछ दूसरे क़िस्म की बातें कही थीं ?

हम नहीं जानते कि हिन्दी के लेखक और अख़बार मेयारो हिन्दी से क्या मतलब लेते हैं. अगर उनका मतलब यह है कि ऐसी भाषा होनी चाहिये जो आम तौर से समझी जाय तो उनकी मांग ठीक है. और अगर उनका मतलब यह है कि भाषा और कठिन करदी जाय, क्योंकि आज रेडियो में जो भाषा इस्तेमाल की जाती है उसमें अब भी हिन्दुस्तानी के शब्द आ जाते हैं तो इसके बारे में हम सिवाय इसके क्या कहें कि वह जानें और आल इंडिया रेडियो जाने. हम तो सिर्फ़ इतना कह सकते हैं कि मुल्क को भाषा के मामले में एक संकट काल का सामना करना है जब तक कठिन हिन्दी के हामियों को इस बात का अमली तजरबा नहीं हो जायगा कि यह ख़याल कि एक तबक़ा अपनी भाषा को ज़बरदस्ती दूसरों पर लाद सकता है, ग़लत है और उनकी ऐसी कोशिशें जनता को उनसे दूर कर रही हैं, उस समय तक वह इस कोशिश में लगे रहेंगे,—इसलिये हमतो तन्दुरुस्ती के दौर की आस पर इस कठिन काल को हँसी ख़ुशी झेल ले जाने के लिये तैयार बैठे ही हैं. आज कल दो चार सरल शब्द जो रेडियो पर आ जाते हैं वह बाक़ी रहते हैं या निकल जाते हैं हमको इसकी कोई ख़ास परवाह नहीं. हमको पूरा यक़ीन है कि यह

ساہتیہ اور اُس کا شبدوں کو ادا کرنے کا ڈھنگ بہترین ہے، اس لئے سب کو اُسے قبول کرنا چاہیئے. ان ہی چیزوں کو نہیں بلکہ اُس خاص طبقے کی بڑائی کو بھی قبول کرنا چاہیئے. یہ سمجھ کر قبول کرنا چاہیئے کہ دوسرے اس مرتبے تک پہنچ ہی نہیں سکتے. کیا ہٹلر اور مسولینی نے کچھ دوسرے قسم کی باتیں کہی تھیں.

ہم نہیں جانتے کہ ہندی کے لیکھک اور اخبار معیاری ہندی سے کیا مطلب لیتے ہیں. اگر اُن کا مطلب یہ ہے کہ ایسی بھاشا ہونی چاہیئے جو عام طور سے سمجھی جائے تو اُن کی مانگ ٹھیک ہے. اور اگر اُن کا مطلب یہ ہے کہ بھاشا اور کٹھن کر دی جائے، کیونکہ آج ریڈیو میں جو بھاشا استعمال کی جاتی ہے اُس میں اب بھی ہندستانی کے شبد آ جاتے ہیں تو اس کے بارے میں ہم سوائے اس کے کیا کہیں کہ وہ جانیں اور آل انڈیا ریڈیو جانے. ہم تو صرف اتنا کہہ سکتے ہیں کہ ملک کو بھاشا کے معاملے میں ایک سنکٹ کال کا سامنا کرنا ہے جب تک کٹھن ہندی کے حامیوں کو اس بات کا عملی تجربہ نہیں ہو جائے گا کہ یہ خیال کہ ایک طبقہ اپنی بھاشا کو زبردستی دوسروں پر لاد سکتا ہے، غلط ہے اور اُن کی ایسی کوششیں جنتا کو اُن سے دور کر رہی ہیں، اُس سمے تک وہ اس کوشش میں لگے رہیں گے،— اس لئے ہم تو تندرستی کے دور کی آس پر اس کٹھن کال کو ہنسی خوشی سے جھیل لے جانے کیلئے تیار بیٹھے ہی ہیں. آج کل دو چار سرل شبد جو ریڈیو پر آ جاتے ہیں وہ باقی رہتے ہیں یا نکل جاتے ہیں ہم کو اس کی کوئی خاص پرواہ نہیں. ہم کو پورا یقین ہے کہ یہ

संकट अधिक दिनों नहीं ठहर सकता. जिस तरह रात के बाद सुबह का आना यक़ीनी है उसी तरह यह बात भी यक़ीनी है कि जनता जल्द ही इस भाषा के ख़िलाफ़ फ़रियाद करेगी और तब जनता और हिन्दी लेखकों के बीच दूरी पैदा होने लगेगी और उस समय इस भारी बोझिल भाषा को हलकी फुलकी बनना पड़ेगा.

मुस्लिम देशभक्त

[लेखक श्री० रतनलाल बंसल]

इस किताब में कुछ ऐसे मुसलमान देश भक्तों के जीवन का हाल और उनके कारनामे बयान किये गये हैं जिन्होंने अंगरेज़ों के मनहूस क़दम यहाँ जमने के पहले ही इनके राज की बुराइयों का अन्दाज़ा कर लिया था और उनको हिन्दुस्तान से निकाल भगाने में ही हिन्द की भलाई देखी थी.

इस किताब को पढ़कर आपको मालूम होगा कि किस तरह मुसलमान आलिमों ने सन् १८५७ से भी पहले से आज़ादी की लड़ाई शुरू कर रक्खी थी. अपनी जान हथेली पर रखकर उन्होंने हिन्दुस्तान और विदेशों में रहते हुए भी अंगरेज़ी हकूमत का मुक़ाबला किया. यह सब हाल पढ़कर आप दंग रह जायँगे.

किताब दोनों लिखावटों में छपी है. क़ीमत १ रुपया १२ आने.

—मैनेजर, 'नया हिन्द,'
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

سنکٹ ادھک دنوں نہیں ٹھہر سکتا. جس طرح رات کے بعد صبح کا آنا یقینی ہے اسی طرح یہ بات بھی یقینی ہے کہ جنتا جلد ہی اس بھاشا کے خلاف فریاد کریگی اور تب جنتا اور ہندی لیکھکوں کے بیچ دوری پیدا ہونے لگے گی اور اس سمے اس بھاری بوجھل بھاشا کو ہلکی پھلکی بننا پڑے گا.

مسلم دیش بھگت

[لیکھک شری رتن لال بنسل]

اس کتاب میں کچھ ایسے مسلمان دیش بھگتوں کے جیون کا حال اور انکے کارنامے بیان کئے گئے ہیں جنھوں نے انگریزوں کے منحوس قدم یہاں جمنے کے پہلے ہی انکے راج کی برائیوں کا اندازہ کر لیا تھا اور ان کو ہندستان سے نکال بھگانے میں ہی ہند کی بھلائی دیکھی تھی.

اس کتاب کو پڑھ کر آپ کو معلوم ہوگا کہ کس طرح مسلمان عالموں نے سنہ ۱۸۵۷ سے بھی پہلے سے آزادی کی لڑائی شروع کر رکھی تھی. اپنی جان ہتھیلی پر رکھ کر انھوں نے ہندستان اور دودیشوں میں رہتے ہوئے بھی انگریزی حکومت کا مقابلہ کیا. یہ سب حال پڑھ کر آپ دنگ رہ جائیں گے.

کتاب دونوں لکھاوٹوں میں چھپی ہے. قیمت ۱ روپیہ ۱۲ آنے

منیجر 'نیا ہند'
۴۸ بائی کا باغ. الہ آباد.

भाग्य-चक्र

(भाई रामजी दूर)

मग्न हो मैं फूल रहा था—फूलने की फ़ितरत है मेरी. रंग-रूप में अपने ख़ुद मस्त था मैं बिना इच्छा किसी के आदर की.

एकाकी जीवन बिता रहा था, ना याद सताती मुझे किसी की.

काँटों के बीच थी बस्ती मेरी—भीतर मेरे मधु-का ख़ाजाना था.

देख गंध, रूप, मधुरता इकट्ठा बिगड़ी नियत मानव-मक्खी की.

पहले दूर से डाली नजर उसने, फिर पास आ मीठी बोली से की तारीफ़ मेरी—

"कैसा सुन्दर कैसा प्यारा फूल !"

फेरा हाथ कोमल बदन पर मेरे और उसी छिन टहनी से तोड़ मुझे गर्व से बिठाया छाती पर अपनी.

सुशोभित हुआ मानव का हृदय, और जगत की नजर उसकी ओर खिंची.

मैं जन्मो मौन—क्या समझे कोईबीती मेरी,
पर मैं सुन रहा था धड़कन दिल की.
हर घड़ी यह संसार बदला करता है,
चन्द रोज़ थी मेरी भी जवानी,
मैं मुरझाया—हरकत पलटी हृदय की,
था बिराजमान सीने पर इन्सान के.

بھاگیہ چکر

(بھائی رام جی دور)

مگن ہو میں پھول رہا تھا — پھولنے کی فطرت ہے میری. رنگ روپ میں اپنے خود مست تھا میں بنا اِچھا کسی کے آدر کی.

اکاکی جیون بتا رہا تھا، نا یاد ستاتی مجھے کسی کی.

کانٹوں کے بیچ تھی بستی میری — بھیتر میرے مدھو کا خزانہ تھا.

دیکھ گندھ، روپ، مدھرتا اِکٹھا بگڑی نیت مانو مکھی کی.

پہلے دُور سے ڈالی نظر اُس نے، پھر پاس آ میٹھی بولی سے کی تعریف میری —

"کیسا سُندر کیسا پیارا پھول!"

پھیرا ہاتھ کومل بدن پر میرے اور اُسے چھن ٹہنی سے توڑا مجھے گرو سے بٹھایا چھاتی پر اپنی.

سُشوبھت ہوا مانو کا ہردے، اور جگت کی نظر اُس کی اور کھنچی.

میں جنمی مَون — کیا سمجھے کوئی بیتی میری،
پر میں سُن رہا تھا دھڑکن دل کی.
ہر گھڑی یہ سنسار بدلا کرتا ہے.
چند روز تھی میری بھی جوانی،
میں مرجھایا — حرکت پلٹی ہردے کی.
تھا براجمان سینے پر انسان کے.

पाया अपने को धूल में उसी के पैरों की ! समय बीता तेजी से—मैं भूला जगत को
जगत ने मुझे भुलाया, पर भाग्य-चक्र का काम बाक़ायदा जारी था
यकायक हवा का झोंका आया और किसी ने मुझसे टक्कर ली
"कौन ?" मैं चौंक उठा !
"वही !"—जवाब में पिछली मुलाक़ात की झलक थी, अपनापन था,
मेरी सिद्धि थी—प्रायश्चित्त मानव का !!

पंजाब हमें क्या सिखाता है

लेखक-पंडित सुन्दरलाल

पंडित सुन्दरलाल जी ने, महात्मा गांधी की सलाह से अक्तूबर सन्' ४७ में पच्छिमी और पूरबी पंजाब का दौरा किया था. इस छोटे से बयान में उन्होंने वहाँ की भयंकर बरबादी और आपसी मारकाट की वजह से जो जो नतीजे लोगों को भुगतने पड़ रहे हैं उनका बहुत ही दर्दनाक वर्णन किया है. आखीर में, आजकल की मुसीबतों को हल करने के लिये, कुछ सुझाव भी पेश किये हैं. हमें विश्वास है कि पंजाब की मौजूदा हालत को ठीक तरह से समझने में इस बयान से बड़ी मदद मिलेगी.

किताब उर्दू और नागरी दोनों लिखावटों में मिल सकती है. क़ीमत चार आने.

—मैनेजर 'नया हिन्द'
४८, बाई का बाग़, इलाहाबाद.

پایا اپنے کو دھول میں اُسی کے پیروں کی! سمے بیتا تیزی سے — میں بھولا جگت کو
جگت نے مجھے بھلایا، پر بھاگیہ چکر کا کام باقاعدہ جاری تھا
یکایک ہوا کا جھونکا آیا اور کسی نے مجھ سے ٹکر لی
"کون؟" میں چونک اُٹھا!
"وہی!" جواب میں پچھلی ملاقات کی جھلک تھی، اپناپن تھا،
میری سدھی تھی — پرائشچت مانو کا!!

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے

لیکھک پنڈت سُندرلال

پنڈت سُندرلال جی نے، مہاتما گاندھی کی صلاح سے اکتوبر سنہ ۴۷ میں پچھمی اور پوربی پنجاب کا دورا کیا تھا. اس چھوٹے سے بیان میں اُنھوں نے وہاں کی بھینکر بربادی اور آپسی مارکاٹ کی وجہ سے جو جو نتیجے لوگوں کو بھگتنے پڑ رہے ہیں اُن کا بہت ہی دردناک ورنن کیا ہے. آخیر میں، آجکل کی مصیبتوں کو حل کرنے کیلئے، کچھ سُجھاؤ بھی پیش کئے ہیں. ہمیں وشواس ہے کہ پنجاب کی موجودہ حالت کو ٹھیک طرح سے سمجھنے میں اس بیان سے بڑی مدد ملے گی.

کتاب اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹوں میں مل سکتی ہے. قیمت چار آنے

منیجر 'نیا ہند'
۴۸، بائی کا باغ، الٰہ آباد.

कुछ किताबें

हृदय-मंथन के पांच दिन

संग्राहक—श्री यशपाल जैन, प्रकाशक-सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली, दाम चार आने. सफ़ा ६७

इस किताब में उन भावनों को इकट्ठा किया गया है जो गांधीजी ने अपने आखिरी उपवास के पाँच दिनों में दिये थे. बापू का यह आखिरी उपवास सचमुच हिन्द वासियों के लिये हृदय-मन्थन यानी अपने दिल को टटोलने और सोच विचार करने का मौक़ा रहा है.

जनवरी १९४८ में गांधीजी दिल्ली के दंगों से बुरी तरह निराश से होगये थे, उनका दिल देश की हालत देख खट्टा होगया था. लेकिन किसी को यह उम्मीद न थी कि गांधीजी उपवास ही शुरू कर देंगे, यह भी सभी को मालूम था कि उपवास गांधीजी का आखिरी हथियार होता है. जब वह हर तरह से समझाकर कहकर हार जाते थे तभी उपवास करते थे.

अपने इस उपवास का कारन गांधीजी ने पहले तो मन की सफ़ाई बताया था पर उसका असर देश की राजकाजी और साम्प्रदायिक हालत पर पूरा पूरा पड़ा. जब दिल्ली के हर फ़िरक़े और हर पार्टी के लोगों ने गांधीजी को यह विश्वास दिलाया कि अब वह दिल्ली में दंगा न होने देंगे तब उन्हों ने उपवास तोड़ दिया था.

کچھ کتابیں

ہردے منتھن کے چار دن

سنگراہک—شری یشپال جین، پرکاشک سستا ساہتیہ منڈل، نئی دلی، دام چار آنے. صفحہ ۶۷

اِس کتاب میں اُن بھاشنوں کو اکٹھا کیا گیا ہے جو گاندھی جی نے اپنے آخری اُپواس کے پانچ دنوں میں دیئے تھے. باپو کا یہ آخری اُپواس سچ مچ ہند واسیوں کیلئے ہردے منتھن یعنی اپنے دل کو ٹٹولنے اور سوچ وچار کرنے کا موقع رہا ہے.

جنوری ۱۹۴۸ میں گاندھی جی دِلّی کے دنگوں سے بُری طرح نراش سے ہوگئے تھے، اُن کا دل دیش کی حالت دیکھ کھٹا ہو گیا تھا. لیکن کسی کو یہ اُمید نہ تھی کہ گاندھی جی اُپواس ہی شروع کر دیں گے، یہ بھی سبھی کو معلوم تھا کہ اُپواس گاندھی جی کا آخری ہتھیار ہوتا ہے. جب وہ ہر طرح سے سمجھا کر کہکر ہار جاتے تھے تبھی اُپواس کرتے تھے.

اپنے اِس اُپواس کا کارن گاندھی جی نے پہلے تو مَن کی صفائی بتایا تھا پر اُس کا اثر دیش کی راج کاجی اور سامپردایک حالت پر پورا پورا پڑا. جب دِلّی کے ہر فرقے اور ہر پارٹی کے لوگوں نے گاندھی جی کو یہ وِشواس دلایا کہ اب وہ دِلّی میں دنگا نہ ہونے دیں گے تب اُنھوں نے اُپواس توڑ دیا تھا.

अपने उपवास के पाँच दिनों में गांधीजी ने प्रार्थना के बाद सभा में या बिस्तर पर से अपने देश के लोगों से जो कुछ कहा वह इस किताब में जमा कर दिया गया है. गांधीजी के भाषनों के अलावा इस में वह बयान भी जमा कर दिये गये हैं जो उपवास के समय हिन्द और पाकिस्तान के नेताओं ने साम्प्रदायिक शान्ति क़ायम करने के लिये दिये थे. उन नेताओं में ख़ास नाम पंडित नेहरू, सरदार पटेल, डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, मौलाना आज़ाद, राजा जी, श्री जयप्रकाश नारायन, नवाब भूपाल, ग़ज़नफ़र अली ख़ां और फ़ीरोज़ ख़ां नून के हैं.

इसमें वह प्रतिज्ञापत्र या अहद नामा भी है जिसपर हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख नुमाइन्दों ने दस्तख़त किये थे और जिसपर गांधी जी ने उपवास तोड़ा था. गांधी जी के प्यारे भजन और उनके पिछले उपवासों की तारीख़ें भी किताब में जमा कर दी गई हैं जिससे किताब की अहमियत और बढ़ गई है. हर हिन्दुस्तानी को यह किताब पढ़नी और अपने पास रखनी चाहिये.

"शरद"

"हुर्रियत" हफ़्तावार का बापू नम्बर

देहली के हफ़्तावार 'हुर्रियत' ने बड़ी सजधज से देश पिता महात्मा गांधी की याद में बापू नम्बर निकाला है. यह नम्बर सचमुच बापू के जीवन, उनके आदर्शों, सिद्धान्तों और कारनामों पर एक पूरी किताब है.

'हुर्रियत' के एडीटर हाफ़िज़ अज़ीज़ हसन बक़ाई उर्दू अख़बार

اپنے اُپواس کے پانچ دنوں میں گاندھی جی نے پرارتھنا کے بعد سبھا میں یا بستر پر سے اپنے دیش کے لوگوں سے جو کچھ کہا وہ اِس کتاب میں جمع کر دیا گیا ہے۔ گاندھی جی کے بھاشنوں کے علاوہ اِس میں وہ بیان بھی جمع کر دیئے گئے ہیں جو اُپواس کے سمے ہند اور پاکستان کے نیتاؤں نے سامپردایک شانتی قائم کرنے کیلئے دیئے تھے۔ اُن نیتاؤں میں خاص نام پنڈت نہرو، سردار پٹیل، ڈاکٹر راجیندر پرساد، مولانا آزاد، راجا جی، شری جے پرکاش نارائن، نواب بھوپال، غضنفر علی خاں اور فیروز خاں نون کے ہیں۔

اس میں وہ پرتگیا پتر یا عہد نامہ بھی ہے جس پر ہندو مسلمان اور سکھ نمائندوں نے دستخط کئے تھے اور جس پر گاندھی جی نے اُپواس توڑا تھا۔ گاندھی جی کے پیارے بھجن اور اُنکے پچھلے اُپواسوں کی تاریخیں بھی کتاب میں جمع کر دی گئی ہیں جس سے کتاب کی اہمیت اور بڑھ گئی ہے۔ ہر ہندستانی کو یہ کتاب پڑھنی اور اپنے پاس رکھنی چاہیے۔

"شرد"

"حُرّیت" ہفتہ وار کا باپو نمبر

دہلی کے ہفتہ وار 'حُرّیت' نے بڑی سج دھج سے دیش پتا مہاتما گاندھی کی یاد میں باپو نمبر نکالا ہے۔ یہ نمبر سچ مچ باپو کے جیون، اُن کے آدرشوں، سدھانتوں اور کارناموں پر ایک پوری کتاب ہے۔

'حُرّیت' کے ایڈیٹر حافظ عزیز حسن بقائی اُردو اخبار

नवीसी में क़ौमी राजनीति और महात्मा गांधी की फ़ौज के बड़े पुराने सिपाही हैं. हाफ़िज़ साहब फ़िरक़ा परस्ती को देश के लिये सब से बड़ी लानत समझते हैं और कभी किसी भी बड़े से बड़े लालच या धमकी में आकर आपने फ़िरक़ापरस्तों से कोई समझौता नहीं किया. हमें वह समय भी याद है जब मुसलिम लीग के बहकाये हुए ना समझ मुसलमान हाफ़िज़ साहब की जान के इसलिये दुश्मन थे कि वह मुसलिम लीग के दो क़ौमों के सिद्धान्त का विरोध करते थे और आज हम यह वक़्त भी देख रहे हैं कि हिन्दू फ़िरक़ा परस्त हाफ़िज़ साहब से इसलिये नाराज़ हैं कि वह हिन्दू फ़िरक़ा परस्ती का भी उसी तरह विरोध करते हैं जैसे मुसलिम फ़िरक़ा परस्ती का करते थे.

अख़बार साइज़ के सौ सफ़ों का शानदार ख़ास नम्बर निकाल कर भी, जिसमें गांधी जी और उनके बारे में दर्जनों तस्वीरें भी हैं, एडीटर साहब को इस बात का दुख है कि वह बापू की याद में, जैसा ख़ास नम्बर निकालना चाहते थे वैसा न निकाल सके. हमें यह बापू नम्बर बहुत अच्छा लगा सिर्फ़ इसलिये नहीं कि इसमें बापू के बारे में जानकारी भरे अच्छे अच्छे लेख हैं बल्कि इसलिये भी कि बक़ाई साहब ने हज़ारों रुपये का घाटा सहकर भी फ़िरक़ा परस्ती के ख़िलाफ़ जेहाद से मुंह नहीं मोड़ा और फ़िरक़ा परस्ती से लड़ते हुए जान देने वाले अमर शहीद महात्मा गांधी की याद में ऐसा शानदार नम्बर निकाला.

हम बक़ाई साहब को उनकी इस कोशिश पर बधाई देते हैं और उर्दू जानने वाले अपने पाठकों से अपील करते हैं कि वह 'हुर्रियत' का बापू नम्बर ज़रूर पढ़ें.

बापू नम्बर का दाम डेढ़ रुपया है. मिलने का पता—मैनेजर हफ़्तावार 'हुर्रियत' जामा मसजिद, देहली.

نویسی میں قومی راج نیتی اور مہاتما گاندھی کی فوج کے بڑے پرانے سپاہی ہیں. حافظ صاحب فرقہ پرستی کو دیش کیلئے سب سے بڑی لعنت سمجھتے ہیں اور کبھی کسی بھی بڑے سے بڑے لالچ یا دھمکی میں آکر آپنے فرقہ پرستوں سے کوئی سمجھوتا نہیں کیا. ہمیں وہ سمے بھی یاد ہے جب مسلم لیگ کے بہکائے ہوئے ناسمجھ مسلمان حافظ صاحب کی جان کے اس لئے دشمن تھے کہ وہ مسلم لیگ کے دو قوموں کے سدھانت کا ورودھ کرتے تھے اور آج ہم یہ وقت بھی دیکھ رہے ہیں کہ ہندو فرقہ پرست اس لئے ناراض ہیں کہ وہ ہندو فرقہ پرستی کا بھی اسی طرح ورودھ کرتے ہیں جیسے مسلم فرقہ پرستی کا کرتے تھے.

اخبار سائز کے سو صفحوں کا شاندار خاص نمبر نکال کر بھی، جس میں گاندھی جی اور اُن کے بارے میں درجنوں تصویریں بھی ہیں، ایڈیٹر صاحب کو اس بات کا دکھ ہے کہ وہ باپو کی یاد میں جیسا خاص نمبر نکالنا چاہتے تھے ویسا نہ نکال سکے. ہمیں یہ باپو نمبر بہت اچھا لگا صرف اس لئے نہیں کہ اس میں باپو کے بارے میں جانکاری بھرے اچھے اچھے لیکھ ہیں بلکہ اس لئے بھی کہ بقائی صاحب نے ہزاروں روپئے کا گھاٹا سہہ کر بھی فرقہ پرستی کے خلاف جہاد سے منہ نہیں موڑا اور فرقہ پرستی سے لڑتے ہوئے جان دینے والے امر شہید مہاتما گاندھی کی یاد میں ایسا شاندار نمبر نکالا.

ہم بقائی صاحب کو اُن کی اس کوشش پر بدھائی دیتے ہیں اور اردو جاننے والے اپنے پاٹھکوں سے اپیل کرتے ہیں کہ وہ 'حرّیت' کا باپو نمبر ضرور پڑھیں.

باپو نمبر کا دام ڈیڑھ روپیہ ہے. ملنے کا پتہ — مینیجر ہفتہ وار 'حرّیت' جامع مسجد، دہلی.

आये हुए .ख़त

"नयाहिन्द" के एडीटर के नाम कई .ख़त इस तरह के आते रहते हैं जिनमें आज कल के मसलों और "नया हिन्द" के मिशन के सम्बन्ध में तरह तरह के सवाल किये जाते हैं. इस तरह के ख़तों और उनके जवाबों को हमने अभी तक "नया हिन्द" में जगह नहीं दी था. पर इनमें से कुछ .ख़त .ख़ासे मारके के होते हैं. इसलिए हमने तय किया है कि आगे से "नया हिन्द" के कुछ पन्ने हर महीने इसके लिये दिये जाएं—एडीटर

भाई श्री गिरी,

आपका .ख़त और अङ्गरेज़ी अख़बार की कतरन मिली. जो सवाल आपके मन में उठ रहा है अङ्गरेज़ी कतरन में उसका रूप मुझे यह दिखाई देता है—

(१) सवाल—इसलाम में दाख़िल होने से पहले हर आदमी को वह सब बातें छोड़ देनी पड़ती हैं जिनका संबन्ध उसके राष्ट्र से है.

जवाब—ऐसा नहीं है, और न मुसलमान तुरकों, ईरानियों, चीनियों या हिन्दुस्तानियों ने वह सब बातें छोड़ी हैं जिनका संबन्ध उनके राष्ट्र से है.

(२) सवाल—इतना ही काफ़ी नहीं है कि वह इसलाम के मज़हबी असूलों को मान ले.

११

آئے ہوئے خط

"نیا ہند" کے ایڈیٹر کے نام کئی خط اس طرح کے آتے رہتے ہیں جن میں آج کل کے مسلوں اور "نیا ہند" کے مشن کے سمبندھ میں طرح طرح کے سوال کئے جاتے ہیں۔ اس طرح کے خطوں اور اُن کے جوابوں کو ہم نے ابھی تک "نیا ہند" میں جگہ نہیں دی تھی۔ پر ان میں سے کچھ خط خاصے معرکے کے ہوتے ہیں۔ اسلئے ہم نے طے کیا ہے کہ آگے سے "نیا ہند" کے کچھ پنّے ہر مہینے اس کے لئے دئے جائیں — ایڈیٹر

بھائی شری گری،

آپ کا خط اور انگریزی اخبار کی کترن ملی۔ جو سوال آپ کے من میں اُٹھ رہا ہے انگریزی کترن میں اس کا روپ مجھے یہ دکھائی دیتا ہے —

(۱) سوال — اسلام میں داخل ہونے سے پہلے ہر آدمی کو وہ سب باتیں چھوڑ دینی پڑتی ہیں جن کا سمبندھ اس کے راشٹر سے ہے۔

جواب — ایسا نہیں ہے، اور نہ مسلمان ترکوں، ایرانیوں، چینیوں یا ہندستانیوں نے وہ سب باتیں چھوڑی ہیں جن کا سمبندھ اُن کے راشٹر سے ہے۔

(۲) سوال — اتنا ہی کافی نہیں ہے کہ وہ اسلام کے مذہبی اصولوں کو مان لے۔

١١

जवाब—मुसलमान होने के लिये केवल इतना काफ़ी है कि आदमी जियादा से जियादा पांच बातों को माने और नेक काम करे. वह पांच बातें यह हैं—एक निराकार ईश्वर, फ़रिश्ते यानी नेकी की ताकतें, दुनिया के सब रसूल, दुनिया की सब इलहामी किताबें और कर्मों का फल.

(३) सवाल—सच्चा मुसलमान होने के लिये उसे अपना नाम छोड़कर अरबी नाम रखना ज़रूरी है.

जवाब—यह बात बिलकुल ग़लत है. दुनिया के कम से कम पच्हत्तर फ़ीसदी मुसलमानों के नाम ग़ैर अरबी हैं भी.

(४) सवाल—अरबी ज़बान पढ़ना ज़रूरी है.

जवाब— बिलकुल नहीं, अरब को छोड़कर बाक़ी दुनिया के एक फ़ीसदी मुसलमान भी अरबी नहीं जानते.

(५) सवाल—अरबी पञ्चांग बरतना ज़रूरी है.

जवाब—बिलकुल नहीं. दुनिया के जियादातर मुसलमान बादशाह शम्सी (सौर) पंचांग बरतते रहे हैं, और दुनिया के मुसलमान सब तरह के कैलेन्डर बरतते हैं.

(६) सवाल—अरबी तरीक़े से ही बीमारियों का इलाज करना ज़रूरी है.

जवाब—बिलकुल ग़लत. बीमारियों के इलाज का न कोई ख़ास अरबी तरीक़ा है और न कोई ख़ास इसलामी तरीक़ा दुनिया को मालूम है.

(७) सवाल—अरब को सारी सभ्यता और कलचर का सरचश्मा मानना ज़रूरी है.

जवाब—हो सकता है अरब के कुछ लोग ऐसा मानते हों. पर

جواب — مسلمان ہونے کے لئے کیول اتنا کافی ہے کہ آدمی زیادہ سے زیادہ پانچ باتوں کو مانے اور نیک کام کرے وہ پانچ باتیں یہ ہیں — ایک نراکار ایشور، فرشتے یعنی نیکی کی طاقتیں دنیا کے سب رسول، دنیا کی سب الہامی کتابیں اور کرموں کا پھل۔

(۳) سوال — سچا مسلمان ہونے کے لئے اُسے اپنے نام چھوڑ کر عربی نام رکھنا ضروری ہے۔

جواب۔ یہ بات بالکل غلط ہے دنیا کے کم سے کم پچھتر فیصدی مسلمانوں کے نام غیر عربی ہیں بھی۔

(۴) سوال — عربی زبان پڑھنا ضروری ہے۔

جواب۔ بالکل نہیں، عرب کو چھوڑ کر باقی دنیا کے ایک فیصدی مسلمان بھی عربی نہیں جانتے۔

(۵) سوال — عربی پنچانگ برتنا ضروری ہے۔

جواب۔ بالکل نہیں۔ دنیا کے زیادہ تر مسلمان بادشاہ شمسی (سَور) پنچانگ برتتے رہے ہیں، اور دنیا کے مسلمان سب طرح کے کیلینڈر برتتے ہیں۔

(۶) سوال — عربی طریقوں سے ہی بیماریوں کا علاج کرنا ضروری ہے۔

جواب — بالکل غلط۔ بیماریوں کے علاج کا نہ کوئی خاص عربی طریقہ ہے اور نہ کوئی خاص اسلامی طریقہ دنیا کو معلوم ہے۔

(۷) سوال — عرب کو ساری سبھیتا اور کلچر کا سرچشمہ ماننا ضروری ہے۔

جواب — ہو سکتا ہے عرب کے کچھ لوگ ایسا مانتے ہوں۔ پر

बाक़ी दुनिया का कोई भी मुसलमान ऐसा नहीं मानता. इन बातों का मुसलमान होने से कोई सम्बन्ध नहीं है.

यह तो रहा सवालों का जवाब. अब इन्हीं बातों को ज़रा तफ़सील से देखें. पहले नाम ही को लीजिये. मोहम्मद साहब ने जिन लाखों आदमियों को मुसलमान बनाया उनमें से किसी एक का भी नाम नहीं बदला. यानी इसलाम में दाख़िल होने के लिये नाम बदलना ज़रूरी नहीं है. अबूबकर, उमर, उसमान और अली सब बुतपरस्ती के ज़माने के नाम चले आ रहे थे. इसके बाद जब इसलाम ईरान पहुँचा तो वहाँ भी मुसलमान होने वालों के वही ईरानी नाम बने रहे जो पहले से चले आ रहे थे. केवल थोड़े से अरबी नाम और चल पड़े जो एक क़ुदरती बात थी. बहुत से अरबी लफ़्ज़ भी फ़ारसी ज़बान में मिल गए और कुछ लोग आदर दिखाने के लिये अपने नामों के साथ इमामों वग़ैरा के नाम जोड़ने लगे. पर ज़ियादातर मुसलमान ईरानियों के नाम ईरानी ही रहे और आज तक हैं. ईरानी नाम ही वहां के मुसलमानों को ज़ियादा पसंद हैं. यही हाल तुरकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, चीन, इन्डोनीशिया वग़ैरा में हुआ. एक बड़ा धोका यह होता है कि हम इन देशों की भाषाओं को भी नहीं जानते और भाषा से धर्म का ग़लत अन्दाज़ा लगा लेते हैं. जैसे बहुत से लोग चंगेज़ ख़ां और कुबलई ख़ाँ को मुसलमान समझते हैं. यह दोनों बौद्ध थे, और इन दोनों के नाम इसलाम की पैदाइश के पहले के मंगोल नाम थे. 'ख़ान' और 'पठान' जैसे शब्द इसलाम के हज़ारों साल पहले से चले आ रहे हैं, और अरबी नहीं हैं.

इसलाम के हिन्दुस्तान पहुँचने पर नाम बदलने का रिवाज

باقی دُنیا کا کوئی بھی مسلمان ایسا نہیں مانتا۔ ان باتوں کا مسلمان ہونے سے کوئی سمبندھ نہیں ہے۔

یہ تو رہا سوالوں کا جواب۔ اب انہیں باتوں کو ذرا تفصیل سے دیکھیں۔ پہلے نام ہی کو لیجئے۔ محمد صاحب نے جن لاکھوں آدمیوں کو مسلمان بنایا اُن میں سے کسی ایک کا بھی نام نہیں بدلا۔ یعنی اسلام میں داخل ہونے کے لئے نام بدلنا ضروری نہیں ہے۔ ابوبکر، عمر، عثمان اور علی سب بُت پرستی کے زمانے کے نام چلے آ رہے تھے۔ اس کے بعد جب اسلام ایران پہنچا تو وہاں بھی مسلمان ہونے والوں کے وہی ایرانی نام بنے رہے جو پہلے سے چلے آ رہے تھے۔ کیول تھوڑے سے عربی نام اور چل پڑے جو ایک قدرتی بات تھی۔ بہت سے عربی لفظ بھی فارسی زبان میں مل گئے اور کچھ لوگ آدر دکھانے کے لئے اپنے ناموں کے ساتھ اماموں وغیرہ کے نام جوڑنے لگے۔ پر زیادہ تر مسلمان ایرانیوں کے نام ایرانی ہی رہے اور آج تک ہیں۔ ایرانی نام ہی وہاں کے مسلمانوں کو زیادہ پسند ہیں۔ یہی حال ترکستان، افغانستان، چین، انڈونیشیا وغیرہ میں ہوا۔ ایک بڑا دھوکا یہ ہوتا ہے کہ ہم ان دیشوں کی بھاشاؤں کو بھی نہیں جانتے اور بھاشا سے دھرم کا غلط اندازہ لگا لیتے ہیں۔ جیسے بہت سے لوگ چنگیز خاں اور قبلئی خاں کو مسلمان سمجھتے ہیں۔ یہ دونوں بودھ تھے، اور ان دونوں کے نام اسلام کی پیدائش کے پہلے کے منگول نام تھے۔ 'خان' اور 'پٹھان' جیسے شبد اسلام کے ہزاروں سال پہلے سے چلے آرہے ہیں، اور عربی نہیں ہیں۔

اسلام کے ہندستان پہنچنے پر نام بدلنے کا رواج

आम हो गया. इसका एक कारन यह भी था कि इस देश के बहुत से नाम देवी देवताओं के नामों पर होते थे, जैसे दुर्गादास, देवी प्रसाद वग़ैरा. दूसरा कारन हिन्दुओं की छुआ छूत भी है, यानी हिन्दुओं का यह ग़लत रिवाज कि वह किसी आदमी के दूसरे मजहब में जाते ही उसे ग़ैर और लगभग अछूत समझने लगते थे. फिर भी मैं आप की इस बात से सहमत हूँ कि "धर्म परिवर्तन के साथ नाम ट्रेड मार्क परिवर्तन" हरगिज़ जरूरी नहीं होना चाहिये. यह समझ में आ सकता है कि भैरो प्रसाद और भवानी प्रसाद नाम इसलाम में न चल सकें पर यह समझ में नहीं आ सकता कि भगवान दास ईश्वर दास, आनन्द मोहन, सुन्दर लाल, जवाहर लाल, मोती लाल, अशरफ़ी लाल, ख़ूब चन्द जैसे हज़ारों नाम हर मजहब वाले के क्यों नहीं हो सकते. इस बारे में हिन्दुस्तान में पहुँचकर इसलाम ने कुछ तंग नज़री दिखाई है. दूसरी राय के लोग भी हैं. और मुझे यक़ीन है कि बढ़ेंगे. कुछ दिन हुए मेरे एक पढ़े लिखे मौलाना दोस्त ने अपने लड़के का नाम "कृष्ण मोहम्मद" रखा था, और इसी तरह के नाम अपनी लड़कियों के रखे थे. मशहूर मुसलमान नेता अलीगढ़ के श्री अब्दुल मजीद ख़्वाजा ने हाल में अपना नाम "आनन्द मोहन ख़्वाजा" एलान किया है. इस तरह की और मिसालें हैं. मोहन पहलवान और मोती पहलवान की एक बार जब कुश्ती हो रही थी तो बहुत कम लोग यह जान सके कि इनमें मोहन मुसलमान है और मोती हिन्दू. सिराजुद्दौला का मशहूर वफ़ादार सेनापति मीर मदन मुसलमान था. मलकानों और मेओं जैसी बिरादरियों में अभी तक सैकड़ों और हज़ारों मिले जुले और हिन्दू

عام ہوگیا۔ اس کا ایک کارن یہ بھی تھا کہ اس دیش کے بہت سے نام دیوی دیوتاؤں کے ناموں پر ہوتے تھے، جیسے درگا داس، دیوی پرساد وغیرہ۔ دوسرا کارن ہندوؤں کی چھوا چھوت بھی ہے، یعنی ہندوؤں کا یہ غلط رواج کہ وہ کسی آدمی کو دوسرے مذہب میں جاتے ہی اُسے غیر اور لگ بھگ اچھوت سمجھنے لگتے تھے۔ پھر بھی میں آپ کی اس بات سے سہمت ہوں کہ "دھرم پریورتن کے ساتھ نام ٹریڈ مارک پریورتن" ہرگز ضروری نہیں ہونا چاہئے۔ یہ سمجھ میں آ سکتا ہے کہ بھیرو پرساد اور بھوانی پرساد نام اسلام میں نہ چل سکیں پر یہ سمجھ میں نہیں آ سکتا کہ بھگوان پرساد، ایشور داس، آنند موہن، سندر لال، جواہر لال، موتی لال، اشرفی لال، خوب چند جیسے ہزاروں نام ہر مذہب والے کے کیوں نہیں ہو سکتے۔ اس بارے میں ہندستان میں پہنچکر اسلام نے کچھ تنگ نظری دکھلائی ہے۔ دوسری رائے کے لوگ بھی ہیں۔ اور مجھے یقین ہے کہ بڑھیں گے۔ کچھ دن ہوئے میرے ایک پڑھے لکھے مولانا دوست نے اپنے لڑکے کا نام "کرشن محمد" رکھا تھا۔ اور اسی طرح کے نام اپنی لڑکیوں کے رکھے تھے۔ مشہور مسلمان نیتا علی گڑھ کے شری عبد المجید خواجہ نے حال میں اپنا نام "آنند موہن خواجہ" اعلان کیا ہے۔ اس طرح کی اور مثالیں ہیں۔ موہن پہلوان اور موتی پہلوان کی ایک بار جب کشتی ہو رہی تھی تو بہت کم لوگ یہ جان سکے کہ ان میں موہن مسلمان ہے اور موتی ہندو۔ سراج الدولہ کا مشہور وفادار سیناپتی میر مدن مسلمان تھا۔ ملکانوں اور میوؤں جیسی برادریوں میں ابھی تک سیکڑوں اور ہزاروں ملے جلے اور ہندو

नाम चले आ रहे हैं. मेरा ख़याल है कि अगर हम गांव को मिला कर हिन्दुस्तान के सब मुसलमानों के नाम जमा करें तो अब भी उनमें मंगली, बिट्टन, गुलाब, मोती, छुट्टन, लल्लन, घिस्सू जैसे आधे से जियादा नाम शुद्ध हिन्दुस्तानी मिलेंगे. बाक़ी नामों में भी हमें फ़ारसी नाम या हिन्दी फ़ारसी मिले जुले नाम अधिक और अरबी नाम कम मिलेंगे. यह अरबी नाम रखने का रुजहान पिछले चालीस बरस के अन्दर बढ़ा है, ठीक जिस तरह कुछ हिन्दुओं, ख़ासकर आर्य समाजियों में उस समय के चालू नामों की जगह गौतम, कणाद, बुद्ध देव और कपिल जैसे पुराने नाम रखने का रिवाज बढ़ा है. मेरी राय में यह सब रुजहान ग़लत रुजहान हैं और हमें अधिकतर नाम ऐसे रखने चाहियें जिनसे धर्म, मजहब का पता न चले और आदमी को आदमी से अलग करने वाली यह दीवारें जितनी टूटें उतना ही अच्छा.

अरबी भाषा पढ़ना भी हर मुसलमान के लिए जरूरी नहीं है और न अरबी बोलने वाले मुल्कों को छोड़कर दुनिया के एक फ़ीसदी मुसलमान भी अरबी पढ़े हुए हैं, नमाज में ग़लत सलत कुछ अरबी आयतों को दुहरा लेना, जिस तरह हिन्दू संस्कृत मन्त्रों को बिना समझे दुहरा लेते हैं, दूसरी बात है.

मैं तो यह भी मानता हूँ कि क़ुरान या इसलाम के मुताबिक़ नमाज का अरबी में पढ़ना जरूरी नहीं है. ख़ुद "नमाज" शब्द अरबी नहीं है और न क़ुरान में कहीं भी "नमाज" शब्द आया है. मोहम्मद साहब ने अपने साथी (सहाबा) ईरानी मुसलमान सलमान को फ़ारसी में नमाज पढ़ने की इजाजत दी थी. यह भी कहा जाता

نام چلے آرہے ہیں۔ میرا خیال ہے کہ اگر ہم گاؤں کو ملا کر ہندستان کے سب مسلمانوں کے نام جمع کریں تو اب بھی اُن میں منگلی، بٹن، گلاب، موتی، چھٹن، للن، گھسیٹو جیسے آدھے سے زیادہ نام شدھ ہندستانی ملیں گے۔ باقی ناموں میں بھی ہمیں فارسی نام یا ہندی فارسی ملے جلے نام ادھک اور عربی نام کم ملیں گے۔ یہ عربی نام رکھنے کا رجحان پچھلے چالیس برس کے اندر بڑھا ہے، ٹھیک جس طرح کچھ ہندوؤں، خاص کر آریہ سماجیوں میں اُس سمے کے چالو ناموں کی جگہ گوتم، کنژاد، بدھ دیو اور کپل جیسے پرانے نام رکھنے کا رواج بڑھا ہے۔ میری رائے میں یہ سب رجحان غلط رجحان ہیں اور ہمیں ادھک تر نام ایسے رکھنے چاہئے جن سے دھرم، مذہب کا پتہ نہ چلے اور آدمی کو آدمی سے الگ کرنے والی یہ دیواریں جتنی ٹوٹیں اتنا ہی اچھا ہے۔

عربی بھاشا پڑھنا بھی ہر مسلمان کے لئے ضروری نہیں ہے اور نہ عربی بولنے والے ملکوں کو چھوڑ کر دنیا کے ایک فیصدی مسلمان بھی عربی پڑھے ہوئے ہیں، نماز میں غلط سلط کچھ عربی آیتوں کو دُہرا لینا، جس طرح ہندو سنسکرت منتروں کو بنا سمجھے دُہرا لیتے ہیں، دوسری بات ہے۔

میں تو یہ بھی مانتا ہوں کہ قرآن یا اسلام کے مطابق نماز کا عربی میں پڑھنا ضروری نہیں ہے۔ خود "نماز" شبد عربی نہیں ہے اور نہ قرآن میں کہیں بھی "نماز" شبد آیا ہے۔ محمد صاحب نے اپنے ساتھی (صحابہ) ایرانی مسلمان سلمان کو فارسی میں نماز پڑھنے کی اجازت دی تھی۔ یہ بھی کہا جاتا

है कि उन्होंने यूनानी मुसलमानों को यूनानी में नमाज़ पढ़ने की इजाज़त दी थी. और किसी देश का कोई आदमी उनके समय में मुसलमान नहीं हुआ था.

अरबी पंचांग बरतना मुसलमानों के लिये कहीं ज़रूरी नहीं है. इस देश के मुसलमान बादशाह हमेशा अपने सरकारी कामों में फ़सली सम्बत बरतते रहे. दक्खिन में हैदर और टीपू जैसों ने शुद्ध हिन्दू सम्बत भी बरते. ईरान में हमेशा शम्सी (सौर) पंचांग चलते रहे. केवल ईद बक़रीद जैसे त्योहारों के दिन तय करने में हिजरी सम्बत ज़रूरी समझा जाता है.

जहां तक इलाज की बात है "अरबी इलाज" नामका इलाज का कोई तरीक़ा है ही नहीं मुसलमानों ने या अरबों ने कहीं कोई अपना इलाज का अलग ढंग नहीं चलाया. जिसे हम मुसलमानी तरीक़ा समझ लेते हैं वह यूनानी तरीक़ा है. अरबों ने उसे यूनान से सीखा, 'यूनानी' हमेशा कहा और इसी नाम से दुनिया में फैलाया. अरब क़ौम हमेशा दूसरों से चीज़ें लेने में फ़ख्र करती थी और फ़ख्र से उसे ज़ाहिर करती थी. इसीलिए वह हमेशा इलाज को 'यूनानी' और अंकों को 'हिन्दसा' कहते रहे. हमें यह भी याद रखना चाहिये कि यूनानी तरीक़ा बिलकुल हिन्दुस्तानी वैद्यक का तरीक़ा है. सब वही असूल हैं. वही सौदा, सफ़रा और बलग़म यानी वात, पित्त और कफ़. वही नब्ज़ देखने के ढंग. वही अधिकतर दवाइयां. यूनानियों ने इसे भारत से सीखा. अरबों ने यूनानियों से. वैद्यक की संस्कृत किताबों के भी अरबी में अनुवाद कराए गए. हज़ारों नई दवाएं दूसरे देशों की इसमें मिला दी गईं.

ہے کہ اُنھوں نے یونانی مسلمانوں کو یونانی میں نماز پڑھنے کی اجازت دی تھی۔ اور کسی دیش کا کوئی آدمی اُن کے سمے میں مسلمان نہیں ہوا تھا۔

عربی پنچانگ برتنا مسلمانوں کے لئے کہیں ضروری نہیں ہے۔ اس دیش کے مسلمان بادشاہ ہمیشہ اپنے سرکاری کاموں میں فصلی سمبت برتتے رہے۔ دکھن میں حیدر اور ٹیپو جیسوں نے شدھ ہندو سمبت بھی برتے۔ ایران میں ہمیشہ شمسی (سَور) پنچانگ چلتے رہے۔ کیول عید بقرعید جیسے تیوہاروں کے دن طے کرنے میں ہجری سمبت ضروری سمجھا جاتا ہے۔

جہاں تک علاج کی بات ہے "عربی علاج" نام کا علاج کا کوئی طریقہ ہے ہی نہیں۔ مسلمانوں نے یا عربوں نے کہیں کوئی اپنا علاج کا الگ ڈھنگ نہیں چلایا۔ جسے ہم مسلمانی طریقہ سمجھ لیتے ہیں وہ یونانی طریقہ ہے عربوں نے اُسے یونان سے سیکھا 'یونانی' ہمیشہ کہا اور اسی نام سے دنیا میں پھیلایا۔ عرب قوم ہمیشہ دوسروں سے چیزیں لینے میں فخر کرتی تھی اور فخر سے اُسے ظاہر کرتی تھی۔ اسی لئے وہ ہمیشہ علاج کو 'یونانی' اور انکوں کو 'ہندسہ' کہتے رہے۔ ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ یونانی طریقہ بالکل ہندستانی ویدک کا طریقہ ہے۔ سب وہی اُصول ہیں۔ وہی سودا، صفرا اور بلغم یعنی بات، پت اور کف۔ وہی نبض دیکھنے کے ڈھنگ وہی ادھک تر دوائیاں۔ یونانیوں نے اسے بھارت سے سیکھا۔ عربوں نے یونانیوں سے۔ ویدک کی سنسکرت کتابوں کے بھی عربی میں انوواد کرائے گئے۔ ہزاروں نئی دوائیں دوسرے دیشوں کی اس میں ملا دی گئیں۔

इस तरह बाहर से ख़ूब तरक़्क़ी करके यह ढंग, इसलाम के साथ नहीं और न अरबों के साथ, बल्कि पठानों और मुग़लों के साथ फिर अपनी जन्म भूमि हिन्दुस्तान आया और मुग़ल दरबार की मदद से और परवान चढ़ा. यह हमारी दोनों तरफ़ की तंग नज़री है कि हम यूनानी और वैद्यक को दो समझे हुए हैं और एक को इसलामी और दूसरे को हिन्दू बनाए हुए हैं. सच यह है कि अंगरेज़ी इलाज हमारे निन्नानवे फ़ीसदी देशवासियों के लिए बहुत महंगा पड़ता है, और आज दिन तक सैकड़ों बीमारियों में ख़ास कर जिन में बड़ी चीर फाड़ की ज़रूरत नहीं होती हज़ारों रोगियों को जितनी जल्दी देशी इलाज से फ़ायदा पहुंचता है उतनी जल्दी अंगरेज़ी इलाज से नहीं. इस लिए ज़रूरी है कि हम यूनानी और वैद्यक दोनों को मिलाकर एक करलें, देसी भाषाओं में तरजुमे करके दोनों को पढ़ें पढ़ावें और ख़ूब तरक़्क़ी दें.

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दुनिया का कोई ऐसा मुसलिम देश नहीं है जहां अंगरेज़ी ढंग के मेडीकल कालेज और मुसलमान अंगरेज़ी डाक्टर नहीं और जहां लाखों मुसलमान अंगरेज़ी इलाज न करते हों.

रही "अरब को सारी सभ्यता और कलचर का सरचश्मा" मानने की बात, सो दुनिया में शायद ही कोई मुसलमान ऐसा मानता हो. न यह किसी के मुसलमान होने के लिए "ज़रूरी" है. हां, इतिहास के सब पढ़ने वाले यह जानते हैं कि योरप के अंधकार के दिनों में अरबों ने ही ईरान, यूनान और हिन्दुस्तान की विद्याओं का मथ

اس طرح باہر سے خوب ترقی کرکے یہ ڈھنگ، اسلام کے ساتھ نہیں اور نہ عربوں کے ساتھ، بلکہ پٹھانوں اور مغلوں کے ساتھ پھر اپنی جنم بھومی ہندستان آیا اور مغل دربار کی مدد سے اور پروان چڑھا. یہ ہماری دونوں طرف کی تنگ نظری ہے کہ ہم یونانی اور ویدک کو دو سمجھے ہوئے ہیں اور ایک کو اسلامی اور دوسرے کو ہندو بنائے ہوئے ہیں. سچ یہ ہے کہ انگریزی علاج ہمارے ننانوے فیصدی دیشواسیوں کے لئے بہت مہنگا پڑتا ہے، اور آج دن تک سیکڑوں بیماریوں میں خاص کر جن میں بڑی چیر پھاڑ کی ضرورت نہیں ہوتی ہزاروں روگیوں کو جتنی جلدی دیشی علاج سے فائدہ پہنچتا ہے اتنی جلدی انگریزی علاج سے نہیں. اس لئے ضروری ہے کہ ہم یونانی اور ویدک دونوں کو ملاکر ایک کرلیں، دیسی بھاشاؤں میں ترجمے کرکے دونوں کو پڑھیں، پڑھائیں اور خوب ترقی دیں.

ہمیں یہ بھی یاد رکھنا چاہئے کہ دنیا کا کوئی ایسا مسلم دیش نہیں ہے جہاں انگریزی ڈھنگ کے میڈیکل کالج اور مسلمان انگریزی ڈاکٹر نہیں اور جہاں لاکھوں مسلمان انگریزی علاج نہ کرتے ہوں.

رہی "عرب کو ساری سبھیتا اور کلچر کا سرچشمہ" ماننے کی بات، سو دنیا میں شاید ہی کوئی مسلمان ایسا مانتا ہو. نہ یہ کسی کے مسلمان ہونے کے لئے "ضروری" ہے. ہاں، اتہاس کے سب پڑھنے والے یہ جانتے ہیں کہ یورپ کے اندھکار کے دنوں میں عربوں نے ہی ایران، یونان اور ہندستان کی ودیاؤں کا متھ

सिरे से सारे योरप में प्रचार किया और वहां आजकल के साइन्स की बुनियादें डालीं.

सच यह है कि इस तरह की चीजों में दोनों तरफ़ एक दूसरे की बाबत ना समझी और तंग नजरी बढ़ी हुई है. अच्छाइयाँ और बुराइयां सब में होती हैं और सब में हैं. बंगाल, बिहार और पंजाब की सन् ४६—४७ की घटनाओं ने साबित कर दिया कि कोई बुरा से बुरा काम ऐसा नहीं है जिस से हमारे यहां के किसी धर्म ने भी अपने मानने वालों को बचा लिया हो. पर हमने फ़रक़ों को बढ़ा बढ़ा कर देखने की आदत डाल ली है. प्रान्त प्रान्त में हिन्दू और मुसलमान एक ही जबान बोलते हैं. पंजाब में आम हिन्दू बुढ़ियें ईश्वर को "रब्बा" कहकर पुकारती हैं और आम मुसलमान बुढ़ियें बेटे को 'पुत्तर' कहती हैं. दोनों का खाना लगभग एक सा कपड़े लगभग एक से. शिवा जी और औरंगजेब तक की पोशाक एक सी है. काशी के हिन्दू और काशी के मुसलमान में या लाहौर के हिन्दू और लाहौर के मुसलमान में इतना फ़रक़ नहीं है जितना काशी के हिन्दू और ढाका के हिन्दू में या जितना काशी के मुसलमान और लाहौर के मुसलमान में. हम एकता देखना चाहें तो एकता दिखाई देगी, अनेकता देखना चाहें तो अनेकता दिखाई देगी. सारा फेर दिल और आंखों का है. दूसरी भाषाओं के हर शब्द से चिढ़ने वाले और दूसरों के सब खान पान और रहन सहन के तरीक़ों से प्लेग की तरह बचने की कोशिश करने वाले केवल अपना ही गला घोंट कर आत्म हत्या की तरफ़ जा रहे हैं और तंगनजरी के वह बीज देश में छिटका रहे हैं जिन के नाशकारी नतीजे जगह जगह

سرے سے سارے یورپ میں پرچار کیا اور وہاں آج کل کے سائنس کی بنیادیں ڈالیں۔

سچ یہ ہے کہ اس طرح کی چیزوں میں دونوں طرف ایک دوسرے کی بابت ناسمجھی اور تنگ نظری بڑھی ہوئی ہے۔ اچھائیاں اور برائیاں سب میں ہوتی ہیں اور سب میں ہیں۔ بنگال، بہار اور پنجاب کی سنہ ۴۶—۴۷ کی گھٹناؤں نے ثابت کر دیا کہ کوئی برا سے برا کام ایسا نہیں ہے جس سے ہمارے یہاں کے کسی دھرم نے بھی اپنے ماننے والوں کو بچا لیا ہو۔ پر ہم نے فرقوں کو بڑھا بڑھا کر دیکھنے کی عادت ڈال لی ہے۔ پرانت پرانت میں ہندو اور مسلمان ایک ہی زبان بولتے ہیں۔ پنجاب میں عام ہندو بڑھیئیں ایشور کو "ربا" کہہ کر پکارتی ہیں اور عام مسلمان بڑھیئیں بیٹے کو 'پتر' کہتی ہیں دونوں کا کھانا لگ بھگ ایک سا کپڑے لگ بھگ ایک سے۔ شیوا جی اور اورنگ زیب تک کی پوشاک ایک سی ہے۔ کاشی کے ہندو اور کاشی کے مسلمان میں یا لاہور کے ہندو اور لاہور کے مسلمان میں اتنا فرق نہیں ہے جتنا کاشی کے ہندو اور ڈھاکہ کے ہندو میں یا جتنا کاشی کے مسلمان اور لاہور کے مسلمان میں۔ ہم ایکتا دیکھنا چاہیں تو ایکتا دکھائی دے گی، انیکتا دیکھنا چاہیں تو انیکتا دکھائی دے گی۔ سارا پھیر دل اور آنکھوں کا ہے۔ دوسری بھاشاؤں کے ہر شبد سے چڑھنے والے اور دوسروں کے سب کھان پان اور رہن سہن کے طریقوں سے پلیگ کی طرح بچنے کی کوشش کرنے والے کیول اپنا ہی گلا گھونٹ کر آتم ہتیا کی طرف جا رہے ہیں اور تنگ نظری کے وہ بیج دیش میں چھڑکا رہے ہیں جن کے ناش کاری نتیجے جگہ جگہ

अभी से दिखाई देने लगे हैं. हमारे दिल बड़े नहीं होंगे तो न हम मानवता को साक्षात कर सकेंगे और न संसार के मानव का भला कर सकेंगे. हां, अपने और दूसरे के सब तरीक़ों में से भले बुरे, हितकर अहितकर, में फ़रक़ करना और बात है.

हमारी यह तंग नज़री की हालत आख़िर हमेशा नहीं रह सकती. यह नफ़रतें एक दिन मिटेंगी ही. मैं ईसाई धर्म को किसी धर्म से घटिया नहीं मानता. मेरे दिल में सब धर्मों का बराबर का आदर है. पर योरप के एक एक देश में लगभग एक हजार बरस तक ईसाई धर्म के मानने वालों ने धर्म के नाम पर जितने बेगुनाहों को तलवार के घाट उतारा या ज़िन्दा जला दिया और इलाक़े के इलाक़े वीरान कर दिए उनका सौवां हिस्सा भी इसलाम और दुनिया के सब दूसरे धर्मों ने मिलकर नहीं किया. सन् ४६—४७ की घटनाएं भी दो सौ बरस की लगातार कूट नीति और ग़लत इतिहास के पढ़ाने के बाद ही इस देश में हो सकीं. जापान में दो सौ बरस से ऊपर तक ईसाइयों और बौद्धों ने एक दूसरे को मिटा देने के लिए जी तोड़ कोशिशें कीं. उसके बाद भी आज योरोप के एक एक देश में उन्हीं अलग अलग सम्प्रदायों के लोग और जापान में बौद्ध और ईसाई सब पिछली बातों को भूलकर प्रेम से एक राष्ट्र बन कर रह रहे हैं. जिसे आजकल हम राष्ट्रीयता कह रहे हैं उसका जन्म योरप में एक हजार बरस के उस अंधकार और कड़वे तजरबों के बाद ही हुआ है. मिस्र के अन्दर भी अंगरेज़ी राज काज के ही असर से वहां के बहुगिनत मुसलमानों को कम गिनत ईसाइयों से ठीक वही शिकायतें हुईं जो इस देश के हिन्दुओं को मुसलमानों से. मिस्र के

ابھی سے دکھائی دینے لگے ہیں۔ ہمارے دل بڑے نہیں ہونگے تو نہ ہم مانوتا کو شاکشات کر سکیں گے اور نہ سنسار کے مانو کا بھلا کر سکیں گے۔ ہاں، اپنے اور دوسرے کے سب طریقوں میں سے بھلے بُرے، ہتکر اہتکر، میں فرق کرنا اور بات ہے۔

ہماری یہ تنگ نظری کی حالت آخر ہمیشہ نہیں رہ سکتی۔ وہ نفرتیں ایک دن مٹیں گی ہی۔ میں عیسائی دھرم کو کسی دھرم سے گھٹیا نہیں مانتا۔ میرے دل میں سب دھرموں کا برابر کا آدر ہے۔ پر یورپ کے ایک ایک دیش میں لگ بھگ ایک ہزار برس تک عیسائی دھرم کے ماننے والوں نے دھرم کے نام پر جتنے بے گناہوں کو تلوار کے گھاٹ اُتارا یا زندہ جلا دیا اور علاقے کے علاقے ویران کر دیئے اُنکا سواں حصہ بھی اسلام اور دُنیا کے سب دوسرے دھرموں نے مل کر نہیں کیا۔ سنہ ۴۶—۴۷ کی گھٹنائیں بھی دو سو برس کی کوٹ نیتی اور غلط اتہاس کے پڑھائے جانے کے بعد ہی اس دیش میں ہو سکیں۔ جاپان میں دو سو برس سے اوپر تک عیسائیوں اور بودھوں نے ایک دوسرے کو مٹا دینے کیلئے جی توڑ کوششیں کیں۔ اُس کے بعد بھی آج یورپ کے ایک ایک دیش میں اُنہیں الگ الگ سمپرداؤں کے لوگ اور جاپان میں بُدھ اور عیسائی سب پچھلی باتوں کو بھول کر پریم سے ایک راشٹر بن کر رہ رہے ہیں۔ جسے آج کل ہم راشٹریتا کہہ رہے ہیں اس کا جنم یورپ میں ایک ہزار برس کے اُن اندھکار اور کڑوے تجربے کے بعد ہی ہوا ہے۔ مصر کے اندر بھی انگریزی راج کاج کے ہی اثر سے وہاں کے بہو گنت مسلمانوں کو کم گنت عیسائیوں سے ٹھیک وہی شکائتیں ہوئیں جو اِس دیش کے ہندوؤں کو مسلمانوں سے۔ مصر کے

मुसलमान और ईसाई भी अब उस दिमाग़ी दलदल से बाहर निकल चुके हैं.

यों तो दुनिया के सभी धर्म केवल आत्मा, ईश्वर और पूजा बन्दगी तक ही महदूद न रहकर आदमी की ज़िन्दगी के सब पहलुओं में उसे राह दिखाने का दावा करते हैं और दुनिया भर के अलग अलग राष्ट्रों के बीच की दीवारों को तोड़कर एक मानव समाज बनाने का उपदेश देते हैं. पर अभी तक कोई धर्म या मज़हब इस दावे में कामयाब नहीं हुआ. मुसलमान राष्ट्र भी हमेशा एक दूसरे से लड़ते रहे हैं. हिन्दुस्तान में यहां के मुसलमान बादशाहों ने बाहर के मुसलमान हमला करने वालों के ख़िलाफ़ हमेशा तलवार खींची है. अभी कुछ बरस हुए हमारे देश के कुछ शिया मुसलमान सज्जन ईरान गए थे. वहां से वापस आने पर उन्हें यह शिकायत थी कि ईरानी लोग न अपने को 'मुसलमान' कहकर बताते हैं और न 'शिया' कहकर. उनसे जब पूछा जाता है आप कौन हैं तो एक ही जवाब मिलता है—"मा ईरानी एम." आज भी पाकिस्तान और अफ़ग़ानिस्तान की निगाहें दो तरफ़ को जा रही हैं. हम न इतिहास से वाक़िफ़ हैं और न एक दूसरे के धर्मों से इसलिए अनजान में ही हम अपने सामने तरह तरह के भूत खड़े कर लेते हैं. एशिया के अधिकतर मुसलमान देशों के साथ हमारे देश की क़िस्मत तरह तरह से बंधी हुई है. एक के फ़ायदे में सबका फ़ायदा और एक के नुक़सान में सबका नुक़सान है. हमें जहां तक बन पड़े सब को दोस्ती की निगाह से देखना चाहिए, और मिलकर सबके भले की कोशिश करनी चाहिए. इसीमें हमारा भला है. यह तभी हो सकता है जब

مسلمان اور عیسائی بھی اب دماغی دَل دَل سے باہر نکل چکے ہیں۔

یوں تو دُنیا کے سبھی دھرم کیول آتما، ایشور اور پوجا بندگی تک ہی محدود نہ رہ کر آدمی کی زندگی کے سب پہلوؤں میں اُسے راہ دکھانے کا دعویٰ کرتے ہیں اور دُنیا بھر کے الگ الگ راشٹروں کے بیچ کی دیواروں کو توڑ کر ایک مانو سماج بنانے کا اُپدیش دیتے ہیں۔ پر ابھی تک کوئی دھرم یا مذہب اِس دعوے میں کامیاب نہیں ہوا۔ مسلمان راشٹر بھی ہمیشہ ایک دوسرے سے لڑتے رہے ہیں۔ ہندستان میں یہاں کے مسلمان بادشاہوں نے باہر کے مسلمان حملہ کرنے والوں کے خلاف ہمیشہ تلوار کھینچی ہے۔ ابھی کچھ برس ہوئے ہمارے دیش کے کچھ شیعہ مسلمان سجن ایران گئے تھے۔ وہاں سے واپس آنے پر انھیں یہ شکایت تھی کہ ایرانی لوگ نہ اپنے کو 'مسلمان' کہہ کر بتاتے ہیں اور نہ 'شیعہ' کہہ کر۔ اُن سے جب پوچھا جاتا ہے آپ کون ہیں تو ایک ہی جواب ملتا ہے— "ما ایرانی ایم"۔ آج بھی پاکستان اور افغانستان کی نگاہیں دو طرف کو جارہی ہیں۔ ہم نہ اتہاس سے واقف ہیں اور نہ ایک دوسرے کے دھرم سے اِس لئے انجان میں ہی ہم اپنے سامنے طرح طرح کے بھوت کھڑے کرلیتے ہیں۔ ایشیا کے ادھک تر مسلمان دیشوں کے ساتھ ہمارے دیش کی قسمت طرح طرح سے بندھی ہوئی ہے۔ ایک کے فائدے میں سب کا فائدہ اور ایک کے نقصان میں سب کا نقصان ہے۔ ہمیں جہاں تک بن پڑے سب کو دوستی کی نگاہ سے دیکھنا چاہیے، اور مل کر سب کے بھلے کی کوشش کرنی چاہیے۔ اسی میں ہمارا بھلا ہے۔ یہ تبھی ہو سکتا ہے جب

हम हर तरह की तंग नज़री को अपने में से निकालकर फेंक दें.

आप अपनी बीवी का नाम 'फ़ीरोज़ा' रखना चाहते हैं. बड़ी ख़ुशी से रखें. बशर्तेकि बीवी भी राज़ी हो. इससे आपके या उसके हिन्दूपने में फ़रक़ नहीं पड़ सकता. कोई हिन्दू "मीलाद, मजलिस" में शरीक हो जाने से मुसलमान नहीं हो जाता. आपके हिन्दू मित्रों का ऐसा सोचना तंग नज़री है. यह भी ज़ाहिर है कि वह हिन्दू धर्म को नहीं जानते.

मैं उम्मीद करता हूँ आपके सब सवालों का जवाब आ गया होगा.

आपका भाई—
सुन्दरलाल

१.११-४६

ہم ہر طرح کی تنگ نظری کو اپنے میں سے نکال کر پھینک دیں۔

آپ اپنی بیوی کا نام 'فیروزہ' رکھنا چاہتے ہیں۔ بڑی خوشی سے رکھیں۔ بشرطیکہ بیوی بھی راضی ہو۔ اس سے آپ کے یا اس کے ہندوپنے میں فرق نہیں پڑ سکتا۔ کوئی ہندو "میلاد، مجلس" میں شریک ہو جانے سے مسلمان نہیں ہو جاتا۔ آپ کے ہندو متروں کا ایسا سوچنا تنگ نظری ہے۔ یہ بھی ظاہر ہے کہ وہ ہندو دھرم کو نہیں جانتے۔

میں امید کرتا ہوں آپ کے سب سوالوں کا جواب آگیا ہوگا۔

۴۹—۱۱—۱

آپ کا بھائی
سندر لال

हमारी राय

आज का तिब्बत

तिब्बत का हिन्दुस्तान से बहुत पुराना नाता है. अफ़ग़ानिस्तान की तरह तिब्बत का ज़िक्र भी पुरानों में मिलता है. पुरानों में दिया हुआ तिब्बत का नाम त्रिविष्टप है. मानसरोवर तिब्बत से लगी हुई झील है. उसको आज भी हिन्दुस्तान का बच्चा बच्चा जानता है. नानी की कहानियों में से बहुत सी कहानियों में मानसरोवर के हंसों की बातें सुनने को मिल सकती हैं. तिब्बत का हिन्दुस्तान से इतना ही गहरा नाता रहा है जितना आज अमरनाथ और बद्रीनाथ से है. यह सब हम इसलिए नहीं कह रहे कि हम उस पर अपना कोई राजनीतिक क़ब्ज़ा साबित करना चाहते हैं. इस तरह के क़ब्ज़ों पर हम विश्वास नहीं करते. यों तो अफ़ग़ानिस्तान अशोक के समय से औरङ्गज़ेब के समय तक हिन्दुस्तान का सूबा रह चुका है. और रनजीतसिंह के समय तक भी वह सूबा जैसा ही था. हां, अंगरेज़ न जाने क्यों कई बार धमकी दिखाकर और लूट मार करके भी उसे अपना सूबा न रख सके. इस पुरानी रिश्तेदारी के बल पर जैसे हम अफ़ग़ानिस्तान पर कोई क़ब्ज़ा नहीं साबित सकते पर उससे दोस्ती बनाये रखना ज़रूर ठीक समझते हैं. इतना ही नहीं, हम यह भी देखना चाहते हैं कि वह तरक़्क़ी की दौड़ में एशिया के और

ہماری رائے

آج کا تبت

تبت کا ہندستان سے بہت پرانا ناتا ہے۔ افغانستان کی طرح تبت کا ذکر بھی پرانوں میں ملتا ہے۔ پرانوں میں دیا ہوا تبت کا نام ترِوشٹپ ہے۔ مان سرور تبت سے لگی ہوئی جھیل ہے۔ اُس کو آج بھی ہندستان کا بچہ بچہ جانتا ہے۔ نانی کی کہانیوں میں سے بہت سی کہانیوں میں مان سرور کے ہنسوں کی باتیں سننے کو مل سکتی ہیں۔ تبت کا ہندستان سے اتنا ہی گہرا ناتا رہا ہے جتنا آج امرناتھ اور بدری ناتھ سے ہے۔ یہ سب ہم اس لئے نہیں کہہ رہے کہ ہم اُس پر اپنا کوئی راج نیتک قبضہ ثابت کرنا چاہتے ہیں۔ اس طرح کے قبضوں پر ہم وِشواس نہیں کرتے۔ یوں تو افغانستان اشوک کے سمے سے اورنگ زیب کے سمے تک ہندستان کا صوبہ رہ چکا ہے۔ اور رنجیت سنگھ کے سمے تک بھی وہ صوبہ جیسا ہی تھا۔ ہاں، انگریز نہ جانے کیوں کئی بار دھمکی دکھاکر اور لوٹ مار کرکے بھی اُسے اپنا صوبہ نہ رکھ سکے۔ اس پرانی رشتے داری کے بل پر جیسے ہم افغانستان پر کوئی قبضہ نہیں ثابت کرتے پر اُس سے دوستی بنائے رکھنا ضرور ٹھیک سمجھتے ہیں۔ اتنا ہی نہیں، ہم یہ بھی دیکھنا چاہتے ہیں کہ وہ ترقی کی دوڑ میں ایشیا کے اور

मुल्कों से किसी तरह पीछे न रहने पावे यही हम तिब्बत से चाहते हैं. तिब्बत से जो रिश्ता हमारा चला आया है, उतना बना रहे उसमें हमारी तसल्ली नहीं होनी चाहिए. वह रिश्ता और बढ़ाना चाहिए. अब तक जो हमारा रिश्ता तिब्बत से था वह अङ्गरेजों की मार्फत था. उस रिश्ते में बर्तानिया की नीति की छाया थी न कि हिन्दुस्तानी नीति की. हिन्दुस्तानी नीति साम्राजवादी नीति नहीं. इसलिए आज कल तिब्बत और हिन्दुस्तान में जितनी निकटता बढ़ती जायगी उसमें तिब्बत की ही ज्यादा भलाई है. हिन्दुस्तान की भी है पर उतनी नहीं.

जब चीन भर का रहन सहन हिन्दुस्तानी रहन-सहन से बहुत कुछ मिलता जुलता है और जब चीनी सोचने विचारने की रीत हिन्दुस्तानी सोचने विचारने के तरीक़ से बहुत कुछ मिलती जुलती है तब हम यह साबित करने की तकलीफ़ भी क्यों करें कि रहन सहन में, सोचने विचारने में, उठने बैठने में, चलने फिरने में तिब्बत और हिन्दुस्तान बहुत कुछ मिलते जुलते हैं. धर्म के बारे में तो कौन नहीं जानता कि तिब्बत के धर्म का मूल स्रोत हिन्दुस्तान के बीच में बसने वाला बुद्ध-गया है. इतना ही नहीं तिब्बतियों का झुकाव जितना हिन्दुस्तान की तरफ़ है इतना चीन की तरफ़ नहीं. देखा जाय तो तिब्बत कई बार चीन के मातहत रह चुका और वह भी बरसों. पर फिर भी वह जी से पूरी तरह चीनी नहीं बन पाया. तिब्बत हिन्दुस्तान का कभी सूबा नहीं रहा. हिन्दुस्तान ने कभी यह चाहा भी नहीं. यह बात चाहने की जरूरत भी नहीं थी. पर फिर भी तिब्बत जी से अपने को हिन्दुस्तानी मानता है.

ملکوں سے کسی طرح پیچھے نہ رہنے پاوے یہی ہم تبت سے چاہتے ہیں۔ تبت سے جو رشتہ ہمارا چلا آرہا ہے، اُتنا بنا رہے اُس میں ہماری تسلی نہیں ہونی چاہیے۔ وہ رشتہ اور بڑھانا چاہیے۔ اب تک جو ہمارا رشتہ تبت سے تھا وہ انگریزوں کی معرفت تھا۔ اُس رشتے میں برطانیہ کی نیتی کی چھایا تھی نہ کہ ہندستانی نیتی کی۔ ہندستانی نیتی سامراج وادی نیتی نہیں۔ اِس لئے آج کل تبت اور ہندستان میں جتنی نکٹتا بڑھتی جائے گی اُس میں تبت کی ہی زیادہ بھلائی ہے۔ ہندستان کی بھی ہے پر اُتنی نہیں۔

جب چین بھر کا رہن سہن ہندستانی رہن سہن سے بہت کچھ ملتا جلتا ہے اور جب چینی سوچنے وچارنے کی ریت ہندستانی سوچنے وچارنے کے طریقے سے بہت کچھ ملتی جلتی ہے تب ہم یہ ثابت کرنے کی تکلیف بھی کیوں کریں کہ رہن سہن میں، سوچنے وچارنے میں، اُٹھنے بیٹھنے میں، چلنے پھرنے میں تبت اور ہندستان بہت کچھ ملتے جلتے ہیں۔ دھرم کے بارے میں تو کون نہیں جانتا کہ تبت کے دھرم کا مول سوت ہندستان کے بیچ میں بسنے والا بُدھ گیا ہے۔ اتنا ہی نہیں تبتیوں کا جھکاؤ جتنا ہندستان کی طرف ہے اِتنا چین کی طرف نہیں۔ دیکھا جائے تو تبت کئی بار چین کے ماتحت رہ چکا اور وہ بھی برسوں۔ پر پھر بھی وہ جی سے پوری طرح چینی نہیں بن پایا۔ تبت ہندستان کا کبھی صوبہ نہیں رہا۔ ہندستان نے کبھی یہ چاہا بھی نہیں۔ یہ بات چاہنے کی ضرورت بھی نہیں تھی۔ پر پھر بھی تبت جی سے اپنے کو ہندستانی مانتا ہے۔

हुकूमत करने का उसका अपना तरीक़ा है. उस तरीक़े से न हिन्दुस्तान को कुछ डर है और न चीन को डरना चाहिये. वह तरीक़ा आज कल के लिए ठीक है या नहीं यह हिन्दुस्तान के लिए भी और चीन के लिए भी चिन्ता का कारण हो सकता था अगर तिब्बत कोई बहुत बड़ी आबादी वाला देश होता या राजनीतिक विचारों में इस तरह का उन्नत देश होता जैसा जर्मनी और जापान है या योरप का और कोई मुल्क. पर तिब्बत तो अपने ढङ्ग का निराला देश है. उसकी निराले ढङ्ग की हुकूमत चीन या हिन्दुस्तान किसी को नुक़सान नहीं पहुँचा सकती. हम अपने सर पर बहुत ज़ोर डालकर शायद यह साबित कर दें कि तिब्बत की हुकूमत तिब्बत की आज की जनता के लिए दुखदाई साबित हो रही है और वहां का असली राजा मुट्ठी भर दलाई लामाओं के हाथ की कठपुतली बना हुआ है तो हम इससे न तिब्बत का भला कर सकते हैं और न अपना. तिब्बत की उस अपढ़ जनता का भी हम कोई भला नहीं कर सकते जिसकी तकलीफ़ की बातें हम अपने मन से गढ़ गढ़ कर बे मतलब के आंसू बहाते रहते हैं. वक़्त के असर से आज के दिन दुनिया का कोई भी हिस्सा नहीं बच सकता फिर तिब्बत कैसे बच सकता है. तिब्बत के साथ हमारी निकटता हो जाने से आना जाना बढ़ेगा, मेल जोल बढ़ेगा और फिर यह हो ही नहीं सकता कि वहाँ की हुकूमत में कोई हेर फेर न हो. यह सब होते हुए भी हमें बहुत होशियार रहने की ज़रूरत है. हिन्दुस्तान की बेपरवाही से कहीं ऐसा न हो कि तिब्बत की जनता बेतुके तरीक़े से उठ खड़ी हो और कोई

حکومت کرنے کا اس کا اپنا طریقہ ہے۔ اس طریقے سے نہ ہندستان کو کچھ ڈر ہے اور نہ چین کو ڈرنا چاہیے۔ وہ طریقہ آج کل کیلئے ٹھیک ہے یا نہیں یہ ہندستان کیلئے بھی اور چین کے لئے بھی چنتا کا کارن ہو سکتا تھا اگر تبت کوئی بہت بڑی آبادی والا دیش ہوتا یا راج نیتک وچاروں میں اس طرح کا اُنت دیش ہوتا جیسا جرمنی اور جاپان ہے یا یورپ کا اور کوئی مُلک۔ پر تبت تو اپنے ڈھنگ کا نرالا دیش ہے۔ اس کی نرالے ڈھنگ کی حکومت چین یا ہندستان کسی کو نقصان نہیں پہنچا سکتی۔ ہم اپنے سر پر بہت زور ڈال کر شاید یہ ثابت کر دیں کہ تبت کی حکومت تبت کی آج کی جنتا کیلئے دُکھ دائی ثابت ہو رہی ہے اور وہاں کا اصلی راجا مٹھی بھر دلائی لاماؤں کی ہاتھ کی کٹھ پتلی بنا ہوا ہے تو ہم اُس سے نہ تبت کا بھلا کر سکتے ہیں اور نہ اپنا۔ تبت کی اُس اَپڑھ جنتا کا بھی ہم کوئی بھلا نہیں کر سکتے جسکی تکلیف کی باتیں ہم اپنے من سے گڑھ گڑھ کر بے مطلب کے آنسو بہاتے رہتے ہیں۔ وقت کے اثر سے آج کے دن دُنیا کا کوئی بھی حصہ نہیں بچ سکتا پھر تبت کیسے بچ سکتا ہے۔ تبت کے ساتھ ہماری نکٹتا ہو جانے سے آنا جانا بڑھے گا، میل جول بڑھے گا اور پھر یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ وہاں کی حکومت میں کوئی ہیر پھیر نہ ہو۔ یہ سب ہوتے ہوئے بھی ہمیں بہت ہوشیار رہنے کی ضرورت ہے۔ ہندستان کی بے پروائی سے کہیں ایسا نہ ہو کہ تبت کی جنتا بے تُکے طریقے سے اُٹھ کھڑی ہو اور کوئی

ऐसी सरकार बना डाले जिसमें न तिब्बत का भला हो और न उसके पड़ोसियों का.

कुछ दिनों बिना छेड़ा हुआ रहने से तिब्बत की हुकूमत अपने आप एक ऐसा रूप ले लेगी जो न हिन्दुस्तान के लिए बुरा होगा और न चीन के लिए दुखदाई.

भगवान दीन

अमरीका और विश्वशांति

एक बाप इस बात का हक़दार तो है कि वह सिगरेट पीते पीते अपने बेटे को यह उपदेश दे कि देखो बेटा मैं सिगरेट तो पीता हूँ पर अपने तजरबे के बल पर तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि यह बड़ी ख़राब चीज़ है, तुम हरगिज़ न पीना. मैं बूढ़ा हो गया हूँ, मुझसे नहीं छुट पाती. इस बात का उसके बेटे पर क्या असर होगा उसे यहीं छोड़िये और आप यह लीजिये कि अगर वही बाप अपने बराबर वालों या अपने से बड़ों को यही उपदेश देने लगे तो उसका क्या असर होगा और वह बराबर वाले और बड़े उसके बारे में किस तरह सोचेंगे. हमको तो कुछ ऐसी ही बात जवाहर लाल जी के उस उपदेश में से टपकती है जो उन्होंने अहिंसा के बारे में अमरीकनों को दिया है. बात कितनी ही भली क्यों न हो लेकिन जब तक वह ठीक जगह, ठीक वक़्त पर, ठीक रंग में भीगकर, ठीक आदमी के मुँह से न निकले तो वह अपना असर नहीं लाती इतना ही नहीं कभी कभी उलटा असर कर जाती है. पंडित जवाहर लाल जी ने अहिंसा की बात अमरीका के कई प्लेटफ़ार्मों से कही है. इसमें

ایسی سرکار بنا ڈالے جس میں نہ تبت کا بھلا ہو اور نہ اُس کے پڑوسیوں کا.

کچھ دنوں بنا چھیڑا ہوا رہنے سے تبت کی حکومت اپنے آپ ایک ایسا روپ لے لیگی جو نہ ہندستان کیلئے بُرا ہوگا اور نہ چین کے لئے دُکھ دائی.

بھگوان دین

امریکہ اور وِشوشانتی

ایک باپ اس بات کا حقدار تو ہے کہ وہ سگریٹ پیتے پیتے اپنے بیٹا کو یہ اُپدیش دے کہ دیکھو بیٹا میں سگریٹ تو پیتا ہوں پر اپنے تجربے کے بل پر تمہیں یہ بتانا چاہتا ہوں کہ یہ بڑی خراب چیز ہے، تم ہرگز نہ پینا. میں بوڑھا ہوگیا ہوں، مجھ سے نہیں چھوٹ پاتی. اس بات کا اُس کے بیٹے پر کیا اثر ہوگا اُسے یہیں چھوڑیئے اور آپ یہ لیجئے کہ اگر وہی باپ اپنے برابر والوں یا اپنے سے بڑوں کو یہی اُپدیش دینے لگے تو اُس کا کیا اثر ہوگا اور وہ برابر والے اور بڑے اُسکے بارے میں کس طرح سوچیں گے. ہم کو تو کچھ ایسی ہی بات جواہرلال جی کے اُس اُپدیش میں سے ٹپکتی ہے جو اُنھوں نے اہنسا کے بارے میں امریکنوں کو دیا ہے. بات کتنی ہی بھلی کیوں نہ ہو لیکن جب تک وہ ٹھیک جگہ، ٹھیک وقت پر، ٹھیک رنگ میں بھیگ کر، ٹھیک آدمی کے مُنہ سے نہ نکلے تو وہ اپنا اثر نہیں لاتی اتنا ہی نہیں کبھی کبھی اُلٹا اثر کر جاتی ہے. پنڈت جواہرلال جی نے اہنسا کی بات امریکہ کے کئی پلیٹ فارموں سے کہی ہے. اسمیں

नया हिन्द — हमारी राय — दिसम्बर सन् '४६

हमें कोई अचरज नहीं मालूम होता. इसमें कोई बनावट भी नहीं दिखाई देती. हिन्दुस्तानियों के खून में अहिंसा इतनी असर कर गई है कि वह कभी भी पूरी सचाई के साथ अहिंसा के ऊँचे से ऊँचे तल पर पहुँच सकते हैं और सचाई के साथ दूसरों को उपदेश देने के हक़दार बन सकते हैं. भले ही वह उस तल पर दूसरे छिन भी न टिक सकें. पर अचरज तो हमें इस बात का है कि अमरीका के रहने वाले चूँचरा किये बिना किस तरह से उस उपदेश को गट गट पी गये. इतना ही नहीं उन्होंने उस पर मनन भी किया. क्या इससे हम समझें कि अमरीका के रहने वाले सचमुच उस तल पर पहुँच गये हैं जहाँ पहुँचकर वह सचाई के साथ दुनिया भर में शान्ति फैलाने के काम में उस हिन्दुस्तान का हाथ बटाना चाहते हैं जो देखने में भले ही सिपाही की वर्दी पहने हुए है और हर तरह के हथियारों से सजा हुआ है पर जी से यही चाहता है कि दुनिया की तलवारें टूटकर हल और हंसिये का रूप लें. यह बात हम कुछ बढ़कर नहीं कह रहे हैं. बहुत दिन नहीं बीते ननकाना साहब में तलवार से लैस सिक्ख सिपाहियों ने अहिंसा का व्रत निभाते हुए अपनी जानें दी थीं. यही चमत्कार सन् १९३१ में सरहद के पठानों ने दिखाया था. अहिंसा और बहादुरी का मेल है और तलवार ज्यादा से ज्यादा बहादुरी का एक निशान है.

भगवान दीन

ہمیں کوئی اچرج نہیں معلوم ہوتا۔ اِس میں کوئی بناوٹ بھی نہیں دکھائی دیتی۔ ہندستانیوں کے خون میں اہنسا اتنی اثر کر گئی ہے کہ وہ کبھی بھی پوری سچائی کے ساتھ اہنسا کے اونچے سے اونچے تل پر پہنچ سکتے ہیں اور سچائی کے ساتھ دوسروں کو اُپدیش دینے کے حقدار بن سکتے ہیں۔ بھلے ہی وہ اُس تل پر دوسرے چھن بھی نہ ٹِک سکیں۔ پر اچرج تو ہمیں اِس بات کا ہے کہ امریکہ کے رہنے والے چوں چرا کئے بنا کس طرح سے اُس اپدیش کو گٹ گٹ پی گئے۔ اِتنا ہی نہیں اُنھوں نے اُس پر منن بھی کیا۔ کیا اس سے ہم سمجھیں کہ امریکہ کے رہنے والے سچ مچ اُس تل پر پہنچ گئے ہیں جہاں پہنچکر وہ سچائی کے ساتھ دُنیا بھر میں شانتی پھیلانے کے کام میں اُس ہندستان کا ہاتھ بٹانا چاہتے ہیں جو دیکھنے میں بھلے ہی سپاہی کی وردی پہنے ہوئے ہے اور ہر طرح کے ہتھیاروں سے سجا ہوا ہے پر جی سے یہی چاہتا ہے کہ دُنیا کی تلواریں ٹوٹ کر ہَل اور ہنسیے کا روپ لیں۔ یہ بات ہم کچھ بڑھ کر نہیں کہ رہے ہیں، بہت دن نہیں بیتے ننکانا صاحب میں تلوار سے لَیس سِکھ سپاہیوں نے اہنسا کا برت نبھاتے ہوئے اپنی جانیں دی تھیں۔ یہی چمتکار سنہ ۱۹۳۱ میں سرحد کے پٹھانوں نے دکھایا تھا۔ اہنسا اور بہادری کا میل ہے اور تلوار زیادہ سے زیادہ بہادری کا ایک نشان ہے۔

بھگوان دین